ISBN 5 05 [illegible]

फ्योदोर
दोस्तोयेव्स्की

बौड़म

बौड़म

फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की

अनुवाद

मुनीश सक्सेना

बौड़म

भाग : 1

•

1

नवम्बर के अन्त में, एक दिन जब सर्दी कुछ कम थी, सबेरे लगभग नौ बजे वारसावाली ट्रेन पूरी तेज़ी से पीटर्सबर्ग के पास पहुँचती जा रही थी। चारों ओर इतनी नमी और कुहरा था कि रोशनी बहुत देर में जाकर हुई और सो भी ऐसी कि रेल की पटरियों के दाहिनी और बाईं ओर डिब्बों की खिड़कियों से बाहर देखकर कुछ गज़ की दूरी पर भी किसी चीज़ को पहचानना मुश्किल था। यात्रियों में कुछ विदेश से लौट रहे थे; लेकिन सबसे ज़्यादा भीड़ तीसरे दर्जे के डिब्बों में थी, खासतौर पर छोटे-मोटे व्यापारियों की, जो अभी पिछले स्टेशन पर ही ट्रेन पर सवार हुए थे। हर आदमी थका हुआ तो था ही, रात-भर के सफ़र के बाद सभी की आँखें बोझल थीं, सबकी हड्डियों तक में ठिठुरन समाई हुई थी, और हर आदमी का चेहरा फीका और पीला था, बिलकुल कुहरे के रंग का।

तीसरे दर्जे के एक डिब्बे की खिड़की के पास भोर पहर से दो यात्रियों ने अपने आपको एक-दूसरे के सामने बैठा हुआ पाया था—दोनों नौजवान थे, दोनों ही के पास बहुत थोड़ा सामान था, दोनों ही ने जो कपड़े पहन रखे थे उन्हें फ़ैशनेबल किसी तरह नहीं कहा जा सकता, दोनों का नाक-नक़्शा कुछ अलग ही था, और आख़िरी बात यह कि दोनों एक-दूसरे से बातचीत शुरू करने के विरुद्ध नहीं थे। अगर उन्हें मालूम होता कि इस क्षण उनमें कौन-सी चीज़ ऐसी असाधारण थी तो अवश्य ही उन्हें इस बात पर आश्चर्य होता कि संयोग ने उन्हें इतने विचित्र ढंग से वारसा-पीटर्सबर्ग ट्रेन के तीसरे डिब्बे में एक-दूसरे के सामने ला बिठाया था। उनमें से एक कोई सत्ताईस साल का छोटे क़द का आदमी था, जिसके घुँघराले बाल लगभग काले थे और छोटी-छोटी सुरमई आँखों में आग-सी दहक थी। उसकी नाक चौड़ी और चपटी थी और गालों की हड्डियाँ उभरी हुई थीं; उसके पतले-पतले होंठ लगातार इस तरह टेढ़े रहते थे कि लगता था कि वह बड़ी धृष्टता, व्यंग और यहाँ तक कि द्वेष से मुस्करा रहा है, लेकिन उसका माथा चौड़ा और सुडौल था और उसकी वजह से उसके चेहरे के निचले भाग की खुरदरी बनावट की कमज़ोरियाँ काफ़ी हद तक दूर हो जाती थी। उसके चेहरे में जिस चीज़ की ओर सबसे अधिक ध्यान जाता था वह थी उस पर छाया हुआ मौत जैसा पीलापन, जिससे वह नौजवान अपने गठे हुए शरीर के बावजूद देखने में बिलकुल निढ़ाल लगता था और इसके साथ ही उसके चेहरे पर किसी व्यथापूर्ण उन्माद की भी झलक दिखाई देती थी, जो उसकी रूखी और धृष्टतापूर्ण मुस्कराहट और उसकी अक्खड़ और आत्म-सन्तुष्ट दृष्टि से पूरी तरह मेल नहीं खाती थी। उसने मेमने की खाल के अस्तरवाला ढीला-सा काला ओवरकोट पहन रखा था जो इतना गरम था कि रात को उसे बिलकुल सर्दी नहीं लगी थी, जबकि उसके साथवाले मुसाफ़िर की पीठ को रूस की नवम्बर की भीगी-भीगी रात का सारा मज़ा आ गया था, जिसके लिए वह स्पष्टतः बिलकुल भी तैयार नहीं था। उसने काफ़ी ढीला-ढाला

मोटा-सा लबादा पहन रखा था जिसमें बहुत बड़ा हुड लगा हुआ था, ठीक इसी तरह का जैसा यात्री जाड़े में अकसर एक सुदूर विदेश में, स्विट्ज़रलैण्ड में या मिसाल के लिए उत्तरी इटली में पहनते हैं, और सो भी केवल तब नहीं जब उन्हें आइदकूनेन से पीटर्सबर्ग तक की लम्बी यात्रा जैसी दूरी पार करनी हो। लेकिन जो चीज़ इटली के लिए उचित और हर तरह से सन्तोषजनक थी वह रूस के लिए सर्वथा अनुपयुक्त थी। जो आदमी हुडदार लबादा पहने था वह भी लगभग छब्बीस-सत्ताईस साल का नौजवान था, क़द औसत से कुछ ज़्यादा, घने बहुत सुनहरे बाल, धँसे हुए गाल, और नुकीली और लगभग सफ़ेद छोटी-सी दाढ़ी। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी, नीले रंग की और बेधती हुई थीं; उनके देखने के ढंग में कुछ कोमलता, लेकिन साथ ही भारीपन भी था, वह विचित्र भाव, जिसकी वजह से लोग पहली ही नज़र में समझ जाते हैं कि आदमी मिरगी का शिकार है। नौजवान का चेहरा सुखद, तीखे नाक-नक़शेवाला और दुबला-पतला था, हालाँकि उसका रंग फीका था और इस वक़्त तो सर्दी के मारे वह नीला पड़ गया था। उड़े हुए [illegible] रेशम के पुराने कपड़े में बँधी हुई एक छोटी-सी पोटली उसके हाथों में झूल रही थी, ऐसा लगता था कि सफ़र में उसके साथ जो कुछ भी था वह उस पोटली में ही था। उसने मोटे तलोंवाले जूते और गेटर्स पहन रखे थे—यह सब कुछ बिलकुल ग़ैर-रूसी लग रहा था। भेड़ की खाल के अस्तरवाला कोट पहने हुए जो काले बालोंवाला आदमी उसके साथ सफ़र कर रहा था वह बड़े ध्यान से इन सब चीज़ों को देखता रहा, कुछ तो इसलिए भी कि उसके पास करने को और कुछ था ही नहीं, ओर आख़िरकार उसने इस अरुचिकर मुस्कराहट के साथ पूछा, जिसमें लोग कभी-कभी अपने साथ के लोगों की मुसीबतों पर इतने उपेक्षा के भाव से अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं जैसे कोई बात ही न हो—

"सर्दी लग रही है ?"

और यह कहकर काँप उठा।

"बहुत," उसके सहयात्री ने बड़ी तत्परता से उत्तर दिया। "और ध्यान रहे, अभी तो गर्मी है तब यह हाल है। अगर पाला पड़ता होता तो क्या होता ? मैंने सोचा भी नहीं था कि अपने देश में इतनी सर्दी होगी। आदत नहीं रह गई है।"

"कहीं विदेश से तो नहीं आ रहे हैं ?"

"जी हाँ, स्विट्ज़रलैण्ड से।"

"उफ्फोह !" काले बालोंवाला आदमी ठहाका मारकर हँस पड़ा। उनके बीच बातचीत शुरू हुई। स्विट्ज़रलैण्ड के ढंग का लबादा पहने सुनहरे बालोंवाला नौजवान अपने साँवले रंग के सहयात्री के हर सवाल का जवाब जिस तत्परता से दे रहा था यह सचमुच आश्चर्यजनक थी और उसे इस बात का सन्देह तक नहीं था कि कुछ सवाल कितने निरर्थक, बेतुके और अनुचित थे। उनका जवाब देने के दौरान उसने लगे हाथ बताया कि वास्तव में काफ़ी अरसे से—चार साल से अधिक से—वह रूस से बाहर था, कि अपने स्वास्थ्य की वजह से वह विदेश भेजा गया था, मिरगी जैसी किसी बीमारी की वजह से, जिसमें उसे एक तरह का दौरा पड़ता था और मांस-पेशियाँ फड़कने लगती थीं, जिस बीमारी को सेंट वाइटस का नृत्य भी कहा जाता है। उसकी बातें सुनते हुए साँवले नौजवान ने कई बार खीसें निकालीं और उसके इस सवाल के जवाब में कि "क्या, चंगा हो गया था ?" जब सुनहरे बालोंवाले नौजवान ने जवाब दिया कि "नहीं हो पाया था", तो दूसरा नौजवान खुलकर हँस पड़ा।

"यह बात है ! कितना पैसा बर्बाद किया होगा और हमलोग हैं कि अब तक उन पर विश्वास करते हैं," साँवले नौजवान ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

"बिलकुल ठीक बात है !" मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए पास ही बैठे एक आदमी ने उनकी बातचीत के बीच में बोलते हुए कहा। वह लगभग चालीस साल का, गठे हुए शरीर का, लाल नाक और मुँहासोंदार चेहरेवाला आदमी था, और कोई छोटा-मोटा सरकारी नौकर मालूम होता था, जो बरसों से क़लम घिसता रहा था। "आप बिलकुल ठीक कहते हैं, जनाब। वे लोग तो बस मुफ़्त में हम रूसियों का ख़ून निचोड़ना जानते हैं !"

"जी नहीं, मेरे मामले में आपका ऐसा सोचना बिलकुल ग़लत है," स्विट्ज़रलैण्ड के रोगी ने बड़ी नरमी से समझाते हुए कहा। "ज़ाहिर है, मैं आपसे बहस तो नहीं कर सकता, क्योंकि बहुत-सी बातें हैं जो मैं नहीं जानता लेकिन मेरे डॉक्टर ने तो मेरी इस यात्रा के लिए मुझे अपना आख़िरी पैसा तक दे दिया और इसके अलावा लगभग दो साल तक वहाँ मेरा सारा ख़र्च भी ख़ुद उठाया।"

"क्यों ?" साँवले नौजवान ने पूछा। "क्या खर्च उठाने को कोई और नहीं था ?"

"नहीं ही था। बात यह है कि पव्लीश्चेव, जो मेरे वहाँ रहने का सारा ख़र्च दे रहे थे, दो साल हुए मर गए, उसके बाद मैंने अपनी दूर की एक रिश्तेदार मिसेज़ येपांचिना को लिखा जो पीटर्सबर्ग में रहती हैं, लेकिन कोई जवाब नहीं आया। यह हालत हो जाने पर मैं वापस आ गया हूँ।"

"किसके पास आ गए ?"

"आपका मतलब है मैं ठहरूँगा कहाँ ?...तो, सच बात यह है कि इसका पता तो मुझे भी नहीं।...कहीं..."

"अभी तक कोई फ़ैसला नहीं किया है न आपने ?"

यह कहकर उससे बातचीत करनेवाले दोनों आदमी फिर ठहाका मारकर हँस पड़े।

"और क्या आपका सारा माल-मता इसी पोटली में है ?" साँवले आदमी ने पूछा।

"मैं शर्त बदने को तैयार हूँ कि बात यही है," लाल नाकवाला सरकारी नौकर बड़े सन्तोष के भाव से बीच में बोल पड़ा, "और इन हज़रत का कोई सामान ब्रेकवान में भी नहीं है, हालाँकि ग़रीबी कोई अपराध नहीं है, यह याद रखिएगा।"

पता यह चला कि सचमुच था भी ऐसा ही–सुनहरे बालोंवाले नौजवान ने फ़ौरन इस बात को मान लिया।

"लेकिन आपकी पोटली का अपना महत्त्व है," जब वे जी भरकर हँस चुके तो सरकारी अफ़सर ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। (अजीब बात तो यह थी कि पोटली का मालिक उन लोगों को देखकर आख़िरकार खुद भी हँसने लगा, जिसकी वजह से उन्हें और भी मज़ा आने लगा), "और हालाँकि मैं इस बात पर भी शर्त लगाने को तैयार हूँ कि उस पोटली में सोने और चाँदी के सिक्कों की गड्डियाँ नहीं भरी हैं, न फ्रांसीसी, न जर्मन और न ही रूसी–इस बात का पता उन गेटरों से ही चलता है जो आपके विदेशी जूतों पर लगे हुए हैं–लेकिन...मुझे पूरा यक़ीन है कि अगर हम आपकी पोटली के साथ मिसेज़ येपांचिना जैसी मानो आपकी रिश्तेदार को भी जोड़ दें, तो इसका महत्त्व ही कुछ दूसरा हो जाएगा; अलबत्ता, यह शर्त तो हमेशा लगी ही रहेगी कि मिसेज़ येपांचिना सचमुच आपकी रिश्तेदार हैं और आपसे अपनी ख़ब्तुलहवासी में भूल नहीं हो गई है...जैसा कि लोगों के साथ...यों समझ लीजिए...कल्पना के घोड़े ज़रूरत से ज़्यादा दौड़ाने की वजह से होता है।"

"आप फिर ताड़ गए," सुनहरे बालोंवाला नौजवान बीच में बोल पड़ा, "क्योंकि सचमुच मुझसे एक भूल-सी हो गई है, मेरा मतलब है कि मुश्किल से ही उन्हें मेरा रिश्तेदार कहा जा सकता है, इसलिए, दरअसल, जब उन्होंने मेरे ख़त का कोई जवाब नहीं दिया तो मुझे कोई ताज्जुब नहीं हुआ। सच पूछिए तो मुझे पहले ही से इस बात का अन्दाजा था।"

"डाक के पैसे बेकार ख़राब किए। हाँ...बहरहाल, आप दिल के बहुत भोले हैं और साफ़ बात कहते हैं, और यह बहुत बड़ी खूबी है ! हाँ...जहाँ तक जनरल येपांचिन का सवाल है तो मैं उन्हें बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। बात यह है कि शहर में सभी उन्हें जानते हैं। और स्वर्गीय पव्लीश्चेव साहब को भी, जिन्होंने आपको स्विट्ज़रलैण्ड में रखा, मैं बहुत अच्छी तरह जानता था अगर आप निकोलाई अन्द्रेयेविच पव्लीश्चेव की बात कर रहे हैं, क्योंकि उस नाम के दो आदमी हैं जो एक-दूसरे के रिश्ते के भाई हैं। उनमें से एक अब भी क्राइमिया में रहते हैं। स्वर्गीय पव्लीश्चेव साहब बहुत ही योग्य आदमी थे, ऊँचे से ऊँचे लोगों के साथ उनके सम्बन्ध थे। अपने ज़माने में उनके पास चार हज़ार भू-दास थे।..."

"ठीक बात है, उनका नाम निकोलाई अन्द्रेयेविच पव्लीश्चेव ही था," नौजवान ने कहा और यह जवाब देने के बाद उसने बड़े ध्यान और उत्सुकता से उस लाल बुझक्कड़ की ओर देखा।

इस तरह के लाल बुझक्कड़ कभी-कभी—सच पूछिए तो अक्सर—समाज के एक ख़ास वर्ग में पाए जाते हैं। उन्हें हर बात मालूम रहती है, और उनके दिमागों की बेचैन जिज्ञासा का और उनकी समस्त क्षमताओं का झुकाव बरबस एक ख़ास दिशा में ही बना रहता है, जिसकी वजह बेशक यह होती है, जैसा कि आधुनिक विचारक मानते हैं, कि इससे अधिक महत्त्वपूर्ण और बुनियादी उनकी कोई और न रुचियाँ होती हैं न दृष्टिकोण। फिर भी "उन्हें हर बात मालूम रहती है" शब्दों का अर्थ यह समझा जाना चाहिए कि उनका ज्ञान बहुत सीमित रहता है, मिसाल के लिए, कोई ख़ास आदमी किस सरकारी विभाग में नौकर है, उसके दोस्त और जान-पहचान के लोग कौन-कौन हैं, उसकी हैसियत क्या है, वह किस सूबे का गवर्नर है, उसकी बीवी कौन है, वह अपने साथ कितना बड़ा दहेज लेकर आई थी, उसके सगे और रिश्ते के चाचा, मामा, फूफा, मौसा के बेटे कौन-कौन हैं, आदि-आदि—इस तरह की सारी बातें। इस तरह के लाल बुझक्कड़ ज़्यादातर मैले-कुचैले पुराने कपड़े पहने घूमते रहते हैं और उनके वेतन सत्रह रूबल महीने से अधिक नहीं होते। ज़ाहिर है, जिन लोगों के अनन्यतम भेदों की उन्हें जानकारी रहती है उनके लिए इस बात की कल्पना करना भी मुश्किल होता कि इसमें उनका क्या उद्देश्य हो सकता है, फिर भी उनमें से बहुत-से लोगों को इस जानकारी से, जो एक अच्छे ख़ासे विज्ञान के बराबर होती है, पूरी तसल्ली मिलती है, और यह उनके लिए आत्म-सम्मान का और यहाँ तक कि आत्मिक सन्तोष का भी स्रोत होती है। वास्तव में, यह एक रोचक विज्ञान है। मैं ऐसे विद्वानों, साहित्यकारों, कवियों और राजनीतिज्ञों को जानता हूँ जिन्होंने इस विज्ञान में मन की शान्ति और अपनी उच्चतम महत्त्वाकांक्षाओं की तुष्टि खोजी है और पाई भी है, और जिन्हें जीवन में जो भी प्रतिष्ठा मिली है वह इसी की बदौलत।

इस पूरी बातचीत के दौरान साँवला नौजवान जम्हाइयाँ लेता रहा, खिड़की के बाहर निरुद्देश्य देखता रहा, और अधीरता से यात्रा समाप्त होने की प्रतीक्षा करता रहा। वह विचारों में खोया हुआ था, बुरी तरह खोया हुआ था और न जाने क्यों कुछ परेशान-सा लगता था, और सच पूछा जाए तो उसका आचरण रह-रहकर कुछ विचित्र होता जा रहा था—कभी-कभी ऐसा लगता था कि शब्द उसके कानों में तो पड़ रहे हैं लेकिन वह सुन नहीं रहा है, कि वह देख तो रहा है लेकिन उसे कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा है, और जब वह हँसता है तो अकसर उसे यह पता नहीं रहता या याद नहीं रहता कि वह किस बात पर हँस रहा है।

"माफ़ कीजिएगा, जनाब," मुँहासोंदार चेहरेवाले सज्जन ने अचानक सुनहरे बालोंवाले उस नौजवान को, जिसके हाथ में छोटी-सी पोटली थी, सम्बोधित करते हुए कहा, "आपकी तारीफ़..."

"प्रिंस लेव निकोलायेविच मीश्किन," नौजवान ने पूरी तत्परता से उत्तर दिया।

"प्रिंस मीश्किन ? लेव निकोलायेविच ? माफ़ कीजिएगा, जनाब, मुझे इसकी जानकारी नहीं है। दरअसल, मैंने पहले कभी सुना भी नहीं है।" सरकारी नौकर ने विचारमग्न-सा होकर जवाब दिया। "ज़ाहिर है, मेरा मतलब नाम से नहीं है। यह नाम तो ऐतिहासिक है। आपको करम्जीन के 'इतिहास' में भी मिल जाएगा। यक़ीनन मिल जाएगा। मैं, जनाब, निजी तौर पर आपके बारे में कह रहा हूँ। इसके अलावा आजकल मीश्किन-परिवार का कोई आदमी कहीं मिलता नहीं। उनका कहीं चर्चा तक सुनाई नहीं देता।"

"बेशक !" प्रिंस ने तुरन्त जवाब दिया। "मेरे अलावा अब कोई प्रिंस मीश्किन बचा ही नहीं है। मैं समझता हूँ कि मैं ही आख़िरी हूँ। जहाँ तक हमारे बाप-दादा का सवाल है, तो उनमें से कुछ किसान भी थे, लेकिन मेरे बाप फ़ौज में सेकंड लेफ़्टिनेंट थे। उन्होंने फौज़ी कॉलेज में शिक्षा पाई थी। लेकिन मुझे इसका कुछ भी पता नहीं कि मिसेज़ येपांचिना किस तरह प्रिंसेस मीश्किना वनीं, वह भी आख़िरी हैं।"

"हः-हः-हः !" सरकारी नौकर हीं-हीं करके हँसा। "आख़िरी हैं ! हः-हः ! क्या ख़ूब बात निकाली आपने।"

साँवला आदमी भी हँस दिया। सुनहरे बालोंवाले आदमी को इस बात पर कुछ आश्चर्य हुआ कि उसने दो-मानी बात कह दी थी, हालाँकि वह कुछ कमज़ोर ही थी।

"देखिए, मैंने बिना सोचे ही कह दिया था," उसने आश्चर्यचकित होकर आख़िरकार समझाते हुए कहा।

"अरे, ज़ाहिर है, साहब, यह तो ज़ाहिर ही है !" सरकारी नौकर ने चुहल करते हुए सहमति प्रकट की।

"अपने उस प्रोफ़ेसर से आपने बहुत-कुछ पढ़ा भी होगा, है न, प्रिंस ?" साँवलेवाले ने अचानक पूछा।

"जी हाँ...पढ़ा तो है।..."

"और मैंने कभी कुछ नहीं पढ़ा।"

"अरे, मैंने भी बहुत थोड़ा ही पढ़ा है," प्रिंस ने मानो किसी अपराध की क्षमा माँगते हुए कहा। "बीमारी की वजह से मुझे बाक़ायदा कुछ पढ़ाना नामुमकिन साबित हुआ।"

"रोगोझिन-परिवार को जानते हैं ?" साँवलेवाले ने जल्दी से पूछा।

"जी नहीं, नहीं जानता, बिलकुल नहीं। बात यह है कि मैं रूस में बहुत ही थोड़े लोगों को जानता हूँ। क्या आप ही रोगोझिन हैं ?"

"जी हाँ, मैं रोगोझिन हूँ, पर्फ़्योन।"

"पर्फ़्योन ? आप उस रोगोझिन-परिवार के तो नहीं हैं ?..." सरकारी नौकर ने ज़्यादा रौब से कहना शुरू किया।

"हाँ, हाँ, उसी का," साँवले आदमी ने जल्दी से और अशिष्ट अधीरता से उसकी बात काटते हुए कहा, उसने मुँहासोंदार चेहरेवाले सरकारी नौकर को एक बार भी सम्बोधित नहीं किया था, वल्कि शुरू से ही सिर्फ़ प्रिंस से बोलता रहा था।

"यह...कैसे हो सकता है ?" सरकारी नौकर ने चकित होकर कहा; उसे मानो काठ मार गया, उसकी आँखें लगभग अपने कोटरों से बाहर निकल पड़ीं। और उसके पूरे चेहरे पर श्रद्धा, ताबेदारी और, सच कहा जाए तो, भयभीत हो उठने का भाव छा गया। "आपका मतलब है, जनाब, कि

आप व्यापारी सेम्योन पर्फ़्योनोविच रोगोज़िन के बेटे हैं, जो माने हुए खानदानी नागरिकों में से थे, जिनका देहान्त अभी एक महीने पहले हुआ और जो अपने पीछे पच्चीस लाख रूबल नक़द की दौलत छोड़ गए हैं ?"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह पच्चीस लाख रूबल नक़द की दौलत छोड़ गए हैं ?" साँवले नौजवान ने सरकारी नौकर की ओर एक नज़र डालने तक की कृपा किए बिना उसकी बात काटते हुए कहा। "देखिए तो इसे !" उसने आँख मारकर सरकारी नौकर की तरफ़ इशारा करते हुए प्रिंस से कहा। "आख़िर ये लोग इस तरह तलुये चाटकर क्या हथियाना चाहते हैं ? लेकिन यह बात बिलकुल सच है कि मेरे बाप मर चुके हैं और मैं उनकी मौत के महीने-भर बाद प्स्कोव से ऐसी हालत में लौट रहा हूँ कि पाँवों पर ढंग के जूते तक नहीं हैं। मुझे कुछ भी नहीं भेजा उन लोगों ने, कुछ भी नहीं, न मेरे बदमाश भाई ने और न मेरी माँ ने, न पैसा भेजा और न ही इसके बारे में एक शब्द लिखा कि आख़िर हुआ क्या था ! जैसे मैं कोई कुत्ता हूँ ! पूरे एक महीने से प्स्कोव में बुखार में पड़ा था, सचमुच !..."

"और अब दस लाख से ज़्यादा की रक़म मिल जाएगी, कम से कम इतनी तो होगी ही, भगवान की माया है !" सरकारी नौकर ने अपने दोनों हाथ मलते हुए कहा।

"इसे क्या मतलब है इस बात से, आप ही बताइए," एक बार फिर रोगोज़िन ने गुस्से से और चिड़चिड़ाकर सरकारी नौकर की ओर इशारा करते हुए कहा। "अरे, अगर तुम मेरे सामने सिर के बल भी चलो तब भी तुम्हें मुझसे फूटी कौड़ी मिलनेवाली नहीं है।"

"मैं चलूँगा, साहब, मैं सिर के बल चलूँगा !"

"अरे, तुम हो ही क्या ! देखा इसे ? मैं तुम्हें दूँगा कुछ नहीं, रत्ती भर भी कुछ नहीं, चाहे तुम पूरे हफ़्ते मेरे चारों ओर नाचते रहो !"

"न दो, मैं हूँ ही इस लायक़। तुम मुझे कुछ भी न दो। फिर भी मैं तुम्हारे चारों ओर नाचूँगा। मैं अपने बीवी-बच्चों को छोड़ दूँगा और तुम्हारे चारों ओर नाचूँगा। मेरे साथ इतना एहसान करो, बस इतना एहसान !"

"उफ़, भाड़ में जाओ तुम !" साँवले आदमी ने नफ़रत से कहा। "पाँच हफ़्ते पहले," उसने प्रिंस को सम्बोधित करते हुए कहा, "मैं भी आपकी ही जैसी छोटी सी पोटली लेकर अपने बाप के घर से प्स्कोव में अपनी मौसी के यहाँ भाग गया था। वहाँ मुझे बुखार आ गया और मैं बिस्तर से लग गया, और उधर मेरे पीछे बाप मर गए। हाथ-पाँव रह गए थे उनके, उसी में मर गए। उनकी आत्मा को शान्ति मिले, लेकिन उस बार तो उन्होंने मुझे लगभग मार ही डाला था। मैं क़सम खाकर कहता हूँ, प्रिंस ! अगर मैं उस वक़्त भाग न गया होता तो उन्होंने मेरी जान ही ले ली होती।"

"आपने कोई ऐसी बात की होगी जिस पर वह नाराज़ हो गए होंगे, है न ?" प्रिंस ने मामूली लोगों जैसा भेड़ की खालवाला कोट पहने हुए लखपति को विशेष प्रकार की जिज्ञासा से देखते हुए पूछा। भले ही दस लाख की बात में और इतनी बड़ी रक़म उत्तराधिकार में पाने में कुछ उल्लेखनीय रहा हो, लेकिन प्रिंस के आश्चर्य और दिलचस्पी का कारण कुछ और ही था; इसके अलावा, रोगोज़िन ख़ुद किसी वजह से बातचीत करते रहने के लिए कुछ उत्सुक था, हालाँकि किसी से बातें करने की उसकी यह इच्छा नैतिक न होकर यन्त्रवत थी; न जाने क्यों ऐसा लगता था कि इस इच्छा का कारण उसकी आत्मा की निष्कपटता की अपेक्षा उसकी बदहवासी अधिक थी, वह उसकी उद्विग्नता का और उसके लिए किसी की ओर देखते रहने और किसी चीज़ के बारे में ज़बान चलाते रहने की विवशता का परिणाम थी। ऐसा लगता था कि उसे अब भी बुख़ार चढ़ा हुआ था, या,

कम से कम, थोड़ी-बहुत हसरत तो थी ही। जहाँ तक उस सरकारी नौकर [illegible], वह रोगोझिन से चिपक गया था, उसे साँस लेने की भीं हिम्मत नहीं हो रही थी, [illegible] को पकड़कर इस तरह तौल रहा था जैसे कोई हीरा खोज रहा हो।

"नाराज़ तो हो गए थे, यह सच है, और शायद नाराज़ होने के लायक़ मैं था भी !" रोगोझिन ने जवाब दिया। "लेकिन मेरा काम तो तमाम कर दिया मेरे भाई ने। माँ की तो कोई बात नहीं। वह तो बूढ़ी औरत हैं, संतों की जीवनियाँ पढ़ती रहती हैं, अपनी बुढ़ियों के साथ बैठी रहती हैं; मेरे भाई की ही चलती है। उसने मुझे पहले ही ख़बर क्यों नहीं कर दी ? मैं यह अच्छी तरह समझता हूँ। बिलकुल सच है कि उस वक़्त मैं वेहोश पड़ा था। और फिर, उसने तार भेजा भी था। इतना सुना मैंने। लेकिन, लो, तार मेरी मौसी के यहाँ आया। और मौसी क्या है ? वह तीस साल से विधवा हैं और सबेरे से रात तक अपना सारा समय रमते जोगियों के बीच विताती हैं। वह सधुनी नहीं हैं—वह उससे भी बदतर हैं। इसलिए वह तार पाते ही डर गई और खोले विना ही उसे लेकर सीधे थाने चली गईं। वह अब भी वहीं पड़ा होगा। मेरी मदद सिर्फ़ कोनेव ने की, मुझे हर वात का पूरा ब्योरा लिख भेजा उसने। बाप के ताबूत पर से रात को मेरे भाई ने सुनहरे गोटे के फुंदने तक काट लिए; असली सोने के थे। उसने सोचा—दौलत लुट गई होगी इन पर। मैं तो उसे इस हरकत पर साइबेरिया भिजवा देता, क्योंकि यह धर्म के ख़िलाफ़ बात है, सचमुच ! अरे, सुन रहे हो, भुस के पुतले !" वह सरकारी नौकर की ओर मुड़कर बोला। "है न धर्म के ख़िलाफ़ ? मेरा मतलब है, क़ानून की नज़र में ?"

"धर्म के ख़िलाफ़ ! सरासर धर्म के ख़िलाफ़ !" सरकारी नौकर ने फ़ौरन हामी भरी।

"साइबेरिया, बिलकुल साइबेरिया। सीधे साइबेरिया।"

"वे लोग अभी तक समझते हैं कि मैं बीमार हूँ," रोगोझिन कहता रहा। "लेकिन मैं कुछ कहे बिना बीमारी में चुपके से घर से खिसक आया, सीधे ट्रेन पकड़ी और यह लो—जा रहा हूँ : फाटक खोलो, मेरे प्यारे भाई ! वह हमेशा मेरे बारे में बाप के कान भरता रहता था; यह मैं जानता हूँ। लेकिन, यह भी बिलकुल सच है कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की वजह से मैंने बाप का पारा चढ़ा दिया। यह तो मैंने खुद किया। सरासर अपराध मेरा !"

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की वजह से ?" सरकारी नौकर बड़े खुशामदी ढंग से बुदबुदाया; उस वक़्त उसे मानो कोई बात सूझ रही थी।

"अरे, नहीं जानते हो तुम उसे, नहीं !" रोगोझिन अधीर होकर चिल्लाया।

"जानता हूँ, बिलकुल जानता हूँ !" सरकारी नौकर ने विजय गर्व से उत्तर दिया।

"क्या कहा ! अरे, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्नाएँ सैकड़ों हैं। और इतना मैं तुम्हें बता दूँ कि तुम भी बड़े ढीठ कुत्ते की औलाद हो। क़सम से मैं जानता था," वह प्रिंस को सम्बोधित करके कहता रहा, "कि ऐसा ही कोई कमबख्त ढीठ फ़ौरन जोंक की तरह मुझसे चिपक जाएगा !"

"ख़ैर, साहब, शायद मैं उन्हें जानता हूँ, शायद मैं जानता हूँ," सरकारी नौकर ने उत्तेजना से कहा। "लेबेदेव जानता है ! अरे, साहब, अभी तो आप मुझे बुरा-भला कह रहे हैं, लेकिन अगर मैं साबित कर दूँ तो ? लीजिए, यह वही नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना हैं जिनकी वजह से आपके बाप ने आपकी छड़ी से अच्छी तरह ख़बर ली थी। बराश्कोवा, जी हाँ, यह उनका कुलनाम है, वह पैदा भी अच्छे घर में हुई थीं, अपने ढंग की राजकुमारी हैं, और अफ़ानासी इवानोविच तोत्स्की नाम के किसी साहब से उनका कुछ सम्बन्ध है, अकेले उनके साथ; वह ज़मींदार हैं और बहुत रईस आदमी हैं, न जाने कितनी कम्पनियों के डायरेक्टर हैं और इसी वजह से जनरल येपांचिन के बहुत गहरे दोस्त हैं।"

"ओहो, तुम भी खूब हो !" रोगोज़िन ने आख़िरकार सचमुच आश्चर्यचकित होकर कहा। "अरे, मारा गया मैं, यह तो सचमुच जानता है !"

"सब कुछ जानता है ! लेबेदेव सब कुछ जानता है ! अरे, साहब, मैं अलेक्साश्का लिख़चोव के साथ दो महीने तक इधर-उधर घूमा-फिरा था; और यह भी उसके बाप के मरने के बाद, मुझे सब मालूम है, सारी अन्दर-बाहर की बातें। सच पूछिए तो नौबत यहाँ तक पहुँच गई थी कि लेबेदेव के बिना वह कहीं हिलकर भी नहीं जाता था। अब वह क़र्ज़दारों के जेल में है, लेकिन उससे पहले मुझे आरमांस और कोराली और प्रिंसेस पात्स्काया और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के बारे में जानने का पूरा मौक़ा मिला; और शायद ही कोई बात ऐसी होगी, साहब, जिसे जानने का मुझे मौक़ा न मिला हो।"

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ? क्यों, क्या वह और लिख़चोव..." रोगोज़िन ने गुस्से से उसे घूरा; उसके होंठ तक पीले पड़ गए थे और काँपने लगे।

"कुछ भी न-नहीं ! बिलकुल कुछ नहीं !" सरकारी नौकर ने फ़ौरन अपने आपको सम्भालते हुए जल्दी से कहा। "लिख़चोव जो कुछ चाहता था वह उसे किसी भी क़ीमत पर न मिल सका। वह बिलकुल आरमांस जैसी नहीं हैं; तोत्स्की के अलावा कोई नहीं। शाम को वह बोल्शोई या फ्रेंच थिएटर में जाकर अपने बॉक्स में बैठ जाती हैं, शरीफ़ आवारा लोग उनके बारे में भले ही तरह-तरह की बातें उड़ाते हों, लेकिन वे भी कुछ साबित नहीं कर पाते। वे बस इतना ही कह पाते हैं, यह वही नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना हैं, बस, इससे ज़्यादा कुछ नहीं। क्योंकि इससे ज़्यादा सचमुच कुछ है भी नहीं।"

"बिलकुल यही बात है," रोगोज़िन ने माथे पर बल डालकर उदास भाव से पुष्टि की। "ज़ल्योजेव ने भी उस वक़्त मुझे यही बताया था। मैं तब, प्रिंस, अपने बाप का तीन साल पुराना ओवरकोट पहने भागकर नेव्स्की एवेन्यू पार कर रहा था कि इतने में वह दुकान से निकली और अपनी गाड़ी पर बैठ गई। मैं तो बस वहीं ढेर हो गया। इसके बाद मैं ज़ल्योजेव से मिला—उसमें और मुझमें ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है, किसी हज्जाम की दुकान में काम करनेवाले की तरह छैला बना रहता है, एक आँख पर बिना कमानी का चश्मा चिपकाए रहता है, जबकि हम अपने बाप के यहाँ तारकोल में सने जूते पहने टहलते रहे, और हमें खाने को बस करमकल्ले का पतला-सा सूप नसीब हुआ। ख़ैर, वह तुम्हारे जोड़ की नहीं है, यह बोला। वह है राजकुमारी, वह बोला, और उसका नाम है नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, और उसका कुलनाम है बराश्कोवा, और वह तोत्स्की के साथ रहती है, वह बोला, और अब तोत्स्की की समझ में नहीं आ रहा है कि उससे पीछा कैसे छुड़ाएँ, क्योंकि, वह बोला, अब वह होने को आए—पूरे पचपन साल के—और वह चाहते हैं शादी करना शहर की एक सबसे रूपवती सुन्दरी से। तभी उसने मेरे दिमाग़ में यह बात डाली थी कि आज बोल्शोई थिएटर के बैले में तुम नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को देख सकते हो, वह अपने बॉक्स में बैठी होंगी। ख़ैर, हमारे बाप के साथ यह सब नहीं चलता—वह मेरी हड्डी-पसली एक कर देते। लेकिन मैं किसी तरह चोरी-छुपे एक घंटे के लिए गया और मैंने नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को एक बार फिर देखा। उस रात मैंने आँखों में रात काटी। अगले दिन सुबह मेरे बाप ने मुझे पाँच फीसदी सूदवाली दो सरकारी हुंडियाँ दीं। जाकर इन्हें भुना लेना, वह मुझसे बोले, और साढ़े सात हज़ार रूबल अन्द्रेयेव के दफ़्तर में पहुँचा देना और बाक़ी लाकर मुझे दे देना। रास्ते में कहीं रुकना नहीं। मैं तुम्हारी राह देखूँगा, वह बोले। ख़ैर, मैंने हुंडियाँ भुनाईं, पैसा लिया, लेकिन अन्द्रेयेव के दफ़्तर मैं गया ही नहीं। इसके बजाय मैं सीधे अंग्रेज़ी दुकान में गया और सारे पैसे से एक जोड़ कानों की बालियाँ खरीदीं

जिनमें एक-एक में बादाम के बराबर का हीरा था। मेरे पास जितनी रक़म थी उससे चार सौ रूबल ज़्यादा क़ीमत आई, लेकिन मैंने उन्हें अपना नाम बता दिया और उन्होंने मुझ पर भरोसा कर लिया। इसके बाद मैं बालियाँ लेकर सीधा ज़ल्योजेव के पास गया। जो कुछ मैंने किया था वह सब उसे बता दिया और उससे कहा, चलो, यार, मेरे साथ नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ चलो। सो हम दोनों चल पड़े। उस वक़्त मेरे पाँव के नीचे क्या था, सामने क्या था और इधर-उधर क्या था—इसका मुझे न कुछ पता है और न कुछ याद ही है। सीधे उसके ड्राइंग-रूम में गए हम लोग। वह ख़ुद हम लोगों से मिलने आई। उस वक़्त मैंने बताया नहीं कि मैं कौन हूँ। इसलिए ज़ल्योजेव ने ही कहा, 'पर्फ़्योन रोगोझिन से कल आपसे उसकी मुलाक़ात की याद में मेहरबानी करके यह ले लीजिए।' सो उसने पैकेट खोला, एक नज़र बालियों को देखा, और व्यंग में मुस्करा दी। 'इस मेहरबानी के लिए,' वह बोली, 'अपने दोस्त रोगोझिन का मेरी तरफ़ से शुक्रिया अदा कर दीजिए।' और विदा लेकर वह चली गई। हे भगवान, मैं वहीं मर क्यों नहीं गया ! क्योंकि, देखिए, मैं वहाँ गया ही इसलिए था कि मैंने अपने मन में सोचा था कि मैं जिन्दा तो यों भी नहीं लौटूँगा ! लेकिन जिस बात का मैंने सचमुच बुरा माना वह यह थी कि उस सुअर जल्योजेव ने सारा सेहरा अपने सिर ले लिया। मैं हूँ भी छोटे क़द का, कपड़े भी हलवाहों जैसे पहने था; और फाड़-फाड़कर उसे घूरता रहा। मैंने मुँह तक नहीं खोला। क्योंकि मुझे सचमुच इतनी शरम आ रही थी, और वह बिलकुल नए फ़ैशन से सज़ा-बना था, उसके बालों में तेल था और लहरें पड़ी हुई थीं, गुलाबी गाल, चारखानेदार टाई; वह उसे रिझा रहा था; मुझे पूरा यक़ीन है कि उसने उसको वही समझा होगा कि वह मैं हूँ। 'ख़ैर,' बाहर निकलते हुए मैं उससे बोला, 'देखो, कोई चक्कर चलाने के फेर में न रहना, समझे,' मैंने कहा, 'वरना...' जवाब में वह हँस दिया—'तुम अब अपने बाप से क्या कहोगे ?' सच बताऊँ, घर जाने के बजाय मेरा इरादा नदी में कूद पड़ने का हो रहा था, लेकिन मैंने सोचा, 'एक ही बात है,' और मैं घर ऐसी हालत में वापस पहुँचा जैसे मुझे मौत की सज़ा सुना दी गई हो।"

"हाय ! उफ़ !" सरकारी नौकर मुँह बना रहा था और सचमुच काँपने तक लगा था। "देखिए," वह प्रिंस की ओर मुड़कर बोला, "इनके स्वर्गीय पिता जी दस रूबल के लिए आदमी का जीना दूभर कर देते, दस हज़ार की तो बात छोड़िए।"

प्रिंस बड़े कौतूहल से रोगोझिन को देख रहा था; रोगोझिन का रंग पहले से भी ज़्यादा पीला पड़ गया था।

"जीना दूभर कर देते थे !" रोगोझिन ने दोहराया। "तुम्हें क्या मालूम है ? फ़ौरन," वह प्रिंस को सम्बोधित करके कहता रहा, "उन्हें सारी बात का पता चल गया। इसके अलावा, ज़ल्योजेव ने जो भी मिला उसे सारा क़िस्सा सुना दिया था। तो मेरे बाप मुझे ऊपरवाले एक कमरे में ले गए और दरवाज़ा अन्दर से बन्द करके पूरे एक घंटे मेरी ख़बर लेते रहे। 'यह तो,' वह मुझसे बोले, 'अभी नमूना है, क्योंकि मैं अभी लौटकर आऊँगा, तुम्हें गुड-नाइट कहने।' फिर क्या किया उन्होंने ? वह सीधे नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ गए, जी हाँ, बड़े मियाँ गए वहाँ, ज़मीन तक झुक-झुककर उसके सामने गिड़गिड़ाए और रोए। आख़िरकार वह जाकर डिबिया ले आई और उनके मुँह पर दे मारी। 'ये रहीं तेरी बालियाँ, खूसट बूढ़े,' वह बोली। 'अब मेरी नज़रों में इनकी क़ीमत दस गुनी बढ़ गई है, यह जानकर कि पर्फ़्योन ने अपने लिए कितना जोखिम उठाकर इन्हें हासिल किया था। पर्फ़्योन सेम्योनोविच से मेरा सलाम कह देना,' वह बोली, 'और मेरी तरफ़ से उसका शुक्रिया अदा कर देना।' ख़ैर, इसी बीच मैंने अपनी माँ का आशीर्वाद लेकर सेर्गेई प्रोतूशिन से बीस रूबल उधार

लिए और रेलगाड़ी पकड़कर प्स्कोव के लिए रवाना हो गया और वहाँ भरे बुखार में पहुँचा। वहाँ बुढ़ियों ने मेरे लिए पवित्र किताबें पढ़ना शुरू कर दिया, और मैं वहाँ नशे की हालत में बैठा रहा। फिर मैंने एक शराबखाने से दूसरे शराबखाने में जाकर अपने बाक़ी पैसे शराब पर खर्च कर दिए और नशे में धुत्त सारी रात सड़क पर पड़ा रहा। सुबह तक मुझे ख़ूब तेज़ बुखार चढ़ आया था और इसी बीच रात को कुत्ते मुझे परेशान करते रहे थे। मुझे मालूम नहीं कि मुझे होश कैसे आया।''

''अच्छी, बहुत अच्छी बात है,'' सरकारी नौकर अपने हाथ आपस में रगड़ते हुए हीं-हीं करके हँसा। ''नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना का सफ़र अब बदल जाएगा ! अब उन बालियों की परवाह कौन करता है ? हम लोग अब ऐसी बालियों से उसका जी खुश कर देंगे...''

''अगर तुम्हारे मुँह से नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के बारे में एक लफ़्ज भी निकला,'' रोगोज़िन ने उसकी बाँह पकड़कर गुस्से से कहा, ''तो, भगवान की क़सम, मैं तुम्हें मारते-मारते अधमुआ कर दूँगा, लिख़चोव के साथ घूमना सब भूल जाओगे !''

''अगर आप मेरी पिटाई करेंगे तो इसका मतलब होगा कि आप मुझे दूध की मक्खी की तरह निकाल नहीं फेंकेंगे। करिए मेरी पिटाई ! पिटाई करके आप गुलाम बना लेंगे।...वाह, लीजिए, हम लोग पहुँच गए !''

सचमुच ट्रेन स्टेशन में प्रवेश कर रही थी। हालाँकि रोगोज़िन ने कहा था कि वह किसी को बताए बिना प्स्कोव से चला आया था लेकिन कई लोग उसका इन्तज़ार कर रहे थे। वे उसे देखकर चिल्लाने लगे और अपनी टोपियाँ हवा में हिलाने लगे।

''हे भगवान, ज़ल्योजेव भी मौजूद है !'' विजयोल्लास भरी और लगभग द्वेषपूर्ण लगनेवाली मुस्कराहट के साथ उन लोगों को देखते हुए रोगोज़िन ने फुसफुसाकर कहा और अचानक प्रिंस की ओर मुड़ा। ''प्रिंस,'' वह बोला, ''न जाने क्यों तुमसे मुझे बहुत लगाव हो गया है। शायद इसलिए कि तुम ऐसे वक़्त पर मिले हो, लेकिन'' (उसने लेबेदेव की ओर इशारा किया) ''मिला तो मैं इससे भी हूँ, लेकिन यह मुझे ज़रा भी अच्छा नहीं लगा। घर चले आना, प्रिंस। मैं तुम्हारे वह सड़ियल गेटर्स उतरवा दूँगा, तुम्हें बढ़िया चितराले की खाल का फ़रकोट पहनाऊँगा, तुम्हारे लिए एक अव्वल दर्जे का फ़्रॉक-कोट बनवा दूँगा साथ में, सफ़ेद वास्कट, या जैसी भी तुम चाहो; मैं तुम्हारी जेबों में पैसा ठूँस दूँगा और—फिर हम लोग नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ चलेंगे ! मेरे यहाँ आओगे न ?''

''इन्कार न कीजिए, प्रिंस,'' लेवेदेव रोबदार और गम्भीर स्वर में बीच में बोल पड़ा। ''ऐसा मौक़ा मत चूकिए ! मत चूकिए !''

''मैं बड़ी खुशी से आऊँगा,'' प्रिंस ने उठकर बड़ी शिष्टता से अपना हाथ रोगोज़िन की ओर बढ़ाते हुए कहा, ''और मुझे इतना पसन्द करने के लिए आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। बहुत मुमकिन है कि मैं आज ही आपसे मिलने आऊँ अगर वक़्त मिला। क्योंकि सच कहूँ तो मुझे खुद आप बहुत अच्छे लगने लगे हैं, ख़ासतौर पर उस वक़्त से जब आप मुझे हीरों की बालियों के बारे में बता रहे थे। आप मुझे उससे पहले भी अच्छे लगे थे हालाँकि आप इतना गुमसुम रहते हैं। उन कपड़ों और फ़र के कोट के लिए भी आपका शुक्रिया जो आपने मुझे देने का वादा किया है, क्योंकि जल्दी ही मुझे कुछ कपड़ों और फ़र के कोट की ज़रूरत पड़ेगी। और इस वक़्त मेरे पास जो पैसा है वह न होने के बराबर है।''

''पैसा होगा—आज ही रात को होगा। आना !''

''होगा, होगा,''—सरकारी नौकर ने उसके शब्दों को दोहराया। ''शाम तक सूरज डूबने से पहले

पैसा मिल जाएगा।"

"अच्छा, प्रिंस, आप औरतों के रसिया तो नहीं हैं ? हों तो मुझे पहले से बता दीजिएगा !"

"मैं न-न-नहीं तो ! बात यह है, मैं...शायद, आप जानते नहीं, लेकिन मैं बचपन से बीमार रहा हूँ। औरतों से कोई पाला नहीं पड़ा।"

"अच्छा," रोगोझिन ने चिल्लाकर कहा, "अगर ऐसी बात है, प्रिंस, तो तुम निरे पवित्र मूर्ख हो, और ऐसे लोगों को भगवान प्यार करता है।"

"और ऐसे लोग ईश्वर का प्रेम पाते हैं," सरकारी नौकर ने बात दोहराते हुए कहा।

"तुम मेरे साथ ही चलो, मुंशी," रोगोझिन ने लेबेदेव से कहा और वे सब लोग डिब्बे से बाहर निकले।

लेबेदेव जो चाहता था वह आख़िरकार उसे मिल गया। शोर मचाती हुई भीड़ थोड़ी ही देर में वोज़्नेसेंस्की एवेन्यू की दिशा में ग़ायब हो गई। प्रिंस को लितेइनाया स्ट्रीट की ओर मुड़ना था। वातावरण में सीलन और नमी थी। प्रिंस ने राहगीरों से रास्ता पूछा—मंज़िल तक पहुँचने के लिए उसे लगभग दो मील चलना था, इसलिए उसने किराए की गाड़ी करने का फ़ैसला किया।

2

जनरल येपांचिन लितेइनाया स्ट्रीट से थोड़ी ही दूर ट्रांसफ़िगरेशन चर्च की ओर अपने निजी मकान में रहते थे। इस (बहुत ही बढ़िया) मकान के अलावा, जिसके छह में से पाँच हिस्से किराए पर चढ़े हुए थे, जनरल साहब के पास सदोवाया स्ट्रीट में एक और बहुत बड़ा मकान था और उससे भी उनकी बहुत आमदनी होती थी। इन दो मकानों के अलावा, पीटर्सबर्ग के पास ही उनकी बहुत-सी ज़मीन-जायदाद थी जिससे बहुत पैसा आता था, और फिर पीटर्सबर्ग जिले में उनकी किसी क़िस्म की एक फैक्टरी भी थी। यह बात किसी से छिपी नहीं थी कि बहुत पहले जनरल साहब का कुछ सरकारी इजारेदारियों के कारोबार में भी दखल रह चुका था। अब कई ठोस हैसियतवाली ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियों के शेयरहोल्डर होने के नाते उनका काफ़ी असर था। उनकी ख्याति यह थी कि वह बहुत धनी थे, बहुत ही सक्रिय कारोबारी जीवन बितानेवाले आदमी थे और समाज के बड़े-बड़े जाने-माने लोगों से उनके सम्बन्ध थे। कुछ क्षेत्रों में, जिनमें उनकी नौकरी भी शामिल थी, उन्होंने ऐसी सफलता पाई थी कि उनके बिना काम ही नहीं चल सकता था। लेकिन इसके साथ ही यह बात भी सभी जानते थे कि इवान फ़्योदोरोविच येपांचिन बिलकुल पढ़े-लिखे आदमी नहीं थे और फौज़ के एक मामूली सिपाही के बेटे थे, यह बादवाली बात निःसन्देह उनका श्रेय बढ़ाने में ही सहायक हो सकती थी, लेकिन समझदार आदमी होने के बावजूद जनरल साहब में कुछ छोटी-मोटी और सर्वथा क्षम्य कमजोरियाँ भी थीं, और वह कुछ विषयों की ओर संकेत किया जाना पसन्द नहीं करते थे। लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि वह बहुत समझदार और होशियार आदमी थे। मिसाल के लिए, यह उनका नियम था कि जहाँ अपने आपको पीछे रखना ही ज़्यादा समझदारी की बात हो वहाँ वह कभी आगे आने की कोशिश नहीं करते थे, और सचमुच बहुत-से लोग उनके इसी विनम्र स्वभाव की वजह से उनकी बड़ी क़द्र करते थे, केवल इस कारण कि वह अपना स्थान जानते थे। काश, चरित्र के पारखियों को इस बात का भी कुछ अनुमान होता कि कभी-कभी जनरल येपांचिन के मन में, जो अपना स्थान इतनी अच्छी तरह जानते थे, क्या-क्या विचार उठते रहते थे ! हालाँकि उन्हें जीवन का व्यावहारिक अनुभव था और उनमें कुछ अत्यन्त सराहनीय गुण थे, लेकिन

वह अपने आपको एक ऐसे आदमी के रूप में प्रस्तुत करना पसन्द करते थे जो स्वयं अपने विचार रखने की अपेक्षा किसी दूसरे के विचारों को पूरा करना कहीं बेहतर समझता है, एक ऐसे आदमी के रूप में जो "खुशामदी हुए बिना वफ़ादार" था और—उस युग के मानदण्डों की कसौटी पर खरा उतरते हुए—एक ऐसे आदमी के रूप में जो सौ फीसदी रूसी था, और सो भी एक सहृदय आदमी। इस सिलसिले में उनके साथ कई हास्यजनक घटनाएँ भी हो चुकी थीं, लेकिन जनरल साहब कभी हताश नहीं हुए थे, हास्यजनक घटनाओं के दौरान भी नहीं। इसके अलावा उनकी क़िस्मत अच्छी थी, ताश में भी, और वह बहुत ऊँचा दाँव लगाकर खेलते थे और अपनी इस तथाकथित छोटी-सी कमज़ोर को छिपाने से बिलकुल जान-बूझकर इंकार करते थे, जो कई वार बहुत आड़े वक़्तों में उनके काम आई थी; इसके विपरीत वह सारी दुनिया के सामने इस कमज़ोरी की नुमाइश करते थे। वह तरह-तरह के लोगों के बीच उठते-बैठते थे, लेकिन हमेशा "हैसियतदार" लोगों के बीच। लेकिन अभी उनके सामने सभी कुछ आने वाला था, अभी उनके पास बहुत समय था, और कभी न कभी तो सब कुछ उनके सामने आना ही था। और फिर, जैसी कि मसल मशहूर है, जनरल साहब की अभी भरी जवानी थी—यानी, वह छप्पन साल के थे, इससे एक दिन भी ज़्यादा नहीं, जो किसी भी परिस्थिति में आदमी की सबसे ज़्यादा फूलने-फलने की उम्र होती है, जिसमें सचमुच ज़िन्दगी शुरू होती है। उनका बहुत अच्छा स्वास्थ्य, अच्छा खासा चेहरा-मोहरा, उनके मजबूत दाँत, उनका गठा हुआ ठोस शरीर, सवेरे दफ़्तर में उनकी व्यस्तता की मुद्रा, शाम को ताश खेलते समय या काउंट के यहाँ उनका खिला हुआ चेहरा—हर चीज़ का उनकी वर्तमान और भावी सफलता में योगदान था और इनमें से हर चीज़ उनकी राह में फूल बिछा रही थी।

जनरल साहब एक फूलते-फलते परिवार के प्रधान थे। यह सच है अब उस परिवार का जीवन फूलों की सेज नहीं रह गया था, लेकिन, इसके विपरीत, उसमें बहुत कुछ ऐसा भी था जिस पर बहुत समय से [illegible] चिरपोषित आशाएँ और मुख्य उद्देश्य बड़ी लगन और उत्साह [illegible] थे। और पिता के उद्देश्य से बढ़कर महत्त्वपूर्ण या उससे अधिक पुनीत जीवन का कौन सा उद्देश्य हो सकता है? अगर आदमी अपने परिवार को नहीं तो फिर किस चीज़ को अपने [illegible]? जनरल साहब के परिवार में उनकी पत्नी और तीन सयानी बेटियाँ थीं। जनरल साहब की शादी हुए बहुत जमाना बीत चुका था। जब वह फ़ौज में लेफ़्टिनेंट ही थे तभी उन्होंने लगभग अपनी ही उम्र की ऐसी लड़की से शादी कर ली थी जो न बहुत पढ़ी-लिखी थी और न बहुत सुन्दर ही, और जो अपने साथ दहेज में कुल पचास भू-दास लाई थी, हालाँकि यह भी सच है कि यही भू-दास जनरल साहब की भावी सम्पन्नता का आधार बने। लेकिन जनरल साहब ने बाद में कभी इतनी जल्दी शादी कर लेने की शिकायत नहीं की, न ही उन्होंने उसकी चर्चा इस तरह तिरस्कारपूर्वक की कि वह उनकी अन्धी जवानी के विवेकहीन लगाव का परिणाम थी, और वह अपनी बीवी की इतनी इज़्ज़त करते थे, और कभी-कभी उससे इतना डरते थे कि यह भी कहा जा सकता था कि वह उससे प्रेम करते थे। जनरल साहब की बीवी जन्म की दृष्टि से प्रिंसेस मीश्किना थीं; मीश्किन घराना ख़ास प्रतिभाशाली न होते हुए भी बहुत प्राचीन था, और उन्हें अपने वंश पर अत्यधिक गर्व था। उस वक़्त के कोई प्रभावशाली सज्जन, जो उस तरह के सरपरस्तों में से थे जिनका सरपरस्ती करने में कुछ लगता नहीं, युवा राजकुमारी के विवाह में दिलचस्पी लेने का राज़ी हो गए। उन्होंने नोजवान अफ़सर के लिए फाटक खोलकर उसे रास्ते पर ढकेल दिया, हालाँकि सच तो यह है कि उस नौजवान को ढकेलने की ज़रूरत भी नहीं थी—बस एक नज़र देख लेना ही काफ़ी होता—वह नज़र बेकार न जाती! कुल मिलाकर,

पति-पत्नी ने अपना लम्बा विवाहित जीवन सुख से साथ-साथ बिताया। जन्मतः एक राजकुमारी और अपने वंशक्रम की अन्तिम कड़ी होने के नाते, और कुछ हद तक शायद अपने निजी सद्गुणों के कारण भी बहुत कम उम्र में ही जनरल साहब की पत्नी ने अपने लिए कुछ प्रतिष्ठित संरक्षिकाएँ ढूँढ़ ली थीं। बाद में जब उनके पति धनवान हो गए और नौकरी में उन्हें बहुत ऊँचा स्थान मिल गया, तव ऊँचे क्षेत्रों में भी वह काफ़ी अपनापन महसूस करने लगी थीं।

इन्हीं अन्तिम वर्षों के दौरान जनरल साहब की तीनों बेटियाँ—अलेक्सान्द्रा, अदेलईदा और अग्लाया—बढ़कर जवान हुईं। यह सच है कि ये येपांचिन जैसे साधारण परिवार की थीं, लेकिन माँ की ओर से उनका सम्बन्ध प्रिंसों के एक परिवार से था; उनके साथ दहेज भी कुछ कम नहीं मिलनेवाला था; उनके बाप आगे चलकर वहुत ऊँचे ओहदे पर पहुँच सकते थे, और—यह वात काफ़ी महत्त्वपूर्ण थी—तीनों बेहद खूबसूरत थीं, अलेक्सान्द्रा भी जो सबसे बड़ी थी और पच्चीस वर्ष की हो चुकी थी। दूसरी तेईस साल की थी और तीसरी अग्लाया अभी कुल बीस साल की थी। सबसे छोटी बेटी सचमुच अनन्य रूपवती थी और ऊँचे समाज में काफ़ी ध्यान आकर्षित करने लगी थी। लेकिन इतनी ही बात नहीं थी—तीनों शिक्षित, समझदार और प्रतिभाशाली थीं। यह बात भी सभी जानते थे कि तीनों को एक-दूसरे से बेहद लगाव था और वे हमेशा एक-दूसरे का पक्ष लेने को तैयार रहती थीं। यहाँ तक सुनने में आया था कि सबसे छोटी बहन की ख़ातिर—जो सारे परिवार की लाड़ली थी—बड़ी बहनों ने कुर्बानियाँ की थीं। समाज में उन्हें न सिर्फ़ दिखावा करना नापसन्द था, बल्कि वे कुछ ज़रूरत से ज़्यादा विनम्र थीं। कोई भी उन्हें दम्भ का और दूसरों की उपेक्षा करने का दोष नहीं दे सकता था, लेकिन इसके साथ ही यह बात भी सभी जानते थे कि वे गर्वीली थीं और अपना मूल्य जानती थीं। सबसे बड़ी बहन संगीत-प्रेमी थी और दूसरीवाली काफ़ी प्रतिभाशाली चित्रकार थी, लेकिन वर्षों तक लगभग किसी को इसका पता भी नहीं था; अभी हाल ही में यह भेद खुला था और सो भी बिलकुल संयोग से। सारांश यह कि लोग तरह-तरह से उनकी सराहना करते थे। लेकिन ऐसे लोग भी थे जो उनके विरोधी भी थे। ये लोग इस बात पर बहुत नाक-भौं सिकोड़ते थे कि उन्होंने इतनी बहुत-सी किताबें पढ़ रखी थीं। इन लड़कियों को शादी करने की कोई जल्दी नहीं थी; और हालाँकि वे समाज को बहुत महत्त्व देती थीं लेकिन इस मामले में वे अति नहीं करती थीं। यह बात इसलिए और भी उल्लेखनीय थी कि जीवन के प्रति उनके बाप के रवैये से, उनके चरित्र से, और उनके उद्देश्यों तथा महत्त्वाकांक्षाओं से सभी लोग परिचित थे।

जब प्रिंस ने जनरल साहब के फ़्लैट की घंटी बजाई उस समय लगभग ग्यारह बजे थे। जनरल साहब मकान की दूसरी मंज़िल पर रहते थे और उनका फ़्लैट कुछ छोटा होने पर भी उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा के सर्वथा अनुकूल था। वर्दी पहने हुए एक नौकर ने दरवाज़ा खोला और प्रिंस को इस आदमी को यह समझाने में काफ़ी समय लगा कि वह कौन था और किस काम से आया था; नौकर शुरू से ही उसे और उसकी पोटली को सन्देह की दृष्टि से देख रहा था। आख़िरकार उसके बार-बार बहुत स्पष्ट शब्दों में यह कहने पर कि वह सचमुच प्रिंस मीश्किन था और उसे जनरल साहब से बहुत ही ज़रूरी काम से मिलना था, चकराया हुआ नौकर उसे छोटे-से प्रवेश-कक्ष में ले गया, जो जनरल साहब के पढ़ने-लिखने के कमरे से मिले हुए स्वागत-कक्ष के सामने था, और वहाँ उसे एक दूसरे नौकर के हवाले कर दिया जो रोज सबेरे इस प्रवेश-कक्ष में ड्यूटी पर रहता था और जनरल साहब को आनेवालों की सूचना देता था। उसकी उम्र चालीस से ऊपर थी, वह फ़्रॉक-कोट पहने था, और सूरत से बहुत व्यस्त मालूम होता था। वह जनरल साहब का निजी ख़िदमतगार था और इसलिए अपने आपको बहुत समझता था।

"स्वागत-कक्ष में जाकर इन्तज़ार कीजिए और अपनी पोटली यहीं छोड़ दीजिए," वह धीरे से और बड़े रोब के साथ अपनी कुर्सी पर बैठ गया और आश्चर्य-भरी कठोर दृष्टि से प्रिंस को देखने लगा, जो अपनी पोटली हाथ में लिए हुए ही उसके बगल में ही एक कुर्सी पर बैठ गया था।

"अगर बुरा न मानो," प्रिंस ने कहा, "तो मैं यहीं तुम्हारे पास बैठकर इन्तज़ार करता हूँ। वहाँ अकेले बैठे-बैठे मैं क्या करूँगा।"

"आपका यहाँ प्रवेश-कक्ष में इन्तज़ार करना ठीक नहीं है, क्योंकि आप मिलने आए हैं, जिसका मतलब है कि आप मेहमान हैं। क्या आप खुद जनरल साहब से मिलना चाहते हैं, साहब ?"

इस तरह के मिलने आनेवाले को अन्दर जाने देने की बात अभी तक नौकर के गले के नीचे नहीं उतरी थी, इसलिए उसने अपना सवाल दोहराने का फ़ैसला किया।

"हाँ, मुझे कुछ काम है..." प्रिंस ने कहना शुरू किया।

"मैं यह नहीं पूछ रहा हूँ कि आपको क्या काम है, साहब। मेरा काम तो बस अन्दर जाकर आपके आने की ख़बर दे देना है। और मैं सेक्रेटरी साहब के बिना आपके आने की ख़बर नहीं दूँगा।"

ऐसा लगता था कि उसका सन्देह लगातार बढ़ता जा रहा था—रोज़ जिस तरह के लोग मिलने आते थे उनसे यह प्रिंस कितना अलग था। और हालाँकि जनरल साहब अकसर लगभग रोज ही एक ख़ास वक़्त पर सभी तरह के लोगों से मिलते थे, ख़ासतौर पर कारोबार के सिलसिले में, लेकिन इस बात का आदी होने पर भी और उसे जो आदेश दिए गए थे उनकी व्यापकता के बावजूद नौकर के मन में गहरा सन्देह था; प्रिंस के आने की सूचना देने से पहले सेक्रेटरी साहब का बीच में पड़ना ज़रूरी था।

"क्या आप सचमुच विदेश से आए हैं, साहब ?" उसने आख़िरकार लगभग अनायास ही पूछा और बौखलाकर चुप हो गया; शायद वह यह पूछना चाहता था : "क्या आप सचमुच प्रिंस मीश्किन हैं ?"

"हाँ, मैं सीधे स्टेशन से आ रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि तुम मुझसे यह पूछना चाहते थे कि क्या मैं सचमुच प्रिंस मीश्किन हूँ, लेकिन शिष्टता के नाते पूछा नहीं।"

"हूँ," नौकर चकित होकर गुर्राया।

"मैं यक़ीन दिलाता हूँ कि मैंने झूठ नहीं बताया है और तुम्हें मेरी वजह से जवाब नहीं देना पड़ेगा। और जहाँ तक मेरे इस तरह के कपड़े पहने होने का और पोटली लिए होने का सवाल है, तो इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं है, क्योंकि बात यह है कि इस वक़्त मेरी हालत कुछ ख़ास अच्छी नहीं है।"

"हूँः !...बात यह है, साहब, कि मुझे चिन्ता इस बात की नहीं है। मेरा काम तो आपके आने की ख़बर देना भर है, और मैं समझता हूँ कि सेक्रेटरी साहब आपसे मिलेंगे अगर आप...अरे, यही तो सारी मुसीबत है, साहब, अगर...माफ़ कीजिएगा, साहब, आप जनरल साहब से पैसा माँगने तो नहीं आए हैं न ?"

"अरे नहीं, बिलकुल नहीं। तुम इस बात की चिन्ता न करो। मेरा काम बिलकुल ही दूसरी तरह का है।"

"माफ़ कीजिएगा, साहब। मैंने इसलिए पूछा कि आपका हुलिया कुछ ऐसा था। मेहरबानी करके कुछ देर सेक्रेटरी साहब की राह देखिए। जनरल साहब इस वक़्त कर्नल साहब के साथ हैं। सेक्रेटरी साहब अभी यहाँ आते ही होंगे—कम्पनी के सेक्रेटरी, साहब।"

"अच्छा, अगर मुझे यहाँ कुछ देर राह देखना ही है तो मुझे यह बताओ कि यहाँ मैं सिगरेट कहाँ पी सकता हूँ ? पाइप और तम्बाकू मेरे पास है।"

"पाइप पिएँगे, साहब ?" नौकर ने प्रिंस को तिरस्कारपूर्ण विस्मय से देखते हुए इस तरह पूछा मानो उसे अपने कानों पर विश्वास न हो रहा हो। "पाइप पिएँगे ? नहीं, साहब, यहाँ तो आप सिगरेट-पाइप कुछ नहीं पी सकते। अरे, साहब, मुझे तो हैरानी होती है कि आपको ऐसी बात सोचते भी शरम नहीं आती। छिः, अजीब बात है।"

"अरे, इस कमरे में नहीं, ज़ाहिर है। यह तो मैं भी जानता हूँ कि यहाँ मैं सिगरेट-पाइप कुछ नहीं पी सकता। मैं किसी दूसरी जगह चला जाता जो तुम मुझे बता देते क्योंकि मुझे पाइप पीने की आदत है, और मैंने तीन घंटे से पाइप नहीं पिया है। बहरहाल, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। एक कहावत है, तुम तो जानते ही होगे, जैसा देश..."

"अरे, मैं आप जैसे आदमी के आने की ख़बर कैसे दे सकता हूँ, साहब ?" नौकर लाख न चाहने पर भी बुड़बुड़ाया। "पहली वात तो यह कि आपको यहाँ बैठा ही नहीं होना चाहिए, बल्कि स्वागत-कक्ष में बैठना चाहिए, क्योंकि आपकी हैसियत मुलाक़ातियों जैसी है, साहब, या यों समझ लीजिए कि मेहमान जैसी, और इस बात के लिए जिम्मेदार ठहराया जाएगा मुझे।...आप यहाँ रहनेवाले तो नहीं हैं, साहब ?" उसने प्रिंस की पोटली को सन्देह की दृष्टि से देखते हुए फिर कहा, जिसकी वजह से वह बहुत परेशान था।

"नहीं, मेरा ख़्याल तो नहीं है ऐसा। अगर वे लोग मुझसे कहें भी तब भी न रहता। मैं तो बस जनरल साहब से जान-पहचान पैदा करने आया हूँ—बस !"

"क्या कहा, साहब, जनरल साहब से जान-पहचान पैदा करने ?" नौकर ने आश्चर्य और दुगने-चौगुने सन्देह से पूछा। "तो फिर आपने शुरू में यह क्यों कहा था कि आप किसी काम से आए हैं ?"

"हाँ, उसे सही माने में काम तो नहीं कहा जा सकता ! मतलब यह, मुझे एक तरह से बेशक उनसे काम ही है, लेकिन मैं बस उनकी सलाह लेना चाहता हूँ। मैं यहाँ ख़ासतौर पर बस अपना परिचय देने आया हूँ, क्योंकि मैं हूँ प्रिंस मीश्किन, और मिसेज़ येपांचिना हैं प्रिंसेस मीश्किना, अपने परिवार की आख़िरी कड़ी, और उनके और मेरे अलावा अब मीश्किन वंश में कोई बचा नहीं है।"

"तो फिर आप उनके रिश्तेदार हैं ?" नौकर ने चौंककर पूछा; वह बिलकुल डरा हुआ-सा लग रहा था।

"ख़ैर, यों तो रिश्तेदार नहीं हूँ, फिर भी अगर बहुत खींचतान कर देखा जाए तो हम लोग एक-दूसरे के रिश्तेदार हैं भी, लेकिन इतने दूर के कि असल में रिश्तेदार माने नहीं जा सकते हैं। मैंने विदेश से मिसेज़ येपांचिना को एक खत लिखा था, पर उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। फिर भी, यहाँ वापस आने पर मैंने उनसे मिल लेना मुनासिब ही समझा। मैं तुम्हें ये सारी बातें अभी इसलिए बता रहा हूँ कि तुम्हारे मन से सारा सन्देह दूर हो जाए, क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुम अभी तक चिन्ता में पड़े हुए हो। बस, अन्दर जाकर ख़बर कर दो कि प्रिंस मीश्किन आए हैं, और यह एलान होते ही मेरे आने की वजह साफ़ हो जाएगी। अगर मुझे मिलने के लिए बुला लिया जाता है तब तो ठीक है; अगर नहीं बुलाया जाता, तब भी शायद ठीक ही है। लेकिन मैं नहीं समझता कि वे लोग मुझसे मिलने से इन्कार कर सकेंगे—मिसेज़ येपांचिना अपने परिवार के अन्तिम और अकेले सदस्य से ज़रूर मिलना चाहेंगी, और जैसा कि मुझे उनके बारे में मालूम हुआ है, उन्हें अपने वंश पर बहुत गर्व है।"

लगता तो यह था कि प्रिंस की बातचीत काफ़ी साधारण थी, लेकिन जितनी ही साधारण होती गई, उतनी ही इस वक़्त वह अनुचित लगती गई, और अनुभवी नौकर ने सहज ही यह महसूस किया कि जो बात एक आदमी और दूसरे आदमी के बीच उचित थी वह मुलाक़ाती और नौकर के बीच बिलकुल उचित नहीं थी। और चूँकि नौकर उससे अधिक समझदार होते हैं जितना कि उनके मालिक उन्हें समझते हैं, इसलिए नौकर के दिमाग़ में यह आया कि इसकी दो ही वजहें हो सकती थीं—या तो प्रिंस कोई भिखमंगा था और वह [illegible] जनरल साहब से पैसा माँगने आया था, या फिर प्रिंस बिलकुल ही बुद्धू था और उसे अपनी प्रतिष्ठा का कोई आभास नहीं था, क्योंकि कोई भी समझदार प्रिंस जिसे अपनी प्रतिष्ठा का आभास होता वह प्रवेश-कक्ष में बैठकर एक नौकर के साथ अपने निजी मामलात की इस तरह चर्चा न करता। कुछ भी हो, उसके बारे में जवाब तो उसी से तलब किया जाएगा !

"फिर भी, साहब," उसने यथासम्भव आदरपूर्वक कहा, "आपको स्वागत-कक्ष में बैठकर ही इन्तज़ार करना चाहिए।"

"क्यों," प्रिंस ने खुलकर हँसते हुए कहा, "अगर मैं वहाँ बैठा इन्तज़ार करता होता तो मैं ये सारी बातें तुम्हें कैसे समझा पाता, है न ? अब जानता हूँ कि तुम अभी तक मेरे लबादे और मेरी पोटली को देखकर परेशान होते रहते। और अब जबकि तुम्हें सेक्रेटरी साहब के आने की राह देखने की भी ज़रूरत नहीं है; तुम सीधे अन्दर जाकर मेरे आने की ख़बर दे सकते हो।"

"मैं सेक्रेटरी साहब के बिना आए ऐसे मुलाक़ाती के आने की ख़बर नहीं दे सकता, ख़ासतौर पर इसलिए कि आज सवेरे ख़ुद जनरल साहब ने मुझे हुक्म दिया है कि जब तक कर्नल साहब उनके साथ हैं तब तक चाहे कोई भी आए, उनको परेशान न किया जाए, और गव्रीला अर्दालिओनोविच बिना ख़बर भिजवाए अन्दर जा सकते हैं !"

"तुम्हारा मतलब है, सरकारी नौकर ?"

"कौन, साहब, गव्रीला अर्दालिओनोविच ? जी नहीं। वह कम्पनी के नौकर हैं। पोटली इधर, साहब।"

"शुक्रिया, बहुत अच्छा। मैं ख़ुद ऐसा करने की सोच रहा था। और मैं अपना लबादा भी उतार दूँ, है न ?"

"हाँ-हाँ, ज़रूर, साहब। आप जनरल साहब के पढ़ने-लिखने के कमरे में लबादा पहनकर तो नहीं जा सकते हैं न ?"

प्रिंस उठ खड़ा हुआ, उसने जल्दी से अपना लबादा उतारा और काफ़ी उम्दा, अच्छा सिला हुआ लेकिन कुछ घिसा हुआ कोट पहने खड़ा रहा। उसकी वास्कट के आर-पार घड़ी की स्टील की ज़ंजीर थी। ज़ंजीर के सिरे पर जेनेवा की बनी हुई चाँदी की घड़ी थी।

हालाँकि प्रिंस बिलकुल बुद्धू था—नौकर ने इसका अपने मन में पक्का फ़ैसला कर लिया था—फिर भी जनरल साहब के निजी सेवक को यह बात अनुचित लगी कि वह उनके एक मुलाक़ाती के साथ बातचीत जारी रखे, इस बात के बावजूद कि न जाने क्यों प्रिंस उसे अच्छा लगने लगा था—अलबत्ता किसी विशेष दृष्टि से। लेकिन एक दूसरे दृष्टिकोण से प्रिंस को देखकर उसके मन में तीव्र क्रोध की भावना भी जागृत होती थी।

"और मिसेज़ येपांचिना के मिलने का वक़्त क्या है ?" प्रिंस ने फिर अपनी जगह बैठते हुए पूछा।

"उसका, साहब, मुझसे कोई सरोकार नहीं। वह अलग-अलग वक़्तों पर लोगों से मिलती हैं,

जैसा मिलनेवाला हो। दर्ज़िन को ग्यारह बजे ही अन्दर आने की इजाज़त मिलती है। [illegible] अर्दालिओनोविच को भी दूसरे लोगों से जल्दी अन्दर जाने की इजाज़त मिल जाती है। [illegible] तो वह सबेरे नाश्ते पर भी मिल लेती हैं।"

"यहाँ के कमरे उससे ज़्यादा गरम हैं जितने कि विदेश में जाड़े में होते हैं," प्रिंस ने अपना मत प्रकट करते हुए कहा। "लेकिन वहाँ बाहर सड़क पर यहाँ के मुकाबले कम ठण्ड रहती है। जिस रूसी को उन लोगों के रहन-सहन की आदत न हो उसके लिए जाड़ों में उनके घरों में रहना लगभग नामुमकिन हो जाता है।"

"वहाँ घरों को गरम नहीं किया जाता ?"

"किया तो जाता है, लेकिन उनके घर बने दूसरे ढंग के होते हैं—मेरा मतलब है उनके आतिशदान और खिड़कियाँ।"

"समझा, साहब। आप बहुत दिन परदेश में रहे, साहब ?"

"चार साल। लेकिन मैंने लगभग सारा वक़्त एक ही जगह रहकर बिताया। देहात में।"

"तब तो आपको यहाँ की हर चीज़ की आदत ही न रह गई होगी, साहब।"

"हाँ, यह सच है। मुझे तो इस बात पर ही बड़ा ताज्जुब होता है कि मैं रूसी बोलना नहीं भूल गया। देखो, इस वक़्त मैं तुमसे बैठा बातें कर रहा हूँ और लगातार मैं यही सोच रहा हूँ—'मैं बहुत बुरी रूसी तो नहीं बोल रहा हूँ'; शायद इसीलिए मैं इतनी ज़्यादा बातें करता हूँ। कल से मेरा जी चाहता रहा है कि बस रूसी बोलता रहूँ।"

"हूँ:। आप पीटर्सबर्ग में पहले भी रह चुके हैं, साहब ?" (लाख चाहने पर भी वह इतनी शिष्ट और विनम्रतापूर्ण बातचीत को जारी रखने से अपने आपको रोक न सका।)

"पीटर्सबर्ग में ? नहीं, न रहने के बराबर, अलावा उसके जब कहीं जाते हुए मैं इधर से गुजरा हूँ। मुझे कुछ भी पता नहीं था कि यहाँ पहले क्या हो रहा था, और अब मुझे बताया गया है कि यहाँ इतनी बहुत-सी नई बातें हो रही हैं कि उन लोगों को, जिन्हें पता है कि क्या हो रहा है, हर बात नए सिरे से सीखना पड़ रही है। यहाँ लोगों के बीच फौज़दारी की नई अदालतों की बड़ी चर्चा है।"

"हुँ:।...अदालतें ! यह तो बिलकुल सच है, साहब, अदालतें तो अदालतें ही हैं। और, साहब, वहाँ परदेश में अदालतें कैसी होती हैं ? उनमें ज़्यादा न्याय होता है ?"

"मालूम नहीं। अपनी अदालतों की अच्छाइयों के बारे में मैंने बहुत कुछ सुना है। देखा, हमारे यहाँ मौत की सज़ा नहीं है।"

"क्या वहाँ लोगों को मौत की सज़ा दी जाती है ?"

"हाँ, दी जाती है। मैंने फ्रांस में लियांस शहर में देखी है। डॉ. श्नाइडर मुझे अपने साथ वहाँ ले गए थे।"

"क्या वहाँ लोगों को फाँसी पर लटका दिया जाता है ?"

"नहीं, फ्रांस में तो सिर काट दिया जाता है।"

"अरे, साहब, क्या बहुत चीख़ता है ?"

"बिलकुल नहीं ! उसमें बस एक क्षण लगता है। आदमी को लिटा दिया जाता है, फिर एक तरह का चौड़ा-सा चाक़ू गिरता है—वहाँ इसे गिलोटीन कहा जाता है। वह भारी चीज़ की तरह बहुत ज़ोर से गिरता है।...एक सेकंड से भी कम में सिर कटकर अलग हो जाता है। भयानक तो उसकी तैयारियाँ होती हैं। जब मौत की सज़ा पढ़कर सुनाई जाती है, आदमी को मारे जाने के लिए तैयार

किया जाता है, उसे बाँधा जाता है, उसे ऊपर तख़्ते पर ले जाया जाता है—भयानक तो यह सब कुछ होता है ! चारों ओर लोगों की, औरतों तक की भीड़ लगी रहती है, हालाँकि वहाँ औरतों का इस चीज़ को देखना पसन्द नहीं किया जाता।"

"यह उनके मतलब की चीज़ ही नहीं है।"

"क़तई नहीं ! क़तई नहीं ! ऐसी तकलीफ़ होती है !...अपराधी अधेड़ उम्र का आदमी था, समझदार, निडर और तगड़ा—उसका नाम था लेग्रो। ख़ैर, तुम्हें विश्वास आए न आए, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब वह आदमी ऊपर तख़्ते पर चढ़ रहा था तब वह रो रहा था। उसका रंग चूने की तरह सफ़ेद पड़ गया था, सचमुच। क्या ऐसा हो सकता है ? है न भयानक बात ? किसी को डर के मारे रोते किसने सुना है ? मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि बड़ी उम्र का आदमी, बच्चा नहीं, डर के मारे रो भी सकता है, वह आदमी जो पहले कभी नहीं रोया था, पैंतालीस साल का आदमी। आत्मा में उस समय क्या उथल-पुथल मची रहती होगी ? सोचो तो, उसे कितनी मानसिक पीड़ा होती होगी। यह आत्मा का सरासर अपमान है, बस और कुछ नहीं ! लिखा है, 'हत्या न करो', क्या अगर उसने हत्या की है तो उसकी हत्या की जाएगी ? नहीं, यह ग़लत बात है। इसे देखे हुए मुझे एक महीना हो चुका है, लेकिन अभी तक यह सब ऐसा दिखाई देता है जैसे यह मेरी आँखों के सामने हो रहा हो। मैं एक दर्जन बार इसे सपने में देख चुका हूँ।"

बोलते-बोलते प्रिंस का जोश बढ़ता गया; उसके पीले चेहरे पर हल्की-सी लाली दौड़ गई, हालाँकि वह हमेशा की तरह शान्त भाव से बोल रहा था। नौकर उसे सहानुभूति-भरी दिलचस्पी से सुन रहा था, जैसे उसकी ओर से ध्यान ही न हटाना चाहता हो, शायद वह भी कल्पनाशील आदमी था, जिसमें तर्क करने की क्षमता थी।

"यह तो अच्छी बात है, साहब," उसने मत प्रकट किया, "कि जब सिर कटकर अलग होता है तब बहुत तकलीफ़ नहीं होती।"

"सुनो," प्रिंस ने उछलकर कहा, "अभी तुमने बताया है कि तुम क्या सोचते हो और तुम्हारी ही तरह सोचनेवाले बहुत-से दूसरे लोग भी हैं, और यह इंजन, गिलोटीन, इसीलिए ईजाद किया गया था। लेकिन उस वक़्त मेरे मन में यह विचार उठा था—यह बदतर हो तो ? तुम इस तरह के विचार को बेतुका और हास्यास्पद समझ सकते हो, लेकिन अगर तुममें कल्पना करने की थोड़ी भी शक्ति है तो तुम इस तरह के विचारों को मन में उठने से रोक नहीं सकते। ज़रा सोचो—मिसाल के लिए, यातना को ही ले लो; तुम्हें कोई तकलीफ़ हो जाती है, घाव हो जाते हैं, शरीर को पीड़ा होती है—ये सारी की सारी चीज़ें मानसिक पीड़ा की ओर से ध्यान हटाती हैं, तो मरने के क्षण तक तुम बस अपने घावों की यातना अनुभव करते हो। लेकिन शायद सबसे बड़ी और सबसे बुरी पीड़ा घावों से नहीं होती, बल्कि इस बात की निश्चित जानकारी से होती है कि एक घंटे में, दस मिनट में, आधे मिनट में, अभी, इसी क्षण तुम्हारी आत्मा शरीर से निकलकर उड़ जाएगी, और तुम इंसान नहीं रह जाओगे, और यह कि यह बात निश्चित है; मुख्य बात है कि यह निश्चित है। ठीक उस समय जब तुम अपना सिर चाक़ू के नीचे रखते हो और तुम्हें सरककर नीचे तुम्हारे सिर की ओर आते हुए चाक़ू की सनसनाहट सुनाई देती है—पल का वही अंश तो सबसे ज़्यादा भयानक होता है। यह मेरी कोरी कल्पना नहीं है, बल्कि बहुत-से लोग यही बात कह चुके हैं। मुझे इसका इतना विश्वास है कि मैं तुम्हें साफ़-साफ़ बता दूँगा कि मैं क्या सोचता हूँ। हत्या के बदले में किसी की जान लेना अपराध से कहीं बड़ी सज़ा है। सज़ा के लिए की जानेवाली हत्या उस हत्या से कहीं ज़्यादा भयानक होती है जो कोई बटमार करता है। जो आदमी बटमारों के हाथों मारा जाता है

उसकी हत्या रात के समय जंगल में या ऐसी ही किसी और जगह होती है, और आख़िरी क्षण तक उसे उम्मीद बनी रहती है कि वह बच जाएगा। ऐसी मिसालें मिलती हैं जब किसी आदमी का गला काटा जा चुका था, और वह फिर भी उम्मीद कर रहा था, या भाग रहा था या गिड़गिड़ा रहा था। लेकिन यहाँ तो यह सारी आख़िरी उम्मीद, जिसकी वजह से मरना दस गुना आसान हो जाता है, निश्चित रूप से छीन ली जाती है; यहाँ तो तुम्हें मौत की सज़ा सुना दी गई है, और सारी भयानक पीड़ा तो इस बात की वजह से होती है कि तुम इससे हरगिज़ बच नहीं सकते, और इससे बढ़कर पीड़ा कोई दूसरी नहीं होती। किसी सिपाही को लड़ाई में तोप के सामने खड़ा कर दो और उस पर गोला दागो, वह फिर भी उम्मीद करता रहेगा, लेकिन उसी सिपाही को निश्चित रूप से मौत की सज़ा सुना दो तो वह या तो पागल हो जाएगा या फूट-फूटकर रोने लगेगा। कौन कहता है कि मनुष्य की प्रकृति इसे पागल हुए बिना सहन कर सकती है। यह क्रूर, वीभत्स, अनावश्यक और व्यर्थ का अपमान क्यों ? हो सकता है कि ऐसा आदमी हो जिसे मौत की सज़ा सुना दी गई हो और उसे इस यातना से होकर गुजरने का समय भी दे दिया गया हो और तब उससे कहा गया हो—'अब जा सकते हो, तुम्हें माफ़ कर दिया गया।' इस तरह का आदमी शायद हमें बता सकता है। इसी तरह की यातना और ऐसे ही भयानक अनुभव की चर्चा ईसा ने की थी। नहीं, आदमी के साथ इस तरह का बर्ताव नहीं किया जा सकता।"

हालाँकि वह नौकर इन सारी बातों को उन्हीं शब्दों में नहीं कह सकता था जिनमें प्रिंस ने बयान किया था, फिर भी सब कुछ उसकी समझ में भले ही न आया हो लेकिन उसकी सबसे मूल बात उसकी समझ में आ गई थी, और यह उसके चेहरे के भाव से ही लगता था जो बहुत विचलित हो उठा था।

"मैं समझता हूँ कि आप पाइप पी सकते हैं, साहब," वह बोला, "अगर आपको ऐसी ही तलब लगी है, लेकिन झटपट सारा काम पूरा कर देना होगा। क्योंकि अगर अचानक आपको पूछा जाएगा और आप यहाँ न हुए तो ? वह वहाँ, सीढ़ियों के नीचे, आपको दरवाज़ा दिखाई देता है न ? तो, उस दरवाज़े से अन्दर जाने पर दाहिनी ओर आपको एक छोटा-सा कमरा दिखाई देगा। वहाँ हो सकता है, बस इतना कीजिएगा कि छोटीवाली खिड़की खोल दीजिएगा, क्योंकि हुक्म नहीं है कि..."

लेकिन प्रिंस को जाकर पाइप पीने का मौक़ा ही नहीं मिला। एक नौजवान आदमी अपने हाथों में कुछ काग़ज़ लिए हुए अचानक प्रवेश-कक्ष में आया। नौकर उसे फ़र का कोट उतारने में मदद देने लगा। नौजवान ने कनखियों से प्रिंस पर एक नज़र डाली।

"गव्रीला अर्दालिओनोविच, यह सज्जन," नौकर ने राजदारी और कुछ बेतकल्लुफ़ी से कहना शुरू किया, "कहते हैं कि वह प्रिंस मीश्किन हैं और मालकिन के रिश्तेदार हैं। यह अभी विदेश से रेलगाड़ी से आए हैं, हाथ में वह छोटी-सी पोटली लिए हुए लेकिन..."

प्रिंस बाक़ी वाक्य नहीं सुन पाया क्योंकि नौकर कान में फुसफुसाकर बोलने लगा था। गव्रीला अर्दालिओनोविच प्रिंस को बड़ी दिलचस्पी से देखते हुए ध्यान से सुनता रहा। आख़िरकार वह नौकर की बात सुनना बन्द करके अधीरता से प्रिंस की ओर बढ़ा।

"आप प्रिंस मीश्किन हैं ?" उसने बेहद शिष्टता और मिलनसारी से पूछा। वह बहुत ही खूबसूरत नौजवान था; वह भी अट्ठाईस साल का था, छरहरा बदन, सुनहरे बाल, दरमियाना क़द, छोटी-सी नुकीली दाढ़ी, और बहुत ही खूबसूरत चेहरा, जिससे समझदारी टपकती थी। बस उसकी मुस्कराहट, तमाम मिलनसारी के बावजूद, कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ही अच्छी थी और उसके कुछ

ज़्यादा ही चमकदार और सिजल दाँतों की कतार दिखाई देने लगती थी; सारी मस्ती और प्रकट अच्छे स्वभाव के बावजूद, उसकी आँखों का देखने का ढंग कुछ ज़रूरत से ज़्यादा पैना और बेधनेवाला था।

"शायद जब यह अकेला होता होगा तब बिलकुल इस तरह नहीं देखता होगा और बिलकुल मुमकिन है कि वह कभी हँसता ही न हो," प्रिंस ने अनायास ही महसूस किया।

प्रिंस ने थोड़े-से शब्दों में जो कुछ वह समझा सकता था समझा दिया, लगभग उन्हीं शब्दों में जिनमें उसने नौकर को और उससे पहले रोगोझिन को बताया था। ऐसा प्रतीत हुआ कि इसी बीच वह नौजवान कुछ याद करने की कोशिश कर रहा था।

"आप ही थे न," उसने पूछा, "जिन्होंने साल भर पहले, या शायद इतने ज़्यादा दिन नहीं हुए, स्विट्ज़रलैण्ड से मिसेज़ येपांचिना को एक खत भेजा था !"

"जी हाँ।"

"तब तो यहाँ लोग आपके बारे में जानते हैं और यक़ीनन उन्हें आपकी याद होगी। आप जनरल साहब से मिलना चाहते हैं ? मैं अभी खबर किए देता हूँ।...वह एक मिनट में खाली हो जाएँगे। बस, बात यह है कि...मेरा मतलब है...आपको दरअसल स्वागत-कक्ष में बैठकर इन्तज़ार करना चाहिए। यह साहब यहाँ क्यों हैं ?" उसने नौकर से कठोरता से पूछा।

"मैंने आपको बताया न, साहब, इन्हें खुद यहाँ बैठना ज़्यादा पसन्द था।..."

उसी क्षण पढ़ने के कमरे का दरवाज़ा खुला और एक फ़ौजी अफ़सर बग़ल में ब्रीफ-केस दबाए, ज़ोर-ज़ोर से बातें करता हुआ और विदा लेता हुआ अन्दर से निकला।

"तुम आ गए, गान्या ?" पढ़ने के कमरे के अन्दर से किसी ने पुकारकर कहा। "ज़रा अन्दर आना !"

गान्या ने प्रिंस की ओर देखकर सिर हिलाया और जल्दी से कमरे में चला गया।

दो मिनट बाद दरवाज़ा फिर खुला और गान्या ने अपनी खनकदार और सौजन्य-भरी आवाज़ में बुलाकर कहा—"अन्दर आ जाइए, प्रिंस !"

3

जनरल इवान फ़्योदोरोविच् येपांचिन अपने पढ़ने के कमरे के बीच में खड़े थे और उन्होंने बड़ी दिलचस्पी से प्रिंस को कमरे में प्रवेश करते हुए देखा। वह उसकी ओर दो क़दम बढ़े भी। प्रिंस ने उनके पास जाकर अपना परिचय दिया।

"अच्छा," जनरल साहब ने जवाब में कहा। "मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ ?"

"मुझे कोई बहुत ज़रूरी काम तो है नहीं; मैं ज़रा आपसे जान-पहचान पैदा करने आया था। मैं आपके काम में विघ्न डालना नहीं चाहता था; मुझे मालूम नहीं कि आप लोगों से किस वक़्त मिलते हैं और आपकी बाक़ी व्यवस्थाएँ क्या हैं। लेकिन मैं खुद अभी सीधा स्टेशन से चला आ रहा हूँ...अभी स्विट्ज़रलैण्ड से वापस आया हूँ।"

जनरल साहब के होंठों पर हल्की-सी मुस्कराहट आई, लेकिन वह कुछ सोचकर रुक गए; इसके बाद उन्होंने फिर कुछ सोचा, अपनी आँखें सिकोड़ीं, एक बार फिर अपने मेहमान को सिर से पाँव तक देखा, फिर उसे कुर्सी पर बैठ जाने का इशारा किया, खुद उसकी ओर कुछ तिरछे होकर बैठ गए, और बड़ी अधीरता से उसकी ओर मुड़े। गान्या कमरे के दूसरे सिरे पर लिखने की मेज़ के

पास खड़ा कुछ कागज़ों को छाँट रहा था।

"यों तो मेरे पास जान-पहचान पैदा करने के लिए बहुत वक़्त नहीं है," जनरल साहब ने कहा, "लेकिन चूँकि तुम बेशक किसी वजह से ही मुझसे मिलने आए होगे, इसलिए मैं..."

"मैंने ऐसा ही सोचा था," प्रिंस ने उनकी बात काटते हुए कहा, "कि आप मेरे मिलने आने के पीछे कोई ख़ास उद्देश्य समझेंगे, लेकिन मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि आपसे जान-पहचान पैदा करने की ख़ुशी हासिल करने के अलावा मेरे दिमाग़ में कोई ख़ास बात नहीं थी।"

"ज़ाहिर है, मेरे लिए भी वह बड़ी ख़ुशी की बात है, लेकिन मन बहलाने के अलावा कभी-कभी कुछ काम भी करना पड़ता है न ? और फिर, अब भी मेरी समझ में नहीं आया कि हमारे बीच क्या चीज़ समान है...मेरा मतलब है कौन-सी वजह है..."

"अरे, वजह कोई भी नहीं है, और ज़ाहिर है कि बहुत ही कम चीज़ें हैं जिनमें हम लोगों के बीच समानता हो। क्योंकि यह बात यक़ीनन कोई वजह नहीं हो सकती कि मैं, प्रिंस मीश्किन, और आपकी पत्नी एक ही खानदान से हैं। यह बात मैं अच्छी तरह समझता हूँ। फिर भी मेरे यहाँ आने की सिर्फ़ यही वजह थी। मैं चार साल रूस के बाहर रहा हूँ, इससे भी ज़्यादा; और जब मैं यहाँ से गया था तब मेरी क्या हालत थी ? मैं लगभग पागल था। उस वक़्त मुझे कुछ भी मालूम नहीं था और अब तो और भी कम मालूम है। मुझे अच्छे नेक लोगों की ज़रूरत है। देखिए, मेरा एक काम है, लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि उसे कैसे निबटाया जाए। बर्लिन में ही मैंने सोचा था—'वे लोग मेरे रिश्तेदारों जैसे हैं, उन्हीं से शुरू करूँगा। शायद हम लोग एक-दूसरे के किसी काम आ सकें—वे लोग मेरे और मैं उनके, बशर्ते कि वे अच्छे लोग हों।' और मैंने सुना है कि आप लोग अच्छे ही हैं।"

"बहुत शुक्रिया," जनरल साहब ने कुछ आश्चर्यचकित होकर जवाब दिया। "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुम ठहरे कहाँ हो ?"

"अभी तक तो कहीं भी नहीं ठहरा हूँ।"

"तो तुम स्टेशन से सीधे मुझसे मिलने चले आए हो, क्यों ? और...अपने सामान समेत ?"

"सामान के नाम पर मेरे पास बस एक छोटी-सी पोटली है जिसमें थोड़े-से कपड़ों के अलावा कुछ भी नहीं है। मैं उसे आमतौर पर अपने हाथ में ही लेकर चलता हूँ। शाम को मेरे पास किसी होटल में किराए पर कमरा ले लेने के लिए काफ़ी वक़्त होगा।"

"अच्छा, तो तुम्हारा इरादा अब भी होटल में कमरा लेने का है ?"

"जी हाँ, बेशक।"

"तुम्हारी बातों से मुझे ऐसा लगा था कि तुम सीधे यहाँ हम लोगों के साथ रहने के लिए आ गए हो।"

"वह तो हो सकता था लेकिन सिर्फ़ आपके न्योता देने पर, किसी दूसरे तरीक़े से नहीं। और मैं आपको यह भी बता दूँ कि अगर आप बुलाते भी तो मैं आपके यहाँ न ठहरता, किसी ख़ास वजह से नहीं, लेकिन यों ही...मेरा ऐसा स्वभाव नहीं है।"

"ख़ैर, तो यह अच्छा ही हुआ कि मैंने तुम्हें ठहरने का न्योता नहीं दिया और अब भी नहीं दे रहा हूँ। और मैं यह भी बता दूँ, प्रिंस, ताकि सारी बात हमेशा के लिए बिलकुल साफ़ रहे—चूँकि हम दोनों ही ने अभी यह बात मानी है कि हम लोगों के बीच रिश्तेदारी का कोई सवाल नहीं हो सकता—हालाँकि अगर ऐसा होता तो मैं इसे अपना सौभाग्य समझता...इसलिए..."

"इसलिए मुझे उठकर चल देना चाहिए, है न ?" प्रिंस ने जाने के लिए उठते हुए अपनी प्रकट

तंगी की हालत के बावजूद मस्ती-भरी हँसी के साथ कहा। "और, सचमुच, जनरल साहब, हालाँकि यहाँ के तौर-तरीक़ों को और आमतौर पर यहाँ लोग किस तरह रहते हैं उसे मैं बिलकुल ही नहीं जानता हूँ, लेकिन मैं महसूस करता था कि सब कुछ इसी तरह होगा जैसे कि हुआ। ख़ैर, शायद इसी में भलाई है।...और उस वक़्त मुझे अपने ख़त का जवाब भी नहीं मिला था। ख़ैर, मैं चलता हूँ, और आपको मैंने जो तकलीफ़ दी उसके लिए मैं माफ़ी चाहता हूँ।"

इस समय प्रिंस की नज़र में ऐसा स्नेह झलक रहा था और उसकी मुस्कराहट किसी भी छिपे हुए द्वेष की लेशमात्र शंका से इतनी मुक्त थी कि जनरल साहब ने अचानक रुककर न जाने क्यों अपने मेहमान को दूसरे ही ढंग से देखा; यह परिवर्तन पलक झपकते हो गया था।

"देखो, प्रिंस," उन्होंने कुछ बदली हुई आवाज़ में कहा, "मैं तुम्हें बिलकुल नहीं जानता और हो सकता है मेरी बीवी ऐसे आदमी को ज़रूर देखना चाहेंगी जिसका कुलनाम वही है जो उनका है।...अगर जी चाहे और तुम्हारे पास वक़्त हो तो थोड़ी देर रुको !"

"अरे, वक़्त की मेरे पास कोई कमी नहीं है," प्रिंस ने अपनी मुलायम गोल हैट फ़ौरन मेज़ पर रखते हुए कहा। "मैं अपने वक़्त का पूरी तरह मालिक हूँ। सच पूछिए तो मुझे उम्मीद थी कि लिज़ावेता प्रोक़ोफ्येव्ना को शायद याद होगा कि मैंने उन्हें ख़त लिखा था। अभी बाहर इन्तज़ार करते वक़्त, आपके नौकर को शक हुआ था कि शायद मैं आपसे पैसा माँगने आया हूँ। मेरा ध्यान इस बात की ओर गया था, और इस सिलसिले में आपने शायद बहुत सख़्त हिदायतें दे रखी होंगी। लेकिन मैं इसलिए नहीं, बल्कि सचमुच लोगों से जान-पहचान पैदा करने आया हूँ। अब मुझे यह ख़्याल होने लगा है कि मैंने शायद आपके काम में विघ्न डाला, और इस वजह से मैं बहुत परेशान हूँ।"

"अच्छा, प्रिंस," जनरल साहब ने उल्लास-भरी मुस्कराहट के साथ कहा, "अगर तुम सचमुच उसी तरह के आदमी हो जैसे कि तुम देखने में लगते हो, तो पूरा यक़ीन है कि तुमसे जान-पहचान पैदा करके मुझे खुशी होगी। बस, मैं बहुत व्यस्त हूँ, यह बात है; मुझे अभी बैठकर कुछ काग़ज़ों को देखना और उन पर दस्तख़त करने होंगे, फिर मैं हिज़ ग्रेस से मिलने जाऊँगा, और उसके बाद दफ़्तर जाऊँगा, इसलिए, हालाँकि मुझे लोगों से मिलकर ख़ुशी होती है...मेरा मतलब है अच्छे लोगों से...लेकिन...अच्छा, मुझे पूरा यक़ीन है कि तुम्हें शानदार परवरिश मिली, कि...अरे, तुम्हारी उम्र क्या है, प्रिंस ?"

"छब्बीस साल।"

"अच्छा ! मैं तो समझा था कि इससे कम होगी !"

"जी हाँ, मुझसे और लोगों ने भी कहा है कि मैं अपनी सूरत से कमउम्र लगता हूँ। जहाँ तक आपके काम में रुकावट डालने का सवाल है जल्दी ही मैं ऐसा न करना सीख लूँगा, क्योंकि लोगों को परेशान करना मुझे खुद पसन्द नहीं है।...और, आख़िरी बात यह कि हम लोग देखने में हर मामले में एक-दूसरे से इतने अलग मालूम होते हैं...तरह-तरह की वजहों से, कि शायद बहुत ज़्यादा चीज़ें ऐसी नहीं होंगी जो हम दोनों के बीच समान हों, हालाँकि मैं इस बादवाली बात में विश्वास नहीं करता हूँ क्योंकि अकसर सिर्फ़ लगता ऐसा है कि दो आदमियों के बीच कोई समानता नहीं है, जबकि, दरअसल, समानता तमाम वक़्त मौजूद रहती है।...सिर्फ़ अपनी काहिली की वजह से लोग बस एक-दूसरे को देखकर ही अपने आपको अलग-अलग कोटियों में बाँटने लगते हैं और कुछ भी हासिल नहीं होता है...मैंने शुरुआत बड़े नीरस ढंग से की है ? है न ? लगता है कि आप..."

"बस एक बात और—तुम्हारे पास कोई साधन हैं ? या शायद तुम किसी तरह का काम का इरादा रखते हो ? माफ़ करना, मैं इतने..."

"अरे, कोई बात नहीं, मैं आपका सवाल और उसका मतलब अच्छी तरह समझता हूँ। फिलहाल तो मेरे पास कोई भी साधन नहीं हैं, न ही मेरे पास कोई काम है, हालाँकि मैं चाहता ज़रूर हूँ कि कोई काम हो। मेरे पास जो पैसा रहा भी है वह मेरा नहीं था। डॉक्टर श्लाइडर ने, यानी उन प्रोफ़ेसर साहब ने जो स्विट्ज़रलैण्ड में मेरा इलाज करते थे और मुझे पढ़ाते थे मुझे बस सफ़र भर के लिए काफ़ी पैसा दिया था, उससे एक कौड़ी भी ज़्यादा नहीं, इसलिए अब मेरे पास सिर्फ़ कुछ कोपेक ही बचे हैं। सच बात तो यह है कि मुझे कुछ काम मिलना है और उसके सिलसिले में मुझे सलाह की ज़रूरत है, लेकिन..."

"अच्छा, यह तो बताओ कि इस बीच तुम गुज़र-बसर किस तरह करने का इरादा रखते हो और तुम्हारी योजनाएँ क्या हैं ?" जनरल साहब ने उसकी बात काटते हुए कहा।

"मैं चाहता हूँ कि किसी तरह का काम मिल जाए।"

"अरे, लेकिन तुम तो अच्छे ख़ासे फ़लसफ़ी हो ! देखो, किसी चीज़ की तरफ़ तुम्हारा ख़ास झुकाव है, कोई काबलियत, मेरा मतलब यह कि कोई ऐसा हुनर जिससे तुम रोटी कमा सको। मुझे फिर माफ़ करना..."

"अरे, साहब, इसमें माफ़ करने की क्या बात है। जी नहीं, मैं नहीं समझता कि मुझमें कोई हुनर या काबलियत है। बल्कि बात कुछ उल्टी ही है, क्योंकि मैं बीमार आदमी हूँ और मैंने कभी बाक़ायदा कुछ पढ़ा-लिखा नहीं। जहाँ तक रोजी कमाने का सवाल है, तो मैं समझता हूँ..."

लेकिन जनरल साहब ने एक बार फिर उसे बीच ही में टोक दिया, और [illegible] सवाल पूछने लगे। प्रिंस ने उन्हें वह सब कुछ बता दिया जिसकी चर्चा पहले की जा चुकी है। मालूम यह हुआ कि जनरल साहब ने पव्लीश्चेव के बारे में सुन रखा था और उनसे उसकी निजी जान-पहचान भी रह चुकी थी। पव्लीश्चेव को उसके पालन-पोषण में इतनी दिलचस्पी क्यों थी, इसकी वजह प्रिंस नहीं बता सकता था—लेकिन, इसकी वजह शायद सिर्फ़ यह रही हो कि वह उसके बाप के पुराने दोस्त थे। प्रिंस के माँ-बाप उसके बचपन में ही मर गए थे, उसने अपना सारा बचपन और लड़कपन देहात में बिताया था क्योंकि उसके स्वास्थ्य के लिए देहात की हवा ज़रूरी थी। पव्लीश्चेव ने उसे अपने रिश्ते की कुछ वृद्ध ज़मींदार महिलाओं के हवाले कर दिया था; उसके लिए पहले एक गवर्नेस रखी गई थी और फिर एक ट्यूटर। लेकिन प्रिंस का कहना था कि उसे सब कुछ हालाँकि याद था, लेकिन ऐसी बहुत कम ही बातें थीं जिनकी वह कोई सन्तोषजनक व्याख्या कर सकता हो, क्योंकि ऐसी कितनी ही बातें थीं जिनकी उसे जानकारी नहीं थी। बार बार दौरा पड़ने की वजह से वह लगभग बौड़म हो गया था (प्रिंस ने यही शब्द इस्तेमाल किया था—"बौड़म")। उसने बताया कि आख़िरकार एक दिन बर्लिन में पव्लीश्चेव की मुलाक़ात स्विट्ज़रलैण्ड के प्रोफ़ेसर श्नाइडर नामक एक डॉक्टर से हो गई थी जो इस तरह की बीमारियों के विशेषज्ञ थे और स्विट्ज़रलैण्ड के वैले जिले में उनकी क्लीनिक थी जहाँ वह बौड़मपन के बीमारों और पागलों का इलाज ठण्डे पानी के उपचार और व्यायामों पर आधारित अपने तरीक़ों से करते थे; वह इसके साथ ही उन्हें शिक्षा भी देते थे और, आमतौर पर, उनके आत्मिक विकास की ओर ध्यान देते थे। प्रिंस ने बताया कि पव्लीश्चेव ने लगभग पाँच साल पहले उसे श्नाइडर के पास स्विट्ज़रलैण्ड भेज दिया था, और दो साल पहले अचानक उनकी मृत्यु हो गई थी, कोई हिदायतें

छोड़े बिना ही। उसने बताया कि श्नाइडर ने इलाज पूरा हो जाने तक उसे दो साल अपने यहाँ और रखा; वह उसे पूरी तरह अच्छा तो नहीं कर पाए थे, लेकिन उनके इलाज से उसे बहुत फ़ायदा हुआ था; उसने अन्त में यह भी बताया कि स्वयं उसके कहने पर और एक विशेष अप्रत्याशित परिस्थिति की वजह से उन्होंने उसे अब रूस वापस भेज दिया था।

जनरल साहब को बहुत आश्चर्य हुआ।

"और," उन्होंने पूछा, "तुम्हारा रूस में कोई भी नहीं है ?"

"जी नहीं, इस वक़्त तो कोई नहीं है, लेकिन मुझे उम्मीद है...इसके अलावा मेरे पास एक खत आया है..."

"कम से कम," जनरल साहब ने खत के बारे में कुछ सुने बिना ही बात काटकर कहा, "तुमने कुछ तो पढ़ा-लिखा होगा ही, और मैं समझता हूँ कि तुम्हारी बीमारी ऐसी नहीं है कि किसी दफ़्तर में सीधा-सादा आसान-सा काम करने में अड़चन हो, है न ?"

"जी हाँ, मुझे यक़ीन है कि कोई अड़चन नहीं होगी। और सच पूछिए तो मैं अगर कोई काम पा जाऊँ तो मुझे बड़ी ख़ुशी होगी, क्योंकि मैं ख़ुद जानना चाहूँगा कि मैं क्या कर सकता हूँ। पिछले चार साल से मैं लगातार पढ़ता रहा हूँ, हालाँकि बाक़ायदा नहीं, बल्कि डॉ. श्नाइडर के ख़ास तरीक़े के हिसाब से। और उस दौरान मैंने बहुत सी रूसी किताबें पढ़ी हैं।"

"रूसी किताबें ? तब तो तुम्हें रूसी की जानकारी होगी और तुम बिना गलतियाँ किए रूसी लिख भी सकते होंगे, क्यों ?"

"जी हाँ। ज़रूर लिख सकता हूँ।"

"बहुत खूब ! और तुम्हारी लिखाई कैसी है ?"

"मेरी लिखाई बहुत खूबसूरत है। सच तो यह है कि इस हुनर में मुझे काफ़ी कमाल हासिल है। मैं अच्छा ख़ासा खुशनवीस हूँ। मेहरबानी करके," प्रिंस ने बड़े उत्साह से कहा, "मुझे मौक़ा दीजिए कि मैं नमूने के तौर पर आपको कुछ लिखकर दिखाऊँ।"

"दिखाओ, दिखाओ ! यह बहुत ज़रूरी भी है।...और, प्रिंस, तुम्हारी यह मुस्तैदी मुझे बहुत पसन्द है, तुम सचमुच बहुत प्यारे हो।"

"आपके यहाँ लिखाई का इतना बढ़िया सामान है, और वाह, कितनी बहुत-सी पेंसिलें और क़लम आपके यहाँ हैं, और इतना बढ़िया मोटा काग़ज़।...और आपका पढ़ने-लिखने का कमरा भी कितना लाजवाब है ! वह तस्वीर मैं पहचानता हूँ—यह स्विट्ज़रलैण्ड का एक प्राकृतिक दृश्य है। मुझे पूरा यक़ीन है कि कलाकार ने उस दृश्य को अपनी आँखों से देखकर बनाया होगा, और मुझे यह भी यक़ीन है कि मैंने यह जगह देखी है—यह ऊरी ज़िले में है।..."

"बहुत मुमकिन है। हालाँकि यह तस्वीर खरीदी यहीं थी। गान्या, प्रिंस को थोड़ा-सा काग़ज़ तो दे देना। लो, ये रहे क़लम और काग़ज़, यहाँ इस मेज़ पर। यह क्या है ?" जनरल साहब ने गान्या को सम्बोधित करते हुए कहा, जिसने इसी बीच अपने ब्रीफकेस में से एक बड़ी-सी फोटो निकालकर उनके हवाले कर दी थी। "वाह ! नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ! क्या उसने खुद तुम्हें भेजी थी यह ? खुद भेजी थी ?" उन्होंने उत्कंठित होकर और बड़ी दिलचस्पी लेते हुए गान्या से पूछा।

"अभी। जब मैं बधाई देने गया था, उसने खुद मुझे दी थी। मैं बहुत दिन से उससे माँग रहा था। मालूम नहीं, शायद यह इस बात की तरफ़ इशारा हो कि ऐसे दिन मैं उसके लिए कोई तोहफ़ा लिए बिना खाली हाथ गया था," गान्या ने अरुचि के भाव से मुस्कराते हुए कहा।

"नहीं, बिलकुल ऐसी बात नहीं है," जनरल साहब ने दृढ़ विश्वास से कहा। "तुम्हारा भी

सोचने का क्या ढंग है ! वह शायद ही ऐसा इशारा करेगी...और यह लालची है ही नहीं। और फिर, देने के लिए तुम्हारे पास है क्या ? हज़ारों की ज़रूरत पड़ती ! शायद अपनी तस्वीर दोगे ? अच्छा, यह बताओ, उसने अभी तक तुमसे तुम्हारी तस्वीर माँगी तो नहीं ?"

"जी नहीं, अभी तक तो नहीं माँगी; शायद यह कभी माँगेगी भी नहीं। आपको, इवान फ़्योदोरोविच, आज रात की पार्टी के बारे में याद तो है न ? आप तो हमारे मेहमानों में से हैं।"

"हाँ, याद क्यों नहीं है, और मैं जाऊँगा भी। कैसे भूल सकता हूँ, आख़िर जन्मदिन, पच्चीसवीं सालगिरह ! अच्छा, हाँ।...सुनो, गान्या, मैं तुम्हें एक भेद की बात बता दूँ। अपने आपको तैयार कर लो। उसने अफ़ानासी इवानोविच से और मुझसे वादा किया है कि आज रात की पार्टी में यह अपना आख़िरी फ़ैसला बता देगी—इस पार या उस पार ! देखो, इतना जान लो।"

गान्या अचानक इतना घबरा गया कि उसका रंग तक कुछ पीला पड़ गया।

"क्या उसने सचमुच ऐसा कहा था ?" उसने पूछा, और ऐसा लगा कि यह कहते कहते उसकी आवाज़ काँप गई।

"उसने परसों इस बात का वचन दिया था। हम दोनों ने उसके पीछे पड़कर उससे वादा ले ही लिया। लेकिन उसने हमसे कहा था कि यह बात तुम्हें न बताई जाए।"

जनरल साहब ने गान्या को ग़ौर से देखा। गान्या का इस तरह घबरा उठना उन्हें अच्छा नहीं लग रहा था।

"आपको याद है, इवान फ़्योदोरोविच," गान्या ने झिझकते हुए कहा; वह कुछ परेशान लग रहा था, "उसने मुझे इस बात की पूरी छूट दे रखी है कि जिस वक़्त तक वह अपना इरादा ख़ुद पक्का न करे तब तक मैं भी जो रास्ता चाहूँ चुन लूँ। और उसके बाद भी आख़िरी फ़ैसला मेरे ही हाथ में होगा..."

"क्या तुमने...क्या तुमने..." जनरल साहब अचानक भयभीत हो उठे।

"मैंने ? कुछ भी नहीं।"

"लेकिन, भले आदमी, भगवान के लिए यह तो सोचो कि तुम हम लोगों का क्या हाल कर रहे हो !"

"लेकिन मैंने इन्कार तो नहीं किया है, न ? शायद मैं अपनी बात ठीक से कह नहीं पाया।..."

"इन्कार की भी अच्छी कही !" जनरल साहब ने अपनी झुंझलाहट छिपाने की कोई कोशिश किए बिना चिढ़कर कहा, "अब सवाल तुम्हारे इन्कार न करने का नहीं बल्कि तुम्हारी उत्सुकता का है, उसकी रजामन्दी पाकर तुम्हें कितनी खुशी होगी, तुम किस तरह खिल उठोगे। तुम्हारे घर पर क्या हाल है ?"

"घर पर क्या हो सकता है ? घर पर तो सब कुछ मेरे क़ाबू में है। बस पापा हमेशा की तरह बेवक़ूफ़ी की बातें कर रहे हैं, लेकिन इधर कुछ दिनों से उनका व्यवहार बिलकुल शर्मनाक रहा है। अब तो मैं उनसे बोलता भी नहीं, लेकिन उनकी लगाम कसे रहता हूँ और, सच तो यह है कि अगर माँ का सवाल न होता तो मैंने उनको न जाने क़ब का घर से निकाल दिया होता। माँ, ज़ाहिर है, हमेशा रोती रहती हैं; बहन का पारा चढ़ा रहता है, लेकिन मैंने आख़िरकार उन लोगों से कह दिया है कि अपने भाग्य का फ़ैसला मैं खुद करूँगा और यह कि मैं चाहता हूँ कि घर पर...मेरा ही हुक्म चलेगा। कम से कम मैंने यह बात बहन के दिमाग़ में तो अच्छी तरह बिठा ही दी है, माँ के सामने।"

"ख़ैर, भाई," जनरल साहब ने हल्के से अपने कन्धों को झटका देकर और हाथों को कुछ

फैलाते हुए विचारमग्न-सा होकर कहा, "मेरी तो समझ में ही नहीं आती यह बात। तुम्हारी माँ नीना अलेक्सांद्रोव्ना, जब अभी उस दिन मुझसे मिलने आई थीं—याद है न ?—तो लगातार रो-धो रही थीं। 'बात क्या है ?' मैंने पूछा। तो, पता यह चला कि वे लोग इसे बेइज्जती की बात समझती हैं। मैं पूछता हूँ, इसमें बेइज़्ज़ती क्या है ? नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना पर कोई भी किस बात के लिए उँगली उठा सकता है ? उसके ख़िलाफ़ कोई भी क्या कह सकता है ? यह कि वह तोत्स्की के साथ रहती थी ? ख़ैर, यह तो सरासर बकवास है, ख़ासतौर पर अगर कुछ बातों को ध्यान में रखा जाए ! 'आप अपनी बेटियों का उससे मिलना-जुलना पसन्द नहीं करेंगे,' वह बोलीं। वाह, नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ! क्या कहा उन्होंने, वाह ! आख़िर यह उनकी समझ में क्यों नहीं आता, क्यों नहीं आता उनकी समझ में..."

"उनकी अपनी हैसियत ?" गान्या ने जनरल साहब की बात को, जो अटपटा महसूस कर रहे थे, पूरा करते हुए कहा। "यह समझती हैं; आप उनसे नाराज़ न हों। बहरहाल, उस वक़्त मैंने उन्हें खरी-खरी सुना दी। मैंने उनसे कह दिया था कि वे अपने काम से काम रखें। फिर भी हमारे घर पर अभी तक काफ़ी शान्ति है क्योंकि अभी आख़िरी फ़ैसला नहीं बताया गया है, लेकिन तूफ़ान कभी न कभी तो आएगा ही। अगर आज रात फ़ैसला बता दिया गया, तो जो कुछ अन्दर ही अन्दर उमड़ रहा है वह सब फूट पड़ेगा।"

प्रिंस ने, जो कमरे के एक कोने में बैठा अपनी ख़ुशनवीसी का नमूना तैयार कर रहा था, यह सारी बातचीत सुनी। अपना काम पूरा करके वह उनके पास गया और उसने अपना लिखा हुआ पन्ना सामने रख दिया।

"तो यह है नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना !" उसने तस्वीर को ध्यान से और जिज्ञासा के साथ देखते हुए कहा। "कमाल की सुन्दर है !" उसने फ़ौरन बड़े जोश के साथ इतना और जोड़ दिया।

तस्वीर में सचमुच एक बेहद खूबसूरत औरत थी। उसकी यह फ़ोटो सीधे-सादे लेकिन बहुत ही बढ़िया फ़ैशन के काले रेशमी लिबास में ली गई थी; उसके बाल, जो गहरे बादामी रंग के मालूम होते थे, सीधे-सादे, घरेलू ढंग से बनाए गए थे; उसकी आँखें काली और गहरी थीं, उसके माथे पर विचारमग्नता के चिन्ह थे; उसकी मुद्रा में आवेश और कुछ-कुछ दम्भ की स्पष्ट झलक थी। उसका चेहरा दुबला-पतला और शायद कुछ पीला भी था।...

गान्या और जनरल साहब ने प्रिंस को बड़े आश्चर्य से देखा।

"क्या कहा तुमने ? नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ? तो तुम नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को भी जानते हो ?" जनरल साहब ने पूछा।

"जी हाँ," प्रिंस ने जवाब दिया। "मुझे अभी रूस में आए चौबीस घंटे भी नहीं हुए, पर ऐसी सुन्दरी को मैं जानता हूँ," और उसने उन लोगों को रोगोझिन से अपनी मुलाक़ात के बारे में बताया और रोगोझिन ने उसे जो कुछ बताया था वह सब दोहरा दिया।

"लो, यह एक और ख़बर है !" जनरल साहब प्रिंस का क़िस्सा ध्यान से सुनने के बाद फिर परेशान हो उठे। उन्होंने गान्या को बेधती हुई नज़रों से देखा।

"यह सब कुछ बेहद शर्मनाक साबित होगा," गान्या ने बुदबुदाकर कहा; वह भी कुछ बौखलाया हुआ लग रहा था। "बस, एक धन्नासेठ का बेटा गुलछर्रे उड़ाने निकला है, और कुछ नहीं ! उसके बारे में मैं बहुत कुछ सुन चुका हूँ।"

"सुना तो मैंने भी है, भाई," जनरल साहब बोल पड़े। "कानों की बालियोंवाली घटना के बाद ही नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने सारा लतीफ़ा हमें बताया था। लेकिन अब मामला बिलकुल ही दूसरा

है। दरअसल, लाखों का खेल मालूम होता है। और—जुनून, बेशक बेहूदा जुनून सही लेकिन है तो फिर भी जुनून ही, और कौन नहीं जानता कि इस तरह के शरीफ़जादे अपने जुनून में क्या कुछ नहीं कर गुजरते !...बस, कोई बखेड़ा न खड़ा हो जाए !" जनरल साहब ने चिन्तित भाव से अपनी बात ख़त्म की।

"आपको उसके लाखों से डर लगता है," गान्या ने खीसें निपोड़ दी।

"तुम्हें तो जैसे लगता ही नहीं है !"

"आप क्या सोचते हैं, प्रिंस ?" गान्या ने अचानक प्रिंस को सम्बोधित करते हुए पूछा। "यह संजीदा आदमी है या बस यों ही लफ़ंगा है ?"

यह सवाल पूछते समय गान्या के मन में असाधारण बात हो रही थी। ऐसा लग रहा था कि कोई नई और अजीब बात उसके दिमाग़ में आई थी, जो बड़ी अधीरता से उसकी आँखों में चमक रही थी। जनरल साहब ने भी, जो सचमुच और खुले तौर पर परेशान दिखाई दे रहे थे, पैनी नज़र प्रिंस को देखा, लेकिन स्पष्टतः उन्हें उसके जवाब से कोई ज़्यादा उम्मीद नहीं थी।

"समझ में नहीं आता कि आपको कैसे बताऊँ," प्रिंस ने जवाब दिया। "मैंने बस यह महसूस किया कि उसमें बेहद जुनून था, रोग की हद तक। और वह देखने से काफ़ी बीमार लगता भी था। एक-दो दिन में वह फिर चारपाई पकड़ सकता है, ख़ासतौर पर अगर उसने पीना शुरू कर दिया।"

"अच्छा ? तो तुम्हें यही लगा है ?" जनरल साहब ने इस विचार को पकड़ते हुए कहा।

"जी हाँ।"

"लेकिन उस तरह के बखेड़े न सिर्फ़ एक या दो दिन में हो सकते हैं, बल्कि रात से पहले आज ही कुछ न कुछ हो सकता है," गान्या ने खीसें निकालकर जनरल साहब की ओर देखते हुए कहा।

"हुँः !...ज़रूर...हो तो ज़रूर सकता है और अगर कुछ हुआ तो सारा दारोमदार इस बात पर होगा कि ठीक उस क्षण उसके दिमाग़ में कौन-सा ऊटपटाँग विचार कौंध जाता है।"

"और यह तो आप जानते ही हैं कि कभी-कभी वह कैसी हो जाती है ?"

"क्या मतलब तुम्हारा इससे ?" जनरल साहब बहुत परेशान हो उठे और अचानक गुस्से से चिल्लाकर कहा। "देखो, गान्या," वह कहते रहे, "भगवान के लिए आज उसकी बात को काटना नहीं और कोशिश करना...उसके साथ जहाँ तक बन पड़े...मतलब यह कि उस पर अच्छा असर डालने की। अरे, तुम इस तरह होंठ टेढ़ा क्यों कर रहे हो ? देखो, गव्रीला आर्दालिओनोविच, यह अभी कह देना ठीक, बल्कि बिलकुल ठीक होगा—हम लोग ये सब मुसीबतें किसलिए उठा रहे हैं ? इस मामले में जहाँ तक मेरी निजी दिलचस्पी का सवाल है, मैं बहुत पहले से आश्वस्त और निश्चिन्त हूँ। किसी न किसी तरह से मैं उसका निबटारा अपने फायदे के लिए कर ही लूँगा। तोत्स्की ने अपना इरादा बिलकुल पक्का कर लिया है, जिसका मतलब है कि मुझे भी पूरा विश्वास है। इसलिए अगर मैं इस वक़्त कुछ चाहता भी हूँ तो पूरी तरह तुम्हारे फ़ायदे के लिए। ख़ुद सोचो; क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है ? इसके अलावा, तुम...तुम...मतलब यह कि, तुम समझदार आदमी हो और मैं पूरी तरह तुम्हारे ऊपर भरोसा किए बैठा हूँ, और इस मामले में वही... वही..."

"...सबसे ख़ास चीज़ है," गान्या ने वाक्य पूरा करके एक बार फिर संकट में पड़े हुए जनरल साहब को उबार लिया, और उसके होंठों पर बेहद व्यंग-भरी मुस्कराहट दौड़ गई, जिसे उसने छिपाने की कोई कोशिश भी नहीं की। वह उत्तेजित नज़रों से सीधे जनरल साहब को घूरता रहा, मानो

वह चाहता हो कि उसके मन में जो कुछ भी था उसे जनरल साहब उसकी आँखों में पढ़ लें। जनरल साहब का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

"बेशक, समझदारी सबसे बड़ी चीज़ है," जनरल साहब ने गान्या को तीखी नज़रों से देखते हुए हामी भरी। "सचमुच, तुम भी अजीब आदमी हो! मैं देखता हूँ कि उस व्यापारी के बच्चे की वजह से तुम्हें मानो खुशी हुई है; तुम्हें जैसे बच निकलने का रास्ता मिल गया है। लेकिन इस मामले में शुरू से ही अक्ल से काम लेना था। इस मामले में समझ लेना चाहिए...और दोनों पक्षों को ईमानदारी और इन्साफ़ के साथ बर्ताव करना था...या फिर...पहले से चेतावनी दे देनी थी ताकि दूसरों के लिए संकट न पैदा करते, खासतौर पर इसलिए कि इसके लिए वक़्त काफ़ी था, और सच तो यह है कि अब भी बहुत वक़्त बाक़ी है," (जनरल साहब ने अर्थपूर्ण ढंग से अपनी भवें तानीं), "इसके बावजूद कि अब कुछ ही घंटों का वक़्त रह गया है।...समझ में आ रहा है ? आ रहा है न ? बोलो, तुम चाहते हो या नहीं ? अगर न चाहते हो तो साफ़-साफ़ कह दो, और-और खुश रहो ! कोई तुमको रोक नहीं रहा है, गव्रीला अर्दालिओनोविच, कोई तुमको जबर्दस्ती किसी फन्दे में नहीं फाँस रहा है, अगर तुमको सचमुच इस मामले में कोई फन्दा दिखाई देता हो।"

"मैं चाहता हूँ," गान्या ने धीरे से, लेकिन दृढ़ स्वर में आँखें झुकाकर कहा और उदास होकर चुप हो गया।

जनरल साहब को सन्तोष हो गया। उन्हें ताव आ गया था, लेकिन स्पष्टतः अब उन्हें इस हद तक बढ़ जाने पर अफ़सोस हो रहा था। अचानक वह प्रिंस की ओर मुड़े और ऐसा लगा कि उनके चेहरे पर यह चिन्ता झलक उठी कि प्रिंस वहाँ मौजूद था और उसने सब कुछ सुना था। लेकिन तुरन्त ही वह शान्त हो गए—प्रिंस को बस एक नज़र देख लेना ही पूरी तरह शान्त हो जाने के लिए काफ़ी था !

"ओहो !" प्रिंस ने लिखाई का जो नमूना पेश किया था उसे देखकर जनरल साहब खुश होकर बोले। "वाह, असली खुशनवीसी यह है ! और सो भी अनोखे ढंग की ! देखो तो, गान्या ! इसे कहते हैं सच्चा हुनर !"

मोटे चिकने काग़ज़ के ताव पर प्रिंस ने मध्ययुगीन रूसी अक्षरों में लिखा था—"विनीत एबट पफ़्नूती ने यहाँ पर हस्ताक्षर किए हैं।"

"यह," प्रिंस ने बड़ी खुशी और जोश के साथ समझाते हुए कहा, "हूबहू एबट पफ़्नूती के हस्ताक्षर हैं, जिन्हें चौदहवीं शताब्दी की एक पांडुलिपि से नक़ल किया गया है। बहुत ही सुन्दर हस्ताक्षर किया करते थे वे लोग, हमारे ये सब छोटे-बड़े पादरी, और कभी-कभी तो कितनी रुचि से और कितना ध्यान देकर। जनरल साहब, आपके पास कम से कम पोगोदिन[1] का संस्करण तो होगा ? और यह मैंने दूसरी लिखाई में लिखा है—यह पिछली शताब्दी की बड़े-बड़े गोल अक्षरोंवाली फ्रांसीसी लिखाई है; इसमें कुछ अक्षर बिलकुल ही दूसरे ढंग से लिखे जाते थे। यह बाजारू लिखाई है, सड़क के किनारे बैठनेवाले मुहर्रिरों की, जिसे उनकी लिखाई के नमूनों से हूबहू नक़ल किया गया है (एक नमूना मेरे पास था)। मानना पड़ेगा कि इसकी भी अपनी कुछ खूबियाँ हैं। यह देखिए, अक्षर कितने गोल बनाए गए हैं। मैंने रूसी अक्षरों को फ्रांसीसी शैली में ढाल दिया है, जो बहुत मुश्किल काम है, लेकिन नतीजा बहुत अच्छा रहा। यह एक और बहुत ही सुन्दर निराले ढंग की लिखाई है—यह जो वाक्य लिखा है—'लगन हर चीज़ को जीत लेती है।' यह रूसी लिखाई मुहर्रिरों

1. इतिहासकार मिखाईल पेत्रोविच पोगोदिन (1800-1875) की तैयार की हुई एल्बम जिसका नाम था 'प्राचीन पांडुलिपियों में स्लावोनी और रूसी अक्षरों को लिखने की शैलियों के नमूने', भाग 1 तथा 2, मास्को, 1840-1841।

की है, या ज़्यादा ठीक यह कहना होगा कि फौज़ी मुहर्रिरों की। महत्त्वपूर्ण लोगों को सरकारी दस्तावेज़ इसी लिखाई में लिखे जाते थे, यह भी गोल अक्षरों की लिखाई है, बहुत ही बढ़िया मोटी लिखाई, लेकिन बहुत ही रुचिपूर्ण। कोई असली खुशनवीस इन कोशिशों पर या लटकनें बनाने की इन कोशिशों पर नाक-भौं सिकोड़ता, इन अधूरी दुमों पर—ये देख रहे हैं आप—लेकिन कुल मिलाकर इनकी भी अपनी एक शैली है और फौज़ी मुहर्रिर की पूरी आत्मा उसमें से झाँकती है—सतर्कता को तिलांजलि देकर अपनी कला को पूरी तरह उन्मुक्त कर देने की लालसा, लेकिन उसकी गर्दन पर फौज़ी पट्टा कसा रहता है, लिखाई भी अनुशासन के साँचे में ढली है, कमाल है ! हाल ही में इस तरह के एक नमूने का मुझ पर बहुत गहरा असर पड़ा—इत्तफ़ाक़ से मुझे मिल गया और सो भी स्विट्ज़रलैण्ड में ! और, यह है सीधी-सादी, मामूली अंग्रेज़ी की लिखाई : इससे ज़्यादा रचाव हो ही नहीं सकता, इसमें सब कुछ लाजवाब है, बिलकुल मोतियों की लड़ी मालूम होती है : इससे ज़्यादा अच्छा इसे बनाया ही नहीं जा सकता; लेकिन यह उसी की एक बदली हुई शक्ल है, और यह भी फ़्रांसीसी है—यह नमूना मुझे एक फ़्रांसीसी फेरीवाले से मिला था- बिलकुल अंग्रेज़ी जैसी लिखाई है, लेकिन इसके अक्षरों के मोटे हिस्से अंग्रेज़ी के मुकाबले कुछ ज़्यादा मोटे हैं, और यह देखिए धूप और छाँव का अनुपात नष्ट हो जाता है। और इसे भी देखिए अण्डाकार आकार को बदल दिया गया है, उसे कुछ ज़्यादा गोल बना दिया गया है और इसमें लटकनों की भी गुंजाइश रखी है, और लटकन बहुत खतरनाक चीज़ होती है ! लटकन के लिए असाधारण रुचि की ज़रूरत होती है, लेकिन अगर वह सफल हो जाए, अगर सही अनुपात का पता लग जाए, तो इस तरह की लिखाई लाजवाब होती है, यहाँ तक कि देखनेवाला उस पर मुग्ध हुए बिना नहीं रहता।"

"ओहो !" जनरल साहब ने हँसकर कहा। "तुम तो बड़ी बारीकियों में जाते हो। भई, मेरे दोस्त, तुम सिर्फ़ खुशनवीस नहीं हो, तुम कलाकार हो ! क्यों, गान्या ?"

"लाजवाब," गान्या ने कहा, "और अपने हुनर का पूरी तरह अन्दाज़ा भी है," उसने व्यंग्यपूर्वक हँसते हुए इतना और जोड़ दिया।

"तुम हँस भले ही लो, लेकिन इससे आदमी कमा-खा सकता है," जनरल साहब ने कहा। "जानते हो, प्रिंस, कैसी-कैसी हस्तियों के नाम हम तुमसे सरकारी दस्तावेज़ लिखवायेंगे ? और, पैंतीस रूबल महीना तो तुम्हें शुरू से ही दिया जा सकता है। लेकिन साढ़े बारह बज गए हैं," दीवार पर टंगी हुई घड़ी की ओर देखकर उन्होंने कहा। "अच्छा, अब काम की बात, प्रिंस, क्योंकि मुझे बहुत जल्दी है और आज शायद फिर तुमसे मेरी मुलाक़ात न हो। एक मिनट के लिए बैठ जाओ। मैं पहले ही समझा चुका हूँ कि मैं तुमसे बहुत जल्दी-जल्दी नहीं मिल सकता, लेकिन मैं तुम्हारी थोड़ी मदद ज़रूर करना चाहता हूँ, ज़ाहिर है, थोड़ी-सी मदद, बुनियादी चीज़ों की हद तक, और आगे तुम्हारी मर्जी। मैं तुम्हें दफ़्तर में काम दिलवा दूँगा, बहुत मेहनत का काम नहीं होगा, लेकिन उसमें जी लगाने की ज़रूरत होगी। अब रहीं तुम्हारी फ़ौरन की योजनाएँ। घर में, मेरा मतलब है, मेरे इस नौजवान दोस्त गव्रीला अर्दालिओनोविच ईवोल्गिन के परिवार में, जिनसे मैं चाहता हूँ कि तुम जान-पहचान पैदा कर लो, इसकी माँ और बहन ने फ़र्नीचर सहित दो-तीन कमरे अलग रख छोड़े हैं जिन्हें वे बहुत अच्छी सिफारिशवाले ख़ास-ख़ास लोगों को खाने और छोटी-मोटी सुविधाओं के साथ किराए पर देती हैं। मुझे पूरा यक़ीन है कि नीना अलेक्सान्द्रोव्ना मेरी सिफारिश मान लेंगी। तुम्हें तो, प्रिंस, मुँहमाँगी मुराद मिल गई; पहले, क्योंकि तुम वहाँ अकेले नहीं होगे बल्कि, एक तरह से, एक परिवार के बीच में होगे, क्योंकि मैं समझता हूँ कि शुरू-शुरू में तुम्हारे लिए पीटर्सबर्ग जैसी राजधानी में अकेले रहना ठीक नहीं होगा। गव्रीला अर्दालिओनोविच की माँ और बहन ऐसी महिलाएँ

न किसी तरह छिपाना भी नहीं चाहती थीं। उनकी माँ लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना कभी-कभी उनकी इस खुली हुई लालसा को देखकर नाराज़ हो उठती थीं; कई मामलों में उनकी राय को सम्मान के दिखावे के साथ स्वीकार कर लेने पर भी दरअसल उनकी बेटियों पर काफ़ी अरसे से उनकी रायों की वह पहलेवाली और अकाट्य साख नहीं रह गई थी, यहाँ तक कि तीनों लड़कियों ने आपस में जो एका कायम कर लिया था उसी का पलड़ा भारी होता जा रहा था, इसलिए जनरलाइन साहबा अधिक सुविधा इसी में समझती थीं कि बहस किए बिना ही उनकी बात मानकर अपनी प्रतिष्ठा बनाए रहें। यह सच है कि उनका स्वभाव कभी-कभी तर्क के आदेश मानने से इन्कार कर देता था; लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना हर साल अधिक स्वेच्छाचारी और अधीर ही नहीं बल्कि काफ़ी हद तक सनकी भी होती जा रही थीं, लेकिन चूँकि उनके दब्बू और आज्ञाकारी पति हमेशा पास ही मौजूद रहते थे इसलिए आमतौर पर वह अपना सारा गुबार उन्हीं पर उतारती थीं, और उसके बाद घर में फिर शान्ति और सामंजस्य छा जाता था और सब ठीक-ठाक चलने लगता था।

जनरलाइन साहबा को भूख तो हमेशा लगी रहती ही थी और साढ़े बारह बजे वह अपनी बेटियों के साथ आमतौर पर काफ़ी भरपेट लंच में भाग लेती थीं, जो लगभग डिनर जैसा ही होता था। लड़कियाँ इससे पहले ठीक दस बजे आँख खुलते ही बिस्तर पर ही एक प्याला कॉफ़ी पीती थीं। उन्हें यह बात अच्छी लगने लगी थी, और उन्होंने इसे एक नियम-सा बना लिया था। साढ़े बारह बजे खाने के छोटे कमरे में उनकी माँ के कमरों के पास मेज़ सज़ाई जाती थी, और समय मिलने पर जनरल साहब स्वयं इस अन्तरंग पारिवारिक लंच में शामिल होने के लिए पधारते थे। चाय, कॉफ़ी, पनीर, शहद, मक्खन, ख़ास क़िस्म के समोसे, जो जनरलाइन साहबा को बेहद पसन्द थे, कटलेट, और ऐसी ही बहुत-सी दूसरी चीज़ों के अलावा बहुत तेज गरम सूप भी दिया जाता था। उस दिन सबेरे, जिस दिन हमारी यह कहानी शुरू होती है, सारा परिवार खाने के कमरे में जमा होकर जनरल साहब के आने की राह देख रहा था, जिन्होंने साढ़े बारह बजे आने का वादा किया था। अगर उन्हें एक मिनट की भी देर हो जाती तो उन्हें बुलावा भेजा जाता; लेकिन वह ठीक समय पर आ गए। जब वह अपनी पत्नी का प्रातःकालीन अभिवादन करने और उनका हाथ चूमने उनके पास गए तो उन्होंने इस बार उनके चेहरे पर बहुत ही विचित्र-सी मुद्रा देखी। और एक 'लतीफ़े' की नज़र से (जैसा कि वह आमतौर पर उसे कहते थे), हालाँकि उन्हें पिछली रात ही पूर्वाभास हो गया था कि ऐसा होगा और नींद आते-आते वह उसके बारे में काफ़ी चिन्तित हो चुके थे, फिर भी इस समय एक बार फिर उनकी सिट्टी गुम हो गई। बेटियाँ उन्हें चूमने के लिए उनके पास गईं; हालाँकि वे उनसे नाराज़ नहीं थीं, लेकिन उनके व्यवहार में भी कुछ अनोखापन था। यह सच है कि कुछ परिस्थितियों की वजह से जनरल साहब ज़रूरत से ज़्यादा ही शक्की हो गए थे; लेकिन चूँकि वह अनुभवी पिता और पति भी थे और चतुर भी, इसलिए उन्होंने तुरन्त उपयुक्त उपाय किए।

हम शायद इस वृत्तान्त को कोई बड़ा नुकसान नहीं पहुँचाएँगे अगर हम यहाँ पर मूल प्रवाह से कुछ हटकर इस बात का ज़्यादा सीधा-सादा और सही-सही विवरण दे दें कि जनरल येपांचिन के परिवार के सदस्यों के आपसी सम्बन्ध क्या थे, और यह कि अपनी कहानी के आरम्भ में हम उन्हें किन परिस्थितियों में पाते हैं। हम पहले ही बता चुके हैं कि चूँकि जनरल साहब बहुत पढ़े-लिखे नहीं थे, बल्कि, इसके विपरीत, जैसा कि वह ख़ुद अपने बारे में कहते थे, "एक स्व-शिक्षित आदमी" थे, फिर भी बहुत ही अनुभवी पति और चतुर पिता थे। प्रसंगवश, उन्होंने यह रवैया अपना लिया था कि वह अपनी बेटियों की शादियों के मामले में कोई जल्दबाज़ी नहीं करेंगे, इसके लिए उनके

पीछे नहीं पड़े रहेंगे, पिता की हैसियत से उनके प्रति अपने प्यार और उनके सुख की चिन्ता की वजह से उन्हें परेशान नहीं करेंगे, जैसा कि उन बेहद समझदार परिवारों में अकसर होता है जिनमें बहुत-सी सयानी बेटियाँ होती हैं। इसमें वह ऐसे सफल हो गए कि उन्होंने अपनी पत्नी को भी अपनी यह "रवैया" अपना लेने पर समझा-बुझाकर राज़ी कर लिया था, हालाँकि यह बहुत मुश्किल काम था, मुश्किल इसलिए कि यह इतना अस्वाभाविक था; लेकिन जनरल साहब के तर्क अत्यन्त प्रभावशाली थे क्योंकि वे ठोस तथ्यों पर आधारित थे। इसके अलावा, ख़ुद अपने बारे में फ़ैसला करने की पूरी छूट दे दिए जाने पर शादी की उम्र की लड़कियों की अक्ल आख़िरकार स्वाभाविक तौर पर ठिकाने आ जाएगी और तब काम बन जाएगा, क्योंकि वे अपनी स्वेच्छाचारिता त्यागकर और अपना सारा नकचढ़ापन भूलकर तन-मन से इस काम में जुट जाएँगी। उनके माँ-बाप के लिए बस इतना करने को रह जाएगा कि वे उन पर निगरानी रखें, इस तरह कि उन्हें इसका शक भी न हो, ताकि वे किसी ग़लत आदमी को न चुन लें या किसी अस्वाभाविक भटकाव का शिकार न हो जाएँ, और फिर सबसे उपयुक्त समय पर वे अपने प्रभाव से पूरे मामले को सफलतापूर्वक निवटा देने में भरपूर मदद दें। आख़िर में एक यह भी तर्क था कि उनकी धन-दौलत और सामाजिक प्रतिष्ठा हर साल दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही थी जिसका मतलब यह था कि समय के साथ भावी दुलहनों के रूप में उनकी बेटियों का मोल भी बढ़ता जाता। लेकिन इन तमाम अकाट्य तथ्यों के बीच एक और बात निकल आई–उनकी सबसे बड़ी बेटी अलेक्सान्द्रा अचानक और बिलकुल अप्रत्याशित रूप से (जैसा कि हमेशा होता है) पच्चीस साल की हो गई। लगभग उसी समय अफ़ानासी इवानोविच तोत्स्की ने, जिनका समाज के सबसे ऊँचे क्षेत्रों में उठना-बैठना था, समाज के बड़े से बड़े लोगों के साथ जिनके सम्बन्ध थे और जिनके पास अथाह दौलत थी, एक बार फिर विवाह करने की अपनी चिरपोषित इच्छा व्यक्त की। उनकी उम्र पचपन साल की थी, चरित्र बहुत सुसंस्कृत था और वह असाधारण रुचियों के आदमी थे। वह शादी अच्छी करना चाहते थे; स्त्रियों की सुन्दरता के वह बेहद अच्छे पारखी थे। पिछले कुछ समय से चूँकि जनरल येपांचिन के साथ उनकी बेहद गहरी दोस्ती थी, जो कुछ रुपए-पैसे के कारोबारों में साझेदारी की वजह से ख़ासतौर पर मजबूत हो गई थी, इसलिए उन्होंने उनकी दोस्ताना सलाह और मार्गदर्शन माँगने के बहाने उनसे अपनी यह इच्छा व्यक्त की–जनरल साहब की एक बेटी के साथ उनकी शादी का प्रस्ताव स्वीकार किया जाएगा या नहीं ? जनरल येपांचिन के शान्त और सुखी पारिवारिक जीवन में स्पष्टतः बहुत बड़ा परिवर्तन होनेवाला था।

परिवार में बेशक सबसे सुन्दर, जैसा कि पहले बताया जा चुका है, सबसे छोटी बेटी अग्लाया थी। लेकिन तोत्स्की जैसा आदमी भी, जिसकी अहं की भावना असाधारण रूप से प्रबल थी, यह समझता था कि वहाँ उसकी दाल गलनेवाली नहीं है और अग्लाया उसके भाग्य में लिखी हुई नहीं थी। शायद बहनों के आपसी अन्धे प्रेम और उनकी असाधारण रूप से गहरी दोस्ती ने इस स्थिति को और भी उग्र बना दिया था, लेकिन जैसा कि उन्होंने सच्चे हृदय से आपस में तै कर रखा था, अग्लाया का भविष्य कोई मामूली भविष्य न होकर पृथ्वी पर स्वर्ग का साकार रूप होगा। अग्लाया के पति के पास अकूत धन तो होगा ही, लेकिन इसके साथ ही वह बिलकुल निष्कलंक और सर्वगुणसम्पन्न एक आदर्श आदमी होगा। बहनों ने आपस में यहाँ तक तै कर लिया था, और वह भी बहुत-कुछ कहे-सुने बिना ही, कि ज़रूरत पड़ने पर वे अग्लाया के लिए अपने हितों की भी आहुति दे देंगी; उसका दहेज बहुत बड़ा और गैर-मामूली होगा। माँ-बाप को दोनों बड़ी बहनों के इस आपसी समझौते के बारे में मालूम था और इसीलिए जब तोत्स्की ने उनसे सलाह माँगी तो

उन्हें इसमें तनिक भी सन्देह नहीं था कि दो बड़ी बहनों में से कोई एक तो उनकी आशाओं को पूरा करने से हरगिज़ इन्कार नहीं करेगी, ख़ासतौर पर इसलिए कि तोत्स्की दहेज के सवाल को लेकर कोई कठिनाई खड़ी नहीं करेंगे। दुनिया की बहुत अच्छी जानकारी रखने की वजह से जनरल साहब को तोत्स्की का प्रस्ताव फ़ौरन जँच गया। कुछ विशेष परिस्थितियों के कारण चूँकि तोत्स्की स्वयं फ़िलहाल अपना हर क़दम बेहद सतर्कता से उठा रहे थे और सिर्फ़ थाह ले रहे थे, इसलिए माँ-बाप ने सारा मामला अपनी बेटियों के सामने एक सुदूर सम्भावना के रूप में ही रखा। जवाब में उनसे निश्चित रूप से भले ही न कहा गया हो लेकिन कम से कम इतना ज़रूर आश्वस्त कर दिया गया कि उनकी सबसे बड़ी बेटी अलेक्सान्द्रा शायद इन्कार न करे। वह बहुत ही नेकदिल, समझदार लड़की थी, कुछ दृढ़ स्वभाव की होने के बावजूद जिसके साथ निबाह करना मुश्किल नहीं था; वह तोत्स्की से खुशी-खुशी शादी कर भी सकती थी और अगर यह वचन दे देती तो सत्यनिष्ठा से उसे निभाती भी। उसे बहुत तड़क-भड़कवाले जीवन से कोई लगाव नहीं था और कोई झंझट-झगड़े खड़े करने और गहरी उथल-पुथल पैदा करने के बजाय उससे आशा की जा सकती थी कि वह अपने पति के जीवन में मिठास घोल देगी और उसे हर तरह से सुगम बना देगी। वह बहुत सुन्दर थी, हालाँकि उसमें आडम्बर नहीं था। तोत्स्की के लिए इससे अच्छा और क्या हो सकता था ?

फिर भी मामला बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। तोत्स्की और जनरल साहब ने दोस्ताना तरीक़े से आपस में तै कर लिया था कि फिलहाल वह बाक़ायदा कोई ऐसा क़दम नहीं उठाएँगे जिसे बाद में वापस न लिया जा सकता हो। माँ-बाप ने अभी बेटियों से खुलकर इस विषय की चर्चा करना भी शुरू नहीं किया था; सच तो यह है कि असामंजस्य के भी कुछ चिन्ह दिखाई देने लगे थे—किसी वजह से लड़कियों की माँ असन्तुष्ट होने लगी थीं, और यह बहुत ही गम्भीर बात थी। एक बहुत ही अनिष्टसूचक परिस्थिति थी, एक बहुत ही पेचीदा और परेशान करनेवाला मामला, जिससे सारा बना-बनाया खेल बिगड़ जाने का डर था।

यह पेचीदा और परेशान करनेवाला 'मामला', जैसा कि तोत्स्की उसे खुद कहते थे, बहुत समय पहले, लगभग अठारह साल पहले शुरू हुआ था। रूस के एक मध्यवर्ती प्रान्त में तोत्स्की की एक सबसे ज़्यादा आमदनीवाली जायदाद के पड़ोस में एक दरिद्रताग्रस्त ज़मींदार की छोटी-सी जायदाद थी। लगातार और बिलकुल बेतुके ढंग से दुर्भाग्य का शिकार रहने में उसने कमाल कर दिया था। यह एक अच्छे कुलीन परिवार का था और इस मामले में वह तोत्स्की से भी ज़्यादा ऊँचा था—पेंशनयाफ़्ता फौजी अफ़सर था; उसका नाम था फिलीप्प अलेक्सान्द्रोविच बराश्कोव। कर्जों और गिरवियों के बोझ से दबे-दबे उसने बिलकुल किसान की तरह कड़ी मेहनत करके आख़िरकार अपनी छोटी-सी ज़मीन-जायदाद की हालत काफ़ी सन्तोषजनक बना ली। थोड़ी-सी भी सफलता मिलने पर उसका उत्साह बेहद बढ़ जाता था। जोश और उम्मीदों से खिला हुआ वह कुछ दिन के लिए क़स्बे तक गया। क़स्बे पहुँचने के तीसरे दिन उसके गाँव का मुखिया घोड़े पर सवार वहाँ आ पहुँचा; उसकी दाढ़ी झुलसी हुई थी और एक गाल जल गया था। उसने उसे बताया कि "गाँव जलकर राख हो गया था," परसों, ठीक दोपहर को, उसकी बीवी आग में जलकर मर गई थी, लेकिन उसके बच्चे सही-सलामत थे। दुर्भाग्य के थपेड़ों के आदी होने के बावजूद यह कमाल की घटना बराश्कोव की भी सहन-शक्ति के बाहर सिद्ध हुई—वह पागल हो गया और एक महीने बाद दिमाग़ी बुखार से मर गया। जली हुई जायदाद उसके कर्जों के भुगतान के लिए बेच दी गई और किसान इधर-उधर बिखर गए। जहाँ तक बराश्कोव की दो छोटी-छोटी बेटियों का सवाल था, तोत्स्की ने अपनी उदारता का परिचय देते हुए उनके पालन-पोषण और उन्हें पढ़ाने-लिखाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली;

एक लड़की छह साल की थी, दूसरी सात की। उनका पालन-पोषण तोत्स्की की ज़मीन-जायदाद के कारिन्दे के बच्चों के साथ हुआ, जो एक पेंशनयाफ़्ता सरकारी नौकर था, जिसका परिवार बहुत बड़ा था, और उसके ऊपर जो जर्मन था। कुछ ही समय बाद बस एक लड़की नस्तास्या रह गई; छोटीवाली काली खाँसी में मर गई। तोत्स्की, जो उस जमाने में विदेश में रहते थे, जल्दी ही उनके बारे में बिलकुल भूल गए। पाँच साल बाद रूस लौटने पर कहीं और जाते हुए रास्ते में उन्होंने सोचा कि क्यों न अपनी ज़मीन-जायदाद देखते चलें। वहाँ अपने घर में जर्मन कारिन्दे के परिवार में एक बहुत सुन्दर बच्ची पर उनकी नज़र पड़ी, कोई बारह साल की लड़की, चंचल, आकर्षक और समझदार, जो आगे चलकर एक असाधारण रूपवती युवती बननेवाली थी; इस मामले में तोत्स्की की नज़र कभी धोखा नहीं खाती थी। उस बार वह अपनी जायदाद पर कुछ ही दिन रहे, लेकिन सारा आवश्यक प्रबन्ध करने के लिए उन्हें समय मिल गया; लड़की की पढ़ाई-लिखाई की व्यवस्था में बहुत परिवर्तन हो गया—एक बहुत प्रतिष्ठित, सुशिक्षित और प्रौढ़ा स्विस गवर्नेस बुलाई गई, जिसे लड़कियों की उच्च शिक्षा का काफ़ी अनुभव था और जो फ़्रांसीसी के अलावा दूसरे विषय भी पढ़ाती थी। वह कारिन्दे के घर में रहने लगी और नस्तास्या की शिक्षा का क्षेत्र काफ़ी विस्तृत हो गया। ठीक चार साल बाद यह शिक्षा समाप्त हो गई; गवर्नेस चली गई, और एक भद्र महिला, जो ज़मीन-जायदाद की मालकिन भी थीं और तोत्स्की की पड़ोसिन भी, पर एक दूसरे और ज़्यादा दूर के प्रान्त में, उनके आदेश से और उनके अधिकार के बल पर नस्तास्या को लेने आईं और उसे अपने साथ लेकर चली गईं। इस छोटी-सी जायदाद पर एक छोटा-सा ही सही लेकिन नया बना हुआ लकड़ी का घर था। वह बेहद अच्छा सजा हुआ था और उस जायदाद पर जो गाँव बसा हुआ था उसका नाम मानो जान-बूझकर 'एडेन' रखा गया था। यह महिला नस्तास्या को सीधे इस छोटे-से शान्त घर में लेकर आईं और क्योंकि वह एक सन्तानहीन विधवा थीं और वहाँ से लगभग एक मील दूर रहती थीं इसलिए वह आकर उसके साथ उसी घर में बस गईं। घर-गृहस्थी की देखभाल करने के लिए एक बूढ़ी औरत और एक अनुभवी नौजवान नौकरानी नस्तास्या की ख़िदमत के लिए आ पहुँचीं। घर में नस्तास्या ने सभी कुछ पाया—बाजे, नवयुवतियों के पढ़ने के उपन्यासों की एक बेहतरीन लाइब्रेरी, चित्र, छपी हुई तस्वीरें, पेन्सिलें, चित्रकारी के रंग और ब्रश, एक बहुत ही उम्दा छोटा-सा इटैलियन ग्रे-हाउंड कुत्ता, और एक पखवाड़े बाद तोत्स्की साहब वहाँ पधारे।...उसके बाद से स्तेपी के बीच में बसा हुआ यह दूरस्थ छोटा-सा गाँव उन्हें विशेष रूप से प्रिय हो गया। वह हर साल गर्मियों में वहाँ आते और दो-महीने वहाँ रहते, कभी-कभी तीन महीने भी रह जाते। इस तरह काफ़ी लम्बा, लगभग चार वर्ष का समय बीत गया, सुख-शान्ति के साथ, सुरुचिपूर्ण और सौम्य वातावरण में।

एक बार हुआ यह कि जाड़े के शुरू में, गर्मियों में तोत्स्की के 'एडेन' प्रवास के चार महीने बाद (उस बार वह वहाँ केवल पन्द्रह दिन रहे थे) एक अफ़वाह फैलाई गई, बल्कि कहना चाहिए कि यह अफ़वाह नस्तास्या के कानों तक पहुँची कि पीटर्सबर्ग में तोत्स्की की शादी होनेवाली थी, एक धनी, अच्छे घराने की सुन्दरी से—सारांश यह कि उन्होंने अपने लिए एक सम्मानित और बहुत ही शानदार जोड़ ढूँढ़ लिया था। बाद में पता यह चला कि इस अफ़वाह की सारी बातें ठीक नहीं थीं—उस समय शादी की सिर्फ़ योजना बनाई जा रही थी और सारी बात अभी तक बहुत अस्पष्ट-सी थी, लेकिन इसके बाद से नस्तास्या के जीवन में फिर भी बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया था। उसने अचानक असाधारण दृढ़ संकल्प का परिचय दिया और उसमें सर्वथा अप्रत्याशित चरित्र-बल दिखाई दिया। समय नष्ट किए बिना वह देहात में अपना घर छोड़कर सहसा अकेली पीटर्सबर्ग चली गई

और सीधे तोत्स्की के सामने जा पहुँची। तोत्स्की दंग रह गए, उन्होंने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन अचानक उन्हें पता चला, लगभग अपना पहला शब्द बोलते ही, कि उन्हें अपनी भाषा, अपनी आवाज़ का उतार-चढ़ाव, रुचिकर तथा परिष्कृत वार्त्तालाप के वे सारे विषय, जिन्हें वह अब तक इतनी सफलता से इस्तेमाल करते आए थे, और अपनी तर्क-शैली बदलनी होगी—सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ ! उनके सामने एक बिलकुल ही दूसरी औरत बैठी हुई थी, एक ऐसी औरत जो उस लड़की जैसी बिलकुल नहीं थी जिससे वह परिचित थे और जिसे वह अभी पिछली जुलाई में 'एडेन' गाँव में छोड़ आए थे।

पहली बात तो यह कि यह नई औरत बहुत ज़्यादा जानती और समझती थी—दरअसल इतना ज़्यादा कि आश्चर्य होता था और आदमी सोचने पर मजबूर हो जाता था कि उसने यह सब जानकारी कहाँ से पाई और ये सुनिश्चित विचार उसे कहाँ से मिले होंगे। (अपनी नवयुवतियोंवाली लाइब्रेरी से ?) इतना ही नहीं, उसे क़ानूनी मामलात की काफ़ी अच्छी समझ थी और दुनिया की न सही पर इस बात की तो पक्की जानकारी थी ही कि दुनिया में कुछ मामलात को कैसे निबटाया जाता है; दूसरे, उसका चरित्र पहले से बिलकुल भिन्न था, यानी उसमें पहलेवाली भीरुता और स्कूली लड़कियों जैसे अनिश्चय का लेश भी नहीं रह गया था, जो कभी अपनी सहज चंचलता और भोलेपन की वजह से इतना अच्छा लगता था और कभी इतना उदास और विचारमग्न, चकित, शंकित, अश्रुपूर्ण और बेचैन हो जाता था।

अरे नहीं ! इस समय एक बिलकुल ही आश्चर्यजनक और असाधारण हस्ती उनके सामने बैठी हँस रही थी, उनको जहरीले कटाक्षों से बेध रही थी, उसने उनके मुँह पर कहा कि उनके प्रति उसके मन में गहरे से गहरे तिरस्कार के अलावा और कोई भावना कभी थी ही नहीं—मतली पैदा कर देनेवाला तिरस्कार जो उसने पहले आश्चर्य के फ़ौरन ही बाद महसूस किया था।

इस नई औरत ने खुला एलान किया कि उसे इस बात की रत्ती-भर भी परवाह नहीं थी कि वह फ़ौरन और जिससे चाहें शादी कर लें, लेकिन वह इस शादी को रोकने के लिए आई थी, द्वेष के भाव से उसे रोकने के लिए, केवल इसलिए कि वह ऐसा करना चाहती थी, और ऐसा ही होकर रहेगा--"और मिसाल के तौर पर तुम्हारे ऊपर जी भरकर हँसने के लिए, क्योंकि अब, आख़िरकार, में भी हँसना चाहती हूँ।"

कम से कम उसने कहा यही; शायद उसने वह सब कुछ नहीं बताया जो उसके मन में था। लेकिन जिस समय यह नई नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना हँस रही थी और उन्हें यह सब कुछ बता रही थी, उसी समय के दौरान तोत्स्की ने स्थिति को परखा और अपने कुछ हद तक बिखरे हुए विचारों में थोड़ी-बहुत व्यवस्था लाने की भरपूर कोशिश की। इस चिन्तन में उन्हें कुछ समय लगा; उन्होंने हर पहलू से इस मामले के बारे में सोचा और लगभग एक पखवाड़े तक अपना इरादा पक्का करने की कोशिश करते रहे, लेकिन पखवाड़ा पूरा होते-होते उन्होंने फ़ैसला कर लिया था। सच तो यह है कि उस समय तोत्स्की लगभग पचास साल के थे, और वह बहुत ही प्रतिष्ठित और ठहरे हुए स्वभाव के आदमी थे। दुनिया में और समाज में उनकी हैसियत बहुत पहले बेहद मजबूत बुनियाद पर कायम हो चुकी थी। उन्हें अपने आपसे, अपनी शान्ति और अपने आराम से जितना प्यार था, इनका उन्हें जितना ध्यान रहता था उतना दुनिया में किसी और चीज़ का नहीं, जैसा कि एक बेहद इज़्ज़तदार शरीफ़ आदमी के लिए उचित भी था। जो चीज़ जीवन-भर के दौरान बनाई गई थी और जिसने इतना अच्छा रूप धारण कर लिया था, उसमें रत्ती-भर परिवर्तन किए जाने, या उसमें तनिक भी उतार-चढ़ाव लाए जाने की इजाज़त देने को वह तैयार नहीं थे। दूसरी ओर, अपने अनुभव और

चीज़ों की गहरी समझ-बूझ की बदौलत तोत्स्की ने जल्दी ही और बिलकुल ठीक समझ लिया कि अब उसका पाला एक बहुत ही असाधारण हस्ती से पड़ा है, कि वह एक ऐसी हस्ती है जो काम करने की न सिर्फ़ धमकी देती है बल्कि निश्चित रूप से वैसा करेगी भी, और इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि वह किसी के भी सामने रुकनेवाली नहीं थी, ख़ासतौर पर इसलिए कि उसे दुनिया में किसी भी चीज़ की कद्र नहीं थी, इसलिए उसे लालच देना बिलकुल नामुमकिन था। इस मामले में स्पष्टतः कोई दूसरी ही बात थी, दिल और दिमाग़ का भावुकतापूर्ण क्रोध जैसी कोई चीज़, भगवान ही जाने किसलिए और किसके ख़िलाफ़, एक प्रकार की तिरस्कार की अदम्य भावना जो बिलकुल हद से गुजर चुकी थी—सारांश यह कि ऐसी कोई चीज़ जो बेहद हास्यास्पद थी और जिसके लिए प्रतिष्ठित समाज में कोई स्थान नहीं था, कोई ऐसी चीज़ जिसे हर भला आदमी सिर्फ़ एक लानत ही समझ सकता था। इसमें सन्देह नहीं कि तोत्स्की जैसा दौलतमन्द और सामाजिक हैसियतवाला आदमी किसी छोटे-से बहुत ही मासूम पाजीपन का सहारा लेकर किसी भी अरुचिकर बाधा को बड़ी आसानी से अपने रास्ते से हटा सकता था। दूसरी ओर यह बात भी उतनी ही स्पष्ट थी कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना उन्हें कोई भी नुकसान पहुँचाने की स्थिति में नहीं थी, उदाहरण के लिए, क़ानूनी दृष्टि से; वह तो सरेआम उन्हें बदनाम करने को कोई बहुत बड़ा बखेड़ा भी नहीं खड़ा कर सकती थी, क्योंकि उसके पर काट देना बहुत ही आसान था। लेकिन यह सब सिर्फ़ इसी हालत में सच था अगर नस्तास्या फिलोप्पोव्ना भी वही करने का फ़ैसला करे जो ऐसी परिस्थिति में कोई भी दूसरा करता, मनमौजीपन में स्वीकृत नियमों से बहुत ज़्यादा दूर हटे बिना। यही वह जगह थी जहाँ तोत्स्की की गहरी सूझ-बूझ ने पूरी तरह उनका साथ दिया—उन्होंने यह बात बिलकुल साफ़ देख ली कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना इस बात को अच्छी तरह समझती थी कि क़ानूनी तौर पर वह उन्हें कोई भी नुकसान नहीं पहुँचा सकती थी, लेकिन उसके मन में बिलकुल और ही बात थी और...उसकी चमकती हुई आँखों में भी। किसी भी चीज़ का मूल्यांकन न करते हुए और सबसे कम स्वयं अपनी परवाह करते हुए (उस समय इस बात को ताड़ लेने के लिए कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने बहुत पहले से अपना मूल्यांकन करना छोड़ दिया था, और इस भावना की गम्भीरता पर विश्वास करने के लिए उनके जैसे शंकालु और किसी भी चीज़ में विश्वास न रखनेवाले ऊँचे समाज के आदमी को बहुत गहरी अन्तर्दृष्टि और समझ-बूझ की ज़रूरत पड़ी), नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना में इस बात की पूरी क्षमता थी कि वह अपने आपको अत्यन्त भयानक रूप से और हमेशा के लिए तबाह कर डाले, साइबेरिया जाकर, वहाँ सज़ा काटकर केवल उस आदमी से अपना द्वेष निकाले जिसके प्रति उसके मन में ऐसी अमानुषिक घृणा थी। तोत्स्की ने इस बात को कभी छिपाया नहीं था कि वह थोड़े-से कायर थे, या यह कहना ज़्यादा सही होगा कि वह बेहद दकियानूस आदमी थे। उदाहरण के लिए, अगर उन्हें निश्चित रूप से यह मालूम होता कि विवाह के समय गिरजाघर में उनकी हत्या कर दी जाएगी, या इस तरह की कोई बात होगी—बेहद अभद्र, हास्यास्पद और ऊँचे समाज में न की जानेवाली—तो अवश्य ही वह भयभीत हो उठते, लेकिन मार डाले जाने या गम्भीर रूप से घायल हो जाने या इस बात के डर से उतना नहीं कि कोई सरेआम उनके मुँह पर थूकेगा, वगैरह-वगैरह, जितना इस बात की वजह से कि उनके साथ इस तरह की बात इतने अप्राकृतिक और समाज में अस्वीकृत ढंग से हो। और ठीक यही बात नस्तास्या फिलोप्पोव्ना करनेवाली थी, हालाँकि अभी तक वह उसके बारे में मौन साधे रही थी; वह जानते थे कि उसने बहुत अच्छी तरह उनका अध्ययन किया था और पूरी तरह समझ लिया था, और इसलिए वह जानती थी कि उन्हें सबसे गहरी चोट किस तरह पहुँचाई जाए। और चूँकि उनकी शादी अभी बहुत बड़ी हद तक हवाई बात ही थी

इसलिए तोत्स्की ने नस्तास्या फिलोप्पोव्ना के आगे हथियार डाल दिए और उसकी बात मान ली।

एक और बात थी जिससे उन्हें यह फ़ैसला करने में मदद मिली—यह कल्पना करना कठिन था कि इस नई नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना का चेहरा उस नस्तास्या से कितना भिन्न था जिससे वह पहले परिचित थे। पहले तो वह केवल एक बहुत सुन्दर लड़की थी, लेकिन अब...तोत्स्की अपने आपको इसके लिए कभी क्षमा नहीं कर सकते थे कि चार साल तक वह देखते तो थे पर देख नहीं पाए थे। यह सच है कि दो व्यक्तियों के रवैए में जो अचानक और भीतरी परिवर्तन होता है उसका भी बहुत महत्त्व होता है। फिर भी, उन्हें याद आया कि पहले भी ऐसे क्षण आते थे जब, उदाहरण के लिए, उन आँखों को देखकर उनके मन में विचित्र विचार उठते थे—ऐसा लगता था कि उनमें उन्हें किसी गहरे और रहस्यमय अन्धकार के मौजूद होने का आभास मिलता था। उसकी आँखें इस तरह देखती थीं मानो कोई पहेली बुझा रही हों। पिछले दो वर्षों के दौरान वह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के चेहरे में होनेवाले परिवर्तन पर अक्सर चकित हो उठते थे; कभी-कभी वह बेहद पीली पड़ जाती थी और, अजीब बात थी कि वह और सुन्दर लगती थी तब। उन सभी मर्दों की तरह जिन्होंने अपने ज़माने में काफ़ी गुलछर्रे उड़ाए हों, तोत्स्की शुरू-शुरू में उसे तिरस्कार से देखते थे कि वह अनुभवहीन लड़की कितनी सस्ती मिल गई थी उन्हें, लेकिन इधर हाल में उनको इसमें सन्देह होने लगा था। बहरहाल, उन्होंने वसन्त में ही अपना मन पक्का कर लिया था कि वह बहुत अच्छा दहेज देकर उसका ब्याह किसी समझदार और भले आदमी के साथ करा देंगे जो किसी दूसरे प्रान्त में सरकारी दफ़्तर में नौकर हो। (ओह, कैसे बेहूदा तरीक़े से और द्वेषपूर्वक नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना अब इस विचार पर हँस रही थी !) लेकिन इस समय बिलकुल ही नई औरत से मुग्ध होकर तोत्स्की सोचने भी लगे कि क्या वह एक बार फिर उसका फ़ायदा नहीं उठा सकते थे। उन्होंने अपने मन में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को पीटर्सबर्ग में बसा देने और उसे ऐश-आराम की ज़िन्दगी से घेर देने की बात ठान ली थी। वैसे नहीं तो ऐसे सही। कुछ क्षेत्रों में वह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की नुमाइश तो कर ही सकते थे, उसके बारे में डींग तो मार ही सकते थे। और इस मामले में उन्हें अपनी ख्याति पर बड़ा गर्व था।

पीटर्सबर्ग के जीवन के पाँच वर्ष बीत गए, और, ज़ाहिर है, इस अरसे में कई बातें बहुत साफ़ हो गईं। तोत्स्की की स्थिति बहुत सुखद नहीं थी; सबसे बुरी बात यह थी कि एक बार कायरता दिखा चुकने के बाद उनके मन को अब कभी चैन नहीं मिल सकता था। उन्हें उससे डर लगता था—वह स्वयं भी नहीं जानते थे कि उन्हें किस बात से डर लगता था—उन्हें बस नस्तास्या फिलोप्पोव्ना से डर लगता था। कुछ समय तक, पहले दो वर्षों के दौरान, उन्हें यह शक होने लगा कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ख़ुद उनसे शादी करना चाहती थी, लेकिन अपने अपार स्वाभिमान के कारण इसके बारे में कुछ कहती नहीं थी और दृढ़ संकल्प के साथ इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी कि वह उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखें। वहुत ही बेहूदा विचार था; उनके माथे पर बल पड़े रहने लगे और वह दुःखी होकर विचारों में डूबे रहने लगे। उन्हें इस बात पर बहुत और कुछ हद तक अरुचिकर आश्चर्य हुआ (ऐसा होता है मनुष्य का हृदय !) जब एक घटना की वजह से उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि अगर वह उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखते भी तो उसे स्वीकार न किया गया होता। बहुत समय तक वह इस बात को समझ नहीं पाए। इसका बस एक ही कारण हो सकता था, अर्थात् यह कि उस 'अपमानित और कमाल की औरत' का अहंकार उन्माद के ऐसे स्तर पर पहुँच चुका था कि वह इन्कार करके उनके प्रति अपना तिरस्कार व्यक्त करने को कहीं अच्छा समझती, बजाय इसके कि अपनी स्थिति को नियमित रूप दे दे और बेजोड़

शान-शौकत की हैसियत हासिल कर ले। सबसे बुरी बात तो यह थी कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना का पलड़ा ज़्यादा भारी हो गया। पैसे का भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था, रक़म कितनी ही बड़ी क्यों न हो, और हालाँकि वह जो सुख-सुविधाएँ उसे देते थे उन्हें वह स्वीकार तो कर लेती थी, लेकिन बहुत मामूली ढंग से रहती थी और उन पाँच वर्षों के दौरान उसने कुछ बचाया भी नहीं था। तोत्स्की ने अपनी जंजीरें तोड़ने के लिए एक बहुत ही कुटिल तरकीब इस्तेमाल की—इस तरह कि उसे पता न चलने पाए वह बड़ी होशियारी से उसके रास्ते में हर तरह के आदर्श प्रलोभन भेजकर उसे बड़ी चालाकी से जुटाई गई सहायता से ललचाने लगे, लेकिन इन साकार आदर्शों का, जैसे प्रिंसों, हुसार अफ़सरों, दूतावासों के सचिवों, कवियों, उपन्यासकारों, यहाँ तक कि समाजवादियों का नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना पर कोई असर नहीं हुआ, मानो उसका हृदय पत्थर का बना हो और उसकी भावनाएँ मुरझाकर हमेशा के लिए सूख गई हों। वह सबसे कुछ अलग-थलग रहकर जीवन व्यतीत करती थी—वह पढ़ती थी, अध्ययन तक करती थी, उसे संगीत का बड़ा चाव था। उसके परिचित बहुत ही थोड़े थे; ज़्यादातर वह ग़रीब और हास्यास्पद निम्न श्रेणी के सरकारी अफ़सरों की बीवियों के साथ उठती-बैठती थी, वह एक-दो अभिनेत्रियों को और कुछ वृद्ध महिलाओं को जानती थी, उसे किसी प्रतिष्ठित अध्यापक के बहुत बड़े परिवार से गहरा लगाव था, और वह परिवार भी उसे बहुत चाहता था और वहाँ हमेशा बड़े तपाक से उसका स्वागत किया जाता था। अकसर शाम को चार-पाँच दोस्त—इससे ज़्यादा नहीं—उससे मिलने आते थे। तोत्स्की अकसर और नियमित रूप से उसके यहाँ आते थे। हाल ही में काफ़ी कोशिश करके जनरल येपांचिन ने उससे जान-पहचान पैदा कर ली थी। साथ ही फ़ेर्दीश्चेंको नामक एक जवान सरकारी नौकर ने—बहुत ही फूहड़ और बेहूदा भाँड़, जिसे शराब पीने का बेहद शौक था और जो बहुत बड़ा फिकरेबाज होने का दावा करता था—बिना किसी कठिनाई के उससे जान-पहचान बढ़ा ली थी। उसके परिचितों में प्तीत्सिन नामक कुछ विचित्र-सा एक आदमी था, विनम्र, साफ़-सुथरा, जो ग़रीबी से ऊपर उठते-उठते सूदखोर महाजन बन गया था। अन्त में गव्रीला अर्दालिओनोविच ईवोल्गिन का भी उससे परिचय करा दिया गया।...इन सब बातों का नतीजा यह हुआ कि नस्तास्या फिलीप्पोव्ना ने एक विचित्र ख्याति प्राप्त कर ली; सभी जानते थे कि वह सुन्दर औरत थी, लेकिन बस इतना ही; कोई भी कुछ भी डींग नहीं मार सकता था, न ही किसी के पास उसके बारे में कुछ कहने को था। इस तरह की ख्याति, उसकी शिक्षा, उसके शिष्ट तौर-तरीक़े, और उसकी हाजिरजवाबी—इन सबसे तोत्स्की को विश्वास हो गया कि उन्होंने उसके बारे में जो योजना बनाई थी वह सफल होगी। इसी जगह पहुँचकर जनरल येपांचिन इस मामले में इतनी सक्रिय और महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगे।

जब तोत्स्की ने जनरल साहब से बड़ी विनम्रता से उनकी एक बेटी के बारे में सलाह देने का अनुरोध किया था तो सच्चे शरीफ़ आदमी की तरह उन्होंने फ़ौरन सारी बातें खुलकर साफ़-साफ़ बता दी थीं। उन्होंने यह स्वीकार किया कि उन्होंने यह ठान लिया था कि वह अपनी आज़ादी हासिल करने के लिए कोई कोशिश उठा न रखेंगे; कि अगर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ख़ुद भी यक़ीन दिलाए कि भविष्य में वह उन्हें चैन से रहने देगी तब भी वह सुखी नहीं महसूस करेंगे; कि केवल शब्द उनके लिए काफ़ी नहीं थे, उन्हें पूरी जमानत चाहिए। दोनों ने आपस में समझौता करके मिल-जुलकर काम करने का फ़ैसला किया। उनका इरादा था कि शुरू में ये सबसे ज़्यादा नरमी के तरीक़े अपनाएँगे और, एक तरह से, "उसके हृदय के सबसे अधिक सम्मानपूर्ण तारों" को छेड़ेंगे। वे दोनों साथ नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से मिलने गए और तोत्स्की ने उसे सीधे अपनी स्थिति की असह्य यातना के बारे में बताना शुरू किया; उन्होंने हर चीज़ के लिए अपने आपको दोषी ठहराया;

उन्होंने साफ़ साफ़ कह दिया कि उन्हें इस बात पर कोई पछतावा नहीं था कि उन्होंने उसे अपने जाल में फँसाया क्योंकि वह पक्के विलासी आदमी थे और अपने वश में नहीं थे, लेकिन अब वह शादी करना चाहते थे और यह कि इस बात का फ़ैसला उसके हाथ में था कि सामाजिक प्रतिष्ठाशाली तथा बेहद मुनासिब शादी हो या न हो; मतलब यह कि उन्होंने अपने सारी उम्मीदें उसके हृदय की उदारता के साथ जोड़ दीं। इसके बाद लड़की के बाप की हैसियत से जनरल येपांचिन ने बोलना शुरू किया और उन्होंने समझदारी की बातें कीं; हर प्रकार की भावुकता से दूर रहकर उन्होंने केवल इस बात का उल्लेख किया कि वह तोत्स्की के भाग्य का निर्णय करने के उसके अधिकार को पूरी तरह मानते थे। उन्होंने बड़ी चालाकी से इस बात की ओर संकेत करके अपनी विनम्रता का परिचय दिया कि उनकी सबसे बड़ी बेटी का और शायद उनकी बाक़ी दो बेटियों का भी भविष्य अब उसके फैसले पर निर्भर था। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के इस सवाल के जवाब में कि वे उससे क्या चाहते थे, तोत्स्की ने उससे पूरी स्पष्टता के साथ कहा कि पाँच साल पहले वह इतनी बुरी तरह आतंकित हो गए थे कि अब भी उनके लिए चैन महसूस करना तब तक नामुमकिन था जब तक नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की ख़ुद किसी से शादी न हो जाए। उन्होंने फ़ौरन इतना और जोड़ दिया कि उनके लिए इस तरह की प्रार्थना करना सरासर बेतुकी बात होती अगर उसके लिए कोई बुनियाद मौजूद न होती। उन्होंने इस पर ध्यान दिया था और उन्हें इस बात का निश्चित रूप से पता चला था कि एक अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवार में जन्मा शरीफ़ नौजवान गव्रीला अर्दालिओनोविच ईवोल्गिन, जिसे वह जानती थी और जो उसके यहाँ आता रहता था, बहुत समय से बुरी तरह उसके प्रेम में पागल था और उसकी कृपादृष्टि पाने की केवल आशा के लिए जान तक देने को तैयार था। गव्रीला अर्दालिओनोविच ने ख़ुद बहुत पहले उन्हें, तोत्स्की को, मित्रता के भाव से अपना जवान दिल खोलकर इसके बारे में बताया था, और जनरल येपांचिन को भी, जो उस नौजवान के शुभचिन्तक थे, बहुत दिनों से इस बात का पता था। आख़िरकार अगर उन्होंने, यानी तोत्स्की ने, ग़लत नहीं समझा था, तो ख़ुद नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को उस नौजवान के प्यार का पता था, और उन्हें लगा भी था कि वह पूरी तरह इस बात को नापसन्द नहीं करती थी। ज़ाहिर है, उनके लिए इस बात की चर्चा करना सबसे मुश्किल था, लेकिन अगर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना बस इस बात को मान लेती कि तोत्स्की के मन में अहंकार और स्वयं अपने भविष्य की व्यवस्था करने की इच्छा के अलावा उसकी भलाई का भी कुछ ख़्याल था, तो उसकी समझ में आ जाता कि बहुत पहले यह देखकर कि वह कितनी अकेली थी उन्हें अजीब लगता था और सचमुच दुःख होता था। उसकी ज़िन्दगी में, उसने कहा, अन्धकार के अलावा कुछ भी नहीं था और उसे एक नए जीवन की सम्भावना पर तनिक भी विश्वास नहीं रह गया था, जो इतने सुन्दर ढंग से प्रेम के वातावरण में और स्वयं अपने परिवार के बीच जागृत हो सकता था और जो इस तरह उसके जीवन को एक नया उद्देश्य दे सकता था; अगर उसकी ज़िन्दगी का यही ढर्रा रहा तो वह अपनी प्रतिभाओं को नष्ट कर देगी, जो शायद अत्यन्त उच्च कोटि की थीं, उसे अपनी उदासी में मज़ा आता था—मतलब यह कि वह एक तरह के रोमांटिक जादू का शिकार थी जो उसकी समझदारी और उसकी हृदय की उदारता को शोभा नहीं देता था। एक बार फिर यह दोहराकर कि इस बात की चर्चा करने में उन्हें दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा कठिनाई हो रही थी उन्होंने अन्त में यह आशा व्यक्त की कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना उनकी इस हार्दिक इच्छा को कि वह उसे पचहत्तर हज़ार रूबल देकर उसके भविष्य का प्रबन्ध कर देना चाहते थे, तिरस्कार के भाव से ठुकराएगी नहीं। बात साफ़ करते हुए उन्होंने यह भी बता दिया कि उन्होंने बहरहाल यह रक़म अपनी वसीअत में उसके नाम कर दी

थी—मतलब यह कि इसमें किसी तरह का कोई हर्जाना देने का सवाल नहीं था...और यह कि, आख़िर, वह उनकी इस सर्वथा मानवीय इच्छा को स्वाभाविक मानकर क्षमा क्यों नहीं कर सकती थी कि वह अपने अन्तःकरण का बोझ हल्का करने के लिए कुछ करें, वग़ैरह-वग़ैरह, यानी उस तरह की बातें जो इस तरह की परिस्थितियों में इस तरह के विषयों पर की जाती हैं। तोत्स्की धाराप्रवाह और भावपूर्ण ढंग से बोलते रहे, और उन्होंने मानो लगे हाथ यह बहुत दिलचस्प सूचना भी दे दी कि उन्होंने पचहत्तर हज़ार रूबल की उस रक़म का ज़िक्र पहली बार किया था, और यह कि जनरल येपांचिन को भी, जो वहाँ बैठे हुए थे, उसके बारे में कुछ मालूम नहीं था—सच तो यह है कि किसी को भी नहीं मालूम था।

नस्तास्या फिलोप्पोव्ना का जवाब सुनकर दोनों दोस्त चकित रह गए।

न सिर्फ़ यह कि उसमें लेशमात्र भी वह पहलेवाला व्यंग, उसकी पहलेवाली दुश्मनी और नफ़रत, उसकी वह पहलेवाली हँसी नहीं थी, जिसे याद करके ही तोत्स्की के शरीर में सिहरन की लहर दौड़ जाती थी, बल्कि, उसके विपरीत, किसी से खुलकर और दोस्ताना ढंग से बातें करने का अवसर पाकर वह सचमुच खुश लग रही थी। उसने स्वीकार किया कि वह खुद बहुत दिन से किसी से नेक सलाह करने के बारे में सोच रही थी, लेकिन केवल उसका गर्व उसे ऐसा करने से रोकता था, लेकिन अब यह बाधा हट गई थी और इससे अच्छी तो कोई और बात हो ही नहीं सकती थी। पहले उदास मुस्कराहट और फिर हर्ष और उल्लास-भरी हँसी के साथ उसने यह स्वीकार किया कि फिर कोई तूफ़ान उठने का कोई सवाल ही नहीं था; और यह कि कुछ समय से चीज़ों के बारे में उसके विचारों में कुछ परिवर्तन आ गया था, और यह कि उसके हृदय में हालाँकि कोई परिवर्तन नहीं आया था, लेकिन जो कुछ हुआ था उसे उसको अनिवार्य तथ्यों के रूप में स्वीकार करना पड़ा था; जो बीत गया, सो बीत गया और यह बात उसे भी बहुत अजीब लगती थी कि अफ़ानासी इवानोविच अभी तक उससे इतना डरते थे। यहाँ पर वह जनरल येपांचिन की ओर मुड़ी और उनके प्रति बेहद गहरे सम्मान का प्रदर्शन करते हुए उसने उन्हें बताया कि वह उनकी बेटियों के बारे में बहुत समय से बहुत कुछ सुनती आ रही थी और यह कि उनके प्रति गहरा और सच्चा सम्मान महसूस करने की आदी हो गई थी। उनकी कोई सेवा कर सकने के विचार से ही वह बहुत गर्व और सुख अनुभव करेगी। यह बिलकुल सच था कि उसका दिल डूबा-डूबा-सा रहता था और वह बहुत ज़्यादा उकताहट महसूस करती थी, बेहद ज़्यादा उकताहट; अफ़ानासी इवानोविच ने उसके स्वप्नों को भाँप लिया था; उसकी इच्छा थी कि वह जी उठे, जीवन नए सिरे से शुरू करे, प्रेम में न सही तो स्वयं अपने परिवार में कोई नया उद्देश्य खोजकर; लेकिन उसे बात का अफ़सोस था कि वह उन्हें गव्रीला अर्दालिओनोविच ईवोल्गिन के बारे में कुछ नहीं बता सकती थी। उसे भी लगता था कि वह उससे प्रेम करता था; वह खुद यह अनुभव करती थी कि उसके मन में भी उसके प्रति कुछ लगाव पैदा हो सकता था अगर उसे इस बात का विश्वास हो कि उसका यह लगाव पक्का है; लेकिन वह सच्चा होने पर भी अभी बहुत नौजवान था। ऐसी हालत में कोई पक्का फ़ैसला करना कठिन था। फिर भी, उसे उसकी जो बात सबसे अच्छी लगती थी वह यह थी कि वह काम कर रहा था और अकेले अपने प्रयासों के बल पर किसी की मदद के बिना अपने पूरे परिवार को पाल रहा था। उसे मालूम हुआ था कि वह चुस्त, मेहनती और स्वाभिमानी आदमी था और ज़िन्दगी में कामयाब होना चाहता था, दुनिया में अपने लिए खुद रास्ता बनाना चाहता था। उसे यह भी मालूम हुआ था कि उसकी माँ नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ईवोल्गिना बहुत ही अच्छी और अत्यन्त श्रद्धा-योग्य महिला थीं; कि उसकी बहन वर्वारा अर्दालिओनोव्ना अत्यन्त सराहनीय और चुस्त-चालाक

लड़की थी। उसने उसके बारे में प्तीत्सिन से बहुत कुछ सुन रखा था। उसने सुना था कि वे अपनी मुसीबतों को बड़ी उदारता से झेल रही थीं, और वह उनका परिचय प्राप्त करने को बहुत उत्सुक थी, लेकिन उसे भरोसा नहीं था कि वे लोग अपने परिवार में उसका स्वागत करेंगी भी कि नहीं। कुल मिलाकर, वह इस तरह की शादी की सम्भावना के ख़िलाफ़ तो कुछ नहीं कहती थी, लेकिन उसे इसके बारे में अच्छी तरह सोच-विचार करना होगा; वह नहीं चाहती थी कि उसे जल्दी करने पर मजबूर किया जाए। जहाँ तक पचहत्तर हज़ार रूबल का सवाल था तो तोत्स्की साहब को उसके बारे में चर्चा करते हुए इतना अटपटा महसूस करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। वह पैसे का मूल्य जानती थी और निश्चित रूप से उस धन को स्वीकार कर लेगी। उसने तोत्स्की को इतनी सावधानी बरतने के लिए धन्यवाद दिया कि गव्रीला अर्दालिओनोविच ईवोल्गिन की बात तो दूर रही उन्होंने जनरल साहब तक से इस बात की चर्चा नहीं की थी, लेकिन उसे इसकी कोई वजह नज़र नहीं आती थी कि गव्रीला अर्दालिओनोविच को पहले से इस बात का पता न हो। उसे कोई वजह दिखाई नहीं देती थी कि उनके परिवार में प्रवेश करके वह उस धन को स्वीकार करने पर लज्जा अनुभव करे। बहरहाल, किसी से किसी बात के लिए क्षमा माँगने का उसका कोई इरादा नहीं था और वह चाहती थी कि लोगों को यह बात मालूम हो। वह गव्रीला अर्दालिओनोविच से तब तक शादी करनेवाली नहीं थी जब तक उसे इस बात का पक्का भरोसा न हो जाए कि उसके या उसके परिवारवालों के मन में उसके प्रति कोई गुप्त विचार नहीं है। बहरहाल, वह नहीं समझती थी कि वह किसी बात के लिए दोषी थी, और उसका ख़याल था कि गव्रीला अर्दालिओनोविच को इस बात का पता होना चाहिए कि पिछले पाँच साल से वह पीटर्सबर्ग में किस बुनियाद पर रह रही थी, तोत्स्की साहब के साथ उसके क्या सम्बन्ध थे, और यह कि उसने बहुत ज़्यादा पैसा बचा रखा था कि नहीं। अन्तिम बात यह कि अगर इस समय वह इतनी बड़ी रक़म स्वीकार कर रही थी तो यह उसका शील भंग किए जाने का, जिसके लिए वह ज़िम्मेदार नहीं थीं, भुगतान नहीं था, बल्कि सिर्फ़ उसकी तबाह ज़िन्दगी का हर्जाना था।

अन्त में वह इतनी उत्तेजित हो उठी और इतनी चिड़चिड़ी हो गई (जो बिलकुल स्वाभाविक बात थी) कि जनरल येपांचिन बहुत खुश हुए और उन्होंने समझ लिया कि मामला तै हो गया; लेकिन तोत्स्की ने, जो एक बार इतनी बुरी तरह धौंस में आ चुके थे, अब भी पूरी तरह उस पर विश्वास नहीं किया, और बहुत अरसे से उन्हें डर लग रहा था कि फूलों के नीचे कहीं कोई साँप न छिपा हो। लेकिन समझौते की बातचीत शुरू हो चुकी थी; और वह बात जो दोनों दोस्तों की योजना का आधार थी, अर्थात्, यह सम्भावना कि नस्तास्या फ़िलोप्पोव्ना गान्या के प्रति आकर्षित हो, धीरे-धीरे अधिक स्पष्ट और अधिक सुनिश्चित रूप धारण करने लगी थी, यहाँ तक कि कभी-कभी तोत्स्की को भी सफलता की सम्भावना पर विश्वास होने लगा था। इसी बीच नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना गान्या से इस मामले के बारे में बातचीत कर चुकी थी। उसने बहुत अधिक तो कुछ नहीं कहा था, मानो यह विषय उसके शील-संकोच के लिए अत्यन्त कष्टप्रद हो। वह उसके प्रेम को स्वीकार करती थी और उस पर उसे कोई आपत्ति नहीं थी, लेकिन उसने यह बात उसके सामने बिलकुल स्पष्ट कर दी थी कि किसी बात के लिए वचनबद्ध होने का उसका कोई इरादा नहीं था, कि अपने विवाह के दिन तक (अगर विवाह हुआ) वह अन्तिम क्षण तक इन्कार कर देने का अधिकार रखती थी, और वह उसे भी यही अधिकार देती थी। शीघ्र ही गान्या को एक हितकर संयोग के माध्यम से पक्के तौर पर पता चल गया था कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को इस बात का सारा ब्योरा मालूम हो चुका था कि उसका परिवार इस शादी के और खुद उसके ख़िलाफ़ था, जिसका पता उसके

घर पर होनेवाले झगड़ों से चलता था। खुद नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने अभी तक उससे इस बात की चर्चा नहीं की थी, हालाँकि वह किसी भी दिन इसकी प्रतीक्षा कर रहा था। इस प्रस्तावित शादी और उससे सम्बन्धित बातचीत से उत्पन्न होनेवाली घटनाओं और परिस्थितियों के बारे में बताने को तो अभी और बहुत कुछ बताया जा सकता है, लेकिन हम यों ही बहुत आगे निकल आए हैं; और फिर इनमें से कई परिस्थितियों ने कुछ गोल-मोल अफ़वाहों का रूप धारण कर लिया था। मिसाल के लिए, ख़बर थी कि तोत्स्की से किसी ने कहा था कि नस्तास्या फिलोप्पोव्ना ने येपांचिना की बेटियों के साथ कोई खुफिया और अस्पष्ट सम्बन्ध स्थापित कर लिया था—जो बहुत ही अनहोनी बात थी। लेकिन एक दूसरी अफ़वाह पर उन्होंने यक़ीन कर लिया था और वह उससे भयानक सपने की तरह डरने लगे थे—उन्हें पक्के तौर पर बताया गया था कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को अच्छी तरह मालूम था कि गान्या उससे सिर्फ़ पैसे की खातिर शादी कर रहा था; कि उसकी आत्मा अत्यन्त दुष्टतापूर्ण, लोभी, अधीर, ईर्ष्यालु और बेहद स्वार्थी थी; कि शुरू-शुरू में हालाँकि वह उसे अपने वश में करने के लिए दीवाना था, लेकिन जब से दोनों दोस्तों ने उस तीव्र भावना को, जो नस्तास्या फिलोप्पोव्ना और गान्या एक-दूसरे के लिए अनुभव करने लगे थे, अपने हित में इस्तेमाल करके उसे गान्या के हाथ उसकी क़ानूनी बीवी के रूप में बेचने का फ़ैसला किया था उसी क्षण से वह उससे एक दुःस्वप्न की तरह नफ़रत करने लगा था। गहरा प्रेम और नफ़रत उसके दिल में विचित्र ढंग से एक-दूसरे में मिल गए थे, और हालाँकि अत्यन्त कष्टप्रद संकोच के बाद उसने उस 'पतिता' से शादी करने की स्वीकृति दे दी थी, लेकिन मन ही मन उसने क़सम खाई थी कि बाद में वह उससे जी भरकर बदला लेगा और उसे "मिट्टी में मिला देगा", जैसा कि सुनने में आया था कि उसने खुद कहा था। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को इन सब बातों का बज़ाहिर पता था और वह गुपचुप कोई योजना बना रही थी। तोत्स्की इतने बौखला उठे कि उन्होंने अपनी चिन्ताएँ येपांचिन को भी बतानी छोड़ दीं; लेकिन ऐसे क्षण भी आते थे जब कमज़ोर आदमी की तरह उनमें साहस उमड़ पड़ता था और उनमें फिर वही पुराना जोश जाग उठता था—उदाहरण के लिए, उनमें साहस उस समय उमड़ आया था जब नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने आख़िरकार दोनों दोस्तों से वादा कर लिया था कि वह अपना आख़िरी फ़ैसला अपने जन्मदिन की शाम को बता देगी। दूसरी ओर, खुद अत्यन्त माननीय जनरल येपांचिन के बारे में अत्यधिक असाधारण और बिलकुल अनहोनी अफ़वाह भी, दुर्भाग्यवश बिलकुल सच मालूम होती थी।

पहली नज़र में तो यह पूरा मामला सरासर बेहूदा मालूम होता था। इस बात पर यक़ीन करना मुश्किल था कि जनरल येपांचिन जैसे बेहद समझदार और दुनिया की व्यावहारिक जानकारी रखनेवाले बुजुर्ग शरीफ़ आदमी खुद नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना पर लट्टू हो गए थे और दरअसल इतने दीवाने हो गए थे कि उनकी इस सनक और प्यार के पागलपन में फ़र्क़ करना मुश्किल था। वह क्या उम्मीद लगाए हुए थे यह अनुमान लगाना तो कठिन था; शायद उन्हें ख़ुद गान्या के सहयोग का भी भरोसा था। तोत्स्की को कम से कम इस तरह की किसी चीज़ का शक था, गान्या और जनरल साहब के बीच किसी खुफिया साँठ-गाँठ का, इस बुनियाद पर कि वे एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह समझते थे। लगे हाथ, यह तो सभी जानते हैं कि जब कोई आदमी भावावेग की धारा में बह जाता है, ख़ासतौर पर अगर उसकी उम्र काफ़ी हो चली हो, तो वह बिलकुल अन्धा हो जाता है और जहाँ कोई उम्मीद नहीं भी होती वहाँ उसे उम्मीद दिखाई देने लगती है; इतना ही नहीं, वह अपनी बुद्धि खो बैठता है और वह कितना ही समझदार क्यों न हो, बिलकुल नादान बच्चे जैसी हरकतें करने लगता है। यह बात मालूम हो चुकी थी कि जनरल साहब नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को

उसके जन्मदिन के उपहार के रूप में बेहद महँगी मोतियों की माला देनेवाले थे, और यह कि वह इस उपहार को बड़ा महत्त्व देते थे, हालाँकि वह जानते थे कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना लालची औरत नहीं थी। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की सालगिरह के एक दिन पहले वह बहुत उद्विग्न थे, हालाँकि वह अपनी भावनाओं को बड़ी चालाकी से छिपा रहे थे। यही मोतियोंवाली अफ़वाह उनकी बीवी के कानों तक पहुँची थी। यह सच है कि लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना को अपने पति की बेवफाइयों का पता काफ़ी पहले चल चुका था और कुछ हद तक वह उनकी आदी भी हो चुकी थीं, लेकिन इस तरह की घटना को अनदेखा कर देना उनके लिए बिलकुल असम्भव था—मोतियोंवाली अफ़वाह में उन्हें बहुत गहरी दिलचस्पी थी। जनरल साहब को इसका अनुमान समय रहते हो गया था; पिछले दिन पति-पत्नी के बीच इस बात को लेकर कुछ कहा-सुनी भी हो गई थी और वह महसूस कर रहे थे कि जल्द ही इसकी पूरी तरह छानबीन की जाएगी और उससे वह डरते थे। यही वजह थी कि उस दिन जब हमने अपनी कहानी शुरू की थी, अपने परिवारवालों के बीच बैठकर नाश्ता करने से वह कतरा रहे थे। प्रिंस के आने से पहले कतराने के लिए जनरल साहब ने ज़रूरी काम का बहाना कर देने का फ़ैसला कर लिया था। किसी चीज़ से 'कतराने' का मतलब कभी-कभी जनरल साहब सिर्फ़ 'घर से भाग जाना' लगा लेते थे। वह चाहते थे कि कम से कम वह दिन, और ख़ासतौर पर वह शाम बिना किसी झंझट के बीत जाए। और अचानक इतने अच्छे मौक़े के रूप में प्रिंस आ पहुँचा था। "मानो भगवान ने ही उसे भेजा है," जनरल साहब ने अपनी पत्नी के ड्राइंग-रूम में प्रवेश करते हुए सोचा।

5

मिसेज़ येपांचिना को अपने ऊँचे घराने पर बड़ा गर्व था। इसलिए ज़रा सोचिए यह सुनकर उन्हें कैसा आघात पहुँचा होगा कि उनके परिवार का अन्तिम प्रतिनिधि प्रिंस मीश्किन, जिसके बारे में वह पहले ही थोड़ा-बहुत सुन चुकी थीं, एक दयनीय बौड़म और लगभग बिलकुल भिखारी के अलावा और कुछ नहीं था और ख़ैरात लेने को तैयार था। जनरल साहब की भरपूर कोशिश थी कि उसका कुछ ऐसा प्रभाव पड़े कि वह उनकी पत्नी का सारा ध्यान किसी तरह दूसरी ओर हटा दें।

संकट के क्षणों में मिसेज़ येपांचिना हमेशा अपनी आँखें फाड़कर और कुर्सी पर थोड़ा-सा पीछे झुककर एक शब्द भी बोले बिना अपने सामने शून्य में देखने लगती थीं। वह लम्बे क़द की महिला थीं, जिनकी उम्र अपने पति की उम्र के बराबर ही थी; उनके काले बाल बड़ी तेजी से सफ़ेद होते जा रहे थे, पर अब तक घने थे; उनकी नाक कुछ तोते की चोंच जैसी थी, पीले गालों में गढ़े और पतले-पतले अन्दर धँसे हुए होंठ। उनका माथा उभरा हुआ था लेकिन बहुत चौड़ा नहीं, बड़ी-बड़ी सुरमई आँखों में कभी-कभी अत्यन्त अप्रत्याशित भाव झलकने लगता था। बहुत समय पहले वह इस भ्रम में पड़ी थीं कि उनकी आँखें असाधारण रूप से प्रभावशाली थीं—यह एक ऐसा दृढ़ विश्वास था जिसे कोई चीज़ डिगा नहीं सकती थी।

"उससे मिल लूँ ? आप कह रहे हैं कि मैं उससे अभी मिल लूँ, इसी क्षण ?" और मिसेज़ येपांचिना ने अपनी आँखें फाड़कर घबराए हुए जनरल साहब को देखा।

"अरे, इसमें बहुत ज़्यादा तकल्लुफ़ बरतने की कोई ज़रूरत नहीं है," जनरल साहब ने जल्दी से सफ़ाई देते हुए कहा, "अगर तुम उससे मिलना चाहो तो, माई डियर। वह बिलकुल बच्चा है, और देखने में बड़ा दयनीय भी है। उसे किसी तरह के दौरे पड़ते हैं। अभी स्विट्ज़रलैण्ड से लौटा

है, सीधा स्टेशन से चला आ रहा है। अजीब लिबास पहन रखा है उसने, जर्मनों जैसा, और इसके अलावा एक दमड़ी भी नहीं है उसके पास, एक दमड़ी भी। बेचारा, बिलकुल रोने को हो रहा है। मैंने उसे पच्चीस रूबल दिए हैं और अपने दफ़्तर में क्लर्क की हैसियत से किसी छोटे-मोटे काम पर उसे लगा देना चाहता हूँ। और," उन्होंने अपनी बेटियों की ओर मुड़कर कहा, "और मैं चाहता हूँ कि तुम लोग उसे खाना खिला दो, क्योंकि मुझे लगता कि वह भूखा भी होगा।"

"आप भी कैसी अजीब बातें करते हैं," मिसेज़ येपांचिना पहले की तरह ही बोलती रहीं। "भूखा है और दौरे पड़ते हैं ! कैसे दौरे ?"

"अरे, दौरे तो कभी-कभार ही पड़ते हैं, और इसके अलावा वह बिलकुल बच्चों जैसा है। हालाँकि पढ़ा-लिखा है। बात तो यह है," उन्होंने फिर अपनी बेटियों को सम्बोधित करके कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम लोग उसका इम्तहान लो। यह जानना अच्छा रहेगा कि वह क्या कर सकता है।"

"इम्-तहा-ा-न ?" मिसेज़ येपांचिना ने घोर आश्चर्य से शब्द को खींचकर कहा, और आँखें बाहर निकालकर उन्हें पति से बेटियों की ओर और फिर उनकी ओर से पति की ओर घुमाने लगीं।

"ओह, माई डियर, ऐसा मतलब न निकालो...इस...लेकिन, जैसी तुम्हारी मर्जी। मैं तो उसके साथ नेकी बरतना चाहता था और तुम लोगों से उसका परिचय करा देना चाहता था, क्योंकि यह भला काम है, क्यों, है न ?"

"हम लोगों से उसका परिचय करा देना ? स्विट्ज़रलैण्ड से आया है।"

"स्विट्ज़रलैण्ड तो कोई बुरी बात नहीं। ख़ैर, जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, जैसी तुम्हारी मर्जी। मैंने सबसे पहले तो बस इसलिए कहा था कि वह तुम्हारे पुराने नाम का है और, शायद, रिश्तेदार भी हो और, दूसरे, उसके पास जाने को कोई ठिकाना भी नहीं है। साथ, मैंने सोचा था कि तुम्हें कुछ दिलचस्पी होगी क्योंकि, बहरहाल, वह हमारे पुराने नाम का ही है।"

"ठीक ही तो है, माँ," सबसे बड़ी बेटी अलेक्सान्द्रा ने कहा, "हमें उनसे तकल्लुफ़ करने की कोई ज़रूरत नहीं है। और फिर, सफ़र के बाद यह भूखे भी तो होंगे, अगर उनके पास जाने को कोई ठिकाना नहीं है तो हम उन्हें खाना क्यों न खिला दें ?"

"और, इसके अलावा, वह बिलकुल बच्चा है, उसके साथ आँखमिचौली खेली जा सकती है।"

"आँखमिचौली ? क्या मतलब ?"

"अच्छा, अब बनो नहीं, माँ," अग्लाया ने चिढ़कर टोकते हुए कहा।

दूसरी बेटी अदेलईदा, जो बड़ी हँसोड़ थी, अपने आपको रोक न सकी और खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"उन्हें बुलवा लीजिए, पापा," अग्लाया ने फ़ैसला करते हुए कहा। "माँ की इजाज़त है।"

जनरल साहब ने घंटी बजाई और प्रिंस को बुला लाने को कहा।

"लेकिन सिर्फ़ इस शर्त पर कि जब वह खाने की मेज़ पर बैठेगा तो उसके गले में नैपकिन बाँध दिया जाएगा," मिसेज़ येपांचिना ने एलान किया। "फ्योदोर को बुलवाना, या माव्रा ही सही।...जब वह खा रहा हो उसकी कुर्सी के पीछे खड़े रहकर उसे देखते रहना। जब दौरा पड़ता है तब वह शान्त तो रहता है ? इधर-उधर हाथ तो नहीं फेंकता है ?"

"अरे, बात इसकी उल्टी ही है, वह बहुत तमीज़दार और सलीक़ेवाला है। कभी-कभी वह ज़रूरत से ज़्यादा सादगी दिखाता है।...लो, वह खुद आ गया। मैं तुमसे परिचय करा दूँ इसका, माई डियर। प्रिंस मीश्किन अपने परिवार की आख़िरी कड़ी, इसका भी परिवार का नाम वही है जो

तुम्हारा है, शायद कोई रिश्तेदारी भी हो। ठीक से ख़्याल रखना इसका ताकि यह अपने घर जैसा ही महसूस करे यहाँ। खाना अभी लगा जाता है, प्रिंस, हमें इतनी इज़्ज़त बख़्शना...कि...माफ़ करना, मैं चलूँगा, देर हो गई है..."

"हमें मालूम है कि आपको कहाँ जाना है," मिसेज़ येपांचिना ने अर्थपूर्ण ढंग से कहा।

"हाँ, हाँ, मुझे जल्दी जाना है, माई डियर; मुझे देर हो गई है ! बेटियो, इसे अपनी एल्बमें दिखाना न भूलना, इससे कुछ लिखवा लेना अपनी। इसकी लिखाई बहुत ही लाजवाब है। हुनर है, सच्चा हुनर ! देखतीं कि इसने पुराने जमाने की लिखाई में किस तरह लिखा था—'एबट पफ़्नूती ने यहाँ दस्तख़त किए हैं...'। अच्छा, गुडबाई !"

"पफ़्नूती ? एबट ? ठहरिए, एक मिनट ठहरिए तो। आप चल कहाँ दिए ? आख़िर यह पफ़्नूती कौन है ?" मिसेज़ येपांचिना ने बड़ी चिड़चिड़ाहट से और यहाँ तक कि लगभग आतंक के भाव से अपने भागते हुए पति को चिल्लाकर पुकारा।

"हाँ, हाँ, माई डियर, पुराने जमाने में उस मठ का एक एबट था...और मुझे जाना है...काउंट के पास...मेरी राह देख रहे हैं कई घंटे से, ग्यारह बजे से पूर्व उन्होंने तय किया था...प्रिंस, गुडबाई !"

जनरल साहब जल्दी से कमरे के बाहर निकल गए।

"मैं जानती हूँ किस काउंट से मिलने जा रहे हैं !" मिसेज़ येपांचिना ने तीखे स्वर में कहा और चिड़चिड़ाकर अपनी नज़रें प्रिंस की ओर घुमाईं। "क्या कहनेवाली थी मैं," उन्होंने झुँझलाए हुए और चिड़चिड़े स्वर में याद करने की कोशिश करते हुए कहा। "क्या बात थी ? अरे, हाँ। कौन-सा एबट ?"

"माँ," अलेक्सान्द्रा ने कहना शुरू किया और अग्लाया ने तो अपना पाँव तक पटका।

"मेरे बीच में दखल न दीजिए, अलेक्सान्द्रा इवानोव्ना," मिसेज़ येपांचिना ने सुस्पष्ट उच्चारण से कहा। "मैं भी जानना चाहती हूँ। यहाँ बैठ जाओ, प्रिंस, इसी आराम-कुर्सी पर, मेरे सामने—नहीं, यहाँ—रोशनी के और करीब, मुँह को रोशनी में, ताकि मैं तुम्हें देख सकूँ। हाँ, तो कौन-सा एबट ?"

"एबट पफ़्नूती," प्रिंस ने ध्यानपूर्वक और बड़ी गम्भीरता से जवाब दिया।

"पफ़्नूती ? यह तो बड़ी दिलचस्प बात है। हाँ, तो क्या हुआ उसका ?"

मिसेज़ येपांचिना प्रिंस की ओर से अपनी नज़रें हटाए बिना बड़ी अधीरता से, तेजी से और तीखे स्वर में सवाल कर रही थीं, और जब प्रिंस जवाब देता था तो वह उसके एक-एक शब्द पर अपना सिर हिलाती थीं।

"चौदहवीं शताब्दी के एबट पफ़्नूती," प्रिंस ने कहना शुरू किया, "वोल्गा के किनारे के उस इलाक़े में जिसे अब कोस्त्रोमा का प्रान्त कहा जाता है, एक मठ के प्रधान थे। वह अपने पवित्र जीवन के लिए हर जगह मशहूर थे। वह तातारों के हेडक्वार्टर में जाते थे, सार्वजनिक मामलात की व्यवस्था में मदद देते थे, और इसी सिलसिले में उन्होंने किसी दस्तावेज़ पर दस्तख़त किए थे। मैंने उस दस्तख़त की एक नक़ल देखी है। मुझे लिखाई अच्छी लगी और मैंने उसकी नक़ल करना सीख लिया। जब जनरल साहब ने मेरे वास्ते कोई नौकरी खोजने के लिए मेरी लिखाई देखनी चाही, तो मैंने अलग-अलग तरह के अक्षरों में कई वाक्य लिखे, जिनमें से एक था, "एबट पफ़्नूती ने यहाँ अपने दस्तख़त किए हैं," जिसे खुद एबट पफ़्नूती की लिखाई में मैंने लिख दिया। जनरल साहब को वह बहुत पसन्द आया, और इसीलिए वह अभी उसकी चर्चा कर रहे थे।"

"अग्लाया," मिसेज़ येपांचिना ने कहा, "याद रखना—पफ़्नूती। बेहतर हो कि लिख लो, वरना

मैं यक़ीनन भूल जाऊँगी। मैं समझी थी कि कोई इससे दिलचस्प बात होगी। कहाँ है वह दस्तख़त ?"

"मैं समझता हूँ कि अभी तक जनरल साहब के पढ़ने के कमरे में मेज़ पर होगी।"

"किसी को भेजकर मँगवा तो लो।"

"अगर आप चाहें तो मैं आपके लिए फिर से लिख दूँ।"

"ज़रूर, माँ," अलेक्सान्द्रा बोली, "और अब हम लोग खाना खा लें। भूख के मारे जान निकली जा रही है।"

"अच्छी बात है," मिसेज़ येपांचिना ने सहमति प्रकट करते हुए कहा। "आओ, प्रिंस। बहुत भूख लगी है ?"

"जी हाँ, अब मुझे भी ज़ोर से भूख लगी है, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।"

"यह अच्छी बात है कि तुम बड़े अदब से पेश आते हो, और मैं देखती हूँ कि तुम बिलकुल वैसे...मेरा मतलब है...सनकी नहीं हो जैसा कि तुम्हें बयान किया जाता है। इधर आओ। यहाँ बैठो, मेहरबानी करके, मेरे सामने," खाने के कमरे में जाने पर उन्होंने प्रिंस को बिठाते हुए कहा। "मैं चाहती हूँ कि मैं तुम्हें देख सकूँ। अलेक्सान्द्रा, अदेलईदा, प्रिंस का ख़याल रखना। वह सचमुच ऐसा...मेरा मतलब है...बीमार तो नहीं है, क्यों, है न ? शायद नैपकिन की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। खाते वक़्त तुम्हारे गले में नैपकिन तो नहीं बाँधा जाता था, प्रिंस ?"

"जब मैं कोई सात साल का लड़का था तब तो बाँधा जाता था, लेकिन अब खाते वक़्त मैं आमतौर पर अपना नैपकिन घुटनों पर रखता हूँ।"

"बिलकुल ठीक। और तुम्हारे दौरे ?"

"मेरे दौरे ?" प्रिंस ने कुछ विस्मित होकर कहा। "आजकल तो मुझे दौरे कभी-कभार ही पड़ते हैं। लेकिन इसका कोई भरोसा नहीं। मुझसे कहा गया है कि यहाँ का मौसम मेरे लिए शायद अच्छा न साबित हो।"

"बोलता तो अच्छा है," मिसेज़ येपांचिना ने बेटियों को सम्बोधित करते हुए और प्रिंस के एक-एक शब्द पर सिर हिलाते हुए कहा। "मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी। सब कुछ सरासर बकवास था; और बिलकुल झूठ। हमेशा की तरह। खाना खाओ, प्रिंस, और मुझे बताओ कि तुम पैदा कहाँ हुए थे और पले-बढ़े कहाँ। मैं सब कुछ जानना चाहती हूँ। मुझे बहुत दिलचस्पी पैदा हो गई है तुममें।"

प्रिंस ने उन्हें धन्यवाद दिया, और खुली भूख के साथ खाते हुए उन्हें वह सब कुछ बताने लगा जो वह उस दिन सबेरे से कई बार दोहरा चुका था। मिसेज़ येपांचिना की ख़ुशी लगातार बढ़ती हुई नज़र आ रही थी। उनकी बेटियाँ भी बड़े ध्यान से सुन रही थीं। रिश्तेदारी के बारे में चर्चा शुरू हुई, और पता यह चला कि प्रिंस को अपने वंशवृक्ष का काफ़ी अच्छी तरह पता था; लेकिन बहुत कोशिश करके भी प्रिंस और मिसेज़ येपांचिना के बीच कोई रिश्तेदारी नहीं निकली। उनके नाना, दादा और नानी, दादी वगैरह के बीच बहुत दूर की रिश्तेदारी शायद रही हो, ऐसा लगता था। मिसेज़ येपांचिना इस नीरस विषय से ख़ासतौर पर खुश मालूम हो रही थीं, क्योंकि उन्हें लाख चाहने पर भी अपने ऊँचे ख़ानदान की चर्चा करने का मौक़ा शायद ही कभी नसीब होता था। वह खाना खाकर मेज़ पर से उठीं तो बहुत उत्साहित दिखाई पड़ रही थीं।

"चलो, अपनी बैठक में चलते हैं," उन्होंने कहा। "कॉफ़ी वहीं आ जाएगी। हमारेपास सभी लोगों के बैठने का एक कमरा है," उन्होंने प्रिंस को सम्बोधित करते हुए कहा और उसे अपने साथ

वहाँ ले गईं। "दरअसल वह मेरी छोटी बैठक है, जहाँ हम सब लोग अकेले होने पर साथ बैठते हैं और सब अपना-अपना काम करते हैं। यह मेरी सबसे बड़ी बेटी अलेक्सान्द्रा पियानो बजाती है या पढ़ती है या सीना-पिरोना करती है; अदेलाईदा प्राकृतिक दृश्यों की और लोगों की तस्वीरें बनाती है; (और कभी किसी को पूरा नहीं करती), और अग्लाया बस बैठी रहती है, कुछ भी नहीं करती है। मैं भी किसी काम में बहुत अच्छी नहीं हूँ, कोई काम ठीक से होता ही नहीं। लो, हम लोग आ गए। यहाँ बैठो, प्रिंस, आग के पास और हम लोगों को कुछ बताओ। मैं यह देखना चाहती हूँ कि तुम कहानी कैसे सुनाते हो। मैं पक्का यक़ीन कर लेना चाहती हूँ, और जब मैं प्रिंसेस बेलोकोंस्काया से मिलूँगी तो मैं उन्हें तुम्हारे बारे में सब कुछ बताऊँगी। मैं चाहती हूँ कि वे सब तुममें भी दिलचस्पी लें। अच्छा, तो सुनाओ, मेहरबानी करके।"

"लेकिन, माँ," अदेलईदा ने कहा, "किसी वजह के बिना यों ही कहानी सुनाना भी बड़ी अजीब बात है।" इसी बीच उसने अपना ईज़ेल ठीक कर लिया और ब्रश व रंगों की तख़्ती लेकर एक प्राकृतिक दृश्य को नक़ल करने लगी जिसे उसने एक छपे हुए रेखाचित्र से उतारना शुरू कर दिया था। अलेक्सान्द्रा और अग्लाया साथ-साथ एक छोटे सोफ़े पर बैठ गईं और अपने हाथ घुटनों पर रखकर बातचीत सुनने को तैयार हो गईं। प्रिंस ने देखा कि वह विशेष ध्यान का केन्द्र बन गया था।

"अगर मुझे इस तरह कहानी सुनाने का हुक्म दिया गया होता," अग्लाया ने कहा, "तो मैं कुछ भी न कहती !"

"क्यों ? आख़िर इसमें ऐसी अजीब क्या बात है ? यह हमें कुछ क्यों न सुनाए ? यह कोई गूँगा तो है नहीं ? मैं यह जानना चाहती हूँ कि यह कैसे बयान करता है। अच्छा, कुछ भी सुनाओ। हम लोगों को यह बताओ कि स्विट्ज़रलैण्ड तुम्हें कैसा लगा, तुम्हारे ऊपर उसकी पहली छाप क्या पड़ी। तुम लोग देखोगी, यह अभी सुनाना शुरू करेगा और बहुत अच्छी तरह सुनाएगा।"

"मेरे ऊपर पहली छाप बहुत गहरी पड़ी..." प्रिंस ने कहना शुरू किया।

"देखो, मैं कहती थी न," मिसेज़ येपांचिना अपनी बेटियों की ओर मुड़कर बीच में बोल पड़ीं, "उसने शुरू कर दिया।"

"कम से कम उन्हें बोलने तो दो, माँ," अलेक्सान्द्रा ने उन्हें टोका "यह प्रिंस," उसने अग्लाया के कान में कहा, "शायद महाधूर्त है, बौड़म बिलकुल नहीं है।"

"ऐसी ही बात है। मैं तो देखते ही ताड़ गई थी," अग्लाया ने जवाब दिया। "इस तरह नाटक करना बड़ी नीच बात है। क्या वह ऐसा करके कुछ हासिल करना चाहता है ?"

"मेरे ऊपर जो पहली छाप पड़ी वह बहुत गहरी थी," प्रिंस ने दोहराया। "रूस से रास्ते में कई जर्मन शहरों को पार करके वहाँ जाते हुए मैं चुपचाप इधर-उधर देखता रहता था और मुझे याद है कि मैंने कभी कोई सवाल नहीं पूछा। यह मेरी बीमारी के तेज और तकलीफ़देह हमलों के एक लम्बे सिलसिले के बाद की बात है, और जब भी मेरी बीमारी बहुत बढ़ जाती थी और लगातार कई बार दौरा पड़ता था, तो मैं हमेशा बिलकुल जड़ हो जाता था, मेरी याद ग़ायब हो जाती थी और हालाँकि मुझे पूरा होश रहता था फिर भी मेरे विचारों का तर्कसंगत क्रम टूटा-टूटा लगता था। मैं दो-तीन से ज़्यादा विचारों को जोड़ नहीं पाता था। मुझे ऐसा ही लगता है। लेकिन जब दौरों का सिलसिला समाप्त हो जाता था, तो मैं फिर ठीक हो जाता था और मुझमें फिर ताक़त आ जाती थी, जैसा कि मैं इस वक़्त हूँ। मुझे याद है कि मैं बेहद उदास हो गया था। यहाँ तक कि मेरा रो पड़ने को जी चाह रहा था; मैं आश्चर्य और उद्विग्नता की मुद्रा में था—जिस चीज़ का मुझ पर सबसे

अधिक प्रभाव पड़ा वह यह विचार था कि मेरे चारों ओर की हर चीज़ पराई है। इस बात को मैं समझ गया था। यह 'पराया' मुझे नष्ट रहा था। मुझे याद है कि स्विट्ज़रलैण्ड पहुँचने पर एक शाम को बाज़ेल में मैं पूरी तरह होश में आया, और जिस चीज़ ने मुझे जगाया वह था बाजार में एक गदहे का रेंकना। उस गदहे ने मुझे असाधारण रूप से प्रभावित किया, और किसी वजह से मैं उससे खुश भी था, और इसके साथ ही मेरे दिमाग़ में अचानक हर चीज़ बिलकुल साफ़ हो गई।"

"गदहा ? यह तो बड़ी अजीब बात है," मिसेज़ येपांचिना ने कहा। "दूसरी ओर, इसमें कोई अजीब बात नहीं है। मुझे बिलकुल ताज्जुब न होगा अगर तुममें से किसी को गदहे से प्यार हो जाए," अपनी हँसती हुई बेटियों को गुस्से से देखकर वह कहती रहीं। "पौराणिक कथाओं में ऐसा हो भी चुका है। आगे सुनाओ, प्रिंस।"

"तब से गदहे मुझे बहुत अच्छे लगने लगे हैं। मेरे दिल में उनके लिए एक प्यार-सा पैदा हो गया है। मैं उनके बारे में पूछ-ताछ करने लगा क्योंकि मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था, और फ़ौरन ही मैं इस नतीजे पर पहुँच गया कि वह बहुत काम का जानवर है—मेहनती, मज़बूत, धैर्यवान, सस्ता और बहुत मुसीबत झेलनेवाला। और उस गदहे की वजह से मुझे पूरा स्विट्ज़रलैण्ड अच्छा लगने लगा, यहाँ तक कि मेरी पहलेवाली उदासी बिलकुल दूर हो गई।"

"यह सब कुछ तो बहुत अजीब है, लेकिन गदहे को छोड़ देना अच्छा होगा; किसी और चीज़ की चर्चा करें। तुम हँसे क्यों जा रही हो, अग्लाया ? और तुम भी, अदेलाईदा ? प्रिंस ने गदहे की कहानी बहुत अच्छे ढंग से सुनाई। इसने उसे खुद देखा था, और तुमने क्या देखा है ? तुम कभी विदेश गई हो ?"

"मैंने गदहा देखा है, माँ," अदेलईदा बोली।

"और मैंने उसे सुना भी है," अग्लाया क़ब पीछे रहनेवाली थी। तीनों लड़कियाँ फिर हँस पड़ीं। उनके साथ प्रिंस भी हँस दिया।

"बड़ी बुरी आदत है यह तुम लोगों की," मिसेज़ येपांचिना ने कहा। "इनकी बात का बुरा न मानना, प्रिंस। बड़ी अच्छी लड़कियाँ हैं ये। मैं इनसे हमेशा झगड़ती रहती हूँ, लेकिन मैं इनसे प्यार करती हूँ। वे फ़िज़ूल, सिरफिरी, पागल हैं।"

"क्यों ?" प्रिंस ने हँसकर कहा। "उनकी जगह मैं होता तो मैं भी यह मौक़ा कभी हाथ से न जाने देता। लेकिन हर चीज़ के बावजूद मैं पूरी तरह गदहे के पक्ष में हूँ। गदहा बड़ा नेक और काम का आदमी होता है।"

"तुम नेक हो, प्रिंस ?" मिसेज़ येपांचिना ने पूछा। "मैं बस यों ही जानने के लिए पूछ रही हूँ।"

वे सब फिर हँस पड़े।

"फिर वही बेहूदा गदहा !" मिसेज़ येपांचिना ने ऊँचे स्वर में कहा। "मैं उसके बारे में बिलकुल नहीं सोच रही थी। मैं तुम्हें यक़ीन दिलाती हूँ, प्रिंस, कि मैंने कभी सोची भी नहीं..."

"व्यंग करने की बात ? अरे नहीं, मुझे पूरा विश्वास है आपके ऊपर !"

और यह कहकर प्रिंस हँसता रहा।

"यह तुम्हारी भलमनसाहत है कि तुम हँस रहे हो," मिसेज़ येपांचिना ने कहा। "साफ़ नज़र आता है कि तुम बहुत नेक नौजवान हो।"

"हमेशा नहीं रहता," प्रिंस ने जवाब दिया।

"लेकिन मैं तो कहती हूँ," मिसेज़ येपांचिना ने अप्रत्याशित रूप से कहा। "और सच कहूँ

मैं हमेशा नेक रहती हूँ, और मुझमें यह एक ही दोष है, क्योंकि आदमी को हमेशा नेक नहीं होना चाहिए। मुझे इन पर भी अकसर गुस्सा आता है, और ख़ासतौर पर इनके बाप पर, लेकिन मुसीबत यह है कि जब मुझे गुस्सा आता है तब मैं ख़ास तौर पर नेक हो जाती हूँ। तुम्हारे अन्दर आने से पहले मुझे बहुत गुस्सा था और मैंने जताया यह कि कुछ भी मेरी समझ में नहीं आ सकता था। कभी-कभी मैं ऐसी हो जाती हूँ—बिलकुल बच्चों की तरह। अग्लाया ने मुझे एक सबक़ सिखा दिया। तुम्हारा शुक्रिया, अग्लाया। लेकिन यह सब बकवास है। मैं उतनी बेवक़ूफ़ नहीं हूँ जितनी कि मैं लगती हूँ और जैसा कि मेरी प्यारी बेटियाँ मुझे जताना चाहती हैं। मेरा अपना ही अलग स्वभाव है और मुझे बहुत आसानी से लज्जित नहीं किया जा सकता। लेकिन मैं यह बात बिना किसी द्वेष के कह रही हूँ। यहाँ आओ, अग्लाया, ज़रा मुझे एक प्यार तो दो, यह बात...बस-बस," उन्होंने कहा जब अग्लाया बड़ी भावुकता से उनके होंठों पर और उनके हाथ पर प्यार कर चुकी। "हाँ, और सुनाओ, प्रिंस। शायद तुम्हें अपने इस गदहे से ज़्यादा दिलचस्प कोई बात याद हो।"

"मैं फिर कहती हूँ कि यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि कोई आदमी इस तरह सीधे कहानी कैसे सुना सकता है," अदेलाईदा ने अपना मत प्रकट किया। "मैं तो कभी ऐसा न कर पाऊँ।"

"लेकिन प्रिंस कर सकता है क्योंकि वह बहुत होशियार है, तुमसे कम से कम दस गुना, और शायद बारह गुना ज़्यादा होशियार। मैं उम्मीद करती हूँ कि अब इसके बाद इस बात को समझ गई होगी। इन लोगों के सामने साबित कर दो, प्रिंस। सुनाओ न कुछ। अब उस गदहे की चर्चा तुम सचमुच छोड़ देना। तुमने गदहे के अलावा विदेश में और क्या देखा ?"

"वह गदहेवाली बात भी काफ़ी होशियारी की थी," अलेक्सान्द्रा ने अपनी राय देते हुए कहा। "प्रिंस ने बहुत दिलचस्प तरीक़े से अपने बीमारी के बारे में और इस बात के बारे में बताया कि किस तरह एक ही बाहरी उद्दीपन के ज़रिए आघात पहुँचने पर अपने चारों ओर की हर चीज़ अच्छी लगने लगी। मुझे यह जानने में हमेशा दिलचस्पी रही है कि लोग पागल कैसे हो जाते हैं और फिर ठीक कैसे हो जाते हैं। ख़ासतौर पर जब यह अचानक होता है।"

"हाँ, हाँ," मिसेज़ येपांचिना ने हामी भरते हुए कहा। "मैं देखती हूँ कि तुम भी कभी-कभी बड़ी समझदारी की बात कहती हो। अच्छा, अब हँसना बन्द करो ! तुम स्विट्ज़रलैण्ड के प्राकृतिक दृश्यों की बात कर रहे थे न, प्रिंस, आगे सुनाओ !"

"हम लूसर्न पहुँचे और मुझे झील के पास ले जाया गया; मैंने महसूस किया कि वह कितनी खूबसूरत थी, लेकिन उसे देखकर मुझ पर घोर निराशा छा गई," प्रिंस ने कहा।

"क्यों ?" अलेक्सान्द्रा ने पूछा।

"मालूम नहीं। जब भी मैं कोई इतना सुन्दर दृश्य पहली बार देखता हूँ तो मैं परेशान हो उठता हूँ और मेरा दिल डूबने लगता है; एक साथ ही उसे देखकर मुझे खुशी भी होती है और मैं बेचैन भी हो उठता हूँ। लेकिन यह बात भी है कि उस वक़्त मैं बीमार भी था।"

"ओह, मेरा बहुत जी चाहता है उसे देखने का," अदेलईदा ने कहा। "मेरी समझ में नहीं आता कि हम लोग विदेश क्यों नहीं जाते। दो साल से मुझे चित्र बनाने के लिए कोई विषय नहीं मिला है—

क़ब से होता आया चित्रण
पूरब का और दक्षिण का...[1]

1. लेर्मोन्तोव की एक कविता की पंक्ति जिसे अदेलईदा ने ठीक से उद्धृत नहीं किया।

मुझे चित्र बनाने के लिए कोई विषय खोज दीजिए, प्रिंस।"

"मुझे इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं है। मुझे तो ऐसा लगता है—देखिए और चित्र बना डालिए।"

"लेकिन मुझे देखना ही तो नहीं आता।"

"तुम पहेलियाँ क्यों बुझा रही हो ? मेरी समझ में तो एक शब्द भी नहीं आता !" मिसेज़ येपांचिना ने बीच में टोककर कहा। "क्या मतलब तुम्हारा कि तुम्हें देखना नहीं आता ? तुम्हारे दो आँखें तो हैं न ? तो उनसे देखो ! अगर तुम्हें यहाँ देखना नहीं आता तो विदेश में भी तुम्हें देखना नहीं आएगा। हाँ, तो हमें बताओ, प्रिंस, कि तुम खुद चीज़ों को किस तरह देखते थे।"

"हाँ, यह ज़्यादा अच्छा रहेगा," अदेलईदा ने अपनी ओर से कहा। "प्रिंस ने विदेश में चीज़ों को देखना सीखा है, है न ?"

"मालूम नहीं। मैंने तो बस वहाँ अपना स्वास्थ्य ठीक किया, इतना मैं जानता हूँ। पता नहीं कि मैंने वहाँ चीज़ों को देखना सीखा या नहीं। लेकिन मैं ज़्यादातर वक़्त वहाँ बहुत खुश रहता था।"

"खुश !" अग्लाया ने चीख़कर कहा। "क्या आपको खुश रहना आता है ? फिर आप यह कैसे कह सकते हैं कि आपने चीज़ों को देखना नहीं सीखा ? हमें तो कुछ न कुछ सिखाना ही होगा।"

"सिखाइए, मेहरबानी करके," अदेलईदा ने हँसकर कहा।

"मैं आप लोगों को कुछ भी नहीं सिखा सकता," प्रिंस ने भी हँसते हुए कहा। "मैंने विदेश में लगभग सारा समय स्विट्ज़रलैण्ड के एक ही गाँव में बिताया; मैं कभी-कभार ही वहाँ से कहीं घूमने-फिरने के लिए जाता था। मैं आप लोगों को क्या सिखा सकता हूँ ? शुरू में तो मुझे उकताहट ही नहीं होती थी। मेरी हालत तेजी से सुधरने लगी; फिर हर दिन मेरे लिए बहुत क़ीमती होता गया, जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे-वैसे ज़्यादा क़ीमती होता गया, यहाँ तक कि इस बात की ओर मेरा ध्यान जाने लगा। मैं सोने के लिए लेट्टता तो बहुत सन्तुष्ट रहता था और जब सोकर उठता था तो और भी खुश रहता था। लेकिन ऐसा क्यों था, यह बताना मुश्किल है।"

"तो, आपका जी कहीं जाने को नहीं चाहता था ?" अलेक्सान्द्रा ने पूछा। "आपके दिल में कहीं जाने की उमंग नहीं उठती थी ?"

"पहले तो—मेरा मतलब है बिलकुल शुरू में—जी चाहता था और मैं बहुत बेचैन हो जाता था। तमाम वक़्त मैं यही सोचता रहता था कि मैं जिन्दा कैसे रहूँगा; मैं अपना भाग्य आज़माना चाहता था; कुछ क्षण तो ऐसे आते थे जब मैं ख़ासतौर पर बेचैन हो उठता था। इस तरह के क्षण होते हैं, ख़ासतौर पर अकेलेपन में। वहाँ एक झरना था, छोटा-सा; वह पहाड़ की बहुत ऊँचाई पर से गिरता था, बिलकुल एक महीन धागे की तरह, लगभग बिलकुल सीधा—दूधिया, छलछल करता हुआ और झागदार। वह बहुत ऊँचाई पर से गिरता था लेकिन बहुत पास मालूम होता था; कोई तिहाई मील दूर रहा होगा, लेकिन लगता सिर्फ़ पचास क़दम दूर था। मुझे रात को उसकी आवाज़ सुनना बहुत अच्छा लगता था; उन्हीं क्षणों में मेरी बेचैनी बहुत बढ़ जाती थी। कभी-कभी दोपहर को भी जब मैं पहाड़ों के बीच टहलने जाता था, और पहाड़ की ढलान की आधी ऊँचाई पर खड़ा हो जाता था—चारों ओर चीड़ के विशाल, पुराने, लसदार पेड़; ऊपर सीधी चट्टान पर एक पुराने मध्ययुगीन किले के खंडहर; दूर, बहुत दूर नीचे, आँखों से लगभग ओझल हमारा छोटा-सा गाँव; तेज चमकता सूरज, नीला आसमान, और चारों ओर छाई घोर निस्तब्धता। उस क्षण कहीं जाने को जी चाहता था और मुझे लगता था कि अगर मैं सीधे आगे बढ़ता जाऊँ, बहुत देर तक आगे चलता रहूँ और उस रेखा तक पहुँच जाऊँ, जहाँ धरती और आकाश मिलते हैं तो वहाँ मुझे सारे रहस्य को समझने

की कुंजी मिल जाएगी और तुरन्त मैं एक नया जीवन पा जाऊँगा, एक ऐसा जीवन जो हमारे इस जीवन से हज़ार गुना ज़्यादा शानदार और तूफ़ानी होगा। मैं एक बड़े शहर के सपने देखता रहता था, नेपल्स जैसे, जिसमें महलों की भरमार थी, शोर था, कोलाहल था, जीवन था।...किस-किस चीज़ के सपने मैं नहीं देखता था ! बाद में मैं सोचने लगता था कि आदमी को जेलख़ाने में भी विस्तृत जीवन मिल सकता है।"

"बादवाला अत्यन्त सराहनीय विचार मैंने अपने स्कूल की किताब में पढ़ा था जब मैं बारह साल की थी," अग्लाया ने कहा।

"यह सब तो दर्शन की बातें हैं," अदेलाईदा बोली, "आप दार्शनिक हैं और हम लोगों को उपदेश देने आए हैं।"

"शायद आपका कहना ठीक है," प्रिंस ने मुस्कराकर कहा। "मैं सचमुच शायद दार्शनिक हूँ, और, कौन जाने, शायद सचमुच मेरा इरादा लोगों को उपदेश देने का हो।...हाँ, ऐसा सम्भव है; सचमुच सम्भव है।"

"और आपका दर्शन बिलकुल येव्लांपिया निकोलायेव्ना जैसा है," अग्लाया फिर बीच में बोल पड़ी, "वह एक सरकारी कर्मचारी की विधवा है, हम लोगों के यहाँ आती रहती है, मुफ़्तखोर क़िस्म की औरत। ज़िन्दगी में उसे बस सस्तेपन की फ़िक्र रहती है—सस्ते से सस्ता कैसे रहा जाए—वह बस हरदम पैसों की बातें करती रहती है, हालाँकि उसके पास पैसा है; बला की धूर्त्त है वह। आपका यह जेलखाने का विस्तृत जीवन भी ऐसा ही है। और शायद छोटे-से गाँव में आपका चार साल का सुख भी, जिसकी ख़ातिर आपने अपना नेपल्स बेच दिया, और ऐसा लगता है कि इसमें आपको लाभ भी हुआ, भले वह कुछ पैसों का ही क्यों न रहा हो।"

"जेल के जीवन के बारे में एक से अधिक रायें हो सकती हैं, यह ठीक है," प्रिंस ने कहा। "मैंने एक ऐसे आदमी का क़िस्सा सुना है जिसने बारह साल जेल में काटे थे। वह मेरे प्रोफ़ेसर का एक मरीज़ था। उसे दौरे पड़ते थे, कभी-कभी वह बहुत बेचैन हो जाता था, फूट-फूटकर रोता था, और एक बार तो उसने आत्महत्या तक करने की कोशिश की थी। जेल में उसका जीवन, मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ, बहुत ही दुःखी जीवन था, लेकिन वह किसी भी प्रकार दो कौड़ी का जीवन नहीं था। हालाँकि उसके एकमात्र दोस्त थे एक मकड़ी और उसकी खिड़की के नीचे उगा हुआ पेड़।...लेकिन मैं आपको पिछले साल एक दूसरे आदमी के साथ अपनी मुलाक़ात के बारे में बताऊँ। उसके जीवन में एक विचित्र घटना हुई थी, विचित्र इसलिए कि वैसी घटना कभी-कभार ही होती है। इस आदमी को एक दिन दूसरे लोगों के साथ मौत की सज़ा दिए जाने की जगह ले जाया गया था और उसे मौत की सज़ा पढ़कर सुनाई गई थी। उसे एक राजनीतिक अपराध के लिए गोली मारी जानेवाली थी। कोई बीस मिनट बाद उन्हें क्षमा का आदेश पढ़कर सुनाया गया, जिसमें उनके अपराध के लिए कोई दूसरी सज़ा दी गई थी। लेकिन इन दोनों सज़ाओं के बीच का समय—बीस मिनट या, कम से कम, पन्द्रह मिनट—उसने इस पक्के विश्वास के साथ बिताया कि कुछ ही मिनट बाद वह मर जाएगा। जब वह उन क्षणों के बारे में अपनी अनुभूतियों को याद करके सुनाता था तो मुझे उसकी बातें सुनना बहुत अच्छा लगता था, और मैंने कई बार उससे इसके बारे में सवाल भी पूछे। उसे हर बात असाधारण स्पष्टता के साथ याद थी, और वह कहा करता था कि उन कुछ मिनटों के दौरान उस पर जो कुछ बीता था उसे वह कभी भूल नहीं सकेगा। सज़ा दिए जाने की जगह से कोई बीस क़दम की दूरी पर, जिसके चारों ओर लोगों और सिपाहियों की एक भीड़ जमा थी, ज़मीन में तीन खम्भे गाड़े गए, क्योंकि कई अपराधी थे। पहले तीन को खम्भों

के पास ले जाकर उनसे बाँध दिया गया; उन्हें मौत की पोशाक (लम्बे-लम्बे सफ़ेद लबादे) पहना दी गई, और उनकी आँखों पर सफ़ेद टोपियाँ खींच दी गईं ताकि वे राइफिलों को न देख सकें; इसके बाद हर खम्भे के सामने सिपाहियों की एक-एक टुकड़ी खड़ी कर दी गई। मेरा परिचित आठवाँ था, इसलिए उसे खम्भों के पास ले जाए जाने की उसकी बारी तीसरे खेप में आनेवाली थी। पादरी सलीब लेकर उनमें से एक-एक के पास गया। मतलब था कि उसे अब बस पाँच मिनट और जिन्दा रहना था। वह कहता था कि ये पाँच मिनट उसे अनन्तकाल जैसे मालूम हुए, एक विशाल निधि जैसे। उसे लगा कि उन पाँच मिनटों में वह इतने जीवन जी लेगा कि अभी अन्तिम क्षण के बारे में सोचना निरर्थक बात थी, यहाँ तक कि उसने हर तरह के फ़ैसले किए—उसने हिसाब लगाया कि साथियों से विदा लेने में उसे ठीक-ठीक कितना समय लगेगा, उसमें दो मिनट लगाएगा, फिर वह बाक़ी दो मिनट अपने बारे में अन्तिम बार सोचने में लगाएगा, और अन्त में वह एक मिनट अपने चारों ओर दृष्टि डालने में लगाएगा। उसे अच्छी तरह याद था कि उसने यही तीन फ़ैसले किए थे और उसने समय का बँटवारा ठीक इसी तरह किया था। वह सत्ताईस साल की उम्र में मरने जा रहा था, एक हट्टा-कट्टा और तदनुरुस्त आदमी। उसे याद था कि उसने साथियों से विदा लेते समय उसने एक से बिलकुल ही बेतुका सवाल किया था और उसका जवाब सुनने में उसे बहुत ही दिलचस्पी थी। फिर, अपने साथियों से विदा ले चुकने के बाद वे दो मिनट आए जो उसने अपने बारे में सोचने के लिए रखे थे; वह पहले से जानता था कि वह किन किन बातों के बारे में सोचेगा—वह यथासम्भव अधिक से अधिक स्पष्ट रूप में और जल्दी से जल्दी यह कल्पना करना चाहता था कि ऐसा कैसे हो सकता है कि अभी, इस क्षण, वह यहाँ जिन्दा मौजूद था और तीन ही मिनट बाद वह बस कुछ और हो जाएगा—लेकिन क्या ? और कहाँ ? वह उन दो मिनटों के दौरान इन सारी बातों का फ़ैसला कर लेना चाहता था ! पास ही थोड़ी ही दूर एक गिरजाघर था, जिसकी सुनहरी छत तेज धूप में चमक रही थी। उसे याद था कि उसने बड़ी एकाग्रता से उस छत को और उससे पलटकर तेजी से आती हुई सूरज की किरणों को देखा था, वह रोशनी की ओर से अपनी नज़रें हटा नहीं पाया था—उसे ऐसा लगा था कि ये किरणें उसकी नई प्रकृति थीं और तीन मिनट में वह किसी तरह उनमें विलीन हो जाएगा।...अनिश्चितता और इस नए के प्रति, जो किसी भी क्षण अनिवार्य रूप से आनेवाला था, घृणा की भावना अत्यन्त भयानक थी; लेकिन उसने कहा कि जो चीज़ उस समय उसके लिए सबसे अधिक असह्य थी वह था यह निरन्तर विचार कि 'काश मुझे मरना न पड़ता ! काश मैं फिर जीवन में लौट सकूँ तो ओह, कैसा अनन्तकाल होगा वह ! और वह सब मेरा होगा ! मैं हर क्षण को एक युग में बदल दूँगा, मैं कुछ भी नहीं खोऊँगा, मैं हर क्षण को अलग-अलग गिनूँगा और उनमें से एक भी व्यर्थ नहीं करूँगा।' उसने बताया कि इस विचार ने अन्ततः उसमें इतना क्रोध भर दिया कि वह चाहने लगा कि उसे जल्दी से जल्दी गोली मार दी जाए।"

प्रिंस अचानक चुप हो गया—सब लोगों को उम्मीद थी कि वह अभी अपना क़िस्सा सुनाता रहेगा और उससे कोई निष्कर्ष निकालेगा।

"आपकी कहानी ख़त्म हो गई ?" अग्लाया ने पूछा।

"क्यों, क्या बात है ? अरे, हाँ, जी हाँ," प्रिंस ने अपनी क्षणिक विचारमग्नता की अवस्था से बाहर निकलते हुए कहा।

"लेकिन आपने हमें यह सब बताया क्यों ?"

"यों ही...बस मुझे लगे हाथ यह बात याद आ गई...मैं..."

"आप अपनी बात अधूरी छोड़ देते हैं, प्रिंस," अलेक्सान्द्रा ने मत व्यक्त किया। "आप जो बात कहना चाहते थे वह शायद यह थी कि किसी क्षण का मूल्य सिक्कों में आँकना असम्भव है, और यह कि कभी-कभी पांच मिनट दुनिया की सारी दौलत से ज़्यादा बहुमूल्य हो सकते हैं। यह सब कुछ तो बहुत अच्छा है, लेकिन मुझे यह बताइए कि आपके उस दोस्त का क्या हुआ जिसने आपको ये सारी भयानक बातें बताई थीं ?...उसकी सज़ा बदल दी गई थी न, जिसका मतलब है कि उसे 'जीवन का अनन्तकाल' दे दिया गया था। बाद में उसने उस निधि का क्या किया ? उसने आख़िरकार एक-एक क्षण को अलग-अलग आँका ?"

"अरे, नहीं, उसने मुझे खुद बताया—मैंने उससे पूछा था इसके बारे में—उसने उस तरह जीवन बिलकुल नहीं बिताया, और उसने कितने ही क्षण नष्ट किए।"

"तो यह बात आपके लिए एक सीख होनी चाहिए। ऐसा लगता है कि 'एक-एक क्षण को अलग-अलग आँककर' जीना सचमुच असम्भव है। वजह कुछ भी हो, लेकिन है यह असम्भव।"

"हाँ, वजह कुछ भी हो, लेकिन यह असम्भव है," प्रिंस ने दोहराया। "मैंने खुद ऐसा सोचा था।...फिर भी, न जाने क्यों मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता।..."

"तो आपका यह ख़्याल है कि आप बाक़ी सब लोगों से ज़्यादा समझदारी से अपना जीवन बिताएँगे ?" अग्लाया ने पूछा।

"हाँ, मैंने ऐसा भी सोचा था।"

"और सोचते हैं, है न ?"

"हाँ...सोचता हूँ," प्रिंस ने अग्लाया की ओर पहले की तरह ही बड़ी नरमी से और कुछ-कुछ सहमी हुई मुस्कराहट के साथ देखते हुए जवाब दिया; लेकिन फ़ौरन ही वह हँस पड़ा और बहुत प्रफुल्लित होकर उसे देखने लगा।

"बहुत विनम्र हैं न आप ?" अग्लाया ने कहा; वह लगभग झुँझलाई हुई लग रही थी।

"आप कितनी बहादुर हैं! आप हँस रही हैं, लेकिन मैं उस आदमी की कहानी से इतना प्रभावित हुआ था कि बाद में सपने देखा करता था, उन्हीं पाँच मिनटों के बारे में।..."

उसने बड़ी गम्भीरता से और पैनी नज़रों से अपने श्रोताओं को एक बार फिर बारी-बारी से देखा।

"आप लोग किसी बात पर मुझसे नाराज़ तो नहीं हैं ?" उसने अचानक मानो खिसियाकर लेकिन उनकी आँखों में आँखें डालकर पूछा।

"किसलिए ?" तीनों लड़कियाँ आश्चर्य से चिल्ला पड़ीं।

"इसलिए कि मैं तमाम वक़्त आपको जैसे उपदेश दे रहा हूँ।"

वे सब हँस पड़े।

"अगर आप नाराज़ हैं तो नाराज़ न हों," उसने कहा। "मैं खुद अच्छी तरह जानता हूँ कि मैंने जीवन को दूसरे लोगों से कम जिया है और जीवन के बारे में दूसरे लोगों से कम जानता हूँ। मैं कभी-कभी शायद कुछ अजीब-सी बातें करता हूँ।..." और यह कहकर वह बिलकुल सिटपिटा-सा गया।

"अगर आप कहते हैं कि...खुश थे तो इसका मतलब है कि आपने ज़िन्दगी को दूसरों से कम नहीं बल्कि ज़्यादा जिया होगा; फिर आप बनावटी बातें क्यों करते हैं और माफ़ी क्यों माँगते हैं ?" अग्लाया ने कठोर स्वर में कुरेदते हुए कहना शुरू किया। "और जहाँ तक हम लोगों को उपदेश देने का सवाल है तो उसके बारे में आप परेशान न हों, आपमें कोई बड़ी खूबी नहीं है। आपकी

इस विरक्ति के साथ तो आदमी सौ साल सुख से रह सकता है। चाहे आपको कोई मौत की सज़ा दी जाती हुई दिखाए या उँगली दिखाए आप दोनों ही से कोई कमाल का नतीजा निकाल लेंगे और सन्तुष्ट भी रहेंगे। उस तरह ज़िन्दगी बिताना आसान है।"

"इतनी चिढ़ी हुई क्यों हो तुम ? मेरी समझ में नहीं आता," मिसेज़ येपांचिना ने, जो कुछ समय से उनके चेहरों को देख रही थीं, डाँटकर कहा। "और मेरी समझ में यह भी नहीं आता कि आख़िर तुम बातें क्या कर रही हो। उँगली और यह सारी बकवास क्या है ? प्रिंस बहुत सुन्दर ढंग से बातें करता है, बस थोड़ी-सी उदास बातें। तुम उसे निरुत्साह क्यों करना चाहती हो ? जब उसने शुरू किया था तब वह हँस रहा था और अब वह बिलकुल बुझा हुआ दिखाई दे रहा है।"

"कोई बात नहीं, माँ। लेकिन, प्रिंस, यह तो बड़े अफ़सोस की बात है कि आप किसी को मौत की सज़ा दिए जाते हुए नहीं देख पाए। वरना मैं आपसे कुछ पूछती।"

"मैंने मौत की सज़ा दिए जाते हुए देखा है," प्रिंस ने कहा।

"देखा है ?" अग्लाया ने चिल्लाकर कहा। "मुझे पहले ही समझ लेना था। यह तो कमाल ही हो गया। अगर आपने देखा है तो आप कैसे कह सकते हैं कि आप तमाम वक़्त ख़ुशी का जीवन बिताते रहे हैं ? तो मैंने आपसे सच बात कही है न ?"

"लेकिन क्या आपके गाँव में लोगों को मौत की सज़ा दी जाती थी ?" अदेलाईदा ने पूछा।

"मैंने वह लियोन में देखा था। मैं वहाँ श्नाइडर के साथ गया था। वह मुझे ले गए थे। मैं वहाँ ठीक उस वक़्त पहुँचा था जब मौत की सज़ा दी जानेवाली थी।"

"तो वह आपको बहुत अच्छा लगा ? क्या उसमें फायदे की कोई बात थी ? क्या उससे आपको कुछ सीख मिली ?" अग्लाया ने पूछा।

"मुझे वह बिलकुल अच्छा नहीं लगा, और उसके बाद मेरी तबियत भी कुछ खराब हो गई, लेकिन मैं मानता हूँ कि मैं ऐसे देख रहा था जैसे वहीं गड़कर रह गया हूँ। अपनी आँखें उधर से हटा ही नहीं सका।"

"मैं भी अपनी नज़रें न हटा पाती," अग्लाया ने कहा।

"वहाँ औरतों का जाकर उसे देखना पसन्द नहीं किया जाता। बाद में वे ऐसी औरतों के बारे में अखबारों तक में लिखते हैं।"

"मतलब है कि अगर वे इसे औरतों के लिए ठीक नहीं समझते, तो वे इस तरह यह कहना चाहते हैं (और इसलिए उचित भी ठहराना चाहते हैं) कि वह मर्दों के लिए ठीक है। उनकी इस तर्क-बुद्धि के लिए मैं उन्हें बधाई देती हूँ। और, ज़ाहिर है, आपकी भी वही राय है।"

"हमें मौत की सज़ा दिए जाने के बारे में बताइए," अदेलाईदा ने बीच में टोकते हुए कहा।

"माफ़ कीजिएगा, इस वक़्त मेरा जी नहीं चाह रहा है," प्रिंस ने अटपटा महसूस करते हुए और लगभग त्योरियाँ चढ़ाकर कहा।

"लगता है कि आप हम लोगों को सुनाना नहीं चाहते," अग्लाया ने व्यंग किया।

"नहीं, देखिए बात यह है, मैं अभी मौत की सज़ा दिए जाने के बारे में बयान कर रहा था।"

"किससे बयान कर रहे थे ?"

"आपके खिदमतगार से, जब मैं बाहर इन्तज़ार कर रहा था।"

"किस खिदमतगार से ?" उन-सबने एक स्वर में पूछा।

"वह जो ड्योढ़ी में बैठता है। उसके बाल कुछ-कुछ सफ़ेद और चेहरा कुछ लाल है। मैं ड्योढ़ी

में बैठा जनरल साहब से मिलने की राह देख रहा था।

"यह तो अजीब बात है," मिसेज़ येपांचिना बोलीं।

"प्रिंस जनवादी आदमी हैं," अग्लाया ने तड़ से कहा। "अगर आप अलेक्सेई को उसके बारे में बता चुके हैं तो आप हमें बताने से तो इन्कार कर ही नहीं सकते।"

"मैं सुनने के लिए बेताब हूँ," अदेलाईदा ने फिर कहा।

"देखिए," प्रिंस उसे सम्बोधित करते हुए फिर बड़े जोश के साथ बोला (वह बड़ी जल्दी जोश में आ जाता था), "अभी जब आपने मुझसे चित्र बनाने के लिए कोई विषय बताने को कहा था तो मेरे दिमाग़ में यह बात आई थी कि आपसे एक आदमी के चेहरे की तस्वीर बनाने को कहूँ जिसे मौत की सज़ा दी जा रही हो, उसकी गर्दन पर गिलोटीन का कुल्हाड़ा गिरने से एक मिनट पहले की उसकी सूरत, जब वह अभी तख्ते पर खड़ा हो, उस तख्ते पर लेटने से पहले।"

"चेहरा ? सिर्फ़ चेहरा ?" अदेलाईदा ने पूछा। "यह तो बड़ा विचित्र विषय होगा। और इससे किस तरह की तस्वीर बनेगी ?"

"मुझे मालूम नहीं, लेकिन क्यों नहीं ? मतलब क्या है आपका ?" प्रिंस ने बड़े जोश से आग्रह करते हुए कहा। "अभी बहुत अरसा नहीं हुआ, मैंने बाज़ेल में एक ऐसी तस्वीर देखी थी। मैं आपको उसके बारे में बताना बहुत चाहता हूँ लेकिन, किसी और दिन।...उसका मेरे ऊपर बहुत गहरा असर पड़ा था।"

"आप बाजेल की उस तस्वीर के बारे में तो किसी और दिन ज़रूर बताइएगा," अदेलाईदा बोली, "लेकिन इस वक़्त तो मुझे यह मौत की सज़ावाली तस्वीर समझाइए। उसी रूप में बता दीजिए जैसे आप उसकी कल्पना करते हैं। आख़िर यह चेहरा किस तरह बनाया जाए ? सिर्फ़ चेहरा ? वह किस तरह का चेहरा होगा ?"

"मरने से ठीक एक मिनट पहले का चेहरा," प्रिंस ने बड़ी उत्सुकता से बताना शुरू किया; वह अपनी यादों के प्रवाह में बह गया और तत्काल एक क्षण में और सब कुछ भूल गया, "उस क्षण का जब सीढ़ी से चढ़कर ऊपर तख्ते पर पहुँचाया गया था। ठीक उसी क्षण उसने एक नज़र मेरी ओर डाली थी। मैंने उसका चेहरा देखा और सब कुछ मेरी समझ में आ गया।...लेकिन मैं आपको उसके बारे में बताऊँ कैसे ? मैं बहुत, बहुत चाहता हूँ कि आप या कोई और उसकी तस्वीर बना सके ! ज़्यादा अच्छा होगा अगर आप बना सकें। उस वक़्त ही मैंने सोचा था कि इस तरह की तस्वीर से बड़ा फ़ायदा होगा। देखिए, उसमें यह सब कुछ दिखाना चाहिए जो पहले हो चुका है—सब कुछ, सब कुछ। वह जेल में रहा था और कम से कम एक हफ़्ते से मौत की सज़ा दिए जाने की राह देख रहा था; वह आमतौर पर होनेवाली लाल फीताशाही का आसरा लगाए बैठा था, इस बात का कि उसकी सज़ा का काग़ज़ कहीं भेजना होगा जहाँ से वह हफ़्ते-भर बाद ही लौटकर आएगा। लेकिन किसी वजह से यह लम्बी कार्रवाई बहुत जल्दी पूरी हो गई। सुबह पाँच बजे वह सो रहा था; अक्तूबर के अन्त की बात थी; पाँच बजे अभी काफ़ी सर्दी और अँधेरा था; जेलखाने का गवर्नर आया, दबे पाँव, सन्तरी के साथ और उसने धीरे से उसका कन्धा छुआ; वह अपनी कुहनियों के बल उठ बैठा और उसे रोशनी दिखाई दी; 'क्या बात है ?' 'मौत की सज़ा दस बजे दी जाएगी।' उसकी आँखों में अभी तक नींद इतनी भरी थी कि उसे सहज ही विश्वास नहीं हुआ। वह बहस करने लगा कि उसकी सज़ा का काग़ज़ हफ़्ते-भर से पहले तैयार नहीं होगा, लेकिन जब वह पूरी तरह जाग गया तो उसने बहस करना बन्द कर दिया और चुप हो गया—मैंने दूसरों के मुँह से ऐसा सुना है। फिर वह बोला—'फिर भी यह तो बड़ी मुश्किल है कि इस तरह अचानक...' इतना

कहकर वह फिर चुप हो गया, और उसके बाद एक शब्द भी नहीं बोला। अगले तीन-चार घंटे ऐसे अवसर पर आमतौर पर होनेवाले कामों में बीत गए—पादरी, नाश्ता—जिसमें शराब, कॉफ़ी और उबला हुआ गोश्त दिया जाता है (क्या यह व्यंग नहीं है ? ज़रा सोचिए, कितनी क्रूर बात है यह, फिर भी ये भोले-भाले लोग ऐसा अपने हृदय की उदारता के कारण करते हैं और उन्हें पूरा विश्वास रहता है कि यह मानवीयता का प्रदर्शन है।) फिर उसे कपड़े पहनाए गए (मालूम है मौत की सज़ा पानेवाले अपराधी के कपड़े कैसे होते हैं ?), और आख़िरकार वे उसे मृत्युदण्ड दिए जाने की जगह ले गए।...मैं सोचता हूँ कि उस वक़्त भी उसे लगा होगा कि उसे अभी अनन्तकाल तक जीवित रहना है। मुझे लगता है कि रास्ते में उसने सोचा होगा, 'मेरे पास अभी बहुत-बहुत समय है; मुझे अभी तीन सड़क-भर जिन्दा रहना है; यहवाली पार करते ही वह दूसरीवाली आएगी, और फिर वह, जिस पर दाहिनी ओर बेकरी है—अरे, बेकरी तक पहुँचते-पहुँचते तो युग बीत जाएँगे।' उसके चारों ओर लोगों की भीड़ जमा थी, जो चीख़ रहे थे, चिल्ला रहे थे, दस हज़ार चेहरे, दस हज़ार लोगों की आँखें,—और यह सब कुछ उसे सहना था, और सबसे बड़ी बात तो थी यह विचार 'ये दस हज़ार हैं और उनमें से किसी को मौत की सज़ा नहीं दी जा रही है, लेकिन मुझे मौत की सज़ा दी जानेवाली है !' लो, यह सब कुछ तो हुई पहलेवाली बात। एक सीढ़ी तख़्ते तक जाती थी; ठीक इस सीढ़ी के सामने वह अचानक फूट-फूटकर रोने लगा, और वह तगड़ा और बहादुर आदमी था, बहुत ही दुष्ट आदमी था वह, लोग कहते थे। तमाम वक़्त पादरी उसके साथ था, वह गाड़ी पर बैठकर उसके साथ ही आया था और लगातार उससे बातें करता रहा था; लेकिन शायद ही पादरी का एक शब्द उसने सुना हो—सुनने की कोशिश करता भी तो वह एक-दो शब्दों से अधिक समझ नहीं सकता था। ऐसा ही हुआ होगा। आख़िरकार वह सीढ़ी चढ़ने लगा—उस वक़्त उसके पाँव बँधे हुए थे इसलिए वह बहुत छोटे-छोटे क़दम ही उठा सकता था। पादरी ने, जो बहुत ही समझदार आदमी रहा होगा, बोलना बन्द कर दिया और बार-बार चूमने के लिए उसे सलीब देता गया। सीढ़ी के नीचे उसका चेहरा बहुत पीला था, लेकिन जब वह ऊपर पहुँचा और तख़्ते पर खड़ा हुआ तो उसका चेहरा चूने की तरह सफ़ेद हो गया, बिलकुल चूनें की तरह सफ़ेद। उसकी टाँगें कमज़ोर हो गई होंगी और लकड़ी जैसी जड़ हो गई होंगी, और उसे मतली भी आ रही होगी मानो कोई चीज़ उसके गले में अटक रही हो और उसकी वजह से उसकी हलक में गुदगुदी सी हो रही थी—आपने कभी आतंक के क्षण में ऐसा महसूस किया है, जब आपकी तर्क-बुद्धि पर तो कोई प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन उस पर आपका कोई वश नहीं चल पाता ? मुझे लगता है कि, उदाहरण के लिए, अनिवार्य विनाश के क्षण में, जब आपके ऊपर घर ढह रहा हो, तो आपमें बैठ जाने की, आँखें मूँदकर प्रतीक्षा करने की प्रबल इच्छा जागृत होती होगी—जो होना है सो हो !...ठीक उसी क्षण जब यह कमज़ोरी पैदा होनी शुरू हो रही थी, पादरी ने तेजी से हाथ बढ़ाकर, चुपचाप सलीब उसके होंठों पर रख दी, बहुत ही छोटी-सी चाँदी की चौकोर सलीब—और हर क्षण उसे उसके होंठों से लगाता रहा। हर बार जब सलीब उसके होंठों को छूती थी तो वह आँखें खोल देता था और कुछ मिनटों के लिए फिर मानो जीवित होने लगता था और उसकी टाँगें आगे बढ़ने लगती थीं। वह ललचाकर सलीब को चूमता था, ऐसा लगता था कि उसे उसको चूमने की जल्दी हो, मानो उसे इस बात की चिन्ता लगी हो कि कहीं वह अपने साथ ज़रूरत के वक़्त काम आनेवाली कोई चीज़ ले जाना न भूल जाए, लेकिन शायद ही उसे उस समय किसी धार्मिक भावना की चेतना रही हो। और यह सिलसिला उस वक़्त तक चलता रहा जब तक कि वह तख़्ते पर नहीं पहुँच गया।...बड़ी अजीब बात है कि उन अन्तिम क्षणों में शायद ही कभी कोई मूर्छित होता हो। बल्कि, इसके विपरीत, मैं तो समझता

कि बच्चा कठिन से कठिन समस्या के बारे में बहुत अच्छी सलाह दे सकता है। जब वह छोटी-सी सुन्दर चिड़िया आपको इतना खुश होकर और इतने विश्वास के साथ देखती है, तो आपको उसे धोखा देते शर्म आती ही है ! मैं उन्हें छोटी चिड़ियाएँ इसलिए कहता हूँ कि दुनिया में चिड़िया से अच्छी कोई चीज़ नहीं होती। लेकिन, सच बात तो यह है कि गाँव के सारे लोग मुझसे ख़ासतौर पर एक घटना की वजह से नाराज़ थे...जबकि तिबो तो सरासर मुझसे जलता था। शुरू में तो वह बस इस बात पर सिर हिलाता था और आश्चर्य करता था कि इसकी क्या वजह थी कि बच्चे हर उस चीज़ को समझ लेते थे जो मैं उन्हें बताता था जबकि वे उसकी कोई बात शायद ही कभी समझ पाते थे, और फिर वह मुझ पर हँसने लगा जब मैंने उसे बताया कि उन्हें न वह कुछ सिखा सकता है न मैं, बल्कि सबसे अधिक सम्भावना इसी बात की है कि वह हमें कुछ सिखा दें। पता नहीं वह मुझसे जलता कैसे था और मुझ पर झूठा आरोप कैसे लगा सकता था जबकि उसने स्वयं अपना जीवन बच्चों के साथ बिताया था ! बच्चों के माध्यम से ही आत्मा के विकार दूर होते हैं।...श्लाइडर की क्लीनिक में एक रोगी था जो बहुत ही दुःखी आदमी था। वह ऐसा अभागा था कि मुझे तो सन्देह है कि वैसा दुर्भाग्य किसी और का हो सकता है। उसे वहाँ पागलपन के इलाज के लिए भेजा गया था। मेरी राय में वह पागल नहीं था, बल्कि बहुत दुःखी था—बस यही उसकी बीमारी थी। काश आपको मालूम होता कि अन्त में हमारे बच्चों का उसके लिए क्या महत्त्व हो गया था।...लेकिन मैं आप लोगों को उस रोगी के बारे में किसी और वक़्त बताऊँगा; इस वक़्त तो मैं आपको यह बताऊँगा कि यह सारा सिलसिला शुरू कैसे हुआ। शुरू में बच्चे मुझे पसन्द नहीं करते थे। मैं इतना बड़ा था, और हमेशा इतना अटपटा रहता हूँ; मैं जानता हूँ कि मैं बदसूरत भी हूँ। फिर यह बात भी थी कि मैं परदेशी था। शुरू में बच्चे मुझ पर हँसते थे, और फिर जब उन्होंने मुझे मारी को चूमते हुए देख लिया तो वे मेरे ऊपर पत्थर भी फेंकने लगे। और मैंने उसे बस एक ही बार चूमा था।...नहीं, ऐसा नहीं," प्रिंस ने जल्दी से अपने सुननेवालों की मुस्कराहट को रोकते हुए कहा, "उसमें प्रेम जैसी कोई बात नहीं थी। अगर आपको मालूम होता कि वह कैसी दुःखी प्राणी थी तो आपको भी उस पर मेरी ही तरह तरस आता। वह हमारे गाँव में रहती थी। उसकी माँ एक बुढ़िया थी। उनके टूटे-फूटे छोटे-से घर की दो खिड़कियों में से एक को गाँव के अधिकारियों की इजाज़त से अलग कर दिया गया था, और उसमें से उस बुढ़िया को लैस, धागा, तम्बाकू और साबुन आदि बहुत ही सस्ती-सस्ती चीज़ें बेचने दी जाती थीं, और इसी पर उनकी गुजर-बसर होती थी। वह अपाहिज थी; उसके पाँव सारे सूजे हुए थे, इसलिए वह हमेशा एक ही जगह बैठी रहती थी। मारी उसकी बेटी थी, बीस बरस की कमज़ोर और दुबली-पतली लड़की; उसे बहुत पहले तपेदिक़ हो गई थी लेकिन वह दिन-भर घर-घर जाकर रोजाना मजदूरी पर भारी मेहनत का काम करती थी—फ़र्श पोंछना, कपड़े धोना, बाहर अहाते में झाड़ू लगाना, मवेशियों की देखभाल करना। एक फ्रांसीसी व्यापारी यात्री ने, जो उस गाँव से गुजर रहा था, उस पर डोरे डाले और बहला-फुसलाकर उसे अपने साथ ले गया, लेकिन हफ़्ते-भर बाद वह लड़की को सड़क पर बेसहारा छोड़कर चला गया। रास्ते-भर भीख़ माँगती हुई, गन्दे चीथड़े पहने, और जूतों के तलों में सूराख लिए वह किसी तरह घर लौटी। वह हफ़्ते-भर चलती रही थी, रात को खेतों में सो जाती थी; उसे बुरी तरह सर्दी-जुकाम हो गया था। उसके पाँवों पर जख्म ही जख्म थे, उसके हाथ फटे और सूजे हुए थे। वह पहले भी कौन बड़ी सुन्दर थी ! बस उसकी आँखों में नरमी, नेकी और भोलापन था। वह बहुत चुप रहती थी। एक दिन—बहुत पहले की बात है—वह काम करते-करते गा उठी, और मुझे याद है कि इस बात पर सबको कितना ताज्जुब हुआ था और किस तरह सब लोग खूब हँसे

थे—'मारी गा उठी ! सचमुच ? मारी गा उठी !' वह बुरी तरह खिसिया गई और उसके बाद से हमेशा के लिए चुप हो गई। उस जमाने में लोग उसके साथ बड़ी नेकी का बर्ताव करते थे, लेकिन जब वह बीमार और चीथड़ों में लिपटी हुई आई तो किसी को उस पर तरस नहीं आया। ऐसी हालत में लोग कितने क्रूर हो जाते हैं ! इससे सम्बन्धित उनके विचार कितने दुःखद होते हैं। सबसे पहले उसकी माँ ने ही उसका स्वागत बड़ी घृणा और तिरस्कार के भाव से किया—'तुमने मेरे माथे पर कलंक का टीका लगा दिया।' सबसे पहले उसकी माँ ने ही उसे सार्वजनिक निन्दा का पात्र बनाया—जब मारी की वापसी की ख़बर सारे गाँव में फैली तो सभी लोग उसे देखने के लिए भागे आए, और उस बुढ़िया की झोपड़ी में लगभग सारा गाँव जमा हो गया—बूढ़े, बच्चे, औरतें, लड़कियाँ, सब—धक्का-मुक्की करती हुई उत्सुक भीड़। मारी बुढ़िया के क़दमों के पास ज़मीन पर लेटी थी, भूखी और चीथड़ों में लिपटी हुई, और रो रही थी। जब झोपड़ी में भीड़ जमा हो गई तो उसने अपना चेहरा अपने उलझे हुए बालों में छिपा लिया और मुँह के बल ज़मीन पर लोटी रही। वे सभी उसे इस तरह देख रहे थे जैसे वह कोई घिनौना कीड़ा हो। बूढ़े लोगों ने उसे दोष दिया और बुरा भला कहा, नौजवान उस पर हँसते भी रहे, औरतों ने उसे फटकारा, उसे धिक्कारा, और तिरस्कार के भाव से उसे इस तरह देखा जैसे वह कोई घृणित मकड़ी हो। उसकी माँ ने यह सब चुपचाप होने दिया, और वहाँ बैठे-बैठे अनुमोदन के भाव से अपना सिर हिलाती रही। माँ उस समय बहुत बीमार थी और लगभग मरनेवाली थी, दो महीने बाद वह मर भी गई। वह जानती थी कि वह मरनेवाली है, फिर भी उसने आख़िरी दम तक अपनी बेटी से सुलह समझौता कर लेने की कोई कोशिश नहीं की। वह उससे बोली तक नहीं, उसने उसे ड्योढ़ी में सोने के लिए बाहर निकाल दिया, और वह उसे खाने को भी शायद ही कुछ देती थी। उसे अपनी बीमार टाँगों को गरम पानी से धोना पड़ता था, और मारी उसकी टाँगों को रोज गरम पानी से धोती थी और उसकी सेवा-शुश्रूषा करती थी। वह उसकी सारी सेवाएँ चुपचाप ग्रहण कर लेती थी और उससे कभी एक मीठा बोल नहीं बोलती थी। मारी सब कुछ बर्दाश्त करती थी, और बाद में, जब उससे मेरी जान-पहचान हुई तो मैंने देखा कि वह यह सब कुछ बिना किसी विरोध के स्वीकार कर लेती थी और ख़ुद अपने आपको इस संसार का सबसे तुच्छ प्राणी समझती थी। आख़िरकार जब बुढ़िया ने चारपाई पकड़ ली, तो गाँव की बुढ़ियाँ बारी-बारी से उसकी सेवा करने आने लगीं, जैसा कि उनका चलन है। फिर उन लोगों ने मारी को खाना देना बिलकुल ही बन्द कर दिया; गाँव में हर आदमी उसे दुतकारने लगा और अब कोई उसे पहले की तरह काम भी नहीं देता था। ऐसा लगता था कि सब उस पर थूकते थे। मर्द अब उसे औरत की तरह नहीं देखते थे और सभी उसके बारे में बहुत बुरी बुरी बातें कहते थे। कभी-कभी, जब मर्द इतवार के दिन शराब के नशे में चूर हो जाते थे, तो वे सीधे ज़मीन पर ताँबे के सिक्के फेंकते थे कि वह उन्हें उठाए और इस तरह वे अपना मन बहलाते थे। मारी कुछ कहे बिना उन सिक्कों को उठा लेती थी। उस वक़्त तक वह बुरी तरह खाँसने और ख़ून थूकने लगी थी। आख़िरकार उसके चीथड़े इतने तार-तार हो गए कि उसे गाँव में अपनी सूरत दिखाते भी शर्म आने लगी। और जब से वह लौटकर आई थी नंगे पाँव ही चलती थी। उन्हीं दिनों ख़ासतौर पर बच्चों ने, उनके पूरे गिरोह ने—चालीस से अधिक स्कूली बच्चे थे—उसे तंग करना शुरू किया और उस पर कीचड़ तक फेंकने लगे। उसने चरवाहे से कहा कि वह उसे उसकी गायों की निगरानी कर लेने दिया करे, लेकिन चरवाहे ने उसे भगा दिया। इसके बाद वह उसकी इजाज़त के बिना ही सारे दिन के लिए गल्ले के साथ जाने लगी। चूँकि वह चरवाहे का बहुत-सा काम करती थी और वह इस बात को समझता था, इसलिए उसने उसे दुतकारना बन्द कर दिया, और कभी-कभी

उसे अपना बचा-खुचा खाना, पनीर और रोटी भी देने लगा। वह इसे अपनी बड़ी दयालुता समझता था। जब उसकी माँ मर गई तो पादरी को गिरजाघर में सार्वजनिक रूप से मारी को धिक्कारते कोई लज्जा नहीं आई। मारी अपने चीथड़े पहने ताबूत के पीछे खड़ी रो रही थी। लोगों की बहुत बड़ी भीड़ उसे रोते और ताबूत के पीछे चलते देखने के लिए आई थी; इसी समय पादरी ने—जो अभी नौजवान था और जिसकी आकांक्षाएँ आगे चलकर बहुत बड़ा उपदेशक बनने की थीं—सब लोगों की ओर मुड़कर मारी की ओर इशारा करते हुए कहा था—'यह है वह लड़की जिसकी वजह से इस धन्य महिला की मृत्यु हुई।' (यह बात सच नहीं थी क्योंकि बुढ़िया दो साल से बीमार थीं।) 'यह यहाँ आपके सामने खड़ी है पर आपसे नज़रें मिलाने की हिम्मत नहीं कर सकती क्योंकि ईश्वर ने उस पर अपनी उँगली उठाई है। देखिए इसे, नंगे पाँव और चीथड़े पहने, सदाचार के पथ से विचलित होनेवालों के लिए एक जीती-जागती चेतावनी ! यह कौन है ? यह उसकी बेटी है !' और इसी तरह की न जाने कितनी बातें। और, ज़रा सोचिए, इस शर्मनाक हरकत पर लगभग सभी लोग खुश हुए थे; लेकिन...इसी समय एक असाधारण घटना हुई। बच्चों ने उसका पक्ष लिया क्योंकि उस समय तक बच्चे मेरे पक्ष में आ चुके थे और वे मारी से प्यार करने लगे थे। यह इस तरह हुआ। मैं मारी के लिए कुछ करना चाहता था। उसे पैसे दे देना सबसे अच्छा था। लेकिन जितने दिन मैं वहाँ रहा मेरे पास कभी एक फूटी कौड़ी नहीं रही। मेरे पास एक छोटी-सी हीरे की जड़ाऊ पिन थी, जिसे मैंने फेरीवाले के हाथ बेच दिया जो गाँव-गाँव घूमकर पुराने कपड़े खरीदता और बेचता था। उसने मुझे उसके आठ फ्रैंक दिए, हालाँकि वह यक़ीनन चालीस की रही होगी। मैंने मारी से अकेले मिलने की बहुत कोशिश की। आख़िरकार हम लोग गाँव के बाहर एक बाड़ के पास, पहाड़ की ओर जानेवाली पगडंडी पर एक पेड़ के पीछे मिले। वहाँ मैंने उसे वे आठ फ्रैंक देकर उससे उन्हें सम्भालकर रखने को कहा क्योंकि उसके बाद मेरे पास कोई पैसा नहीं होनेवाला था। फिर मैंने उसे चूमा और उससे कहा कि वह यह न समझे कि मेरी कोई बूरी नीयत थी, और मैंने यह भी कहा कि मैंने उसे इसलिए नहीं चूमा था कि मुझे उससे प्यार था बल्कि इसलिए कि मुझे उस पर बहुत तरस आता था, और यह कि मैंने उसे शुरू से ही कभी अपराधी नहीं बल्कि केवल एक ग़रीब दुःखी लड़की समझा था। मैं उसे तसल्ली देने और उसे यह यक़ीन दिलाने के लिए बहुत उत्सुक था कि इसकी कोई वजह नहीं थी कि वह अपने को बाक़ी सब लोगों से नीचा समझे, लेकिन मुझे भरोसा नहीं है कि वह मेरी बात को समझी। मैंने यह उसी वक़्त ताड़ लिया था, हालाँकि वह तमाम वक़्त शायद एक शब्द भी नहीं बोली थी और मेरे सामने नज़रें नीची किए खड़ी रही थी और अपने आप पर बहुत लज्जित दिखाई दे रही थी। जब मैं अपनी बात पूरी कर चुका तो उसने मेरा हाथ चूमा, और मैंने चूमने के इरादे से उसका हाथ पकड़ लिया, लेकिन उसने जल्दी से उसे खींच लिया। ठीक उसी वक़्त बच्चों की एक पूरी भीड़ की नज़र हम लोगों पर पड़ी थी। बाद में मुझे पता चला कि वे बहुत अरसे से चोरी-छिपे मुझ पर नज़र रख रहे थे। वे सीटियाँ और तालियाँ बजाने लगे और हँसने लगे; मारी भाग गई। मैंने उनसे बात करने की कोशिश की, लेकिन वे मुझ पर पत्थर फेंकने लगे। सब लोगों को, पूरे गाँव को उसी दिन इस बात का पता चल गया। एक बार फिर वे सब लोग मारी की जान के पीछे पड़ गए—वे उसे पहले से भी ज़्यादा नापसन्द करने लगे। मैंने यहाँ तक सुना कि वे उसे सज़ा दिलवाना चाहते थे, लेकिन, भगवान की कृपा से नौबत यहाँ तक नहीं पहुँची। लेकिन बच्चे उसके पीछे पड़े रहे। वे उसे पहले से भी ज़्यादा तंग करने लगे और उस पर कीचड़ फेंकने लगे। जब वे उसका पीछा करते तो वह उनसे दूर भागती; जब वह अपने कमज़ोर सीने की वजह से कहीं रुककर हाँपने लगती तो वे फिर उसके पीछे पड़

जाते, उस पर चिल्लाते, उसे कोसते और गालियाँ देते। एक बार उनसे मेरी लड़ाई भी हो गई। इसके बाद मैं उनसे बातें करने लगा; रोज मैं उनसे जितना भी मुमकिन होता था बातें करता था। कभी-कभी वे रुककर मेरी बात सुन लेते थे, हालाँकि मुझे गालियाँ अब भी देते थे। मैंने उन्हें बताया कि मारी कितनी दुःखी थी; जल्दी ही उन्होंने मुझे गालियाँ देना छोड़ दिया और चुपचाप मेरे पास से चले जाने लगे। धीरे-धीरे हमारी बातचीत होने लगी। मैं उनसे कुछ भी नहीं छिपाता था। मैं उन्हें सब कुछ बता देता था। वे बड़ी दिलचस्पी से सुनते थे और जल्दी ही उन्हें मारी पर तरस आने लगा। उनमें से कुछ मारी से मिलने पर उसे बड़े प्यार से सलाम तक करने लगे। यह उनका रिवाज है कि जब भी वे किसी से मिलते हैं—वह चाहे दोस्त हो या अजनबी—तो वे झुककर कहते हैं—'क्या हाल-चाल है !' मैं कल्पना कर सकता हूँ कि मारी इस पर कितनी चकित हुई होगी। एक दिन दो छोटी लड़कियाँ कुछ खाना लाकर उसके पास ले गईं। उन्होंने खाना उसे दे दिया और फिर आकर मुझे इसके बारे में बताया। उन्होंने मुझे बताया कि मारी फूट-फूटकर रो पड़ी थी और यह कि अब वे उससे बहुत प्यार करने लगे थे। थोड़े ही दिनों में सभी उससे प्यार करने लगे, और इसके साथ ही अचानक वे मुझसे भी प्यार करने लगे। वे अकसर मेरे पास आते और हमेशा मुझसे कहानियाँ सुनाने को कहते। मैं समझता हूँ कि मैं कहानियाँ अच्छे ढंग से सुनाता हूँ क्योंकि मेरी कहानियाँ सुनना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। बाद में मैं पढ़ने लगा, महज़ इसलिए कि उन्हें कुछ बता सकूँ; बाक़ी तीन साल मैं उन्हें कहानियाँ सुनाता रहा। बाद में जब सभी ने—श्नाइडर ने भी—मुझे दोष दिया कि मैं उनसे इस तरह बातें करता हूँ जैसे वे बड़े हों और उनसे कुछ भी नहीं छिपाता, तो मैंने उन लोगों से कहा कि बच्चों को झूठी बातें बताना बड़े शर्म की बात है; आप उनसे चाहे जितना छिपाएँ बहरहाल उन्हें हर बात किसी न किसी तरह मालूम तो हो ही जाती है, और यह कि वे उन्हें किसी गन्दे तरीक़े से जानेंगे, जबकि मुझसे जानने में ऐसा नहीं होगा। हमें बस अपने बचपन को याद रखना चाहिए। लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी। मैंने मारी को उसकी माँ के मरने से एक हफ़्ते पहले चूमा था; जब पादरी ने अपना प्रवचन दिया था तब तक सारे बच्चे मेरे पक्ष में हो चुके थे। मैंने उन्हें फ़ौरन बता दिया कि पादरी ने गलत किया था और यह भी समझा दिया कि उसका मतलब क्या था। वे सब उससे नाराज़ हो गए और कुछ को तो उससे इतनी नफ़रत हुई कि उन्होंने उसकी खिड़कियों के काँच तक तोड़ दिए। मैंने उन्हें रोका क्योंकि ऐसा करना अच्छा नहीं था। लेकिन गाँव में हर आदमी को फ़ौरन इसका पता चल गया, और तब लोगों ने मुझे बच्चों को बिगाड़ने का दोष देना शुरू किया। कुछ ही दिन में उन्हें पता लग गया कि बच्चे मारी से प्यार करते थे और वे बहुत सहम उठे; लेकिन मारी खुश थी। बच्चों को उससे मिलने से मना कर दिया गया, लेकिन वे चोरी से उससे मिलने के लिए गाँव से कोई आधा मील दूर मवेशियों के रेवड़ के पास भागकर पहुँच जाते थे। ये उसके लिए तोहफ़े लाते थे, और कुछ भागकर उसे बस गले लगाते थे और उसे चूमकर कहते थे, 'Je vous aime, Marie !'[1] और फिर भरपूर तेजी से वापस चले जाते थे। ऐसी अप्रत्याशित खुशी पाकर मारी लगभग पागल हो उठी; उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि ऐसा भी हो सकता है; वह लज्जित अनुभव करती थी और साथ ही खुशी से फूली नहीं समाती थी। लेकिन बच्चों को, खासतौर पर लड़कियों को, जो काम सबसे अच्छा लगता था वह यह था कि वे भागकर उसके पास जाते थे और उसे बताते थे कि मैं उससे प्यार करता था और उसके बारे में बहुत बातें करता था। उन्होंने उसे बताया कि मैंने उन्हें सारी बात बता दी थी और यह कि वे अब उससे प्यार करते थे और उसकी हालत

---

1. मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मारी ! (फ्रांसीसी)

देखकर उन्हें दुःख होता था, और यह भी कि अब वे हमेशा ऐसे ही रहेंगे। फिर वे बहुत खुश होकर, चेहरों पर अपार उल्लास लिए भागकर मेरे पास आते थे और मुझे बताते थे कि वे अभी-अभी मारी से मिले थे और उसने आदर-भरा सलाम कहलाया है। शाम को मैं टहलता हुआ झरने तक जाता था; वहाँ एक जगह थी जो ऊँचे-ऊँचे पोपलर के पेड़ों से घिरी हुई थी और गाँव से बिलकुल दिखाई नहीं देती थी। शाम को मुझसे मिलने वे लोग वहीं आते थे, कुछ तो चोरी-छिपे भी आते थे। मैं समझता हूँ कि मारी के प्रति मेरे प्रेम से उन्हें बड़ी खुशी होती थी, और जितने दिन मैं उनके गाँव में रहा सिर्फ़ इसी एक मामले में मैंने उन्हें धोखा दिया। मैंने उन्हें यह बताकर उनके भ्रम को दूर नहीं किया कि मैं मारी को प्यार नहीं करता था, मतलब यह कि मुझे उससे प्रेम नहीं था बल्कि मुझे उस पर सिर्फ़ तरस आता था; मुझे साफ़ दिखाई देता था कि उन्हें ज़्यादा अच्छा नहीं लगता कि उन्होंने जिस ढंग से इसकी कल्पना की थी वैसी बात न हो, और यही वजह थी कि मैं चुप रहा और यह जताता रहा कि उन्होंने ठीक ही अनुमान लगाया था। उनके हृदय कितने नाजुक और कोमल थे ! यह बात किसी तरह गले के नीचे ही नहीं उतरती थी कि जब उनका नेक लियोन मारी से प्रेम करता है तो वह इतने बुरे कपड़े क्यों पहने रहती है और उसके पाँवों पर जूते क्यों नहीं होते। तो उन्होंने उसे जूते, मोजे, नीचे पहनने के कपड़े और एक फ्राक तक लाकर दी। उन्होंने यह सब कैसे किया यह मुझे मालूम नहीं। सारे गाँव ने एक साथ मिलकर ही इस काम को सम्भव बनाया होगा। जब मैंने उनसे पूछा तो वे बस खुश होकर हँस दिए और लड़कियाँ तालियाँ वजा-बजाकर मुझे चूमने लगीं। मैं भी कभी-कभी चोरी से मारी से मिलने जाता था। उस वक़्त तक वह बहुत बीमार हो चुकी थी और चल फिर भी मुश्किल से ही पाती थी; आख़िरकार, उसने ग्वाले के लिए काम करना बिलकुल बन्द कर दिया, लेकिन रोज सबेरे मवेशियों के गल्ले के साथ फिर भी जाती रही। वह अलग बैठी रहती थी। वहाँ एक, लगभग खड़ी चट्टान पर बाहर को निकली हुई एक शिला थी; वह सबकी नजरों से छिपकर इसी शिला पर चट्टान से पीठ टिकाकर बैठ जाती थी, और दिन भर वहीं निश्चल बैठी रहती थी, सुबह से लेकर शाम को मवेशियों के घर लौटने तक। तपेदिक ने उसे इतना कमज़ोर कर दिया था कि ज़्यादातर वह आँखें बन्द किए और चट्टान पर सिर टिकाए बैठी ऊँघती रहती थी और लम्बी-लम्बी साँसें लेती रहती थी। उसका चेहरा दुबला होकर कंकाल के चेहरे जैसा लगने लगा था, और उसके माथे पर और कनपटियों पर हमेशा पसीने की बूँदें रहती थीं। मैंने उसे हमेशा इसी हालत में पाया। मैं बहुत थोड़ी देर के लिए जाता था और मैं भी नहीं चाहता था कि वहाँ देखा जाऊँ। मेरे वहाँ दिखाई देते ही मारी चौंक पड़ती, अपनी आँखें खोल देती और मेरे हाथ चूमने लगती। मैंने हाथ खींचना भी अब छोड़ दिया था क्योंकि इससे उसे खुशी होती थी। जितनी देर मैं उसके पास बैठा रहता था वह काँपती रहती थी और रोती रहती थी। यह सच है कि वह कई बार बोलने की कोशिश भी करती थी लेकिन वह क्या कहती थी यह समझना मुश्किल था। वह उत्सुकता और हर्ष के मारे मानो अपने होश-हवास खो बैठती थी। कभी-कभी बच्चे भी मेरे साथ आ जाते थे। जब वे ऐसा करते थे तो आमतौर पर वे कुछ दूर खड़े रहकर हम लोगों की पहरेदारी करते थे कि कहीं कोई आ न जाए, कहीं कुछ हो न जाए, और इससे उन्हें बेहद खुशी होती थी। हम लोगों के चले जाने के बाद मारी फिर अकेली रह जाती थी और पहले की तरह निश्चल बैठी रहती थी, आँखें बन्द किए और सिर चट्टान के सहारे टिकाए; शायद वह किसी चीज़ के सपने देखती रहती थी। एक दिन सबेरे वह रेवड़ के साथ बाहर न जा सकी और अपने सूने घर में अकेली ही पड़ी रही। बच्चों को फ़ौरन इस बात का पता चल गया, और उस दिन लगभग सभी उससे मिलने गए; वह बिस्तर पर अकेली लेटी थी। दो दिन तक सिर्फ़

बच्चों ने उसकी सेवा-शुश्रूषा की, जो बारी-बारी से भाग-भागकर उसके यहाँ जाते थे, लेकिन जब गाँव भर में यह ख़बर फैल गई कि मारी सचमुच मर रही थी तो बुढ़िया जाकर उसके पास बैठने लगीं और उसे कभी अकेला नहीं रहने दिया। मैं समझता हूँ कि गाँववालों को मारी पर तरस आने लगा था, कम से कम उन्होंने बच्चों को रोकना-टोकना छोड़ दिया था और वे उन्हें पहले की तरह डाँटते नहीं थे। मारी हर वक़्त ऊँघती रहती थी; सोती भी तो बेचैन—वह बुरी तरह खाँसती थी। बुढ़िया बच्चों को भगा देती थीं लेकिन वे बार-बार भागकर खिड़की के नीचे पहुँच जाते थे, कभी क्षण-भर को ही, बस इतना कहने के लिए, 'Bonjour, notre bonne Marie !'[1]। ज्योंही उन पर उसकी नज़र पड़ती या वह उनकी आवाज़ सुनती, उसमें मानो फिर से जान पड़ जाती और बुढ़ियाओं की एक न सुनकर वह कुहनियों के बल उठने की कोशिश करती और उनकी ओर देखकर सिर हिलाती और आभार प्रकट करती। वे पहले की तरह ही उसके लिए तोहफ़े लाते, लेकिन वह शायद ही कभी कुछ खाती थी। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि इन बच्चों की वजह से ही वह लगभग खुश मरी। उनकी वजह से वह अपनी सारी विपदाएँ भूल गई; ऐसा लगता था जैसे उसे उसकी क्षमा मिल गई हो, क्योंकि अन्तिम क्षण तक वह अपने आपको बहुत बड़ी पापिनी समझती रही थी। चिड़ियों की तरह वे अपने पंख फड़फड़ाते हुए उसकी खिड़की से आकर टकराते थे, और रोज़ सवेरे पुकारकर उससे कहते थे—'Nous t'aimons, Marie'[2] वह जल्दी ही मर गई। मैं समझता था वह अभी बहुत दिन और जिएगी। उसके मरने के एक दिन पहले, सूरज डूबने के पहले मैं उससे मिलने गया। मैं समझता हूँ कि उसने मुझे पहचान लिया, और मैंने आख़िरी बार उसका हाथ दबाया—उसका हाथ कैसा सूख गया था ! अगले दिन सबेरे लोगों ने आकर मुझे बताया कि मारी मर चुकी थी। अब बच्चों को रोकना नामुमकिन था—उन्होंने उसका ताबूत फूलों से सजाया और उसके सिर पर फूलों का ताज पहना दिया। गिरजाघर में भी पादरी ने मरी हुई लड़की का तिरस्कार नहीं। उसके जनाज़े के साथ बहुत ज़्यादा लोग नहीं थे; कुछ थोड़े ही से लोग बस जिज्ञासावश आ गए थे। लेकिन जब ताबूत बाहर निकालने का वक़्त आया तो बच्चे उसे खुद बाहर ले जाने के लिए अचानक आगे झपट पड़े। चूँकि वे अकेले उसे ढो नहीं सकते थे उन्होंने उसे उठाकर ले जाने में हाथ बँटाया; वे ताबूत के पीछे भागते रहे और रोते रहे। मारी की क़ब्र की देखभाल बच्चे बड़ी श्रद्धा के साथ करते हैं—वे हर साल वहाँ फूल ले जाकर चढ़ाते हैं और उन्होंने उसके चारों ओर गुलाब के पौधे लगाए हैं। लेकिन उस जनाज़े के बाद से बच्चों की वजह से गाँववाले मुझे सताने लगे। उन्हें भड़काने में पादरी और स्कूल-मास्टर सबसे आगे थे। बच्चों को मुझसे मिलने से भी सख़्त मना कर दिया गया, और श्नाइडर ने इस पर निगरानी रखने की जिम्मेदारी तक ले ली। फिर भी हम लोग एक-दूसरे से मिलते थे, और दूर से इशारों से बातें करते थे। वे मुझे छोटी छोटी चिट्ठियाँ लिखकर भेजते थे। वक़्त के साथ ये सारी चीज़ें धीरे-धीरे ख़त्म हो गईं, लेकिन जितने दिन तक मुझे सताने का सिलसिला चलता रहा तब तक बहुत अच्छा रहा—बच्चों के साथ मेरी दोस्ती इसकी वजह से पहले से भी ज़्यादा मजबूत हो गई। आख़िरी साल के दौरान तिबो और पादरी से भी मेरी सुलह-सी हो गई। जहाँ तक श्नाइडर का सवाल है, उन्होंने मुझसे बच्चों के साथ बर्ताव करने की मेरी हानिकारक 'पद्धति' के बारे में बहुत-सी बातें कीं और बहस की। मेरी पद्धति ! जैसे मेरी कोई पद्धति कभी थी भी। आख़िरकार, श्नाइडर ने मुझसे एक ऐसी बात कही जो मुझे कुछ विचित्र लगी—वह मेरे वहाँ से चलने के फ़ौरन पहले की बात है। उन्होंने मुझे बताया कि वह पक्की तौर पर इस नतीजे

1. कैसी हो, हमारी प्यारी मारी ? (फ्रांसीसी)
2. हम तुमसे प्यार करते हैं, मारी। (फ्रांसीसी)

पर पहुँच चुके थे कि मैं खुद बिलकुल बच्चा था, दरअसल सचमुच का बच्चा, और यह कि सूरत-शक्ल और डीलडौल से ही मैं बड़ा लगता था, लेकिन अपने विकास, अपनी आत्मा और अपने चरित्र में और शायद अपनी समझ-बूझ में भी मैं बिलकुल नहीं बढ़ा था, और अगर मैं साठ बरस तक भी जिन्दा रहा तो ऐसा ही रहूँगा। इस बात पर मैं खूब हँसा था। मैं खूब हँसता था—ज़ाहिर है, उनकी यह बात ग़लत थी, क्योंकि आखिर मैं किस तरह का बच्चा हूँ? लेकिन एक मामले में उनका कहना बिलकुल ठीक था—मुझे बड़ी उम्र के लोगों के बीच रहना सचमुच अच्छा नहीं लगता—इस बात की ओर मेरा ध्यान बहुत पहले ही गया था और अच्छा इसलिए नहीं लगता कि मुझे आता नहीं है। वे मुझसे चाहे जो कहा करें, वे मेरे साथ चाहे जितनी नेकी का बर्ताव करें, लेकिन न जाने क्यों उनके साथ मैं बहुत उदास रहता हूँ और जब मैं उनसे छुटकारा पाकर अपने साथियों के बीच आ जाता हूँ तो मुझे बहुत खुशी होती है, और बच्चे ही हमेशा से मेरे साथी रहे थे। लेकिन ऐसा इसलिए नहीं है कि मैं खुद बच्चा था; इसकी सीधी-सादी वजह यह है कि मैं हमेशा से बच्चों की संगत की ओर आकर्षित होता रहा था। उस गाँव में अपने प्रवास के बिलकुल शुरू में, जब अपने विचारों में खो जाने के लिए मैं पहाड़ों की ओर निकल जाता था, तब कभी-कभी अकेले टहलते हुए, ख़ासतौर पर दोपहर के वक़्त, मेरी मुलाक़ात शोर मचाते हुए और भागते हुए बच्चों के गरोह से होती थी जो अपने बस्ते और स्लेटें लिए हुए चिल्लाते, हँसते और खेलते हुए स्कूल से घर लौटते होते थे; उस समय मेरी आत्मा तुरन्त उनकी ओर खिंचने लगती थी। मालूम नहीं क्यों, लेकिन हर बार उनसे मिलने पर मेरे ऊपर खुशी का बेहद गहरा आभास छा जाता था। मैं चुपचाप खड़ा रहता था और खुशी से हँस पड़ता था, उनकी छोटी-छोटी टाँगों को तेजी से गुजरते हुए और हमेशा भागते हुए देखकर, लड़कों और लड़कियों को साथ भागता हुआ देखकर, उनकी हँसी और उनके आँसुओं को देखकर (क्योंकि स्कूल से घर जाते हुए बहुत से आपस में लड़ सकते थे, रोते थे, फिर मेल कर लेते थे और थोड़ी ही देर में दूसरा खेल भी शुरू कर देते थे) मैं अपनी सारी उदासी भूल जाता था। बाद में, उन पूरे तीन वर्षों के दौरान जब मैं उस गाँव में रहा, मैं इस बात को समझ ही नहीं पाया कि लोग उदास और निराश क्यों और दुःखी रहते हैं। मैंने अपना सारा जीवन उन्हें अर्पित कर दिया था। मुझे कभी यह उम्मीद नहीं थी कि मुझे वह गाँव छोड़ना पड़ेगा और यह बात मेरे दिमाग़ में भी नहीं आई थी कि मुझे कभी रूस वापस जाना पड़ेगा। मैं समझता था कि मैं हमेशा वहीं रहूँगा। लेकिन मैंने फ़ौरन महसूस किया कि श्नाइडर के लिए मुझे वहाँ रखना नामुमकिन था; इसके अलावा तब एक मामला निकल आया, जो स्पष्टतः ऐसा महत्त्वपूर्ण था कि श्नाइडर खुद इसके लिए उत्सुक थे कि मैं फ़ौरन चला जाऊँ और उन्होंने मेरी ओर से यहाँ जवाब भी भेज दिया। मैं पता लगाऊँगा कि वह क्या बात है और किसी से सलाह लूँगा। शायद मेरी हालत बिलकुल बदल जाए, लेकिन उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता—उसका कोई महत्त्व नहीं है। जिस बात का महत्त्व है वह यह है कि मेरी ज़िन्दगी बदल चुकी है। मैं वहाँ बहुत कुछ छोड़ आया हूँ, बहुत कुछ। कुछ भी नहीं रह गया। ट्रेन में बैठे-बैठे मैं सोच रहा था—'अब मैं लोगों के बीच जा रहा हूँ; शायद मुझे कुछ भी मालूम नहीं है लेकिन मेरे लिए एक नई ज़िन्दगी शुरू हो चुकी है।' मैंने मन में अपना कर्तव्य ईमानदारी से और दृढ़ संकल्प होकर निभाने की ठान ली थी। हो सकता है कि लोगों के बीच रहकर मुझे तकलीफ़ होती हो और मैं निष्प्रभ हो जाता हूँ। सबसे पहले तो मैंने यह फ़ैसला किया कि मैं सबके साथ निष्कपटता और शिष्टता का बर्ताव करूँगा; कोई मुझसे इससे ज़्यादा की उम्मीद भी नहीं कर सकता। शायद यहाँ भी लोग मुझे बच्चा ही समझेंगे—समझने दो ! न जाने क्यों हर आदमी मुझे बौड़म भी समझता है, और यह बात बिलकुल सच है कि एक जमाने

से मैं इतना बीमार था कि मैं सचमुच बिलकुल बौड़म ही हो गया था। लेकिन अब मैं किस क़िस्म का बौड़म हूँ कि मैं ख़ुद जानता हूँ कि लोग मुझे बौड़म समझते हैं ? जैसे ही मैं किसी कमरे में क़दम रखता हूँ, मैं सोचता हूँ—'लो, मुझे बौड़म समझा जाता है, लेकिन इसके बावजूद मैं बहुत समझदार हूँ और ये लोग शायद इस बात को ताड़ भी नहीं सकते।' मैं अकसर इसी ढंग से सोचता हूँ। बर्लिन जाकर, जब मुझे गाँव के बच्चों के कुछ छोटे-छोटे खत मिले, जो उन्होंने किसी तरह मेरे नाम लिखकर भेज दिए थे, तब मुझे इस बात का आभास हुआ कि मैं उनसे कितना प्यार करता था। पहला खत पाकर कैसी तकलीफ़ हुई थी ! मुझे जाता देखकर उन्हें कितना दुःख हुआ था ! 'Leon s'en va, Leon s'en va pour toujours !'[1] हम लोग पहले की तरह ही रोज झरने के पास मिलते थे और हमेशा इसकी चर्चा करते थे कि हमें एक-दूसरे से विदा होना चाहिए। कभी-कभी हम लोग पहले की तरह ही खुश हो जाते थे; सिर्फ़ रात को जब हम लोग एक दूसरे से अलग होते थे तब वे बड़े तपाक से मुझसे चिपट-चिपटकर गले मिलने लगे, जैसा पहले कभी नहीं होता था। कुछ मुझसे चोरी-छिपे मिलने मेरे यहाँ भी आते थे ताकि एक-एक करके, अकेले में मुझसे मिलें और मुझे गले लगाएँ, दूसरों की मौजूदगी में नहीं। जब मैं स्टेशन रवाना होनेवाला था तो सारे बच्चे—उनकी भीड़ की भीड़—स्टेशन तक मुझे छोड़ने गए। स्टेशन गाँव से लगभग मील भर दूर था। उन्होंने पूरी कोशिश की कि उनके आँसू न निकलें, लेकिन बहुत-से बच्चे अपने आपको रोक नहीं पाए और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे, ख़ासतौर पर लड़कियाँ। हमें जल्दी थी कि कहीं गाड़ी न छूट जाए, लेकिन अचानक उनमें से कोई न कोई लपककर मेरे पास आता था, और सबके बीच अपनी नन्ही-नन्ही बाँहें मेरे गले में डाल देता था और मुझे चूमने लगता था, और बस इतनी बात के लिए वह पूरी भीड़ का रास्ता रोक लेता था; हालाँकि हमें जल्दी थी लेकिन हम सब लगातार इन्तज़ार करते थे कि वह मुझसे विदा हो ले। जब मैं जाकर डिब्बे में बैठ गया और गाड़ी चल दी तो उन सबने चिल्लाकर 'हुर्रा !' कहा और जब तक ट्रेन आँख से ओझल नहीं हो गई तब तक वे प्लेटफ़ॉर्म पर खड़े रहे। मैं भी उन्हें देखता रहा।...सुनिए, अभी थोड़ी देर पहले जब मैं यहाँ अन्दर आया था और आप लोगों की प्यारी-प्यारी सूरतों को देखा था—अब मैं हर वक़्त लोगों के चेहरों को ध्यान से देखता रहता हूँ—और आपके पहले शब्द सुने थे, तो उसके बाद से पहली बार मेरा दिल हल्का हो गया था। मैंने सोचा भी था कि मैं शायद भाग्यशाली हूँ—मैं जानता हूँ कि ऐसा अकसर नहीं होता कि आप ऐसे लोगों से मिलें जिन्हें आप फ़ौरन पसन्द करने लगें, लेकिन मैं आपसे ट्रेन से उतरने के लगभग फ़ौरन बाद मिला था। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि सबके सामने अपनी भावनाओं की चर्चा करते हुए आदमी को शर्म आनी चाहिए, लेकिन मैं आपसे बातें कर रहा हूँ और मुझे ज़रा भी शर्म महसूस नहीं हो रही। मैं बहुत मिलनसार आदमी नहीं हूँ, और बहुत मुमकिन है कि मैं अब आप लोगों से मिलने बहुत दिन तक न आऊँ। लेकिन यह कहने की वजह से आप मेरे बारे में कोई बुरी राय न बना लीजिएगा; मैंने यह बात इसलिए नहीं कही है कि मैं आप लोगों की दोस्ती की क़द्र नहीं करता। और मेहरबानी करके यह भी न समझिएगा कि मैंने किसी बात का बुरा माना है। आपने अपने चेहरों के बारे में मुझसे पूछा था और यह जानना चाहा था कि मैंने उनमें क्या देखा। मैं आपको बड़ी ख़ुशी से यह बता दूँगा। अदेलईदा इवानोव्ना, आपका चेहरा खुश चेहरा है, तीनों में से सबसे प्यारा चेहरा। आपके बहुत खूबसूरत होने के अलावा आपको देखकर कोई यह कहे बिना नहीं रह सकता, 'इनका चेहरा एक नेक बहन के चेहरे जैसा है।' आप दूसरों से बड़े सहज भाव से और खुश होकर मिलती हैं, लेकिन आप बड़ी जल्दी आदमी के दिल का भेद

1. लियोन जा रहा है, लियोन हमेशा के लिए जा रहा है ! (फ़्रांसीसी)

पा जाती हैं। यह है मेरी राय आपके चेहरे के बारे में। आपका चेहरा भी, अलेक्सान्द्रा इवानोव्ना, बहुत ही प्यारा और खूबसूरत चेहरा है, लेकिन शायद आपके मन में कोई दर्द छिपा हुआ है। मुझे यक़ीन है कि आपके हृदय में बहुत दया है, लेकिन आप प्रसन्नचित्त नहीं हैं। आपके चेहरे में कोई ऐसी ख़ास बात है जिसे देखकर मुझे होल्बाइन[1] के बनाए हुए देवी मरियम के उस चित्र की याद आ जाती है जो मैंने ड्रेसडेन में देखा था। तो, यह हुआ आपके चेहरे के बारे में। क्या मैं अनुमान लगाने में अच्छा हूँ ? आपने खुद कहा था कि मैं हूँ। लेकिन आपका चेहरा, लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना," उसने अचानक मिसेज़ येपांचिना की ओर मुड़कर कहा, "आपका चेहरा मुझे बताता है—और मैं कोई अटकल नहीं लगा रहा, बल्कि पूरे विश्वास के साथ कह रहा हूँ—कि आप अपनी उम्र के बावजूद हर मामले में बिलकुल बच्चों जैसी हैं, सचमुच, हर बात में, हर अच्छी चीज़ में और हर बुरी चीज़ में। ऐसा कहने की वजह से आप मुझसे नाराज़ तो नहीं हैं न ? और यह न समझियेगा कि मैंने आपके चेहरों के बारे में इतनी साफ़-साफ़ बातें इसलिए की हैं कि मैं बहुत भोला हूँ। जी नहीं, बिलकुल नहीं ! शायद, मेरे दिमाग़ में भी कोई बात है।"

7

जब प्रिंस ने बोलना बन्द किया तो सबने, यहाँ तक कि अग्लाया ने भी, लेकिन ख़ासतौर पर मिसेज़ येपांचिना ने प्रफुल्लित होकर उसे देखा।

"तो तुम लोगों ने इसका इम्तहान ले लिया !" उन्होंने उद्विग्न होकर कहा। "तो, देख लिया न, तुम लोग उसे कोई ग़रीब भोला भाला आदमी समझकर उसकी तरफ़ अपनी सरपरस्ती दिखाना चाहती थीं, लेकिन यह तुम लोगों को बड़ी मुश्किल से अपनी दोस्ती का सम्मान देने को ही तैयार हुआ, और सो भी इस शर्त पर कि वह तुम लोगों से मिलने बहुत ज़्यादा नहीं आया करेगा। बेवक़ूफ़ तो हम लोग नज़र आए, ख़ासतौर पर तुम्हारे बाप, और उसकी मुझे बड़ी खुशी है। शाबाश, प्रिंस ! मेरे शौहर ने तुम्हारा इम्तहान लेने को कहा था, सो तो हमने ले लिया। और तुमने मेरे चेहरे के बारे में जो कुछ कहा है वह बिलकुल सच है—मैं बिलकुल बच्चों जैसी हूँ और यह बात मैं जानती हूँ। तुम्हारे बताने से बहुत पहले से मैं इस बात को जानती हूँ। तुमने मेरे विचार को बहुत थोड़े में व्यक्त कर दिया। मैं समझती हूँ कि तुम्हारा स्वभाव भी बिलकुल मेरे जैसा है—जैसे एक ही साँचे में ढाला गया हो, और मुझे इस बात की खुशी है। फ़र्क़ इतना है कि तुम मर्द हो और मैं औरत हूँ और कभी स्विट्ज़रलैण्ड नहीं गई हूँ। बस इतना ही फ़र्क़ है।"

"इतनी जल्दी न करो, माँ," अग्लाया ने ज़ोर से कहा। "प्रिंस ने अभी बताया है कि इन सब बातों को स्वीकार करने के पीछे उनके दिमाग़ में कोई बात है; वह किसी छिपे हुए उद्देश्य के बिना यह सब नहीं कह रहे थे।"

"हाँ, हाँ," दूसरे सब लोग हँस पड़े।

"उसका मज़ाक़ न उड़ाओ, बेटियो। वह शायद तुम तीनों से मिलाकर भी ज़्यादा चालाक है। तुम देख लेना। लेकिन तुमने अग्लाया के बारे में कुछ क्यों नहीं कहा, प्रिंस ? अग्लाया राह देख रही है और मैं भी।"

"इस वक़्त मैं कुछ नहीं कह सकता। बाद में बताऊँगा।"

"क्यों नहीं ? ऐसा तो हो ही नहीं सकता कि उसकी ओर आपका ध्यान ही न गया हो ?"

1. होल्बाइन, हांस (1497-1543)—महान जर्मन चित्रकार।

"नहीं, ऐसा तो नहीं है। आप बेहद खूबसूरत हैं, अग्लाया इवानोव्ना। आप इतनी सुन्दर हैं कि आपकी ओर देखते डर लगता है।"

"बस इतना ही ? और उसके गुणों के बारे में क्या कहते हो तुम ?" मिसेज़ येपांचिना ने आग्रह करते हुए पूछा।

"सुन्दरता के बारे में कोई राय देना बड़ा मुश्किल काम है। मैं अभी इसके लिए तैयार नहीं हूँ। रूप एक पहेली है।"

"इसका मतलब यह है कि आप अग्लाया को पहेली बुझा रहे हैं," अदेलईदा ने कहा। "बूझो, अग्लाया ! लेकिन वह खूबसूरत तो है, प्रिंस, है न ?"

"बेहद !" प्रिंस ने अग्लाया को मन्त्रमुग्ध होकर देखते हुए बड़े उत्साह से जवाब दिया। "लगभग वैसी ही सुन्दर जैसी कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, हालाँकि चेहरा बिलकुल दूसरी तरह का है।"

सबने एक-दूसरे को अचरज से देखा।

"किसकी जैसी ?" जनरल साहब की बीवी ने शब्दों को खींचते हुए कहा। "नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना जैसी ? तुमने कहाँ देखा नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को ? कौन-सी नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ?"

"गव्रीला अर्दालिओनोविच ईवोल्गिन अभी जनरल इवान फ़्योदोरोविच को उसकी तस्वीर दिखा रहे थे।"

"अच्छा ? तो वह उसकी तस्वीर मेरे शौहर के पास लाया था ?"

"उन्हें दिखाने के लिए। वह तस्वीर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने आज ही गव्रीला अर्दालिओनोविच को दी थी और वह उसे दिखाने लाए थे।"

"मैं उसे देखना चाहती हूँ !" मिसेज़ येपांचिना ने उत्कंठित स्वर में कहा। "कहाँ है वह तस्वीर ! अगर उसे दी थी उसने, तो उसी के पास होगी, और वह अभी पढ़ने के कमरे में होगा ! वह हमेशा बुधवार को काम करने आता है और चार बजे से पहले कभी नहीं जाता। गव्रीला अर्दालिओनोविच को फ़ौरन बुला लाओ ! नहीं, मैं उसकी सूरत देखने को मरी नहीं जा रही हूँ। मेरा एक काम कर दो, बड़ा एहसान होगा तुम्हारा, मेरे प्यारे प्रिंस, पढ़ने के कमरे में जाकर तस्वीर उससे माँगकर ले आओ। कह देना हम लोग देखना चाहते हैं। बड़ी मेहरबानी होगी।"

"वह अच्छा है, लेकिन बेहद सीधा है," प्रिंस के चले जाने के बाद अदेलईदा ने कहा।

"हाँ, कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ही," अलेक्सान्द्रा ने सहमति प्रकट की। "यहाँ तक कि उसे देखकर कुछ हँसी आती है।"

दोनों में से कोई भी अपने पूरे विचार व्यक्त नहीं कर रही थी।

"पर वह बड़े अच्छे ढंग से बच निकला—मेरा मतलब है हम लोगों के चेहरों के बारे में," अग्लाया ने कहा, "उसने हम सब लोगों को चिकनी-चुपड़ी बातों से खुश कर दिया, माँ तक को !"

"ताना मत कसो, मेहरबानी करके," माँ ने चिढ़कर कहा। "चिकनी-चुपड़ी बातों से मुझे उसने खुश नहीं कर दिया। बल्कि खुश मैं खुद हुई।"

"तुम समझती हो कि वह बच निकलने की कोशिश कर रहा था ?" अदेलईदा ने पूछा।

"मैं समझती हूँ कि वह इतना भोला नहीं है।"

"फिर शुरू हो गई यह !" मिसेज़ येपांचिना ने गुस्से से कहा। "मैं समझती हूँ कि तुम उससे ज़्यादा हास्यास्पद हो। वह सीधा ज़रूर है, लेकिन उसकी समझ-बूझ ठीक रहती है, ज़ाहिर है, इस शब्द के सबसे अच्छे अर्थ में। बिलकुल मेरी तरह।"

"मैंने तस्वीर की बात मुँह से निकालकर ग़लती की," प्रिंस ने पढ़ने के कमरे की ओर जाते समय पछताते हुए सोचा। "लेकिन...शायद मैं अच्छा ही किया कि इस बात को मुँह से निकल जाने दिया।..." उसने दिमाग़ में एक विचित्र, लेकिन अभी तक कुछ अस्पष्ट-सी विचार कौंधने लगा था।

गव्रीला अर्दालिओनोविच अभी तक पढ़ने के कमरे में अपने काग़ज़ात में खोया हुआ बैठा था। साफ़ मालूम हो रहा था कि वह ज्वाइंट स्टॉक कम्पनी से मुफ़्त की तनख्वाह नहीं लेता था। जब प्रिंस ने उससे तस्वीर माँगी और यह बताया कि ड्राइंग रूम में महिलाओं को उसका पता कैसे चला था, तो वह बुरी तरह सिटपिटा गया।

"उ-फ ! आपको उसके बारे में बक-बक करने की ऐसी ज़रूरत ही क्या पड़ी थी ?" उसने झल्लाकर गुस्से से कहा। "आपको कुछ भी नहीं मालूम है।...बौड़म कहीं के !" वह मन ही मन बुड़बुड़ाया।

"मुझे बेहद अफ़सोस है। मैंने कुछ सोचे समझे बिना कह दिया; बस यों ही मुंह से बात निकल गई। हुआ यह कि मैंने कहा कि अग्लाया वैसी ही ख़ूबसूरत है जैसी नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना।"

गान्या ने सब कुछ सही-सही बताने को कहा। प्रिंस ने सब बता दिया। गान्या ने उसे फिर व्यंग-भरी दृष्टि से देखा।

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से आपको क्या लेना देना है," उसने बुदबुदाकर कहा और अचानक रुककर विचारमग्न हो गया।

वह सचमुच बहुत परेशान हो उठा था। प्रिंस ने फिर उसे तस्वीर के बारे में याद दिलाया।

"देखिए, प्रिंस," गान्या ने अचानक कहा, मानो उसके दिमाग़ में सहसा कोई विचार उठा हो। "मैं आपसे मेरे ऊपर एक एहसान करने को कहूँगा...लेकिन सचमुच मुझे मालूम नहीं..."

वह सिटपिटाया हुआ लग रहा था और बोलते-बोलते बीच में ही रुक गया। वह मानो किसी चीज़ के बारे में अपना मन पक्का कर रहा था और अपने आपसे संघर्ष कर रहा था। प्रिंस चुपचाप इन्तज़ार करता रहा। गान्या ने उसे एक बार फिर बड़े ध्यान से बेधती हुई नज़रों से देखा।

"प्रिंस," उसने फिर कहना शुरू किया, "अब वहाँ मुझसे...एक विचित्र बात की वजह से...और बेवक़ूफ़ी भी...जिसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं...ख़ैर, छोड़िए भी इसे,—बात यह है, अब वहाँ वे मुझसे नाराज़-सी हैं, इसलिए मैं कुछ अरसे से बिना बुलाए वहाँ जाना नहीं चाहता हूँ। लेकिन अब मुझे अग्लाया इवानोव्ना से बात करनी ही पड़ेगी। मैंने वक़्त पड़े काम आने के लिए कुछ शब्द लिख रखे हैं" (उनके हाथ में एक छोटा-सा तह किया हुआ पर्चा अचानक न जाने कहाँ से आ गया), "और मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं इसे उनके पास तक पहुँचाऊँ कैसे। प्रिंस, आप इसे फ़ौरन उनको पहुँचा देंगे न। लेकिन सिर्फ़ उन्हीं को, इस तरह कि कोई देख न पाए, आप समझ गए न ? यह कोई भेद नहीं है, उसमें कोई ऐसी-वैसी बात नहीं है...लेकिन...आप इतना काम कर देंगे ?"

"यह काम मुझे बहुत पसन्द नहीं है," प्रिंस ने जवाब दिया।

"लेकिन, प्रिंस, मेरे लिए तो यह बेहद ज़रूरी काम है," गान्या ने उसके सामने गिड़गिड़ाना शुरू किया। "शायद वह कोई जवाब दें।...यक़ीन जानिए कि अगर यह इतना बेहद ज़रूरी न होता तो मैं आपसे कभी न कहता।...और किसके हाथ भेज सकता हूँ मैं ?...बहुत ज़रूरी है...मेरे लिए बेहद ज़रूरी है यह।..."

गान्या बहुत डर रहा था कि प्रिंस शायद राज़ी न होगा; वह बड़े विनम्र-विनीत भाव से उसकी आँखों में आँखें डालकर देखता रहा।

"अच्छा, मैं दे दूँगा।"

"लेकिन, मेहरबानी करके, इसका पूरा ध्यान रखिएगा कि कोई और देख न पाए," बेहद खुश होकर गान्या ने उससे प्रार्थना की। "और, देखिए, प्रिंस, मैं आपके वादे पर भरोसा कर सकता हूँ न ?"

"मैं किसी को नहीं दिखाऊँगा," प्रिंस ने कहा।

"यह चिट्ठी बन्द नहीं है, लेकिन..." जोश में आए गान्या के मुँह से निकला और वह बौखलाकर रुक गया।

"अरे, मैं इसे पढ़ूँगा नहीं," प्रिंस ने सीधे-सादे ढंग से कहा और तस्वीर लेकर कमरे से बाहर चला गया।

अकेले रह जाने पर गान्या ने अपना सिर थाम लिया।

"वह एक शब्द भी कह दे तो मैं...तो मैं सारा सिलसिला ही ख़त्म कर दूँगा !..."

वह खत के जवाब के लिए इतना बेताब और उत्सुक था कि वह अपने कागज़ात को देखने के लिए फिर बैठ न सका और कमरे में एक कोने से दूसरे कोने तक टहलता रहा।

प्रिंस गहरे विचारों में डूबा हुआ वापस जा रहा था। उसने जिस काम का जिम्मा ले लिया था वह उसे बहुत अरुचिकर लग रहा था और अग्लाया के नाम गान्या के पत्र की बात भी उसे अरुचिकर लग रही थी। लेकिन ड्राइंग-रूम से दो कमरे पहले ही वह ठिठककर खड़ा हो गया, मानो अचानक उसे कोई याद आ गई हो, उसने सतर्क होकर चारों ओर देखा और खिड़की के पास रोशनी में जाकर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की तस्वीर को देखने लगा।

वह किसी ऐसे रहस्य का पता लगाने के लिए उत्सुक दिखाई दे रहा था जो उस चेहरे में छिपा हुआ था और जो उसे पहले भी खटका था। उसके मन पर जो छाप पड़ी थी वह अभी मिटी भी नहीं थी, और ऐसा लग रहा था कि उसे उसकी पुष्टि कर लेने की जल्दी थी। उसके चेहरे के अपार सौन्दर्य ने और उसकी किसी और बात ने इस समय उसे और भी ज़्यादा प्रभावित किया। उस चेहरे में एक तरह का अपार अहंकार और तिरस्कार का, लगभग घृणा का भाव था, और, इसके साथ ही, कोई ऐसी चीज़ भी थी जो इस बात का सबूत देती थी कि वह सहज ही दूसरों पर भरोसा कर लेती थी, कि वह खुले दिल की थी; इस नाक-नक्शे को देखते ही इस प्रकट विरोध ने मानो उसके मन में दया की भावना जागृत कर दी थी। वह चकाचौंध कर देनेवाला सौन्दर्य सचमुच असह्य था—उस पीले चेहरे, उन लगभग धँसे हुए गालों और दहकती हुई आँखों का सौन्दर्य—एक विचित्र सौन्दर्य ! प्रिंस एक मिनट तक उसे एकटक देखता रहा, फिर सम्भल गया—उसने घबराकर चारों ओर नज़र डाली और तस्वीर को जल्दी से अपने होंठों से लगाकर चूम लिया। एक मिनट बाद जब उसने ड्राइंग-रूम में क़दम रखा, तो उसका चेहरा बिलकुल शान्त और सन्तुलित था।

लेकिन जब वह खाने के कमरे में घुसा था (जिसके और ड्राइंगरूम के बीच बस एक कमरा था) तो उसकी मुठभेड़ अग्लाया से हो गई थी जो बाहर निकल रही थी। वह अकेली थी।

"गव्रीला अर्दालिओनोविच ने मुझसे आपको यह दे देने के लिए कहा था," प्रिंस ने उसे खत देते हुए कहा।

अग्लाया रुक गई, उसने पत्र ले लिया और कुछ अजीब तरह प्रिंस को देखा। उसकी नज़र से ज़रा भी घबराहट नहीं थी, अलावा शायद थोड़े-से आश्चर्य के, और उसका सम्बन्ध भी केवल प्रिंस से ही लगता था। ऐसा लग रहा था मानो अग्लाया उससे जवाब माँग रही हो—कि वह इस मामले के बारे में गान्या के साथ कैसे उलझ गया था—और यह जवाब वह बड़े शान्त भाव से और

बड़ी हिकारत के साथ माँग रही थी। वे दोनों कुछ क्षण तक इसी तरह एक-दूसरे के सामने खड़े रहे; आखिरकार अग्लाया के चेहरे पर व्यंग का भाव आया; वह हल्का-सा मुस्कराई और उसके पास से गुज़र गई।

मिसेज़ येपांचिना कुछ देर तक नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की तस्वीर को चुपचाप, किंचित तिरस्कार के साथ, उसे पूरी बाँह की दूरी पर बहुत प्रभावशाली ढंग से रखकर देखती रहीं।

"हाँ," आख़िरकार उन्होंने कहा, "खूबसूरत है...बहुत खूबसूरत है। मैंने उसे दो बार बस दूर से देखा है। तो तुम इस तरह की खूबसूरती को सराहते हो, क्यों ?" उन्होंने प्रिंस की ओर मुड़कर कहा।

"जी हाँ...इस तरह की..." प्रिंस ने कुछ प्रयत्न करके कहा।

"तुम्हारा मतलब है कि इसी तरह की ?"

"जी हाँ, इसी तरह की।"

"क्यों ?"

"उस चेहरे में...बहुत पीड़ा है," प्रिंस ने मानो अनायास ही कहा, जैसे वह उनके सवाल का जवाब न देकर अपने आपसे बातें कर रहा हो।

"तुम शायद सरसाम की हालत में होगे," मिसेज़ येपांचिना ने बड़े रोब से तस्वीर मेज़ पर पटकते हुए दृढ़ स्वर में एलान किया।

अलेक्सान्द्रा ने तस्वीर उठा ली। अदेलईदा उसके पास गई और दोनों उस तस्वीर को देखने लगीं। उसी समय अग्लाया ड्राइंग-रूम में वापस आई।

"कैसी शक्ति है !" अदेलईदा ने अपनी बहन के कन्धे के ऊपर से तस्वीर को बड़ी उत्सुकता से देखते हुए अचानक कहा।

"कहाँ ? कौन-सी शक्ति ?" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने तीखे स्वर में पूछा।

"ऐसा रूप शक्ति होता है," अदेलईदा ने जोश के साथ कहा। "ऐसा रूप हो तो आदमी दुनिया को उलट-पुलट कर सकता है।"

वह कुछ सोचती हुई अपने ईज़ल की ओर चली गई। अग्लाया ने तस्वीर पर बस एक सरसरी-सी नज़र डाली, आँखें सिकोड़ीं, निचला होंठ बाहर निकाला और वहाँ से कुछ दूर हटकर हाथ बाँधकर बैठ गई।

मिसेज़ येपांचिना ने घंटी बजाई।

"ज़रा गव्रीला अर्दालिओनोविच को यहाँ बुला लाओ," उन्होंने घंटी की आवाज़ पर आए हुए नौकर से कहा। "वह पढ़ने के कमरे में हैं।"

"माँ !" अलेक्सान्द्रा ने अर्थपूर्ण ढंग से चिल्लाकर कहा।

"मैं उससे दो शब्द कहना चाहती हूँ, बस !" मिसेज़ येपांचिना इससे पहले कि वह कोई आपत्ति कर पाती तड़ से बोलीं। साफ़ मालूम हो रहा था कि वह चिढ़ी हुई थीं। "बात यह है, प्रिंस, यहाँ अब हम सबके अपने-अपने भेद हैं—भेद के अलावा और कुछ है ही नहीं ! एक तरह का शिष्टाचार हमसे बरता जाता है—क्या बेवक़ूफ़ी की बात है ! और, याद रखना, सो भी एक ऐसे मामले में जिसमें सबसे ज़्यादा खुलकर, साफ़-साफ़ और ईमानदारी के साथ बात करना चाहिए। शादियाँ तै की जा रही हैं, मुझे ये शादियाँ बिलकुल पसन्द नहीं हैं।..."

"माँ, तुम कह क्या रही हो ?" अलेक्सान्द्रा ने उन्हें फिर रोक दिया।

"तुमसे मतलब, मेरी बेटी ? तुम्हें पसन्द हैं वे ? जहाँ तक प्रिंस का सवाल है मुझे परवाह नहीं

कि प्रिंस सुन ले, हम लोग दोस्त हैं। बहरहाल, वह और मैं तो हैं ही। ईश्वर को आदमियों की तलाश है, ज़ाहिर है, अच्छे आदमियों की। उसे दुष्ट और मनमौजी लोगों की, ख़ासतौर पर मनमौजी लोगों की, कोई ज़रूरत नहीं है, जो एक दिन कुछ करने की ठानते हैं, और अगले दिन कोई दूसरी बात कहने लगते हैं। आप समझ रही हैं, अलेक्सान्द्रा इवानोव्ना ? बात यह है, प्रिंस, कि ये लोग मुझे सनकी कहती हैं लेकिन मैं लोगों के बीच फ़र्क़ करना जानती हूँ। क्योंकि दिल बड़ी चीज़ है; बाक़ी सब कुछ नहीं है। अलबत्ता, आदमी के दिमाग़ भी होना चाहिए—सच पूछा जाए तो शायद दिमाग़ का ही महत्त्व सबसे ज़्यादा है। मुस्कराओ नहीं, अग्लाया। मैं अपनी ही बात का खण्डन नहीं कर रही हूँ—जिस बेवक़ूफ़ लड़की के दिल होता है और दिमाग़ नहीं होता वह वैसी ही अभागी बेवक़ूफ़ होती है जैसी कि वह जिसके दिमाग़ होता है और दिल नहीं होता। यह बहुत पुरानी सच्चाई है। मैं उन बेवक़ूफ़ों में से हूँ जिनके दिल तो होता है पर दिमाग़ नहीं होता, और तुम इस तरह की बेवक़ूफ़ हो जिसके पास दिमाग़ तो है पर दिल नहीं है। हम दोनों ही दुःखी हैं। हम दोनों मुसीबत झेल रही हैं।"

"माँ, तुम इतनी दुःखी किसलिए हो ?" अदेलईदा से रहा न गया, उसने पूछ ही लिया; वहाँ जितने लोग बैठे थे उनमें वही एक ऐसी लग रही थी जिसने अभी तक ख़ुशमिज़ाजी नहीं खोई थी।

"सबसे पहले तो अपने विद्वान बेटियों की वजह से," मिसेज़ येपांचिना ने तड़ से कहा, "और चूँकि यही अकेली वजह काफ़ी है, इसलिए मुझे दूसरी वजहों की चर्चा करने की कोई ज़रूरत नहीं है। हम बातें तो बहुत कर चुके। अब हमें देखना यह है कि तुम दोनों (मैं अग्लाया को नहीं गिन रही हूँ) अपने दिमागों से और अपनी बातों से अपनी समस्याओं को कैसे हल करोगी और, यह भी देखना है कि आप, अलेक्सान्द्रा इवानोव्ना, उन बहुत ही अच्छे शरीफ़ों के शरीफ़ के साथ ख़ुश भी रहेंगी कि नहीं ?...ओह !..." उन्होंने गान्या को कमरे में आते देखकर बहुत खुश होकर कहा, "यह एक और शादी का रिश्ता आ गए। कैसे हो ?" उन्होंने गान्या के झुककर सलाम करने के जवाब में उससे बैठने के लिए कहे बिना ही पूछा। "क्या तुम जल्दी ही शादी करनेवाले हो ?"

"शादी ? क्या मतलब आपका ? कौन-सी शादी ?" हक्का-बक्का गान्या ने बुदबुदाकर कहा। वह बौखला गया था।

"मैं पूछती हूँ क्या तुम्हारी शादी होनेवाली है, अगर तुम बात को इस तरह कहलवाना पसन्द करते हो ?"

"न-नहीं......मेरी ?...नहीं," गान्या साफ़ झूठ बोल गया, उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया था। उसने जल्दी से एक नज़र अग्लाया पर डाली, जो दूसरों से कुछ अलग बैठी हुई थी, और फिर जल्दी से दूसरी ओर देखने लगा। अग्लाया ने उसे बड़े ग़ौर से, भावशून्य होकर और शान्तिपूर्वक देखा, और उस पर नज़रें जमाए उसकी बौखलाहट को देखती रही।

"नहीं ? क्या कहा तुमने—नहीं ?" निर्मम लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना लगातार उससे सवाल पूछती रहीं। "अच्छी बात है, मैं याद रखूँगी कि आज बुधवार को सबेरे तुमने मेरे सवाल के जवाब में 'नहीं' कहा था। आज बुध ही है न ?"

"मेरे ख़्याल से है बुधवार ही, माँ," अदेलईदा ने उत्तर दिया।

"इन लोगों को तो कभी पता ही नहीं रहता कि हफ़्ते का कौन-सा दिन है। आज तारीख़ क्या है ?"

"सत्ताईस," गान्या ने जवाब दिया।

"सत्ताईस ? एक एतबार से तो यह बड़ी अच्छी बात है। गुड्-बाई, तुम्हें बहुत काम है, और

मुझे अब कपड़े पहनकर तैयार होना है बाहर जाने के लिए। अपनी यह तस्वीर लेते जाओ और अपनी बदनसीब माँ से मेरा सलाम कह देना। अच्छा, प्रिंस, माई डियर, मैं अब चलती हूँ। आकर हम लोगों से मिलते रहना, मैं बूढ़ी प्रिंसेस बेलोकोंस्काया के यहाँ ख़ासतौर पर जाऊँगी, उनसे तुम्हारी चर्चा करने। और सुनो, मेरे प्यारे प्रिंस। मैं तो समझती हूँ भगवान तुम्हें स्विट्ज़रलैण्ड से पीटर्सबर्ग मेरी ही खातिर लाया है। तुम्हें शायद और काम भी निबटाने होंगे, लेकिन सबसे बढ़कर मेरी खातिर तुम्हें यहाँ लाया गया है। मेरा पक्का विश्वास है कि भगवान की यही इच्छा थी। गुड्-बाई, बेटियो। अलेक्सान्द्रा, माई डियर, ज़रा मेरे यहाँ आना।"

मिसेज़ येपांचिना बाहर चली गईं। गान्या ने, जो हक्का-बक्का रह गया था, बुरी तरह बौखलाया हुआ था और गुस्से के मारे आगबबूला हो रहा था, तस्वीर मेज़ पर से उठा ली और टेढ़ी मुस्कराहट के साथ प्रिंस से बोला—"प्रिंस, अब मैं घर जा रहा हूँ। अगर आपने हम लोगों के फ़्लैट में रहने का इरादा बदला नहीं है, तो आप मेरे साथ चल सकते हैं, क्योंकि आपको तो हमारा पता भी मालूम नहीं है।"

"एक मिनट रुकिए, प्रिंस," अग्लाया ने अचानक अपनी आरामकुर्सी पर से उठते हुए कहा। "आपको मेरी एल्बम में कुछ लिखना होगा। पापा ने कहा था कि आप बहुत सुन्दर लिखते हैं। मैं अभी लिए आती हूँ।..."

और वह बाहर चली गई।

"गुड्-बाई, प्रिंस, मैं भी अब चलूँगी," अदेलईदा ने कहा।

उसने बड़े तपाक से प्रिंस से हाथ मिलाया, उसकी ओर देखकर बड़ी शालीनता और हार्दिकता से मुस्कराई और बाहर चली गई। उसने गान्या की ओर नहीं देखा।

"यह सब आपका किया-धरा है," सब लोगों के चले जाते ही गान्या प्रिंस पर टूट पड़ा। "आप ही ने उनके सामने उगल दी होगी मेरी शादी होने की बात," उसने दबी जबान से जल्दी-जल्दी कहा; उसका सारा चेहरा बुरी तरह फड़क रहा था और उसकी आँखें क्रोध से चमक रही थीं। "आप बड़े बेशर्म बातूनी आदमी हैं !"

"मैं यक़ीन दिलाता हूँ कि आपका ऐसा सोचना ग़लत है," प्रिंस ने शान्त भाव से बड़ी शिष्टता से जवाब दिया। "मुझे तो मालूम भी नहीं था कि आपकी शादी होनेवाली है।"

"आपने आज सबेरे जनरल येपांचिन को कहते सुना था कि आज रात को नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ सब कुछ तै हो जाएगा और आपने यही बात इन लोगों को बता दी। आप झूठ बोल रहे हैं ! और कौन बता सकता है उन्हें ? लानत है, आपके अलावा और कौन बता सकता है ? बुढ़िया ने क्या इशारे में मुझसे यह बात ख़ुद नहीं कही ?"

"अगर आपका ख़्याल है कि उन्होंने इशारे में यह बात आपसे कही तो यह तो आप ही बेहतर जानते होंगे कि उनसे किसने कहा। मैंने इसके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा।"

"आपने पर्चा दे दिया था ? कोई जवाब ?" गान्या ने उन्मादपूर्ण अधीरता से प्रिंस की बात काटते हुए पूछा। लेकिन उसी समय अग्लाया वापस आ गई और प्रिंस को जवाब देने का समय नहीं मिला।

"यह लीजिए, प्रिन्स," अग्लाया ने एल्बम मेज़ पर रखते हुए कहा। "कोई पन्ना चुनकर मेरे लिए कुछ लिख दीजिए। यह रहा क़लम, बिलकुल नया है। लोहे के क़लम में कोई हर्ज तो नहीं है ? मैंने सुना है कि खूबसूरत लिखाई लिखनेवाले लोहे के क़लम कभी इस्तेमाल नहीं करते।"

प्रिंस से बातें करते समय ऐसा लग रहा था जैसे उसे गान्या के वहाँ मौजूद होने का कोई

आभास ही न हो। लेकिन जितनी देर प्रिंस क़लम को आजमाकर देखता रहा, कोई अच्छा-सा पन्ना ढूँढ़ता रहा और लिखने की तैयारी करता रहा, उस बीच गान्या आतिशदान के पास चला गया जहाँ प्रिंस के ठीक दाहिनी ओर अग्लाया खड़ी थी और काँपते हुए उखड़े-उखड़े स्वर में लगभग उसके कान में बोला—"एक शब्द...आप बस एक शब्द कह दें...और मैं...बच जाऊँगा।"

प्रिंस ने जल्दी से मुड़कर उन दोनों की ओर देखा। गान्या के चेहरे पर सच्ची निराशा छाई हुई थी; ऐसा लग रहा था मानो उसने वे शब्द बिना सोचे-समझे, अचानक आवेश में आकर कह दिए थे। अग्लाया कुछ सेकंड तक उसे शान्त विस्मय के उसी भाव से देखती रही जिससे उसने कुछ समय पहले प्रिंस को देखा था। उसका यह शान्त विस्मय, उसकी यह घबराहट, मानो उसकी समझ में किसी तरह भी न आया हो कि उससे कहा क्या गया था, गान्या को उस क्षण घोरतम तिरस्कार से सौ-गुनी अधिक भयानक लगी।

"क्या लिख दूँ मैं ?" प्रिंस ने पूछा।

"मैं आपको लिखाए देती हूँ," अग्लाया ने उसकी ओर मुड़कर कहा। "आप तैयार हो गए ? लिखिए—'मैं सौदेबाजी नहीं करती।' अब उसके नीचे तारीख़ डाल दीजिए। लाइए, देखूँ।"

प्रिंस ने एल्बम उसे दे दी।

"बहुत खूब ! आपने बहुत ही अच्छा लिखा है। आपकी लिखाई कमाल की है ! शुक्रिया ! अच्छा, प्रिंस, फिर मिलेंगे।...एक मिनट रुकिए," उसने कहा जैसे उसे कोई बात याद आ गई हो। "मेरे साथ आइए, मैं आपको अपनी निशानी के तौर पर कोई चीज़ देना चाहती हूँ।"

प्रिंस उसके पीछे-पीछे चला गया, लेकिन खाने के कमरे में पहुँचते ही अग्लाया रुक गई।

"इसे पढ़िए," उसने प्रिंस को गान्या का पर्चा देते हुए कहा।

प्रिंस ने पर्चा ले लिया और आश्चर्य से अग्लाया को देखा।

"मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि आपने इसे पढ़ा नहीं है और यह भी कि आप उस आदमी के विश्वासपात्र नहीं हो सकते। पढ़िए। मैं चाहती हूँ कि आप इसे पढ़ें।"

साफ़ लग रहा था कि पर्चा बहुत जल्दी में लिखा गया था।

"आज मेरी क़िस्मत का फ़ैसला है, आप जानती हैं कैसे। आज मुझे पक्का वचन देना होगा। मुझे आपसे हमदर्दी चाहने का कोई अधिकार नहीं है, मैं कोई उम्मीद बाँधने की भी हिम्मत नहीं कर सकता; लेकिन एक बार आपने एब शब्द कहा था, बस एक शब्द, और उस एक शब्द ने मेरे जीवन का सारा अन्धकार दूर कर दिया था और वह शब्द तब से मेरे लिए मशाल का काम दे रहा है। अब वैसा ही एक और शब्द कह दीजिए और आप मुझे तबाही से बचा लेंगी ! बस मुझसे इतना कह दीजिए—'सब कुछ ख़त्म कर दो,' और मैं आज ही सब कुछ ख़त्म कर दूँगा। इतना कह देने में आपका क्या जाता है ! मैं उस शब्द की भीख़ सिर्फ़ इसलिए माँग रहा हूँ कि यह मेरी ओर आपकी हमदर्दी और दया का सबूत होगा—और कुछ नहीं, बस इतना ही ! इससे ज़्यादा कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं। मैं कोई उम्मीद बाँधने का साहस नहीं कर सकता क्योंकि मैं उसके योग्य नहीं हूँ। लेकिन आपसे वह शब्द पाकर मैं फिर अपनी ग़रीबी को बर्दाश्त कर लूँगा और अपनी दुर्दशा को खुशी-खुशी स्वीकार कर लूँगा। मैं उस चुनौती को स्वीकार कर लूँगा, उसमें मुझे खुशी मिलेगी, और मैं एक बार फिर नई ताक़त के साथ उठ खड़ा हूँगा।

"हमदर्दी का एक शब्द मुझे दे दीजिए (क़सम खाकर कहता हूँ, बस हमदर्दी का) ! एक निराश आदमी की, डूबते हुए आदमी की इस ढिठाई पर नाराज़ न होइएगा कि उसने आपको तबाही से बचाने की आख़िरी कोशिश करने की हिम्मत की।

गा. ई.

"यह आदमी मुझे यक़ीन दिलाता है," प्रिंस के पर्चा पढ़ चुकने के बाद अग्लाया ने तीखे स्वर में कहा, "कि मेरे शब्दों से कि 'सब कुछ ख़त्म कर दो' मेरी कोई बदनामी नहीं होगी और मैं किसी भी चीज़ के लिए वचनबद्ध नहीं हो जाऊँगी, और जैसा कि आप देखते हैं, उसने ख़ुद मुझे इस पर्चे के रूप में इस बात की लिखित जमानत दी है। देखिए, कितने भोलेपन से उसने जल्दी-जल्दी कुछ शब्दों पर ज़ोर देने के लिए उनके नीचे लकीर खींच दी है और उसके मन की बात कितने भोंडे तरीक़े से झलककर ऊपर आ जाती है। साथ ही वह जानता है कि अगर उसने इस पूरे सिलसिले को ख़त्म कर दिया होता, लेकिन अकेले, अपने बल पर, मेरी ओर से किसी शब्द के कहे जाने की राह देखे बिना और मुझे उसके बारे में कुछ बताए बिना ही, मुझसे किसी तरह की उम्मीद रखे बिना ही ऐसा कर दिया होता—तो उसकी ओर मेरी भावना बदल गई होती और शायद मैं उसकी दोस्त बन गई होती। वह इस बात को अच्छी तरह जानता है ! लेकिन उसकी आत्मा गन्दी है—वह जानता है, फिर भी अपना इरादा पक्का नहीं कर सकता; वह जानता है, फिर भी मुझसे जमानत चाहता है। वह दूसरे पर भरोसा करना तो जानता ही नहीं। वह चाहता है कि उस एक लाख के बदले मैं उसे मुझे पाने की उम्मीद दिला दूँ। और जहाँ तक उस शब्द का सवाल है, जिसके बारे में खत में उसका कहना है कि मैंने यह उससे कभी पहले कहा था, जिससे उसके जीवन में रोशनी आ गई थी, तो यह सरासर झूठ है। मुझे सिर्फ़ एक बार उस पर तरस आया था। लेकिन वह बेहया और ढीठ है—उसने फ़ौरन अपने मन में समझ लिया कि उसके लिए उम्मीद है। मैं यह बात फ़ौरन समझ गई। उसके बाद से वह मुझे अपने जाल में पकड़ने की कोशिश करने लगा, और अब भी वही कर रहा है। लेकिन बस इतना ही कहना काफ़ी है। मेहरबानी करके यह पर्चा ले जाकर उसे वापस कर दीजिए, अभी, घर से निकलने के बाद, उससे पहले हरगिज़ नहीं।"

"लेकिन मैं जवाब में उससे कहूँ क्या ?"

"ज़ाहिर है, कुछ भी नहीं। यही सबसे अच्छा जवाब है। तो आप उसके यहाँ रहने जा रहे हैं, क्यों ?"

"ख़ुद आपके पापा ने मुझे सलाह दी थी," प्रिंस ने कहा।

"तो उससे ख़बरदार रहिएगा। मैं आपको अभी से बताए देती हूँ; वह यह खत वापस कर देने के लिए आपको कभी माफ़ नहीं करेगा।"

अग्लाया ने हल्के से उसका हाथ दबाया और कमरे के बाहर चली गई। उसके माथे पर बल पड़े हुए थे और वह गम्भीर दिखाई दे रही थी। जब उसने उससे विदा लेने के लिए सिर हिलाया तब भी वह नहीं मुस्कराई।

"मैं अभी एक मिनट में आया। बस अपनी पोटली ले लूँ, फिर चलते हैं," प्रिंस ने गान्या से कहा।

गान्या ने अधीरता से अपना पाँव पटका। उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। आख़िरकार दोनों बाहर सड़क पर निकले; प्रिंस अपनी पोटली लिए था।

"जवाब ? जवाब ?" गान्या ने उस पर झपटते हुए कहा। "क्या कहा उसने आपसे ? आपने पर्चा दे दिया था न ?"

प्रिंस ने कुछ भी कहे बिना पर्चा उसे दे दिया। गान्या स्तब्ध रह गया।

"यह क्या है ? मेरा पर्चा ?" उसने चिल्लाकर कहा। "उसे दिया ही नहीं ! अरे, मुझे पहले ही समझ लेना चाहिए था ! लानत है !...अब साफ़ हो गया कि वह कोई बात समझ नहीं रही थी ! लेकिन कैसे, कैसे, कैसे हुआ यह कि आप खत नहीं दे पाए ! अरे, कमबख़्त !..."

"माफ़ कीजिएगा, लेकिन, बात इसकी उल्टी है, मैंने आपका पर्चा दे तो फ़ौरन ही दिया था, जैसे ही आपने दिया था उसी वक़्त और ठीक उसी तरह जैसे आपने देने को कहा था। अब यह मेरे पास इसलिए है कि अग्लाया इवानोव्ना ने अभी यह मुझे वापस किया है।"

"क़ब ? क़ब ?"

"जब मैंने उनकी एल्बम में लिखना ख़त्म किया था, और उन्होंने मुझे अपने साथ दूसरे कमरे में चलने को कहा था। (आपने उन्हें यह कहते सुना था न ?) हम लोग खाने के कमरे में गए, वहाँ उन्होंने मुझे यह पर्चा दिया, मुझसे इसे पढ़ने को कहा, और फिर मुझसे कहा कि मैं इसे आपको वापस कर दूँ।"

"पढ़-ने को कहा ?" गान्या लगभग अपने पूरे स्वर में चिल्लाया। "पढ़ने को ? आपने पढ़ा उसे ?"

और वह सड़क की पटरी के बीच में एक बार फिर स्तम्भित खड़ा रहा, इतना विस्मित कि वह अपना मुँह बन्द करना भी भूल गया।

"जी हाँ, मैंने पढ़ा। अभी ज़रा देर पहले।"

"और उसने आपको खुद वह पढ़ने के लिए दिया था—ख़ुद ? ख़ुद उसने ?"

"जी हाँ, खुद, और मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ, उनकी इजाज़त के बिना तो मैं पढ़ता भी नहीं।"

गान्या एक मिनट चुप रहने और फिर बड़े कष्टप्रद प्रयास से कुछ सोचने के बाद चिल्लाया—"नामुमकिन ! वह तो पढ़ने को कह ही नहीं सकती थी। आप झूठ बोल रहे हैं ! आपने उसे ख़ुद पढ़ा था !"

"मैं सच कह रहा हूँ," प्रिंस ने पहले जैसे बिलकुल अविचलित स्वर में कहा, "और, यक़ीन जानिए—मुझे बहुत अफ़सोस है कि इस बात ने आप पर इतना बुरा असर डाला।"

"लेकिन, कमबख्त कहीं के, उसने उस वक़्त कुछ कहा नहीं ? उसने कोई जवाब तो दिया होगा ?"

"जी हाँ, ज़रूर दिया था।"

"तो बताइए, बताइए न मुझे। लानत है !..."

यह कहकर गान्या ने अपना दाहिना पाँव, जिस पर उसने रबड़ का जूता पहन रखा था, दो बार सड़क की पटरी पर पटका।

"मैं जैसे ही इसे पढ़ चुका, उन्होंने मुझे बताया कि आप उन्हें किसी जाल में फँसाने की कोशिश कर रहे थे, कि आप उन्हें किसी ऐसी बदनामीवाली स्थिति में फँसा देना चाहते थे कि वह आपको उम्मीद बँधाने पर मजबूर हो जाएँ, और उनकी दिलाई हुई उम्मीद का सहारा लेकर आप कोई नुकसान उठाए बिना एक लाख की रक़म की अपनी दूसरी उम्मीद छोड़ दें। उन्होंने यह भी कहा कि अगर आप उनसे कोई सौदेबाजी किए बिना ऐसा कर देते और पहले से उनसे कोई जमानत माँगे बिना सब कुछ ख़त्म कर देते तो वह शायद आपकी दोस्त बन जातीं। बस, शायद इतना ही कहा था। नहीं, कुछ और भी था। जब पर्चा लेने के बाद मैंने उनसे पूछा था कि उनका जवाब क्या है तो उन्होंने कहा था कि कोई जवाब न होना ही सबसे अच्छा जवाब है। मैं समझता हूँ कि यही कहा था उन्होंने; माफ़ कीजिएगा अगर मैं उनके अपने शब्द भूल गया हूँ और आपको उसी तरह बता रहा हूँ जैसे मैंने समझा।"

गान्या गुस्से से बेकाबू हो उठा और उसका क्रोध ज्वालामुखी की तरह फूट पड़ा।

"अच्छा, यह बात है !" वह गुर्राया। "तो वे मेरे खत इस तरह खिड़की के बाहर फेंकती है ? देखा, वह सौदेबाजी नहीं करती, अच्छी बात है, तो मैं करूँगा ! हम देख लेंगे ! मेरे पास भी बहुत कुछ है...देख लेंगे !...मैं उसे अपनी मुट्ठी में करके ही दम लूँगा !..."

उसका चेहरा बुरी तरह फड़क रहा था, उसका रंग पीला पड़ गया था और वह अपना मुक्का हिला रहा था। वे कई गज़ तक ऐसे ही चलते रहे। उसने प्रिंस की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और ऐसा आचरण करता रहा मानो वह अपने कमरे में अकेला हो, क्योंकि प्रिंस को वह बिलकुल न होने के बराबर समझ रहा था। लेकिन अचानक उसे एक बात सूझी और उसने अपने आपको सम्भाल लिया।

"लेकिन क्या वजह है," उसने सहसा प्रिंस को सम्बोधित करते हुए कहा, "क्या वजह है इसकी कि उससे पहली बार मिलने के दो ही घंटे बाद उसने आप पर ('एक बौड़म पर !' उसने मन ही मन जोड़ दिया) इतना भरोसा कर लिया ? यह कैसे हुआ ?"

उसकी सब यातनाओं में बस एक ही कसर रह गई थी—ईर्ष्या की; और अब वह भी उसके हृदय में डंक मार रही थी।

"यह बात मैं आपको नहीं समझा सकता," प्रिंस ने जवाब दिया।

गान्या ने प्रिंस को द्वेष के भाव से देखा।

"उसने आपको खाने के कमरे में अपने विश्वास की भेंट देने के लिए तो बुलाया नहीं था, क्यों ? वह आपको कोई चीज़ देने जा रही थी, थी न ?"

"मैं भी इसका कोई दूसरा मतलब नहीं लगाता। बिलकुल यही समझता हूँ मैं भी।"

"लेकिन क्यों, लानत है ! आपने ड्राइंग-रूम में ऐसा क्या किया था ? वे सब आपको इतना पसन्द क्यों करने लगीं ? देखिए," उसने उत्तेजित होकर कहा (उसके दिमाग़ में उस वक़्त ऐसी खलबली मची हुई थी कि वह अपनी समझ-बूझ खो बैठा), "देखिए, क्या आप किसी तरह भी याद कर सकते हैं और उसे सुलझाकर बता सकते हैं कि आप वहाँ किस चीज़ के बारे में बातें कर रहे थे ? मेरा मतलब है ठीक-ठीक शब्द जो आपने शुरू से कहा। क्या आपका ध्यान किसी चीज़ की ओर गया था, याद है आपको इसकी, है न ?"

"क्यों, मुझे सब याद है," प्रिंस ने जवाब दिया। "बिलकुल शुरू में जब मैं अन्दर गया और उनसे मेरा परिचय हुआ तो हम लोग स्विट्ज़रलैण्ड की बातें करने लगे।"

"भाड़ में जाए स्विट्ज़रलैण्ड !"

"फिर मौत की सज़ा के बारे में..."

"मौत की सज़ा ?"

"जी हाँ, किसी न किसी बात के सिलसिले में...फिर मैंने उन्हें बताया कि मैंने किस तरह तीन साल स्विट्ज़रलैण्ड के एक गाँव में बिताए थे, और उस गाँव की एक ग़रीब लड़की की कहानी सुनाई।..."

"अरे, भाड़ में जाए आपकी गाँव की लड़की ! फिर !" गान्या अधीरता से आगे बढ़ रहा था।

"फिर यह कि किस तरह श्नाइडर ने मुझे मेरे चरित्र के बारे में अपनी राय बताई और मुझे..."

"जहन्नुम में जाए श्नाइडर और मेरे ठेंगे पर है उसकी राय ! फिर !"

"फिर किसी बात के सिलसिले में मैं चेहरों की बातें करने लगा, मतलब है चेहरों की भाव-भंगिमा के बारे में, और मैंने कहा कि अग्लाया इवानोव्ना लगभग नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना जितनी

ही ख़ूबसूरत हैं। उसी वक़्त उस तस्वीर की बात मेरी जबान से निकली।..."

"लेकिन आपने उन लोगों को वह सब तो नहीं बताया, ज्यों का त्यों नहीं बताया, जो आपने आज सबेरे पढ़ने के कमरे में सुना था ? बताया था न ?"

"मैं आपसे फिर कहता हूँ—नहीं !"

"लेकिन, लानत है, हो ही कैसे सकता है...अच्छा ! अग्लाया ने पर्चा बुढ़िया को तो नहीं दिखाया था ?"

"मैं आपको पक्का यक़ीन दिलाता हूँ कि उन्होंने नहीं दिखाया था। मैं तमाम वक़्त वहीं था; और, फिर, उन्हें इसका मौक़ा ही नहीं मिला।"

"ख़ैर, हो सकता है आपने ध्यान न दिया हो। उफ़, मुआ बौड़म कहीं का !" वह आपे से बाहर होकर चिल्लाया। "ठीक से कोई बात ही नहीं बता सकता !"

गाली-गलौच पर उतर आने पर और कोई विरोध न पाकर गान्या बिलकुल ही काबू से बाहर हो गया, जैसा कि कुछ लोगों के साथ हमेशा होता है। वह गुस्से से इतना खौल रहा था कि थोड़ी ही कसर रह गई थी कि उसके मुँह से झाग निकलने लगता। लेकिन इस क्रोध ने ही उसे अंधा कर दिया था; वरना बहुत पहले ही उसने इस पर ध्यान दिया होता कि यह 'बौड़म', जिसके साथ वह ऐसा अपमानजनक व्यवहार करता था, कभी-कभी बहुत जल्दी और पैनी नज़र से देखकर चीज़ों की तह तक पहुँच जाता था और उनका वर्णन बहुत अच्छे ढंग से कर सकता था। लेकिन अचानक एक बिलकुल ही अप्रत्याशित घटना हुई।

"मैं आपको बता दूँ, गव्रीला अर्दालिओनोविच," प्रिंस ने सहसा कहा, "कि यह बिलकुल सच है कि एक जमाने से मैं इतना बीमार था कि मैं सचमुच लगभग बौड़म था; लेकिन तब से मेरी तबियत बिलकुल ठीक हो गई है और इसलिए मुझे बुरा लगता है जब कोई मुझे मुँह पर बौड़म कहता है। हालाँकि आपकी असफलताएँ ध्यान में रखकर मैं आपको माफ़ कर देने को बिलकुल तैयार हूँ, लेकिन आप अपनी खीझ की रौ में मुझे दो बार गाली भी दे चुके हैं। मैं साफ़ कह दूँ कि यह मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता, ख़ासतौर पर इस तरह, बैठे-बिठाए, जैसे आपने किया, इतनी थोड़ी देर की जान-पहचान के बाद; और, चूँकि हम लोग इस वक़्त चौराहे पर खड़े हैं, क्या बेहतर न होगा कि हम एक-दूसरे से अलग हो जाएँ ? आप दाहिनी ओर अपने घर जाइए और मैं बाईं ओर जाता हूँ। मेरे पास पच्चीस रूबल हैं, और मुझे यक़ीन है कि इतने में मुझे ज़रूरत की सारी चीज़ों से लैस कमरे मिल जाएँगे।"

गान्या बुरी तरह सिटपिटा गया, और उसका चेहरा भी शर्म से लाल हो गया।

"माफ़ कीजिएगा, प्रिंस," उसने बड़े जोश से चिल्लाकर कहा, और उसने अपना रूखा स्वर फ़ौरन अत्यधिक शिष्टता के स्वर में बदल दिया। "मुझे माफ़ कर दीजिए ! आप देख ही रहे हैं कि मैं कैसी मुसीबत में फँसा हूँ ! आपको अभी तो लगभग कुछ भी नहीं मालूम है, लेकिन अगर आपको सब कुछ मालूम होता तो मुझे यक़ीन है कि आप मुझे थोड़ा-सा माफ़ कर देते। हालाँकि, ज़ाहिर है, मैं इस लायक़ नहीं हूँ।..."

"अरे नहीं, मुझसे इस तरह माफ़ी माँगने की कोई ज़रूरत नहीं है," प्रिंस ने जल्दी से जवाब दिया। "मैं बिलकुल समझता हूँ कि आपको यह सब कुछ कितना बुरा लगता होगा और इसीलिए आप इतनी गाली-गलौज करते हैं। चलिए, आपके घर चलते हैं। बड़ी ख़ुशी से।..."

"नहीं," गान्या ने चलते-चलते प्रिंस पर क्रोध-भरी दृष्टि डालकर अपने मन में कहा, "अब इसे इस तरह नहीं जाने दिया जा सकता। इस बदमाश ने पहले तो सारी बातें कुरेद-कुरेदकर मुझसे

मालूम कर लीं और फिर अचानक अपना नक़ाब उतार फेंका।...इसके पीछे कोई बात ज़रूर है। ख़ैर, देखा जाएगा ! सारी बातें साफ़ हो जाएँगी, सब कुछ, सब कुछ ! और आज ही !"

वे लोग अब घर पहुँच चुके थे।

8

गान्या का फ़्लैट तीसरी मंज़िल पर था। वहाँ तक पहुँचने का रास्ता बहुत साफ़, रोशन, चौड़ी सीढ़ियों से होकर था; उस फ़्लैट में छह-सात छोटे-बड़े कमरे थे—दरअसल कमरे थे तो बहुत मामूली लेकिन परिवार का पेट पालनेवाले क्लर्क की हैसियत के बाहर थे, चाहे वह दो हज़ार रूबल साल ही क्यों न कमाता हो। लेकिन कुछ कमरे किराएदारों को उठा देने के इरादे से यह फ़्लैट गान्या और उसके परिवारवालों ने अभी मुश्किल से दो महीने पहले लिया था; गान्या इस पर बहुत झुँझलाया था, लेकिन उसकी माँ और बहन ने बहुत आग्रह किया था, जो परिवार की आमदनी में अपना भी योगदान करके कुछ हद तक अपनी उपयोगिता सिद्ध करना चाहती थीं। गान्या नाक-भौं चढ़ाता रहा और कहता रहा कि किरायेदार रखना बड़े अपमान की बात थी; इसकी वजह से वह उस समाज में जाते कुछ शर्म आती थी, जहाँ उसे इस बात की आदत पड़ चुकी थी कि उसे बहुत उज्ज्वल भविष्यवाला नौजवान समझा जाए। भाग्य के आगे इस तरह झुकने और अपने ही घर में इस तरह की झुँझला देनेवाली घिचपिच से उसे चोट-सी लगती थी। इधर कुछ समय से वह हर छोटी से छोटी बात पर हद से ज़्यादा और असन्तुलित चिढ़ महसूस करने लगा था, और अगर वह कुछ रिआयतें देने और कुछ समय के लिए बर्दाश्त कर लेने को राज़ी हो गया था तो इसका कारण केवल यह था कि उसने जल्दी ही इन सब बातों को बुनियादी तौर पर बदल देने की ठान ली थी। लेकिन यह परिवर्तन, यह मार्ग जो उसने अपनाने का फ़ैसला किया था, कोई आसान काम नहीं था—यह एक ऐसी समस्या थी जिसके बारे में यह खतरा था कि उसका हल उन सब मुसीबतों और तकलीफ़ों से बढ़कर होगा जो उसने अब तक झेली थीं।

यह फ़्लैट एक गलियारे से दो हिस्सों में बँटा हुआ था जो सीधे प्रवेश-कक्ष से आगे चला गया था। गलियारे के एक तरफ़ तीन कमरे थे, जो ऐसे रहनेवालों को किराए पर उठाए जाने के लिए थे जिनकी "ख़ासतौर पर सिफ़ारिश की गई हो"; इसके अलावा गलियारे के उसी तरफ़ छोर पर किचेन से मिला हुआ एक चौथा कमरा था, जो दूसरे कमरों से छोटा था; उसमें परिवार के पिता, खुद जनरल ईवोल्गिन रहते थे, जो एक चौड़े-से सोफ़े पर सोते थे और जिन्हें रसोई में से होकर पीछेवाली सीढ़ियों से आना-जाना पड़ता था। उसी कमरे में गान्या का भाई कोल्या रहता था, तेरह साल का स्कूल में पढ़नेवाला लड़का। उसे भी यहीं दब-सिकुड़कर रहना, पढ़ना और बहुत पुराने, पतले-से छोटे सोफ़े पर सोना पड़ता था, जिस पर एक फटी हुई चादर उसके लिए बिछा दी जाती थी; सबसे बढ़कर, उसे अपने बाप की देखभाल करनी पड़ती थी, जिन्हें दिन-ब-दिन इस तरह की देखभाल की ज़्यादा ज़रूरत पड़ती जा रही थी। प्रिंस को उन तीन में से बीचवाला कमरा दिया गया; दाहिनी ओर पहले कमरे में फ़ेर्दीश्चेंको रहता था और बाईं ओरवाला तीसरा कमरा अभी खाली था। लेकिन गान्या प्रिंस को सबसे पहले दूसरी तरफवाले हिस्से में ले गया जहाँ उसका परिवार रहता था। फ़्लैट के इस आधे भाग में एक बड़ा-सा हॉल था जिसे ज़रूरत पड़ने पर खाने का कमरा बना लिया जाता था, एक उससे छोटा ड्राइंग-रूम था, जो सिर्फ़ सबेरे ड्राइंग-रूम की तरह इस्तेमाल किया जाता था और रात को गान्या का पढ़ने और सोने का कमरा

बन जाता था, और आख़िर में एक छोटा-सा तीसरा क़मरा था जिसका दरवाज़ा हमेशा बन्द रहता था; यह गान्या की माँ और बहन का सोने का कमरा था। मतलब यह कि उस फ़्लैट में सारी जगह बुरी तरह भरी हुई थी। गान्या अपने दाँत पीसकर रह गया; हालाँकि वह अपनी माँ के प्रति सम्मान का व्यवहार करना चाहता था लेकिन फ़ौरन ही यह बात स्पष्ट हो गई कि परिवार में वही असली अत्याचारी था।

नीना अलेक्सान्द्रोव्ना कमरे में अकेली नहीं थीं; उनकी बेटी वर्वारा अर्दालिओनोव्ना भी उनके साथ थी। दोनों बुनाई करने में और एक मेहमान इवान पेत्रोविच प्तीत्सिन से बातें करने में व्यस्त थीं। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ईवोल्गिना लगभग पचास की मालूम होती थीं; उनका चेहरा दुबला-पतला, मरियल-सा था और उनकी आँखों के नीचे स्याह घेरे थे। वह बीमार और कुछ शोकग्रस्त लगती थीं, लेकिन उनका चेहरा और उनकी आँखों का भाव देखने में सुखद लगते थे; उनके मुँह से जो पहला शब्द निकला उसी से पता चल गया कि वह गम्भीर स्वभाव की सच्ची गरिमावाली महिला थीं, और शोकग्रस्त मुद्रा के बावजूद उनके चरित्र में दृढ़ता और संकल्प का अनुमान लगाया जा सकता था। वह बहुत ही मामूली पोशाक पहने थीं, गहरे रंग की, बिलकुल वृद्ध महिला की तरह, लेकिन उनके तौर-तरीक़े, उनकी बातचीत और उनके आस-पास की हर चीज़ इस बात का सबूत देती थी कि वह इससे बेहतर परिवेश में अपना जीवन बिताने की आदी रह चुकी थीं।

गान्या की बहन वर्वारा अर्दालिओनोव्ना मँझोले क़द की, कुछ दुबली-सी तेईस साल की लड़की थी। उसका चेहरा खूबसूरत तो नहीं था, लेकिन वह वैसा चेहरा था जिसमें खूबसूरत हुए बिना भी लुभाने का और सच्चा भावावेग जागृत करने का रहस्य छिपा होता है। वह बिलकुल अपनी माँ जैसी थी और कपड़े भी उसने लगभग उनके जैसे ही पहन रखे थे, क्योंकि अच्छे कपड़ों के प्रति वह बिलकुल उदासीन थी। उसकी भूरी आँखों में कभी अपार उल्लास और स्नेह उमड़ आता था, लेकिन ज़्यादातर वह गम्भीर और विचारमग्न रहती थी, कभी-कभी तो ज़रूरत से ज़्यादा, ख़ासतौर पर इधर कुछ समय से। उसके चेहरे में भी दृढ़ता और संकल्प व्यक्त होता था, लेकिन उसे देखकर बरबस यह आभास होता था कि उसकी दृढ़ता में माँ की अपेक्षा अधिक स्फूर्ति और उद्यमशीलता थी। वर्वारा अर्दालिओनोव्ना का गुस्सा बड़ी आसानी से भड़क उठता था, और उसका भाई भी अकसर उसके गुस्से से बहुत डरा-डरा रहता था। उनका मौजूदा मेहमान इवान पेत्रोविच प्तीत्सिन भी उससे डरता था। वह अच्छा ख़ासा नौजवान आदमी था, जो अपनी उम्र की तीसरी दहाई पूरी कर रहा था; अपने वस्त्रों से वह बहुत सादा लेकिन सौम्य लगता था, उसका आचरण काफ़ी रुचिकर लेकिन कुछ ज़्यादा ही गम्भीर था। उसकी छोटी-सी हल्के कत्थई रंग की दाढ़ी से पता चलता था कि वह सरकारी नौकर[1] नहीं था। वह जानता था कि समझदारी की और दिलचस्प बातचीत कैसे की जाती है लेकिन वह ज़्यादातर चुप ही रहता था। कुल मिलाकर उसका प्रभाव बहुत सुखद जान पड़ता था। यह बात बिलकुल स्पष्ट थी कि वह वर्वारा अर्दालिओनोव्ना के प्रति उदासीन नहीं था और वह अपनी भावनाओं को छिपाता भी नहीं था। वर्वारा अर्दालिओनोव्ना उसके साथ मित्रता का व्यवहार करती थी, लेकिन वह अब भी कुछ सवालों का जवाब देने में आनाकानी करती थी और उन्हें पसन्द नहीं करती थी; लेकिन प्तीत्सिन ज़रूरत से ज़्यादा हताश नहीं होता था। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना उसके साथ बहुत अच्छा सलूक करती थीं और इधर कुछ समय से तो उन्होंने उससे बहुत-सी भेद की बातें बताना भी शुरू कर दिया था। उसके बारे में यह बात मालूम थी कि उसका

1. जार निकोलाई प्रथम के 2 अप्रैल 1837 के फरमान के अनुसार सरकारी अफ़सरों के लिए दाढ़ी-मूँछें रखना वर्जित कर दिया गया था।

ख़ास धन्धा था बहुत ऊँचे सूद पर और काफ़ी अच्छी जमानत पर पैसा उधार देकर दौलत बटोरना। वह गान्या का बहुत गहरा दोस्त था।

गान्या की विस्तारपूर्ण लेकिन कुछ रूखी सिफ़ारिश के बाद (जिसने अपनी माँ का अभिवादन बड़ी रुखाई से किया था, अपनी बहन की ओर ध्यान तक नहीं दिया था और प्तीत्सिन को साथ लेकर फ़ौरन कमरे के बाहर चला गया था) नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने प्रिंस से कुछ स्नेह-भरी बातें की और कोल्या से, जिसने उसी वक़्त दरवाज़े से अन्दर झाँका था, प्रिंस को बीचवाले कमरे में पहुँचा देने को कहा। कोल्या हँसमुख और प्यारे चेहरेवाला लड़का था और उसके तौर-तरीक़ों में भरोसे का भाव और निष्कपटता थी।

"आपका सामान कहाँ है ?" प्रिंस को उसके कमरे में ले जाते हुए कोल्या ने पूछा।

"मेरे पास बस एक छोटी-सी पोटली है। मैं उसे प्रवेश-कक्ष में छोड़ आया हूँ।"

"मैं अभी लाए देता हूँ। हमारे यहाँ सिर्फ़ एक खाना पकानेवाली और एक नौकरानी है, इसलिए कुछ काम मैं भी कर देता हूँ। वार्या सारी गृहस्थी की देखभाल करती है; वह बड़ी जल्दी नाराज़ हो जाती है। गान्या ने बताया कि आप सभी स्विट्ज़रलैण्ड से आए हैं।"

"हाँ।"

"स्विट्ज़रलैण्ड बहुत अच्छा है ?"

"बहुत !"

"पहाड़ हैं ?"

"हाँ।"

"अब मैं आपकी पोटली ला दूँ।"

वर्वारा अर्दालिओनोव्ना अन्दर आई।

"नौकरानी अभी आपका बिस्तर ठीक किए देती है। आपके पास कोई सन्दूक़ है ?"

"जी नहीं, बस एक पोटली है। आपका भाई लेने गया है। बाहर रखा है।"

"वहाँ इस छोटी सी पोटली के अलावा तो और कुछ नहीं है," कोल्या ने कमरे में वापस आते हुए कहा। "कहाँ रखा था आपने ?"

"मेरे पास यही है," प्रिंस ने अपनी पोटली लेते हुए जवाब दिया।

"उफ़ ! और मैं सोच रहा था कि कहीं फ़ेर्दीश्चेंको तो नहीं ले गया।"

"बकवास मत करो," वार्या ने सख़्ती से डाँटा। वह प्रिंस से भी बड़े रूखेपन से बोल रही थी, और बस न्यूनतम आवश्यक शिष्टता ही दिखा रही थी।

"मैं कहता हूँ, मेरी अच्छी दीदी," कोल्या बोला, "कि आप मेरे साथ थोड़ा और प्यार का बर्ताव कर सकती हैं, समझीं आप। मैं प्तीत्सिन तो हूँ नहीं।"

"तुम इतने बेवक़ूफ़ हो, कोल्या, कि तुम्हारी तो चमड़ी उधेड़ दी जानी चाहिए। मेहरबानी करके जिस चीज़ की ज़रूरत हो नौकरानी से कह दीजिएगा। दोपहर का खाना साढ़े चार बजे होता है। आप अगर चाहें तो हम लोगों के साथ खा सकते हैं, या अपने कमरे में मँगा सकते हैं, आपकी मर्जी। चलो, कोल्या, उन्हें तंग न करो।"

"बड़ी आईं धौंस जमानेवाली ! चलो !"

दरवाज़े पर ही उनकी मुलाक़ात गान्या से हो गई, जो अन्दर जा रहा था।

"पापा घर पर हैं ?" गान्या ने कोल्या से पूछा, और उससे हाँ में जवाब पाकर कोल्या के कान में कुछ कहा।

कोल्या ने सिर हिलाया और वर्वारा अर्दालिओनोव्ना के पीछे-पीछे कमरे से बाहर चला गया।

"बस, एक बात, प्रिंस। उन सारे...मामलों की वजह से मैं आपको कुछ बातें बताना भूल गया। मैं चाहूँगा कि आप मेरे ऊपर एक एहसान करें, अगर आपके लिए यह मुश्किल न हो, अग्लाया और मेरे बीच अभी जो कुछ हुआ है उसके बारे में **यहाँ** और **इस** घर में आप जो कुछ होता देखें उसके बारे में **वहाँ** मेहरबानी करके कुछ न कहिएगा। क्योंकि, **यहाँ** भी बहुत-सी शर्मनाक बातें होती रहती हैं। भाड़ में जाए सब कुछ।...लेकिन कम से कम आज अपने आपको काबू में रखने की पूरी कोशिश कीजिएगा।"

"मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि जितना आप समझते हैं उससे मैंने बहुत कम बातें की हैं," गान्या की इन झिड़कियों से कुछ चिढ़कर प्रिंस ने कहा। उनके सम्बन्धों में स्वभावतः अधिकाधिक तनाव आता जा रहा था।

"ख़ैर, मुझे आज आपकी वजह से बहुत कुछ सहना पड़ा। बस, मेरी आपसे यह प्रार्थना है।"

"मैं आपको यह भी बता दूँ, गव्रीला अर्दालिओनोविच, कि मेरे ऊपर किसी तरह की कोई पाबन्दी नहीं थी, इसलिए बिलकुल कोई वजह नहीं थी कि मैं उस तस्वीर की चर्चा न करता। आपने मुझे ऐसा करने से मना तो नहीं किया था।"

"छिः, कैसा भयानक क़मरा है," गान्या ने बड़े तिरस्कार के भाव से चारों ओर नज़र डालकर अपना मत प्रकट किया। "अँधेरा है और खिड़कियाँ अहाते में खुलती हैं। हर एतबार से आप यहाँ ग़लत वक़्त पर आए।...ख़ैर, मेरा इससे कोई सरोकार नहीं है। फ़्लैटों को उठाता मैं तो हूँ नहीं।"

प्तीत्सिन ने अन्दर झाँककर देखा और गान्या को बुलाया, जो जल्दी ही कमरे से चला गया, हालाँकि वह कुछ और भी कहना चाहता था, लेकिन साफ़ मालूम हो रहा था कि वह कुछ अटपटा महसूस कर रहा था और अपनी बात शुरू करते शरमा रहा था; उसने कमरे की बुराई भी इस तरह की मानो उसे बड़ी उलझन हो रही हो।

प्रिंस को अभी मुश्किल से इतना वक़्त मिल पाया था कि वह मुँह-हाथ धोकर अपने कपड़े ठीक करे कि इतने में एक नए आदमी ने अन्दर झाँका।

यह लगभग तीस साल का एक आदमी था, कुछ लम्बा क़द, चौड़े कन्धे और बड़े-से सिर पर घुँघराले लाल बाल। उसका चेहरा सुर्ख़ और मांसल था, होंठ मोटे, नाक चौड़ी और चपटी थी, चर्बी की तहों में खोई हुई उसकी छोटी-छोटी चिढ़ाती हुई आँखें हर वक़्त झपकती हुई मालूम होती थीं। कुल मिलाकर देखने से ऐसा आभास होता था कि वह बहुत ढीठ आदमी है। उसके कपड़े कुछ मैले थे।

पहले तो उसने दरवाज़ा सिर्फ़ इतना खोला कि अपना सिर अन्दर करके झाँक सके। अन्दर घुसे हुए सिर को चारों ओर घुमाकर वह कमरे को कोई पाँच सेकंड तक देखता रहा; फिर दरवाज़ा धीरे-धीरे खुलने लगा और उसकी पूरी आकृति की रूपरेखा दरवाज़े में दिखाई दी। मेहमान अब भी अन्दर नहीं आया, बल्कि आँखें सिकोड़कर चौखट पर से ही प्रिंस को ग़ौर से देखता रहा। आख़िरकार, वह अपने पीछे दरवाज़ा बन्द करके और क़रीब आ गया, एक कुर्सी पर बैठ गया, मजबूती से प्रिंस का हाथ पकड़ा और उसे अपने सामने सोफ़े पर बिठा लिया।

"फ़ेर्दीश्चेंको," उसने प्रिंस के चेहरे को ग़ौर से और सवालिया नज़रों से देखते हुए कहा।

"तो क्या हुआ ?" प्रिंस ने लगभग हँसते हुए कहा।

"यहीं रहता हूँ," फ़ेर्दीश्चेंको ने उसे पहले की तरह ही देखते हुए कहा।

"आप मुझसे जान-पहचान करना चाहते हैं ?"

"कमाल है !" आगंतुक ने अपने बालों में उँगलियाँ फेरते हुए आह भरकर कहा और सामनेवाले कोने की ओर घूरने लगा। "आपके पास कुछ पैसा है ?" उसने अचानक प्रिंस की ओर मुड़कर पूछा।

"थोड़ा-सा।"

"कितना ?"

"पच्चीस रूबल।"

"दिखाइए।"

प्रिंस ने पच्चीस रूबल का नोट अपनी वास्कट की जेब में से निकाला और फ़ेर्दीश्चेंको को दे दिया, जिसने नोट की तहें खोलीं, उसे देखा, उसे उलटा, और फिर उसे रोशनी के सामने करके जाँचा।

"अजीब बात है," उसने मानो आश्चर्य करते हुए कहा, "इनका रंग बादामी क्यों हो जाता है ? इन पच्चीस रूबल के नोटों का रंग कभी-कभी बहुत बादामी हो जाता है जबकि दूसरे नोटों का रंग हल्का पड़ जाता है। लीजिए।"

प्रिंस ने नोट वापस ले लिया। फ़ेर्दीश्चेंको अपनी कुर्सी में उठ खड़ा हुआ।

"मैं आपको सबसे पहले तो यह चेतावनी देने के लिए आया था कि मुझे कभी पैसा उधार न दीजिएगा, क्योंकि मैं आपसे माँगूँगा ज़रूर।"

"अच्छी बात है।"

"क्या आप यहाँ पैसे देने का इरादा रखते हैं ?"

"यक़ीनन।"

"ख़ैर, मेरा इस तरह का कोई इरादा नहीं है। आपका शुक्रिया। दाहिनी ओर पहला दरवाज़ा मेरे कमरे का है—आपने देखा तो होगा ? मेरे पास बहुत ज़्यादा आने की तकलीफ़ न कीजिएगा। मैं ख़ुद ही आपके पास आता रहूँगा, चिन्ता न करें। जनरल साहब से मिले ?"

"नहीं।"

"उनकी आवाज़ भी नहीं सुनी ?"

"बिलकुल नहीं।"

"ख़ैर, जल्दी ही आप उन्हें देखेंगे भी और सुनेंगे भी। अरे, वह तो मुझ तक से पैसा उधार लेने की कोशिश करते हैं। Avis au lecteur.[1] अच्छा, फिर मिलेंगे। भला फ़ेर्दीश्चेंको जैसा नाम रखकर किसी के लिए जिन्दा रहना मुमकिन है ? क्या ख़्याल है आपका ?"

"क्यों नहीं ?"

"अच्छा, मैं चला।"

यह कहकर वह दरवाज़े की ओर चला गया। प्रिंस को बाद में पता चला कि यह सज्जन अपनी मस्ती और मौलिकता से हर आदमी को अचम्भे में डाल देना अपना कर्तव्य समझते थे, लेकिन न जाने क्यों कभी बात बनती नहीं थी। कुछ लोगों पर तो इसका उल्टा ही असर होता था, जिस पर इन्हें सच्चा दुःख होता था, लेकिन यह कोशिश करते रहने से बाज नहीं आते थे। दरवाज़े तक पहुँचकर उन्होंने एक दूसरे सज्जन से टकराकर, जो उसी समय अन्दर आ रहे थे, अपने गिरते हुए मनोबल को सम्भालने में सफलता प्राप्त कर ली; नवागन्तुक को अन्दर जाने का रास्ता देकर फ़ेर्दीश्चेंको ने चेतावनी के भाव से कई बार उसकी पीठ के पीछे से आँख मारी, और इस तरह वह

1. चेतावनी। (फ़्रांसीसी)

अपने प्रस्थान को प्रभावशाली बनाने में सफल हो ही गया।

जो नए सज्जन आए थे वह बहुत लम्बे क़द के कुछ मोटे-से, पचपन साल के या उससे ज़्यादा के आदमी थे, उनका चेहरा भरा-भरा, मांसल और लाल था, जिस पर घने-घने सफ़ेद गलमुच्छे और मूँछें थीं और बड़ी-बड़ी कुछ बाहर को उभरी हुई आँखें थीं। अगर उनके डीलडौल में कुछ पुरानेपन, जीर्ण-शीर्ण हो जाने और मैलेपन तक का भाव न होता तो वह काफ़ी रोबीले लगते। वह घरेलू ढंग से एक पुराना फ्रॉक-कोट पहने थे, जो बिलकुल तार-तार हो चुका था, यहाँ तक कि कुहनियों पर सूराख होनेवाले थे; उनकी कमीज भी मैली थी। पास जाने पर उनसे कुछ वोदका की बू आती थी, लेकिन उनके अन्दाज भड़कीले और कुछ सधे हुए थे और साफ़ मालूम होता था कि वह लोगों को अपने आचरण से प्रभावित करना चाहते थे। वह सज्जन बड़े इतमीनान से प्रिंस की ओर बढ़े, चुपचाप उसका हाथ बड़ी मिलनसारी की मुस्कराहट के साथ थाम लिया, कुछ देर तक उसे अपने हाथों में थामे रहकर उसके चेहरे को इस तरह झाँककर देखा मानो उसमें किसी परिचित नाक-नक़्शे को पहचान रहे हों।

"वही है—बिलकुल वही है !" उन्होंने धीरे से लेकिन विजयोल्लास के साथ कहा। "हूबहू वही शक्ल है ! मैंने उन लोगों को बार-बार प्यारा और जाना-पहचाना नाम लेते सुना और अरा एकदम कुछ भूली-बिसरी पुरानी यादें जाग उठीं। प्रिंस मीश्किन ?"

"जी हाँ।"

"जनरल ईवोल्गिन—पेंशनयाफ़्ता और दुःखी। क्या पूछ सकता हूँ कि तुम्हारा पितृनाम क्या है ?"

"लेव निकोलायेविच।"

"अच्छा। मेरे दोस्त और, कहा जा सकता है, मेरे बचपन के साथी निकोलाई पेत्रोविच का बेटा !"

"मेरे बाप का नाम निकोलाई ल्वोविच था।"

"ल्वोविच," जनरल साहब ने अपनी भूल सुधारी लेकिन बिना किसी हड़बड़ी के और पूरे भरोसे के साथ—इस तरह, जैसे वह उसे कभी भूले ही न हों, बल्कि अनजाने में उनके मुँह से ग़लत नाम निकल गया था। वह बैठ गए और प्रिंस का हाथ फिर थामकर उसे अपने पास बिठा लिया।

"मैं तुम्हें गोद में खिलाया करता था।"

"सच ?" प्रिंस ने पूछा। "मेरे बाप को मरे बीस साल हो गए।"

"हाँ, बीस साल। बीस साल और तीन महीने। हम दोनों साथ-साथ स्कूल जाते थे। मैं सीधे फौज़ में चला गया।"

"मेरे बाप भी तो फौज़ में थे—वसील्येव्स्की रेजिमेन्ट में सेकंड लेफ़्टिनेंट थे वह।"

"बेलोमीर्स्की रेजिमेन्ट में। मरने से थोड़े ही दिन पहले उन्हें बदलकर बेलोमीर्स्की रेजिमेन्ट में भेज दिया गया था। मरते वक़्त मैं उनके पलंग के पास ही था और मरने से पहले मैंने उन्हें आशीर्वाद दिया था। तुम्हारी माँ..."

जनरल साहब बोलते-बोलते रुक गए मानो अपनी उदास यादों से विह्वल हो उठे हों।

"वह भी छह महीने बाद सर्दी लगकर मर गई थीं," प्रिंस ने कहा।

"सर्दी लगकर नहीं। सर्दी लगकर नहीं—मुझ बूढ़े की बात का यक़ीन करो। मैं वहाँ मौजूद था और उनके जनाज़े में गया था। वह अपने प्रिंस के ग़म में मर गई थीं, सर्दी लगकर नहीं मरी थीं। जी हाँ, प्रिंसेस की मुझे बहुत अच्छी तरह याद है ! हाय, जवानी भी क्या चीज़ होती है ! प्रिंस

और मैं, जो एक़-दूसरे के बचपन के दोस्त थे, उनकी वजह से एक-दूसरे के ख़ून के प्यासे हो गए थे।"

प्रिंस तनिक अविश्वास के साथ सुनने लगा।

"तुम्हारी प्यारी माँ की मँगनी हो चुकने के बाद—मेरे दोस्त से मँगनी हो जाने के बाद—मैं उनके प्यार में पागल हो गया था। प्रिंस ने इस बात को देखा और उन्हें बहुत गहरा धक्का लगा। सबेरे सात बजने से पहले मेरे पास आकर उन्होंने मुझे जगाया। मैं हक्का-बक्का रह गया, लेकिन मैंने कपड़े पहन लिए। हम दोनों में से कोई भी नहीं बोला। मैं सब कुछ समझ गया। उन्होंने अपनी जेब से दो पिस्तौल निकाले। एक रूमाल के दो ओर। न कोई गवाह। हमें गवाहों की क्या ज़रूरत थी जब पाँच ही मिनट बाद हम दोनों एक-दूसरे को अनन्त की गोद में भेज देनेवाले थे ? ख़ैर, हम लोगों ने पिस्तौल भरे, रूमाल ताना, पिस्तौल एक-दूसरे के सीने पर रखे और एक-दूसरे की आँखों में आँखें डाले देखते रहे। अचानक हम दोनों की आँखों से आँसू बह निकले। हमारे हाथ काँप गए। दोनों के—दोनों के एक साथ ! तो, कुदरती बात थी कि हम दोनों एक-दूसरे के गले से लिपट गए, और उदारता में एक-दूसरे से होड़ करने लगे। प्रिंस चिल्लाए, 'वह तुम्हारी है !' मैं चिल्लाया, 'वह तुम्हारी है !' मतलब यह...मतलब यह...तुम...कि...तुम हमारे यहाँ...रहने आए हो ?"

"जी हाँ, शायद थोड़े दिनों के लिए," प्रिंस ने इस तरह कहा मानो उसे अपनी बात पर पूरा भरोसा न हो।

"प्रिंस, मम्मी आपको अपने कमरे में बुला रही हैं," कोल्या ने दरवाज़े में से झाँककर ऊँचे स्वर में कहा। प्रिंस जाने के लिए उठ खड़ा हुआ लेकिन जनरल साहब ने उसके कन्धे पर दाहिना हाथ रखकर उसे फिर बड़ी मिलनसारी से सोफ़े की ओर ढकेल दिया।

"तुम्हारे बाप के एक सच्चे दोस्त की हैसियत से मैं तुम्हें पहले से बता देना चाहता हूँ," जनरल ने कहा। "जैसा कि तुम ख़ुद देखोगे, मैं एक बहुत बड़ी मुसीबत का शिकार हूँ; और सो भी मुक़द्दमा चले बिना ही ! कोई मुक़द्दमा चला ही नहीं था ! मेरी बीवी नीना अलेक्सान्द्रोव्ना बेमिसाल औरत है। मेरी बेटी वरवारा आर्दालिओनोव्ना भी बेजोड़ बेटी है ! हालात से मजबूर होकर हमें कमरे किराए पर उठाने पड़ते हैं जो हम लोगों का भयानक पतन है। और यह मेरी हालत है, जिसे गवर्नर-जनरल का पद देने की बात चली थी !...लेकिन तुम यहाँ रहो तो हम लोगों को बेहद खुशी होगी। और अब मेरे घर में एक बदनसीबी है।"

प्रिंस ने उन्हें सवालिया नज़रों से और बड़ी उत्सुकता से देखा।

"एक शादी तै की जा रही है, एक अजीबोग़रीब शादी। एक ऐसी औरत के साथ, जिसके चाल-चलन के बारे में शक है, एक ऐसे नौजवान की शादी, जो शाही दरबार में चैम्बरलेन बन सकता था। यह औरत यहाँ मेरे घर में लाई जानेवाली है, जहाँ मेरी बीवी और बेटी रहती हैं ! लेकिन जब तक मैं जिन्दा हूँ, वह इस घर में क़दम नहीं रखने पाएगी। मैं चौखट पर लेट जाऊँगा और वह मेरी लाश पर क़दम रखकर ही घर में जा सकेगी ! मैं अब गान्या से कभी-कभार ही बोलता हूँ। सच तो यह है कि मैं उससे मिलने से भी कतराता हूँ। मैं जान-बूझकर पहले से तुम्हें बताए देता हूँ; तुम हम लोगों के साथ रहनेवाले हो, और ज़रूर ख़ुद ही देखोगे। तुम मेरे एक पुराने दोस्त के बेटे हो, और मुझे यह उम्मीद करने का हक़ है..."

"प्रिंस, मेहरबानी करके ज़रा ड्राइंग-रूम में आ जाइए," नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने ख़ुद दरवाज़े पर आकर उसे बुलाया।

"ज़रा सोचो, माई डियर," जनरल ने पुलकित स्वर में कहा, "मालूम यह हुआ कि मैं प्रिंस

को अपनी गोद में खिला चुका हूँ !"

नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने जनरल साहब को निन्दा के भाव से और प्रिंस को पैनी नज़रों से देखा, लेकिन बोलीं कुछ नहीं। प्रिंस उनके पीछे-पीछे चल दिया, लेकिन ड्राइंग-रूम में जाकर वे अभी बैठे ही थे और नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने प्रिंस को जल्दी-जल्दी दबी जबान से कुछ बताना शुरू ही किया था कि इतने में जनरल साहब खुद वहाँ आ गए। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना फ़ौरन चुप हो गईं और अपनी झुँझलाहट को छिपाए बिना फिर सिर झुकाकर बुनाई करने लगीं। बहुत मुमकिन है कि जनरल साहब ने उनकी झुँझलाहट को देखा हो, लेकिन उससे उनकी तरंग में कोई अन्तर नहीं आया।

"मेरे दोस्त का बेटा," उन्होंने बीवी को सम्बोधित करते हुए ज़ोर से कहा। "और इस तरह अचानक ! मैंने तो न जाने क़ब से इसके बारे में सोचना भी छोड़ दिया था। भाई डियर, तुम्हें निकोलाई ल्वोविच की याद नहीं है ? तुम उनसे मिली थीं...त्वेर में ?"

"मुझे किसी निकोलाई ल्वोविच की याद नहीं है। वह आपके बाप थे ?" उन्होंने प्रिंस से पूछा।

"जी हाँ, लेकिन मेरा ख़्याल है कि वह त्वेर में नहीं बल्कि येलिसावेतग्राद में मरे थे," प्रिंस ने भीरुता से जनरल साहब से अपना मत व्यक्त किया। "पव्लीश्चेव साहब ने मुझे बताया था..."

"त्वेर में," जनरल साहब ने आग्रहपूर्वक कहा। "मरने से फ़ौरन पहले, बल्कि उनकी आख़िरी बीमारी से भी पहले उनकी बदली त्वेर की कर दी गई थी। तुम उस वक़्त इतने छोटे थे कि तुम्हें उनकी बदली और उस सफ़र की याद भी नहीं होगी। मुझे यक़ीन है कि पव्लीश्चेव से भूल हो गई होगी, हालाँकि वह बहुत ही उम्दा आदमी था।"

"क्या आप पव्लीश्चेव साहब को भी जानते थे ?"

"लाजवाब आदमी था, लेकिन उस वक़्त मैं वहाँ था। मैंने मरते वक़्त उन्हें आशीर्वाद दिया था।"

"मेरे बाप मुकद्दमे का इन्तज़ार करते हुए मरे थे," प्रिंस ने फिर कहा, "हालाँकि मैं आज तक पता नहीं लगा पाया कि उनके ख़िलाफ़ इल्ज़ाम क्या था। वह अस्पताल में मरे थे।"

"अरे, वही सिपाही कोल्पाकोववाला मामला था, और यह यक़ीनन बरी कर दिए गए होते।"

"ऐसी बात है ? आपको पक्का यक़ीन है ?" प्रिंस ने बड़ी दिलचस्पी से पूछा।

"बिलकुल बरी कर दिए जाते !" जनरल साहब ने जोश के साथ कहा। "अदालत किसी फ़ैसले पर पहुँचे बिना बर्ख़ास्त हो गई थी। सारा मामला ही बेतुका था। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि वह सचमुच एक रहस्य था। कम्पनी कमाण्डर सीनियर लेफ़्टिनेन्ट लारिओनोव की मौत हो गई। प्रिंस को कुछ दिन के लिए कमांडिंग अफ़सर बना दिया गया। यह तो बहुत अच्छा हुआ। सिपाही कोल्पाकोव ने कोई चोरी की—अपने किसी साथी के चमड़े के बूट चुराकर बेच दिए और पैसा शराब में उड़ा दिया। ठीक है ! प्रिंस ने—और यह ध्यान रहे सार्जेंट-मेजर और कार्पोरल के सामने—उस सिपाही को बहुत डाँटा-फटकारा और कोड़े लगवाने की धमकी दी। अच्छा। कोल्पाकोव बैरक में वापस जाकर अपने चबूतरे पर लेट गया, और पन्द्रह मिनट बाद मर गया। बहुत अच्छा, लेकिन देखो, यह सब इस तरह अचानक हुआ जिसकी कोई उम्मीद भी नहीं कर सकता था, सच तो यह है कि बिलकुल अनहोनी बात थी। बहरहाल, कोल्पाकोव को दफ़ना दिया गया। प्रिंस ने अपनी रिपोर्ट भेज दी और कोल्पाकोव का नाम सिपाहियों की फेहरिस्त में से काट दिया गया। बताओ,

इससे अच्छी बात और हो ही क्या सकती थी ? लेकिन ठीक छह महीने बाद ब्रिगेड के मुआइने की परेड के वक़्त सिपाही कोल्पाकोव उसी डिवीजन और उसी ब्रिगेड की नोवोज़ेम्ल्यांस्की पैदल रेजिमेण्ट[1] के दूसरे बटालियन की तीसरी कम्पनी में मौजूद था, जैसे कुछ हुआ ही न हो।"

"क्या कहा आपने !" प्रिंस आश्चर्यचकित होकर चीख़ पड़ा।

"ऐसी बात नहीं है, यह ग़लत है," नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने अचानक प्रिंस को सम्बोधित करके उसे लगभग व्यथित भाव से देखते हुए कहा। Mon mari se toompe."[2]

"माई डियर, se trompe कह देना तो बहुत आसान है, लेकिन इस तरह की पहेली हल करने की ख़ुद कोशिश करो। हर आदमी चकरा गया था। सबसे पहले मैं ही कहता qu'on se trompe[3]। लेकिन बदनसीबी तो यह है कि यह सारा मामला मैंने अपनी आँखों से देखा था और मैं जाँच कमीशन का मेम्बर था। तमाम शिनाख़्तों से यही पता चला कि यह वही सिपाही कोल्पाकोव था जिसे छह महीने पहले आम फौज़ी सम्मान के साथ ढोल बजाकर दफ़न कर दिया गया था। सच पूछिए तो यह बहुत ही अजीब मामला है—लगभग बिलकुल नामुमकिन, यह मैं मानता हूँ, लेकिन..."

"पापा, आपका खाना लग गया," वर्वारा अर्दालिओनोव्ना ने कमरे में आते हुए घोषणा की।

"चलो यह तो बड़ा अच्छा हुआ, बहुत ही अच्छा ! मुझे भूख लग रही है।...लेकिन, कहा जा सकता है कि यह एक मनोवैज्ञानिक ही मामला है..."

"आपका सूप फिर ठण्डा हो जाएगा," वार्या ने अधीरता से कहा।

"आया, आया," जनरल साहब ने कमरे से बाहर जाते हुए बुड़बुड़ाकर कहा। "और सारे प्रमाण-पत्रों के बावजूद," गलियारे से उनकी आवाज़ आती हुई सुनाई दी।

"अगर आप हम लोगों के साथ रहेंगे," नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने प्रिंस से कहा, "तो आपको मेरे शौहर को बहुत-सी बातों के लिए माफ़ करना होगा। लेकिन वह आपके लिए बहुत ज़्यादा परेशानियाँ नहीं पैदा करेंगे। यह खाना भी अकेले ही खाते हैं। यह तो आप मानते ही होंगे कि हम सबकी अपनी कमज़ोरियाँ और अपनी...छोटी-छोटी खासियतें होती हैं। और किसी-किसी में उनसे ज़्यादा ही होती हैं, जिनकी ओर लोग उँगली उठाते हैं। एक बात का अनुरोध मैं आपसे करना चाहती हूँ—अगर मेरे शौहर कभी आपके पास किराया माँगने आएँ तो आप उनसे कह दीजिएगा कि आप मुझे दे चुके हैं। मेरा मतलब है कि आप जो कुछ भी अर्दालिओन अलेक्सान्द्रोविच को देंगे वह आपके बिल में से काट तो दिया जाएगा, लेकिन मैं आपसे इसलिए अनुरोध करती हूँ कि हम लोगों के हिसाब में कोई गड़बड़ी न हो।...क्या बात है, वार्या ?"

वार्या कमरे में वापस आ गई थी; उसने चुपचाप नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की तस्वीर अपनी माँ को दे दी। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना चौंक पड़ीं और ऐसा लगा कि पहले तो कुछ डर के साथ और फिर कटुता के भाव से उन्होंने उस तस्वीर को देखा। आख़िरकार उन्होंने सवालिया नज़रों से अपनी बेटी की ओर देखा।

"यह आज उसकी ओर से उसे तोहफ़ा है," वार्या ने कहा। "और शाम को सब कुछ तै हो जाएगा।"

---

1. वास्तव में इस रेजिमेंट का कोई अस्तित्व नहीं था। जनरल ईवोल्गिन के कथनानुसार वह जिस रेजिमेंट में नौकरी करते थे उसका नाम महान रूसी कवि अलेक्सान्द्र ग्रिबोयेदोव (1798-1831) के नाटक 'समझनेवाले की मौत' से लिया गया है।
2. मेरे पति ग़लती पर हैं। (फ्रांसीसी)
3. कि ग़लती पर हैं। (फ्रांसीसी)

"आज शाम को !" नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने घोर निराशा के भाव से धीमे स्वर में दोहराया। "ख़ैर, अब तो इसके बारे में किसी तरह का कोई शक बाक़ी ही नहीं रह गया, और कोई उम्मीद भी नहीं। अपनी तस्वीर देकर उसने अपने फ़ैसले का एलान कर दिया है।...उसने ख़ुद तो नहीं दिखाई न तुम्हें ?" उन्होंने आश्चर्य से जोड़ दिया।

"तुम तो जानती ही हो कि हम दोनों के बीच पूरे एक महीने से कोई बात ही नहीं हुई है। मुझे सारी बात प्तीत्सिन ने बताई। तस्वीर वहीं मेज़ के पास फ़र्श पर पड़ी थी। मैंने उठा ली।"

"प्रिन्स," नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने अचानक प्रिंस की ओर मुड़कर कहा। "मैं आपसे जानना चाहती हूँ कि आप मेरे बेटे को क़ब से जानते हैं (दरअसल मैंने आपको इसीलिए बुलाया था)। मुझे लगता है कि उसने कहा था कि आप आज ही कहीं से आए हैं।"

प्रिंस ने संक्षेप में अपने बारे में बताया, ज़्यादातर बातें छोड़ दीं। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना और वार्या चुपचाप उसकी बातें सुनती रहीं।

"आपसे सवाल पूछकर मैं अपने बेटे के बारे में किसी बात का पता लगाने की कोशिश नहीं कर रही हूँ," नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने समझाते हुए कहा। "मेहरबानी करके मुझे ग़लत न समझिएगा। अगर कोई बात ऐसी है जिसे वह ख़ुद मुझे नहीं बताना चाहता तो मैं उसकी पीठ के पीछे कुरेदकर उसका पता लगाना नहीं चाहती। मैं यह सिर्फ़ इसलिए कह रही हूँ कि जब आप यहाँ थे तब भी और आपके चले जाने के बाद भी गान्या ने आपके बारे में मेरे सवाल के जवाब में कहा था—"उसको सब कुछ मालूम है, उससे तकल्लुफ़ करने की कोई ज़रूरत नहीं है। अब इसका क्या मतलब है ? मतलब यह कि मैं यह जानना चाहती हूँ कि किस हद तक..."

इसी वक़्त गान्या और प्तीत्सिन अचानक कमरे में आ गए। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना फ़ौरन चुप हो गई। प्रिंस उनके पास कुर्सी पर बैठा रहा, वार्या एक ओर हट गई। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की तस्वीर सबसे प्रमुख स्थान पर नीना अलेक्सान्द्रोव्ना की काम करने की मेज़ पर ठीक उनके सामने खुली पड़ी रही। उसे देखते ही गान्या के माथे पर बल पड़ गए; उसने झल्लाकर उसे मेज़ पर से झपट लिया और कमरे के दूसरे सिरे पर अपनी काम करने की मेज़ पर फेंक दिया।

"क्या आज ही, गान्या ?" नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने अचानक कहा।

"आज ही क्या ?" गान्या ने चौंककर कहा, और फिर फ़ौरन प्रिंस पर टूट पड़ा। "अच्छा, मैं समझा, यह भी आपकी हरकत है !...आख़िर, क्या यह कोई बीमारी है आपको ? क्या आप चुप नहीं रह सकते ? क्या आप इस बात को हमेशा के लिए समझ सकते हैं, हुज़ूर, कि..."

"इसमें मेरा क़सूर है, किसी और का नहीं," प्तीत्सिन ने उसे टोकते हुए कहा।

गान्या ने उसे सवालिया अन्दाज़ से देखा।

"देखो," प्तीत्सिन ने बुदबुदाकर कहा, "इस तरह ज़्यादा अच्छा है, गान्या, ख़ासतौर पर इसलिए कि जहाँ तक तुम्हारा सवाल है मामला तै हो चुका है।" यह कहकर वह वहाँ से हट गया और मेज़ पर बैठकर उसने अपनी जेब में से काग़ज़ का एक टुकड़ा निकाला जिस पर कुछ लिखा था और उसे ध्यान से देखने लगा। गान्या, गुमसुम, परिवारवालों की ओर से कोई बखेड़ा खड़ा किए जाने का बेचैनी से इन्तज़ार करता रहा। प्रिंस से माफ़ी माँगने की बात भी उसके ध्यान में नहीं आई।

"अगर सब कुछ तै हो गया है," नीना अलेक्सान्द्रोव्ना बोलीं, "तब तो इवान पेत्रोविच का कहना ही ठीक है। माथे पर बल न डालो, गान्या, और गुस्सा न दिखाओ। मैं तुमसे कोई भी ऐसी बात पूछनेवाली नहीं हूँ जो तुम मुझे बताना नहीं चाहते, और मैं तुम्हें यक़ीन दिलाती हूँ कि मैंने

अपने मन को पूरी तरह समझा लिया है। तुम चिन्ता न करो।''

उन्होंने यह बात अपना काम रोके बिना और, ऐसा लग रहा था, पूर्णतः शान्त भाव से कही। गान्या आश्चर्यचकित रह गया, लेकिन उसने इतनी सावधानी बरती कि कुछ कहा नहीं, और अपनी माँ को इस बात की प्रतीक्षा में देखता रहा कि वह अपनी बात ज़्यादा स्पष्ट तरीक़े से कहें। वह परिवार में होनेवाले बखेड़ों से बहुत तकलीफ़ उठा चुका था। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने उसकी इस सतर्कता को देखा और कटुता से मुस्कराकर बोलीं : ''तुम्हें अब भी शक है और तुम मेरी बात का विश्वास नहीं करते। तुम परेशान न हो। जहाँ तक मेरा सवाल है, बहरहाल, न मैं अब आँसू बहाऊँगी न मिन्नत करूँगी। मैं बस इतना चाहती हूँ कि तुम सुखी रहो, और तुम यह जानते हो। मैंने तो जो मेरे भाग्य में लिखा था उसे स्वीकार कर लिया है, लेकिन मेरा दिल हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा चाहे हम साथ रहें या अलग हो जाएँ। ज़ाहिर है, मैं अपनी ही बात कर सकती हूँ। अपनी बहन से तुम यही उम्मीद नहीं रख सकते।...''

''उफ़, फिर वही !'' गान्या ने व्यंग और घृणा से अपनी बहन की ओर देखकर ऊँचे स्वर में कहा। ''माँ, मैं एक बार फिर तुमसे क़सम खाकर कहता हूँ कि अपने वचन निभाऊँगा; जब तक मैं यहाँ हूँ, जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक कोई तुम्हारा अनादर करने की हिम्मत नहीं कर सकेगा। मैं इस बात पर अटल रहूँगा कि जो भी हमारी चौखट लाँघेगा उसे—वह कोई भी क्यों न हो—तुम्हारी भरपूर इज़्ज़त करनी पड़ेगी।''

गान्या को इतनी सांत्वना मिली कि वह अपनी माँ को लगभग सुलह-समझौते, लगभग कोमलता के भाव से देखता रहा।

''मुझे अपने बारे में तो कभी कोई डर था ही नहीं। यह तो तुम जानते ही हो, गान्या। इस पूरे दौरान मुझे अपने बारे में तो कोई फ़िक्र और चिन्ता रही ही नहीं है। मैंने सुना है कि आज सब कुछ तै हो जाएगा। क्या तै हो जाएगा ?''

''उसने वादा किया है कि आज शाम को वह अपने घर पर बताएगी कि वह राज़ी है या नहीं,'' गान्या ने जवाब दिया।

''लगभग तीन हफ़्ते से हम इसकी चर्चा करने से कतराते रहे हैं, और यही बेहतर भी था। लेकिन अब, जबकि सब कुछ तै हो गया है, मैं सिर्फ़ यह पूछना चाहती हूँ कि जब तुम उससे प्यार ही नहीं करते वह कैसे राज़ी हो सकती थी और उसने अपनी तस्वीर तुम्हें उपहार में दी कैसे। कैसे तुम्हें ऐसी...ऐसी...''

''आपका मतलब है, ऐसी तंजुर्बेकार को ?''

''नहीं, मैं अपनी बात दूसरे ही ढंग से कहने जा रही थी। क्या तुम इतना पूरी तरह उसकी आँखों पर परदा डाल सके ?''

उनके उस अन्तिम प्रश्न में अचानक बेहद चिड़चिड़ाहट की गूँज सुनाई दी। गान्या ने एक क्षण सोचा और उपहास के भाव को छिपाने की कोई कोशिश किए बिना उसने कहा—''माँ, तुम फिर अपनी भावनाओं के रेले में बह गईं। तुम फिर अपने आपको वश में नहीं रख सकीं। हमारे यहाँ हमेशा शुरुआत ऐसे ही होती है और ऐसे ही आग भड़कती है। तुमने कहा था कि अब तुम न कोई सवाल पूछोगी न कोई शिकवे-शिकायत करोगी, और तुमने अभी से शुरुआत कर दी ! हम लोग इस मामले को यहीं छोड़ दें। बहरहाल तुम्हारा ऐसा इरादा था।...मैं तुम्हें छोड़कर कभी कहीं नहीं जाऊँगा। दुनिया की किसी भी चीज़ के बदले नहीं। कोई दूसरा होता तो कम से कम ऐसी बहन से तो जान छुड़ाकर भाग ही जाता—देखो तो, कैसे घूर रही है मुझे वह ! बस मामले को यहीं

छोड़ दें ! मैं तो इतना खुश हो गया था...और तुम ऐसा सोचती ही क्यों हो कि मैं नस्तास्या फ़िलोप्पोव्ना को धोखा दे रहा हूँ ? जहाँ तक वार्या का ख़याल है, उसका जो जी चाहे करे और—बस इतना ही बहुत है। हाँ, सचमुच, अब बहुत हो गया !"

हर शब्द बोलने के साथ गान्या अधिकाधिक उत्तेजित होता जा रहा था, और वह कमरे में इधर से उधर निरुद्देश्य टहल रहा था। इस तरह की बातचीत परिवार के हर सदस्य के दिल में काँटे की तरह चुभती रहती थी।

"मैं कह चुकी हूँ कि अगर वह यहाँ आई तो मैं घर छोड़कर चली जाऊँगी, और मैं अपना वचन निभाऊँगी," वार्या ने कहा।

"जिद्द के मारे !" गान्या ने चिल्लाकर कहा। "और तुम ब्याह भी जिद्द के मारे ही नहीं करतीं ! मुझ पर इस तरह गुर्रा क्या रही हो। मैं रत्ती-भर भी परवाह नहीं करता, वर्वारा अर्दालिओनोव्ना ! तुम्हारी जी चाहे तो अपनी धमकी अभी पूरी कर दो। मैं तुमसे तंग आ चुका हूँ। क्या बताऊँ ! तो तुमने हम लोगों को छोड़कर चले जाने का फ़ैसला कर लिया है, प्रिंस, क्यों ?" उसने प्रिंस को अपनी जगह से उठते हुए देखकर चिल्लाकर कहा।

गान्या की आवाज़ में झुँझलाहट का पुट उस स्तर पर पहुँच गया था जहाँ पहुँचकर आदमी को अपनी झुँझलाहट में खुशी होती है और वह बिलकुल बे-लगाम होकर और निरन्तर अधिकाधिक आनन्द प्राप्त करते हुए अपनी झुँझलाहट को व्यक्त करता है, उसके परिणाम कुछ भी हों। प्रिंस जवाब में कुछ कहने के लिए दरवाज़े पर मुड़ा, लेकिन आक्षेप करनेवाले के चेहरे पर क्रोध के भाव से इस निष्कर्ष पर पहुँचकर कि एक भी बूँद और पड़ने से प्याला छलक जाएगा, वह फिर मुड़कर चुपचाप वापस चला गया। कुछ मिनट बाद ड्राइंग-रूम से आती हुई आवाज़ें सुनकर उसे आभास हुआ कि उसके चले आने के बाद बातचीत और भी चीख़-पुकार के साथ और खुलकर होने लगी थी।

गलियारे में और उसमें से होकर अपने कमरे में पहुँचने के लिए वह हॉल पार करके प्रवेश-कक्ष में आ निकला। प्रवेश-द्वार के पास से गुजरते हुए उसने किसी को बाहर से घंटी बजाने का व्यर्थ प्रयास करते हुए सुना। लेकिन घंटी में कोई खराबी हो गई होगी जिसकी वजह से वह कोई आवाज़ निकाले बिना बस थोड़ा-सा काँपकर रह जाती थी। प्रिंस ने कुण्डा सरकाया, दरवाज़ा खोला और—आश्चर्यचकित होकर पीछे हट गया, यहाँ तक कि वह चौंक पड़ा—नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना उसके सामने खड़ी थी। उसकी तस्वीर की बदौलत उसने फ़ौरन उसे पहचान लिया। प्रिंस को देखकर उसकी आँखें झुँझलाहट के मारे चमक उठीं। वह जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाती हुई प्रवेश-कक्ष आई, कन्धे से धक्का देकर उसे रास्ते से हटाया और अपना फ़र का कोट उतारकर फेंकते हुए उससे बोली—"अगर तुम इतने काहिल हो कि घंटी ठीक नहीं कर सकते तो कम से कम प्रवेश-कक्ष में रहा करो कि कोई खटखटाए तो दरवाज़ा खोल दो। देखा, अब मेरा कोट भी गिरा दिया, काठ का उल्लू !"

उसका फ़र का कोट सचमुच फ़र्श पर पड़ा था। इस बात का इन्तज़ार किए बिना कि प्रिंस उसे कोट उतारने में मदद दे, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने खुद देखे बिना उसे पीछे से उसकी ओर फेंक दिया था, लेकिन प्रिंस में इतनी फुर्ती नहीं थी कि उसे लपक लेता।

"इन लोगों को तुम्हें निकाल देना चाहिए। जाओ, जाकर मेरे आने की ख़बर कर दो।"

प्रिंस कुछ कहना चाहता था, लेकिन वह इतना घबरा गया कि एक शब्द भी नहीं कह सका, और कोट लिए हुए, जिसे उसने फ़र्श पर से उठा लिया था, ड्राइंग-रूम की ओर चल दिया।

"यह लो, अब मेरा कोट अपने साथ लिए जा रहा है ! कोट क्यों लिए जा रहे हो ? हा-हा-हा ! अरे, तुम पागल तो नहीं हो, क्यों ?"

प्रिंस वापस लौट आया और चुपचाप उसे घूरता रहा। जब वह मुसकराती तो वह भी खीसें निकाल देता, लेकिन वह अभी तक एक भी शब्द नहीं बोल पा रहा था। शुरू में जब उसने उसके लिए दरवाज़ा खोला था तो उसका रंग पीला पड़ गया था, लेकिन अब अचानक उसके चेहरे पर ख़ून दौड़ गया था।

"उफ़, बौड़म कहीं का !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने पाँव पटककर गुस्से से कहा। "अब चल कहाँ दिए ? किसके आने की ख़बर दोगे ?"

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के," प्रिंस ने बुदबुदाकर कहा।

"तुम मुझे कैसे जानते हो ?" उसने जल्दी से पूछा। "मैंने तो तुम्हें पहले कभी नहीं देखा ! जाओ, जाकर मेरे आने की ख़बर कर दो।...वह शोर-गुल कैसा हो रहा है ?"

"उन लोगों में झगड़ा हो रहा है," प्रिंस ने जवाब दिया और ड्राइंग-रूम की तरफ़ चल दिया।

उसने कमरे में बहुत नाज़ुक मौक़े पर क़दम रखा। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना इस बात को बिलकुल भूलनेवाली ही थीं कि उन्होंने "अपने मन को पूरी तरह समझा लिया था"; उस वक़्त वह वार्या का पक्ष ले रही थीं। प्तीत्सिन भी अपना पेंसिल से लिखा हुआ पर्चा छोड़कर वार्या के पास खड़ा था। वार्या धौंस में आ गई हो, ऐसा भी नहीं था, वह उस क़िस्म की थी ही नहीं, लेकिन उसके भाई की बदतमीजी हर क्षण अधिक अशिष्ट और अधिक असह्य होती जा रही थी। ऐसे मौक़ों पर वह आमतौर पर चुप हो जाया करती थी और चुपचाप अपने भाई को व्यंग से एकटक देखती रहती थी। वह अच्छी तरह जानती थी कि यह तरीक़ा आज़माने से गान्या पागल हो उठता था। ऐसे ही क्षण पर प्रिंस ने कमरे में क़दम रखा और घोषणा की "नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना !"

9

कमरे में बिलकुल सन्नाटा छा गया; सब लोग प्रिंस को और इस तरह देखने लगे मानो उसकी समझ में न आया हो कि वह क्या कह रहा है या शायद वे उसकी बात समझना चाहते नहीं थे। गान्या दहशत के मारे सन्न रह गया।

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना का आना, ख़ासतौर पर इस वक़्त, सभी के लिए विचित्र और कष्टप्रद आश्चर्य की बात थी। यही यात काफ़ी थी कि वह पहली बार उन लोगों के यहाँ आई थी; तब तक उसका रवैया इतने दम्भ का था कि गान्या से बातचीत के दौरान उसने कभी उसके परिवार से परिचित होने की इच्छा तक प्रकट नहीं की थी, और इधर कुछ समय से तो उसने उन लोगों की चर्चा तक करना छोड़ दिया था, मानो उनका कभी कोई अस्तित्व ही न रहा हो। हालाँकि गान्या इस बात पर कुछ खुश ही था कि इतनी कष्टप्रद बातचीत अनिश्चित काल के लिए टल गई थी, लेकिन उसने मन में उसके इस दम्भ को भी अपने हिसाब में शामिल कर लिया था। बहरहाल, वह उससे अपने परिवारवालों के बारे में व्यंगपूर्ण और कटुता-भरी बातें सुनने की उम्मीद करता था न कि इसकी कि वह उसके घर आए; वह पक्के तौर पर जानता था कि उसकी मँगनी के सिलसिले में उसके घर में जो कुछ भी हो रहा था उसका उसे रत्ती-रत्ती पता था, और इसका भी कि उसके परिवार के लोग उसके बारे में क्या सोचते थे। इस समय, तस्वीर उपहार में देने के बाद और अपनी वर्षगाँठ के दिन, जिस रोज उसने उसे आख़िरी जवाब देने का वादा किया था, उसका

यहाँ आना लगभग जवाब के ही बराबर था।

वे लोग जिस तरह हक्का-बक्का होकर प्रिंस को देख रहे थे वह स्थिति बहुत देर तक नहीं रही; नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना खुद दरवाज़े पर आ पहुँची और कमरे में घुसते समय उसने एक बार फिर प्रिंस को हल्का-सा धक्का देकर अलग हटा दिया।

"आख़िरकार मैं अन्दर आ ही गई...आप घंटी बँधवा क्यों देते हैं ?" उसने गान्या की ओर, जो उससे मिलने के लिए आगे लपका था, अपना हाथ बढ़ाते हुए पुलकित स्वर में कहा। "इतने परेशान क्यों दिखाई दे रहे हैं ? मेहरबानी करके मेरा परिचय तो करा दीजिए।..."

गान्या ने, जो बिलकुल घबरा गया था, पहले उसका परिचय वार्या से कराया, और हाथ मिलाने से पहले दोनों महिलाओं ने एक-दूसरे को विचित्र ढंग से देखा। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना तो हँसती रही और उसने अपनी भावनाओं को इस बनावटी उल्लास की आड़ में छिपा लिया, लेकिन वार्या का अपनी भावनाओं को छिपाने का कोई इरादा नहीं था और वह गम्भीर होकर तीखी दृष्टि से उसे देखती रही; उसके चेहरे पर मुस्कराहट की झलक तक नहीं आई, जो सामान्य शिष्टता के नाते ही सही होनी चाहिए थी। गान्या का दिल बैठ गया; उसे समझाने-बुझाने का समय निकल चुका था और ऐसा करने से कोई फ़ायदा भी नहीं था; गान्या ने उसे ऐसी धमकी भरी दृष्टि से देखा कि उसकी कुत्सा से वार्या समझ गई कि उस क्षण का उसके भाई के लिए कितना महत्त्व था। ऐसा लगता है कि तब जाकर उसने अपने भाई का मन रखने का फ़ैसला किया और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की ओर देखकर वह धीरे से मुस्करा दी। (उनके पारिवारिक बन्धन अब भी बहुत मजबूत थे।) नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने परिस्थिति को कुछ सम्भाल लिया। गान्या इस हद तक बौखलाहट का शिकार हो चुका था कि उसने अपनी माँ का परिचय वार्या के बाद कराया और उन्हें नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के पास पहले ले गया। लेकिन नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने यह कहने के लिए कि उन्हें उससे मिलकर "कितनी खुशी हुई थी" अपना मुँह खोला ही था कि नस्तास्या फिलीप्पोव्ना उन्हें टोककर फ़ौरन गान्या की ओर मुड़ी और खिड़की के पास कोने में रखे हुए छोटे-से सोफ़े पर (किसी के कहे बिना) बैठते हुए चहककर बोली—"आपका पढ़ने का कमरा कहाँ है ? और...हाँ...आपके किराएदार कहाँ हैं ? आप अपने यहाँ किराएदार रखते हैं न ?"

गान्या का चेहरा शर्म से लाल हो गया; वह कुछ कहने ही जा रहा था कि इतने में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना फिर बोल पड़ी—"यहाँ आप अपने किराएदारों को कहाँ रखते हैं ? आपके पास पढ़ने का कमरा तक तो है नहीं। अच्छा, बताइए," उसने सहसा नीना अलेक्सान्द्रोव्ना की ओर मुड़ते हुए पूछा, "इससे कुछ आमदनी हो जाती है ?"

"झंझट बहुत है," नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने जवाब दिया। "ज़ाहिर है, आमदनी होनी तो चाहिए। लेकिन हम लोगों ने अभी..."

पर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना फिर कुछ नहीं सुन रही थी। वह गान्या की ओर देख रही थी, हँस रही थी और चिल्लाकर उससे कह रही थी—"तुम्हारी सूरत को क्या हो गया ? हे भगवान, कैसे लग रहे हो तुम इस वक़्त !"

उसकी हँसी के कुछ क्षणों के बाद गान्या का चेहरा सचमुच बहुत विकृत हो गया—उसकी स्तब्धता, उसकी हास्यास्पद, कायरों जैसी बौखलाहट अचानक ग़ायब हो गई; लेकिन उसका चेहरा बेहद पीला पड़ गया, उसके होंठ टेढ़े होकर फड़कते रहे; वह बहुत गुस्से से और चुपचाप अपने मेहमान को एकटक देखता रहा, जो हँसे चली जा रही थी।

इस दृश्य को एक और आदमी भी देख रहा था जो अभी तक उस विस्मय से मुक्त नहीं हो पाया था जो नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को देखकर उसे हुआ था। हालाँकि वह ड्राइंग-रूम के दरवाज़े पर उसी जगह खम्भे की तरह खड़ा था, लेकिन उसने गान्या का चेहरा पीला पड़ते और उसके भाव में खतरनाक परिवर्तन होते देख लिया था। यह दर्शक प्रिंस था। लगभग विस्मित होकर वह अनायास ही आगे बढ़ आया।

"थोड़ा-सा पानी पी लीजिए," उसने गान्या के कान में कहा, "और इस तरह न देखिए।..."

साफ़ लग रहा था कि किसी गुप्त उद्देश्य और किसी खास इरादे के बिना उस क्षण उसकी जबान पर जो भी आया था वह उसने वैसे ही कह दिया था; लेकिन उसके इन शब्दों का असाधारण प्रभाव पड़ा। ऐसा प्रतीत हुआ कि सहसा गान्या का सारा क्रोध प्रिंस की ओर मुड़ गया—उसने प्रिंस का कन्धा पकड़ लिया और चुपचाप उसे प्रतिशोध और घृणा के भाव से देखता रहा, मानो वह एक शब्द भी न कह पा रहा हो। चारों ओर खलबली मच गई। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना के मुँह से तो हल्की-सी चीख़ भी निकल गई। प्तीत्सिन उद्विग्न होकर आगे बढ़ा, कोल्या और फ़ेर्दीश्चेंको, जो दरवाज़े पर आ पहुँचे थे आश्चर्य से ठिठक गए, और केवल वार्या भवें सिकोड़े देखती रही, हालाँकि जो कुछ हो रहा था उस पर उसकी पैनी नज़र थी। वह बैठी नहीं, बल्कि सीने पर हाथ बाँधे माँ के पास खड़ी रही।

लेकिन गान्या ने फ़ौरन अपने आपको सम्भाल लिया, लगभग उसी वक़्त जब उसने प्रिंस को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया था, और ठहाका मारकर घबराई हुई हँसी हँस दिया। उसने अपने आपको पूरी तरह वश में कर लिया था।

"क्यों, प्रिंस, आप नाराज़ तो नहीं हैं न ?" उसने जहाँ तक मुमकिन हो सका खुश-मिज़ाजी और ज़िन्दादिली का सबूत देने की कोशिश करते हुए ज़ोर से कहा। "आपने तो मुझे डरा ही दिया था। आइए, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, इनसे परिचय करा दूँ आपका। बहुत ही लाजवाब आदमी हैं, हालाँकि इनसे मेरी जान-पहचान आज सबेरे ही हुई है।"

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने घबराकर प्रिंस की ओर देखा।

"प्रिन्स ? यह प्रिंस हैं ? भला सोचो, अभी मैंने इन्हें कोई खिदमतगार समझकर मेरे आने की ख़बर देने के लिए कहा था। हः, हः, हः !"

"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं !" फ़ेर्दीश्चेंको जल्दी से पास जाकर बीच में बोल पड़ा; यह देखकर उसे सन्तोष हुआ कि वे लोग हँसने लगे थे। "कोई बात नहीं– Se non e' vero..."[1]

"अरे, प्रिंस, मैंने तो आपको लगभग डाँट ही दिया था। माफ़ कीजिएगा। फ़ेर्दीश्चेंको, इस वक़्त तुम यहाँ कैसे ? कम से कम तुमसे मुलाक़ात होने की तो मुझे कोई उम्मीद थी ही नहीं। कौन ? कौन प्रिंस ? मीश्किन ?" उसने गान्या को सम्बोधित करते हुए, जिसने इसी बीच उसका परिचय करा दिया था, अपना सवाल दोहराया; वह अभी तक उसका कन्धा पकड़े हुए था।

"हमारे किराएदार हैं," गान्या ने दोहराया।

साफ़ लग रहा था कि प्रिंस को एक अजूबे की तरह पेश किया जा रहा था (वह एक जटिल परिस्थिति से बच निकलने के लिए उनके लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ था), उसे उसके सामने लगभग ढकेला जा रहा था; प्रिंस ने अपने पीछे किसी को दबे स्वर में "बौड़म" शब्द भी कहते हुए सुना, शायद फ़ेर्दीश्चेंको को, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को बात साफ़-साफ़ समझाने के लिए।

---

1. इटेलियन भाषा के उस बहु-प्रयुक्त वाक्य के पहले शब्द, जिसका अर्थ है—"सच न भी हो, तब भी गढ़ा अच्छा है।"

"अच्छा, यह बताइए, अभी जब मैंने आपके बारे में इतनी...मेरा मतलब है...इतनी भयानक...ग़लती की थी तो आपने मेरा भ्रम दूर क्यों नहीं कर दिया ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना प्रिंस को सिर से पाँव तक बड़ी बेतकल्लुफ़ी से जाँचते हुए कहती रही; वह बड़ी बेताबी से उसके जवाब की प्रतीक्षा कर रही थी, जैसे उसे पूरा यक़ीन हो कि उसका जवाब इतना बेवक़ूफ़ी का होगा कि वह हँसे बिना न रह सकेगी।

"आपको इस तरह अचानक देखकर मैं चकरा गया था।..." प्रिंस ने बुदबुदाकर कहा।

"लेकिन आपने यह कैसे जाना कि वह मैं ही हूँ ? आपने मुझे पहले कहाँ देखा है ? लेकिन, क्या बात है, सचमुच मुझे ऐसा लगता है कि मैंने इन्हें पहले कहीं देखा है। और क्या आप यह बताने की तकलीफ़ करेंगे कि आप अभी ऐसे हक्का-बक्का क्यों रह गए थे ? मुझमें ऐसा हक्का-बक्का कर देनेवाली क्या बात है ?"

"बोलो, यार, कुछ तो बोलो !" फ़ेर्दीश्चेंको मसख़रेपन की बातें करता रहा। "बोलो, भाई ! खुदा की क़सम, ऐसे सवाल के जवाब में तो मैं क्या-क्या बातें कहता। चलो, बोलो !...मान जाता हूँ, प्रिंस, तुम भी अजब भोंदू हो !"

"अरे, मैं भी अगर आपकी जगह होता तो न जाने क्या-क्या कहता, "प्रिंस ने हँसते हुए फ़ेर्दीश्चेंको की ओर मुड़कर कहा। "आज सबेरे," वह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को सम्बोधित करके कहता रहा, "आपकी तस्वीर का मेरे ऊपर बहुत गहरा असर पड़ा। उसके बाद मैंने येपांचिन-परिवार के लोगों से आपकी चर्चा की और...आज बहुत सबेरे ट्रेन में पीटर्सबर्ग पहुँचने से पहले पर्फ़्योन रोगोझिन ने मुझे आपके बारे में बहुत कुछ बताया था।...और उस वक़्त भी जब मैंने आपके लिए दरवाज़ा खोला था मैं आपके बारे में ही सोच रहा था और अचानक–आप मेरे सामने मौजूद थीं !"

"तो आपने मुझे पहचाना कैसे ?"

"तस्वीर से और..."

"और ?"

"और इसलिए भी कि आपके बारे में मेरी कल्पना इसी तरह की थी।...ऐसा लगता है कि मैंने भी आपको कहीं देखा है।"

"कहाँ ? कहाँ ?"

"मैंने आपकी आँखें ज़रूर कहीं देखी हैं...लेकिन यह नामुमकिन है ! मैंने यह वैसे ही कहा...मैं यहाँ पहले कभी नहीं आया। शायद सपने में..."

"शाबाश, प्रिंस !" फ़ेर्दीश्चेंको ने चिल्लाकर कहा। "नहीं, मैं अपने शब्द se non'e vero वापस लेता हूँ। फिर भी...फिर भी," उसने बड़े खेद के साथ कहा, "वह यह सब कुछ अपने भोलेपन में कह रहा है !"

प्रिंस ने अपने थोड़े-से वाक्य बीच-बीच में रुककर, बार-बार साँस लेकर बेचैन आवाज़ में कहे। उसकी हर चीज़ से उसकी अपार उद्विग्नता का पता चलता था। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने उसे बड़ी दिलचस्पी से देखा, लेकिन अब वह हँस नहीं रही थी। उसी समय उस टोली के पीछे से जो प्रिंस और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के चारों ओर जमा हो गई थी, अचानक एक नई ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी और उसने मानो इस समूह को दो हिस्सों में बाँट दिया। स्वयं परिवार के पिता, जनरल ईवोल्गिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के सामने खड़े थे। वह शामवाला कोट और साफ़ कमीज पहने हुए थे; उनकी मूँछों पर खिजाब लगा हुआ था।

यह गान्या की बर्दाश्त के बाहर था। उसे, जिसका अहंकार और महत्त्वाकांक्षाएँ चरम सीमा

तक पहुँचकर एक बीमारी बन गई थीं; जो पिछले दो महीने से हमेशा कोई सहारा खोजता रहा था, कोई ऐसी चीज़ जिसके बल पर वह अपने आपको भले और प्रतिष्ठित आदमी के रूप में प्रस्तुत कर सके; जो यह महसूस करता रहा था कि उसने अपनी ज़िन्दगी के लिए जो मार्ग चुना था उसका अभी उसे ठीक से अनुभव नहीं था और बहुत मुमकिन था कि उसे उस मार्ग पर चलकर सफलता न भी मिले; जिसने हर तरफ़ घोर निराशा का शिकार होने के बाद आख़िरकार अपने जी में ठानी थी कि घर पर, जहाँ वह एक निरंकुश शासक बना था, वह बेहद ढिठाई का रवैया अपनाएगा, लेकिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के सामने ऐसा करने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी, जिसने उसे अन्तिम क्षण तक दुविधा में डाल रखा था और बड़ी निर्ममता से वह इस बात पर अड़ी हुई थी कि उसे अपने अँगूठे के नीचे रखेगी "इस अधीर भिखारी" को, जैसा कि गान्या को बताया गया था कि नस्तास्या ने उसे कहा था, जिसने हर उस चीज़ की क़सम खाकर जो उसे प्यारी थी बाद में उससे इन सब चीज़ों की क़ीमत वसूल करने का प्रण किया था और, इसके साथ ही जो कभी-कभी ऐसे बचकाने सपने भी देखा करता था कि वह झगड़नेवाले पक्षों के बीच आपस में समझौता करा देगा—अब इस ज़हर के प्याले को अन्तिम घूँट तक पीना था और सो भी ऐसे क्षण पर ! एक और कल्पनातीत, लेकिन नामी आदमी के लिए अत्यन्त दारुण यातना—स्वयं अपने घर में अपने परिवार पर लांछन लगने की पीड़ा उसके भाग्य में लिखी थी। "हे भगवान, क्या इसका नतीजा इस लायक़ होगा कि इतनी बड़ी क़ीमत चुकाई जाए ?" उस क्षण यह सवाल गान्या के दिमाग़ में बिजली की तरह कौंध गया।

इस समय जो कुछ हो रहा था उसका भय पिछले दो महीने से उसको सता रहा था, उसकी पीठ पर सिहरन की लहर-सी दौड़ जाती थी और वह शर्म से खौल उठता था—आख़िरकार उसके बाप और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की मुलाक़ात हो ही गई थी। कभी-कभी आत्मक्षोभ का दौरा पड़ने पर वह अपने विवाह के अवसर पर इस घटना की कल्पना करने की कोशिश किया करता था, लेकिन वह इस पीड़ाजनक चित्र को कभी पूरा नहीं कर पाया था और जल्दी ही उसने इस प्रयास को त्याग दिया था। शायद वह दुर्भाग्य को बहुत बढ़ा चढ़ाकर आँकता था; पर ऐसा दम्भी लोगों के साथ अक्सर होता है। इन दो महीनों के दौरान उस परिस्थिति को अच्छी तरह जाँचने का और अपना इरादा पक्का करने का पूरा वक़्त मिला था और उसने यह फ़ैसला किया था कि वह, कम से कम कुछ समय के लिए तो अवश्य ही, अपने बाप को किसी तरह दूर रखेगा और यहाँ तक कि किसी न किसी बहाने उन्हें पीटर्सबर्ग से बाहर भिजवा देगा, चाहे उसकी माँ इसके लिए राज़ी हों या न हों। दस मिनट पहले वह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के आ जाने पर इतना आश्चर्यचकित और हक्का-बक्का रह गया था कि वह अपने बाप के मंच पर आ जाने की सम्भावना के बारे में बिलकुल भूल ही गया था और उसने इसकी रोक थाम के लिए कोई उपाय भी नहीं किए थे। अब जनरल साहब वहाँ सबके सामने खुद मौजूद थे, और सो भी शामवाला कोट पहनकर अपने आपको इस अवसर के लिए ख़ासतौर पर तैयार करके, ठीक उस वक़्त जब नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना "उसका और उसके परिवार का मज़ाक़ उड़ाने के लिए" कोई बहाना ढूँढ़ ही रही थी। (इसका उसे पक्का विश्वास था।) सचमुच, उसके आने का मतलब ही और क्या हो सकता था ? क्या वह उसकी माँ और बहन से दोस्ती पैदा करने आई थी, या उन्हीं के घर में उनका अपमान करने आई थी? लेकिन दोनों पक्षों के रवैये से अब इस बात में कोई सन्देह नहीं रह गया था—उसकी माँ और बहन पूरी तरह अपमानित होकर कमरे के दूसरे सिरे पर बैठी थीं और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, ऐसा लग रहा था, इस बात को भूल ही चुकी थी कि वे भी उसी कमरे में मौजूद हैं जिसमें वह थी।...और अगर

वह इस तरह का आचरण कर रही थी तो उसके लिए इसके कारण भी थे !

फ़ेर्दीश्चेंको जनरल साहब को पकड़कर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के पास ले गया।

"अर्दालिओन अलेक्सान्द्रोविच ईवोल्गिन," जनरल साहब ने बड़े प्रतिष्ठित ढंग से झुककर मुस्कराते हुए कहा, "एक दुःख का मारा बूढ़ा सिपाही और ऐसे परिवार का पिता, जो उस उम्मीद में खुश है कि ऐसी मोहिनी..."

वह अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाए थे कि फ़ेर्दीश्चेंको ने जल्दी से उनके पीछे एक कुर्सी सरका दी और जनरल साहब, जिनकी टाँगों में खाना खाने के बाद कुछ कमज़ोरी महसूस हो रही थी, उसमें धँसकर बैठ गए, बल्कि कहना चाहिए कि वह उसमें ढह गए; लेकिन इस बात से उन्हें तनिक भी परेशानी नहीं हुई। वह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के ठीक सामने बड़े आराम से बैठ गए और खुशी के मारे खींसें निकालकर धीरे-धीरे बड़े प्रभावशाली ढंग से उसकी उँगलियों को अपने होंठों तक ले गए। आसानी से बौखलानेवाले फूहड़पन को छोड़कर जनरल साहब का ढंग शरीफ़ों जैसा ही था और यह उन्हें अच्छी तरह मालूम था। पहले जमाने में बहुत ही ऊँचे समाज में उठते-बैठते रहे थे, और उस समाज से अभी साल-दो साल पहले ही उनका बहिष्कार किया गया था। तब से वह अपनी कुछ कमजोरियों का हद से ज़्यादा शिकार हो गए थे, लेकिन उनके सधे हुए और रुचिकर तौर-तरीक़े अभी तक बाक़ी थे। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना जनरल साहब के आने से बहुत खुश लग रही थी, उनके बारे में उसने अभी तक सुना ही सुना था।

"मैंने सुना है कि मेरा बेटा..." जनरल साहब ने कहना शुरू किया।

"जी हाँ, आपका बेटा ! आप भी अच्छे बाप हैं ! आप कभी मुझसे मिलने क्यों नहीं आते ? क्या आप खुद छिपे-छिपे रहते हैं या आपका बेटा आपको छिपाता है ? आपको मुझसे आकर मिलने में तो किसी की कोई बदनामी नहीं थी न ?"

"उन्नीसवीं शताब्दी के बच्चे और उनके माँ-बाप..." जनरल साहब ने फिर कहना शुरू किया।

"नस्तास्या फिलोप्पोव्ना, क्या तुम जनरल साहब को थोड़ी देर के लिए जाने दोगी," नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने ऊँचे स्वर में कहा। "कोई उन्हें बुला रहा है।"

"जाने दूँगी ? अरे, मैंने तो उनके बारे में इतना बहुत कुछ सुन रखा है और उनसे मिलने के लिए मैं क़ब से बेचैन थी ! और उन्हें काम भी क्या हो सकता है ? वह तो रिटायर हो चुके हैं न ? जनरल साहब, आप मुझे छोड़कर जाएँगे तो नहीं ? आप यहाँ से चले तो नहीं जाएँगे ?"

"मैं वादा करती हूँ कि वह तुमसे आकर मिलेंगे, लेकिन इस वक़्त उन्हें आराम करने की ज़रूरत है।"

"अरे, जनरल साहब, मैंने सुना है कि आपको आराम की ज़रूरत है !" नस्तास्या फिलोप्पोव्ना ने रूठकर शिकायत-भरे स्वर में इस तरह चिल्लाकर कहा, मानो वह कोई चुलबुली और बेवक़ूफ़ लड़की हो जिससे उसका खिलौना छीना जा रहा हो। जनरल साहब भी हमेशा से ज़्यादा बेवक़ूफ़ लगने की पूरी कोशिश कर रहे थे।

"माई डियर, माई डियर," उन्होंने गम्भीर मुद्रा से अपनी बीवी की ओर मुड़कर और दिल पर हाथ रखकर झिड़की के अन्दाज से कहा।

"माँ, तुम यहाँ से चली जातीं न ?" वार्या ने ऊँचे स्वर में पूछा।

"नहीं, वार्या, मैं आख़िर तक यहीं रहूँगी।"

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने सवाल और उसका जवाब ज़रूर सुना होगा लेकिन ऐसा लग रहा था कि उससे उसकी मस्ती कुछ और बढ़ ही गई थी। उसने फ़ौरन जनरल साहब पर और सवालों

की बौछार शुरू कर दी, और पाँच मिनट बाद जनरल साहब विजयोल्लास से फूले नहीं समा रहे थे और महफ़िल के ज़ोरदार ठहाकों के बीच भाषण झाड़ रहे थे।

कोल्या ने प्रिंस का कोट पीछे से खींचा।

"इन्हें किसी तरह यहाँ से निकालकर नहीं ले जा सकते हैं आप ? किसी भी तरह, मेहरबानी करके ?" बेचारे लड़के की आँखों में गुस्से के आँसू थे। "उफ़, लानत है गान्या पर !" उसने बुदबुदाकर अपने आपसे कहा।

"अरे, जनरल इवान फ़्योदोरोविच येपांचिन से तो मेरी बहुत गहरी दोस्ती थी," जनरल साहब ने नस्तास्या फिलोप्पोव्ना के सवालों के जवाब में बड़े जोश से भाषण देना शुरू किया। "वह, मैं और स्वर्गीय प्रिंस लेव निकोलायेविच मीश्किन, जिसके बेटे को आज बीस साल बाद मैंने गले लगाया है, हम तीनों कभी एक-दूसरे से अलग नहीं होते थे, एक तरह से अच्छा ख़ासा जुलूस था—अतोस, पर्तोस और अरामीस[1] लेकिन अफ़सोस की बात है कि, उनमें से एक तो झूठे इल्ज़ामों और गोली का शिकार होकर अपनी क़ब्र में पहुँच चुका है, दूसरा आपके सामने खड़ा है और अभी तक लाँछनों और गोलियों का सामना कर रहा है..."

"गोलियों का !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना आश्चर्य से चीख़ पड़ी।

"वे यहाँ हैं, मेरे सीने में, कर्स[2] की घेराबन्दी के वक़्त लगी थीं और जब मौसम खराब होता है तो मैं उन्हें महसूस कर सकता हूँ। बाक़ी हर मामले में मेरी ज़िन्दगी दार्शनिकों जैसी है। मैं घूमता-फिरता हूँ, टहलने जाता हूँ, अपने कैफ़े में बैठकर पेंशनयाफ़्ता बुर्जुआ की तरह ड्राफ़्ट खेलता हूँ और Independance' अखबार पढ़ता हूँ। लेकिन दो साल पहले जब ट्रेन पर वह छोटे-से कुत्तेवाला क़िस्सा हुआ है तब से हमारे पर्तोस, येपांचिन के साथ मेरा कोई वास्ता नहीं रहा है।"

"छोटा-सा कुत्ता ? क्यों, क्या क़िस्सा था वह ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने ख़ास दिलचस्पी से पूछा। "छोटे-से कुत्ते का क़िस्सा ? अच्छा, और वह भी ट्रेन पर !..." उसने मानो कुछ याद करने की कोशिश करते हुए अपने आप से कहा।

"अरे, बहुत ही बेवक़ूफ़ी का क़िस्सा था। सुनाने लायक़ भी नहीं है। सारी गड़बड़ी प्रिंसेस बेलोकोन्स्काया की गवर्नेस मिसेज़ श्मिट की वजह से हुई थी, लेकिन...दरअसल, वह क़िस्सा सुनाने लायक़ नहीं है।"

"नहीं, नहीं," नस्तास्या फिलोप्पोव्ना ने चहककर कहा। "वह क़िस्सा आपको मुझे तो सुनाना ही पड़ेगा !"

"और मैंने भी नहीं सुना है," फ़ेर्दीश्चेंको ने अपनी ओर से कहा, "c'est du nonveau."[3]

"अर्दालिओन अलेक्सान्द्रोविच !" नीना अलेक्सान्द्रोव्ना की मिन्नत-भरी आवाज़ सुनाई दी।

"पापा, कोई आपसे मिलना चाहता है !" कोल्या ने पुकारकर कहा।

"अरे, बहुत ही बेवक़ूफ़ी का क़िस्सा है और थोड़े ही में बयान किया जा सकता है," जनरल साहब ने बड़े आत्म-सन्तोष के भाव से कहना शुरू किया। "दो साल हुए—हाँ। लगभग इतना ही हुआ होगा, इससे कुछ कम भी हो सकता है, जब कोई नई रेलवे लाइन खुली-खुली ही थी, मुझे नौकरी से अपने इस्तीफ़े के सिलसिले में (उस वक़्त तक मैं फौज़ी वर्दी पहनना छोड़ चुका था) किसी बहुत ही ज़रूरी काम से कहीं जाना था। मैंने फ़र्स्ट क्लास का टिकट लिया, ट्रेन पर चढ़ा और बैठकर

1. अलेक्ज़ेंडर दूमा के प्रसिद्ध उपन्यास 'थ्री मस्केटियर्स' (1844) के नायक, जो एक-दूसरे के वफ़ादार दोस्त थे।
2. तुर्की के उत्तर-पूर्व में क़िलेबन्द नगर, जिस पर क्राइमिया के युद्ध के दौरान (1853-1856) रूसी सेनाएँ कई महीने तक घेरा डाले रही थीं।
3. यह तो कोई नया ही माजरा है। (फ़्रांसीसी)

सिगार पीने लगा। मेरा मतलब है कि मैं सिगार पीता रहा। मैं सिगार पहले ही सुलगा चुका था। डिब्बे के उस हिस्से से मैं अकेला ही था। सिगरेट-सिगार पीना मना नहीं है लेकिन उसकी इजाज़त भी नहीं है। यों समझ लीजिए कि हमेशा की तरह आधी इजाज़त है। और फ़ैसला पीनेवाले पर होता है। खिड़की खुली थी। सीटी बजने से फ़ौरन पहले दो महिलाएँ एक छोटा-सा कुत्ता लिए हुए आकर ठीक मेरे सामने बैठ गईं। उन्हें देर हो गई थी। एक आसमानी रंग की बहुत बढ़िया पोशाक पहने थी, दूसरी काले रेशम का मामूली लिबास पहने थी। सूरत शक्ल की बुरी नहीं थीं, दोनों ही। हालाँकि दिमाग़ उनके सातवें आसमान पर थे। अंग्रेजी बोलती थीं। ज़ाहिर है, मैं सिगार पीता रहा। यह सच है कि बात मेरे मन में आई तो थी, लेकिन मैं सिगार पीता रहा, क्योंकि खिड़की खुली हुई थी और मैं धुआँ बाहर उड़ा रहा था। कुत्ता आसमानीवाली महिला की गोद में लेटा हुआ था। बहुत ही छोटा-सा था वह, मेरी मुट्ठी से बड़ा नहीं रहा होगा; पूरा कुत्ता काले रंग का था, लेकिन छोटे-छोटे पंजे सफ़ेद थे उसके—बहुत ही अजूबा चीज़ था। गले में चाँदी का पट्टा पड़ा हुआ था जिस पर कोई मूलमन्त्र खुदा हुआ था। मैं सिगार पीता रहा, हालाँकि मेरा ध्यान इस बात की ओर गया कि महिलाएँ कुछ चिड़चिड़ा रही थीं : ज़ाहिर है, मेरे सिगार पर। उनमें से एक ने मुझे अपने बिना कमानी के चश्मे से घूरकर देखा। कछुए की खपरी का फ्रेम था उसका। लेकिन मैं सिगार पीता रहा, क्योंकि उन्होंने मुझसे कुछ कहा ही नहीं ! अगर उन्होंने कुछ कहा होता, मुझे चेतावनी दी होती, मुझसे अनुरोध किया होता—मेरा मतलब है, एक चीज़ होती है जिसे बोलना कहते हैं ! लेकिन उन्होंने तो बैठे-बैठे, कुछ कहे बिना, बस।...अचानक, और यह ध्यान रहे कि पहले से ज़रा भी चेतावनी दिए बिना, ज़रा भी, जैसे उनका दिमाग़ फिर गया हो, आसमानीवाली ने सिगार मेरे हाथ से झपटा और खिड़की के बाहर। ट्रेन हवा से बातें कर रही थी। मैं उसे घूरता रहा—बुद्धू की तरह। जंगली औरत, बिलकुल जंगली, मानो वह अभी जंगली अवस्था से बाहर निकली हो; कुछ गदबदा शरीर, लम्बा क़द, सुनहरे बाल और लाल-लाल गाल (ज़रूरत से ज़्यादा लाल, अगर आप मेरा मतलब समझते हैं)। वह बिजली की तरह चमकती हुई आँखों से मुझे घूर रही थी। एक शब्द भी बोले बिना मैं आगे झुका, और पूरी शिष्टता के साथ, भरपूर शिष्टता के साथ, सच पूछिए तो कहना चाहिए कि बेहद मँझी हुई शिष्टता के साथ, मैंने दो उँगलियों से कुत्ते की गर्दन पकड़ी, बड़ी नज़ाकत से उसे ऊपर उठाया और अपने सिगार के पीछे उसे खिड़की से बाहर फेंक दिया। बस एक हल्की-सी चीख़ कानों में पड़ी। ट्रेन हवा से बातें करती रही।..."

"राक्षस कहीं के !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना छोटी बच्ची की तरह ठहाका मारकर तालियाँ बजाते हुए चिल्लाई।

"शाबाश, शाबाश !" फ़ेर्दीश्चेंको चिल्लाया। प्तीत्सिन भी हँस दिया, हालाँकि जनरल साहब के वहाँ आ जाने से वह बहुत नाराज़ था। कोल्या तक हँस पड़ा और चिल्लाया, "शाबाश !"

"और मैंने बिलकुल ठीक किया, मैंने बिलकुल ठीक किया !" जनरल साहब जोश में आकर विजयोल्लास के साथ कहते रहे। "क्योंकि, देखिए, अगर ट्रेन के डिब्बे में सिगार पीना मना है तो कुत्ते लाना तो और भी मना है।"

"शाबाश, डैडी !" कोल्या उत्साहपूर्वक चिल्लाया। "बहुत शानदार ! मैं भी होता तो यही करता !"

"और उन महिला ने क्या किया ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना अधीरता से पूछती रही।

"महिला ने ? सच कहता हूँ, सारी बदमज़गी तो वहीं से शुरू हुई," जनरल साहब माथे पर

बल डाले हुए कहते रहे। "कुछ भी कहे बिना और पहले से किसी भी तरह की चेतावनी दिए बिना, उन्होंने मेरे गाल पर एक थप्पड़ रसीद कर दिया ! बिलकुल जंगली औरत थी। जी हाँ, जैसे अभी-अभी जंगली अवस्था से निकलकर बाहर आई हो !"

"और आपने ?"

जनरल साहब ने अपनी आँखें झुका लीं, भवें तानीं, कन्धे बिचकाए, होंठ भींचे, अपने हाथ फैलाए, रुके और फिर अचानक बोले—"मैं आपे से बाहर हो गया !"

"क्या ज़ोर से मारा ? ज़ोर से ?"

"नहीं, तोबा कीजिए, बहुत ज़ोर से नहीं। हंगामा मच गया, लेकिन मैंने उसे ज़ोर से नहीं मारा। उसे परे ढकेल दिया, बस सिर्फ़ परे ढकेलने के लिए। मगर शैतान तो अपनी चाल चल ही गया—मालूम यह हुआ कि वह आसमानीवाली महिला प्रिंसेस बेलोकोंस्काया की गवर्नेस या उनके परिवार की किसी तरह की दोस्त थी, और कालीपोशाकवाली प्रिंसेस बेलोकोंस्काया की सबसे बड़ी बेटी थी। पैंतीस साल की बिनब्याही बेटी। आप तो जानती ही हैं कि मिसेज़ येपांचिना की बेलोकोंस्की-परिवार के साथ कैसी गहरी दोस्ती है। सारी प्रिंसेसें मूर्च्छित हो गईं, आँसू बहाए गए, छोटे-से कुत्ते का मातम किया गया, छह की छह प्रिंसेस चीखने लगीं, अंग्रेज़ औरत चीख़ने लगी—एक कुहराम मच गया ! मैं तो माफ़ी माँगने भी गया, खेद भी प्रकट किया, खत लिखा। लेकिन उन्होंने मुझसे मिलने या मेरा खत लेने तक से इनकार कर दिया। येपांचिन-परिवार से झगड़ा हो गया, मुझे उनके घर से निकाल दिया गया, मेरा बहिष्कार कर दिया गया !"

"लेकिन, जनरल साहब, यह तो बताइए कि यह कैसे मुमकिन है ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने अचानक पूछा। "अभी पाँच छह दिन पहले मैंने 'Inde'pendance' में—मैं 'Inde'pendance' पाबन्दी से पढ़ती हूँ—यही किस्सा पढ़ा था ! बिलकुल हू-ब-हू यही ! यह वारदात राइन रेलवे की ट्रेन के एक डिब्बे में एक फ्रांसीसी मर्द और एक अंग्रेज़ औरत के बीच हुई थी। ठीक इसी तरह सिगार झपट लिया गया था, छोटा सा कुत्ता भी खिड़की के बाहर ठीक इसी तरह फेंक दिया गया था, और किस्सा ख़त्म भी ठीक इसी तरह हुआ था। उस औरत की पोशाक भी आसमानी थी।"

जनरल साहब बुरी तरह झेंप गए, कोल्या भी शरमा गया और उसने अपना सिर दोनों हाथों में पकड़ लिया; प्तीत्सिन ने जल्दी से मुँह फेर लिया। सिर्फ़ फ़ेर्दीश्चेंको पहले की तरह हँसता रहा। गान्या की तो चर्चा ही करने की ज़रूरत नहीं है, वह सारी देर मूर्तिवत् खड़ा चुपचाप असह्य यातना झेलता रहा।

"मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ, मैडम," जनरल साहब ने बुदबुदाते हुए कहा, "मेरे साथ भी ठीक वही हुआ था।"

"बेलोकोंस्की-परिवार की गवर्नेस मिसेज़ श्मिट के साथ मैमी का सचमुच बुरी तरह झगड़ा हुआ था," कोल्या ने चिल्लाकर कहा, "मुझे याद है।"

"अच्छा ? ठीक वही बात ? योरप के दो सिरों पर बिलकुल एक जैसी घटनाएँ, जिनकी ब्योरे की बातें भी मिलती-जुलती हैं, आसमानी पोशाक तक ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना बड़ी बेरहमी से कुरेदती रही। "मैं आपको 'Inde'pendance Belge' भेज दूँगी !"

"लेकिन यह तो देखिए, मैडम," जनरल साहब अपनी बात पर अड़े रहे, "मेरे साथ यह दो साल पहले हुआ था।..."

"अच्छा, यह बात है !"

नस्तास्या फिलोप्पोव्ना इस तरह हँसती रही जैसे उसे दौरा पड़ गया हो।

"डेडी, ज़रा एक क्षण के लिए बाहर आइए," गान्या ने यन्त्रवत् अपने बाप का कन्धा पकड़कर काँपते हुए व्यथित स्वर में कहा। "मुझे आपसे कुछ कहना है।" उसकी आँखों में घोर नफ़रत की आग धधक रही थी।

उसी समय सामनेवाले दरवाज़े पर बड़े ज़ोर से घंटी बजी—सचमुच इतने ज़ोर से कि कमाल ही था कि घंटी टूटकर अलग नहीं हो गई। यह एक अत्यन्त असाधारण आगमन की भूमिका थी। कोल्या दरवाज़ा खोलने लपका।

10

प्रवेश-कक्ष अचानक लोगों और शोर-गुल से भर उठा; ड्राइंग-रूम में ऐसा लग रहा था कि बहुत-से लोग अन्दर आ चुके थे और कुछ और आ रहे थे। कई आवाज़ें एक साथ बोल और चिल्ला रही थीं; सीढ़ियों पर भी लोग चिल्ला रहे थे और बातें कर रहे थे, क्योंकि सामनेवाला दरवाज़ा बन्द नहीं किया गया था। अत्यन्त विचित्र आगमन था। सब लोग एक-दूसरे को देखने लगे; गान्या भागकर हॉल में आया, लेकिन तब तक कई लोग अन्दर घुस आए थे।

"अरे, वह रहा विश्वासघाती !" एक आवाज़ ने, जिसे प्रिंस ने फ़ौरन पहचान लिया, चिल्लाकर कहा। "कहो, गान्या, कमीने कुत्ते !"

"हाँ, बिलकुल वही है !" एक दूसरी आवाज़ ने सूर में सुर मिलाया।

प्रिंस के दिमाग़ में अब कोई शक बाक़ी नहीं रह गया था—एक आवाज़ रोगोज़िन की थी और दूसरी लेबेदेव की।

गान्या दरवाज़े पर सन्न खड़ा रह गया और चुपचाप उन्हें एकटक देखता रहा; उसने पर्फ़ीन रोगोज़िन के पीछे एक-एक करके अन्दर आनेवाले दस-बारह आदमियों को रोकने के लिए कुछ भी नहीं किया। बहुत ही पंचमेल मण्डली थी और सभी की हालत शर्मनाक थी। कुछ लोग तो उसी तरह अन्दर चले आए जैसे वे सड़क पर थे, ओवरकोट या फ़र के कोट पहने। उनमें से कोई भी नशे में पूरी तरह धुत्त तो नहीं था, लेकिन सभी काफ़ी तरंग में लग रहे थे। अन्दर आने के लिए सभी को एक-दूसरे के सहारे की ज़रूरत मालूम पड़ रही थी, क्योंकि किसी में भी अकेले घुसने की हिम्मत नहीं थी, लेकिन वे एक-दूसरे को अन्दर ढकेल ज़रूर रहे थे। रोगोज़िन भी इस भीड़ के आगे-आगे चोरों की तरह चल रहा था, मगर उसका कोई इरादा था और वह बहुत उदासी और चिड़चिड़ेपन के साथ चिन्तित लग रहा था। बाक़ी लोग सिर्फ़ हाँ में हाँ मिलानेवाले थे, बल्कि कहना चाहिए कि वे उसे सहारा देनेवाला एक गरोह थे। उनमें लेबेदेव के अलावा बालों में लहरें डलवाए ज़ल्योजेव भी था, जिसने कोट प्रवेश-कक्ष में उतार फेंका और बड़ी बेतकल्लुफ़ी से इतराता हुआ अन्दर आया और उसी जैसे दो-तीन सज्जन, जो पैसेवाले सौदागरों के बेटे मालूम होते थे। उनके अलावा कई आदमी और आए—एक आदमी फौज़ी ढंग का बड़ा कोट पहने था; एक बहुत मोटा नाटा-सा आदमी, जो लगातार हँसता रहता था; छह फुट से भी ज़्यादा लम्बे क़द का एक भारी-भरकम आदमी, जो बहुत मोटा भी था, लेकिन इसके साथ वह बहुत उदास और चुप रहता था, और उसे अपने मुक्कों पर बहुत भरोसा मालूम होता था। एक डॉक्टरी का विद्यार्थी था, एक छोटा-सा ख़ुशामदी पोलिस्तानी था। किन्हीं दो महिलाओं ने प्रवेश-कक्ष में झाँककर देखा लेकिन उनकी अन्दर आने की हिम्मत नहीं हुई। कोल्या ने दरवाज़ा उनके मुँह पर धड़ से बन्द कर दिया और कुण्डा चढ़ा दिया।

“कहो, गान्या, कमीने कुत्ते !” रोगोझिन ने ड्राइंग-रूम के पास पहुँचकर दरवाज़े पर गान्या के सामने रुककर फिर दोहराया। “पफ़्यॉन रोगोझिन के आने की तुम्हें कोई उम्मीद नहीं थी न ?”

लेकिन उसी क्षण उसकी दृष्टि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना पर पड़ी जो ड्राइंग-रूम में बिलकुल उसके सामने बैठी थी। यह बात शायद कभी उसके दिमाग़ में भी नहीं आई थी कि यहाँ उससे मुलाक़ात हो सकती है, क्योंकि उसके देखते ही उस पर एक असाधारण प्रभाव हुआ; उसका रंग ऐसा उतर गया कि होंठ तक नीले पड़ गए। “तो यह सच है !” उसने क्षीण स्वर में कहा मानो अपने आपसे बातें कर रहा हो; वह बिलकुल बौखलाया हुआ दिखाई पड़ रहा था। “तो यह है अन्जाम ! ख़ैर...” अचानक उसने गान्या की ओर बेहद क्रोध से देखते हुए गुर्राकर कहा, “तुम्हें इसकी भरपूर क़ीमत चुकानी होगी ! उफ़ !”

ऐसा लग रहा था कि उसका दम फूल रहा था, क्योंकि उससे ठीक से बोला भी नहीं जा रहा था। वह यन्त्रवत् ड्राइंग-रूम की ओर आगे बढ़ रहा था, लेकिन चौखट पार करते ही अचानक उसकी नज़र नीना अलेक्सान्द्रोव्ना और वार्या पर पड़ी, और वह ठिठक गया; अपनी उत्तेजना के बावजूद वह थोड़ा-सा खिसिआया हुआ लग रहा था। उसके बाद लेबेदेव आया, जो उसके पीछे परछाईं की तरह लगा हुआ था, उसने शराब बहुत पी रखी थी, फिर छात्र, मुक्केबाज सज्जन, ज़ल्योजेव, जो दाहिने-बाएँ झुक-झुककर सबको सलाम कर रहा था, और अन्त में दरवाज़े में से घुस-पिलकर वह नाटे क़द का मोटा सा आदमी अन्दर आया। वहाँ महिलाओं की उपस्थिति के कारण वे सब लोग अभी तक थोड़े-से काबू में थे और ये उनके रास्ते में बाधा बनी हुई थीं—लेकिन सिर्फ़ शुरू तक जब तक कि उन्हें चिल्लाने और शुरू करने का पहला बहाना नहीं मिल गया।...उसके बाद तो सारी दुनिया की महिलाएँ भी उन्हें रोक नहीं सकती थीं।

“हे भगवान, तुम भी यहीं हो, प्रिंस !” रोगोझिन ने विचारों में खोए-खोए कहा, प्रिंस को वहाँ देखकर उसे थोड़ा-सा ताज्जुब ज़रूर हुआ था। “अभी तक अपने वही बेवक़ूफ़ोंवाले गेटर्स पहने हुए हो ? उफ़ !” उसने प्रिंस के बारे में सब कुछ भूलकर आह भरकर कहा और अपनी नज़र फिर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना पर जमा ली; वह हर बार उसके निकट आता जा रहा था, जैसे कोई चुम्बक उसे खींच रहा हो।

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना भी इन आनेवालों को बहुत परेशान महसूस करते हुए उत्सुकता से देख रही थी।

आख़िरकार गान्या ने अपने आपको सम्भाल लिया।

“लेकिन, देखो, आख़िर इस सबका मतलब क्या है ?” उसने नवागंतुकों को कठोरता से देखते हुए और ख़ासतौर पर रोगोझिन को सम्बोधित करते हुए ज़ोर से कहा। “सज्जनो, यह कोई अस्तबल तो है नहीं जहाँ आप घुस आए हैं। मेरी माँ और बहन यहाँ हैं।...”

“यह तो हमें भी दिखाई दे रहा है कि तुम्हारी माँ और बहन यहाँ हैं,” रोगोझिन ने दाँत भींचकर शब्दों को चबा-चबाकर कहा।

“यह तो साफ़ है कि वे आपकी माँ और बहन हैं,” लेबेदेव ने बात पर और ज़ोर देने के लिए दोहराया।

मुक्केबाज सज्जन ने, स्पष्टतः यह सोचकर कि वक़्त आ गया है, गुर्राना शुरू कर दिया।

“बहरहाल !” गान्या अपनी आवाज़ कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ही ऊँची उठाकर बोला, “पहले तो मैं आप सबसे यह कहना चाहता हूँ कि हॉल में आ जाइए, और फिर मैं यह जानना चाहूँगा...”

"यह जानता नहीं है !" रोगोझिन ने अपनी जगह से हटे बिना दुष्टतापूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा। "तुम रोगोझिन को नहीं जानते ?"

"हाँ, कहीं देखा तो है आपको, लेकिन..."

"सुना तुम लोगों ने ? कहता है कि कहीं मुझे देखा है। अरे, अभी तीन ही महीने तो हुए कि मैं तुमसे दो सौ रूबल हारा था। और सो भी मेरे बाप का पैसा था। बूढ़े को मरते वक़्त तक इस बात का पता नहीं चला। तुम ही मुझे वहाँ खींचकर ले गए थे और क्निफ़ ने धोखा दिया था। मुझे नहीं जानते, क्यों ? प्तीत्सिन वहाँ था और उसने सब कुछ देखा था ! अरे, अगर मैं तुम्हें तीन रूबल भी दिखाऊँ, उन्हें अपनी जेब से अभी निकालूँ तो तुम उनके पीछे हाथ-पाँव पर रेंगते हुए दुनिया के छोर तक चले जाओगे, बिलकुल चले जाओगे—इस तरह के आदमी हो तुम ! तुम बने ही इस तरह हो ! और मैं यहाँ इस वक़्त तुम्हें पैसे से खरीदने ही आया हूँ, मैंने जो जूते पहन रखे हैं, उनसे कोई मतलब नहीं, उन्हें न देखो। मेरे पास ढेरों पैसा है, भई, इतना पैसा कि अगर मैं चाहूँ तो तुम सबको खड़े-खड़े खरीद लूँ। मैं सब कुछ खरीद सकता हूँ !" उसने अत्यधिक उत्तेजित होते हुए चिल्लाकर कहा; ऐसा लग रहा था कि उसका नशा निरन्तर चढ़ता जा रहा है। "उफ़ !" वह फिर चिल्लाया, "नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, मुझे ठुकराइए न, मुझे बस इतना बता दीजिए—आप इस आदमी से शादी करेंगी या नहीं ?"

रोगोझिन ने घोर निराशा में डूबे हुए आदमी की तरह अपना सवाल पूछा, और उसे इस तरह सम्बोधित किया जैसे वह कोई देवी हो, लेकिन उस आदमी की तरह सब कुछ दाँव पर लगाकर जिसे मौत की सज़ा सुना दी गई हो और जिसके पास अब हारने के लिए कुछ न हो। वह तीव्र व्यथा की दशा में उसके उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा।

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने बड़े रोब से उसे सिर से पाँव तक व्यंगपूर्वक देखा, लेकिन नीना अलेक्सान्द्रोव्ना और वार्या पर एक नज़र डालने और गान्या को देखने के बाद उसने अपना लहजा बदल दिया।

"बिलकुल नहीं ! आप किस चीज़ के बारे में बातें कर रहे हैं ? और मुझसे ऐसा सवाल पूछने का मतलब क्या है ?" उसने शान्त और गम्भीर भाव से और मानो कुछ आश्चर्य के साथ जवाब दिया।

"नहीं ? नहीं ! !" रोगोझिन ने खुशी से फूले न समाते हुए चिल्लाकर कहा। "तो सचमुच नहीं ? ! और उन्होंने मुझे बताया था...उफ़ ! नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ! उन्होंने कहा कि आपकी गान्या के साथ मँगनी हो चुकी है ! इसके साथ ! इस शख़्स के साथ ! अरे, क्या यह मुमकिन है ? (मैंने उनसे यही कहा—उन सबसे !) अरे, मैं उसे उसके सारे माल-असबाब समेत सौ रूबल में खरीद सकता हूँ, और अगर मैं उसे एक हज़ार रूबल दे दूँ, चलो, तीन हज़ार सही, कि वह इन्कार कर दे, तो वह शादी के दिन भाग जाएगा, और अपनी दुल्हन को मेरे हवाले कर जाएगा ! है न यही बात, गान्या, कमीने कुत्ते ? तुम तीन हज़ार ले लोगे, है न ? लो, यह लो ! मैं तुमसे लिखत में लेने आया हूँ। मैंने कहा था न कि मैं ख़रीद लूँगा, तो मैं खरीदूँगा पक्के तौर पर !"

"निकल जाओ यहाँ से, तुम नशे में हो !" गान्या ने चिल्लाकर कहा; उसके चेहरे पर एक रंग आ रहा था, एक रंग जा रहा था।

उसके इस तरह भड़क उठते ही एक साथ कई आवाज़ों का विस्फोट हुआ—रोगोझिन का पूरा गरोह बड़ी देर से पहली चुनौती का इन्तज़ार कर रहा था। लेबेदेव बड़ी संजीदगी से रोगोझिन के कान में कुछ कह रहा था।

"अच्-छा, सरकारी नौकर," रोगोझिन ने जवाब दिया, "अच्छा, निकम्मे शराबी ! जो हो देखा जाएगा ! नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना !" दीवानों की तरह उसकी ओर देखकर वह चिल्लाया; बड़ी मुश्किल से उसकी बोलने की हिम्मत पड़ी और अचानक उसमें ढिठाई की हद तक साहस पैदा हो गया, "यह रहे अट्ठारह हज़ार !" और यह कहकर अपने सफ़ेद काग़ज़ में लिपटी डोरी से बँधी नोटों की गड्डी उसके सामने मेज़ पर फेंक दी। "यह लो ! और...अभी और भी आएँगे !"

वह अपनी पूरी बात कहने का साहस नहीं कर सका।

"नहीं, नहीं, नहीं !" लेबेदेव ने फिर उसके कान में कुछ कहा; उसके चेहरे पर बेहद डरे होने का भाव था। यह स्पष्ट था कि वह इतनी बड़ी रक़म देखकर सहम गया था और उसका सुझाव इससे कहीं कम रक़म देने का था।

"नहीं, भाई, इन मामलों में तुम बिलकुल बेवक़ूफ़ हो," रोगोझिन ने कहा। "तुम नहीं समझते कि बात किससे हो रही है। ख़ैर, लगता है कि मैं भी तुम्हारे साथ बेवक़ूफ़ हो गया हूँ," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की आँखों में बिजली जैसी चमक देखकर वह अपनी भूल समझ गया और चौंक पड़ा। "उफ़ ! मेरी मति मारी गई थी जो मैंने तुम्हारी बात मानी," उसने बड़े पछतावे से कहा।

रोगोझिन का उतरा हुआ चेहरा गौर से देखकर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना अचानक ठहाका मारकर हँस पड़ी।

"अट्ठारह हज़ार—मुझे ? गँवार समझता है गँवार ही," उसने ढिठाई-भरी बेतकल्लुफ़ी से जोड़ दिया और सोफ़े से उठी, मानो वहाँ से चली जानेवाली हो। गान्या इस दृश्य को देखता रहा; उसका दिल डूबा जा रहा था।

"अच्छा, चालीस हज़ार, अट्ठारह नहीं, चालीस सही !" रोगोझिन चिल्लाया। "प्तीत्सिन और बिस्कुप ने मुझे सात बजे तक चालीस हज़ार देने का वादा किया है। चालीस हज़ार—नक़द !"

दृश्य अधिकाधिक घृणास्पद होता जा रहा था, लेकिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना हँसती रही और वहाँ से गई नहीं, मानो वह जान बूझकर इस सिलसिले को लम्बा खींच रही हो। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना और वार्या भी उठ खड़ी हुईं और भयभीत होकर चुपचाप प्रतीक्षा करती रहीं कि देखें इसका क्या नतीजा निकलता है। वार्या की आँखें चमक रही थीं, लेकिन इस पूरे काण्ड का नीना अलेक्सान्द्रोव्ना पर अत्यन्त कष्टप्रद प्रभाव पड़ा था; वह काँप रही थीं और ऐसा लगता था कि किसी भी क्षण मूर्च्छित हो जाएँगी।

"अच्छा—एक लाख ! आज ही एक लाख ला दूँगा ! प्तीत्सिन, ज़रा मदद करना। बाद में वारे-न्यारे हो जाएँगे तुम्हारे !"

"तुम पागल हो !" प्तीत्सिन ने जल्दी से पास जाकर उसकी बाँह पकड़ते हुए कान में कहा। "तुम पिए हुए हो। ये लोग पुलिस बुलवा लेंगे। दिखाई नहीं देता तुम्हें कि कहाँ हो तुम ?"

"और नशे में झूठ बोलता है," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने मानो उसे ताना देते हुए कहा।

"मैं सच कहता हूँ, पैसा आ जाएगा ! शाम तक पैसा होगा। प्तीत्सिन, कमीने सूदखोर, मुझे पैसे लाकर दो। जितना तुम्हारा जी चाहे ले लेना लेकिन शाम तक मुझे एक लाख लाकर दो ! मैं दिखा दूँगा कि मैं चुकाने में हाथ नहीं रोकूँगा !" रोगोझिन अपनी उत्तेजना को उन्माद की हद तक बढ़ाकर चिल्लाया।

"आख़िर यह सब क्या हो रहा है ?" जनरल ईवोल्गिन गुस्सा होकर रोगोझिन के पास गए और अचानक धमकी-भरे स्वर में चिल्लाए। इतनी लम्बी चुप्पी के बाद बूढ़े का इस तरह अचानक फूट पड़ना बहुत हास्यास्पद लगा। रोगोझिन के लोग हँस पड़े।

"लो, यह कहाँ से आ गए !" रोगोझिन हँसा। "हमारे साथ चलिए, बड़े मियाँ, नाक तक भर जाइएगा !"

"यह सरासर कमीनापन है !" कोल्या शर्म और झुँझलाहट से रोते हुए व्यथित स्वर में चिल्लाया।

"कोई है नहीं जो इस बेहया को यहाँ से निकाल दे !" वार्या का क्रोध से काँपता हुआ स्वर अचानक सुनाई दिया।

"देखो, मुझे बेहया कहा जा रहा है !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने तिरस्कार-भरी मस्ती से जवाबी वार किया। "और मैं ऐसी बेवक़ूफ़ कि इन लोगों को आज शाम अपनी पार्टी को बुलावा देने आई थी ! तो यह है आपकी बहन का सलूक मेरे साथ, गव्रीला अर्दालियोनोविच !"

अपनी बहन की इस हरकत के बाद गान्या काफ़ी देर तक वहीं स्तब्ध खड़ा रहा मानो उस पर गाज गिर पड़ी हो, लेकिन यह देखकर कि इस बार नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना वापस जा रही थी, वह पागलों की तरह वार्या पर टूट पड़ा और उसका हाथ कसकर पकड़ लिया।

"यह क्या किया तुमने ?" वह उसकी ओर ऐसे देखकर चिल्लाया, मानो उसे नज़रों से जलाकर भस्म कर देना चाहता हो। वह बिलकुल आपे से बाहर हो गया था और अपनी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कर क्या रहा था।

"मैंने क्या किया ? मुझे कहाँ घसीटे लिए जा रहे हो तुम ? तुम मुझे अपने साथ इस बात की माफ़ी मँगवाने के लिए तो नहीं ले जा रहे हो, नीच अभागे, कि उसने तुम्हारी माँ का अपमान किया और यहाँ आकर तुम्हारे परिवार को नीचा दिखाया ?" वार्या भाई की ओर चुनौती से देखकर एक बार फिर उत्तेजित होकर चिल्लाई।

कुछ क्षण तक वे दोनों एक-दूसरे के सामने इसी तरह खड़े रहे। गान्या ने अपना हाथ अब भी कसकर पकड़ रखा था। वार्या ने पूरी ताक़त लगाकर अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश की, एक बार, दूसरी बार, लेकिन अपने आपको और अधिक वश में न रख पाने, अचानक अपने भाई के मुँह पर थूक दिया।

"क्या लड़की है !" नस्तास्या फिलोप्पोव्ना ने प्रशंसा के भाव से कहा। "शाबाश, प्तीत्सिन, मैं आपको बधाई देती हूँ।"

गान्या का सिर चकरा गया और अपने आपको बिलकुल भूलकर अपनी पूरी ताक़त से बहन की ओर मुक्का चलाया। उसका वार सीधे उसके मुँह पर लगता अगर बीच में अचानक एक दूसरे हाथ ने उसका हाथ पकड़ न लिया होता।

उसके और उसकी बहन के बीच में प्रिंस खड़ा था।

"बस, बहुत हो गया !" उसने आग्रहपूर्वक कहा, लेकिन साथ ही वह सिर से पाँव तक काँप भी रहा था, जैसे उसे कोई गहरा आघात पहुँचा हो।

"तुम हमेशा तो मेरे रास्ते में आनेवाले हो नहीं ?" गान्या गरज उठा और अपनी बहन का हाथ छोड़कर क्रोध से पूरी तरह पागल होकर उसने प्रिंस के चेहरे पर भरपूर तमाचा जड़ दिया।

"ओह," कोल्या आतंकित होकर चिल्लाया, "हे भगवान !"

चारों ओर से विस्मय और सहानुभूति के स्वर सुनाई दे रहे थे। प्रिंस का रंग पीला पड़ गया। उसने गान्या की आँखों में आँखें डालकर उसे विचित्र, निन्दा-भरी दृष्टि से देखा; उसके होंठ काँप रहे थे और कुछ कहने की कोशिश कर रहे थे, एक विचित्र और असंगत मुस्कराहट से वे विकृत हो गए थे।

"ख़ैर, मेरी बात जाने दो...लेकिन इन्हें...नहीं छोड़ूँगा !" उसने आख़िरकार शान्त स्वर में कहा; मगर जल्दी ही उसका संयम टूट गया; गान्या को छोड़कर उसने अपना मुँह दोनों हाथों से ढक लिया और कमरे के एक कोने में जाकर दीवार की ओर मुँह करके खड़ा हो गया, और लड़खड़ाती आवाज़ में बोला—"आपने जो कुछ किया है उस पर आपको बहुत शर्मिन्दा होना पड़ेगा !"

गान्या वहीं खड़ा रहा; ऐसा लग रहा था जैसे वह बिलकुल चकनाचूर हो गया हो। कोल्या भागकर पिन्स के पास पहुँचा और उसे गले लगाने और प्यार करने लगा। रोगोझिन, वार्या, प्तीत्सिन, नीना अलेक्सान्द्रोव्ना और बूढ़े जनरल साहब तक सभी उसके चारों ओर जमा हो गए।

"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं !" प्रिंस ने [illegible] और उसी असंगत मुस्कराहट से देखते हुए बुदबुदाकर कहा।

"इसे इसके लिए पछताना पड़ेगा ही," रोगोझिन ने चिल्लाकर कहा। "तुम्हें शर्म तो आ ही रही होगी, गान्या, कि तुमने ऐसी...[illegible] (उसे कोई और शब्द सूझा ही नहीं) अपमान किया ! प्रिंस, मेरे दोस्त, छोड़ो इन सबको। इन सबको भाड़ में झोंको। मेरे साथ चलो। देखना, रोगोझिन कितना प्यार कर सकता है !"

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को भी गान्या की हरकत और प्रिंस के जवाब में बहुत आश्चर्य हो रहा था। आमतौर पर पीला और [illegible] रहनेवाला उसका चेहरा, जो सारी देर उसकी बनावटी लगनेवाली हँसी के साथ बेमेल लगता रहा था, सहसा एक नई भावना से स्पष्टतः आन्दोलित हो उठा; फिर भी ऐसा लग रहा था कि वह इस भावना को प्रकट नहीं होने देना चाहती थी; और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह अपनी व्यंग्यपूर्ण मुद्रा बनाए रखने की भरपूर कोशिश कर रही थी।

"मेरा ख़्याल है कि मैंने यह सूरत कहीं देखी है !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने पूरी गम्भीरता से कहा; उसे यह प्रश्न याद आ गया जो उसने प्रिंस से पूछा था।

"और आपको अपने आप पर शर्म तो नहीं आती !" प्रिंस सहसा घोर निन्दा के भाव से चिल्लाया। "क्या आप ऐसी ही हैं जैसा कि आप अपने आपको यहाँ जताना चाहती थीं। यह हो ही नहीं सकता !"

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना चकित रह गई। वह मुस्करा दी लेकिन ऐसा लग रहा था कि इस मुस्कराहट के पीछे वह कुछ छिपाने की कोशिश कर रही है। उसने कुछ खिसियाकर गान्या पर एक नज़र डाली और कमरे से बाहर चली गई। लेकिन प्रवेश-कक्ष में पहुँचने से पहले ही वह अचानक लौट पड़ी, नीना अलेक्सान्द्रोव्ना के पास गई, उनका हाथ पकड़ा और उसे उठाकर, अपने होंठों तक ले गई।

"उनका कहना ठीक है, मैं सचमुच वैसी नहीं हूँ," उसने उत्तेजित होकर जल्दी-जल्दी उनके कान में कहा और उसका चेहरा बिलकुल लाल हो गया; इतना कहकर वह फिर मुड़ी और इस बार इतनी तेजी से बाहर निकल गई कि किसी को यह समझने का भी अवसर नहीं मिल पाया कि वह पास क्यों आई थी। उन लोगों ने बस इतना ही देखा था कि उसने नीना अलेक्सान्द्रोव्ना से चुपके से कुछ कहा था और उनका हाथ चूमा था, ऐसा लगा। लेकिन वार्या ने सब कुछ देखा और सुना था, और उसकी आश्चर्यचकित नज़रें कमरे से बाहर तक नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के पीछे-पीछे गईं।

गान्या ने अपने आपको सम्भाला और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को विदा करने के लिए लपका, लेकिन वह जा चुकी थी। सीढ़ियों पर जाकर वह उसे पकड़ पाया।

"मेरे साथ चलने की कोई ज़रूरत नहीं है !" उसने चिल्लाकर गान्या से कहा। "शाम तक

के लिए विदा। आना ज़रूर, सुना ?"

वह लौटा तो कुछ उलझा हुआ और विचारमग्न लग रहा था; उसके दिल में एक अनबूझ पहेली पैदा हो गई थी, पहले से भी कहीं ज़्यादा अनबूझ। प्रिंस भी दिमाग़ में नाच रहा था...वह अपने विचारों में इतना खोया हुआ था कि इस बात की ओर उसका ध्यान ही नहीं गया कि रोगोझिन का जत्था उसके पीछे-पीछे जल्दी से फ़्लैट के बाहर जाते हुए उसके सामने से गरोहबन्द होकर गुजर रहा था और यह कि उन्होंने दरवाज़े पर उसे धक्का भी दिया था। वे सब लोग किसी चीज़ के बारे में ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। रोगोझिन खुद प्तीत्सिन के साथ चल रहा था और उससे किसी महत्त्वपूर्ण सवाल पर बड़ी गम्भीरता से बातें कर रहा था, जिसे फ़ौरन हल करना ज़रूरी मालूम हो रहा था।

"तुम हार चुके हो, यार," गान्या के सामने से गुजरते हुए वह चिल्लाया।

गान्या उन्हें बड़ी बेचैनी से एकटक देखता रहा।

11

प्रिंस ड्राइंग-रूम से अपने कमरे में आ गया। कोल्या फ़ौरन भागा-भागा उसके यहाँ गया और उसे तसल्ली देने की कोशिश करने लगा। लगता था कि अब उस बेचारे लड़के के लिए [illegible] रहना नामुमकिन था।

"आपने अच्छा किया कि वहाँ से चले आए," उसने कहा। "अब वहाँ पहले से भी बड़ा बखेड़ा खड़ा होनेवाला है। रोज यही होता है, और सब कुछ उस नस्तास्या फिलोप्पोव्ना की वजह से।"

"कोल्या, तुम लोगों के यहाँ ढेरों समस्याएँ हैं," प्रिंस ने अपना मत प्रकट किया। "बहुत ही तकलीफ़ पहुँचानेवाली समस्याएँ।"

"जी हाँ, बहुत ही तकलीफ़ पहुँचानेवाली समस्याएँ। लेकिन हम लोगों के बारे में बातें करने से कोई फ़ायदा नहीं है ! यह सब हम लोगों का कसूर है। मेरा एक बहुत अच्छा दोस्त है, उसी को ले लो, वह इससे भी कहीं ज़्यादा बदनसीब है। आप उससे मिलना चाहते हैं ?"

"हाँ, बहुत ज़्यादा। तुम्हारे साथ पढ़ता है ?"

"जी हाँ, बिलकुल मेरे सहपाठी जैसा है। मैं आपको इसके बारे में बाद में सब कुछ बताऊँगा। लेकिन नस्तास्या फिलोप्पोव्ना के बारे में आपकी क्या राय है ? बहुत खूबसूरत है वह, है न ? देखिए, बात यह है कि मैं पहले कभी नहीं मिला था, हालाँकि मैंने कोशिश की थी। उसने मुझ पर बिलकुल जादू-सा कर दिया। मैं गान्या को हर बात के लिए माफ़ कर देता, अगर वह प्यार की वजह से...लेकिन वह पैसा ले रहा है—सारा रोना तो यही है।"

"तुम्हारे भाई मुझे बहुत अच्छे नहीं लगते।"

"यक़ीनन नहीं लगते होंगे ! और लग भी कैसे सकते हैं जब...लेकिन, सच मानिए, मुझे तो मूर्खता के विचार बिलकुल अच्छे नहीं लगते। मेरा मतलब है, अगर कोई पागल या बेवक़ूफ़ या कोई बदमाश पागलपन का दौरा पड़ने पर किसी के मुँह पर थप्पड़ मार दे, तो समझा जाता है कि वह आदमी ज़िन्दगी-भर के लिए बेइज़्ज़त हो गया, और वह अपने इस कलंक को ख़ून से ही धो सकता है, या जब वह दूसरा आदमी उसके सामने घुटने टेककर माफ़ी माँगे। मैं समझता हूँ कि यह बेतुकी बात है और बहुत बड़ा जुल्म है। लेर्मोन्तोव का नाटक 'बहुरूपिए' इसी पर आधारित है और—मेरी राय में वह बहुत बेवक़ूफ़ी का नाटक है। मेरा मतलब यह है कि वह स्वाभाविक नहीं है। लेकिन

यह नाटक उन्होंने तब लिखा था जब वह बिलकुल कम उम्र थे।"

"मुझे तुम्हारी बहन बहुत अच्छी लगीं।"

"जिस तरह उसने गान्या के थोबड़े पर थूका ! वह बड़ी बहादुर है, वार्या, बहुत बहादुर है। आपने उस पर नहीं थूका, और मुझे यक़ीन है कि इसकी वजह यह नहीं थी कि आपमें हिम्मत नहीं थी। लेकिन, लीजिए, वह खुद आ गई...शैतान को याद करो और...मैं जानता था कि वह आएगी। वह भली लड़की है, हालाँकि उसमें भी अपनी खामियाँ हैं।"

"तुम्हें यहाँ आने की कोई ज़रूरत नहीं है," वार्या फ़ौरन कोल्या पर झपटी, "पापा के पास जाओ। प्रिंस, यह आपको बहुत ज़्यादा परेशान तो नहीं कर रहा है ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं। बल्कि बात कुछ अलग ही है।"

"अरे, बड़ी आई कहीं की, छिः ! अब यह मेरे पीछे पड़ गई ! इसकी यही बात तो मुझे अच्छी नहीं लगती। और, हाँ, मैंने सोचा कि पापा ज़रूर रोगोज़िन के साथ चले गए होंगे। अब उन्हें बहुत अफ़सोस हो रहा होगा। सचमुच, मैं जानना चाहता हूँ कि उसका क्या हाल है," कोल्या ने बाहर जाते हुए कहा।

"भगवान की कृपा से मैंने माँ को यहाँ से ले जाकर सुला दिया। और उसके बाद फिर कुछ नहीं हुआ। गान्या बहुत उलझा हुआ और परेशान है- और इसकी वजह भी है ! कैसा सबक़ मिला है !...मैं एक बार फिर आपका शुक्रिया अदा करने आई हूँ, प्रिंस, और यह पूछने कि क्या आप नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को पहले से जानते थे ?"

"नहीं, मैं नहीं जानता था।"

"तो फिर आपने उसके मुँह पर यह क्यों कह दिया कि वह 'वैसी' नहीं है ? लगता है कि आपकी राय ठीक है। पता यह चला कि वह सचमुच वैसी नहीं है। हालाँकि मैं समझ नहीं पाती कि वह है क्या ! अलबत्ता, इतना तो साफ़ है कि वह यहाँ हम लोगों का अपमान करने आई थी। मैं उसके बारे में पहले भी बहुत-सी अजीब-अजीब बातें सुन चुकी हूँ। लेकिन अगर वह हम लोगों को अपनी पार्टी में आने का निमन्त्रण देने आई थी तो फिर वह माँ के साथ वैसा व्यवहार शुरू से क्यों करने लगी ? प्तीत्सिन उसे बहुत अच्छी तरह जानता है और उसका कहना है कि उसका आज का व्यवहार उसकी समझ में भी नहीं आया। और जिस तरह वह रोगोज़िन से बातें कर रही थी ! किसी भी इज़्ज़तदार औरत के लिए नामुमकिन है कि वह इस तरह की बातें करे और सो भी किसके घर में—अपने...माँ आपकी वजह से भी बहुत परेशान हैं।"

"अरे, वह कोई बात नहीं है," प्रिंस ने हाथ हिलाकर बात को टाल दिया।

"और उसने आपका कहना कितनी जल्दी मान लिया..."

"आपका मतलब ?"

"आपने उससे कहा कि उसे अपने आप पर शर्म आनी चाहिए और वह अचानक बिलकुल बदल गई। उस पर आपका असर है, प्रिंस," वार्या ने कुछ मुस्कराकर कहा।

दरवाज़ा खुला और अचानक गान्या अन्दर आया जिसकी किसी को उम्मीद भी नहीं थी।

वार्या को देखकर भी उसे तनिक संकोच नहीं हुआ। एक क्षण तक वह दरवाज़े पर खड़ा रहा, फिर दृढ़ क़दमों से प्रिंस के पास चला गया।

"प्रिंस, मैंने बहुत कमीनेपन की हरकत की है," उसने अचानक बहुत भावुक होकर कहा। "मुझे माफ़ कर दीजिए, मेरे दोस्त।" उसके चेहरे पर गहरी व्यथा का भाव था। प्रिंस ने उसे आश्चर्य से देखा और फ़ौरन कोई जवाब नहीं दिया। "मेहरबानी करके मुझे माफ़ कर दीजिए," गान्या बड़ी

अधीरता से आग्रह करता रहा। "मुझे माफ़ कर दीजिए इतनी मेहरबानी कीजिए। आप चाहें तो मैं आपका हाथ चूम लूँ !"

प्रिंस पर इसका मर्मस्पर्शी प्रभाव पड़ा और उसने गान्या को अपनी बाँहों में समेट लिया। उन्होंने बड़ी हार्दिकता से एक-दूसरे को चूमा।

"मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आप ऐसे हैं," प्रिंस ने आख़िरकार गहरी साँस लेकर कहा। "मैं समझता था कि आप...कि आपमें इसकी क्षमता ही नहीं है..."

"क्षमा माँगने की ?...अरे, क्यों मेरे दिमाग़ में आया कि आप बौड़म हैं ? आप उन बातों को देख लेते हैं जिनकी ओर दूसरों का ध्यान भी नहीं जाता। आपसे खुलकर बातें करना अच्छा होता लेकिन...न करना ही बेहतर है !"

"इन्हें देखिए, इनसे भी आपको माफ़ी माँगनी चाहिए," प्रिंस ने वार्या की ओर इशारा करके कहा।

"जी नहीं, ये सब लोग मेरे दुश्मन हैं। प्रिंस, यक़ीन जानिए, मैं बार-बार कोशिश कर चुका हूँ, लेकिन यहाँ कोई किसी को सचमुच माफ़ करना तो जानता ही नहीं है !" गान्या ने बहुत जोश में आकर कहा और वार्या की ओर से अपना मुँह फेर लिया।

"लेकिन मैं तुम्हें माफ़ कर दूँगी !" वार्या ने अचानक कहा।

"और आज शाम को नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ जाओगी ?"

"जाऊँगी, अगर तुम कहोगे, लेकिन खुद देखो—अब मेरे लिए वहाँ जाना मुश्किल है ?"

"लेकिन वह वैसी बिलकुल नहीं है। तुमने देखा कैसी-कैसी पहेलियाँ यह बुझाती है। कैसी कमाल की बातें करती है !" और गान्या द्वेषपूर्वक हँस दिया।

"मैं खुद जानती हूँ कि वह वैसी नहीं है कि वह चरित्तर करती है, और चरित्तर भी कैसा ! इसके अलावा, गान्या, यह भी सोचो कि वह तुम्हें क्या समझती है ? उसने भले ही माँ का हाथ चूम लिया हो, भले ही उसने चरित्तर किया हो लेकिन इसके बावजूद वह तुम्हारे ऊपर हँस रही थी, हँस रही थी न ? पचहत्तर हज़ार के बदले यह सब कुछ कोई अच्छा सौदा नहीं है, सचमुच नहीं है, मेरे भाई। तुम्हारे दिल में अब भी सम्मान की भावनाएँ मौजूद हैं, इसलिए मैं तुम्हें यह सब कुछ बता रही हूँ। तुम वहाँ जाओ भी नहीं ! होश सम्भालो। इस सबका नतीजा अच्छा नहीं हो सकता।"

यह कहकर वार्या बहुत उद्विग्नता की हालत में कमरे से चली गई।

"ये सब ऐसी ही हैं !" गान्या ने कटुता से मुस्कराते हुए कहा। "और क्या वे समझती हैं कि इस बात को मैं खुद जानता नहीं हूँ ? अरे, मैं तो उनसे भी ज़्यादा बहुत कुछ जानता हूँ।"

यह कहकर गान्या सोफ़े पर बैठ गया; स्पष्टतः इसका इरादा वहाँ काफ़ी देर रहने का था।

"अगर आप खुद जानते हैं," प्रिंस ने डरते-डरते पूछा, "तो आपने यह सारी मुसीबत क्यों मोल ली, इस बात को जानते हुए कि पचहत्तर हज़ार रूबल में यह कोई अच्छा सौदा नहीं है ?"

"मैं इसकी बात नहीं कर रहा था," गान्या ने बुदबुदाकर कहा। "लगे हाथ, मैं आपकी राय जानने को बहुत बेचैन हूँ—आप क्या समझते हैं कि यह 'मुसीबत' पचहत्तर हज़ार के लायक़ है या नहीं है ?"

"मेरे ख़्याल में तो नहीं है।"

"ख़ैर, ठीक है। और इस तरह की शादी करना शर्म की बात है ?"

"बहुत।"

"अच्छा, तो मैं आपको यह बता देना चाहता हूँ कि मैं उससे शादी करने जा रहा हूँ और

अभी पक्के तौर पर करने जा रहा हूँ। आज सबेरे तक मेरे मन में संकोच था, लेकिन अब नहीं रहा ! कुछ कहिए नहीं ! मैं जानता हूँ आप क्या कहना चाहते हैं।..."

"मेरी वह बात नहीं जिसकी आप सोचते हैं, मुझे ताज्जुब तो यह है कि आपको उसका इतना पक्का यक़ीन है।..."

"किस बात का यक़ीन है ? किस बात का ?"

"अरे, यही कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना यक़ीनन आपसे शादी करेगी और यह कि सारा मामला तै हो चुका है, और, दूसरे, अगर उसने आपसे शादी कर ली तो यह पचहत्तर हज़ार की रक़म आपकी जेब में आ जाएगी। लेकिन, अलबत्ता, बहुत-सी बातें मुझे मालूम नहीं है।"

गान्या तेजी से प्रिंस की ओर मुड़ा।

"ज़ाहिर है आपको बहुत कुछ नहीं मालूम है," वह बोला। "और आपकी राय में मेरे लिए इतना बड़ा बोझ उठाने की और क्या वजह है ?"

"ऐसा अकसर होता है, लोग पैसे की ख़ातिर शादी करते हैं और पैसा बीवी के पास रहता है।"

"जी नहीं, हमारे मामले में ऐसा नहीं होगा।...लेकिन, इस मामले में कुछ...कुछ परिस्थितियाँ हैं..." गान्या ने बेचैनी से सोचते हुए बुदबुदाकर कहा। "रही उसके जवाब की बात, तो इसमें कोई शक नहीं है," उसने जल्दी से इतना और जोड़ दिया। "आप किस बुनियाद पर यह नतीजा निकालते हैं कि वह इन्कार कर देगी ?"

"जो कुछ मैंने देखा है उसके अलावा मुझे इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं है। वर्वारा अर्दालिओनोव्ना भी अभी कह रही थी..."

"अरे, ये लोग तो इस तरह की बातें इसलिए करती हैं कि उनकी समझ में नहीं आता कि और कहें क्या। वह [illegible] पर हँस रही थी। इतना आप यक़ीन रखिए। मैंने देखा था। यह बात बिलकुल साफ़ थी। शुरू में मुझे इस बात का डर था, लेकिन फिर मैं असलियत समझ गया या शायद यह बात है कि उसने माँ, पापा और वार्या के साथ ऐसा बर्ताव किया।"

"और आपके साथ।"

"शायद हाँ; लेकिन यहाँ औरतों का बदला लेने का हमेशा का यही तरीक़ा है। और कुछ नहीं। वह बहुत चिड़चिड़ी, शक्की और घमण्डी औरत है। बिलकुल उस सरकारी नौकर जैसी जिसे तरक्की न दी गई हो ! वह बस रोब डालना चाहती थी और उन सबके लिए अपना तिरस्कार दिखाना चाहती थी...और मेरे लिए भी। यह सच है, मैं इससे इन्कार नहीं करता।...फिर भी वह मुझसे शादी करेगी। आप अन्दाजा भी नहीं लगा सकते कि आदमी का घमण्ड उससे कैसे-कैसे करतब करवाता है। देखिए, वह मुझे इसलिए बिलकुल निकम्मा समझती है कि मैं इस तरह खुलेआम उसके पैसे की खातिर उससे, दूसरे आदमी की रखैल से, शादी कर रहा हूँ, लेकिन वह यह नहीं समझ पाती कि दूसरा कोई उसे इससे भी घटिया तरीक़े से धोखा देता; वह उदार और प्रगतिशील विचारों की बौछार करता हुआ उसके पीछे-पीछे घूमता, बीच में नारी-समस्या को घसीट लाता, यहाँ तक कि वह पूरी तरह उसके क़ब्ज़े में आ जाती। वह इस नकचढ़ी बेवक़ूफ़ को यक़ीन दिला देता (और सो भी बड़ी आसानी से !) कि वह इसके साथ शादी सिर्फ़ इसलिए करनेवाला है कि इसका दिल बहुत नेक है और यह मुसीबत की मारी है, जबकि दरअसल उसने इससे शादी इसके पैसे की खातिर ही की होती। मुझे इसलिए पसन्द नहीं किया जाता कि मैं दोहरा खेल नहीं खेलना चाहता; हालाँकि मुझे ऐसा करना चाहिए। लेकिन वह खुद क्या कर रही है ? क्या वही बात नहीं ? तो फिर वह मुझसे

नफ़रत क्यों करती है ? वह आख़िर वे सारे चरित्तर क्यों करती है ? किसलिए ? इसलिए कि मैं घुटने टेकने से इन्कार करता हूँ और इसलिए कि मुझमें कुछ स्वाभिमान है। ख़ैर, देखा जाएगा !"

"बताइए मुझे, क्या आप उससे कभी प्यार करते थे ?"

"शुरू में प्यार करता था। ख़ैर, छोड़िए भी इस बात को।...कुछ औरतें बस होती ही रखैल बनने लायक़ हैं और कुछ नहीं। मैं यह नहीं कहता कि वह मेरी रखैल रह चुकी है। अगर वह शान्ति से रहना चाहेगी तो मैं भी शान्ति से रहूँगा; लेकिन अगर उसने लड़ने के तेवर दिखाए तो मैं उसे फ़ौरन छोड़ दूँगा और सारा पैसा ले लूँगा। मैं यह नहीं चाहता कि मेरी हालत ऐसी कर दी जाए कि लोग मुझे देखकर हँसे। सबसे बड़ी बात यही है कि मैं नहीं चाहता कि मेरी हालत ऐसी कर दी जाए कि लोग मुझे देखकर हँसे !"

"मैं समझता हूँ," प्रिंस ने बड़ी सतर्कता से अपना मत व्यक्त किया, "फिर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना बहुत चालाक है। वह अपने आप इस जाल में क्यों फँसेगी जब वह जानती है कि इससे वह कैसी मुसीबत में पड़ जाएगी ? वह किसी और से शादी कर सकती थी न ? कर सकती थी न ? यह बात मेरी समझ में नहीं आती।"

"लेकिन इसमें उसका एक ख़ास इरादा है ! आपको सारी बातें नहीं मालूम, प्रिंस...दोस्त, बात यह है...इसके अलावा उसे पक्का यक़ीन है कि मैं उसकी मुहब्बत में पागल हूँ। मैं आपसे सादर कहता हूँ कि उसे यही यक़ीन है, और मुझे बहुत गहरा शक है कि वह भी मुझसे प्यार करती है, अलबत्ता अपने ढंग से। वह कहावत तो आपको मालूम ही होगी– 'जितना प्यार, उतनी ही फटकार'। वह ज़िन्दगी-भर मुझे बदमाश और धूर्त्त समझेगी (और शायद वह चाहती भी यही है) फिर भी वह अपने ढंग से मुझसे प्यार भी करेगी; वह अपने आपको इसके लिए तैयार कर रही है, उसका चरित्र ही ऐसा है। वह ठेठ रूसी औरत है, मैं आपको बताता हूँ। ख़ैर, मैं भी उसके लिए एक छोटा-सा अचम्भा तैयार कर रहा हूँ। वार्या के साथ अभी जो कुछ हुआ वह तो बस संयोग था, लेकिन उससे फ़ायदा मुझे ही होगा—उसने मेरी लगन को देख लिया है और उसे उसका पूरा विश्वास हो गया है और इस बात का भी कि उसकी खातिर मैं सारे बन्धन तोड़ देने को तैयार हूँ। जिसका मतलब है कि मैं भी कोई बेवक़ूफ़ नहीं हूँ, इतना समझ लीजिए। अरे हाँ, आप कहीं मुझे बातूनी तो नहीं समझते हैं न ? प्रिंस, मेरे प्यारे दोस्त, शायद आपके सामने अपने दिल की सारी बातें कहकर मैं ग़लती कर रहा हूँ। लेकिन महज इसलिए कि आप पहले इज़्ज़तदार आदमी हैं जिससे मेरी मुलाक़ात हुई है, इसलिए मैं आपके ऊपर झपट पड़ा हूँ—और, मेहरबानी करके 'आपके ऊपर झपट पड़ा हूँ' को उसके शाब्दिक अर्थ में न समझिएगा। अभी जो कुछ हुआ उस पर आप नाराज़ तो नहीं हैं न ? दो साल में शायद यह पहला मौक़ा है कि मैंने अपने दिल की बातें किसी के सामने खोलकर रखी हैं। यहाँ बहुत ही थोड़े लोग ऐसे हैं जिन्हें ईमानदार कहा जा सके; सबसे ज़्यादा ईमानदार प्तीत्सिन है। आप हँस तो नहीं रहे हैं न मेरी बात पर ? बदमाश ईमानदार लोगों से प्यार करते हैं—यह बात आपको नहीं मालूम थी ? और मैं हूँ...लेकिन मैं किस तरह बदमाश हूँ, मुझे साफ़-साफ़ बताइए ? वे लोग नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की देखा-देखी मुझे बदमाश क्यों कहते हैं ? और, बात यह है कि उनकी और उसकी तरह ही मैं खुद अपने आपको बदमाश कहता हूँ ! यही असली बदमाशी है !"

"मैं आपको अब फिर कभी बदमाश नहीं समझूँगा," प्रिंस ने कहा। "अभी मैं सोच रहा था कि आप सचमुच दुष्ट आदमी हैं, और अचानक आपने मुझे इस तरह खुश कर दिया,—यह मेरे लिए एक सबक है कि लोगों को जाने-बूझे बिना उनके बारे में कोई फ़ैसला नहीं कर देना चाहिए।

अब मेरी समझ में आ गया कि आपको बदमाश आदमी तो क्या, बहुत बिगड़ा हुआ आदमी भी नहीं समझना चाहिए। मेरी राय में आप सिर्फ़ एक बहुत मामूली आदमी हैं, जितना मामूली कोई आदमी हो सकता है, बस शायद आप बहुत ज़्यादा कमज़ोर हैं और आपमें मौलिकता बिलकुल नहीं है।"

गान्या मन ही मन व्यंगपूर्वक मुस्कराया, लेकिन कुछ बोला नहीं। यह देखकर कि उसकी राय सुनकर गान्या नाराज़ हो गया था, प्रिंस कुछ सिटपिटा गया और चुप भी हो गया।

"पापा ने आपसे पैसा माँगा ?" गान्या ने अचानक पूछा।

"नहीं तो।"

"वह माँगेंगे, लेकिन उन्हें पैसा बिलकुल न दीजिएगा। किसी जमाने में वह उदार भी हुआ करते थे। मुझे अच्छी तरह याद है। भले लोगों में उनकी आवभगत होती थी ! लेकिन कितनी जल्दी इन सबका पतन हो जाता है, इन उदार लोगों का ! जैसे ही उनकी परिस्थितियाँ बदलती हैं, उनमें वह पहलेवाली बात बिलकुल रह ही नहीं जाती, वे यानी हवा में खो जाते हैं। वह पहले इस तरह के झूठ नहीं बोला करते थे, मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ; पहले बस इतना था कि उन्हें जोश ज़रूरत से ज़्यादा आ जाता था और अब उस सबका यह नतीजा निकला है ! ज़ाहिर है, यह सब कुछ शराब की वजह से है। जानते हैं, उनकी एक रखैल है ? अब वह इतने भोले नहीं रह गए हैं कि बस छोटे-मोटे झूठ बोलते हों। मेरी समझ में नहीं आता कि माँ यह सब कुछ इतने दिन से बर्दाश्त कैसे करती आ रही हैं। क्या उन्होंने आपको कार्स की घेराबन्दी का क़िस्सा सुनाया ? या किस तरह उनका भूरा घोड़ा बोलने लगा ? नौबत यहाँ तक पहुँच चुकी है।"

और यह कहकर गान्या एकाएक ठहाका मारकर हँस पड़ा।

"आप मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं ?" उसने प्रिंस से पूछा।

"बस, मुझे ताज्जुब हुआ कि आप इस तरह खुलकर हँसे। आप अब भी बच्चों की तरह हँस सकते हैं। अभी थोड़ी ही देर पहले आप मुझसे सुलह करने आए थे और आपने कहा था, 'आप चाहें तो मैं आपका हाथ चूम लूँ,' बच्चे ठीक इसी तरह सुलह-समझौता करते हैं। मतलब है कि आपमें अब तक उस तरह बात करने और महसूस करने की क्षमता है। और फिर आप अचानक उन तमाम भयानक झंझटों और पचहत्तर हज़ार के बारे में भाषण सुनाने लगे। सचमुच, मुझे तो यह सब कुछ बेतुका और नामुमकिन लगता है।"

"और आप इससे क्या नतीजा निकालते हैं ?"

"कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि आप जो कुछ कर रहे हैं वह बहुत ज़्यादा सोचे-समझे बिना कर रहे हैं, और क्या यह ज़रूरी नहीं है कि आप पहले उसके बारे में अच्छी तरह सोच-विचार कर लें। आपकी बहन का कहना शायद ठीक है।"

"उफ़, यह नैतिकता ! मैं ख़ुद जानता हूँ कि मैं अभी बिलकुल लड़का हूँ," गान्या कुछ उत्तेजित होकर बीच में बोल पड़ा, "और इसके लिए इतना सबूत काफ़ी है कि मैं आपके साथ इन बातों की चर्चा कर रहा हूँ। मैं, प्रिंस, यह भयानक क़दम हिसाब-किताब करके नहीं उठा रहा हूँ," वह उस नौजवान की तरह जिसकी अहंकार की भावना को ठेस लगी हो, अपने सारे भेद खोलता हुआ कहता रहा। "अगर मैं हिसाब-किताब लगाता तो यक़ीनन ग़लती करता, क्योंकि अभी तक मेरे विचारों और मेरे चरित्र में काफ़ी दृढ़ता नहीं है। नहीं, साहब, मैं तो जो कुछ करता हूँ वह अपने जुनून और अपनी पसन्द के ही बल पर करता हूँ, क्योंकि मैंने अपने सामने जो लक्ष्य रखा है वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। आप सोचते ज़रूर होंगे कि जैसे ही मुझे पचहत्तर हज़ार मिलेंगे, मैं फ़ौरन अपने

लिए एक बढ़िया-सी फ़िटन और घोड़ों की जोड़ी खरीद लूँगा। जी नहीं। मैं तब भी वही पुराना कोट पहनता रहूँगा जो मैं तीन साल से पहनता आया हूँ और क्लब के अपने सारे जान-पहचानवालों से पीछा छुड़ा लूँगा। हमारे यहाँ बहुत लोग ऐसे नहीं होते हैं जो अपने फैसले पर चलते रह सकें, हालाँकि सभी सूदखोर होते हैं, लेकिन मैं अपने चुने हुए रास्ते पर चलता रहना चाहता हूँ। असली चीज़ होती है आख़िरी दम तक हिम्मत न हारना—यही सारी समस्या है। प्तीत्सिन जब सत्रह साल का था तब वह सड़क पर सोता था और क़लमतराश चाक़ू बेचता था—उसने बहुत थोड़े पैसों से शुरुआत की थी और अब वह साठ हज़ार की हैसियत का आदमी है, और सब बस पैसे ही के बल पर। ख़ैर, मैं वह सब तो नहीं करूँगा और सीधे कुछ पूँजी से शुरुआत करूँगा। पन्द्रह साल बाद लोग कहेंगे, 'वह रहा ईवोल्गिन, मुकद्दर का सिकन्दर !' आप मुझसे कहते हैं कि मुझमें कोई मौलिकता नहीं है। देखिए, मेरे प्यारे प्रिंस, हमारे जमाने और हमारी नस्ल के आदमी के लिए इससे ज़्यादा बुरी लगनेवाली बात और कोई नहीं हो सकती कि उससे कहा जाए कि वह मौलिक नहीं है, कि उसका चरित्र कमज़ोर है, कि उसमें कोई विशेष प्रतिभा नहीं है और यह कि वह बिलकुल मामूली आदमी है। आपने तो मुझे इस लायक़ भी नहीं आँका कि मुझे एक अच्छा बदमाश समझते और, सच कहता हूँ, उस बात पर मेरा जी चाह रहा था कि आपकी बोटियाँ-बोटियाँ उड़ा दूँ। आपने मेरा येपांचिन से भी ज़्यादा अपमान किया था, जो यह समझते हैं (और, ध्यान रखिएगा, अपने भोलेपन की वजह से, कोई फालतू शब्द इस्तेमाल किए बिना और मुझे कोई लालच दिए बिना) कि मैं अपनी बीवी तक उनके हाथ बेच सकता हूँ ! यह बात बहुत अरसे से मुझे पागल बनाए दे रही है, इसलिए मैं पैसा चाहता हूँ। काफ़ी दौलत जमा कर लेने के बाद मैं याद रखिएगा बेहद मौलिक आदमी बन जाऊँगा। पैसे में सबसे घृणास्पद और बुरी बात यह है कि यह लोगों में प्रतिभा भी पैदा कर देता है। और जब तक दुनिया है तब तक ऐसा ही होता रहेगा। आप कहेंगे कि ये सब बिलकुल बचकाना बातें हैं और शायद रोमांटिक भी। तो क्या हुआ ? मुझे इससे ज़्यादा खुशी मिलेगी और साथ ही मेरा काम बनेगा। मैं इस काम को पूरा करूँगा और आख़िरी दम तक हिम्मत नहीं हारूँगा। Rira bien qui rira le dernier ![1] येपांचिन इस तरह मेरा अपमान क्यों करते हैं ? द्वेष की वजह से ? हरगिज़ नहीं। सिर्फ़ इसलिए कि मैं बेहद तुच्छ हूँ। लेकिन जब मेरे पास...ख़ैर, इतना काफ़ी है। अब मुझे चलना चाहिए। कोल्या दो बार दरवाज़े में से सिर घुसेड़कर झाँक चुका है—वह आपको खाने के लिए बुला रहा है। और मैं बाहर जा रहा हूँ। मैं आकर किसी वक़्त आपसे बातें करूँगा। आप यहाँ बिलकुल ठीक रहेंगे—अब आपके साथ बिलकुल परिवार के ही एक आदमी जैसा बर्ताव किया जाएगा। ध्यान रखिएगा, मेरी ये बातें किसी को बताइएगा नहीं। मैं समझता हूँ कि हम दोनों या तो दोस्त बन जाएँगे या दुश्मन। और, प्रिंस, आपका क्या ख़्याल है कि अगर मैंने आपका हाथ चूम लिया होता (जैसा कि मैं सच्चे दिल से चाहता था), तो क्या उसकी वजह से आगे चलकर मैं आपका दुश्मन बन सकता था ?"

"मुझे तो पूरा यक़ीन है कि यही होता, लेकिन हमेशा के लिए नहीं। आप उस पर क़ायम न रह पाते और आपने मुझे माफ़ कर दिया होता," प्रिंस ने विचार करने के बाद हँसते हुए फ़ैसला किया।

"ओहो, आपके साथ ज़्यादा सतर्क रहना चाहिए। लानत है, आपने अभी अपनी बात में एक बूँद जहर भी मिला दिया है। लेकिन कौन जाने, शायद आप मेरे दुश्मन हों ही। अरे हाँ,—हः-हः-हः !—मैं आपसे पूछना भूल गया। क्या मुझे ठीक लगा था या नहीं कि आपको खुद

1. वक़्त से पहले हँसना मुसीबत में फँसना। (फ्रांसीसी)

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना बहुत पसन्द आई ?"

"हाँ...वह मुझे अच्छी लगती है।"

"क्या आपको उससे प्यार है ?"

"न-हीं।"

"अरे, आप तो शर्म के मारे लाल हो गए और दुःखी लग रहे हैं। अच्छी बात है, अच्छी बात है, मैं हँसूँगा नहीं। अच्छा, मैं अब चलता हूँ। लेकिन, सच तो यह है कि वह नेकचलन औरत है—क्या आप इस बात पर यक़ीन कर सकते हैं ? क्या आप समझते हैं कि वह उस आदमी, तोत्स्की के साथ रहती है ? बिलकुल नहीं ! बहुत अरसे से नहीं। और आपने यह देखा था कि वह कितनी अटपटी है और आज कभी-कभी कितना खिसिया रही थी ? हाँ, सचमुच। उस जैसे लोगों को ही तो दूसरों पर हावी रहने में मज़ा आता है। अच्छा, फिर मिलेंगे !"

गान्या बेझिझक वहाँ से चला गया और जब वह आया था उसकी तुलना में अब उसके मन का बोझ भी बहुत हल्का हो गया था। प्रिंस देर तक विचारों में डूबा हुआ निस्तब्ध बैठा रहा।

कोल्या ने फिर दरवाज़े में से सिर डालकर देखा।

"मैं खाना नहीं खाऊँगा, कोल्या; येपांचिन के यहाँ दोपहर को मैं पेट भरकर खा आया था।"

कोल्या कमरे में आया और उसने प्रिंस को एक पर्चा दिया। जनरल साहब ने भेजा था—तह किया हुआ और सीलबन्द। कोल्या के चेहरे से साफ़ ज़ाहिर था कि उसे वह पर्चा देना कितना बुरा लग रहा था। प्रिंस पर्चा पढ़कर उठ खड़ा हुआ और उसने हैट उठा ली।

"यहाँ से सिर्फ़ कुछ गज़ की दूरी पर है," कोल्या ने बहुत अटपटा महसूस करते हुए कहा। "वह वहाँ बोतल लिए बैठे हैं। कैसे उन लोगों को उधार देने पर राज़ी कर लिया उन्होंने, मेरी समझ में नहीं आता। प्रिंस, मेहरबानी करके बाद में यहाँ के लोगों से कुछ न बताइएगा कि मैंने आपको पर्चा लाकर दिया था। मैं सैकड़ों बार कसम खा चुका हूँ कि ऐसे पर्चे ले जाकर किसी को नहीं दूँगा, लेकिन उन पर मुझे तरस आता है। और, मेहरबानी करके, उनका दिल दुखाने से डर न जाइएगा—उन्हें बस कुछ पैसे दे दीजिएगा, वह सन्तुष्ट हो जाएँगे।"

"मैं खुद, कोल्या, इसके बारे में सोच रहा था। मुझे तुम्हारे बाप से मिलना है...एक काम के सिलसिले में।...आओ, चलो।..."

12

कोल्या प्रिंस को बहुत दूर नहीं, बस लितेइनाया स्ट्रीट तक, एक कॉफ़े में ले गया जिसमें बिलियर्ड खेलने का कमरा भी था। कॉफ़े नीचे की मंज़िल पर था और उसमें जाने का रास्ता सीधे सड़क से था। जनरल ईवोल्गिन ने दरवाज़े के दाहिनी ओर एक अलग कमरे में वहाँ के पुराने आनेवाले की तरह अड्डा जमा रखा था; उनके सामने मेज़ पर बोतल रखी हुई थी और 'Inde'pendance Belge' अखबार तो उनके हाथों में था ही। वह प्रिंस की राह देख रहे थे; प्रिंस को देखते ही उन्होंने अखबार रख दिया और बहुत जोश के साथ लम्बी सफ़ाई देने लगे, लेकिन वह जो कुछ कह रहे थे उसमें से बहुत थोड़ा ही प्रिंस की समझ में आया क्योंकि जनरल साहब उस वक़्त तक लगभग धुत्त हो चुके थे।

"मेरे पास दस रूबल नहीं हैं," प्रिंस ने उनकी बात बीच में ही काटते हुए कहा, "लेकिन यह

पच्चीस रूबल का नोट है। इसे तुड़वाकर पन्द्रह मुझे वापस कर दीजिए, वरना मेरे पास एक दमड़ी भी नहीं रह जाएगी।"

"अरे, फ़िक्र न करो; भरोसा रखो, जहाँ तक..."

"इसके अलावा, जनरल साहब, मैं आपके पास एक प्रार्थना लेकर आया हूँ। आप कभी नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ तो नहीं गए हैं ?"

"मैं ? वहाँ नहीं गया हूँ ? तुम मुझसे पूछ रहे हो ? अरे, दोस्त, मैं वहाँ कई बार हो आया हूँ, कई बार !" जनरल साहब विजयोल्लासपूर्ण और आत्म-सन्तुष्ट व्यंग्य के भावातिरेक से चिल्लाए। "लेकिन मैंने खुद वहाँ जाना छोड़ दिया, क्योंकि मैं एक बेजा सम्बन्ध को बढ़ावा नहीं देना चाहता था। तुम खुद देख चुके हो, तुमने आज सुबह देखा—मैंने यह सब कुछ किया जो एक बाप कर सकता है, विनम्र और नेकदिल बाप। लेकिन अब एक अलग किस्म का बाप सामने आनेवाला है और तब हम देखेंगे कि एक बूढ़ा इज़्ज़तदार सिपाही इस साज़िश को कबूल करता है या एक बेहया छिनाल एक निहायत इज़्ज़तदार खानदान में जबर्दस्ती घुस आएगी।"

"अरे, मैं तो आपसे यह कहनेवाला था कि एक पुराने दोस्त की हैसियत से क्या आप आज शाम मुझे नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के घर ले जाएँगे ? आज रात मुझे वहाँ जाना ही है। मुझे कुछ काम है, लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि वहाँ जाऊँ कैसे। आज मेरा परिचय तो कराया गया था, लेकिन मुझे बुलाया नहीं गया, और वहाँ आज रात को पार्टी है। मैं कुछ नियमों को भी बिल्कुल नज़रअन्दाज़ करने को तैयार हूँ, मैं इसे भी बर्दाश्त कर लूँगा कि लोग मुझ पर हँसें, बस किसी तरह मैं वहाँ जा सकूँ।"

"वाह, मेरे नौजवान दोस्त, तुमने पूरी तरह मेरे ही मन की बात कही है, पूरी तरह," जनरल साहब ने जोश में आकर ऊँचे स्वर में कहा। "मैंने तुम्हें यहाँ इस छोटे-से काम के लिए नहीं बुलाया था," वह पैसा लेकर जेब में रखते हुए कहते रहे। "मैंने तुम्हें यहीं इसलिए बुलाया था कि तुम मेरे साथ नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ चलो या यह कहना ज़्यादा ठीक होगा नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के ख़िलाफ़ मेरी मुहिम में मेरा साथ दो। जनरल ईवोल्गिन और प्रिंस मीश्किन! कैसा लगेगा उसे यह ! जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं उसकी सालगिरह के मौक़े पर सलूक व्यवहार के बहाने वहाँ जाकर आख़िरकार अपने फैसले का एलान कर दूँगा—लेकिन सीधे-सीधे नहीं। जाहिर है, गोल-मोल तरीक़े से। लेकिन वह वैसा ही होगा जैसे सीधे-सीधे किया गया हो। तब गान्या ख़ुद समझ जाएगा कि उसे क्या करना है—जो एक इज़्ज़तदार आदमी है और...मेरा मतलब है...वगैरह वगैरह, या...लेकिन जो होना है वह तो होकर रहेगा ! तुमने बहुत काम की बात सोची है। नौ बजे हम चलेंगे। अभी बहुत वक़्त है हमारे पास।"

"वह रहती कहाँ हैं ?"

"यहाँ से बहुत दूर बोल्शोई थिएटर के पास, मिसेज़ मितोव्त्सोवा के घर में, बिल्कुल चौक से मिला हुआ है, पहली मंज़िल पर।...वहाँ बहुत लोग नहीं होंगे, इस बात के बावजूद कि उसकी सालगिरह है, और लोग वहाँ से जल्दी चले जाएँगे।..."

रात हो चुकी थी; प्रिंस अभी तक बैठा जनरल साहब के किस्से सुन रहा था और उनके उठने का इन्तज़ार कर रहा था; जनरल साहब ने एक-एक करके न जाने कितने किस्से शुरू किए लेकिन ख़त्म एक भी नहीं किया। प्रिंस के आने पर उन्होंने एक बोतल और मँगा ली थी और घंटे-भर बाद उसे ख़त्म कर दिया था; फिर उन्होंने तीसरी बोतल मँगाई थी और उसे भी ख़त्म कर दिया था। इस बात में कोई सन्देह नहीं हो सकता था कि उस वक़्त तक जनरल साहब ने अपनी ज़िन्दगी

की सारी कहानी सुना दी थी। आख़िरकार प्रिंस उठ खड़ा हुआ और बोला कि वह अब और ज़्यादा इन्तज़ार नहीं कर सकता था। जनरल साहब बोतल की तली की आख़िरी बूँद तक पी चुकने के बाद उठ खड़े हुए, और बहुत लड़खड़ाकर चलते हुए कमरे के बाहर चले गए। प्रिंस निराशा में डूब गया। उसकी समझ में नहीं आया कि वह बेवक़ूफ़ों की तरह उनसे उम्मीद कैसे बाँध सका। सच तो यह है कि उसे क्षण-भर को भी उनसे कोई उम्मीद नहीं रही थी। वह तो बस जनरल साहब के सहारे किसी न किसी तरह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ पहुँचना चाहता था, कोई बखेड़ा खड़ा करके भी; हालाँकि उसका इरादा कोई बहुत शर्मनाक बखेड़ा खड़ा करने का नहीं था। जनरल साहब नशे में बुरी तरह चूर थे और बहुत वाचाल हो गए थे। वह बहुत भावुक होकर और आँखों में भावावेश के आँसू भरकर लगातार बोले चले जा रहे थे। उनकी बातों का मुख्य विषय यह था कि हर चीज़ उनके परिवार के सभी सदस्यों के बुरे व्यवहार की वजह से तहस-नहस हुई जा रही थी और यह कि वक़्त आ गया था कि इन सब चीज़ों को फ़ौरन रोक दिया जाए। आख़िरकार वे लितेइनाया स्ट्रीट पहुँच गए। बर्फ़ पिघलने का सिलसिला जारी था। हल्की-हल्की गर्मी लिए हुए, उदास और घुटन-भरी हवा सीटी बजाती हुई सड़कों पर चक्कर लगा रही थी, फिटनें कीचड़ में से छप-छप करती हुई गुजर रही थीं, घोड़ों की टापें सड़क के पत्थरों से गूँजदार आवाज़ पैदा करते हुए टकरा रही थीं। लोग दबे-सिकुड़े, भीगी हुई और निराश भीड़ों के रूप में सड़क की पटरियों पर चले जा रहे थे। कभी-कभी कोई नशे में चूर आदमी भी दिखाई दे जाता था।

"उन बढ़िया फ़्लैटों की जगमग खिड़कियाँ दिखाई दे रही हैं तुम्हें ?" जनरल साहब ने पूछा। "वहाँ मेरे सब साथी रहते हैं, और मुझे, जिसने उन सबसे ज़्यादा वक़्त फ़ौज की नौकरी में बिताया है और ज़्यादा मुसीबतें झेली हैं, बोल्शोई थिएटर तक पैदल जाना पड़ता है, एक बदनाम औरत के घर ! जिस आदमी के सीने में तेरह गोलियाँ हैं...आपको यक़ीन नहीं आता ? फिर भी बिलकुल मेरी ही वजह से पिरोगोव[1] ने पेरिस तार भेजा था और तूफ़ान से घिरे हुए सेवास्तोपोल को कुछ अरसे के लिए छोड़कर चला गया था; यहाँ तक कि पेरिस के शाही दरबार के डॉक्टर नेलातों[2] ने विज्ञान के नाम पर बेखटके आने-जाने की इजाज़त हासिल की थी और मुझे देखने सेवास्तोपोल आया था। ऊँचे से ऊँचे अधिकारियों को इसके बारे में मालूम है। 'अरे, वही ईवोल्गिन जिसके सीने में तेरह गोलियाँ हैं !' इस तरह करते हैं वे लोग मेरी क़द्र। प्रिंस, यह घर देख रहे हो तुम ? उसमें पहली मंज़िल पर मेरे लिए एक पुराने साथी जनरल सोकोलोविच अपने बहुत बड़े और इज़्ज़तदार परिवार के साथ रहते हैं। वह घर, नेव्स्की एवेन्यू के तीन घर और दो घर मोर्स्काया स्ट्रीट में, मेरी जान-पहचानवालों का कुल दायरा बस इतना है, मेरा मतलब है मेरी निजी जान-पहचानवालों का। मेरी बीवी तो बहुत पहले हार मान चुकी है। लेकिन मैं अभी तक बीते दिनों को याद करता रहता हूँ और...और...एक तरह से, अपने उन पुराने साथियों और मातहतों की सुसंस्कृत संगत का आनन्द लेता हूँ, जो अब तक मेरी पूजा करते हैं। यह जनरल सोकोलोविच (अरे, इधर काफ़ी अरसे से मैं उनसे मिलने नहीं गया हूँ, और आन्ना फ्योदोरोव्ना से भी नहीं मिला हूँ मैं)...देखो, मेरे प्यारे दोस्त, जब कोई तुमसे मिलने नहीं आता तो चाहे-अनचाहे तुम भी लोगों के यहाँ जाना छोड़ देते हो। फिर भी...हुँः...तुम मेरा विश्वास तो नहीं करते हो।...पर क्यों न मैं अपने सबसे अच्छे दोस्त और बचपन के साथी के बेटे का परिचय इस बहुत ही अच्छे परिवार से करा दूँ ? जनरल ईवोल्गिन और प्रिंस

1. पिरोगोव, निकोलाई इवानोविच (1801-1881)–प्रसिद्ध रूसी फौज़ी शल्य-चिकित्सक।
2. नेलातों, ओगूस्त (1807-1878)–फ्रांसीसी शल्य-चिकित्सक जो सारे योरप में प्रख्यात थे। वह नेपोलियन तृतीय के दरबारी शल्य-चिकित्सक थे; उन्होंने गैरीबाल्डी का भी इलाज किया था।

मीश्किन ! वहाँ तुम्हें एक लाजवाब लड़की मिलेगी, दोस्त, और एक ही नहीं, बल्कि दो, और तीन तक, सभी हमारी राजधानी के और उसके समाज के अनमोल रत्न—रंग-रूप, शिक्षा, आधुनिक विचार, नारी-समस्या, कविता—सभी का अलग-अलग ढंग से सुखद मिश्रण और ऊपर से उनमें से हर एक के लिए अस्सी-अस्सी हज़ार रूबल का नक़द दहेज, जो नारी-समस्या और सभी सामाजिक समस्याओं के बावजूद काम तो आता ही है...मतलब यह कि मुझे न सिर्फ़ तुम्हारा परिचय कराना चाहिए, बल्कि ऐसा करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। जनरल ईवोल्गिन और प्रिंस मीश्किन ! जी हाँ।"

"फ़ौरन ? अभी ? लेकिन आप भूल गए हैं कि..." प्रिंस बस कहना शुरू ही कर पाया।

"मैं कुछ नहीं भूला हूँ। चले आओ ! इस तरफ़—इन शानदार सीढ़ियों पर। ताज्जुब है कि दरबान क्यों नहीं है, लेकिन आज छुट्टी है और दरबान कहीं चला गया है। उन लोगों ने उस निकम्मे शराबी को अभी तक निकाला नहीं है। इस सोकोलोविच को ज़िन्दगी में जो भी सुख मिला है उसके लिए और फौज़ में अपनी नौकरी के लिए वह मेरा, और सिर्फ़ मेरा एहसान मानता है, लो...पहुँच गए हम लोग।"

प्रिंस ने वहाँ जाने पर आपत्ति करना बेकार समझा और वह जनरल साहब के पीछे चुपचाप चलता रहा कि वह चिड़चिड़ा न उठें; उसे यक़ीन था कि जनरल सोकोलोविच और उनका पूरा परिवार धीरे-धीरे मृगतृष्णा की तरह धुँधला पड़ता जाएगा और पता यह चलेगा कि उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है, इसलिए वे फिर नीचे उतर आएँगे। लेकिन यह देखकर उसका दिल डूबने लगा कि उसका यक़ीन टूटता जा रहा था—जनरल साहब उसे सीढ़ियों पर इस तरह लिए जा रहे थे मानो उनके दोस्त सचमुच वहाँ रहते हों, और हर क्षण उनके बारे में और उस जगह के बारे में गणित की तरह सही ब्योरे की नई-नई बातें बताते जा रहे थे। आख़िरकार जब वे पहली मंज़िल की सीढ़ियाँ चढ़कर दाहिनी ओर एक ठाठदार फ़्लैट के सामने रुके और जनरल साहब घंटी बजाने जा ही रहे थे कि प्रिंस ने अपने मन में वहाँ से भाग जाने का फ़ैसला किया, लेकिन एक विचित्र परिस्थिति की वजह से वह एक क्षण रुक गया।

"आपने कुछ ग़लती की है, जनरल साहब," उसने कहा। "दरवाज़े पर कुलाकोव का नाम लिखा है और आप सोकोलोविच से मिलने जा रहे थे।"

"कुलाकोव...कुलाकोव से कुछ साबित नहीं होता। यह सोकोलोविच का फ़्लैट है और मैं उसके दरवाज़े की घंटी बजा रहा हूँ। भाड़ में जाए कुलाकोव...कोई आ रहा है।"

सचमुच दरवाज़ा खुला। एक खिदमतगार ने बाहर झाँककर देखा और बताया कि मालिक लोग घर पर नहीं हैं।

"कितने दुःख की बात है, कितने दुःख की बात है मेरी तक़दीर !" अर्दालिओन अलेक्सान्द्रोविच ने खेद प्रकट करते हुए कई बार दोहराया। "अच्छा, भले आदमी, मेहरबानी करके उन लोगों से कह देना कि जनरल ईवोल्गिन और प्रिंस मीश्किन खुद सम्मान प्रकट करने आए थे और उन्हें बहुत ही बहुत अफ़सोस हुआ कि..."

इसी समय किसी और ने एक कमरे के दरवाज़े में से झाँककर देखा, देखने से गृहस्थी की देखभाल करनेवाली मालूम होती थी, या शायद गवर्नेस हो, गहरे रंग की पोशाक पहने कोई चालीस साल की औरत थी। जनरल ईवोल्गिन और प्रिंस मीश्किन के नाम सुनकर वह जिज्ञासा और अविश्वास के भाव से उनकी ओर बढ़ आई।

"मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना घर पर नहीं हैं," वह जनरल साहब को ख़ासतौर पर घूरते हुए बोली,

"वह छोटी मालकिन अलेक्सान्द्रा मिख़ाइलोव्ना के साथ अपनी माँ के यहाँ गई हुई हैं।"

"अलेक्सान्द्रा मिख़ाइलोव्ना भी ! हे भगवान, कैसा दुर्भाग्य है ! क्या आप यक़ीन करेंगी, मैडम ? हमेशा मुझे ऐसे ही दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है ! मेरी ओर से उनसे बहुत-बहुत सलाम कहना और अलेक्सान्द्रा मिख़ाइलोव्ना से भी कहना कि उन्हें याद होगा कि...मतलब यह, मैडम, कि उनको मेरी ओर से उन सब बातों के लिए शुभकामनाएँ पहुँचा देना जिनकी उन्होंने एक गुरुवार को शोपां[1] का बैलाड सुनते समय कामना की थी। उन्हें याद होगा...मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ! जनरल ईवोल्गिन और प्रिंस मीश्किन !"

"बिलकुल नहीं भूलूँगी," औरत ने विदा होते हुए पहले से कम सन्देह के भाव से कहा।

नीचे उतरते हुए जनरल साहब उतने ही उत्साह के साथ इस बात पर खेद प्रकट करते रहे कि वे लोग उन्हें घर पर नहीं मिले थे और प्रिंस इतनी आकर्षक जान-पहचान पैदा करने का अवसर चूक गया था।

"एक बात बताऊँ, मेरे दोस्त, मैं दिल से कुछ-कुछ कवि हूँ—तुमने यह बात देखी है कि नहीं ? लेकिन...लेकिन ऐसा लगता है कि हम कुछ ग़लत जगह चले गए थे," उन्होंने अचानक यह अप्रत्याशित नतीजा निकाला। "मुझे अभी याद आया कि सोकोलोविच-परिवार तो दूसरे घर में रहता है, और लगता है कि वे लोग आजकल मास्को में ही हैं। हाँ, मुझसे ज़रा-सी ग़लती हो गई, लेकिन यह...कोई बात नहीं।"

"मैं सिर्फ़ इतना जानना चाहता हूँ," प्रिंस ने निराश भाव से कहा, "कि मैं आप पर ज़रा भी भरोसा रखूँ, या अकेला ही चला जाऊँ।"

"मुझ पर भरोसा रखो ? अकेले चले जाओ ? लेकिन आख़िर क्यों, जब यह मेरे लिए बुनियादी महत्त्व का काम है जिस पर मेरे परिवार के भविष्य का इतना दारोमदार है ! नहीं, मेरे दोस्त, तुम ईवोल्गिन को काफ़ी अच्छी तरह नहीं जानते। 'ईवोल्गिन' कहना 'चट्टान' कहने के बराबर है। तुम ईवोल्गिन पर चट्टान की तरह भरोसा कर सकते हो, जिस स्क्वाड्रन में मैंने नौकरी शुरू की थी वहाँ लोग यही कहा करते थे। बस मुझे रास्ते में सिर्फ़ एक मिनट के लिए उस घर में जाना है जो बरसों से मेरे लिए अपनी परेशानियों और मुसीबतों से बचकर राहत की जगह रहा है।..."

"आप घर जाना चाहते हैं ?"

"नहीं ! मैं मिसेज़ तेरेंत्येवा से मिलने जाना चाहता हूँ, कप्तान तेरेंत्येव की विधवा से; तेरेंत्येव मेरा एक मातहत अफ़सर था और...हाँ...मैं यह भी कह सकता हूँ कि वह मेरा दोस्त था। वहाँ, मिसेज़ तेरेंत्येवा के यहाँ जाकर मुझमें एक ताज़ा उमंग पैदा हो जाती है, और वहीं मैं अपनी सारी सांसारिक चिन्ताएँ और परिवार की मुसीबतें लेकर जाता हूँ। और चूँकि आज मेरे दिमाग़ पर ख़ासतौर पर बहुत भारी बोझ है, इसलिए मैं..."

"मुझे लगता है," प्रिंस ने बुदबुदाकर कहा, "आज शाम आपको तकलीफ़ देकर, मैंने बहुत बड़ी हिमाक़त की। और फिर, अब आप...अच्छा, मैं चला !"

"लेकिन, मेरे दोस्त, मैं नहीं जाने दे सकता, मैं तुम्हें नहीं जाने दे सकता," जनरल साहब ने ज़ोर से कहा। "एक विधवा, कई बाल-बच्चों की माँ, जिसके दिल में ऐसी भावनाएँ पैदा होती हैं जिनसे मेरे दिल के तार झनझना उठते हैं। उसके यहाँ जाना बस पाँच मिनट की बात है। उस घर में मुझे किसी तरह का तकल्लुफ़ नहीं है। मैं तो लगभग रहता ही वहाँ हूँ। मैं जाकर मुँह-हाथ धोऊँगा, अपने को थोड़ा-बहुत शरीफ़ों की महफ़िल में ज़ाने लायक़ बनाऊँगा और फिर किराए की

1. पोलिश संगीतकार (1810-1849)।

घोड़ागाड़ी लेकर बोल्शोई थिएटर की तरफ़ जाएँगे। यक़ीन करो, आज सारी शाम के लिए मुझे तुम्हारी ज़रूरत होगी। वह रहा, उस घर में—लो, हम लोग आ गए...अच्छा, कोल्या, तुम यहाँ पहले से मौजूद हो ? मार्फ़ा बोरीसोव्ना घर पर हैं, या तुम भी अभी-अभी आए हो ?"

"अरे नहीं," कोल्या ने जवाब दिया, जिसकी मुठभेड़ उन लोगों से फाटक पर ही हो गई थी। "मैं इप्पोलीत के साथ बहुत देर से हूँ। उसकी तबियत और खराब हो गई है। आज सुबह से वह बिस्तर पर लेटा है। मैं अभी दुकान तक ताश लेने गया था। मार्फ़ा बोरीसोव्ना आपका इन्तज़ार कर रही हैं। लेकिन, पापा, आपकी हालत है कैसी !" जनरल साहब जिस तरह चल रहे थे और जिस तरह खड़े थे उसे घूरते हुए कोल्या ने निर्णय किया। "ख़ैर, चलिए !"

कोल्या से मुलाक़ात हो जाने की वजह से प्रिंस जनरल साहब के साथ मिसेज़ तेरेंत्येवा के यहाँ जाने को राज़ी हो गया, लेकिन बस एक मिनट के लिए। प्रिंस को कोल्या की ज़रूरत थी; जहाँ तक जनरल साहब का सवाल था उसने पक्का फ़ैसला कर लिया था कि वह उन्हें बहरहाल यहीं छोड़ देगा, और वह अपने आपको इस बात के लिए माफ़ नहीं कर सकता था कि उसने उन पर भरोसा किया था। चौथी मंज़िल तक चढ़ने में, और वह भी पीछे की सीढ़ियों से, उन्हें काफ़ी वक़्त लगा।

"क्या आप प्रिंस का परिचय कराना चाहते हैं ?" कोल्या ने रास्ते में पूछा।

"हाँ, बेटे, परिचय कराना—जनरल ईवोल्गिन और प्रिंस मीश्किन, लेकिन कैसी है...कैसी है मार्फ़ा बोरीसोव्ना की तबियत ?"

"पापा, मैं तो समझता हूँ कि आपको आना नहीं चाहिए ! वह आपको खा जाएँगी ! आप दो दिन से वहाँ नहीं गए हैं और वह पैसे के इन्तज़ार में बैठी हैं। आपने उनसे पैसे देने का वादा क्यों किया था ? आप हमेशा ऐसा ही करते हैं ! अब आप खुद इस झंझट से बाहर निकलिए !"

चौथी मंज़िल पर पहुँचकर वे लोग एक नीचे-से दरवाज़े के सामने रुक गए। साफ़ दिखाई दे रहा था कि जनरल साहब की हिम्मत जवाब दे गई थी और वह प्रिंस को आगे ठेलते जा रहे थे।

"मैं यहीं ठहर जाऊँ," वह बुदबुदाए। "मैं उसे अचम्भे में डाल देना चाहता हूँ।..."

कोल्या सबसे पहले अन्दर गया। ढेरों पाउडर-सुर्ख़ी पोते चालीस साल की एक औरत ने, जिसने फ़र के अस्तरवाली जैकेट और पाँवों में सलीपरें पहन रखी थीं और जिसके बालों की चोटियाँ गुँधी हुई थीं, दरवाज़े में से झाँककर देखा और जनरल साहब का अचम्भा धरा रह गया।

"यह रहा," जनरल साहब को देखते ही वह चीखकर बोली, "नीच, दुष्ट ! मैं अपने दिल में जानती थी !"

"अन्दर आ जाओ, सब ठीक है," जनरल साहब ने प्रिंस से दबी जबान से कहा; वह अभी तक बड़े भोलेपन से मुस्करा रहे थे।

लेकिन सब ठीक नहीं था। वे लोग नीचे अँधेरे प्रवेश-कक्ष में से होकर पतले-से बैठकख़ाने में पहुँचे ही थे, जिसमें ताश खेलने की दो मेजें और बेंत की छह कुर्सियाँ पड़ी थीं, कि मिसेज़ तेरेंत्येवा उसी ताने और शिकायत के लहजे में कहती रहीं जिसकी वह आदी मालूम होती थीं—"तुम्हें शरम नहीं आती, तुम्हें अपने आप पर शरम नहीं आती, बेरहम, नीच दरिन्दे, जल्लाद, पिशाच ! तुमने मेरा सब कुछ लूट लिया, मेरे परिवार को चूसकर खोखला कर दिया, और अब भी तुम्हें सन्तोष नहीं है ! मैं क़ब तक झेलूँ तुमको, तुम जैसे बेहया और बेईमान आदमी को !"

"मार्फ़ा बोरीसोव्ना, मार्फ़ा बोरीसोव्ना ! यह...मैं...यह हैं प्रिंस मीश्किन," पस्त-हिम्मत और बुझे हुए जनरल साहब ने हकला-हकलाकर कहा। "जनरल इवोल्गिन और प्रिंस मीश्किन।"

"क्या आप यक़ीन करेंगे," मिसेज़ तेरेंत्येवा ने अचानक प्रिंस को सम्बोधित करके कहा, "क्या आप यक़ीन करेंगे कि इस बेहया आदमी को मेरे अनाथ बच्चों तक पर दया नहीं आई ! मेरे पास जो कुछ भी था वह यह लूट ले गया, हर चीज़ ले गया, हर चीज़ बेच दी और गिरवी रख दी, कुछ भी नहीं छोड़ा हमारे पास। मैं तुम्हारी हुंडियाँ लेकर क्या करूँगी, चालाक, बेईमान, नीच आदमी ? जवाब दो मुझे, लंपट बदमाश, मुझे जवाब दो, दुष्ट कहीं के ! मैं अपने अनाथ बच्चों को कहाँ से खिलाऊँ; देखो तो इसे—पीकर नशे में ऐसा धुत है कि सीधे खड़ा भी नहीं हुआ जाता !...हाय, मैंने ऐसा क्या किया था कि मुझ पर भगवान का यह कोप टूटा ? जवाब दो, नीच, निर्लज्ज, मक्कार !"

लेकिन जनरल साहब दूसरी ही बातों के बारे में सोच रहे थे।

"मार्फ़ा बोरीसोव्ना, पच्चीस रूबल...बस मैं इतना ही कर सकता हूँ...अपने इन उदार मित्र की बदौलत ! प्रिंस, मैंने सरासर ग़लत रास्ता पकड़ा था। ऐसी...ऐसी है ज़िन्दगी, और अब...माफ़ करना, मैं बहुत कमज़ोर हो गया हूँ," जनरल साहब कमरे के बीच में खड़े चारों ओर झुक-झुककर कहते रहे। "मैं कमज़ोर हो गया हूँ, भाई। माफ़ करना। बेटी, ल्येना, एक तकिया तो ले आना...अच्छी बच्ची !"

आठ वर्ष की लड़की ल्येना फ़ौरन तकिया लाने भागी और उसे सख़्त फटे हुए सोफ़े पर लाकर रख दिया, जिस पर मोमजामा चढ़ा हुआ था। जनरल साहब उस पर बैठ गए, वह बहुत कुछ और कहना चाहते थे लेकिन सोफ़े से लगते ही वह करवट के बल गिर पड़े और दीवार की ओर मुँह करके मासूम की तरह सो गए। मार्फ़ा बोरीसोव्ना ने घोर निराशा से और शिष्टाचार बरतते हुए प्रिंस को ताश की मेज़ के पास पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ जाने का इशारा किया। वह अपना दाहिना गाल हाथ पर टिकाकर मेज़ के दूसरी ओर सामने बैठ गईं और प्रिंस की ओर देखकर आहें भरने लगीं। तीन छोटे छोटे बच्चे, दो लड़कियाँ और एक लड़का, जिनमें ल्येना सबसे बड़ी थी, मेज़ के पास गए, उन्होंने उस पर अपने हाथ रखे और वे भी प्रिंस को एकटक देखने लगे। कोल्या दूसरे कमरे में से आया।

"मुझे बहुत खुशी है, कोल्या, कि तुमसे यहाँ मुलाक़ात हो गई," प्रिंस ने उससे कहा। "शायद तुम मेरी मदद कर सको। देखो, मुझे नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ पहुँचना है। मैंने तुम्हारे पापा से वहाँ ले जाने को कहा था, लेकिन, देखो, वह तो सो रहे हैं। क्या तुम मुझे वहाँ ले चलोगे, क्योंकि मुझे न तो यहाँ की सड़कें मालूम हैं, न रास्ता। वैसे, पता है मेरे पास—बोल्शोई थिएटर के पास मिसेज़ मितोवृत्सोवा का घर।"

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ? अरे, वह तो बोल्शोई थिएटर के पास कभी नहीं रहती थी, और, सच बात जानना चाहते हैं तो पापा उसके घर कभी गए भी नहीं हैं। अजीब बात तो यह है कि आपने उनसे किसी बात की उम्मीद की ही कैसे। वह व्लादीमिर्स्काया स्ट्रीट पर पंचकोण के पास रहती है। यहाँ से बहुत पास है। फ़ौरन चलना ज़रूरी है ? इस वक़्त साढ़े नौ बजे हैं। अच्छी बात है, मैं आपको वहाँ ले जाऊँगा।"

प्रिंस और कोल्या फ़ौरन बाहर निकल गए। अफ़सोस—प्रिंस के पास घोड़ागाड़ी का किराया देने के लिए कोई पैसा नहीं रह गया था, इसलिए पैदल ही चलना पड़ा।

"मैं आपको इप्पोलीत से मिलाना चाहता था," कोल्या ने कहा। "वह इस सलीपरवाली कप्तान की विधवा का सबसे बड़ा बेटा है। वह दूसरे कमरे में था। वह बीमार है और सारे दिन बिस्तर पर लेटा रहता है। बहुत अजीब लड़का है। बिलकुल छुईमुई है, ज़रा-सी बात से उसे ठेस लग जाती

है; और मुझे लगा कि वह आपके ऐसे वक़्त पर आने से शर्मिन्दा होगा।...देखिए, मुझे उतनी शरम नहीं आती है जितनी उसे, क्योंकि, बहरहाल, वह मेरे बाप हैं, लेकिन वह तो उसकी माँ हैं। इसमें फ़र्क़ है, है न, क्योंकि मर्द के लिए ऐसी हालत में होना कोई बदनामी की बात नहीं है। हालाँकि मैं समझता हूँ कि यह केवल एक पूर्वाग्रह है कि इस तरह के मामले में मर्द के विशेषाधिकार ज़्यादा होते हैं। इप्पोलीत बहुत अच्छा है, लेकिन वह कुछ पूर्वाग्रहों का शिकार है।"

"क्या तुमने कहा था कि उसे क्षय-रोग है ?"

"जी हाँ, मैं समझता हूँ कि सबसे अच्छा यही होगा कि वह जल्दी मर जाए। अगर मैं उसकी जगह होता तो मैं यही चाहता कि मर जाऊँ। उसे अपने भाई और बहनों पर तरस आता है—उन बच्चों पर जिन्हें आपने वहाँ देखा था। अगर मुमकिन होता, मेरा मतलब है कि अगर हमारे पास पैसा होता, तो वह और मैं मिलकर एक फ़्लैट ले लेते और अपने परिवारों से नाता तोड़ लेते। हम यही सपना देखते रहते हैं। और अभी मैंने जब उसे मेरे भाई के साथ आपकी झड़प के बारे में बताया, तो उसका गुस्सा भड़क उठा और वह बोला कि अगर कोई आदमी किसी के मुँह पर तमाचा मारे और वह उसे आमने-सामने की लड़ाई के लिए चुनौती न दे तो वह आदमी कमीना है। लेकिन वह बेहद चिड़चिड़ा है। मैंने तो उससे बहस करना छोड़ दिया है। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने आपको अपनी पार्टी में बुलाया तो है न ?"

"सारी मुसीबत तो यही है कि बुलाया नहीं है।"

"फिर आप वहाँ जाएँगे कैसे ?" कोल्या चिल्लाया और सड़क की पटरी के बीच में रुक गया। "और सो भी ऐसे कपड़े पहनकर, जबकि आज उसकी सालगिरह की पार्टी है ?"

"यह तो दरअसल मैं भी नहीं जानता कि मैं अन्दर कैसे जाऊँगा। अगर मुझे अन्दर आने दिया गया तब तो ठीक है, वरना मेरा सारा काम बिगड़ जाएगा। जहाँ तक मेरे कपड़ों का सवाल है, तो उनका कुछ नहीं किया जा सकता।"

"आपको कुछ काम है ? या आप बस 'अमीर-उमरा' के बीच pour passer le temps[1] जा रहे हैं ?"

"नहीं...दरअसल बात यह है...मेरा मतलब है कि मुझे कुछ काम है।...मेरे लिए समझाना मुश्किल है, लेकिन..."

"आपको क्या काम है—यह आपका मामला है। मेरे लिए मुख्य बात यह है कि आप पार्टी में जा रहे हैं तो इसलिए नहीं कि आप हरजाई औरतों, जनरलों और सूदखोरों की आकर्षक संगत में रहना चाहते हैं। अगर आप ऐसा कर रहे होते तो माफ़ कीजिएगा, प्रिंस, मैं आप पर हँसता और आपसे नफ़रत करने लगता। बहुत ही थोड़े ईमानदार लोग बचे हैं यहाँ, कोई भी ऐसा नहीं है जिसकी पूरी तरह इज्जत की जा सके। आप उन्हें हिक़ारत से देखे बिना रह नहीं सकते, लेकिन उन सबका तक़ाजा यही रहता है कि उनकी इज़्ज़त की जाए; वार्या उनमें सबसे आगे है। और एक बात देखी है आपने, प्रिंस, कि हमारे उस जमाने में हर आदमी मुहिमबाज़ है ! और यह बात रूस के बारे में, हमारे प्यारे वतन के बारे में ख़ासतौर पर सच है। और यह सब कुछ हुआ कैसे, यह मेरी समझ में नहीं आता। हर चीज़ इतनी ठोस बुनियाद पर बनी हुई मालूम होती थी, लेकिन अब क्या हालत हो गई है ? हर आदमी इसकी चर्चा कर रहा है, हर जगह इसके बारे में लिखा जा रहा है। भण्डाफोड़ किया जा रहा है। रूस में सभी भण्डाफोड़ करते हैं; माँ-बाप अपने शब्दों से सबसे पहले मुकरते हैं और उन्हें ख़ुद अपने पुराने नैतिक सिद्धान्तों पर शरम आती है। मिसाल के लिए, मास्को में एक

1. वक़्त काटने। (फ़्रांसीसी)

बाप ने अपने बेटे को यह समझाने की कोशिश की कि यह पैसा हासिल करने के लिए कोई कोशिश उठा न रखे। इसकी ख़बर अख़बारों में छपी थी। मेरे जनरल साहब को ही देखिए। क्या हाल हो गया है उनका ? लेकिन मैं समझता हूँ कि मेरे जनरल साहब ईमानदार आदमी हैं। क़सम से ! बस उनकी ऊल-जलूल ज़िन्दगी और शराब की बात है। क़सम से ! उन पर तरस भी आता है; मुझे यह बात कहते डर लगता है, क्योंकि सब लोग हँसेंगे; फिर भी मुझे उन पर तरस आता है—क़सम से ! और इन प्रखर बुद्धिवाले लोगों में क्या अच्छाई है ? वे सब पैसा हड़पनेवाले हैं, उनमें से एक-एक ! इप्पोलीत सूदख़ोरी की पैरवी करता है। उसका कहना है कि यह ज़रूरी है—आर्थिक संकट, तेजी और मन्दी—लानत है उन सब पर ! मुझे उसे इस तरह की बातें करते सुनकर ग़ुस्सा आता है, लेकिन उसके मन में बहुत कटुता भरी है, आपको आसानी से यक़ीन तो नहीं आएगा, पर उसकी माँ, कप्तान की विधवा, जनरल साहब से पैसा लेकर उन्हीं को ऊँचे सूद पर उधार दे देती है—इससे ज़्यादा शर्मनाक कोई और बात हो सकती है ? और क्या आप जानते हैं कि माँ—मेरा मतलब है मेरी माँ—पैसे, कपड़ों और हर चीज़ से इप्पोलीत की मदद करती हैं, और इप्पोलीत के ज़रिए बच्चों की भी, क्योंकि ख़ुद उनकी माँ उनकी देखभाल बुरी तरह करती। और वार्या भी यही करती है।"

"लो, तुम्हीं देखो ! तुम कहते हो कि ईमानदार और दृढ़ स्वभाववाले लोग रह ही नहीं गए हैं और सब लोग पैसा हड़पनेवाले हैं; लेकिन कुछ दृढ़ स्वभाववाले लोग भी हैं—तुम्हारी माँ और वार्या जैसे। क्या ऐसी हालत में लोगों की मदद करना नैतिक बल का प्रमाण नहीं है ?"

"वह वार्या तो अपने अहंकार की वजह से ऐसा करती है और इसलिए कि वह दिखावा करना चाहती है, ताकि वह माँ से पीछे न रह जाए, और...हाँ...माँ सचमुच ऐसी हैं...मैं इज्जत करता हूँ; जी हाँ, मैं इस तरह की चीज़ की इज़्ज़त करता हूँ और मैं इसे ठीक समझता हूँ। इप्पोलीत तक इस बात को महसूस करता है, और उसके मन में बेहद कटुता है। शुरू में वह हँसता था, और कहता था कि मेरी माँ का ऐसा करना धूर्त्तता है, लेकिन अब कभी-कभी वह महसूस करता है। तो आप इसे गलत कहते हैं ? मैं इस बात को ध्यान में रखूँगा। गान्या को इसके बारे में नहीं मालूम है, वरना वह इसे मिलीभगत कहता।"

"तो गान्या को नहीं मालूम है ? मुझे ऐसा लगता है कि गान्या को बहुत-कुछ नहीं मालूम है," प्रिंस के होंठों से, जो किसी और बात के बारे में सोच रहा था, सहसा ये शब्द निकल गए।

"सुनिए, प्रिंस, आप मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। आज जो कुछ हुआ उसे मैं कभी भूल नहीं सकता।"

"तुम भी मुझे बहुत अच्छे लगते हो, कोल्या।"

"आप यहाँ रहेंगे किस तरह ? मुझे जल्दी ही नौकरी मिल जाएगी और मैं कुछ पैसे कमाने लगूँगा। क्यों न हम तीनों साथ रहें, आप, इप्पोलीत और मैं, बस हम तीनों एक साथ। हम लोग एक फ़्लैट ले लेंगे और तब जनरल साहब वहाँ हमसे मिलने आ सकते हैं।"

"मुझे तो बेहद ख़ुशी होगी। बहरहाल, देखा जाएगा। इस वक़्त तो मैं...मैं बहुत परेशान हूँ। क्या ? हम लोग वहाँ पहुँच भी गए ? यह घर...कितना आलीशान फाटक है इसका ! और दरबान ! अच्छा, कोल्या, मुझे तनिक भी पता नहीं कि इस सबका नतीजा क्या निकलेगा।"

प्रिंस बिलकुल खोया-खोया निश्चल खड़ा रहा।

"कल मुझे सब कुछ बताइएगा ? बहुत ज़्यादा डरिए नहीं। मैं उम्मीद करता हूँ सब ठीक ही रहेगा, क्योंकि, प्रिंस, हर बात में मेरी राय आपकी राय से मिलती है। अच्छा, मैं चलता हूँ। मैं वहीं

जा रहा हूँ, जाकर इम्पोलीत को इसके बारे में बताऊँगा। मुझे पूरा विश्वास है कि आपका स्वागत किया जाएगा। इसमें आपको कोई शक नहीं होना चाहिए। वह अपने ढंग की निराली औरत है। उन सीढ़ियों से पहली मंज़िल पर चले जाइए। दरबान आपको बता देगा !"

13

सीढ़ियाँ चढ़ते हुए प्रिंस का दिमाग़ बहुत परेशान था और वह अपना हौसला बढ़ाए रखने की भरपूर कोशिश कर रहा था। "हद से हद यही तो होगा," उसने सोचा, "कि मुझे अन्दर नहीं जाने दिया जाएगा और मेरे बारे में बुरी राय कायम कर ली जाएगी, या शायद मुझे अन्दर आ तो जाने दिया जाएगा, लेकिन मेरे मुँह पर मुझ पर हँसना शुरू कर दिया जाएगा।...अरे, इसकी परवाह किसे है ?" और सच भी यही था कि उसे इस बात का इतना डर नहीं था; लेकिन लाख प्रयत्न करने पर भी वह इस प्रश्न का कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं खोज पा रहा था कि वह यहाँ आ क्यों रहा था और वह वहाँ करेगा क्या। अगर किसी तरह उसे नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से यह कहने का मौक़ा मिल भी गया कि "उस आदमी से शादी करके अपनी ज़िन्दगी तबाह न कीजिए, वह आपसे प्यार नहीं करता है, उसे सिर्फ़ आपके पैसे से प्यार है, उसने मुझे खुद बताया है और अग्लाया येपानचिना ने भी मुझे यही बताया था, और मैं आपको यही बताने आया हूँ," तो भी किसी भी दृष्टि से ऐसा कहना ठीक नहीं होगा। एक और समस्या थी जो अभी हल नहीं हुई थी, एक ऐसी महत्त्वपूर्ण समस्या कि प्रिंस उसके बारे में सोचते भी डरता था, सोच सकता ही नहीं था, उसके अस्तित्व को भी स्वीकार करने का साहस नहीं कर सकता था, उसकी समझ में नहीं आता था कि उसे शब्दों में कैसे बयान किया जाए, और उसके विचार से ही वह शरमा जाता था और काँप उठता था। लेकिन सारी शंकाओं और चिन्ताओं के बावजूद आख़िरकार उसने अन्दर जाकर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को पूछा।

जिस फ़्लैट में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना रहती थी वह बहुत बड़ा तो नहीं था, लेकिन उसकी सज़ावट बहुत शानदार थी। पीटर्सबर्ग में उसने जो पाँच साल बिताए थे उसके शुरू में एक दौर ऐसा था जब तोत्स्की ने उस पर पैसा लुटाने में कोई कसर नहीं उठा रखी थी; उस समय तक तोत्स्की को उसका प्यार पाने का भरोसा था और उन्होंने मुख्यतः ऐश-आराम से उसे लुभाने की कोशिश की थी, क्योंकि वह अच्छी तरह जानते थे कि ऐश की आदतें कितनी आसानी से पड़ जाती हैं और बाद में चलकर जब वे ज़रूरत बन जाती हैं तो उन्हें छोड़ना कितना मुश्किल होता है। इस मामले में तोत्स्की प्राचीन परम्पराओं पर ही चलते रहे, उन्होंने उनमें कोई परिवर्तन नहीं किया और उन्हें विषय-भोग की अजेय शक्ति में अपार आस्था थी। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ऐश-आराम से इन्कार नहीं करती थी, बल्कि सच तो यह है कि वह उसे बेहद पसन्द करती थी, लेकिन और यह बात बहुत अजीब मालूम होती थी—वह कभी उसका शिकार नहीं हुई, मानो हमेशा से वह उसके बिना भी अपना काम चला सकती हो; उसने यह बात तोत्स्की को कई बार बता भी दी, जिस पर तोत्स्की को बहुत झुँझलाहट भी हुई। लेकिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना में बहुत-सी बातें ऐसी थीं जिन पर तोत्स्की को न सिर्फ़ झुँझलाहट होती थी बल्कि जिनकी वजह से बाद में चलकर वह उससे नफ़रत भी करने लगे थे। जिस तरह के लोगों से वह दोस्ती करती थी, और इसलिए जिस तरह के लोगों से दोस्ती करना उसकी प्रवृत्ति ही थी, उनमें परिष्कार के सर्वथा अभाव के अलावा उसमें और भी कई विचित्र प्रवृत्तियाँ थीं—उसमें दो अलग-अलग रुचियों का एक तरह का बर्बरतापूर्ण मिश्रण पैदा हो गया था, ऐसी चीज़ों, उपायों और साधनों को इस्तेमाल करना और उनसे सन्तुष्ट रहना, जिनके

"फ़र्क़ इसलिए पड़ता है कि उसे यहाँ आने की क़ीमत चुकानी पड़ेगी" फ़ेर्दीश्चेंको ने समझाते हुए कहा।

"ख़ैर," जनरल येपांचिन ने, जो अभी तक इस विचार को स्वीकार कर लेने के लिए अपने आपको मजबूर नहीं कर सके थे कि वह उसी महफ़िल में उसी हैसियत से रहे जैसे फ़ेर्दीश्चेंको, कहा, "प्रिंस मीश्किन, बहरहाल, फ़ेर्दीश्चेंको नहीं है।"

"मेहरबानी करके, जनरल साहब, फ़ेर्दीश्चेंको को उसके हाल पर छोड़ दीजिए," फ़ेर्दीश्चेंको ने खीसें निकालकर कहा। "यहाँ मेरी एक ख़ास हैसियत है।"

"कैसी ख़ास हैसियत, बताओ तो ?"

"पिछली बार मैंने यह बात सारी महफ़िल को विस्तार से समझाई थी, लेकिन, आलीजनाब, आपकी जानकारी के लिए उसे एक बार फिर दोहराने में मुझे कोई एतराज नहीं है। देखिए, आलीजनाब, यहाँ हर आदमी इतना हाज़िरजवाब है जितना मैं नहीं हूँ। इस कमी को पूरा करने के लिए सच बात कहने की मैंने इजाज़त ले ली है, क्योंकि, जैसा कि सभी जानते हैं, सच सिर्फ़ वही लोग बोलते हैं जो हाज़िरजवाब नहीं होते। इसके अलावा मुझमें बदला लेने की भावना बहुत प्रबल है, और वह भी इसलिए कि मुझे बहुत हाज़िरजवाबी नहीं आती। मैं हर तरह का अपमान चुपचाप सह लेता हूँ, लेकिन उस वक़्त तक, जब तक अपमान करनेवाला ख़ुद मुसीबत में नहीं फँस जाता; जब यह हालत पैदा हो जाती है तो मुझे फ़ौरन यह बात याद आ जाती है और मैं किसी तरह अपना बदला लेता हूँ, मैं दुलत्ती झाड़ता हूँ, जैसा कि प्तीत्सिन ने मेरे बारे में कहा है, जो ख़ुद कभी किसी पर दुलत्ती झाड़ता ही नहीं। आप क्रिलोव[1] की कविता 'शेर और गदहा' से तो परिचित हैं न ? तो, वह आप और मैं हूँ। यह कहानी हमारे बारे में लिखी गई थी।"

"तुम फिर बहुत बकवास कर रहे हो, फ़ेर्दीश्चेंको," जनरल ने भड़ककर कहा।

"क्यों, आलीजनाब, आपको क्या परेशानी है ?" फ़ेर्दीश्चेंको ने जवाबी वार किया; वह इसकी राह ही देख रहा था कि उसे अपनी बात विस्तार से जारी रखने का मौक़ा मिले। "आप फ़िक्र न कीजिए, आलीजनाब, मैं अपनी जगह पहचानता हूँ। अगर मैंने यह कहा कि आप और मैं क्रिलोव की कविता का शेर और गदहा हैं तो, ज़ाहिर है, मेरी भूमिका गदहे की है। आप शेर हैं, आलीजनाब, जैसा कि क्रिलोव की कविता में कहा गया है—

शेर बबर वह महाबली, सारा जंगल जिससे थर्राता
बूढ़ा होने पर वह अपनी सारी ताक़त खो बैठा था।

और मैं हूँ, आलीजनाब, गदहा।"

"मैं तुम्हारी इस आख़िरी बात को मानता हूँ," जनरल येपांचिन के मुँह से असावधानी में निकल गया।

यह सब कुछ, ज़ाहिर है, बहुत ही भद्दा था और जान-बूझकर किया जा रहा था, लेकिन यह बात आमतौर पर स्वीकार कर ली गई थी कि फ़ेर्दीश्चेंको को भड़ैती करने की छूट दे दी गई थी।

"अरे," फ़ेर्दीश्चेंको ने एक बार ख़ुद कहा था, "मुझे सिर्फ़ इसलिए बर्दाश्त किया जाता है और यहाँ आने दिया जाता है कि मैं इस तरीक़े की बातें करूँ। क्या आप सचमुच समझते हैं कि मुझ जैसे आदमी को कोई अपने यहाँ बुला सकता है ? मैं इस बात को अच्छी तरह समझता हूँ। क्या आप सचमुच ऐसा सोचते हैं कि मुझ जैसे आदमी को मिस्टर तोत्स्की जैसे सौ फ़ीसदी शरीफ़ आदमी के बग़ल में बैठने को कहा जा सकता है ? इसकी बस एक वजह हो सकती है—मुझे ऐसा करने

1. क्रिलोव, इवान अन्द्रेयेविच (1786-1844)—नीति-कथाओं के प्रसिद्ध रूसी लेखक।

की इजाज़त इसलिए दी जाती है कि ऐसी बात सोचना भी नामुमकिन है।"

उसकी बातें बहुत भद्दी होने पर भी बहुत ही तीखी होती थीं, और कहीं-कहीं बहुत चुभती हुई भी, और शायद यही बात नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को अच्छी लगती थी। जो लोग उससे मिलने आना चाहते थे उन्हें फ़ेर्दीश्चेंको को बर्दाश्त करना पड़ता था। शायद उसका यह समझना सच ही था कि उसको सिर्फ़ इसलिए आने दिया जाता था कि शुरू से ही तोत्स्की को उसका वहाँ मौजूद रहना बर्दाश्त नहीं था। गान्या भी उसके हाथों न जाने कितनी यातनाएँ झेल चुका था, और इस मामले में फ़ेर्दीश्चेंको ने अपने आपको नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के लिए बहुत उपयोगी बना लिया था।

"सबसे पहले तो मैं प्रिंस से कोई लोकप्रिय गाना सुनकर रहूँगा, उन्हें गाना ही पड़ेगा," फ़ेर्दीश्चेंको ने अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा, और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की ओर यह जानने के लिए देखा कि वह क्या कहती है।

"मैं ऐसा नहीं समझती, फ़ेर्दीश्चेंको," उसने रूखेपन से कहा, "और मेहरबानी करके इतने जोश में न आओ।"

"अच्छी बात है, अगर उनकी ख़ासतौर पर सरपरस्ती की जा रही है तो मैं भी ज़्यादा नरमी बरतूँगा।"

लेकिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना उसकी बात सुने बिना ही उठ खड़ी हुई और खुद प्रिंस से मिलने गई।

"मुझे बड़ा अफ़सोस रहा," उसने अचानक प्रिंस के सामने आकर कहा, "कि आज जल्दी में मैं आपको अपनी पार्टी में बुलाना भूल गई थी, और मुझे बड़ी खुशी है कि आपने मुझे शुक्रिया अदा करने और यहाँ आने का फ़ैसला करने के लिए आपकी तारीफ़ करने का मौक़ा दिया।"

यह कहते हुए वह यह जानने की कोशिश में प्रिंस को बहुत ग़ौर से देख रही थी कि यहाँ आने के पीछे उसका उद्देश्य क्या था।

उसके इन अनुग्रह-भरे शब्दों के जवाब में प्रिंस शायद कुछ कहता, लेकिन वह इतना चकाचौंध और मन्त्रमुग्ध हो गया था कि वह एक शब्द भी नहीं कह सका। यह देखकर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना बहुत खुश हुई। आज शाम वह पूरी तरह सजी-बनी थी, और वह इतनी आकर्षक लग रही थी कि देखनेवाले की नज़र जमकर रह जाती थी। प्रिंस की बाँह पकड़कर वह उसे अपने मेहमानों के पास ले गई। ड्राइंग-रूम के दरवाज़े पर पहुँचकर प्रिंस अचानक रुक गया और उसने बड़ी उद्विग्नता के दबे स्वर में जल्दी-जल्दी नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से कहा—"आपकी हर चीज़ लाजवाब है...यह बात भी कि आपका रंग पीला है और आप दुबली-पतली हैं...दूसरे रूप में आपकी कल्पना करने को जी ही नहीं चाह सकता।...आपसे आकर मिलने को मेरा बहुत दिल चाह रहा था...मैं...मुझे माफ़ कीजिएगा..."

"माफ़ी मत माँगिए," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने हँसकर कहा, "उससे सारी विचित्रता और मौलिकता नष्ट हो जाएगी। तो आपके बारे में जो यह कहा जाता है कि आप विचित्र आदमी हैं, वह सच है। तो आप यह समझते हैं कि मेरे जैसा लाजवाब कोई हो ही नहीं सकता?"

"जी हाँ।"

"ख़ैर, हो सकता है आप अटकल लगाने में बहुत अच्छे हों, लेकिन इस बार आप चूक गए। मैं रात को आपको इसकी याद दिलाऊँगी।..."

उसने अपने मेहमानों से उसका परिचय कराया, जिनमें से आधे से ज़्यादा से तो वह पहले ही मिल चुका था। तोत्स्की ने फ़ौरन शिष्टता के कुछ शब्द कहे। ऐसा लग रहा था कि सबमें नई

जान पड़ गई थी। सभी बातें करने लगे और हँसने लगे। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने प्रिंस को अपने पास बिठा लिया।

"लेकिन प्रिंस के यहाँ आने में ऐसी ताज्जुब की क्या बात है ?" फ़ेर्दीश्चेंको ने सब लोगों से ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाकर कहा। "बिलकुल सीधी-सादी बात है, अपना हाल खुद बता देती है।"

"सच तो यह है कि ज़रूरत से ज़्यादा सीधी-सादी बात है और अपना हाल ज़रूरत से कुछ ज़्यादा ही बता देती है," गान्या, जो उस वक़्त तक बिलकुल खामोश था, अपनी चुप्पी तोड़कर बोला। "आज मैं प्रिंस को लगभग लगातार ही देखता रहा हूँ, उस वक़्त से जब आज सबेरे उसने नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की तस्वीर पहली बार इवान फ़्योदोरोविच येपांचिन की मेज़ पर देखी थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने उस वक़्त एक ऐसी बात सोची थी जिसका अब मुझे पूरा यक़ीन हो गया है और, लगे हाथ मैं यह भी बता दूँ कि प्रिंस ने खुद यह बात मेरे सामने मानी है"

गान्या ने यह सब कुछ बड़ी गम्भीरता से कहा और उसमें मज़ाक़ का कहीं नाम भी नहीं था, बल्कि उसकी आवाज़ में कुछ उदासी सी थी, जो बहुत अजीब मालूम हो रही थी।

"मैंने आपके सामने कुछ भी नहीं माना है," प्रिंस ने शर्माते हुए जवाब दिया। "मैंने बस आपके सवाल का जवाब दिया था।"

"शाबाश, शाबाश !" फ़ेर्दीश्चेंको ने चिल्लाकर कहा। "बहरहाल, सच्चाई तो है इसमें। चालाकी भी और सच्चाई भी, एक साथ !"

सब लोग ज़ोर से हँस पड़े।

"अरे, चिल्लाइए मत, फ़ेर्दीश्चेंको," प्तीत्सिन ने नफ़रत के साथ दबी जबान से उससे कहा।

"मुझे, प्रिंस, तुमसे ऐसे कमाल दिखाने की उम्मीद नहीं थी," जनरल येपांचिन ने कहा। "जानते ही हो तुम कौन-कौन इस तरह की हरकत कर सकता है ? और मैं समझता था कि तुम फ़लसफ़ी हो। देखो इस छिपे रुस्तम को !"

"और इस बात को देखते हुए कि एक सीधे-सादे मज़ाक़ पर प्रिंस भोली लड़की जैसे लजा रहे हैं, मैं यह नतीजा निकालता हूँ कि एक इज़्ज़तदार नौजवान की तरह वह अपने दिल में निहायत शरीफ़ाना इरादे रखते हैं," सत्तर-वर्षीय पोपले मुँहवाले मास्टर साहब ने, जो उस वक़्त तक बिलकुल चुप बैठे थे और जिनसे किसी को एक शब्द भी बोलने की उम्मीद नहीं थी, अचानक बिलकुल अप्रत्याशित रूप से कहा, बल्कि कहना चाहिए कि वह गुनगुनाए। सब लोग पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से हँस पड़े। बूढ़े मास्टर साहब शायद यह सोचकर कि ये लोग उनके वाक्-चातुर्य पर हँस रहे थे उनकी ओर देखकर ज़्यादा ज़ोर से हँसने लगे, जिसकी वजह से उन्हें खाँसी का ऐसा दौरा पड़ा कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, जिसे न जाने क्यों इस तरह के बुड्ढे-बुढ़ियाँ बहुत अच्छे लगते थे, और वे लोग भी जिनके दिमाग़ में कुछ खराबी भी हो, फ़ौरन उनकी पीठ सहलाने लगी। उसने उन्हें चूमा, और उनके लिए और चाय मँगाई। जो नौकरानी चाय लेकर आई थी उससे उन्होंने अपना दुशाला मँगाया और उसे अपने शरीर पर लपेट लिया और आतिशदान में कुछ और लकड़ी डाल देने को कहा। इस सवाल के जवाब में कि वक़्त क्या हो गया था, नौकरानी ने कहा कि साढ़े दस बज चुके थे।

"मेहरबान, थोड़ी-सी शैम्पेन पिएँगे ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने अचानक पूछा। "मेरे पास सब तैयार है। शायद उससे आप लोगों की खुशमिजाजी बढ़ जाए। मेहरबानी करके कोई तकल्लुफ़ न कीजिएगा।"

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के मुँह से शैम्पेन पीने का निमन्त्रण, और सो भी इतने भोले शब्दों में,

कुछ अजीब लग रहा था। वे सब लोग उसकी इससे पहले की पार्टियों के असाधारण शिष्टाचार से अच्छी तरह परिचित थे। कुल मिलाकर, पार्टी में ज़्यादा जान पड़ती जा रही थी, लेकिन उस तरह नहीं जैसे आमतौर पर होता है। लेकिन शराब से सबसे पहले तो स्वयं जनरल साहब ने इन्कार नहीं किया, फिर उन चुस्त और फुर्तीली महिला, बूढ़े सज्जन और फ़ेर्दीश्चेंको ने और उनके साथ बाक़ी सब लोगों ने। महफ़िल में अभी-अभी जो नया रंग पैदा होना शुरू हुआ था उसे जहाँ तक हो सके रुचिकर हँसी-मज़ाक़ का रंग देकर सामंजस्य बनाए रखने की उम्मीद से तोत्स्की ने भी अपना गिलास ले लिया। सिर्फ़ गान्या ने कुछ नहीं पिया। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने भी एक गिलास लेकर कहा कि आज मैं तीन गिलास पिऊँगी। उसके विचित्र और कभी-कभी अत्यन्त उग्र तथा अप्रत्याशित विस्फोटों का कुछ सिर-पैर समझ में नहीं आ रहा था, न ही उसकी दीवानों जैसी निरुद्देश्य हँसी का, जिसके बीच में बार-बार उस पर उदासी का दौरा पड़ता था और वह चुप होकर गम्भीर हो जाती थी। उसके कुछ मेहमानों को शक था कि उसे बुखार था; आख़िरकार उन्हें पता चला कि वह शायद किसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रही थी, कि वह बार-बार घड़ी देखती थी और बेचैन होकर अपने ख़्यालों में खो जाती थी।

"आपको कुछ बुखार तो नहीं है ?" चुस्त और फुर्तीली महिला ने पूछा।

"कुछ नहीं बल्कि बहुत ज़्यादा," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने जवाब दिया। "इसीलिए तो मैंने दुशाला लपेट लिया है।" सचमुच वह हमेशा से ज़्यादा पीली लग रही थी और कभी-कभी उसे कोशिश करके ज़ोर की कँपकँपी को दबाना पड़ता था।

सब लोग सहम गए और अपनी जगहों पर बेचैनी से कसमसाने लगे।

"क्यों न हम लोग अपनी मेजबान को आराम करने के लिए जाने दें ?" तोत्स्की ने जनरल येपांचिन की ओर देखते हुए कहा।

"बिलकुल नहीं, सज्जनो ! मैं चाहती हूँ कि आप यहाँ रुकें। मुझे आज रात आपके मौजूद रहने की ख़ासतौर पर ज़रूरत है," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने अचानक बड़े अर्थपूर्ण ढंग से आग्रह करते हुए एलान किया। चूँकि उसके लगभग सभी मेहमानों को मालूम था कि उस शाम बहुत महत्त्वपूर्ण फ़ैसला किया जाना था, इसलिए उसके ये शब्द और भी अर्थपूर्ण लगे। जनरल और तोत्स्की ने एक बार फिर एक-दूसरे की ओर देखा, और गान्या झटके के साथ चौंक पड़ा।

"बुरा ख़्याल नहीं है अगर हम लोग कोई खेल खेलें," फुर्तीली महिला ने कहा।

"मुझे एक बहुत अच्छा नया खेल मालूम है," फ़ेर्दीश्चेंको ने उछलकर कहा। "बहरहाल, यह सिर्फ़ एक बार खेला गया था, और उस बार भी बात कुछ बनी नहीं थी।"

"क्या खेल है ?" फुर्तीली महिला ने पूछा।

"एक शाम हम बहुत-से लोग एक पार्टी में थे—अलबत्ता, हम लोगों ने थोड़ी-सी पी भी रखी थी—इतने में किसी ने सुझाव रखा कि हर आदमी मेज़ पर से उठे बिना ख़ुद अपनी ज़िन्दगी की कोई घटना सुनाए, कोई ऐसी चीज़ जिसे वह अपनी पूरी ज़िन्दगी के उन तमाम बुरे कामों में से, जिनके लिए वह जिम्मेदार था, ईमानदारी के साथ सबसे बुरा समझता हो, लेकिन—और असली बात यही है—उसे वह घटना बिलकुल साफ़-साफ़ शब्दों में सुनानी होगी और झूठ बिलकुल नहीं बोलना होगा।"

"बहुत अजीब ख़्याल है," जनरल येपांचिन ने कहा।

"इससे अजीब कोई और बात हो ही नहीं सकती, आलीजनाब, लेकिन इसीलिए तो यह इतनी अच्छी है।"

"अजीब ऊटपटाँग ख़्याल है," तोत्स्की ने कहा, "लेकिन यह समझना मुश्किल नहीं है कि यह भी एक ख़ास तरह की शेख़ी है।"

"ख़ैर, शायद यही तो दरकार था, अफ़ानासी इवानोविच।"

"अरे," फुर्तीली महिला ने अपनी राय देते हुए कहा, "इस तरह के खेल में तो हँसी से ज़्यादा रुलाई आएगी।"

"सारी चीज़ बिलकुल बेतुकी और नामुमकिन है," प्तीत्सिन ने एलान किया।

"लेकिन क्या वह कामयाब रहा ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने पूछा।

"अरे, यही तो मुसीबत है, वह कामयाब नहीं रहा। बुरी तरह नाकामयाब रहा। दरअसल, हर आदमी ने कुछ न कुछ सुनाया, और कई लोग सच भी बोले, और, सच पूछिए तो उनमें से कुछ को ऐसा करना बहुत अच्छा भी लगा, लेकिन बाद में हर आदमी शर्मिन्दा हुआ—यह उनके लिए बर्दाश्त के बाहर था ! लेकिन, कुल मिलाकर, बहुत मज़ा आया, ज़ाहिर है अपने क़िस्म का एक ख़ास मजा।"

"सचमुच यह बहुत अच्छा रहेगा," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने कहा; उसके चेहरे पर अचानक चमक आ गई। "आइए, शुरू करते हैं। सचमुच महफ़िल का रंग बहुत फीका है, है न ? क्यों न हर आदमी कुछ न कुछ बताने के लिए राज़ी हो...इसी तरह की कोई चीज़...अपनी मर्जी की, ज़ाहिर है ? बहरहाल, ख़याल बहुत अनोखा है।"

"लाजवाब ख़याल है !" फ़ेर्दीश्चेंको फिर उछल पड़ा। "औरतों को छूट है, शुरू मर्द करेंगे। हम लोग पर्ची निकालेंगे, जैसा हमने उस बार किया था। आइए, पर्ची निकालें। जो न चाहे वह बेशक कुछ न सुनाए, लेकिन मतलब है कि वह बहुत ही ग़ैर-शरीफ़ आदमी होगा। काग़ज़ की पर्चियों पर अपने-अपने नाम लिखकर मेरी हैट में डाल दीजिए, साहबान, और प्रिंस को उसमें से एक-एक करके पर्चियाँ निकालने दीजिए। बिलकुल सीधा-सादा सवाल है—आपने अपनी ज़िन्दगी में जो सबसे बुरा काम किया हो उसे बयान करना—इससे ज़्यादा सीधी-सादी बात तो कोई और हो ही नहीं सकती, साहबान ! आप अभी एक मिनट में खुद देखेंगे ! अगर कोई भूल जाएगा तो मैं उसे याद दिलाने का जिम्मा लेता हूँ।"

विचार शायद ही किसी को अच्छा लगा हो। कुछ के माथे पर बल पड़ गए, कुछ चुपके से मुस्कराकर रह गए। कुछ ने आपत्ति की, लेकिन ज़्यादा नहीं—मिसाल के लिए, जनरल इवान फ़्योदोरोविच येपांचिन, जो नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की बात का खण्डन नहीं करना चाहते थे और जिनकी नज़र से यह बात चूकी नहीं थी कि यह अजीब विचार उसे कितना अच्छा लगा था। अपनी इच्छाओं के मामले में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना हमेशा से अदम्य और निर्मम थी, बस, अगर वह उनके बारे में बताने का साहस करती, चाहे वे कितनी ही मनमौजी और खुद उसके लिए बेकार क्यों न होती हों। और इस वक़्त भी वह हिस्टीरिया का शिकार मालूम हो रही थी; वह तरंग में थी, अचानक हँस पड़ती थी, जैसे उस पर दौरा पड़ा हो, ख़ासतौर पर तोत्स्की की चिन्ता-भरी आपत्तियों पर। उसकी काली आँखें चमक रही थीं, गालों पर दो लाल धब्बे उभर आए थे। उसके कुछ मेहमानों के चेहरों पर निराशा और तुनक-मिज़ाजी की मुद्रा ने शायद उसकी इस व्यंगपूर्ण इच्छा की ज्वाला को कुछ और भड़का दिया था। शायद उस विचार की निर्ममता और क्रूरता उसे ख़ासतौर पर पसन्द आई थी। कुछ लोगों को तो इसका भी विश्वास था कि वह ऐसा किसी विशेष कारण से कर रही थी। बहरहाल, आख़िर में वे सब राज़ी होने लगे। कुछ भी हो, सभी जिज्ञासा से उतावले हो रहे थे और कुछ लोगों के लिए यह विचार बहुत आकर्षक था। फ़ेर्दीश्चेंको सबसे ज़्यादा जोश में था।

"लेकिन," अल्पभाषी नौजवान ने दबी जबान से पूछा, "अगर कोई ऐसी बात हो जिसे न बयान किया जा सकता हो...औरतों के सामने ?"

"तो उसे मत बताओ," फ़ेर्दीश्चेंको ने जवाब दिया। "जैसे उनके बिना कुकर्मों की कोई कमी है। उफ़, नौजवान, नौजवान !"

"लेकिन मुझे यह नहीं मालूम कि मेरा कौन-सा काम सबसे बुरा है," फुर्तीली महिला बीच में बोलीं।

"औरतों को कोई क़िस्सा न सुनाने की छूट है," फ़ेर्दीश्चेंको ने एक बार फिर कहा। "लेकिन सिर्फ़ छूट है, मनाही नहीं; अगर कोई चीज़ सुनाने को उनका बेहद जी चाहता है तो उसे बड़ी खुशी से स्वीकार किया जाएगा। मर्दों को छूट सिर्फ़ उस हालत में मिलेगी अगर उनकी आपत्तियों में बहुत दम हो।"

"लेकिन तुम यह साबित कैसे करोगे कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ ?" गान्या ने पूछा। "और अगर मैं झूठ बोलता हूँ तो खेल का सारा ढाँचा ही ढह जाएगा। और कौन है ऐसा जो झूठ नहीं बोलेगा ? मुझे यक़ीन है कि सभी बोलेंगे।"

"इसमें यही बात तो आकर्षक है कि किस तरह आदमी झूठ बोलेगा। लेकिन तुम्हें, मेरे दोस्त, झूठ बोलने से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि हर आदमी जानता है कि तुम्हारी सबसे बुरी हरकत बहरहाल कौन-सी है। लेकिन ज़रा सोचिए, साहबान," फ़ेर्दीश्चेंको ने बहुत उत्प्रेरणा के साथ चिल्लाकर कहा, "ज़रा सोचिए, हम लोग अपने-अपने क़िस्से सुना चुकने के बाद एक-दूसरे को कल, मिसाल के लिए, किन नज़रों से देखेंगे !"

"लेकिन क्या सचमुच ऐसा हो सकता है ?" तोत्स्की ने बड़ी गरिमा से पूछा। "क्या, यह सब कुछ गम्भीरता से किया जा रहा है, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ?"

"जब ओखली में सिर दे ही दिया तो मूसलों से क्या डरना," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने मुस्कराकर कहा।

"लेकिन, बात सुनो, फ़ेर्दीश्चेंको, इस तरह की चीज़ को खेल नहीं बनाया जा सकता, है न ?" तोत्स्की लगातार अधिक आतंकित होकर कहते रहे। "मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ कि इस तरह की चीज़ें कभी कामयाब नहीं होतीं। तुमने अभी खुद कहा कि एक बार यह नाकामयाब रह चुका है।"

"नाकामयाब ? अरे, पिछली बार मैंने सबके सामने बता दिया था कि मैंने तीन रूबल कैसे चुराए थे। बस बता दिया।"

"हो सकता है। लेकिन तुम उसे यक़ीनन इस तरह नहीं बयान कर सके होंगे कि वह सच मालूम हो। गव्रीला अर्दालिओनोविच ने अभी ठीक ही कहा था कि ज़रा झूठ बोलने से सारा मज़ा किरकिरा हो जाएगा। इस क़िस्म के मामले में सच तो सिर्फ़ संयोग से ही मुमकिन है, जब क़िस्सा सुनानेवाला ख़ासतौर पर डींग मारने पर उतारू हो, जो यहाँ के लिए बहुत बेजा बात है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।"

"लेकिन आप भी बड़े गहरे आदमी हैं, अफ़ानासी इवानोविच," फ़ेर्दीश्चेंको ने ज़ोर से कहा। "अरे, मुझे तो आप पर ताज्जुब होता है ! महिलाओं और सज्जनो, आप लोग यह तो समझ ही गए होंगे कि यह कहकर कि मैं अपनी चोरी की कहानी इस तरह सुना ही नहीं सका हूँगा कि वह सच मालूम हो, अफ़ानासी इवानोविच ने बड़े गोल-मोल तरीक़े से इशारों-इशारों में यह कहा है कि मैंने पैसा चुराया ही नहीं होगा (क्योंकि सबके सामने उसकी चर्चा करना बहुत बेजा बात है), हालाँकि, शायद उन्हें खुद इस बात का पक्का यक़ीन है कि फ़ेर्दीश्चेंको ने ज़रूर चोरी की होगी।

लेकिन, आइए, अब अपने काम की ओर ध्यान दें, काम की ओर ! पर्चियाँ जमा हो गई हैं और, अफ़ानासी इवानोविच, आपने अपनी पर्ची भी डाल दी है, किसी ने इन्कार नहीं किया है। प्रिंस, मेहरबानी करके पर्ची निकालिए !"

एक शब्द भी कहे बिना प्रिंस ने हैट में हाथ डालकर पहली पर्ची निकाली—फ़ेर्दीश्चेंको की, दूसरी—प्तीत्सिन की, तीसरी—जनरल येपांचिन की, चौथी—तोत्स्की की, पाँचवीं खुद अपनी, छठी—गान्या की, और इसी तरह दूसरों की। महिलाओं ने अपने नाम की पर्चियाँ नहीं डाली थीं।

"अरे, क्या बुरी क़िस्मत पाई है !" फ़ेर्दीश्चेंको ने चिल्लाकर कहा। "और मैं सोच रहा था कि प्रिंस का नम्बर पहला और जनरल साहब का दूसरा होगा। लेकिन, शुक्र है कि मेरे बाद प्तीत्सिन की बारी है, और मुझे अपनी मेहनत का फल मिलेगा। अच्छा, महिलाओं और सज्जनो, मुझे आपके लिए अच्छी मिसाल कायम करनी चाहिए। लेकिन इस वक़्त मुझे जिस बात का सबसे ज़्यादा दुःख है वह यह कि मैं बहुत ही तुच्छ और छोटा आदमी हूँ; नौकरी में मेरा पद भी सबसे नीचा है। मेरा मतलब है कि इसमें क्या दिलचस्पी है किसी को कि फ़ेर्दीश्चेंको ने कोई कुकर्म किया या नहीं ? और फिर, यह सवाल भी है कि मेरा सबसे बुरा काम कौन-सा है ? यहाँ embarras de richesse[1] है। शायद मैं आप लोगों को फिर वही चोरीवाला क़िस्सा सुनाऊँ, बस अफ़ानासी इवानोविच को यह यक़ीन दिलाने के लिए कि चोर हुए बिना भी चोरी करना मुमकिन है।"

"आप मुझे यह भी यक़ीन दिलाते रहे हैं, फ़ेर्दीश्चेंको साहब, कि अपनी बेहूदा हरकतों का क़िस्सा सुनाकर आदमी बेहद खुशी भी महसूस कर सकता है, चाहे उससे उनके बारे में कुछ भी न पूछा जाए। बहरहाल...माफ़ कीजिएगा, फ़ेर्दीश्चेंको साहब।"

"शुरू भी करो, फ़ेर्दीश्चेंको," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने बेचैनी से और चिड़चिड़ाकर आदेश दिया। "तुम बातें बहुत करते हो और अपना सिलसिला कभी ख़त्म ही नहीं होगा !"

सब लोगों ने देखा कि अभी थोड़ी देर पहले उसे दीवानों की तरह हँसने का जो दौरा पड़ा था उसके बाद वह अचानक बहुत गम्भीर, खिसियाई हुई और चिड़चिड़ी हो गई थी; फिर भी अपनी इस बेतुकी सनक को पूरा करने के लिए वह ढिठाई और निरंकुशता के साथ डटी रही। अफ़ानासी इवानोविच तोत्स्की बहुत खिसिया रहे थे। वह जनरल येपांचिन से भी बेहद नाराज़ थे, जो अपना शैम्पेन का गिलास इस तरह लिए बैठे थे जैसे कुछ हुआ ही न हो और शायद वह अपनी बारी आने पर कोई क़िस्सा सुनाने के बारे में भी सोच रहे थे।

14

"मैं बहुत हाज़िरजवाब नहीं हूँ; इसीलिए मैं इतना ज़्यादा बोलता हूँ," फ़ेर्दीश्चेंको ने अपनी कहानी शुरू करते हुए कहा। "अगर मेरा दिमाग़ उतना तेज होता जितना अफ़ानासी इवानोविच तोत्स्की या प्तीत्सिन का है तो आज मैं भी अफ़ानासी इवानोविच और प्तीत्सिन की तरह चुप रहता। प्रिंस, मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपकी क्या राय है। मैं तो यही सोचता हूँ कि इस दुनिया में चोरों की संख्या उनसे कहीं ज़्यादा है जो चोर नहीं है और यह कि ईमानदार से ईमानदार आदमी ने भी अपनी ज़िन्दगी में कभी न कभी कुछ चुराया ज़रूर होगा ! ऐसा मैं सोचता हूँ, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं इस नतीजे पर पहुँच गया हूँ कि सभी लोग चोर हैं, हालाँकि, क़सम से, कभी-कभी मेरा बहुत जी चाहा है कि इस नतीजे पर भी पहुँचूँ। आपका क्या ख़्याल है ?"

1. भरमार से तंग आ जानेवाली बात। (फ्रांसीसी)

"उफ़, कैसा नासमझी का विचार है," दार्या अलेक्सेयेव्ना ने कहा, "और कैसी सरासर बकवास है यह ! यह नामुमकिन है कि हर आदमी ने कुछ न कुछ चुराया ज़रूर हो। मैंने कभी कुछ नहीं चुराया !"

"आपने कभी कुछ नहीं चुराया; लेकिन प्रिंस का कहना क्या है, जो अचानक ऊपर से नीचे तक लाल हो गए हैं ?"

"मैं समझता हूँ कि आप जो कह रहे हैं वह सच है, बस आप बात को बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे हैं," प्रिंस ने कहा, जो न जाने क्यों सचमुच शरमा रहा था।

"और आपने, प्रिंस ? आपने क्या कभी कोई चीज़ नहीं चुराई ?"

"तोबा, कैसी मसख़रेपन की बात है !" जनरल येपांचिन ने प्रिंस का पक्ष लेते हुए कहा। "होश में रहो, फ़ेर्दीश्चेंको !"

"बात यह है कि मतलब की बात पर पहुँचकर अपनी कहानी सुनाते शरम आती है। इसलिए आप प्रिंस को बीच में घसीटने की कोशिश कर रहे हैं, भला क्या यह अपनी कहानी नहीं पेश कर सकते," दार्या अलेक्सेयेव्ना ने तड़ से कहा।

"फ़ेर्दीश्चेंको," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना चिढ़कर तीखे स्वर में बोली, "या तो अपनी कहानी सुनाओ या चुप रहो और अपना काम देखो। तुमने तो हद कर दी है।"

"अभी, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, अभी। लेकिन अगर प्रिंस ने अपना अपराध मान लिया है—मैं दावे से कहता हूँ कि प्रिंस ने अपनां अपराध लगभग स्वीकार कर लिया है—तो कोई दूसरा, मैं किसी का नाम नहीं लेता—अगर सच बात कहना भी चाहता तो क्या कहता ? जहाँ तक मेरा सवाल है, साहबान, मुझे ज़्यादा कुछ नहीं कहना है; सारा क़िस्सा बहुत ही सीधा सादा, बेहूदा था और शर्मनाक था। लेकिन मैं आपको यक़ीन दिला दूँ कि मैं चोर हूँ नहीं। मैंने चोरी की ज़रूर, लेकिन सच कहता हूँ मुझे मालूम नहीं कैसे। यह घटना दो साल पहले एक इतवार को सेम्योन इवानोविच इश्चेंको के गाँववाले बँगले पर हुई थी। कुछ दोस्त उनके यहाँ खाने आए हुए थे। खाने के बाद मर्द लोग बैठे शराब पीते रहे। मुझे यह सूझी कि उनकी बेटी मरीया से पियानो पर कुछ बजाने को कहा जाए। मैं कोनेवाले कमरे को पार करके जा रहा था कि इतने में मेरी नज़र अपनी मेज़बान की काम करने की मेज़ पर तीन रूबल के एक नोट पर पड़ी। उन्होंने किसी का हिसाब चुकाने को वह नोट निकाला होगा। कमरे में कोई नहीं था—कोई भी नहीं। मैंने नोट उठाकर अपनी जेब में रख लिया। मुझे ज़रा भी अन्दाजा नहीं है कि मैंने ऐसा क्यों किया। समझ में नहीं आता कि मुझे हो क्या गया था। बस मैं जल्दी से वांपस जाकर मेज़ पर बैठ गया। मैं वहाँ बड़ी बेचैनी से बैठा राह देखता रहा और लगातार बातें करता रहा, किस्से सुनाता और हँसता रहा, फिर औरतों के बीच चला गया। लगभग आधे घंटे बाद पता चल गया कि नोट गायब था और नौकरानियों से पूछ-ताछ की जाने लगी। शक दार्या नाम की एक नौकरानी पर किया गया। मैंने बहुत हमदर्दी और दिलचस्पी दिखाई और मुझे याद है कि जब दार्या बिलकुल बेहाल हो गई तो मैं उसे समझाने लगा कि अपना अपराध स्वीकार कर ले, कि उसकी मालकिन सोलह आने दयालु औरत है। मैंने ये सारी बातें ज़ोर से कही ताकि सब लोग सुन लें। सब लोग हमें घूर रहे थे, और मैं महज इसलिए बेहद खुशी महसूस कर रहा था कि मैं उसे उपदेश दे रहा था जबकि नोट तमाम वक़्त मेरी जेब में था। मैंने वे तीन रूबल उसी रात एक रेस्तोराँ में शराब पर खर्च कर दिए। मैं अन्दर गया और मैंने शराब की एक बोतल मँगवाई। इससे पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था कि मैंने कोई और चीज़ मँगवाए बिना इस तरह शराब की बोतल मँगवाई हो। मैं जल्दी से जल्दी उस पैसे से छुटकारा पाना

चाहता था। मुझे न उस समय कोई ग्लानि हुई न बाद में। शायद मैं ऐसा फिर कभी करता—आप मेरा विश्वास करें या न करें, आपकी मर्जी, मेरी बला से। बस, यही है सारा क़िस्सा !"

"अलावा इसके कि यह आपका सबसे बड़ा कुकर्म नहीं है," दार्या अलेक्सेयेव्ना ने नफ़रत के साथ कहा।

"यह कुकर्म नहीं बल्कि मानसिक विकार है," तोत्स्की ने टिप्पणी की।

"और नौकरानी का क्या हुआ ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने अपनी उग्रतम घृणा की भावना को छिपाने की कोई कोशिश न करते हुए कहा।

"नौकरानी, ज़ाहिर है, अगले दिन निकाल दी गई। उस घर में बड़ी सख़्ती बरती जाती है।"

"और आपने यह सब कुछ होने दिया ?"

"यह भी अच्छी कही ! आप मुझसे यह उम्मीद तो नहीं करती थीं न कि मैं वापस जाकर सब कुछ मान लूँगा, क्यों ?" फ़ेर्दीश्चेंको ने बिगड़कर कहा; हालाँकि उसकी कहानी का सभी पर जो अरुचिकर प्रभाव पड़ा था उस पर वह कुछ गर्वित-सा दिखाई दे रहा था।

"कैसी घिनौनी हरकत है !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने चिल्लाकर कहा।

"अच्छा, तो आप चाहती हैं कि आदमी अपने सबसे बड़े कुकर्म के बारे में भी बताए और वह शानदार भी हो ! जो सबसे बुरे काम होते हैं वे सबसे गन्दे भी होते हैं, जैसा कि अभी हम प्तीत्सिन से सुनेंगे। कितने ही लोग बाहर से शानदार लगते हैं और नेकी के पुतले दिखाई देना चाहते हैं, सिर्फ़ इसलिए कि उनके पास अपनी घोड़ागाड़ी होती है। खुद अपनी घोड़ागाड़ियाँ तो तरह-तरह के लोगों के पास होती हैं। लेकिन ये उनके पास आती कैसे हैं ?"

सारांश यह कि फ़ेर्दीश्चेंको अपने आपको क़ाबू में न रख सका, और अचानक उसे इतना ताव आ गया कि वह अपने आपको भूलकर हद से आगे बढ़ गया; यहाँ तक कि उसका सारा चेहरा विकृत हो गया। बात कुछ अजीब तो लगती है लेकिन शायद उसे अपनी कहानी को दूसरी ही तरह की सफलता मिलने की उम्मीद थी। ये अरुचिकर आदतें और "ख़ास तरह की शेखी", जैसा कि तोत्स्की कहते थे, फ़ेर्दीश्चेंको के मामले में अकसर देखने में आती थीं और पूरी तरह उसके चरित्र के अनुकूल थीं।

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ग़ुस्से से काँप उठी और उसने फ़ेर्दीश्चेंको को ज़ोर से घूरा, जो फ़ौरन सहमकर चुप हो गया, डर के मारे उसका ख़ून ठण्डा पड़ गया—वह हद से ज़्यादा आगे बढ़ गया था।

"क्या यह अच्छा न होगा कि इस सिलसिले को ख़त्म ही कर दिया जाए," तोत्स्की ने कुटिलता से कहा।

"अब मेरी बारी है," प्तीत्सिन ने दृढ़ता से कहा, "लेकिन मैं छूट के अपने अधिकार को इस्तेमाल करना चाहता हूँ, और मैं अपनी कहानी नहीं सुनाऊँगा।"

"आप सुनाना नहीं चाहते ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने पूछा।

"मैं सुना नहीं सकता और, आमतौर पर, मैं इस तरह के खेल को नामुमकिन समझता हूँ।"

"जनरल साहब, अब आपकी बारी है," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा, "अगर आप भी इन्कार कर देंगे तो यह खेल आगे नहीं बढ़ पाएगा, और मुझे बहुत अफ़सोस होगा क्योंकि आख़िर में 'खुद अपनी ज़िन्दगी की' एक घटना सुनाने को मेरा बहुत जी चाह रहा था। लेकिन मैं आपके और अफ़ानासी इवानोविच के बाद ही उसे सुनाना चाहती थी, क्योंकि," उसने हँसकर अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा, "आप लोगों से मुझे बढ़ावा मिलना चाहिए।"

"सचमुच, अगर आप वादा करें," जनरल येपांचिन ने जोश में आकर ऊँचे स्वर में कहा, "तो मैं अपनी ज़िन्दगी की पूरी कहानी सुनाने को तैयार हूँ। हालाँकि मैं मानता हूँ कि अपनी बारी की राह देखते हुए मैंने अपनी कहानी तैयार कर रखी है।"

"और, आलीजनाब के चेहरे को देखने से पता चलता है," फ़ेर्दीश्चेंको ने, जिसकी बौखलाहट अभी तक दूर नहीं हुई थी, जहरीली मुस्कराहट के साथ अपना मत प्रकट करने का साहस किया, "कि कैसा साहित्यिक सन्तोष महसूस करके उन्होंने अपनी इस छोटी-सी कहानी को ढाला है।"

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने जल्दी से जनरल येपांचिन पर एक नज़र डाली और वह ख़ुद भी मुस्करा दी। लेकिन यह बात बिलकुल साफ़ थी कि उसकी चिड़चिड़ाहट और उदासी हर क्षण बढ़ती ही जा रही थी। अपने जीवन की एक घटना सुनाने के उसके वादे पर लोग पहले से भी ज़्यादा आतंकित हो उठे थे।

"तो, साहबान, सभी की तरह," जनरल येपांचिन ने कहना शुरू किया, "मैंने भी अपनी ज़िन्दगी में कुछ ऐसी हरकतें की हैं जिन्हें बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता, लेकिन जो बात बहुत ज़्यादा अजीब है वह यह कि जो छोटी-सी घटना मैं आप लोगों के सामने बयान करने जा रहा हूँ उसे मैं अपनी ज़िन्दगी की सबसे ज़्यादा नफ़रत के क़ाबिल घटना समझता हूँ। हालाँकि उस घटना को हुए कोई पैंतीस वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन कभी ऐसा नहीं हुआ कि मुझे उस घटना की याद आई हो और मैंने दिल में एक कसक न महसूस की हो। सच पूछिए तो वह बहुत ही बेवकूफ़ी की बात थी—उस वक़्त मैं सिर्फ़ सेकंड लेफ़्टिनेंट था और फ़ौज की बेहद बोरिंग ज़िन्दगी बसर कर रहा था। यह तो आप जानते ही हैं कि सेकंड लेफ़्टिनेंट किस तरह का आदमी होता है: फुरती और मुस्तैदी बहुत लेकिन जेब में एक फूटी कौड़ी नहीं। उन दिनों मेरे पास एक अर्दली था, नाम था निकीफ़ोर, जो मेरी देखभाल बहुत ही अच्छी तरह करता था—किफ़ायत करता था, कपड़ों में पैवन्द लगाता था, झाड़ू-बुहारू करता था, बर्तन माँजता था, और मेरी छोटी-मोटी गृहस्थी को बढ़ाने के लिए जो चीज़ हाथ लगती थी उसे चुरा भी लाता था। वह बहुत ही वफ़ादार और ईमानदार आदमी था। मैं सख़्ती तो करता था, लेकिन बस वाजिबी-वाजिबी। कुछ दिनों के लिए हमारी तैनाती एक छोटे-से शहर में थी। मैं शहर के बाहरी इलाक़े में एक लेफ़्टिनेंट की विधवा के घर में रख दिया गया था। बुढ़िया की उम्र अस्सी साल की या इसके लगभग ही रही होगी। वह एक टूटे-फूटे, ख़स्ताहाल छोटे-से घर में रहती थी और इतनी ग़रीब थी कि नौकर भी नहीं रख सकती थी। उसके बारे में दिलचस्पी की एक ही बात थी कि किसी जमाने में उसका परिवार बहुत बड़ा था और उसके बहुत-से रिश्तेदार थे; लेकिन उनमें से कुछ मर गए थे, कुछ शहर छोड़कर चले गए थे और बाक़ी ने उसे बिलकुल भुला दिया था। उसके पति को दफ़नाए हुए कोई पैंतालीस साल बीत गए थे : कुछ साल पहले उसकी एक भतीजी उसके साथ रहती थी; लोग कहते थे वह कुबड़ी और मन की मैली थी—बिलकुल चुड़ैल जैसी; उसने एक बार बुढ़िया की उँगली में काट लिया था। लेकिन वह भी मर गई थी, इसलिए पिछले तीन साल से बुढ़िया ज़िन्दगी से अकेली ही जूझ रही थी। मेरा जी उसके यहाँ बहुत उकताता था, दिमाग़ इतना खाली था कि उससे कुछ मालूम करना नामुमकिन था। तो हुआ यह कि एक दिन उसने मेरा मुर्ग़ा चुरा लिया। दरअसल, ठीक-ठीक पता तो कभी नहीं चला कि यह चोरी किसने की थी, लेकिन कोई दूसरा कर ही नहीं सकता था। उस मुर्ग़े पर हम लोगों की लड़ाई हुई और काफ़ी ज़ोरदार लड़ाई हुई। फिर हुआ यह कि मेरे अर्जी देते ही शहर के दूसरे छोर पर एक और उपनगर के घर में मेरे रहने का प्रबन्ध कर दिया गया। इस बार मुझे एक ऐसे व्यापारी के यहाँ रखा गया जिसका परिवार बहुत बड़ा था, और उसकी दाढ़ी भी बहुत

बड़ी थी। मुझे उसकी अच्छी तरह याद है, जैसे अभी कल ही की बात हो। पहलेवाली जगह से चले आने की मुझे और निकीफ़ोर को बहुत खुशी थी, लेकिन बुढ़िया पर बहुत गुस्सा था। तीन दिन बाद जब मैं कंवायद से लौटा तो निकीफ़ोर ने मुझसे कहा—'साहब, हम लोगों को अपना प्याला अपनी पुरानी मकान-मालकिन के यहाँ नहीं छोड़ आना चाहिए था। अब मेरे पास सूप देने के लिए कोई बर्तन नहीं है।' ज़ाहिर है, मैं हक्का-बक्का रह गया—'यह हुआ ही कैसे कि मेरा प्याला तू वहाँ छोड़ आया ?' निकीफ़ोर को बड़ा ताज्जुब हुआ। उसने सारा ब्योरा बयान करना जारी रखा—कि जब हम लोग वहाँ से चल रहे थे तो हमारी मकान-मालकिन ने उसे प्याला देने से साफ़ इन्कार कर दिया था क्योंकि मैंने उसका मिट्टी का कोई बर्तन तोड़ दिया था और अपने उस बर्तन के बदले में उसने यह प्याला रख लिया था। उसका कहना था कि यह सुझाव खुद मैंने दिया था। ज़ाहिर है, उसके इस कमीनेपन पर मुझे ताव आ गया; मेरा ख़ून खौल उठा, मैं उछल पड़ा और उसके यहाँ चल पड़ा। जब तक मैं बुढ़िया के घर पहुँचा तब तक, जिसे कहते हैं, मैं आपे से बाहर हो चुका था। वहाँ पहुँचने पर मैंने देखा कि वह, मानो धूप से बचने के लिए, गलियारे के एक कोने में हाथ पर अपना गाल टिकाए अकेली बैठी थी। तो मैंने फ़ौरन उसे बुरी-बुरी तरह झाड़ दिया। खूब अच्छी तरह ख़बर ली उसकी। ख़ालिस रूसी ढंग से, 'तू फलानी-फलानी,' वगैरह-वगैरह। अचानक मुझे लगा कि उसमें कोई विचित्र बात है—वह वहाँ बैठी मुझे घूर रही थी, उसकी आँखें बाहर निकली पड़ रही थीं, और वह एक शब्द भी नहीं बोली थी। वह मुझे बहुत ही अजीब ढंग से देख रही थी और ऐसा लग रहा था कि तमाम वक़्त झूम रही थी। तो, आख़िरकार मैं शान्त हो गया, उसे ध्यान से देखा, और उससे पूछा कि बात क्या थी। जवाब में एक शब्द भी नहीं। मैं वहाँ खड़ा सोचता रहा कि करूँ तो क्या—मक्खियाँ भिनभिना रही थीं, सूरज डूब रहा था, चारों ओर सन्नाटा था। गहरी दुविधा में पड़कर मैं आख़िरकार घर से बाहर निकल आया। घर पहुँचने से पहले ही मुझे मेजर साहब के यहाँ बुलवा भेजा गया, फिर मुझे अपनी कम्पनी में जाना पड़ा, और इस तरह जब मैं घर पहुँचा तो बिलकुल अँधेरा हो चुका था। निकीफ़ोर ने जो पहली बात मुझसे कही वह यह थी—'जानते हैं, साहब, हमारी पुरानी मकान-मालकिन मर गई।'—'क़ब मरी ?'—'अरे, साहब, उसी शाम को, कोई डेढ़ घंटे पहले।' जिसका मतलब है कि जब मैं उसे गालियाँ दे रहा था, ठीक उसी वक़्त वह मर रही थी। मैं आपसे सच कहता हूँ कि इससे मुझे इतना जबर्दस्त धक्का पहुँचा कि मैं उसके असर से मुश्किल से ही सम्भल पाया। मैं हर वक़्त उसी के बारे में सोचने लगा, रात को उसके बारे में सपने भी देखने लगा। मैं अन्धविश्वासी नहीं हूँ लेकिन दो दिन बाद मैं उसके जनाज़े में गिरजाघर गया। मतलब यह कि जैसे-जैसे समय बीतता जाता है मैं उसके बारे में और ज़्यादा सोचता हूँ। ऐसा भी नहीं है कि...लेकिन कभी-कभी वह सारी घटना मेरी आँखों के सामने घूम जाती है और मुझे उल्टी-सी होने लगती है। आख़िर बात क्या है मैंने एक दिन सोचा। पहली बात तो यह कि वह एक औरत थी—मेरा मतलब यह कि वह इंसान थी, या जैसा कि आजकल कहा जाता है उसमें इन्सानियत थी। वह बहुत लम्बी उम्र तक की थी, यहाँ तक कि आख़िरकार यह लगने लगा था कि उसकी उम्र ज़रूरत से ज़्यादा लम्बी हो गई थी। बरसों पहले उसके अपने बच्चे थे, पति था, परिवार था, रिश्तेदार थे, और उसके चारों ओर यह सब कुछ ज़िन्दगी और हलचल से भरपूर था, मतलब है; उसके चारों ओर उनकी मुस्कराहट थी, और अचानक...कुछ भी नहीं रहा, सब हवा हो गया, और वह अकेली रह गई जैसे...जैसे कोई मक्खी जो न जाने क़ब से किसी शाप के कारण जी रही हो। अन्त में भगवान ने उसे अपनी मंज़िल पर पहुँचा दिया। गर्मियों की एक शान्त संध्या को सूर्यास्त के समय हमारी यह बुढ़िया भी चल बसी—मैं

समझता हूँ कि इसमें भी कोई उपदेश निहित है; और उसी क्षण विदाई के एक आँसू के बजाय गुस्से से बिफरा हुआ एक नौजवान सेकंड-लेफ़्टिनेंट कमर पर दोनों हाथ रखे चीख़ता-चिल्लाता आता है और उसे चुनी हुई रूसी गालियों की बौछार के बीच चिरनिद्रा में सुला देता है, और यह सब कुछ एक प्याले की वजह से ! दोष मेरा ज़रूर था, और हालाँकि कई बरस बीत जाने और अपने चरित्र में परिवर्तन हो जाने की वजह से मैं बहुत अरसे से अपनी इस हरकत को किसी दूसरे ही आदमी की हरकत समझता रहा हूँ, फिर भी मुझे इसका अफ़सोस होता है। यहाँ तक कि, मैं फिर कहता हूँ, यह मुझे अजीब लगता है। अगर क़सूर मेरा हो भी, तो भी वह पूरी तरह मेरा ही नहीं है—क्योंकि आख़िर उसने ठीक उसी वक़्त मरने की क्यों ठानी ? ज़ाहिर है, मेरे पास एक बहाना ही है। मेरा मतलब है कि मेरी यह हरकत एक तरह से दिमाग़ी ख़ब्त का नतीजा थी, फिर भी पन्द्रह साल पहले मैंने अपने दान से एक ख़ैरातखाने में दो बूढ़ी बीमार औरतों के रहने का जब तक बन्दोबस्त नहीं करवा दिया तब तक मुझे चैन नहीं पड़ा, ताकि वे अपनी ज़िन्दगी के रहे-सहे दिन उनकी ज़रूरतों के अच्छे बन्दोबस्त की बदौलत आराम से बिताएँ। मैं अपनी वसीयत में इतना काफ़ी पैसा छोड़ जानेवाला हूँ कि यह बन्दोबस्त हमेशा के लिए पक्का हो जाए। तो, महिलाओं और सज्जनो, यह है तमाम क़िस्सा। मैं एक बार फिर कहता हूँ कि अपनी ज़िन्दगी में मैंने कितने ही ऐसे काम किए हैं जिनके लिए मुझे दोषी ठहराया जा सकता है, लेकिन इस घटना को मैं पूरी ईमानदारी के साथ अपने जीवन का सबसे बुरा काम समझता हूँ।"

"योर एक्सीलेंसी, आपने तो हमें अपने जीवन की सबसे बुरी हरकत के बारे में बताने के बजाय अपनी एक अच्छी हरकत के बारे में बताया है," फ़र्दीश्चेंको ने कहा, "आपने फ़र्दीश्चेंको को धोखा दिया है, साहब, यही किया है आपने।"

"सचमुच, जनरल साहब, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आपका दिल इतना अच्छा है। बड़े अफ़सोस की बात है !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने लापरवाही से कहा।

"अफ़सोस ? क्यों ?" जनरल येपांचिन ने शैम्पेन की एक चुस्की लेकर किंचित आत्म-सन्तोष के साथ शिष्टतावश मुस्कराते हुए पूछा।

अब तोत्स्की की बारी थी जिन्होंने अपने आपको तैयार किया। सब लोगों ने अनुमान लगाया कि प्तीत्सिन की तरह वह अपनी कहानी सुनाने से इन्कार नहीं करेंगे, और, कई कारणों से, वे लोग विशेष उत्कंठा से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे और साथ ही नज़रें बचाकर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की ओर भी देखते जा रहे थे। तोत्स्की ने अपनी एक 'चित्ताकर्षक कहानी' शान्त, विनीत स्वर में, पूरी गरिमा के भाव से सुनानी शुरू की, जो उनके रोबदार चेहरे-मोहरे के सर्वथा अनुकूल था। (प्रसंगवश यह भी बता दिया जाए कि वह बहुत ही शानदार चेहरे-मोहरेवाले खूबसूरत आदमी थे; लम्बा क़द, थोड़े-से गंजे, कुछ सफ़ेद बाल, गठा हुआ शरीर, मुलायम और लटकते हुए लाल गाल और नकली दाँत। वह ठाठदार कपड़े और बहुत बढ़िया कमीज पहनते थे। अपने दाहिने हाथ की तर्जनी पर वह बहुत महँगी हीरे की अँगूठी पहनते थे।) जितनी देर वह अपनी कहानी सुनाते रहे नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना अपनी आस्तीन की लैसवाली झालर को ध्यान से देखती रही, उसे अपने बाएँ हाथ की चुटकी से मसलती रही, और उसने एक बार भी वक़्ता की ओर नहीं देखा।

"जिस बात की वजह से मेरा काम बहुत आसान हो गया है," तोत्स्की ने कहना शुरू किया, "वह यह है कि मैं अपने जीवन के सबसे बुरे काम के बारे में बताने का वचन दे चुका हूँ। ज़ाहिर है, इस हालत में किसी तरह की झिझक का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता—आपका अन्तःकरण और आपका दिल फ़ौरन आपको सुझा देंगे कि आपको क्या कहना है। मुझे बड़े अफ़सोस के साथ

कहना पड़ता है कि अपनी ज़िन्दगी में मैंने बिना सोचे-समझे और मन की मौज में आकर जो बहुत-सी हरकतें की हैं; उनमें से एक ऐसी है जिसकी याद ने मेरे दिल पर बहुत ही तकलीफ़देह छाप डाली है। यह बात लगभग बीस साल पहले की है। उस वक़्त मैं प्लातोन ओर्दीन्त्सेव के गाँववाले बँगले में उनसे मिलने गया। वह तभी उस जिले के कुलीनों के सरदार चुने गए थे और अपनी नौजवान बीवी के साथ क्रिसमस की छुट्टियाँ बिताने गाँव आए हुए थे। उन्हीं दिनों उनकी बीवी अंफ़ीसा अलेक्सेयेव्ना की सालगिरह पड़ी थी और उस मौक़े पर दो बॉल-नृत्यों का आयोजन किया गया था। उस जमाने में दूमा के बेटे के दिलचस्प उपन्यास La Dame aux camelias[1] की बड़ी चर्चा थी और ऊँचे समाज में उसने काफ़ी सनसनी मचा रखी थी; वह, मेरी राय में, एक ऐसा उपन्यास था जिसका न तो कभी फ़ैशन ख़त्म हो सकता है और न ही वह कभी मर सकता है। प्रान्तों में सारी महिलाएँ तो उसके पीछे पागल थीं, कम से कम वे तो थीं ही जिन्होंने उसे पढ़ा था। कहानी का आकर्षण, हीरोइन का चित्रण करने का निराला ढंग, मन्त्रमुग्ध कर लेनेवाली दुनिया, जिसका वर्णन बड़ी बारीकी से किया गया था, और आख़िर वे मन को मोह लेनेवाली सारी ब्योरे की बातें पूरी किताब में बिखरी हुई हैं (मिसाल के लिए, कब सफ़ेद कैमेलिया के गुलदस्ते इस्तेमाल किए जाने चाहिए और क़ब गुलाबी कैमेलिया के) मतलब यह कि इन सारी छोटी-छोटी दिलचस्प जानकारियों ने अलग-अलग और एक साथ मिलकर एक तूफ़ान-सा खड़ा कर दिया। कैमेलिया के फूलों का फ़ैशन बेहद बढ़ गया। हर कोई उन्हें चाहता था; हर कोई उन्हें पाने की कोशिश करता था। मैं आपसे पूछता हूँ—किसी ज़िले में, आपकी राय में, कितने कैमेलिया के फूल मिल सकते हैं जब हर आदमी बॉल-नृत्य के मौक़े पर उनकी माँग कर रहा हो, हालाँकि बॉल-नृत्य बहुत नहीं होते थे ? बेचारा पेत्या वोर्खोव्स्कोय उन दिनों अंफ़ीसा अलेक्सेयेव्ना ओर्दीन्त्सेवा के प्यार में पागल था। मुझे सचमुच यह तो नहीं मालूम कि उनके बीच कोई मामला था या नहीं, मेरा मतलब यह तो नहीं मालूम कि उनके बीच कोई मामला था या नहीं, मेरा मतलब यह है कि उसके लिए उम्मीद बाँधने की कोई वजह थी या नहीं। बेचारा अंफ़ीसा अलेक्सेयेव्ना के वास्ते बॉल-नृत्य के वक़्त तक कैमेलिया के फूल हासिल करने के लिए बेहद परेशान था। सब जानते थे कि काउंटेस सोत्स्काया, जो पीटर्सबर्ग की एक महिला थीं और गवर्नर की पत्नी के साथ ठहरी हुई थीं, और सोफ़िया बेस्पालोवा यक़ीनन सफ़ेद कैमेलिया के गुलदस्ते लेकर आएँगी। अंफ़ीसा अलेक्सेयेव्ना ने और भी ज़्यादा रंग पैदा करने के लिए लाल कैमेलिया की फ़रमाइश की थी। बेचारे प्लातोन को उन्होंने लगभग पागल कर दिया था, लेकिन, बहरहाल, वह उनका शौहर था। उसने वादा किया कि वह उनके लिए फूल ला देगा। लेकिन, हुआ क्या ? मितीश्चेवा ने, जो हर मामले में अंफ़ीसा अलेक्सेयेव्ना की सख़्त दुश्मन थीं—उनके बीच हमेशा लाग-डाँट चलती रहती थी—बॉल-नृत्य से ठीक पहले वही फूल उचक लिए; ज़ाहिर है—रोना-धोना, बेहोशी के दौरे, क्या कुछ नहीं हुआ। प्लातोन का तो सारा बना-बनाया खेल ही बिगड़ गया। यह बात साफ़ थी कि अगर उस नाजुक वक़्त पर पेत्या कहीं से एक गुलदस्ता ले आता, तो उसकी सफलता की सम्भावनाएँ बहुत बढ़ जातीं। ऐसे आड़े वक़्त किसी भी स्त्री की कृतज्ञता की कोई सीमा नहीं रह जाती। वह पागलों की तरह दौड़-धूप करता रहा, लेकिन बिलकुल साफ़ हो गया कि कुछ होने का नहीं। अचानक सालगिरह और बॉल-नृत्य से पहलेवाले दिन ग्यारह बजे रात को ओर्दीन्त्सेव की एक पड़ोसिन ज़ुब्कोवा के यहाँ उससे मेरी मुलाक़ात हो गई। उसकी बाँछें खिली हुई थीं। 'बात क्या है ?'—मिल गया ! बाजी मार ली !'—'तुमने तो मुझे हैरत में डाल दिया, भाई ! कहाँ ? कैसे ?'—'येक्शाइस्क में (हमारे जिले से बाहर लगभग पन्द्रह मील की दूरी

1. 'कैमेलिया के फूलोंवाली महिला'। (फ़्रांसीसी)

पर एक छोटा-सा क़स्बा)। वहाँ त्रेपालोव नामक एक व्यापारी अपनी बूढ़ी बीवी के साथ रहता है, बड़ी उम्र का आदमी है और बहुत बड़ी दाढ़ी है उसके, बेहद अमीर है और बच्चों के बजाय उसके यहाँ बहुत-सी कैनरी चिड़ियाँ रहती हैं। उसे और उसकी बीवी को फूलों का बेहद शौक है, और उसके यहाँ कैमेलिया हैं।'—'लेकिन, भई, मुमकिन है कि यह बात सच न हो, या वह तुम्हें वे फूल न दे।'—'मैं उसके सामने घुटने टेककर उसके पैरों में लोटूँगा, जब तक वह मुझे फूल देने के लिए राज़ी नहीं हो जाएगा। फूल लिए बिना मैं वहाँ से टलूँगा ही नहीं।' 'कब जा रहे हो तुम ?'—'पाँच बजे तड़के !'—'अच्छा, भाग्य तुम्हारा साथ दे !' और, आप यक़ीन कीजिए, मुझे सचमुच उसके लिए खुशी थी। मैं ओर्दीन्त्सेव के यहाँ वापस चला गया। लगभग दो बजे थे, और मैं इस बात को किसी तरह दिमाग़ से निकाल नहीं पा रहा था। मैं सोने के लिए लेटने ही जा रहा था कि इतने में बहुत ही शानदार विचार मेरे दिमाग़ में आया ! मैं फ़ौरन किचेन में गया, अपने कोचवान सवेली को जगाया, पन्द्रह रूबल उसकी मुट्ठी में रखे और उससे आधे घंटे के अन्दर गाड़ी जोतने को कहा। आधे घंटे बाद मेरी गाड़ी फाटक पर खड़ी थी। मुझे बताया गया कि अंफ़ीसा अलेक्सेयेव्ना अधसीसी से तड़प रही थीं, कि उनको बुख़ार भी था और सरसाम की हालत थी। तो... मैं गाड़ी पर बैठकर रवाना हो गया। पाँच बजे से पहले मैं येक्शाइस्क की सराय पहुँच गया था। मैं दिन निकलने का इन्तज़ार करता रहा और छह बजे के कुछ ही बाद मैं त्रेपालोव के यहाँ जा पहुँचा। मैंने उसे सारा क़िस्सा बताया और पूछा कि क्या उसके यहाँ कैमेलिया के फूल हैं। 'मेहरबानी करके, साहब, मेरी मदद कीजिए, मुझे बचा लीजिए ! आप जो कहें वह करने को मैं तैयार हूँ !' वह लम्बे क़द का, सफ़ेद बालोंवाला, कठोर स्वभाव का बूढ़ा आदमी था—देखकर दम निकलता था ! 'नहीं,' वह बोला, 'मैं यह काम नहीं कर सकता ! कभी नहीं !' मैं उसके क़दमों में गिर पड़ा—ज़मीन पर औंधा लेट गया ! 'अरे साहब, भगवान के लिए, आप क्या कर रहे हैं !' वह डरा हुआ लग रहा था। 'लेकिन, साहब,' मैंने गिड़गिड़ाकर कहा, 'यह ज़िन्दगी और मौत का सवाल है !' 'अगर ऐसी बात है,' वह बोला, 'तो ज़रूर ले जाइए,' और मैं फूल ले आया ! लाल कैमेलिया का बड़ा-सा गुलदस्ता—खूबसूरत शानदार कैमेलिया ! उसके यहाँ एक पूरे हॉट-हाउस में ये फूल लगे थे। उस बेचारे ने आह भरी। मैंने जेब से सौ रूबल का नोट निकाला। 'नहीं, साहब,' वह बोला, 'इस तरह मेरी तौहीन तो न कीजिए।' 'अच्छा, अगर यह बात है, साहब,' मैंने कहा, 'तो आप मेरी तरफ़ से यह रक़म अपने यहाँ के अस्पताल को मरीजों की अच्छी देखभाल करने और उनको अच्छा खाना देने के लिए दान कर दीजिएगा।' 'वह बिलकुल अलग बात है, साहब,' वह बोला, 'यह नेकी और उदारता का काम है और भगवान इससे खुश होगा। मैं इसे आपकी तरफ़ से अस्पताल को दे दूँगा।' और, मैं आपसे सच कहता हूँ, मुझे वह बूढ़ा अच्छा लगा, असली खरा रूसी, जिसे कहते हैं de la vraie souche[1]। अपनी इस कामयाबी पर बेहद खुश मैं सीधा अपने घर की ओर चल पड़ा, लेकिन चक्कर काटकर ताकि पेत्या से मुठभेड़ न हो जाए। वहाँ पहुँचते ही फूल मैंने सीधे ऊपर अंफ़ीसा अलेक्सेयेव्ना के पास भिजवा दिए ताकि जागते ही वह उन्हें देख सकें। आप कल्पना कर सकते हैं। उन्हें कितनी खुशी हुई, उन्होंने कितना आभार माना, उनकी आँखों से कृतज्ञता के आँसू निकल आए। प्लातोन, जो अभी कल तक इतना मुरझाया हुआ और मुर्दा-सा लग रहा था, मेरे सीने पर सिर रखकर सिसक-सिसककर रोने लगा। हाय, बेचारे शौहरों का हमेशा से—जबसे शादी ईजाद हुई है—यही हाल रहा है ! मैं ज़्यादा कुछ नहीं कहूँगा अलावा इसके कि इस घटना के बाद पेत्या की रही-सही उम्मीदों पर भी पानी फिर गया। शुरू में तो मैं सोचता था कि जब उसे सच बात

1. आदिम ढंग का। (फ़्रांसीसी)

का पता लगेगा तो वह मेरी जान ले लेगा, और सच तो यह है कि मैंने उसका सामना करने के लिए बड़ी तैयारी की थी, लेकिन दरअसल जो कुछ हुआ उसकी आशा तक मुझे नहीं थी—वह बेहोश हो गया, शाम तक उसकी सरसामी हालत हो गई और सुबह होते-होते उसे तेज बुख़ार चढ़ गया; वह बच्चों की तरह सुबक-सुबककर रोता रहा। महीने-भर बाद चंगा होते ही उसने काकेशस भेज दिए जाने के लिए कहा। असली प्रेम-कहानी ! पेत्या अन्त में क्राइमिया की लड़ाई में मारा गया। उस समय उसका भाई स्तेपान वोर्ख़ोव्स्कोय एक रेजिमेन्ट का कमाण्डर था, और लड़ाई में बहुत नाम कमा चुका था। मैं मानता हूँ इस घटना के कई साल बाद तक मेरा अन्तःकरण मुझे कचोटता रहा—आख़िर किसलिए, मैंनें उसे ऐसी चोट क्यों पहुँचाई ? उस वक़्त मैं खुद इश्क़ में गिरफ़्तार होता तो भी बात थी। नहीं, एक बेकार की छेड़ख़ानी के लिए, क्योंकि इसके अलावा और कुछ था नहीं, बस एक महिला को खुश करने के लिए ! और, कौन जाने, अगर मैंने उसकी नाक के नीचे से वे फूल न झपट लिए होते, तो आज वह ज़िन्दा होता, खुशहाल होता, कामयाब होता, और तुर्कों की गोलियों की तलाश में जाने की बात उसके मन में उठती ही नहीं।"

गम्भीर प्रतिष्ठा की जिस मुद्रा से तोत्स्की ने अपना क़िस्सा सुनाना शुरू किया था उसी मुद्रा के साथ वह ख़ामोश हो गया। देखा यह गया कि जब तोत्स्की ने अपनी कहानी ख़त्म की तो नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की आँखों में कुछ अजीब-सी चमक आ गई और उसके होंठ तक काँप उठे। सब लोग उन दोनों को जिज्ञासा के भाव से देख रहे थे।

"फ़ेर्दीश्चेंको के साथ धोखा किया गया है ! उसे शर्मनाक तरीक़े से धोखा दिया गया है ! जी हाँ, शर्मनाक तरीक़े से धोखा दिया गया है !" फ़ेर्दीश्चेंको ने यह महसूस करके कि उसे कुछ न कुछ तो बोलना ही चाहिए और वह बोल सकता भी था, रुआँसे स्वर में कहा।

"आपसे ऐसी नासमझी करने को कहा किसने था ?" दार्या अलेक्सेयेव्ना (जो तोत्स्की की पुरानी और वफ़ादार दोस्त और उनका हाथ बँटानेवाली थीं) विजयोल्लास के भाव से चट से बोलीं। "आपको समझदार लोगों से सबक लेना चाहिए !"

"आपका कहना ठीक है, अफ़ानासी इवानोविच," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने लापरवाही के अन्दाज से कहा, "बहुत ही उकता देनेवाला खेल है और बेहतर यही होगा कि हम इसे जल्दी से जल्दी ख़त्म कर दें। मैंने जो वादा किया है वह मैं बताए देती हूँ, उसके बाद हम लोग ताश खेलेंगे।"

"पर पहले वह कहानी जिसका वादा किया था !" जनरल येपांचिन ने बड़े जोश से अनुमोदन करते हुए कहा।

"प्रिंस," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने प्रिंस को अप्रत्याशित रूप से और तीखे स्वर में सम्बोधित किया, "मेरे ये पुराने दोस्त, जनरल साहब और अफ़ानासी इवानोविच, मेरे पीछे पड़े हुए हैं कि मैं शादी कर लूँ। बताइए, आपका क्या ख़्याल है—मुझे शादी करनी चाहिए या नहीं ? मैं जैसा आप कहेंगे वैसा ही करूँगी।"

तोत्स्की का रंग पीला पड़ गया और जनरल येपांचिन अवाक् रह गए। सब लोग अपनी गर्दनें बढ़ा-बढ़ाकर घूरने लगे। गान्या जहाँ बैठा था वहीं जमकर रह गया।

"किसके...किसके साथ ?" प्रिंस ने डूबते स्वर में कहा।

"गव्रीला अर्दालिओनोविच ईवोल्गिन के साथ," नस्तास्या फिलीप्पोव्ना ने उसी तीखे, दृढ़ और स्पष्ट स्वर में कहा।

कुछ देर बिलकुल सन्नाटा छाया रहा; ऐसा लग रहा था कि प्रिंस कुछ कहने की भरपूर कोशिश कर रहा था, लेकिन वह एक शब्द भी न बोल सका, मानो उसके सीने पर कोई भारी बोझ हो।

"न-नहीं...मत कीजिए !" आख़िरकार उसने क्षीण स्वर में कहा और बड़ी कोशिश करके साँस ली।

"ऐसा ही होगा ! गव्रीला अर्दालिओनोविच !" उसने गान्या को बड़े रोब से सम्बोधित करके किंचित गम्भीरता से कहा, "आपने प्रिंस का फ़ैसला सुन लिया न ? तो, मेरा यही जवाब है और हम इस मामले को हमेशा के लिए यहीं ख़त्म कर दें !"

"नस्तास्या फिलोप्पोव्ना !" तोत्स्की ने काँपते स्वर में कहा।

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना !" जनरल येपांचिन ने विनय-भरे लेकिन आतंकित स्वर में कहा।

सब लोग बेचैनी से अपनी-अपनी जगहों पर कसमसा उठे।

"क्यों, बात क्या है, साहबान ?" वह अपने मेहमानों को मानो आश्चर्य से गहरी दृष्टि से देखते हुए कहती रही, "आख़िर आप लोग इतने परेशान क्यों हो गए ? और आप लोगों की सूरत को क्या हो गया है ?"

"लेकिन," तोत्स्की ने लड़खड़ाते स्वर में बुदबुदाकर कहा, "याद रखिए कि आपने वादा किया था...बिलकुल अपनी मर्जी से और...आपको दूसरे आदमी का भी इससे कुछ ज़्यादा ख़्याल रखना चाहिए था।...समझ में नहीं आता...और मैं तो सचमुच हैरान हूँ लेकिन मेरा मतलब है, आप, ऐसे क्षण पर और...आँ...लोगों के सामने और...आँ...इतने महत्त्वपूर्ण मामले को ऐसे खेल खेल में निबटा देना, ऐसा मामला जिसका सम्बन्ध इज़्ज़त और दिल से है...आँ...जिस पर...आँ...दारोमदार है..."

"आपकी बात मेरी समझ में नहीं आती, अफ़ानासी इवानोविच। आप बिलकुल लड़खड़ाकर बोल रहे हैं। पहली बात तो यह कि 'लोगों के सामने' से आपका क्या मतलब ? क्या हम लोग बहुत अच्छे और गहरे दोस्तों के बीच नहीं बैठे हैं ? और 'खेल-खेल में' क्यों ? मैं सचमुच अपना क़िस्सा सुनाना चाहती थी और वह मैंने सुना दिया—क्या वह अच्छा नहीं है ? और आप यह क्यों कहते हैं कि उसमें गम्भीरता नहीं है ? क्या उसमें गम्भीरता नहीं है ? आपने मुझे प्रिंस से कहते सुना—'मैं जैसा आप कहेंगे वैसा ही करूँगी।' अगर उन्होंने 'हाँ' कह दिया होता तो मैंने भी 'हाँ' कह दिया होता, लेकिन उन्होंने कहा 'नहीं', और मैंने इन्कार कर दिया। और, मेरी तो सारी ज़िन्दगी दाँव पर लगी हुई थी। क्या इससे भी गम्भीर कोई और बात हो सकती थी ?"

"लेकिन प्रिंस...प्रिंस क्यों ? और, बहरहाल, प्रिंस से आपको क्या लेना-देना ?" जनरल येपांचिन ने बुदबुदाकर कहा; वह इस बात पर अपना गुस्सा रोक नहीं पाए थे कि प्रिंस को आख़िर इतना आपत्तिजनक अधिकार दिया ही क्यों गया था।

"मेरे लिए प्रिंस बहुत महत्त्व रखते हैं क्योंकि ज़िन्दगी में यह मुझे पहले ऐसे आदमी मिले हैं जिन पर मैं एक सच्चे और वफ़ादार दोस्त की तरह भरोसा कर सकती हूँ। पहली ही मुलाक़ात में उन्होंने मुझ पर भरोसा कर लिया था, और मैंने उन पर भरोसा कर लिया था।"

"अब मेरे लिए नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को इस बात के लिए सिर्फ़ धन्यवाद देना बाक़ी रह गया है कि उन्होंने मेरे साथ...मेरा मतलब है...इतनी असाधारण संवेदनशीलता का व्यवहार किया है," गान्या ने आख़िरकार काँपते स्वर में कहा; उसके होंठ विकृत हो गए थे और रंग पीला पड़ गया था। "ठीक है, यही होना चाहिए था। लेकिन...प्रिंस...इस मामले में प्रिंस..."

"पचहत्तर हज़ार रूबल की ताक में हैं, क्या आप यह कहने जा रहे थे ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने तीखे स्वर में उसकी बात काटते हुए कहा। "इस बात से इन्कार न कीजिए ! आप यही कहना चाहते थे ! अफ़ानासी इवानोविच, मैं यह कहना बिलकुल भूल ही गई कि आप अपने पचहत्तर हज़ार अपने पास रखिए और यह बात भी जान लीजिए कि मैं कुछ लिए बिना आपको

मुक्त किए दे रही हूँ। बस, बहुत हो चुका ! वक़्त आ गया है कि आप भी चैन से साँस लें ! नौ साल और तीन महीने ! कल से मैं एक नई ज़िन्दगी शुरू करूँगी और आज मेरी सालगिरह है और ज़िन्दगी में पहली बार मैं अपनी मर्जी की मालिक हूँ ! जनरल साहब, आप भी अपने मोती वापस ले लीजिए। अपनी बीवी को दे दीजिएगा, लीजिए, ये रहे। कल मैं यह फ़्लैट हमेशा के लिए छोड़ दूँगी। और अब कोई पार्टियाँ नहीं हुआ करेंगी !"

यह कहकर वह सहसा उठ खड़ी हुई, मानो यहाँ से चली जाना चाहती हो।

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ! नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना !" चारों ओर से आवाज़ें सुनाई दीं।

सभी उत्तेजित थे, सभी अपनी-अपनी जगहों से उठ खड़े हुए; सबने उसे घेर लिया और बेचैन होकर उसके उखड़े-उखड़े, उत्तेजना और उन्माद-भरे शब्द सुनते रहे। सभी महसूस कर रहे थे कोई गड़बड़ी ज़रूर हो रही है; किसी की भी समझ में इसका मतलब नहीं आ रहा था, किसी की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। उसी क्षण दरवाज़े पर ज़ोर से खनकदार घंटी बजी, ठीक उसी तरह जैसे गान्या के घर पर बजी थी।

"अहा-हा ! अन्तिम दृश्य भी आ गया ! आख़िरकार ! साढ़े ग्यारह बज रहे हैं," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने उत्तेजित स्वर में कहा। "मेहमानो और आप लोग बैठ जाइए ! अन्तिम दृश्य के लिए !"

यह कहकर वह स्वयं बैठ गई। उसके होंठों पर एक विचित्र-सी मुस्कराहट काँप गई। वह चुपचाप बैठी बड़ी उत्कंठा से किसी मेहमान की प्रतीक्षा करती हुई दरवाज़े की ओर देखती रही।

"रोगोझिन और उसके एक लाख, इसमें तो कोई शक ही नहीं है," प्तीत्सिन अपने आपसे बुदबुदाया।

15

नौकरानी कात्या सहमी हुई अन्दर आई।

"न जाने क्या हो रहा है, मेम साहब। कोई एक दर्जन आदमी अन्दर घुस आए हैं, सब पिए हुए। ये आपसे मिलना चाहते हैं। उनका कहना है कि रोगोझिन आए हैं और आप इसके बारे में सब कुछ जानती हैं, मेम साहब।"

"ठीक बात है, कात्या। उन सबको फ़ौरन अन्दर ले आओ।"

"अरे नहीं, सबको, मेम साहब ? मेम साहब, वे लोग तो बहुत ही लफ़ंगे हैं...बहुत ही बेहूदा !"

"हाँ, सबको अन्दर ले आओ, सबको, कात्या; डरो नहीं। सबको अन्दर आने दो, वरना ये लोग तुमसे पूछे बिना ही अन्दर आ जाएँगे। कैसा हंगामा मचा रहे हैं वे लोग, बिलकुल पहले की तरह। "साहबान," उसने अपने मेहमानों को सम्बोधित किया, "आप लोग शायद मुझसे नाराज़ होंगे कि मैं इस तरह के लोगों से आपके सामने मिल रही हूँ ? मुझे बहुत अफ़सोस है और मैं आपसे माफ़ी माँगती हूँ, लेकिन कोई चारा नहीं है, और मैं बहुत चाहती हूँ कि आप इस अन्तिम दृश्य के दौरान मेरे गवाहों की तरह मौजूद रहें। हालाँकि, ज़ाहिर है, आपको पूरी आज़ादी है..."

उसके मेहमान चकित दिखाई देते रहे; वे आपस में कुछ कानाफूसी करते रहे और कनखियों से एक-दूसरे को देखते रहे। लेकिन बिलकुल साफ़ था कि यह सब कुछ पहले से जान-बूझकर तै कर रखा गया था और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को—जो, इसमें शक नहीं, अपने होश-हवास पूरी तरह खो बैठी थी—अपना फ़ैसला बदलने के लिए राज़ी करना नामुमकिन था। वे सभी जिज्ञासा से अन्दर

ही अन्दर खौल रहे थे। इसके अलावा, वहाँ कोई ऐसा था भी नहीं जिसे कोई ख़ास डर लगता। वहाँ सिर्फ़ दो औरतें थीं—दार्या अलेक्सेयेव्ना, बहुत चुस्त और फुर्तीली महिला जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी में बहुत कुछ देखा था और जो आसानी से परेशान होनेवाली नहीं थीं, और दूसरी वह सुन्दर लेकिन चुप रहनेवाली अजनबी महिला। लेकिन चुप रहनेवाली उन अजनबी महिला की समझ में शायद ही कुछ आया होगा, क्योंकि वह जर्मन थीं और हाल ही में रूस आई थीं और रूसी का एक शब्द भी नहीं जानती थीं। इसके अलावा, देखने में वह उतनी ही बेवक़ूफ़ भी मालूम होती थीं जितनी कि वह सुन्दर थीं। वह एक अजूबा थीं, और शानदार पोशाक पहने हुए और बाल मानो प्रदर्शनी के लिए सँवारे हुए उन्हें पार्टियों की शोभा बढ़ाने के लिए बुलाना और सारी शाम आकर्षक गुड़िया की तरह बिठाए रखना बड़े गौरव की बात समझी जाती थी, ठीक उसी तरह जैसे लोग अपनी पार्टियों के लिए दोस्तों से कोई पेंटिंग, गुलदान, मूर्ति उधार ले लेते थे। जहाँ तक मर्दों का सवाल था, तो, मिसाल के लिए, प्तीत्सिन रोगोझिन का गहरा दोस्त था; फ़ेर्दीश्चेंको अपने रंग में था, जैसे पानी में मछली; गान्या के मन में जो अभी तक अपने आघात के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाया था, एक अस्पष्ट-सी परन्तु अदम्य भावना यह थी कि उसे अन्त तक इसी तरह सूली पर टँगे रहना पड़ेगा; बूढ़े स्कूलमास्टर को जो कुछ हो रहा था उसका धुँधला-धुँधला ही आभास था; यह देखकर कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना समेत, जिसे वह अपनी पोती की तरह मानता था, उसके चारों ओर के सभी लोग तीव्र उद्विग्नता की अवस्था में थे, उसकी आँखों में आँसू छलक आए और वह सचमुच काँपने लगा; लेकिन ऐसे क्षण में उसे छोड़कर चले जाने की अपेक्षा वह मर जाना ज़्यादा पसन्द करता। जहाँ तक तोत्स्की का सवाल था, तो यह स्पष्ट था कि वह इस तरह के हंगामों में पड़कर अपनी प्रतिष्ठा खोना नहीं चाहते थे, लेकिन इस पूरे मामले में, जो इतना ऊटपटाँग रूप धारण करता जा रहा था, उनका बेहद गहरा हित था। इसके अलावा, नस्तास्या फिलीप्पोव्ना ने कुछ छींटे उन पर भी कसे थे और वह इस मामले का आख़िरी फ़ैसला होने से पहले वहाँ से जा ही नहीं सकते थे। उन्होंने तै किया कि वह एक शब्द भी बोले बिना केवल दर्शक के रूप में वहीं रहेंगे; ज़ाहिर है, अपनी गरिमा बनाए रखने के लिए इसके अलावा वह कर भी क्या सकते थे। जनरल येपांचिन ही अकेले ऐसे थे, जिन्हें अभी कुछ ही देर पहले इतने खुले व्यंग के साथ अपना उपहार वापस किए जाने पर गहरा आघात पहुँचा था, जिनको इन सारी असाधारण सनकीपन की हरकतों से या, मिसाल के लिए, रोगोझिन के आने से और भी गहरा आघात पहुँच सकता था; इसके अलावा, उनकी जैसी हैसियत का आदमी प्तीत्सिन और फ़ेर्दीश्चेंको जैसे लोगों के साथ बैठना स्वीकार करके काफ़ी एहसान कर चुका था; हालाँकि भावावेश उन्हें चाहे जो करने को प्रेरित कर सकता, लेकिन उनकी नैतिक दायित्व की भावना, अपने कर्तव्य, अपने पद, अपने महत्त्व और आमतौर पर अपने आत्म-सम्मान के बारे में उनकी चेतना से उस पर क़ाबू पाया जा सकता था। इसलिए रोगोझिन और उसके साथियों का उनके सामने आना एक असम्भव-सी बात थी।

ज्योंही जनरल येपांचिन ने अपनी घोषणा करने के लिए नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को सम्बोधित किया, वह बीच में ही बोल पड़ी, "अहा, जनरल साहब, मैं तो बिलकुल भूल ही गई थी ! लेकिन आप यक़ीन जानिए कि मुझे आपके सिलसिले में पहले ही से अन्दाज़ा था...अगर आप सचमुच बुरा मान रहे हैं तो आपकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ आपको रोकने की जिद मैं नहीं करूँगी, हालाँकि मेरा बहुत जी चाहता है कि इस वक़्त ख़ासतौर पर आप मेरे पास हों। बहरहाल, आपकी दोस्ती और आपकी कृपादृष्टि के लिए धन्यवाद, लेकिन अगर आपको डर है..."

"तोबा, तोबा, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना," जनरल येपांचिन उदारता के प्रबल भाव से जोश में

आकर बोले, "आप किससे कह रही हैं यह बात ? अरे, मैं तो सिर्फ़ अपनी वफ़ादारी की वजह से आपके पास रहूँगा और इसलिए कि अगर कोई खतरा पैदा हो...इसके अलावा, मैं मानता हूँ कि मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि क्या होनेवाला है। मैं तो बस यह डर रहा था कि कहीं वे लोग क़ालीन गन्दे न कर दें और कोई चीज़ तोड़ न दें।...और...हाँ...मेरा ख़्याल है...शायद इन लोगों की बिलकुल ही ज़रूरत नहीं, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना !"

"रोगोझिन खुद हाजिर है !" फ़ेर्दीश्चेंको ने घोषणा की।

"क्या ख़्याल है आपका, अफ़ानासी इवानोविच ?" जनरल साहब ने उनके कान में जल्दी से कहा। "उसका दिमाग़ तो खराब नहीं हो गया है ? मैं इन शब्दों को मुहावरे की तरह नहीं बल्कि ठीक उस अर्थ में इस्तेमाल कर रहा हूँ जिसमें डॉक्टर लोग करते हैं।"

"मैं आपसे पहले भी कह चुका हूँ कि इस ओर उसका झुकाय तो हमेशा से रहा है," तोत्स्की ने पलटकर बड़ी कुटिलता से उनके कान में कहा—"और उसे कुछ बुख़ार भी है।..."

रोगोझिन के गरोह में लगभग वही लोग थे जो सुबह को गान्या के घर में थे। जो लोग नए थे उनमें एक तो निकम्मा बूढ़ा था, जो किसी जमाने में कीचड़ उछालनेवाले किसी बदनाम चीथड़े अखबार का सम्पादक रह चुका था, और जिसके बारे में कहा जाता था कि वह सोने के अपने सारे नकली दाँत गिरवी रखकर उसकी शराब पी गया था, और दूसरा एक पेंशनयाफ़्ता सेकंड लेफ़्टिनेंट था जो अपने व्यवसाय और रोजी की दृष्टि से मुक्केबाज़ सज्जन का सबसे पक्का प्रतिद्वन्द्वी था, और जिससे रोगोझिन के अनुयायी बिलकुल अपरिचित थे। उसे नेव्स्की एवेन्यू के धूपदार किनारे पर पकड़ लिया गया था, जहाँ वह राहगीरों को रोककर उनसे लेखक मर्लीस्की की शैली में इस चालाकी-भरे बहाने की आड़ लेकर भीख़ माँग रहा था कि अपने जमाने में वह ज़रूरतमन्द लोगों को पन्द्रह-पन्द्रह रूबल तक दे दिया करता था। इन दोनों प्रतिद्वन्द्वियों ने फ़ौरन एक-दूसरे से दुश्मनी ठान ली। मुक्केबाज़ ने गरोह में "भिखारी" के शामिल कर लिए जाने को अपना अपमान समझा और स्वभाव से अल्पभाषी होने के कारण वह रह-रहकर सिर्फ़ गुर्राता रहा और "भिखारी" के, जो बहुत व्यवहारकुशल और कूटनीतिज्ञ आदमी निकला, उससे मेल-जोल बढ़ाने और उसका कृपापात्र बनने के प्रयासों को तिरस्कार की दृष्टि से देखता रहा। "कारोबार" के मामले में सेकंड लेफ़्टिनेंट से ज़ोर-जबर्दस्ती के बजाय चुस्ती और पैंतरेबाजी की आशा की जा सकती थी, और इसके अलावा वह क़द में भी मुक्केबाज से बहुत छोटा था। कुटिलता से, बहस शुरू किए बिना, लेकिन बड़ी बेहयाई से डींग मारते हुए वह कई बार अंग्रेज़ी बॉक्सिंग की श्रेष्ठता के बारे में हल्के-से संकेत कर चुका था—सारांश यह कि वह शुद्धतः पश्चिम का समर्थक निकला। मुक्केबाज़ 'बॉक्सिंग' शब्द पर बहुत ही अपमानजनक ढंग से और तिरस्कार के साथ मुस्करा देता था; उसके बारे में बहस करने को भी अपनी तौहीन समझकर वह कभी-कभी चुपचाप और मानो संयोग से एक बिलकुल ही स्वदेशी चीज़ दिखा देता था—एक बड़ा-सा, तगड़ा, गाँठदार, कुछ-कुछ लाल रंग के रोओं से ढका हुआ घूँसा, और यह बात बिलकुल स्पष्ट थी कि यह स्वदेशी चीज़ ज़ोर से किसी के सम्पर्क में आ जाती तो अपने पीछे एक गीली-गीली छीछालेदर के अलावा और कुछ भी न छोड़ जाती।

इस बार भी उनमें से कोई भी बहुत ज़्यादा तरंग में नहीं आया, खुद रोगोझिन की कोशिशों की बदौलत जिसे दिन-भर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ अपने आने की याद थी। खुद उस पर बिलकुल नशा नहीं चढ़ा हुआ था, हालाँकि उस बेहूदा दिन के दौरान, जो उसके जीवन के किसी भी दूसरे दिन से बिलकुल अलग था, उसने जिन विभिन्न संवेदनाओं को अनुभव किया था उनकी

वजह से वह कुछ भौचक्का ज़रूर था। हर घड़ी और हर पल सिर्फ़ एक बात उसने लगातार अपने दिमाग़ और अपने दिल में रखी थी। अकेली इस बात के लिए उसने शाम के पाँच बजे से लेकर रात के ग्यारह बजे तक का सारा वक़्त किंडेर और बिस्कुप जैसे लोगों के साथ बड़ी व्यथा और चिन्ता के बीच बिताया था और वे भी उसकी खातिर दौड़-धूप करते-करते लगभग पागल हो गए थे। और वे एक लाख की रक़म नक़द जुटाने में कामयाब भी हो गए थे; यह वह रक़म थी जिसकी ओर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने लगे हाथ गोल-मोल ढंग से व्यंगपूर्वक संकेत किया था, और उसके सूद की दर इतनी ऊँची थी कि खुद बिस्कुप को भी उसके बारे में किंडेर से ऊँचे स्वर में चर्चा करते शर्म आती थी।

इस वक़्त भी रोगोझिन अपने चेलों-चाटों के आगे-आगे चल रहा था, बाकी उसके पीछे-पीछे कुछ डरे-डरे चले आ रहे थे, हालाँकि उन्हें अपना पलड़ा भारी होने का पूरा आभास था। उन्हें सबसे ज़्यादा डर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से लगता था—भगवान ही जाने क्यों। उनमें से कुछ तो यह भी सोच रहे थे कि उन्हें "ठोकर मारकर सीढ़ियों से नीचे" फेंक दिया जाएगा। प्रसंगवश इन लोगों में औरतों को रिझा लेनेवाला वह छैला ज़ल्योज़ेव भी था। लेकिन बाक़ी लोग, और खासकर मुक्केबाज़, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को अगर घृणा से नहीं तो अत्यन्त तिरस्कार की दृष्टि से तो देखते ही थे, हालाँकि वे मुँह से कभी ऐसा कहते नहीं थे, और वे उसके यहाँ इस तरह गए थे मानो उसके घर पर धावा करके उस पर कब्जा कर लेंगे। लेकिन पहले दो कमरों की शान शौकत, वे चीज़ें जो उन्होंने न कभी देखी थीं न उनके बारे में सुना था, बेहद बढ़िया फर्नीचर और तस्वीरें, वीनस की बड़ी-सी मूर्ति—इन सब चीज़ों ने उनके मन में सम्मान और लगभग भय की आतंक भावना पैदा की। लेकिन, ज़ाहिर है, उनके भय के बावजूद, वे लोग धृष्टतापूर्ण जिज्ञासा के कारण रोगोझिन के पीछे-पीछे ड्राइंग-रूम में धँस आने से चूके नहीं; लेकिन जब मुक्केबाज़, "शिकारी" और कुछ दूसरे लोगों ने मेहमानों में जनरल येपांचिन को देखा तो शुरू में उन्हें इतना आश्चर्य हुआ कि वे सचमुच धीरे-धीरे दूसरे कमरे की ओर वापस जाने लगे। अकेला लेबेदेव ही अधिक आश्वस्त और साहसी था; वह रोगोझिन के लगभग बग़ल में चल रहा था, और वह इस बात को पूरी तरह अनुभव कर रहा था कि चौदह लाख की खरी रक़म का और इस वक़्त हाथ में पूरे लाख नक़द का मतलब क्या है। लेकिन इतना बता दिया जाए कि पारखी लेबेदेव समेत उन सभी के मन में इस सम्बन्ध में कुछ शंका थी कि उनके अधिकारों की सीमाएँ और उनका विस्तार क्या है और उन्हें पक्के तौर पर यह नहीं मालूम था कि इस समय वे मनमानी कर सकते थे कि नहीं। कुछ क्षण ऐसे आते थे जब लेबेदेव दावे के साथ यह कहने को तैयार होता था कि वह सब कर सकते थे, लेकिन फिर दूसरे क्षण ऐसे भी आते थे जब वह बहुत खिन्न होकर दीवानी क़ानून की कुछ अत्यन्त उत्साहवर्धक और आश्वासनकारी धाराओं को याद करने की ज़रूरत महसूस करता था।

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के ड्राइंग-रूम का प्रभाव रोगोझिन पर अपने साथियों से बिलकुल उल्टा पड़ा। जैसे ही दरवाज़े का परदा हटा और उसकी नज़र नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना पर पड़ी, उसके लिए हर चीज़ का अस्तित्व समाप्त हो गया, जैसा कि सुबह हुआ था, और सच तो यह है कि सुबह से भी ज़्यादा। वह पीला पड़ गया और एक क्षण के लिए ठिठककर खड़ा हो गया; साफ़ दिखाई दे रहा था कि उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। वह कुछ क्षण तक नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना पर से अपनी नज़रें हटाए बिना भीरुता के साथ और बौखलाया-सा उसे घूरता रहा। फिर, अचानक, मानो अपने होश-हवास खोकर और लगभग लड़खड़ाता हुआ वह मेज़ के पास गया; रास्ते में वह प्तीत्सिन की कुर्सी से टकराया और अपने बड़े-बड़े गन्दे जूतों से खूबसूरत और खामोश जर्मन महिला

की शानदार नीली पोशाक की लैस की झालर को रौंदता हुआ आगे बढ़ा; इस बात की ओर न उसका ध्यान गया और न उसने माफ़ी माँगी। मेज़ के पास पहुँचकर उसने उस पर एक विचित्र-सी चीज़ रख दी, जिसे दोनों हाथों में अपने सामने लिए हुए उसने ड्राइंग-रूम में प्रवेश किया था। वह काग़ज़ का एक बड़ा-सा पैकेट था, लगभग छह इंच मोटा और आठ इंच लम्बा, जो बहुत मजबूती से और कसकर 'स्टॉक एक्सचेंज न्यूज' की एक प्रति में लिपटा हुआ था और उसे कई बार चारों ओर और दो बार लम्बाई में डोरी से बाँध दिया गया था। फिर वह एक शब्द भी कहे बिना और अपने हाथ नीचे करके शान्त खड़ा रहा, मानो सज़ा सुनाए जाने की राह देख रहा हो। वह वही पहलेवाले कपड़े पहने हुए था, अलावा गहरे हरे समेत लाल रंग के बिलकुल नए रेशमी स्कार्फ़ के, जो एक बहुत बड़ी हीरे की पिन से भँवरे की शक्ल में बाँध दिया गया था, और बड़े-से हीरे की उस अँगूठी के जिसे उसने अपने दाहिने हाथ की गन्दी उँगली पर पहन रखा था। लेबेदेव मेज़ से तीन क़दम पहले ही ठहर गया; बाक़ी सब लोग, जैसा कि पहले बताया जा चुका है, धीरे-धीरे ड्राइंग-रूम में सरकते जा रहे थे। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की नौकरानियाँ कात्या और पाशा भी दरवाज़े के हटे हुए परदे के पीछे से भय और आश्चर्य के साथ इस काण्ड को देखने आ गई थीं।

"यह क्या है ?" रोगोझिन को बड़े ध्यान और कौतूहल से देखने के बाद नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने आँखों से उस 'चीज़' की ओर इशारा करते हुए पूछा।

"एक लाख !" रोगोझिन ने लगभग कानाफूसी के स्वर में जवाब दिया।

"तो अपना वादा पूरा कर दिया—क्या आदमी है ! मेहरबानी करके बैठ जाइए, यहाँ इस कुर्सी पर ! मैं आपको बाद में कुछ बताऊँगी। आपके साथ कौन हैं ? वही गरोह जो पहले था ? अरे, उनको भी अन्दर बुला लीजिए, आकर बैठ जाएँ। वहाँ उस सोफ़े पर बैठ सकते हैं, उधर और सोफ़ा है। वहीं दो आराम-कुर्सियाँ हैं...क्यों, क्या वे आना नहीं चाहते ?"

सचमुच उनमें से कुछ तो निश्चित रूप से बौखलाकर पीछे सरक गए और दूसरे कमरे में जाकर बैठे प्रतीक्षा करने लगे। लेकिन कुछ वहीं रह गए और जिस तरह उनसे कहा गया था, उसी तरह मेज़ से जितनी भी दूर हो सका बैठ गए, ज़्यादातर कमरे के कोनों के पास; उनमें से कुछ तो यह कोशिश कर रहे थे कि जहाँ तक हो सके उन पर दूसरों की नज़र न पड़े, और कुछ लोग जितना ही ज़्यादा वक़्त गुजरता गया उतनी ही जल्दी रंग में आने लगे। रोगोझिन भी उस जगह बैठ गया जिधर उसके लिए इशारा किया गया था, लेकिन वह बहुत देर तक बैठा न रह सका; जल्दी ही वह उठ खड़ा हुआ और फिर नहीं बैठा। धीरे-धीरे वह मेहमानों को अलग-अलग पहचानते और ध्यान से देखने लगा। गान्या पर नज़र पड़ते ही वह तिरस्कार से मुस्कराया और दबी आवाज़ से बोला—"देखो तो इसे !" उसने तनिक भी अटपटा महसूस किए बिना और बगैर किसी ख़ास दिलचस्पी के जनरल येपांचिन और तोत्स्की पर एक नज़र डाली। लेकिन जब उसने प्रिंस को नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के पास बैठे देखा तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ और वह बड़ी देर तक उसकी ओर से आँखें नहीं हटा सका, मानो वह अपने आपको यह न समझा पा रहा हो कि वह वहाँ क्यों मौजूद था। उसे देखने से ऐसा लगता था कि कई-कई मिनट तक उसकी हालत सरसाम जैसी हो जाती थी। उस दिन के आघातों के अलावा उसने पूरी पिछली रात ट्रेन में बिताई थी और कोई अड़तालीस घंटे से नहीं सोया था।

"महिलाओ और सज्जनो, ये हैं एक लाख," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने उन सबको उन्मादपूर्ण अधीरता के साथ चुनौती-भरे स्वर में सम्बोधित करते हुए कहा। "यहाँ, इस गन्दे पैकेट में। आज सुबह इसने पागल की तरह चीख़कर कहा था कि रात तक मुझे एक लाख ला देगा, और मैं तमाम

वक़्त इसकी राह देखती रही हूँ। बात यह है कि इसने मेरी बोली लगाई थी—अठारह हज़ार से शुरू किया था, फिर एक़दम चालीस पर पहुँच गया, और उसके बाद एक लाख पर जो आप यहाँ देख रहे हैं। इसने अपना वचन निभाया—शाबाश ! तोबा, कितना पीला पड़ गया है इसका रंग !...यह सब कुछ आज सुबह गान्या के घर पर हुआ था। मैं उसकी माँ से मिलने गई थी—अपने होनेवाले परिवार से, और वहाँ उसकी बहन ने मेरे मुँह पर चिल्लाकर कहा था—'कोई है नहीं जो इस बेहया को यहाँ से निकाल दे ?' और अपने भाई के मुँह पर थूक दिया था। बहुत ही दबंग लड़की हैं उसकी बहन !"

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना !" जनरल येपांचिन ने डाँटते हुए कहा।

वह इस पूरे मामले को अपने ढंग से कुछ-कुछ समझने लगे थे।

"क्यों, क्या बात है, जनरल साहब ? यह शरीफ़ों जैसी बात नहीं है, मानो ? और, नाटक बहुत हो चुका ! अगर मैं पिछले पाँच साल से फ्रांसीसी थिएटर के बॉक्स में सम्मानिता की देवी के निष्कलंक रूप में बैठती रही हूँ और उन सब लोगों से जो मेरा पीछा करते रहे हैं, एक जंगली जानवर की तरह बचती रही हूँ, और गर्वीली निर्दोषता की तस्वीर जैसी लगती रही हूँ तो सिर्फ़ अपनी मूर्खता की वजह से। आपकी मौजूदगी में इसने आकर एक लाख की रक़म मेज़ पर रख दी है, और वह भी मेरी पाँच साल की मासूमियत के बाद, और मुझे पूरा यक़ीन है कि इसकी भाड़ागाड़ियाँ यहाँ इन्तज़ार कर रही होंगी। इसके लिए मेरी क़ीमत एक लाख है ! गान्या, मैं देख रही हूँ कि तुम मुझसे अभी तक नाराज़ हो, है न ? लेकिन क्या तुम सचमुच मुझे अपने परिवार का हिस्सा बना लेना चाहते थे ? मुझे ? रोगोझिनवाली को ? अभी प्रिंस ने क्या कहा था ?"

"मैंने यह नहीं कहा था कि आप रोगोझिन की हैं...आप नहीं हैं !" प्रिंस ने काँपते स्वर में कहा।

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, रहने भी दो, मेरी गुड़िया, मेहरबानी करके बस करो," दार्या अलेक्सेयेव्ना अपने आपको काबू में न रख पाकर अचानक बोली। "अगर इन लोगों की वजह से तुम इतनी परेशान हो गई हो तो इनकी ओर ध्यान ही क्यों देती हो ? और तुम सचमुच ऐसे आदमी के साथ जाने की बात तो नहीं सोच रही हो न, चाहे वह तुम्हें एक लाख देने को भी तैयार क्यों न हो, क्यों ? यह सच है। एक लाख की रक़म—ठीक ही है ! लेकिन तुम यह लाख लो और इसे यहाँ से चलता कर दो। इन लोगों के साथ ऐसा ही सलूक किया जाना चाहिए। अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो इन सबको...और क्या, सचमुच !"

दार्या अलेक्सेयेव्ना सचमुच नाराज़ थीं। वह बहुत नेकदिल और जल्दी प्रभावित हो जानेवाली औरत थीं।

"नाराज़ न हो, दार्या अलेक्सेयेव्ना," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने खीसें निपोरीं। "मैंने उससे नाराज़ होकर नहीं कहा है। मैंने उसको किसी बात के लिए बुरा-भला तो नहीं कहा है न ? सचमुच मेरी समझ में नहीं आता कि मैं इतनी बेवक़ूफ़ कैसे हो गई थी कि इस भले परिवार का हिस्सा बन जाना चाहती थी। मैं उसकी माँ से मिली। मैंने उनका हाथ चूमा। और, गान्या, आज तुम्हारे घर पर अगर मैं ताना मार रही थी तो इसलिए कि मैं बिलकुल जान-बूझकर आख़िरी बार खुद यह देखना चाहती थी कि तुम कहाँ तक जाने को तैयार हो। तुमने तो मुझे बिलकुल अचम्भे में डाल दिया। मुझे बहुत-सी बातों की उम्मीद थी लेकिन इसकी नहीं ! क्या यह जानते हुए कि जनरल साहब हमारी शादी से लगभग फ़ौरन पहले मुझे मोतियों का ऐसा उपहार दे रहे थे और मैं उसे स्वीकार भी कर रही थी, क्या तुम मुझसे शादी करने को सचमुच तैयार थे ? और रोगोझिन ? अरे, उसने तो तुम्हारे घर में, तुम्हारी माँ और बहन के सामने मेरी बोली लगाई, और उसके बाद भी

तुम यहाँ मुझसे यह कहने आए कि मैं तुमसे शादी कर लूँ और तुम अपनी बहन को भी यहाँ लानेवाले थे ! रोगोझिन ने तुम्हारे बारे में जो कुछ कहा था क्या वह सच था ? क्या तुम सचमुच तीन रूबल के लिए रेंगते हुए दुनिया के छोर तक चले जाओगे ?"

"ज़रूर चला जाएगा !" रोगोझिन ने अचानक धीरे से लेकिन भरपूर विश्वास के साथ कहा।

"अगर तुम भूखों मर रहे होते तो बात और थी, लेकिन मुझे बताया गया है कि तुम्हें अच्छी ख़ासी तनख़्वाह मिलती है ! और इन सब बातों के अलावा, इस बदनामी के अलावा, एक ऐसी बीवी को जिससे तुम्हें नफ़रत है, (क्योंकि तुम्हें मुझसे नफ़रत है, यह तो मैं जानती हूँ !) अपने घर में लाना ! हाँ, अब मैं इस बात पर यक़ीन करने को बिलकुल तैयार हूँ कि तुम जैसा आदमी पैसे के लिए ख़ून भी कर सकता है ! क्योंकि अब लोगों पर दौलत का ऐसा भूत सवार हुआ है कि सबके सब अपने होश-हवास खो बैठे हैं। अभी बिलकुल बच्चा है, लेकिन सूदखोर बनने के लिए मचल रहा है ! या उस्तुरे पर रेशमी धागा लपेटकर चुपचाप पीछे से अपने दोस्त की गर्दन भेड़ की तरह काट देगा, जैसा कि हाल ही में मैंने कहीं पढ़ा है। उफ़, तुम बहुत ही बेशर्म आदमी हो। बेहया मैं भी हूँ, लेकिन तुम मुझसे भी बदतर हो ! फूलों के क़िस्सेवाले साहब की तो बात ही क्या।..."

"यह आप ही हैं, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, यह आप कह रही हैं ?" जनरल येपांचिन ने सचमुच दुःखी होकर अपने दोनों हाथ ऊपर फेंकते हुए कहा। "जो इतना लिहाज रखनेवाली थीं, जिनके विचार इतने सुथरे थे, और अब ! कैसी ज़बान ! कैसी बोली !"

"इस वक़्त मैं नशे में हूँ, जनरल साहब," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना सहसा हँस पड़ी। "मैं मौज उड़ाना चाहती हूँ ! आज मेरा दिन है, मेरा त्योहार है ! मैं बहुत अरसे से इसका इन्तज़ार कर रही थी। तुम इन्हें देख रही हो, दार्या अलेक्सेयेव्ना, फूलों के क़िस्सेवाले साहब को, इन Monsieur aux came'lias को देखो, वह वहाँ बैठे हम लोगों पर हँस रहे हैं।..."

"मैं हँस नहीं रहा हूँ, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना," तोत्स्की ने गरिमा से जवाब दिया। "मैं तो बस बड़े ध्यान से सुन रहा हूँ।"

"अरे, मैं इन्हें पाँच साल से क्यों सताती रही हूँ ? मैंने इन्हें छुटकारा क्यों नहीं दे दिया ? क्या यह इतने के लायक़ थे ! यह उससे ज़रा भी बेहतर नहीं हैं जैसा कि इन्हें होना चाहिए। मुझे ताज्जुब नहीं होगा अगर यह मुझे ही इनके सामने क़सूरवार समझें—अरे, इन्होंने मुझे पढ़ाया-लिखाया, मुझे शहजादियों की तरह रखा, हज़ारों खर्च किए, मुझ पर हज़ारों, मेरे लिए गाँव में एक ईमानदार शौहर खोजने की कोशिश की, और अब यहाँ गान्या को। तुम्हारा क्या ख़्याल है ? मैं पिछले पाँच साल से इनके साथ रही नहीं हूँ, लेकिन मैं इनका पैसा लेती रही हूँ और उसे ठीक समझती रही हूँ ! मेरा दिमाग़ इतनी बुरी तरह खराब हो चुका है ! तुम कहती हो एक लाख लो और उसे चलता कर दो, अगर इस सबसे नफ़रत है। यह सच है—मुझे इस सबसे नफ़रत है।...मैं बहुत पहले शादी कर सकती थी, और वह भी गान्या जैसे आदमी के साथ नहीं, लेकिन वह भी बेहद घिनौना काम होता। और मैंने सिर्फ़ द्वेष की वजह से अपनी ज़िन्दगी के पाँच साल क्यों तबाह किए हैं ? तुम्हें मेरी बात का मुश्किल से ही यक़ीन आएगा, लेकिन चार साल पहले मैं कभी-कभी सोचा करती थी कि क्या मुझे सचमुच अपने अफ़ानासी इवानोविच से शादी कर लेनी चाहिए। उस वक़्त मैं द्वेष की वजह से ऐसा सोचा करती थी—उन दिनों मेरे दिमाग़ में तरह-तरह के विचार आया करते थे। और, सच तो यह है कि मैं इन्हें मजबूर भी कर सकती थी। इन्होंने ख़ुद अपने आपको मुझ पर थोपा—तुम यक़ीन करो या न करो। यह सच है कि वह झूठ बोल रहे थे, लेकिन वह बहुत रसिया हैं, वह अपने आप पर काबू नहीं रख सकते। लेकिन, भगवान की कृपा से, बाद में मैंने सोचा कि

यह शायद ही इस द्वेष के लायक़ हैं। और, फ़ौरन मुझे उनसे इतनी नफ़रत हो गई कि अगर यह मुझसे कहते भी कि मैं इनसे शादी कर लूँ तो मैं कभी न करती। और सोचो, मैं लगातार पाँच साल इस तरह नाक चढ़ाए रही ! जी नहीं, शुक्रिया, इससे अच्छा तो है कि मैं सड़क पर निकल जाऊँगी क्योंकि वह मेरी जगह है ! या तो मैं रोगोझिन के साथ मौज करूँगी या कल ही धोबिन बन जाऊँगी ! क्योंकि बात यह है कि मेरे पास अपना कुछ भी नहीं है। मैं चली जाऊँगी और सब कुछ इन्हें सौंप जाऊँगी, एक-एक चीथड़ा छोड़ जाऊँगी। और जब मेरे पास कुछ नहीं होगा तो कौन मुझे अपनाएगा ? गान्या से पूछो। क्या यह अपना लेंगे ? अरे, यह तो क्या, फ़ेर्दीश्चेंको भी मुझे नहीं अपनाएगा !"

"फेर्दीश्चेंको तो शायद ऐसा नहीं ही करेगा, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना," फ़ेर्दीश्चेंको बीच में बोला। "मैं सीधा-सादा आदमी हूँ, लेकिन प्रिंस अपना लेगा ! आप बैठी अपना दुखड़ा रोए जा रही हैं, लेकिन ज़रा प्रिंस को तो देखिए। मैं कुछ देर से उन्हें बड़े ध्यान से देख रहा हूँ।..."

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना बड़ी उत्सुकता से प्रिंस की ओर मुड़ी।

"क्या यह सच है ?" उसने पूछा।

"सच है," प्रिंस ने क्षीण स्वर में कहा।

"आप मुझे जैसी मैं हूँ वैसी ही अपना लेंगे, बिना किसी चीज़ के ?"

"मैं अपना लूँगा, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना।"

"यह तो एक नया ही शोशा है," जनरल येपांचिन ने बुदबुदाकर कहा, "ऐसा भी हो सकता है।"

प्रिंस उदास, कठोर और बेधती हुई नज़रों से नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को घूरता रहा, और वह भी उसे बड़े ध्यान से देखती रही।

"लो, यह एक और आया है !" उसने दार्या अलेक्सेयेव्ना को सम्बोधित करते हुए अचानक कहा, "लेकिन यह सचमुच अपने दिल की नेकी की वजह से ऐसा करने को तैयार है। मैं इसे जानती हूँ। मुझे एक उपकार करनेवाला मिल गया है ! फिर भी लोग इसके बारे में जो कहते हैं वह शायद सच है कि इसका दिमाग़...ठिकाने नहीं है। अगर तुम्हें सचमुच इतना ही प्यार है कि तुम—तुम, एक प्रिंस—रोगोझिनवाली से भी शादी करने में कोई संकोच नहीं करोगे तो तुम जियोगे किस चीज़ के बल पर ?"

"मैं रोगोझिनवाली रखैल से नहीं, बल्कि एक ईमानदार औरत से शादी करूँगा," प्रिंस ने कहा।

"मैं और ईमानदार औरत ?"

"हाँ, आप।"

"ख़ैर, यह तो आपने पढ़ा है...उपन्यासों में। मेरे प्यारे प्रिन्स, इस तरह की बातों पर तो लोग पुराने जमाने में यक़ीन किया करते थे। अचानक दुनिया ज़्यादा समझदार हो गई है, और यह सब कुछ बकवास है ! और आप शादी की बात सोच भी कैसे सकते हैं जबकि आपको ख़ुद अपनी देखभाल के लिए एक नर्स की ज़रूरत है !"

प्रिंस उठ खड़ा हुआ और उसने काँपते हुए, भीरु स्वर में लेकिन साथ ही दृढ़ विश्वास के भाव से कहा—"आप ठीक कहती हैं, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, मैं कुछ नहीं जानता हूँ और मैंने कुछ नहीं देखा है, लेकिन मैं...मैं समझता हूँ कि आप मुझे इज्जत बख़्शेंगी न कि मैं आपको, मैं तो कुछ भी नही हूँ, लेकिन आपने बहुत कुछ झेला है और ऐसे नरक की आग में तपकर आप खरी निकली हैं, और यह बहुत बड़ी बात है। फिर आप शर्मिन्दा किस बात पर हैं ? और आप रोगोझिन के

साथ किसलिए जाना चाहती हैं ? यह एक जुनून है।...आपने तोत्स्की साहब को उनके सत्तर हज़ार वापस कर दिए हैं और आप कहती हैं कि आप सब कुछ छोड़ देंगी—यहाँ की हर चीज। यहाँ जितने लोग हैं उनमें से कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। मैं...मैं आपसे प्यार करता हूँ, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना। मैं आपके लिए जान देने को तैयार हूँ, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना। मैं किसी को आपके ख़िलाफ़ एक शब्द भी नहीं कहने दूँगा, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना।...अगर हम ग़रीब हैं तो मैं काम करूँगा, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना।"

उसके इन अन्तिम शब्दों पर फ़ेर्दीश्चेंको और लेबेदेव हँसते हुए सुने गए, जनरल येपांचिन तक ने बड़ी अरुचि के भाव से अपना गला साफ़ किया। प्तीत्सिन और तोत्स्की अनायास ही मुस्करा पड़े, लेकिन उन्होंने शीघ्र ही अपने आपको रोक लिया। बाक़ी लोग आश्चर्य से मुँह बाए बस देखते रहे।

"...लेकिन शायद हम लोग ग़रीब नहीं रहेंगे, बल्कि बहुत अमीर हो जाएँगे, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना," प्रिंस उसी भीरु स्वर में कहता रहा। "मुझे पक्के तौर पर तो नहीं मालूम है, और मुझे अफ़सोस है कि आज दिन भर मैं इसके बारे में कुछ मालूम भी नहीं कर सका। लेकिन स्विट्ज़रलैण्ड में मेरे पास मास्को से किसी सलाज़किन का खत आया था जिसमें लिखा था कि मुझे बहुत बड़ी वसीयत मिलनेवाली है। यह रहा वह खत।..."

प्रिंस ने सचमुच अपनी जेब से एक खत निकाला।

"यह पागलपन तो नहीं है ?" जनरल येपांचिन ने बुदबुदाकर कहा। "यह जगह सचमुच पागलख़ाना है।"

एक क्षण तक ख़ामोशी रही।

"प्रिंस, क्या आपने कहा कि वह खत सलाज़किन का था ?" प्तीत्सिन ने पूछा। "वह अपने क्षेत्र के बहुत जाने-माने आदमी हैं। नामी वकील हैं, और अगर सचमुच उन्होंने आपको लिखा है तो आप उन पर पूरा विश्वास कर सकते हैं। सौभाग्य से मैं उनकी लिखाई पहचानता हूँ, क्योंकि हाल ही में मुझे उनसे कुछ काम पड़ा था।...अगर आप मुझे वह खत दिखाएँ, तो शायद मैं आपको कुछ बता सकूँ।"

प्रिंस ने काँपते हाथों से खत चुपचाप उसकी ओर बढ़ा दिया।

"क्या है ? क्या है ?" जनरल येपांचिन जोश से बोले; वह सब लोगों को इस तरह देख रहे थे मानो अपने होश-हवास खो बैठे हों। "क्या सचमुच वसीयत है ?"

वे सब नज़रें जमाए प्तीत्सिन को देखते रहे, जो खत पढ़ रहा था। सामान्य जिज्ञासा को एक नया और प्रबल प्रोत्साहन मिल गया था। फ़ेर्दीश्चेंको शान्त न रह सका; रोगोझिन भौचक्का होकर घूरता रहा और बड़ी बेचैनी से प्रिंस और प्तीत्सिन को देखता रहा। दार्या अलेक्सेयेव्ना कौतूहल के मारे बेचैन हो रही थी। लेबेदेव तक अपने आपको काबू में नहीं रख पा रहा था; वह अपने कोने में से उठकर आया और दोहरा होकर अपनी गर्दन आगे बढ़ाकर प्रिंस के कन्धे के ऊपर से झाँककर उस खत को एक ऐसे आदमी की तरह देखने लगा, जिसे यह डर हो कि ऐसा करने पर वहीं फ़ौरन उसकी अच्छी तरह पिटाई होगी।

16

"बिलकुल ठीक है," प्तीत्सिन ने खत तह करके प्रिंस को वापस देते हुए आख़िरकार एलान किया।

"आपको अपनी मौसी की पक्की वसीयत की बुनियाद पर बिना किसी झंझट के बहुत बड़ी रक़म मिल जाएगी।"

"नामुमकिन !" जनरल येपांचिन ने ऐसे कहा जैसे गोली दाग रहे हों।

सब लोग फिर मुँह खोले देखते रहे।

प्तीत्सिन ने ख़ासतौर पर जनरल येपांचिन को सम्बोधित करते हुए समझाया कि प्रिंस की मौसी, जिन्हें वह जाती तौर पर नहीं जानते थे, अभी पाँच महीने पहले मरी थीं। वह प्रिंस की माँ की सबसे बड़ी बहन थीं और मास्को के पपूशिन नामक एक व्यापारी की बेटी थीं, जो दिवालिया होकर बहुत ग़रीबी में मरे थे। लेकिन पपूशिन के बड़े भाई बहुत नामी और धनी व्यापारी थे और वह भी हाल ही में मरे थे। उनके दोनों बेटे साल-भर पहले लगभग एक ही महीने के अन्दर मर गए थे। उनके मरने का बूढ़े बाप पर इतना गहरा असर पड़ा था कि वह भी कुछ ही अरसे बाद बीमार पड़ गए थे और मर गए थे। वह विधुर थे और प्रिंस की मौसी, यानी अपनी भतीजी को छोड़कर, जो एक ग़रीब बेघरबार औरत थीं, उनका अपना कोई वारिस नहीं था। जब उन्हें वसीयत का पैसा मिला उस वक़्त वह जलंधर की बीमारी से मर रही थीं, लेकिन उन्होंने फ़ौरन प्रिंस का पता लगवाने के लिए कार्रवाई की थी, सारा मामला सलाज़किन के हाथों में सौंप दिया था, और मरने से पहले अपनी वसीयत तैयार करवा दी थी। ऐसा लगता है कि सरकारी नोटिस का इन्तज़ार करने या कोई पूछ-ताछ करने के बारे में न प्रिंस ने सोचा था और न उस डॉक्टर ने जिसके यहाँ वह स्विट्ज़रलैण्ड में रहता था; प्रिंस ने सलाज़किन का खत जेब में रखकर खुद चल पड़ने का फ़ैसला किया था।

"लेकिन मैं आपको एक बात बता सकता हूँ," प्तीत्सिन ने प्रिंस की ओर मुड़कर अपनी बात ख़त्म की। "सब कुछ बिलकुल क़ानूनी और पक्का है, और सलाज़किन ने आपको इस मामले के क़ानूनी और बिलकुल पक्के होने के बारे में जो कुछ लिखा उसकी बुनियाद पर आप यह मान सकते हैं कि जैसे यह रक़म नक़द आपकी जेब में है। मैं आपको बधाई देता हूँ, प्रिंस। शायद आपको भी पन्द्रह लाख मिलेंगे, और कौन जाने इससे भी ज़्यादा मिल जाएँ। पपूशिन बहुत अमीर आदमी थे।"

"अपने ख़ानदान के आख़िरी जिन्दा वारिस प्रिंस मीश्किन की जय हो, जय हो, जय हो !" फ़ेर्दीश्चेंको चिल्लाया।

"हुर्रा !" लेबेदेव ने नशे में डूबी हुई भर्राई आवाज़ से कहा।

"और मैंने आज सबेरे इसे बेचारे को पच्चीस रूबल उधार दिए थे हः, हः, हः, ! कमाल हो गया !" जनरल येपांचिन विस्मय से लगभग स्तब्ध होकर चिल्लाए। "तो, बधाई हो, बधाई हो !" और यह कहते हुए वह अपनी जगह से उठे और प्रिंस के पास जाकर उन्होंने उसे गले लगा लिया। बाक़ी लोग भी अपनी-अपनी जगहों से उठकर प्रिंस को बधाई देने गए। जो लोग दरवाज़े के परदे के पीछे चले गए थे वे भी ड्राइंग-रूम में आने लगे। लोगों के बातें करने और आश्चर्य प्रकट करने से गड़बड़ी-सी मचने लगी, कुछ लोग शैम्पेन की भी माँग कर रहे थे; कमरे में घिचपिच होने लगी; हर आदमी इधर-उधर आ-जा रहा था। एक क्षण के लिए वे नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को भूल गए और इस बात को भी कि बहरहाल वह मेज़बान थी। लेकिन धीरे-धीरे उन्हें लगभग एक साथ ही यह समझ में आया कि प्रिंस ने अभी-अभी उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखा था। इसलिए सारा मामला पहले से भी कई गुना ज़्यादा पागलपन का और ग़ैर-मामूली हो गया। तोत्स्की बेहद ताज्जुब में पड़कर अपने कन्धे बिचकाते रहे; शायद अकेले वही बैठे रहे थे, बाक़ी सब लोग अव्यवस्थित

हालत में मेज़ के चारों ओर भीड़ लगाए खड़े थे। बाद में उन सभी लोगों का कहना था कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ठीक उसी क्षण से पागल हो गई थी। वह बैठी रही और सब लोगों को अपनी आँखों में आश्चर्य का एक विचित्र भाव लिए इस तरह देखती रही मानो उसकी समझ में न आ रहा हो कि क्या हो रहा है और वह उसे समझने की भरपूर कोशिश कर रही हो। फिर वह अचानक प्रिंस की ओर मुड़ी और धमकी-भरे अन्दाज से माथे पर बल डालकर उसे ग़ौर से देखने लगी। लेकिन यह स्थिति केवल एक क्षण रही। शायद यकायक उसे यह बात सूझी कि यह सब एक मज़ाक़ और ढोंग था; लेकिन प्रिंस का चेहरा देखते ही उसकी समझ में आ गया कि उसका ऐसा सोचना ग़लत था। उसने कुछ देर सोचा, और एक बार फिर उसके होंठों पर अस्पष्ट-सी मुस्कराहट आ गई, मानो वह साफ़-साफ़ समझ न पा रही हो कि वह किस चीज़ पर मुस्करा रही थी।

"तो सचमुच की प्रिंसेस !" उसने दबी आवाज़ से मानो अपने आपको चिढ़ाते हुए कहा, और फिर अनायास ही दार्या अलेक्सेयेव्ना की ओर देखकर हँस पड़ी। "यह होने की तो उम्मीद भी नहीं थी...मैंने...मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि यह मामला इस तरह ख़त्म होगा।...लेकिन आप लोग खड़े क्यों हैं ? तशरीफ़ फरमाइए, बैठिए; मुझे, प्रिंस को बधाई दीजिए ! शैम्पेन की फ़रमाइश हुई थी। फ़ेर्दीश्चेंको, जाकर मँगवा दो। कात्या, पाशा," दरवाज़े पर अपनी दोनों नौकरानियों पर नज़र पड़ते ही वह चिल्लाई, "यहाँ आओ। मेरी शादी होने जा रही है। सुना तुमने ? प्रिंस के साथ; इनके पास पन्द्रह लाख हैं, यह हैं प्रिंस मीश्किन और यह मुझसे शादी कर रहे हैं !"

"मुबारक हो, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, वक़्त आ गया है !" दार्या अलेक्सेयेव्ना जो कुछ हुआ था उससे भाव-विह्वल होकर चिल्लाई। "ऐसा मौक़ा हाथ से न जाने देना !"

"अरे, मेरे पास बैठो, प्रिंस," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना कहती रही। "ऐसे। और, वह लीजिए, शैम्पेन भी आ गई। हमें आप लोग बधाई दीजिए !"

"हुर्रा !" कई आवाज़ें एक साथ आईं। कई लोग शैम्पेन के चारों ओर जमा हो गए, जिनमें रोगोझिन की लगभग पूरी मण्डली शामिल थी। हालाँकि ये लोग चिल्ला रहे थे और चिल्लाते रहने को तैयार थे, लेकिन उनमें से कई परिस्थितियों और परिवेश की विचित्रता के बावजूद महसूस कर रहे थे कि दृश्य में परिवर्तन आ गया था। दूसरे लोगों की समझ में कुछ नहीं आ रहा था और अविश्वास के भाव से वे प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन कई लोग एक-दूसरे के कान में कह रहे थे कि यह बिलकुल मामूली बात थी; प्रिंस लोग तो हर तरह की औरतों से शादी करते ही रहते थे, बंजारों की लड़कियों तक से। रोगोझिन खड़ा घूर रहा था, उसका चेहरा ऐंठ गया था और उस पर परेशानी की मुस्कराहट जमकर रह गई थी।

"प्रिंस, मेरे दोस्त, अपने होश सम्भालो !" जनरल येपांचिन ने प्रिंस के बग़ल में आकर उसकी आस्तीन खींचते हुए भयातुर होकर कानाफूसी के स्वर में कहा।

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने इस बात को देखा और ठहाका मारकर हँस पड़ी।

"नहीं, जनरल साहब ! आपने सुना, अब मैं खुद प्रिंसेस हूँ। प्रिंस अभी मेरी रक्षा करेंगे ! अफ़ानासी इवानोविच, आप भी मुझे बधाई दीजिए। अब मैं हर जगह आपकी बीवी के बग़ल में बैठ सकूँगी। क्या ख़्याल है आपका, ऐसा शौहर करना मुनासिब है ? पन्द्रह लाख, और इसके अलावा प्रिंस, और ऊपर से लोग कहते हैं कि बौड़म भी है। इससे अच्छा और क्या हो सकता है ? वाह, मेरे लिए तो ज़िन्दगी अब शुरू हो रही है ! रोगोझिन, तुम्हें बहुत देर हो गई। अपना पैसा ले जाओ; मैं प्रिंस से शादी कर रही हूँ और मैं तुमसे ज़्यादा रईस हूँ !"

लेकिन रोगोझिन स्थिति को समझ गया था। उसके चेहरे पर अकथनीय व्यथा की छाप थी।

उसके सीने से एक कराह निकल गई।

"छोड़ दो उसे !" उसने प्रिंस से चिल्लाकर कहा।

उनके चारों ओर के लोग ठहाका मारकर हँस पड़े।

"छोड़ दिया जाए तुम्हारे लिए, क्या ?" दार्या अलेक्सेयेव्ना विजयोल्लास से चिल्लाई। बड़े आए मेज़ पर पैसा फेंकनेवाले, उजड्ड, गँवार कहीं के ! प्रिंस शादी कर रहे हैं और तुम आए थे बेहूदगी करने !"

"मैं भी शादी कर लूँगा ! मैं अभी, इसी क्षण शादी कर लूँगा ! मेरे पास जो कुछ है उसे सब दे दूँगा !..."

"सुनो तो इस शराबी की बातें ! अरे, तुम्हें तो यहाँ से निकाल बाहर किया जाना चाहिए !" दार्या अलेक्सेयेव्ना ने फिर कहा।

ठहाके पहले से भी ज़्यादा ऊँचे हो गए।

"सुन लिया तुमने, प्रिंस ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने उसकी ओर मुड़कर कहा। "कैसे यह गँवार तुम्हारी दुल्हन के लिए सौदेबाजी कर रहा है।"

"वह नशे में है," प्रिंस ने कहा। "वह आपसे बहुत प्यार करता है।"

"बाद में क्या तुम्हें शरम नहीं आएगी कि तुम्हारी बीवी रोगोझिन के साथ भागते-भागते रह गई ?"

"आपको बुखार चढ़ा हुआ था। आपको अब भी बुखार चढ़ा हुआ है। आप ऐसी बातें कर रही हैं जैसे सरसाम की हालत में हों।"

"और तुम्हें बाद में शरम तो नहीं आएगी जब लोग तुमसे कहेंगे कि तुम्हारी बीवी तोत्स्की की रखैल रह चुकी है ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं।...आप तोत्स्की के साथ अपनी मर्जी से तो रही नहीं थीं !"

"और तुम मुझे कभी इस बात का उलाहना तो नहीं दोगे ?"

"कभी नहीं।"

"सोचकर कहना, सारी ज़िन्दगी का ज़िम्मा नहीं ले सकते !"

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना," प्रिंस ने शान्त भाव से और मानो सहानुभूति करते हुए कहा, "मैं अभी आपको बता चुका हूँ कि आपकी स्वीकृति को मैं अपने लिए सम्मान की बात समझूँगा, और यह कि आप मुझे इज़्ज़त बख़्शेंगी, न कि मैं आपको। उन शब्दों पर आप मुस्कराई थीं और मैंने उन सब लोगों को भी हँसते हुए सुना था। शायद मैंने अपनी बात इस तरह कही हो कि उस पर हँसी आए और शायद देखने में भी मैं ऐसा लग रहा हूँ कि मुझे देखकर हँसी आए, लेकिन इतना मैं ज़रूर महसूस कर रहा था कि मैं...जानता था कि इज़्ज़त से मेरा क्या मतलब था और यह कि मैं सच बात कह रहा था। अब कुछ ही देर पहले आप अपने आपको इसके लिए कभी माफ़ न कर सकतीं, पर आपका कोई दोष नहीं है। यह ग़लत है कि आपकी ज़िन्दगी पूरी तरह बर्बाद हो गई। इससे क्या होता है कि रोगोझिन आपके पास आया या गव्रीला अर्दालिओनोविच ने आपको धोखा देने की कोशिश की ? आप बार-बार यही बात क्यों कहे जाती हैं ? कम ही लोग होंगे जो—मैं आपसे यह बात दोहराता हूँ—वह कर सकें जो आपने किया है। जहाँ तक इस बात का सवाल है कि आप रोगोझिन के साथ चली जाना चाहती थीं, तो आपने इसका फ़ैसला उस वक़्त किया था जब आपकी तबियत बिलकुल खराब थी। आप अब भी बीमार हैं, और अच्छा यही होगा कि आप जाकर सो जाएँ। आप कल ही धोबिन बन जातीं पर रोगोझिन के साथ कभी न रहतीं। आप

स्वाभिमानी हैं, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, लेकिन शायद आप इतनी ज़्यादा दुःखी हैं कि आप सचमुच समझती हैं कि सारा दोष आपका ही है। अरे, आपकी तो अच्छी तरह देखभाल की जानी चाहिए, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना। मैं आपकी देखभाल करूँगा। आज सवेरे आपकी तस्वीर देखकर मुझे ऐसा लगा था कि मैं अच्छी तरह जाना-पहचाना चेहरा देख रहा हूँ। मुझे फ़ौरन ऐसा लगा था जैसे आपने मुझे पुकारा हो। मैं...मैं जीवन-भर आपकी इज़्ज़त करूँगा, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना," प्रिंस ने मानो अपने आपको सम्भालकर अपनी बात बीच में ही ख़त्म करते हुए कहा, शरमाकर और यह समझकर कि किस तरह के लोगों के सामने वह यह सब कुछ कह रहा था।

प्तीत्सिन खिसियाहट के मारे सिर झुकाकर ज़मीन को एकटक देखने लगा। तोत्स्की ने मन ही मन सोचा—"बौड़म है, मगर इतना जानता है कि चिकनी-चुपड़ी बातें करना अपनी मनचाही चीज़ को पा लेने का सबसे अच्छा तरीक़ा होता है, स्वभाव की बात है !" प्रिंस का ध्यान इस बात की ओर भी गया कि गान्या अपने कोने से उसे आग बरसाती हुई नज़रों से इस तरह घूर रहा था मानो उसे जलाकर राख कर देना चाहता हो।

"ऐसा होता है भला आदमी !" दार्या अलेक्सेयेव्ना ने द्रवित होकर कहा।

"शरीफ़ आदमी," जनरल येपांचिन ने दबे स्वर से कहा, "लेकिन—तबाह हो गया !"

तोत्स्की हैट लेकर उठने की तैयारी करने लगे कि सबकी नज़रें बचाकर चुपके से खिसक जाएँ। उन्होंने और जनरल साहब ने एक-दूसरे को नज़रों से साथ चलने का इशारा किया।

"शुक्रिया, प्रिंस," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना बोली, "इससे पहले किसी ने मुझसे इस तरह बातें नहीं की थीं। मुझे ख़रीदने की कोशिश तो बहुतेरे करते रहते हैं पर किसी शरीफ़ आदमी ने आज तक मुझसे शादी करने को नहीं कहा है। सुना आपने, अफ़ानासी इवानोविच ?" उसने तोत्स्की को सम्बोधित करते हुए पूछा। "प्रिंस ने जो कुछ कहा है उसके बारे में आपकी क्या राय है ? क्यों, बेहूदा-सी बातें हैं, है न ? रोगोझिन ! जाने की इतनी जल्दी न करो। लेकिन तुम्हारा इरादा जाने का नहीं है, है न ? शायद, आख़िरकार मैं तुम्हारे साथ ही चलूँ। कहाँ ले जाना चाहते थे ?"

"येकातेरीनहोफ़[1]," लेबेदेव अपने कोने में से जल्दी से बोला, और रोगोझिन बुरी तरह चौंक पड़ा और उसे इस तरह घूरने लगा जैसे जो उसने सुना उस पर उसे स्वयं विश्वास न हो। वह बिलकुल भौचक्का रह गया था, जैसे उसके सिर पर कोई ज़ोर का आघात लगा हो।

"क्या कह रही हो, माई डियर ?" दार्या अलेक्सेयेव्ना ने सहमकर कहा। "दरअसल तुम्हें दौरे पड़ते हैं। तुम्हारे होश-हवास तो ठिकाने हैं न ?"

"और तुमने क्या सच समझ लिया ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने सोफ़े से उछलकर ठहाका मारकर हँसते हुए कहा। "ऐसे भोले बच्चे को तबाह कर दूँगी ? अरे, इस तरह का काम तो तोत्स्की साहब करते हैं—वह हैं बच्चे फुसलाने में उस्ताद ! चलो, रोगोझिन ! अपना पैसा तैयार रखो ! शादी करने की बात छोड़ो मगर पैसा दे दो। मैं शायद तुमसे शादी न करूँ। तुम समझते थे कि मुझसे शादी करके पैसा तुम रख लोगे, क्यों, है न ? जाओ, जाओ ! मैं ख़ुद बड़ी बेहया और आवारा हूँ। मैं तोत्स्की की रखैल थी।...प्रिंस, अब तुम्हें नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से नहीं बल्कि अग्लाया येपांचिना से शादी करना चाहिए, नहीं तो फ़ेर्दीश्चेंको तुम्हारी ओर उँगली उठाएगा ! तुम्हें तो डर नहीं लगता, लेकिन मुझे तो यही डर रहेगा कि मैंने तुम्हें तबाह किया और बाद में इसके लिए तुम मुझे बुरा-भला

1. येकातेरीनहोफ़ पीटर्सबर्ग के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक पार्क का नाम था जिसमें एक महल बना हुआ था। पार्क का यह नाम महारानी येकातेरीना प्रथम के नाम पर रखा गया था। यह पार्क शीतकालीन मनोरंजन-केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध था, जहाँ एक रेस्तोराँ था और विभिन्न प्रकार के संगीत-आयोजनों के लिए एक मंच था। येकातेरीनहोफ़ का मनोरंजन-केन्द्र सर्दियों में तीन घोड़ोंवाली गाड़ियों पर यात्रा करनेवालों का प्रिय विश्राम-स्थल था।

कहोगे ! और जहाँ तक तुम्हारा यह कहना है कि मैं तुम्हें इज्जत बख़्शूँगी तो तोत्स्की को इसके बारे में सब कुछ मालूम है। और तुमने, गान्या, अग्लाया येपांचिना को अपने हाथों में से फिसल जाने दिया है—यह मालूम है तुम्हें ? अगर तुमने उसके साथ सौदेबाजी न की होती तो वह ज़रूर तुमसे शादी कर लेती ! तुम सब ऐसे ही हो—तुम्हारे लिए बस एक ही रास्ता है—बदनाम या शरीफ़ औरतों के साथ चिपके रहना ! वरना तुम लोग बड़ी छीछालेदर में पड़ जाओगे। देखो तो, जनरल साहब किस तरह मुझे मुँह बाए देख रहे हैं !...''

''यह तो नरक है—नरक !'' जनरल येपांचिन अपने कन्धे झिटककर बार-बार यही कहते रहे। वह भी सोफ़े से उठ खड़े हुए; अब सब लोग फिर खड़े हो गए थे। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना पर तो जैसे जुनून सवार था।

''क्या यह मुमकिन है ?'' प्रिंस ने अपने हाथ मलते हुए कराहकर कहा।

''और तुम समझते—नहीं ? देखो, मैं बेहया ज़रूर हूँ, लेकिन शायद मुझमें भी स्वाभिमान हो। तुमने अभी मुझे निष्कलंक कहा था—अच्छी निष्कलंकता है यह भी कि बस डींग मारने के लिए दस लाख की दौलत और प्रिंसेस की उपाधि ठुकरा दी और सड़क पर ठोकरें खाने लगी ! इसके बाद मैं तुम्हारी किस तरह की बीवी बन सकूँगी। देखिए, अफ़ानासी इवानोविच, मैंने सचमुच दस लाख की रक़म खिड़की के बाहर फेंक दी है ! फिर आप यह कैसे समझ रहे थे कि मैं आपके पचहत्तर हज़ार की खातिर प्यारे गान्या से शादी करके फूली नहीं समाऊँगी। तुम अपने पचहत्तर हज़ार वापस लो (एक लाख तक नहीं गए, रोगोझिन तुमसे बाज़ी ले गया !), और प्यारे गान्या के जख्म पर मरहम मैं खुद रखूँगी। मेरे दिमाग़ में एक विचार आया है। और अब मैं जी भरकर मौज उड़ाऊँगी। मैं आवारा औरत हूँ, यही तो हूँ मैं ! मैंने दस साल क़ैदख़ाने की सलाखों के पीछे काटे हैं और अब मेरी खुश रहने की बारी आई है। इन्तज़ार किस बात का कर रहे हो, रोगोझिन ? आओ, चलें !''

''चलो चलें !'' रोगोझिन ने बेहद खुशी से बेकाबू होते हुए गरजकर कहा। ''ए, बात सुनो—शराब लाओ ! उफ़ !...''

''बहुत-सी शराब तैयार रखना—मेरा पीने को जी चाह रहा है। कुछ संगीत होगा ?''

''हाँ, हाँ ! पास मत आओ !'' दार्या अलेक्सेयेव्ना को नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के पास आते देखकर रोगोझिन जुनून की हालत में चिल्लाया। ''वह मेरी है ! सब कुछ मेरा है ! मेरी रानी ! बस, जो होना था हो गया !''

खुशी के मारे वह फूला नहीं समा रहा था। वह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के चारों ओर चक्कर काटता रहा और चिल्ला-चिल्लाकर सबसे कहता रहा, ''पास मत आना !'' अब तक उसकी पूरी मण्डली आकर ड्राइंग-रूम में जमा हो चुकी थी। कुछ लोग शराब पी रहे थे, बाक़ी चिल्ला रहे थे और हँस रहे थे। वे सभी बहुत उत्तेजित और बेक़ाबू हो रहे थे। फेर्दीश्चेंको भी उन्हीं में शामिल हो जाने की कोशिश करने लगा। जनरल येपांचिन और तोत्स्की ने एक बार फिर सबकी नज़रें बचाकर खिसक जाने की कोशिश की। गान्या ने भी हैट हाथ में ले रखी थी, लेकिन वह एक शब्द भी बोले बिना चुपचाप खड़ा था, मानो जो दृश्य उसके सामने आ रहा था उससे अपने आपको अलग करने में वह असमर्थ हो।

''पास मत आओ !'' रोगोझिन चिल्लाया।

''तुम इतना चीख़ क्यों रहे हो ?'' नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने ज़ोर से उस पर हँसते हुए कहा। ''अभी तक यहाँ की मालकिन मैं ही हूँ। अगर मैं चाहूँ तो अब भी तुम्हें ठोकर मारकर निकाल

सकती हूँ। मैंने तुम्हारा पैसा अभी लिया नहीं है—अभी तक वह वहीं है। लाओ, मुझे दो—पूरा बण्डल ! पूरे एक लाख हैं न इसमें ? उफ़, कितनी घिन आती है ! क्यों, बात क्या है, दार्या अलेक्सेयेव्ना ? तुम मुझसे यह तो उम्मीद नहीं करती थीं कि मैं उसे तबाह कर दूँ ?" (यह कहकर उसने प्रिंस की ओर ईशारा किया।) "अभी उसके शादी करने का वक़्त नहीं आया है, अभी तो उसे नर्स की ज़रूरत है। जनरल साहब इसकी नर्स का काम करेंगे—देखो, कैसे आगे-पीछे घूम रहे हैं ! देखो, प्रिंस, तुम्हारी मंगेतर ने पैसे ले लिए क्योंकि वह है ही बदचलन, और तुम उससे शादी करना चाहते थे ! तुम रो क्यों रहे हो ? उदास हो गए, क्या ? पर तुम मेरी तरह हँसते रहो," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना कहती रही, खुद जिसके गालों पर दो बड़े-बड़े आँसू चमक रहे थे। "वक़्त पर विश्वास करो—सब कुछ गुजर जाएगा ! बाद में होश आने से अच्छा है कि अभी होश में आ जाओ।...लेकिन तुम सब लोग क्यों रो रहे हो ? कात्या भी रो रही है ! कात्या, क्या बात है ? मैं तुम्हारे लिए बहुत-सी चीज़ें छोड़े जा रही हूँ, तुम्हारे और पाशा के लिए। मैंने सारा बन्दोबस्त पहले ही कर रखा है। अच्छा, अब मैं जाती हूँ, विदा ! मैंने तुम जैसी ईमानदार लड़की से अपनी जैसी बदचलन की खिदमत करवाई।...यह बेहतर है, प्रिंस, कहीं बेहतर है, बाद में तुम्हें मुझसे नफ़रत हो जाती और हम लोग कभी खुश न रह पाते ! इसके ख़िलाफ़ कुछ न कहो, मुझे उन बातों पर यक़ीन नहीं आता ! और कितनी बड़ी बेवकूफ़ी की बात होती वह।...नहीं, यही अच्छा है कि हम दोनों दोस्तों की तरह एक-दूसरे से अलग हो जाएँ, क्योंकि मैं खुद सपनों की दुनिया में रहती हूँ, और उससे कुछ भला होनेवाला नहीं है ! क्या मैं ख़ुद तुम्हारे सपने नहीं देखती रही थी ? तुम बिलकुल ठीक कहते हो, मैंने बहुत पहले तुम्हारा सपना देखा था, जब मैं उनके गाँव में रहती थी। पाँच साल तक मैं यहाँ अकेली रही। मैं सोचती थी और सपने देखती थी, सपने देखती थी और सोचती थी, और हमेशा मैं तुम जैसे किसी आदमी की कल्पना करती थी, जो नेक और ईमानदार और अच्छा और तुम्हारी ही तरह कुछ हो, इतना कुछ कि वह अचानक आकर कहे, 'इसमें आपका कसूर नहीं है, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, और मैं आपको जी-जान से चाहता हूँ !' हाँ, घंटों इसी तरह सपने देखते देखते मैं लगभग पागल हो जाती थी। और तब वही आ जाता था—साल में कोई दो महीने यहाँ रहता था, मुझे बेइज्जत करता था, मेरा अपमान करता था, मुझे ताव दिलाता था और पागल बना देता था, और फिर चला जाता था; हज़ारों बार मेरा जी चाहा कि तालाब में डूब मरूँ, लेकिन मैं बहुत ही नीच थी—मुझमें ऐसा करने की हिम्मत नहीं थी। और अब...तुम तैयार हो, रोगोझिन ?"

"बिलकुल तैयार ! कोई पास मत आना !"

"तैयार !" कई आवाज़ें एक साथ चिल्लाईं।

"घोड़ागाड़ियाँ तैयार हैं, घंटियों और हर साज-सम्मान से लैस !"

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने झपटकर नोटों का बण्डल उठा लिया।

"गनिए, मेरे मन में एक बात आई है। मैं तुम्हें ईनाम देना चाहती हूँ, क्योंकि तुम सब कुछ क्यों खो दो ? रोगोझिन, क्या यह तीन रूबल के लिए रेंगते हुए दुनिया के छोर तक चला जाएगा ?"

"बिलकुल जाएगा !"

"अच्छा, तो सुनो, गान्या, मैं आख़िरी बार तुम्हें वैसा देखना चाहती हूँ जैसे तुम सचमुच हो। तुम पिछले तीन महीने से मुझे सता रहे हो। अब मेरी बारी आई है। नोटों का यह बण्डल देखते हो ? इसमें एक लाख हैं। मैं अभी इन सब लोगों के सामने इसे आग में फेंक दूँगी—सब लोग गवाह रहें। जैसे ही यह सुलगने लगे, हाथ आतिशदान में डालकर, लेकिन दस्तानों के बिना और आस्तीनें

चढ़ाकर, अपने नंगे हाथों से इसे निकाल लेना ! ऐसा कर दो—यह सारा एक लाख तुम्हारा ! हद से हद तुम्हारी उँगलियाँ थोड़ी-सी जलेंगी, लेकिन एक लाख की रक़म है—सोच लो ! इसे निकाल लाने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा। और जब तुम मेरे पैसे के लिए आग में घुसोगे तो मैं तुम्हारी आत्मा को जी भरकर देखूँगी ! सब लोग गवाह हैं कि पैसा तुम्हें मिल जाएगा ! और अगर आग में हाथ नहीं डालोगे तो वह जल जाएगा। मैं किसी और को उसे छूने नहीं दूँगी। चलो ! दूर हटो सब यहाँ से ! पैसा मेरा है। मैंने इसे रोगोझिन से एक रात के लिए लिया है। रोगोझिन, मेरा पैसा है न ?"

"तुम्हारा ही है, मेरी जान ! बिलकुल तुम्हारा, मेरी रानी !"

"तो, अच्छी बात है ! पीछे हट जाओ सब ! मेरा जो जी चाहेगा करूँगी। मुझे रोकना नहीं ! फ़ेर्दीश्चेंको, आग सुलगा दो।"

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना," फ़ेर्दीश्चेंको ने स्तम्भित होकर जवाब दिया। "यह काम मेरे बस का नहीं।"

"ओ-ह-ह !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना चिल्लाई और चिमटा लेकर उसने लकड़ी के दो सुलगते हुए कुन्दों को कुरेदा, जैसे ही आग भड़क उठी, उसने नोटों का बण्डल उसमें फेंक दिया।

सबके मुँह से ज़ोर से आह निकली; कुछ ने तो अपने सामने सलीब का निशान भी बनाया।

"पागल हो गई है, पागल हो गई है !" चारों ओर लोग चिल्लाए।

"क्या, इसे...इसे बाँधने की ज़रूरत नहीं ?" जनरल येपांचिन ने प्तीत्सिन से कहा। "या किसी को भेजकर...पागल हो गई है, है न ? है न ?"

"न-हीं, शायद वह इतनी पागल नहीं है," प्तीत्सिन ने चुपके से कहा; उसका रंग बिलकुल सफ़ेद पड़ गया था और वह नोटों के सुलगते हुए बण्डल पर से अपनी नज़रें नहीं हटा पा रहा था।

"पागल ही तो है न ?" जनरल येपांचिन तोत्स्की के साथ चिपक गए।

"मैंने आपसे पहले ही कहा था कि वह **रंगीन** औरत है," तोत्स्की ने बुदबुदाकर कहा। उनका रंग भी कुछ पीला पड़ गया था।

"लेकिन, भले आदमी, एक लाख की रक़म है !..."

"हे भगवान, हे भगवान !" हर तरफ़ लोग चिल्ला पड़े।

वे सब आतिशदान के चारों ओर जमा हो गए; सभी देखने के लिए आगे धक्का दे रहे थे, सभी आहें भर रहे थे।...कुछ लोग तो सामने खड़े हुए लोगों के सिर के ऊपर से देखने के लिए कुर्सियों पर भी चढ़ गए। दार्या अलेक्सेयेव्ना भागकर दूसरे कमरे में गई और डरकर कात्या और पाशा के कान में कुछ कहने लगी। जर्मन सुन्दरी वहाँ से खिसक गई थी।

"रानी ! देवी ! सर्वशक्तिशालिनी !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के सामने घुटनों के बल रेंगते हुए और आतिशदान की ओर अपनी बाँहें फैलाकर लेबेदेव ने गिड़गिड़ाकर कहा। "एक लाख ! पूरे एक लाख ! मैंने ख़ुद देखा था। मैंने ख़ुद उन्हें लपेटते देखा था ! हे दयामयी, कृपालु देवी, मुझे आदेश दो—मैं सारा का सारा आतिशदान में घुस जाऊँगा...मैं अपना सफ़ेद बालोंवाला सिर लपटों में डाल दूँगा ! बीवी अपाहिज है, तेरह छोटे-छोटे बच्चे हैं...सबके सब अनाथ। बाप को अभी पिछले हफ़्ते दफ़न किया है...वह भूख से मर गए थे, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना !" उसने रो-रोकर कहा और रेंगकर आतिशदान की ओर बढ़ने लगा।

"पीछे हटो !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने उसे ढकेलते हुए कहा। "आप सब लोग जगह दीजिए ! गान्या, तुम वहाँ क्यों खड़े हो ? शरमाओ नहीं ! आगे बढ़ो—यही मौक़ा है तुम्हारे लिए !"

लेकिन तमाम दिन और पूरी शाम गान्या इतना कुछ झेल चुका था कि वह अब इस अन्तिम और अप्रत्याशित परीक्षा के लिए तैयार नहीं था। भीड़ उसके सामने फट गई और वह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के सामने उससे तीन क़दम की दूरी पर खड़ा रहा। वह अपनी दहकती हुई आँखें एकटक उस पर जमाए हुए आतिशदान के पास खड़ी राह देख रही थी। गान्या शाम के कपड़े पहने, हाथ में हैट और दस्ताने लिए उसके सामने चुपचाप भीरुता के भाव से सीने पर हाथ बाँधे खड़ा आग को घूर रहा था। उसके चूने जैसे सफ़ेद चेहरे पर पागलों जैसी मुस्कराहट खेल रही थी। यह सच है कि वह अपनी नज़रें नोटों के जलते हुए बण्डल की ओर से नहीं हटा पा रहा था; लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसकी आत्मा में कोई नई चीज़ उत्पन्न हो गई थी; मानो उसने इस अग्नि-परीक्षा को झेल जाने का प्रण कर लिया हो; वह अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ, और कुछ क्षण बाद यह बात सभी की समझ में आ गई कि वह पैसों के पीछे नहीं जाएगा, कि ऐसा करने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी।

"अरे, वह जल जाएगा और लोग तुम पर हँसेंगे !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने उससे चिल्लाकर कहा। "अरे, बाद में तुम खुद फाँसी लगा लोगे...मैं मज़ाक़ नहीं कर रही हूँ।"

दो सुलगते हुए कुन्दों के बीच जो आग शुरू में भड़क उठी थी वह नोटों का बण्डल गिरने और उसका दबाव पड़ने की वजह से कुछ देर के लिए धीमी पड़ गई थी। लेकिन नीचेवाले कुन्दे के कोने के नीचे एक छोटी-सी नीली लपट अब भी रेंग रही थी। आख़िरकार आग की एक लम्बी-सी पतली ज़बान ने बण्डल को चाटा और उस पर मजबूती से टिककर काग़ज़ के सहारे ऊपर की ओर दौड़ चली और, अचानक, पूरा बण्डल धधक उठा और एक चमकदार लपट चिमनी के रास्ते ऊपर की ओर लपकी। सबके मुँह से हाय निकल गई।

"देवी !" लेबेदेव अभी तक गिड़गिड़ाकर कह रहा था और आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था लेकिन रोगोझिन ने उसे घसीट लिया और फिर पीछे ढकेल दिया।

रोगोझिन स्वयं एक साकार निश्चल एकाग्र दृष्टि बनकर रह गया था। वह अपनी नज़रें नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना पर से हटा नहीं सका; वह उसके सौन्दर्य का रसपान कर रहा था और खुशी से सातवें आसमान पर था।

"इसे कहते हैं सचमुच की रानी !" वह अपने पास के लोगों को बार-बार सम्बोधित करके हर मिनट कहता रहा। "यह है हम लोगों का तरीक़ा !" वह खुशी के मारे आपे से बाहर होकर चिल्लाता रहा। "है कोई तुम बदमाशों में जो ऐसा करने की बात सोच भी सके—हुँह ?"

प्रिंस चुपचाप उदास भाव से देखता रहा।

"मैं तो एक हज़ार के ही बदले इन्हें अपने दाँतों से बाहर घसीट लाऊँगा !" फ़ेर्दीश्चेंको ने सुझाव दिया।

"मैं भी दाँतों से खींच ला सकता हूँ !" मुक्केबाज ने खुली निराशा के भाव से पीछे से कहा। "लानत है, जला जा रहा है !" वह लपट को देखकर चिल्लाया।

"जला जा रहा है, जला जा रहा है !" सब लोग एक स्वर से चिल्ला रहे थे, लगभग सभी लोग आतिशदान के और पास आ जाने की कोशिश कर रहे थे।

"गान्या, बेवक़ूफ़ी न करो ! मैं तुमसे आख़िरी बार कह रही हूँ !"

"आगे बढ़ो !" फ़ेर्दीश्चेंको बिलकुल जुनून की हालत में गान्या की ओर झपटा और उसकी आस्तीन खींचते हुए गरजकर बोला। "आगे बढ़ो, घमण्डी गदहे। जल जाएगा ! उफ़, लानत है इस आदमी पर !"

गान्या ने झटके से फ़ेर्दीश्चेंको को दूर ढकेल दिया, पीछे मुड़ा और दरवाज़े की ओर चल दिया; लेकिन वह अभी दो क़दम भी नहीं चला होगा कि लड़खड़ाकर फ़र्श पर ढेर हो गया।

"गश खा गया !" चारों ओर से लोग चिल्लाए।

"जल जाएगा, देवी !" लेबेदेव ने गिड़गिड़ाकर कहा।

"बेकार में जल जाएगा !" सब लोग शोर मचाने लगे।

"कात्या, पाशा, इसके लिए पानी लाओ, सुँघाने का नमक भी !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने चिल्लाकर कहा और चिमटे से नोटों का बण्डल आग में से निकाल लिया।

जिस काग़ज़ में नोट लिपटे हुए थे वह लगभग सारे का सारा जल गया था और अभी तक सुलग रहा था, लेकिन यह बात भी फ़ौरन साफ़ हो गई कि अन्दर के नोट बिलकुल सही-सलामत थे। बण्डल अखबार की तीन तहों में लिपटा हुआ था और सारा पैसा सुरक्षित था। सबने राहत की साँस ली।

"अरे, मुश्किल से हज़ार पर आँच आई होगी, लेकिन बाक़ी बिलकुल ठीक हैं," लेबेदेव ने भावातिरेक से कहा।

"यह सब इसका है ! सारा बण्डल इसका है ! सुन लिया आप लोगों ने !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने बण्डल गान्या के पास रखते हुए एलान किया। "देखा, इसने निकाला नहीं ! अपनी जगह डटा रहा। मतलब यह है कि इसका अहंकार इसके पैसे के लोभ से भी बढ़कर है। ठीक है, होश आ जाएगा। वह मुझे मार ही डालता...देखो, होश आने लगा। जनरल साहब, प्तीत्सिन, दार्या अलेक्सेयेव्ना, कात्या, पाशा, रोगोझिन, सुन लिया सबने ? पैसा इसका है—गान्या का। मैं यह बण्डल इसे दे रही हूँ कि जैसे इसके जी में आए खर्च करे, इस बात के इनाम में दिया है, आप किसी चीज़ के लिए भी समझ लें। इससे यह बात कह दीजिएगा। इसे उसके पास ही पड़ा रहने दीजिए। रोगोझिन, चलो चलें ! अच्छा, मैं चली, प्रिंस ! मैंने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार इन्सान को देखा है ! गुड-बाई, मिस्टर तोत्स्की—merci !"

रोगोझिन का सारा गरोह उसके और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के पीछे चिल्लाता हुआ बढ़ा और कमरों को पार करके सामने के दरवाज़े तक पहुँचते-पहुँचते चिल्ला-चिल्लाकर सारे घर में तूफ़ान खड़ा कर दिया। बड़े ड्राइंग-रूम में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की नौकरानियों ने उसे उसका फ़र का कोट पहनाया, खाना पकानेवाली मार्फ़ा किचेन से भागी-भागी आई। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने उन सबको चूमकर उनसे विदा ली।

"आप हमें हमेशा के लिए छोड़कर तो नहीं जा रही हैं, मेम साहब ?" लड़कियों ने उसके हाथ चूमते हुए रो-रोकर पूछा। "आप कहाँ जा रही हैं ? और सो भी अपनी सालगिरह के दिन ! ऐसे दिन !"

"मैं सड़क पर निकल जाऊँगी, कात्या। तुमने सुन ली मेरी बात—यही मेरी असली जगह है, या मैं धोबिन बन जाऊँगी ! मैं तोत्स्की साहब से भर पाई ! उनसे मेरा सलाम कह देना, और मुझे बुरा समझकर न याद करना।..."

प्रिंस सीधे सड़क के फाटक की ओर लपका, जहाँ वे सब लोग चार घंटीवाली घोड़ागाड़ियों में सवार हो रहे थे। जनरल साहब ने सीढ़ियों पर ही उसे जा पकड़ा।

"भगवान के लिए, प्रिंस, समझ से काम लो !" उन्होंने उसकी बाँह पकड़कर कहा। "उसे जाने दो ! देख लिया तुमने किस तरह की औरत है वह ! मैं बाप की तरह तुमसे कह रहा हूँ।..."

प्रिंस ने उसकी ओर देखा, लेकिन एक शब्द भी कहे बिना बाँह छुड़ाकर सीढ़ियों के नीचे भागा।

फाटक पर पहुँचकर, जहाँ से घोड़ागाड़ियाँ अभी रवाना हुई थीं, जनरल साहब ने देखा कि प्रिंस ने किराए की एक घोड़ागाड़ी ली, जो सबसे पहले आ निकली और चिल्लाकर कहा, येकातेरीनहोफ़ चलो, उन घोड़ागाड़ियों के पीछे ! उसके बाद जनरल साहब का भूरा नस्ली घोड़ा आया और नई उम्मीदों और मन्सूबों के साथ उन्हें घर ले गया, और मोतियों की उस लड़ी के साथ भी, जिसे लेना वह तमाम बातों के बावजूद नहीं भूले थे। उनकी नई योजनाओं में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की मोहिनी सूरत भी उनके दिमाग़ में एक-दो बार बिजली की तरह कौंध गई। जनरल येपांचिन ने आह भरी–

"अफ़सोस ! बेहद अफ़सोस की बात है ! तबाह हो गई वह औरत ! पागल औरत !...ख़ैर, अब प्रिंस को ज़रूरत नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना जैसी की नहीं है..."

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के दो और मेहमानों ने, जिन्होंने घर तक का कुछ रास्ता पैदल जाने का फ़ैसला किया था, एक-दूसरे से विदा लेते समय इसी तरह के कुछ शिक्षाप्रद शब्द कहे।

"जानते हैं, अफ़ानासी इवानोविच," प्तीत्सिन ने तोत्स्की से कहा, "इस तरह की चीज़, मैंने सुना है, जापानियों के बीच अकसर होती है। वह आदमी जिसका अपमान किया गया हो अपने दुश्मन के पास जाकर कहता है, 'तुमने मेरा अपमान किया है, और इसका बदला लेने के लिए मैं तुम्हारी आँखों के सामने अपना पेट चीर डालने के लिए आया हूँ, और इतना कहकर वह अपने दुश्मन की आँखों के सामने सचमुच अपना पेट चीर डालता है। ऐसा करके शायद उसे बहुत खुशी होती होगी, मानो उसने सचमुच बदला ले लिया हो। दुनिया में अजीब-अजीब तरह के लोग होते हैं, अफ़ानासी इवानोविच।"

"तो आपका ख़्याल है कि इस मामले में भी कुछ इसी तरह की बात है, क्यों ?" तोत्स्की ने मुस्कराकर जवाब दिया। "हाँ। आपने यह बड़ी पते की बात कही है, और...और...आपने मिसाल सचमुच बहुत अच्छी दी है। लेकिन, इवान पेत्रोविच, मेरे दोस्त, यह सब तुम्हारी नज़र से चूका नहीं होगा कि मैं जो कुछ कर सकता था वह मैंने किया। मैं नामुमकिन काम तो कर नहीं सकता, क्यों ? लेकिन मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम इतना मानोगे कि उस औरत में कुछ कमाल की खूबियाँ हैं...कुछ शानदार लक्षण हैं। आज मैं उससे कई बार चिल्लाकर कहना चाहता था, अगर उस हंगामे के बीच ऐसा करना ज़रा भी मुमकिन होता, कि उसने जो भी इल्ज़ाम मेरे ऊपर लगाए थे उन सबकी मेरी ओर से सबसे अच्छी सफ़ाई वह ख़ुद थी। बताओ, कौन ऐसा होगा जिस पर कभी-कभी ऐसी औरत का जादू उस हद तक न चल जाए कि वह अपनी समझ- बूझ...और...और...सब कुछ खो बैठे ? उस गँवार रोगोझिन को देखो—उसने भी उसके क़दमों पर एक लाख फेंक दिए ! बेशक, वहाँ आज जो कुछ हुआ वह क्षण भर की रोमानी और बेजा बात थी, लेकिन रंगीन और निराली बात भी थी, ठीक है न ? हाय, ऐसे चरित्र से और साथ ही जब ऐसा रूप भी हो, क्या कुछ नहीं हो सकता था। लेकिन मेरी तमाम कोशिशों के बावजूद, उसकी शिक्षा तक के बावजूद—सब पर पानी फिर गया ! अनगढ़ हीरा—मैंने सैकड़ों बार यह बात कही है।..."

और अफ़ानासी इवानोविच ने ज़ोर से आह भरी।

भाग : 2

•

1

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की पार्टी में जो विचित्र काण्ड हुआ, जिस पर हमने अपनी कहानी का पहला भाग समाप्त किया था, उसके दो दिन बाद प्रिंस मीश्किन अपने अप्रत्याशित उत्तराधिकार का मामला निबटाने के लिए जल्दी से मास्को रवाना हो गया। उस समय कहा यह गया था कि उसके इस तरह जल्दी चले जाने के कुछ दूसरे कारण हो सकते थे; लेकिन इसके बारे में, और मास्को और पीटर्सबर्ग से उसकी अनुपस्थिति के दौरान उसके कारनामों के बारे में हम लगभग कोई भी जानकारी नहीं दे सकते। प्रिंस वहाँ से ठीक छह महीने बाहर रहा, और जिन लोगों को उसकी क़िस्मत में दिलचस्पी होने की वजह भी हो सकती थी, वे भी उस पूरे वक़्त के दौरान उसके बारे में बहुत ही कम जानकारी हासिल कर सके। यह सच है कि उनमें से कुछ लोगों के कानों तक कुछ अफ़वाहें पहुँचीं, हालाँकि कभी-कभार ही, और जो अधिकांश बड़ी विचित्र और लगभग हमेशा परस्पर विरोधी होती थीं। येपांचिन-परिवार के लोग बेशक प्रिंस में सबसे ज़्यादा दिलचस्पी लेते थे, जिनसे उसे मिलकर विदा लेने का समय तक नहीं मिला था। लेकिन जनरल येपांचिन दो-तीन बार उससे मिले थे और दोनों के बीच गम्भीरता से बातें हुई थीं। जनरल येपांचिन उससे मिले ज़रूर थे लेकिन उन्होंने अपने परिवारवालों को इसके बारे में कुछ नहीं बताया था। बहरहाल, शुरू में, यानी प्रिंस के जाने के बाद पूरे एक महीने तक येपांचिन-परिवार के लोगों के बीच सबकी सहमति से प्रिंस का नाम नहीं लिया गया। सिर्फ़ शुरू में ही लिज़ावेता प्रोकोफ्येव्ना ने अपना यह मत व्यक्त किया था कि उन्होंने प्रिंस के बारे में "बहुत बड़ी ग़लती की थी"। दो-तीन दिन बाद उन्होंने प्रिंस का नाम लिए बिना गोल-मोल तरीक़े से इतना और जोड़ दिया था कि "उनके जीवन की मुख्य विशेषता यह रही है कि वह लोगों के बारे में लगातार गलतियाँ करती रहती थीं"। अन्त में, लगभग एक पखवाड़े बाद, अपनी बेटियों की किसी हरकत पर झल्लाकर, उन्होंने उपदेशात्मक ढंग से इन शब्दों में पूरी परिस्थिति का निचोड़ प्रस्तुत किया था—"गलतियाँ बहुत हो चुकीं ! अब कोई ग़लती नहीं होगी !" इस प्रसंग में यह बता देना न्यायोचित ही होगा कि काफ़ी समय तक उनके घर में अरुचिकर वातावरण बना रहा। घर में किसी अनकही बात का, कुछ उदासी, तनाव और झगड़े का आभास छाया हुआ था; सबके माथों पर बल पड़े रहते थे। जनरल येपांचिन दिन-रात अपने कारोबार के मामलात में उलझे रहते थे; पहले शायद ही कभी किसी ने इन्हें इतना व्यस्त और सक्रिय देखा हो—ख़ासतौर पर नौकरी के मामलों में। उनकी बीवी और बेटियाँ तो उनकी सूरत देखने को तरस जाती थीं। जहाँ तक तीनों येपांचिन-बहनों का सवाल था, तो उन्होंने ज़ोर से कुछ भी व्यक्त नहीं किया। शायद वे आपस में भी बहुत कम ही बोलीं। वे स्वाभिमानी और अहंकारी लड़कियाँ थीं जो कभी-कभी एक-दूसरे से शर्माती थीं; लेकिन वे न केवल पहला शब्द सुनते ही, बल्कि पहली

नज़र में एक-दूसरे के मन की बात जान जाती थीं, इसलिए बहुधा उन्हें अधिक कुछ कहने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी।

अगर कोई निष्पक्ष देखनेवाला वहाँ पर होता तो वह एक निष्कर्ष अवश्य निकाल सकता था कि जिन थोड़े-बहुत तथ्यों का उल्लेख पहले किया जा चुका है, उनके आधार पर यह कहा जा सकता था कि प्रिंस येपांचिन-परिवार को काफ़ी प्रभावित करने में सफल रहा था, हालाँकि वह वहाँ एक ही बार गया था और सो भी बहुत थोड़ी देर के लिए। शायद यह प्रभाव केवल सीधे-सादे कौतूहल का परिणाम था, जो प्रिंस की कुछ अजीब हरकतों की वजह से पैदा हुआ था। जो भी हो, यह प्रभाव बना रहा।

धीरे-धीरे शहर में जो अफ़वाहें फैलाई गई थीं वे भी दब गईं। यह सच है कि किसी छोटे-छोटे मन्दबुद्धि प्रिंस के बारे में (उसका नाम तो किसी को पक्के तौर पर नहीं मालूम) चर्चा होती रहती थी जिसे अचानक बहुत-सी दौलत मिल गई थी और जिसने एक फ़्रांसीसी औरत से शादी कर ली थी, जो पेरिस के शातो-द-फ़्लेयर्स की घूमने-फिरनेवाली कैन-कैन नाच-मण्डली की मशहूर नर्तकी थी। लेकिन दूसरे लोगों का कहना था कि दौलत उत्तराधिकार में एक जनरल को मिली थी, और फ़्रांसीसी नर्तकी से शादी एक नौजवान रूसी सौदागर ने की थी, जो बेहद अमीर था और जिसने अपनी शादी के मौक़े पर नशे की हालत में सिर्फ़ शेख़ी बघारने के लिए पूरे सात लाख रूबल के लाटरी के टिकट मोमबत्ती से जला दिए थे। लेकिन ये सब अफ़वाहें जल्दी ही दब गईं, मुख्यतः कुछ परिस्थितियों के परिणामस्वरूप। उदाहरण के लिए, रोगोझिन का पूरा गरोह, जिसमें से कई लोग कुछ बता सकते थे, येकातेरीनहोफ़ के रेलवे-स्टेशन के रेस्तोराँ की उन निर्द्वन्द्व रंगरेलियों के लगभग ठीक एक हफ़्ते बाद, जिनमें नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना भी मौजूद थी, एक साथ रोगोझिन के पीछे-पीछे मास्को के लिए रवाना हो गया था। किसी को, मतलब यह कि उन बहुत थोड़े-से लोगों को जिन्हें इस मामले में दिलचस्पी थी, कुछ अफ़वाहों की बुनियाद पर पता चला कि येकातेरीनहोफ़ की रंगरेलियों के अगले दिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना भाग गई थी और ग़ायब हो गई थी, और यह कि आख़िरकार पता यह लगा था कि वह मास्को चली गई थी; इसलिए, रोगोझिन का मास्को के लिए रवाना हो जाना केवल संयोग की बात नहीं समझी गई थी।

गव्रीला अर्दालिओनोविच ईवोल्गिन के बारे में भी अफ़वाहें थीं; वह भी अपने क्षेत्र में काफ़ी जाना-माना था। लेकिन उसके साथ भी कुछ ऐसा हुआ जिसकी वजह से उसके बारे में सभी ऐसी-वैसी बातें जल्दी ही कम होने लगीं और बाद में पूरी तौर पर ख़त्म हो गईं—वह इतना बीमार हो गया कि महफ़िलों में जाना तो दूर रहा वह दफ़्तर भी नहीं जा पाता था। महीने-भर की बीमारी के बाद वह ठीक तो हो गया, लेकिन न जाने क्यों उसने ज्वाइंट स्टॉक कम्पनी में अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया, और उसकी जगह कोई दूसरा आदमी रख लिया गया। जनरल येपांचिन के यहाँ भी उसने जाना बन्द कर दिया; वहाँ एक दूसरा क्लर्क आने लगा। गव्रीला अर्दालिओनोविच के दुश्मन यह नतीजा निकाल सकते थे कि उसके साथ जो कुछ हुआ था उससे वह इतना खिसिया उठा था कि उसे बाहर निकलते शर्म आती थी; लेकिन वह सचमुच बीमार मालूम होता था—वह हर वक़्त उदास और निढ़ाल रहने लगा था, विचारमग्न रहने लगा था और चिड़चिड़ा हो गया था। उसी साल जाड़ों में उसकी बहन वार्या ने प्तीत्सिन से शादी कर ली थी। जो लोग भी उन्हें जानते उनका कहना था कि यह शादी इसलिए हुई थी कि गान्या ने अपनी नौकरी पर जाने से इन्कार कर दिया था और न सिर्फ़ अपने परिवार का खर्च उठाना बन्द कर दिया था, बल्कि उसे खुद मदद और देखभाल की ज़रूरत थी।

लगे हाथ यह भी बता दिया जाए कि येपांचिन के घर में भी गव्रीला अर्दालिओनोविच की कभी चर्चा नहीं हुई, जैसे इस तरह का कोई आदमी उनके घर में तो क्या कभी इस दुनिया में भी नहीं था। लेकिन उन लोगों को उसके बारे में एक बहुत ही कमाल की बात मालूम हुई (और वह भी बहुत जल्दी)—नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ उस अरुचिकर कांडवाली घातक रात को गान्या घर लौटने पर सोने के लिए लेट नहीं गया, बल्कि बड़ी बेताबी से प्रिंस के वापस आने की राह देखता रहा। प्रिंस, जो येकातेरीनहोफ़ चला गया था, वहाँ से सुबह छह बजे लौटकर आया। तब गान्या उसके कमरे में गया, उसके सामने मेज़ पर नोटों का झुलसा हुआ बण्डल रख दिया, जो नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने उसे उस समय भेंट किया था जब वह फ़र्श पर बेहोश पड़ा हुआ था। उसने प्रिंस से प्रार्थना की कि वह उस उपहार को पहला अवसर मिलते ही उसे लौटा दे। प्रिंस के कमरे में क़दम रखते वक़्त गान्या घोर निराशा में डूबा हुआ था और प्रिंस के प्रति उसका रवैया शत्रुता का था, लेकिन उनके बीच कुछ कहा-सुनी हुई जिसके बाद गान्या प्रिंस के कमरे में दो घंटे तक रहा और सारी देर सिसकियाँ ले-लेकर आँसू बहाता रहा। वे बहुत अच्छे दोस्तों की तरह एक दूसरे से अलग हुए।

यह ख़बर, जो जनरल येपांचिन के परिवार के हर सदस्य के कानों तक पहुँच गई थी, बिलकुल सही साबित हुई थी। बेशक, यह बात कुछ अजीब ज़रूर थी कि इस तरह की ख़बरें येपांचिन परिवार के लोगों तक इतनी जल्दी पहुँच गईं; मिसाल के लिए, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ जो कुछ हुआ था उसकी ख़बर काफ़ी सही-सही ब्योरे के साथ अगले ही दिन येपांचिन-परिवार के लोगों को मालूम हो गई। जहाँ तक गान्या से सम्बन्धित ख़बर का सवाल है तो यह बात आसानी से मानी जा सकती है कि वह वार्या ने वहाँ पहुँचाई थी, जो अचानक उन लड़कियों से मिलने जाने लगी थी, यहाँ तक कि थोड़े ही समय में उन लोगों से उसकी गहरी दोस्ती तक हो गई थी, जिस पर लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना को बहुत आश्चर्य हुआ था। वार्या ने हालाँकि किसी वजह से येपांचिन परिवार के लोगों से इतनी गहरी दोस्ती पैदा करना ज़रूरी समझा, उसने यक़ीनन उन लोगों से अपने भाई के बारे में तो बात नहीं की होगी। क्योंकि इस बात के बावजूद कि उसने उन लोगों से दोस्ती की जिन्होंने उसके भाई को लगभग निकाल दिया था, वह भी, अपने ढंग से, एक स्वाभिमानी औरत थी। हालाँकि येपांचिन-बहनों से उसका परिचय पहले से था, लेकिन वह उनके यहाँ कभी-कभार ही जाती थी। अब भी वह ड्राइंग-रूम में कम ही दिखाई देती थी, बल्कि पीछे की सीढ़ियों से घर में प्रवेश करती थी, मानो चुपके से पहुँच जाती थी। लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना को वह कभी अच्छी नहीं लगी थी, न अब और न पहले, हालाँकि उसकी माँ की वह बड़ी इज़्ज़त करती थीं। उन्हें आश्चर्य भी हुआ और गुस्सा भी आया, और उन्होंने वार्या के साथ दोस्ती के लिए अपनी बेटियों को चंचलता और स्वेच्छाचारिता का दोषी ठहराया; उनका कहना था कि उनकी बेटियाँ "अपने-अपने दिमाग़ लड़ाती हैं तो इसलिए कि अपनी माँ के ख़िलाफ़ कुछ न कुछ करें"। लेकिन वार्या इन सब बातों के बावजूद उनके यहाँ आती रही, अपनी शादी से पहले भी और उसके बाद भी।

प्रिंस के चले जाने के महीने-भर बाद मिसेज़ येपांचिना को बूढ़ी प्रिंसेस बेलोकोंस्काया का एक खत मिला, जो अभी पन्द्रह दिन पहले अपने सबसे बड़ी ब्याही बेटी से मिलने मास्को चली गई थीं, और इस खत का उन पर बहुत गहरा असर पड़ा। उस खत में क्या लिखा था इसके बारे में हालाँकि उन्होंने न अपनी बेटियों को कुछ बताया और न अपने पति को, लेकिन कई संकेतों से परिवार के लोगों को यह बात स्पष्ट हो गई कि किसी बात की वजह से वह विशेष रूप से उद्विग्न और चिन्तित भी थीं। वह बेटियों से कुछ विचित्र ढंग से और बहुत ही असाधारण विषयों पर बातें

करने लगीं; साफ़ मालूम होता था कि वह किसी के सामने अपना दिल खोलकर रखने के लिए बहुत उत्सुक थीं, लेकिन किसी वजह से वह अपने आपको रोक लेती थीं। जिस दिन उन्हें खत मिला था उस दिन वह बेटियों के साथ बहुत अच्छी तरह पेश आईं, उन्होंने अग्लाया और अदेलईदा को प्यार तक किया और किसी बात के लिए उनसे माफ़ी भी माँगी, लेकिन वह क्या बात थी यह उन लड़कियों की समझ में नहीं आया। यहाँ तक कि वह अपने पति के साथ भी बड़ा कृपाभाव दिखाने लगीं, जिन्हें पूरे एक महीने से उन्होंने अपनी कृपादृष्टि से वंचित कर रखा था। अगले ही दिन बेशक उन्हें एक दिन पहले के अपने भावातिरेक पर बहुत गुस्सा आया था और खाने से पहले ही वह किसी न किसी बहाने सबसे लड़ ली थीं, लेकिन शाम तक बादल फिर छँट गए थे। सच तो यह है कि पूरे एक हफ़्ते तक वह काफ़ी शान्त रहीं, जैसा बहुत समय से नहीं हुआ था।

लेकिन एक हफ़्ते बाद प्रिंसेस बेलोकोंस्काया का एक और पत्र आया और इस बार मिसेज़ येपांचिना ने सारी बातें साफ़-साफ़ कह देने का फ़ैसला किया। उन्होंने बड़ी गम्भीरता से सूचना दी कि "बुढ़िया बेलोकोंस्काया" ने (वह पीठ पीछे प्रिंसेस की चर्चा करते हुए उन्हें और कुछ नहीं कहती थीं) उस "सनकी के बारे में, मेरा मतलब प्रिंस से है," बहुत ही तसल्ली देनेवाली ख़बरें भेजी हैं। बुढ़िया ने प्रिंस को मास्को में खोज निकाला था, उसके बारे में पूछ-ताछ की थी, और कुछ बहुत अच्छी बातें मालूम की थीं। आख़िरकार प्रिंस ख़ुद उनसे मिलने गया था, और उनके ऊपर उसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था। "इस बात से यह बिलकुल साफ़ ज़ाहिर है कि उन्होंने रोज एक बजे से दो बजे तक उसे मिलने के लिए बुलाया है, वह रोज उनसे मिलने जाता है और वह अभी तक उससे उकताई नहीं हैं," मिसेज़ येपांचिना ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, और इसके अलावा यह सूचना भी दी कि "बुढ़िया" के जरिए प्रिंस का दो-तीन भले परिवारों में आना-जाना हो गया था। "यह अच्छी बात है कि वह दिन-भर घर पर नहीं बैठा रहता और बेवक़ूफ़ों की तरह शरमाता नहीं।" लड़कियाँ, जिन्हें यह सब कुछ बताया गया था, फ़ौरन ताड़ गईं कि उस पत्र में जो कुछ लिखा था उसकी बहुत-सी बातें किसी वजह से उनकी माँ ने उनसे छिपाई थीं। शायद उन्हें इसका पता वार्या से चला होगा, जो प्रिंस और मास्को में उसके प्रवास के बारे में प्तीत्सिन को जो कुछ भी मालूम था सब जान सकती थी और उसने जान भी लिया था। दरअसल, प्तीत्सिन को किसी भी दूसरे आदमी की अपेक्षा अधिक जानकारी हो सकती थी। लेकिन वह कारोबार के मामलों के बारे में बेहद कम बोलता था, हालाँकि स्वाभाविक बात है कि वार्या को वह उनके बारे में बताता था। इसकी वजह से मिसेज़ येपांचिना को फ़ौरन वार्या से और ज़्यादा चिढ़ हो गई।

जो भी हो, खामोशी के घिरे हुए बादल छँटने लगे थे और अब अचानक प्रिंस के बारे में खुलकर बात करना सम्भव हो गया था। और इसके अलावा एक बार फिर यह स्पष्ट हो गया था कि प्रिंस ने येपांचिन-परिवार के लोगों पर कैसी असाधारण छाप डाली थी और उन लोगों के मन में अपने लिए कितनी गहरी दिलचस्पी पैदा की थी। मास्को से आनेवाली ख़बरों का उनकी बेटियों पर जितना गहरा असर पड़ा था उस पर मिसेज़ येपांचिना को आश्चर्य ही हुआ। और बेटियों को भी अपनी माँ पर बहुत ताज्जुब हुआ, जिन्होंने बड़ी गम्भीरता से उनसे कहा था कि "उनके जीवन की मुख्य विशेषता यह रही है कि वह लोगों के बारे में लगातार गलतियाँ करती रहती थीं" और इसके साथ ही मास्को में 'असर-रसूख़वाली' बूढ़ी प्रिंसेस बेलोकोंस्काया से प्रिंस पर अपनी कृपादृष्टि बनाए रखने की सिफारिश कर रही थीं; यह कृपादृष्टि प्राप्त करने के लिए उन्हें बहुत कोशिश करनी पड़ी होगी, क्योंकि कई मामलों में 'बुढ़िया' को राज़ी करना बहुत ही मुश्किल था।

जैसे ही चुप्पी के बादल छँटने लगे और वातावरण बदलने लगा, जनरल येपांचिन ने भी जल्दी से अपने विचार व्यक्त कर डाले। मालूम हुआ कि वह भी प्रिंस में बहुत गहरी दिलचस्पी लेते रहे थे। लेकिन उन्होंने अपने परिवारवालों को सिर्फ़ "मामले के कारोबारी पहलू" के बारे में बताया। पता यह चला कि प्रिंस के हितों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने मास्को के दो भरोसे के और असरदार लोगों से प्रिंस पर, और ख़ासतौर पर उसके ट्रस्टी सलाज़किन पर नज़र रखने की व्यवस्था की थी। उत्तराधिकार के बारे में, "मतलब यह कि उत्तराधिकार में दौलत मिलने के ख़ुद तथ्य ही" के बारे में जो कुछ सुना गया था, वह बिलकुल ठीक निकला था, लेकिन उत्तराधिकार में जो दौलत मिली थी वह उतनी बड़ी नहीं थी जितनी कि शुरू में बताई गई थी। सम्पत्ति कुछ हद तक झमेलों में फँसी हुई थी; मालूम हुआ कि उस पर क़र्ज़े थे और कुछ दूसरे दावेदार भी थे। प्रिंस को जो समझदारी की सलाह दी गई थी उसके बावजूद उसने बहुत ही गैर-कारोबारी ढंग की हरकतें कीं। अब चूँकि "चुप्पी के घिरे हुए बादल छँटने लगे थे" इसलिए जनरल "पूरी ईमानदारी से" यह कहकर बहुत ख़ुशी महसूस करते थे कि "भगवान उसका भला करे," क्योंकि "उस बन्दे का दिमाग़ हालाँकि ठिकाने नहीं है," फिर भी उसे इसका हक़ तो है ही। लगे हाथ यह बता दिया जाए कि प्रिंस ने बहुत-सी बेवक़ूफ़ी की हरकतें की थीं। मिसाल के लिए, स्वर्गवासी व्यापारी के लेनदार सौदागर और दो कौड़ी की बेकार दस्तावेज़ें लिए और कुछ तो प्रिंस के स्वभाव की सुन-गुन पाकर किसी दस्तावेज़ के बिना ही आ पहुँचे थे, तो क्या हुआ ? प्रिंस ने लगभग सभी का भुगतान कर दिया, इस बात के बावजूद कि उसके दोस्त उसे समझाते रहे कि वह सबके सब सौदागर लेनदार थे जिनका कोई क़ानूनी दावा नहीं था। और उसने उन सबको केवल इसलिए सन्तुष्ट कर दिया कि उनमें से कुछ के साथ सचमुच अन्याय किया गया था।

मिसेज़ येपांचिना ने बताया कि प्रिंसेस बेलोकोंस्काया ने भी उन्हें इसी तरह की कुछ बात लिखी थी और साथ ही तीखे स्वर में इतना और जोड़ दिया कि ऐसा करना "नादानी, सरासर नादानी थी; मगर बेवक़ूफ़ का क्या इलाज," लेकिन उनके चेहरे से साफ़ मालूम पड़ता था कि 'बेवक़ूफ़' ने जो कुछ किया था उससे वह बहुत खुश थीं। अन्ततः, जनरल येपांचिन ने देखा कि उनकी बीवी प्रिंस में बिलकुल अपने बेटे की तरह दिलचस्पी लेती थीं और वह अग्लाया के प्रति विशेष स्नेह प्रदर्शित करने लगी थीं; यह देखकर जनरल साहब ने कुछ समय के लिए बहुत ही कारोबारी ढंग का रवैया अपना लिया।

लेकिन यह सुखद वातावरण बहुत समय तक नहीं रहा। पखवाड़े-भर बाद ही अचानक फिर कुछ परिवर्तन हुआ। मिसेज़ येपांचिना गुमसुम दिखाई देने लगीं, और जनरल साहब ने कई बार अपने कन्धे बिचकाकर मजबूरी से उस "खामोशी की घिरी हुई" बदली को स्वीकार कर लिया। हुआ यह था कि कोई पन्द्रह ही दिन पहले उन्हें कुछ सूचना मिली थी, जो बहुत संक्षिप्त थी और पूरी तरह स्पष्ट न होते हुए भी बिलकुल विश्वसनीय थी। सूचना यह थी कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना पहले मास्को में ग़ायब हो गई थी लेकिन रोगोझिन ने उसे खोज निकाला था, और बाद में वह फिर ग़ायब हो गई थी और रोगोझिन ने एक बार फिर उसका पता लगा लिया था; आख़िरकार उसने रोगोझिन से शादी करने का लगभग पक्का वादा कर लिया था। फिर एक ही पखवाड़े बाद जनरल येपांचिन को अचानक ख़बर मिली कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना लगभग अपनी शादी के दिन तीसरी बार ग़ायब होकर किसी दूर के क़स्बे में चली गई थी और इसी बीच प्रिंस भी अपने कारोबार के सारे मामलात सलाज़किन के हाथों में छोड़कर मास्को से ग़ायब हो गया था। "वह उसके साथ भाग गया था या सिर्फ़ उसकी तलाश में उसके पीछे-पीछे गया था, यह तो नहीं मालूम, लेकिन दाल में

कुछ काला है ज़रूर," जनरल येपांचिन ने निष्कर्ष निकाला। उधर, मिसेज़ येपांचिना को भी कुछ अरुचिकर समाचार मिले थे। आख़िर में हुआ यह कि प्रिंस के जाने के दो महीने बाद उससे सम्बन्धित लगभग सारी अफ़वाहें पीटर्सबर्ग में बिलकुल दब गईं और येपांचिन-परिवार में "चुप्पी के बादल" निश्चित रूप से पूर्ववत् घिरे रहे। लेकिन वार्या लड़कियों से मिलने जाती रही।

ख़बरों और अफ़वाहों की सूची को पूरा करने के लिए इतना और बता दिया जाए कि वसन्त आते-आते येपांचिन-परिवार में कई ऐसे बुनियादी परिवर्तन हुए कि प्रिंस के बारे में भूल जाना इतना कठिन नहीं रह गया, जिसने अपने बारे में कोई सूचना नहीं भेजी थी और शायद उसे इसकी परवाह भी नहीं थी। जाड़ों के दौरान उन्होंने आख़िरकार गर्मियाँ बिताने के लिए विदेश जाने का फ़ैसला किया—यानी, मिसेज़ येपांचिना और उनकी बेटियों ने। ज़ाहिर है जनरल साहब के लिए ऐसे "बेकार के मनोरंजनों" पर समय नष्ट करना असम्भव था। यह फ़ैसला लड़कियों के दृढ़ और निरन्तर आग्रह के फलस्वरूप किया गया, जो इस पक्के नतीजे पर पहुँच गई थीं कि उनके माँ-बाप उन्हें विदेश इसलिए नहीं ले जाना चाहते थे कि वे हमेशा उनके लिए वर ढूँढ़ने में व्यस्त रहते थे और उनकी शादियाँ कर देना चाहते थे। शायद उनके माँ-बाप भी आख़िरकार इसी नतीजे पर पहुँच गए थे कि वर तो विदेश में भी मिल सकते थे, और यह कि एक साल विदेश में गर्मियाँ बिताने से कोई उथल-पुथल नहीं हो जाएगी, बल्कि, इसके विपरीत, "मुमकिन है इससे कुछ मदद ही मिले"। यहाँ पर, लगे हाथ यह भी बता दिया जाए कि तोत्स्की और येपांचिन की सबसे बड़ी बेटी की प्रस्तावित शादी आख़िरकार नहीं हो पाई थी और शादी का बाक़ायदा कोई प्रस्ताव भी नहीं रखा गया था। यह बात किसी लम्बी बहस और परिवार में किसी झगड़े के बिना किसी तरह अपने आप ही हो गई थी। प्रिंस के चले जाने के बाद दोनों ओर से ही इसके बारे में और ज़्यादा बातचीत नहीं हुई थी। कुछ हद तक इस बात की वजह से भी येपांचिन-परिवार में निराशा का वातावरण छा गया था, हालाँकि मिसेज़ येपांचिना ने उस वक़्त कहा था कि वह इतनी ख़ुश थीं कि "दोनों हाथों से अपने सामने सलीब का निशान बनाने को तैयार थीं"। जनरल साहब की हालाँकि हेठी हुई थी और वह महसूस करते थे कि इसमें सारा दोष उन्हीं का था, फिर भी वह बहुत समय तक रूठे-रूठे-से रहे; हाथ में तोत्स्की के निकल जाने का उन्हें बहुत अफ़सोस था—"इतनी दौलत और ऐसा होशियार आदमी !" कुछ समय बाद जनरल येपांचिन को पता लगा कि तोत्स्की कुछ समय से पीटर्सबर्ग में रहनेवाली ऊँचे समाज की एक फ़्रांसीसी औरत के चक्कर में फँस गए थे, जो किसी मार्क्विस के ख़ानदान से थी, कि उनकी शादी होनेवाली थी और यह कि तोत्स्की को वह पेरिस और उसके बाद ब्रिटेनी में किसी जगह लेकर चली जाएगी। "फ़्रांसीसी औरत के साथ वह कहीं का नहीं रहेगा !" जनरल साहब ने फ़ैसला किया।

येपांचिन-परिवार के लोग गर्मी आते-आते रूस से विदा हो जाने की तैयारियाँ कर रहे थे। अचानक कुछ ऐसा हुआ कि उन्हें अपनी योजनाएँ फिर बदल देनी पड़ीं, और यात्रा एक बार फिर टल गई जिससे जनरल साहब और मिसेज़ येपांचिना को बहुत ख़ुशी हुई। श. नामक एक प्रिंस मास्को से पीटर्सबर्ग आए; वह समाज के जाने-माने लोगों में से थे—जिन्हें लोग उनके बहुत अच्छे गुणों की वजह से जानते थे। वह उन लोगों में से थे, बल्कि कहना चाहिए कि उन आधुनिक सक्रिय लोगों में से थे, जो विनम्र और ईमानदार होते हैं, जो सच्चे हृदय से और सजग रूप से उपयोगी होने की कोशिश करते हैं, जो हर समय काम करते रहते हैं, और जिनमें यह अनोखी और ख़ुशगवार ख़ूबी होती है कि वे हमेशा कोई न कोई काम खोज भी लेते हैं। सबसे आगे आने की कोशिश किए बिना ही, पार्टियों की कटु और निरर्थक बहस से बचते हुए भी, किसी तरह घमण्ड के बिना

प्रिंस को राजनीतिक जगत की हाल की घटनाओं की गहरी समझ थी। वह सरकारी नौकरी में रह चुके थे और बाद में उन्होंने सार्वजनिक संस्थाओं के काम में सक्रिय रूप से भाग लिया था। इसके अलावा वह रूसी विद्वानों की कई सोसायटियों के लिए उपयोगी कॉरेस्पांडिंग सदस्य थे। अपने एक इंजीनियर मित्र के साथ मिलकर उनकी जमा की हुई जानकारी और शोध-कार्य की बदौलत उन्होंने प्रस्तावित रेलवे लाइनों में एक महत्त्वपूर्ण रेलवे लाइन की बेहतर योजना बनाई थी। वह लगभग पैंतीस साल के थे। वह "समाज के सबसे ऊँचे स्तर के" आदमी थे और इसके अलावा, जनरल येपांचिन के शब्दों में, वह "अच्छी ख़ासी, काफ़ी बड़ी और ठोस" दौलत के मालिक भी थे; प्रिंस से जनरल साहब की मुलाक़ात अपने अफ़सर, काउंट के यहाँ, किसी काफ़ी महत्त्वपूर्ण काम के सिलसिले में हुई थी। ऐसा लगता था कि प्रिंस को रूसी "कारोबार करनेवालों" में ख़ास दिलचस्पी थी और वह उनसे मिलने से कभी कतराते नहीं थे। हुआ यह कि प्रिंस का परिचय जनरल साहब के परिवार से भी कराया गया और वह मँझली बहन अदेलईदा से बहुत प्रभावित हुए। वसन्त से पहले ही उन्होंने उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। अदेलईदा को वह बहुत अच्छे लगते थे, और मिसेज़ येपांचिना को भी। जनरल साहब बहुत खुश हुए। ज़ाहिर है कि विदेश-यात्रा स्थगित कर दी गई और वसन्त में ही शादी की तारीख़ तै कर दी गई।

यात्रा अब भी गर्मियों के मध्य या अन्त में हो सकती थी, भले ही उसका रूप यह होता कि अदेलईदा के चले जाने का दुःख दूर करने के लिए मिसेज़ येपांचिना और उनकी बाकी दोनों बेटियां एक-दो महीने के लिए सैर कर आतीं। लेकिन फिर कुछ और हो गया। वसन्त के अन्त में (अदेलईदा की शादी की तारीख़ गर्मियों के मध्य तक के लिए टल गई थी) प्रिंस श. ...ने येपांचिन परिवार का परिचय अपने दूर के एक रिश्तेदार से कराया, जिसे वह बहुत अच्छी तरह जानते थे। यह अट्ठाईस साल का एक अत्यन्त सुन्दर नौजवान येव्गेनी पाव्लोविच रादोम्स्की था, जो सम्राट का एडी-कांग था; वह "अच्छे परिवार" का, बातें करने में बहुत चतुर, शानदार, "आधुनिक", "बहुत पढ़ा-लिखा" और अथाह दौलतवाला था। जनरल साहब इस आख़िरी बात से हमेशा बहुत सावधान रहते थे। उन्होंने पूछ-ताछ की—"इसमें कुछ दम तो सचमुच नज़र आता है, हालाँकि, ज़ाहिर है, इसका पक्का पता कर लेना होगा।" मास्को से बुढ़िया बेलोकोंस्काया ने "उज्ज्वल भविष्यवाले" इस नौजवान एडी-कांग की बहुत जोरदार सिफारिश की थी जिसकी बदौलत उसकी धाक और भी जम गई थी। लेकिन उसकी साख में एक ही कमज़ोरी थी—सभी को मालूम था कि उसके कई प्रेम-प्रसंग थे और, जैसा कि विश्वसनीय रूप से दावा किया जाता था, वह कई व्यथित हृदयों को "जीत चुका था"। अग्लाया से मुलाक़ात होने के बाद वह बड़ी पाबन्दी से येपांचिन-परिवार से मिलने आने लगा। यह सच है कि अभी तक कुछ कहा नहीं गया था, यहाँ तक कि कोई संकेत भी नहीं दिए गए थे, फिर भी माँ-बाप को ऐसा लगा कि उस साल गर्मियों में विदेश जाने का कोई सवाल ही नहीं हो सकता था। खुद अग्लाया की राय शायद इससे अलग थी।

यह सब कुछ हमारी कहानी के नायक के मंच पर दूसरी बार आने से कुछ ही समय पहले हुआ। तब तक, प्रकट रूप में, बेचारे प्रिंस मीश्किन को पीटर्सबर्ग में बिलकुल भुलाया जा चुका था। अगर अब वह अचानक उन लोगों के बीच आ जाता जो उसे जानते थे, तो उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता जैसे वह आसमान से टपक पड़ा हो। अभी हमें एक और तथ्य के बारे में बताना है, और इस तरह हमारी यह भूमिका पूरी हो जाएगी।

प्रिंस के चले जाने के बाद, शुरू में तो कोल्या ईवोल्गिन पहले की तरह अपना जीवन बिताता रहा, यानी वह स्कूल जाता था, अपने दोस्त इप्पोलीत से मिलने जाता था, जनरल साहब की

देखभाल करता था, और घर के कामकाज में वार्या की मदद करता था, मतलब यह कि उसके इशारों पर नाचता था। लेकिन जल्दी ही उनके किराएदार ग़ायब हो गए; नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की पार्टी के तीन दिन बाद फ़ेर्दीश्चेंको कहीं और रहने चला गया, और जल्दी ही वह बिलकुल लापता हो गया, इसलिए उसके बारे में कुछ भी सुनाई नहीं देता था; कुछ लोगों का कहना था कि वह कहीं शराब पी रहा था, लेकिन किसी को सचमुच इसका पक्का पता नहीं था। प्रिंस मास्को चला गया था; उसके बाद फिर कमरे किराए पर नहीं उठाए गए। बाद में, जब वार्या की शादी हो गई तो उसकी माँ और गान्या भी उसके साथ प्तीत्सिन के यहाँ चले गए थे। जहाँ तक जनरल-ईवोल्गिन का सवाल था, उनको लगभग उसी समय एक अप्रत्याशित परिस्थिति ने आ दबोचा था—उन्हें कर्जदारों के जेल में डाल दिया गया था। उन्हें वहाँ भिजवाने के पीछे कप्तान की विधवा का हाथ था, क्योंकि अलग-अलग वक़्तों पर उन्होंने उसे दो हज़ार रूबल की जो हुंडियाँ दी थीं उनका भुगतान वह नहीं कर पाए थे। इन सब बातों से उन्हें भारी धक्का पहुँचा था; बेचारे जनरल साहब "बिलकुल निश्चित रूप से मानव के उदार स्वभाव के प्रति अपार आस्था का शिकार" हुए थे। निश्चिंत भाव से हुंडियों और ऋण-पत्रों पर दस्तख़त कर देने की आदत पड़ जाने पर उन्हें यह सूझा ही नहीं कि कभी भी उनका कोई निष्कर्ष निकाला जा सकता था, वह हमेशा सोचा करते थे कि यह तो यों ही है। लेकिन हुआ कुछ और ही। "इसके बाद कोई लोगों पर भरोसा करे भी तो कैसे ?" कर्जदारों के जेल में अपने नए दोस्तों-यारों के साथ जब वह शराब की बोतल लेकर बैठते तो बहुत उदास होकर कहते, "करो उन पर दिल खोलकर भरोसा !" और इसके बाद वह उन्हें कर्स की घेरेबन्दी के और उस सिपाही के किस्से सुनाते रहते जो मुर्दा से जिन्दा हो गया था। कुल मिलाकर, वह बहुत खुश थे। प्तीत्सिन और वार्या कहा करते थे कि वह उनके लिए सबसे अच्छी जगह थी; गान्या उनसे पूरी तरह सहमत था। सिर्फ़ बेचारी नीना अलेक्सान्द्रोव्ना चुपके-चुपके रोती रहती थीं (जिस पर उनके परिवारवालों को आश्चर्य तक था) और हालाँकि उनका स्वास्थ्य हमेशा खराब रहता था फिर भी वह जितनी बार भी सम्भव होता था अपने पति से मिलने पहुँच जाती थीं।

लेकिन जनरल साहब की उस 'दुर्घटना' के समय से, जैसा कि कोल्या उसे कहता था, और अपनी बहन की शादी के बाद से, कोल्या बिलकुल ही बेकाबू हो गया था, यहाँ तक कि वह इधर कुछ दिनों से घर पर सोता भी कभी-कभार ही था। सुना यह जाता था कि उसने बहुत-से नए लोगों से जान-पहचान पैदा कर ली थी और, इसके अलावा, कर्जदारों के जेल में भी सभी लोग उसे अच्छी तरह जानने लगे थे। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना का उसके बिना वहाँ काम चलना मुश्किल था; घर पर किसी को अब यह जानने की भी चिन्ता नहीं रहती थी कि वह कर क्या रहा था। वार्या, जो पहले उसके साथ इतनी सख़्ती बरतती थी, अब उससे पूछती तक नहीं थी कि वह कहाँ घूमता रहता था; इसके विपरीत, गान्या उससे बोलता था और अपने घोर निराशा के दौरों के बावजूद अकसर उसके साथ बहुत दोस्ताना बर्ताव करता था, जिस पर परिवार के बाक़ी लोगों को बहुत ताज्जुब होता था; ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था, क्योंकि सत्ताईस साल के गान्या के लिए अपने पन्द्रह साल के भाई में कोई दोस्ताना दिलचस्पी न रखना स्वाभाविक ही था। उसने कोल्या के साथ हमेशा निर्ममता का व्यवहार किया था, उसका यह तक़ाजा रहता था कि परिवार के लोग उसके साथ सख़्ती बरतें और वह हमेशा उसके 'कान ऐंठने' की धमकी देता रहता था, जिसकी वजह से कोल्या "सहन-शक्ति की अन्तिम सीमा" तक पहुँच जाता था। अब कभी-कभी तो ऐसा लगता था कि कोल्या के बिना गान्या का काम ही नहीं चल सकता। कोल्या इस बात से बहुत प्रभावित हुआ था कि गान्या ने पैसा वापस कर दिया था और इस वजह से वह गान्या के बहुत-से अपराध क्षमा

कर देने को तैयार था।

प्रिंस के चले जाने के तीन महीने बाद ईवोल्गिन-परिवार के लोगों को पता लगा कि कोल्या ने येपांचिन-परिवार के लोगों से जान-पहचान पैदा कर ली थी और लड़कियों ने उसे हाथों हाथ लिया था। वार्या को जल्दी ही इसकी ख़बर मिल गई। कोल्या का परिचय वार्या ने नहीं कराया था, उसने अपना परिचय स्वयं करा लिया था। धीरे-धीरे वह येपांचिन-परिवार के लोगों का चहेता हो गया। शुरू में तो मिसेज़ येपांचिना उससे बहुत नाराज़ रहती थीं, लेकिन शीघ्र ही वह उसके बहुत लाड़ करने लगीं "क्योंकि वह साफ़ बात कहता था और कभी किसी भी चापलूसी नहीं करता था"। यह बिलकुल सच है कि कोल्या किसी की चापलूसी नहीं करता था– उन लोगों के साथ अपने सम्बन्धों में उसने अपनी पूर्ण स्वतन्त्रता और बराबरी बनाए रखी, हालाँकि कभी-कभी वह मिसेज़ येपांचिना को किताबें और अखबार पढ़कर सुनाता था, लेकिन सो तो वह हमेशा से दूसरों के काम आता रहा था। लेकिन, दो बार वह लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना से बहुत बुरी तरह लड़ा भी था, उनसे कह दिया था कि वह अत्याचारी थीं और यह कि वह अब कभी उस घर में कदम नहीं रखेगा। पहली बार उनका झगड़ा 'नारी समस्या' को लेकर हुआ था और दूसरी बार इस बात को लेकर कि सिस्किन चिड़िया पकड़ने के लिए कौन-सा मौसम सबसे अच्छा होता है। यह बात कितनी ही अविश्वसनीय क्यों न लगे लेकिन अपने झगड़े के तीसरे ही दिन मिसेज़ येपांचिना ने नौकर को पर्चा देकर उसे फ़ौरन बुलवा भेजा था। कोल्या नखरा किए बिना तुरन्त चला गया था। केवल अग्लाया को किसी वजह से वह अच्छा नहीं लगता था और वह उसे बहुत ऊँचे से देखती थी। और कोल्या ही ने एक बार उसको बिलकुल चौंका देनेवाला काम किया। ईस्टर की छुट्टियों के दौरान एक दिन कोल्या ने मौक़ा पाकर जब वे दोनों अकेले थे, अग्लाया को एक पत्र दिया, और सिर्फ़ इतना बताया कि उससे कहा गया था कि वह अकेले में वह खत उसे दे। अग्लाया ने "उस ढीठ छोकरे" को आग बरसाती नज़रों से देखा, लेकिन यह सुने बिना ही कि वह क्या कह रही थी, कोल्या बाहर चला गया। अग्लाया ने पत्र खोलकर पढ़ा–

"एक बार आपने मुझ पर विश्वास किया था। शायद आप अब मुझे बिलकुल भूल चुकी होंगी। मैं आपको इस समय यह पत्र क्यों लिख रहा हूँ ? मैं नहीं जानता; लेकिन मुझमें आपको अपनी याद करने की अदम्य इच्छा जागृत हुई है–ख़ासतौर पर आपको। कितनी बार ऐसा हुआ है कि मुझे आप तीनों की बहुत ज़रूरत पड़ी है, लेकिन तीनों में से सिर्फ़ आपको मैंने देखा। मुझे आपकी ज़रूरत है, मुझे आपकी बहुत ज़रूरत है। मुझे आपको अपने बारे में लिखने के लिए कुछ भी नहीं है, आपको बताने के लिए कुछ नहीं है। और यह मैं चाहता भी नहीं था। मैं चाहता हूँ कि आप बेहद खुश रहें। क्या आप खुश हैं ? मैं आपसे बस इतना ही कहना चाहता था।

आपका भाई,

प्रिंस ले. मीश्किन।"

यह संक्षिप्त और कुछ बिखरा-बिखरा-सा पत्र पढ़ने के बाद अग्लाया अचानक शरमा गई और विचारों में खो गई। यह कहना तो मुश्किल है कि वह किस चीज़ के बारे में सोच रही थी। लगे हाथ उसने मन ही मन अपने से प्रश्न किया कि क्या वह पत्र उसे किसी को दिखाना चाहिए। न जाने क्यों वह लजा गई। विचित्र और व्यंगपूर्ण ढंग से मुस्कराकर उसने पत्र अन्ततः अपने मेज़ की दराज़ में डाल दिया। अगले दिन उसने उसे फिर निकाला और मजबूत जिल्दवाली एक मोटी-सी

किताब में रख दिया (वह अपने काग़ज़ात हमेशा इसी तरह रखती थी ताकि ज़रूरत पड़ने पर जल्दी से मिल जाएँ)। एक हफ़्ते बाद जाकर उसे पता चला कि वह किताब कौन-सी थी। वह थी 'डॉन क्विक्ज़ोट'। अग्लाया ठहाका मारकर हँस पड़ी—किस बात पर, यह कोई नहीं जानता था।

न ही यह मालूम हो सका कि उसने अपनी उपलब्धि अपनी बहनों को दिखाई कि नहीं।

लेकिन पत्र पढ़ते समय उसने अचानक मन ही मन खयाल किया—क्या यह हो सकता है कि प्रिंस ने पत्र-व्यवहार करने के लिए उस बड़बोले और मनचढ़े छोकरे को चुना था, जो—तोबा, तोबा !—पीटर्सबर्ग में एकमात्र व्यक्ति था जिससे उसका पत्र-व्यवहार था। बेहद तिरस्कार का भाव अपनाते हुए अग्लाया ने फिर भी कोल्या से अच्छी तरह पूछ-ताछ की थी। लेकिन उस 'छोकरे' ने, जो हमेशा बहुत जल्दी बुरा मान जाता था, अब उसके तिरस्कार की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया; उसने बहुत संक्षेप में और कुछ रूखेपन से बताया कि उसने प्रिंस को पीटर्सबर्ग से जाते समय हालाँकि अपना स्थायी पता दे दिया था कि शायद वह उसे पत्र लिखना चाहें और उनके किसी भी काम के लिए अपनी सेवाएँ भी अर्पित कर दी थीं, लेकिन यह पहला काम था जो प्रिंस ने उसे सौंपा था और उसके नाम यह प्रिंस का पहला पत्र भी था; अग्लाया को यह विश्वास दिलाने के लिए कि वह सच बोल रहा था, उसने उसे वह पत्र भी दिखाया जो स्वयं उसके नाम आया था। अग्लाया ने तनिक भी लजाए बिना उसे पढ़ा। कोल्या के नाम पत्र इस प्रकार था—

"प्रिय कोल्या, मेहरबानी करके इसके साथ जो बन्द पत्र है वह अग्लाया इवानोव्ना के पास पहुँचा दो। खुश रहो।

तुम्हारा शुभचिन्तक,
प्रिंस ले. मीश्किन।"

"फिर भी," अग्लाया ने कोल्या को पत्र वापस देते हुए कहा, "तुम्हारे जैसे पिद्दी छोकरे पर भरोसा करना भी एक अच्छा ख़ासा मज़ाक़ है," और यह कहकर वह तिरस्कार से चली गई।

यह कोल्या के लिए असह्य था—उसने कारण बताए बिना गान्या से इतने महत्त्वपूर्ण अवसर पर उसका बिलकुल नया हरा गुलूबन्द बाँधने की इजाज़त ले ली थी। उसे बहुत आघात पहुँचा।

2

जून के शुरू के दिन थे और पीटर्सबर्ग में पूरे हुए हफ़्ते से मौसम विशेष रूप से बहुत अच्छा था। पाव्लोव्स्क में येपांचिन-परिवार का एक आलीशान बँगला था। लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना सहसा उद्विग्न हो उठीं और उन्होंने वहाँ जाने की अपनी इच्छा घोषित कर दी—दो दिन से कम की तूफ़ानी तैयारियों के बाद वे लोग पाव्लोव्स्क चले गए।

येपांचिन-परिवार के पाव्लोव्स्क के लिए रवाना हो जाने के दो-तीन दिन बाद प्रिंस लेव निकोलायेविच मीश्किन सुबह की गाड़ी से मास्को से वापस आया। स्टेशन पर उसे लेने कोई नहीं आया, लेकिन ट्रेन से उतरते समय प्रिंस को अचानक आभास हुआ कि यात्रियों को लेने के लिए आए हुए लोगों की भीड़ में से दो अजीब, दहकती हुई आँखें उसे घूर रही थीं। अधिक ध्यान से देखने पर उसे कुछ भी दिखाई, नहीं दिया। स्पष्टतः उसे केवल ऐसा लगा था, लेकिन इस बात का बहुत अरुचिकर प्रभाव पड़ा। इसके अलावा, प्रिंस यों भी विचारमग्न और उदास मालूम होता

था और ऐसा लगता था कि वह किसी चीज़ के बारे में चिन्तित है।

वह घोड़ागाड़ी करके लितेइनाया स्ट्रीट के पास ही के एक होटल में गया। होटल बहुत अच्छा नहीं था। प्रिंस ने दो छोटे-छोटे अँधेरे कमरे ले लिए, जिनमें फ़र्नीचर वग़ैरह बहुत बुरा था; उसने मुँह-हाथ धोकर कपड़े बदले, कुछ भी नहीं मँगाया, और जल्दी से वहाँ से चला गया मानो उसे वक़्त निकल जाने का या किसी को घर पर न पाने का डर हो।

जो भी छह महीने पहले उसके पहली बार पीटर्सबर्ग आने के समय से उसे जानता था वह अगर इस समय उसे देखता तो इसी नतीजे पर पहुँचता कि उसकी सूरत-शक्ल बदलकर बेहतर हो गई थी। लेकिन ऐसा था नहीं। बस उसके कपड़े बिलकुल अलग थे। वे सब नए थे और मास्को के अच्छे दर्ज़ी से सिलवाए गए थे, लेकिन वे भी बिलकुल ठीक नहीं थे। वे ज़रूरत से ज़्यादा फैशनवाले थे (जैसे कि उन दर्जियों के सिले हुए कपड़े हमेशा होते हैं जिनमें लगन तो होती है लेकिन हुनर नहीं होता), और इसके अलावा उन्हें ऐसे आदमी ने पहन रखा था जिसे स्पष्टतः उनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए कोई हँसी उड़ानेवाला प्रिंस को ध्यान से देखकर किसी न किसी बात पर मुस्करा तो देता ही। लेकिन, किया क्या जाए, लोगों को तो तरह-तरह की चीज़ों पर हँसना आता है।

प्रिंस किराए की घोड़ागाड़ी करके सीधा सैंड्स नामक इलाक़े में गया। लकड़ी का छोटा सा घर उसे जल्दी ही एक गली में मिल गया। उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि यह मकान भी काफ़ी आकर्षक था, साफ़-सुथरा और सलीक़े से रखा गया; सामने एक बाग़ था जिसमें फूल खिले थे। सड़क की ओरवाली खिड़कियाँ खुली हुई थीं, और उसे लगातार किसी का भाषण स्वर सुनाई दे रहा था, जो लगभग चिल्ला रहा था, जैसे वह कुछ पढ़ रहा हो या भाषण दे रहा हो, बीच बीच में कई नौजवान लोगों के ठहाकों की गूँज से उस स्वर का क्रम भंग हो जाता था। प्रिंस आहाते में गया और सीढ़ियाँ चढ़कर उसने लेबेदव को पूछा।

"वह रहे, साहब," खाना पकानेवाली ने, जिसकी आस्तीनें कुहनियों तक चढ़ी हुई थीं और जिसने उसके लिए दरवाज़ा खोला था 'ड्राइंग-रूम' की तरफ़ इशारा करते हुए जवाब दिया।

ड्राइंग-रूम की दीवारों पर गहरे नीले रंग का काग़ज़ मढ़ा हुआ था और वह साफ़-सुथरे ढंग से सज़ा हुआ था; उसमें कहीं-कहीं ऐश की ज़िन्दगी की भी झलक मिलती थी, मतलब यह कि गोल मेज़ और सोफ़ा, काँच के केस में काँसे की घड़ी, दोनों खिड़कियों के बीच की दीवार पर पतला-सा आईना और छत से काँसे की ज़ंजीर से लटका हुआ बिल्लौरी शीशोंवाला पुराना फानूस। लेबेदेव स्वयं कमरे के बीच में प्रिंस की ओर पीठ किए खड़ा था। गर्मी की वजह से उसने अपना कोट उतार दिया था और वास्कट पहने था; छाती पीट-पीटकर वह बड़े स्वर में किसी विषय पर भाषण दे रहा था। उसके श्रोताओं में थे—काफ़ी हँसमुख और काफ़ी समझदार चेहरेवाला एक पन्द्रह साल का लड़का जो अपने हाथों में एक किताब लिए था, मातमी लिबास पहने और गोद में बच्चा लिए हुए बीस साल की एक लड़की, तेरह साल की एक और लड़की, वह भी मातमी लिबास पहने हुए, जो पूरा मुँह खोलकर ज़ोर से हँस रही थी और अन्त में सोफ़े पर लेटा हुआ बीस साल का एक अजीब-सा नौजवान, काफ़ी खूबसूरत, लम्बे-लम्बे घने काले बाल, बड़ी-बड़ी काली आँखें, और चेहरे पर दाढ़ी और गलमुच्छों के हल्के-हल्के संकेत। ऐसा लगता था कि वह नौजवान भाषण झाड़ने के दौरान लेबेदेव को बार-बार टोक देता था और उससे बहस करने लगता था; और शायद इसी बात पर बाक़ी सुननेवाले हँस रहे थे।

"लुक्यान तिमोफ़ेयेविच, साहब...साहब ! देखते हैं इनको ? अरे साहब, पल-भर को इधर तो

मुड़कर देखिए ! मेरी बला से !"

खाना पकानेवाली हार मानकर चली गई; उसका चेहरा गुस्से से बिलकुल लाल हो गया था।

लेबेदेव मुड़ा और प्रिंस को देखकर कुछ क्षण तक ऐसे खड़ा रहा जैसे उस पर बिजली गिर पड़ी हो, फिर वह खुशामदी ढंग से मुस्कराता हुआ उसकी ओर लपका लेकिन बीच में ठिठककर खड़ा हो गया, पर रुकते-रुकते भी उसने कहा "अच्छा, आप हैं, मेरे लाजवाब प्रिंस !"

लेकिन अचानक, मानो अवसर के अनुकूल आचरण न कर सकने की वजह से, वह फिर पलटा और अकारण ही पहले तो उस लड़की पर जो मातमी लिबास पहने थी और गोद में बच्चा लिए थी, इस तरह झपटा कि वह चकित होकर पीछे हट गई, लेकिन फ़ौरन उसकी ओर से हटकर वह तेरह साल की लड़की की ओर लपका, जो बगलवाले कमरे के दरवाज़े पर खड़ी थी और जिसके होंठों पर हँसी के अन्तिम चिन्ह अभी तक काँप रहे थे। उसकी चीख़ से वह सहम गई और भागकर किचेन में चली गई। उसे और अधिक सहमाने के लिए लेबेदेव ने पाँव पटका, लेकिन प्रिंस पर नज़र पड़ते ही, जो उसे बौखलाहट से देख रहा था, उसने सफ़ाई देते हुए कहा—"बस...इज़्ज़त की खातिर...जी हाँ, हः-हः-हः !"

"यह सब आप बेकार में..." प्रिंस ने कहना शुरू किया।

"एक मिनट, एक मिनट...मैं अभी चुटकी बजाते आया !"

और लेबेदेव जल्दी से कमरे से ग़ायब हो गया। प्रिंस ने लड़की को, लड़के को और सोफ़े पर पसरे हुए नौजवान को आश्चर्य से देखा। ये सब हँस रहे थे। प्रिंस भी हँस पड़ा था।

"वह अपना फ्रॉक-कोट पहनने गए हैं," लड़के ने कहा।

"मुझे बेहद अफ़सोस है," प्रिंस ने कहना शुरू किया, "मैं समझा था...यह तो बताओ, क्या वह..."

"पिए हुए हैं, आपके ख़्याल में ?" सोफ़े पर से ऊँची आवाज़ आई। "क़तई नहीं ! शायद तीन-चार जाम पी लिए हों, और, हद से हद पाँच पी लिए होंगे, लेकिन उनकी चर्चा ही क्या—अपना-अपना अनुशासन है !"

प्रिंस सोफ़े पर से आती हुई आवाज़ की ओर मुड़ा, लेकिन उसी क्षण लड़की बोल पड़ी; उसके प्यारे-प्यारे चेहरे से लगता था कि वह बिलकुल निश्छल भाव से बोल रही है।

"वह सबेरे कभी बहुत ज़्यादा नहीं पीते," उसने कहा। "अगर आप उनसे किसी काम से मिलने आए हैं तो अभी बात कर लीजिए। यही सबसे अच्छा वक़्त है। वह नशे में सिर्फ़ तब होते हैं जब शाम को लौटकर आते हैं, लेकिन अब आमतौर पर वह रात को रोते हैं और हमें बाइबिल में से कुछ पढ़कर सुनाते हैं, क्योंकि, पाँच हफ़्ते हुए हमारी माँ मर गईं।"

"वह इसलिए भाग गए कि उन्हें शायद आपको जवाब देने के लिए कुछ समझ में नहीं आ रहा था," सोफ़े पर लेटे हुए नौजवान ने हँसकर कहा। "मैं कुछ भी शर्त बदकर कहने को तैयार हूँ कि वह अभी से आपको धोखा देने के फेर में होंगे और सोच रहे होंगे कि यह काम कैसे किया जाए।"

"पाँच हफ़्ते ! बस पाँच ही हफ़्ते !" लेबेदेव ने फ्रॉक-कोट पहनकर वापस आते हुए, पलकें झपकाते हुए और आँसू पोंछने के लिए जेब से रूमाल निकालकर दोहराया। "बेचारे अनाथ !"

"अरे, आप ये चीथड़े क्यों पहन आए ?" लड़की ने कहा। "आपका बिलकुल नया कोट तो ठीक दरवाज़े के पीछे रखा हुआ है—आपने देखा नहीं ?"

"चुप रह, टर्री कहीं की ! तुझसे कह रहा हूँ !" वह पाँव पटकते हुए उस पर चिल्लाया। लेकिन

इस बार लड़की सिर्फ़ हँस दी।

"मुझे डराने की कोशिश न कीजिए। मैं तान्या नहीं हूँ। भागनेवाली नहीं। लेकिन आपके इस तरह चिल्लाने से मुन्नी ज़रूर जाग जाएगी और उसे फिर दौरा पड़ जाएगा...इतना क्यों चिल्ला रहे हैं ?"

"नहीं, नहीं, नहीं ! तोबा ! तोबा !" लेबेदेव अचानक सहम गया और जल्दी से अपनी बेटी की गोद में सोए हुए बच्चे के पास जाकर उसने डरी हुई मुद्रा से उसके ऊपर सलीब का निशान बनाया। "भगवान बनाए रखे। यह मेरी बच्ची है, साहब," उसने प्रिंस की ओर मुड़कर कहा, "मेरी अपनी बेटी ल्यूबा, मेरी ब्याहता बीवी येलेना की बच्ची, जो अभी बच्चा होने में मर गई। और यह पिद्दी—मेरी बेटी वेरा है, मातमी लिबास में।...और यह...यह...अरे, यह..."

"अरे, रुक क्यों गए ?" नौजवान ने चिल्लाकर कहा। "कहते रहिए, साहब, इतना झेंपिए नहीं !"

"योर एक्सीलेंसी !" लेबेदेव ने अचानक कुछ ताव में आकर ऊँचे स्वर में कहा, "आपने अखबारों में जेमारिन-परिवार के लोगों के क़त्ल के बारे में तो पढ़ा होगा ?"

"पढ़ा तो है," प्रिंस ने कुछ आश्चर्य से कहा।

"तो इसे देखिए, यह जेमारिन-परिवार का असली हत्यारा, यही है !"

"क्या कह रहे हैं आप ?" प्रिंस ने कहा।

"ज़ाहिर है, शाब्दिक अर्थ में नहीं बल्कि अलंकार की भाषा में। अगर आगे चलकर कभी दूसरा जेमारिन-परिवार हुआ तो उस परिवार का दूसरा हत्यारा भी यही होगा। यह उसकी तैयारी कर रहा है।..."

सब लोग हँस पड़े। प्रिंस को ऐसा लगा कि शायद लेबेदेव सचमुच उल्लू बन रहा था और ढोंग कर रहा था क्योंकि पहले से उसके प्रश्नों का अनुमान लगाकर उसे उनका जवाब नहीं सूझ रहा था और वह ज़्यादा वक़्त हासिल करने की कोशिश कर रहा था।

"बाग़ी है, साज़िश कर रहा है !" लेबेदेव मानो अपने आपको काबू में न रख पाकर चिल्ला पड़ा। "तो क्या मैं ऐसा कर सकता हूँ, क्या मुझे ऐसा करने का अधिकार है कि ऐसे निन्दा करनेवाले को, ऐसे, समझ लीजिए, बदचलन और पिशाच को अपनी स्वर्गीया बहन अनीस्या का इकलौता बेटा होने के नाते अपना भानजा मान लूँ ?"

"बस, चुप रहिए, शराबी कहीं के ! क्या आप यक़ीन करेंगे, प्रिंस, कि अब इन्हें वकालत करने की, अदालतों में पैरवी करने की धुन समाई है; धुआँधार भाषण करने लगते हैं, और घर पर अपने बच्चों से लफ्फाजी के अन्दाज में बातें करते हैं। अभी पाँच दिन पहले ज़िले के जज के सामने एक भाषण झाड़ा था। और आपके ख़्याल में इन्होंने किसकी पैरवी करने का जिम्मा लिया था ? उस बुढ़िया की नहीं, जो इनके सामने रोती-गिड़गिड़ाती रही, जिसे एक बदमाश सूदखोर ने लूटा था, जिसके उसने पाँच सौ रूबल हड़प लिए थे—उसके पास इस दुनिया में बस यही था। जी नहीं ! यह अदालत में पैरवी करने खड़े हुए उस सूदखोर महाजन की तरफ़ से, क्योंकि उसने इन्हें पचास रूबल देने को कहा था।..."

"पचास रूबल मुक़द्दमा जीतने पर और हारने पर सिर्फ़ पाँच रूबल," लेबेदेव ने अचानक अपना स्वर बदलकर, जैसे वह कभी चिल्ला रहा ही नहीं था, समझाते हुए कहा।

"तो, ज़ाहिर है, इनकी एक न चली। अब हवा बदल गई है, अदालत में लोग उनके ऊपर सिर्फ़ हँसे। फिर भी यह अपने कारनामे पर बहुत खुश थे। आप लोगों से, जो दूध का दूध और

पानी का पानी करनेवाले लोग हैं, इन्होंने कहा, इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि इस बेचारे लंगड़े अपाहिज बूढ़े से, जो काम करके ईमानदारी की रोजी कमाता है, उसकी रोटी का आख़िरी टुकड़ा तक छीन लिया गया है। क़ानून बनानेवाले के बुद्धिमानी के शब्दों को याद रखिए—"अदालतों में दया का बोलबाला रहे"। और, आप मानेंगे नहीं, यह रोज सबेरे अपना भाषण, उसका एक-एक शब्द हमारे सामने दोहराते रहते हैं, ठीक उसी तरह जैसे इन्होंने उसे अदालत में दिया था। आज यह पाँचवीं बार है। आपके आने से पहले यह वही भाषण सुना रहे थे, इतने खुश हैं यह उससे। अपनी पीठ ठोंकते नहीं थकते। और अब इन्हें कोई और मिल गया है जिसकी यह पैरवी करनेवाले हैं। आप प्रिंस मीश्किन हैं न ? कोल्या ने मुझे आपके बारे में बताया था। वह कहता था कि आपसे अक्लमन्द आदमी उसे अभी तक नहीं मिला।"

"नहीं है ! नहीं है !" लेबेदेव ने फ़ौरन हाँ में हाँ मिलाई। "दुनिया में इनसे ज़्यादा होशियार कोई और है ही नहीं !"

"ख़ैर, यह तो सरासर झूठ बोल रहे हैं। कोल्या आपसे प्यार करता है, लेकिन यह तो सिर्फ़ लल्लो-चप्पो करके आपको खुश करना चाहते हैं। जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरा आपकी चापलूसी करने का कोई इरादा नहीं है। इस मामले में किसी भ्रम में न रहिएगा। लेकिन, मैं यह मानकर चलता हूँ कि आपमें सामान्य बुद्धि की कमी नहीं है, इसलिए आप इनके और मेरे झगड़े का फ़ैसला कर दीजिए। बताइए," उसने अपने मामा को सम्बोधित किया, "क्या आप प्रिंस से हम लोगों का फ़ैसला कराना चाहते हैं ? सच पूछिए, प्रिंस, तो मुझे बड़ी खुशी है कि आप हाथ आ गए।"

"बिलकुल चाहता हूँ," लेबेदेव ने दृढ़ता से कहा और अनायास अपने श्रोताओं पर एक दृष्टि डाली, जो उसके चारों ओर फिर जमा होने लगे थे।

"क्यों, मामला है क्या ?" प्रिंस ने भवें सिकोड़कर पूछा।

उसके सिर में सचमुच दर्द हो रहा था और इसके अलावा उसका यह विश्वास निरन्तर और पक्का होता जा रहा था कि लेबेदेव उसे धोखा दे रहा था और टालमटोल करने में उसे मज़ा आ रहा था।

"मामला दरअसल यों है। मैं इनका भानजा हूँ; इस सिलसिले में यह झूठ नहीं बोल रहे थे, हालाँकि आमतौर पर बोलते हैं। मैंने यूनिवर्सिटी में अपनी पढ़ाई पूरी नहीं की है, लेकिन उसे पूरा करने का मेरा इरादा है, और मैं ऐसा करके रहूँगा, क्योंकि मैं अपने इरादे का बहुत पक्का हूँ। लेकिन इसी बीच, चूँकि मुझे किसी न किसी तरह गुजर-बसर तो करनी ही है, मैं रेलवे में पच्चीस रूबल महीने की नौकरी करनेवाला हूँ। इसके अलावा मैं यह भी मानता हूँ कि दो-तीन बार यह मेरी मदद कर चुके हैं। मेरे पास बीस रूबल थे और मैं उन्हें ताश में हार गया ! क्या आप यक़ीन करेंगे, प्रिंस, मैं इतना जलील था, इतना नीच था कि मैं उन्हें ताश में हार गया।"

"वह भी एक लफ़ंगे के हाथ—एक ऐसे लफ़ंगे के हाथ जिसका भुगतान कभी क़िया ही नहीं जाना चाहिए था," लेबेदेव ने चिल्लाकर कहा।

"जी हाँ, एक लफ़ंगे के हाथ, लेकिन जिसका भुगतान करना ज़रूरी था," नौजवान कहता रहा। "मैं यह मानने को बिलकुल तैयार हूँ कि वह लफ़ंगा है, और सिर्फ़ इसलिए नहीं कि उसने आपकी पिटाई की थी। वह फौज़ी अफ़सर, लेफ़्टिनेंट है, प्रिंस, जिसे नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया है; पहले वह रोगोझिन के गरोह में था और अब बॉक्सिंग सिखाता है। अब चूँकि रोगोझिन ने उन सबको धता बता दी है इसलिए वे इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे हैं। लेकिन सबसे बुरी बात तो

यह है कि मैं जानता था कि वह लफ़ंगा, बदमाश और चोट्टा है, फिर भी मैं उसके साथ खेलने बैठ गया और जब मैंने आख़िरी रूबल दाँव पर लगाया (हम 'स्टिक्स' खेल रहे थे), तो मैंने दिल में सोचा कि अगर मैं हार गया तो मैं मामा के पास जाऊँगा और बड़े अच्छे ढंग से उनसे कुछ पैसा माँग लूँगा; वह मुझे पैसा देने से इन्कार नहीं करेंगे। यह बहुत कमीनेपन की चाल थी, सोची-समझी हुई कमीनेपन की चाल !"

"हाँ, सचमुच, वह यक़ीनन एक सोची-समझी हुई कमीनेपन की चाल थी !" लेबेदेव ने दोहराया।

"ज़रा रुक जाइए, इतना खुश न होइए," भानजे ने चिढ़कर ऊँचे स्वर में कहा। "देखिए, कितना खुश हो रहे हैं। मैं यहाँ आया, प्रिंस, और इन्हें सब कुछ सच-सच बता दिया। मैंने वैसा ही किया जैसा एक इज़्ज़तदार आदमी को करना चाहिए। मैंने अपने साथ कोई नरमी नहीं बरती। जितना भी बन पड़ा, मैंने अपने आपको धिक्कारा; इस बात को भी सभी मानेंगे। लेकिन मैं अपनी नौकरी पर जाने के लिए मेरे पास कुछ ढंग के कपड़े तो होने ही चाहिए, क्योंकि मैं चीथड़े पहने घूम रहा हूँ। ज़रा मेरे जूते देखिए ! मैं इस तरह तो अपनी नौकरी पर नहीं जा सकता, और अगर मैं सही वक़्त पर नहीं पहुँचा तो वह नौकरी किसी और को मिल जाएगी, और तब मेरी तो बधिया ही बैठ जाएगी, क्योंकि भगवान जाने दूसरी नौकरी क़ब मिले। तो, मैं सिर्फ़ पन्द्रह रूबल माँग रहा हूँ, और वादा करता हूँ कि इनसे फिर कभी पैसा नहीं माँगूँगा; इसके अलावा मैं जिम्मा लेता हूँ कि मुझ पर इनका जो कर्ज होगा वह अगले तीन महीनों में पाई-पाई चुका दूँगा। मैं अपना वादा पूरा करूँगा ! मैं खाली रोटी और पानी पर जिन्दा रह सकता हूँ क्योंकि मैं अपने इरादे का बहुत पक्का हूँ। तीन महीनों में मुझे पचहत्तर रूबल मिलेंगे। कुल मिलाकर मुझे इनके पैंतीस रूबल देने होंगे, इसलिए मेरे पास कर्ज चुकाने के लिए काफ़ी पैसा होगा। इनका जो जी चाहे सूद ले कर लें, लानत है ! क्या यह मुझे जानते नहीं ? इनसे पूछिए, प्रिंस। पहले इन्होंने जब भी मुझे पैसा उधार दिया है क्या मैंने वापस नहीं कर दिया ? फिर, अब यह मेरी मदद क्यों नहीं करना चाहते ? यह मुझसे इसलिए नाराज़ हैं कि मैंने उस लेफ़्टिनेंट को पैसे चुका दिए। और कोई वजह नहीं है ! यह हैं ही ऐसे—न खुद खाएँ न किसी को खाने दें !"

"और यह यहाँ से टलता भी नहीं !" लेबेदेव ने चिल्लाकर कहा। "यहाँ लेट गया है और जाता नहीं।"

"मैं आपसे यही बता चुका हूँ। जब तक आप पैसा देंगे नहीं तब तक मैं जाने का नहीं। आप मुस्करा रहे हैं, प्रिंस, है न ? क्या आप समझते हैं कि मैं ठीक नहीं कर रहा हूँ, क्यों ?"

"मैं मुस्करा नहीं रहा हूँ, लेकिन मेरे ख़्याल में तुम्हारा रवैया कुछ हद तक ठीक नहीं है," प्रिंस ने अनमनेपन से जवाब दिया।

"अरे, सीधे-सीधे कह दीजिए कि मैं बिलकुल ग़लत हूँ। गोलमोल बातें मत कीजिए। क्या ज़रूरत है 'कुछ हद तक' कहने की ?"

"अगर तुम यही कहलाना चाहते हो, तो तुम सरासर ग़लत हो।"

"अगर मैं कहलाना चाहता हूँ ! यह भी अच्छा मज़ाक़ है। क्या आप समझते नहीं कि मुझे बिलकुल अच्छी तरह मालूम है कि मेरा हाल पतला है, कि पैसा इनका है, कि फ़ैसला करने का हक़ इनको है, और मेरी ओर से सिर्फ़ ज़ोर-जबर्दस्ती है। लेकिन, प्रिंस, आप...ज़िन्दगी को नहीं जानते। इनको सबक सिखाए बिना आप इनके तौर-तरीक़े कभी नहीं बदल सकते। इन्हें सबक सिखाना ज़रूरी है। देखिए, मेरा अन्तःकरण बिलकुल साफ़ है। मैं अपने अन्तःकरण की क़सम

खाकर कहता हूँ कि इन्हें मेरी वजह से एक पाई का भी नुकसान नहीं होगा। मैं सूद समेत सारी रक़म चुका दूँगा। इन्हें इससे नैतिक सन्तोष मिल ही चुका है; यह मेरा पतन देख ही चुके हैं। यह और क्या चाहते हैं ? आखिर यह खुद क्या करते हैं ? इनसे पूछिए कि यह दूसरे लोगों के साथ कैसा सलूक करते हैं और उन्हें कैसे धोखा देते हैं। इन्होंने यह घर कैसे खरीदा ? अरे, मैं शर्त बदकर कह सकता हूँ कि यह आपको धोखा दे चुके हैं और आपको फिर धोखा देने की तरकीबें सोच रहे हैं ! आप मुस्करा रहे हैं ? आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं आता ?"

"मैं समझता हूँ कि इसका आपके काम से कोई खास सम्बन्ध नहीं है," प्रिंस ने अपना मत प्रकट किया।

"मैं यहाँ इस सोफ़े पर तीन दिन से लेटा हूँ, और आप सोच भी नहीं सकते जो कुछ मैंने देखा है !" नौजवान प्रिंस की बात सुने बिना चिल्लाकर कहता रहा। "अरे, यह तो उस फ़रिश्ते जैसी बिना माँ की बच्ची पर भी, जो मेरी बहन और इनकी अपनी बेटी है, शक करते हैं और रोज रात को उसके कमरे की तलाशी लेते हैं कि कहीं उसका कोई प्रेमी तो वहाँ नहीं छिपा है ! यह दबे पाँव यहाँ मेरे कमरे में आते हैं और सोफ़े के नीचे भी खोजते रहते हैं। शक्कीपन की वजह से इनका दिमाग़ खराब हो गया है। इन्हें हर कोने में चोर दिखाई देते हैं। रात को यह देखने के लिए बार-बार अपने बिस्तर से उछलकर खड़े हो जाते हैं कि सारी खिड़कियाँ तो ठीक से बन्द हैं या दरवाज़ों में ताला तो लगा दिया गया है, और चूल्हे में झाँककर देखते हैं—रात को कम से कम आधी दर्जन बार ! अदालत में चोर-उचक्कों की पैरवी करते हैं, लेकिन खुद रात को उठकर तीन बार घुटने टेककर और ज़मीन पर सिर पटक-पटककर आधे-आधे घंटे प्रार्थना करते हैं—यहीं इस कमरे में—और किस-किस के लिए प्रार्थना नहीं करते, किस-किस चीज़ के लिए प्रायश्चित्त नहीं करते हैं यह तरंग में आकर। काउंटेस डुबरी[1] की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना कर रहे थे—मैंने अपने कानों से सुना था। कोल्या ने भी सुना था। बिलकुल पेंच ढीला हो गया है।"

"आप देख रहे हैं, सुन रहे हैं न, प्रिंस, कि यह किस तरह मुझे बदनाम करता है," लेबेदेव ने चिल्लाकर कहा; उसका चेहरा लाल हो गया था और गुस्से के मारे वह सचमुच आपे से बाहर हो गया था। "लेकिन यह नहीं जानता कि मैं शराबी, बदचलन, लुटेरा और दुष्ट चाहे जो हूँ फिर भी एक ही बात के लिए मेरा भी कोई महत्त्व है; जब यह छोकरा, जो आज मेरी हँसी उड़ा रहा है, छोटा बच्चा था तब मैं उसके पोतड़े बदलता था, इसे नहलाता-धुलाता था; और मैंने, जो उन्हीं की तरह कंगाल था, अपनी विधवा कंगाल बहन अनीस्या के यहाँ, जब ये दोनों बीमार थे, उनकी तीमारदारी में पलक झपकाए बिना न जाने कितनी रातें काटी हैं; नीचे दरबान के यहाँ से ईंधन चुराकर लाता, इसे गीत गाकर सुनाता और चुटकी बजा-बजाकर इसका मन बहलाता, और सो भी भूखे पेट; और मैंने जिसे पाला-पोसा वह बड़ा होकर ऐसा निकला। देखिए तो इसे ! अब मुझ पर हँसता है ! और अगर मैंने कभी काउंटेस डुबरी की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की भी तो इससे तुम्हें क्या लेना-देना ? बात यह है, प्रिंस, कि तीन दिन हुए मैंने एक विश्वकोष में उनकी जीवनी पहली बार पढ़ी थी। जानते हो तुम कि कैसी थीं वह, काउंटेस डुबरी ? बताओ, जानते हो तुम ?"

"दुनिया में आप अकेले ही उनके बारे में जानते हैं, क्यों ?" नौजवान ने व्यंग से लेकिन अनमनेपन से बुदबुदाकर कहा।

---

1. डुबरी, मारी-जान्ना (1743-1793)—अपनी जवानी में वेश्या थीं, फिर काउंटेस बनीं और लुदोविक 15वें की कृपापात्र रहीं; उन्होंने दरबार के षड्यन्त्रों में सक्रिय भाग लिया। 8 दिसम्बर, 1793 को क्रान्तिकारी अदालत के आदेश से उन्हें गिलोटीन से मौत के घाट उतार दिया गया।

"वह एक काउंटेस थीं, जिन्होंने बदनामी की ज़िन्दगी से उभरकर रानी की जगह शासन किया और जिन्हें एक बहुत बड़ी महारानी ने अपने हाथ से लिखे हुए पत्र में 'मेरी बहन' कहकर सम्बोधित किया था। कार्डिनल ने, पोप के प्रतिनिधि ने, lev'ee du roi[1] के समय (जानते हो lev'ee du roi क्या होता था ?) अपने हाथों से उनके नंगे पाँवों पर रेशमी जुराबें पहनाने के लिए अपनी सेवाएँ प्रस्तुत की थीं और इसे अपने लिए बड़े गौरव की बात समझा था। उनकी जैसी ऊँची और पवित्र हस्ती ने। तुम्हें यह बात मालूम है ? तुम्हारी सूरत से बता सकता हूँ कि मालूम नहीं है। तो, वह मरीं कैसे ? अगर जानते हो तो जवाब दो !"

"उफ़, जाइए यहाँ से ! चिपके क्यों हैं !"

वह इस तरह मरी थी। इतनी इज़्ज़त पाने के बाद उन बेक़सूर को जो पहले शासन करती थीं, जल्लाद सम्सोन पेरिस के दो टके की औरतों के मनोरंजन के लिए घसीटकर गिलोटीन पर ले गया था। और उन्हें पता तक नहीं चला कि उन्हें क्या हो रहा है—वह इतनी सहमी हुई थीं। यह देखकर कि जल्लाद उन्हें पीछे से ठोकर मारकर उनकी गर्दन झुकाकर छुरे के नीचे रख रहा था और वे राह चलती औरतें तमाम वक़्त ठहाके लगा रही थीं—वह चीख़ पड़ीं—'Encore un moment, monsieur le Bourreau, encore un moment !' जिसका मतलब है, 'एक क्षण और, जल्लाद साहब, बस एक क्षण और !' और उस 'एक क्षण' के लिए भगवान शायद उन्हें क्षमा कर देगा, क्योंकि मनुष्य की आत्मा के लिए उससे ज़्यादा mis'ere[2] की कल्पना भी नहीं की जा सकती। तुम जानते हो mis'ere शब्द का क्या अर्थ होता है ? तो, इसी को mis'ere कहते हैं। जब मैंने एक क्षण के लिए काउंटेस की उस चीख़ के बारे में पढ़ा तो मुझे लगा जैसे मेरा दिल शिकंजे में जकड़ दिया गया है। और तुम्हें इससे क्या लेना-देना, कमबख़्त नरक के कीड़े, कि सोने जाने से पहले अपनी प्रार्थनाओं में मैंने उन महापापिनी की याद करने की बात सोची ? अरे, शायद मैंने प्रार्थना में उनको याद सिर्फ़ इसलिए किया हो कि किसी ने कभी उनके लिए दुआ नहीं माँगी होगी या ऐसा करने की बात सोची भी नहीं होगी। उस लोक में उन्हें यह जानकर खुशी होगी कि उन जैसा पापी कोई और भी है जिसने पृथ्वी पर उनके लिए कम से कम एक दुआ तो माँगी। तुम हँस किस बात पर रहे हो ? ईश्वर पर विश्वास नहीं रखते, नास्तिक कहीं के। लेकिन तुम्हें कैसे मालूम ? और फिर, अगर तुमने मेरी प्रार्थना सुनी भी थी तब भी तुम झूठ बोलते हो—मैंने सिर्फ़ काउंटेस डुबरी के लिए प्रार्थना नहीं की थी। मैंने कहा यह था—'हे प्रभु, महापापिनी डुबरी और उन जैसे सभी लोगों की आत्मा को शान्ति दे," और यह बिलकुल ही दूसरी बात है; क्योंकि इस तरह की बहुत-सी दूसरी महापापिनियाँ भाग्य के फेर की जीती-जागती मिसालें हैं, जिन्होंने बहुत-सी मुसीबतें झेली हैं और जो अब वहाँ बहुत पीड़ा भोग रही हैं, कराह रही हैं और राह देख रही हैं। और अगर तुम छिप-छिपकर मेरी प्रार्थना सुनते ही हो तो तुम्हें मालूम होना चाहिए कि उस वक़्त मैंने तुम्हारे लिए भी प्रार्थना की थी, और तुम्हारे जैसे दूसरे ढीठ और धौंस देनेवालों के लिए भी।..."

"अच्छा, अच्छा, बस, बहुत हो गया; भाड़ में जाइए आप, जिसके लिए चाहिए दुआ माँगिए, देखो तो इन्हें, कैसा चिल्ला रहे हैं !" भानजे ने झुँझलाकर बीच में टोकते हुए कहा। "अरे, यह बहुत पढ़े-लिखे आदमी हैं—आपको नहीं मालूम था, प्रिंस ?" उसने कुछ खिसियाई हुई मुस्कराहट के साथ इतना और जोड़ दिया। "यह आजकल हर वक़्त ऐसी ही कितायें और संस्मरण पढ़ते रहते हैं।"

---

1. सबेरे महारानियों और अभिजात महिलाओं के कपड़े बदलने का अनुष्ठान। (फ्रांसीसी)
2. दुःख। (फ्रांसीसी)

"तुम्हारे मामा, कुछ भी हो,...बेरहम आदमी नहीं हैं," प्रिंस ने अनमनेपन से अपना मत प्रकट किया। वह उस नौजवान के प्रति गहरी अरुचि अनुभव करने लगा था।

"मुझे डर है कि कहीं वह आपकी तारीफ़ों के बोझ के नीचे दब न जाएँ ! देखिए, उन्होंने अभी से दिल पर हाथ रखकर अपने होंठ भींच लिए हैं। उनके मुँह में और तारीफ़ सुनने के लिए पानी आ रहा है। यह तो मैं भी कहूँगा कि वह बेरहम नहीं हैं, लेकिन वह पूरे ठग हैं—सारी मुसीबत तो यही है; और वह शराब भी पीते हैं, बिलकुल बिगड़ गए हैं, किसी भी ऐसे आदमी की तरह जो कई साल से लगातार पी रहा हो। उन्हें अपने बच्चों से प्यार है, यह मैं मानता हूँ। वह मेरी स्वर्गीया मामी जी की भी इज़्ज़त करते थे। वह मुझे भी प्यार करते हैं, और अपनी वसीयत में उन्होंने, क़सम से, मेरे लिए कुछ छोड़ा है।..."

"कु-कुछ भी नहीं ! मैं तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं छोड़ जाऊँगा !" लेबेदेव ने कठोर स्वर में गरजकर कहा।

"सुनिए, लेबेदेव," प्रिंस ने नौजवान की ओर से मुड़ते हुए दृढ़ स्वर में कहा। "मैं अनुभव से जानता हूँ कि जब आपका जी चाहता है तब आप बिलकुल कारोबारी आदमी भी बन सकते हैं।...मेरे पास अब बहुत ज़्यादा वक़्त नहीं है, और अगर आप...माफ़ कीजिएगा, आपका नाम और बाप का नाम क्या है ? मैं भूल गया हूँ।"

"त-त-तिमोफ़ेई।"

"और ?"

"लुक्यानोविच।"

कमरे में मौजूद सभी लोग एक बार फिर हँस पड़े।

"झूठ !" भानजा ज़ोर से चिल्लाया। "झूठ बोले बिना रहा नहीं गया, क्यों ? देखिए, प्रिंस, इनका नाम तिमोफ़ेई लुक्यानोविच बिलकुल नहीं है, बल्कि लुक्यान तिमोफ़ेयेविच है। बताइए, आख़िर आपको झूठ बोलने की ज़रूरत क्या थी ? इससे आपको फ़र्क़ क्या पड़ता है कि आपका नाम लुक्यान है या तिमोफ़ेई ? और प्रिंस को भी इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है ? इनकी तो झूठ बोलने की आदत पड़ गई है, मैं आपसे सच कहता हूँ।"

"क्या यह सच है ?" प्रिंस ने अधीरता से पूछा।

"जी हाँ, असल में है लुक्यान तिमोफ़ेयेविच ही," लेबेदेव ने खिसियाते हुए स्वीकार किया, बड़ी विनम्रता से आँखें झुका लीं और फिर दिल पर हाथ रख लिया।

"लेकिन, भगवान के लिए, क्यों ?"

"आत्म-पतन की वजह से," लेबेदेव ने बुदबुदाकर कहा और पहले से भी अधिक विनम्रता से अपना सिर झुका लिया।

"यह कैसा आत्म-पतन है ! काश मुझे इस वक़्त यह मालूम होता कि कोल्या कहाँ मिल सकता है," प्रिंस ने कहा और चलने के लिए मुड़ा।

"मैं आपको बताता हूँ कि कोल्या कहाँ है," नौजवान ने फिर अपनी ओर से कहा।

"नहीं-नहीं-नहीं !" लेबेदेव ने बहुत उत्तेजित होकर कहा।

"कोल्या रात यहीं रहा और सबेरे अपने जनरल साहब को ढूँढ़ने निकल गया, जिन्हें, प्रिंस, आपने न जाने क्यों जेल से छुड़वा लिया। जनरल साहब ने कल वादा किया था कि वह आएँगे और रात यहीं बिताएँगे, लेकिन वह आए नहीं। बिलकुल मुमकिन है कि उन्होंने रात 'तुला' होटल में बिताई हो, जो यहाँ से बहुत दूर नहीं है। इसलिए कोल्या या तो वहाँ होगा या पाव्लोव्स्क में

येपांचिन-परिवार के यहाँ होगा। उसके पास पैसा था और वह कल ही वहाँ जाना चाहता था। तो वह या 'तुला' होटल में होगा या पाव्लोव्स्क में।"

"पाव्लोव्स्क में, पाव्लोव्स्क में !" लेबेदेव ने चिल्लाकर कहा। "और हम यहाँ, यहाँ, बाग़ में चलेंगे और...और...वहाँ कॉफ़ी..."

और लेबेदेव प्रिंस को बाँह पकड़कर खींच ले गया। ये लोग कमरे से बाहर चले गए और छोटा-सा आँगन पार करके फाटक में से निकल गए। फाटक से निकलकर वे सचमुच एक बहुत ही छोटे और बहुत ही प्यारे-से बाग़ में जा पहुँचे, जिसमें अच्छे मौसम की वजह से सारे पेड़ों में पत्तियाँ निकल आई थीं। लेबेदेव ने प्रिंस को ज़मीन में गड़ी हुई हरी मेज़ के सामने लकड़ी की एक हरी बेंच पर बिठा दिया, और खुद उसके सामने बैठ गया। एक मिनट बाद सचमुच कॉफ़ी आ गई। प्रिंस ने इन्कार नहीं किया। लेबेदेव उत्कंठा और खुशामद के भाव से उसकी आँखों में आँखें डालकर देखता रहा।

"मुझे नहीं मालूम था कि आपकी गृहस्थी इतनी बड़ी है," प्रिंस ने ऐसे आदमी के अन्दाज से कहा जो किसी दूसरी ही चीज़ के बारे में सोच रहा हो।

"अ-अनाथ," लेबेदेव ने कहना शुरू किया लेकिन वह इतना ही कहकर रुक गया। प्रिंस खोया-खोया अपने सामने देख रहा था और यक़ीनन वह भूल चुका था कि अभी आगे क्या कहना था। एक मिनट और बीता; लेबेदेव ध्यान से देखता रहा और प्रतीक्षा करता रहा।

"तो ?" प्रिंस ने मानो अचानक होश में आते हुए कहा। "अरे हाँ, ज़ाहिर है, लेबेदेव, आप तो खुद ही जानते हैं कि हमें एक-दूसरे से क्या काम है। मैं आपके ख़त के जवाब में आया हूँ। बताइए।"

लेबेदेव सकपकाया हुआ दिखाई पड़ा; वह कुछ कहने जा रहा था, लेकिन सिर्फ़ हकलाकर रह गया—उससे कुछ भी बोला न गया। प्रिंस कुछ देर इन्तज़ार करता रहा और फिर उदास भाव से मुस्कराया।

"मुझे लगता है, लुक्यान तिमोफ़ेयेविच, कि मैं आपको बिलकुल अच्छी तरह समझता हूँ। आपको मेरे आने की उम्मीद नहीं थी, है न ? आपको यह उम्मीद नहीं थी कि आपका पहला सन्देश मिलते ही मैं यहाँ दुनिया के दूसरे छोर से वापस आ जाऊँगा, और आपने अपने अन्तःकरण पर से बोझ उतारने के लिए ही मुझे खत लिखा था। पर मैं आ गया हूँ। मेहरबानी करके अब मुझे धोखा देने की कोशिश न कीजिए। दो मालिकों की ख़िदमत करना बन्द कर दीजिए। रोगोझिन यहाँ तीन हफ़्ते से है। मुझे सब मालूम है। क्या आप उसे उसके हाथ बेचने में कामयाब हो गए हैं जैसा कि आपने पिछली बार किया था ? मुझे सच-सच बता दीजिए।"

"उस पिशाच ने खुद पता लगा लिया, खुद।"

"उसे गाली मत दीजिए। उसने आपके साथ बुरा सलूक किया है, यह ठीक है।..."

"उसने मुझे मारा, मेरी पिटाई की !" लेबेदेव जोश से चिल्लाकर कहने लगा। "और मास्को में उसने मेरे ऊपर कुत्ता छुड़वा दिया, सड़कों पर मेरा पीछा किया। भयानक कुतिया थी !"

"लेबेदेव, आप मुझे बच्चा समझते हैं। बताइए, क्या उसने अब सचमुच उसको छोड़ दिया है, मेरा मतलब है मास्को में ?"

"हाँ, सचमुच, सचमुच, और इस बार भी ऐन शादी के दिन। वह एक-एक मिनट गिन रहा था और वह सीधे मेरे पास यहाँ पीटर्सबर्ग चली आई। 'मुझे बचाओ, लुक्यान, मेरी रक्षा करो, और प्रिंस को न बताना।...' प्रिंस, वह उससे भी ज़्यादा आपसे डरती है, और इसमें कोई बहुत गहरी

बात है !"

और यह कहकर लेबेदेव ने कुटिलता से उँगली माथे पर रखी।

"और अब आपने उन्हें फिर एक-दूसरे से मिला दिया ?"

"अरे प्रिंस साहब, मैं कैसे...मैं रोक ही कैसे सकता था इस बात को ?"

"बस, मैं सब कुछ खुद मालूम कर लूँगा। मुझे इतना ही बता दीजिए कि वह इस वक़्त है कहाँ ? उसके यहाँ ?"

"अरे, बिलकुल नहीं ! नहीं, नहीं ! वह अभी तक अकेली रहती है। वह कहती है, मैं आज़ाद हूँ, वह इस बात पर मजबूती से अड़ी हुई है। वह कहती है, मैं अभी तक बिलकुल आज़ाद हूँ ! वह अभी तक पेतेर्बुर्गस्काया स्तोरोना नामक इलाक़े में मेरी साली के यहाँ रह रही है, जैसा कि मैंने आपको लिखा था।"

"इस वक़्त भी वहीं है ?"

"जी हाँ, या पाव्लोव्स्क चली गई हो, मौसम जो इतना अच्छा है, और वहाँ दार्या अलेक्सेयेव्ना के साथ उसके बँगले में रह रही हो। वह कहती है, मैं बिलकुल आज़ाद हूँ। अभी कल ही वह कोल्या से अपनी आज़ादी की डींग मार रही थी। लक्षण बुरे हैं !"

और यह कहकर लेबेदेव ने खीसें निकाल दीं।

"क्या कोल्या उससे अकसर मिलता है ?"

"सिरफिरा, तरंगी है, और छिपाऊ नहीं है।"

"आपको उससे मिले बहुत वक़्त हो गया ?"

"मैं उससे रोज़ मिलता हूँ, रोज़।"

"तो आप कल भी वहाँ थे ?"

"जी नहीं, जनाब। तीन दिन पहले था।"

"बड़े अफ़सोस की बात है, लेबेदेव, कि आप शराब पिए हुए हैं, वरना मैं आपसे कुछ पूछता।"

"नहीं, नहीं, नहीं, मैंने ज़रा भी नहीं पी है, ज़रा भी नहीं।" लेबेदेव नज़रें जमाकर घूरने लगा।

"अच्छा, यह बताइए कि आप उसे किस हालत में छोड़कर आए थे ?"

"खोजी की हालत में..."

"खोजी ?"

"वह मानो कुछ खोज रही थी, जैसे उसकी कोई चीज़ खो गई हो। होनेवाली शादी के ख़्याल से ही उसे घिन आती है और वह इसे अपना अपमान समझती है। उसको तो वह संतरे के छिलके से बढ़कर कुछ नहीं समझती, बल्कि उससे भी बदतर, मेरा मतलब है, डरते हुए और काँपते हुए, उसकी चर्चा भी नहीं करने देती, और वे दोनों एक-दूसरे से तभी मिलते हैं जब बिलकुल ज़रूरी होता है,—और यह बात उसके दिल को बहुत लगती है ! लेकिन उसे यह तो झेलना ही पड़ेगा !...जी हाँ ! बेचैन, ताने से बात करती है, दोरुख़ी बातें करती है, बदमिज़ाज है।..."

"दोरुख़ी बातें करती है और बदमिज़ाज है ?"

"जी हाँ, बदमिजाज, अभी पिछली बार मेरी किसी बात पर उसने लगभग मेरे बाल पकड़ लिए थे। मैंने उसे ऐपोकैलिप्स[1] से शान्त किया।"

"क्या मतलब आपका ?" प्रिंस ने यह सोचकर पूछा कि शायद उसने लेबेदेव की बात को ग़लत सुना हो।

1. बाइबिल के नवविधान का अन्तिम ग्रन्थ, जिसमें संसार के अन्त और क़यामत के दिन का उल्लेख है।

"मैं ऐपोकैलिप्स पढ़ रहा था। वह बहुत बेचैन कल्पनावाली औरत है, हः-हः ! इसके अलावा मैं तो इस नतीजे पर पहुँच चुका हूँ, कि उसकी गम्भीर विषयों की ओर झुकाव है, चाहे वे कितने ही गूढ़ क्यों न हों। उन्हें वह पसन्द करती है, और इसमें अपनी ख़ास इज़्ज़त भी समझती है। जी हाँ ! बात यह है, मैं एपोकैलिप्स की व्याख्या काफ़ी अच्छी कर लेता हूँ और पिछले पन्द्रह साल से उसकी व्याख्या करता रहा हूँ। वह मुझसे इस बात में सहमत थी कि हमारा आगमन तीसरे घोड़े के, काले घोड़े के समय हुआ, और उस घुड़सवार के समय में जिसके हाथ में तराजू है, क्योंकि हमारे जमाने में हर चीज़ तराजू पर तौली जाती है और हर बात समझौते से तै की जाती है, और सभी लोग सिर्फ़ अपने अधिकार चाहते हैं—'एक दीनार का एक माप गेहूँ, और एक दीनार के तीन माप जौ।' और तिस पर वे स्वतन्त्र आत्मा और शुद्ध हृदय और हृष्ट-पुष्ट शरीर और प्रभु के दिए हुए सारे गुण बनाए रखना चाहते हैं। लेकिन वे केवल अपने अधिकार पाने की कोशिश करके उन्हें बनाए नहीं रह सकेंगे, और इसलिए इसके बाद पीला घोड़ा आएगा और वह जिसका नाम मौत है, और जिसके बाद नरक आएगा।...जब मिलते हैं तो इन बातों की चर्चा होती है, और इसका उसके ऊपर बहुत गहरा असर पड़ा है।"

"क्या खुद आप इस हद तक विश्वास करते हैं ?" प्रिंस ने लेबेदेव पर अजीब-सी नज़र डालकर पूछा।

"मैं विश्वास करता हूँ और व्याख्या करता हूँ। क्योंकि ग़रीब और भूखा-नंगा हूँ और इंसानों के भँवर में एक कण की तरह हूँ। लेबेदेव की कौन इज़्ज़त करता है ? हर आदमी उसका मज़ाक़ उड़ाने की भरपूर कोशिश करता है और हर आदमी उसे देखते ही ठोकर मारने पर तुल जाता है। लेकिन इसमें, अपनी इस व्याख्या में, मैं महापुरुष के बराबर हूँ। क्योंकि सवाल बुद्धि का है ! बुद्धि का ! और महापुरुष थर-थर काँपने लगे अपनी आराम-कुर्सी पर बैठे-बैठे...जब उनकी बुद्धि ने इसका अर्थ ग्रहण कर लिया। दो साल पहले, ईस्टर से फ़ौरन पहले, हिज़ एक्सीलेंसी नील अलेक्सेयेविच ने, जिनके विभाग में मैं उस समय काम करता था, प्योत्र ज़ख़ारिच को ख़ासतौर पर भेजकर मुझे दफ़्तर से अपने पढ़ने के कमरे में बुलवाया और जब हम दोनों अकेले रह गए तो उन्होंने मुझसे पूछा, 'क्या यह सच है कि तुम क्राइस्ट-विरोधी की धारणा[1] के व्याख्याकार हो ?'—'जी हाँ, हूँ तो,' मैंने छिपाने की कोशिश किए बिना कहा और व्याख्या करके सब कुछ उनके सामने खोलकर रख दिया और उसकी भयानकता को तनिक भी कम नहीं किया, बल्कि उनके सामने वह सांकेतिक खर्रा खोलकर रखते हुए और आँकड़ों का हिसाब लगाते हुए जान-बूझकर उस भयानकता को कुछ और बढ़ा दिया। शुरू में तो वह मुस्कराए, लेकिन जब मैं आँकड़ों और अनुरूपताओं पर पहुँचा तो वह काँपने लगे और मुझसे किताब बन्द करके वहाँ से चले जाने को कहा। ईस्टर के अवसर पर उन्होंने मुझे बख़्शीश दी, लेकिन सप्ताह ही भर बाद उनकी आत्मा ईश्वर में लीन हो गई।

"क्या आप सच कह रहे हैं, लेबेदेव ?"

"हाँ, बिलकुल सच। खाना खाने के बाद अपनी गाड़ी पर से गिर पड़े...कनपटी खम्भे से टकराई और उसी वक़्त उनके प्राण पखेरू उड़ गए, बिलकुल छोटे बच्चे की तरह, प्यारे-से छोटे बच्चे की तरह। सरकारी कर्मचारियों की सूची के अनुसार वह तिहत्तर साल के थे। लाल चेहरा, हर वक़्त खुशबू से महकते हुए, सफ़ेद बाल, और हमेशा मुस्कराते हुए, जी हाँ, वह हर वक़्त मुस्कराते रहते थे, बच्चे की तरह। तभी प्योत्र ज़ख़ारिच को याद आया—'आपने भविष्यवाणी की थी,' उसने कहा।"

---

1. प्रारम्भिक ईसाइयों की यह धारणा कि संसार का अन्त होने से पहले क्राइस्ट का एक बहुत बड़ा निजी शत्रु पैदा होगा।

प्रिंस उठने लगा। लेबेदेव को ताज्जुब हुआ, यह बिलकुल हक्का-बक्का भी रह गया कि प्रिंस इतनी जल्दी उठ रहा था।

"मैं देखता हूँ, जनाब, कि आपको अब चीज़ों में दिलचस्पी नहीं रह गई है," उसने खुशामद के ढंग से अपना मत प्रकट करने का साहस किया।

"दरअसल मेरी तबियत कुछ खराब है," प्रिंस ने त्योरियाँ चढ़ाकर जवाब दिया। "मेरे सिर में दर्द हो रहा है। शायद सफ़र करने की वजह से।"

"आपके लिए देहात की हवा अच्छी रहेगी," लेबेदेव ने विनीत भाव से सुझाव दिया।

प्रिंस विचारों में खोया खड़ा रहा।

"मैं खुद देहात जा रहा हूँ, जनाब, तीन दिन बाद। अपने पूरे परिवार को साथ ले जा रहा हूँ। नवजात शिशु को सुरक्षित रखने के लिए; और इसी बीच में घर को ठीक-ठाक करवा दूँगा। हम लोग पाव्लोव्स्क भी जाएँगे।"

"आप भी पाव्लोव्स्क जा रहे हैं?" प्रिंस ने अचानक पूछा। "क्यों, क्या यहाँ के सभी लोग पाव्लोव्स्क जाते हैं? और क्या आप ही ने बताया था कि वहाँ आपका अपना घर है?"

"जी नहीं, सभी लोग नहीं जाते। और प्तीत्सिन के जो घर वहाँ हैं उनमें से एक घर उन्होंने मुझे दे रखा है। सचमुच, बहुत ही सस्ते क़ीमत लिया है उन्होंने। बात यह है, साहब, हर आदमी जिस वजह से पाव्लोव्स्क जाता है वह यह है कि वहाँ बहुत अच्छा है—ऊँचाई पर भी, और चारों ओर हरियाली भी, सस्ता भी, और फ़ैशनेबुल भी, और संगीत-भरा भी। मुझे तो बस मकान का एक हिस्सा...और मकान खुद..."

"...किराए पर चढ़ा हुआ है?"

"न-न-नहीं...अब तक नहीं।"

"तो मुझे किराए पर दे दीजिए," प्रिंस ने अचानक कहा।

यह स्पष्ट था कि लेबेदेव बातों का रुख मोड़कर यहीं लाने की कोशिश कर रहा था। यह विचार उसके मन में तीन मिनट पहले आया था। बात यह है कि उसे किराएदार की कोई ज़रूरत नहीं थी; उसे कोई साहब मिल भी गए थे जिन्होंने उससे कह रखा था कि शायद वह घर ले लेंगे। लेबेदेव को पक्के तौर पर मालूम था कि अब उसमें "शायद" का कोई सवाल नहीं था, बल्कि वह साहब यक़ीनन वह घर लेनेवाले थे। लेकिन अचानक उसे अपने हिसाब से बहुत फ़ायदे की प्रिंस को मकान किराए पर दे देने की बात सूझी, इस बात का लाभ उठाकर कि पिछले किराएदार ने अपनी इच्छा निश्चित रूप में व्यक्त नहीं की थी। "पूरा टकराव और घटनाओं में एक बिलकुल नया मोड़" उसकी कल्पना में आया। प्रिंस के सुझाव को उसने बड़े उत्साह से स्वीकार कर लिया, और जब उससे किराएदारी की शर्तों के बारे में पूछा गया तो उसने हाथ हिलाकर सवाल को टाल दिया।

"अच्छी बात है, जैसी आपकी मर्जी। मैं पता लगाऊँगा। आपको कोई घाटा नहीं होगा।"

वे दोनों उस समय बाग़ के बाहर जा रहे थे।

"अगर आप चाहें, आलीजनाब प्रिंस साहब, तो मैं...मैं...आपको एक बहुत दिलचस्प बात बता सकता हूँ जिसका सीधे इसी सवाल से सम्बन्ध है," लेवेदेव ने बुदबुदाकर कहा; वह खुशी के मारे प्रिंस के बग़ल में चलते हुए लगभग नाच रहा था।

प्रिंस ठहर गया।

"जनाब, पाव्लोव्स्क में दार्या अलेक्सेयेव्ना का भी एक बँगला है।"

"अच्छा ?"

"और एक शख़्स का, जिसकी उससे बहुत गहरी दोस्ती है, अकसर उससे मिलने पाव्लोव्स्क जाने का इरादा है, ऐसा मालूम होता है। ख़ास काम से।"

"अच्छा ?"

"अग्लाया इवानोव्ना।..."

"अच्छा, इतना काफ़ी है, लेबेदेव," प्रिंस ने कुछ अरुचि-सी अनुभव करते हुए उसकी बात काटकर कहा, मानो किसी ने उसकी कोई दुखती रग छू दी हो। "यह सब कुछ...आप जैसा समझते हैं वैसा बिलकुल नहीं है। आप तो मुझे यह बताइए कि आप वहाँ क़ब जा रहे हैं। मेरे लिए तो आप जितनी जल्दी जाएँ उतना ही अच्छा है, क्योंकि मैं होटल में ठहरा हुआ हूँ।..."

बातें करते-करते वे बाग़ से बाहर निकल आए और घर के अन्दर जाए बिना आँगन पार करके फाटक पर पहुँच गए।

"तो ठीक है," लेबेदेव ने आख़िरकार सुझाव रखा, "आप आज ही अपने होटल से यहाँ आ जाइए और परसों हम लोग साथ-साथ पाव्लोव्स्क के लिए रवाना हो जाएँगे।"

"देखा जाएगा," प्रिंस ने विचारों में डूबे हुए कहा और फाटक के बाहर चला गया।

लेबेदेव की नज़रें प्रिंस के साथ-साथ चलती रहीं। प्रिंस की इस आकस्मिक अन्यमनस्कता ने उसे कुछ आश्चर्यचकित कर दिया। बाहर जाते हुए उसने उसे विदाई का सलाम भी नहीं किया था, सिर तक नहीं हिलाया था; लेबेदेव को प्रिंस की शिष्टता और दूसरों का ध्यान रखने की भावना के बारे में जो कुछ मालूम था उसके साथ उसका यह आचरण बिलकुल मेल नहीं खाता था।

3

लगभग बारह बज रहे थे। प्रिंस जानता था कि येपांचिन-परिवार के शहरवाले घर में उसकी मुलाक़ात सिर्फ़ जनरल साहब से होगी, जो वहाँ शायद अपने कारोबार के मामलात को निबटा रहे होंगे, हालाँकि उसे इसका भी यक़ीन नहीं था। उसके दिमाग़ में यह बात आई कि जनरल साहब, बहुत मुमकिन था, उसे फ़ौरन अपने साथ लेकर पाव्लोव्स्क चले जाएँ, पर वह उससे पहले एक जगह और जाना चाहता था। येपांचिन-परिवार से देर से मिल पाने और अपना पाव्लोव्स्क जाना कल तक के लिए टाल देने का जोखिम मोल लेकर, प्रिंस ने जाकर वह घर खोजने का फ़ैसला किया जहाँ जाने को उसका जी इतना चाह रहा था।

लेकिन कुछ बातों की दृष्टि से वहाँ जाना उसके लिए खतरनाक था। वह झिझकता रहा और अपना मन पक्का नहीं कर पाया। यह उसे मालूम था कि वह मकान सादोवाया स्ट्रीट से ज़्यादा दूर नहीं गोरोख़ोवाया स्ट्रीट में था; उसने इस उम्मीद में वहाँ जाने का फ़ैसला किया कि जब तक वह वहाँ पहुँचेगा तब तक वह अपना इरादा पक्का कर लेगा।

जब वह चौराहे पर पहुँचा, जहाँ दोनों सड़कें मिलती थीं, उसे अपनी तीव्र उद्विग्नता पर स्वयं आश्चर्य हुआ; उसने कभी सोचा भी नहीं था कि उसका दिल इतने कष्टप्रद ढंग से धड़केगा। एक मकान, ज़ाहिर है अपनी अजीब शक्ल की वजह से दूर से ही उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने लगा, और प्रिंस को बाद में याद आता रहा कि उसने अपने मन में कहा था—"यक़ीनन वही मकान होगा।" अपने अनुमान की पुष्टि करने के लिए वह गहरी जिज्ञासा के भाव से उस मकान की ओर बढ़ रहा था, उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि अगर उसका अनुमान सही निकला तो न

जाने क्यों उसे विशेष रूप से अरुचि होगी। वह बहुत बड़ा, उदास-सा, तीन-मंज़िला, मैले हरे रंग का मकान था, जिसकी बनावट में कोई ख़ास दिलचस्प बात नहीं थी। पिछली शताब्दी के अन्त में बनवाए गए इस तरह के कुछ, लेकिन बहुत ही थोड़े, मकान लगभग ज्यों के त्यों अब तक पीटर्सबर्ग की उन गलियों में पाए जाते हैं (जहाँ हर चीज़ इतनी जल्दी बदलती है)। वे ठोस बने होते हैं, उनकी दीवारें मोटी-मोटी होती हैं और उनमें खिड़कियाँ बहुत ही कम होती हैं; सबसे नीचे की मंज़िल पर खिड़कियों में कभी-कभी लोहे की छड़ें भी लगी रहती हैं। नीचे की इस मंज़िल पर ज़्यादातर साहूकारों की दुकानें होती हैं। दुकान का मालिक, जो बधिया धर्म-सम्प्रदाय[1] के लोगों में से होता है, आमतौर पर ऊपर कमरा किराए पर लेकर रहता है। बाहर से भी और अन्दर भी मकान न जाने क्यों बहुत नीरस और अनाकर्षक लगता है; उसमें हर चीज़ मानो किसी अँधेरे कोने में छिपती हुई लगती है, और यह बात समझाना बहुत मुश्किल है कि मकान देखने से ही किसी को ऐसा आभास क्यों होता है। रेखाओं के स्थापत्यमूलक संयोजनों के अपने ही रहस्य होते हैं। इन मकानों में रहनेवाले लगभग सभी लोग व्यापारी होते हैं। फाटक के पास पहुँचकर प्रिंस ने नज़र उठाकर उस पर अंकित शब्द पढ़े—"वंशानुगत मानद नागरिक रोगोझिन का मकान।"

अब उसने बिना झिझके काँचवाला दरवाज़ा खोला, जो ज़ोर की आवाज़ करता हुआ उसके पीछे बन्द हो गया, और दूसरी मंज़िल तक जानेवाली सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। बहुत खुरदरी बनी हुई पत्थर की सीढ़ियों का अँधेरा-सा ज़ीना था और दीवारों पर लाल रंग पुता हुआ था। उसे मालूम था कि रोगोझिन अपनी माँ और भाई के साथ उस उदास घर की पूरी दूसरी मंज़िल पर रहता था। जिस नौकर ने दरवाज़ा खोला उसने प्रिंस के आने की सूचना दिए बिना उसे साथ लेकर बहुत दूर तक चलता चला गया; वे एक बहुत बड़े ड्राइंग-रूम से भी होकर गुजरे जिसकी दीवारें 'नकली संगमरमर' की थीं, फ़र्श बलूत की लकड़ी के अलग-अलग टुकड़ों को जमाकर बनाया गया था और फ़र्नीचर तीसरी दशाब्दी का, अनगढ़ और भारी था; वे बार-बार कोनों पर घूमते हुए कई छोटी-छोटी कोठरियों में से होकर गुज़रे, कभी दो-तीन सीढ़ियाँ ऊपर चढ़ जाते और कभी उतनी ही सीढ़ियाँ नीचे उतर आते; आख़िरकार नौकर ने एक दरवाज़े पर दस्तक थी। दरवाज़ा खुद पफ़्योंन रोगोझिन ने खोला; प्रिंस को देखकर उसका चेहरा इतना उतर गया और वह ऐसा हक्का-बक्का रह गया कि कुछ देर तक तो लगा कि वह शायद पत्थर की मूर्ति बन गया है; वह निश्चल भयभीत नज़रों से देख रहा था और उसके टेढ़े होंठों पर घोर विस्मय की मुस्कराहट थी, मानो प्रिंस का वहाँ आना कोई ऐसी बात हो जो उसे कल्पनातीत और चमत्कारी लग रही हो। प्रिंस को हालाँकि इसी तरह की किसी बात की आशंका थी, फिर भी उसे आश्चर्य हुआ।

"पफ़्योंन, शायद मैं सही वक़्त पर नहीं आया हूँ, कहो तो चला जाऊँ," आख़िरकार उसने कुछ सिटपिटाकर कहा।

"ठीक है, ठीक है !" पफ़्योंन ने आख़िरकार अपने आपको सम्भाल लिया। "अन्दर आओ। तुमसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई।"

वे एक-दूसरे को 'तुम' कहकर सम्बोधित कर रहे थे। मास्को में वे अकसर एक-दूसरे से मिले थे और उन्होंने काफ़ी समय साथ बिताया था; इन मुलाक़ातों के दौरान ऐसे क्षण भी आए थे जो उनके दिलों पर अपनी अमिट छाप छोड़ गए थे। लेकिन इस वक़्त उन्हें एक-दूसरे से मिले तीन महीने से ज़्यादा हो गए थे।

---

1. 18वीं शताब्दी में उत्पन्न हुआ एक विच्छिन्न और रहस्यवादी धर्म-सम्प्रदाय, जिसके अनुयायी ईसा के दुबारा आगमन की आशा में आत्म-दमन और अपने आपको बधिया तक करा लेने में विश्वास रखते थे। ये लोग अपनी कंजूसी और धन-लोलुपता के लिए कुख्यात थे।

रोगोझिन का चेहरा अभी तक पीला लग रहा था और रह-रहकर कुछ फड़क रहा था। उसने अपने मेहमान को अन्दर तो बुला लिया था, लेकिन अभी तक वह बेहद घबराया हुआ था। जब वह प्रिंस को आराम-कुर्सी की ओर ले जा रहा था और मेज़ के पास बिठा रहा था उसी वक़्त संयोग से प्रिंस उसकी ओर मुड़ा और उसकी विचित्र, कठोर नज़रों के प्रभाव से चौंक पड़ा। उसे कुछ ही समय पहले की कोई अस्पष्ट-सी, बोझल और अप्रिय बात याद आई।

प्रिंस बैठा नहीं; कुछ देर निश्चल खड़े रहकर उसने रोगोझिन की आँखों में आँखें डालकर देखा, जो पहले क्षण में तो अधिक चमकती हुई लगीं। आख़िरकार रोगोझिन मुस्कराया, लेकिन खोया हुआ-सा और मानो बौखलाया-सा।

"तुम इस तरह घूर क्यों रहे हो ?" उसने बुदबुदाकर कहा। "बैठ जाओ !"

प्रिंस बैठ गया।

"पर्फ़्योन," वह बोला, "मुझे साफ़-साफ़ बता दो, तुम जानते थे कि मैं आज पीटर्सबर्ग आ रहा हूँ ?"

"मेरा ख़्याल था कि तुम शायद आओ और, जैसा कि तुम देख रहे हो, मेरा ख़्याल ग़लत नहीं था," उसने कटु उपहास के भाव से मुस्कराकर इतना और जोड़ दिया। "लेकिन मुझे भला यह कैसे मालूम हो सकता था कि तुम आज आओगे ?"

पर्फ़्योन के कठोर रूखेपन और प्रश्न पूछने के विचित्र चिड़चिड़ेपन पर प्रिंस को और भी आश्चर्य हुआ।

"अगर तुम्हें मालूम भी होता कि मैं आज आऊँगा तो इसमें इतना चिड़चिड़ाने की क्या बात है ?" प्रिंस ने बौखलाकर नरमी से पूछा।

"लेकिन तुम यह पूछ क्यों रहे हो ?"

"आज सबेरे जब मैं ट्रेन से उतर रहा था तो मुझे दो आँखें दिखाई दी थीं, जो मुझे ठीक उसी तरह देख रही थीं जिस तरह अभी एक क्षण पहले तुमने मुझे पीछे से देखा था।"

"यह बात है ! भला किसकी आँखें थीं वे ?" रोगोझिन सन्देह के भाव से बुदबुदाया। प्रिंस को ऐसा लगा कि वह चौंक पड़ा था।

"मालूम नहीं। मैंने उन्हें भीड़ में देखा था। मेरा ख़्याल यह भी है कि यह सब मेरी कल्पना होगी ! मुझे चीज़ें दिखाई देने लगी हैं। मैं लगभग वैसा ही महसूस करने लगा हूँ, यार, जैसा मैं पाँच साल पहले महसूस करता था जब मुझे दौरे पड़ते थे।"

"ख़ैर, शायद तुम्हारी कल्पना ही होगी; मालूम नहीं।..." रोगोझिन बुदबुदाता रहा।

उसके चेहरे पर जो स्नेह-भरी मुस्कराहट थी वह उस क्षण उस पर बिलकुल जँच नहीं रही थी, मानो उस मुस्कराहट में कुछ टूट गया हो और वह लाख कोशिश करने पर भी उसे जोड़ न पा रहा हो।

"अच्छा, तो तुम फिर विदेश जा रहे हो, क्यों ?" उसने पूछा और अचानक इतना और जोड़ दिया, "याद है कुछ महीने पहले हम दोनों प्स्कोव से एक ही गाड़ी में बैठकर आए थे—मैं यहाँ आ रहा था और तुम...तब तुम बरसाती पहने थे, याद है ?"

और यह कहकर रोगोझिन अचानक हँस दिया, इस बार एक तरह का खुला द्वेष-सा दिखाते हुए, मानो वह इस बात पर खुश हो कि वह किसी प्रकार उसे व्यक्त कर पा रहा था।

"क्या तुम यहाँ पक्के तौर पर बस गए हो ?" प्रिंस ने पढ़ने के कमरे को ध्यान से देखते हुए पूछा।

"हाँ, यह मेरा घर है। मैं और कहाँ जाऊँ ?"

"हम लोगों को एक-दूसरे से मिले बहुत जमाना हो गया। मैंने तुम्हारे बारे में कुछ ऐसी बातें सुनी हैं जो तुम्हारे स्वभाव से बिलकुल मेल नहीं खातीं।"

"लोग भी क्या-क्या बातें नहीं गढ़ते," रोगोज़िन ने शुष्क भाव से जवाब दिया।

"लेकिन तुमने सारे गरोह को चलता कर दिया। माँ-बाप के घर में रह रहे हो, बेवक़ूफ़ी की हरकतें नहीं कर रहे हो। ख़ैर, यह तो अच्छी ही बात है। यह घर तुम्हारा अपना है, या तुम सब लोगों का ?"

"घर मेरी माँ का है। उनके कमरे गलियारे के उस पार हैं।"

"और तुम्हारे भाई कहाँ रहते हैं ?"

"सेम्योन सेम्योनोविच बग़लवाले हिस्से में रहते हैं।"

"उनकी शादी हो चुकी है ?"

"उनकी बीवी मर चुकी है। तुम यह सब क्यों जानना चाहते हो ?"

प्रिंस ने उसकी ओर देखा और कोई जवाब नहीं दिया; अचानक वह सोच में डूब गया और ऐसा लगा कि उसने सवाल सुना ही नहीं। रोगोज़िन ने आग्रह नहीं किया और प्रतीक्षा करता रहा। एक मिनट तक ख़ामोशी रही।

"मैंने सौ गज़ से अन्दाज़ा लगा लिया था कि यही तुम्हारा घर होगा," प्रिंस ने कहा।

"क्यों ?"

"मालूम नहीं क्यों। तुम्हारा घर देखने में तुम्हारे पूरे परिवार जैसा लगता है और उस पर तुम्हारे ठेठ रोगोज़िनवाले रहन-सहन की छाप भी लगी है। लेकिन अगर तुम मुझसे पूछो कि मैंने ऐसा क्यों सोचा था, तो मैं तुम्हें बता नहीं पाऊँगा। ज़ाहिर है, यह सब सरासर बकवास है। मुझे तो डर तक लगता है कि यह बात मुझे इतना परेशान क्यों करे। देखो, पहले मेरे दिमाग़ में यह बात कभी आती भी नहीं कि तुम ऐसे घर में रहते हो, लेकिन इसे देखते ही मैंने सोचा, 'अरे, ठीक ऐसा ही तो होगा उसका घर।' "

"यह बात है !" रोगोज़िन अस्पष्ट-से भाव से मुस्करा दिया; प्रिंस की गोल-मोल बात का आशय उसकी समझ में नहीं आया। "यह मकान मेरे नाना ने बनवाया था। इसमें हमेशा से बधिया धर्म-सम्प्रदाय के लोग रहते थे और अब भी किराए पर कमरे लेते हैं।"

"कितना अँधेरा है यहाँ," प्रिंस ने पढ़ने के कमरे में चारों ओर नज़र डालकर कहा। "तुम अँधेरे में रहते हो," उसने फिर कहा।

बहुत बड़ा, ऊँची छत का, अँधेरा सा कमरा था, जिसमें तरह-तरह का फर्नीचर ठुँसा हुआ था—ज़्यादातर दफ़्तर की बड़ी-बड़ी मेज़ें, दराज़ें और अलमारियाँ, जिनमें बही-खाते और हर तरह के काग़ज़ात रखे जाते थे। लाल चमड़े में मढ़ा हुआ एक सोफ़ा स्पष्टतः रोगोज़िन के सोने के काम आता था। जिस मेज़ के सामने रोगोज़िन ने प्रिंस को बिठाया था उस पर उसने दो-तीन किताबें देखीं; उनमें से एक सोलोव्योव की 'इतिहास' खुली हुई थी और उसमें पन्नों के बीच में रखने का एक निशान भी था। दीवारों पर बदरंग सुनहरे फ्रेमों में कुछ तैलचित्र टँगे हुए थे। वे बहुत गहरे रँगों के थे और चिकनाई से मैले हो गए थे और यह बता सकना मुश्किल था कि उनमें क्या बना हुआ था। एक आदमकद तस्वीर ने प्रिंस का ध्यान आकर्षित किया—वह तस्वीर पचपन साल के एक आदमी की थी, जिसने जर्मन फैशन का पर बहुत लम्बा फ्रॉक-कोट पहन रखा था और उसके गले में दो मेडल पड़े हुए थे। उसके बहुत छिदरी छोटी-सी दाढ़ी थी, पीला झुर्रियोंदार चेहरा, और

शंकालु, रहस्यमयी और पीड़ा-भरी आँखें।

"यह तुम्हारे बाप की तस्वीर तो नहीं है ?" प्रिंस ने पूछा।

"उन्हीं की है," रोगोझिन ने अरुचि से खीसें निकालकर जवाब दिया, मानो उसे अपने बाप के बारे में फ़ौरन कोई भद्दा-सा मज़ाक़ सुनने की आशंका हो।

"वह पुराने धर्म के माननेवाले तो नहीं थे ?"

"नहीं, वह गिरजाघर जाते थे, लेकिन यह भी सच है कि वह कहा करते थे कि पुराना धर्म सत्य के अधिक निकट था। बधिया सम्प्रदाय के लोगों के प्रति भी बड़ी श्रद्धा थी उनके मन में। इस कमरे में उनका दफ़्तर था। तुमने यह क्यों पूछा कि क्या वह पुराने धर्म के माननेवाले थे ?"

"क्या तुम्हारी शादी इसी घर से होगी ?"

"हाँ-आँ," रोगोझिन ने इस अप्रत्याशित प्रश्न पर बिलकुल चौंककर कहा।

"जल्दी ही होगी ?"

'तुम तो जानते ही हो, इसका फ़ैसला मेरे हाथ में नहीं है।"

"पफ़्र्योन, मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ और मैं तुम्हारी किसी बात में कोई दख़ल देना नहीं चाहता। मैं तुम्हें यह बात उसी तरह बता रहा हूँ जैसे मैंने लगभग ऐसे ही मौक़े पर पहले भी एक बात बताई थी। जब तुम मास्को में अपनी शादी की तैयारियाँ कर रहे थे तब मैंने उसमें कोई दख़ल नहीं दिया था। यह तुम जानते हो। पहली बार वह ख़ुद मेरे पास लगभग शादी के दिन भागी आई थी, और उसने मुझसे गिड़गिड़ाकर उसे तुमसे 'बचा लेने' की प्रार्थना की थी। मैं उसी के शब्द दोहरा रहा हूँ। बाद में वह मेरे पास से भी भाग गई। तुमने उसे फिर खोज निकाला और तुम उससे फिर शादी करनेवाले थे, और अब मुझे पता लगा है कि वह तुम्हारे पास से भी यहाँ भाग आई है। क्या यह सच है ? लेबेदेव ने मुझे इसके बारे में लिखा था, इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ। और यह कि तुम्हारा उससे फिर सुलह-समझौता हो गया है। मुझे कल ही गाड़ी में पहली बार तुम्हारे एक पुराने दोस्त से मालूम हुआ—अगर तुम जानना चाहते हो तो ज़ल्योजेव से। मैं यहाँ एक काम से आया था—मैं उसे समझा-बुझाकर इस बात के लिए राज़ी करना चाहता था कि वह अपना स्वास्थ्य सुधारने की ख़ातिर विदेश चली जाए; यह बहुत बीमार है, दिमाग़ से भी और शरीर से भी, ख़ासतौर पर दिमाग़ से, और मेरी राय में उसे अच्छी देखभाल की ज़रूरत है। मेरा उसे साथ लेकर ख़ुद विदेश जाने का कोई इरादा नहीं था। मैंने सोचा था कि यह सारा इन्तजाम मेरे बिना कर दिया जाए। मैं तुमसे बिलकुल सच बात बता रहा हूँ। अगर यह बात सचमुच ठीक है कि तुम्हारा उसके साथ सुलह-समझौता हो गया है तो मैं उससे मिलने की कोशिश नहीं करूँगा और मैं तुमसे भी फिर कभी मिलने नहीं आऊँगा। तुम ख़ुद जानते हो कि मैं तुम्हें धोखा नहीं दे रहा हूँ, क्योंकि मैं हमेशा तुमसे खुलकर बात करता रहा हूँ। मैंने इसके बारे में अपने विचार तुमसे कभी नहीं छिपाए, और मैंने हमेशा यही कहा है कि अगर वह तुमसे शादी करेगी तो वह तबाह हो जाएगी। तुम भी तबाह हो जाओगे—शायद उससे भी ज़्यादा। अगर तुम लोग फिर अलग हो जाओ तो मुझे बहुत ख़ुशी होगी, लेकिन मैं तुम्हारे मन्सूबों पर पानी फेरना नहीं चाहता और न ही तुम दोनों के बीच लड़ाई के बीज बोना चाहता हूँ। इसके बारे में चिन्ता न करो और मुझ पर शक न करो। इसके अलावा तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं कभी तुम्हारा **असली** प्रतिद्वन्द्वी नहीं रहा, उस वक़्त भी नहीं जब वह मेरे पास भाग आई थी। इस वक़्त तुम हँस रहे हो; मैं यह भी जानता हूँ कि तुम किस बात पर हँस रहे हो। हाँ, हम दोनों वहाँ अलग-अलग रहते थे, अलग-अलग शहरों में, और तुम्हें मालूम है कि

यह सब सच है। मैं तुम्हें पहले समझा चुका हूँ कि मैं उससे प्यार इसलिए नहीं करता था कि मुझे उससे प्रेम हो गया था, बल्कि इसलिए कि मुझे उस पर तरस आता था। मैं समझता हूँ कि उसके प्रति मेरी भावनाओं की यह व्याख्या बिलकुल ठीक है। उस वक़्त तुमने कहा था कि तुम मेरा मतलब समझ गए थे। क्या यह सच है ? क्या तुम मेरी बात समझ गए थे ? देखो, तुम्हारी नज़र कितनी नफ़रत-भरी है ! मैं तुम्हारे मन को शान्ति पहुँचाने आया हूँ क्योंकि मुझे तुमसे भी प्यार है। मुझे तुम बहुत अच्छे लगते हो। पर्फ्योन। अच्छा, अब मैं चलता हूँ और मैं फिर कभी नहीं आऊँगा। गुड-बाई !"

प्रिंस उठ खड़ा हुआ।

"मेरे साथ कुछ देर और बैठो," पर्फ्योन ने कुर्सी से उठे बिना नरमी से कहा; उसने अपना सिर दाहिने हाथ पर टिका रखा था। "मैं तुमसे बहुत दिन से नहीं मिला हूँ।"

प्रिंस बैठ गया। एक बार फिर दोनों ख़ामोश थे।

"जब तुम मेरे साथ नहीं होते हो, लेव निकोलायेविच, तो मैं फ़ौरन तुमसे नफ़रत करने लगता हूँ। इन तीनों महीनों के दौरान, जबसे मैं तुमसे नहीं मिला हूँ, मैं तुमसे हर मिनट नफ़रत करता रहा हूँ, क़सम से। मेरा जी चाहता था कि तुम्हें जहर दे दूँ ! मेरा यही जी चाहता था। अभी तुम मेरे साथ पन्द्रह मिनट भी नहीं रहे हो, और मेरी सारी नफ़रत मिट चुकी है और तुम मेरे लिए उतने ही प्यारे हो गए हो जितने हमेशा थे। मेरे साथ कुछ देर बैठो।..."

"जब मैं तुम्हारे पास होता हूँ तब तुम मुझ पर भरोसा करते हो, और जब मैं नहीं होता तो तुम भरोसा करना बन्द कर देते हो और फिर मुझ पर शक करने लगते हो। तुम अपने बाप की तरह हो !" प्रिंस ने मित्रता के भाव से मुस्कराते हुए और अपनी भावुकता को छिपाने की कोशिश करते हुए जवाब दिया।

"जब मैं तुम्हारे साथ होता हूँ तो मैं तुम्हारी आवाज़ पर भरोसा करता हूँ। देखो, मैं जानता हूँ कि हमें बराबर मानना नामुमकिन है, तुम्हें और मुझे।..."

"तुमने यह बात क्यों जोड़ दी ? और तुम फिर चिड़चिड़ाए क्यों," प्रिंस ने रोगोझिन के आचरण पर चकित होकर कहा।

"अरे, यार, इस बात के बारे में कोई हमसे हमारी राय नहीं पूछता," उसने जवाब दिया। "उसका फ़ैसला हमारे बिना ही कर दिया गया है। देखो, हम लोगों का प्यार करने का तरीक़ा अलग है, हमारी हर चीज़ अलग है। तुम कहते हो कि तुम उससे इसलिए प्यार करते हो कि तुम उस पर तरस खाते हो। पर, मेरे दिल में उसके लिए इतना कोई तरस नहीं है। और, इसके अलावा, वह मुझसे नफ़रत भी करती है, किसी भी और चीज़ से ज़्यादा। अब मैं हर रात उसके सपने देखता हूँ—वह हमेशा किसी दूसरे मर्द के साथ होती है और मुझ पर हँसती रहती है। तो यह ठीक बात है, मेरे यार। वह मेरे साथ शादी तो कर रही है, लेकिन मेरी रत्ती-भर परवाह नहीं करती, बिलकुल नहीं। जैसे जूता बदल रही हो। तुम मेरा विश्वास करो या न करो लेकिन मैं पाँच दिन से उससे मिला नहीं हूँ, क्योंकि उससे मिलने जाने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ती; पूछेगी—'किसलिए आए हो ?' वह मुझे काफ़ी जलील कर चुकी है।..."

"जलील कर चुकी है ? क्या कह रहे हो तुम ?"

"जैसे तुम्हें मालूम नहीं ! अरे, वह ऐन हमारी शादी के दिन मुझे छोड़कर तुम्हारे ही साथ तो भाग गई थी, तुमने खुद अभी बताया।"

"लेकिन तुम्हें खुद इस बात पर यक़ीन नहीं है कि..."

"क्या उसने उस अफ़सर के साथ, उस ज़ेम्त्यूज्निकोव के साथ मुँह काला करके मास्को में मुझे ज़लील नहीं किया था ? मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उसने किया था, और सो भी खुद हमारी शादी की तारीख़ तै करने के बाद।"

"नामुमकिन !" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा।

"मुझे यह बात पक्के तौर पर मालूम है," रोगोझिन ने पूरे विश्वास के साथ पुष्टि की। "क्यों, क्या तुम्हारा ख़्याल है कि वह इस तरह की नहीं है ? यह तो कहा ही नहीं जा सकता है कि वह ऐसी नहीं है। यह सब बकवास है। तुम्हारे साथ वह ऐसा नहीं करेगी, और ऐसा करते हुए खुद दहल जाएगी, लेकिन मेरे साथ वह ऐसी ही है, और कुछ नहीं। ऐसी बात है। वह मुझे बिलकुल मिट्टी समझती है। उसने उस बॉक्सर अफ़सर केल्लेर के बारे में ये सारी बातें सिर्फ़ मेरा मज़ाक़ उड़ाने के लिए गढ़ ली हैं—मुझे यह अच्छी तरह मालूम है।...अरे, उसने मास्को में मेरे साथ क्या-क्या चरित्तर किए हैं तुम्हें पता नहीं ! और पैसा—जितना पैसा मैंने फूँका !..."

"लेकिन फिर कैसे...फिर कैसे तुम अब उससे शादी करने की बात सोच रहे हो ?...बाद में चलकर क्या होगा ?" प्रिंस ने भयभीत होकर पूछा।

रोगोझिन ने प्रिंस को कठोर, भयानक दृष्टि से देखा और जवाब में कुछ भी नहीं कहा।

"मुझे उससे मिले पाँच दिन हो गए हैं," कुछ दिन रुककर रोगोझिन फिर कहता रहा। "मुझे डर लगा रहता है कि वह मुझे ठोकर मारकर बाहर निकाल देगी। 'मैं अब भी अपनी मर्ज़ी की मालिक हूँ,' वह कहती है। 'अगर चाहूँगी तो तुम्हें हमेशा के लिए निकाल दूँगी और खुद विदेश चली जाऊँगी।' (वह मुझसे कह चुकी है कि वह विदेश चली जाएगी," उसने प्रिंस की ओर विचित्र ढंग से देखकर प्रसंगवश कहा।) "यह सच है कि कभी-कभी वह मुझे सिर्फ़ डराती है; मुझे देखकर उसे न जाने क्यों हँसी आती है। लेकिन कभी-कभी वह माथे पर बल डाले आँखें तरेरकर देखती है और एक शब्द भी नहीं कहती। इसी से मैं सचमुच डर जाता हूँ। अभी उस दिन की बात है, मैंने सोचा कि मैं उससे मिलने खाली हाथ नहीं जाऊँगा, लेकिन वह मेरी इस हरकत पर सिर्फ़ हँसती रही और बाद में गुस्से के मारे आपे से बाहर हो गई। मैंने उसे तोहफ़े में जो शॉल दी थी वह उसने अपनी नौकरानी कात्या को दे दी; ऐसी शॉल जैसी उसने पहले कभी देखी भी नहीं होगी, हालाँकि वह ऐश-आराम की ज़िन्दगी बसर करती रही है। जहाँ तक शादी की तारीख़ का सवाल है, तो मैं उसकी चर्चा तक करने की हिम्मत नहीं कर सकता। वह भी क्या मंगेतर हुआ जो अपनी दुल्हन से मिलने जाने से डरता हो ? इसलिए यहाँ बैठा रहता हूँ, और जब मुझसे बर्दाश्त नहीं होता तो चोरी-छिपे पंजों के बल उसके घर के सामने से टहलता हुआ गुजर जाता हूँ या सड़क के कोने पर छिपकर खड़ा हो जाता हूँ। अभी उसी रात मैं उसके घर के फाटक के पास सबेरे तक पहरा देता रहा—मुझे तभी कुछ दिखाई दिया। और उसने शायद खिड़की के बाहर मुझे देख लिया। 'अगर तुमने मुझे तुमको धोखा देते हुए पकड़ भी लिया होता,' वह मुझसे बोली, 'तो तुम क्या करते ?' मैं बर्दाश्त न कर सका और मैंने कहा—'तुम खुद जानती हो।' "

"वह क्या जानती है ?"

"मुझे क्या मालूम ?" रोगोझिन द्वेषपूर्वक हँस दिया। "मास्को में मैं उसे किसी के साथ नहीं पकड़ पाया, हालाँकि मैंने इसकी पूरी कोशिश की। एक दिन मैं उससे बोला, 'तुमने मुझसे शादी करने का वादा किया था, तुम अब शरीफ़ घर में क़दम रखनेवाली हो, लेकिन क्या तुम्हें मालूम है कि तुम अब क्या हो ? तुम,' मैंने उससे कहा, 'इस-इस तरह की औरत हो !"

"तुमने उससे यह कह दिया ?"

"हाँ, कह दिया।"

"और फिर ?"

" 'अब मैं तुम्हें अपना खिदमतगार भी नहीं रखूँगी, तुम्हारी बीवी बनना तो दरकिनार।'—'ख़ैर,' मैं बोला, 'मैं यहाँ से जाऊँगा ही नहीं—यों भी तबाह तो हो ही चुका हूँ।'—'और मैं,' वह बोली, 'मैं केल्लेर को बुलवाकर उससे कहूँगी कि तुम्हें ठोकर मारकर घर के बाहर निकाल दे, और वह निकाल भी देगा।' मैं उस पर टूट पड़ा और मैंने उसकी अच्छी तरह पिटाई की।"

"हो नहीं सकता !" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा।

"मैं बताता हूँ तुमसे कि मैंने पिटाई की," रोगोज़िन ने शान्त भाव से कहा लेकिन उसकी आँखों में बिजली की चमक थी। "डेढ़ दिन तक मैं सोया नहीं और न ही कुछ खाया-पिया। मैं उसके कमरे से हटा तक नहीं, उसके सामने घुटने टेककर बैठ गया, 'मैं मर जाऊँगा' मैंने कहा, 'लेकिन तब तक यहाँ से नहीं जाऊँगा जब तक तुम मुझे माफ़ न कर दो, और अगर तुमने मुझे यहाँ से निकाल देने का हुक्म दिया तो मैं जाकर डूब मरूँगा, क्योंकि तुम्हारे बिना अब मैं क्या रह गया हूँ ?' उस पूरे दिन वह बिलकुल पागल रही- वह रोती रही, उसने छुरा भोंक देने की धमकी दी, मुझे न जाने कितनी गालियाँ दीं। उसने ज़ल्योजेव, केल्लेर और ज़ेम्त्यूज़्निकोव को, और न जाने किस-किसको बुलवाया, यों ही और मेरी ओर इशारा कर-करके मुझे बहुत धिक्कारा। 'चलो, आज हम लोग कोई तमाशा देखने थिएटर चलें,' वह बोली, 'और अगर यह यहाँ से न जाए तो इसे यहीं पड़ा रहने दो। मैं इससे बँधी नहीं हूँ। और जब मैं चली जाऊँगी तो आपको, पफ़्र्योन सेम्योनोविच, चाय दे दी जाएगी, क्योंकि आप आज बहुत भूखे होंगे।' वह थिएटर से अकेली लौटी। 'वे सब के सब कायर और बदमाश हैं,' वह बोली। 'वे तुमसे डरते हैं, और उन्होंने मुझे भी डराने की कोशिश की। उन्होंने मुझसे कहा कि तुम यहाँ से नहीं जाओगे और ज़रूर मेरा गला काट दोगे। अच्छा, तो मैं अपने सोने के कमरे में जाती हूँ और दरवाज़ा भी नहीं बन्द करूँगी—लो, मैं कितना डरती हूँ तुमसे ! तुम यह बात जान लो और अपनी आँखों से देख लो ! तुमने चाय पी ली ?'—'नहीं,' मैंने कहा, 'और पिऊँगा भी नहीं।'—'अगर तुम्हारी इज़्ज़त दाँव पर लगी होती,' वह बोली, 'यह सब तुम्हें बिलकुल फबता नहीं है।' और उसने वैसा ही किया जैसा कहा था—दरवाज़ा बन्द नहीं किया। सबेरे वह कमरे से निकली और—हँसने लगी। 'तुम पागल तो नहीं हो गए हो ?' वह बोली। 'तुम भूखे ही मर जाओगे।'—'मुझे माफ़ कर दो,' मैंने कहा। 'मैं तुम्हें माफ़ करना नहीं चाहती, तुमसे शादी नहीं करूँगी; मैं तुमसे कह चुकी हूँ। क्या तुमने सचमुच सारी रात उसी कुर्सी पर बैठे-बैठे काट दी है ? बिलकुल नहीं सोए ?'—'नहीं,' मैंने कहा, 'मैं बिलकुल नहीं सोया।'—'कैसे सयाने हो तुम भी! और आज भी न नाश्ता करोगे न खाना खाओगे ?'—'मैंने तुमसे कह दिया कि कुछ नहीं खाऊँगा—माफ़ कर दो !'—'उफ़, काश तुम्हें मालूम होता कि यह सब कुछ तुम्हारे लिए कितना बेमेल है। यह तो हिरन पर घास लादने जैसी बात है। तुम मुझे डराने की कोशिश तो नहीं कर रहे हो न ? अगर तुम यहाँ बिना खाए बैठे रहो तो मुझे ठेंगा परवाह नहीं है। देखो इसे, कितना डराता है मुझे !' वह ग़ुस्सा हो गई, लेकिन ज़्यादा देर के लिए नहीं। जल्दी ही वह फिर मुझे जली-कटी सुनाने लगी। और तब मुझे हैरत हुई उस पर कि उसके मन में तनिक भी मैल नहीं था। क्योंकि वह हर चोट को याद रखती है, दूसरों की लगाई हुई चोट को बहुत दिन तक याद रखती है। उस वक़्त यह बात मेरी समझ में आई कि वह मुझे इतना तुच्छ समझती है कि उसके मन में मेरे साथ बुराई करने की बात भी नहीं आती ! यह सच है ! 'क्या तुम्हें मालूम है,' वह बोली, 'कि रोम का पोप क्या होता है ?'—'मैंने सुना है,' मैंने कहा। 'तुमने, पफ़्र्योन सेम्योनोविच, दुनिया का

इतिहास नहीं पढ़ा,' वह बोली। 'मैंने कुछ भी नहीं पढ़ा है,' मैंने कहा। 'अच्छा,' वह बोली, 'मैं तुम्हें कुछ पढ़ने को दूँगी—किसी जमाने में एक पोप था, और वह एक बादशाह से नाराज़ हो गया, और वह बादशाह तीन दिन तक खाए-पिए बिना नंगे पाँव घुटने टेके उस पोप के महल के सामने तब तक बैठा रहा जब तक कि उसने उसे माफ़ नहीं कर दिया। ख़ैर, तुम्हारा क्या ख़्याल है कि जिस वक़्त वह बादशाह वहाँ घुटने टेके बैठा था वह क्या सोच रहा था और अपने मन में क्या-क्या क़समें खा रहा था।...लेकिन रुको,' वह बोली, 'मैं तुम्हें ख़ुद पढ़कर सुनाती हूँ !' वह उछलकर उठ खड़ी हुई और एक किताब ले आई। 'यह कविता है,' वह बोली और उसने मुझे एक कविता पढ़कर सुनाई कि बादशाह ने उन तीन दिनों के दौरान पोप से बदला लेने की क्या-क्या तरकीबें सोचीं। 'क्यों जनाब,' वह बोली, 'पसन्द आई ?'—'जो कुछ तुमने पढ़ा है,' मैंने कहा, 'वह सब सच है।'—'अहा, तो तुम ख़ुद मानते हो कि यह सच है, तो तुम भी अपने मन में क़समें खा रहे होंगे—जब यह मुझसे शादी कर लेगी तो मैं इसे इन सब बातों की याद दिलाऊँगा, और तब मैं इसे खूब छकाऊँगा !'—'मालूम नहीं,' मैंने कहा, 'शायद मैं ऐसा ही सोच रहा हूँ।'—'कैसे नहीं मालूम ?'—'ऐसे ही, नहीं मालूम,' मैंने कहा, 'इस वक़्त मैं इसके बारे में नहीं सोच रहा हूँ।'—'तो क्या सोच रहे हो तुम ?'—'मेरा यही कि तुम उठती हो और मेरे सामने से गुजरती हो, मैं तुम्हें देखता रहता हूँ और मेरी नज़रें तुम्हारे साथ-साथ चलती हैं। जब तुम्हारा लिबास सरसराता है तो मेरा दिल दुखने लगता है, और जब तुम कमरे के बाहर चली जाती हो तो मैं तुम्हारा कहा हुआ एक-एक शब्द याद करने की कोशिश करता हूँ, और यह कि तुमने कौन-सा शब्द कहा था और किस आवाज़ में। और कल सारी रात मैंने किसी चीज़ के बारे में नहीं सोचा, बल्कि सिर्फ़ यह सुनता रहा कि सोते में तुम कैसे साँस ले रही थीं और कैसे तुम दो बार हिली थीं।...'—'तो तुम शायद,' वह हँस दी, 'इसके बारे में न सोचते हो और न ही तुम्हें याद आता है कि तुमने मुझे पीटा था !'—'शायद सोचता हूँ, मालूम नहीं।'—'अगर मैं तुम्हें न माफ़ करूँ और तुमसे शादी न करूँ ?'—'मैं कह चुका हूँ—डूब मरूँगा।'—'मैं तो समझती हूँ कि उससे पहले तुम मुझे मार डालोगे।...' वह बोली और सोच में डूब गई। फिर वह गुस्सा होकर बाहर चली गई। घंटे-भर बाद जब वह लौटी तो बहुत उदास दिखाई दे रही थी। 'मैं तुमसे शादी करूँगी, पर्फ़्योन सेम्योनोविच,' वह बोली, 'और इसलिए नहीं कि मैं तुमसे डरती हूँ, बल्कि मिट जाने के लिए ही सही। इससे बेहतर क्या मौक़ा होगा ? बैठ जाओ,' वह बोली, 'अभी तुम्हारे लिए खाना आया जाता है। और,' उसने इतना और जोड़ दिया, 'अगर मैं तुमसे शादी करूँगी तो मैं तुम्हारी वफ़ादार बीवी रहूँगी। इस पर शक न करो और चिन्ता न करो।' फिर वह कुछ देर चुप रहकर बोली, 'बहरहाल तुम खुशामदी टट्टू नहीं हो। पहले मैं समझती थी कि तुम निरे खुशामदी टट्टू हो, बिलकुल वही।' उसी वक़्त उसने हमारी शादी की तारीख़ तै की थी, और एक ही हफ़्ते बाद वह मेरे पास से भागकर लेबेदेव के पास चली गई। जब मैं आया तो वह बोली—'मैं तुम्हें पूरी तरह नहीं छोड़ रही हूँ। मैं बस इतना चाहती हूँ कि जब तक मेरा जी चाहे मैं इन्तज़ार कर सकूँ, क्योंकि मैं अभी तक अपनी मर्जी की मालिक हूँ। अगर चाहो तो तुम भी इन्तज़ार कर सकते हो।' अब हम दोनों के बीच यह सूरत है।...इस सबके बारे में तुम क्या सोचते हो, लेव निकोलायेविच ?"

"तुम ख़ुद इसके बारे में क्या सोचते हो ?" प्रिंस ने उदास भाव से रोगोझिन को देखते हुए पलटकर पूछा।

"क्या मैं कुछ सोच सकता हूँ ?" रोगोझिन के मुँह से अनायास निकल गया। वह कुछ और कहना चाहता था, लेकिन बेहद निराश होकर बीच में ही रुक गया। प्रिंस चल देने के इरादे से

फिर उठ खड़ा हुआ।

"मैं फिर भी तुम्हारे मामलात में कोई रुकावट नहीं डालूँगा," उसने शान्त भाव से कहा लगभग विचारमग्न होकर, मानो अपने ही किसी गुप्त, आन्तरिक विचार का उत्तर दे रहा हो।

"देखो, मैं तुमसे क्या कहूँ !" रोगोझिन अचानक जोश में आकर चिल्लाया; उसकी आँखों में बिजली जैसी चमक थी। "मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुम उसे इस तरह मेरे हवाले कैसे किए दे रहे हो ? तुम उससे बिलकुल प्यार नहीं करते क्या ? पहले तो तुम बिलकुल मुरझाए हुए रहते थे, मैंने खूब अच्छी तरह देखा था। फिर तुम भागमभाग यहाँ क्यों आए हो ? तरस खाकर ?" (और यह कहकर उसका चेहरा द्वेष और तिरस्कार से भरी हुई मुस्कराहट से ऐंठ गया।) "हः-हः !"

"तुम समझते हो कि मैं तुम्हें धोखा दे रहा हूँ ?" प्रिंस ने पूछा।

"नहीं, मैं तुम पर विश्वास करता हूँ, लेकिन यह सब कुछ मैं नहीं समझ पाता। यही कहना सबसे ठीक होगा कि तुम्हारे तरस में मेरे प्यार से ज़्यादा ज़ोर है।"

उसका चेहरा द्वेष और तुरन्त बोल उठने की अदम्य इच्छा से चमक उठा।

"ख़ैर," प्रिंस ने मुस्कराकर कहा, "तुम्हारे प्रेम और द्वेष में अन्तर नहीं किया जा सकता, और जब यह लहर उतर जाएगी तो इससे भी बड़ी मुसीबत पैदा होगी, शायद। मैं तुम्हें यह बताए देता हूँ, पर्फ़्योन भई..."

"कि छुरा मार दूँगा ?"

प्रिंस चौंक पड़ा।

"इसी वजह से कि तुम इस वक़्त उससे इतना प्यार करते हो, इस वक़्त तुम जो अपार व्यथा झेल रहे हो उसकी वजह से तुम आगे चलकर नफ़रत करने लगोगे। मुझे जो बात सबसे ज़्यादा हैरान कर देती है वह यह है कि वह दोबारा तुमसे फिर शादी करने पर राज़ी हो गई। कल जब मैंने इसके बारे में सुना तो मुझे आसानी से यक़ीन नहीं आया, और मुझे बहुत दुःख हुआ। देखो, वह तुम्हें दो बार छोड़ चुकी है, एक शादी के दिन तुम्हारे पास से भाग-भाग गई, इसका मतलब है कि उसे किसी अनिष्ट की आशंका है। अब उसका तुमसे क्या लेना-देना हो सकता है ? तुम्हारा पैसा ? बेवक़ूफ़ी की बात है। इसके अलावा तुम उसका काफ़ी बड़ा हिस्सा तो उड़ा भी चुके होगे, है न ? क्या अपने लिए शौहर हासिल करना ? सो तो उसे तुम्हारे अलावा भी कोई मिल सकता था। कोई भी तुमसे तो अच्छा ही होता, क्योंकि तुम सचमुच छुरा मार सकते हो, और शायद वह अब इस बात को बहुत अच्छी तरह समझती है। या यह कि तुम उससे इतना प्यार करते हो ? हाँ, शायद यह बात हो।...मैंने सुना है कि कुछ औरतें ऐसी होती हैं जो ऐसी ही मुहब्बत की तलाश में रहती हैं...लेकिन..."

प्रिंस रुक गया और सोच में डूब गया।

"तुम मेरे बाप की तस्वीर को देखकर फिर क्यों मुस्कराए ?" रोगोझिन ने पूछा, जो प्रिंस के चेहरे में होनेवाले हर परिवर्तन को और हर क्षणिक गति को बड़े ध्यान से देख रहा था।

"मैं क्यों मुस्कराया ? देखो, मेरे दिमाग़ में यह बात आई कि अगर तुम्हारे ऊपर यह मुसीबत न आ पड़ी होती, अगर तुम्हें यह मुहब्बत न हो गई होती तो शायद तुम भी अपने बाप जैसे हो गए होते, और वह भी बहुत जल्दी। तुम अपनी खामोश और हुक्म माननेवाली बीवी के साथ शान्ति से इस घर में अकेले बस गए होते, कभी कोई कठोर शब्द कहने को अपना मुँह न खोलते, कभी किसी आदमी पर भरोसा न करते और तुम्हें इसकी कोई ज़रूरत भी न होती, और उदासी-भरी खामोशी में बस पैसा बनाते रहते। हद से हद कभी-कभी तुम पुरानी किताबों की तारीफ़ कर देते

और पुराने धर्म के माननेवालों के इस चलन में दिलचस्पी लेते कि वे दो उँगलियों से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाते हैं, और यह सब भी अपने बुढ़ापे में जाकर।...''

''तुम चाहो तो मेरा मज़ाक़ उड़ा सकते हो। अभी बहुत वक़्त नहीं हुआ, इस तस्वीर को देखते हुए उसने भी बिलकुल यही बात कही थी, एक-एक शब्द यही ! कमाल है, अब तुम दोनों की कैसी पटरी बैठती है !''

''क्यों, वह तुमसे यहाँ मिलने तो आई थी न ?'' प्रिंस ने दिलचस्पी लेते हुए पूछा।

''आई थी। बड़ी देर तक इस तस्वीर को देखती रही, मुझसे मेरे बाप के बारे में पूछती रही। 'तुम बिलकुल उनके जैसे होते,' आख़िरकार वह खीसें निकालकर बोली। 'तुम्हारे भावावेग बहुत प्रबल हैं, पर्फ़्योन सेम्योनोविच,' वह बोली, 'ऐसे भावावेग जिन्होंने अगर तुम साथ ही अक्लमन्द भी न होते तो तुम्हें साइबेरिया पहुँचा दिया होता, क्योंकि,' वह बोली, 'तुम्हारी अक्ल बहुत तेज है।' (मानो या न मानो, लेकिन उसने ठीक यही कहा था। मैंने उसे ऐसी बात कहते पहली बार सुना था !) 'तुमने बेवक़ूफ़ी की हरकतें करना जल्दी बन्द कर दिया होता और शायद, तुम इतने कम पढ़े-लिखे हो, इसलिए तुम पैसा बचाने लगते, और तुम भी अपने बाप की तरह [illegible] सम्प्रदाय के लोगों के साथ इस घर में बस गए होते। आख़िर में शायद ख़ुद उनके सम्प्रदाय में शामिल हो गए होते, और तुम्हें अपने पैसे से इतना मोह हो जाता कि तुमने शायद बीस लाख नहीं बल्कि एक करोड़ जमा कर लिए होते और अपनी सोने की थैलियों पर बैठे-बैठे भूखे मर गए होते, क्योंकि,' वह बोली, 'तुम्हारे लिए हर चीज़ एक जुनून होती है और तुम हर चीज़ को उस हद तक पहुँचा देते हो जहाँ वह जुनून बन जाए।' ठीक यही कहा था उसने, एक-एक शब्द लगभग यही था ! वह इससे पहले कभी मुझसे ऐसे नहीं बोली थी ! वह हमेशा मुझसे ढेरों बकवास करती रहती है या मेरा मज़ाक़ उड़ाती रहती है। और इस बार भी उसने शुरुआत हँसने से की थी लेकिन बाद में वह बहुत उदास हो गई थी। सारे घर में टहलती रही, सचमुच, हर चीज़ को बड़े ध्यान से देखती रही और ऐसा लगता था कि वह किसी चीज़ से डर रही है। 'मैं यह सब कुछ बदल दूँगा, मैं पूरे मकान को नए सिरे से सजाऊँगा, या शायद शादी से पहले नया मकान ही खरीद लूँ,' मैंने कहा। 'ऐसा कभी न करना,' वह बोली, 'किसी भी हालत में यहाँ की कोई चीज़ न बदलना, हम लोग इसी तरह रहेंगे। तुम्हारी बीवी बन जाने के बाद,' वह बोली, 'मैं तुम्हारी माँ के पास रहना चाहती हूँ।' मैं उसे अपनी माँ के पास ले गया, वह उनके साथ बड़े अदब से पेश आई, मानो उनकी अपनी बेटी हो। मेरी माँ का दिमाग़ पिछले दो साल से कुछ ठीक नहीं है (वह अपाहिज हैं), और मेरे बाप के मरने के बाद तो वह बिलकुल बच्चों जैसी हो गई हैं और कभी एक शब्द भी नहीं बोलतीं—उनकी टाँगें बिलकुल बेकार हो गई हैं, इसलिए वह दिन-भर अपने कमरे में बैठी रहती हैं और जिस किसी को भी देख लेती हैं उसे कुर्सी पर बैठे-बैठे ही बस सिर झुकाकर सलाम करती हैं। ऐसा लगता है, अगर उन्हें तीन दिन तक खाना न दिया जाए तब भी उन्हें पता नहीं चलेगा। मैंने उनका दाहिना हाथ पकड़ लिया, उनकी उँगलियाँ सलीब का निशान बनाने के लिए मोड़कर बोला, 'इसे आशीर्वाद दो, माँ, यह तुम्हारी बहू बननेवाली है।' उसने बहुत भावुक होकर मेरी माँ का हाथ चूम लिया। 'तुम्हारी माँ ने अपनी ज़िन्दगी में बहुत दुःख झेला होगा,' वह बोली। उसने यहाँ यह किताब देखी—'तुमने क्या, ''रूसी इतिहास'' पढ़ना शुरू कर दिया है ?' (ख़ुद उसी ने एक बार मुझसे मास्को में कहा था—'तुम कुछ भले-मानस बनने की कोशिश करते। कम से कम सोलोव्योव का ''रूसी इतिहास'' तो पढ़ लेते, तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं है।') 'यह अच्छी बात है,' वह बोली, 'पढ़ते रहो। मैं तुम्हारे लिए ख़ुद उन किताबों की एक सूची बना दूँगी जो तुम्हें पहले पढ़नी चाहिए। बना दूँ न ?' इससे

पहले उसने कभी मुझसे इस तरह बात नहीं की थी, इसलिए मुझे सचमुच ताज्जुब हुआ—पहली बार मैंने आज़ाद आदमी की तरह साँस ली।"

"मुझे यह जानकर बहुत ख़ुशी हुई, पफ़्र्योन," प्रिंस ने सचमुच भाव-विभोर होकर कहा। "सचमुच, बहुत खुशी हुई। कौन जाने ? शायद भगवान तुम दोनों को मिला दे।"

"वह तो कभी नहीं होगा !" रोगोझिन उत्तेजित होकर चिल्लाया।

"सुनो, पफ़्र्योन ! सचमुच, अगर तुम उससे इतना प्यार करते हो तो तुम यह भी चाहते होगे कि वह तुम्हारी इज़्ज़त करे, है कि नहीं ? और अगर तुम ऐसा चाहते हो, तो तुम्हें यक़ीनन इसकी उम्मीद होगी। अभी थोड़ी देर पहले मैंने कहा था कि मुझे ताज्जुब होता है कि वह तुमसे शादी करने पर राज़ी क्यों हो गई। हालाँकि यह बात मेरी समझ में नहीं आती लेकिन मुझे पूरा यक़ीन है कि इसके लिए काफ़ी और समझदारी की कोई वजह होगी। उसे तुम्हारी मुहब्बत का पक्का भरोसा है; पर उसे तुम्हारी कुछ अच्छाइयों का भी पूरा यक़ीन होगा। कुछ और हो ही नहीं सकता ! तुमने अभी जो कुछ मुझे बताया उससे यह बात और पक्की हो जाती है। तुमने ख़ुद कहा था कि वह पहले तुम्हारे साथ जिस तरह बातें करती थी और जिस तरह का सलूक करती थी उससे अलग ढंग से बातें करना उसके लिए मुमकिन हुआ। तुम शक्की हो और ईर्ष्या करते हो, इसलिए तुमने जो भी बुराई देखी उसे बहुत बढ़ा-चढ़ा दिया। मुझे यक़ीन है कि तुम्हारे बारे में उसकी राय उतनी बुरी नहीं है जितनी तुम कहते हो। क्योंकि अगर ऐसा होता तो इसका यही मतलब होता कि वह तुमसे शादी करके जान-बूझकर अपनी मौत बुला रही है, डूबकर या छुरा मार दिए जाने से। क्या ऐसी बात मुमकिन है ? कौन जान-बूझकर अपनी मौत बुलाएगा कि उसे डुबो दिया जाए या छुरा मार दिया जाए ?"

पफ़्र्योन कटु मुस्कराहट के साथ प्रिंस का आवेशपूर्ण भाषण सुनता रहा। ऐसा लगता था कि दुनिया की कोई चीज़ उसके दृढ़ विश्वास को डिगा नहीं सकती।

"कितने डरावने तरीक़े से देख रहे हो तुम मुझे, पफ़्र्योन," प्रिंस उदास होकर बोला।

"डूबकर या छुरे से !" रोगोझिन ने आख़िरकार कहा। "अहा ! अरे, वह मुझसे शादी इसीलिए कर रही है कि वह खूब जानती है कि मेरे पास छुरा तो होगा ही ! हो ही नहीं सकता, प्रिंस, कि तुम अभी तक न समझे हो कि मामला है क्या।"

"मैं तुम्हारी बात समझा नहीं।"

"ख़ैर, हो सकता है कि तुम सचमुच न समझे हो, हः, हः ! लोग तो कहते हैं कि तुम्हारा दिमाग़...ठिकाने नहीं है। वह एक दूसरे आदमी से प्यार करती है—यह बात अपने दिमाग़ में अच्छी तरह बिठा लो ! ठीक वैसे ही जैसे मैं उसे प्यार करता हूँ, वह अब दूसरे से प्यार करती है। वह दूसरा कौन है, जानते हो ? वह **तुम हो** ! तुम्हें यह नहीं मालूम था न ?"

"मैं हूँ !"

"तुम। वह तुमसे तब से, जन्मदिन से प्यार करने लगी है। बस वह यह सोचती है कि उसके लिए तुमसे शादी करना नामुमकिन है, क्योंकि वह तुम्हारे नाम पर धब्बा लगाएगी और तुम्हें बर्बाद कर देगी। 'हर आदमी जानता है, मैं किस तरह की हूँ,' वह कहती है। हाँ, वह आज तक यही बात कहती है। उसने मेरे मुँह पर सीधे यह बात कही, मेरे मुँह पर। वह तुम्हें बदनाम और तबाह करने से डरती है; लेकिन मेरी बात क्या, मुझसे शादी करना मुमकिन है ! कितनी इज़्ज़त करती है वह मेरी—यह बात भी ध्यान में रखना !"

"लेकिन फिर क्या वजह है कि वह तुम्हारे पास से मेरे पास भाग आई और...मेरे पास से..."

"और तुम्हारे पास से मेरे पास ! हः, हः ! उसके जी में क्या-क्या न आ जाए ! इस वक़्त तो उस पर जैसे बुख़ार चढ़ा हुआ है। या तो वह मुझसे चीख़कर कहती है, 'तुमसे शादी पक्के तौर पर कर लूँ—आओ, शादी जल्दी से जल्दी कर डालें !' उसे बेहद जल्दी रहती है, वह तारीख़ तै करती है, लेकिन जैसे ही शादी का वक़्त पास आता है उसके हाथ-पाँव फूल जाते हैं या उसके दिमाग़ में दुनिया-भर के नए विचार आने लगते हैं। भगवान ही जाने कि उसे क्या हो सकता है—तुम तो देख चुके हो न ? वह रोती है, हँसती है, बुख़ार से काँपने लगती है। तुम्हारे पास से उसके भाग आने में ऐसी अजीब क्या बात है ? वह इसलिए भाग आई कि अचानक उसकी समझ में आ गया कि वह तुमसे कितना प्यार करती है। जब वह तुम्हारे पास थी उसमें इसे बर्दाश्त करने की ताक़त नहीं थी। तुमने अभी कहा था कि मैंने उसे मास्को में खोज निकाला। ख़ैर, यह बात सच नहीं है। वह खुद तुम्हारे पास से मेरे पास आई थी। 'तारीख़ तै कर लो,' वह बोली। 'मैं तैयार हूँ। आओ, शैम्पेन पिएँ ! चलो, बंजारों के पास चलें !' वह चीख़-चीख़कर कहती रही।...अरे, अगर मैं न होता तो वह न जाने क़ब की नदी में डूब मरी होती, मैं तुमसे बिलकुल सच कह रहा हूँ। वह शायद इसलिए डूबकर नहीं मरती कि मैं शायद नदी से ज़्यादा डरावना हूँ। वह द्वेष के मारे मुझसे शादी कर रही है।...हाँ, अगर वह मुझसे शादी करेगी तो द्वेष के मारे।"

"लेकिन आख़िर तुम कैसे...आख़िर तुम कैसे..." प्रिंस ने चिल्लाकर कहा और अपनी बात पूरी किए बिना ही बीच में रुक गया। वह रोगोझिन को आतंकित होकर देखता रहा।

"अपनी बात पूरी क्यों नहीं करते ?" रोगोझिन ने खीसें निपोरकर कहा। "और, चाहो तो मैं यह बता दूँ कि तुम इस वक़्त मन ही मन क्या सोच रहे हो—'वह दुबारा अब शादी कैसे कर सकती है ? उसे यह करने दिया कैसे जा सकता है ?' हाँ, यही सोच रहे हो तुम।"

"मैं यहाँ इसके लिए नहीं आया था, पर्फ्योन। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि यह बात नहीं थी मेरे दिमाग़ में।..."

"हाँ, शायद तुम यहाँ इसके लिए नहीं आए थे और यह बात कभी तुम्हारे दिमाग़ में थी भी नहीं, पर इस वक़्त तो यक़ीनन आ गई तुम्हारे दिमाग़ में, हः, हः ! लेकिन छोड़ो, बहुत हो गया यह क़िस्सा ! तुम्हारा चेहरा इतना उतर क्यों गया ? क्या तुम्हें सचमुच नहीं मालूम था यह ? तुम पर अचरज होता है हमें !"

"यह सब ईर्ष्या है, पर्फ़्योन, यह एक तरह की बीमारी है। तुमने सब कुछ बेहद बढ़ा-चढ़ा दिया है।..." प्रिंस ने बहुत उद्वेग से बुदबुदाकर कहा। "बात क्या है ?"

"जाने भी दो," पर्फ़्योन ने जल्दी से प्रिंस के हाथ से वह चाक़ू झपटते हुए कहा, जिसे उसने मेज़ पर से किताब के पास से उठा लिया था और उसे उसी जगह वापस रख दिया जहाँ वह पहले रखा हुआ था।

"मुझे जैसे मालूम था जब मैं पीटर्सबर्ग पहुँच रहा था," प्रिंस कहता रहा। "मुझे मानो मन ही मन कुछ ऐसा ही महसूस हो रहा था।...मैं यहाँ आना नहीं चाहता था ! मैं यहाँ की हर चीज़ भुला देना चाहता था—मैं हर चीज़ नोचकर अपने दिल से निकाल देना चाहता था। अच्छा, मैं चलता हूँ।...लेकिन तुम्हें हो क्या गया है ?"

बातें करते-करते प्रिंस ने फिर अनजाने ही मेज़ पर से चाक़ू उठा लिया, और रोगोझिन ने एक बार फिर उसे उसके हाथों से झपटकर मेज़ पर फेंक दिया। वह बिलकुल मामूली शक्ल का चाक़ू था जिसमें हिरन के सींग का हैंडिल लगा हुआ था; वह बन्द होनेवाला चाक़ू नहीं था; उसका फाल कोई सात इंच लम्बा था और उसी हिसाब से उसकी चौड़ाई थी।

यह देखकर कि प्रिंस ने इस बात की ओर विशेष ध्यान दिया था कि चाक़ू दो बार उसके हाथ से छीन लिया गया था, रोगोझिन ने झुँझलाकर द्वेष से उसे झपट लिया और किताब के अन्दर रखकर किताब दूसरी मेज़ पर फेंक दी।

"क्या तुम इससे किताब के पन्ने काटते हो ?" प्रिंस ने पूछा; वह कुछ बदहवास-सा था, मानो अभी तक अपने विचारों में डूबा हुआ हो।

"हाँ, पन्ने।..."

"यह बाग़बानी के काम का चाक़ू है न ?"

"हाँ, बाग़बानी का चाक़ू है। क्या बाग़बानी के चाक़ू से पन्ने काटना मना है ?"

"लेकिन यह...यह तो बिलकुल नया है।"

"तो क्या हुआ ? क्या मैं नया चाक़ू नहीं ख़रीद सकता ?" रोगोझिन जिसकी झुँझलाहट हर शब्द के साथ बढ़ती जा रही थी, आख़िरकार क़रीब उन्मत्त-सा होकर चिल्लाया।

प्रिंस सिहर उठा और उसने घूरकर रोगोझिन को देखा।

"हे भगवान, हम लोग कैसी बेतुकी बातें कर रहे हैं !" उसने अचानक हँसकर कहा और पूरी तरह सम्भल गया। "माफ़ करना, यार। जब मेरा सिर इतना भारी होता है जैसे इस वक़्त हो रहा है और मेरी यह बीमारी भी...तो मैं बिलकुल बदहवास और हास्यास्पद हो जाता हूँ। मैं तुमसे इन सब बातों के बारे में नहीं पूछना चाहता था।...याद नहीं किस बात के बारे में। अच्छा, मैं चला।..."

"इधर से नहीं," रोगोझिन ने कहा।

"मैं भूल गया !"

"इधर से, इधर से। आओ, मैं तुम्हें रास्ता दिखा दूँ।"

4

वे उन्हीं कमरों से होकर गुजरे जिनसे प्रिंस गुजरा था; रोगोझिन थोड़ा-सा आगे चल रहा था और प्रिंस उसके पीछे-पीछे था। वे बड़े ड्राइंग-रूम में गए। दीवारों पर कुछ तस्वीरें टँगी हुई थीं—पादरियों की तस्वीरें और प्राकृतिक दृश्य—जिनमें किसी भी चीज़ का पता लगा पाना नामुमकिन था। अगले कमरे के दरवाज़े के ऊपर कुछ विचित्र आकार की एक तस्वीर लगी हुई थी, लगभग पाँच फुट चौड़ी और हद से हद साढ़े दस इंच ऊँची। उसमें हमारे त्राता ईसा मसीह को दिखाया गया था, जो अभी-अभी सलीब पर से उतारे गए थे। प्रिंस ने उस पर सरसरी-सी नज़र डाली मानो कुछ याद करने की कोशिश कर रहा हो और वह बिना रुके दूसरे कमरे में जाने लगा। उसका दिल कुढ़ रहा था और वह जल्दी से जल्दी इस घर से निकल जाना चाहता था। लेकिन रोगोझिन अचानक उस तस्वीर के सामने रुक गया।

"यहाँ लगी हुई ये सारी तस्वीरें," उसने कहा, "मेरे बाप ने अपनी ज़िन्दगी में एक-एक दो-दो रूबल में नीलामों में ख़रीदी थीं। उन्हें तस्वीरें अच्छी लगी थीं। एक जानकार ने उन सभी को अच्छी तरह जाँचकर देखा था; सब बिलकुल कचरा हैं, उसने कहा था, और यह तस्वीर जो दरवाज़े के ऊपर लगी है (यह भी दो रूबल में खरीदी गई थी) कचरा नहीं है। एक आदमी मेरे बाप को इसके साढ़े तीन सौ रूबल देने को तैयार था, और इवान द्मीत्रिच सवेल्येव तो, जो एक सौदागर और तस्वीरों का बहुत बड़ा प्रेमी है, इसके चार सौ तक देने को तैयार था, और अभी पिछले हफ़्ते उसने

मेरे भाई को पाँच सौ तक देने को कहा। लेकिन मैंने इसे अपने लिए रख लिया है।"

"अरे, यह तो हांस होल्बाइन की तस्वीर की नक़ल है," प्रिंस ने कहा, जिसने तब तक तस्वीर को अच्छी तरह जाँच लिया था, "और हालाँकि मैं कोई बहुत बड़ा पारखी नहीं हूँ, पर मुझे भी लगता है कि यह बहुत अच्छी नक़ल है। मैंने इसे विदेश में देखा था, और इसे भूल नहीं सकता। लेकिन...बात क्या है ?..."

रोगोझिन उस तस्वीर के सामने से अचानक हट गया और आगे बढ़ गया। ज़रूर उसके इस तरह के उतावलेपन का कारण उसकी बदहवासी और उसकी वह विचित्र, अजीब ढंग की चिड़चिड़ी मनोदशा हो सकती थी जो अचानक उस पर छा गई थी; लेकिन इसके बावजूद प्रिंस को यह बात कुछ अजीब लगी कि बातचीत का वह सिलसिला जिसे उसने शुरू भी नहीं किया था इस तरह अचानक तोड़ दिया गया था, और यह कि रोगोझिन ने उसकी बात का जवाब तक नहीं दिया था।

"अच्छा, यह बताओ, लेव निकोलायेविच, मैं बहुत दिन से तुमसे पूछना चाहता था, क्या तुम ईश्वर को मानते हो ?" कुछ क़दम जाने के बाद रोगोझिन अचानक फिर बोल पड़ा।

"तुम कैसे अजीब ढंग से बातें कर रहे हो और...देख रहे हो !" प्रिंस ने अनायास ही कहा।

"उस तस्वीर को देखते रहना मुझे अच्छा लगता है," रोगोझिन ने थोड़ी देर बाद बुदबुदाकर कहा, मानो वह अपने सवाल को फिर भूल गया हो।

"उस तस्वीर को !" प्रिंस के मन में सहसा कोई विचार उठा और उसने यह विस्मय से कहा। "उस तस्वीर को ! अरे, उस तस्वीर को देखते रहने से तो धर्म पर से आदमी का विश्वास तक नष्ट हो सकता है !"

"हाँ, नष्ट तो हो सकता है," रोगोझिन ने अप्रत्याशित सहमति प्रकट की। अब वे बाहरवाले दरवाज़े पर पहुँच चुके थे।

"अरे, तुम कह क्या रहे हो ?" प्रिंस अचानक रुक गया। "मैं तो मज़ाक कर रहा था और तुम इतनी गम्भीर बातें कर रहे हो ! और तुमने मुझसे यह क्यों पूछा था कि मैं ईश्वर को मानता हूँ या नहीं ?"

"अरे, कुछ नहीं, यों ही। मैं तुमसे पहले ही पूछना चाहता था। आजकल बहुत से लोग हैं, जो नहीं मानते हैं। अच्छा, यह बताओ, क्या यह सच है—तुम तो विदेशों में रह चुके हो—कि रूस में दूसरे देशों के मुकाबले ऐसे ज़्यादा लोग हैं, जो ईश्वर को नहीं मानते ? जर्मनी में एक आदमी ने मुझसे यही कहा था। उसका कहना था कि 'उनके मुकाबले हमारे लिए यह ज़्यादा आसान है क्योंकि हम उनसे आगे निकल गए हैं।...' "

रोगोझिन कटु व्यंग से मुस्कराया। अपना सवाल पूछकर उसने अचानक दरवाज़ा खोला और हैंडिल पकड़े-पकड़े प्रिंस के बाहर जाने की राह देखता रहा। प्रिंस कुछ चकित सा रह गया लेकिन बाहर चला गया। रोगोझिन भी उसके पीछे-पीछे सीढ़ियों तक गया और उसने अपने पीछे दरवाज़ा बन्द कर लिया। वे दोनों एक-दूसरे के सामने इस तरह खड़े रहे जैसे उन्हें इस बात का कुछ भी पता न हो कि वे कहाँ थे या उन्हें इसके बाद क्या करना था।

"अच्छा, तो मैं चलता हूँ," प्रिंस ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।

"अच्छा, फिर मिलेंगे," रोगोझिन ने प्रिंस का हाथ ज़ोर से, हालाँकि बिलकुल यन्त्रवत्, दबाते हुए कहा।

प्रिंस एक सीढ़ी नीचे उतरकर एक़दम मुड़ा।

"जहाँ तक धर्म और विश्वास का सवाल है," वह मुस्कराते हुए बोला (स्पष्टतः वह रोगोझिन

को इस तरह छोड़कर जाना नहीं चाहता था) और इसके अलावा अचानक कोई बात याद आ जाने की वजह से वह खिल उठा, "जहाँ तक धर्म और विश्वास का सवाल है, पिछले हफ़्ते दो दिनों के दौरान मेरी चार मुलाक़ातें हुईं। सबेरे मैं एक नई रेलवे लाइन पर सफ़र कर रहा था और घंटों मैं एक साहब स. से बातें करता रहा, जिनसे मेरी मुलाक़ात ट्रेन में हो गई थी। मैं पहले भी उनके बारे में बहुत कुछ सुन चुका था और यह भी सुन चुका था कि वह नास्तिक हैं। वह सचमुच बहुत ही विद्वान आदमी हैं और मुझे एक सच्चे विद्वान से बातें करने का अवसर पाकर बहुत खुशी हुई। इसके अलावा वह बहुत शिष्ट आदमी हैं, और उन्होंने मुझसे इस तरह बातें कीं जैसे मैं ज्ञान और विचारों में उनके बराबर का हूँ। वह ईश्वर में विश्वास नहीं रखते। लेकिन एक बात से मैं चकित रह गया—ऐसा लग रहा था कि तमाम वक़्त वह इसकी बातें ही नहीं कर रहे थे, और इसीलिए मैं चकित रह गया कि पहले भी जब मैं नास्तिकों से मिला था और उनकी जितनी भी किताबें मैंने पढ़ी थीं, मुझे हमेशा ऐसा ही लगा था कि वे उस विषय के बारे में बोल या लिख ही नहीं रहे थे, भले ही बाहर से देखने में लगता हो कि वे उसी की बातें कर रहे हैं। मैंने उस वक़्त यह बात उन्हें बताई, लेकिन शायद मैंने अपनी बात काफ़ी साफ़तौर पर समझाई नहीं या समझा नहीं सका, क्योंकि उनकी समझ में कुछ भी नहीं आया कि मैं क्या कह रहा हूँ।...उसी रात मैं एक क़स्बे के होटल में ठहरा जहाँ पिछली रात एक क़त्ल हो चुका था, इसलिए जब मैं पहुँचा तो हर आदमी उसी की चर्चा कर रहा था। दो किसानों ने, जो दोनों ही अधेड़ उम्र के थे और एक-दूसरे को बरसों से जानते थे--सच तो यह है कि दोनों पुराने दोस्त थे—चाय पी और एक कमरा किराए पर लिया जिसमें वे रात बिताने वाले थे। वे शराब नहीं पिए हुए थे। उनमें से एक ने देखा कि दूसरा काँच के पीले दानों की ज़ंजीर के साथ चाँदी की घड़ी लगाए हुए है, जो उसने पहले उसके पास नहीं देखी थी। वह आदमी चोर भी नहीं था, सच तो यह है कि वह ईमानदार आदमी था और, आम किसानों को देखते हुए ग़रीब भी नहीं था। लेकिन वह घड़ी उसे इतनी अच्छी लगी और वह उसे देखकर इतना ललचाया कि आख़िरकार वह अपने आपको वश में न रख सका—उसने अपना चाक़ू निकाला और जैसे ही उसका दोस्त दूसरी ओर मुड़ा, वह दबे पाँव पीछे से उसके पास पहुँचा, निशाना साधा, अपनी आँखें आसमान की ओर उठाईं, सीने पर सलीब का निशान बनाया और मन ही मन प्रार्थना के ये शब्द कहकर 'हे प्रभु, ईसा मसीह के नाम पर मुझे माफ़ कर देना !' उसने एक ही वार में भेड़ की तरह अपने दोस्त पर चाक़ू चलाया और उसकी घड़ी ले ली।"

रोगोझिन ठहाका मारकर हँस पड़ा। वह ऐसे हँस रहा था मानो उसे दौरा पड़ रहा हो। अभी थोड़ी देर पहले की उसकी उदासी-भरी मनोदशा को देखते हुए उसका इस तरह हँसना कुछ अजीब लग रहा था।

"यह भी अच्छी कही ! सचमुच सबको मात कर दिया !" वह इतने जुनून के साथ चिल्लाया कि उसकी साँस फूलने लगी। "एक तो ईश्वर को बिलकुल मानता ही नहीं, और दूसरा उसको इतना मानता है कि वह ईश्वर की प्रार्थना करके लोगों का क़त्ल कर देता है।...नहीं, यार, यह क़िस्सा किसी का गढ़ा हुआ हो ही नहीं सकता। हः, हः, हः ! सच कहता हूँ, यह तो कमाल ही हो गया !..."

"सबेरे मैं शहर का चक्कर लगाने गया," रोगोझिन के हँसना बन्द करते ही प्रिंस ने कहा, हालाँकि उसके होंठ हँसी के दौरे के असर से अभी तक रह-रहकर फड़क रहे थे। "वहाँ मैंने सड़क के किनारे लकड़ी की पटरी पर एक सिपाही को लड़खड़ाते देखा; उसके कपड़े बहुत बुरी हालत

में थे। वह मेरे पास आकर बोला, 'आप मुझसे चाँदी की सलीब खरीद लीजिए, साहब, बीस कोपेक में ही दे दूँगा; असली चाँदी की है, साहब।' उसने मुझे नीले रंग के घिसे हुए गन्दे फीते में लगी हुई एक सलीब दिखाई, जिसे उसने अभी उतारा था, लेकिन पहली ही नज़र में साफ़ मालूम हो जाता था कि वह टीन की बनी हुई थी, बड़ी-सी अष्टकोण सलीब, जो हूबहू बाइज़ेंटियम की बनी सलीबों के नमूने की थी। मैंने बीस कोपेक निकालकर उसे दे दिए, और सलीब फ़ौरन गले में पहन ली; मुझे उसके चेहरे से साफ़ दिखाई दिया कि एक बेवक़ूफ़ सज्जन को धोखा देकर वह कितना खुश था, और वह अपना पैसा शराब पर खर्च कर देने के लिए फ़ौरन वहाँ से चला गया, इसके बारे में तो कोई शक ही नहीं हो सकता था ! उस वक़्त रूस में आते ही जिन बहुत-सी चीज़ों ने मुझे बाढ़ की तरह आ घेरा था उन सबसे मैं बहुत प्रभावित हुआ था। उससे पहले मैं रूस के बारे में किसी चीज़ को समझा ही नहीं था, मानो मैं गूँगा ही बड़ा हो रहा था, और पाँच साल तक विदेशों में रहने के दौरान मेरे दिमाग़ में उसकी बहुत ही विचित्र यादें सुरक्षित थीं। इसलिए मैं यह सोचता हुआ चल रहा था, 'नहीं, इस ईसा को बेचनेवाले के बारे में फ़ैसला करने में जल्दबाजी न करूँ। ईश्वर ही जानता है कि इन कमज़ोर और शराबी दिलों में क्या-क्या बन्द है।' घंटे-भर बाद होटल वापस जाते हुए रास्ते में एक औरत मिली जिसकी गोद में दूध-पीता बच्चा था। औरत काफ़ी जवान थी और बच्चा लगभग डेढ़ महीने का रहा होगा। बच्चा पैदा होने के बाद पहली बार उसे देखकर मुस्कराया। मैंने देखा कि औरत ने बड़ी श्रद्धा से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया। 'तुम ऐसा किसलिए कर रही हो ?' मैंने पूछा। (उन दिनों मैं हरदम लोगों से सवाल पूछता रहता था।) 'अरे, जिस तरह बच्चे की पहली मुस्कराहट देखकर माँ खुश होती है,' वह बोली, 'उसी तरह भगवान भी हर बार ऊपर से किसी गुनहगार को उसके सामने घुटने टेककर सच्चे मन से उसकी प्रार्थना करते देखकर खुश होता है।' यह बात एक सीधी-सादी औरत ने मुझसे कही थी, लगभग बिलकुल इन्हीं शब्दों में—एक ऐसा विचार जो इतना प्रखर है, जो इतना सारगर्भित है, और जो सचमुच धार्मिक है, जिसमें ईसाई-धर्म का सारा निचोड़ व्यक्त कर दिया गया है, मतलब यह कि यह पूरी धारणा कि ईश्वर आपका पिता है और यह कि ईश्वर मनुष्य को देखकर खुश होता है, जैसे बाप अपने बच्चे को देखकर खुश होता है—जो ईसाई-धर्म का मूल विचार है। एक मामूली औरत ! यह सच है कि वह माँ थी...और, कौन जाने, शायद वह उसी सिपाही की बीवी रही हो। सुनो, पर्फ़्योन, अभी कुछ ही देर पहले तुमने मुझसे एक सवाल पूछा था, जिसका जवाब मैं इस तरह देता हूँ—धार्मिक भावना के सार-तत्त्व का कोई सम्बन्ध किसी तर्क से या किसी अपराध और दुष्कर्म से या नास्तिकता से नहीं है; वह बिलकुल ही दूसरी चीज़ है और हमेशा रहेगी; वह ऐसी चीज़ है जिस पर विभिन्न प्रकार के नास्तिकवादी हमेशा फिसलते रहेंगे और वे हमेशा उसी के बारे में बात नहीं करेंगे। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसे सबसे स्पष्ट रूप में रूसी हृदय में देखा जा सकता है; मैं तो इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ ! रूस में जिन आस्थाओं ने मेरे मन में घर कर लिया है उनमें यह एक मुख्य आस्था है। बहुत काम करने को है, पर्फ़्योन ! यक़ीन जानो, हमारी इस रूसी दुनिया में बहुत काम करने को है ! याद है, मास्को में एक जमाने में हम लोग जब मिला करते थे तो किस तरह की बातें किया करते थे।...नहीं, अब मैं यहाँ फिर वापस नहीं आना चाहता। और तुमसे इस तरह मिलने की बात तो मैंने बिलकुल सोची ही नहीं थी, बिलकुल नहीं ! ख़ैर, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। अच्छा, मैं चलता हूँ—फिर मिलेंगे ! भगवान तुम्हारी रक्षा करे !"

वह मुड़कर सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

"लेव निकोलायेविच," जब प्रिंस आधी सीढ़ियाँ उतरकर चौरस जगह पर पहुँच गया तो

पफ़्योंन ने ऊपर से चिल्लाकर कहा, "जो सलीब तुमने उस सिपाही से खरीदी थी, वह है तुम्हारे पास ?"

"हाँ, मैंने पहन रखी है।"

प्रिंस फिर रुक गया।

"ऊपर आकर दिखाओ तो।"

फिर कोई सनक ! प्रिंस ने एक क्षण सोचा, ऊपर गया और सलीब गले से उतारे बिना उसे दिखाई।

"यह मुझे दे दो," रोगोझिन ने कहा।

"क्यों ? क्या तुम..."

प्रिंस वह सलीब देना नहीं चाहता था।

"पहनूँगा, और अपनी उतारकर तुम्हें दे दूँगा। तुम उसे पहन लेना।"

"तुम सलीबें बदलना चाहते हो ? ज़रूर, पफ्योंन। अगर यही बात है तो मुझे बड़ी खुशी होगी। हम भाई-भाई बन जाएँगे।"

प्रिंस ने अपनी टीन की सलीब उतारी और पफ़्योंन ने अपनी सोने की, और उन्हें एक-दूसरे से बदल लिया। पफ़्योंन चुप था। प्रिंस को यह देखकर आश्चर्य भी हुआ और कष्ट भी कि उसके नए मुँहबोले भाई के चेहरे पर अभी तक वही पुरानी अविश्वास और कटुता-भरी और लगभग व्यंगपूर्ण मुस्कराहट खेल रही थी; बहरहाल, कभी-कभी तो वह बिलकुल साफ़ दिखाई देती ही थी। आख़िरकार रोगोझिन ने प्रिंस का हाथ चुपचाप पकड़ लिया और कुछ देर तक ऐसे खड़ा रहा मानो किसी चीज़ के बारे में अपना इरादा पक्का न कर पा रहा हो; फिर वह अचानक उसे अपने पीछे खींच लाया और मुश्किल से ही सुनाई देनेवाली आवाज़ में बोला, "आओ, मेरे साथ !" उन्होंने पहली मंज़िल पर चौरस जगह पार की और जिस दरवाज़े से वे बाहर निकले थे उसके सामनेवाले दरवाज़े की घंटी बजाई। सादा-सा काला कपड़ा पहने झुकी हुई कमरवाली एक बुढ़िया ने जिसके सिर पर काला रूमाल बँधा था, कुछ भी कहे बिना ज़मीन तक झुककर रोगोझिन का अभिवादन किया। रोगोझिन ने जल्दी से उससे कुछ पूछा और जवाब पाने के लिए रुके बिना प्रिंस को अपने साथ लेकर कमरे पार करता हुआ आगे बढ़ा। एक बार फिर वे कई अँधेरे कमरों में से होकर गुजरे जिनकी सफ़ाई में एक असाधारण प्रकार की सर्दी थी, जिनकी सज़ावट में भी एक नीरसता और कठोरता थी और जिनके प्राचीन ढंग के फ़र्नीचर पर बहुत साफ़ सफ़ेद गिलाफ़ चढ़े हुए थे। कोई सूचना दिए बिना रोगोझिन प्रिंस को एक छोटे-से कमरे में ले गया जो देखने में ड्राइंग-रूम मालूम होता था और पॉलिश की हुई महोगनी की लकड़ी की एक ओट से दो हिस्सों में बँटा हुआ था और उसके दोनों सिरों पर दो-दो दरवाज़े थे, जिनके पीछे शायद सोने का कमरा था। ड्राइंग-रूम के एक कोने में आतिशदान के पास एक दुबली-पतली वृद्धा आराम-कुर्सी पर बैठी हुई थीं। देखने में वह बहुत बूढ़ी नहीं लगती थीं; सच तो यह है कि उनका चेहरा काफ़ी स्वस्थ, आकर्षक और गोल था; पर उनके बाल बिलकुल सफ़ेद थे और देखते ही पता चल जाता था कि वह बिलकुल सठिया चुकी हैं। वह काली ऊनी पोशाक पहने थीं और गले में और कन्धों पर उन्होंने बड़ा-सा काला रूमाल डाल रखा था और काले फ़ीतोंवाली एक साफ़-सुथरी सफ़ेद टोपी पहन रखी थी। उनके पाँव एक छोटी-सी चौकी पर टिके थे। पास ही एक दूसरी साफ़-सुथरी बूढ़ी औरत बैठी मोज़ा बुन रही थी; वह उम्र में उनसे कुछ बड़ी थी और उसने भी मातमी लिबास और सफ़ेद टोपी पहन रखी थी; वह शायद कोई टुकड़ख़ोर थी। उन दोनों को देखकर ऐसा लगता था कि शायद वे कभी

एक-दूसरे से बोलती नहीं थीं। पहली वृद्धा रोगोझिन और प्रिंस को देखकर मुस्कराई [illegible] से उन्होंने अपना सिर कई बार इधर-उधर हिलाकर यह जताया कि वह बहुत खुश हुई थी।

"माँ," रोगोझिन ने उनका हाथ चूमते हुए कहा, "यह मेरे बहुत अच्छे दोस्त हैं, प्रिंस लेव निकोलायेविच मीश्किन। मैंने इनके साथ अपनी सलीब की अदला-बदली कर ली है। एक ज़माने में मास्को में यह मेरे भाई की तरह थे और इन्होंने मेरे लिए वहाँ बहुत कुछ किया था। इन्हें आशीर्वाद दो, माँ, जैसे अपने ही बेटे को आशीर्वाद दे रही हो। रुको, इस तरह करो, मैं तुम्हारी उँगलियाँ ठीक कर दूँ।..."

लेकिन पर्फ़्योन अभी उन्हें छू भी नहीं पाया था कि वृद्धा ने अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाया, तीन उँगलियाँ साथ मिलाकर बड़ी श्रद्धा के साथ प्रिंस के ऊपर तीन बार सलीब का निशान बनाया। इसके बाद उन्होंने अपना सिर एक बार फिर बड़े प्यार और स्नेह से उसे देखकर हिलाया।

"अच्छा, आओ चलें, लेव निकोलायेविच," पर्फ़्योन ने कहा। "मैं तुम्हें यहाँ सिर्फ़ इसलिए लाया था।..."

जब वे बाहर सीढ़ियों पर फिर आ निकले तो उसने इतना और कहा—"इन्हें देखा तुमने, लोग उनसे जो कुछ कहते हैं उसका एक शब्द भी उनकी समझ में नहीं आता, और मैंने भी जो कुछ कहा था वह उनकी समझ में बिलकुल नहीं आया, लेकिन उन्होंने तुम्हें आशीर्वाद दिया; मतलब है कि वह खुद ऐसा करना चाहती थीं।...अच्छा, फिर मिलेंगे। अब तुम्हें भी और मुझे भी चलना चाहिए।"

और यह कहकर उसने अपना दरवाज़ा खोला।

"लेकिन, भगवान के लिए, चलने से पहले मैं तुमसे गले तो मिल लूँ, तुम भी अजीब आदमी हो!" प्रिंस ने प्यार-भरे शिकायत के अन्दाज से उसको देखकर ऊँचे स्वर में कहा, और उसे गले लगाने के लिए बढ़ा। लेकिन रोगोझिन ने अपने हाथ ऊपर उठाते ही नीचे गिरा लिए। वह किसी तरह अपने आपको उसे गले लगाने के लिए तैयार नहीं कर पा रहा था; वह अपना चेहरा प्रिंस से दूर हटा लिया ताकि उसकी नज़र प्रिंस पर न पड़े। वह उसे गले लगाना नहीं चाहता था।

"इतना जान लो, मैंने तुम्हारी सलीब भले ही ले ली हो, लेकिन घड़ी के लिए मैंने तुम्हारा गला नहीं काटा है!" उसने अस्पष्ट स्वर में बुदबुदाकर कहा और अचानक विचित्र ढंग से हँस पड़ा। क्षण ही भर बाद उसका चेहरा बिलकुल बदल गया—वह बेहद पीला पड़ गया, उसके होंठ काँपने लगे, उसकी आँखें चमकने लगीं। उसने अपनी बाँहें ऊपर उठाईं। प्रिंस को उसने तपाक से गले लगाया और हाँपते हुए कहा—"उसे तुम्हीं ले जाओ, अगर भाग्य से ऐसा ही है तो यही सही! वह तुम्हारी है! मैं उसे तुम्हें देता हूँ!...रोगोझिन को याद रखना!"

प्रिंस को छोड़कर वह उसकी ओर देखे बिना जल्दी से अन्दर चला गया और अपने पीछे दरवाज़ा धड़ से बन्द कर दिया।

5

बहुत देर हो चुकी थी—लगभग ढाई बज रहे थे—इसलिए प्रिंस को जनरल येपांचिन घर पर नहीं मिले। अपना कार्ड छोड़कर उसने 'तुला' होटल में जाकर कोल्या का पता लगाने का फ़ैसला किया और यह तै किया कि अगर कोल्या वहाँ नहीं है तो वह उसके लिए एक पर्ची छोड़ देगा। होटल में किसी नौकर ने उसे बताया, कि कोल्या सवेरे ही कहीं निकल गया था, लेकिन जाने से पहले

वह कह गया था कि अगर कोई उसे पूछता हुआ आए तो उससे कह दिया जाए कि वह शायद तीन बजे तक वापस आ जाएगा। लेकिन अगर वह साढ़े तीन बजे तक वापस न आए तो फिर इसका मतलब होगा कि वह ट्रेन से मिसेज़ येपांचिना के पास पाव्लोव्स्क चला गया है जहाँ वह खाने के वक़्त तक रहेगा। प्रिंस बैठकर उसका इन्तज़ार करने लगा और इसी बीच उसने अपने लिए भी खाना मँगवा लिया।

कोल्या साढ़े तीन बजे तक नहीं आया, चार बजे तक भी नहीं आया। प्रिंस होटल में निकलकर नाक की सीध में यन्त्रवत् चलता गया। पीटर्सबर्ग में गर्मियों के शुरू में कभी-कभी बहुत ही सुखद दिन होते हैं—जब चारों ओर रोशनी होती है, गर्मी होती है, और शान्ति होती है। मानो जान-बूझकर आज वैसा ही बिरला दिन था। प्रिंस कुछ देर तक निरुद्देश्य इधर-उधर घूमता रहा। उसे शहर की बहुत अच्छी जानकारी नहीं थी। कभी-कभी वह चौराहों पर, कुछ घरों के सामने, या किसी चौक में या किसी पुल पर ठहर जाता था; एक बार वह आराम करने के लिए पेस्ट्री की दुकान में चला गया। कभी वह राहगीरों को दिलचस्पी से देखने लगता था, लेकिन ज़्यादातर उसका ध्यान न उन राहगीरों की ओर होता था न इस बात की ओर कि वह कहाँ जा रहा था। वह कष्टदायक तनाव की स्थिति में था और बेहद बेचैनी महसूस कर रहा था, लेकिन साथ ही वह एकान्त के लिए भी असाधारण रूप से लालायित था। वह एकान्त चाहता था ताकि बच निकलने की ज़रा भी कोशिश किए बिना उसके पीड़ाजनक तनाव को पूरी तरह और निर्विरोध अपने ऊपर छा जाने दे। उसे उन समस्याओं को हल करने की कोशिश करने के विचार मात्र से घृणा हो रही थी जिनसे उसका दिमाग़ और दिल लबालब भरे हुए थे। "क्या इन सबके लिए मैं दोषी हूँ ?" उसने अपने आपसे बुदबुदाकर कहा और उसे आभास भी नहीं हुआ कि वह क्या कह रहा है।

लगभग छह बजे वह रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर खड़ा था। जल्दी ही एकान्त उसके लिए असह्य हो गया; उसके हृदय को एक नए तीव्र आवेग ने जकड़ लिया और एक क्षण के लिए उस अन्धकार में जिसमें उसकी आत्मा तड़प रही थी तेज रोशनी फैल गई। उसने पाव्लोव्स्क का टिकट लिया और बड़ी अधीरता से ट्रेन के रवाना होने की राह देखने लगा; लेकिन इस बात में कोई सन्देह नहीं रह गया था कि उसका पीछा किया जा रहा था और यह भ्रम मात्र नहीं था, जैसा कि वह अब तक सोचता आया था, बल्कि एक वास्तविकता थी। वह ट्रेन में लगभग बैठ चुका था कि अचानक उसने अपना टिकट ज़मीन पर फेंक दिया और स्टेशन से परेशान और विचारों में डूबा हुआ बाहर निकल गया। कुछ देर बाद सड़क पर पहुँचकर उसे अचानक मानो कुछ याद आया, मानो कोई ऐसी बहुत ही विचित्र चीज़ उसकी समझ में आ गई थी, जिसने उसे बहुत समय से परेशान कर रखा था। अचानक उसने अपने आपको सचेतन रूप से एक ऐसा काम करते हुए पकड़ लिया जिसे वह कर तो बहुत समय से रहा था लेकिन उस क्षण तक उसे उसका आभास नहीं हुआ था—पिछले कई घंटों से, जब वह 'तुला' में था तब भी, और शायद वहाँ जाने से पहले से भी, वह रह-रहकर अचानक अपने चारों ओर देखने लगता था। बड़ी देर के लिए आधे-आधे घंटे तक, वह भूल भी जाता था और अचानक फिर बेचैन होकर अपने चारों ओर देखने लगता था, मानो उसे किसी के नज़र आ जाने की उम्मीद हो।

लेकिन जैसे ही उसे उस बीमारी जैसी हरकत का आभास हुआ, जिसकी अभी तक उसे कोई चेतना नहीं थी और जिसने उसे इतने लम्बे अरसे से जकड़ रखा था, तो उसे किसी और चीज़ की भी याद आई जिसमें उसे बहुत दिलचस्पी पैदा हुई थी। उसे याद आया कि जिस क्षण उसे इस बात का आभास हुआ था कि वह किसी चीज़ को अपने चारों ओर खोज रहा है उस समय वह

एक दुकान के सामने सड़क की पटरी पर खड़ा दुकान में काँच के पीछे रखी हुई चीज़ों को बड़ी दिलचस्पी से देख रहा था। वह उसी समय और अनिवार्य तौर पर इस बात का पक्का भरोसा कर लेना चाहता था कि अभी-अभी, शायद पाँच ही मिनट पहले, वह सचमुच उस दुकान के सामने खड़ा था, या यह केवल उसकी कल्पना थी, या उसके दिमाग़ में कई चीज़ें गड्ड-मड्ड हो गई थीं। क्या वह दुकान और उसके काँच के पीछे रखी हुई चीज़ें सचमुच थीं ? क्योंकि उस दिन ख़ासतौर पर उसकी मनोदशा सचमुच ठीक नहीं रही, ठीक उसी तरह जैसे अपनी पुरानी बीमारी शुरू होने से पहले वह महसूस करता था। वह जानता था कि जब उस पर इस तरह का दौरा पड़नेवाला होता था तो उसके होश-हवास बहुत बड़ी हद तक गुम हो जाते थे और अगर वह चीज़ों को और लोगों को ख़ासतौर पर ध्यान केन्द्रित करके नहीं देखता था तो वह उसके दिमाग़ में गड्ड-मड्ड हो जाते थे। लेकिन एक बात और भी थी जिसकी वजह से वह यह जानने के लिए इतना उत्सुक था कि क्या वह सचमुच उस दुकान के सामने खड़ा रहा था; दुकान के काँच के पीछे जो चीज़ें रखी थीं उनमें एक चीज़ ऐसी थी जिसे उसने ध्यान से देखा था और यहाँ तक सोचा था कि उसकी क़ीमत चाँदी के साठ कोपेक होगी—अपनी बेचैनी और अन्यमनस्कता के बावजूद यह बात उसे अच्छी तरह याद थी। इसलिए अगर वह दुकान सचमुच थी और वह चीज़ सचमुच उसके काँच के पीछे रखी हुई थी तो वह उसी चीज़ की वजह से उसके सामने रुका होगा। फलस्वरूप, उस चीज़ ने उसमें इतनी दिलचस्पी पैदा की थी कि उसने उसका ध्यान ऐसे समय आकर्षित किया था जब वह रेलवे स्टेशन से चले आने के बाद बेहद बौखलाहट की हालत में था। वह वापस चल पड़ा और काफ़ी तीव्र व्यथा अनुभव करते हुए दाहिनी ओर देखता रहा; उसका दिल बेचैनी और अधीरता से धड़कने लगा। लेकिन दुकान वहाँ मौजूद थी—वह आख़िरकार उसे मिल गई थी ! वह वहाँ से लगभग दो सौ गज़ ही दूर रह गया था कि अचानक उसे वापस चले जाने की धुन समाई। और वह साठ कोपेकवाली चीज़ भी वहाँ मौजूद थी। ''बिलकुल साठ कोपेक, इससे ज़्यादा के लायक़ है ही नहीं !'' अपने पहलेवाले मत की पुष्टि करके वह हँस पड़ा। लेकिन यह दीवानों जैसी हँसी थी—वह बहुत दुःखी था। अब उसे बिलकुल साफ़ याद आया कि उसी जगह दुकान के सामने खड़े-खड़े वह अचानक पीछे मुड़ा था, जैसा कि उसने अभी थोड़ी ही देर पहले किया था जब उसने रोगोझिन की नज़रों को अपने ऊपर जमा हुआ पाया था। इस बात का पूरी तरह आश्वासन कर लेने के बाद कि यह उसका भ्रम नहीं था (जिसका कि पहले भी उसे पूरा विश्वास था) वह दुकान छोड़कर तेजी से क़दम बढ़ाता हुआ दूर चला गया। उसे तमाम बातों के बारे में जल्दी ही बहुत ध्यान से सोचना था, निःसन्देह; अब यह बात बिलकुल साफ़ हो गई थी कि रेलवे स्टेशन पर उसने केवल इसकी कल्पना नहीं की थी, कि उसे सचमुच कुछ ऐसा हो गया था जिसका सम्बन्ध उसकी इससे पहलेवाली सारी बेचैनी से था। लेकिन एक बार फिर अत्यन्त तीव्र अदम्य आन्तरिक घृणा ने उसे अपने वश में कर लिया—वह उसके बारे में सोचना नहीं चाहता था और उसने सोचा भी नहीं। वह इस समय किसी और ही बात के बारे में सोचने लगा।

वह सोच रहा था कि जब वह मिरगी का शिकार होता था तो दौरा पड़ने से ठीक पहले (अगर दौरा जागते में पड़ता था) एक या दो क्षण ऐसे होते थे जब उस उदासी, आत्मा के अन्धकार और नैराश्य के बीच अचानक ऐसा लगता था कि हर पल दो पल बाद उसके दिमाग़ में आग-सी लग जाती थी, और बेहद तेजी से उसकी सारी जीवन्त शक्तियाँ सहसा सजग हो उठती थीं। बिजली जैसे वेग से गुजरते हुए उन क्षणों में उसकी जीवित होने की संवेदना और उसकी आत्म-चेतना दस-गुनी बढ़ जाती थी। उसके मस्तिष्क और हृदय में चकाचौंध कर देनेवाली रोशनी की बाढ़-सी

आ जाती थी। उसकी सारी उद्विग्नता, उसकी सारी शंकाएँ और चिन्ताएँ पलक झपकते मानो मिट जाती थीं और उसके बाद अपार नीरवता छा जाती थी, शान्त, सामंजस्यपूर्ण उल्लास तथा आशा से परिपूर्ण, अन्तिम ध्येय के बोध और ज्ञान से परिपूर्ण। लेकिन वे क्षण, अन्तर्बोध की वे चिंगारियाँ दौरा पड़ने से पहलेवाले अन्तिम पल का (जो कभी एक पल से अधिक नहीं होता था) पूर्वाभास मात्र होती थीं। यह पल सम्पूर्ण असह्य होता था। फिर से चंगा हो जाने पर जब वह उस क्षण के बारे में सोचता था तो अक्सर यह अपने आपसे कहा करता था कि सर्वोच्च चेतना की, और इसलिए "सर्वोत्तम अस्तित्व" की ये सारी चमचमाहटें और जगमगाहटें एक रोग के अतिरिक्त, सामान्य दशा से भटकाव के अतिरिक्त कुछ नहीं थीं, और अगर ऐसा था तो वह सर्वोत्तम अस्तित्व कदापि नहीं था बल्कि इसके विपरीत उसे निम्नतम समझा जाना चाहिए। फिर भी वह इस विरोधाभासपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचा—"अगर रोग है भी तो क्या हुआ ?" उसने अन्ततः निर्णय किया। "स्वस्थ होने की दशा में याद करने पर और विश्लेषण करने पर यदि परिणाम, यदि संवेदना का वह क्षण सामंजस्य तथा सौन्दर्य की पराकाष्ठा सिद्ध होता है, और पहले कभी न अनुभव की हुई सम्पूर्णता, सन्तुलन तथा समाधान की भावना का और हर्षातिरेक और श्रद्धा के भाव से जीवन के उच्चतम संश्लेषण में मिलकर एकाकार हो जाने का आभास प्रदान करता है तो इससे क्या अन्तर पड़ता है कि वह एक अस्वस्थ तनाव होता है ?" ये अस्पष्ट व्याख्याएँ वह अच्छी तरह समझता था हालाँकि वे कुछ कमज़ोर अवश्य थीं। लेकिन इसमें उसे तनिक भी सन्देह नहीं था कि वह तनाव सचमुच 'सौन्दर्य और प्रार्थना' था, कि वह सचमुच 'जीवन का सर्वोच्च संश्लेषण' था; वह इसमें शंका की सम्भावना तक को स्वीकार करने को तैयार नहीं था। क्योंकि उस क्षण वह उस प्रकार के अस्वस्थ और कल्पनातीत चित्र नहीं देखता था जैसे कि हशीश, अफ़ीम या शराब के नशे में दिखाई देते हैं, जो तर्क-बुद्धि को परास्त और मस्तिष्क को विकृत कर देते हैं। जब दौरे का प्रभाव समाप्त हो जाता था और वह फिर स्वस्थ हो जाता था तब वह पूरी समझदारी के साथ इसके बारे में तर्क-वितर्क कर सकता था। अगर उस दशा का एक शब्द में बयान किया जाए तो कहा जा सकता है कि वे क्षण अत्यन्त उग्र रूप से चेतना के तीव्र हो उठने के क्षण मात्र होते थे, चेतना के भी और उसके साथ ही उग्रतम रूप में स्वयं अपने अस्तित्व की संवेदना के भी। यदि उस पल में—अर्थात् दौरा पड़ने से पहले चेतना के अन्तिम आभास के क्षण में—उसके पास सजग तथा स्पष्ट रूप से अपने आपसे यह कहने का समय होता, "हाँ, इस क्षण के लिए मैं अपना सारा जीवन अर्पित करने को तैयार हूँ," तो यह क्षण, निश्चय ही, पूरे जीवन के बराबर ही मूल्यवान होता। लेकिन अपने तर्क के द्वन्द्वात्मक भाग पर उसका कोई आग्रह नहीं था—जड़िमा, आत्मा का अन्धकार, मूढ़ता उन 'सर्वोच्च क्षणों' के स्पष्ट परिणाम के रूप में उसके सामने मौजूद थे। वह इस बात पर बहस न करता। निःसन्देह, उसके तर्क में—अर्थात्, उस क्षण के उसके मूल्यांकन में—कुछ त्रुटि थी, लेकिन उस संवेदना की वास्तविकता उसे कुछ हद तक परेशान ज़रूर करती रहती थी। आख़िर वह इस वास्तविकता का क्या मतलब लगाए। क्योंकि बिलकुल वही बात हुई थी। उस पल विशेष में उसे अपने आपसे यह कहने का अवसर मिल गया था कि उसमें उसने जो अपार सुख अनुभव किया था उसका मूल्य उसके सारे जीवन के बराबर था। "उस क्षण," उसने मास्को में रोगोझिन से अपनी मुलाक़ातों के दौरान एक बार कहा था, "उस क्षण यह बेजोड़ कहावत कि फिर कभी समय नहीं होगा मेरी समझ में आने लगती है। मैं समझता हूँ," उसने मुस्कराते हुए जोड़ दिया था, "यही वह पल था जिसके दौरान मिरगी के शिकार मुहम्मद साहब से गिरे मटके में से पानी के छलक निकलने में जितना समय लगा था, उससे भी कम समय में उन्हें अल्लाह की सारी दुनिया देखने का मौक़ा

मिल गया था।" हाँ, मास्को में वह रोगोझिन से कई बार मिला था और उन्होंने केवल इसी के बारे में बातें नहीं की थीं। "रोगोझिन ने अभी कहा कि उस वक़्त मैं उसके लिए भाई की तरह था; आज उसने यह बात पहली बार कही थी," प्रिंस ने मन में सोचा।

उसने यह बात ग्रीष्म उद्यान में एक पेड़ के नीचे बेंच पर बैठकर सोची। लगभग सात बजे थे। बाग़ सूना पड़ा था; क्षण-भर के लिए एक अँधेरी परछाईं डूबते सूरज के सामने से होकर गुजरी। वातावरण में घुटन थी, मानो आनेवाले तूफ़ान की पूर्व-सूचना दे रही हो। उसकी तत्कालीन चिन्तनशील मनोदशा में उसके लिए एक विशेष प्रलोभन छिपा था। वह अपनी पूरी मानसिक चेतना और स्मरण-शक्ति हर बाह्य वस्तु के साथ जोड़ रहा था, और उसे यह अच्छा लग रहा था—वह किसी चीज़ को, वर्तमान चीज़ को, जो चीज़ उस क्षण उसके दिमाग़ में सबसे ऊपर थी उसे भूल जाने के लिए बेचैन था, लेकिन अपने चारों ओर पहली नज़र डालते ही वह फिर तुरन्त उस उदासी-भरे विचार के बारे में सजग हो उठा था जिससे वह इतनी बुरी तरह पीछा छुड़ाना चाहता था। उसे याद आया कि खाना खाते वक़्त उसने रेस्तोराँ में वेटर से हाल ही की एक बहुत विचित्र हत्या के बारे में बात की थी, जिसकी वजह से सनसनी फैल गई थी और जिसकी बहुत चर्चा थी। लेकिन यह याद आते ही उसके साथ फिर कुछ अजीब बात हुई।

अचानक एक तीव्र, अदम्य इच्छा ने, लगभग एक प्रलोभन ने उसे आ दबोचा। वह अपनी जगह से उठकर सीधे बाग़ से बाहर निकला और पेतेर्बुर्गस्काया स्तोरोना नामक इलाक़े की ओर चल पड़ा। थोड़ी ही देर पहले उसने नेवा के घाट पर एक राहगीर से नदी के पार का वह इलाक़ा दिखाने का अनुरोध किया था। उसे इलाक़ा दिखाया गया था, लेकिन वह वहाँ गया नहीं था। और फिर, आज वहाँ जाने से कोई फ़ायदा भी नहीं था—यह बात वह जानता था। वह पता उसे बहुत दिनों से मालूम था; वह लेबेदेव की रिश्तेदार का घर बड़ी आसानी से ढूँढ़ सकता था, लेकिन उसे लगभग पूरा यक़ीन था कि वह उसे घर पर मिलेगी नहीं। "वह यक़ीनन पाव्लोव्स्क चली गई होगी, वरना कोल्या ज़रूर 'तुला' होटल में कोई सन्देश छोड़ जाता।" इसलिए इस समय वह वहाँ इस उम्मीद से नहीं जा रहा था कि उससे उसकी मुलाक़ात हो जाएगी। अब उसे एक और निराशाजनक और यातना देनेवाली उत्सुकता ने लुभाया। उसके दिमाग़ में अचानक एक नया विचार आया।...

लेकिन उसके लिए इतना ही काफ़ी था कि वह चल पड़ा था और वह जानता था कि वह कहाँ जा रहा है—एक ही मिनट बाद वह फिर तन-मन की सुध खोकर चला जा रहा था। अपने 'आकस्मिक विचार' के बारे में सोचने से उसे फ़ौरन बेहद घृणा होने लगी और यह उसके लिए असम्भव था। जिस चीज़ पर भी उसकी नज़र पड़ी उसे उसने भरपूर कोशिश करके ध्यान केन्द्रित करके घूरा, उसने आकाश की ओर देखा, नेवा की ओर देखा। रास्ते में एक छोटा बच्चा मिल गया, उससे उसने बातें कीं। शायद उसकी मिरगीवाली हालत अधिकाधिक उग्र होती जा रही थी। उसने महसूस किया कि तूफ़ान सचमुच निकट आता जा रहा था, लेकिन धीरे-धीरे। उसे कहीं दूर बादलों की गरज सुनाई भी देने लगी थी। घुटन बढ़ती जा रही थी।...

किसी अज्ञात कारण से वह अब लेबेदेव के भानजे को अपने दिमाग़ से दूर नहीं कर पा रहा था, जिससे वह उसी दिन सबेरे मिला था, उसी तरह जैसे कभी-कभी आदमी अपने दिमाग़ से किसी लगातार चिपकी रहनेवाली और बेवक़ूफ़ी की बेहद उकता देनेवाली धुन को बाहर नहीं निकाल पाता। विचित्र बात यह थी कि वह उसे उसी हत्यारे के रूप में याद कर रहा था जिसकी चर्चा लेबेदेव ने उससे उस नौजवान का परिचय कराते समय की थी। हाँ, उसने अभी कुछ ही समय पहले उस

हत्यारे के बारे में पढ़ा था। रूस वापस आने के बाद वह इस तरह की घटनाओं के बारे में बहुत कुछ पढ़ और सुन चुका था; वह बड़े ध्यान से उनसे सम्बन्धित जानकारी की खोज-ख़बर रखता था। और उसी दिन जेमारिन-परिवार की उसी हत्या के बारे में वेटर से अपनी बातचीत में उसने बहुत ही दिलचस्पी ली थी। वेटर उससे सहमत था, यह उसे याद था। उसे वह वेटर भी याद आया; वह तनिक भी मूर्ख नहीं था, गम्भीर और सावधान, लेकिन "फिर भी, भगवान जाने वह किस तरह का आदमी था। नए देश में नए देशों को समझना कठिन होता है।" लेकिन रूसी आत्मा के प्रति उसके मन में बहुत गहरी आस्था पैदा होने लगी थी। आह, उन छह महीनों के दौरान उसने बहुत कुछ अनुभव किया था—बहुत कुछ ऐसा जो उसके लिए बिलकुल नया था, बहुत कुछ ऐसा जिसके होने का उसे कभी शक भी नहीं हुआ था, जिसके बारे में उसने सुना तक नहीं था, न ही जिसकी उसने आशा की थी ! लेकिन अजनबी की आत्मा एक अन्धकारमय रहस्य होती है, रूसी की आत्मा की थाह पाना मुश्किल है। वह बहुतों के लिए रहस्य होती है। जैसे रोगोझिन के साथ उसकी दोस्ती बहुत दिनों से है, वे बहुत गहरे दोस्त हैं, वे "भाइयों की तरह" हैं—लेकिन क्या वह रोगोझिन को जानता है ? लेकिन कभी-कभी इस सबमें कितनी अव्यवस्था, कितनी गड़बड़ी और कितनी कुरूपता होती है ! और वह लेबेदेव का भानजा कैसा घृणित और बड़बोला था ! लेकिन मैं कह क्या रहा हूँ ? (प्रिंस मन ही मन सोचता रहा) क्या उसी ने उन प्राणियों की हत्या की थी, उन छह लोगों की ? ऐसा लगता है कि मेरे दिमाग़ में सारी चीज़ें गड्ड-मड्ड हो गई हैं—कैसी अजीब बात है ! मेरा सिर चक्कर खा रहा है।...और लेबेदेव की बेटी का मुखड़ा कैसा प्यारा और कैसा लुभावना है—उस लड़की का जो बच्चे को गोद में लिए खड़ी थी—कैसी भोली, कैसी बच्चों जैसी मुद्रा और कैसी बिलकुल बच्चों जैसी हँसी ! यह बड़ी अजीब बात थी कि वह उस चेहरे को लगभग भूल गया था और सिर्फ़ अभी जाकर उसे उसकी याद आई थी। लेबेदेव, जो उन सबको धमकाने के लिए पाँव पटकता था, शायद उनसे बेहद प्यार करता था। लेकिन जो बात इससे भी ज़्यादा सच है, सोलह आने सही बात, वह यह है कि लेबेदेव अपने भानजे को भी बहुत चाहता था !

फिर भी, उसके बारे में इस तरह का अन्तिम फ़ैसला सुनानेवाला वह कौन होता था, वह जो उसी दिन आया था ? वह इस तरह के फैसले क्यों सुनाए ? लेबेदेव को ही लो, उसने सचमुच एक पहेली खड़ी कर दी थी—क्या उसने लेबेदेव के ऐसा होने की आशा की थी ? क्या वह पहले इस तरह के लेबेदेव को जानता था ? लेबेदेव और डुबरी—हे भगवान ! हालाँकि अगर रोगोझिन ने हत्या की भी, तब भी वह इतने वीभत्स ढंग से हत्या नहीं करेगा। उसमें इतनी अव्यवस्था नहीं होगी। पहले से तैयार किए गए नमूने का हथियार बनवाना और बिलकुल सरसामी हालत में छह आदमियों की हत्या कर देना ! क्या रोगोझिन ने किसी ख़ास नमूने का हथियार बनवाया था ?... उसके पास...लेकिन...क्या यह निश्चित था कि रोगोझिन हत्या करेगा ? ! प्रिंस अचानक सिहर उठा ! "क्या इस तरह की बात को इतनी निर्मम स्पष्टता से मान लेना मेरा अपराध, मेरी नीचता नहीं है ?" उसने चिल्लाकर कहा; उसका सारा चेहरा शर्म से लाल हो उठा। वह आश्चर्यचकित था, वह सड़क के बीच में खड़ा था, मानो वहीं गड़ गया हो। उसे पाव्लोव्स्की स्टेशन की और सबेरे निकोलायेव्स्की स्टेशन की याद आई और उस सवाल की जो उसने रोगोझिन के मुँह पर उससे **आँखों** के बारे में पूछा था, और रोगोझिन की सलीब की जो वह इस वक़्त पहने हुए था, और उसकी माँ के आशीर्वाद की, जिनके पास रोगोझिन उसे खुद ले गया था, और कैसे लपककर अन्तिम बार उसने उसे गले लगाया था, और सीढ़ियों पर रोगोझिन ने जो अन्तिम त्याग किया था उसकी—और फिर, इन सब बातों के बाद उसने अपने आपको लगातार अपने चारों ओर देखते हुए पकड़ा था,

और यह दुकान, और दुकान में रखी हुई वह चीज़...सचमुच कितना नीच था वह ! और इन सब बातों के बाद वह अब "एक विशेष उद्देश्य से", एक विशेष 'आकस्मिक विचार' लेकर जा रहा था ! उसकी सारी आत्मा निराशा और विषाद से भर उठी। प्रिंस फ़ौरन अपने होटल लौट जाना चाहता था; वह पीछे मुड़कर दूसरी ओर गया भी, लेकिन एक ही मिनट बाद वह रुक गया, कुछ देर सोच-विचार करता रहा, और फिर पहलेवाली दिशा में चल पड़ा।

अरे, वह तो पेतेर्बुर्गस्काया स्तोरोना नामक इलाक़े में पहुँच चुका था, वह उस घर के पास था; लेकिन अब वह वहाँ उसी उद्देश्य से नहीं जा रहा था, न ही अपना 'विशेष विचार' लेकर जा रहा था ! और यह हो कैसे सकता था ! हाँ, उसकी बीमारी फिर लौट रही थी, इसमें कोई सन्देह नहीं रह गया था; शायद आज ही उसे दौरा पड़ेगा। यह सारा अन्धकार उसी आनेवाले दौरे की वजह से था, और वह 'विचार' भी उसी की वजह से था। अब अँधेरा छँट गया था, पिशाच को दूर भगा दिया गया था, अब उसके मन में कोई शंकाएँ नहीं रह गई थीं, उसका हृदय उल्लास से भर उठा था ! और—वह **उससे** इतने अरसे से मिला भी तो नहीं था, उसे उससे मिलना ही होगा, और...हाँ, वह इस वक़्त रोगोझिन से भी मिलना चाहता था, वह उसका हाथ पकड़ लेता और दोनों साथ-साथ वहाँ जाते।...उसके मन में कोई खोट नहीं थी। क्या वह रोगोझिन का प्रतिद्वन्द्वी था ? कल वह खुद रोगोझिन के पास जाकर उसे बता देगा कि वह उससे मिला था। क्योंकि, सचमुच वह उससे मिलने के लिए ही यहाँ भागा-भागा आया था, जैसा कि रोगोझिन ने कहा था ! शायद वह घर पर ही होगी—यह तो पक्का मालूम नहीं था कि वह पावलोव्स्क गई थी !

हाँ, अब हर बात साफ़ कर लेना ज़रूरी था, ताकि वे एक-दूसरे को साफ़ साफ़ समझ सकें, ताकि रोगोझिन जैसी उदासी और उन्माद से भरी आत्म-त्याग की बातें फिर कभी न हों, सब कुछ उन्मुक्त भाव से किया जाए और...हर्ष के साथ। क्या रोगोझिन में अन्तर्बोध की क्षमता नहीं थी ? उसने कहा था कि वह उससे उस तरह प्यार नहीं करता था, कि उसके हृदय में उसके लिए कोई दया नहीं थी, "इतना कोई तरस" नहीं था। सच था कि उसने बाद में इतना और जोड़ दिया था कि "शायद तुम्हारा तरस मेरे प्यार से प्रबल है"—लेकिन वह अपने बारे में झूठ बोल रहा था। रोगोझिन का किताब पढ़ना—क्या वह 'तरस' या 'तरस खाने' की शुरुआत नहीं थी ? क्या उस किताब की मौजूदगी इस बात का पक्का सबूत नहीं थी कि **उसकी** तरफ़ अपने रवैये की उसे पूरी चेतना थी ? और फिर वह क़िस्सा जो उसने उसे सुनाया था ? नहीं, यह सब केवल किसी के प्रेम में पागल हो जाने से कहीं ज़्यादा गहरी बात है। और क्या उसका चेहरा केवल प्रेम के पागलपन की भावना जागृत कर सकता है ? अरे, वह चेहरा क्या अब कोई भी उन्माद पैदा कर सकता है ? वह व्यथा पैदा करता है, वह पूरी आत्मा पर जादू-सा कर देता है, वह...और इतने में प्रिंस के हृदय को एक दर्द-भरी तिलमिला देनेवाली याद ने सहसा बेधा।

हाँ, तिलमिला देनेवाली। उसे वह पीड़ा याद थी जो उसके पागलपन के पहले चिन्ह देखना शुरू करने पर उसने महसूस की थी। उस समय उस पर घोर निराशा-सी छा गई थी। और जब वह उसके पास से भागकर रोगोझिन के पास चली गई थी तब उसने उसे छोड़ कैसे दिया था ? उसका कोई समाचार मिलने की राह देखने के बजाय उसे खुद उसके पीछे भागकर जाना था। लेकिन...क्या वह मुमकिन है कि रोगोझिन को अब तक उसमें पागलपन के कोई निशान न दिखाई दिए हों ?...हुँः...रोगोझिन हर बात के लिए बिलकुल ही अलग कारण देखता है, उन्माद-भरे कारण ! और कैसी जुनूनी ईर्ष्या ! आख़िर वह सुझाव रखने में उसका क्या मतलब था ? (प्रिंस अचानक शरमा गया और किसी चीज़ ने उसके हृदय में सिहरन की लहर-सी दौड़ा दी।)

[illegible], बहरहाल, इन सब बातों को फिर से याद ही क्यों किया जाए ? दोनों ही तरफ़ पागलपन था। और उसके लिए, प्रिंस के लिए, उस औरत से बहुत गहरा प्यार करने की बात सोची भी नहीं जा सकती थी। ऐसा करना क्रूरता के समान होता, अमानुषिकता के समान होता। हाँ, हाँ ! रोगोझिन अपने बारे में झूठ बोलता है; उसका हृदय बहुत विशाल था, जो पीड़ा सह सकता था और जिसमें करुणा थी। जब उसे पूरी सच्चाई का पता चलेगा, और जब वह इस बात को समझ लेगा कि वह दीवानी कितनी दयनीय प्राणी थी, तब क्या वह उसे तमाम पिछली बातों के लिए, अपनी सारी व्यथाओं के लिए क्षमा नहीं कर देगा ? क्या वह उसका गुलाम, उसका भाई, उसका दोस्त, उसका विधाता नहीं बन जाएगा ? करुणा रोगोझिन तक को सिखा देगी, उसकी चेतना जागृत कर देगी। करुणा समस्त मानव अस्तित्व का मुख्य और शायद एकमात्र नियम है। उफ़, रोगोझिन के प्रति वह कितना दोषी है ! इसे कभी क्षमा नहीं किया जा सकता। नहीं, "अन्धकारमय रहस्य" रूसी आत्मा नहीं है, बल्कि उसकी अपनी आत्मा, जो अन्धकार में डूबी हुई है, अगर वह ऐसी भयानक बात सोच भी सकता था। मास्को में कहे गए कुछ स्नेह-भरे और सहृदयतापूर्ण शब्दों के बदले रोगोझिन ने उसे अपना भाई कहा था और वह...लेकिन यह तो बीमारी और सरसाम की हालत है ! यह ख़त्म हो जाएगा !...आज रोगोझिन ने कितने उदास भाव से कहा था कि "उसका विश्वास नष्ट होता जा रहा है।" वह आदमी भयानक पीड़ा का शिकार होगा। उसने कहा था कि उसे "उस तस्वीर को देखना" अच्छा लगता है; बात यह नहीं है कि वह उसे अच्छा लगता है, बल्कि वह उसकी ज़रूरत महसूस करता है। रोगोझिन की आत्मा में केवल उन्माद ही नहीं है; उसके बावजूद वह जूझकर लड़नेवाला आदमी है—वह अपनी खोई हुई आस्था बलपूर्वक फिर से प्राप्त करना चाहता है। उसे अब उसकी ज़रूरत है, जिसके बिना वह तड़प रहा था।...हाँ ! किसी चीज़ में विश्वास रखने की ज़रूरत ! किसी प्राणी पर भरोसा करने की ज़रूरत !...लेकिन होल्बाइन की वह तस्वीर भी कितनी विचित्र है !...लो, यह रही वह सड़क। यही घर होगा—हाँ, नं. 16, "मिसेज़ फ़ीलिसोवा का घर"। यह रहा ! प्रिंस ने घंटी बजाई और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के बारे में पूछा।

घर की मालकिन स्वयं दरवाज़ा खोलने आईं और उन्होंने उसे बताया कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना उसी दिन सवेरे अपनी सहेली दार्या अलेक्सेयेव्ना के यहाँ पाव्लोव्स्क चली गई थी, और "बहुत मुमकिन है कि वह वहाँ कई दिन रहे।" फ़ीलिसोवा चालीस साल की बहुत तेज आँखों और तीखे नाक-नक्शेवाली छोटी-सी औरत थीं, जिन्होंने चालाकी-भरी बेधती हुई नज़रों से प्रिंस को देखा। जब उन्होंने प्रिंस का नाम पूछा—जिस सवाल में उन्होंने जान-बूझकर रहस्य का भाव पैदा कर दिया था—तो पहले तो उसने जवाब देना नहीं चाहा; लेकिन फ़ौरन ही वापस आकर उसने बड़े आग्रह से उनसे नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को उसका नाम बता देने को कहा। फ़ीलिसोवा ने उसकी इस आग्रहपूर्ण प्रार्थना को बड़े ध्यान से और अपने चेहरे पर गोपनीयता का असाधारण भाव पैदा करते हुए सुना, जिसमें उनका यह कहने का अभिप्राय साफ़ झलकता था, "चिन्ता न करें, साहब, मैं सब समझती हूँ।" प्रिंस का नाम सुनकर वह स्पष्टतः बेहद प्रभावित हुई थीं। प्रिंस ने खोई-खोई नज़रों से उन्हें देखा, पीछे मुड़ा और होटल वापस चला गया। लेकिन जाते समय वह उससे बिलकुल भिन्न लग रहा था जैसा कि वह मिसेज़ फ़ीलिसोवा के दरवाज़े की घंटी बजाते समय लग रहा था। पल ही भर में उसमें फिर असाधारण परिवर्तन हो गया—उसका रंग फिर पीला पड़ गया था, वह फिर कमज़ोर, व्यथित और उत्तेजित दिखाई दे रहा था; उसके घुटने काँप रहे थे और उसके नीले-से होंठों पर अस्पष्ट-सी उजड़ी हुई मुस्कराहट खेल रही थी—उसके 'आकस्मिक विचार' की सहसा पुष्टि हो गई थी और वह सही साबित हो गया था, और—एक बार फिर वह अपने पिशाच

में विश्वास करने लगा था।

क्या उसकी पुष्टि सचमुच हो गई थी ? क्या वह सही साबित हो गया था ? फिर दुबारा वह कँपकँपी क्यों, वह ठण्डा पसीना, वह अँधेरा, और उसकी आत्मा में वह बर्फ़ीली ठिठुरन ? क्या इसी की वजह से उसने वही **आँखें** अभी फिर देखी थीं। लेकिन वह ग्रीष्म उद्यान से निकला ही सिर्फ़ उन्हें देखने के इरादे से था ! उसका "आकस्मिक विचार" था ही सही ! वह 'उन आँखों' को देखने के लिए बेहद व्याकुल था, ताकि उसे पूरा विश्वास हो जाए कि **वहाँ**, उस घर के पास, निश्चित रूप से उसकी मुलाक़ात उनसे होगी। उसे उन्हें देखने की धुन-सी समा गई थी, इसलिए अब उन्हें देख लेने पर इतना निराश और चकित होने का क्या कारण है ? जैसे उसने इसकी उम्मीद न की हो ! हाँ, वे **बिलकुल वही** आँखें थीं (और अब तो इसमें कोई सन्देह ही नहीं रह गया था कि वे **बिलकुल वही थीं**) जो उसी दिन सुबह जब वह निकोलायेव्स्की स्टेशन पर मास्कोवाली ट्रेन से उतरा था, भीड़ में उस पर आग बरसा रही थीं, वे वही आँखें थीं (बिलकुल वही !) जिन्हें उसने जब वह रोगोझिन के यहाँ आराम-कुर्सी पर बैठ रहा था, पीछे से देखते हुए पकड़ा था। रोगोझिन ने इन्कार किया था—उसने विकृत, ठिठुरन पैदा करनेवाली मुस्कराहट से पूछा था, "किसकी आँखें थीं वे ?" और अभी कुछ ही देर पहले जब वह अग्लाया से मिलने पाव्लोव्स्क जाने के लिए स्टेशन पर ट्रेन में घुस रहा था और उसने अचानक फिर उन्हीं आँखों को देखा था, उस दिन तीसरी बार, तो प्रिंस का बहुत जी चाहा था कि वह रोगोझिन के पास चला जाए और कहे **उससे**, "किसकी आँखें थीं वे !" लेकिन वह भागकर स्टेशन के बाहर आ गया था और उसके प्यारा चाकू छुरीवाले की दुकान के सामने पहुँचते ही ठीक हो गए थे जब वह वहाँ खड़ा था और हिरन के सींग की मूठवाली एक चीज़ की क़ीमत साठ कोपेक आँक रहा था। एक विचित्र और बहुत भयानक पिशाच ने उसे अपने शिकंजे में जकड़ लिया था और किसी भी तरह उसे छोड़ने को तैयार नहीं था। जब वह ग्रीष्म उद्यान में लाइम के पेड़ के नीचे विचारों में डूबा हुआ बैठा था, उस पिशाच ने उसके कान में कहा था कि अगर रोगोझिन को उस पर नज़र ही रखनी थी और वह सबेरे से हर जगह उसका पीछा कर रहा था, तो यह पता लग जाने पर कि वह पाव्लोव्स्क नहीं गया था (जो उसके लिए यक़ीनन एक घातक ख़बर थी), वह निश्चित रूप से **वहाँ**, पेतेर्बुर्गस्काया स्तोरोना नामक इलाक़े के उस घर की ओर ज़रूर गया होगा, और वहाँ उसने यक़ीनन उसके, यानी प्रिंस के, आने की राह देखी होगी, जिसने उसी दिन सबेरे उसे वचन दिया था कि वह उससे मिलने कभी नहीं आएगा और यह कि "वह पीटर्सबर्ग इस काम के लिए आया भी नहीं था"। और अब वही प्रिंस इस घर की ओर भागा चला जा रहा था, और वहाँ रोगोझिन से उसकी मुलाक़ात हो ही गई तो ? उसने तो बस एक दुःखी आदमी को देखा था जिसकी मनोदशा उदास थी, लेकिन उसे समझना मुश्किल नहीं था। वह दुःखी आदमी अब तो अपने आपको छिपा भी नहीं रहा था। हाँ, सबेरे रोगोझिन ने किसी वजह से इस बात से इन्कार किया था और झूठ बोला था लेकिन स्टेशन पर तो उसने अपने आपको छिपाया भी नहीं था। अपने आपको छिपाया रोगोझिन ने नहीं बल्कि प्रिंस ने था। और अब इस घर के पास वह सड़क के पार सामनेवाली पटरी पर मुश्किल से पचास क़दम की दूरी पर दोनों हाथ सीने पर बाँधे खड़ा इन्तज़ार कर रहा था। यहाँ वह खुलेआम खड़ा था और ऐसा लग रहा था कि वह किसी प्रयोजन से ऐसा कर रहा था। वह आरोप लगानेवाले और न्याय करनेवाले की हैसियत से खड़ा रहा, न कि...न कि किसकी हैसियत से ?

और अब वह, प्रिंस, ख़ुद उसके पास क्यों नहीं गया था, बल्कि उसकी तरफ़ से मुँह फेर लिया था, जैसे उसने कुछ भी न देखा हो, हालाँकि उनकी आँखें चार हुई थीं। (हाँ, उनकी आँखें चार हुई

थीं ! और उन्होंने एक-दूसरे को देखा था।) अभी कुछ ही घंटे पहले क्या ख़ुद उसने यह नहीं चाहा था कि वह रोगोझिन का हाथ पकड़कर उसके साथ चला जाए ? क्या उसने ख़ुद नहीं चाहा था कि अगले दिन वह उसके पास जाकर उसे साफ़-साफ़ बता दे कि वह उससे मिलने गया था ? क्या वहाँ जाते हुए बीच रास्ते में, जब उसकी आत्मा सहसा उल्लास से भर उठी थी, क्या ख़ुद उसने अपने पिशाच के अस्तित्व से इन्कार नहीं किया था ? या रोगोझिन में सचमुच कोई ऐसी बात थी—यानी उस दिन उस आदमी की पूरी आकृति में, कुल मिलाकर उसके सभी शब्दों में, सभी गतिक्रमों में, सभी कामों में, देखने के ढंग में—जो प्रिंस के भयानक पूर्वाभास को और उन घृणित प्रलोभनों को उचित ठहरा सकती, जो उसके पिशाच ने उसके कान में कहे थे ? कोई ऐसी चीज़ जो बिलकुल प्रकट थी लेकिन जिसका विश्लेषण करना और जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन था, जिसे समुचित तर्क से ठीक साबित करना असम्भव था, लेकिन जो, उस सारी कठिनाई और असम्भावना के बावजूद, सर्वथा सम्पूर्ण और अमिट छाप डालती है, जो अनायास ही लगातार एक दृढ़ आस्था का रूप धारण कर लेती है।

किस बात की आस्था ? (उफ़, इस भावना की, उस "नीच पूर्वाभास" की विकरालता और उसके 'घिनौनेपन' ने प्रिंस को कितनी ग्लानि पहुँचाई थी और किस तरह उसने अपने आपको उसके लिए दोष दिया था।) "अगर हिम्मत हो तो बताओ—किस बात की ?" वह चुनौती देते हुए और निन्दा करते हुए लगातार अपने आपसे कहता रहा। "उसे शब्दों में व्यक्त करो, अपने पूरे विचार को साफ़-साफ़, बिलकुल सही सही, बिना किसी झिझक के सामने रखने की हिम्मत करो ! उफ़, मैं नीच हूँ !" वह गुस्से से बार बार दोहराता रहा और उसके चेहरे पर लाली दौड़ गई। "अब मैं उस आदमी की आँखों में आँखें डालकर कैसे देख सकूँगा ? उफ़, कैसा दिन है आज का ! हे भगवान, कैसा भयानक दुःस्वप्न है !"

पेतेर्बुर्गस्काया स्तोरोना वाले इलाके से इस लम्बी और व्यथापूर्ण यात्रा के अन्त में एक क्षण ऐसा आया जब प्रिंस को अचानक इस अदम्य इच्छा ने आ दबोचा कि वह फ़ौरन रोगोझिन के पास जाए, इन्तज़ार करे, उससे मिले, लज्जित होकर आँसू बहाते हुए उसे गले लगा ले, उसे सब कुछ बता दे, और सारे किस्से को ख़त्म कर दे। लेकिन वह अपने होटल पहुँच चुका था।...सवेरे उसे उस होटल से कितनी नफ़रत हुई थी, उन गलियारों से, पूरी इमारत से, अपने कमरे से—पहली बार देखने पर उसे कितनी नफ़रत हुई थी उससे। दिन में कितनी ही बार उसका दिल वहाँ वापस जाने के विचार से अजीब नफ़रत से भर उठा था।..."अरे, क्या हुआ मुझे, बीमार औरत की तरह हर पूर्वाभास पर विश्वास क्यों किए ले रहा हूँ मैं आज ?" उसने चिड़चिड़ाकर व्यंग से सोचा। लज्जा की, लगभग घोर निराशा की एक नई और असह्य लहर की वजह से वह वहीं फाटक पर गड़ा-सा रह गया। एक क्षण के लिए वह रुक गया। कभी-कभी लोगों के साथ ऐसा होता है—आकस्मिक, असह्य स्मृतियों के कारण, विशेष रूप से अगर उनके साथ ही लज्जा का आभास भी हो, वे आमतौर पर क्षण-भर के लिए निष्प्राण-से खड़े रह जाते हैं। "हाँ, मैं निर्दयी और कायर आदमी हूँ !" उसने बड़े उदास भाव से दोहराया और झटके से आगे बढ़ गया, लेकिन...एक बार फिर खड़ा हो गया।...

यों तो फाटक में हमेशा ही अँधेरा रहता था लेकिन उस वक़्त वहाँ कुछ ज़्यादा ही अँधेरा था—आसमान पर जो तूफ़ान के बादल छाए हुए थे और जिन्होंने सूरज की रोशनी को पूरी तरह ढक रखा था, वे उसी क्षण जब प्रिंस होटल की इमारत के पास पहुँच रहा था फट पड़े और मूसलाधार बारिश होने लगी। क्षण-भर रुकने के बाद जब वह झटके से फिर चल पड़ा था, उस

समय वह फाटक के शुरू में ही सड़क से फाटक में घुसने की जगह ही खड़ा था। अचानक धुँधलके में उसे फाटक के अन्दर सीढ़ियों के पास एक आदमी दिखाई दिया। ऐसा लगता था कि वह किसी बात का इन्तज़ार कर रहा था, लेकिन तेजी से सरककर ग़ायब हो गया। प्रिंस उसे ठीक से देख नहीं पाया और, ज़ाहिर है, वह यक़ीन के साथ यह नहीं बता सकता था कि वह कौन था। इसके अलावा, फाटक से कितने ही लोग आ-जा सकते थे; वह होटल था और लोग लगातार आते-जाते ही रहते थे। लेकिन अचानक उसने बिलकुल पूरी तरह और अकाट्य रूप से महसूस किया कि उसने उस आदमी को पहचाना था और वह यक़ीनन रोगोझिन था। क्षण-भर बाद प्रिंस सीढ़ियों के ऊपर उसके पीछे लपका। उसके दिल की धड़कन रुक-सी गई। "अभी सब साफ़ हुआ जाता है !" उसने विचित्र विश्वास के साथ मन ही मन कहा।

फाटक के नीचे से प्रिंस जिन सीढ़ियों पर भागा था, वह पहली और दूसरी मंज़िलों के गलियारों तक जाती थीं, जिनके किनारे-किनारे होटल के कमरे थे। सभी पुरानी इमारतों की तरह ये सीढ़ियाँ भी पत्थर की बनी हुई थीं। ये अँधेरी और सँकरी सीढ़ियाँ पत्थर के एक मोटे-से खम्भे के चारों ओर घूमती हुई ऊपर चली गई थीं। आधी मंज़िल पर जहाँ पहली चौरस जगह आती थी वहाँ खम्भे में ताक जैसी एक खोखली जगह थी, जो गज़-भर से ज़्यादा चौड़ी नहीं थी और जिसकी गहराई लगभग अठारह इंच थी। लेकिन उसमें आदमी के खड़े होने भर के लिए काफ़ी जगह थी। उस चौरस जगह पर पहुँचते ही अँधेरा होने के बावजूद प्रिंस ने फ़ौरन देखा कि कोई आदमी ताक में न जाने क्यों छिपा खड़ा है। प्रिंस अचानक दाहिनी ओर देखे बिना आगे बढ़ जाना चाहता था। उसने एक क़दम बढ़ा भी लिया था लेकिन वह अपने आपको वश में न रख सका और पीछे मुड़ा।

वे दो आँखें—**वही दो आँखें**—अचानक उसकी आँखों से चार हुईं। ताक में छिपा हुआ आदमी भी एक क़दम आगे बढ़ आया था। पल-भर के लिए वे दोनों आमने-सामने लगभग एक-दूसरे को छूते हुए खड़े रहे। अचानक प्रिंस ने उसका कन्धा पकड़कर उसे पीछे सीढ़ियों की ओर, रोशनी के और करीब घुमाया—वह उसकी सूरत साफ़-साफ़ देखना चाहता था।

रोगोझिन की आँखें चमक रही थीं और उन्माद-भरी मुस्कराहट से उसका चेहरा विकृत हो उठा था। उसने अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाया और उसमें कोई चीज़ चमचमा उठी। प्रिंस ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। उसे बस इतना याद रहा कि शायद उसने चिल्लाकर कहा था—"पर्फ़्योन, मुझे यक़ीन नहीं आता !..."

फिर अचानक उसके सामने जैसे किसी अथाह गर्त्त का मुँह खुल गया—उसकी आत्मा चकाचौंध कर देनेवाली **आंतरिक** ज्योति से नहा उठी। यह स्थिति शायद आधे सेकंड तक रही होगी, फिर भी उसे शुरुआत और अपनी भयानक चीख़ की पहली आवाज़ बिलकुल साफ़ और सचेतन रूप से याद थी, जो उसके सीने से अपने आप फूट निकली थी और जिसे वह लाख कोशिश करने पर भी दबा नहीं सका।...फिर उसकी चेतना तुरन्त बुझ गई और चारों ओर अँधेरा छा गया।

उसे मिरगी का दौरा पड़ गया था, बहुत अरसे के बाद पहला दौरा। यह बात अच्छी तरह मालूम है कि मिरगी के दौरे अचानक आते हैं। उस क्षण चेहरा भयानक रूप से विकृत हो जाता है, ख़ासतौर पर आँखें। सारा शरीर और चेहरे के विभिन्न अंग फड़कने लगते हैं और उनमें झटके लगते हैं। सीने से भयानक, अकल्पनीय, अनोखी चीख़ निकलती है; इस चीख़ में से हर मानवीय चीज़ का नाम-निशान मिट जाता है, और देखनेवाले के लिए बिलकुल असम्भव होता है, कम से कम कठिन तो होता ही है, कि वह कल्पना कर सके और इस बात को स्वीकार कर सके कि यह चीख़ उसी

आदमी की है। ऐसा लगता है कि उस आदमी के अन्दर कोई दूसरा है जो चीख़ रहा है। बहरहाल, कुछ लोग अपने अनुभव को बयान इसी तरह करते हैं; जिस आदमी को मिरगी का दौरा पड़ा हो उसे देखकर बहुत-से लोगों के मन में गहरा असह्य भय समा जाता है, जिसमें रहस्य तक का कुछ पुट होता है। यह मान लिया जा सकता है कि आकस्मिक भय के इसी अनुभव ने, जिसके साथ उस क्षण के और सभी भयानक अनुभव भी जुड़े रहे होंगे, रोगोझिन को निष्क्रिय कर दिया होगा और प्रिंस उस चाक़ू के, जिससे उस पर हमला किया गया था, अनिवार्य प्रहार से बच गया होगा। फिर, यह समझने का समय पाए बिना कि प्रिंस को मिरगी का दौरा पड़ा था, और यह देखकर कि वह उससे पीछे हटा और अचानक चित गिरकर सीढ़ियों से नीचे लुढ़क गया था, जिसके दौरान उसके सिर का पिछला हिस्सा एक सीढ़ी से ज़ोर से टकराया था, रोगोझिन सिर पर पाँव रखकर नीचे भागा, ज़मीन पर पड़े हुए शरीर से कतराया और बदहवास-सा होटल से बाहर निकल गया।

तेज झटकों में ऐंठता और छटपटाता हुआ रोगी का शरीर कम से कम पन्द्रह सीढ़ियों से नीचे सरकता हुआ बिलकुल नीचे जा लगा। जल्दी ही, हद से हद पाँच मिनट बाद, उसका पता लगा और उसके चारों ओर भीड़ जमा हो गई। उसके सिर के आस-पास बहुत-सा ख़ून देखकर लोग सोचने लगे कि उसे यह चोट अपने आप लग गई थी या दाल में कुछ काला था। लेकिन शीघ्र ही कुछ लोगों ने जान लिया कि मिरगी का दौरा था; होटल के एक आदमी ने प्रिंस को पहचान लिया कि वह उसी दिन सबेरे यहाँ आया था। एक अत्यन्त सौभाग्यपूर्ण परिस्थिति की बदौलत यह सारी गड़बड़ी अन्त में बहुत ही सुखकर रूप से दूर हो गई।

कोल्या ईवोल्गिन ने लगभग चार बजे 'तुला' होटल में वापस आने का वादा किया था, लेकिन वह पाव्लोव्स्क चला गया था; अचानक उसके जी में न जाने क्या आया कि उसने मिसेज़ येपांचिना के यहाँ खाना खाने का विचार छोड़ दिया, पीटर्सबर्ग वापस आया और जल्दी से 'तुला' गया, जहाँ वह सात बजे पहुँचा। प्रिंस उसके लिए जो पर्चा छोड़ गया था उससे यह मालूम होने पर कि प्रिंस शहर में था, वह फ़ौरन उसी पर्चे में दिए हुए पते पर खोजने निकल पड़ा। होटल में यह पता लगने पर कि प्रिंस बाहर गया हुआ था वह नीचे रेस्तराँ में गया और चाय पीते हुए और आर्गन-बाजे का संगीत सुनते हुए वहाँ उसकी राह देखने लगा। जब संयोग से उसके कान में यह बात पड़ी कि किसी को दौरा पड़ गया था, तो बिलकुल ठीक अटकल लगाकर वह उसी ओर लपका और उसने प्रिंस को पहचान लिया। तुरन्त आवश्यक उपाय किए गए। प्रिंस को उसके कमरे में ले जाया गया; हालाँकि दौरे का असर ख़त्म हो गया था लेकिन वह बड़ी देर तक पूरी तरह होश में नहीं आया। उसके सिर की चोट की जाँच करने के लिए जो डॉक्टर बुलाया गया था उसने मरहम-पट्टी कर दी और कहा कि घाव की वजह से कोई खतरा नहीं था। घंटे-भर बाद जब प्रिंस की समझ में अच्छी तरह आने लगा कि उसके आस-पास क्या हो रहा था तो कोल्या उसे घोड़ागाड़ी में बिठाकर होटल से लेबेदेव के यहाँ ले गया। लेबेदेव ने रोगी का स्वागत बेहद तपाक और सम्मान के साथ किया। प्रिंस की खातिर उसने देहात जल्दी जाने का फ़ैसला किया—दो दिन बाद वे सब पाव्लोव्स्क में थे।

6

देहात में लेबेदेव का बँगला बहुत बड़ा नहीं था, लेकिन वह आरामदेह था और कुछ हद तक खूबसूरत

भी। उसका जो हिस्सा किराए पर उठाया जानेवाला था उसे ख़ासतौर पर सज़ाया गया था। सड़क से घर में क़दम रखते ही बड़े-से बरामदे के किनारे लकड़ी के बड़े-बड़े हरे रंग के गमलों में कुछ नीबू और जंगली नारंगी के पेड़ और चमेली की बेलें लगाकर रख दी गई थीं, जिनकी वजह से लेबेदेव की राय में घर बहुत आकर्षक लगने लगा था। इनमें से कुछ पेड़ तो उसे बँगले के साथ ही मिले थे, और उनकी वजह से बरामदे पर जो निखार आ जाता था उससे वह इतना मन्त्रमुग्ध हो गया था कि उसने एक नीलाम में मौक़ा पाकर बड़े-बड़े गमलों में लगे हुए ऐसे ही कुछ और पेड़ खरीद लिए थे। आख़िरकार, जब सारे पेड़ बँगले में लाकर अपनी-अपनी जगहों पर रख दिए गए थे, तब लेबेदेव दिन में कई बार बरामदे की सीढ़ियाँ उतरकर भागता हुआ सड़क पर गया था और वहाँ से उसने अपनी सम्पत्ति की छटा का रस ले-लेकर सराहा था, और हर बार अपने दिमाग़ में उसने भावी किराएदार से माँगी जानेवाली रक़म कुछ बढ़ा दी थी।

कमज़ोर, उदास और शारीरिक रूप से बिलकुल निढ़ाल प्रिंस बँगला देखकर बहुत खुश हुआ। जिस दिन वह पाव्लोव्स्क पहुँचा, यानी दौरा पड़ने के दो दिन बाद प्रिंस देखने में लगभग बिलकुल चंगा हो गया, हालाँकि अन्दर ही अन्दर वह अपनी हालत ठीक नहीं महसूस कर रहा था। उन दो दिनों के दौरान उसे सभी लोगों को अपने आस-पास देखकर बहुत खुशी हुई थी; उसे कोल्या को देखकर खुशी हुई थी, जो उसके पास से शायद ही कभी हटकर कहीं गया था; वह लेबेदेव के सारे परिवार को देखकर खुश हुआ था (उसके भानजे के बिना, जो कहीं गायब हो गया था), और वह खुद लेबेदेव को देखकर खुश हुआ था; पीटर्सबर्ग से उसके रवाना होने से पहले जब जनरल ईवोल्गिन एक बार उससे मिलने आए थे तब भी उसे खुशी हुई थी। उसके पाव्लोव्स्क पहुँचने के दिन—वह वहाँ शाम के लगभग पहुँचा था—बरामदे में काफ़ी लोग उसके इर्द-गिर्द जमा हो गए थे—सबसे पहले गान्या आया था, जो इसी बीच बदल गया था और इतना दुबला हो गया था कि प्रिंस उसे बड़ी मुश्किल से पहचान पाया; फिर वार्या और प्तीत्सिन आए, उनका भी पाव्लोव्स्क में एक बँगला था। जनरल ईवोल्गिन शायद ही कभी लेबेदेव के घर से जाते थे और, ऐसा लगता था कि वह भी उसके साथ पाव्लोव्स्क चले आए थे। लेबेदेव उन्हें अपने साथ रखने की और उन्हें प्रिंस से मिलने जाने से रोकने की पूरी कोशिश करता था; वह उनके साथ दोस्त जैसा बर्ताव करता था, और ऐसा लगता था कि दोनों एक-दूसरे को बहुत अरसे से जानते थे। प्रिंस ने देखा कि उन दो दिनों के दौरान कभी-कभी उनके बीच बहुत विद्वता के विषयों तक पर लम्बी-लम्बी बहसें होती थीं, अकसर तो चिल्लाने और झगड़ने तक की नौबत आ जाती थी; इन बहसों से लेबेदेव को स्पष्टतः बहुत खुशी होती थी। ऐसा लगता था कि उनके बिना लेबेदेव का काम ही नहीं चल सकता। पाव्लोव्स्क आने के बाद से लेबेदेव ने अपने परिवार के साथ भी वही सतर्कता बरती थी जो वह प्रिंस के साथ बरतता आया था; प्रिंस की शान्ति में विघ्न न डालने के बहाने का सहारा लेकर वह किसी को उससे मिलने नहीं जाने देता था; इस बात का तनिक भी सन्देह होने पर कि उसकी बेटियाँ बरामदे में प्रिंस के पास जा रही थीं, वह पाँव पटकता था, और उनकी ओर झपटकर उन्हें पकड़ लेता था, वह वेरा को मुन्नी के साथ तक वहाँ नहीं जाने देता था, हालाँकि प्रिंस ने प्रार्थना की थी कि वह किसी को आने से रोका न करे।

"पहली बात तो यह," उसने प्रिंस के सीधे सवाल के जवाब में आख़िरकार कहा था, "अगर उन्हें बहुत ज़्यादा आज़ादी दे दी गई तो उनके दिल में इज्जत बिलकुल नहीं रह जाएगी, और दूसरे, उनके लिए यह अच्छा नहीं है।..."

"लेकिन क्यों नहीं ?" प्रिंस ने उसे झिड़कते हुए कहा। "सचमुच, आपकी इस नज़र-निगरानी

से मुझे परेशानी ही होती है। अकेले मैं उकता जाता हूँ, मैं आपसे कितनी बार कह चुका हूँ; और जिस तरह आप हर वक़्त अपने हाथ चलाते हुए पंजों के बल इधर-उधर टहलते रहते हैं उससे मैं और उकता जाता हूँ।"

प्रिंस का इशारा इस बात की ओर था कि लेबेदेव बाकी और सबको तो यह कहकर भगा देता था कि रोगी की शान्ति में कोई विघ्न न डाला जाए, लेकिन वह स्वयं पिछले दो दिनों के दौरान प्रिंस के यहाँ लगभग हर समय ही आता रहा था, और हर बार वह पहले दरवाज़ा खोलता था, फिर अपना सिर अन्दर डालकर कमरे का मुआइना करता था मानो इस बात का पक्का भरोसा कर लेना चाहता हो कि प्रिंस अभी तक वहाँ था और भाग नहीं गया था, और यह सब कुछ कर लेने के बाद वह धीरे-धीरे, चुपके से दबे पाँव प्रिंस की कुर्सी के पास आता था, यहाँ तक कि कभी-कभी वह अनायास ही अपने किराएदार को चौंका देता था। वह लगातार यही पूछता रहता था कि प्रिंस को किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं थी, और आखिरकार जब प्रिंस उससे साफ़-साफ़ कहना शुरू करता था कि उसे शान्तिपूर्वक अकेला छोड़ दिया जाए, तब वह बड़े आज्ञाकारी भाव से एक शब्द भी कहे बिना दरवाज़े की ओर वापस चला जाता था और तमाम वक़्त अपने हाथ चलाता रहता था, मानो यह कहना चाहता हो कि वह तो बस यों ही आ गया था, कि वह एक शब्द भी नहीं बोलेगा, कि वह बाहर निकल चुका था और अब फिर कभी नहीं आएगा। लेकिन दस ही मिनट बाद, या हद से हद पन्द्रह मिनट बाद, वह फिर आ पहुँचता था। लेबेदेव मन ही मन अपने आपको कोल्या से बहुत हीन समझता था और इस बात पर अपमान-भरी खीझ भी महसूस करता था कि वह बिना किसी रोक-टोक के प्रिंस के पास चला जाता था। कोल्या ने देख लिया था कि लेबेदेव आधे-आधे घंटे तक दरवाज़े के बाहर कान लगाए सुनता रहता था कि वह और प्रिंस क्या बातें कर रहे हैं और, ज़ाहिर है, उसने प्रिंस को इसके बारे में बता दिया था।

"आप मुझे मानो अपनी जायदाद समझते हैं जो इस तरह ताले-चाभी में बन्द रखते हैं," प्रिंस आपत्ति कर रहा था। "कम से कम देहात में तो मैं ऐसी हालत में रहना नहीं चाहता, और मैं बिलकुल साफ़-साफ़ बता देना चाहता हूँ कि मेरा जिससे जी चाहेगा उससे मिलूँगा और जहाँ जी चाहेगा जाऊँगा।"

"बेशक, बेशक," लेबेदेव ने अपने हाथ चलाते हुए जवाब दिया।

प्रिंस ने उसे सिर से पाँव तक देखा।

"और यह बताइए, लुक्यान तिमोफ़ेयेविच, आप अपने साथ वह छोटी-सी तिजोरी ले आए हैं कि नहीं, जो आपके सिरहाने लटकी रहती थी ?"

"नहीं तो, वह तो मैं नहीं लाया।"

"क्या, वहीं छोड़ आए हैं ?"

"मैं उसे ला नहीं सकता था। उसे दीवार में से उखाड़ना पड़ता।...वह उसमें मजबूती से जड़ी हुई है—मजबूती से !"

"अच्छा, यहाँ शायद वैसी ही दूसरी होगी, है न ?"

"उससे अच्छी—कहीं अच्छी, उसी की वजह से तो मैंने यह घर खरीदा।"

"अच्छा, यह बात है। वह कौन था जिसे अभी कोई घंटा-भर पहले आप मुझसे मिलने के लिए यहाँ नहीं आने दे रहे थे ?"

"अरे, वह...वह तो जनरल साहब थे। आपका कहना ठीक है, मैंने उन्हें आपसे मिलने अन्दर नहीं आने दिया। वह आपके मिलने लायक़ आदमी नहीं हैं। मैं उनकी बड़ी इज़्ज़त करता हूँ, प्रिंस।

वह...वह...कमाल के आदमी हैं। आपको मेरी बात का यक़ीन नहीं आता ? अच्छी बात है, ख़ुद देख लीजिएगा। फिर भी...आलीजनाब प्रिंस साहब, आप उनसे न ही मिलें तो अच्छा होगा।"

"क्यों न मिलूँ, यह तो बताइए ? और अब आप, लेबेदेव साहब, पंजों के बल क्यों खड़े हैं, और आप हमेशा मेरे पास इस तरह क्यों आते हैं जैसे आप मुझे कान में कोई भेद की बात बतानेवाले हों।"

"नीच हूँ, बहुत नीच हूँ, ख़ुद महसूस करता हूँ," लेबेदेव ने भावावेश में आकर छाती पीटते हुए अप्रत्याशित उत्तर दिया। "लेकिन जनरल साहब कहीं आपके लिए ज़रूरत से ज़्यादा तो मेहरबान नहीं हो जाएँगे ?"

"ज़रूरत से ज़्यादा मेहरबान ?"

"जी हाँ, मेहरबान। पहली बात तो यह कि वह यहाँ आकर मेरे साथ रहना भी चाहते हैं। इस पर मुझे कोई एतराज नहीं है, लेकिन वह बेहद बेचैन तबियत के हैं। उनकी अड़ है कि वह मेरे रिश्तेदार हैं। मैं उनके साथ अपनी रिश्तेदारी का कई बार हिसाब कर चुका हूँ, नतीजा यह निकला कि हम लोग किसी क़िस्म के ससुराली रिश्तेदार हैं। आप भी अपनी माँ के रिश्ते से उनके किसी तरह के भानजे होते हैं, कल उन्होंने यह बात मुझे समझाई थी। अगर, आलीजनाब साहब, आप उनके भानजे हैं, तो मैं भी आपका रिश्तेदार हूँ। वैसे यह कोई बड़ी बात नहीं है, बस एक छोटी-सी कमज़ोरी है—लेकिन अभी वह मुझे यक़ीन दिला रहे थे कि, ज़िन्दगी भर, जब वह एक लेफ़्टिनेंट थे तब से पिछले साल ग्यारह जून तक उनके यहाँ रोज दो सौ से कम लोग मेज़ पर नहीं बैठते थे। उन्होंने तो यहाँ तक दावा किया कि ये लोग खाने की मेज़ पर से कभी उठते ही नहीं थे, तीस साल तक रोज लगातार पन्द्रह घंटे दिन और रात का खाना खाते थे और चाय भी पीते थे, और सो भी बीच में रुके बिना यहाँ तक कि मेज़पोश बदलने का वक़्त भी मुश्किल ही से मिल पाता था। जैसे ही कोई उठकर जाता था वैसे ही कोई दूसरा आ जाता था, और छुट्टियों के दिन और राज-परिवार के लोगों के जन्मदिवस के अवसरों पर तो मेहमानों की संख्या तीन सौ तक पहुँच जाती थी। और रूस की स्थापना की हज़ारवीं सालगिरह पर तो उन्होंने पूरे सात सौ मेहमान गिने थे। यह उनका ख़ब्त है, और क्या कहा जाए। इस तरह के किस्से बहुत बुरा संकेत होते हैं, साहब, और इस तरह की आवभगत करनेवाले लोगों को अपने घर में आने देना ख़तरे से ख़ाली नहीं है। इसीलिए मैंने सोचा कि इस तरह के आदमी की आवभगत शायद हमारे-आपके लिए ज़रूरत से कुछ ज़्यादा ही भारी पड़े।"

"लेकिन आपकी तो उनसे बहुत अच्छी निभती है न ?"

"अरे, हम बहुत गहरे दोस्त हैं और मैं तो इन सब बातों को मज़ाक़ समझता हूँ। ससुराली रिश्ता है तो रहे—इसमें मुझे क्या हर्ज ? मेरी इज़्ज़त ही बढ़ती है दो सौ आदमियों और रूस की हज़ारवीं सालगिरह के बावजूद—मेरी नज़र में वह बहुत ही लाजवाब आदमी हैं। मैं यह बात सच्चे दिल से कह रहा हूँ, साहब। प्रिंस, अभी आप भेद की बातों की चर्चा कर रहे थे—मेरा मतलब है कि मैं आपके पास इस तरह आता हूँ जैसे कोई भेद की बात बताना चाहता हूँ। सच पूछिए तो भेद की बात तो है—किसी ने अभी मुझसे कहा है कि वह आपसे छिपकर मिलना चाहती हैं।"

"इसमें भेद की बात है ? बिलकुल नहीं। मैं ख़ुद जाकर उनसे मिलूँगा, आज भी मिल सकता हूँ।"

"अरे नहीं, बिलकुल नहीं !" लेबेदेव ने अपने हाथ हिलाते हुए चीख़कर कहा। "और वह उस

चीज़ से नहीं डरती हैं जैसा कि आप समझते हैं। बहरहाल, वह राक्षस रोज आपका हाल पूछने आता है। जानते हैं आप ?"

"आप उसे राक्षस कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ही कहते हैं। इससे मेरे मन में कुछ शक पैदा होता है।"

"अरे नहीं, साहब, आपके लिए शक करने की कोई ज़रूरत नहीं है," लेबेदेव ने जल्दी से आश्वस्त करते हुए कहा। "मैं तो बस इतना समझाना चाहता था कि उस शख़्स को उसका कोई डर नहीं है, बल्कि किसी दूसरी ही चीज़ का, बिलकुल किसी दूसरी ही चीज़ का।"

"अरे, किस चीज़ का, जल्दी बताओ मुझे !" प्रिंस ने लेबेदेव के चेहरे की रहस्यमयी विकृत मुद्राओं को देखते हुए अधीरता से पूछा।

"अरे, यही तो भेद की बात है।"

यह कहकर लेबेदेव ने खीसें निकाल दीं।

"किसका भेद ?"

"आपका भेद। आलीजनाब प्रिंस साहब, आप ही ने तो इसकी चर्चा आपके सामने करने से मुझे मना किया था।..." लेबेदेय ने मुस्कराकर कहा और इस बात का भरपूर मज़ा लेते हुए कि उसने प्रिंस की जिज्ञासा को उकसाकर अधीरता के शिखर तक पहुँचा दिया था, अचानक उसने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा: "वह डरती है अग्लाया इवानोव्ना से।"

प्रिंस मुँह बनाकर एक मिनट तक चुप रहा।

"लेबेदेव, मैं क़सम खाकर कह रहा हूँ कि मैं आपका घर छोड़ दूँगा," उसने अचानक कहा। "गव्रीला अर्दालिओनोयिच और प्तीत्सिन मियाँ-बीवी कहाँ हैं ? आपके यहाँ ? क्या आप उन्हें भी फुसला ले गए ?"

"आ रहे हैं, अभी आ रहे हैं। और जनरल साहब भी, उनके पीछे ही। मैं सारे दरवाज़े खोल दूँगा और मैं बेटियों को भी यहीं बुला लाऊँगा—सबको, एक-एक को—अभी, फ़ौरन !" सहमा हुआ लेबेदेय अपनी बाँहें चलाते हुए एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक भागते हुए दबे स्वर में कह रहा था।

उसी समय कोल्या ने बाहर सड़क से बरामदे में आकर सूचना दी कि नए मिलनेवाले—मिसेज़ येपांचिना और उनकी तीनों बेटियाँ उसके पीछे-पीछे ही आ रहे हैं।

"प्तीत्सिन मियाँ-बीवी और गव्रीला अर्दालिओनोविच को आने दूँ कि नहीं ? जनरल साहब को आने दूँ कि नहीं ?" यह खबर सुनकर लेबेदेय हक्का-बक्का रह गया और उसने जल्दी से प्रिंस के पास जाकर पूछा।

"क्यों नहीं ? जिसका जी चाहे आने दीजिए ! मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ, लेबेदेव, कि शुरू से ही आप लोगों से मेरे सम्बन्धों के बारे में कुछ ग़लत समझ गए हैं। लगता है कि आप लगातार ग़लती कर रहे हैं। रत्ती-भर भी कोई वजह नहीं है कि मैं किसी से छिपकर रहूँ या कतराऊँ," प्रिंस ने हँसकर कहा।

उसे देखकर लेबेदेव ने भी हँस देना उचित समझा। अपनी गहरी उत्तेजना के बावजूद लेबेदेव भी बेहद खुश लग रहा था।

कोल्या जो ख़बर लाया था वह सच थी। वह येपांचिन-परिवार के लोगों के आने से ख़बर देने के लिए कुछ मिनट पहले आ गया था, इसलिए मेहमान अचानक दो तरफ़ से आ पहुँचे—येपांचिन-परिवार के लोग बरामदे की ओर से और प्तीत्सिन मियाँ-बीवी, गान्या और

जनरल ईवोल्गिन अन्दर के कमरों से।

येपांचिन-परिवार के लोगों को अभी कोल्या से पता चला था कि प्रिंस बीमार था और पाव्लोव्स्क में था। उस वक़्त तक मिसेज़ येपांचिना बहुत ही तकलीफ़देह परेशानी की हालत में थीं। दो दिन पहले जनरल येपांचिन ने अपने परिवार के लोगों को प्रिंस के विज़िटिंग-कार्ड की ख़बर दी थी और लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना को पक्का यक़ीन था कि प्रिंस कार्ड भिजवाने के बाद ही पाव्लोव्स्क ज़रूर आएगा और उन लोगों से फ़ौरन मिलेगा। बेटियाँ उन्हें बेकार यक़ीन दिलाने की कोशिश करती रहीं कि जिस आदमी ने छह महीने से चिट्ठी तक नहीं लिखी थी उसे उनसे मिलने आने की ऐसी क्या जल्दी पड़ी होगी और उसे पीटर्सबर्ग में अपने ही बहुतेरे काम होंगे, उसे उनकी चिन्ता करने की फ़ुर्सत ही कहाँ होगी—उन्हें उसके कारोबार के मामलात की क्या जानकारी थी ? उन बातों पर लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना बहुत नाराज़ थीं और वह शर्त बदने को तैयार थीं कि प्रिंस हद से हद अगले ही दिन ज़रूर आएगा हालाँकि "तब तक काफ़ी देर हो चुकी होगी।" उस दिन सवेरे से वह उसकी राह देखती रही थीं; वे लोग दोपहर के खाने के वक़्त उसका इन्तज़ार करती रहीं, शाम के वक़्त भी और जब बहुत अँधेरा हो गया तो मिसेज़ येपांचिना बात-बात पर झुँझलाने लगीं और हर किसी से झगड़ पड़ीं; अलबत्ता, उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि झगड़े की वजह प्रिंस था। तीसरे दिन भी उसकी कोई चर्चा तक नहीं हुई। जब दोपहर के खाने के वक़्त अग्लाया के मुँह से अनायास ही निकल गया कि माँ प्रिंस के न आने पर नाराज़ थीं, जिस पर जनरल साहब ने फ़ौरन टिप्पणी की कि इसमें उनका कोई दोष नहीं था—तो लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना खाने की मेज़ से उठकर खड़ी हुईं और गुस्से से भरी हुई कमरे के बाहर निकल गईं। आख़िरकार कोल्या ने शाम को आकर ताज़ा ख़बर दी और प्रिंस के कारनामों के बारे में उसे जो कुछ मालूम था उसका पूरा ब्योरा कह सुनाया। नतीजा यह हुआ कि लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना तो विजयोल्लास से फूल उठीं, और कोल्या को बुरी तरह फटकारा गया। "कई-कई दिन तक यहाँ ऐसे चिपका रहता है कि पिण्ड छुड़ाना मुश्किल हो जाता है, लेकिन अब कम से कम हम लोगों को तो ख़बर भिजवा देता अगर ख़ुद हमारे यहाँ आने की बात तेरे मन में नहीं आई।" "पिण्ड छुड़ाना मुश्किल हो जाता है" शब्दों से कोल्या नाराज़ हो जानेवाला था लेकिन टाल गया, और अगर यह बात इतनी अपमानजनक न होती तो वह उसे बिलकुल ही माफ़ कर देता—प्रिंस की बीमारी की ख़बर सुनने पर लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना को इतना परेशान और चिन्तित देखकर वह सचमुच इतना ही खुश था। वह बड़ी देर तक आग्रह करती रहीं कि किसी को ख़ासतौर पर पीटर्सबर्ग भिजवाया जाए कि किसी नामी डॉक्टर को खोजकर पहली गाड़ी से यहाँ ले आए। बेटियों ने उन्हें ऐसा करने से मना किया; पर जब मिसेज़ येपांचिना फ़ौरन जाकर बीमार को देखने के लिए तैयार हुईं तो बेटियाँ भी साथ चल पड़ीं।

"वह कुछ ही देर का मेहमान है," मिसेज़ येपांचिना घबराई हुई इधर उधर घूमते हुए कहती रहीं, "और हम लोग यहाँ शिष्टाचार की बारीकियाँ लिए बैठे रहेंगे, क्यों ? आख़िर वह परिवार का मित्र है कि नहीं ?"

"हमें भी ऐसे नहीं घुस जाना चाहिए कि मान न मान मैं तेरा मेहमान," अग्लाया ने अपना मत व्यक्त किया।

"अच्छी बात है, तो न चलो। और यह अच्छा भी रहेगा—अगर येव्गेनी पाव्लोविच रादोम्स्की आए तो यहाँ उनसे मिलने के लिए कोई नहीं रह जाएगा।"

इन शब्दों को सुनकर अग्लाया भी फ़ौरन उनके पीछे हो ली; सच तो यह है कि शुरू से ही उसका यही इरादा था। प्रिंस श., जो अदेलईदा के पास बैठे थे, उसके अनुरोध करने पर फ़ौरन

महिलाओं के साथ चलने को तैयार हो गए। पहले भी, येपांचिन-परिवार के साथ जान-पहचान होने के शुरू में, जब उन्होंने उन लोगों को प्रिंस की चर्चा करते सुना था तो उन्हें बेहद दिलचस्पी पैदा हुई थी। मालूम यह हुआ कि वह उसे जानते थे; अभी कुछ ही दिन पहले उनकी कहीं मुलाक़ात हुई थी, और दोनों ने किसी छोटे-से क़स्बे में दो हफ़्ते साथ बिताए थे। यह कोई तीन महीने पहले की बात थी। प्रिंस श. ने उन लोगों को प्रिंस के बारे में बहुत कुछ बताया था और उसके बारे में आमतौर पर उनकी राय अच्छी थी, इसलिए अब वह बड़ी खुशी से अपने एक पुराने परिचित से मिलने जा रहे थे। उस शाम जनरल येपांचिन घर पर नहीं थे। रादोम्स्की भी अभी तक नहीं आए थे।

येपांचिन-परिवार के यहाँ से लेबेदेव का बँगला पाँच सौ गज़ से ज़्यादा दूर नहीं था। मिसेज़ येपांचिना को सबसे पहले जो अरुचिकर आघात पहुँचा वह था प्रिंस के यहाँ इतने बहुत-से मिलनेवालों का मौजूद होना, इस बात को तो जाने ही दीजिए कि उनमें दो-तीन लोग तो ऐसे थे जिनसे उन्हें सख़्त नफ़रत थी; दूसरा धक्का आश्चर्य का था, यह देखने पर कि उन्होंने मृत्यु-शय्या पर पड़े दम तोड़ते हुए जिस आदमी की कल्पना की थी उसके बजाय बहुत ही बाँके कपड़े पहने हुए एक नौजवान, देखने में बिलकुल तनदुरुस्त और हँसता हुआ उनसे मिलने के लिए चला आ रहा था। वह तो चौंककर ठिठक भी गईं, जिस पर कोल्या को बेहद मज़ा आया। वह ज़रूर उन्हें चलने से पहले ही बिलकुल अच्छी तरह समझा सकता था कि न कोई मरने की सोच रहा था और न ही मृत्यु-शय्या का कोई सवाल था। लेकिन चालाक ने मिसेज़ येपांचिना के हास्यास्पद गुस्से को पहले से ताड़कर उन्हें कुछ भी नहीं बताया था; कोल्या ने अनुमान लगा लिया था कि अपने प्यारे दोस्त प्रिंस का स्वास्थ्य इतना अच्छा देखकर वह ज़रूर नाराज़ होंगी। कोल्या ने इतनी अशिष्टता तक की कि अपने इस अनुमान को ज़ोर से व्यक्त कर दिया ताकि लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना को सचमुच भड़का दे, क्योंकि दोनों के बीच एक-दूसरे के प्रति स्नेह होने के बावजूद उसकी हमेशा उनसे नोक-झोंक चलती रहती थी, कभी-कभी तो बहुत बुरी तरह।

"ठहर जाओ, बच्चू, इतनी जल्दी न करो—अभी से बग़लें न बजाओ !" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने आराम-कुर्सी पर बैठते हुए जवाब दिया, जो प्रिंस ने उनके लिए लाकर रख दी थी।

लेबेदेव, प्तीत्सिन और जनरल ईवोल्गिन जल्दी-जल्दी लड़कियों के लिए कुर्सियाँ लाने के लिए लपके। जनरल साहब ने अग्लाया के लिए कुर्सी रख दी। लेबेदेव ने प्रिंस श. के लिए कुर्सी रख दी और इसके दौरान उसने जिस तरह अपनी पीठ झुकाई उसी से वह उनके प्रति अपना गहरा सम्मान प्रकट करने में सफल हो गया। वार्या ने हमेशा की तरह बहुत उल्लसित होकर दबे स्वर में लड़कियों से अभिवादन का आदान-प्रदान किया।

"बिलकुल सच है, प्रिंस, कि मैं तो सोच रही थी कि तुम बिस्तर से लगे होंगे—डर के मारे मैंने हर चीज़ को इतना बढ़ा-चढ़ा दिया और मैं झूठ नहीं कहूँगी—अभी तुम्हारा खिला हुआ चेहरा देखकर मुझे कोई खुशी नहीं हुई। लेकिन मैं क़सम खाकर कहती हूँ कि ऐसा क्षण-भर ही रहा, जब तक मैंने अपनी अक़्ल नहीं दौड़ाई। अक़्ल दौड़ाने के बाद मैं हमेशा ज़्यादा समझदारी की बात कहती हूँ और ज़्यादा समझदारी से काम करती हूँ। मैं समझती हूँ कि तुम भी ऐसा ही करते होगे। सच तो यह है कि अगर मेरे कोई बेटा होता तो उसके चंगे हो जाने की मुझे उतनी खुशी न होती जितनी तुम्हें तनदुरुस्त देखकर हो रही है। और अगर तुम्हें मेरी बात का विश्वास न आए तो शर्म की बात है तुम्हारे लिए, मेरे लिए नहीं। और यह शैतान लड़का मेरे साथ ऐसे ही नहीं मज़ाक़ करने की हिम्मत करता है। मेरे ख़्याल से यह तुम्हारी सरपरस्ती में है। ख़ैर, मैं तुम्हें बताए देती हूँ कि किसी

न किसी दिन वह वक़्त भी आएगा कि मैं इसे पहचानने से भी इन्कार कर दूँगी।"

"आख़िर मैंने किया क्या ?" कोल्या चिल्लाकर बोला। "मैं आपको चाहे जितना यक़ीन दिलाता कि प्रिंस की तबियत फिर लगभग बिलकुल ठीक हो गई है, आप मेरी बात किसी तरह मानतीं ही नहीं, क्योंकि उसके बिस्तर पर पड़े दम तोड़ रहे होने की कल्पना कहीं ज़्यादा दिलचस्प थी।"

"तुम यहाँ कितने दिन रहोगे ?" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने प्रिंस को सम्बोधित करते हुए पूछा।

"गर्मियों-भर और शायद उससे भी ज़्यादा।"

"तुम अकेले ही हो न ? शादी तो नहीं हुई ?"

"जी नहीं, शादी नहीं हुई।" प्रिंस इस कटाक्ष के भोलेपन पर मुस्करा दिया।

"मुस्कराओ नहीं—ऐसा आख़िर होता ही है। जहाँ तक बँगले का सवाल है, तुम आकर हम लोगों के साथ क्यों नहीं रहे ? हमारे यहाँ का एक पूरा हिस्सा खाली पड़ा है। बहरहाल, जैसी तुम्हारी मर्जी। क्या यह तुमने उससे किराए पर लिया है ? उससे ?" उन्होंने सिर से झटके से लेबेदेव की ओर इशारा करते हुए दबे स्वर में पूछा। "आख़िर वह इस तरह मुँह बनाए क्यों फिरता है ?"

उसी समय वेरा हमेशा की तरह गोद में बच्चा लिए हुए अन्दर के कमरे से निकलकर बाहर बरामदे में आई। लेबेदेव, जो कुर्सियों के आस-पास अधीरता से मंडला रहा था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि करे तो क्या करे लेकिन जो वहाँ से जाना भी नहीं चाहता था, वेरा पर टूट पड़ा और उसे बरामदे से भगा देने की कोशिश में ज़ोर से अपने हाथ चलाने लगा और अपने आपको बिलकुल भूलकर ज़ोर से पाँव पटकने लगा।

"पागल हो गया है क्या ?" मिसेज़ येपांचिना ने जोड़ दिया।

"जी नहीं, वह..."

"पिए हुए है, शायद ? मैं तो कहूँगी कि तुम्हारी संगत कुछ अच्छी नहीं है, है न ?" उसने मेहमानों को भी अपनी नज़र के घेरे में समेटते हुए तड़ से कहा। "मगर कितनी प्यारी लड़की है ! कौन है ?"

"वेरा है, लेबेदेव की बेटी।"

"अच्छा ! बहुत ही प्यारी है ! मैं उससे जान-पहचान पैदा करना चाहूँगी।"

लेकिन मिसेज़ येपांचिना के प्रशंसा-भरे शब्द सुनकर लेबेदेव अपनी बेटी को परिचय कराने के लिए ख़ुद खींचे ला रहा था।

"अनाथ हैं, बेचारे अनाथ !" वह पास आते हुए पिघला जा रहा था। "और यह अनाथ बच्ची इसकी बहन और मेरी बेटी ल्युबोव है, मेरी क़ानूनी सन्तान, मेरी प्यारी बीवी येलेना की सन्तान जो छह हफ़्ते हुए बच्चा जनने में मर गई, ईश्वर की मर्जी।...जी हाँ, मैडम...वह माँ की जगह है हालाँकि वह बस इसकी बहन है...बस बहन।..."

"और आप, जनाब," मिसेज़ येपांचिना ने अचानक बेहद गुस्से से भड़ककर कहा, "बस निरे बेवक़ूफ़ हैं, माफ़ कीजिएगा। अच्छा, बस इतना ही काफ़ी है। मेरे ख़्याल में आप खुद इस बात को महसूस करते होंगे।"

"बिलकुल सच कहा आपने, मैडम," लेबेदेव ने बड़े अदब से झुककर जवाब दिया।

"अच्छा, लेबेदेव साहब, मैंने सुना है कि आप एपोकैलिप्स ग्रन्थ की व्याख्या बहुत अच्छी कर लेते हैं। क्या यह सच है ?" अग्लाया ने पूछा।

"बिलकुल सच है...पिछले पन्द्रह साल से कर रहा हूँ।"

"मैंने आपके बारे में सुना है। अख़बारों में भी आपके बारे में कुछ छपा था, छपा था न ?"

"जी नहीं, वह एक दूसरा व्याख्या करनेवाला था, कोई दूसरा, वह मर चुका है, और मैंने उसकी जगह ले ली है," लेबेदेव ने ख़ुशी से फूले न समाते हुए जवाब दिया।

"मेरे ऊपर इतना एहसान कीजिए कि हम लोग चूँकि पड़ोसी हैं, इसलिए जल्दी ही किसी दिन मुझे उसकी व्याख्या करके बताइए। मुझे एपोकैलिप्स में कुछ भी समझ में नहीं आता।"

"अग्लाया इवानोव्ना, मैं तुम्हें पहले से बता दूँ यह सब सरासर इसका ढोंग है, यक़ीन जानो," जनरल ईवोल्गिन ने जल्दी से बीच में कहा, जो बहुत बेचैनी महसूस कर रहे थे और बातचीत में हिस्सा लेने को बहुत उत्सुक थे। "यह तो ठीक है," अग्लाया के पास बैठते हुए उन्होंने अपनी बात जारी रखी, "देहात में छुट्टी बिताने की अपनी ही खूबियाँ और अपने ही मजे हैं, और इस चालबाज़ से एपोकैलिप्स की व्याख्या करने को कहना किसी भी दूसरे मनोरंजन जैसा ही मनोरंजन है, और सच पूछिए तो मन बहलाने का बहुत समझदारी का तरीक़ा है, लेकिन मैं...ऐसा लगता है कि तुम मुझे कुछ अचरज से देख रही हो। मैं अपना परिचय करा दूँ—जनरल ईवोल्गिन। मैं तुम्हें गोद में खिलाया करता था।"

"आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई, जनाब," अग्लाया ने अपनी हँसी रोकने की भरपूर कोशिश करते हुए बुदबुदाकर कहा। "मैं आपकी बीवी और बेटी को जानती हूँ।"

मिसेज़ येपांचिना खौल उठीं। उनके अन्दर ही अन्दर बड़ी देर से जो कुछ उबल रहा था उसे अचानक फूट पड़ना ही था। वह जनरल ईवोल्गिन को बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं, जिन्हें वह जानती थीं, हालाँकि बहुत पहले।

"आप हमेशा की तरह झूठ बोल रहे हैं, जनाब," वह गुस्से से उन पर बरस पड़ीं। "आपने इसे कभी गोद में नहीं खिलाया है।"

"तुम्हें याद नहीं रहा, माँ, त्वेर में यह मुझे गोद में लेकर घुमाते थे," अग्लाया ने जनरल साहब के शब्दों की पुष्टि करते हुए अचानक कहा। "तब हम लोग त्वेर में रहते थे। मैं तब छह साल की थी, मुझे याद है। इन्होंने मुझे तीर-कमान बनाकर दिया था और तीर चलाना सिखाया था, और मैंने एक कबूतर मारा था। आपको याद है न, हम लोगों ने मिलकर कबूतर मारा था।"

"और इन्होंने मुझे दफ़्ती का टोप और लकड़ी की तलवार लाकर दी थी," अदेलईदा चहककर बोली। "मुझे अच्छी तरह याद है।"

"मुझे भी याद है," अलेक्सान्द्रा ने कहा, "तुम घायल कबूतर के बारे में लड़ी थीं और तुम्हें कोने में खड़ा कर दिया गया था। अदेलईदा वही तलवार लगाए और वही टोप पहने वहाँ खड़ी थीं।"

जनरल ईवोल्गिन ने **यों ही** अग्लाया से कह दिया था कि उन्होंने उसे गोद में खिलाया था, बस इसलिए कि किसी तरह वह बातचीत का सिलसिला शुरू करें और इसलिए कि वह नौजवान लड़के-लड़कियों से जान-पहचान पैदा करने के लिए हमेशा इसी तरह बातचीत शुरू करते थे। लेकिन इस बार सौभाग्य से उन्होंने सच बात कही थी लेकिन वह इस बात को भूल भी गए थे। इसलिए जब अग्लाया ने यह पुष्टि की कि उन्होंने मिलकर कबूतर मारा था तो उनका अतीत बिजली की तरह कौंधकर वापस आ गया और उन्हें हर बात रत्ती-रत्ती याद आ गई, जैसा कि बूढ़े लोगों के साथ अकसर होता है कि उन्हें अपने सुदूर अतीत की कोई छोटी-सी भूली-बिसरी बात याद आ जाती है। यह बताना तो कठिन है कि उस याद में ऐसी क्या बात थी जिसकी जनरल साहब के मन पर इतनी गहरी छाप पड़ी, जो इस वक़्त भी हमेशा की तरह कुछ नशे में थे; लेकिन वह

अचानक अत्यन्त विचलित हो उठे।

"मुझे याद है...सब याद है मुझे !" वह जोश के साथ बोले। "तब मैं मामूली सीनियर लेफ़्टिनेंट था। तुम बहुत छोटी-सी बच्ची थीं...बहुत ही प्यारी छोटी-सी बच्ची। मेरी बीवी नीना...गान्या... मैं...तब तुम्हारे घर में हमारा आना-जाना था।...इवान फ़्योदोरोविच..."

"और अब देखिए, आपकी क्या हालत हो गई है !" मिसेज़ येपांचिना बीच में बोल पड़ीं। "अगर आपके दिल पर इस बात का इतना गहरा असर हुआ है तो इसका मतलब है कि आप अपनी नेक भावनाओं को शराब के साथ पी नहीं गए हैं। मगर आपने बीवी को परेशानियों में डालकर बिलकुल मार ही डाला है। अपने बच्चों की देखभाल करने के बजाय कर्जदारों के जेल में बैठे सज़ा काटते रहे हैं। जाइए, साहब, दरवाज़े के पीछे जाकर किसी कोने में खड़े हो जाइए और जी भरकर रोइए। अपने पिछले भोलेपन को याद कीजिए, शायद भगवान आपको माफ़ कर दे। जाइए...जाइए...मैं सचमुच कह रही हूँ। सुधरने के लिए पश्चाताप भरे हृदय से अपने बीते जीवन को याद करने से बेहतर और कुछ नहीं होता है।"

लेकिन इस बात को दोहराने की कोई ज़रूरत नहीं थी कि वह गम्भीरता से यह बात कह रही थीं—सभी पक्के शराबियों की तरह जनरल साहब भी बहुत भावुक थे और सभी अत्यन्त पतित शराबियों की तरह वह भी अपने सुखी अतीत की याद बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। वह उठे और चुपचाप दरवाज़े की ओर चल पड़े, लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना को फ़ौरन उन पर तरस आ गया।

"अर्दालिओन अलेक्सान्द्रोविच," उन्होंने पीछे से पुकारकर कहा, "ज़रा ठहरिए! हम सब पापी हैं। जब आप महसूस करें कि आपकी आत्मा आपको ज़्यादा कम धिक्कार रही है तब हमसे मिलने आइएगा, और हम लोग बीते दिनों की बातें करेंगे। मैं खुद शायद आपसे पचास गुनी बड़ी पापिन हूँ। अच्छा, अब आप जाइए," उन्होंने इस डर से जल्दी से कहा कि वह कहीं लौट न आएँ। "अब आप जाइए, अब यहाँ आपका और कोई काम नहीं है।"

"तुम अब उनके पीछे-पीछे न जाना," प्रिंस ने कोल्या को रोकते हुए कहा, जो भागकर अपने बाप के पीछे जानेवाला था, "वरना अभी एक मिनट में वह पछताने लगेंगे और सारा मज़ा किरकिरा हो जाएगा।"

"यह सच है," लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना बोलीं। "इस वक़्त उन्हें न छेड़ो। आधे घंटे बाद उनके पास चले जाना।"

"ज़िन्दगी में कभी भूले से सच बात कह देने का यही नतीजा होता है," लेबेदेव ने साहस बटोरकर बात चिपकाई। "आँसू निकल पड़े।"

"अच्छे तो आप भी बहुत हैं, जनाब, अगर जो कुछ मैंने सुना है वह सच है," लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने फ़ौरन उसे उसकी औक़ात बता दी।

प्रिंस के यहाँ जो मिलनेवाले आकर जमा हुए उनके आपसी सम्बन्ध धीरे-धीरे स्पष्ट होते गए। मिसेज़ येपांचिना और उनकी बेटियाँ उसके लिए जो हमदर्दी दिखा रही थीं उसका मूल्य वह अच्छी तरह पहचान सकता था और उसने पहचाना भी, और उसने उन्हें बिलकुल साफ़-साफ़ बता दिया कि उन लोगों के आने से पहले वह अपनी बीमारी और बहुत देर हो जाने के बावजूद उसी दिन उन लोगों से मिलने आनेवाला था। मिसेज़ येपांचिना ने उसके मेहमानों पर एक नज़र डालकर जवाब दिया कि अगर वह चाहे जो अब भी चल सकता है। प्तीत्सिन, जो बहुत ही शिष्ट आदमी था और जिसकी सभी से बहुत अच्छी तरह निभती थी, जल्दी ही उठ खड़ा हुआ और घर के लेबेदेववाले हिस्से में चला गया; वह लेबेदेव को भी अपने साथ ले जाने के लिए बहुत उत्सुक था। लेबेदेव ने

जल्दी ही आने का वादा किया; वार्या इसी बीच येपांचिन-बहनों से बातें करने लगी और वहीं रही। उसे और गान्या को बहुत खुशी थी कि जनरल साहब चले गए थे; गान्या खुद थोड़ी ही देर बाद प्तीत्सिन के पीछे-पीछे बरामदे में चला गया। येपांचिन-परिवार के लोगों के साथ उसने बरामदे में जो कुछ मिनट बिताए थे उनके दौरान उसका आचरण बहुत विनम्र और गरिमामय रहा था, और मिसेज़ येपांचिना की टिकी हुई नज़रों की वजह से, जिन्होंने दो बार उसे सिर से पाँव तक देखा था, उसे ज़रा भी परेशानी नहीं हुई। जो लोग उसे पहले से जानते थे वे सचमुच सोच सकते थे कि वह बहुत बदल गया था। अग्लाया इस बात से बहुत खुश थी।

"अभी गव्रीला अर्दालिओनोविच बाहर गए न ?" ख़ासतौर पर किसी को सम्बोधित न करते हुए और अपने सवाल से दूसरों की बातचीत के प्रवाह को भंग करते हुए उसने अचानक ज़ोर से तीखे स्वर में पूछा; ऐसा करने में उसे कभी-कभी बहुत मज़ा आता था।

"हाँ," प्रिंस ने जवाब दिया।

"मैं तो उन्हें पहचान ही नहीं पाई। बहुत बदल गए हैं और...पहले से बहुत अच्छे हो गए हैं।"

"मैं उनकी वजह से बहुत खुश हूँ," प्रिंस ने कहा।

"बहुत बीमार थे," वार्या ने खुश होकर गहरी हमदर्दी से कहा।

"पहले से बहुत अच्छा किस तरह हो गया है ?" मिसेज़ येपांचिना ने भयभीत-सी होकर गुस्से-भरी परेशानी से पूछा। "यह बात तुम्हारे दिमाग़ में कहाँ से आई ? पहले से तनिक भी अच्छा नहीं हो गया है। किस बात में तुम समझती हो कि वह पहले से अच्छा हो गया है ?"

" 'ग़रीब सूरमा' से अच्छी कोई चीज़ नहीं है !" मिसेज़ येपांचिना की कुर्सी के पास खड़े हुए कोल्या ने अचानक घोषणा की।

"मैं भी यही समझता हूँ," प्रिंस श. ने कहा और हँस पड़े।

"मेरी भी यही राय है," अदेलईदा ने गम्भीरता से कहा।

" 'ग़रीब सूरमा' कौन ?" मिसेज़ येपांचिना ने उन लोगों की ओर जो अभी बोले थे परेशानी और चिढ़ से देखते हुए पूछा, लेकिन यह देखकर कि अग्लाया का चेहरा तमतमा उठा था उन्होंने गुस्से से इतना और जोड़ दिया—"मुझे यक़ीन है कोई बकवास होगी। यह 'ग़रीब सूरमा' है कौन ?"

"यह कोई पहली बार नहीं है कि यह शैतान छोकरा, तुम्हारा यह लाड़ला, दूसरे लोगों के शब्दों को तोड़ता-मरोड़ता रहा है !" अग्लाया ने अभिमान-भरे क्रोध से जवाब दिया।

हर बार जब अग्लाया का गुस्सा भड़क उठता था (और उसे गुस्सा तो अकसर ही आता था), तो उसकी प्रकट निश्चित गम्भीरता और कठोरता के बावजूद, लगभग हमेशा ही इसमें किसी ऐसी सरासर बचकानी बात का, स्कूली लड़कियों जैसी अधीरता का पुट रहता था, और वह उसे छिपाने में भी इतनी बुरी तरह असफल रहती थी कि कभी-कभी हँसी रोकना नामुमकिन हो जाता था, जिस पर अग्लाया खीझ उठती थी, और उसकी समझ में नहीं आता था कि लोग आख़िर हँस किस बात पर रहे थे और यह कि "वे हँस कैसे रहे थे, उनकी हँसने की हिम्मत कैसे पड़ रही थी।" इस बार भी उसकी बहनें और प्रिंस श. हँस दिए, यहाँ तक कि प्रिंस भी मुस्करा दिया, हालाँकि न जाने क्यों वह कुछ शरमा भी गया। कोल्या ठहाका मारकर हँस पड़ा और बेहद खुश था। अग्लाया सचमुच नाराज़ हो गई और हमेशा से दुगनी सुन्दर लगने लगी। उसकी घबराहट और स्वयं घबरा उठने पर उसकी उस समय की खीझ उसके चेहरे पर बहुत अच्छी लगती थीं।

"इसने आपके शब्दों को कम नहीं तोड़ा-मरोड़ा है न !" अग्लाया ने इतना और कहा।

"मैं तो आपकी ही कही हुई बात को दोहरा देता हूँ !" कोल्या ज़ोर से बोला। "महीना-भर

पहले आप 'डॉन क्विकज़ोट' के पन्ने उलट रही थीं और आपने खुश होकर यही शब्द कहे थे कि 'ग़रीब सूरमा' से अच्छी कोई चीज़ नहीं थी ! मुझे मालूम नहीं कि आप किसकी चर्चा कर रही थीं—डॉन क्विकज़ोट की या येव्गेनी पाव्लोविच रादोम्स्की की या किसी और की, लेकिन आप किसी की चर्चा कर ज़रूर रही थीं, और बातचीत बड़ी देर तक चलती रही थी।..."

"तू बहुत बढ़-चढ़कर अटकलें लगाने लगा है, छोकरे," मिसेज़ येपांचिना ने झुँझलाकर उसे चुप कर दिया।

"लेकिन मैं कोई अकेला थोड़े ही था ?" कोल्या कहता रहा। "सभी लोग इसकी चर्चा कर रहे थे और अब भी करते हैं। अभी-अभी प्रिंस श. और अदेलईदा इवानोव्ना और सभी लोगों ने कहा था कि वे 'ग़रीब सूरमा' के पक्ष में थे, मतलब यह कि 'ग़रीब सूरमा' ज़रूर होता है और मैं तो यह समझता हूँ कि अगर अदेलईदा इवानोव्ना बीच में न होतीं तो हम लोगों को बहुत पहले मालूम हो गया होता कि यह 'ग़रीब सूरमा' कौन।"

"मैंने क्या किया ?" अदेलईदा ने हँसकर कहा।

"आपने किया यह कि उसकी तस्वीर बनाने से इन्कार किया ! अग्लाया इवानोव्ना ने आपसे 'ग़रीब सूरमा' की तस्वीर बनाने को कहा था और आपको तस्वीर का पूरा विषय भी बता दिया था, जिसे उन्होंने खुद सोचा था। आपको वह विषय याद है न ? आप नहीं चाहतीं..."

"लेकिन मैं तस्वीर कैसे बना सकती थी ? किसकी तस्वीर बनाती ? विषय के हिसाब से तो—

नक़ाब एक लोहे की हर दम चढ़ाए
वह रखता था चेहरे को सबसे छिपाए।

मैं तस्वीर में बनाती क्या ? नक़ाब ?"

"मालूम नहीं तुम क्या बातें कर रही हो—आख़िर यह नक़ाब का क़िस्सा है क्या ?" मिसेज़ येपांचिना ने झुँझलाकर ज़ोर से कहा। उन्हें काफ़ी अच्छी तरह अन्दाज़ा हो चला था कि 'ग़रीब सूरमा' का नाम (जो शायद बहुत पहले तै कर लिया गया होगा !) किसके लिए इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन जिस बात पर उनका गुस्सा भड़क उठा वह यह थी कि प्रिंस भी अटपटा महसूस कर रहा था और दस बरस के लड़के की तरह शरमा रहा था। "अच्छा," वह कहती रहीं, "तुम लोग यह बकवास बन्द करोगी कि नहीं ? मुझे कुछ समझाओगी भी कि यह 'ग़रीब सूरमा' आख़िर है क्या ? क्या यह कोई ऐसा गहरा भेद है कि उसके बारे में सवाल भी करना मना है ?"

लेकिन वे बस हँसते रहे।

"बात बस इतनी है," प्रिंस श. ने आख़िरकार कहा; स्पष्टतः वह बहुत उत्सुक थे कि इस विषय की चर्चा बन्द कर दी जाए या उसे जल्दी से जल्दी बदल दिया जाए। "किसी 'ग़रीब सूरमा' के बारे में एक विचित्र रूसी कविता है, बस कविता का एक टुकड़ा है जिसका न कोई आरम्भ है और न कोई अन्त। महीना भर हुआ हम सब लोग खाने के बाद हँसी-मज़ाक़ कर रहे थे और हमेशा की तरह अदेलईदा इवानोव्ना की अगली तस्वीर के लिए कोई विषय ढूँढ़ रहे थे। आप तो जानती ही हैं कि सारा परिवार हमेशा अदेलईदा इवानोव्ना की तस्वीरों के लिए विषय खोजने की कोशिश करता रहता है। तभी 'ग़रीब सूरमा' निकल आया, यह बात सबसे पहले किसे सूझी थी, मुझे याद नहीं।..."

"अग्लाया इवानोव्ना को !" कोल्या ने चिल्लाकर कहा।

"शायद तुम ठीक कह रहे हो, बस मुझे याद नहीं," प्रिंस श. ने अपनी बात जारी रखी। "इस विषय पर हममें से कुछ तो हँस पड़े और बाक़ी ने कहा कि इससे अच्छा विषय हो ही नहीं सकता,

जल्दी ही आने का वादा किया; वार्या इसी बीच येपांचिन-बहनों से बातें करने लगी और वहीं रही। उसे और गान्या को बहुत खुशी थी कि जनरल साहब चले गए थे; गान्या खुद थोड़ी ही देर बाद प्तीत्सिन के पीछे-पीछे बरामदे में चला गया। येपांचिन-परिवार के लोगों के साथ उसने बरामदे में जो कुछ मिनट बिताए थे उनके दौरान उसका आचरण बहुत विनम्र और गरिमामय रहा था, और मिसेज़ येपांचिना की टिकी हुई नज़रों की वजह से, जिन्होंने दो बार उसे सिर से पाँव तक देखा था, उसे ज़रा भी परेशानी नहीं हुई। जो लोग उसे पहले से जानते थे वे सचमुच सोच सकते थे कि वह बहुत बदल गया था। अग्लाया इस बात से बहुत खुश थी।

"अभी गव्रीला अर्दालिओनोविच बाहर गए न ?" ख़ासतौर पर किसी को सम्बोधित न करते हुए और अपने सवाल से दूसरों की बातचीत के प्रवाह को भंग करते हुए उसने अचानक ज़ोर से तीखे स्वर में पूछा; ऐसा करने में उसे कभी-कभी बहुत मज़ा आता था।

"हाँ," प्रिंस ने जवाब दिया।

"मैं तो उन्हें पहचान ही नहीं पाई। बहुत बदल गए हैं और...पहले से बहुत अच्छे हो गए हैं।"

"मैं उनकी वजह से बहुत खुश हूँ," प्रिंस ने कहा।

"बहुत बीमार थे," वार्या ने खुश होकर गहरी हमदर्दी से कहा।

"पहले से बहुत अच्छा किस तरह हो गया है ?" मिसेज़ येपांचिना ने भयभीत-सी होकर गुस्से-भरी परेशानी से पूछा। "यह बात तुम्हारे दिमाग़ में कहाँ से आई ? पहले से तनिक भी अच्छा नहीं हो गया है। किस बात में तुम समझती हो कि वह पहले से अच्छा हो गया है ?"

" 'ग़रीब सूरमा' से अच्छी कोई चीज़ नहीं है !" मिसेज़ येपांचिना की कुर्सी के पास खड़े हुए कोल्या ने अचानक घोषणा की।

"मैं भी यही समझता हूँ," प्रिंस श. ने कहा और हँस पड़े।

"मेरी भी यही राय है," अदेलईदा ने गम्भीरता से कहा।

" 'ग़रीब सूरमा' कौन ?" मिसेज़ येपांचिना ने उन लोगों की ओर जो अभी बोले थे परेशानी और चिढ़ से देखते हुए पूछा, लेकिन यह देखकर कि अग्लाया का चेहरा तमतमा उठा था उन्होंने गुस्से से इतना और जोड़ दिया—"मुझे यक़ीन है कोई बकवास होगी। यह 'ग़रीब सूरमा' है कौन ?"

"यह कोई पहली बार नहीं है कि यह शैतान छोकरा, तुम्हारा यह लाड़ला, दूसरे लोगों के शब्दों को तोड़ता-मरोड़ता रहा है !" अग्लाया ने अभिमान-भरे क्रोध से जवाब दिया।

हर बार जब अग्लाया का गुस्सा भड़क उठता था (और उसे गुस्सा तो अकसर ही आता था), तो उसकी प्रकट निश्चित गम्भीरता और कठोरता के बावजूद, लगभग हमेशा ही इसमें किसी ऐसी सरासर बचकानी बात का, स्कूली लड़कियों जैसी अधीरता का पुट रहता था, और वह उसे छिपाने में भी इतनी बुरी तरह असफल रहती थी कि कभी-कभी हँसी रोकना नामुमकिन हो जाता था, जिस पर अग्लाया खीझ उठती थी, और उसकी समझ में नहीं आता था कि लोग आख़िर हँस किस बात पर रहे थे और यह कि "वे हँस कैसे रहे थे, उनकी हँसने की हिम्मत कैसे पड़ रही थी।" इस बार भी उसकी बहनें और प्रिंस श. हँस दिए, यहाँ तक कि प्रिंस भी मुस्करा दिया, हालाँकि न जाने क्यों वह कुछ शरमा भी गया। कोल्या ठहाका मारकर हँस पड़ा और बेहद खुश था। अग्लाया सचमुच नाराज़ हो गई और हमेशा से दुगनी सुन्दर लगने लगी। उसकी घबराहट और स्वयं घबरा उठने पर उसकी उस समय की खीझ उसके चेहरे पर बहुत अच्छी लगती थीं।

"इसने आपके शब्दों को कम नहीं तोड़ा-मरोड़ा है न !" अग्लाया ने इतना और कहा।

"मैं तो आपकी ही कही हुई बात को दोहरा देता हूँ !" कोल्या ज़ोर से बोला। "महीना-भर

पहले आप 'डॉन क्विकज़ोट' के पन्ने उलट रही थीं और आपने खुश होकर यही शब्द कहे थे कि 'ग़रीब सूरमा' से अच्छी कोई चीज़ नहीं थी ! मुझे मालूम नहीं कि आप किसकी चर्चा कर रही थीं—डॉन क्विकज़ोट की या येव्गेनी पाव्लोविच रादोम्स्की की या किसी और की, लेकिन आप किसी की चर्चा कर ज़रूर रही थीं, और बातचीत बड़ी देर तक चलती रही थी।..."

"तू बहुत बढ़-चढ़कर अटकलें लगाने लगा है, छोकरे," मिसेज़ येपांचिना ने झुँझलाकर उसे चुप कर दिया।

"लेकिन मैं कोई अकेला थोड़े ही था ?" कोल्या कहता रहा। "सभी लोग इसकी चर्चा कर रहे थे और अब भी करते हैं। अभी-अभी प्रिंस श. और अदेलईदा इवानोव्ना और सभी लोगों ने कहा था कि वे 'ग़रीब सूरमा' के पक्ष में थे, मतलब यह कि 'ग़रीब सूरमा' ज़रूर होता है और मैं तो यह समझता हूँ कि अगर अदेलईदा इवानोव्ना बीच में न होतीं तो हम लोगों को बहुत पहले मालूम हो गया होता कि यह 'ग़रीब सूरमा' कौन।"

"मैंने क्या किया ?" अदेलईदा ने हँसकर कहा।

"आपने किया यह कि उसकी तस्वीर बनाने से इन्कार किया ! अग्लाया इवानोव्ना ने आपसे 'ग़रीब सूरमा' की तस्वीर बनाने को कहा था और आपको तस्वीर का पूरा विषय भी बता दिया था, जिसे उन्होंने खुद सोचा था। आपको वह विषय याद है न ? आप नहीं जानतीं..."

"लेकिन मैं तस्वीर कैसे बना सकती थी ? किसकी तस्वीर बनाती ? विषय के हिसाब से तो—

नक़ाब एक लोहे की हर दम चढ़ाए
वह रखता था चेहरे को सबसे छिपाए।

मैं तस्वीर में बनाती क्या ? नक़ाब ?"

"मालूम नहीं तुम क्या बातें कर रही हो—आख़िर यह नक़ाब का क़िस्सा है क्या ?" मिसेज़ येपांचिना ने झुँझलाकर ज़ोर से कहा। उन्हें काफ़ी अच्छी तरह अन्दाज़ा हो चला था कि 'ग़रीब सूरमा' का नाम (जो शायद बहुत पहले तै कर लिया गया होगा !) किसके लिए इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन जिस बात पर उनका गुस्सा भड़क उठा वह यह थी कि प्रिंस भी अटपटा महसूस कर रहा था और दस बरस के लड़के की तरह शरमा रहा था। "अच्छा," वह कहती रहीं, "तुम लोग यह बकवास बन्द करोगी कि नहीं ? मुझे कुछ समझाओगी भी कि यह 'ग़रीब सूरमा' आख़िर है क्या ? क्या यह कोई ऐसा गहरा भेद है कि उसके बारे में सवाल भी करना मना है ?"

लेकिन वे बस हँसते रहे।

"बात बस इतनी है," प्रिंस श. ने आख़िरकार कहा; स्पष्टतः वह बहुत उत्सुक थे कि इस विषय की चर्चा बन्द कर दी जाए या उसे जल्दी से जल्दी बदल दिया जाए। "किसी 'ग़रीब सूरमा' के बारे में एक विचित्र रूसी कविता है, बस कविता का एक टुकड़ा है जिसका न कोई आरम्भ है और न कोई अन्त। महीना भर हुआ हम सब लोग खाने के बाद हँसी-मज़ाक़ कर रहे थे और हमेशा की तरह अदेलईदा इवानोव्ना की अगली तस्वीर के लिए कोई विषय ढूँढ़ रहे थे। आप तो जानती ही हैं कि सारा परिवार हमेशा अदेलईदा इवानोव्ना की तस्वीरों के लिए विषय खोजने की कोशिश करता रहता है। तभी 'ग़रीब सूरमा' निकल आया, यह बात सबसे पहले किसे सूझी थी, मुझे याद नहीं।..."

"अग्लाया इवानोव्ना को !" कोल्या ने चिल्लाकर कहा।

"शायद तुम ठीक कह रहे हो, बस मुझे याद नहीं," प्रिंस श. ने अपनी बात जारी रखी। "इस विषय पर हममें से कुछ तो हँस पड़े और बाक़ी ने कहा कि इससे अच्छा विषय हो ही नहीं सकता,

लेकिन 'ग़रीब सूरमा' की तस्वीर बनाने के लिए एक चेहरा खोजना था। हम परिचित लोगों के चेहरों के बारे में सोचने लगे लेकिन उनमें से कोई भी नहीं जँचा। हम लोग बस यहीं पर अटक गए; यह है पूरा क़िस्सा; मेरी समझ में नहीं आता कि कोल्या को इस वक़्त यह चर्चा छेड़ने की ज़रूरत क्या पड़ी थी। मैं तो समझता हूँ कि जो बात उस वक़्त मज़ेदार और ठीक थी वह इस वक़्त तनिक भी दिलचस्प नहीं लग रही है।"

"बेशक, इसमें एक नई ताना-भरी और दिल दुखानेवाली बेवक़ूफ़ी छिपी है," मिसेज़ येपांचिना ने तड़ से कहा।

"इसमें बेवक़ूफ़ी की कोई बात नहीं है, बस बेहद गहरी सम्मान की भावना है," अग्लाया ने अप्रत्याशित रूप से गम्भीर और रोबदार स्वर में कहा। वह फिर से अपना सन्तुलन पूरी तरह स्थापित करने और अपनी बौखलाहट पर काबू पाने में सफल हो गई थी। इतना ही नहीं, कुछ संकेतों से बड़ी आसानी से यह भी दिखाई दे रहा था कि वह मज़ाक़ के इतना आगे बढ़ जाने पर खुश भी थी। उसमें यह परिवर्तन उसी क्षण हुआ जब प्रिंस की बढ़ती हुई खिसियाहट ऐसी हद पर पहुँच चुकी थी जहाँ उसे छिपाना सम्भव नहीं रह गया था।

"अभी दीवानों की तरह हँसने लगते हैं, और अभी बहुत गहरा सम्मान दिखाने लगते हैं ! पागल लोग हैं ! सम्मान किसलिए ? मुझे फ़ौरन बताओ कि तुम्हें अचानक और बिना किसी वजह के ऐसा सम्मान दिखाने की क्यों सूझी ?"

"इसलिए," अग्लाया ने अपनी माँ के लगभग तिरस्कारपूर्ण प्रश्न के जवाब में अभी गम्भीर और रोबदार स्वर में कहा, "कि उस कविता में एक ऐसे आदमी की चर्चा है जो, पहली बात तो यह है कि अपने सामने कोई आदर्श रख सकता है, दूसरे, अपने सामने वह आदर्श रख लेने के बाद उसमें आस्था रख सकता है और उसमें आस्था रखकर अपना सारा जीवन उस आदर्श को समर्पित कर सकता है। इस जमाने में ऐसा हमेशा नहीं होता। कविता में यह तो नहीं बताया गया है कि 'ग़रीब सूरमा' का आदर्श था क्या, लेकिन इतना साफ़ है कि वह कोई उज्ज्वल आकृति थी, 'शुद्ध सौन्दर्यवाली आकृति', और वह मुहब्बत का मारा सूरमा अपने गले में रूमाल बाँधने के बजाय माला डाले रहता है। यह सच है कि उसका कोई रहस्यमय और गुप्त मूलमन्त्र भी है, उसने अपनी ढाल पर अ. न. ब. अक्षरों को अंकित किया।..."

"अ. म. द.," कोल्या ने उसकी भूल सुधारते हुए कहा।

"मैं कहती हूँ अ. न. ब, और मैं कहना भी यही चाहती हूँ," अग्लाया ने झुँझलाकर उसकी बात काट दी। "बहरहाल, इतना साफ़ है कि उस ग़रीब सूरमा को इसकी कोई चिन्ता नहीं रह गई थी कि वह महिला कौन हो सकती थी या वह महिला क्या कर सकती थी। उसके लिए बस इतना ही काफ़ी था कि उसने उसे चुन लिया था और उसे उसके 'शुद्ध सौन्दर्य' से आस्था हो गई थी, उसके बाद वह जीवन-भर उसे पूजता रहा। यही उसका सबसे बड़ा गुण था, क्योंकि अगर बाद में चलकर वह चोर भी बन गई होती तब भी उसमें उसकी जो आस्था थी वह न डिगती और वह उसके शुद्ध सौन्दर्य के लिए जान तक की बाजी लगा देने को तैयार हो जाता। ऐसा लगता है कि कवि एक ही ज्वलन्त उदाहरण में किसी निष्कलंक और ऊँचे सूरमा के निर्लिप्त और आत्म-बलिदानी प्रेम की पूरी भव्य कल्पना को समेट लेना चाहता था। ज़ाहिर है, यह सब केवल एक आदर्श है। लेकिन 'ग़रीब सूरमा' में त्याग और तपस्या की इस भावना को उच्चतम शिखर पर पहुँचा दिया गया है। मानना पड़ेगा कि इस तरह की भावना रखने की क्षमता होना भी बहुत बड़ी बात है, और यह कि, डॉन क्विकज़ोट के प्रसंग से अलग भी, इस तरह की भावनाएँ स्वयं बहुत गहरी और, एक

दृष्टि से, अत्यन्त प्रशंसनीय छाप डालती हैं। 'ग़रीब सूरमा' डॉन क्विकज़ोट ही है, बस वह मसख़रा नहीं बल्कि गम्भीर है। पहले मैं उसे समझ नहीं पाई थी और उस पर हँसती थी, लेकिन अब मुझे 'ग़रीब सूरमा' से प्यार हो गया है और इससे भी बड़ी बात यह है कि मैं उसके बहादुरी के कारनामों की इज्जत करने लगी हूँ।"

अग्लाया ने अपनी बात इस तरह ख़त्म की और यह बताना मुश्किल था कि वह संजीदगी से बात कर रही थी या हँस रही थी।

"ख़ैर, वह कोई बेवक़ूफ़ रहा होगा...वह और उसके बहादुरी के कारनामे !" मिसेज़ येपांचिना ने ज़ोर देकर कहा। "और तुम भी, बेटी, सरासर बकवास कर रही हो—पूरा लेक्चर झाड़ दिया ! मुझसे पूछो तो यह तुम्हारे लिए ठीक नहीं लगता। और यों भी यह बहुत ही बेजा बात है। कौन-सी कविता ? सुनाओ तो। मुझे यक़ीन है कि तुम्हें याद होगी। मैं वह कविता ज़रूर सुनना चाहती हूँ ! मैं कविता कभी बर्दाश्त नहीं कर सकती थी मानो मुझे पहले से मालूम था। भगवान के लिए, प्रिंस," उन्होंने प्रिंस को सम्बोधित करते हुए कहा, "धीरज रखो। लगता है कि तुम्हें और मुझे धीरज रखना होगा।" वह बहुत झुँझलाई हुई थीं।

प्रिंस कुछ कहना चाहता था, लेकिन वह अभी तक इतना अटपटा महसूस कर रहा था कि कुछ बोल नहीं सका। बस अग्लाया ही, जिसने अपने भाषण में इतनी दो-टूक बातें कह दी थीं, अकेली ऐसी थी जो अटपटा नहीं महसूस कर रही थी, बल्कि सच तो यह है कि वह बहुत खुश दिखाई दे रही थी। वह फ़ौरन उठी, पहले की तरह ही गम्भीर और विचारशील, और बरामदे के बीच में आकर प्रिंस की ओर मुँह करके खड़ी हो गई, जो अपनी हत्थेदार कुर्सी पर बैठा रहा; ऐसा लग रहा था कि अग्लाया ने कविता सुनाने के लिए अपने आपको पहले से तैयार कर रखा था और वह बस इसकी राह देख रही थी कि कोई उससे सुनाने को कहे। सभी ने उसे कुछ आश्चर्य से देखा, और लगभग सभी—प्रिंस श., उसकी बहनें और उसकी माँ—उसकी इस नई शरारत को जिसकी तैयारी हो रही थी और जो अभी हद से आगे बढ़ चुकी थी, कुछ अरुचिकर भाव से देख रहे थे। लेकिन यह बिलकुल साफ़ था कि जिस स्वाँग के साथ वह कविता पढ़ने की रस्म शुरू कर रही थी उसमें उसे भरपूर आनन्द आ रहा था। लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना उसे भगानेवाली ही थीं; लेकिन अग्लाया ने उस सुविख्यात वीर-गाथा का कविता-पाठ अभी शुरू ही किया था कि सड़क पर से दो और मेहमान ज़ोर-ज़ोर से बातें करते हुए वहाँ आ पहुँचे। वे थे जनरल येपांचिन और एक नौजवान। उनके आते ही थोड़ी-सी हलचल पैदा हो गई।

7

जनरल साहब के साथ जो नौजवान आया था वह कोई अट्ठाईस साल का रहा होगा—लम्बा क़द, छरहरा बदन, खूबसूरती और समझदारी से भरा हुआ चेहरा, बड़ी-बड़ी काली आँखें, जिनमें हाजिरजवाबी और व्यंग की चमक थी। अग्लाया ने पलटकर उसकी ओर देखा तक नहीं बल्कि प्रिंस को अब भी बड़े बनावटी ढंग से एकटक देखते हुए और केवल उसी को सम्बोधित करते हुए कविता का पाठ करती रही। प्रिंस इस बात को अच्छी तरह समझ रहा था कि वह ऐसा जान-बूझकर किसी ख़ास उद्देश्य से कर रही थी। लेकिन नए मेहमानों के आ जाने की वजह से प्रिंस की स्थिति का अटपटापन कुछ कम तो अवश्य ही हो गया। उन लोगों को देखकर वह उठ खड़ा हुआ, दूर से ही सिर हिलाकर बड़ी शिष्टता से जनरल साहब को उसने सलाम किया, उन्हें कविता-पाठ में विघ्न

न डालने का इशारा किया, और ख़ुद हत्थेदार कुर्सी के पीछे पहुँच गया और उसकी पीठ पर अपनी बाईं बाँह के सहारे झुककर वह पहले से अधिक सुविधाजनक और कम 'हास्यास्पद' स्थिति में कविता सुनता रहा। लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने भी दो बार नवागन्तुकों को बड़े रोब से शान्त खड़े रहने का इशारा किया। यह भी बता दिया जाए कि प्रिंस को जनरल साहब के साथ आए हुए नए मेहमान में ज़्यादा दिलचस्पी थी। उसने ठीक ही अनुमान लगाया था कि वह येव्गेनी पाव्लोविच रादोम्स्की होगा, जिसके बारे में उसने बहुत कुछ सुन रखा था और कई बार उसके बारे में सोच भी चुका था। सिर्फ़ उसके गैर-फौज़ी लिबास की वजह से उसे कुछ शक हुआ था; उसे बताया गया था कि रादोम्स्की फौज़ी अफ़सर है। जितनी देर कविता-पाठ होता रहा नवागंतुक के चेहरे पर लगातार व्यंगपूर्ण मुस्कराहट खेलती रही, मानो उसने 'ग़रीब सूरमा' के बारे में कुछ सुन रखा हो।

"शायद यह इसी की सूझ होगी," प्रिंस ने मन में सोचा।

लेकिन अग्लाया का हाल दूसरा ही था। उसने जिस दिखावटी और रोबदार ढंग से कविता का पाठ शुरू किया था, उसमें उसने ऐसी तन्मयता और कविता की भावना तथा उसके अर्थ के बारे में ऐसी गहरी अन्तर्दृष्टि भर दी थी, वह उसके एक-एक शब्द को इतनी अच्छी तरह समझकर बोल रही थी और उनका उच्चारण इतनी उदात्त सादगी से कर रही थी कि जब उसने कविता-पाठ समाप्त किया तो न केवल यह कि सबका ध्यान उस पर केन्द्रित था, बल्कि ऐसा लग रहा था कि उसके कविता की उदात्त भावना को व्यक्त करने की वजह से बरामदे के बीच में उसके इतने रोब से आकर खड़े होने की अतिरंजित और कृत्रिम गम्भीरता का औचित्य स्थापित हो गया था। उस गम्भीरता में अब केवल उसके प्रति जिसे उसने प्रस्तुत करने का बीड़ा उठाया था उसके अपार और शायद भोले आदर की भावना का ही संकेत मिलता था। उसकी आँखें चमक रही थीं और उसके सुन्दर चेहरे पर दो बार प्रेरणा और हर्षातिरेक के हल्के-से मुश्किल से ही दिखाई देनेवाले कम्पन की लहर दौड़ गई। वह कविता-पाठ करती रही—

कोई सूरमा था बहुत ही ग़रीब
अकेला, बुझा-सा, बड़ा बदनसीब।
चलन उसका सीधा था, मीठी थी बोली
कभी आन अपनी न दौलत से तोली।
किसी की बसाई थी आँखों में सूरत
न की फिर किसी से भी उसने मुहब्बत
वह दिल पर लगाया था ताला जकड़कर
निकलने न पाए कभी भेद बाहर।
उमर-भर किसी से कभी फिर न बोला
किसी की ख़ुशामद को मुँह तक न खोला
क़सम थी कि जाएगा वह साथ लेकर
वह यादें खरी थीं जो सोने से बढ़कर।
गले में किसी का न रूमाल डाला
वह रहता था पहने सदा एक माला
नक़ाब एक लोहे की हरदम चढ़ाए
वह रखता था चेहरे को सबसे छिपाए।
मुहब्बत थी दिल में, था कर्तव्य प्यारा,

वफ़ाओं का पक्का भी था वह बिचारा
लिखे थे निजी ढाल पर तीन अक्षर—
'अ. म. द.'—खुद अपने लहू से सजाकर।
फ़िलिस्तीन के उन पहाड़ों में आए
थे लड़ने धरम का जो झण्डा उठाए
लड़ाई में वे जूझते थे झपटकर
जबाँ पर किसी का सदा नाम लेकर
भयानक गरज से दहाड़ा था जब वह
"लूमेन कुएली..."[1] का नारा अजब वह
पड़े थे मुजाहिद यहाँ से वहाँ तक
गिरी जैसे उन पे हो बिजली अचानक
लड़ाई से लौटा तो अपने किले में
बहुत दूर, दिन-रात भरता था आहें
सदा चुप, बुझा-सा, उदासी का मारा
गँवाकर हवास अपने जग से सिधारा।

बाद में इन सब बातों को याद करते हुए प्रिंस बहुत समय तक गहरी परेशानी में एक सवाल की वजह से अपने आपको यातना देता रहा जिसका वह कोई जवाब नहीं खोज पाता था—ऐसी खरी और सुन्दर भावना का ऐसे खुले और द्वेषपूर्ण उपहास के साथ मेल कैसे हो सकता था। यह उपहास था, इसमें उसे तनिक भी सन्देह नहीं था; वह इस बात को बिलकुल स्पष्ट रूप से समझता था, और उसका कारण भी था—कविता-पाठ करते हुए अग्लाया ने अ. म. द. के अक्षरों को बदलकर न. फ़. ब. कर दिया था। उसे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं था (बाद में यह साबित भी हो गया) कि उसे कोई भ्रम नहीं हुआ था और उसने सुनने में ग़लती भी नहीं की थी। बहरहाल, अग्लाया ने अक्षरों को जान-बूझकर बदला था—ज़ाहिर है, यह मज़ाक़ ही था, लेकिन काफ़ी क्रूर और विवेकहीन मजाक। महीना-भर पहले सब लोग 'ग़रीब सूरमा' की चर्चा कर रहे थे और उस पर हँस रहे थे। लेकिन जहाँ तक प्रिंस को बाद में याद आया अग्लाया ने उन अक्षरों का उच्चारण किसी तरह का मज़ाक़ उड़ाए बिना या उपहास के किसी पुट के बिना किया था और उनके छिपे हुए अर्थ को अधिक स्पष्ट रूप में सामने लाने के लिए उन पर कोई ज़ोर नहीं दिया था। इसके विपरीत, उसने उनका उच्चारण इतनी संजीदगी से, इतनी मासूमियत और इतनी भोली सादगी के साथ किया था कि किसी को भी यही आभास होता कि वे अक्षर गीत में ही थे और किताब में उसी तरह छपे हुए थे। प्रिंस को गहरा कष्ट और अरुचिकर आघात पहुँचा। अलबत्ता, अक्षरों में दिए गए परिवर्तन और उनमें छिपे हुए गुप्त संकेत को लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना न तो समझीं और न ही उसकी ओर उनका ध्यान गया। जनरल येपांचिन की समझ में बस इतना आया कि कोई कविता पढ़ी जा रही थी। बहुत-से दूसरे सुननेवाले समझ गए और उन्हें उसके इस दुस्साहस तथा उसके पीछे छिपे हुए आशय पर आश्चर्य हुआ, लेकिन उन्होंने कहा कुछ भी नहीं और कुछ भी प्रकट न होने देने की भी कोशिश की। लेकिन रादोम्स्की न सिर्फ़ इस बात को समझ गया था (प्रिंस इस बात पर शर्त बदने को तैयार था), बल्कि वह यह दिखाने की भी कोशिश कर रहा था कि वह

1. Lumen coeli, sancta Rosa ! (लैटिन)—देवी मरियम की प्रशंसा में धर्मयुद्ध में लड़नेवाले ईसाइयों का पूरा नारा इस प्रकार है। छन्द में केवल आधा नारा दिया गया है।

समझ गया था—वह कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ही व्यंग से मुस्करा रहा था।

"कितनी सुन्दर है !" मिसेज़ येपांचिना ने कविता-पाठ पूरा होते ही हर्षातिरेक से चिल्लाकर कहा। "किसकी कविता है ?"

"पुश्किन की है, माँ," अदेलईदा ने ज़ोर से कहा। "हम लोगों को इतना शर्मिन्दा न किया करो, माँ ! वड़ी शर्म की बात है।"

"तुम जैसी बेटियों के होते ताज्जुब की बात तो यह है कि मैं इससे ज़्यादा नासमझ नहीं हूँ !" मिसेज़ येपांचिना ने जलकर जवाब दिया। "शर्मनाक बात है ! घर पहुँचते ही मुझे पुश्किन की यह कविता फ़ौरन देना।"

"मेरे ख़्याल से घर पर पुश्किन की किताब है नहीं।"

"घर में न जाने कबसे उनकी दो फटी-पुरानी किताबें पड़ी हैं," अलेक्सान्द्रा ने जोड़ दिया।

"फ्योदोर या अलेक्सेई को शहर भिजवाकर मँगवाना, पहली गाड़ी से,—अलेक्सेई ज़्यादा अच्छा रहेगा। अग्लाया, इधर आओ। मुझे एक प्यार तो दो, बेटी। तुमने कविता बहुत सुन्दर ढंग से सुनाई, लेकिन," उन्होंने लगभग कानाफूसी के स्वर में कहा, "अगर तुमने यह कविता-पाठ सच्चे मन से किया था तो मुझे तुम्हारे लिए अफ़सोस है; अगर तुमने उसका मज़ाक़ उड़ाने के लिए ऐसा किया था तो मैं तुम्हारी भावनाओं को ठीक नहीं समझती, इसलिए दोनों ही हालतों में बेहतर यही होता कि तुमने उसे सुनाया ही न होता। समझीं ? अब तुम जा सकती हो। मैं तुमसे किसी और वक़्त इसके बारे में बातें करूँगी। और हम लोग यहाँ ज़रूरत से ज़्यादा देर तक बैठे चुके हैं।"

इसी बीच प्रिंस ने जनरल येपांचिन का अभिवादन किया और जनरल साहब ने रादोम्स्की से उसका परिचय कराया।

"यहाँ आते हुए यह रास्ते में मिल गए मुझे। स्टेशन से आ रहे थे। इन्होंने सुन रखा था कि मैं यहाँ आ रहा था और हमारे सब लोग भी यहीं थे।..."

"मैंने सुना था कि आप भी यहाँ हैं," रोदोम्स्की बीच में बोल पड़ा, "और चूँकि मैंने बहुत दिन से मन में ठान रखा था कि आपसे न सिर्फ़ जान-पहचान पैदा करूँगा बल्कि दोस्ती भी कर लूँगा, इसलिए मैं वक़्त खोना नहीं चाहता था। आपकी तबियत ठीक नहीं है ? मैंने अभी सुना..."

"मैं बिलकुल ठीक हूँ और आपसे मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई," प्रिंस ने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाकर कहा। "मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुन रखा है और प्रिंस श. से आपके बारे में मेरी बातें भी हुई हैं।"

एक-दूसरे से साहब-सलामत हुई, दोनों ने हाथ मिलाए और एक-दूसरे की आँखों में नज़रें जमाकर देखा। क्षण-भर में ही बातचीत ने सामान्य रूप धारण कर लिया। प्रिंस ने देखा (अब वह हर चीज़ को फ़ौरन और बड़ी उत्सुकता से देख रहा था, शायद उन चीज़ों को भी जो वहाँ थीं भी नहीं) कि रादोम्स्की को फौज़ी वर्दी न पहने देखकर सभी को बहुत आश्चर्य हो रहा था, यहाँ तक कि ऐसा लगता था कि बाक़ी सारी चीज़ें कुछ देर के लिए सचमुच भुला दी गई हैं, मानो उसका लिबास बदल जाना कोई बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात थी। अदेलईदा और अलेक्सान्द्रा हैरान नज़रों से रादोम्स्की को देखकर उससे सवाल पूछ रही थीं, उसके रिश्तेदार प्रिंस श. बहुत बेचैनी से और जनरल साहब लगभग उद्विग्न होकर बोल रहे थे। सिर्फ़ अग्लाया ने रादोम्स्की पर ज़रा भी परेशान हुए बिना कौतूहल-भरी दृष्टि डाली, मानो यह सोच रही हो कि उस पर फौज़ी लिबास ज़्यादा फबता है या गैर-फौज़ी, लेकिन एक ही मिनट बाद उसने नज़रें फेर लीं और उसकी ओर फिर नहीं देखा। मिसेज़ येपांचिना ने भी कोई सवाल पूछना न चाहा, हालाँकि शायद वह भी कुछ परेशान थीं। प्रिंस

को ऐसा लगा कि वह रादोम्स्की को पसन्द नहीं करती थीं।

"बिलकुल हैरत में डाल दिया, मैं तो दंग रह गया !" जनरल येपांचिन सभी सवालों के जवाब में यही कहते रहे। "अभी कुछ अरसा पहले जब मैं इनसे पीटर्सबर्ग में मिला था तो मुझे तो यक़ीन नहीं आया। और इस तरह अचानक क्यों ? मैं तो यह जानना चाहता हूँ। यह ख़ुद हमेशा चिल्ला-चिल्लाकर कहा करते थे कि कभी हद से आगे नहीं जाना चाहिए।"

बातचीत के दौरान कही गई फुटकर बातों से पता यह चला कि रादोम्स्की फौज़ की नौकरी से इस्तीफा देने के अपने इरादे का एलान बहुत पहले कर चुका था, लेकिन हर बार उसने यह बात इस तरह मज़ाक़ में कही थी कि कोई यक़ीन ही नहीं कर सकता था कि वह संजीदगी से यह बात कह रहा है। सच तो यह है कि वह गम्भीर समस्याओं के बारे में भी हमेशा मज़ाक़ में ही बात करता था, इसलिए यह बता सकना नामुमकिन था कि उसका मतलब सचमुच वही है या नहीं, ख़ासतौर पर अगर वह नहीं चाहता था कि लोगों को पक्का पता चल सके।

"अरे, मैं तो थोड़े ही दिन के लिए रिटायर हुआ हूँ, कुछ महीनों के लिए या हद से हद एक साल के लिए," रादोम्स्की ने हँसकर कहा।

"लेकिन जहाँ तक मुझे तुम्हारे मामलात का पता है इसकी कोई ज़रूरत तो थी नहीं," जनरल साहब ने अभी तक जोश में रहते हुए कहा।

"और जाकर अपनी ज़मीन-जायदाद का मुआइना जो करना है ? आपने ख़ुद ही इसकी सलाह दी थी। इसके अलावा मैं विदेश भी जाना चाहता हूँ।..."

उन लोगों ने बातचीत का विषय जल्दी ही बदल दिया; लेकिन उनकी असाधारण और लगातार बेचैनी फिर भी ज़रूरत से ज़्यादा मालूम हो रही थी, प्रिंस ने सोचा, जो इस बात को बड़े ध्यान से देख रहा था, और उसे आभास हुआ कि उसमें कुछ विचित्र बात थी।

"तो 'ग़रीब सूरमा' फिर मैदान में आ गया ?" रादोम्स्की ने अग्लाया के पास जाकर पूछा।

प्रिंस को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि अग्लाया ने रादोम्स्की को हैरान और प्रश्न-भरी नज़रों से देखा मानो वह उसे अच्छी तरह समझा देना चाहती हो कि उनके बीच 'ग़रीब सूरमा' की चर्चा कभी हो ही नहीं सकती और यह कि रादोम्स्की का सवाल ही उसकी समझ में नहीं आया था।

"सचमुच, देर हो चुकी है पुश्किन लाने किसी को शहर भेजने के लिए, बहुत देर !" कोल्या जान की बाजी लगाकर मिसेज़ येपांचिना से बहस करता रहा। "मैं हज़ार बार कहूँगा—बहुत देर हो चुकी है।"

रादोम्स्की ने फिर जल्दी से अग्लाया के पास से हटकर उनके पास आकर उनकी बातचीत में दख़ल देते हुए कहा—"शहर भेजने के लिए सचमुच देर हो चुकी है, मैं समझता हूँ कि पीटर्सबर्ग की दुकानें बन्द हो चुकी होंगी—आठ बज चुके हैं," उसने अपनी घड़ी निकालते हुए कहा।

"इतने दिन उसके बिना काम चलता रहा है, कल तक बर्दाश्त कर लो," अदेलईदा बीच में बोली।

"इसके अलावा," कोल्या ने अपनी टाँग अड़ाते हुए कहा, "ऊँचे समाज के लोगों के लिए साहित्य में दिलचस्पी रखना कोई अच्छी बात नहीं है। रादोम्स्की साहब से पूछ लीजिए। लाल पहियोंवाली पीली लैंडो कहीं अच्छी है।"

"यह बात भी तुमने किसी किताब से निकाली है, कोल्या," अदेलईदा ने अपना मत प्रकट किया।

"अरे," रादोम्स्की बीच में बोला, "यह तो जो कुछ भी कहता है किताबों में से ही होता है। यह तो समीक्षाओं के पूरे-पूरे वाक्य बोलता है। मैं मास्टर निकोलस की बातचीत को बहुत दिन से जानता हूँ, लेकिन यह बात इसने किताब से नहीं ली है। ज़ाहिर है, इसका इशारा मेरी लाल पहियोंवाली पीली गेंडी की तरफ़ है। लेकिन मैं उसकी अदला-बदली का सौदा कर चुका हूँ। आप मौक़ा चूक गईं, माफ़ कीजिएगा।"

रादोम्स्की जो कुछ कह रहा था उसे प्रिंस बड़े ध्यान से सुनता रहा। उसकी राय थी कि उसका व्यवहार बहुत अच्छा, विनम्र और विनोदपूर्ण था, और यह बात उसे ख़ासतौर पर अच्छी लगी कि वह कोल्या के साथ, जो उसे धौंस देने की भरपूर कोशिश कर रहा था, इतने दोस्ताना ढंग से बराबरी से बातें कर रहा था।

"यह क्या है ?" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने लेबेदेव की बेटी वेरा से पूछा, जो उनके सामने अपने हाथ में बड़े आकार की लगभग नई और बहुत अच्छी जिल्द बँधी हुई कुछ किताबें लिए खड़ी थी।

"पुश्किन," वेरा ने कहा। "हमारी पुश्किन की किताबें। पापा ने मुझसे कहा है कि आपको भेंट कर दूँ।"

"कैसे हो सकता है ? यह कैसे मुमकिन है ?" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"भेंट नहीं, भेंट नहीं," लेबेदेव ने बेटी के पीछे से उछलकर कहा। "मैं इसकी हिम्मत ही नहीं कर सकता ! बस, लागत के मोल ! यह आन्नेन्कोव की सम्पादित की हुई हमारे परिवार की पुश्किन की किताबें हैं, जो आपको अब कहीं नहीं मिल सकतीं—लागत के मोल। मैं बड़ी श्रद्धा से इन्हें आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ, मैडम, बेचने की इच्छा से ताकि आप अपनी अत्यन्त उदात्त साहित्यिक भावनाओं की उदात्त अधीरता को सन्तुष्ट कर सकें।"

"ख़ैर, अगर आप इन्हें बेच रहे हैं तो मैं शुक्रिया अदा करती हूँ। अलबत्ता, आप घाटे में नहीं रहेंगे कोई नुकसान नहीं होगा; बस, मेहरबानी करके ऐसे मुँह न बनाइए। मैं आपके बारे में सुन चुकी हूँ। सुना है कि आपने बहुत कुछ पढ़ रखा है, किसी दिन बातें करेंगे; किताबें ख़ुद लाएँगे न ?"

"बड़ी श्रद्धा से और...और...बड़े सम्मान की भावना से," लेबेदेव ने किताबें बेटी के हाथ से छीनकर मुँह बनाते हुए कहा: वह बेहद सन्तुष्ट लग रहा था।

"अच्छा, रास्ते में कहीं खो न दीजिएगा। जहाँ तक मेरा सवाल है, सम्मान की भावना के बिना ही ले आइए तो भी कोई हर्ज नहीं है, बस, इतना ध्यान रखिएगा," उन्होंने उसे बड़े ग़ौर से देखते हुए अपनी बात जारी रखी, "कि मैं आपको सामनेवाले दरवाज़े से आगे अन्दर नहीं आने दूँगी, और आज मेरा आपसे मिलने का कोई इरादा नहीं है। अगर चाहें तो अपनी वेरा को फ़ौरन भेज सकते हैं; वह मुझे बहुत अच्छी लगती है।"

"आप इन्हें उन लोगों के बारे में क्यों नहीं बता देते ?" वेरा ने अपने बाप को सम्बोधित करते हुए बड़ी अधीरता से कहा। "आप नहीं भी बताएँगे, तब भी वे अन्दर तो आ ही जाएँगे। अभी से हंगामा मचाना शुरू कर दिया है उन लोगों ने। माफ़ कीजिएगा, लेव निकोलायेविच," वह प्रिंस की ओर मुड़कर बोली, जिसने अपनी हैट उठा ली थी, "कुछ लोग आपसे मिलने आए हैं। चार आदमी हैं। वे काफ़ी देर से राह देख रहे हैं और बहुत बिगड़ रहे हैं, लेकिन पापा उन्हें आपके पास अन्दर नहीं आने दे रहे हैं।"

“कौन लोग हैं ?” प्रिंस ने पूछा।

“कहते हैं कि किसी काम से आए हैं, लेकिन वे इतने हैं कि अगर आपने उन्हें अन्दर न आने दिया तो वे आपको सड़क पर रोकेंगे। अच्छा होगा कि आप उन्हें अन्दर बुलाकर उनसे पिण्ड छुड़ा लें। गव्रीला अर्दालिओनोविच और प्तीत्सिन उन्हें चले जाने के लिए समझा-बुझा रहे हैं, लेकिन वे मानते ही नहीं।”

“पव्लीश्चेव का बेटा ! पव्लीश्चेव का बेटा ! कोई ज़रूरत नहीं है ! कोई ज़रूरत नहीं है !” लेबेदेव ने अपनी बाँहें घुमाते हुए चिल्लाकर कहा। “वे इस लायक़ भी नहीं हैं, साहब, कि उनकी बातें सुनी जाएँ। आलीजनाब प्रिंस साहब, उनकी वजह से परेशान होना आपके लिए ठीक नहीं है। जी नहीं, साहब। वे इस लायक़ नहीं हैं।...”

“पव्लीश्चेव का बेटा—हे भगवान !” प्रिंस बहुत परेशान होकर चिल्लाया। “मैं जानता हूँ, लेकिन...मैं...मैंने गव्रीला अर्दालिओनोविच से इस मामले को निबटाने के लिए कहा था। गव्रीला अर्दालिओनोविच ने अभी मुझे बताया...”

लेकिन गान्या अब तक अन्दर के कमरे से निकलकर बाहर बरामदे में आ चुका था। प्तीत्सिन उसके पीछे-पीछे था। बग़लवाले कमरे में शोर हो रहा था और जनरल ईवोल्गिन की आवाज़ कई दूसरे लोगों की आवाज़ को दबाने की कोशिश करती हुई सुनाई दे रही थी। कोल्या शोर सुनकर फ़ौरन भागकर बग़लवाले कमरे में गया।

“बहुत दिलचस्प मामला है,” रादोम्स्की ने ऊँचे स्वर में अपना मत प्रकट किया।

“तो इसे इसके बारे में मालूम है !” प्रिंस ने सोचा।

“पव्लीश्चेव के बेटे से क्या मतलब ? और...पव्लीश्चेव का कोई बेटा है भी ?” जनरल येपांचिन ने उन सब लोगों को बड़ी उत्सुकता से देखते हुए हैरत से पूछा और उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वही अकेले ऐसे थे जिन्हें इस नए मामले के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था।

सचमुच सभी लोगों के मन में खलबली मची हुई थी और वे सभी बहुत उत्कंठित थे। प्रिंस को बहुत आश्चर्य हो रहा था कि उसके इस तरह के बिलकुल ही निजी मामले में उन सबको इतनी दिलचस्पी पैदा हुई।

“बहुत अच्छा तो यह होगा,” अग्लाया ने प्रिंस के पास जाकर ख़ासतौर पर गम्भीर स्वर में कहा, “अगर आप ख़ुद इस मामले को फ़ौरन निबटा दें और हम लोगों को आपके गवाह होने की इजाज़त दें। वे लोग आपको कीचड़ में घसीटने की कोशिश कर रहे हैं, प्रिंस। आपको पूरी कामयाबी के साथ अपने आपको सही साबित करना चाहिए, और मैं पहले से ही बहुत खुश हूँ कि जीत आपकी होगी।”

“मैं भी यही चाहती हूँ कि इस बेहूदा दावे को फ़ौरन ख़त्म कर दिया जाए,” मिसेज़ येपांचिना ने चिल्लाकर कहा। “प्रिंस, उन्हें उनकी असली हैसियत बता दो। छोड़ना नहीं उन्हें ! इस मामले के बारे में सुनते-सुनते मेरे कान पक गए हैं और तुम्हारी वजह से मैं अपना बहुत ख़ून खुश्क कर चुकी हूँ। इसके अलावा, देखकर कुछ मज़ा भी आएगा। उन लोगों को बुला लो, और हम सब बैठ जाते हैं। अग्लाया का विचार बिलकुल अच्छा है। आपने इसके बारे में कुछ सुन रखा है न, प्रिंस ?” उन्होंने प्रिंस श. को सम्बोधित करते हुए कहा।

“जी हाँ, सुना क्यों नहीं है, आपके यहाँ भी सुना है,” प्रिंस श. ने जवाब दिया। “लेकिन मैं ख़ासतौर पर उन नौजवानों को देखना चाहता हूँ।”

“वे वही तो हैं न जिन्हें शून्यवादी कहा जाता है ?”

"जी नहीं, मैडम," लेबेदेव आगे बढ़कर बीच में बोला; वह उत्तेजना के मारे लगभग काँप रहा था, "वे सही माने में शून्यवादी नहीं हैं। वे बिलकुल ही अलग हैं, मैडम, एक ख़ास क़िस्म के लोग। मेरे भानजे ने मुझे बताया कि वे शून्यवादियों से भी आगे बढ़ गए हैं। अगर आप समझती हैं कि आपके यहाँ मौजूद होने की वजह से वे किसी तरह अटपटा महसूस करेंगे तो यह सोचना ग़लत है। जी नहीं, मैडम, वे ज़रा भी अटपटा नहीं महसूस करेंगे। शून्यवादियों में कभी-कभी तो ऐसे लोग मिल जाते हैं, जो जानकार होते हैं, बल्कि उनमें विद्वान लोग भी होते हैं, लेकिन ये लोग, मैडम, उनसे आगे निकल गए हैं क्योंकि वे सबसे पहले तो कारोबारी लोग हैं। यह, मैडम, एक तरह से शून्यवाद का ही नतीजा है, लेकिन सीधे तरीक़े से नहीं, बल्कि सुने-सुनाए और गोलमोल तरीक़े से। ये लोग अपने विश्वासों को कभी किसी अखबार के लेख में नहीं, बल्कि सीधी कार्रवाई में व्यक्त करते हैं; मिसाल के लिए पुश्किन की निरर्थकता जैसी बात या रूस के टुकड़े-टुकड़े कर देने की ज़रूरत जैसी बात वे नहीं करते हैं। जी नहीं, मैडम, अभी अगर उन्हें किसी चीज़ की सख़्त ज़रूरत होती है तो वे इसे अपना अधिकार समझते हैं कि रास्ते में आनेवाली हर रुकावट को हटा दें, चाहे उन्हें अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दस-बीस लोगों को मौत के घाट ही क्यों न उतारना पड़े। नहीं, प्रिंस, मैं तो आपको कभी यह सलाह नहीं दूँगा कि..."

लेकिन प्रिंस मुलाक़ातियों के आने के लिए दरवाज़ा खोलने को उठ चुका था।

"आप उन्हें बेकार बदनाम कर रहे हैं, लेबेदेव," उसने मुस्कराकर कहा। "आपके भानजे ने आपका दिल बहुत दुखाया है। इनके बातों पर विश्वास न कीजिए, लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि गोर्स्की और दनीलोव जैसे लोग इक्का-दुक्का ही होते हैं, और वे...मतलब है...सिर्फ़ गुमराह होते हैं। लेकिन अच्छा यही होगा कि मैं उन लोगों से यहाँ न मिलूँ—आप सब लोगों के सामने। माफ़ कीजिएगा, लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना, लेकिन जब वे लोग आएँगे, तो मैं बस उन्हें आपको दिखाकर यहाँ से लेकर चला जाऊँगा। आइए, साहबान !"

उसे एक विचार ने चिन्तित कर रखा था जो उसके लिए विशेष रूप से कष्टप्रद था। उसे लग रहा था—कहीं इस सारे मामले की तैयारी पहले से ही इस तरह तो नहीं की गई थी कि वह ठीक उसी वक़्त हो, ताकि उस पर इन गवाहों की मौजूदगी में बहस हो सके, शायद उसे नीचा दिखाने के लिए, उसकी जीत होने के लिए नहीं। लेकिन उसे अपने इस 'बेहूदा और दुष्टतापूर्ण शक्कीपन' पर अफ़सोस हो रहा था। वह महसूस कर रहा था कि अगर किसी को मालूम हो जाता कि उसके दिमाग़ में इस तरह का विचार था तो वह शर्म के मारे मर जाता, और जिस क्षण उसके नए मिलनेवाले अन्दर आए तो वह सच्चे हृदय से यह विश्वास करने को तैयार था कि उसके आस-पास जितने लोग थे उनमें नैतिक दृष्टि से वह सबसे पतित था।

पाँच आदमी अन्दर आए; चार नए थे और पाँचवें जनरल ईवोल्गिन थे, जो उनके पीछे-पीछे कमरे में आ गए थे; वह बहुत उत्तेजित लग रहे थे और उन पर धारा-प्रवाह बोलते रहने का मानो दौरा-सा पड़ गया था। "यह तो मेरी तरफ़ हैं ही !" प्रिंस ने मुस्कराकर सोचा। उनके बीच कोल्या भी चुपके से कमरे में आ गया—वह बहुत जोश में आकर इप्पोलीत से बातें कर रहा था, जो आगंतुकों में से एक था। इप्पोलीत सुन रहा था और खीसें निकालकर हँस रहा था।

प्रिंस ने अपने मेहमानों को बिठाया। वे सभी बहुत कम-उम्र थे और अभी बालिग भी नहीं हुए थे, इसलिए खुद उस मामले पर और बाद में वहाँ जो कुछ हुआ उस पर आश्चर्य होना स्वाभाविक ही था। मिसाल के लिए, जनरल येपांचिन, जिन्हें इस 'नए मामले' के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था, ऐसे कम-उम्र लोगों को देखकर इतनी बुरी तरह भड़क उठे कि अगर प्रिंस के निजी

हितों के बारे में उनकी बीवी के विचित्र उत्साह ने उन्हें रोक न लिया होता तो वह ज़रूर इसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते। लेकिन कुछ तो अपनी उत्सुकता के कारण और कुछ अपनी नेकी के कारण वह वहीं रुके, इस उम्मीद से भी कि शायद वह कुछ सहायता कर सकें, या बहरहाल अपना रोब इस्तेमाल करके किसी काम आ सकें; लेकिन जब जनरल ईवोल्गिन ने दूर से उनका अभिवादन किया तो उनका गुस्सा फिर भड़क उठा; उनकी त्योरियाँ चढ़ गईं और उन्होंने बिलकुल चुप रहने का फ़ैसला किया।

जो चार मिलनेवाले आए थे उनमें से एक इतना कम-उम्र नहीं था। दरअसल, वह तीस साल का आदमी था, रोगोझिन के गरोह का 'रिटायर्ड लेफ़्टिनेंट', वह बॉक्सर जो "अपने जमाने में भिखारियों को पन्द्रह-पन्द्रह रूबल दे दिया करता था।" साफ़ समझ में आता था कि वह बाक़ी लोगों के साथ एक वफ़ादार दोस्त की हैसियत से आया था ताकि वे अधिक आश्वस्त अनुभव करें और अगर ज़रूरत पड़े तो वह उन्हें सहारा दे सके। बाक़ी लोगों में पहला और सबसे प्रमुख स्थान उस नौजवान का था जिसे 'पव्लीश्चेव का बेटा' कहा जाता था, लेकिन जिसने परिचय देते समय अपना नाम अंतीप बुर्दोव्स्की बताया। बहुत घटिया और मैले-कुचैले कपड़े जैसे-तैसे पहन रखे थे और उसके मैले कोट की आस्तीनें आईने की तरह चमक रही थीं, उसकी चीकट वास्कट के बटन गले तक बन्द थे और उसके नीचे कमीज का कोई पता नहीं चल रहा था; उसका बहुत ही गन्दा काला चीकट रेशमी रूमाल रस्सी की तरह बँट गया था; उसके साथ न जाने कब से नहीं धोए गए थे; उसके चेहरे पर ढेरों मुँहासे थे; उसके बालों का रंग सुनहरा था और अगर इस तरह की बात कही जा सके तो उसकी सूरत पर मासूमियत-भरी ढिठाई थी। वह दुबला-पतला, मँझोले क़द का, लगभग बाईस साल का नौजवान था। उसके चेहरे से व्यंग या अपने मन में झाँककर देखने का कोई संकेत नहीं मिलता था; इसके विपरीत, उससे अपने अधिकारों के बारे में दृढ़ और ठोस विश्वास और इसके साथ ही हमेशा शहीद बने रहने और महसूस करने की विचित्र लालसा के अतिरिक्त और कुछ भी व्यक्त नहीं होता था। वह उत्तेजित होकर, जल्दी-जल्दी और हक़ला- हक़लाकर बोलता था, मानो वह अपने शब्दों को ठीक से ढाल न पा रहा हो और जैसे उसकी जबान पर ताला पड़ा हो या यहाँ तक कि वह कोई विदेशी हो, हालाँकि दरअसल वह ठेठ रूसी था।

उसके साथियों में पहला तो लेबेदेव का भानजा था, जिससे पाठक पहले ही परिचित हो चुके हैं, और दूसरा इप्पोलीत था। इप्पोलीत बहुत ही कम-उम्र—यही कोई सत्रह-अट्ठारह साल का—था, जो सूरत से बहुत प्रतिभाशाली लगता था लेकिन जिसके चेहरे पर हमेशा चिड़चिड़ाहट का भाव रहता था और उस पर बीमारी ने भी अपनी भयानक छाप डाली थी। वह हड्डियों के ढाँचे जैसा दुबला-पतला, पीला और मुरझाया हुआ था; उसकी आँखों में चमक थी और गालों पर तमतमाहट के दो धब्बे थे। वह लगातार खाँसता रहता था; हर शब्द के साथ जो वह बोलता था, हर साँस के साथ जो वह लेता था, चटचटाहट की आवाज़ होती थी। साफ़ ज़ाहिर था कि वह क्षय-रोग की आख़िरी मंज़िल में था। ऐसा लगता था कि वह अब दो ही तीन हफ़्ते का मेहमान और है। वह बहुत थका हुआ था और सबसे पहले कुर्सी पर निढ़ाल होकर बैठ गया। बाक़ी सब अन्दर आने पर लज्जित-से हो गए; लेकिन वे रोब से देख रहे थे और स्पष्टतः उन्हें डर लग रहा था कि अपनी किसी न किसी हरकत से वे अपनी प्रतिष्ठा को आघात न पहुँचाएँ, जो कुछ विचित्र ढंग से उनकी इस ख्याति के विपरीत था कि वे अपने हितों को छोड़कर बेकार की दुनियादारी की छोटी-मोटी हरकतों, पूर्वाग्रहों और संसार की लगभग किसी भी चीज़ की परवाह नहीं करते।

"अंतीप बुर्दोव्स्की," जल्दी-जल्दी और हकलाते हुए "पव्लीश्चेव के बेटे" ने अपने आने की

घोषणा की।

“व्लादीमिर दोक्तोरेंको,” लेबेदेव के भानजे ने स्पष्ट और खुले हुए स्वर में अपने आने की सूचना दी मानो उसे इस बात पर गर्व हो कि उसका नाम दोक्तोरेंको था।

“केल्लेर !” रिटायर्ड लेफ़्टिनेंट ने बुदबुदाकर कहा।

“इप्पोलीत तेरेंत्येव,” आख़िरीवाले ने असाधारण रूप से तीखे स्वर में चिचियाकर कहा।

आख़िरकार वे सब प्रिंस के सामने एक कतार में बैठ गए; उन सबने अपना-अपना परिचय देकर फ़ौरन त्योरियाँ चढ़ा लीं और मनोबल बढ़ाए रखने के लिए अपनी टोपियाँ एक हाथ से दूसरे हाथ में लेने लगे। वे सब बोलने के लिए तैयार थे; फिर भी वे बहुत अकड़कर किसी चीज़ की प्रतीक्षा करते हुए चुप रहे, मानो कह रहे हों, “नहीं, यार, तुम हमें झाँसा नहीं दे सकते !” अनायास ही ऐसा लग रहा था कि जैसे ही उनमें से कोई अपना मुँह खोलेगा सभी फ़ौरन एक साथ बोलना शुरू कर देंगे, एक-दूसरे की बात काटेंगे और दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश करेंगे।

८

“देखिए,” प्रिंस ने कहना शुरू किया, “मैं आप लोगों में से किसी के भी आने की उम्मीद नहीं कर रहा था। मैं आज तक बीमार था और मैंने गव्रीला अर्दालिओनोविच से आपका काम (वह अंतीप बुर्दोव्स्की की ओर मुड़ा) निबटा देने के लिए एक महीने पहले कह दिया था, जैसा कि मैंने आपको उस वक़्त बताया था। लेकिन निजी तौर पर बात समझा देने में भी मुझे कोई एतराज़ नहीं है, लेकिन इतना तो आप भी मानेंगे कि इस वक़्त...मेरा सुझाव है कि आप मेरे साथ दूसरे कमरे में चलें, मगर बहुत देर के लिए नहीं।...यहाँ मेरे दोस्त आए हुए हैं, और यक़ीन कीजिए...”

“दोस्त...आप जितने चाहें, लेकिन इतना मैं आपको बता दूँ, साहब,” लेबेदेव के भानजे ने अचानक अपनी आवाज़ ऊँची किए बिना बहुत ही आदेशपूर्ण ढंग से बात काटकर कहा, “इतना मैं भी आपको बता दूँ, साहब, कि आपको हम लोगों के साथ ज़्यादा शराफ़त का बर्ताव करना चाहिए था, और हमें अपने नौकर के कमरे में दो घंटे तक बिठाए नहीं रखना चाहिए था...”

“और ज़ाहिर है...मैं भी...और यह बिलकुल प्रिंसोंवाली हरकत है ! और यह...आप जरनैल जैसे हैं ! और मैं कोई आपका नौकर नहीं हूँ, साहब ! और मैं...मैं...” अंतीप बुर्दोव्स्की अचानक बहुत उत्तेजित होकर बुदबुदाया; उसके होंठ काँप रहे थे, उसकी आवाज़ में अपमान की कँपकँपी थी, उसके मुँह से थूक की बूँदें उड़ रही थीं, मानो वह अचानक फट गया हो या उसका विस्फोट हो गया हो; लेकिन वह इतनी हड़बड़ी में था कि दसवें शब्द के बाद उसकी बात समझ सकना भी नामुमकिन था।

“बिलकुल प्रिंसों जैसी हरकत थी !” इप्पोलीत ने फटी हुई तीखी आवाज़ में चीख़कर कहा।

“अगर मेरे साथ ऐसा हुआ होता,” बॉक्सर ने गुर्राकर कहा, “मतलब यह कि अगर इस मामले से मेरा कोई सम्बन्ध होता, एक इज़्ज़तदार आदमी की हैसियत से, तो बुर्दोव्स्की की जगह मैं... यानी...मैं...”

“देखिए,” प्रिंस ने एक बार फिर कहा, “मुझे अभी एक मिनट पहले बताया गया कि आप लोग आए हैं, यक़ीन कीजिए।”

“हम आपके दोस्तों से डरते नहीं हैं, प्रिंस, वे कोई भी क्यों न हों, क्योंकि हम अपने अधिकार की हद के अन्दर हैं,” लेबेदेव के भानजे ने फिर एलान किया।

"लेकिन, यह बताइए, साहब," इप्पोलीत ने फिर चिचियाकर कहा, लेकिन इस बार वह बहुत उत्तेजित था, "आपको बुर्दोव्स्की के मामले में अपने दोस्तों को बीच में लाने का क्या हक़ था ? कौन जाने हमें आपके दोस्तों का फ़ैसला अच्छा न लगे। यह तो बिलकुल साफ़ है—है न ?—कि आपके दोस्तों का फ़ैसला क्या होगा !"

"लेकिन, बहरहाल, अगर आप, बुर्दोव्स्की साहब, यहाँ कुछ कहना नहीं चाहते," प्रिंस, जो इस तरह की शुरुआत से बहुत चकित रह गया था, आख़िरकार बीच में अपनी एक बात कहने में सफल हो गया, "तो मेरा सुझाव है कि हम लोग फ़ौरन दूसरे कमरे में चलें और, मैं एक बार फिर कहता हूँ कि मैंने अभी मिनट-भर ही हुआ जब आप सबके आने के बारे में सुना।..."

"लेकिन आपको कोई हक़ नहीं है, कोई हक़ नहीं है, कोई हक़ नहीं है !...आपके दोस्त... यह बात !" बुर्दोव्स्की अचानक फिर बुड़बुड़ाया और उसने कमरे में चारों ओर आतंक और आशंका-भरी दृष्टि डाली, और जितना ही अधिक वह अविश्वासी और आतंकित होता जाता था उतना ही अधिक वह उत्तेजित भी होता जाता था। "कोई हक़ नहीं है !"

यह कहकर वह अचानक रुक गया जैसे उसने अपनी ही बात काट दी हो, और बाहर को उभरी हुई अपनी कमज़ोर आँखें, जिनके मोटे-मोटे लाल डोरे साफ़ दिखाई दे रहे थे, पूरी खोलकर वह अपने सारे शरीर को आगे की ओर झुकाए प्रिंस को सवालिया नज़रों से घूरने लगा। इस बार प्रिंस इतना हड़बड़ा गया कि वह भी चुप हो गया और वह भी एक शब्द कहे बिना आँखें फाड़कर उसे घूरने लगा।

"लेव निकोलायेविच," मिसेज़ येपांचिना ने अचानक प्रिंस को सम्बोधित किया, "इसे पढ़ो, फ़ौरन, अभी, इसका तुम्हारे मामले से सीधा सम्बन्ध है।"

उन्होंने हास्य साप्ताहिक उनकी ओर बढ़ा दिया और अपनी उँगली से एक लेख की ओर इशारा किया। जिस वक़्त नए मुलाक़ाती अन्दर आ रहे थे लेबेदेव मिसेज़ येपांचिना के पास लपककर गया था, जिनकी कृपादृष्टि प्राप्त करने की वह भरपूर कोशिश कर रहा था, और एक शब्द भी कहे बिना उसने जल्दी से अखबार अपनी जेब से निकाला था और उसे उनके सामने करके एक स्तम्भ की ओर संकेत किया था जिस पर पेंसिल से निशान लगा हुआ था। मिसेज़ येपांचिना को जितना भी पढ़ने का समय मिला था उस पर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ था और वह उद्विग्न हो उठी थीं।

"शायद ज़्यादा अच्छा होगा अगर मैं इसे ज़ोर से पढ़कर न सुनाऊँ ?" प्रिंस ने बहुत अटपटा महसूस करते हुए बुदबुदाकर कहा। "मैं इसे खुद पढ़ लूँगा...बाद में..."

"तो फिर," मिसेज़ येपांचिना कोल्या की ओर मुड़ीं और इससे पहले कि प्रिंस अखबार को हाथ भी लगा पता उन्होंने उसे उसके हाथ से झपट लिया, "तुम पढ़कर सुना दो, फ़ौरन पढ़ो, ज़ोर से—सबको ज़ोर से पढ़कर सुनाओ, इस तरह कि सब लोग सुन सकें।"

मिसेज़ येपांचिना तेज मिजाज की और आवेगी महिला थीं, कभी-कभी उनका आचरण उस जहाजी जैसा हो जाता था जो अपने सारे लंगर एक साथ उठा लेता है और कुछ सोचे बिना मौसम कैसा भी हो समुद्र में चल पड़ता है। जनरल येपांचिन बेचैनी से कसमसाए। सब लोग शुरू में तो अनायास ही रुक गए और फिर हैरान होकर प्रतीक्षा करने लगे; इतने में कोल्या ने अखबार खोला और उस जगह से ज़ोर से पढ़ने लगा जो लेबेदेव ने तेजी से लपककर उसे दिखाई थी।

"सर्वहारागण और रईसज़ादे, रोजमर्रा होनेवाली लूट की एक घटना ! **प्रगति ! सुधार ! न्याय !**

"हमारे तथाकथित पवित्र रूस में विचित्र घटनाएँ होती रहती हैं सुधारों और कम्पनियों के उद्यम के हमारे इस युग में, जब हर साल करोड़ों की दौलत विदेशों को भेज दी जाती है, उद्योगों

को प्रोत्साहन देने के इस युग में जब कारखानों में काम करनेवाले अपाहिजों जैसे बैठे रहते हैं, वगैरह-वगैरह; सारी बातें तो गिनाई नहीं जा सकतीं इसलिए, आइए, हम मतलब की बात पर आ जाएँ। हमारे जमींदारों के उन कुलीन घरानों के, जिनमें अब कोई दम नहीं रह गया है, एक सपूत के साथ एक विचित्र घटना हुई, उन रईसज़ादों में से एक के साथ जिनके दादा अपना सारा पैसा जुए में हार जाते थे, जिनके बाप फौज़ में छोटे-मोटे अफ़सरों और लेफ़्टिनेंटों की तरह सेवा करने पर मजबूर हो जाते थे और जो, सारे के सारे, उस वक़्त मरते थे जब उन पर सरकारी पैसे के इस्तेमाल में कोई छोटी-सी भूल करने पर मुक़द्दमा चल रहा होता था, और जिनके बच्चे, हमारी इस कहानी के हीरो की तरह, बड़े होकर या तो बौड़म बन जाते हैं या कोई अपराध करने पर पकड़े जाते हैं, जिससे उन्हें, प्रसंगवश बता दिया जाए, हमारी जूरी नैतिक उन्नति और सुधार के नाम पर बरी कर देती है; या आख़िरकार वे उस तरह की किसी घटना में फँस जाते हैं जिस पर हमारी पब्लिक को आश्चर्य होता है और इस तरह वे हमारे इस कलंकित युग को और भी कलंकित करते हैं। छह महीने हुए यह रईसज़ादा विदेशियों की तरह गेटर्स पहने और पतले कोट में ठिठुरता हुआ जाड़े में रूस वापस आया, स्विट्ज़रलेण्ड से, जहाँ उसक़ा बौड़मपन का (जी हाँ !) इलाज हो रहा था। यह मानना होगा कि वह था बड़ा भाग्यशाली, इस हद तक कि, उसकी दिलचस्प बीमारी की तो बात ही छोड़िए, जिसके इलाज के लिए वह स्विट्ज़रलैण्ड गया था (भला किसी का बौड़मपन का इलाज होते सुना है आपने—क्या कोई इस तरह की बात सोच भी सकता है ? ! !), वह इस कहावत को भी चरितार्थ करता है कि "अकल के अन्धे गाँठ के पूरे !"। आप खुद फ़ैसला कीजिए—हमारे यह बैरन साहब अभी बच्चे ही थे कि उनके बाप मर गए, जिनके बारे में सुना गया है कि वह फौज़ में लेफ़्टिनेंट थे और अपनी कम्पनी का सारा पैसा जुए में हार ज़ाने और शायद अपने किसी मातहत को ज़रूरत से ज़्यादा बेंत लगवाने के अपराध में (वह पुराना जमाना तो याद होगा आप लोगों को !) जब उन पर मुक़द्दमा चल रहा था तभी उनका देहान्त हो गया था; उनके बेटे को एक बहुत धनी रूसी ज़मींदार ने उदारता के भाव से लेकर पाला-पोसा था। यह रूसी ज़मींदार—जिन्हें हम प. कहेंगे—उस स्वर्ण-युग में चार हज़ार भूदासों के मालिक थे (भूदास ! क्या यह शब्द समझ में आता है आपकी ? मेरी तो समझ में नहीं आता। मुझे किसी शब्दकोश में देखना पड़ेगा—जैसे कहते हैं, "बात पुरानी नहीं है, लेकिन विश्वास नहीं होता !"), और वह प्रायः उन रूसी निकम्मे और परजीवी लोगों में से थे जो अपनी सारी ऐश की ज़िन्दगी विदेशों में बिताते हैं, गर्मियाँ खनिज जल-स्रोतों के किसी विदेशी स्वास्थ्य-केन्द्र में और सर्दियाँ पेरिस के शातो-द-फ़्लेयर्स में, जहाँ वे अपने जीवनकाल में बहुत बड़ी-बड़ी रक़में छोड़ आते हैं। सच पूछिए तो यह बात अकाट्य रूप से कही जा सकती है कि उस पुराने जमाने में भूदास अपने मालिकों को जितना कर अदा करते थे उसका कम से कम एक तिहाई पेरिस के शातो-द-फ़्लेयर्स के मालिक की जेब में जाता था (कैसा तक़दीरवाला बन्दा था !)। बहरहाल, जो भी हो, निश्चित प. ने हमारे कुलीन अनाथ को शहजादों की तरह पाला, उसके लिए ट्यूटर रखे, और गवर्नेसें रखीं (ज़ाहिर है, आकर्षक), जिनके बारे में यह भी बता दिया जाए कि उन्हें पेरिस से वह खुद लाते थे। लेकिन एक अभिजात वंश का यह अन्तिम सपूत बौड़म था, शातो-द-फ़्लेयर्स की गवर्नेसें उसके सिलसिले में कुछ भी न कर सकीं, और बीस बरस की उम्र तक हमारे इस विद्यार्थी ने कोई भी भाषा बोलना नहीं सीखा था, रूसी भी नहीं। यह आख़िरी बात तो ख़ैर माफ़ की जा सकती थी। आख़िरकार, भूदासों के रूसी मालिक प. के दिमाग़ में यह अजीब बात आई कि उस बौड़म को शायद स्विट्ज़रलैण्ड में अकल सिखाई जा सके—बात अजीब तो ज़रूर थी लेकिन बिलकुल तर्कसंगत थी—एक परजीवी और

सम्पत्ति के मालिक के लिए यह सोचना स्वाभाविक ही था कि वह बाजार में पैसे से बुद्धि भी खरीद सकता है, ख़ासतौर पर स्विट्जरलैण्ड में। वहाँ पाँच साल किसी मशहूर प्रोफ़ेसर की निगरानी में इलाज कराने में निकल गए, और उसमें हज़ारों की रक़म लुटा दी गई—बौड़म को समझदार न होना था तो न हुआ, लेकिन हमने सुना है कि वह इंसानों जैसा लगने लगा, कमोबेश ज़रूर। अचानक प. मर गए। ज़ाहिर है, वह कोई वसीयत नहीं छोड़ गए थे, और, जैसा कि आमतौर पर होता है, उनके मामलात बहुत उलझी हुई हालत में थे। सैकड़ों लालची उत्तराधिकारी ऐसे थे जिन्हें एक अभिजात वंश के किसी भी अन्तिम सपूत की रत्ती-भर परवाह नहीं थी जो ख़ैरात के बल पर स्विट्ज़रलैण्ड में पैदाइशी बौड़मपन का इलाज करा रहा था। बौड़म होने के बावजूद इस रईसज़ादे ने उस प्रोफ़ेसर को भी धोखा देने की कोशिश की और, कहा जाता है कि अपने डॉक्टर से अपने उपकारी के मरने की बात छिपाकर उसने दो साल तक फीस दिए बिना इलाज कराया। लेकिन वह प्रोफ़ेसर भी बड़ा धूर्त था—अपने रोगी की निर्धनता से और उससे भी अधिक इस पच्चीस साल के निखट्टू की खुराक से तंग आकर उन्होंने उसे अपने पुराने लम्बे जूते पहनाकर और अपना फटा-पुराना लबादा उसे भेंट करके उसे उदारता के मारे तीसरे दर्जे में बिठाकर nach Russland[1] रवाना कर दिया—स्विट्ज़रलैण्ड में उससे किसी तरह पिण्ड तो छूटे ! लगता तो ऐसा है कि भाग्य ने हमारे हीरो की ओर से मुँह फेर लिया था। लेकिन ऐसा बिलकुल नहीं था। भाग्य जो पूरे के पूरे प्रान्तों को अकाल से मौत के मुँह में ढकेल देता है, किसी छोटे मोटे महत्वहीन प्रदेश पर मुफ्त अपने वरदानों की वर्षा कर देता है, क्रिलोव की लोक-कथा के उस बादल की तरह जो पानी की एक-एक बूँद को तरसे हुए खेतों पर से तो गुज़र गया लेकिन अपना सारा पानी जाकर समुद्र में उँडेल दिया। जिस समय वह स्विट्ज़रलैण्ड से पीटर्सबर्ग पहुँचा था लगभग उसी समय में उसकी माँ के (जो निस्संदेह किसी व्यापारी के परिवार की थीं) एक सन्तानहीन बूढ़े कुँआरे रिश्तेदार की मृत्यु हो गई; वह लम्बी दाढ़ीवाला ठेठ रूसी सौदागर था और पुराने धर्म पर विश्वास करता था; उसने अपने पीछे कई लाख की नकद, पक्की, खरी, भरपूर दौलत छोड़ी थी (प्रिय पाठक, काश यह हमारे-आपके लिए होती !), और यह सारी की सारी रक़म हमारे उस रईसज़ादे के लिए, हमारे इस बैरन के लिए, जो स्विट्ज़रलैण्ड में बौड़मपन का इलाज करा चुका था ! लेकिन अब तो रंग ही दूसरा था ! हमारे इस लम्बे जूतोंवाले बैरन के चारों ओर, जो एक मशहूर सुन्दर रखैल के चक्कर में पड़ गया था, दोस्तों और जान-पहचानवालों की एक पूरी भीड़ जमा हो गई, उसके कुछ रिश्तेदार भी निकल आए, लेकिन सबसे बढ़कर तो कितनी ही कुलीन नौजवान लड़कियाँ उससे विवाह का सम्बन्ध जोड़ने को उत्सुक थीं—इससे अच्छा वर उन्हें कहाँ मिल सकता था ? कुलीन, लखपति और बौड़म—सारे गुण एक साथ, ऐसा पति तो चिराग़ लेकर ढूँढ़ने पर भी न मिलता, और ऐसा आदमी कहकर बनवाया तो जा नहीं सकता !..."

"यह...यह बात मेरी...मेरी समझ में बिलकुल नहीं आती !" जनरल येपांचिन गुस्से से खौलते हुए चिल्लाए।

"बस, रहने दो, कोल्या !" प्रिंस ने विनीत स्वर में कहा। चारों ओर से आवाज़ें सुनाई दीं।

"पढ़ते रहो ! कुछ भी हो पढ़ते रहो !" मिसेज़ येपांचिना ने स्पष्टतः बड़ी कोशिश से अपने आपको रोकते हुए तड़ से कहा। "प्रिंस, अगर तुमने उसे रोका तो हमारा झगड़ा हो जाएगा।"

अब तो कुछ किया ही नहीं जा सकता था। कोल्या उद्विग्न स्वर में पढ़ता रहा; उसका चेहरा तमतमाया हुआ था और वह उत्तेजित था।

1. रूस को। (जर्मन)

"जब हमारा यह नौदौलता लखपति एक तरह से अपने इस सौभाग्य का आनन्द ले रहा था, उसी समय एक बिलकुल ही अप्रत्याशित घटना हुई। एक दिन सबेरे एक आदमी उससे मिलने आया; उसकी मुद्रा शान्त और कठोर थी, उसने बहुत साधारण कपड़े पहन रखे थे और वह देखने में नेक लगता था, और उसके विचारों का झुकाव असंदिग्ध रूप से प्रगतिशीलता की ओर था। बहुत ही शिष्ट, लेकिन न्यायोचित और गरिमामय शब्दों में उसने अपने आने का अभीष्ट समझाया। वह एक नामी वकील था; उसे एक नौजवान ने भेजा था, जिसकी तरफ़ से वह पैरवी कर रहा था। यह नौजवान स्वर्गीय प. का बेटा ही था, हालाँकि उसका कुलनाम दूसरा था। विलासी प. ने अपनी जवानी में एक लड़की को, जो ग़रीब लेकिन ईमानदार थी, अपने जाल में फाँस लिया था (ज़ाहिर है, पुरानी भूदास व्यवस्था के अन्तर्गत अपने सामन्ती अधिकारों का लाभ उठाकर); वह लड़की उनके घर में भूदास की तरह काम करती थी लेकिन उसने अच्छी योरपीय शिक्षा पाई थी। जब प. का ध्यान अपने संसर्ग के अनिवार्य लेकिन आसन्न परिणाम की ओर गया तो उन्होंने जल्दी से उसकी शादी एक निष्कलंक चरित्रवाले आदमी के साथ करवा दी, जो व्यापार करता था और सरकारी नौकरी भी करता था और बहुत दिन से उस लड़की से प्रेम करता था। शुरू में तो वह नव-दम्पती की मदद करते रहे, लेकिन जल्दी ही उस लड़की के स्वाभिमानी पति ने अपने निष्कलंक चरित्र के कारण उनसे और ज़्यादा मदद लेने से इनकार कर दिया। कुछ समय बीता और प. ने धीरे-धीरे उस लड़की को और उसके गर्भ से हुए अपने बेटे को भुला दिया, और, जैसा कि हम जानते हैं बाद में वह कोई व्यवस्था किए बिना ही मर गए। इसी बीच उनके बेटे को, जिसका जन्म क़ानूनी वैवाहिक सम्बन्ध के अन्तर्गत हुआ था और जो एक दूसरे ही कुलनाम के साथ बड़ा हुआ था, उसकी माँ के निष्कलंक चरित्रवाले पति ने अपना बेटा मान लिया था, लेकिन कुछ समय बाद उसकी भी मृत्यु हो गई थी और बेटे पर न सिर्फ़ अपना बल्कि अपनी बीमार और अपाहिज माँ का भी पेट पालने की जिम्मेदारी आ गई थी जिसकी दोनों टाँगें बेकार हो गई थीं और जो एक सुदूर प्रान्त में रहती थी। बेटा खुद ईमानदारी से अनथक मेहनत करके, सौदागरों के घरों में लड़कों को पढ़ाकर राजधानी में अपनी रोज़ी कमाता था, और इस तरह उसने पहले तो स्कूल में पढ़ने और बाद में यूनिवर्सिटी में नाम लिखाए बिना पढ़ने के दौरान अपना खर्च चलाया; उसे उम्मीद थी कि यह पढ़ाई आगे चलकर रोज़ी कमाने में उसके काम आएगी। लेकिन दस कोपेक घंटे के हिसाब से पढ़ाकर कोई रूसी सौदागरों से कमा ही कितना सकता है, और फिर, जिसे ऊपर से एक अपाहिज माँ की भी देखभाल करनी हो और सुदूर प्रान्त में जिसकी मृत्यु से उसका जीवन किसी तरह सुगम हो गया हो ? अब सवाल यह है कि न्याय के अनुसार हमारे इस रईसज़ादे को क्या फ़ैसला करना चाहिए था ? प्रिय पाठक, आप बेशक सोचते होंगे कि उसने अपने मन में कहा होगा—'सारी ज़िन्दगी मैं प. की उदारता के वरदानों का सुख उठाता रहा हूँ; मेरी शिक्षा पर, मेरी गवर्नेसों पर और स्विट्ज़रलैण्ड में मेरे बौड़मपन के इलाज पर दसियों हज़ार लुटाए गए; और अब मेरे पास लाखों की दौलत खर्च करने को है, जबकि प. के बेटे के उदात्त चरित्र को, जिसे अपने उस बदचलन बाप की हरकतों के लिए, जिसने उसे भुला दिया, किसी भी तरह जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, दूसरों के यहाँ पढ़ाकर बूँद-बूँद करके निचोड़ा जा रहा है। इन्साफ़ तो यह कहता है कि जो कुछ मेरे ऊपर खर्च किया गया है वह उस पर खर्च किया जाना चाहिए। जो बड़ी-बड़ी रक़में मुझ पर खर्च की गई हैं वे दरअसल मेरी नहीं थीं। यह क़िस्मत के अन्धेपन की ग़लती थीं; वे रक़में सच पूछा जाए तो प. के बेटे की थीं। उन्हें उसके हित के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए था न कि मेरे, जैसा कि बदचलन और भूलक्कड़ प. की अजीब सनक की वजह से हुआ। अगर मैं

ईमानदार, नेक और कोमल भावनाएँ रखनेवाला आदमी हूँ तो मुझे उनके बेटे को अपने उत्तराधिकार का आधा हिस्सा दे देना चाहिए, लेकिन सबसे बढ़कर चूँकि मैं समझदार आदमी हूँ और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यह क़ानूनी मामला नहीं है, इसलिए मैं उसे अपनी लाखों की दौलत का आधा हिस्सा नहीं दूँगा। अगर मैं प. के बेटे को दसियों हज़ार की वह रक़म भी न दूँ जो मेरे बौड़मपन पर खर्च की गई है तो यह मेरे लिए बड़ी नीचता की और शर्मनाक बात होगी (लेकिन वह रईसज़ादा भूल गया कि यह भी कोई समझदारी की बात नहीं होगी)। वह बस ठीक और न्याय की बात होगी। क्योंकि अगर पं. ने मुझे पाला-पोसा न होता और मेरे बजाय अपने बेटे की देखभाल की होती तो मेरा क्या अन्जाम होता।'

"लेकिन नहीं ! हमारे रईसज़ादे इस तरह दलील नहीं करते। वकील ने, जिसने नौजवान के प्रति दोस्ती की वजह से और उस नौजवान की मर्जी के ख़िलाफ़ उसे लगभग मजबूर करके उसकी पैरवी करने की जिम्मेदारी ले ली थी, जोरदार शब्दों में अपनी बात कहने की लाख कोशिश की, लाख जोरदार शब्दों में उसने उसे समझाया कि ईमानदारी, उदारता, न्याय और यहाँ तक कि सीधे-सादे हिसाब का क्या तक़ाजा है, लेकिन स्विट्ज़रलैण्ड का पढ़ा हुआ वह रईसज़ादा टस से मस न हुआ, और—जानते हैं आप ?—यह सब तो कुछ भी नहीं था, लेकिन जो बात कभी माफ़ नहीं की जा सकती और जिसके लिए दिलचस्प से दिलचस्प बीमारी को भी बहाना नहीं बनाया जा सकता, वह यह थी कि यह लखपति, जिसे अपने प्रोफ़ेसर के दिए हुए जूते उतारे अभी बहुत दिन नहीं हुए थे, इस बात तक को समझ नहीं पाया कि उदार चरित्रवाला वह नौजवान जो दूसरों के यहाँ पढ़ाकर अपना स्वास्थ्य नष्ट कर रहा था, न मदद की भीख माँग रहा था और न ही ख़ैरात माँग रहा था, बल्कि वह अपना हक़ माँग रहा था और जो कुछ उसे मिलना चाहिए था, भले ही क़ानूनी तौर पर न सही, और यह कि वह तो यह भी नहीं माँग रहा था, बल्कि उसके दोस्त उसी तरफ़ से पैरवी कर रहे थे। अपनी इस नई ताक़त के नशे में चूर कि वह अपनी लाखों की दौलत के बल पर बिना किसी रोक-टोक के जिससे चाहे नाक रगड़वा सकता है, हमारे इस रईसज़ादे ने बड़ी शान से पचास रूबल का एक नोट निकाला और बड़ी ढिठाई से भीख़ के रूप में उस उदार नौजवान के पास भिजवा दिया। आपको मेरी बात पर यक़ीन नहीं आता ? आप अपमानित महसूस करते हैं, आपको ताव आता है, आप अपने गुस्से की चीख़ों को दबा नहीं पाते ? लेकिन उसने, बहरहाल, किया यही था। यह तो कहने की ज़रूरत नहीं कि वह पैसा फ़ौरन उसे वापस कर दिया गया, बल्कि कहना चाहिए कि उसके मुँह पर दे मारा गया। तो फिर इस मामले का फ़ैसला कैसे हो ? अदालत में इसका फ़ैसला हो नहीं सकता, इसलिए बस प्रचार का ही सहारा रह जाता है ! इसलिए हम यह सारी दास्तान पब्लिक के सामने रखे दे रहे हैं और इस बात की गारण्टी देते हैं कि इसमें एक-एक बात सच है। हमें पता चला है कि हमारे एक बहुत प्रसिद्ध हास्यकार ने इस विषय पर एक बहुत अच्छी मज़ाक़िया कविता लिखी है जो न केवल हमारे नैतिक मानदण्डों और तौर-तरीक़ों के प्रान्तीय ढंग के शब्द-चित्रों और निबन्धों में बल्कि राजधानी के शब्द-चित्रों और निबन्धों में भी स्थान पाने योग्य है—

पाँच बरस तक नन्हा ल्योवा[1] सीधा-सादा,
चैन से सोया, श्नाइडर[2] का बस ओढ़ लबादा,
भले-बुरे का अन्तर कुछ वह समझ न पाता

1. रईसज़ादे का प्यार का नाम।
2. स्विट्ज़रलैण्डवाले प्रोफ़ेसर का नाम।

बुद्धूपन के खेलों में था समय गँवाता।
घर जब लौटा पाँव में पहने लम्बे जूते
मुर्दों के कुछ कफ़न खसोटे, लाखों लूटे
रूसी में दिन-रात भजन वह गाता रहता
छीन के रोटी लड़कों की वह खाता रहता।"

कोल्या ने लेख पढ़ना ख़त्म करके अखबार जल्दी से प्रिंस को दे दिया और एक शब्द भी कहे बिना लपककर कोने में चला गया और दीवार की तरफ़ मुँह करके उसने अपना चेहरा दोनों हाथों से ढक लिया। वह असह्य रूप से लज्जित अनुभव कर रहा था, और उसकी बालोचित संवेदनशीलता को, जो अभी तक इस तरह की गन्दगी की आदी नहीं हुई थी, बेहद ठेस पहुँची थी। वह महसूस कर रहा था जैसे कोई बहुत ही असाधारण बात हो गई हो, कुछ ऐसा जिसने सब कुछ जलाकर राख कर दिया हो, और यह कि यह सब कुछ लगभग पूरी तरह उसी की वजह से हुआ था, सिर्फ़ इसलिए कि उसने वह लेख ज़ोर से पढ़कर सुना दिया था।

लेकिन लग रहा था कि सभी लोग ऐसा ही महसूस कर रहे थे।

लड़कियाँ बहुत अटपटा और लज्जित महसूस कर रही थीं। लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना अपना तीव्र क्रोध सीने में दबाए रखने की भरसक कोशिश कर रही थीं और शायद उन्हें बेहद पछतावा हो रहा था कि उन्होंने इस मामले में दखल दिया ही क्यों; अब वह चुप थीं। प्रिंस कुछ वैसा ही अनुभव कर रहा था जैसा कि बहुत ही शर्मीले लोग ऐसी परिस्थितियों में अनुभव करते हैं—वह दूसरों की हरकत पर इतना लज्जित था, वह अपने मुलाकातियों की वजह से इतना शर्मिन्दा था कि शुरू में तो उनकी ओर देखने की उसकी हिम्मत ही नहीं हुई। प्तीत्सिन, वार्या, गान्या, यहाँ तक कि लेबेदेव भी—सभी लोग कुछ खिसियाए-से लग रहे थे। इससे भी अजीब बात तो यह थी कि इप्पोलीत और 'पव्लीश्चेव का बेटा' भी कुछ चकित-से लग रहे थे; लेबेदेव का भानजा भी स्पष्टतः नाराज़ था। केवल बॉक्सर बिलकुल शान्त था। वह अपनी मूँछें ऐंठ रहा था और देखने में गम्भीर लग रहा था, और अगर उसने अपनी आँखें नीचे झुका रखी थीं तो इसलिए नहीं कि वह अटपटा महसूस कर रहा था, बल्कि इसके विपरीत, उदार विनम्रता और बिलकुल असंदिग्ध विजय पर। बिलकुल स्पष्ट था कि लेख उसे बहुत अच्छा लगा था।

"जाने क्या बला है यह !" जनरल येपांचिन ने धीमे स्वर में गुर्राकर कहा। "ऐसा लगता है कि पचास पिछलग्गुओं ने मिलकर लिखी हो।"

"क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ, जनाबे-आली," इप्पोलीत ने सिर से पाँव तक काँपते हुए एलान किया, "आपकी यह हिम्मत कैसे पड़ी कि आप इस तरह की बातें मानकर लोगों का अपमान करें ?"

"यह...यह...किसी भी इज्जतदार आदमी के लिए...आपको मानना पड़ेगा, जनरल साहब, कि अगर आदमी इज़्ज़तदार हो, तो उसके लिए यह अपमान की बात है !" बॉक्सर अचानक न जाने क्यों चौंक पड़ा, और मूँछें ऐंठते हुए और कन्धों और शरीर को झटका देते हुए उसने बुदबुदाकर कहा।

"पहली बात तो यह कि मैं तुम्हारा 'जनाबे-आली' नहीं हूँ, और दूसरे यह कि तुम्हारे सामने सफ़ाई देने का मेरा कोई इरादा नहीं है," जनरल येपांचिन ने, जिनका गुस्सा बढ़ते-बढ़ते जुनून की हद तक पहुँच गया था, तीखेपन से जवाब दिया। वह उठे और एक शब्द भी आगे कहे बिना बरामदे के प्रवेश के पास जाकर ऊपरवाली सीढ़ी पर सब लोगों की तरफ़ पीठ करके खड़े हो गए; वह अपनी

बीवी से बेहद नाराज़ थे, जो अब भी अपनी जगह से हिलने का नाम नहीं ले रही थीं।

"सुनिए, सुनिए, आख़िरकार मुझे भी बोलने दीजिए," प्रिंस व्यथित और उद्विग्न होकर चिल्लाया, "और मेरे साथ इतनी कृपा कीजिए कि हम लोग आपस में बातचीत करके एक-दूसरे को समझ सकें। देखिए, मुझे लेख में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। लेकिन वह सब झूठ है जो लेख में छापा गया है। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि आप ख़ुद इस बात को जानते हैं। यहाँ तक कि वह शर्मनाक है। इसलिए मुझे ताज्जुब होगा अगर आप में से किसी ने उसे लिखा है।"

"मुझे तो अभी तक इस लेख के बारे में कुछ नहीं मालूम था," इप्पोलीत ने कहा। "मैं इस लेख को ठीक नहीं समझता।"

"यह तो मुझे मालूम था कि लेख लिखा गया है," लेबेदेव के भानजे ने अपनी बात जोड़ी, "लेकिन मैं...मैं भी उसे छापने की सलाह न देता क्योंकि अभी इसका मुनासिब वक़्त नहीं आया है।"

"मैं जानता था," "पव्लीश्चेव का बेटा" बुदबुदाया, "लेकिन मुझे अधिकार है...मैं..."

"क्या कहा आपने, आपने यह ख़ुद तो नहीं लिखा है न ?" प्रिंस ने बुर्दोव्स्की को निगाहों से देखते हुए पूछा। "हो ही नहीं सकता !"

"लेकिन दूसरों को भी आपके इस तरह के सवाल पूछने के अधिकार को मानने से इनकार कर देने का अधिकार है," लेबेदेव का भानजा बीच में बोला।

"मुझे सिर्फ़ ताज्जुब हुआ कि बुर्दोव्स्की ने...लेकिन...मैं जो कहना चाहता हूँ, वह यह है कि आप इस बात का चूँकि प्रचार कर ही चुके हैं तो अभी जब मैं अपने दोस्तों के सामने इसकी चर्चा करने लगा था तो आपको इतना बुरा क्यों लगा था ?"

"आख़िरकार !" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना गुस्से से बुदबुदाई।

"और आप यह भूल गए, प्रिंस," लेबेदेव अपने आपको वश में न रख पाकर और कुर्सियों की कतारों के बीच से रास्ता बनाता हुआ लगभग बुख़ार जैसी हालत में बोलने लगा, "आप यह भूल गए कि सिर्फ़ आपकी मेहरबानी और बेजोड़ नेकी की बदौलत ही आप इन लोगों से मिले और आपने इनकी बातें सुनीं, और यह कि इन लोगों को कोई हक़ नहीं है माँगें प्रस्तुत करने का, ख़ासतौर पर इसलिए कि आप मामला गव्रीला अर्दालिओनोविच के हाथों में सौंप चुके हैं, और वह भी आपने अपनी बेहद नेकी की वजह से किया था, और अब, मेरे निहायत शानदार प्रिंस, जबकि आप अपने चुने हुए दोस्तों के बीच बैठे हैं आप इन हजरात की खातिर उनकी सोहबत की क़ुर्बानी नहीं दे सकते, और आप, एक तरह से, इन हज़रात को फ़ौरन यहाँ से निकाल बाहर कर सकते हैं, और मैं मालिक-मकान की हैसियत से बेहद ख़ुशी से..."

"बिलकुल ठीक !" जनरल ईवोल्गिन सहसा कमरे के पीछे से दहाड़े।

"रहने दीजिए, लेबेदेव, बस कीजिए, बस," प्रिंस ने कहना शुरू किया, लेकिन उसके शब्द क्रोध के एक प्रबल विस्फोट में डूब गए।

"जी नहीं, माफ़ कीजिएगा, प्रिंस, मुझे माफ़ कीजिएगा, अब बस करने का कोई सवाल नहीं है !" लेबेदेव के भानजे ने शोर-गुल से ऊँची आवाज़ में चिल्लाकर कहा। "अब इस मामले को साफ़-साफ़ और ठोस तौर पर बयान कर दिया जाना चाहिए क्योंकि ज़ाहिर है कि इसे ठीक से समझा नहीं गया है। यहाँ इसमें पेचीदा क़ानूनी बारीकियाँ निकाली गई हैं और इन बारीकियों की वजह से हमें यहाँ से ठोकर मारकर निकाल देने की धमकी दी जा रही है ! लेकिन, प्रिंस, क्या आप सचमुच हम लोगों को ऐसा बेवक़ूफ़ समझते हैं कि हम इतना भी न समझ सकें कि जहाँ तक क़ानून

का सवाल है हमारे दावे में कोई दम नहीं है, और यह कि अगर हम लोग अपने मामले पर क़ानूनी नज़र से ग़ौर करें तो हमें आपसे एक भी रूबल माँगने का हक़ नहीं है ? लेकिन हम इस बात को अच्छी तरह समझते हैं कि इस मामले में क़ानूनी हक़ का सवाल भले ही न हो, लेकिन इंसानी, प्राकृतिक अधिकार तो है ही; आम समझदारी का अधिकार और अन्तःकरण की आवाज़, और अगर हमारा यह अधिकार इंसान के बनाए हुए क़ानूनों की किसी सड़ी हुई किताब में नहीं भी लिखा है तो भी इज़्ज़तदार और ईमानदार आदमी का—मतलब यह कि सुलझे हुए आदमी का—यह कर्तव्य है कि वह इन बातों के बारे में भी इज़्ज़तदार और ईमानदार बना रहे जो क़ानूनी किताबों में नहीं लिखी हैं। यही वजह है कि हम लोग यहाँ इस बात के किसी डर के बिना आए हैं कि हमें यहाँ से निकाल बाहर किया जाएगा (जैसा कि अभी आपने करने की धमकी दी है), क्योंकि, देखिए, बात यह है कि हम **भीख़ नहीं माँग रहे हैं बल्कि अपना हक़ माँग रहे हैं** और जहाँ तक इतनी देर में हमारे यहाँ आने के बेजा होने का सवाल है (हालाँकि, याद रखिए, देर में हम नहीं आए थे, बल्कि नौकरों की कोठरी में हमें बिठाए रखा आपने), तो हम लोग निडर होकर आए हैं क्योंकि हमने सोचा कि आप सुलझे हुए आदमी हैं—यानी, अन्तःकरण और इज़्ज़त रखनेवाले आदमी। जी हाँ, यह बिलकुल सच है कि हम हाथ में भीख़ का कटोरा लेकर नहीं आए हैं, हम आपके टुकड़खोरों और ख़ुशामदियों की तरह नहीं आए हैं, और भीख़ माँगने के इरादे से नहीं, बल्कि आज़ाद और स्वाभिमानी लोगों की तरह अपना हक़ लेने आए हैं (सुन लिया आपने, भीख़ माँगने नहीं बल्कि हक़ माँगने—यह साफ़-साफ़ समझ लीजिए !)। हम आपसे एक सीधा सवाल पूछते हैं, और हम पूरी प्रतिष्ठा के साथ ऐसा कर रहे हैं—आप बुर्दोव्स्की के मामले में अपने आपको ठीक समझते हैं या ग़लत ? क्या आप यह मानते हैं कि पव्लीश्चेव ने आपको ढेरों फ़ायदा पहुँचाया और उन्होंने शायद आपकी जान भी बचाई ? अगर आप यह जानते हैं (और आप इससे इन्कार कर भी नहीं सकते) तो क्या आप इस बात का कोई इरादा रखते हैं, या आप ऐसा करने को इन्साफ़ समझते हैं कि आपको चूँकि लाखों की दौलत मिली है इसलिए आप पव्लीश्चेव के बेटे को, जो बेहद ज़रूरतमन्द है, कुछ मुआवजा दें, हालाँकि उसका कुलनाम बुर्दोव्स्की है ? हाँ या नहीं ? अगर **हाँ**, यानी दूसरे शब्दों में अगर आपके पास वह चीज़ है जिसे आपकी भाषा में इज़्ज़त और अन्तःकरण कहा जाता है, लेकिन जिसे हम लोग ज़्यादा सही शब्दों में आम समझदारी कहते हैं, तो हमारी माँग पूरी कर दीजिए, बस मामला ख़त्म। हमारी ओर से किसी प्रार्थना या धन्यवाद के बिना हमारी माँग पूरी कर दीजिए। हमसे इन चीज़ों की उम्मीद न रखिए क्योंकि आप यह हमारे लिए नहीं बल्कि इन्साफ़ की ख़ातिर कर रहे हैं। लेकिन अगर आप हमारी माँग पूरी नहीं करना चाहते—यानी आपका जवाब **नहीं** है—तो हम लोग फ़ौरन यहाँ से चले जाएँगे और मामला ख़त्म हो जाएगा; लेकिन हम आपके मुँह पर और आपके सारे गवाहों के सामने बताए देते हैं कि आप बहुत भोंडी समझ-बूझ और निम्न संस्कारों के आदमी हैं, कि आपको आइन्दा कभी अपने आपको इज़्ज़त और अन्तःकरण रखनेवाला आदमी कहने का अधिकार नहीं है, कि आप इस अधिकार को बहुत सस्ता खरीदना चाहते हैं। मेरी बात पूरी हुई। मैंने सवाल आपके सामने रख दिया है। अब अगर आपकी हिम्मत हो तो हम लोगों को सड़क पर निकलवा फेंकिए। आप ऐसा कर सकते हैं क्योंकि आपके पास ताक़त है। लेकिन इतना याद रखिएगा कि हम अपना हक़ माँगते हैं, भीख़ नहीं माँगते। हम हक़ माँगते हैं, भीख़ नहीं माँगते। हम हक़ माँगते हैं, भीख़ नहीं माँगते !..."

लेबेदेव का भानजा, जो बोलते-बोलते जोश में आकर उन्माद की हद तक पहुँच गया था, चुप हो गया।

"हम हक़ माँगते हैं, हक़ माँगते हैं, हक़, हम भीख़ नहीं माँगते !" बुर्दोव्स्की ने हकलाकर कहा और उसका चेहरा टमाटर की तरह लाल हो गया।

लेबेदेव के भानजे के शब्दों से थोड़ी-सी हलचल पैदा हुई और उसके ख़िलाफ़ कुछ आवाज़ें भी सुनाई दीं, हालाँकि, शायद लेबेदेव को छोड़कर, जिस पर उत्तेजना का भूत-सा सवार था, वहाँ मौजूद सभी लोग स्पष्टतः इस मामले में कोई दखल देना नहीं चाहते थे। (अजीब बात थी कि लेबेदेव, जो देखने में तो प्रिंस के पक्ष में था, अब अपने भानजे के भाषण के बाद परिवार के गौरव की चमक महसूस कर रहा था; बहरहाल, उसने वहाँ मौजूद सभी लोगों को ख़ास सन्तोष के भाव से देखा।)

"मेरी राय में," प्रिंस ने कुछ शान्त भाव से कहना शुरू किया, "मेरी राय में, दोक्तोरेंको साहब, आपने अभी जो कुछ कहा है उसका आधा हिस्सा बिलकुल ठीक है। मैं तो यहाँ तक मानने को तैयार हूँ कि आपने जो कुछ कहा है उसका आधे से ज़्यादा हिस्सा बिलकुल ठीक है, और मैं तो आपसे पूरी तरह सहमत हो जाता मगर आपने भाषण में कुछ छोड़ न दिया होता। आपने क्या बात छोड़ दी है यह तो शायद मैं ठीक-ठीक नहीं बता सकूँगा, इसे बताना मेरे बस के बाहर है, लेकिन पूरे इन्साफ़ के लिए आपके भाषण में कोई चीज़ ग़ायब ज़रूर है। पर मतलब की बात पर आइए। बताइए, आप लोगों ने यह लेख छापा क्यों ? इसमें एक शब्द भी ऐसा नहीं है, जिससे मानहानि न होती हो, बात यह है कि आप लोगों ने जो कुछ किया है वह नीचता है।"

"क्या कहा आपने !..."

"यह...यह...यह..." आए हुए सारे लोग उत्तेजित होकर एक साथ चिल्ला उठे।

"जहाँ तक लेख का सवाल है," इप्पोलीत ने बात का सिरा पकड़ते हुए तीखे स्वर में कहा, "जहाँ तक लेख का सवाल है, मैं आपको पहले भी बता चुका हूँ कि न तो मैंने इसे ठीक समझा था न दूसरों ने। वह इन्होंने लिखा था," (उसने अपने बग़ल में बैठे हुए बॉक्सर की तरफ़ इशारा किया), "और मैं मानता हूँ कि वह बहुत बेहूदा तरीक़े से, जाहिलों की तरह, और ऐसी शैली में लिखा गया है जिस पर इनके जैसे पेंशनयाफ़्ता फौज़ी अफ़सरों की छाप है। मैं मानता हूँ कि यह नासमझ हैं और...मैं इनसे यह बात रोज इनके मुँह पर कहता हूँ, फिर भी इन्होंने जो कुछ किया वह आधी हद तक ठीक भी था—प्रचार हर आदमी का क़ानूनी अधिकार है और इसलिए बुर्दोव्स्की का भी है। जहाँ तक उसकी बेतुकी बातों का मामला है तो उसका जवाबदेह वह खुद है। जहाँ तक मेरे हम सब लोगों की ओर से आपके दोस्तों के मौजूद रहने का विरोध करने का सवाल है तो मैं यह बताना चाहूँगा कि मैंने विरोध सिर्फ़ यह जताने के लिए किया था कि इसका हमें अधिकार है; सच तो यह है कि हम बेहद चाहते हैं कि गवाह हों, और यहाँ आने से थोड़ी ही देर पहले हम चारों इस बात के लिए आपस में राज़ी भी हो गए थे। हमें इसकी कोई परवाह नहीं है कि आपके गवाह कौन हैं, चाहे वे आपके दोस्त ही क्यों न हों, और चूँकि वे बुर्दोव्स्की के अधिकार को मानने से इन्कार कर ही नहीं सकते (क्योंकि वह गणित जैसा साफ़ है), यह तो बल्कि और भी अच्छा है कि ये गवाह आपके दोस्त हैं—सच्चाई और भी उजागर हो जाएगी।"

"यह बिलकुल सच है," लेबेदेव के भानजे ने पुष्टि की। "हमने आपस में यही तै किया था।"

"अगर आप यही चाहते थे तो आपने शुरू में इतना हंगामा क्यों मचाया ?" प्रिंस ने आश्चर्य से पूछा।

"और, प्रिंस, जहाँ तक लेख का सवाल है," बॉक्सर, जो अपनी ओर से कुछ कहने के लिए बहुत बेचैन था और जिसके चेहरे पर ख़ुशी की चमक आ गई थी (यह भी सम्भव है कि महिलाओं

की उपस्थिति का उस पर स्पष्ट और बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था), बीच में बोल पड़ा "जहाँ तक लेख का सवाल है, मैं मानता हूँ कि सचमुच मैंने ही उसे लिखा है, हालाँकि मेरे बीमार दोस्त ने, जिसे मैं इनकी कमज़ोरी की वजह से माफ़ कर देने का आदी हो चुका हूँ, अभी उसकी आलोचना की है। लेकिन उसे लिखा मैंने ही था और मैंने उसे अपने एक बहुत अच्छे दोस्त की पत्रिका में सम्पादक के नाम पत्र की शक्ल में छपवाया था। बस उसमें कविता के जो टुकड़े हैं वे मेरे नहीं हैं, उन्हें दरअसल एक बहुत बड़े हास्यकार ने लिखा था। मैंने उसे सिर्फ़ बुर्दोव्स्की को पढ़कर सुनाया था और सो भी पूरा नहीं, और उसने मुझे फ़ौरन उसे छपवा देने की इजाज़त दे दी थी। लेकिन मैं उम्मीद करता हूँ कि आप यह तो मानेंगे कि मैं उसे उसकी इजाज़त के बिना भी छपवा सकता था। प्रचार करने का अधिकार बहुत उदार है, यह सबके लिए है और बहुत हितकर है। प्रिंस, मैं उम्मीद करता हूँ कि आप इतने प्रगतिशील तो होंगे ही कि इस बात से इन्कार न करें।..."

"मैं किसी भी बात से इन्कार करनेवाला नहीं हूँ, लेकिन आपको मानना होगा कि आपका लेख..."

"सख़्त है, आप यही कहने जा रहे थे न ? लेकिन एक तरह से वह जनता के हित में है, इतना तो आपको भी मानना पड़ेगा और आप मुझसे यह उम्मीद तो नहीं करते होंगे कि मैं ऐसे शर्मनाक मामले को देखकर भी अनदेखा करता हूँ ? जो अपराधी हैं उनका हाल तो बदतर होगा ही, लेकिन जनता की भलाई सबसे बढ़कर है। जहाँ तक उसमें कुछ छोटी-मोटी ग़लतियों का, यों समझ लीजिए, चीज़ों को बढ़ा-चढ़ाकर कहने का सवाल है तो मैं उम्मीद करता हूँ कि आप यह भी मानेंगे कि असली चीज़ होती है पहल, असली चीज़ होता है इरादा और उद्देश्य। जो बात महत्त्व रखती है वह है ऐसी मिसाल जिससे दूसरों को फ़ायदा पहुँचे। अलग-अलग मामलों पर बाद में विचार किया जा सकता है, और, आख़िरी बात है शैली का सवाल, यानी यह बात कि उसे हास्य के रंग में लिखना ज़रूरी था और, आख़िर मैं इतना तो आप भी मानेंगे कि सभी इसी तरह लिखते हैं ! हः-हः !"

"आप बिलकुल बहक गए हैं, मैं आप लोगों को यक़ीन दिलाता हूँ," प्रिंस ने चिल्लाकर कहा। "आपने यह बात पहले से मानकर यह लेख लिखा कि मैं बुर्दोव्स्की की माँग पूरी करने के लिए कभी राज़ी नहीं हूँगा, और इसलिए आपने मुझे डराने की कोशिश की और किसी न किसी तरह बदला लेने की कोशिश की। लेकिन आपको कैसे मालूम था ? मैंने शायद बुर्दोव्स्की की माँग पूरी करने का फ़ैसला किया हो। अब मैं इन सब लोगों के सामने खुलेआम कहता हूँ कि मैं उसे पूरा करूँगा।..."

"समझदार और इज़्ज़तदार आदमी के समझदार और इज़्ज़तदार शब्द—आख़िरकार !" बॉक्सर ने एलान किया।

"हे भगवान !" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना के सीने की गहराई से अनायास ये शब्द निकले।

"यह तो हद ही हो गई !" जनरल साहब बुदबुदाए।

"सुनिए, सुनिए, मेहरबानी करके सुनिए," प्रिंस ने उनसे अनुरोध किया, "मुझे पूरी बात समझाने का मौक़ा दीजिए। पाँच हफ़्ते पहले, बुर्दोव्स्की साहब, आपके प्रतिनिधि चेबारोव मुझसे मिलने ज. में आए थे। केल्लेर साहब, आपने लेख में उनका वर्णन बहुत बना-सँवारकर किया है," प्रिंस अचानक हँसते हुए बॉक्सर की ओर मुड़ा, "लेकिन वह मुझे ज़रा भी अच्छे नहीं लगे। मैं फ़ौरन समझ गया था कि यह सब चेबारोव का किया-धरा था और, मैं साफ़ कहूँ, शायद उन्होंने ही आपके सीधेपन का फ़ायदा उठाकर, बुर्दोव्स्की साहब, आपको यह पूरा सिलसिला शुरू करने के लिए उकसाया था।"

"आपको कोई हक़ नहीं..." बुर्दोव्स्की उत्तेजित होकर उबल पड़ा। "मैं...मैं सीधा नहीं हूँ...यह..."

"आपको इस तरह का अनुमान लगाने का कोई हक़ नहीं है," लेबेदेव के भानजे ने बीच में बड़े उपदेशात्मक ढंग से कहा।

"यह बहुत ही अपमानजनक बात है !" इप्पोलीत तीखे स्वर में चिल्लाया। "आपका यह अनुमान सरासर ग़लत और अपमानजनक है और उसका इस मामले से कोई सम्बन्ध नहीं है !"

"मुझे अफ़सोस है, आप लोग मुझे माफ़ कर दीजिए," प्रिंस ने जल्दी से माफ़ी माँगते हुए कहा। "मेहरबानी करके मुझे माफ़ कर दीजिए। मैंने ऐसा सिर्फ़ इसलिए कहा था कि मैंने सोचा कि हमारे लिए सबसे अच्छा यही रहेगा, है न, कि हम लोग एक-दूसरे से बिलकुल खुलकर बातें करें। लेकिन जैसी आप लोगों की मर्जी, आप जिस तरह चाहें। मैंने चेबारोव से कहा कि मैं चूँकि पीटर्सबर्ग में नहीं हूँ इसलिए मैं फ़ौरन यह मामला अपने एक दोस्त के हाथों में निबटाने के लिए सौंप दूँगा और यह कि मैं आपको, बुर्दोव्स्की साहब, इसके बारे में जानकारी भिजवा दूँगा। मैं आप लोगों को साफ़-साफ़ बताता हूँ कि यह मामला मुझे सरासर चालबाज़ी मालूम हुआ था, सिर्फ़ इसलिए कि इसमें चेबारोव का हाथ था।...अरे नहीं, आप लोग बुरा न मानिए ! भगवान के लिए! बुरा न मानिए !" प्रिंस भयभीत होकर चिल्लाया जब उसने एक बार फिर देखा कि बुर्दोव्स्की कितना परेशान हो गया था और उसके दोस्त कितने उत्तेजित हो गए थे और विरोध करने पर उतारू थे ! "अगर मैंने यह कहा कि यह सरासर चालबाज़ी है तो मेरा इशारा आपमें से किसी की ओर नहीं था ! देखिए, उस वक़्त मैं निजी तौर पर आप लोगों में से किसी को नहीं जानता था। मुझे तो आपके नाम तक मालूम नहीं थे। मैंने तो बस चेबारोव से अन्दाजा लगाया था। मैं तो बस आमतौर पर बात कह रहा हूँ, क्योंकि...काश आपको मालूम होता कि जबसे मुझे वसीयत का यह पैसा मिला है तबसे मुझे कितनी बुरी तरह धोखा दिया जाता रहा है।"

"प्रिंस, आप बहुत भोले हैं !" लेबेदेव के भानजे ने व्यंग से कहा।

"तिस पर प्रिंस और लखपति ! हो सकता है आप सचमुच नेकदिल हों और कुछ सीधे भी हों, लेकिन इन सब बातों के बावजूद आप आम कायदे से अलग नहीं रह सकते," इप्पोलीत ने घोषणा करते हुए कहा।

"मुमकिन है, बिलकुल मुमकिन है," प्रिंस ने जल्दी से कहा, "हालाँकि मैं समझा नहीं कि आप किस आम कायदे की बात कर रहे हैं। लेकिन मैं अपनी बात जारी रखता हूँ, आप बेकार बुरा न मानिए, मेहरबानी करके; मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि मैं आपका अपमान बिलकुल नहीं करना चाहता। दरअसल, यह बात क्या है—सच्चे दिल से एक शब्द भी नहीं कहा जा सकता है, आप लोग फ़ौरन बुरा मान जाते हैं ! लेकिन सबसे पहले तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि जिस बात पर मुझे बेहद ताज्जुब हुआ वह यह थी कि 'पव्लीश्चेव का बेटा' मौजूद था और उसकी इतनी बुरी हालत थी, जैसा कि चेबारोव ने मुझे बताया। पव्लीश्चेव साहब मेरे हितैषी और मेरे बाप के दोस्त थे। (उफ़, आपने मेरे बाप के बारे में अपने लेख में इतनी झूठी बातें क्यों लिखीं, केल्लेर साहब ? रेजिमेन्ट के पैसों का गबन करने का या अपने किसी मातहत के साथ बुरा सलूक करने का कोई सवाल ही नहीं था—मुझे इस बात का पक्का यक़ीन है, और आपने ऐसी झूठी निन्दा लिखने पर अपने आपको राज़ी कैसे किया ?) और आपने पव्लीश्चेव साहब के बारे में जो कुछ लिखा है उसे तो बर्दाश्त किया ही नहीं जा सकता। आपने इस निहायत इज़्ज़तदार आदमी को बिलकुल खुले शब्दों में और पक्के तौर पर छिछोरा और बदचलन कहा, जैसे आप दरअसल सच बोल रहे हों,

जबकि सच तो यह है कि उनका जैसा भला आदमी दुनिया में ढूँढ़ें नहीं मिल सकता। सचमुच, वह बहुत ही विद्वान आदमी थे। बहुत-से जाने-माने विद्वानों के साथ उनका पत्र-व्यवहार था और विद्या को बढ़ावा देने के लिए वह ढेरों पैसा खर्च करते थे। जहाँ तक उनकी नेकदिली और उनके उदारता के कामों का सवाल है, बेशक आपका यह कहना बिल्कुल ठीक था कि उस वक़्त मैं लगभग बौड़म था और कुछ भी नहीं समझ सकता था (हालाँकि मैं रूसी बोलता भी था और समझ भी लेता था), लेकिन, देखिए, अब मुझे जो बातें भी याद हैं उन्हें मैं पूरी तरह समझ सकता हूँ।..."

"मेहरबानी करके बस कीजिए," इप्पोलीत महीन आवाज़ में बोला, "क्या यह ज़रूरत से ज़्यादा भावुकता नहीं है ? हम छोटे बच्चे तो हैं नहीं। आप सीधे मतलब की बात कहनेवाले थे। तो, इतना याद रखिए कि दस बजनेवाले हैं।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा," प्रिंस फ़ौरन सहमत हो गया। "शुरू-शुरू में तो मुझे अविश्वास ज़रूर हुआ था लेकिन फिर मैंने सोचा कि शायद मेरा ख़्याल ग़लत हो और पव्लीश्चेव का सचमुच कोई बेटा रहा हो। लेकिन मुझे हैरत इस बात पर हुई कि वह बेटा इतने हल्के-फुल्के ढंग से, मेरा मतलब है इस तरह खुलेआम, अपने जन्म के भेद को खोल दे, और सबसे बड़ी बात तो यह कि अपनी माँ को बदनाम करे। क्योंकि उस वक़्त भी चेबारोव मुझे प्रचार की धमकी दे रहे थे।..."

"कैसी बेवक़ूफ़ी की बात है !" लेबेदेव का भानजा चिल्लाया।

"आपको कोई अधिकार नहीं है... अधिकार नहीं है !" बुर्दोव्स्की ने ताव में आकर कहा।

"बेटा अपने बाप की अनैतिक हरकत के लिए जवाबदेह नहीं होता है और माँ को भी दोष नहीं दिया जा सकता," इप्पोलीत जोश में आकर महीन आवाज़ में बोला।

"तब तो और भी दया की भावना से काम लेना चाहिए था," प्रिंस ने दबे स्वर में कहा।

"आप बस भोले ही नहीं हैं, प्रिंस," लेबेदेव का भानजा तिरस्कार से मुस्कराया। "आप शायद उससे भी बहुत आगे निकल गए हैं।"

"और आपको क्या अधिकार था..." इप्पोलीत अत्यन्त अस्वाभाविक स्वर में चिंचियाया।

"कोई भी नहीं ! कोई भी नहीं !" प्रिंस जल्दी से बोल पड़ा। "मैं मानता हूँ कि आपका यह कहना ठीक है, लेकिन यह अनजाने ही हो गया, और उस वक़्त मैंने फ़ौरन अपने आपसे कहा कि इस मामले में मुझे अपनी निजी भावनाओं से प्रभावित नहीं होना चाहिए, क्योंकि अगर मैं खुद मानता हूँ, कि पव्लीश्चेव के लिए अपनी भावनाओं की वजह से मुझे बुर्दोव्स्की साहब की माँगों को पूरा करना ही पड़ेगा, तो मुझे उन्हें हर हालत में पूरा करना चाहिए, यानी, चाहे मैं बुर्दोव्स्की साहब की इज़्ज़त करता हूँ या न करता हूँ। इसलिए, मैंने इस बात की चर्चा सिर्फ़ इसलिए की कि यह बात मुझे फिर भी अस्वाभाविक लगी कि बेटा अपनी माँ के भेद को इस तरह सबके सामने खोल दे। मतलब यह कि ख़ासतौर पर इसी बात की वजह से मुझे पक्का यक़ीन हो गया कि चेबारोव साहब ज़रूर बदमाश होंगे और उन्होंने ही धोखे से बुर्दोव्स्की साहब को इस तरह की चालबाज़ी के लिए राज़ी किया होगा।"

"लेकिन यह सचमुच बर्दाश्त के बाहर है !" उसके मुलाक़ाती चिल्लाए, और कुछ तो अपनी जगहों से उछल तक पड़े।

"देखिए, ठीक यही वजह थी कि मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि अभागे बुर्दोव्स्की साहब बहुत ही सीधे और लाचार आदमी होंगे, कि वह बहुत जल्दी बदमाशों की चालों का शिकार हो जाते हैं, और इसलिए और भी ज़्यादा मेरा कर्तव्य था कि मैं 'पव्लीश्चेव के बेटे' की मदद करूँ, पहले तो चेबारोव साहब का विरोध करके, दूसरे अपने सच्चे और दोस्ताना सलाह-मशविरे से, और, तीसरे,

उसे दस हज़ार रूबल देकर—यानी, वह सारी रक़म जो मेरे हिसाब से पव्लीश्चेव साहब ने मुझ पर खर्च की होगी।..."

"क्या ? सिर्फ़ दस हज़ार ?" इप्पोलीत चौंककर चिल्लाया।

"मुझे कहना पड़ता है, प्रिंस, कि आप हिसाब में कमज़ोर हैं, या फिर बहुत अच्छे हैं, हालाँकि आप जताते यही हैं कि आप बहुत भोले हैं," लेबेदेव के भानजे ने चिल्लाकर कहा।

"मैं राज़ी नहीं हूँ," बुर्दोव्स्की ने कहा।

"हो जाओ राज़ी, अंतीप !" बॉक्सर ने इप्पोलीत की कुर्सी की पीठ पर झुककर जल्दी से कानाफूसी के ऐसे स्वर में बढ़ावा दिया कि सब लोग सुन लें। "हो जाओ राज़ी, बाक़ी बाद में देख लेंगे।"

"द-द-देखिए, मीश्किन साहब," इप्पोलीत महीन स्वर में बोला। "मेहरबानी करके इतना समझ लीजिए कि हम लोग बेवक़ूफ़ नहीं हैं, बेवक़ूफ़ गँवार, जैसा कि आपके सारे मेहमान यक़ीनन समझते होंगे, वे औरतें भी जो हमें इतने तिरस्कार से देख रही हैं, और ख़ासतौर पर वह शरीफ़जादे," (उसने रादोम्स्की की तरफ़ इशारा किया) "जिन्हें जानने का मुझे कभी सौभाग्य नहीं मिला है, लेकिन जिनके बारे में, मैं समझता हूँ मैंने कुछ सुन रखा है।..."

"देखिए, देखिए, आप लोगों ने मुझे फिर ग़लत समझा," प्रिंस उद्विग्न होकर जल्दी बोला। "सबसे पहली बात तो यह, केल्लेर साहब, कि आपने अपने लेख में मेरी दौलत को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर आँका है—मुझे वसीयत में दसियों लाख कभी नहीं मिले मुझे जितना आपने अन्दाजा लगाया है उसका शायद आठवाँ या दसवाँ हिस्सा मिला है; दूसरे, स्विट्ज़रलैण्ड में किसी ने मेरे ऊपर दसियों हज़ार खर्च नहीं किए—श्नाइडर को साल में छह सौ मिलते थे, और वह भी पहले तीन साल तक; और पव्लीश्चेव साहब कभी हसीन गवर्नेसों की तलाश में पेरिस नहीं गए। यह भी सरासर झूठी निन्दा है। मेरी राय में मुझ पर खर्च की गई कुल रक़म दस हज़ार से बहुत कम है, फिर भी मैंने दस हज़ार देने का फ़ैसला किया, और आपको मानना पड़ेगा कि अगर मुझे बुर्दोव्स्की साहब से बहुत ज़्यादा लगाव होता तब भी मैं कर्ज चुकाने के नाम पर उन्हें इससे ज़्यादा नहीं दे सकता था; और ऐसा मैं मामले की नजाकत को समझते हुए, सिर्फ़ इस वजह से नहीं कर सकता था कि मैं कर्ज चुका रहा था, उन्हें ख़ैरात नहीं भेज रहा था ! मैं समझ नहीं पाता कि आप लोगों की समझ में यह बात कैसे नहीं आती ! लेकिन मेरा पूरा इरादा था कि बदनसीब बुर्दोव्स्की साहब से दोस्ती करके और उनके भविष्य में सक्रिय रूप से दिलचस्पी लेकर मैं इन सब बातों का बदला चुका दूँगा; ज़ाहिर है कि उन्हें धोखा दिया गया है, क्योंकि यह तो पक्की बात है कि वह वरना कभी ऐसा नीच काम करने के लिए राज़ी न होते, जैसे, मिसाल के लिए, केल्लेर साहब के लेख में अपनी माँ के बारे में ऐसा बेहूदा प्रचार करवाना।...लेकिन आप लोग फिर इतना ताव क्यों खा रहे हैं ? अगर आप लोगों का यही हाल रहा तो हम लोग एक-दूसरे को कभी नहीं समझ पाएँगे ! वही बात निकली न, जैसा कि मैंने सोचा था ? अब मैंने अपनी आँखों से देख लिया है कि मेरा अनुमान सोलह आने ठीक है," प्रिंस ने उत्तेजित होकर उन लोगों को समझाने-बुझाने की कोशिश की; वह उनकी उद्विग्नता को शान्त करने के लिए बहुत उत्सुक था और इस बात की ओर उसका ध्यान ही नहीं जा रहा था कि वह उन लोगों की उद्विग्नता को उल्टे और बढ़ा रहा था।

"देख लिया है आपने ? क्या देख लिया है ?" उन लोगों ने बिफरकर पूछा।

"क्यों, सबसे पहली बात तो यह कि मुझे बुर्दोव्स्की साहब को अच्छी तरह देखने का मौक़ा मिला है, और अब मेरी समझ में आ गया है कि वह किस तरह के आदमी हैं।...वह मासूम आदमी

हैं जिन्हें सभी लोग धोखा दे रहे हैं। वह लाचार आदमी हैं...इसीलिए मुझे उनके साथ उदारता का बर्ताव करना चाहिए। दूसरे, गव्रीला अर्दालिओनोविच ने, जिन्हें मैंने इस मामले को निबटाने का काम सौंपा है और जिनसे मुझे बहुत दिन तक कुछ भी पता नहीं चला था, क्योंकि मैं सफ़र कर रहा था और बाद में तीन दिन तक पीटर्सबर्ग में बीमार पड़ा रहा, अभी घंटे ही भर पहले हमारी पहली भेंट में मुझे बताया कि उन्होंने तह तक जाकर चेबारोव की योजना का पता लगाया है, कि उनके पास इस बात के सबूत हैं कि चेबारोव बिलकुल वैसे ही आदमी हैं जैसा कि मैंने सोचा था कि वह होंगे। देखिए, बात यह है, मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि बहुत-से लोग समझते हैं कि मैं बौड़म हूँ, और चूँकि मेरे बारे में यह मशहूर है कि मुझसे पैसा आसानी से ऐंठा जा सकता है, इसलिए चेबारोव ने भी सोचा कि वह मुझे आसानी से धोखा दे सकते हैं, और पव्लीश्चेव के लिए मेरी जो भावनाएँ थीं उनका फ़ायदा उठाने पर उन्होंने पूरा भरोसा किया। लेकिन सबसे ख़ास बात यह है—अरे, आप लोग मुझे अपनी बात पूरी कर लेने दीजिए—सबसे ख़ास बात यह है कि अब पता चलता है कि बुर्दोव्स्की साहब पव्लीश्चेव के बेटे हैं ही नहीं ! गव्रीला अर्दालिओनोविच ने यह बात मुझे अभी बताई हैं, और उन्होंने मुझे यक़ीन दिलाया है कि उनके पास इसका पक्का सबूत है। तो, इसके बारे में आप लोगों का क्या ख़याल है ? इतना सब बखेड़ा खड़ा करने के बाद अब इस बात पर आसानी से विश्वास नहीं होता ! और, ध्यान रहे, पक्का सबूत ! मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि मुझे ख़ुद यक़ीन नहीं आता। मुझे अब भी शक है क्योंकि गव्रीला अर्दालिओनोविच को अभी तक मुझे पूरा ब्योरा बताने का वक़्त नहीं मिला है, लेकिन चेबारोव साहब के बदमाश होने के बारे में अब कोई शक हो ही नहीं सकता। उन्होंने बेचारे बुर्दोव्स्की साहब को और आप तमाम साहबान को धोखा दिया है, जो इतनी उदारता से अपने दोस्त को सहारा देने के लिए आए हैं (क्योंकि, उन्हें सहारे की बहुत ज़रूरत हो सकती है, यह तो मेरी समझ में आता है !)। चेबारोव ने आप सब लोगों को धोखा दिया है और धोखेबाज़ी में फँसाया है, क्योंकि सच पूछिए तो यह खुली धोखेबाज़ी के अलावा और कुछ नहीं है !"

"धोखेबाज़ी ?...पव्लीश्चेव का बेटा नहीं है ?...क्या कह रहे हैं यह ?" चारों ओर से आश्चर्य-भरी आवाज़ें सुनाई दीं। बुर्दोव्स्की के सारे साथी बिलकुल बौखला उठे।

"सरासर धोखेबाज़ी है ! क्योंकि अब अगर यह साबित हो जाता है कि बुर्दोव्स्की साहब पव्लीश्चेव के बेटे नहीं हैं तो उनका दावा सरासर धोखेबाज़ी है (ज़ाहिर है, मेरा मतलब है कि अगर उनको सच्चाई का पता होता)। लेकिन, देखिए, असली बात यह है कि उन्हें धोखा दिया गया है, और इसीलिए मैं इस बात पर इस तरह आग्रह करता हूँ कि उनके नाम पर कोई धब्बा न रह जाए और इसीलिए मैं कहता हूँ कि अपने भोलेपन की वजह से वह तरस के क़ाबिल हैं और उनको किसी के सहारे की ज़रूरत है, वरना इस मामले में वह भी धोखेबाज़ साबित होंगे। मुझे तो पक्का यक़ीन है कि वह कुछ समझ नहीं पाते। स्विट्ज़रलैण्ड जाने से पहले मेरी भी यही हालत थी; मैं भी अर्थहीन शब्द बकता रहता था, अपनी बात कहने की कोशिश करता था लेकिन कह नहीं पाता था !...मैं इसे समझता हूँ। मैं इनके साथ हमदर्दी कर सकता हूँ क्योंकि मेरी हालत भी लगभग वैसी ही है जैसी कि इनकी। मुझे बोलने का हक़ है ! और, आख़िरी बात यह कि पव्लीश्चेव साहब का कोई बेटा हालाँकि नहीं है और यह सारा मामला सरासर धोखेबाज़ी है, फिर भी मैं अपने फैसले पर कायम हूँ और मैं अब भी पव्लीश्चेव साहब की याद के नाम पर दस हज़ार देने को तैयार हूँ। क्योंकि बुर्दोव्स्की साहब के बारे में जब मैंने सुना भी नहीं था, तब भी मेरा इरादा पव्लीश्चेव साहब की याद में एक स्कूल खुलवाने पर दस हज़ार खर्च करने का था, लेकिन अब इस बात से कोई

फ़र्क़ नहीं पड़ता कि मैं यह पैसा स्कूल खुलवाने का खर्च करूँ या बुर्दोव्स्की साहब पर, क्योंकि वह पव्लीश्चेव के बेटे न होने पर भी बिलकुल उनके बेटे जैसे ही हैं, क्योंकि उन्हें खुद बड़ी दुष्टता से धोखा दिया गया है और वह खुद ईमानदारी से यक़ीन करने लगे थे कि वह पव्लीश्चेव के बेटे थे। अब, आप लोग सुनिए कि गव्रीला अर्दालिओनोविच को क्या कहना है, और मामले को ख़त्म किया जाए। नाराज़ न होइए, ताव न खाइए; मेहरबानी करके बैठ जाइए ! गव्रीला अर्दालिओनोविच अभी सारी बात हमें समझाए देते हैं और, मैं मानता हूँ कि मैं खुद सारी बातें जानने के लिए बेचैन हूँ। उनका कहना है, बुर्दोव्स्की साहब, कि वह आपकी माँ से मिलने प्स्कोव भी गए थे और वह मरी बिलकुल नहीं हैं, जैसा कि आपसे उस लेख में लिखवाया गया है।...बैठ जाइए, आप लोग बैठ जाइए !''

प्रिंस खुद बैठ गया और बुर्दोव्स्की के दोस्तों को भी, जो अपनी-अपनी जगहों से उछलकर खड़े हो गए थे, फिर से बिठाने में सफल हो गया। पिछले दस-बीस मिनट से वह बहुत ज़ोर से और उत्तेजित होकर अधीरतापूर्ण तेजी के साथ बोलता रहा था, वह भावावेग के प्रवाह में पूरी तरह बह गया था और अपनी आवाज़ को दूसरों की आवाज़ से ऊँचा उठाने की कोशिश कर रहा था, और बाद में, ज़ाहिर है, उसे कुछ ऐसे शब्दों और कुछ ऐसी मानी हुई बातों पर अफ़सोस हुआ था जो उसके मुँह से निकल गई थीं। अगर उन लोगों ने उसे उत्तेजित करके उसे लगभग पागल न बना दिया होता तो वह अपनी कुछ अटकलों को इस तरह खुले शब्दों में और इतनी जल्दबाज़ी में व्यक्त न करता और इस तरह के अनावश्यक स्पष्ट बयान न देता। लेकिन बैठते ही अपनी कही हुई एक बात पर उसे इतना खेद हुआ कि वह उसके दिल को जलती हुई छुरी की तरह चुभती चली गई : यह कहकर बुर्दोव्स्की का इतना खुला अपमान करने के अलावा कि उसे भी वही बीमारी थी जिसके लिए उसका अपना इलाज स्विट्ज़रलैण्ड में हुआ था, उसका यह कहना कि जो दस हज़ार वह स्कूल पर खर्च करना चाहता था वह रक़म वह उसे दे देगा, बहुत ही लापरवाही और अभद्रता थी, मानो वह ख़ैरात दे रहा हो, ख़ासतौर पर इसलिए कि उसने यह बात अजनबियों के सामने ऊँचे स्वर में कही थी। ''मुझे इन्तज़ार करना चाहिए था और रक़म देने की बात कल उससे अकेले में कहनी चाहिए थी,'' प्रिंस ने फ़ौरन सोचा, ''और अब जो बात बिगड़ गई है उसे सुधारना शायद मुमकिन न हो ! सचमुच, मैं बौड़म हूँ, बिलकुल बौड़म !'' उसने लज्जित अनुभव करते हुए और बेहद उदास होकर महसूस किया।

इसी बीच गान्या, जो तब तक बिलकुल अलग और चुप रहा था, प्रिंस के बुलाने पर आगे आया और उसके बग़ल में खड़े होकर उस मामले के बारे में जो प्रिंस ने उसे सौंपा था, शान्त भाव से साफ़-साफ़ शब्दों में ब्योरा देने लगा। सारी बातचीत फ़ौरन बन्द हो गई। सभी लोग बड़ी उत्सुकता से सुन रहे थे, ख़ासतौर पर बुर्दोव्स्की की मण्डली का हर आदमी।

9

''ज़ाहिर है, आप इस बात से तो इन्कार नहीं करेंगे,'' गान्या ने सीधे बुर्दोव्स्की को सम्बोधित करके कहना शुरू किया, जो आश्चर्य से उसे आँखें फाड़-फाड़कर घूरता रहा और स्पष्टतः बहुत ही बौखलाहट की हालत में, अपनी शक्ति-भर पूरे ध्यान से उसकी बात सुनने लगा, ''और यक़ीनन, आप संजीदगी से इस बात से इन्कार करने की न कोशिश करेंगे और न इन्कार करना चाहेंगे कि आपकी माँ के साथ आपके बाप मिस्टर बुर्दोव्स्की की शादी होने के ठीक दो साल बाद आप पैदा

हुए थे। आपकी पैदाइश की तारीख़ बड़ी आसानी से लिखे हुए दस्तावेज़ों की बुनियाद पर साबित की जा सकती है, इसलिए मिस्टर केल्लेर के लेख में बात को जिस तरह तोड़-मरोड़कर पेश किया गया है, जो आपके और आपकी माँ के बारे में बहुत ही अपमानजनक बात है, उसकी वजह सिर्फ़ मिस्टर केल्लेर की कल्पना की उड़ान हो सकती है, जिन्होंने बेशक आपके दावे को मजबूत करने और आपके हितों को बढ़ावा देने की बात सोची होगी। मिस्टर केल्लेर का कहना है कि उन्होंने अपना लेख छपाने से पहले आपको पढ़कर सुनाया था, हालाँकि पूरा नहीं—बेशक, उन्होंने वह लेख उस ख़ास जगह तक पढ़कर नहीं सुनाया होगा।..."

"ठीक है, मैंने वहाँ तक नहीं सुनाया था," केल्लेर बीच में बोला, "लेकिन मुझे ये सारी बातें एक जानकार आदमी ने बताई थीं और मैं..."

"माफ़ कीजिएगा, मिस्टर केल्लेर," गान्या उसकी बात काटकर बोला, "मुझे बोलने दीजिए। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि जब उसकी बारी आएगी तो आपके लेख की भी चर्चा की जाएगी, आप अपनी सफ़ाई उस वक़्त दे सकते हैं। इस वक़्त हम सारी बातों को सिलसिलेवार बयान करना जारी रखेंगे। बिलकुल संयोग से अपनी बहन की मदद से मुझे उनकी एक बहुत अच्छी सहेली मिसेज़ ज़ुब्कोवा से, जो विधवा हैं और ज़मींदार हैं, उनके नाम चौबीस साल पहले विदेश से लिखा गया पव्लीश्चेव साहब का एक खत मिल गया। मिसेज़ ज़ुब्कोवा से परिचय करके मैंने उनके कहने पर रिटायर्ड कर्नल तिमोफ़ेई व्याज़ोव्किन से सम्पर्क किया, जो पव्लीश्चेव साहब के दूर के रिश्तेदार हैं और उनके बहुत गहरे दोस्त रह चुके थे। मुझे उनसे पव्लीश्चेव साहब के विदेश से ही लिखे गए दो और खत मिल गए। इन तीन खतों से, उनकी तारीख़ों से, और उनमें लिखी हुई बातों से यह बात बिलकुल साफ़तौर पर साबित की जा सकती है, ज़रा-से भी किसी शक या ग़लत ठहराए जाने की किसी भी गुंजाइश के बिना, कि आपके पैदा होने के सोलह महीने पहले, मिस्टर बुर्दोव्स्की, पव्लीश्चेव साहब विदेश चले गए थे (जहाँ वह लगातार तीन साल तक रहे)। जैसा कि आप जानते हैं, आपकी माँ कभी रूस से बाहर नहीं गईं।...इन खतों को इस वक़्त पढ़कर सुनाने का मेरा कोई इरादा नहीं है। बहुत देर हो चुकी है। मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि यह बात, बहरहाल, एक सच्चाई है। लेकिन, मिस्टर बुर्दोव्स्की, अगर आप चाहें तो कल सबेरे मेरे घर पर मुझसे मिलने का कोई वक़्त तै कर सकते हैं और अपने गवाह (जितने भी आप चाहें) और लिखाई की जाँच करनेवाले माहिर साथ ला सकते हैं; मुझे रत्ती-भर भी शक नहीं है कि आपको इस बात की खुली सच्चाई का पूरा यक़ीन आ जाएगा। और जबकि ऐसा है तो आपके पूरे मामले में कोई दम नहीं रह जाता और मामला अपने आप ख़त्म हो जाता है।"

एक बार फिर आम खलबली और गहरी उद्विग्नता पैदा हो गई। बुर्दोव्स्की अचानक अपनी कुर्सी से उठा।

"अगर ऐसी बात है तो मुझे धोखा दिया गया है, धोखा चेबारोव ने नहीं दिया है बल्कि बहुत पहले दिया गया था। न मुझे माहिरों की ज़रूरत है ओर न मैं मिलने का वक़्त तै करना चाहता हूँ। मैं आपका यक़ीन करता हूँ, मैं इन्कार करता हूँ...मुझे नहीं चाहिए दस हज़ार...मैं चलता हूँ।..."

उसने अपनी टोपी उठा ली और बाहर निकल जाने के लिए कुर्सी पीछे खिसकाई।

"पाँच मिनट और रुकिए, अगर हो सके," गान्या ने शान्त भाव से और बड़े प्यार से उसे रोका। "इस मामले के बारे में अभी कुछ और बहुत ही महत्त्वपूर्ण बातें हैं, जिनमें आपको ख़ास दिलचस्पी होगी। मेरी राय में आपके लिए उन बातों को जानना बिलकुल ज़रूरी है, और शायद

सारा मामला पूरी तरह साफ़ हो जाने पर आप भी बेहतर महसूस करेंगे !"

बुर्दोव्स्की सिर थोड़ा-सा झुकाकर चुपचाप अपनी जगह बैठ गया मानो किसी गहरी चिन्ता में डूबा हो। लेबेदेव का भानजा भी, जो उसके साथ चल देने के लिए उठ खड़ा हुआ था, बैठ गया; हालाँकि उसने अपना सिर ऊँचा रखा और हमेशा की तरह ही निडर बना रहा, लेकिन वह भी बहुत परेशान दिखाई दे रहा था। इप्पोलीत की त्योरियाँ चढ़ी हुई थीं, और वह बहुत उदास था...ऐसा लग रहा था कि उसे बहुत ताज्जुब हुआ था। लेकिन उसी वक़्त उसे खाँसी का ऐसा जबर्दस्त दौरा पड़ा कि उसके रूमाल पर ख़ून का धब्बा पड़ गया। बॉक्सर भयभीत-सा लग रहा था।

"अरे अंतीप," वह कटुता के भाव से चिल्लाया, "मैंने अभी उस दिन—परसों ही तो—तुम्हें बताया था न कि शायद तुम पव्लीश्चेव के बेटे हो ही नहीं !"

दबी-दबी हँसी की आवाज़ सुनाई दी। दो-तीन लोग बाक़ी लोगों से ज़्यादा ज़ोर से हँसे।

"आपने अभी जो बात बताई, मिस्टर केल्लेर," गान्या ने बात पकड़ते हुए कहा, "वह बहुत क़ीमती है। फिर भी मुझे इस बात का पूरा अधिकार है कि मैं बिलकुल सही सबूतों की बुनियाद पर यह दावा करूँ कि मिस्टर बुर्दोव्स्की को हालाँकि अपनी पैदाइश की तारीख़ का तो अच्छी तरह पता था, लेकिन उन्हें पव्लीश्चेव के उस वक़्त विदेश में रहने की कोई जानकारी नहीं थी, जहाँ उन्होंने अपनी ज़्यादातर ज़िन्दगी बिताई थी; रूस तो वह बस थोड़े-थोड़े दिनों के लिए ही आते थे। इसके अलावा, उनके उस वक़्त विदेश जाने की बात ख़ुद कोई ऐसा ख़ास महत्त्व नहीं रखती थी कि न सिर्फ़ मिस्टर बुर्दोव्स्की से, जो उस वक़्त पैदा भी नहीं हुए थे, बल्कि पव्लीश्चेव को अच्छी तरह जाननेवाले लोगों से भी इस बात को बीस साल बाद याद रखने की उम्मीद की जा सके। अब इसकी छानबीन करना बिलकुल नामुमकिन नहीं था, लेकिन मैं मानता हूँ कि जो जानकारी मेरे हाथ लगी है वह बिलकुल इत्तफ़ाक़ से ही मिल गई और बिलकुल मुमकिन था कि यह मुझे मिलती ही नहीं। इसलिए मिस्टर बुर्दोव्स्की को या चेबारोव को यह जानकारी हासिल करने की बात अगर सूझती भी तब भी उनके लिए इसे हासिल करना सचमुच लगभग नामुमकिन था। लेकिन शायद यह बात उन्हें कभी सूझती ही नहीं।..."

"माफ़ कीजिएगा, मिस्टर ईवोल्गिन," इप्पोलीत ने अचानक चिढ़कर उसे बीच में टोका, "लेकिन ये अनाप-शनाप बातें किसलिए ? सारी बात अब समझा दी गई है और हम सबसे ख़ास बात को मानने को तैयार हैं, फिर आप उस उकता देनेवाले और बेहूदा मामले को इतना लम्बा क्यों खींच रहे हैं ? कहीं ऐसा तो नहीं है—या है—कि आप यह डींग मारना चाहते हों कि आपने कितनी चालाकी से छानबीन की और हम लोगों के सामने और प्रिंस के सामने यह जताना चाहते हों कि आप कितने अच्छे छानबीन करनेवाले, कितने अच्छे जासूस हैं ? या सचमुच आपका इरादा क्या यह हो सकता है कि यह साबित करके कि बुर्दोव्स्की इस मामले में अनजानेपन की वजह से फँस गया, आप उसे माफ़ कर देने लायक़ साबित करें और उसने जो कुछ किया उसे सही ठहराएँ ? लेकिन, जनाब, यह सरासर ढिठाई है। बुर्दोव्स्की को न आपकी माफ़ियों की ज़रूरत है न उसकी हरकतों को सही ठहराने की—इसके बारे में आप किसी भ्रम में न रहें ! वह दुःखी है, यों ही उसे इस पूरे मामले की वजह से बहुत तकलीफ़ है, वह बहुत अटपटी हालत में फँस गया है, और आपको इस बात को महसूस करना चाहिए, इस बात को समझना चाहिए।..."

"रहने दीजिए, मिस्टर तेरेंत्येव, बस रहने दीजिए," गान्या उनकी बात बीच में काटने में सफल हो गया। "शान्त रहिए, ताव में न आइए; आप बहुत बीमार हैं न ? मुझे आपसे हमदर्दी है। ऐसी हालत में, अगर आप चाहें, तो मैं अपनी बात ख़त्म कर दूँ, बल्कि मुझे मजबूर होकर उन बातों

को बहुत थोड़े में ही बयान करना होगा, जिनके बारे में मुझे यक़ीन है कि उनका पूरा ब्योरा जानने में ऐसी कोई बुराई भी नहीं होगी," उसने अधीरता की एक आम लहर देखकर इतना और जोड़ दिया। "उन सब लोगों की जानकारी के लिए जिन्हें इस मामले से दिलचस्पी है, मैं बस यह बताना चाहता हूँ, और मैं इसे साबित कर सकता हूँ कि, मिस्टर बुर्दोव्स्की, आपकी माँ के साथ पव्लीश्चेव ने इतनी मेहरबानी और नेकी का सलूक सिर्फ़ इसलिए किया कि वह उस भू-दास लड़की की बहन थीं जिससे उन्हें अपनी नौजवानी में इतना गहरा प्यार हो गया था कि अगर वह अचानक मर न गई होती तो उन्होंने उससे शादी कर ली होती। मेरे पास इसका सबूत है कि इस भेद की बात को, जो बिलकुल सही और सच है, बहुत कम लोग जानते हैं और सच तो यह है कि लोग उसे पूरी तरह भूल चुके हैं। इसके अलावा, मैं आपको यह भी बता सकता हूँ कि जब आपकी माँ दस साल की लड़की ही थीं तभी पव्लीश्चेव ने उन्हें लेकर अपने करीबी रिश्तेदार की तरह पाला था, और उनके दहेज के लिए काफ़ी बड़ी रक़म अलग रख दी थी और यह कि इन सब बातों की वजह से पव्लीश्चेव के बहुत-से रिश्तेदारों के बीच, जिन्हें यहाँ तक डर था कि वह कहीं उससे शादी न कर लें, बहुत बेसिर-पैर की अफ़वाहें फैलने लगीं। लेकिन आख़िर में जब वह बीस साल की हुईं तो उन्होंने मिस्टर बुर्दोव्स्की से मुहब्बत करके (और मैं इसे बिलकुल अकाट्य प्रमाणों से साबित कर सकता हूँ), शादी कर ली जो भू-सर्वेक्षण विभाग में अफ़सर थे। मैंने बहुत-सी ऐसी बातें जमा की हैं जिन्हें ग़लत नहीं साबित किया जा सकता और जिनसे पता चलता है, मिस्टर बुर्दोव्स्की, कि आपके बाप ने जिन्हें कारोबार की तनिक भी समझ नहीं थी, आपकी माँ के दहेज के पन्द्रह हज़ार रूबल मिलने पर सरकारी नौकरी छोड़ दी और तरह-तरह के कारोबारों में हाथ डाला, जिनमें उन्हें धोखा दिया गया, उनकी सारी पूँजी डूब गई, अपना ग़म ग़लत करने के लिए वह शराब पीने लगे, जिसकी वजह से वह बीमार पड़ गए, और आख़िर में वक़्त से पहले ही, आपकी माँ से शादी होने के आठ ही साल बाद मर गये। उसके बाद, ख़ुद आपकी माँ का कहना है, वह बिलकुल कंगाल हो गईं और अगर पव्लीश्चेव ने उदारता दिखाकर लगातार उनकी मदद न की होती तो वह बिलकुल तबाह हो जातीं; वह उन्हें छह सौ सालाना देते थे। इसके अलावा मेरे पास इस बात के भी बहुत-से सबूत हैं कि जब आप बच्चे थे तब उन्हें आपसे बड़ा लगाव हो गया था। इस सबूत की बुनियाद पर और जो कुछ आपकी माँ ने मुझे बताया है उससे ऐसा लगता है कि उन्हें आपसे लगाव हो जाने की सबसे बड़ी वजह यह थी कि बचपन में आप एक हकलाते और अभागे अपाहिज बच्चे जैसे लगते थे और बहुत दुःखी और त्रस्त रहते थे (और पव्लीश्चेव के दिल में, जैसा कि मुझे अकाट्य प्रमाणों से मालूम हुआ है, ज़िन्दगी-भर मुसीबत के मारे और लाचार लोगों, ख़ासकर बच्चों, के लिए एक ख़ास तरह का प्यार रहा—यह बात, मेरी राय में, हमारे इस मामले के सिलसिले में बहुत महत्त्व रखती है)। आख़िर में, मुझे यह बताते हुए बहुत ख़ुशी होती है कि अपनी छानबीन के दौरान मुझे एक और बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात का पता चला—यानी यह बात कि पव्लीश्चेव को आपसे जो गहरा लगाव था उसकी वजह से (क्योंकि उन्हीं की कोशिशों का नतीजा था कि आप एक माध्यमिक स्कूल में भरती हो गए और वहाँ ख़ास निगरानी में आपको पढ़ाया-लिखाया गया) पव्लीश्चेव के परिवारवालों और उनके रिश्तेदारों के मन में धीरे-धीरे यह विचार पैदा हुआ कि आप उनके बेटे थे और यह कि आपके बाप को उनकी बीवी ने धोखा दिया था। लेकिन याद रखने की महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस विचार को पव्लीश्चेव की ज़िन्दगी के सिर्फ़ आख़िरी बरसों में आमतौर पर सच माना गया, जब उनके सब रिश्तेदारों को उनकी वसीयत की गहरी चिन्ता सताने लगी और जब असली बातों को भुला दिया गया और उनके बारे में कोई छानबीन मुमकिन नहीं

रह गई। बेशक यह विचार, मिस्टर बुर्दोव्स्की, आप तक भी पहुँचा और आपको उसने पूरी तरह अपने काबू में कर लिया। आपकी माँ को, जिनसे परिचित होने का मुझे सौभाग्य मिला, इन अफ़वाहों का पता था, लेकिन आज तक उन्हें यह नहीं मालूम है (मैंने यह बात उनसे भी छिपाई) कि आप, उनके बेटे, इस अफ़वाह के चक्कर में फँस गए थे। मिस्टर बुर्दोव्स्की, आपकी माँ मुझे प्स्कोव में मिलीं, वह बहुत बीमार और बेहद ग़रीबी की हालत में थीं जिसका शिकार वह पव्लीश्चेव की मृत्यु के बाद हो गई थीं। उन्होंने अपनी आँखों में कृतज्ञता के आँसू भरकर बताया कि वह अभी तक सिर्फ़ आपकी और आपकी मदद की बदौलत जिन्दा हैं; वह आगे चलकर आपसे बड़ी-बड़ी उम्मीदें लगाए हैं और उन्हें भविष्य में आपके सफलता पाने का पक्का विश्वास है।..."

"यह बात तो बर्दाश्त की ही नहीं जा सकती !" लेबेदेव के भानजे ने अधीर होकर अचानक ऊँचे स्वर में घोषणा की। "आप ये सब भावुकता-भरे किस्से किसलिए सुना रहे हैं ?"

"बेहूदा, शर्मनाक !" इप्पोलीत उत्तेजित होकर चिल्लाया, लेकिन बुर्दोव्स्की का ध्यान इसकी ओर नहीं गया और वह अपनी जगह से हिला तक नहीं।

"यह किसलिए है ? क्यों है ?" गान्या ने द्वेषपूर्वक अपने निष्कर्षों का निचोड़ प्रस्तुत करने की तैयारी करते हुए छलपूर्ण आश्चर्य के साथ कहा। "तो, पहली बात यह कि मिस्टर बुर्दोव्स्की अब इस बात को पक्के तौर पर जान लें कि पव्लीश्चेव को उनसे जो लगाव था वह दया के नाते नहीं, बल्कि अपनी उदारता की वजह से था। मिस्टर बुर्दोव्स्की को बस इतना ही मानने की ज़रूरत है, क्योंकि उन्होंने अभी मिस्टर केल्लेर के लेख की पुष्टि की है और उसे अपनी स्वीकृति दी है। मिस्टर बुर्दोव्स्की, मैं यह बात सिर्फ़ इसलिए कह रहा हूँ कि मैं आपको इज़्ज़तदार आदमी समझता हूँ। दूसरे, ऐसा लगता है कि जहाँ तक चेबारोव का भी सवाल है, इस मामले में किसी तरह की लूटमार या धोखेबाज़ी नहीं है। यह बात मेरे लिए भी काफ़ी महत्त्व रखती है, क्योंकि अभी प्रिंस ने भी जोश में आकर यह बात ज़ोर देकर कही थी कि इस बदनसीब मामले में लूटमार और धोखेबाज़ी के बारे में मेरी भी यही राय थी। बात उल्टी ही थी; सबको सच्चाई का पूरा यक़ीन था, और मुमकिन है कि चेबारोव सचमुच बहुत बड़े बदमाश हों, लेकिन इस मामले में उन्होंने सिर्फ़ एक घाघ वकील होने का सबूत दिया, जिसने कामयाबी की सबसे बड़ी गुंजाइश पर ही अपनी नज़र रखी। उन्हें उम्मीद थी कि वकील की हैसियत से वह इससे बहुत बड़ी रक़म कमा लेंगे, और उन्होंने जो हिसाब लगाया था वह न सिर्फ़ बहुत चालाकी और होशियारी से भरा हुआ था, बल्कि उसकी बुनियाद भी बहुत ठोस थी। प्रिंस जिस आसानी से अपना पैसा बाँट रहे थे और स्वर्गीय पव्लीश्चेव के लिए उनके दिल में आदर और श्रद्धा की जो भावना थी और आख़िर में सबसे बढ़कर मान-मर्यादा और अन्तःकरण की निष्ठा के बारे में प्रिंस के जो उदात्त विचार थे, जिनका सभी को पता था—इन बातों को चेबारोव ने अपनी उम्मीदों की बुनियाद बनाया। जहाँ तक मिस्टर बुर्दोव्स्की का सवाल है तो उनके बारे में यहाँ तक कहा जा सकता है कि अपनी कुछ आस्थाओं की वजह से वह चेबारोव और उनके दोस्तों के असर में इतनी बुरी तरह आ गए कि उन्होंने अपने स्वार्थ की वजह से बिलकुल नहीं, बल्कि एक तरह से सत्य, प्रगति और मानवजाति की सेवा करने के लिए इस मामले को खड़ा कर दिया। अब, जबकि असलियत का पता लग चुका है, यह बात सभी की नज़र में बिलकुल साफ़ हो गई होगी कि बाहर से देखने में चाहे जो लगता हो लेकिन मिस्टर बुर्दोव्स्की के चरित्र पर कोई उँगली नहीं उठा सकता, और प्रिंस अब उन्हें ज़्यादा जल्दी और ज़्यादा आसानी से अपना वह दोस्ताना सहारा और व्यावहारिक सहायता दे सकते हैं जिसकी चर्चा उन्होंने अभी स्कूलों और पव्लीश्चेव की बात करते हुए की थी।"

"बस कीजिए, मिस्टर ईवोल्गिन, बस !" प्रिंस ने सचमुच विस्मय से कहा, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।

"मैं कह चुका हूँ," बुर्दोव्स्की चिढ़कर चिल्लाया, "मैं तीन बार कह चुका हूँ कि मुझे कोई पैसा नहीं चाहिए। मैं लूँगा ही नहीं...क्यों...मैं नहीं चाहता...बस !"

और वह झपटकर बरामदे से बाहर भागा, लेकिन लेबेदेव के भानजे ने बाँह पकड़कर उसे रोक लिया और उसके कान में कुछ कहा। बुर्दोव्स्की जल्दी से वापस आया और अपनी जेब से एक बड़ा-सा खुला लिफाफा निकालकर उसने प्रिंस के सामने मेज़ पर फेंक दिया।

"यह रहा आपका पैसा !...आपकी हिम्मत कैसे हुई ?...आपकी हिम्मत कैसे हुई ?... पैसा !..."

"ये वे ढाई सौ रूबल हैं जो आपने ख़ैरात के तौर पर चेबारोव के हाथ भिजवाने की गुस्ताखी की थी," दोक्तोरेंको ने समझाया।

"लेख में तो पचास कहा गया था !" कोल्या ने चिल्लाकर कहा।

"मुझे बहुत अफ़सोस है !" प्रिंस ने बुर्दोव्स्की के पास जाकर कहा। "बुर्दोव्स्की, मैंने तुम्हारे साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है, लेकिन मैंने यह रक़म तुम्हें ख़ैरात के तौर पर नहीं भेजी थी, यक़ीन करो। मैं समझता हूँ इसमें भी कसूर मेरा ही है...अभी थोड़ी देर पहले भी कसूर मेरा ही था।" (प्रिंस बहुत परेशान था, वह थका हुआ और कमज़ोर लग रहा था, और वह उखड़ी-उखड़ी बातें कर रहा था।) "मैंने धोखेबाज़ी की बात कही थी...लेकिन मेरा इशारा तुम्हारी तरफ़ नहीं था...वह मेरी ग़लती थी। मैंने कहा था कि तुम्हें भी...वही बीमारी थी जो मुझे थी। लेकिन तुम मेरी तरह नहीं हो, तुम...घर-घर जाकर पढ़ाते हो, तुम अपनी माँ को पैसा भेजते हो। मैंने कहा था कि तुमने अपनी माँ को बदनाम किया। लेकिन तुम उनसे प्यार करते हो; वह खुद ऐसा कहती हैं...मुझे मालूम नहीं था।...गव्रीला आर्दालिओनोविच ने मुझे सारी बातें नहीं बताई थीं, मुझे अफ़सोस है। मैंने तुम्हें दस हज़ार देने की बात करने की हिम्मत की, लेकिन वह मेरी ग़लती थी, मुझे यह बात इस तरह नहीं करनी चाहिए थी, और अब...अब उसे नहीं किया जा सकता क्योंकि तुम मुझसे नफ़रत करते हो।..."

"यह अच्छा ख़ासा पागलख़ाना है !" मिसेज़ येपांचिना ने ज़ोर से कहा।

"बिलकुल, पागलों का घर तो है ही !" अग्लाया अपने आपको वश में न रख सकी और तीखे स्वर में बोली। लेकिन उसके शब्द आम शोर-गुल में डूबकर रह गए। हर आदमी ज़ोर से बोल रहा था, सभी बहस कर रहे थे, कुछ झगड़ा कर रहे थे, बाक़ी हँस रहे थे। जनरल येपांचिन बेहद नाराज़ थे और इस तरह मिसेज़ येपांचिना की राह देख रहे थे जैसे उनकी प्रतिष्ठा को ठेस लगी हो। लेबेदेव के भानजे को आख़िरी बात कहने का मौक़ा मिल गया—"जी हाँ, प्रिंस, आपके बारे में इतना तो मानना पड़ेगा कि आपको अपनी...मेरा मतलब है, बीमारी का फ़ायदा उठाना खूब आता है (अगर बहुत नरमी से कहा जाए)। आपने अपनी दोस्ती और अपना पैसा इतनी चालाकी से पेश किया है कि कोई भी इज़्ज़तदार आदमी उन्हें किसी भी हालत में ले नहीं सकता था। या तो इसमें ज़रूरत से ज़्यादा मासूमियत थी या ज़रूरत से ज़्यादा चालाकी...मैं समझता हूँ कि आपको तो मालूम ही होगा कि क्या चीज़ थी।"

"देखिए, मेरी बात सुनिए," गान्या ने ऊँचे स्वर में कहा; उसने इसी बीच लिफाफा खोल लिया था, "इसमें ढाई सौ नहीं बल्कि सिर्फ़ सौ रूबल हैं। प्रिंस, यह बात मैं इसलिए बताए दे रहा हूँ कि कोई ग़लतफ़हमी न रह जाए।"

"रहने दीजिए ! रहने दीजिए इसे !" प्रिंस गान्या की तरफ़ हाथ हिलाकर ज़ोर से चिल्लाया।

"जी नहीं," लेबेदेव के भानजे ने फ़ौरन बात पकड़ ली, "इसमें 'रहने देने' की कोई बात नहीं है। प्रिंस, हम आपकी इस 'रहने देने' की बात को अपना अपमान समझते हैं। हम अपनी कोई बात छिपाते नहीं, हम खुलेआम एलान करते हैं; जी हाँ, उसमें ढाई सौ नहीं बल्कि सिर्फ़ सौ रूबल हैं, लेकिन उससे फ़र्क़ भी क्या पड़ता है..."

"जी नहीं, फ़र्क़ पड़ता है," गान्या ने भोलेपन से भरी परेशानी से मुश्किल से कहा।

"मेहरबानी करके मुझे टोकिए नहीं। वकील साहब, हम लोग उतने बेवक़ूफ़ नहीं हैं जितना कि आप समझते हैं," लेबेदेव के भानजे ने गुस्से से चिढ़कर कहा। "ज़ाहिर है, सौ रूबल ढाई सौ नहीं होते, और दोनों एक ही बात नहीं हैं, लेकिन असल चीज़ तो सिद्धान्त है; महत्त्व तो पहल का है, रही डेढ़ सौ रूबल कम होने की बात, तो वह ब्योरे की बात है। महत्त्व की बात यह है कि बुर्दोव्स्की आपकी ख़ैरात नहीं लेता, वह उसे आपके मुँह पर फेंककर मारता है, और इस दृष्टि से देखा जाए तो सौ हों या ढाई सौ, एक ही बात है। बुर्दोव्स्की ने आपके दस हज़ार लेने से इन्कार कर दिया, जैसा कि आप ख़ुद देख रहे हैं; अगर वह बेईमान होता तो ये सौ रूबल भी वापस न लाता ! जो डेढ़ सौ रूबल कम हैं वह प्रिंस से मिलने के लिए चेबारोव के सफ़र पर ख़र्च किए गए। आप हमारी नादानी पर और कारोबार के मामले में हमारे कच्चेपन पर हँस सकते हैं, आप हम लोगों को हास्यास्पद साबित करने की पूरी कोशिश कर चुके हैं, लेकिन हमें बेईमान कहने की हिम्मत न कीजिएगा। वे डेढ़ सौ रूबल हम सब लोग मिलकर प्रिंस को लौटा देंगे; हम सारी रक़म लौटा देंगे, चाहे एक-एक रूबल की किस्तों में लौटानी पड़े और यह भी सूद समेत वापस करेंगे। बुर्दोव्स्की ग़रीब है, बुर्दोव्स्की के पास लाखों की दौलत नहीं है, और सफ़र के बाद चेबारोव ने अपना बिल भेज दिया था। हमें उम्मीद थी कि हम जीत जाएँगे।...ऐसे मामले में किसे यह उम्मीद न होती ?"

"किसे होती ?" प्रिंस श. अचानक बोल पड़े।

"मैं तो यहाँ पागल हो जाऊँगी !" मिसेज़ येपांचिना चिल्लाकर बोलीं।

"इस पर मुझे उस मशहूर दलील की याद आई," रादोम्स्की, जो अभी तक वहाँ चुपचाप खड़ा यह तमाशा देख रहा था, हँसकर बोला, "जो सफ़ाई के एक वकील ने रखी थी, जिसमें उसने ग़रीबी की आड़ लेकर अपने मुवक्किल की इस हरकत को सही ठहराने की कोशिश की थी कि उसने लूटने के इरादे से छह आदमियों को क़त्ल कर दिया था। उसने अपना तर्क कुछ इस तरह समाप्त किया था—'बिलकुल कुदरती बात है,' उसने कहा था, 'कि मेरा मुवक्किल, जो इतना ग़रीब था, छह आदमियों को क़त्ल करने की बात सोचता, क्योंकि कौन है जो उसकी जगह होता और ऐसी बात न सोचता ?' या इसी तरह की कोई बहुत ही मसख़रेपन की बात।"

"बस करो !" मिसेज़ येपांचिना गुस्से से लगभग काँपते हुए चिल्लाईं। "बहुत हो गया, यह बकवास कभी बन्द भी होगी !"

वह भीषण उत्तेजना की अवस्था में थीं; उन्होंने धमकी-भरे अन्दाज से अपना सिर झटके के साथ पीछे किया और वहाँ पर मौजूद तमाम लोगों को दहकती हुई आँखों से दम्भ-भरी, भयावह और अधीरतापूर्ण चुनौती के भाव से इस तरह देखा जैसे उस क्षण उनके लिए मित्रों और शत्रुता के बीच कोई अन्तर न रह गया हो। वह बहुत समय से दबाकर रखे गए लेकिन अन्ततः फूट पड़नेवाले क्रोध की उस चरम सीमा पर पहुँच गई थीं जहाँ पर सबसे प्रबल मनोवेग परिणाम की चिन्ता किए बिना किसी पर टूट पड़ने का होता है। जो लोग मिसेज़ येपांचिना को जानते थे उन्होंने फ़ौरन महसूस किया कि कोई असाधारण बात हो गई है। अगले दिन जनरल येपांचिन ने प्रिंस श.

को बताया कि "ऐसा उन्हें अकसर होता है, लेकिन उसका रूप इतना भयानक कभी नहीं होता जितना कल हो गया था। कोई तीन साल में एक बार ऐसा होता है, बस, इससे ज़्यादा नहीं ! इससे ज़्यादा कभी नहीं !" उन्होंने ज़ोर देकर इतना और जोड़ दिया।

"रहने दीजिए !" वह अपने पति की ओर मुड़कर चिल्लाईं, "मुझे छोड़ दीजिए ! आप अब मुझे सहारा क्या दे रहे हैं ? आपको इतनी समझ नहीं थी कि मुझे यहाँ से पहले ही निकाल ले जाते, क्यों ? आप मेरे शौहर हैं, आप परिवार के प्रधान हैं, मैं तो हूँ ही नासमझ, लेकिन अगर मैं आपकी बात न मानती और यहाँ से न जाती तो आपको कान पकड़कर मुझे यहाँ से खींच ले जाना चाहिए था। आपको कम से कम अपनी बेटियों का तो ख़्याल करना चाहिए था ! अब तो हम लोग आपके बिना भी रास्ता ढूँढ़ लेंगे। मेरा तो जितना अपमान हो गया वह साल भर के लिए काफ़ी है...ज़रा रुकिए; मैंने अभी प्रिंस का शुक्रिया नहीं अदा किया ! प्रिंस, इतने दिलचस्प मनोरंजन के लिए तुम्हारा शुक्रिया ! और सोचने की बात है कि मैं यहाँ बैठी सुनती रही कि हमारी नौजवान पीढ़ी के लोगों को क्या कहना है...नीचता है...बेहद नीचता ! यह तो सरासर गड़बड़ी है, बेहूदगी है, ऐसी बात की कल्पना तो सपने में भी दूर-दूर तक नहीं की जा सकती ! क्या सचमुच इस तरह के बहुत-से लोग हैं ? तुम चुप रहो, आग्लाया ! तुम भी चुप रहो, अलेक्सान्द्रा ! इससे तुम्हारा कोई मतलब नहीं है ! मिस्टर रादोम्स्की, मेरे इर्द-गिर्द मँडराइए नहीं; मैं आपसे तंग आ चुकी हूँ ! तो तुम, भले आदमी, उनसे माफ़ी माँग रहे हो, क्यों ?" प्रिंस को फिर सम्बोधित करते हुए वह बरस पड़ीं। " 'मुझे आपको पैसे देने की बात कहने की गुस्ताखी करने पर बहुत अफ़सोस है।...' और तुम हँस किस बात पर रहे हो, डींगिया, शेखीखोर ?" अचानक वह लेबेदेव के भानजे पर टूट पड़ीं। " 'हम इसे लेने से इन्कार करते हैं...हम अपना हक़ माँगते हैं, हम भीख़ नहीं माँगते !' जैसे इसे मालूम ही नहीं है कि यह मूर्ख कल ही फिर इनके पास जाएगा और इनके सामने दोस्ती का सुझाव रखेगा और इन्हें पैसे देने का वादा करेगा ! करोगे न, है न यही बात ? ऐसा ही करोगे न ?"

"करूँगा," प्रिंस ने दबे हुए कोमल स्वर में कहा।

"सुन लिया ?" वह फिर बुर्दोव्स्की की ओर मुड़ीं। "तुम्हें इसी बात का भरोसा है न ? पैसा तो तुम्हारी जेब में एक तरह से पहुँच गया है, इसीलिए इतना अकड़ रहे हो, इसीलिए तुम हम लोगों की आँखों में धूल झोंकने की कोशिश कर रहे हो...जी नहीं, ऐसे बेवक़ूफ़ कहीं और ढूँढ़ो जाकर, मैं तुम्हारी नस-नस पहचानती हूँ...मैं तुम्हारी सारी चालबाज़ी समझती हूँ !"

"लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना !" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा।

"आइए, मैडम, अब हम लोगों को चलना चाहिए, और प्रिंस को भी अपने साथ लिए चलते हैं," प्रिंस श. ने मुस्कराते हुए यथासम्भव शान्त भाव से कहा।

लड़कियाँ सहमी-सी अलग खड़ी रहीं; जनरल साहब सचमुच डरे हुए थे; सभी को आश्चर्य-सा हो रहा था। उनमें से कुछ जो सबसे दूर खड़े थे, चुपके-चुपके हँस रहे थे और आपस में कानाफूसी कर रहे थे; लेबेदेव के चेहरे पर असीम हर्षातिरेक का भाव था।

"आपको बेहूदगी और गड़बड़ी तो हर जगह मिलेगी, मैडम," लेबेदेव का भानजा बोला, हालाँकि साफ़ मालूम हो रहा था कि वह बहुत अटपटा महसूस कर रहा था।

"लेकिन वैसी नहीं, जनाब ! उस तरह की बिलकुल नहीं जिनमें आप लोग माहिर हैं, जनाब...वैसी बिलकुल नहीं !" मिसेज़ येपांचिना इस तरह किलकारी मारकर चिल्लाईं जैसे उन पर हिस्टीरिया का दौरा पड़ गया हो। "आप लोग मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिए !" उन्होंने उन लोगों को डपटा जो उन्हें समझाने-बुझाने की कोशिश कर रहे थे। "जी नहीं, जैसा कि, मिस्टर रादोम्स्की,

आपने ख़ुद कहा, अगर सफ़ाई का वकील तक खुली अदालत में कह सकता है कि एक आदमी के लिए महज इसलिए कि वह ग़रीब है इससे ज़्यादा क़ुदरती बात कोई हो ही नहीं सकती कि वह छह आदमियों की बोटी-बोटी काटकर रख दे, तब तो इस दुनिया के लिए कोई उम्मीद ही बाक़ी नहीं रह जाती। मैंने इस तरह की बात कभी सुनी नहीं। अब मेरी समझ में सब आ गया है ! यह," उन्होंने बुर्दोव्स्की की तरफ़ इशारा करके कहा, जो उन्हें बिलकुल बदहवास होकर देख रहा था, "हकला किसी का ख़ून क्यों नहीं कर सकता ? मैं तो शर्त लगाकर कह सकती हूँ कि यह ज़रूर करेगा ! मैं दावे से कह सकता हूँ कि यह तुम्हारे दस हज़ार नहीं लेगा; इसलिए नहीं लेगा कि इसका अन्तःकरण इसे ठीक नहीं समझता, लेकिन यह रात को लौटकर आएगा और तुम्हें क़त्ल करके तुम्हारी तिजोरी में से ले जाएगा। और यह रक़म ले जाते हुए इसका अन्तःकरण बिलकुल साफ़ रहेगा ! इसके लिए यह बेईमानी नहीं है ! यह 'निष्कलंक निराशा का आवेग' है। यह 'प्रतिवाद' है, या भगवान ही जाने क्या है।...इन लोगों की हर चीज़ औन्धी है, हर चीज़ उल्टी है। एक लड़की घर पर पलती-बढ़ती है, फिर अचानक वह बीच सड़क पर किराए की घोड़ागाड़ी में कूदकर बैठ जाती है और कहती है—'गुड-बाई, मम्मी ! अभी-अभी मैंने कार्लिच से या इवानिच से या किसी और से शादी कर ली है ! क्या आप समझते हैं कि ऐसा करना ठीक है ? क्या इस तरह की चीज़ को इज़्ज़त की नज़र से देखा जाना चाहिए ? क्या यह स्वाभाविक है ? क्या आप समझते हैं कि ऐसा करना ठीक है ? क्या इस तरह की चीज़ को ज़रूरत की नज़र से देखा जाना चाहिए ? क्या यह स्वाभाविक है ? क्या यही नारी समस्या है ? यह लड़का," उन्होंने कोल्या की तरफ़ इशारा किया, "अभी उस दिन सचमुच बहस कर रहा था कि 'नारी समस्या' का यही मतलब है। अगर किसी की माँ बेवक़ूफ़ हो तब भी उसे उसके साथ इंसानों जैसा बर्ताव करना चाहिए। आज तुम लोग इतने ऐंठते-अकड़ते हुए क्यों आए थे ? 'हट जाओ रास्ते से : हम आ रहे हैं। हमें सारे हक़ दे दो, लेकिन हमारे सामने जबान खोलने की भी हिम्मत न करना ! हमारे साथ इज़्ज़त के साथ पेश आओ, ऐसी इज़्ज़त जैसी अब तक किसी ने सुनी भी न हो, लेकिन हम तुम्हें बिलकुल मिट्टी समझेंगे !' ये लोग सच्चाई की खोज कर रहे हैं, अपने हक़ लेने पर अड़े हैं, लेकिन इन्हीं लोगों ने अपने लेख में उस पर जी भरकर कीचड़ उछाला, अधर्मियों की तरह ! 'हम भीख़ नहीं माँगते, हम अपना हक़ माँगते हैं, और हम आपका एहसान भी नहीं मानेंगे, क्योंकि आप ऐसा अपने अन्तःकरण को सन्तुष्ट करने के लिए कर रहे हैं !' अच्छी नैतिकता है ! अगर तुम लोग एहसान नहीं मानोगे तो प्रिंस को भी यह कहने का अधिकार है कि वह पव्लीश्चेव का कोई एहसान नहीं मानता, क्योंकि पव्लीश्चेव भी अपने अन्तःकरण को सन्तुष्ट करने के लिए ही नेकी करते थे। फिर भी तुम लोग उसके मन में पव्लीश्चेव के लिए कृतज्ञता की जो भावना है उसी का आसरा लगाए हो। उसने तुमसे कोई पैसा उधार तो लिया नहीं था, उस पर तुम्हारा कोई कर्ज तो है नहीं। फिर तुम लोग उसकी कृतज्ञता का नहीं तो और किस चीज़ का आसरा लगाए हो ? फिर तुम लोग उसी चीज़ से ख़ुद इन्कार कैसे कर सकते हो ? बिलकुल पागल हैं ! ये लोग समाज को इसलिए बेरहम और जंगली समझते हैं कि वह फँसाई हुई लड़की को कलंकित समझता है। लेकिन अगर तुम लोग समाज को बेरहम समझते हो तो तुम्हें यह भी मानना पड़ेगा कि समाज के निन्दा करने से उस लड़की को भी ठेस पहुँचती होगी। और अगर उसे ठेस पहुँचती है तो तुम लोग समाज के सामने अखबारों में उसका प्रचार क्यों करते हो और साथ ही यह उम्मीद भी करते हो कि उसे ठेस न पहुँचे ? पागल ! अहंकारी ! ईश्वर को नहीं मानते, ईसा मसीह को नहीं मानते ! अरे, तुम लोगों पर तो अभिमान और अहंकार का ऐसा भूत सवार है कि तुम लोग आख़िर में एक-दूसरे को जिन्दा

चबा जाओगे—मैं तुम लोगों को अभी से बताए देती हूँ। क्या यह सरासर गड़बड़ी नहीं है ? क्या यह अराजकता नहीं है ? क्या यह बेहूदगी नहीं है ? और तिस पर यह निर्लज्ज मूर्ख उनके पीछे भागकर उनसे माफी माँगता है ! क्या तुम लोगों जैसे बहुत लोग हैं ? तुम खीसें किस बात पर निकाल रहे हो ? इसलिए कि मैंने तुम लोगों के सामने अपने आपको लज्जित किया ? सो तो मैंने किया, और मैं इसके बारे में कुछ कर भी नहीं सकती ! और, खबरदार, जो अब तुमने खीसें निकालीं, दुष्ट कहीं का !" वह अचानक इप्पोलीत पर टूट पड़ीं। "दम निकलनेवाला है मगर दूसरों को बिगाड़ने से बाज नहीं आता। तुमने इस लड़के को बिगाड़ा है," उन्होंने फिर कोल्या की ओर इशारा किया। "यह तुम्हारे पीछे पागल है और तुम इसे नास्तिकता सिखाते हो। तुम ईश्वर को नहीं मानते, लेकिन तुम अभी इतने बड़े भी नहीं हुए कि तुम्हारी पिटाई न की जाए ! बस, मैं भर पाई तुम लोगों से ! तो, प्रिंस, तुम कल इन लोगों के पास जाओगे, क्यों ?" उन्होंने लगभग हाँपते हुए प्रिंस से फिर पूछा।

"जाऊँगा।"

"तो फिर मैं तुमसे कोई जान-पहचान रखना नहीं चाहती !" वह जल्दी से चल देने के लिए मुड़ीं, लेकिन यकायक फिर लौट आईं। "और तुम इस नास्तिक के पास भी जाओगे ?" उन्होंने इप्पोलीत की तरफ़ इशारा किया। "आप मुझ पर हँस क्यों रहे हैं, जनाब ?" वह अस्वाभाविक स्वर में चिल्लाईं और इप्पोलीत की व्यंग्यपूर्ण हँसी को बर्दाश्त न कर पाकर उसकी ओर झपटीं।

"मिसेज़ येपांचिना ! मिसेज़ येपांचिना ! मिसेज़ येपांचिना !" वे सब लोग एक साथ चिल्लाए।

"माँ, बड़ी शर्म की बात है !" अग्लाया ज़ोर से चिल्लाई।

"आप परेशान न हों, मिस अग्लाया," इप्पोलीत शान्त भाव से बोला, हालाँकि मिसेज़ येपांचिना ने उसकी बाँह कसकर पकड़ ली थी और गुस्से-भरी नज़रों से उसे घूर रही थीं, "आप परेशान न हों, यह बात अभी आपकी माँ की समझ में आ जाएगी कि मरते हुए आदमी को मारा नहीं जाता...मैं यह बताने को बिलकुल तैयार हूँ कि मैं हँस किस बात पर रहा था...अगर आप मुझे इसकी इजाज़त दें तो मुझे बड़ी खुशी होगी।..."

इतने में उसे खाँसी का ऐसा दौरा पड़ा कि वह पूरे एक मिनट तक उस पर काबू न पा सका।

"मर रहा है, मगर भाषण झाड़े बिना रहा नहीं जाता !" मिसेज़ येपांचिना ने उसकी बाँह छोड़ दी और उसने अपने होंठों से जो ख़ून पोंछा उसे सहमी-सहमी नज़रों से देखकर कहा, "तुम्हें बोलना तो दूर—घर जाकर लेट जाना चाहिए।..."

"मैं यही करूँगा," इप्पोलीत ने धीमे, भर्राए हुए स्वर में लगभग फुसफुसाकर जवाब दिया। "घर जाते ही मैं लेट जाऊँगा। मैं जानता हूँ कि मैं पन्द्रह दिन में मर जाऊँगा...पिछले हफ़्ते ख़ुद डॉ. बोत्किन ने मुझे बताया था...इसलिए अगर आप इजाज़त दें तो मैं विदा होने से पहले आपसे कुछ शब्द कहूँ।"

"अरे, तुम पागल तो नहीं हो गए हो ?" मिसेज़ येपांचिना घबराकर चिल्लाईं। "बकवास है सब ! तुम्हें इलाज की ज़रूरत है, यह बातें करने का वक़्त नहीं है ! जाओ, जाकर लेट जाओ !"

"अगर मैं अभी जाकर लेट गया तो फिर कभी नहीं उठूँगा," इप्पोलीत मुस्कराकर बोला। "मेरा इरादा तो कल ही इस तरह लेट जाने का था कि फिर कभी उठूँ ही नहीं, लेकिन मैंने उसे परसों तक के लिए टाल दिया, ताकि आज, जबकि मेरे पाँवों में अभी खड़े होने का दम है यहाँ इन लोगों के साथ आ सकूँ...लेकिन मैं बहुत थक गया हूँ।..."

"बैठ जाओ, बैठ जाओ ! तुम खड़े क्यों हो ? यहाँ, कुर्सी पर बैठ जाओ," मिसेज़ येपांचिना

ने चिन्तित होकर कहा और उसके लिए स्वयं कुर्सी लाकर रख दी।

"शुक्रिया," इप्पोलीत नरमी से बोलता रहा, "और आप मेरे सामने बैठ जाइए, ताकि हम लोग बातें कर सकें...हम लोगों की बातचीत तो यक़ीनन होगी, मैडम, अब तो मैं इसके बिना मानूँगा नहीं..." वह उन्हें देखकर फिर मुस्कराया। "ज़रा सोचिए, आज मैं आख़िरी बार खुली हवा में और लोगों के बीच रहूँगा, और एक पखवाड़े के अन्दर मैं यक़ीनन दफ़न कर दिया जाऊँगा। इसलिए यह एक तरह से प्रकृति से और इंसानों से मेरी विदा होगी। हालाँकि मैं बहुत भावुक नहीं हूँ, लेकिन, सच कहता हूँ, मुझे बहुत खुशी है कि यह सब कुछ पाव्लोव्स्क में हुआ—मैं कम से कम पत्तों से लदे हुए पेड़ तो देख सकता हूँ।"

"तुम्हें अब बात नहीं करनी चाहिए," मिसेज़ येपांचिना ने अधिकाधिक चिन्तित होते हुए कहा। "तुम्हें तेज बुखार है। अभी कुछ ही मिनट पहले तुम चिचिया और चिल्ला रहे थे, और अब तुमसे साँस भी ठीक से नहीं ली जा रही है, हाँप रहे हो !"

"मैं अभी पल-भर में ठीक हो जाऊँगा। आप मेरी अन्तिम इच्छा क्यों नहीं पूरी करना चाहतीं ? सच कहता हूँ, मैं आपसे मिलने के सपने न जाने क़ब से देख रहा था, मिसेज़ येपांचिना। मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुन रखा है...कोल्या से। देखिए, वही अकेला शायद ऐसा है जिसने मेरा साथ नहीं छोड़ा है...आप अपने ढंग की निराली औरत हैं, कुछ मनमौजी ज़रूर हैं—मैंने अब अपनी आँखों से देख लिया है। जानती हैं, मुझे आपसे थोड़ा-थोड़ा लगाव भी हो गया था।"

"हे भगवान, और मैं इसकी पिटाई करने जा रही थी !"

"आपको मिस अग्लाया ने रोक लिया था—मैं ग़लत तो नहीं कह रहा हूँ न ? यह आपकी बेटी अग्लाया ही हैं न ? वह इतनी खूबसूरत हैं कि मैंने उन्हें फ़ौरन पहचान लिया था, हालाँकि मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा। ज़िन्दगी में आख़िरी बार कम से कम एक खूबसूरत औरत को देख तो लेने दीजिए," इप्पोलीत ने अटपटी-सी सूखी हुई मुस्कराहट के साथ कहा। "प्रिंस भी यहाँ हैं और आपके शौहर भी और सभी लोग हैं। आप मेरी अन्तिम इच्छा पूरी क्यों नहीं करना चाहतीं ?"

"कुर्सी !" मिसेज़ येपांचिना चिल्लाईं लेकिन खुद एक कुर्सी खींचकर इप्पोलीत के सामने बैठ गईं। "कोल्या," उन्होंने आदेश दिया, "तुम इसको साथ लेकर फ़ौरन चले जाओ; इसे घर पहुँचा देना, और कल मैं खुद ज़रूर..."

"अगर आप इजाज़त दें तो मैं प्रिंस से एक प्याली चाय पिला देने को कहूँ...मैं बेहद थक गया हूँ। देखिए, मिसेज़ येपांचिना, मैं समझता हूँ कि आप प्रिंस को चाय पिलाने के लिए अपने घर ले जाना चाहती थीं। मेहरबानी करके यहीं रुक जाइए; हम लोग साथ वक़्त गुजारें, और मुझे यक़ीन है कि प्रिंस हम सब लोगों को चाय पिलाएँगे। माफ़ कीजिएगा कि मैं इस तरह हुक्म दे रहा हूँ...लेकिन मैं आपको जानता हूँ, आप नेकदिल हैं, और प्रिंस भी नेकदिल हैं...हम सब लोग बेतुकेपन की हद तक नेकदिल लोग हैं।..."

प्रिंस अपनी जगह से हिला। लेबेदेव सीधा झपटता हुआ कमरे के बाहर निकल गया और वेरा उसके पीछे भागी।

"अच्छी बात है," मिसेज़ येपांचिना ने आख़िरकार फ़ैसला किया, "बातें करो, मगर शान्ति से और ताव में न आ जाना। तुम्हारे ऊपर तो मुझे तरस आने लगा है। प्रिंस, तुम इस लायक़ तो नहीं हो कि मैं तुम्हारे यहाँ चाय पिऊँ, लेकिन ख़ैर, यों ही सही। मैं यहीं रुकूँगी, हालाँकि मैं किसी से माफ़ी नहीं माँग रही हूँ ! किसी से नहीं ! सब बकवास है !...फिर भी मुझे अफ़सोस है, प्रिंस,

कि मैंने तुम्हें डाँटा। मैं माफ़ी चाहती हूँ, लेकिन वैसे जैसी तुम्हारी मर्जी। मगर मैं किसी को रोक नहीं रही हूँ।" वह अचानक अपने शौहर और अपनी बेटियों की तरफ़ मुड़ीं; वह बहुत नाराज़ लग रही थीं, जैसे उन लोगों ने उन्हें नाराज़ करनेवाली कोई हरकत की हो। "मैं अकेली घर आ जाऊँगी।..."

लेकिन उन लोगों ने उन्हें बात पूरी नहीं करने दी। सब लोग फ़ौरन उनके चारों ओर जमा हो गए। प्रिंस ने फ़ौरन सबसे रुकने और चाय पीकर जाने को कहा और इस बात के लिए माफ़ी माँगी कि यह बात उसे पहले नहीं सूझी। जनरल साहब तक ने नरमी का सबूत देते हुए शिष्टता और आश्वासन के कुछ शब्द कहे और अपनी बीवी से पूछा कि उन्हें बरामदे में थोड़ी-थोड़ी सर्दी तो नहीं लग रही थी। वह इप्पोलीत से पूछने ही जा रहे थे कि वह यूनिवर्सिटी में क़ब से था, लेकिन कुछ सोचकर रुक गए। रादोम्स्की और प्रिंस श. बहुत ही सहृदय और उल्लसित हो उठे, अदेलईदा और अलेक्सान्द्रा भी खुश दिखाई दे रही थीं हालाँकि उन्हें कुछ ताज्जुब भी हो रहा था—मतलब यह कि सभी खुश थे कि संकट टल गया था। बस अकेली अग्लाया त्योरियाँ चढ़ाए दूर चुपचाप बैठी थी। बाक़ी सब लोग भी रुक गए; कोई जाना नहीं चाहता था, जनरल ईवोल्गिन भी नहीं, जिनके कान में लेबेदेव ने लगे हाथ कुछ कहा जो शायद उनके लिए बहुत रुचिकर नहीं था, क्योंकि जनरल साहब फ़ौरन दूर एक कोने में दुबक गए। प्रिंस ने भी बुर्दोव्स्की और उसके दोस्तों के पास भी जाकर एक-एक से रुकने के लिए कहा। उन्होंने कुछ रूखेपन से कहा कि वे इप्पोलीत के लिए इन्तज़ार करेंगे, और फ़ौरन बरामदे के दूसरे सिरे पर चले गए, जहाँ वे एक बार फिर साथ-साथ बैठ गए। चाय शायद लेबेदेव ने खुद बहुत पहले तैयार कर ली थी क्योंकि वह फ़ौरन ले आई गई। ग्यारह का घंटा बजा।

10

वेरा ने जो चाय लाकर दी थी उससे इप्पोलीत ने अपने होंठ गीले किए, प्याला मेज़ पर रख दिया, और अचानक अटपटा-सा महसूस करते हुए कुछ घबराकर चारों ओर देखा।

"देखिए, मिसेज़ येपांचिना," उसने विचित्र-सी उतावली से कहना शुरू किया, "ये प्याले...ये चीनी मिट्टी के प्याले हैं और मैं समझता हूँ बहुत बढ़िया चीनी मिट्टी के हैं। लेबेदेव उन्हें हमेशा काँच की अलमारी में ताला लगाकर रखते हैं। ये कभी इस्तेमाल नहीं किए जाते...ये उन्हें दहेज में मिले थे...ये आमतौर पर ताले में बन्द करके रखे जाते हैं...लेकिन है यह कि उन्होंने ये आपके लिए निकाले हैं—बेशक आपके सम्मान में, इतने खुश हैं वह।..."

वह और भी कुछ कहने जा रहा था लेकिन उसे उचित शब्द नहीं मिले।

"वह अटपटा महसूस कर रहा है, मैं पहले ही समझता था !" रादोम्स्की ने अचानक प्रिंस के कान में फुसफुसाकर कहा। "यह खतरनाक बात है, क्या ख़्याल है आपका ? इस बात का पक्का इशारा है कि वह सिर्फ़ जलाने के लिए कोई ऐसी सनकीपन की हरकत करेगा कि, मुझे तो डर है, मिसेज़ येपांचिना भी बर्दाश्त नहीं कर पाएँगी।"

प्रिंस ने उसे सवालिया नज़रों से देखा।

"सनकीपन से डर नहीं लगता आपको ?" रादोम्स्की ने फिर कहा। "देखिए, बात यह है कि चाहता तो मैं भी हूँ कि ऐसा ही कुछ हो। मैं तो बस इतना चाहती हूँ कि मिसेज़ येपांचिना को किसी तरह सज़ा मिल जाए और सो भी आज ही रात को। मैं यह देखे बिना जाना नहीं चाहता।

आपको बुखार तो नहीं लग रहा है ?"

"बाद में देखा जाएगा, मुझे परेशान न कीजिए। जी हाँ, मेरी तबियत कुछ खराब है," प्रिंस ने अनमनेपन से बल्कि कुछ अधीरता से भी जवाब दिया। उसने अभी अपना नाम सुना था। इप्पोलीत उसकी चर्चा कर रहा था।

"आपको इस पर यक़ीन नहीं आता ?" इप्पोलीत पर हँसी का दौड़ा-सा पड़ गया। "होना भी यही चाहिए, लेकिन प्रिंस को फ़ौरन यक़ीन आ जाएगा, और उन्हें ज़रा भी ताज्जुब नहीं होगा।"

"प्रिंस, सुना तुमने," मिसेज़ येपांचिना ने उसकी ओर मुड़कर कहा। "सुन रहे हो ?"

सब लोग हँस रहे थे। लेबेदेव धक्का-मुक्की करके बार-बार आगे आकर मिसेज़ येपांचिना के आगे बेचैनी से मँडरा रहा था।

"यह कह रहा है कि इस मक्कार ने—तुम्हारे मकान-मालिक ने—उन साहब का लेख ठीक किया था—तुम्हारे बारे में वह लेख जो अभी पढ़ा गया था।"

प्रिंस ने लेबेदेव को आश्चर्य से देखा।

"तुम कुछ कहते क्यों नहीं ?" मिसेज़ येपांचिना पाँव पटककर चिल्लाईं।

"हाँ," प्रिंस ने अब भी लेबेदेव को एकटक देखते हुए बुदबुदाकर कहा, "मेरी समझ में आ रहा है कि इन्होंने ज़रूर ठीक किया होगा।"

"क्या यह सच है ?" मिसेज़ येपांचिना ने जल्दी से लेबेदेव की ओर मुड़कर पूछा।

"बिलकुल सच है, मैडम," लेबेदेव ने अपने दिल पर हाथ रखकर बिना झिझके दृढ़ता से कहा।

"और ऊपर से डींग मार रहा है !" मिसेज़ येपांचिना अपनी जगह से उछल-सी पड़ीं और चिल्लाईं।

"मैं नीच हूँ, नीच हूँ," लेबेदेव ने बुदबुदाकर कहा और अपना सीना पीटने लगा; उसका सिर लगातार ज़्यादा नीचे झुकता जा रहा था।

"मुझसे क्या मतलब कि तुम नीच हो ? समझता है कि यह कहकर बच निकलेगा कि मैं नीच हूँ। और, प्रिंस, मैं तुमसे फिर पूछती हूँ कि इस तरह के नीच आदमियों से किसी भी तरह का सम्बन्ध रखकर तुम्हें शर्म नहीं आती ? मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं करूँगी !"

"प्रिंस मुझे माफ़ कर देंगे !" लेबेदेव ने दृढ़ विश्वास और गहरी भावुकता के साथ कहा।

"मैडम, सिर्फ़ इज़्ज़तदार आदमी होने के नाते," केल्लेर ने अचानक झपटकर मिसेज़ येपांचिना के पास आकर और सीधे उन्हें सम्बोधित करते हुए ऊँची और गूँजती हुई आवाज़ में कहा, "सिर्फ़ इज़्ज़तदार आदमी होने के नाते, मैडम, और इसलिए कि मैं एक ऐसे दोस्त के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहता था जिसने एक शर्मनाक हरकत की थी, मैंने लेख के ठीक किए जाने की बात नहीं कही थी, इसके बावजूद कि उसने हमें ठोकर मारकर ढकेल देने की धमकी दी थी, जैसा कि, मैडम, आपने ख़ुद सुना है। मामला साफ़ कर देने के लिए, मैडम, मैं यह मानता हूँ कि मैंने उसे मुनासिब आदमी समझकर उससे मदद माँगी थी और उसे इसके लिए छह रूबल दिए थे, मेरी शैली सुधारने के लिए नहीं, बल्कि मुझे सारी बातें बताने के लिए, जिनमें से ज़्यादातर की मुझे कोई जानकारी नहीं थी। जूते, स्विट्ज़रलैण्ड के प्रोफ़ेसर के यहाँ की ख़ुराक, ढाई सौ के बजाय पचास रूबल—मतलब यह कि घटनाओं के उस पूरे सिलसिले के लिए जो बयान किया गया है यही ज़िम्मेदार है, और इसे इसके लिए छह रूबल मिले भी हैं। लेकिन इसने मेरी शैली ठीक नहीं की।"

"मैं इतना ज़रूर बता देना चाहता हूँ," लेबेदेव ने हँसी के लगातार तेज होते हुए शोर के बीच बड़ी अधीरता से और कुछ-कुछ गिड़गिड़ाती हुई आवाज़ में कहा, "कि मैंने लेख का सिर्फ़ पहला

आधा भाग ठीक किया था, लेकिन चूँकि बीच में हमारी राय में मेल नहीं बैठा और हम लोग एक बात पर झगड़ पड़े, इसलिए मैंने बाक़ी आधा हिस्सा ठीक नहीं किया, इसलिए उसमें व्याकरण की जो भी गलतियाँ हैं (और उसमें व्याकरण की गलतियों की भरमार है !), उनकी जिम्मेदारी मुझ पर नहीं है।"

"इन्हें बस इसी की परवाह है !" मिसेज़ येपांचिना चिल्लाकर बोलीं।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ," रादोम्स्की केल्लेर की ओर मुड़ा, "लेख ठीक क़ब किया गया था ?"

"कल सबेरे," केल्लेर ने जवाब दिया। "हम लोग आपस में यह तै करके मिले थे कि हम दोनों में से कोई भी भेद नहीं खोलेगा।"

"यह उसी वक़्त की बात है जब यह तुम्हारे सामने गिड़गिड़ा रहा था और तुम्हें अपनी वफ़ादारी का यक़ीन दिला रहा था ! मानना पड़ेगा, खूब लोग हैं ! मुझे तुम्हारा पुश्किन नहीं चाहिए, और ध्यान रखना कि तुम्हारी बेटी मुझसे मिलने कभी न आए !"

मिसेज़ येपांचिना उठने ही जा रही थीं, लेकिन अचानक चिड़चिड़ाकर इप्पोलीत की ओर मुड़ीं, जो हँस रहा था।

"तुमने मुझे कोई तमाशा समझ रखा है कि हर वक़्त मुझ पर हँसते रहते हो, क्यों ?"

"भगवान न करे," इप्पोलीत के होंठों पर रूखी-सी मुस्कराहट आ गई, "लेकिन, मैडम, आपके असाधारण सनकीपन की तरफ़ मेरा ध्यान खिंच ही जाता है; मैं मानता हूँ कि लेबेदेव की चर्चा मैंने जान-बूझकर छेड़ी थी। मैं जानता था कि आप पर उसका क्या असर होगा, और सिर्फ़ आप पर, क्योंकि प्रिंस अगर उन्हें माफ़ नहीं कर चुके हैं तो वह तो उन्हें माफ़ कर ही देंगे...बहुत मुमकिन है कि उन्होंने उनकी तरफ़ से कोई बहाना भी सोच लिया हो। है न यही बात, प्रिंस ?"

वह हाँप रहा था और हर शब्द के साथ जो वह बोलता था, उसकी विचित्र उत्तेजना बढ़ती जा रही थी।

"अच्छा ?" मिसेज़ येपांचिना उसके बात कहने के ढंग पर आश्चर्यचकित होकर चिल्लाईं। "अच्छा ?"

"मैंने भी आपके बारे में इसी तरह की बहुत-सी बातें सुनी हैं—और, सच कहता हूँ, उन्हें सुनकर मुझे बहुत मज़ा आया है, और...उसके बाद से मैं आपकी बड़ी इज़्ज़त करने लगा हूँ," इप्पोलीत कहता रहा।

ऐसा लगता था कि वह कहता एक बात था लेकिन उन्हीं शब्दों से उसका अभिप्राय बिलकुल ही दूसरा होता था। वह अपनी आवाज़ में व्यंग के पुट के साथ बोलता था, लेकिन साथ ही वह बहुत उत्तेजित भी रहता था, चारों ओर सन्देह की दृष्टि से देखता था, उसके विचार उलझ जाते थे, और अपनी बात के क्रम की डोर उसके हाथ से छूट जाती थी। नतीजा यह हुआ कि तपेदिक़ के मरीज जैसी अपनी सूरत-शक्ल और विचित्र ढंग से बिजली की तरह चमकती हुई और देखने में उन्माद भरी-सी आँखों की वजह से वह अनायास ही सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता रहा।

"मुझे इस बात पर आश्चर्य होना चाहिए था, हालाँकि (मैं मानता हूँ) कि मुझे दुनिया के बारे में कुछ भी मालूम नहीं है, कि न सिर्फ़ आप मेरे दोस्तों के साथ—जो आपके लिए उचित संगत नहीं हैं—यहाँ रुकी रहीं बल्कि आपने इन...इन लड़कियों को भी यहाँ रुककर ऐसे शर्मनाक काण्ड की चर्चा सुनने की इजाज़त दी, हालाँकि वे उपन्यासों में ये सारी बातें पढ़ चुकी होंगी। पर मुझे मालूम नहीं...क्योंकि मेरा दिमाग़ कुछ उलझा हुआ है, बहरहाल, कि आपके अलावा कौन ऐसा होगा, मैडम, जो एक लड़के के कहने पर (जी हाँ, मैं फिर मानता हूँ, एक लड़के के कहने पर) सारी शाम

उसके साथ बिताने पर...और हर चीज़ में दिलचस्पी लेने पर राज़ी होता और...और इस तरह...अगले दिन अपने किए पर शर्मिन्दा होता (हालाँकि मैं जानता हूँ कि मैं अपनी बात ठीक से कह नहीं पा रहा हूँ), यह बात, मैडम, मैं बहुत तारीफ़ के क़ाबिल समझता हूँ और इसके लिए मेरे दिल में बहुत गहरी इज़्ज़त है, हालाँकि मुझे आपके शौहर, जनरल साहब के चेहरे से साफ़ पता चल रहा है कि यह सब कुछ उन्हें कितना नापसन्द है।...ही-ही !" वह दबी हुई हँसी हँसा; उसका दिमाग़ बिलकुल उलझ गया था, और अचानक वह इतने ज़ोर से खाँसने लगा कि कोई दो मिनट तक वह अपनी बात जारी न रख सका।

"दम घोट लिया अपना !" मिसेज़ येपांचिना ने उसे उत्सुकता से घूरते हुए भावशून्यता और कठोरता से कहा। "अच्छा, बस, बहुत हो गया !"

"मैं भी अपनी ओर से इतना कहना चाहूँगा, जनाब," जनरल येपांचिन ने, जिनका धीरज बिलकुल टूट चुका था, चिड़चिड़ाकर कहा, "कि मेरी बीवी प्रिंस की मेहमान हैं, जो हम लोगों के पड़ोसी भी हैं और दोस्त भी, और बहरहाल, बरखुर्दार, तुम्हें इस बात का कोई हक़ नहीं है कि मिसेज़ येपांचिना क्या करती हैं उसके बारे में राय दो, या मेरे सामने ज़ोर से इस बात की चर्चा भी करो कि मेरे चेहरे पर क्या लिखा है। जी नहीं, जनाव। और," वह कहते गए और प्रत्येक शब्द पर अधिक उत्तेजित होते गए, "अगर मेरी बीवी यहाँ रुकी हैं तो किसी और कारण से नहीं बल्कि हैरत की वजह से, और ऐसे अजीब नौजवानों में आजकल की दिलचस्पी की वजह से। मैं खुद बिलकुल उसी तरह रुक गया जैसे मैं सड़क पर रुक जाता हूँ किसी ऐसी चीज़ को देखकर...किसी ऐसी चीज़ को...ऐसी चीज़..."

"जो अजूबा हो," रादोम्स्की ने उनका वाक्य पूरा करते हुए कहा।

"बिलकुल ठीक," जनरल साहब, जो उपमाओं के मामले में कुछ उलझ-से गए थे, खुश होकर उछल पड़े। "जी हाँ, बिलकुल अजूबे की तरह। लेकिन मुझे सबसे ज़्यादा ताज्जुब और तकलीफ़ की बात तो यह लगती है, अगर ऐसा कहना व्याकरण के हिसाब से ठीक हो कि, बरखुर्दार, तुम इस बात को बिलकुल नहीं समझ पाए कि इस वक़्त मिसेज़ येपांचिना सिर्फ़ इसलिए रुक गई हैं कि तुम बीमार हो—मतलब यह कि यह सोचकर कि तुम सचमुच मर रहे हो—और उन्होंने, एक तरह से, तरस खाकर ऐसा किया, तुम्हारे दर्दनाक भाषणों की वजह से, और यह कि इससे उनके नाम, उनके चरित्र और समाज में उनकी हैसियत पर कोई धब्बा नहीं लगता।...माई डियर," जनरल साहब ने, जिनका चेहरा तमतमाकर लाल हो गया था, अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, "अगर तुम चल रही हो तो हम लोग अपने प्रिंस से विदा ले लें और..."

"इस उपदेश के लिए शुक्रिया, जनरल साहब," इप्पोलीत ने विचारमग्न होकर उन्हें घूरते हुए अचानक गम्भीर मुद्रा बनाकर उनकी बात बीच में काट दी।

"चलो, माँ," अग्लाया ने अपनी कुर्सी से उठते हुए अधीर होकर गुस्से से कहा। "यह सिलसिला आख़िर क़ब तक चलता रहेगा ?"

"बस, दो मिनट और, बुरा न मानना," मिसेज़ येपांचिना बड़ी गरिमा से अपने पति की ओर मुड़कर बोलीं। "मैं समझती हूँ कि उसे बुखार है और सरसाम हो गया है। इसकी आँखों से मुझे इस बात का पक्का यक़ीन हो गया है। इसे इस तरह नहीं छोड़ा जा सकता। प्रिंस, क्या तुम इसे अपने यहाँ रख सकते हो ताकि इसे आज रात घिसटते हुए पीटर्सबर्ग न जाना पड़े ? Cher prince,[1]" किसी वजह से प्रिंस श. की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "आप उकता तो नहीं गए ?

1. प्यारे प्रिंस। (फ़्रांसीसी)

इधर आओ, बेटी अलेक्सान्द्रा, अपने बाल तो ठीक कर लो।"

उन्होंने उसके बाल सँवारे, जो यों ही काफ़ी सँवरे हुए थे, और उसे प्यार कर लिया। उन्होंने इसीलिए उसे बुलाया था।

"मैं समझता था कि आप अपने विचारों का दायरा शायद बढ़ा सकें," इप्पोलीत ने अपनी विचारमग्नता भंग करके कहा। "हाँ, मैं यह कहना चाहता था," उसने बहुत खुश होकर कहा, मानो उसे अचानक कुछ याद आ गया हो। "यह बुर्दोव्स्की सचमुच अपनी माँ की रक्षा करना चाहता था न ? लेकिन हुआ यह कि उसने उनके नाम पर धब्बा लगा दिया। यह प्रिंस भी बुर्दोव्स्की की मदद करना चाहते थे और पूरी ईमानदारी से इन्होंने उसे अपनी प्यार-भरी दोस्ती और अपना पैसा देने का वादा किया, और हम सब लोगों में शायद वही अकेले ऐसे हैं जिन्हें उससे नफ़रत नहीं है, और, वह देखिए, दोनों एक-दूसरे के सामने कट्टर दुश्मनों की तरह खड़े हैं।...हा-हा-हा ! आप सब लोगों को बुर्दोव्स्की से इसलिए नफ़रत है कि आपकी राय में अपनी माँ के साथ उसका बर्ताव न सिर्फ़ यह कि सुन्दर नहीं बल्कि शराफ़त के खिलाफ़ भी है। है न यही बात ? है न ? आप सब लोगों को सुन्दरता और शराफ़त के बाहरी रूप बेहद पसन्द हैं, और आप लोग बस इसी की परवाह करते हैं, है न ? (मेरे मन में बहुत दिन से यह शुबहा रहा है कि आप लोगों को बस इसी की परवाह रहती है !) ख़ैर, मैं आपको इतना बता देना चाहता हूँ कि आप लोगों में से कोई भी अपनी माँ को उतना नहीं चाहता है जितना कि बुर्दोव्स्की ने चाहा है ! मैं जानता हूँ, प्रिंस, कि आपने गान्या के हाथ चुपके से बुर्दोव्स्की की माँ को पैसा भिजवाया है, और मैं शर्त बदकर कह सकता हूँ" (ही-ही-ही !—वह दीवानों की तरह हँसा) "कि बुर्दोव्स्की आपको ही दोषी ठहराएगा कि आपने उसकी माँ की इज़्ज़त नहीं की और ऐसी हरकत की जिसका ग़लत मतलब लगाया जा सकता है। मुझे इसका पूरा यक़ीन है, हा हा हा !"

उसका दम फिर घुटने लगा और उसे फिर खाँसी का दौरा पड़ गया।

"बस, इतना ही कहना था ?" लिज़ावेता येपांचिना ने अपनी चिन्ता-भरी नज़रें उसकी ओर से हटाए बिना अधीर होकर उसकी बात काट दी। "तुम्हें जो कहना था सब कह चुके न। अच्छा, अब जाकर सो जाओ; तुम्हें बुखार है। उफ़, अब भी बोले चला जा रहा है !"

"आप हँस रहे हैं ?" इप्पोलीत ने अपमानित होकर और चिड़चिड़ाकर अचानक रादोम्स्की को सम्बोधित करते हुए कहा। "आप मुझ पर हँस क्यों रहे हैं ? मैं देख रहा हूँ कि आप लगातार मुझ पर हँस रहे हैं !"

रादोम्स्की सचमुच हँस रहा था।

"मैं आपसे बस इतना पूछना चाहता हूँ, मिस्टर...मिस्टर...इप्पोलीत...माफ़ कीजिएगा मैं आपका कुलनाम भूल गया।"

"मिस्टर तेरेंत्येव," प्रिंस ने कहा।

"हाँ, हाँ, मिस्टर तेरेंत्येव। शुक्रिया, प्रिंस; यह नाम पहले लिया गया था लेकिन मेरे दिमाग़ से उतर गया था...मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, मिस्टर तेरेंत्येव, कि जो कुछ मैंने सुना है क्या वह सच है—मेरा मतलब है, कि आपकी राय है कि अगर आप अपनी खिड़की में से पन्द्रह मिनट भी आम लोगों से बातें कर लें तो वे आपकी बात मान लेंगे और आँखें मूँदकर आपके पीछे चल पड़ेंगे ?"

"हो सकता है कि मैंने यह कहा हो," इप्पोलीत ने इस तरह जवाब दिया जैसे कुछ याद करने की कोशिश कर रहा हो। "जी हाँ, मैंने बिलकुल यह बात कही थी !" उसने अचानक कहा; उसके

चेहरे पर फिर चमक आ गई और वह रादोम्स्की को घूरकर देखता रहा। "तो क्या हुआ ?"

"कुछ भी नहीं। मैंने तो पूरी बात ठीक से समझने के लिए बस यों ही दिलचस्पी की वजह से पूछ लिया।"

रादोम्स्की चुप हो गया, लेकिन इप्पोलीत बड़ी अधीरता से कुछ और सुनने की आशा से उसे देखता रहा।

"आप अपनी बात पूरी कर चुके ?" मिसेज़ येपांचिना ने रादोम्स्की से पूछा। "जल्दी से पूरी कीजिए, क्योंकि सोने का वक़्त हो गया है। या आपकी समझ में नहीं आ रहा है कि बात ख़त्म की जाए ?" (वह बेहद चिढ़ी हुई लग रही थीं।)

"मैं इतना और कह देना चाहता हूँ," रादोम्स्की मुस्कराकर कहता रहा, "कि मैंने आपके दोस्तों से जो कुछ सुना है, मिस्टर तेरेंत्येव, और जो कुछ आपने खुद अभी इतने शानदार तरीक़े से कहा है, उसका कुल निचोड़, मेरी राय में, यह सिद्धान्त है कि हर चीज़ पर और हर चीज़ के बावजूद अधिकार की जीत होती है, और सच तो यह है कि किसी और चीज़ की जीत होती ही नहीं, इस बात की छानबीन किए बिना ही कि उस अधिकार का स्वरूप क्या है। मैं ग़लत तो नहीं कह रहा हूँ न ?"

"बिलकुल ग़लत कह रहे हैं। मेरी तो समझ में ही नहीं आ रहा है कि आप कह क्या रहे हैं...आगे कहिए।"

बरामदे के कोने से भी विरोध की हल्की-हल्की आवाज़ सुनाई दी। लेबेदेव के भानजे ने दबी जबान से बुदबुदाकर कुछ कहा।

"मुझे इससे ज़्यादा कुछ और कहना ही नहीं है," रादोम्स्की कहता रहा। "मैं सिर्फ़ इतना बताना चाहता था कि इस तरह का सिद्धान्त हमें सीधे इस धारणा की ओर ले जाता है कि जिसकी लाठी उसकी भैंस—मतलब यह कि अधिकार यह है कि किसी के घूंसे में कितनी ताक़त है और उसकी महत्त्वाकांक्षा कितनी प्रबल है—जैसा कि दुनिया के मामलात में अकसर होता आया है। क्या प्रूधों का यह कहना नहीं था कि ताक़त ही अधिकार है ? अमरीकी गृहयुद्ध में बहुत-से उन्नत उदारपंथियों ने इस बुनियाद पर बड़े-बड़े जमींदारों के पक्ष में होने की घोषणा कर दी थी कि हब्शी बहरहाल हब्शी ही थे और वे गोरी नस्ल के लोगों से घटिया थे, और इसलिए ताक़त का अधिकार गोरों की बपौती है।..."

"अच्छा ?"

"तो आप ताक़त के ही अधिकार होने से इन्कार नहीं करते ?"

"आगे कहिए !"

"बहरहाल, आप अपनी बात पर कायम तो हैं। मैं सिर्फ़ यह बताना चाहता था कि ताक़त के अधिकार से शेरों और घड़ियालों के अधिकार तक, बल्कि दानीलोव और गोर्स्की जैसे लोगों के भी अधिकारों तक बस एक क़दम की दूरी है।"

"मालूम नहीं। आप कहते रहिए।"

इप्पोलीत रादोम्स्की की बात लगभग सुन ही नहीं रहा था, और अगर वह "अच्छा" और "कहते रहिए" बीच-बीच में कह देता था तो इसकी ज़्यादा वजह वह आदत थी जो उसने बहुत पहले वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में अपना ली थी, न कि ध्यान से सुनने और उत्सुकता की वजह से।

"और कुछ नहीं...बस इतना ही कहना था मुझे।"

"लेकिन मैं आपसे नाराज़ नहीं हूँ," इप्पोलीत ने अचानक यह सिलसिला ख़त्म करते हुए कहा

और इस बात की पूरी चेतना के बिना ही कि वह क्या कर रहा है, उसने मुस्कराकर अपना हाथ भी आगे बढ़ा दिया।

रादोम्स्की को पहले तो ताज्जुब हुआ, लेकिन उसने आगे बढ़ा हुआ हाथ गम्भीर मुद्रा बनाकर ऐसे छू लिया जैसे वह क्षमादान स्वीकार कर रहा हो।

"मैं इतना कहे बिना नहीं रह सकता," उसने उसी अस्पष्ट-से सम्मानपूर्ण स्वर में कहा, "आपने जितनी शिष्टता से मुझे बोलने दिया उसके लिए मैं आपका एहसान मानता हूँ, क्योंकि कई मौक़ों पर मैंने जो कुछ देखा है उसकी बुनियाद पर मैं कह सकता हूँ कि हमारे उदारपन्थी अपने विरोधी पर फ़ौरन गालियों या उससे भी बदतर किसी चीज़ को बौछार किए बिना उसे कभी अपनी राय देखने की इजाज़त देते ही नहीं।..."

"आपका यह कहना बिलकुल ठीक है," जनरल येपांचिन ने अपना मत प्रकट किया और अपने हाथ पीठ के पीछे करके वह घोर उकताहट के भाव से बरामदे की सीढ़ियों की ओर पीछे हट गए, जहाँ उन्होंने झुँझलाकर जम्हाई ली।

"बस, आपकी बातें बहुत हो चुकीं, जनाब," मिसेज़ येपांचिना ने अचानक रादोम्स्की को सम्बोधित करते हुए कहा। "मैं तो आप सब लोगों से बिलकुल तंग आ चुकी हूँ।..."

"अब चलना चाहिए!" इप्पोलीत ने कहा और यकायक उठ खड़ा हुआ; वह चिन्तित और सहमा हुआ-सा लग रहा था और परेशान नज़रों से चारों ओर घूर रहा था। "माफ़ कीजिएगा, मैंने आपको रोके रखा। मैं आपको सब कुछ बता देना चाहता था...मैंने सोचा था कि बस...आख़िरी बार...लेकिन यह मेरा भ्रम था।..."

स्पष्ट था कि थोड़ी-थोड़ी देर बाद अचानक उसमें जान-सी पड़ जाती थी, कि वह असली सरसाम जैसी हालत से कुछ क्षण के लिए अचानक बाहर निकल आता था, और फिर जब पूरी चेतना वापस आ जाती थी तो अचानक उसे याद आता था और वह बातें करने लगता था, ज़्यादातर उखड़े-उखड़े टुकड़ों में, जो उसने शायद बिस्तर पर लेटे-लेटे अपनी बीमारी के लम्बे उबा देनेवाले घंटों के दौरान, उन रातों के दौरान जब नींद उसकी आँखों से उड़ जाती थी, बहुत पहले सोच रखे थे।

"अच्छा, अलविदा!" उसने अचानक झटके के साथ कहा। "आप समझते हैं कि मेरे लिए आपसे विदा लेना आसान है? हा-हा!" वह अपने ही बेतुके सवाल पर चिढ़कर हँसा और अचानक, मानो जो कुछ वह कहना चाहता था वह कह पाने में असफल रहने पर अपने आप पर नाराज़ होकर, उसने जनरल येपांचिन को सम्बोधित करते हुए ऊँचे और झल्लाए हुए स्वर में कहा—"जनाब, मैं अपने लिए इसे बड़ी इज़्ज़त की बात समझता हूँ कि आपको अपने जनाज़े में आने का न्योता दूँ, बशर्ते कि आप मुझे इस इज़्ज़त के क़ाबिल समझते हों और...और...जनरल साहब के बाद आप सब लोगों को भी!..."

वह फिर हँसा; लेकिन अब उसकी हँसी पागलों की हँसी बन चुकी थी। मिसेज़ येपांचिना सहमकर उसकी ओर बढ़ीं और उसकी बाँह पकड़ ली। वह उसकी तरह हँसते हुए उन्हें ग़ौर से घूरता रहा; उसकी हँसी की आवाज़ अब बिलकुल सुनाई नहीं दे रही थी लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह अचानक ठिठककर उसके चेहरे पर जम गई थी।

"आप जानती हैं, मैं यहाँ पेड़ों को देखने आया था? वहाँ, उन पेड़ों को," उसने पार्क में लगे हुए पेड़ों की तरफ़ इशारा करके कहा। "यह कोई बेतुकी बात तो नहीं है न? इसमें कोई भी बेतुकापन नहीं है, या है?" उसने मिसेज़ येपांचिना से गम्भीरता से पूछा, और सहसा फिर विचारों

में खो गया। फिर, क्षण-भर बाद, उसने अपना सिर ऊपर उठाया और बरामदे में मौजूद लोगों के बीच किसी को बड़ी उत्सुकता से खोजने लगा। वह रादोम्स्की को खोज रहा था, जो वहाँ से थोड़ी ही दूर अपनी पहलेवाली जगह पर खड़ा हुआ था, लेकिन इप्पोलीत उस जगह को भूल गया था और इधर-उधर देखता रहा। "आप अभी गए नहीं !" आख़िरकार उसे खोज लेने पर वह बोला। "आप अभी मुझ पर हँस रहे थे कि मैं खिड़की में से पन्द्रह मिनट तक बातें करना चाहता हूँ।...लेकिन क्या आप जानते हैं कि मैं अभी अट्ठारह साल का भी नहीं हूँ—मैं उस तकिए पर सिर रखकर इतने अरसे से लेटा रहा हूँ और उस खिड़की के बाहर मैंने इतनी देर-देर तक देखा है और इतना सोचा है...सभी के बारे में...कि...मरे हुए आदमी की कोई उम्र नहीं होती, यह आप जानते ही हैं। यह बात मैंने पिछले हफ़्ते उस वक़्त सोची थी जब रात को मेरी आँख खुल गई थी. ..क्या आप जानते हैं कि आप लोगों को सबसे ज़्यादा डर किस चीज़ से लगता है ? आप लोगों को सबसे ज़्यादा डर हमारी ईमानदारी से लगता है ? हालाँकि आप हमें नफ़रत से देखते हैं। यह बात भी मैंने उसी समय तकिए पर सिर टिकाए लेटे-लेटे सोची थी..."क्या आप सोचती हैं," वह मिसेज़ येपांचिना की तरफ़ मुड़ा, "कि अभी कुछ मिनट पहले मैं आप पर हँसना चाहता था ? जी नहीं, मैं आप पर हँस नहीं रहा था, मैं आपसे सिर्फ़ कोई अच्छी बात कहना चाहता था...कोल्या ने मुझे बताया था कि प्रिंस आपको बच्चा कहते हैं...यह अच्छी बात है।...जी हाँ...मैं क्या कहने जा रहा था ? मैं कुछ और कहना चाहता था।..."

उसने अपना चेहरा दोनों हाथों से ढाँप लिया और विचारमग्न हो गया।

"अरे हाँ ! अभी जब आप विदा ले रही थीं तब मैंने अचानक सोचा था : अभी यहाँ ये लोग हैं, और यही लोग फिर कभी नहीं रहेंगे—कभी नहीं ! और पेड़ भी...बस यह पक्की दीवार रह जाएगी...मेयेर के घर की पक्की दीवार...मेरी खिड़की के सामने...अच्छा, इन लोगों को उसके बारे में सब कुछ बता दो...बताने की कोशिश तो करो। यह एक खूबसूरत लड़की है...लेकिन आप तो मर चुके हैं...अपना परिचय मुर्दे की तरह कराइए और कहिए, 'मुर्दा कुछ भी कह सकता है'...और यह कि मिसेज़ ग्रंडी नाराज़ नहीं होंगी, हा-हा ! आप लोग हँस नहीं रहे हैं ?" उसने उन सब लोगों को अविश्वास से देखा। "तकिए पर सिर टिकाए लेटे-लेटे मेरे मन में तरह-तरह के विचार आते थे...मैं इस नतीजे पर पहुँच चुका हूँ कि प्रकृति बहुत ही व्यंगपूर्ण है।...आपने कुछ ही क्षण पहले कहा था कि मैं नास्तिक हूँ, लेकिन क्या आप लोग जानते हैं कि यह प्रकृति...आप लोग फिर हँस क्यों रहे हैं ? आप हद से ज़्यादा बेरहम हैं !" उसने उन सबको घूरते हुए अचानक उदासी-भरे क्रोध से कहा। "कोल्या को मैंने नहीं बिगाड़ा है," उसने बिलकुल ही अलग, विश्वास और आस्था-भरे स्वर में कहा, मानो उसे फिर कुछ याद आ गया हो।

"कोई तुम्हारे ऊपर नहीं हँस रहा है यहाँ, शान्त हो जाओ !" मिसेज़ येपांचिना ने व्यथित होकर कहा। "कल दूसरे डॉक्टर को दिखाना। पहलेवाले ने ग़लत बताया था। बैठ जाओ। तुमसे ठीक से खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा है ! सरसामी हालत हो रही है तुम्हारी...अरे, क्या किया जाए इसका ?" उसके इर्द-गिर्द मण्डलाकर उन्होंने आख़िरकार उसे आराम-कुर्सी पर बिठा दिया। उनके गाल पर एक आँसू चमकने लगा।

इप्पोलीत सन्न रह गया, मानो गूँगा हो गया हो; उसने अपना हाथ उठाकर डरते-डरते उसे आगे बढ़ाया और आँसू को छू लिया। वह बच्चों की तरह हँस दिया।

"मैं...," वह गद्गद होकर बोल पड़ा, "मैं...आपको...मालूम नहीं है कि मैं...वह, कोल्या है न...वह हमेशा आपके बारे में इतने जोश से बातें करता था...मुझे उसका जोश बहुत अच्छा लगता

है। मैंने उसे कभी नहीं बिगाड़ा है ! अकेला वही है जिसे मैं छोड़े जा रहा हूँ...मेरा जी तो चाहता था कि सबको छोड़ जाऊँ...सबको...लेकिन कोई था ही नहीं...कोई नहीं...मैं लोगों का नेता बनना चाहता था...मुझे इसका अधिकार था।...ओह, मैं चाहता तो बहुत कुछ था ! अब मैं कुछ भी नहीं चाहता। मैं कुछ चाहना भी नहीं चाहता। मैंने क़सम खाई है कि मैं कुछ भी नहीं चाहूँगा...लोगों को खोजने दो, उन्हें मेरे बिना ही सच्चाई को खोजने दो ! हाँ, प्रकृति एक नीरस व्यंग है ! वह ऐसा क्यों करती है," वह सहसा उत्तेजित होकर चिल्लाया, "आख़िर वह ऐसा क्यों करती है कि सबसे अच्छे प्राणी बनाकर उन पर बाद में व्यंग करे ? इस बात के लिए वही जिम्मेदार है कि इस धरती पर वह अकेला प्राणी जिसे सम्पूर्णता का चरम रूप समझा जाता है...उसी पर इस बात की जिम्मेदारी है कि उस प्राणी को मनुष्यों को शिक्षा देने के बाद उसने उससे ऐसी-ऐसी बातें कहलाईं जिनकी वजह से इतना ख़ून बहाया गया है कि अगर वह सारे का सारा एक साथ बहाया गया होता तो लोग उसमें यक़ीनन डूब जाते ! ओह, कितनी अच्छी बात है कि मैं मरनेवाला हूँ ! मैं भी शायद कोई ऐसा ही भयानक झूठ बोलता...प्रकृति ने इसका पक्का बन्दोबस्त कर दिया होता !...मैंने किसी को बिगाड़ा नहीं है...मैं सभी इंसानों के सुख के लिए, सत्य को खोजकर उसका प्रचार करने के लिए जिन्दा रहना चाहता था...मैं खिड़की के बाहर मेयेर की दीवार को देखता रहता था और सोचता रहता था कि बस पन्द्रह मिनट बोलकर सबको अपनी बात पर विश्वास दिला दूँगा, सबको, और अब ज़िन्दगी में पहली बार, अगर लोग नहीं, तो आप मिल गए और उसका क्या नतीजा निकला ? कुछ भी नहीं ! इसका बस इतना ही नतीजा निकला है कि आपको मुझसे नफ़रत हो गई है ! जिसका मतलब है कि मैं बेवक़ूफ़ हूँ, कि मेरी ज़रूरत नहीं है, कि अब मुझे चल देना चाहिए ! और मुझमें इतनी भी होशियारी नहीं थी कि अपने पीछे अपनी कोई याद छोड़ जाता ! न कोई आवाज़, न कोई निशान, न कोई कारनामा ! मैंने एक भी सच्चाई का प्रचार नहीं किया है ! एक बेवक़ूफ़ पर मत बिगड़िए ! उसे भूल जाइए ! सब कुछ भूल जाइए...मेहरबानी करके भूल जाइए, इतनी बेरहमी न कीजिए ! क्या आपकी समझ में यह बात आती है कि अगर मुझे यह तपेदिक़ न होती, तो मैंने आत्महत्या कर ली होती।..."

लग रहा था कि वह और भी बहुत कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसने कहा नहीं, और कुर्सी की पीठ से टेक लगाकर उसने अपना चेहरा दोनों हाथों से ढाँप लिया और छोटे बच्चे की तरह फूट-फूटकर रोने लगा।

"अरे, अब इसका क्या किया जाए ?" मिसेज़ येपांचिना चिल्लाईं और भागकर उसके पास गईं, उसका सिर अपने हाथों में थाम लिया, और कसकर अपने सीने से लगा लिया। वह सुबक-सुबककर रो रहा था। "चुप हो जाओ, चुप हो जाओ, रो नहीं, मत रो ! बस, बहुत हो गया ! बड़ा अच्छा लड़का है ! भगवान तुम्हारी नादानी के लिए तुम्हें माफ़ कर देगा। बस, बस, अब रहने भी दो, मर्दों की तरह रहो...बाद में तुम्हें बड़ी शर्म आएगी।..."

"वहाँ," इप्पोलीत ने अपना सिर उठाने की कोशिश करते हुए कहा, "मेरा एक भाई और बहनें हैं, बेचारे, मासूम बच्चे। वह उन्हें बिगाड़ देगी ! आप सन्त स्वभाव की हैं, आप...ख़ुद बच्चा हैं—उन्हें बचा लीजिए ! उन्हें उस औरत से छीन लीजिए...वह...बड़ी शर्मनाक बात है।...उफ़, उनकी मदद कीजिए, उनकी मदद कीजिए ! बदले में भगवान आपको इसका सौ-गुना देगा, भगवान के नाम पर, प्रभु ईसा मसीह के लिए !..."

"अरे, कुछ बताइएगा भी कि अब क्या किया जाए ?" मिसेज़ येपांचिना अपने पति को सम्बोधित करते हुए चिढ़चिढ़ाकर बोलीं। "रहम खाकर अपनी यह शानदार खामोशी तोड़िए ! अगर

आप कोई फ़ैसला नहीं करेंगे तो मैं खुद सारी रात यहीं रहूँगी। मैं आपकी नादिरशाही बहुत झेल चुकी !"

मिसेज़ येपांचिना ने अपना सवाल बहुत भाव-विह्वल होकर और गुस्से से पूछा था, और उन्हें फ़ौरन जवाब मिलने की उम्मीद थी। लेकिन ऐसे मामलों में लोग, अगर वे बहुत-से हों तब भी, आमतौर पर जवाब ख़ामोशी और निष्क्रिय दिलचस्पी की शक्ल में ही देना पसन्द करते हैं, वे कोई जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते, और फिर अपने विचार बहुत बाद में व्यक्त करते हैं। वहाँ पर मौजूद लोगों में कुछ ऐसे भी थे जो एक शब्द भी बोले बिना सबेरे तक वहाँ बैठे रहने को तैयार थे; उदाहरण के लिए वार्या, जो सारी शाम कुछ दूर चुपचाप बैठी असाधारण दिलचस्पी से, जिसके लिए शायद उसके अपने कुछ कारण होंगे, सब कुछ सुनती रही थी।

"मेरी राय में, माई डियर," जनरल येपांचिन ने एलान किया, "यहाँ हम जैसे जल्दी ही उत्तेजित हो जानेवाले लोगों के मुकाबले एक सीखी हुई नर्स ज़्यादा काम की रहेगी, और शायद रात के लिए एक भरोसे का संजीदा आदमी। बहरहाल, बेहतर होगा कि हम लोग प्रिंस से पूछ लें और...मरीज को पूरी तरह आराम करने दें। कल हम इस सवाल पर फिर सलाह-मशविरा कर सकते हैं कि इसके लिए क्या किया जा सकता है।"

"इस वक़्त बारह बजे हैं," दोक्तोरेंको ने प्रिंस को सम्बोधित करते हुए [illegible] और दूसरों के साथ कहा। "हम लोग जा रहे हैं। यह हम लोगों के साथ चलेगा या नहीं आपके पास रहेगा ?"

"अगर आप चाहें," प्रिंस ने जवाब दिया, "तो आप भी इनके साथ यहीं रह सकते हैं। जगह काफ़ी है।"

"साहब," केल्लेर जनरल साहब की ओर लपककर बड़े जोश से चिल्लाया, "अगर आपको रात के लिए कोई भरोसे का आदमी चाहिए तो मैं एक दोस्त के लिए यह कुर्बानी करने को तैयार हूँ...बहुत ही लाजवाब बन्दा है यह ! मैं इसे बहुत अरसे से महान आदमी समझता रहा हूँ ! मैं मानता हूँ, साहब, कि मैंने अपनी पढ़ाई की ओर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, लेकिन अगर यह किसी को बुरा-भला भी कहता है तो ऐसा लगता है कि मोती बिखेर रहा है, साहब, मोती !"

जनरल साहब ने तंग आकर मुँह फेर लिया।

"मुझे बड़ी खुशी होगी अगर वह यहाँ रहे," प्रिंस ने मिसेज़ येपांचिना के चिड़चिड़ाहट-भरे सवालों के जवाब में कहा। "ज़ाहिर है, वह जाने की हालत में तो नहीं है।"

"तुम सो तो नहीं रहे हो, क्यों ? अगर तुम इसे अपने यहाँ रखना नहीं चाहते तो मैं इसे अपने साथ ले जाऊँगी। हे भगवान, इससे तो अपने पाँवों पर खड़ा भी नहीं हुआ जाता ! क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है ?"

प्रिंस को मृत्यु-शय्या पर न पाकर मिसेज़ येपांचिना ने उसकी सूरत देखकर उसके स्वास्थ्य की दशा को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर आँका था, लेकिन उसकी इधर हाल ही की बीमारी, उससे जुड़ी हुई कष्टप्रद यादें, इस हलचल-भरी शाम की थकन, "पव्लीश्चेव के बेटे" के साथ हुई घटना, और अब इप्पोलीत के साथ यह घटना–इन सब बातों ने प्रिंस की रुग्ण संवेदना के घावों को इतनी बुरी तरह कुरेद दिया था कि उसे सचमुच बुखार-सा हो गया था। इसके अलावा, इसकी आँखों में एक नए प्रकार की चिन्ता, एक डर जैसा दिखाई दे रहा था। उसने इप्पोलीत को आशंका की दृष्टि से देखा मानो उसकी ओर से किसी और बात के होने का डर हो।

इप्पोलीत यकायक उठ खड़ा हुआ; वह बेहद पीला पड़ गया था और उसके विकृत चेहरे पर अपार, लगभग निराशाजनक लज्जा का भाव था। यह भाव मुख्यतः उसकी आँखों से, जो वहाँ मौजूद

सभी लोगों को भयभीत होकर और घृणा से घूर रही थीं, और उसके काँपते हुए होंठों की उजड़ी हुई, ऐंठी हुई और विनीत मुस्कराहट से व्यक्त हो रहा था। उसने फ़ौरन आँखें झुका लीं और होंठों पर वही मुस्कराहट लिए लड़खड़ाता हुआ धीरे-धीरे चलकर बुर्दोव्स्की और दोक्तोरेंको की ओर बढ़ा, जो बरामदे की सीढ़ियों के पास खड़े थे—वह उनके साथ जा रहा था।

"मुझे इसी का डर था !" प्रिंस ने ऊँचे स्वर में कहा। "यह तो होना ही था !"

इप्पोलीत अपनी आँखों में उन्माद-भरे द्वेष का भाव लिए उसकी ओर मुड़ा; ऐसा लगता था कि उसके चेहरे का एक-एक हिस्सा काँप रहा है और बोल रहा है।

"अच्छा, तो आपको इसका डर था, क्यों ? आपकी राय में 'यह तो होना ही था', है न ? ख़ैर, मैं इतना बता दूँ कि यहाँ मुझे अगर किसी से नफ़रत है—और मुझे आप सबसे नफ़रत है !—आप सबसे," वह भर्राई हुई आवाज़ में अटक-अटककर चिल्लाया, "तो दुनिया में हर चीज़ और हर आदमी से बढ़कर आपसे नफ़रत है, धोखेबाज़, मक्कार, कमबख़्त, पागल, दानी लखपति, आपसे ! मैं बहुत पहले ही आपको समझ गया था और आपसे नफ़रत करने लगा था, जब मैंने पहली बार आपके बारे में सुना था; मुझे आपसे बेहद नफ़रत हो गई थी।...यह सब कुछ आपका किया-धरा है ! मुझे बीमारी का यह दौरा आपकी वजह से पड़ा ! आपने एक मरते हुए आदमी को लज्जित किया है—आप, आप...मेरी इस नीच कायरता के लिए आप ही जिम्मेदार हैं ! अगर मैं जिन्दा रहा तो आपको मार डालूँगा ! मुझे आपके उपकार नहीं चाहिए, मैं किसी से कुछ भी नहीं लूँगा—सुन रहे हैं ? किसी से भी कुछ भी नहीं ! मैं सरसाम की हालत में था; आपके लिए बग़लें बजाने की कोई ज़रूरत नहीं है। लानत है आप पर, आप सब लोगों पर, हमेशा के लिए लानत है !"

इतना कहते-कहते उसका दम बिलकुल घुटने लगा।

"अपने आँसुओं पर शर्मिन्दा है !" लेबेदेव ने मिसेज़ येपांचिना से कानाफूसी के स्वर में कहा। " 'यह तो होना ही था !' वाह, खूब कहा प्रिंस ने ! उसे अन्दर तक पहचान लिया।..."

लेकिन मिसेज़ येपांचिना ने उसकी ओर देखा तक नहीं। वह बड़े रोब से अपना सिर ऊँचा किए तनी खड़ी थीं, और बड़ी तिरस्कारपूर्ण दिलचस्पी से उन "घृणित प्राणियों" को देख रही थीं। जब इप्पोलीत अपनी बात पूरी कर चुका तो जनरल साहब ने अपने कन्धे बिचकाए; मिसेज़ येपांचिना ने गुस्से से उन्हें सिर से पाँव तक देखा, मानो उनसे उनकी इस मुद्रा की वजह पूछ रही हों और फिर फ़ौरन प्रिंस की ओर मुड़ गईं।

"बहुत-बहुत शुक्रिया, प्रिंस, मेरे परिवार के बहुत प्यारे सनकी दोस्त, आज तुमने हम सब लोगों के लिए खुशगवार शाम बिताने का जो बन्दोबस्त किया उसके लिए। मैं समझती हूँ कि तुम्हारा दिल इस वक़्त बहुत खुश हो रहा होगा कि हम लोगों को भी अपनी इन बेवक़ूफ़ियों में शामिल करने में तुम कामयाब हो गए।...बस, इतना ही काफ़ी है, मेरे परिवार के बहुत प्यारे दोस्त। तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया कि बहरहाल तुमने आख़िरकार हम लोगों को तुम्हें अच्छी तरह जानने का मौक़ा दिया !..."

वह गुस्सा होकर अपने लबादे की सिलवटें ठीक करने लगीं, और "उन लोगों के" चले जाने की प्रतीक्षा करने लगीं। दोक्तोरेंको ने पन्द्रह मिनट पहले लेबेदेव के स्कूल में पढ़नेवाले बेटे को जो घोड़ागाड़ी लाने के लिए भेजा था वह उन लोगों को ले जाने के लिए उसी वक़्त आ पहुँची। अपनी बीवी के फ़ौरन ही बाद जनरल येपांचिन ने भी अपनी तरफ़ से कुछ कहना ज़रूरी समझा—

"सचमुच, प्रिंस, मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि तमाम बातों के...यानी...तमाम बातों के बाद,

मेरा मतलब है...यानी...हमारे तमाम दोस्ती के सम्बन्धों के बाद...यानी...बहरहाल, मेरी बीवी...''

''कैसी बात करते हैं आप !'' अदेलईदा ने ऊँचे स्वर में कहा और जल्दी से प्रिंस की ओर जाकर उसने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया।

प्रिंस सूनी-सूनी नज़रों से उसकी ओर देखकर मुस्करा दिया। अचानक उसे ऐसा लगा कि किसी के तेजी से कानाफूसी के स्वर में बोले गए शब्दों ने उसके कानों को झुलस दिया हो।

''अगर आपने इन बेहूदा लोगों से फ़ौरन छुटकारा न पा लिया, तो मैं ज़िन्दगी-भर आपसे नफ़रत करूँगी, ज़िन्दगी-भर !'' अग्लाया ने उसके कान में कहा। उस पर कोई जुनून-सा सवार था, लेकिन इससे पहले कि प्रिंस उसकी ओर देख पाता, वह मुड़कर चली गई। अब तो उसे किसी आदमी से या किसी चीज़ से छुटकारा पाना भी नहीं था—तब तक उन लोगों ने किसी तरह इप्पोलीत को घोड़ागाड़ी में बिठा दिया था और घोड़ागाड़ी चली गई थी।

''अच्छा,'' मिसेज़ येपांचिना ने अपने पति को सम्बोधित करके कहा, ''यह बताइए, आपकी राय में आख़िर यह सिलसिला क़ब तक चलता रहेगा ? मुझे हर चीज़ से नफ़रत करनेवाले इन बेहूदा लड़कों को क़ब तक भुगतना पड़ेगा ?''

''क्यों, माई डियर, मैं...यानी...मैं तो, ज़ाहिर है, बिलकुल तैयार हूँ और...मेरा मतलब है... प्रिंस...''

जनरल साहब ने फिर भी अपना हाथ प्रिंस की ओर बढ़ा दिया, लेकिन उन्हें उससे हाथ मिलाने का मौक़ा नहीं मिला क्योंकि वह अपनी बीवी के पीछे भागे जो शोर करती हुई और गुस्से से बरामदे की सीढ़ियाँ उतर रही थीं। अदेलईदा, उसका मंगेतर और अलेक्सान्द्रा प्रिंस से हार्दिक स्नेह के साथ विदा हुए। रादोम्स्की ने भी ऐसा ही किया; वही अकेला ऐसा था जो अभी तक पूरे जोश में था।

''वैसा ही हुआ जैसी कि मुझे उम्मीद थी,'' उसने आकर्षक मुस्कराहट के साथ दबे स्वर में कहा। ''मुझे अफ़सोस बस इस बात का है कि बेचारे आपको भी यह मुसीबत झेलनी पड़ी।''

अग्लाया विदा होते समय कुछ कहे बिना ही चली गई।

लेकिन उस शाम की घटनाओं का सिलसिला अभी ख़त्म नहीं हुआ था। मिसेज़ येपांचिना को एक और बिलकुल अप्रत्याशित मुलाक़ात का सामना करना पड़ा।

अभी उन्हें बरामदे की सीढ़ियाँ उतरकर पार्क के किनारे-किनारे जाती हुई सड़क तक पहुँचने का मौक़ा भी नहीं मिला था कि एक शानदार गाड़ी जिसमें दो सफ़ेद घोड़े जुते हुए थे, अचानक प्रिंस के घर के सामने से तेजी से गुजरी। उसमें दो खूबसूरत बनी-ठनी महिलाएँ बैठी हुई थीं। घर के सामने से मुश्किल से दस क़दम आगे जाकर गाड़ी रुक गई; उसमें से एक महिला ने जल्दी से पीछे मुड़कर देखा मानो अचानक उन्हें कोई ऐसा दोस्त दिखाई दे गया हो जिससे वह मिलना चाहती थीं।

''तुम हो, रादोम्स्की ?'' एक खूबसूरत गूँजती हुई आवाज़ ने चिल्लाकर पूछा, जिसे सुनकर प्रिंस और शायद कोई और चौंक पड़ा। ''उफ़, आख़िरकार तुम्हें खोज निकालने की मुझे कितनी खुशी है ! मैंने तुम्हारे पास एक आदमी शहर भेजा था, बल्कि दो आदमी ! वे सारा दिन तुम्हें खोजते रहे !''

रादोम्स्की बरामदे की सीढ़ियों पर ऐसे खड़ा था जैसे उस पर बिजली गिर पड़ी हो। मिसेज़ येपांचिना भी चुपचाप खड़ी थीं, लेकिन रादोम्स्की की तरह डर के मारे अपनी जगह गड़ी हुई नहीं। उन्होंने उस ढीठ औरत को वैसे ही गर्वपूर्ण और निर्मम तिरस्कार से देखा जैसे अभी पाँच मिनट

पहले उन्होंने उन 'घृणित प्राणियों' को देखा था और फ़ौरन उन्होंने अपनी घूरती हुई नज़रें घुमाकर रादोम्स्की पर जमा दीं।

"मेरे पास तुम्हारे लिए एक खुशखबरी है !" गूँजती हुई आवाज़ कहती रही। "कूप्फ़ेर की हुंडियों की वजह से परेशान मत होना। रोगोझिन ने उन्हें तीस में खरीद लिया है—इसके लिए मैंने ही उसे राज़ी किया। कम से कम तीन महीने चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। रहे बिस्कुप और उसके हाली-मवाली, तो उनके साथ भी हम कोई दोस्ताना सौदा कर लेंगे। तो सब कुछ ठीक-ठाक है ! फ़िक्र न करो ! कल तुमसे मिलूँगी !"

गाड़ी चल दी और कुछ ही देर में आँखों से ओझल हो गई।

"ज़रूर पागल होगी !" रादोम्स्की आख़िरकार चिल्लाया; उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया और उसने बौखलाकर चारों ओर नज़र दौड़ाई। "मुझे रत्ती-भर पता नहीं है कि आख़िर वह बातें किस चीज़ के बारे में कर रही थी। कैसी हुंडियाँ ? वह है कौन ?"

मिसेज़ येपांचिना कुछ सेकंड तक और उसे देखती रहीं; आख़िरकार वह अचानक और जल्दी-जल्दी अपने बँगले की ओर चल पड़ीं। बाक़ी लोग उनके पीछे-पीछे आ रहे थे। ठीक एक मिनट बाद रादोम्स्की बेहद घबराया हुआ बरामदे में प्रिंस के पास आया।

"प्रिंस, मुझे सच-सच बता दीजिए! आपको कुछ मालूम है कि इसका मतलब क्या है ?"

"मुझे इसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम," प्रिंस ने जवाब दिया, जो स्वयं अत्यधिक और कष्टप्रद घबराहट की हालत में था।

"आपको नहीं मालूम ?"

"नहीं।"

"मुझे भी नहीं मालूम," रादोम्स्की अचानक हँसा। "मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि मेरा किसी हुंडी से कोई सरोकार ही नहीं है। यकीन मानिए—मैं अपनी इज़्ज़त की क़सम खाकर कहता हूँ ! लेकिन आपको हो क्या गया है ? आपको गश आनेवाला है ?"

"अरे, नहीं, नहीं ! मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, नहीं !..."

11

तीन दिन बाद जाकर येपांचिन-परिवार का गुस्सा कुछ शान्त हुआ। हालाँकि अपनी आदत के अनुसार प्रिंस बहुत-सी चीज़ों के लिए अपने आपको ही दोषी ठहरा, और बिलकुल ईमानदारी से सोच रहा था कि उसे किए का फल मिलेगा, फिर भी अन्दर ही अन्दर उसे इस बात का पूरा यक़ीन था कि मिसेज़ येपांचिना उससे सचमुच नाराज़ नहीं होंगी, बल्कि वह अपने आपसे ज़्यादा नाराज़ थीं। इसीलिए नाराज़गी इतनी लम्बी खिंचने की वजह से तीसरे दिन तक उस पर बेहद उदासी-भरी परेशानी छाई रही। और भी कई परिस्थितियाँ इसका कारण थीं, और उनमें से एक विशेष रूप से अशुभसूचक प्रतीत होती थी। उसकी रुग्ण शंकालु मनःस्थिति में पिछले तीन दिनों में यह परिस्थिति अधिकाधिक बढ़ती गई थी (और इधर कुछ समय से प्रिंस अपने आपको दो चरम अवस्थाओं के लिए दोषी ठहराने लगा था—एक ओर तो दूसरों पर विश्वास कर लेने की अपनी असाधारण रूप से "बेतुकी और झुँझलाहट पैदा करनेवाली" प्रवृत्ति के लिए और इसके साथ ही अपनी 'घृणित और नैराश्यपूर्ण' शंकालुता के लिए)। सारांश यह कि तीसरा दिन समाप्त होते-होते उस मनमौजी महिलावाली घटना ने, जिसने रादोम्स्की को अपनी गाड़ी पर से बुलाया था, उसके दिमाग़ में डरावना

और रहस्यपूर्ण आकार धारण कर लिया। जैसा कि वह समझा था, मामले के दूसरे पहलुओं से बिलकुल अलग, इस रहस्य की मुख्य बात का निचोड़ इस कष्टप्रद सवाल में निहित था—इस नई 'विभीषणता' के लिए वह जिम्मेदार था या सिर्फ़...लेकिन उसने यह नहीं कहा कि दूसरा और कौन हो सकता था। जहाँ तक न. फ़. ब. के अक्षरों का सवाल था तो वह, उसकी राय में, एक मासूम शरारत थी, बिलकुल बचकाना शरारत, इसलिए इसके बारे में ज़रा भी चिन्तित होना शर्मनाक और एक बात की दृष्टि से तो सज्जनता के लगभग विपरीत बात होती।

लेकिन, उस शर्मनाक 'पार्टी' के, जिसकी लज्जाजनक घटनाओं के लिए मुख्यतः वही 'जिम्मेदार' था, अगले दिन सबेरे ही प्रिंस को यह सुखद अनुभव हुआ कि प्रिंस श. और अदेलईदा उससे मिलने आए—उन लोगों ने उसे बताया कि "वे मुख्यतः उसके स्वास्थ्य के बारे में मालूम करने आए थे"। वे पार्क में साथ टहलने के बाद यों ही थोड़ी देर के लिए वहाँ रुक गए थे। अदेलईदा को वहाँ एक पेड़ दिखाई दिया था, एक अद्भुत छतनार पुराना पेड़ जिसकी लम्बी-लम्बी डालें ऐंठी हुई और ताजे हरे पत्तों से लदी हुई थीं; उसके तने में एक खोखली और बहुत बड़ी दरार थी और अदेलईदा को उसकी तस्वीर बनाने की धुन समा गई ! आधे घंटे के उस पूरे दौरान में जब तक वे वहाँ रहे उसने इसके अलावा कोई बात ही नहीं की। प्रिंस श. का आचरण हमेशा की तरह बहुत सुचारु और आकर्षक रहा, उन्होंने प्रिंस से उसके अतीत के बारे में पूछा, उन परिस्थितियों को याद किया जिनमें वे पहली बार मिले थे, जिसका नतीजा यह हुआ कि पिछली रात की घटनाओं के बारे में लगभग कुछ भी नहीं कहा गया। आख़िरकार, अदेलईदा अपने आपको रोक न सकी और उसने हँसकर स्वीकार किया कि वे वहाँ 'incognito' आए थे; लेकिन उसने बस इतना ही कहा, हालाँकि उसके इस 'incognito' से यह नतीजा निकालना मुश्किल नहीं था कि उसके घर वाले प्रिंस से काफ़ी नाराज़ थे—ख़ासतौर पर मिसेज़ येपांचिना। जितनी देर वे लोग यहाँ रहे उसके दौरान प्रिंस श. ने उनके बारे में, या अग्लाया के बारे में या जनरल येपांचिना तक के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। जब वे अपना टहलना जारी रखने के लिए बाहर निकले तो उन्होंने प्रिंस से साथ चलने को नहीं कहा। उन्होंने संकेत में भी उसे आकर उन लोगों से मिलने का निमन्त्रण नहीं दिया। जहाँ तक इसका सवाल था तो इसके बारे में अदेलईदा ने अपने ख़ास ढंग से बीच में एक बात ज़रूर कही—एक जलरंग चित्र की चर्चा करते हुए जो वह बना रही थी, उसने अचानक कहा कि उसकी बड़ी इच्छा थी कि प्रिंस उस चित्र को देखे। "अच्छा, जल्दी ही इसका इन्तज़ाम कैसे किया जाए ? ठीक है ! अगर कोल्या आया तो मैं उसके हाथ भेज दूँगी, नहीं तो कल मैं प्रिंस श. के साथ टहलने जाते वक़्त खुद लेकर आऊँगी," उसने आख़िरकार समस्या का हल ढूंढ़ ही लिया था, और इस बात पर बहुत खुश थी कि उसने यह काम इतनी चालाकी से और सभी के लिए इतने सुविधाजनक ढंग से किया था।

आख़िरकार, लगभग बिलकुल चलते समय प्रिंस श. को अचानक मानो कुछ याद आया—"अरे हाँ," वह बोले, "भला तुम्हें कुछ मालूम है कि कल रात घोड़ागाड़ी पर से जिसने रादोम्स्की से चिल्लाकर कुछ कहा था वह कौन था ?"

"वह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना थी," प्रिंस ने कहा। "आपको अभी तक पता नहीं चला था कि वह वही थी ? लेकिन मुझे नहीं मालूम कि उसके साथ कौन था।"

"हाँ, मैं जानता हूँ, मैंने सुना है," प्रिंस श. जल्दी से बोले। "लेकिन वह कहना क्या चाहती थी ? सच कहता हूँ कि मेरे लिए...और दूसरों के लिए भी यह एक रहस्य है।"

प्रिंस श. बेहद और बिलकुल प्रकट आश्चर्य से बोल रहे थे।

"वह रादोम्स्की की कुछ हुंडियों की बात कर रही थी," प्रिंस ने सीधा-सादा जवाब दिया, "जो रोगोझिन ने उसके कहने पर किसी साहूकार से खरीद ली थीं, और उसने यह भी कहा कि जब तक रोदोम्स्की उनका भुगतान करे तब तक वह इन्तज़ार करने को तैयार है।"

"मैंने सुना था, इतना तो मैंने सुना था, प्रिंस, मेरे दोस्त; लेकिन, देखो, यह बात सच नहीं हो सकती ! यह हो ही नहीं सकता कि रोदोम्स्की ने किसी को हुंडी लिखकर दी हो ! जिसके पास इतनी दौलत हो...यह सच है कि थोड़ा-सा लापरवाह होने की वजह से पहले वह हुंडियाँ लिख दिया करता था, और सच तो यह है कि उनका भुगतान करने में मैं उसकी मदद भी किया करता था...लेकिन यह बिलकुल नामुमकिन है कि इतनी दौलत होने के बाद वह किसी साहूकार को हुंडी लिखकर दे और उसके बारे में परेशान रहे। और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ उसकी इतनी दोस्ती तो हो नहीं सकती—इस पूरे मामले में यही तो इतना चकरा देनेवाली बात है ! वह क़सम खाकर कहता है कि उसे इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं है और मुझे उस पर पूरी तरह यक़ीन है। लेकिन मैं तुमसे यह पूछना चाहता था, प्रिंस, कि तुम्हें तो इसके बारे में कुछ नहीं मालूम है ? मेरा मतलब है कि किसी चमत्कार से इसके बारे में कोई अफ़वाह तुम्हारे कानों तक तो नहीं पहुँची है ?"

"जी नहीं, मुझे इसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम और मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि इससे मेरा कोई सरोकार भी नहीं है।"

"भगवान क़सम, प्रिंस, तुम भी अजीब आदमी हो ! आज मेरी समझ में ही नहीं आ रहा है कि तुम्हें हो क्या गया है। क्या तुम सचमुच यह समझते हो कि मैं यह सोच भी सकता था कि तुम्हारा इस तरह के मामले से कोई सरोकार होगा ? ख़ैर, यह तो मुझे साफ़ दिखाई दे रहा है कि आज तुम अपने असली रंग में नहीं हो।"

प्रिंस श. ने उसे गले लगाकर चूम लिया।

"क्या मतलब आपका कि 'इस तरह के' मामले से मेरा कोई सरोकार नहीं हो सकता ? माफ़ कीजिएगा, मुझे तो इसमें कोई "इस तरह का" मामला दिखाई नहीं देता।"

"बेशक," प्रिंस श. ने कुछ रूखेपन से जवाब दिया, "वह कुछ लोगों के दिल में यह यक़ीन पैदा करके कि रादोम्स्की में कुछ ऐसे गुण हैं जो उसमें न हैं और न हो सकते हैं, किसी न किसी तरह रादोम्स्की को एक ख़ास क़दम उठाने से रोकना चाहती थी।"

प्रिंस कुछ अटपटा-सा महसूस कर रहा था, लेकिन वह प्रिंस श. को ग़ौर से और सवालिया नज़रों से देखता रहा। लेकिन प्रिंस श. ने और कुछ नहीं कहा।

"सिर्फ़ हुंडियाँ ही नहीं ?" प्रिंस ने कुछ अधीरता से आख़िरकार बुदबुदाकर कहा। "आपको यक़ीन है कि वह जो कुछ कल कह रही थी उसका वही मतलब नहीं था ?"

"लेकिन, देखो, क्या यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आती कि रादोम्स्की और...उसके बीच कोई बात हो ही नहीं सकती, और वह भी जिसमें रोगोझिन का दखल हो ? मैं एक बार फिर कहता हूँ कि वह बेहद पैसेवाला है। यह मैं पक्के तौर पर जानता हूँ। और उसे अपने चाचा से उत्तराधिकार में बहुत बड़ी दौलत मिलनेवाली है। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना तो बस..."

प्रिंस श. अचानक फिर चुप हो गए, स्पष्टतः इसलिए कि वह प्रिंस से नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की चर्चा नहीं करते रहना चाहते थे।

"तो, बहरहाल, वह उसे जानते तो होंगे ही, है न ?" प्रिंस ने एक मिनट चुप रहने के बाद अचानक पूछा।

"हाँ, मेरा ऐसा ख़्याल है...वह ऐसा ही चंचल स्वभाव आदमी है ! फिर भी, अगर वह उसे

जानता भी था, तो यह बहुत पहले की बात होगी—यानी, कोई दो-तीन साल पहले की। दरअसल, बात यह है कि तोत्स्की से उसकी जान-पहचान थी। लेकिन अब उस तरह की कोई बात नहीं हो सकती, और यह हो ही नहीं सकता कि उनके बीच कभी इतने गहरे सम्बन्ध रहे हों ! तुम तो ख़ुद जानते हो कि वह पहले यहाँ आई ही नहीं थी। कहीं देखी तक नहीं गई थी। लोगों को अभी मालूम ही नहीं है कि वह आई भी है। मैं तो उसकी घोड़ागाड़ी हद से हद पिछले तीन दिन से देख रहा हूँ।"

"गाड़ी है बहुत शानदार !" अदेलईदा बोली।

"हाँ, गाड़ी सचमुच शानदार है।"

वे दोनों प्रिंस से बेहद अच्छे दोस्त की तरह, बल्कि कहना चाहिए भाई की तरह विदा हुए।

लेकिन हमारे नायक के लिए यह मुलाक़ात सबसे बुनियादी महत्त्व की मुलाक़ात थी। इसमें शक नहीं कि पिछली रात के बाद से (और, शायद, उससे भी पहले से) उसे ख़ुद बहुत-सी बातों का शक हुआ था, पर उन लोगों के आने से पहले वह अपनी आशंकाओं को उचित नहीं ठहरा पा रहा था। अब उसे साफ़ दिखाई दे रहा था कि उस घटना के बारे में प्रिंस श. की व्याख्या हालाँकि, स्पष्टतः ग़लत थी, फिर भी वह सच्चाई से बहुत दूर नहीं था, क्योंकि उसने यह महसूस कर लिया था कि किसी तरह की साज़िश चल रही थी। (शायद, प्रिंस ने सोचा, उन्होंने इस मामले को बिलकुल ठीक-ठीक समझा हो, लेकिन उसके बारे में कोई राय न देना चाहते हों, इसलिए उन्होंने जान-बूझकर उसकी व्याख्या ग़लत ढंग से की हो।) लेकिन अब इस बात में किसी शक की गुंजाइश नहीं थी कि वे लोग (ख़ासतौर पर प्रिंस श.) उससे मिलने इस उम्मीद से आए थे कि शायद वह उस मामले पर कुछ रोशनी डाल सके। अगर ऐसा था, तो वे यक़ीनन उसके बारे में यह सोचते होंगे कि उसका भी उस साज़िश में कुछ हाथ था। इसके अलावा, अगर ऐसी बात थी, और अगर सचमुच यह बात महत्त्वपूर्ण थी, तो वह अपने मन में कोई भयानक उद्देश्य रखती होगी। उसका उद्देश्य क्या हो सकता है ? ओह, कैसी भयानक बात थी ! "और आख़िर उसे रोका कैसे जा सकता है ? अगर उसे इस बात का पक्का विश्वास है कि वह जो कुछ कर रही है वह ठीक है तो उसे रोकना बिलकुल नामुमकिन है !" यह बात प्रिंस अपने अनुभव से जान चुका था। "वह पागल है। बिलकुल पागल।"

लेकिन उस दिन सबेरे बहुत-सी ऐसी समस्याएँ उठ खड़ी हुई थीं जिनका कोई हल नहीं था, और सब की सब एक साथ, और सबका तक़ाजा था कि उन्हें फ़ौरन हल किया जाए, इसलिए प्रिंस बहुत उदास था। जब वेरा लेबेदेवा नन्हे ल्यूबा को लिए उससे मिलने आई और उसे एक लम्बी कहानी सुनाई तब उसका मन कुछ देर को बहल गया। उसके पीछे उसकी बहन आई, जो वहाँ मुँह बाए खड़ी रही, और फिर लेबेदेव का स्कूल में पढ़नेवाला बेटा आया, जिसने उसे यक़ीन दिलाया कि ऐपोकैलिप्स में आसमान से पानी के फ़व्वारों पर गिरनेवाले जिस 'वर्मवुड सितारे' का उल्लेख है वह उसके बाप की व्याख्या के अनुसार रेलवे लाइनों का वह जाल था जो सारे योरप में फैला हुआ था। प्रिंस को विश्वास नहीं हुआ कि लेबेदेव ने उसकी व्याख्या इस तरह की थी, और उन लोगों ने पहला अनुकूल अवसर मिलते ही उससे इसके बारे में पूछने का फ़ैसला किया। वेरा लेबेदेवा से प्रिंस को मालूम हुआ कि कल से केल्लेर भी उन लोगों के साथ ही रहने आ गया था, और हर संकेत से यही पता चलता था कि वह उनके यहाँ से जल्दी जानेवाला नहीं था, क्योंकि जनरल ईवोल्गिन के साथ उसकी गहरी छनने लगी थी। लेकिन उसका कहना यही था कि वह उनके यहाँ सिर्फ़ अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए रह रहा था। कुल मिलाकर, प्रिंस लेबेदेव के बच्चों को

दिन-ब-दिन ज़्यादा चाहने लगा था। कोल्या सारे दिन नहीं आया था—वह बहुत सबेरे पीटर्सबर्ग चला गया था। (लेबेदेव भी अपने कुछ काम निबटाने बहुत सबेरे चला गया था।) लेकिन प्रिंस बड़ी अधीरता से गान्या की राह देख रहा था जो उस दिन निश्चित रूप से उससे मिलने आनेवाला था।

वह खाने के फ़ौरन बाद शाम को सात बजे आया। उसे पहली नज़र में देखते ही प्रिंस के मन में यह विचार उठा कि बहरहाल उसे तो कल रातवाली घटना का पूरा ब्योरा अच्छी तरह मालूम ही होगा, और, सच तो यह है, जिसके वार्या और उसके पति जैसे सहायक हों उसे मालूम कैसे न हो ? लेकिन गान्या के साथ प्रिंस के सम्बन्ध कुछ विचित्र थे। उदाहरण के लिए, प्रिंस ने उसे बुर्दोव्स्कीवाले मामले को निबटाने का अधिकार दे रखा था, और उससे ख़ासतौर पर यह काम करने को कहा था; लेकिन उसके बावजूद, और किसी ऐसी बात के बावजूद जो उससे पहले हो चुकी थी, उनके बीच कुछ ऐसी बातें थीं जिनके बारे में उन्होंने तै कर रखा था कि उनकी चर्चा वे आपस में नहीं करेंगे। कभी-कभी प्रिंस को ऐसा महसूस होता था कि अपनी ओर से गान्या शायद चाहता था कि वे एक-दूसरे के साथ पूरी तरह और सहृदयता के साथ खुलेपन का व्यवहार करें; मिसाल के लिए अभी उसके अन्दर आते ही प्रिंस ने सोचा था कि उसे दृढ़ विश्वास था कि उसी क्षण गतिरोध को पूरी तरह तोड़ देने का समय आ गया था। (लेकिन गान्या जल्दी में था; उसकी बहन लेबेदेव के यहाँ उसका इन्तज़ार कर रही थी; उन दोनों को किसी काम से कहीं जाने की जल्दी थी।)

लेकिन अगर गान्या [illegible] अधीरता-भरे प्रश्नों, स्वतःस्फूर्त संचार और रहस्यों के मित्रतापूर्ण आदान-प्रदान की बाढ़ सी आ जाने की उम्मीद कर रहा था, तो यह सचमुच उसकी बहुत बड़ी भूल थी। उन बीस मिनटों के दौरान जो उसने वहाँ बिताए, प्रिंस बहुत विचार-मग्न, लगभग खोया-खोया-सा रहा। किसी भी प्रत्याशित प्रश्न, बल्कि उस एक मुख्य प्रश्न का, जिसकी कि गान्या उम्मीद कर रहा था, विचार मात्र ही निरर्थक था। तब गान्या ने भी और ज़्यादा सम्भलकर बोलने का फ़ैसला किया। उन बीस मिनटों के पूरे दौरान में वह लगातार बातें करता रहा और हँसता रहा; मुख्य विषय की कोई भी चर्चा किए बिना वह बड़ी तेजी से हल्की-फुल्की, दिलचस्प बातचीत करता रहा।

गान्या ने, प्रसंगवश, उसे बताया कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को पाव्लोव्स्क आए अभी चार ही दिन हुए थे और अभी से आमतौर पर वह सभी का ध्यान आकर्षित करने लगी थी। वह दार्या अलेक्सेयेव्ना के साथ मात्रोस्काया स्ट्रीट पर एक छोटे-से बहुत ही भद्दे घर में रहती थी, लेकिन उसकी घोड़ागाड़ी पाव्लोव्स्क की बेहतरीन घोड़ागाड़ियों में से थी। उसके चारों ओर अभी से उसकी कृपादृष्टि के लिए लालायित नौजवानों और बूढ़े आकांक्षियों की एक पूरी भीड़ जमा हो गई थी; कभी-कभी उसकी घोड़ागाड़ी के साथ घुड़सवार चलते थे। अपने दोस्तों को चुनने के मामले में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना अब भी हमेशा की तरह बहुत तुनकमिजाज थी और वह उन्हीं लोगों से मिलती थी जो उसे अच्छे लगते थे। फिर भी उसके चारों ओर एक पूरा गरोह बन गया था, जिसकी वजह से कितने ही लोग ऐसे थे जिन पर वह ज़रूरत पड़ने पर भरोसा कर सकती थी। छुट्टी मनानेवाला एक स्थानीय आदमी उसकी वजह से उस लड़की से झगड़ा भी कर चुका था, जिससे उसकी शादी होनेवाली थी, और एक बुजुर्ग जनरल ने तो अपने बेटे को बेटा मानने से ही इन्कार कर दिया था। वह एक बहुत ही खूबसूरत लड़की को, जो अभी सोलह साल की ही थी और दार्या अलेक्सेयेव्ना की कोई दूर की रिश्तेदार भी थी, अकसर अपने साथ लेकर गाड़ी पर सैर करने निकलती थी। वह लड़की गाती बहुत अच्छा थी, इसलिए उनका वह घर शामों को सभी के आकर्षण

का केन्द्र बना रहता था। लेकिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना का आचरण अत्यन्त सादा होता था, वह बहुत ही सादे लेकिन बेहद सुरुचिपूर्ण कपड़े पहनती थी, और सभी महिलाएँ "उसकी शान, उसकी सुन्दरता और उसकी गाड़ी से ईर्ष्या करती थीं"।

"कल की वह सनकीपन की घटना," गान्या ने बड़ी सतर्कता से कहा, "ज़ाहिर है, पहले से सोची-समझी हुई हरकत थी और उसे कोई बहुत गम्भीर बात नहीं समझा जाना चाहिए। उसे किसी बात के लिए दोषी ठहराने के लिए ज़रूरी है कि या तो जान-बूझकर कोई उचित बहाना ढूँढ़ा जाए या उसके बारे में कोई निन्दाजनक क़िस्सा फैलाया जाए, जैसा करने में, मैं उम्मीद करता हूँ, लोगों को ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा," गान्या ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा; वह उम्मीद कर रहा था कि प्रिंस उससे अवश्य ही पूछेगा कि वह कलवाली घटना को पहले से सोची-समझी हरकत क्यों समझता था और लोगों को वैसा करने में ज़्यादा वक़्त क्यों नहीं लगेगा। लेकिन प्रिंस ने यह नहीं पूछा।

रादोम्स्की के बारे में गान्या विस्तार से बातें करता रहा, लेकिन इस बार भी उससे ख़ासतौर पर ऐसा करने को किसी ने कहा नहीं था, जो उसे देखते हुए बहुत ही विचित्र बात थी कि उसने किसी विशेष कारण के बिना ही रादोम्स्की का प्रसंग छेड़ा था। गान्या की राय में रादोम्स्की नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को पहले से नहीं जानता था, और अब भी वह उसे बहुत थोड़ा ही जानता था, क्योंकि किसी ने अभी चार ही दिन पहले उससे पार्क में टहलते समय उसका परिचय कराया था, और इस बात की सम्भावना बहुत ही कम थी कि वह दूसरों के साथ उसके घर एक बार भी गया हो। जहाँ तक हुंडियों का सवाल था तो उनमें भी कुछ न कुछ बात थी ज़रूर (गान्या को इसका पक्का यक़ीन था); रादोम्स्की धनवान तो था लेकिन "उसकी ज़मीन-जायदाद के मामलात सन्तोषजनक नहीं थे"। इस दिलचस्प विषय के बारे में गान्या ने ज़्यादा कुछ न कहना ही अच्छा समझा। न ही उसने नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के पिछली रात के असाधारण व्यवहार के बारे में ही कुछ कहा, अलावा उस संक्षिप्त टिप्पणी के जो उसने पहले की थी।

आख़िरकार वार्या अपने भाई को ले जाने के लिए आ गई। वह एक मिनट रुकी; उसने बताया. (बिना किसी के पूछे) कि रादोम्स्की आज पीटर्सबर्ग में है और शायद कल भी रहेगा, और यह कि उसके पति प्तीत्सिन भी पीटर्सबर्ग में थे, जहाँ वह उसके ख़्याल में रादोम्स्की के काम से गए थे, क्योंकि उसके सिलसिले में ज़रूर कुछ गड़बड़ मालूम होती थी। जाने से पहले उसने यह भी बताया कि मिसेज़ येपांचिना का पारा आज बहुत चढ़ा हुआ था, लेकिन सबसे अजीब बात यह थी कि अग्लाया का अपने पूरे परिवार से, न सिर्फ़ माँ-बाप से, बल्कि बहनों से भी, झगड़ा हो गया था, और यह एक बुरा लक्षण था। यह आख़िरी ख़बर (जो प्रिंस के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण थी) लगे हाथ सुना देने के बाद भाई-बहन चले गए। गान्या ने "पव्लीश्चेव के बेटे" वाले मामले के बारे में कुछ भी नहीं कहा, शायद मिथ्या संकोच के कारण या इसलिए कि वह "प्रिंस की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना" चाहता था, लेकिन प्रिंस ने इसके बावजूद एक बार फिर उसके प्रति आभार प्रकट किया कि उसने उस मामले का बहुत ही ईमानदारी के साथ सच्चे दिल से निपटारा कर दिया था।

प्रिंस आख़िरकार अकेला छोड़ दिए जाने पर बहुत खुश था; वह बाहर सड़क पर निकला और सड़क पार करके पार्क में चला गया; वह जो एक क़दम उठाना चाहता था उसके बारे में सोच-विचार करके वह अपना इरादा पक्का कर लेना चाहता था। लेकिन वह 'क़दम' उनमें से नहीं था जिनके बारे में सोच-विचार किया जाता है; उनके बारे में सोचा नहीं जाता है, बल्कि सीधे इरादा पक्का कर लिया जाता है—सहसा उसे इस अदम्य इच्छा ने आ दबोचा कि वह यहाँ की हर चीज़ को छोड़

दे और जहाँ से आया था वहीं वापस चला जाए, किसी सुदूर एकान्त स्थान में, और फ़ौरन, किसी से विदा लिए बिना ही चला जाए। वह महसूस करता था कि अगर वह यहाँ कुछ दिन भी और रह गया तो इस बुरी तरह खिंचकर इसी दुनिया में फँस जाएगा कि उससे निकलना असम्भव हो जाएगा, और इसके बाद से यही दुनिया उसकी दुनिया बन जाएगी। लेकिन उसने अपने मन में इस समस्या पर दस मिनट भी तर्क-वितर्क नहीं किया; उसने तुरन्त फ़ैसला कर लिया कि भाग जाना असम्भव था, ऐसा करना एक तरह से कायरता होगी, कि उसके सामने ऐसी समस्याएँ थीं कि उन्हें हल न करने का या, कम से कम, उन्हें हल करने की भरपूर कोशिश न करने का उसे कोई अधिकार नहीं था। ऐसे ही विचारों में डूबा हुआ वह घर लौट आया; वह मुश्किल से पन्द्रह मिनट बाहर रहा होगा। उस समय वह बहुत दुःखी था।

लेबेदेव अभी तक घर नहीं लौटा था, इसलिए शाम के करीब केल्लेर प्रिंस के पास आ धमका; वह नशे में नहीं था, बल्कि उसका आत्म-विश्वास फूटा पड़ रहा था और वह कुछ बातें स्वीकार कर लेने के लिए बेताब था। उसने किसी तरह की लाग-लपेट के बिना प्रिंस से कहा कि वह उसे अपनी ज़िन्दगी की पूरी कहानी सुनाने आया था और इसीलिए वह पाव्लोव्स्क में रुक गया था। उससे छुटकारा पाना बिलकुल नामुमकिन था—दुनिया की कोई भी चीज़ उसे वहाँ से हटा नहीं सकती थी। केल्लेर बहुत देर तक बातें करने के लिए तैयार हुआ, और सो भी व्यवस्थित ढंग से नहीं, लेकिन शुरू करते ही वह फाँदकर अन्त की बात पर पहुँच गया और उसने एलान किया कि उसमें "नैतिकता का नाम-निशान तक" बाक़ी नहीं रह गया था (सिर्फ़ इसलिए कि वह सर्वशक्तिमान ईश्वर में विश्वास नहीं रखता था), यहाँ तक कि वह चोरी तक करने का अपराधी था।—"क्या आप ऐसी बात सोच भी सकते हैं ?"

"सुनो, केल्लेर," प्रिंस ने कहना शुरू किया, "अगर आपकी जगह मैं होता तो जब तक बिलकुल मजबूरी ही न होती मैं यह सब कुछ स्वीकार न करता, लेकिन मैं समझता हूँ कि शायद आप जान-बूझकर अपने आपको उससे ज़्यादा बुरा साबित करने की कोशिश कर रहे हो जितने कि तुम सचमुच हो ?"

"मैं आपको—सिर्फ़ आपको—यह सब कुछ बस अपनी आत्मा के विकास के लिए बता रहा हूँ ! किसी और को नहीं, मैं मर जाऊँगा और मेरा भेद मेरे साथ दफ़न हो जाएगा ! लेकिन, प्रिंस, अगर आपको मालूम होता, अगर आपको बस इतनी बात मालूम होती कि आजकल पैसा मिलना कितना मुश्किल है ! कहाँ से लाए कोई मैं आपसे पूछता हूँ ? इसका एक ही जवाब है—'अपना सोना और हीरे लाकर गिरवीं रखो और हमसे पैसा ले जाओ', बात यह है, उन्हें सिर्फ़ वही चीज़ चाहिए जो मेरे पास नहीं है। आप क्या कह सकते हैं इसके बारे में ? ख़ैर, आख़िर में मुझे गुस्सा आ गया और थोड़ी देर रुककर मैंने पूछा—'और अगर ज़मर्रुद गिरवी रखे जाएँ ?'—'जी हाँ,' वह बोला, 'ज़मर्रुद गिरवी रखने पर भी मैं आपको पैसा दूँगा।'—'अच्छी बात है,' मैंने कहा, 'यह तो बहुत ही अच्छी बात है !' और यह कहकर मैंने अपना हैट पहना और बाहर चला आया। जहन्नुम में जाओ, सुअर कहीं के ! जी हाँ !"

"लेकिन आपके पास ज़मर्रुद थे ?"

"ज़मर्रुद ठेंगा थे ! अरे, प्रिंस, आप भी ज़िन्दगी को कितना उम्मीदों से भरा हुआ, मासूम, और, कहना चाहिए, बेदाग़ समझते हैं !"

आख़िरकार प्रिंस को, न जाने क्यों, उसके लिए जितना अफ़सोस नहीं हुआ उससे ज़्यादा उस पर शर्म आई। उसके मन में यह बात भी आई कि किसी के असर का सहारा लेकर उस आदमी

के लिए शायद कुछ किया जा सके। खुद अपने असर को वह किसी वजह से बिलकुल बेकार समझता था—इसलिए नहीं कि वह अपने आपको घटाकर देखना चाहता था, बल्कि चीज़ों को देखने के अपने ख़ास तरीक़े की वजह से। धीरे-धीरे वे बातें करने लगे और उनकी बातचीत इतनी दिलचस्प होती गई कि वे एक-दूसरे से अलग नहीं होना चाहते थे। केल्लेर ने असाधारण तत्परता से स्वीकार किया कि वह ऐसी हरकतों का दोषी रह चुका था कि यह कल्पना करना भी असम्भव था कि कोई उनकी चर्चा भी कैसे कर सकता था। हर किस्से की भूमिका के रूप में वह प्रिंस को निश्चित रूप से यह आश्वासन देता था कि उसे बेहद अफ़सोस था और अन्दर ही अन्दर उसका मन 'आँसुओं से भरा' था, फिर भी वह उन्हें बयान इस तरह कर रहा था जैसे उसे अपने किए पर गर्व हो और कभी-कभी तो वह इतने मसख़रेपन से बयान करता था कि अन्त में वह और प्रिंस दोनों ही पागलों की तरह हँस पड़ते थे।

"सबसे बड़ी बात यह है," प्रिंस ने आख़िरकार कहा, "कि आपका स्वभाव ऐसा भरोसा करनेवाला, बिलकुल बच्चों जैसा है और तुम बेहद नेक हो। सिर्फ़ इस बात से तुम्हारा बहुत सा पाप धुल जाता है।"

"नेक, नेक, जान तक दे देने को तैयार रहने की हद तक नेक !" केल्लेर ने भाव विभोर होकर सहमति प्रकट की। "लेकिन, प्रिंस, बात यह है कि यह सब कुछ सपनों में और, यों कहिए, शेखी बघारने में ही ऐसा है। असल में नतीजा कुछ भी नहीं निकलता ! ऐसा क्यों है, यह मेरी समझ में बिलकुल नहीं आता।"

"हिम्मत न हारो। अब, मैं समझता हूँ, यह बात ज़ोर देकर कही जा सकती है कि तुमने मुझे अपनी ज़िन्दगी का पूरा ब्योरा सारी परिस्थितियों के साथ बता दिया है। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है कि जो कुछ तुमने मुझे बताया है उसमें अब कुछ और जोड़ना नामुमकिन है, है न ?"

"नामुमकिन ? !" केल्लेर ने लगभग तरस खाते हुए कहा। "अरे, प्रिंस, आप भी आदमी के स्वभाव को, कहना चाहिए, कितने ठेठ स्विट्ज़रलैण्डवाले ढंग से समझते हैं।"

"क्यों, आपको क्या सचमुच कुछ और कहना है ?" प्रिंस ने भीरुतापूर्ण आवाज़ में पूछा। "आख़िर आप मुझसे क्या चाहते थे; मेहरबानी करके मुझे इतना बता दीजिए, केल्लेर, और आप ये सब बातें मानने के लिए मेरे पास क्यों आए थे ?"

"आपसे ? मैं क्या चाहता था ? एक बात तो यह कि आप जैसे भोले-भाले आदमी को देखकर ही खुशी होती है। आपके पास बैठकर बातें करना बहुत खुशी की बात है। कम से कम मुझे यह तो मालूम रहता है कि एक बेहद नेक आदमी से मेरा पाला पड़ा है, और, दूसरे...दूसरे..."

वह कुछ हिचकिचाहट में बीच में ही अटक गया।

"आप मुझसे कुछ पैसा तो उधार लेने नहीं आए थे, क्यों ?" प्रिंस ने बड़ी गम्भीरता से और सीधे-सादे ढंग से, बल्कि कुछ शर्माते हुए उसे प्रोत्साहन दिया।

केल्लेर चौंक पड़ा; उसने विस्मय से प्रिंस की आँखों में आँखें डालकर जल्दी से देखा और मेज़ पर ज़ोर से मुक्का मारा।

"तो, इस तरह आप आदमी को बिलकुल बेबस कर देते हैं ! अरे, प्रिंस, आपकी सादगी और मासूमियत तो ऐसी है जैसी कभी स्वर्ण-युग में भी नहीं सुनी गई होगी, और फिर अचानक आप ऐसी गहराई से उसके मन की बात ताड़कर उसे आर-पार तीर से बेध देते हैं। लेकिन, प्रिंस, इसे ज़रा खोलकर समझाने की ज़रूरत है, क्योंकि मैं...मैं तो बिलकुल दंग रह गया हूँ ! यह बिलकुल सच है कि मैं आपसे मिलने आया ही इसलिए था कि आख़िरकार मैं आपसे कुछ कर्ज माँगूँ, लेकिन

आपने मुझसे पैसे के बारे में इस तरह पूछा जैसे आपकी नज़र में इसमें कोई बुराई न हो, जैसे यह क़ुदरती बात हो।''

''हाँ...तुम्हारे लिए तो यह क़ुदरती बात थी ही।''

''और आपको इससे कोई धक्का नहीं पहुँचा ?''

''मुझे धक्का क्यों पहुँचता ?''

''देखिए, प्रिंस, कल शाम से यहाँ मेरे ठहरने की पहली वजह तो यह थी कि मैं फ़्रांसीसी लाट पादरी बुर्दालू की ख़ास इज़्ज़त करता हूँ (हम लोग लेबेदेव के यहाँ सबेरे तीन बजे तक बोतलें खोलते रहे) और दूसरे (मैं ईसाई धर्म-क्षेत्र की हर सलीब पर हाथ रखकर क़सम खाने को तैयार हूँ कि मैं सच बोल रहा हूँ और सिर्फ़ सच !), और ख़ासतौर पर मैं इसलिए यहाँ ठहर गया कि सच्चे दिल से और पूरी तरह सारी बातें आपके सामने मानकर मैं, यों समझ लीजिए, अपने आत्मिक विकास को बढ़ावा देना चाहता था; मन में यही विचार लिए-लिए मैं लगभग चार बजे आँसुओं में डूबा हुआ सो गया। आप एक बेहद इज़्ज़तदार आदमी की बात का तो यक़ीन करेंगे, जिस क्षण मुझे नींद आई, भीतरी और, समझ लीजिए, बाहरी आँसुओं की बाढ़ के बीच (क्योंकि मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं फूट-फूटकर रो रहा था !), जिस क्षण मेरी आँख लगी ठीक उसी वक़्त मेरे मन में एक अत्यन्त पैशाचिक विचार उठा—'आख़िर मैं उनसे कुछ पैसा क्यों न उधार माँग लूँ, ज़ाहिर है, सारी बातें उनके सामने मान लेने के बाद ?' इसलिए मैंने अपने पापों को स्वीकार करने का भाषण, समझ लीजिए, 'आँसुओं की झालर लगी हुई मसालेदार चटनी' की तरह तैयार किया, ताकि उन आँसुओं से मैं रास्ता तैयार करूँ और जब आपका दिल पसीज जाए तो आपसे डेढ़ सौ रूबल ऐंठ लूँ। थी न यह कमीनेपन की हरकत ?''

''मुझे यक़ीन है कि यह सच नहीं हो सकता, बल्कि यह बस संयोग की बात है। आपके मन में दो बातें एक साथ उठीं। ऐसा अक्सर होता है। मेरे साथ तो हमेशा होता है। फिर भी मैं इसे अच्छी बात नहीं समझता, और, केल्लेर, इसके लिए मैं हमेशा सबसे ज़्यादा अपने आपको दोषी ठहराता हूँ। अभी आप जो कुछ कहा है वह पूरी तरह मेरे बारे में भी सच है। कभी-कभी तो मैं यहाँ तक समझने लगता था,'' प्रिंस बहुत ईमानदारी, सच्चाई और गहरी दिलचस्पी के साथ कहता रहा, ''कि सभी लोग ऐसे ही होते हैं, यहाँ तक कि मैं अपनी पीठ ठोंकने लगा, क्योंकि इन दोहरे विचारों से लड़ना बेहद मुश्किल है; मैं कोशिश करके देख चुका हूँ। भगवान ही जाने, वे कैसे मन में आते हैं और कैसे उभरते हैं। और आप हो कि उसे सीधा-सीधा कमीनापन कहते हो ! अब मुझे भी इस तरह के विचारों से फिर डर लगने लगेगा। बहरहाल, मैं आपका फ़ैसला नहीं कर सकता। लेकिन मेरी राय में इसे सीधा-सीधा कमीनापन नहीं कहा जा सकता, आपका क्या ख़्याल है ? आप मुझसे कुछ पैसा ऐंठने के लिए बेईमानी का सहारा ले रहे थे, लेकिन आप ख़ुद क़सम खाकर कहते हैं कि आपने ये सारी बातें मेरे सामने बिलकुल ही दूसरे उद्देश्य से मानी हैं, जो लाभ का नहीं, बल्कि सम्मानपूर्ण उद्देश्य है। जहाँ तक पैसे का सवाल है—उसकी ज़रूरत तो शराब पीने के लिए है, क्यों ? पर यह तो इन बातों के बाद बुजदिली का सबूत है। लेकिन यह भी तो है कि कोई एक क्षण में शराब पीने की आदत कैसे छोड़ दे ? बिलकुल नामुमकिन है, है न ? तो फिर किया क्या जाए ? सबसे अच्छा यही है कि सब कुछ अन्तःकरण पर छोड़ दिया जाए, क्या ख़्याल है आपका ?''

प्रिंस बड़ी दिलचस्पी से केल्लेर को घूरता रहा। स्पष्टतः दोहरे विचारों का सवाल कुछ देर तक उसके दिमाग़ पर छाया रहा।

"मेरी समझ में ही नहीं आता कि इस सबके बावजूद लोग आपको बौड़म कैसे कह सकते हैं।"

प्रिंस का चेहरा कुछ लाल हो गया।

"उपदेशक बुर्दालू भी किसी आदमी को माफ़ करनेवाला नहीं था, लेकिन आपने माफ़ कर दिया, और आपने मेरा फ़ैसला इंसानियत के ढंग से किया ! अपने आपको सज़ा देने के लिए और आपको यह बताने के लिए कि मुझ पर कितना गहरा असर हुआ है मैं आपसे डेढ़ सौ रूबल नहीं माँगूँगा—बस, मुझे पच्चीस रूबल दे दीजिए, उतने ही काफ़ी होंगे ! दरअसल, मुझे ज़रूरत ही उतने की है, कम से कम अगले पन्द्रह दिन के लिए। उससे पहले मैं आपके पास पैसे के लिए नहीं आऊँगा। मैं अगाश्का को ऐश कराना चाहता था, लेकिन वह उसके लायक नहीं है। मेरे अच्छे प्रिंस, भगवान आपका भला करे !"

आख़िरकार शहर से लौटते ही लेबेदेव अन्दर आया, और केल्लेर के हाथ में पच्चीस रूबल का नोट देखकर उसके माथे पर बल पड़ गए। लेकिन पैसा हाथ में आ जाने पर केल्लेर को वहाँ से चले जाने की बहुत जल्दी थी और वह फ़ौरन वहाँ से रफ़ूचक्कर हो गया। लेबेदेव ने फ़ौरन उसे लताड़ना शुरू कर दिया।

"तुम बेइन्साफ़ी कर रहे हो," प्रिंस आख़िरकार बोला, "उसे सचमुच बहुत अफ़सोस था।"

"लेकिन उसे अफ़सोस होने न होने से फ़र्क़ क्या पड़ता है ? बिलकुल मेरी तरह जैसी हालत है—'मैं दुष्ट हूँ, मैं दुष्ट हूँ'; लेकिन ये सब बस कहने की बातें होती हैं।"

"तो वह सिर्फ़ कहने की बात थी ? और मैं समझा था..."

"ख़ैर, मैं आपको सच बात बता दूँगा—सिर्फ़ आपको, क्योंकि आप आदमी की अन्दर तक की बात जान लेते हैं—शब्द और कर्म, सच और झूठ—मेरे दिमाग़ में यह सब कुछ गड्ड-मड्ड है और मैं यह बात बिलकुल ईमानदारी से कह रहा हूँ। मैं सच को और कर्मों को निरे पश्चात्ताप के साधन की तरह इस्तेमाल करता हूँ—आप मानें न मानें, मैं क़सम खाकर कहता हूँ, और मैं शब्दों को और झूठ को दूसरे आदमी को काबू में करने और पछतावे के आँसुओं के सहारे भी अपना कुछ फ़ायदा उठा लेने के जहन्नुमी (और हमेशा मौजूद रहनेवाले) इरादे से इस्तेमाल करता हूँ ! भगवान की क़सम, ऐसी ही बात है ! मैं यह बात किसी और को नहीं बताऊँगा। वह हँसेगा या गालियाँ देगा। लेकिन, प्रिंस, आप इंसानियत के साथ फ़ैसला करेंगे।

"बिलकुल यही बात अभी उसने भी मुझसे कही थी," प्रिंस ने सहसा कहा। "और लगता है कि तुम दोनों को इस बात पर गर्व है ! सचमुच, तुम पर मुझे ताज्जुब होता है, लेकिन वह तुमसे ज़्यादा ईमानदार है क्योंकि तुमने तो इसे बाक़ायदा कारोबार बना लिया है। बस, बस, लेबेदेव, अब रहने दो। त्योरियाँ चढ़ाने और अपने दिल पर हाथ रखने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम्हें मुझसे कुछ कहना तो नहीं है न ? तुम बेकार आनेवाले तो हो नहीं।..."

लेबेदेव मुँह बनाने और बग़लें झाँकने लगा।

"मैं तुमसे एक सीधा सवाल पूछने के लिए सारे दिन इन्तज़ार करता रहा हूँ। ज़िन्दगी में एक बार तो गोल-मोल बातें करने के बजाय सच बात मुझे बता दो। कल की घोड़ागाड़ीवाली घटना में तुम्हारा कोई हाथ था कि नहीं ?"

लेबेदेव ने फिर मुँह बनाया, अपने हाथ आपस में रगड़ते हुए ही-ही करके हँसने लगा, और आख़िरकार छींकने तक लगा, लेकिन इसके बाद भी वह कुछ कहने के लिए अपना इरादा पक्का न कर सका।

"मैं समझ गया, था तुम्हारा हाथ।"

"लेकिन घुमा-फिराकर, साहब, घुमा-फिराकर ही ! मैं आपसे सोलह आने सच बात कह रहा हूँ ! उस पूरे मामले में मेरा हाथ बस इतना था कि मैंने एक ख़ास शख़्स को काफ़ी पहले से यह जानकारी दे दी थी कि मेरे घर पर इस तरह की महफिल जमी हुई है और उसमें कुछ ख़ास लोग मौजूद हैं।"

"मैं जानता हूँ कि तुमने अपने बेटे को वहाँ भेजा था," प्रिंस ने अधीरता से कहा। "उसने खुद मुझे बताया। लेकिन इस साज़िश का मतलब क्या है ?"

"यह मेरी साज़िश नहीं है, मेरी नहीं है," लेबेदेव ज़ोर से हाथ चलाते हुए चिल्लाया। "इसमें दूसरे लोगों का हाथ है, और, एक तरह से, यह साज़िश कम और हवाई किला ज़्यादा है।"

"लेकिन आख़िर यह सब क़िस्सा है क्या ? भगवान के लिए, कुछ मुझे भी तो समझाओ। यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आती कि मेरा इससे सीधा सम्बन्ध है ? अरे, वे लोग रादोम्स्की के चाल-चलन पर धब्बा लगाने की कोशिश कर रहे हैं !"

"प्रिंस, आलीजनाब प्रिंस साहब !" लेबेदेव फिर पैंतरे बदलने लगा, "आप मुझे सारी सच बात तो बताने देते ही नहीं। मैं आपको सारी सच्चाई बताने की कई बार कोशिश कर चुका हूँ। आप मुझे बात ही नहीं करने देते।..."

प्रिंस रुककर सोचने लगा।

"अच्छी बात है," उसने स्पष्टतः काफ़ी लम्बे संघर्ष के बाद निराश भाव से कहा, "बताओ, सच बात क्या है।"

"अग्लाया इवानोव्ना," लेबेदेव ने फ़ौरन कहना शुरू किया।

"चुप रहो, चुप रहो !" प्रिंस बहुत ज़ोर से चिल्लाया और गुस्से के मारे और, शायद, शर्म के मारे भी, उसका चेहरा लाल हो गया। "यह सिरे से नामुमकिन है...यह सब सरासर बकवास है ! यह सब कुछ तुमने अपने मन से गढ़ा है, या तुम्हारे ही जैसे किसी और पागल ने ! अब यह बात फिर कभी मुझे तुम्हारे मुँह से सुनाई न दे !"

रात गए, लगभग ग्यारह बजे, कोल्या ढेरों ख़बरें लेकर आया। ख़बरें दो तरह की थीं—पीटर्सबर्ग की और पाव्लोव्स्क की। उसने बड़ी तेजी से पीटर्सबर्ग की अधिक महत्त्वपूर्ण ख़बरें सुना दीं (ज़्यादातर इप्पोलीत और कल रातवाले काण्ड के बारे में) ताकि बाद में उन पर फिर विस्तार से चर्चा करे, और फिर जल्दी से पाव्लोव्स्क की ख़बरें सुनाने लगा। वह पीटर्सबर्ग से तीन घंटे पहले लौटा था और प्रिंस से मिलने आए बिना सीधे येपांचिन-परिवार के यहाँ चला गया था। "वहाँ जो कुछ हो रहा है वह सचमुच भयानक है !" ज़ाहिर है, गाड़ीवाली घटना सबसे प्रमुख थी, लेकिन यक़ीनन कुछ और भी हुआ होगा, कोई ऐसी बात जिसके बारे में उसे और प्रिंस को कुछ भी नहीं मालूम था। "अलबत्ता, मैंने पता भी नहीं लगाया और मैं किसी से उसके बारे में पूछ-ताछ करना भी नहीं चाहता। हाँ, वे लोग मुझसे अच्छी तरह मिले...सच तो यह है कि जितनी मुझे उम्मीद थी उससे भी ज़्यादा अच्छी तरह...लेकिन, प्रिंस, उन लोगों ने आपके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा !" सबसे बड़ी और दिलचस्प बात तो यह थी कि गान्या के सवाल पर अग्लाया की अपने माँ-बाप और बहनों से बहुत जबर्दस्त लड़ाई हुई। उस झगड़े का पूरा ब्योरा तो उसे नहीं मालूम था, अलावा इसके कि झगड़ा गान्या को लेकर हुआ था (क्या आप ऐसी बात सोच भी सकते हैं ?) और यह कि झगड़े में बेहद गरमागरमी पैदा हो गई, जिससे पता चलता है कि कोई महत्त्वपूर्ण बात थी। जनरल साहब रादोम्स्की के साथ शहर से बहुत देर से आए थे और परेशान दिखाई दे रहे थे;

रादोम्स्की का स्वागत बहुत अच्छे ढंग से किया गया, और खुद उसका आचरण भी अत्यन्त आकर्षक और उल्लासमय था। सबसे महत्त्वपूर्ण ख़बर यह थी कि मिसेज़ येपांचिना ने वार्या से, जो लड़कियों के साथ बैठी हुई थी, आकर उनसे मिलने को कहा था और उसे हमेशा के लिए अपने घर से निकाल दिया था, हालाँकि बेहद शिष्टता के साथ,—"यह मैंने खुद वार्या से सुना"। लेकिन जब वार्या मिसेज़ येपांचिना के पास से आकर लड़कियों से विदा लेने गई उस वक़्त तक उन्हें कुछ भी नहीं मालूम था कि उसे घर में आने से मना कर दिया गया है और यह कि वह उनसे अन्तिम बार विदा ले रही थी।

"लेकिन तुम्हारी बहन सात बजे तो मुझसे मिलने आई थीं," प्रिंस ने आश्चर्य से पूछा।

"उसे आठ बजे या उससे कुछ ही देर पहले निकाला गया था," कोल्या ने कहा। "मुझे वार्या के लिए बहुत अफ़सोस है, और गान्या के लिए भी...मुझे इसमें शक नहीं कि वे लोग हमेशा कुछ न कुछ खिचड़ी पकाते रहते हैं, इसके बिना उनका काम ही नहीं चलता। मुझे यह पता नहीं लग सका कि वे लोग आख़िर करना क्या चाहते थे और मैं पता लगाना चाहता भी नहीं था। लेकिन, मेरे प्यारे नेक प्रिंस, मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि गान्या दिल का बहुत अच्छा है। अलबत्ता, कई मानों में वह बिलकुल गिरा हुआ इंसान है लेकिन दूसरी ओर उसमें कुछ ऐसी ख़ूबियाँ हैं जो तारीफ़ के क़ाबिल हैं। और मैं अपने आपको कभी माफ़ नहीं कर सकता कि मैंने उसे पहले ठीक से क्यों नहीं समझा।...मालूम नहीं वार्या के साथ इस झंझट के बाद मुझे उनके यहाँ जाते रहना चाहिए या नहीं। यह सच है कि शुरू ही से मैं अपने भाई और बहन से अलग एक स्वतन्त्र रवैया अपनाता रहा हूँ, फिर भी मुझे इसके बारे में सोचना पड़ेगा।"

"मैं नहीं समझता कि तुम्हें अपने भाई की वजह से इतना दुःखी होने की कोई ज़रूरत है," प्रिंस ने टिप्पणी की। "अगर नौबत यहाँ तक पहुँच चुकी है तो मिसेज़ येपांचिना उसे खतरनाक समझती होंगी, और इसका मतलब है कि उसने अभी तक कुछ उम्मीदें बाँध रखी हैं।"

"कैसी उम्मीदें ?" कोल्या ने विस्मय से पूछा। "आपका मतलब अग्लाया से तो नहीं है...जी नहीं, वह नामुमकिन है !"

प्रिंस कुछ नहीं बोला।

"आप भी बला के शक्की हैं, प्रिंस !" कोल्या ने दो मिनट बाद इतना और कहा। "मैंने कहा है कि इधर कुछ दिनों से आप ज़रूरत से ज़्यादा शक्की हो गए हैं। आप हर चीज़ पर अविश्वास करने लगे हैं और तरह-तरह की बातें सोचने लगे हैं...मैंने इस सिलसिले में 'शक्की' शब्द ठीक इस्तेमाल किया है न ?"

"मैं समझता तो हूँ, हालाँकि मुझे खुद नहीं मालूम।"

"लेकिन मैं 'शक्की' शब्द खुद वापस लेता हूँ," कोल्या अचानक ज़ोर से चिल्लाया। "मुझे एक और वजह समझ में आई है। आप शक्की नहीं हैं, आप ईर्ष्या करते हैं ! किसी गर्वीली लड़की के मामले में आप गान्या से बेहद जलते हैं !"

यह कहकर कोल्या उछलकर खड़ा हो गया और ठहाका मारकार इतने ज़ोर से हँसने लगा, जितने ज़ोर से शायद वह पहले कभी नहीं हँसा था। यह देखकर कि प्रिंस का चेहरा बिलकुल लाल हो गया था, कोल्या और भी ज़ोर से हँसा; वह इस विचार से बेहद खुश था कि अग्लाया की वजह से प्रिंस को ईर्ष्या थी, लेकिन यह देखते ही कि प्रिंस सचमुच दुःखी हो गया था वह चुप हो गया। इसके बाद वे घंटे या डेढ़ घंटे तक गम्भीरता से और चिन्तित होकर बातें करते रहे।

अगले दिन प्रिंस ने किसी ज़रूरी काम से सारा दिन पीटर्सबर्ग में बिताया। शाम को पाव्लोव्सक

जाते हुए स्टेशन पर उसकी मुलाक़ात जनरल येपांचिन से हो गई। जनरल साहब ने जल्दी से उसकी बाँह पकड़ ली और मानो अत्यधिक भयभीत होकर चारों ओर देखते हुए वह प्रिंस को अपने साथ फ़र्स्ट क्लास के एक डिब्बे में लेकर चले गए ताकि दोनों साथ सफ़र करें। वह किसी ज़रूरी मामले के बारे में बात करने को बेहद उत्सुक थे।

"पहली बात तो यह है, प्रिंस, कि मुझसे नाराज़ मत होना, और अगर मुझसे ऐसी कोई बात हो भी गई है तो उसे भूल जाओ। मुझे कल ही तुमसे मिलने आना चाहिए था, लेकिन मुझे ठीक से पता नहीं था कि मिसेज़ येपांचिना पर इसका क्या असर होगा।...घर पर तो बिलकुल...बिलकुल नरक बना हुआ है। ऐसा लगता है कि कोई स्फ़िन्क्स आकर वहाँ बस गया है; मैं तो कुछ भी समझ नहीं पाता। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मैं समझता हूँ कि तुम्हारा दोष सबसे कम है, हालाँकि इतना ज़रूर है कि तुम्हारी वजह से बहुत कुछ हुआ है। देखो, प्रिंस, परोपकारी होना अच्छी बात है, लेकिन ज़्यादा अच्छा भी नहीं। मुझे पूरा यक़ीन है कि अब तक तुम्हें ख़ुद इस बात का पता चल गया होगा। ज़ाहिर है, मुझे नेकी अच्छी लगती है, और मैं अपनी बीवी की इज़्ज़त करता हूँ, लेकिन..."

जनरल साहब बड़ी देर तक इसी तरह बातें करते रहे, लेकिन कमाल की बात थी कि उनके शब्दों में कोई तालमेल नहीं था। साफ़ ज़ाहिर था कि किसी ऐसी चीज़ ने उन्हें परेशान कर रखा था और उनका दिमाग़ उलझा दिया था जो उनकी समझ में बिलकुल ही नहीं आती थी।

"मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं है," उन्होंने आख़िरकार अपने आपको अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हुए कहा, "कि तुम्हारा इसमें कोई हाथ नहीं है, लेकिन कुछ दिन के लिए, मेहरबानी करके, हम लोगों से मिलने न आना...यह मैं एक दोस्त की तरह तुमसे कह रहा हूँ...जब तक हवा का रुख न बदल जाए। जहाँ तक रादोम्स्की का सवाल है," वह बेहद ताव में आकर चिल्लाए, "यह सब कुछ सिर्फ़ बदनाम करने की बात है, सरासर बेबुनियाद कीचड़ उछालनेवाली बात ! साज़िश है, जो कुछ हुआ है वह सरासर साज़िश है, सब कुछ तबाह कर देने और हमें आपस में लड़ा देने के लिए। देखो, प्रिंस, मैं कान में तुमसे एक बात कहता हूँ–अभी तक हम लोगों के और रादोम्स्की के बीच कोई भी बात नहीं हुई है, समझ गए ? हम लोग किसी भी तरह बँधे हुए नहीं हैं, लेकिन बातचीत हो सकती है, और सो भी जल्दी ही, शायद बहुत जल्दी ! और यह सब कुछ उसी पर पानी फेरने के लिए किया जा रहा है ! लेकिन क्यों, आख़िर किसलिए–मेरी तो समझ में नहीं आता ! वह कमाल की औरत है, सनकी औरत, और मैं उनसे इतना डरता हूँ कि मुझे रात को नींद नहीं आती। और क्या गाड़ी है उसकी, सफ़ेद घोड़े, अरे, बिलकुल chic[1] है, बिलकुल वैसी ही है जिसे फ़्रांसीसी में chic कहते हैं। वह किसने दी उसे ? मैं तुमसे साफ़ कहता हूँ, परसों मुझे रादोम्स्की पर शक हुआ था। लेकिन इसका सवाल ही पैदा नहीं होता, और अगर ऐसी बात है तो वह सब कुछ बिगाड़ देने पर क्यों तुली हुई है ? यही, यही तो सवाल है ! रादोम्स्की को अपने वास्ते [illegible]ने के लिए ? लेकिन मैं तुमसे एक बार फिर कहता हूँ, और मैं क़सम खाने को तैयार हूँ कि वह उसे नहीं जानता और हुंडियों की बात बिलकुल मनगढ़न्त है ! और किस ढिठाई से उसने [illegible] उसे पुकारा था ! यह साज़िश है, मैं तुमसे कहता हूँ, सरासर साज़िश है ! बात बिलकुल साफ़ है कि हमें नफ़रत के साथ इन सब बातों को ठुकरा देना चाहिए और हमारे दिल में रादोम्स्की की इज़्ज़त दुगनी हो जानी चाहिए। यही बात मैंने मिसेज़ येपांचिना से कही। और अब मैं तुम्हें [illegible] बात बताता हूँ जिसका सम्बन्ध निजी तौर पर मुझसे है–मुझे पक्का यक़ीन है कि

1 शान की बात। (फ़्रांसीसी)

वह यह सब कुछ मुझसे उस बात का बदला लेने के लिए कर रही है जो कुछ समय पहले हुई थी—याद है ?—हालाँकि मैंने कभी उसके साथ कोई भी ऐसा सलूक नहीं किया जिसका मुझे अफ़सोस हो। मैं यह सोचकर ही शरमा जाता हूँ। अब वह फिर आ गई है, और मैंने तो समझा था कि वह हमेशा के लिए ग़ायब हो गई। यह रोगोझिन कहाँ है ? कुछ बता सकते हो मुझे ? मैं तो समझता था कि वह बहुत पहले ही मिसेज़ रोगोझिना बन चुकी होगी।"

मतलब यह कि वह बिलकुल चकराए हुए थे। लगभग एक घंटे की उस पूरी यात्रा के दौरान सिर्फ़ वही बोलते रहे, सवाल पूछते रहे, खुद उनके जवाब देते रहे, प्रिंस का हाथ दबाते रहे, और किसी न किसी तरह उन्होंने उसे यक़ीन दिला ही दिया कि उस पर किसी भी तरह का शक करने की बात उनके दिमाग़ में भी नहीं आई थी। यही प्रिंस के लिए महत्त्वपूर्ण था। उन्होंने अन्त में उसे रादोम्स्की के चाचा के बारे में बताया जो पीटर्सबर्ग में किसी दफ़्तर के प्रधान थे। "बहुत ही ऊँचे ओहदे पर हैं वह, सत्तर साल के हैं, बहुत रंगीले स्वभाव के, खाने-पीने के शौक़ीन, और पहले बड़े ऐयाश...हा-हा ! मुझे मालूम है कि उन्होंने नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के बारे में सुना था और उसके बहुत पीछे भी पड़े थे। मैं अभी एक दिन उनसे मिलने गया था। वह किसी से मिल नहीं रहे थे, बीमार थे, लेकिन बहुत पैसेवाले हैं वह, बेहद पैसेवाले, बहुत असर-रसूखवाले और...भगवान उन्हें अभी कई साल और ज़िन्दा रखे, लेकिन, बात यह है, उनका सारा पैसा रादोम्स्की को मिलेगा।...हाँ, सचमुच...फिर भी मुझे डर लगता है ! मालूम नहीं क्यों...जैसे हवा में कोई बात है, कोई मुसीबत चमगादड़ की तरह पंख फड़फड़ाती हुई उड़ रही है, और मुझे डर लगता है, मुझे डर लगता है।..."

और तीन दिन बाद जाकर ही, जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, आख़िरकार प्रिंस और येपांचिन-परिवार के बीच बाक़ायदा सुलह-समझौता हो गया।

12

शाम के सात बजे थे। प्रिंस बाहर पार्क में टहलने जाने का इरादा कर रहा था। इतने में मिसेज़ येपांचिना अकेली बरामदे में आ पहुँचीं।

"पहली बात तो यह," उन्होंने कहना शुरू किया, "तुम इस ग़लतफ़हमी में न रहना कि मैं तुमसे माफ़ी माँगने आई हूँ। बकवास ! सारा कसूर तुम्हारा ही था।"

प्रिंस ने कुछ नहीं कहा।

"था तुम्हारा कसूर कि नहीं ?"

"उतना ही जितना कि आपका। लेकिन न आपने जान-बूझकर किया न मैंने। परसों मेरा ख़्याल था कि दोष मेरा था, लेकिन अब मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि ऐसा नहीं है।"

"तो यह है तुम्हारी कहानी ! अच्छी बात है। तो सुनो और बैठ जाओ, क्योंकि खड़े रहने का मेरा कोई इरादा नहीं है।"

दोनों बैठ गए।

"दूसरी बात यह कि उन दुष्ट लड़कों के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा जाएगा ! मैं बैठकर तुमसे दस मिनट बातें करना चाहती हूँ। मैं तुम्हारे पास कुछ जानकारी लेने आई हूँ (और तुम सोच रहे होगे कि मैं भगवान जाने किसलिए आई हूँ, है न ?), और अगर तुमने उन ढीठ लड़कों के बारे में कुछ भी कहा तो मैं उठकर चली जाऊँगी और फिर तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं रखूँगी।"

"अच्छी बात है," प्रिंस ने कहा।

"अच्छा, यह बताओ, दो-ढाई महीने पहले, ईस्टर के आस-पास, तुमने अग्लाया को कोई खत भेजा था ?"

"भ-भ-भेजा तो था।"

"किसलिए ? उस खत में तुमने क्या लिखा था ? दिखाओ मुझे वह खत !"

मिसेज़ येपांचिना की आँखों में आग धधक उठी और वह बेचैनी के मारे काँप-सी उठीं।

"खत मेरे पास नहीं है," प्रिंस ने आश्चर्यचकित होकर और बेहद घबराते हुए कहा। "अगर वह खत अभी तक सही-सलामत मौजूद है तो वह अग्लाया इवानोव्ना के पास ही होगा।"

"टालमटोल मत करो ! तुमने क्या लिखा था ?"

"मैं टालमटोल नहीं कर रहा हूँ, और मुझे किसी बात का डर भी नहीं है। और मैं कोई वजह भी नहीं समझता कि मैं खत क्यों न लिखूँ।..."

"जबान बन्द रखो ! तुम अपनी बात बाद में कह सकते हो। उस खत में क्या था ? शरमा क्यों रहे हो ?"

प्रिंस सोचता रहा।

"मेरी समझ में नहीं आता, मिसेज़ येपांचिना, कि आप क्या सोच रही हैं। मुझे तो बस इतना समझ में आ रहा है कि खत की बात आपको बहुत अच्छी नहीं लगी। यह तो आप भी मानेंगी कि मैं आपके सवाल का जवाब देने से इन्कार भी कर सकता था, लेकिन आपको सिर्फ़ यह यक़ीन दिलाने के लिए कि उस खत में कोई ऐसी बात नहीं थी जिसका मुझे डर हो और यह कि मुझे वह खत लिखने का कोई अफ़सोस नहीं है और मैं उसकी वजह से क़तई नहीं शरमा रहा हूँ (प्रिंस पहले से दुगना शरमा गया), उस खत में जो कुछ लिखा था वह मैं आपके सामने दोहराए देता हूँ, क्योंकि मेरा ख़्याल है कि मुझे उसका एक-एक शब्द याद है।"

यह कहकर प्रिंस ने खत को शब्दशः दोहराया।

"कैसी घुमाव-फिराव की बातें हैं। तुम्हारी राय में इस सब बकवास का मतलब क्या है ?" खत को बड़े ध्यान से सुनने के बाद मिसेज़ येपांचिना ने तीखे स्वर में पूछा।

"यह तो मुझे खुद नहीं मालूम। मैं तो बस इतना जानता हूँ कि यह सब कुछ मैंने सच्चे दिल से लिखा था। तब भरपूर जीवन और बड़ी-बड़ी उम्मीदों के क्षण अनुभव किए थे मैंने।"

"कैसी उम्मीदें ?"

"यह समझाना मुश्किल है, लेकिन उस तरह की उम्मीदें नहीं जैसी कि शायद इस वक़्त आपके दिमाग़ में हैं...मतलब यह कि भविष्य की उम्मीदें और, शायद इस खुशी का आभास कि यहाँ मैं अजनबी नहीं हूँ, परदेशी नहीं हूँ। अपने देश लौट आने की अचानक मुझे बहुत खुशी हुई थी। एक दिन सबेरे, जब चारों ओर सूरज की रोशनी फैली हुई थी, मैंने क़लम उठाया और उसे एक खत लिख दिया। उसे क्यों, यह मुझे नहीं मालूम। आप तो जानती ही हैं, कभी-कभी आदमी यह महसूस करता है कि उसके बग़ल में उसका कोई दोस्त होता, और, मैं समझता हूँ कि मुझे भी ऐसे ही किसी दोस्त की लालसा थी..." प्रिंस ने कुछ देर रुककर इतना और जोड़ दिया।

"तुम्हें मुहब्बत तो नहीं हो गई है न ?"

"न-न-नहीं। मैंने...उसे बहन मानकर लिखा था, नीचे मैंने दस्तख़त भी 'आपका भाई' लिखकर किया था।"

"तो यह बात है—जान-बूझकर। मैं समझी।"

"आपके सवालों का जवाब देना मेरे लिए बहुत मुश्किल है।"

"मैं जानती हूँ कि तुम्हें बहुत मुश्किल हो रही है, लेकिन मुझे इसकी ज़रा भी परवाह नहीं कि तुम्हें मुश्किल हो रही है या नहीं। सुनो, भगवान को साक्षी मानकर मुझे सच-सच बताओ- तुम मुझसे झूठ तो नहीं बोल रहे हो ?"

"जी नहीं।"

"क्या तुम सच कह रहे हो कि तुम्हें मुहब्बत नहीं है ?"

"मैं समझता तो यही हूँ।"

"अच्छा, तुम 'समझते' हो, क्यों ? क्या उस मोरी के कीड़े ने यह पत्र ले जाकर दिया था ?"

"मैंने निकोलाई ईवोल्गिन से कहा था..."

"मोरी का कीड़ा ! मोरी का कीड़ा !" मिसेज़ येपांचिना ने उसकी बात काटकर बहुत ज़ोर देते हुए कहा। "मैं निकोलाई ईवोल्गिन के बारे में कुछ भी नहीं जानती । मोरी का कीड़ा !"

"निकोलाई ईवोल्गिन..."

"बिलकुल मोरी का कीड़ा, मैं जो कहती हूँ तुमसे !"

"जी नहीं, मोरी का कीड़ा नहीं, बल्कि निकोलाई ईवोल्गिन," प्रिंस ने आखिरकार काफ़ी नरम आवाज़ में लेकिन दृढ़ता से जवाब दिया।

"अच्छी बात है, भले आदमी, अच्छी बात है ! मैं याद रखूँगी !"

एक मिनट तक वह अपनी उद्विग्नता को दबाए रहीं और फिर से सन्तुलित हो जाने की कोशिश करती रहीं।

"और 'ग़रीब सूरमा' का क्या मतलब है ?"

"मुझे बिलकुल नहीं मालूम। इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। मैं समझता हूँ कि किसी क़िस्म का मज़ाक़ है।"

"इन सब बातों का एक़दम पता लगा लेना अच्छा है ! कहीं ऐसा तो नहीं है कि उसे सचमुच तुमसे दिलचस्पी हो ? आख़िर, उसी ने तो तुम्हें 'अजूबा' और 'बौड़म' कहा था।"

"आपको यह बात मुझे नहीं बतानी चाहिए थी," प्रिंस ने लगभग कानाफूसी के स्वर में शिकायत करते हुए कहा।

"नाराज़ न हो। वह अपनी जिद्द की पक्की, झक्की और बिगड़ी हुई लड़की है—अगर कभी किसी आदमी से उसे मुहब्बत हुई तो वह यक़ीनन उसके तरह-तरह के नाम रखेगी और मुँह पर उसका मज़ाक़ उड़ाएगी। मैं भी ऐसी ही थी। बस, भले आदमी, मेहरबानी करके खुशी के मारे चारों ओर इसका ढिंढ़ोरा न पीटते फिरना। वह तुम्हारी नहीं है। मैं इस बात को मानने से इन्कार करती हूँ, और ऐसा कभी होगा भी नहीं ! मैं ऐसा इसलिए कह रही हूँ कि जो भी उपाय ज़रूरी हों तुम अभी से कर लो। और सुनो, क़सम खाकर कहो कि उस औरत से तुम्हारी शादी नहीं हुई है।"

"हे भगवान, मिसेज़ येपांचिना, क्या कह रही हैं आप ?" प्रिंस आश्चर्य से अपनी कुर्सी से उछल-सा पड़ा।

"लेकिन तुमने तो उससे लगभग शादी कर ही ली थी, है न ?"

"जी हाँ, लगभग कर ली थी," प्रिंस ने दबी जबान से कहा और अपना सिर झुका लिया।

"अच्छा, अगर ऐसा है, तो क्या तुम्हें उससे मुहब्बत है ? तुम यहाँ क्या उसके फेर में आए हो ? उस औरत के चक्कर में ?"

"मैं यहाँ शादी करने नहीं आया हूँ," प्रिंस ने जवाब दिया।

"क्या तुम दुनिया में किसी भी चीज़ को पवित्र मानते हो ?"

"जी हाँ।"

"तो क़सम खाकर कहो कि तुम उस औरत से शादी करने नहीं आए हो !"

"आप जिस चीज़ की भी कहें मैं क़सम खाने को तैयार हूँ !"

"मैं तुम्हारा विश्वास करती हूँ। अब तुम मुझे चूम सकते हो। आख़िरकार अब मैं चैन से साँस ले सकती हूँ। लेकिन इतना याद रखना—अग्लाया तुमसे प्यार नहीं करती; वक़्त रहते जो क़दम उठाना हो उठा लेना, क्योंकि मेरे जीते जी वह तुमसे शादी नहीं करेगी ! सुन लिया ?"

"सुन लिया।"

प्रिंस इतनी बुरी तरह झेंप गया कि वह मिसेज़ येपांचिना की आँखों में आँखें डालकर भी नहीं देख सका।

"एक बात न भूलना ! मैं दैवी वरदान की तरह तुम्हारी राह देख रही थी (तुम इस लायक़ नहीं थे !), मैंने रातों को कितने आँसू बहाए हैं—तुम्हारे लिए नहीं, तुम परेशान न हो। मेरा अपना दुःख है, वह बिलकुल ही अलग है, और हमेशा वही रहता है, हमेशा। लेकिन इसीलिए मैं इतनी बेचैनी से तुम्हारी राह देखती रही हूँ—मैं अब भी यक़ीन करती हूँ कि भगवान ने ख़ुद तुम्हें मेरे पास एक दोस्त और भाई के नाते भेजा है। मुझे बूढ़ी प्रिंसेस बेलोकोंस्काया के अलावा और किसी का सहारा ही नहीं है, और वह भी चली गई हैं, और इसके अलावा बुढ़ापे में वह बिलकुल भेड़ जैसी नासमझ हो गई हैं। अब मुझे सीधा जवाब दो—हाँ या नहीं—क्या तुम्हें मालूम है कि वह उस रात गाड़ी पर से क्यों चिल्लाई थी ?"

"मैं अपने सिर की क़सम खाकर कहता हूँ कि मेरा उससे कोई मतलब नहीं था और मुझे कुछ भी नहीं मालूम है !"

"अच्छी बात है, मैं तुम्हारी बात का यक़ीन किए लेती हूँ। उसके बारे में अब मेरे मन में भी दूसरे विचार हैं, लेकिन कल सबेरे तक मैं समझती थी सारी ज़िम्मेदारी रादोम्स्की की थी। कल सबेरे और उससे पहलेवाले पूरे दिन। लेकिन अब मैं उसकी बात मानने पर मजबूर हूँ—यह बिलकुल साफ़ है कि किसी नजर से, किसी चीज़ की बुनियाद पर (इसी बात के बारे में तो शक पैदा हो गया है। और यह कोई बहुत अच्छी बात है भी नहीं !) उसे बेवक़ूफ़ बनाकर उसका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है, लेकिन अग्लाया उससे शादी करनेवाली नहीं है, इतना मैं तुम्हें बता दूँ ! वह भले ही बहुत अच्छा आदमी हो, लेकिन होनेवाला यही है। पहले मुझे भी इसका पक्का भरोसा नहीं था, लेकिन अब मेरा मन बिलकुल पक्का हो गया है—'पहले मुझे क़ब्र में लिटाकर दफ़न कर दो, तब तुम मेरी बेटी की शादी कर सकते हो', मैंने आज जनरल साहब से यही कह दिया। इतना तो तुम देख ही रहे हो कि मैं तुम्हारे ऊपर भरोसा करती हूँ, देख रहे हो न ?"

"देख रहा हूँ और समझ रहा हूँ।"

मिसेज़ येपांचिना बेधती हुई नज़रों से प्रिंस को घूरती रहीं—शायद वह यह जानने के लिए बहुत बेचैन थीं कि रादोम्स्की के बारे में उन्होंने जो ख़बर सुनाई थी उसका उस पर क्या असर हुआ था।

"तुम्हें भला गव्रीला ईवोल्गिन के बारे में कुछ मालूम है ?"

"आपका मतलब है...मुझे बहुत कुछ मालूम है।"

"तुम्हें मालूम था या नहीं कि वह अग्लाया से सम्पर्क बनाए हुए है ?"

"इसका मुझे कोई पता नहीं," प्रिंस ने आश्चर्य से, बल्कि चौंककर जवाब दिया। "आपका कहने का मतलब है कि गान्या ईवोल्गिन अग्लाया इवानोव्ना के साथ सम्पर्क बनाए हुए है ? नामुमकिन !"

"अभी कुछ दिन पहले तक। उसकी बहन जाड़े-भर उसके लिए रास्ता साफ़ करती रही। वह चूहे की तरह इस काम में लगी रही।"

"मुझे यक़ीन नहीं आता," प्रिंस ने एक-दो क्षण तक उद्विग्न होकर सोचने के बाद दृढ़ स्वर में दोहराया। "अगर ऐसा होता तो मुझे यक़ीनन इसका पता होता।"

"क्या तुम उम्मीद करते थे कि वह खुद आकर तुम्हारे सीने पर सिर रखकर रोएगा और सारी बातें मान लेगा ? अरे, कैसे बुद्धू हो, निरे बुद्धू ! हर आदमी तुम्हें धोखा दे रहा है जैसे...जैसे...और तुम्हें उस पर भरोसा करते शरम नहीं आती ? इतना तुम्हारी समझ में नहीं आता कि वह हमेशा से तुम्हें धोखा देता रहा है ?"

"मुझे अच्छी तरह मालूम है कि कभी-कभी वह मुझे धोखा देता है," प्रिंस ने दबे स्वर में अनमनेपन से स्वीकार किया, "और उसे मालूम है कि यह बात मुझे मालूम है..." इतना और कहते-कहते वह रुक गया।

"यह जानते हुए भी उस पर भरोसा करना ! कमाल है ! लेकिन, मैं समझती हूँ कि तुम ऐसा ही करते रहोगे और इसमें किसी को ताज्जुब भी नहीं होना चाहिए। हे भगवान ! ऐसा आदमी पहले कभी हुआ है भला ? हे भगवान, हे भगवान ! और मालूम है तुम्हें कि इस कमबख्त गान्या और उस चुड़ैल वार्या ने उसका सम्पर्क नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से भी करा दिया है ?"

"किसका ?" प्रिंस ने चिल्लाकर पूछा।

"अग्लाया का।"

"मुझे यक़ीन नहीं आता ! ऐसा हो ही नहीं सकता ! किसलिए ?"

वह अपनी कुर्सी पर से उछल पड़ा।

"यक़ीन तो मुझे भी नहीं आता, हालाँकि इसका सबूत मौजूद है। उफ़, वह बड़ी विचित्र लड़की है, अद्भुत लड़की है, पागल लड़की है ! बहुत ही दुष्ट लड़की है, दुष्ट, बिलकुल दुष्ट ! मैं हज़ार साल तक यही बात कहती रहूँगी ! मेरी सभी बेटियाँ अब ऐसी ही हो गई हैं, वह पूरी आवारागर्द भी, लेकिन यह तो किसी के बस की ही नहीं है। फिर भी मुझे इस पर यक़ीन नहीं आता। शायद इसलिए कि मैं यक़ीन करना चाहती नहीं," उन्होंने मानो अपने आपसे इतना और कहा। "तुम हम लोगों से मिलने क्यों नहीं आते ?" वह अचानक एक बार फिर प्रिंस की ओर मुड़ीं। "पिछले तीन दिन से आए क्यों नहीं ?" उन्होंने बड़ी अधीरता से दूसरी बार कहा।

प्रिंस उन्हें इसकी वजहें समझाने लगा, लेकिन उन्होंने उसकी बात बीच ही में काट दी।

"हर आदमी तुम्हें बेवक़ूफ़ समझता है और धोखा देता है ! तुम कल शहर गए थे, और मैं शर्त बदकर कहने को तैयार हूँ कि तुमने उस लुच्चे के सामने घुटने टेककर उससे ख़ुशामद की होगी कि वह तुम्हारे दस हज़ार ले ले !"

"भगवान क़सम, नहीं। मैंने कभी ऐसा सोचा भी नहीं। मैं उससे मिला भी नहीं और, इसके अलावा वह लुच्चा नहीं है। मेरे पास उसने एक ख़त भेजा है।"

"मुझे दिखाओ वह ख़त !"

प्रिंस ने अपने ब्रीफ़-केस में से एक पर्चा निकालकर मिसेज़ येपांचिना को दे दिया। उस पर्चे में लिखा था—

"प्रिय महोदय,

दुनिया की नज़रों में मुझे इस बात का कोई अधिकार नहीं है कि मेरी भी कोई मर्यादा हो।

दुनिया की राय में इसके लिए मैं बहुत ही तुच्छ हूँ। लेकिन यह तो दुनिया की राय है, आपकी नहीं। मुझे पूरा यक़ीन है, जनाब, कि आप दूसरे लोगों से बेहतर हैं। इस मामले में मैं दोक्तोरेंको की बात नहीं मानता और मेरी राय उससे अलग है। मैं आपसे कभी एक दमड़ी भी नहीं लूँगा, लेकिन आपने मेरी माँ की मदद की है, और उसके लिए मुझे आपका एहसान मानना ही पड़ेगा, हालाँकि मैं इसे एक कमज़ोरी समझता हूँ। बहरहाल, मैं आपको बिलकुल दूसरी ही नज़र से देखता हूँ और इसे अपना फर्ज समझता हूँ कि यह बात आपको बता दूँ। और इतना कहने के बाद, मैं यह बता देना चाहता हूँ कि हम दोनों के बीच अब किसी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं रह सकता।

अंतीप बुर्दोव्स्की।

पुनश्चः दो सौ से जितने रूबल कम थे वे आपको कुछ समय बाद लौटा दिए जाएँगे।"

"कैसी सरासर बकवास है !" मिसेज़ येपांचिना ने पर्चा दूर फेंकते हुए एलान किया। "इस लायक़ भी नहीं था कि पढ़ा जाए ! तुम खींसे किस बात पर निकाल रहे हो ?"

"यह तो आप मानेंगी कि इसे पढ़कर खुशी तो आपको भी हुई होगी।"

"क्यों हुई होगी ? घमण्ड में चूर, वह बकवास करनेवाला ! तुम्हें नहीं दिखाई देता कि वे सब अभिमान और घमण्ड से पागल हो गए हैं ?"

"यह तो है, लेकिन उसने माना है कि उसकी ग़लती थी, उसने दोक्तोरेंको से नाता तोड़ लिया है, और उसका घमण्ड जितना ही बढ़ता जाता है उतनी ही ज़्यादा उसे अपने घमण्ड की क़ीमत चुकानी पड़ती होगी। अरे, आप भी कैसी बच्ची हैं, मिसेज़ येपांचिना !"

"तुम्हारा यह तो जी नहीं चाह रहा है कि मैं तुम्हारे कान उमेठूँ, क्यों ?"

"क्यों, मेरा क्यों जी चाहने लगा। क्योंकि आप उस पर्चे को पढ़कर खुश हुई हैं, लेकिन आप उसे छिपाती हैं। आप अपनी भावनाओं पर इतनी लज्जित क्यों हैं ? हर मामले में आपका यही हाल है।"

"खबरदार, जो अब कभी मेरे घर पर तुम्हारी सूरत दिखाई दी !" मिसेज़ येपांचिना अपनी जगह से उछलकर चिल्लाईं और गुस्से के मारे उनका रंग पीला पड़ गया। "अब कभी मुझे तुम्हारी सूरत दिखाई न दे !"

"तीन ही दिन में आप फिर आएँगी और मुझसे कहेंगी कि मैं मिलने आया करूँ।...क्यों, आपको अपने आप पर शरम नहीं आती ! ये आपकी सबसे अच्छी भावनाएँ हैं, फिर आप उन पर लज्जित क्यों हैं ? आप बस अपने आपको तकलीफ़ पहुँचाती हैं।"

"मैं मर जाऊँगी लेकिन तुमसे आकर मिलने को कभी नहीं कहूँगी ! मैं तुम्हारा नाम तक भूल जाऊँगी ! मैं उसे भुला भी चुकी हूँ ! !"

वह तेजी से प्रिंस के पास से चली गईं।

"आपके कहे बिना भी मुझसे आपके यहाँ आने को मना कर दिया गया है !" प्रिंस ने उनके पीछे चिल्लाकर कहा।

"क्या-आ ? किसने मना किया है ?"

वह पलक झपकते मुड़ीं, जैसे किसी ने सुई चुभो दी हो; जवाब देने में प्रिंस दुविधा में पड़ गया। प्रिंस ने अचानक महसूस किया कि अनजाने ही उससे बहुत बड़ी भूल हो गई थी।

"किसने मना किया है तुम्हें ?" मिसेज़ येपांचिना क्रोधावेश से चिल्लाईं।

"अग्लाया इवानोव्ना..."

"क़ब ? बोलो, साफ़-साफ़ बताओ ! ! !"

"उन्होंने आज सबेरे कहला भेजा था कि मैं फिर कभी जाकर आपसे मिलने की हिम्मत न करूँ !"

मिसेज़ येपांचिना ऐसे खड़ी रहीं मानो पथरा गई हों, लेकिन वह दिमाग़ पर पूरा ज़ोर देकर सोच रही थीं।

"क्या भेजा था ? किसे भेजा था ? उस मोरी के कीड़े के हाथ ? ज़बानी ?" वह अचानक फिर चिल्ला पड़ीं।

"मुझे एक पर्चा मिला था," प्रिंस ने कहा।

"कहाँ है वह ? लाओ मुझे ! फ़ौरन !"

प्रिंस ने एक क्षण सोचा, लेकिन फिर अपनी वास्कट की जेब से एक मुड़ा हुआ कागज़ का टुकड़ा निकाला जिस पर लिखा था—

"प्रिंस ! जो कुछ हो चुका है उसके बाद भी अगर आप हमारे घर आकर मुझे आनन्द में डाल देना चाहें, तो मैं आपको यक़ीन दिला दूँ कि आप मुझे उन लोगों में नहीं पाएँगे जो आपसे मिलकर खुश होंगे।

अग्लाया येपांचिना।"

मिसेज़ येपांचिना एक मिनट सोचती रहीं; फिर वह अचानक प्रिंस पर टूट पड़ीं और उसकी बाँह पकड़कर उसे अपने पीछे घसीट ले चलीं।

"चलो ! फ़ौरन चलो ! अभी, इसी मिनट !" उन्होंने असाधारण उत्तेजना और अधीरता के आवेश में चिल्लाकर कहा।

"लेकिन आप मुझे एक ऐसे ख़तरे में डाल रही हैं..."

"किस ख़तरे में ? भोले बुद्धू ! तुम्हारी हरकतें तो ऐसी हैं, जैसे तुम मर्द हो ही नहीं ! ख़ैर, मैं अब खुद अपनी आँखों से देखूँगी।..."

"लेकिन मुझे कम से कम अपनी हैट तो ले लेने दीजिए।..."

"यह रही तुम्हारी फटीचर हैट, चलो ! सलीक़े का हैट भी खरीद नहीं सकते ! उसने ऐसा किया...उसने ऐसा वह सब कुछ हो जाने के बाद किया...उसने गुस्से में आकर ऐसा किया," एक क्षण के लिए भी प्रिंस की बाँह छोड़े बिना उसे अपने पीछे घसीटकर लाते हुए मिसेज़ येपांचिना बुदबुदाईं। "आज सबेरे मैंने तुम्हारा पक्ष लिया था। मैंने ज़ोर से कहा था कि तुम हो बेवक़ूफ़ कि हम लोगों से मिलने नहीं आते...वरना वह ऐसी नासमझी की बात न लिखती ! बहुत ही बेजा पर्चा है ! भले घर की पली-बढ़ी, बेहद समझदार लड़की के लिए बहुत ही बेजा है ऐसा करना ! हुँह !" वह कहती रहीं, "ज़रूर वह खुद तुम्हारे न आने पर झुँझलाई हुई होगी, बस उसकी समझ में यह नहीं आया कि एक बौड़म को ऐसी बात नहीं लिखनी चाहिए, क्योंकि वह उसका हूबहू वही मतलब लगा लेगा जो लिखा है, जैसा कि उसने किया भी। जो कुछ मैं कह रही हूँ वह तुम सुन क्यों रहे हो ?" यह महसूस करके कि उन्होंने सारा भेद खोल दिया था वह चिल्लाकर बोलीं। "उसे तुम जैसे एक मसखरे की ज़रूरत है। बहुत दिन हो गए उसने ऐसा कोई देखा नहीं; इसी लिए वह तुमसे मिलना चाहती है ! मैं बहुत खुश हूँ, इसलिए खुश हूँ कि अब वह तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएगी ! बहुत खुश हूँ ! तुम हो ही इस लायक़। और यह काम उसे खूब आता है—हाँ, यह काम वह जानती है !"

भाग : 3

•

1

लोग हमेशा शिकायत करते रहते हैं कि हमारे यहाँ व्यावहारिक आदमी नहीं हैं; वे कहते हैं कि हमारे पास, मिसाल के लिए, सैकड़ों राजनीतिज्ञ और सैकड़ों जनरल हैं; कि आजकल हम जितने भी चाहें उतने हर तरह के व्यापार-प्रबन्धक मिल जाएँगे, लेकिन हमारे पास व्यवहारकुशल लोग नहीं हैं। कम से कम हर आदमी की शिकायत यही है कि वे कहीं मिलते नहीं। यहाँ तक दावा किया जाता है कि हमारी कुछ रेलवे लाइनों पर कोई भी कुशल कर्मचारी नहीं हैं; कहा जाता है कि जहाज की कम्पनी के लिए कमोबेश ढंग के प्रशासन कर्मचारी मिलना बिलकुल असम्भव है। आप ट्रेनों के टकराने की, किसी नई रेलवे लाइन पर ज़ाती हुई ट्रेन के नीचे पुल ढह जाने की ख़बरें सुनते हैं; फिर किसी ट्रेन के बर्फ़ के नीचे दबे पड़े रहने के बारे में पढ़ने को मिलता है—वह कुछ ही घंटे बाद पहुँचनेवाली थी और पाँच दिन तक बर्फ़ में दबी पड़ी रही। कहीं सैकड़ों टन माल भेजे जाने से पहले दो-तीन महीने तक पड़ा सड़ता रहता है, और किसी दूसरी जगह से ख़बर मिलती है (हालाँकि उस पर आसानी से यक़ीन तो नहीं आता) कि रेलवे के किसी अधिकारी ने—यानी किसी रेलवे इंस्पेक्टर ने—एक व्यापारी के मुंशी की नाक पर घूँसा जड़ दिया, जो अपना माल भिजवाने के लिए उसके पीछे पड़ा हुआ था, और सचमुच उसने अपनी इस प्रशासनात्मक कार्रवाई को यह कहकर उचित ठहराने की कोशिश की कि "वह जोश में आ गया था"। ऐसा लगता है कि सरकारी दफ़्तर इतने ज़्यादा हैं कि उनके बारे में सोचकर ही आदमी का दिमाग़ भन्ना जाता है; हर आदमी सरकारी नौकर रह चुका है, हर आदमी सरकारी नौकर है, हर आदमी सरकारी नौकरी करना चाहता है; ऐसी हालत में यह कैसे मुमकिन है कि ऐसे बढ़िया लोगों को लेकर कोई जहाज की कम्पनी चलाने के लिए अच्छा ख़ासा प्रशासन कर्मचारी मण्डल न बनाया जा सके ?

कभी-कभी इस सवाल का बहुत सीधा-सादा जवाब दिया जाता है—सचमुच इतना सीधा कि उस सफ़ाई पर यक़ीन करना मुश्किल हो जाता है। कहा जाता है कि यह सच है कि हमारे देश में हर आदमी या तो सरकारी नौकर है, या रह चुका है, और बेहतरीन जर्मन नमूने के अनुसार ऐसा पिछले दो सौ साल से होता रहा है, दादा से लेकर पोते तक, लेकिन मुसीबत तो यह है कि हमारे सरकारी नौकर खुद दुनिया के सबसे अव्यावहारिक लोग हैं, और नौबत यहाँ तक पहुँच गई है कि अभी कुछ ही समय पहले तक सरकारी नौकर अमूर्त्तता और व्यावहारिक ज्ञान के अभाव को उनका बड़ा गुण और योग्यता मानते थे। लेकिन हमारा इरादा सचमुच सरकारी नौकरों की चर्चा करना नहीं था; हमारा अभिप्राय केवल व्यावहारिक मनुष्यों के बारे में चर्चा करना था। इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि हमारे देश में संकोच और निजी उत्प्रेरणा के सर्वथा अभाव को हमेशा व्यावहारिक आदमी की मुख्य और सबसे अच्छी पहचान समझा गया है—और अब भी समझा गया

है। लेकिन अगर इस तरह की राय को आरोप समझा जा सकता है तो सारा दोष हम अपने आपको क्यों देते हैं ? मौलिकता के अभाव को अनन्तकाल से सारी दुनिया में समझदार, कारोबारी और व्यावहारिक आदमी का मुख्य लक्षण और उसका सबसे सराहनीय गुण समझा जाता रहा है, और कम से कम निन्यानवे प्रतिशत लोगों की (और यह भी न्यूनतम अनुमान है) हमेशा से यह राय रही है, और शायद सौ में से एक आदमी उस सवाल को किसी दूसरे ढंग से देखता है और हमेशा से देखता रहा है।

आविष्कारकों और मेधावी लोगों को लगभग हमेशा ही उनके कार्यकाल के आरम्भ में (और अकसर अन्त में भी) मूर्ख समझा जाता रहा है—इस घिसी-पिटी बात से सभी लोग बहुत अच्छी तरह परिचित हैं। अगर, मिसाल के लिए, बीसियों साल तक हर आदमी अपना पैसा म्युनिसिपल ऋण बैंक में रखता आया था और उसमें चार प्रतिशत सूद पर अरबों रुपया लगा दिया गया था, तो मानी हुई बात है कि जब म्युनिसिपल ऋण बैंकों का अस्तित्व समाप्त हो गया और हर आदमी को बस अपनी निजी पहलक़दमी का सहारा रह गया तो इन करोड़ों रुपयों के स्वाभाविक हिस्से का सट्टे बाजार की भगदड़ में डूब जाना और चालबाजों के हाथों में पहुँच जाना लाज़िमी था, और सच पूछिए तो शिष्टता और शालीनता का तक़ाजा भी यही था। जी हाँ, सबसे बढ़कर शालीनता का। क्योंकि शालीनतापूर्ण संकोच को और मौलिकता के काफ़ी अभाव को अगर अभी तक आमतौर पर समझदार और सम्मानित लोगों का जन्मजात गुण समझा जाता रहा है तो इसे इतने आकस्मिक रूप से बदल देना बहुत ही असम्मानित और यहाँ तक कि अशोभन बात होगी। मिसाल के लिए, कौन प्यार करनेवाली और ममतामयी माँ ऐसी होगी जो अपने बेटे या बेटी को युगों से चली आ रही लीक से तनिक भी भटकते देखकर आशंका से चकित और पीड़ित न हो। "नहीं, अच्छा यही है कि यह मौलिकता के बिना ही सुखी रहे और आराम से रहे," हर माँ अपने बच्चे को पालने में झुलाकर सुलाते समय यही सोचती है। और अनन्तकाल से हमारे बच्चों की आयाएँ बच्चों को पालने में झुलाकर सुलाते समय यही गाती रही हैं—"मेरे बच्चे, सुखी रहे तू, धनवान बने और खूब उड़ाए मौज, आगे चलकर जरनैल बने जिसके नीचे इतनी फ़ौज !" तो हमारी धाएँ भी जनरल के पद को रूसी के लिए सुख की चरम सीमा समझती थीं, और इसीलिए यह शान्तिपूर्ण और सन्तुष्ट आनन्द का सबसे लोकप्रिय राष्ट्रीय आदर्श है। और सच तो यह है कि अपनी परीक्षाओं में पास होने और पैंतीस साल सरकारी नौकरी करने के फ़ौरन बाद हमारे देश में कौन ऐसा होगा जो जनरल न बन जाए और म्युनिसिपल ऋण बैंक में काफ़ी बड़ी रक़म जमा न कर ले ? रूसी इसी तरह लगभग कोई कोशिश किए बिना समझदार और व्यवहारकुशल आदमी की हैसियत पा जाता है। सच तो यह है कि हमारे देश में बस मौलिक, यानी बेचैन आदमी ही ऐसा होता है, जो कभी जनरल नहीं बन सकता। शायद यह बात सोलहों आने सच न हो, लेकिन वैसे यह सच मालूम होता है, और व्यवहारकुशल आदमी की अपनी परिभाषा में हमारा समाज पूरी तरह ठीक साबित हुआ है। लेकिन हम अपने मुख्य विषय से काफ़ी दूर भटक आए हैं—हम येपांचिन-परिवार के अपने मित्रों के बारे में बस व्याख्या के कुछ शब्द कहना चाहते थे। येपांचिन-परिवार के लोग, या कम से कम उनमें से वे जो अधिक विचारशील थे, अपने परिवार के सामान्य लक्षण के निरन्तर शिकार रहते थे, जो उन गुणों के सर्वथा विपरीत था जिनकी हम अभी चर्चा करते रहे हैं। बात को साफ़-साफ़ समझे बिना ही (क्योंकि उसे समझना मुश्किल होता है), वे कभी-कभी यह शक करने लगते थे कि उनके परिवार में हर चीज़ वैसी नहीं थी जैसी कि होनी चाहिए। बाक़ी हर परिवार में हर चीज़ कितनी सुचारु होती थी, जबकि उनके परिवार में हर चीज़ खुरदरी थी; बाक़ी सब लोग

बेगो लोग, पर चलते थे, जबकि वे हमेशा उससे हट-हट जाते थे; बाक़ी सब लोग मर्यादित रूप से चलते होते थे, जबकि वे लोग ऐसे नहीं थे। मिसेज़ येपांचिना, यह सच है, ज़रूरत से कुछ ज़्यादा ही परेशान हो जाती थीं, लेकिन उनकी भीरुता में दुनियादारी की वह मर्यादित भीरुता नहीं थी जिसके लिए वे लालायित रहते थे। फिर भी, शायद मिसेज़ येपांचिना ही अकेली ऐसी थीं जो चिन्तित रहती थीं—लड़कियाँ हालाँकि चालाक थीं और बात को उसके प्रसंग में समझती थीं, लेकिन वे अभी बहुत कम-उम्र थीं, और जनरल साहब हालाँकि बात को समझ लेते थे (बहुत कोशिश करने के बाद ही), लेकिन जब कोई कठिनाई सामने आती थी तो वह बस "हुँः" कहकर रह जाते थे, और आख़िर में अपनी बीवी पर ही पूरी तरह भरोसा करते थे। इसलिए जिम्मेदारी पूरी तरह उन्हीं पर रहती थी। ऐसा नहीं था कि उनका परिवार, मिसाल के लिए, किसी भी तरह अपनी पहलक़दमी के लिए उल्लेखनीय था और न ही वह किसी मौलिकता की सजग आकांक्षा की वजह से घिसे-पिटे रास्ते से अलग हटता था, जो कि सचमुच बहुत ही बेजा बात होती। जी नहीं ! दरअसल इस तरह की कोई बात नहीं थी—यानी सचेतन रूप से निर्धारित किया गया कोई लक्ष्य नहीं था—फिर भी इसके बावजूद पूरा येपांचिन-परिवार हालाँकि हर मामले में बहुत ही इज़्ज़तदार था, लेकिन वह वैसा नहीं था जैसा कि हर इज़्ज़तदार परिवार को होना चाहिए। इधर हाल में मिसेज़ येपांचिना में सारा दोष सिर्फ़ अपने आपको और अपने 'दुर्भाग्यपूर्ण' स्वभाव को देने की प्रवृत्ति पैदा हो गई थी, जिसकी वजह से उनकी व्यथा और भी बढ़ गई थी। वह हरदम अपने आपको धिक्कारती रहती थीं कि वह "एक नादान, फूहड़, सनकी औरत" थीं और बीमारी की हद तक शक्की मिजाज होने की वजह से वह हमेशा चिन्तित रहती थीं, उनकी कुछ समझ में ही नहीं आता था कि क्या करें, मामूली से मामूली कठिनाइयों का भी वह हल नहीं खोज पाती थीं, और वह हर दुर्भाग्य को हमेशा बढ़ा-चढ़ाकर देखती थीं।

अपनी कहानी के शुरू में ही हमने इस बात का उल्लेख किया था कि येपांचिन-परिवार के लोगों का हर आदमी बहुत सम्मान करता था। यहाँ तक कि जनरल साहब का भी, जो किसी गुमनाम घराने में पैदा हुए थे, हर जगह बहुत सम्मान किया जाता था। सचमुच वह थे भी सम्मान पाने के योग्य, सबसे पहले तो इसलिए कि वह धनवान आदमी थे और समाज में उनका स्थान काफ़ी ऊँचा था, और दूसरे इसलिए कि वह बेहद भले आदमी थे, हालाँकि उनकी बुद्धि कुछ ख़ास तेज नहीं थी। सार्वजनिक जीवन के हर व्यक्ति के लिए न भी सही, कम से कम हर उस आदमी के लिए तो, जिसने पैसा बनाने की बात अपने मन में ठान ली हो, पहले इस शर्त को पूरा करना ज़रूरी है ही कि उसकी बुद्धि कुछ मन्द हो। और आख़िरी बात यह कि जनरल साहब अत्यन्त शिष्ट और विनम्र आदमी थे, वह जानते थे कि क़ब चुप रहना उचित होगा, और साथ ही वह इस बात को भी नहीं बर्दाश्त करते थे कि कोई उनकी बेइज़्ज़ती करे—और यह भी सिर्फ़ इसलिए नहीं कि उनका ओहदा बहुत ऊँचा था, बल्कि इसलिए भी कि वह अपने आपको बहुत ईमानदार और इज़्ज़तदार आदमी समझते थे। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि उनकी पीठ पर एक बहुत ही ताक़तवर आदमी का हाथ था। जहाँ तक मिसेज़ येपांचिना का सवाल है, वह जैसा कि पहले बताया जा चुका है, अच्छे परिवार की थीं, हालाँकि हम लोगों के बीच इस बात को बहुत महत्त्व नहीं दिया जाता, जब तक कि अच्छी पहुँच भी न हो। लेकिन उन्होंने ऐसी पहुँच भी हासिल कर ली थी कि उनकी इज़्ज़त की जाने लगी थी और अन्त में उन्हें ऐसे महत्त्वपूर्ण लोग पसन्द करने लगे थे कि यह स्वाभाविक ही था कि सभी लोग उनकी इज़्ज़त और स्वागत-सत्कार करें। इसमें कोई शक नहीं कि उनकी सारी चिन्ताएँ बेबुनियाद थीं, कि उनकी कोई ठोस वजह नहीं थी और उन्हें बेतुकेपन

की हद तक बढ़ा-चढ़ा दिया गया था; लेकिन अगर आपकी नाक या माथे पर मस्सा हो तो आप अनायास ही यह सोचने लगते हैं कि दुनिया में किसी को इसके अलावा कोई और काम ही नहीं है कि आपके मस्से को घूरता रहे, उस पर हँसता रहे, और आपकी निन्दा करता रहे, चाहे आपने अमरीका की खोज ही क्यों न की हो। इसमें भी कोई शक नहीं हो सकता कि समाज में मिसेज़ येपांचिना को सचमुच 'सनकी' समझा जाता था, लेकिन इसकी वजह से उनकी बेहद इज़्ज़त किए जाने में कोई रुकावट नहीं पड़ती थी—मुसीबत यह थी कि आजकल मिसेज़ येपांचिना ने इस बात पर यक़ीन करना छोड़ दिया कि उनकी इज्जत की जाती थी। अपनी बेटियों को देखकर उन्हें यह शंका सताने लगती थी कि वह निरन्तर उनकी भावी सम्भावनाओं को नष्ट करती जा रही थीं, कि उनका चरित्र हास्यास्पद, निन्दनीय और असह्य था, जिसके लिए, जाहिर है, वह हमेशा अपनी बेटियों और अपने पति को ही दोषी ठहराती थीं, उनसे कलह करतीं दिन रात लड़ती रहती थीं, और साथ ही उन्माद की हद तक और लगभग भावावेग के साथ उनसे प्यार भी करती थीं।

जिस बात की वजह से वह सबसे अधिक चिन्तित रहती थीं वह यह भय था कि उनकी बेटियाँ लगभग उनकी जैसी ही 'सनकी' होती जा रही थीं, और यह कि दुनिया में ऐसी कोई लड़कियाँ न हैं और न होनी चाहिए। "ये नाशवादी होती जा रही हैं, इसका मुझे पूरा यक़ीन है।" वह हर क्षण अपने आपसे यह बात दोहराती रहती थीं। पिछले साल से, और ख़ासतौर पर इधर कुछ समय से, इस निराशापूर्ण धारणा का शिकंजा उन पर अधिकाधिक कसता गया था। "असली बात तो यह कि वे शादी क्यों नहीं कर लेतीं ?" वह अपने आपसे पूछती रहती थीं। "अपनी माँ को तकलीफ़ देना, बस इसी के लिए वे जिन्दा हैं, और सच पूछो तो है भी यही, यह सब कुछ उन नए ढंग के विचारों का नतीजा है, इसकी जड़ वह कमबख़्त नारी स्वातंत्र्य है। भला इससे पहले अग्लाया के दिमाग़ में भला यह बात कभी आती कि अपने अच्छे भले बाल काट डाले ? (अरे, जब मैं जवान थी तब मेरे बाल तो वैसे कभी हुए ही नहीं !) उसके हाथ में कैंची थी, और मुझे उसके सामने घुटने टेककर गिड़गिड़ाना पड़ा तब कहीं जाकर वह मानी ! मैं तो दावे के साथ कहती हूँ कि उसने ऐसा सिर्फ़ जलाने के लिए किया, सिर्फ़ अपनी माँ को दुःख पहुँचाने के लिए, क्योंकि वह बहुत ही दुष्ट लड़की है, ज़िद्दी और लाड़ में बिगड़ी हुई, लेकिन सबसे बढ़कर वह दुष्ट है, दुष्ट, दुष्ट ! और क्या उस मोटी अलेक्सान्द्रा ने भी अपनी चोटियाँ काट डालने की कोशिश नहीं की थी, लेकिन जलाने के लिए नहीं, सनक की वजह से नहीं, बल्कि बिलकुल सच्चे दिल से, बेवक़ूफ़ तो है ही वह, क्योंकि अग्लाया ने उसे समझा दिया था कि बालों के बिना उसे नींद अच्छी आएगी और उसके सिर में दर्द नहीं होगा ? और पिछले पाँच बरसों में उनके लिए शादी के कितने अनगिनत पैगाम आ चुके हैं ! और उनमें से कुछ तो बहुत ही अच्छे लोग थे, उनमें से कुछ, सचमुच, कमाल के लाजवाब लोग थे ! ये लोग इन्तज़ार किस चीज़ का कर रही हैं ? वे शादी क्यों नहीं कर डालतीं ? सिर्फ़ अपनी माँ को गुस्सा दिलाने के लिए—और कोई वजह है ही नहीं इसकी ! कोई और वजह नहीं—कोई भी नहीं !"

आख़िरकार उनके माँ के हृदय को भी तसल्ली मिल ही गई। बहरहाल उनकी एक बेटी अदेलईदा तो घर बसा लेगी—"कम से कम एक का बोझ तो कम होगा !" जब भी मिसेज़ येपांचिना से इस विषय पर अपनी राय देने को कहा जाता था तो वह यही कहती थीं (अपने आपसे बातें करते हुए वह इस बात को कहीं अधिक नरमी से कहती थीं)। और इस सारे मामले का बन्दोबस्त कितने बढ़िया ढंग से, कितनी अच्छी तरह हो गया था ! समाज में भी इस बात की चर्चा बड़े सम्मान के साथ की जाती थी। अच्छी ख्याति और दौलत का मालिक, एक प्रिंस, भला आदमी, और ऊपर

से उसने उसकी बेटी का प्यार भी हासिल कर लिया था। इससे अच्छी बात और क्या हो सकती थी ? लेकिन उन्हें अदेलईदा के बारे में अपनी बाक़ी दोनों बेटियों के मुकाबले कम चिन्ता रही थी, हालाँकि कला की ओर उसके झुकाव की वजह से मिसेज़ येपांचिना का सदा शंकाओं में घिरा रहनेवाला हृदय कभी-कभी बहुत परेशान हो उठता था। "मगर भगवान की कृपा से वह बहुत खुशमिजाज और समझदार है—वह बिलकुल ठीक-ठाक रहेगी !" वह अपने आपको तसल्ली देतीं। तीनों में सबसे अधिक चिन्तित वह अग्लाया के कारण रहती थीं। जहाँ तक सबसे बड़ी बेटी का सवाल था, मिसेज़ येपांचिना खुद नहीं जानती थीं कि उसके बारे में चिन्तित रहना चाहिए कि नहीं। कभी-कभी वह अनायास ही सोचतीं कि उस लड़की ने "अपने मौक़े खो दिए थे"—वह पच्चीस साल की हो गई थी और हमेशा कुआँरी रहेगी। और "सो भी ऐसी सुन्दर लड़की !" रात को जब अलेक्सान्द्रा सुख की नींद सोती रहती थी तब मिसेज़ येपांचिना उसके बारे में सोच-सोचकर रोती तक थीं। "लेकिन उसे हो क्या गया है—क्या वह नाशवादी है या सिर्फ़ बेवक़ूफ़ है ?" वह बेवक़ूफ़ नहीं थी, इसमें मिसेज़ येपांचिना को भी कोई शक नहीं था—वह अलेक्सान्द्रा की राय की बड़ी कद्र करती थीं और अकसर उसकी सलाह लेती थीं। लेकिन वह कुछ हद तक बिलकुल "नादान गाय" थी, इसमें उन्हें एक क्षण के लिए भी सन्देह नहीं हुआ था—"वह इतने निश्चिंत भाव से शान्त है कि उसे उकसाना बिलकुल असम्भव है ! लेकिन 'नादान गाय' भी तो बिलकुल शान्त नहीं होती—उफ़्फ़ोह ! मेरी तो बिलकुल समझ में ही नहीं आतीं इन लोगों की बातें !" मिसेज़ येपांचिना के दिल में अलेक्सान्द्रा के लिए दयापूर्ण सहानुभूति की एक रहस्यमयी भावना थी, उससे भी अधिक जितनी कि अग्लाया के लिए थी, जिसे वह सबसे अच्छा समझती थीं। लेकिन उनके कटुता-भरे विस्फोटों (उनकी ममता और सहानुभूति अधिकांश इन्हीं विस्फोटों के रूप में व्यक्त होती थीं), उनके तानों, और 'नादान गाय' जैसी उपाधियों में अलेक्सान्द्रा को बस मज़ा आता था। कभी-कभी तो नौबत यहाँ तक पहुँच जाती थी कि छोटी से छोटी बातों पर भी मिसेज़ येपांचिना बेहद नाराज़ हो जाती थीं और उनका गुस्सा भड़क उठता था। जैसे, अलेक्सान्द्रा देर तक सोती थी और आमतौर पर बहुत सपने देखती थी। लेकिन उसके सपनों में हमेशा यह कमाल की खूबी रहती थी कि वे बेहद मामूली और मासूम होते थे—उस तरह के सपने जैसे सात साल के बच्चे से देखने की आशा की जा सकती है। और न जाने क्यों उसके सपनों की इस मासूमियत पर ही उसकी माँ चिड़चिड़ा उठती थीं। एक बार अलेक्सान्द्रा ने नौ मुर्गियों का सपना देखा, जिस पर उसके और उसकी माँ के बीच बाक़ायदा लड़ाई ठन गई। यह बताना मुश्किल है कि किसलिए। एक बार, सिर्फ़ एक बार, वह किसी ऐसी चीज़ का सपना देखने में सफल हुई थी जिसे मौलिक कहा जा सके—उसने सपने में एक साधु को देखा था, जो एक अँधेरी कोठरी में अकेला था, जिसमें जाते उसे डर लगा था। उसकी दोनों बहनों ने हँसते हुए उसका यह सपना फ़ौरन विजय गर्व के साथ मिसेज़ येपांचिना के पास पहुँचा दिया था, लेकिन उनकी माँ फिर नाराज़ हो गई थीं और उन्होंने उन सबको बेवक़ूफ़ कहा था। "हुँः ! मूरख जैसी शान्त, और बिलकुल 'नादान गाय', कोई चीज़ उसमें उत्साह पैदा कर ही नहीं सकती, और फिर भी वह उदास रहती है—कभी-कभी तो वह बहुत ही उदास दिखाई देती है ! वह दुःखी किसलिए रहती है, आख़िर बात क्या है ?" कभी-कभी वह अपने शौहर से इसके बारे में पूछती थीं और हमेशा की तरह जुनून की हालत में और बड़े दबंग तरीक़े से उनके जवाब की राह देखती थीं। जनरल येपांचिन बग़लें झाँकने लगते थे, त्योरियाँ चढ़ा लेते थे, अपने कन्धे बिचकाते थे और आख़िरकार लाचारी की मुद्रा में अपने हाथ फैलाकर जवाब देते थे—"उसे शौहर की ज़रूरत है !"

"बस भगवान की इतनी कृपा रहे कि वह आप जैसा न हो," मिसेज़ येपांचिना आख़िरकार बम की तरह फट पड़तीं। "अपनी रायों और फ़ैसलों में आप जैसा न हो...आप जैसा रूखा न हो।..."

जनरल साहब फ़ौरन वहाँ से खिसक जाते और मिसेज़ येपांचिना अपने 'विस्फोट' के बाद शान्त हो जातीं। यह बताने की ज़रूरत नहीं कि उसी दिन शाम को अनिवार्यतः अपने पति के प्रति, अपने 'रूखे आदमी' के प्रति, अपने नेक, प्यारे और लाड़ले इवान प्योदोरोविच के प्रति उनका व्यवहार विशेष रूप से शिष्ट, सहृदय, स्नेहमय और सम्मानपूर्ण हो जाता था, क्योंकि वह उन्हें अच्छे लगते थे, यहाँ तक कि ज़िन्दगी-भर उन्हें उनसे प्यार रहा था; यह बात जनरल साहब ख़ुद बहुत अच्छी तरह जानते थे और इस वजह से उनकी बड़ी इज़्ज़त करते थे।

लेकिन उनकी सबसे बड़ी और निरन्तर चिन्ता का कारण थी अग्लाया।

"वह बिलकुल मेरी जैसी है," मिसेज़ येपांचिना अपने आपसे कहा करती थीं। "बिलकुल मेरी जैसी, जिद्दी और बेहद लड़ाका ! नाशवादी, सनकी, झक्की, दुष्ट, बहुत दुष्ट, बहुत दुष्ट लड़की ! हे भगवान, यह कितनी दुःखी रहेगी !"

लेकिन जैसा कि हम पहले बता चुके हैं उनके माँ के हृदय को एक बार तो थोड़ी तसल्ली और शान्ति मिल गई थी। पूरे एक महीने तक मिसेज़ येपांचिना अपनी सारी चिन्ताओं को भूली रहीं। अदेलईदा की जल्दी ही होनेवाली शादी की वजह से समाज में लोग अग्लाया की भी चर्चा करने लगे थे, और अग्लाया का आचरण भी हर जगह कितना सुन्दर, कितना सन्तुलित, कितना चतुराई-भरा और कितना विजयोल्लासपूर्ण रहता था—शायद कुछ ज़्यादा ही गर्व भरा था, लेकिन वह कितना फबता था उस पर ! उस पूरे महीने-भर अपनी माँ के प्रति उसने कितना स्नेह और कितनी सौम्यता का परिचय दिया ! ("यह सच है कि उस रादोम्स्की के बारे में बहुत ही सावधान रहना चाहिए, उसके बारे में पता लगा लेना चाहिए कि वह कैसा आदमी है, हाँ, ऐसा लगता है कि उस पर अग्लाया की कृपादृष्टि दूसरों से अधिक नहीं है !") यह अग्लाया कैसी प्यारी लड़की हो गई थी, और कितनी सुन्दर थी वह, सचमुच, कितनी सुन्दर...यह दिन-ब-दिन ज़्यादा सुन्दर होती जा रही थी ! और अब...

और अब उस कमबख़्त प्रिंस, उस दो कौड़ी के बौड़म के आते ही हर चीज़ उलझ गई थी और घर में हर चीज़ उलट-पुलट हो गई थी !

लेकिन हुआ क्या था ?

दूसरे लोगों को कुछ भी न होता—इतना तो तै था। लेकिन जिस चीज़ की वजह से मिसेज़ येपांचिना किसी से भी इतनी भिन्न थीं, वह यह थी कि अपनी अन्तर्निहित चिन्ता के कारण वह साधारण से साधारण चीज़ों के संयोजन और उनकी उलझी हुई क्रिया प्रतिक्रिया में कोई ऐसी चीज़ खोज लेती थीं जो कभी-कभी उन्हें इतना डरा देती थी कि वह बीमार पड़ जाती थीं, और वह अत्यन्त रुग्ण और समझ में न आनेवाली बौखलाहट का शिकार हो जाती थीं, ऐसी बौखलाहट जो इसीलिए इतनी दुःखदायी थी। इस समय उनकी भावनाएँ क्या रही होंगी जब बेतुकी और निराधार चिन्ताओं के इस अस्त-व्यस्त उलझाव के बीच उन्हें वास्तव में एक ऐसी चीज़ दिखाई पड़ गई थी जो सचमुच महत्त्वपूर्ण मालूम होती थी, एक ऐसी चीज़ जो सचमुच उनकी सारी चिन्ताओं, शंकाओं और सन्देहों को उचित ठहराती थी।

"उनकी हिम्मत कैसे पड़ी, आख़िर उनकी हिम्मत कैसे पड़ी कि उन्होंने उस बेहया औरत के बारे में मेरे पास वह बेहूदा गुमनाम ख़त भेजा, जिसमें अग्लाया के साथ उसके सम्पर्क की बात

कही गई थी ?" मिसेज येपांचिना प्रिंस को अपने पीछे घसीटकर घर ले जाते हुए रास्ते-भर लगातार यही सोचती रहीं, और घर पर भी जब उन्होंने प्रिंस को उस गोल मेज़ के पास बिठा दिया जहाँ सारा परिवार पहले से जमा था। " उन्हें ऐसी बात सोचने की भी हिम्मत कैसे हुई ? अरे, मैं तो शर्म के मारे मर जाती अगर मैं उसके एक शब्द पर भी यक़ीन करती या उसे अग्लाया को दिखाती ! मज़ाक़ उड़ाते हैं येपांचिनों का ! और यह सब कुछ आपकी वजह से !" उन्होंने मन ही मन अपने पति को सम्बोधित करके सोचा। "अरे, हम लोग येलागिन द्वीप क्यों नहीं चले गए ? मैंने कहा था कि हमें वहाँ जाना चाहिए ! मुझे यक़ीन है कि वह खत इसी वार्या ने लिखा होगा, या शायद...यह सारी आपकी ग़लती है !" उन्होंने फिर अपने पति को दोष दिया। "उस बेहया औरत ने उनके साथ यह चाल सिर्फ़ उनके पिछले सम्बन्धों की याद दिलाने के लिए चली, उन्हें बेवक़ूफ़ बनाने के लिए, ठीक उसी तरह जैसे वह उन पर, बेवक़ूफ़ तो हैं ही वह, उनकी नकेल अपने हाथ में रखकर पहले हँसा करती थी, जब वह उसके पास मोतियों का हार ले जाते थे।...लेकिन सच तो यह है कि अब हम सब उसमें फँसे हैं—आपकी बेटियाँ भी उसमें हैं, नौजवान लड़कियाँ, नवयुवतियाँ, समाज के सबसे अच्छे हिस्से की नवयुवतियाँ, शादी लायक़ लड़कियाँ; वे वहाँ मौजूद थीं, वे वहाँ खड़ी थीं, उन्होंने सब कुछ सुना, और उन बेहूदा लड़कों के मामले में भी उन्हें उलझना पड़ा। आपको तो इस पर खुशी ही हुई होगी कि वे भी वहाँ मौजूद थीं और उन्होंने वह सब सुना ! अरे, मैं उसे कभी माफ़ नहीं करूँगी, मैं इस कमबख्त प्रिंस को कभी माफ़ नहीं करूँगी ! और अग्लाया ने पिछले तीन दिन से इतना तूफ़ान क्यों मचा रखा है ? उसने अपनी बहनों से झगड़ा-सा क्यों कर लिया है, अलेक्सान्द्रा तक से, जिसके हाथ वह हमेशा इस तरह चूमा करती थी जैसे वह उसकी माँ हो—इतनी इज़्ज़त करती थी वह उसकी ? पिछले तीन दिन से वह हम लोगों से क्या भेद छिपाती रही है ? गव्रीला ईवोल्गिन का इस बात से क्या सम्बन्ध है ? कल और आज वह उसका गुणगान करने के लिए इतनी मुस्तैद क्यों रही है ? वह इस तरह फूटकर रो क्यों पड़ी ? उन लोगों ने गुणगान पत्र में उस कमबख्त 'ग़रीब सूरमा' का उल्लेख क्यों किया है, जबकि उसने प्रिंस का पत्र अपनी बहनों तक को नहीं दिखाया था ? और किसलिए...किसलिए, आख़िर किसलिए मैं अभी बेचैन होकर उसके पास गई और ख़ुद उसे यहाँ घसीट लाई ? मैं भी बिलकुल पागल हो गई थी क्या जो मैंने ऐसा किया ! एक नौजवान आदमी से अपनी बेटी के भेदों की चर्चा करना...और सो भी ऐसे भेद जो लगभग उसी से सम्बन्ध रखते हैं ! भला हाँ, वह तो कहो अच्छा है कि वह बौड़म है और...परिवार का दोस्त है ! बस, सवाल यह है कि अग्लाया क्या ऐसे अजूबा आदमी की तरफ़ आकर्षित हो सकती है ? हे भगवान, मैं भी कैसी बातें कर रही हूँ ? भगवान भला करे ! हम सब अजूबा हैं, सबके सब...काँच में रखकर हमारी सबकी नुमाइश की जानी चाहिए—सबसे पहले मेरी—और वह भी दस कोपेक का टिकट लगाकर। मैं आपको इसके लिए कभी माफ़ नहीं करूँगी, जनरल साहब, कभी नहीं ! और अब वह उसका मज़ाक़ क्यों नहीं उड़ाती ? उसने कहा था, लेकिन अब नहीं करती ! देखो उसे, देखो तो ! आँखें फाड़े उसे घूर रही है, एक शब्द नहीं बोलती, जाती भी नहीं, और खुद उसी ने उससे आने को मना किया था।...अब वहाँ बैठा है, सूरत पर मुर्दनी छाई हुई। और वह कमबख्त, कमबख्त बक्की रादोम्स्की बोले चला जा रहा है, बोले चला जा रहा है—चल रही है उसकी रीं-रीं, चल रही है—किसी को बीच में एक शब्द भी बोलने का मौक़ा नहीं देता। अगर मुझे बातचीत का रुख मोड़कर उधर लाने का मौक़ा मिलता तो मैं फ़ौरन सारी बातों का पता लगा लेती।..."

गोल मेज़ के पास बैठे हुए प्रिंस का चेहरा सचमुच पीला पड़ गया था और साथ ही यह भी

लग रहा था कि वह बेहद घबराया हुआ है और कभी-कभी वह खुशी से ऐसा पागल हो उठता था कि उसकी साँस रुक जाती थी, जिस खुशी की वह ख़ुद भी कोई वजह नहीं बता सकता था। उफ़, उस कोने की तरफ़ देखते हुए उसे कितना डर लग रहा था, जिधर से दो जानी-पहचानी काली आँखें उसे इतने ग़ौर से एकटक देख रही थीं और, इसके साथ ही, यह सोचकर ख़ुशी के मारे उसके दिल की धड़कन रुकी जा रही थी कि वह एक बार फिर उन लोगों के बीच बैठा हुआ था और उसे उसकी जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई देगी—जो कुछ उसने उसे लिखा था उसके बावजूद ! "हे भगवान, अब वह क्या कहेगी ?" वह ख़ुद एक शब्द नहीं बोला था और पूरे ध्यान से रादोम्स्की की 'रीं-रीं' सुन रहा था, जो आज शाम इतना खुश और उमंगों से भरा हुआ था जैसा वह शायद ही कभी रहा हो। प्रिंस बड़ी देर तक उसकी बातें सुनता रहा, लेकिन वह जो कुछ कह रहा था उसका एक शब्द भी उसकी समझ में नहीं आया। जनरल येपांचिन को छोड़कर जो उस वक़्त तक पीटर्सबर्ग से नहीं लौटे थे, सब लोग वहाँ मौजूद थे। प्रिंस श. भी वहीं मौजूद थे। ऐसा लग रहा था कि वे लोग चाय से पहले संगीत सुनने जाने की योजना बना रहे थे। उनकी बातचीत स्पष्टतः प्रिंस के पहुँचने से पहले शुरू हो चुकी थी। थोड़ी ही देर बाद न जाने कहाँ से [illegible] बरामदे में आ पहुँचा। "तो अब भी इसका यहाँ पहले ही की तरह आना-जाना है," प्रिंस ने मन ही मन सोचा।

येपांचिन-परिवार का ठाठदार बँगला स्विट्ज़रलैण्ड के बँगलों के ढंग का बना हुआ था और चारों ओर उसकी दीवारों पर फूलदार बेलें फैली हुई थीं। उसके चारों ओर छोटा सा, लेकिन बहुत खुबसूरत फूलों का बाग़ीचा था। सब लोग बरामदे में बैठे हुए थे, जैसे प्रिंस के यहाँ बैठे थे, लेकिन यहाँ का बरामदा ज़्यादा जगहदार था और उसकी सज़ावट भी ज़्यादा शानदार थी।

बातचीत के विषय में स्पष्टतः वहाँ पर मौजूद लोगों में से केवल कुछ को ही दिलचस्पी थी। ऐसा लगता था कि यह विषय एक गरमागरम बहस से पैदा हुआ था और हर आदमी उसे बदलना चाहता था, लेकिन इसके बावजूद रादोम्स्की उसी विषय को पीटते रहने पर तुला हुआ था, इस बात की कोई परवाह किए बिना कि उसका दूसरों पर क्या असर पड़ रहा था, प्रिंस के आ जाने से प्रकट रूप से उसकी बोलते रहने की इच्छा और प्रबल हो गई थी। मिसेज़ येपांचिना कुछ नाराज़ लग रही थीं, हालाँकि उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि आख़िर वह मामला क्या था। अग्लाया, जो बाक़ी सब लोगों से दूर, लगभग एक कोने में बैठी हुई थी, चली तो गई नहीं, बल्कि सुनती रही और हठधर्मी से चुप रही।

"माफ़ कीजिएगा," रादोम्स्की बड़े जोश से विरोध कर रहा था, "लेकिन मैंने उदारवाद के ख़िलाफ़ कभी एक शब्द भी नहीं कहा। उदारवाद कोई पाप नहीं है, वह पूरे समाज का अभिन्न अंग है, जिसके बिना वह टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाएगी या निष्प्राण हो जाएगा। उदारवाद को भी जिन्दा रहने का उतना ही अधिकार है जितना कि सबसे सौम्य प्रकार के रूढ़िवाद को। मैं जिस चीज़ पर हमला कर रहा हूँ वह है रूसी उदारवाद और, मैं एक बार फिर बता दूँ, उस पर मैं सिर्फ़ इसलिए हमला कर रहा हूँ कि रूसी उदारवादी रूसी उदारवादी नहीं, बल्कि गैर रूसी उदारवादी होता है। मुझे एक भी रूसी उदारवादी दिखा दीजिए और मैं आप सब लोगों के सामने ख़ुशी-ख़ुशी उसे गले लगा लूँगा।"

"शर्त यह है कि वह आपको गले लगाने दे," अलेक्सान्द्रा ने कहा, जो अत्यन्त उत्तेजित हो उठी थी। उसके गाल तक हमेशा से ज़्यादा लाल थे।

"देखो तो इसे," मिसेज़ येपांचिना ने मन ही मन सोचा। "बस खाती है और पड़ी सोती रहती है, ऐसे कि जगाए नहीं जागती, और फिर अचानक साल में एक बार उठकर कोई ऐसी लाजवाब

बात कह डालती है कि सुननेवाला दंग रह जाए।"

प्रिंस ने महसूस किया कि इतने गम्भीर मामले के बारे में रादोम्स्की का इतने हल्के-फुल्के ढंग से बात करने का तरीक़ा अलेक्सान्द्रा को ख़ासतौर पर नापसन्द था और यह बात भी कि वह हालाँकि जता यह रहा था कि वह बहुत उत्तेजित है लेकिन वह मज़ाक़ करता हुआ लग रहा था।

"प्रिंस, मैं अभी आपके आने से कुछ मिनट पहले कह रहा था," रादोम्स्की ने अपना सिलसिला जारी रखा, "कि अभी तक हमारे उदारवादी आबादी के दो ही सामाजिक स्तरों में से आए हैं, पुराने जमींदारों के बीच से (जिन्हें अब ख़त्म कर दिया गया है) और पादरियों में से। और चूँकि इन दोनों स्तरों को बाक़ायदा जात-पाँत की शक्ल दे दी गई है, एक ऐसी चीज़ की जो राष्ट्र से बिलकुल भिन्न है, और हर पीढ़ी के साथ वह और भी भिन्न होती जा रही है, इसलिए जो कुछ भी उन्होंने किया है और कर रहे हैं वह राष्ट्रीय नहीं है।..."

"क्या मतलब आपका ? जो कुछ भी किया गया है क्या वह सब गैर-रूसी है ?" प्रिंस श. ने विरोध किया।

"राष्ट्रीय नहीं है—वह रूसी तो है, लेकिन राष्ट्रीय नहीं है। और हमारे उदारवादी रूसी नहीं हैं, और हमारे रूढ़िवादी रूसी नहीं हैं, वे सब रूसी नहीं हैं।...आप यक़ीन जानिए कि राष्ट्र जमींदारों और हमारे धार्मिक स्कूलों के पढ़े हुए स्नातकों के किसी भी काम को स्वीकार नहीं करता, न अब करता है और न आगे चलकर करेगा।..."

"यह भी अच्छी कही !" प्रिंस श. ने उत्तेजित होकर जवाब दिया। "अगर आप इस सिलसिले में सचमुच संजीदा हैं तो आप ऐसी विरोधाभास की बात कैसे कह सकते हैं ? मैं रूसी जमींदारों के बारे में इस तरह के बेतुके बयानों को चुनौती दिए बिना नहीं रह सकता—आप खुद रूसी ज़मींदार हैं !"

"मैं उन मानों में रूसी ज़मींदार का जिक्र नहीं कर रहा था जिस माने में आप उसे समझते हैं। वे बहुत ही इज़्ज़तदार लोग हैं, चाहे सिर्फ़ इसलिए कि मैं भी उन्हीं में से हूँ। ख़ासतौर पर अब जबकि उनका अस्तित्व मिट गया है।..."

"क्या आपका कहना है कि हमारे साहित्य में भी कुछ राष्ट्रीय नहीं है ?" अलेक्सान्द्रा बीच में बोली।

"मैं साहित्य के बारे में ज़्यादा तो नहीं जानता, लेकिन मेरी राय में रूसी साहित्य भी बिलकुल रूसी नहीं है, शायद लोमोनोसोव, पुश्किन और गोगोल को छोड़कर।"

"ख़ैर, पहली बात तो यह कि यह कुछ ऐसी बुरी बात नहीं है, और दूसरे, उनमें से एक किसान था और बाक़ी दो ज़मींदार," अदेलईदा ने हँसकर कहा।

"बिलकुल ठीक, लेकिन इस बात पर इतनी खुश न होइए। चूँकि सारे रूसी लेखकों में से अभी तक यही तीन ऐसे हैं जिन्होंने कुछ ऐसा कहा जो सचमुच उनका अपना था, जो उन्होंने किसी से उधार नहीं लिया था, इसलिए इसी बात की बुनियाद पर वे तीनों राष्ट्रीय लेखक बन गए हैं। कोई भी रूसी जो स्वयं अपना कुछ कहता, लिखता या करता है, कुछ ऐसा जो अधिकारतः उसका अपना है और किसी दूसरे से उधार लिया हुआ नहीं है, वह अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय बन जाता है, भले ही वह रूसी ठीक से बोल भी न पाता हो। मैं इसे एक स्वयंसिद्ध सत्य मानता हूँ। लेकिन हम साहित्य की चर्चा नहीं कर रहे थे। हमने शुरुआत सोशलिस्टों के बारे में बात करने से की थी, और उन्हीं को लेकर बहस छिड़ गई थी। तो, मेरा कहना है कि हमारे यहाँ एक भी रूसी सोशलिस्ट नहीं है, और पहले कभी हुआ भी नहीं था, क्योंकि हमारे सारे सोशलिस्ट भी हमारे जमींदारों और

धार्मिक स्कूलों में पढ़े हुए लोगों के बीच से आए हैं। [illegible], यहाँ भी और विदेशों में भी, भू-दासता के ज़माने [illegible] के अलावा और कुछ नहीं हैं। आप हँस क्यों रही हैं [illegible] सिद्धान्त और संस्मरण दीजिए, और हालाँकि मैं [illegible] अत्यन्त प्रामाणिक आलोचनात्मक लेख लिखने की [illegible] रूप से कि अन्धा भी देख ले, यह साबित करूँगा कि उनकी [illegible] एक-एक पृष्ठ किसी भूतपूर्व रूसी ज़मींदार ने लिखा है। [illegible] उस स्तर के लोगों की छाप है (फ़ामुसोव[1] से पहले भी !); [illegible] उनके आँसू सच्चे और असली हों, लेकिन...वे जमींदारों के आँसू हैं। [illegible] स्कूलों में पढ़े हुए लोगों के आँसू।...आप फिर हँस रही हैं, और, प्रिंस, [illegible] भी मुझसे सहमत नहीं हैं ?"

हँस तो सभी रहे थे, और प्रिंस भी मुस्करा रहा था।

"मैं इस तरह एक़दम तो आपको नहीं बता सकता कि मैं आपसे सहमत हूँ [illegible] ने अचानक मुस्कराना बन्द करके और उस स्कूली बच्चे की तरह चौंककर [illegible] करता हुआ पकड़ लिया गया हो, "लेकिन मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि आपकी बातें, [illegible] मुझे बेहद खुशी हो रही है।..."

यह बात कहते समय वह लगभग हाँप रहा था और उसके माथे पर ठण्डे पसीने की बूँदें [illegible] आई थीं। मेज़ के पास आकर बैठने के बाद से उसने ये पहले शब्द कहे थे। उसने चारों [illegible] दौड़ाने की बात सोची, लेकिन हिम्मत नहीं पड़ी; रादोम्स्की ने उसे ऐसा करते हुए देख लिया [illegible] मुस्करा दिया।

"मैं आप लोगों को एक बात बताता हूँ," वह पहले जैसे लहजे में ही बोलता रहा, यानी बेहद ज़ोर देकर और जोश के साथ और इसके साथ ही शायद अपने शब्दों पर स्वयं लगभग हँसते हुए, "एक बात, एक अवलोकन, बल्कि कहना चाहिए, एक खोज जिसके बारे में मैं बड़े गर्व से दावा कर सकता हूँ कि वह काम खुद मैंने किया है, मैंने ही; कम से कम उसके बारे में मैंने न कभी पढ़ा है और न ही सुना है। जिस तरह के रूसी उदारवाद की मैं इस वक़्त चर्चा कर रहा हूँ उसका कुल निचोड़ इस बात में व्यक्त होता है। सबसे पहले, आमतौर पर बात करते हुए, उदारवाद चीज़ों की मौजूदा व्यवस्था पर हमले के अलावा (वह तर्कसंगत है या किसी भटकाव की वजह से किया गया है, यह अलग ही सवाल है) और है ही क्या ? ऐसा ही है, है न ? तो, मेरा कहना यह है कि रूसी उदारवाद चीज़ों की मौजूदा व्यवस्था पर हमला नहीं, बल्कि चीज़ों के सार-तत्त्व पर, स्वयं उन चीज़ों पर हमला है, केवल उनकी व्यवस्था पर नहीं, रूसी शासन-व्यवस्था पर नहीं, बल्कि स्वयं रूस पर। हमारा उदारवादी यहाँ तक पहुँच गया है कि वह स्वयं रूस से इन्कार करने लगा है—मतलब यह कि वह खुद अपनी माँ से नफ़रत करता है और उसे पीटता है। हर रूसी विफलता और नाकामयाबी पर वह हँसता है और उसे खुशी-सी होती है। उसे राष्ट्रीय रीति-रिवाजों से नफ़रत है, वह रूसी इतिहास से नफ़रत करता है, वह हर चीज़ से नफ़रत करता है। अगर उसके आचरण को किसी चीज़ से उचित ठहराया जा सकता है तो वह यह है कि उसे मालूम नहीं है कि वह क्या कर रहा है और वह समझता है कि रूस से उसकी नफ़रत सबसे हितकर प्रकार का उदारवाद है।

1. फ़ामुसोव—अलेक्सान्द्र ग्रिबोयेदोव के क्लासिकी व्यंग्यात्मक काव्य-नाटक 'समझनेवाले की मौत' का प्रमुख पात्र। फ़ामुसोव भू-दास रखनेवाले पुराने ढंग के धनी रूसी जमींदारों का प्रतीक है।

(अरे, आपको हमारे बीच ऐसा उदारवादी भी मिल जाएगा जिसकी सब वाह-वाह करते हैं, लेकिन जो, शायद सबसे बेतुका, सबसे अदूरदर्शी और खतरनाक रूढ़िवादी होता है, और इस बात को खुद नहीं महसूस करता !) अभी बहुत समय नहीं हुआ कि हमारे कुछ उदारवादी रूस से इस नफ़रत को सच्चा देशप्रेम समझते थे, और वे डींग मारते थे कि इस बात को उनसे ज़्यादा अच्छी तरह कोई नहीं जानता कि उस प्रेम का स्वरूप क्या होना चाहिए; लेकिन अब वे ज़्यादा खुलकर बातें करने लगे हैं, और उन्हें 'देश-प्रेम' की चर्चा तक करते शरम आती है। उन्होंने उसे हानिकर और तुच्छ कहकर उसकी कल्पना तक को तिलांजलि दे दी है और उसका नामनिशान तक मिटा दिया है। यह बात बिलकुल सच है, मैं इसे दावे के साथ कह सकता हूँ और...और, बहरहाल, वक़्त आ गया है कि कोई भी सच्चाई को पूरी तरह, सीधे-सादे शब्दों में और खुलकर बताए। लेकिन साथ ही यह ऐसी बात भी है जिसे अनन्तकाल से कहीं भी, किन्हीं लोगों के बीच नहीं जाना गया है, जिसका मतलब यह भी हो सकता है कि यह संयोग की बात है और मुमकिन है कि कुछ दिन में इसका अस्तित्व न रहे। मैं इस बात को खुलेआम मानता हूँ। मैं कहीं भी ऐसे उदारवादी के होने की कल्पना तक नहीं कर सकता जो स्वयं अपने देश से नफ़रत करता हो। फिर हम अपने बीच इस सबकी वजह बता सकते हैं ? तो, इसकी वजह वही है जो मैं पहले बता चुका हूँ, यानी यह कि अभी तक रूसी उदारवादी सिर्फ़ गैर-रूसी उदारवादी है। मेरी राय में इसकी कोई और वजह हो ही नहीं सकती।''

''आपने जो कुछ कहा है उसे मैं मज़ाक़ समझता हूँ,'' प्रिंस श. ने निष्कपट भाव से कहा।

''मैं हर उदारवादी से तो मिली नहीं हूँ इसलिए मैं कोई फ़ैसला नहीं कर सकती,'' अलेक्सान्द्रा बोली, ''लेकिन मैं इतना ज़रूर कहूँगी कि आपके विचारों को सुनकर मुझे गुस्सा आता रहा है। आपने एक अकेली मिसाल को लेकर उसे हर एक पर लागू होनेवाला कायदा मान लिया है। यह इन्साफ़ की बात नहीं है।''

''एक मिसाल ? अरे, आख़िरकार मिल ही गया,'' रादोम्स्की ने चिल्लाकर कहा। ''क्या ख़्याल है, प्रिंस ? यह अकेली मिसाल है या नहीं ?''

''मैंने बहुत ज़्यादा उदारवादियों को न तो देखा है...और न उनसे मिला हूँ,'' प्रिंस ने कहा, ''[illegible] मैं तो यही समझता हूँ कि आप एक हद तक ठीक हो सकते हैं और आप जिस क़िस्म [illegible] उदारवाद की चर्चा कर रहे हैं उसका कुछ झुकाव सिर्फ़ रूस की शासन-व्यवस्था से नहीं [illegible] रूस से नफ़रत करने की तरफ़ है। लेकिन यह बात एक हद तक ही सच है...यह बात [illegible] उदारवादियों के बारे में कहना ठीक न होगा।...''

[illegible] बीच में ही चुप हो गया। अपनी उद्विग्नता के बावजूद उसे इस बातचीत में गहरी [illegible]। प्रिंस की एक विचित्र विशेषता यह थी कि जिस चीज़ में भी उसे दिलचस्पी होती [illegible] भोलेपन के साथ ध्यान देकर सुनता था और जब उससे कोई सवाल पूछा [illegible] जवाब भी भोलेपन से देता था। यह भोलापन, यह सहज विश्वास, जिसमें [illegible] तिरस्कार की शंका तक नहीं होती थी, उसके चेहरे पर और उसकी [illegible] होता हुआ मालूम पड़ता था। रादोम्स्की कुछ देर से विचित्र ढंग से [illegible] था, लेकिन अब उसका जवाब सुन लेने के बाद उसने उसे [illegible] तरह के जवाब की कभी उम्मीद ही न रही हो।

[illegible] अजीब-सी बात है। मुझे ईमानदारी से बताइए, प्रिंस, [illegible] ?''

"क्यों, क्या आपने यह सवाल संजीदगी से नहीं पूछा था ?"

सब हँस दिए।

"यही तो बात है !" अदेलईदा बोली। "रादोम्स्की साहब हमेशा सबकी टाँग खींचते रहते हैं। कभी-कभी तो बिलकुल संजीदा सूरत बनाकर कैसी-कैसी कहानियाँ सुनाते हैं यह !"

"मैं समझती हूँ कि यह बहुत ही टेढ़ा सवाल है और हमें इस पर बहस शुरू ही नहीं करनी चाहिए थी," अलेक्सान्द्रा तीखेपन से बोली। "हम लोग टहलने जाना चाहते थे।..."

"चलिए, चलें, बड़ी सुहानी शाम है !" रादोम्स्की खुश होकर चिल्लाया। "लेकिन आपकी नज़रों में यह साबित करने के लिए कि इस बार मैं बिलकुल संजीदगी से बात कर रहा था और, सबसे बढ़कर, प्रिंस की नज़रों में यह साबित करने के लिए (आपमें मुझे बहुत दिलचस्पी पैदा हो गई है, प्रिंस, और मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि मैं वैसा निकम्मा नहीं हूँ जैसा कि आपको यक़ीनन लगता हूँगा, हालाँकि, दरअसल, मैं निकम्मा हूँ ज़रूर !), और हाँ...आप लोगों की इजाज़त से, मैं प्रिंस से एक और सवाल पूछना चाहूँगा, बस अपनी कुरेद मिटाने के लिए, और उसके बाद यह मामला ख़त्म हो जाएगा। यह सवाल मुझे लगभग दो घंटे पहले बड़े मौक़े से सूझा था (बात यह है, प्रिंस, कि मैं भी कभी-कभी गम्भीर बातों के बारे में सोचता हूँ); मैंने तो उसका जवाब दे दिया था, लेकिन देखें प्रिंस क्या कहते हैं। अभी 'अकेली मिसाल' का फिकरा इस्तेमाल किया गया है। यह फिकरा काफ़ी महत्त्वपूर्ण है और अकसर सुनने में आता है। कुछ ही दिन पहले हर आदमी उस भयानक हत्याकाण्ड की चर्चा कर रहा था और उसके बारे में लिख रहा था जिसमें उस... नौजवान ने छह आदमी को मौत के घाट उतार दिया था, और सफ़ाई के वकील के उस विचित्र भाषण के बारे में जिसमें उसने कहा था कि उस नौजवान की मुफ़लिसी की हालत को देखते हुए छह आदमियों की हत्या कर देने की बात उसे स्वाभाविक रूप से सूझी होगी। मैं उनके शब्दों को हूबहू नहीं दोहरा रहा हूँ, लेकिन मैं समझता हूँ कि उनके शब्दों का मतलब यही था या कुछ इसी तरह का। तो, मेरी निजी राय यह है कि ऐसा विचित्र विचार सामने रखते समय सफ़ाई के वकील को पक्का यक़ीन था कि वह हमारे युग की सबसे उदारवादी, सबसे मानवोपकारी और सबसे प्रगतिशील भावना को स्वर दे रहा था। कहिए, क्या ख़्याल है आपका—यह विचारों और आस्थाओं का भ्रष्ट रूप है कि नहीं, इतने ग़लत विचारोंवाले और असाधारण दृष्टिकोण की सम्भावना ही एक अकेली मिसाल है या हर आदमी यही सोचता है ?"

सब लोग ठहाका मारकर हँस पड़े।

"अकेली, बिलकुल अकेली," अलेक्सान्द्रा और अदेलईदा ने हँसते हुए कहा।

"और, मैं आपको एक बात की याद दिला दूँ," प्रिंस श. ने अपनी ओर से योग दिया, "कि आपका यह मज़ाक़ बहुत घिसा-पिटा है।"

"आपका क्या ख़्याल है, प्रिंस ?" इस आख़िरी टिप्पणी की ओर कोई ध्यान न देते हुए और यह देखकर कि प्रिंस उसे बड़ी दिलचस्पी और गम्भीरता से घूर रहा है, रादोम्स्की ने पूछा। "आपको यह आम रवैया मालूम होता है या किसी अकेले एक आदमी का ? मैं मानता हूँ कि मैंने यह सवाल ख़ासतौर पर आपके लिए सोचा था।"

"जी नहीं," प्रिंस ने शान्त भाव से लेकिन दृढ़तापूर्वक कहा, "यह अकेले एक आदमी का रवैया नहीं है।"

"कमाल करते हैं आप भी, प्रिंस," प्रिंस श. कुछ झुँझलाकर चिल्लाए, "आप इतना नहीं समझ पाते कि वह आपको फँसाना चाहते हैं ? वह सिर्फ़ हँस रहे हैं और आपकी टाँग घसीट रहे हैं।"

''[illegible] रादोम्स्की साहब संजीदगी से बात कर रहे हैं,'' प्रिंस ने कहा, उसका चेहरा [illegible] हो गया और उसने नज़रें झुका लीं।

''[illegible],'' प्रिंस श. अपनी बात कहते रहे, ''आपको याद है कि हम लोग एक बार, लगभग [illegible] किस बात पर बहस कर रहे थे ? हमने उस वक़्त कहा था कि हमारे जो नए [illegible] हैं उनमें अभी से बहुत-से सराहनीय और प्रतिभाशाली सफ़ाई के वकील दिखाई देने [illegible] और जूरियों ने कितने बहुत-से सराहनीय फैसले सुनाए थे ! उस वक़्त आप कितने खुश [illegible] और आपकी खुशी को देखकर मैं कितना खुश हुआ था...हमने कहा था कि यह गर्व करने [illegible] बात है...और यह बेतुकी सफ़ाई, यह विचित्र दलील, ज़ाहिर है, एक आकस्मिक बात है, [illegible] में कहीं एक।''

प्रिंस ने इस पर विचार किया, लेकिन भरपूर दृढ़ विश्वास के साथ, हालाँकि शान्त स्वर में, [illegible] कुछ भीरुता के साथ जवाब दिया—''मैं सिर्फ़ यह कहना चाहता था कि विचारों और आस्थाओं का भ्रष्ट रूप (जैसा कि रादोम्स्की साहब ने कहा है) हमें अकसर दिखाई देता है और बड़े अफ़सोस की बात है कि यह कोई अकेली मिसाल न होकर एक आम नियम-सा है। सच तो यह है कि अगर यह भ्रष्ट रूप इतना आम नियम न होता तो इस तरह के असम्भव अपराध कभी न होते।...''

''असम्भव अपराध ? लेकिन मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि बिलकुल ऐसे ही अपराध, और शायद इससे भी भयानक अपराध, पहले भी होते रहे हैं, और हर युग में होते रहे हैं, और हमारे देश में ही नहीं, बल्कि हर जगह होते रहे हैं, और मेरी राय में बहुत समय तक बार-बार होते रहेंगे। फ़र्क़ बस इतना है कि पहले उनका इतना प्रचार नहीं होता था और अब लोग उनकी चर्चा करते हैं और उनके बारे में लिखते हैं, और इसीलिए ऐसा लगता है कि इस तरह के अपराधी अब ही उभरे हैं। यहीं आप ग़लत हैं, प्रिंस, और आपकी ग़लती, मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ, बहुत मासूम ग़लती है,'' प्रिंस श. व्यंग से मुस्कराए।

''मैं मानता हूँ कि पहले भी बहुत-से अपराध हुए हैं और इतने ही भयानक। मैं हाल ही में कुछ जेलखाने देखने गया था और मैंने कुछ अपराधियों और अभियुक्तों से जान-पहचान पैदा की। उनमें उससे भी ज़्यादा भयानक अपराधी हैं, ऐसे लोग जिन्होंने दर्जन-भर लोगों को मार डाला है और फिर भी कोई पछतावा महसूस नहीं करते। लेकिन एक बात मैंने देखी—कठोर से कठोर और निर्लज्ज से निर्लज्ज अपराधी इतना तो जानता ही है कि वह अपराधी है—मतलब यह कि उसका अतःकरण उससे कहता है कि उसने अपराध किया है, वह कितना ही निर्लज्ज क्यों न हो। और उनमें से हर एक इस मामले में एक जैसा ही है। लेकिन जिनकी चर्चा रादोम्स्की साहब कर रहे थे, वे तो यह भी नहीं मानना चाहते कि वे अपराधी हैं और वे समझते हैं कि जो कुछ उन्होंने किया वह करने का उन्हें अधिकार था और...और यह कि उन्होंने अच्छा ही काम किया था—मेरा मतलब है, लगभग हंमेशा ही ऐसा होता है। मैं समझता हूँ कि यही भयानक अन्तर है। और ध्यान रहे [illegible] सब लोग नौजवान होते हैं—मेरा मतलब है कि उनकी उम्र ऐसी होती है जिसमें आदमी सबसे [illegible] आसानी से भ्रष्ट विचारों का शिकार हो जाता है और उनके ख़िलाफ़ उसका कोई बस नहीं [illegible]।''

प्रिंस श. अब नहीं हँस रहे थे और वह प्रिंस की बात हैरान होकर सुन रहे थे। अलेक्सान्द्रा [illegible] देर से कुछ कहना चाह रही थी, कुछ भी नहीं कहा, मानो किसी ख़ास विचार ने उसे [illegible]। रादोम्स्की ने प्रिंस को निश्चित आश्चर्य से देखा, और इस बार उसमें व्यंग्य का लेश

भी नहीं था।

"लेकिन आपको उस पर इतना ताज्जुब क्यों हो रहा है," मिसेज़ येपांचिना अप्रत्याशित रूप से बीच में बोल पड़ीं। "क्या आप समझते हैं कि वह आपसे ज़्यादा बेवक़ूफ़ है और आप जैसी अच्छी दलीलें नहीं दे सकता ?"

"जी नहीं, ऐसी बात नहीं थी," रादोम्स्की ने कहा, "लेकिन इसकी क्या वजह है कि आपने (माफ़ कीजिएगा, लेकिन मैं आपसे यह सवाल पूछने पर मजबूर हूँ), मेरा मतलब है, अगर आप यह सब कुछ देख और समझ सकते हैं (मुझे फिर माफ़ कीजिएगा) तो फिर इसकी क्या वजह है कि आप उस विचित्र मामले में...विचारों और नैतिक धारणाओं की वही भ्रष्टता नहीं देख पाए...मेरा मतलब उस मामले से है जो अभी उस दिन हुआ...बुर्दोव्स्कीवाला मामला ? क्योंकि, आप देखिए, वह बिलकुल वही बात थी ! उस वक़्त मुझे ऐसा लगा था कि आपने इस बात को बिलकुल देखा ही नहीं था।"

"और देखिए, जनाब," मिसेज़ येपांचिना बड़े जोश से भड़क उठीं, "हम लोग यहाँ बैठे इसे जता रहे हैं कि हम कैसे चालाक लोग हैं, और इसे आज ही उनमें से एक का खत मिला है, उनमें जो सबसे ख़ास था उसका, मेरा मतलब है, वह जिसके चेहरे पर मुँहासे थे, याद है न, आलेक्सान्द्रा ? उसने अपने खत में इससे माफ़ी माँगी है, हालाँकि अपने ढंग से, और इसे बताया है कि उसने अपने उस दोस्त से नाता तोड़ लिया है जिसने उस वक़्त उसे उकसाया था—याद है न, आलेक्सान्द्रा ?—और यह कि अब उसे प्रिंस पर ज़्यादा भरोसा है। हमारे पास तो ऐसा खत नहीं आया, इसलिए कोई वजह नहीं है कि हम इससे इस तरह नाक चढ़ाकर बात करें।"

"और इप्पोलीत भी अब हमारे यहाँ रहने आ गया है !" कोल्या ने चिल्लाकर कहा।

"अच्छा ?" प्रिंस भयभीत होकर चिल्लाया। "वह यहाँ आ गया है ?"

"जब आप मिसेज़ येपांचिना के साथ गए थे उसके फ़ौरन ही बाद वह पहुँचा था। मैं उसे शहर से लाया था।"

"मैं तो तुमसे शर्त बदने को तैयार हूँ," मिसेज़ येपांचिना गुस्से से चिल्लाईं और यह बात बिलकुल भूल ही गईं कि अभी वह प्रिंस की तारीफ़ कर रही थीं—"मैं शर्त बदकर कह सकती हूँ कि तुम कल उसकी दुछत्ती में उससे मिलने गए होगे और घुटने टेककर उससे माफ़ी माँगी होगी कि वह जहर का पुतला आकर इसके यहाँ रहने लगे। कल तुम गए थे वहाँ ? अभी घंटे ही भर पहले तुमने खुद मुझे बताया था। गए थे कि नहीं ? तुमने उसके सामने घुटने टेके थे कि नहीं ?"

"बिलकुल नहीं टेके थे," कोल्या चिल्लाकर बोला, "बल्कि इसकी उल्टी ही बात हुई—इप्पोलीत ने कल प्रिंस का हाथ थामकर दो बार चूमा। मैंने अपनी आँखों से देखा। बस, इतना ही हुआ। प्रिंस ने इतना ज़रूर कहा कि देहात में उसकी तबियत बेहतर हो जाएगी और वह फ़ौरन राज़ी हो गया कि तबियत थोड़ी-सी सम्भलते ही वह फ़ौरन आ जाएगा।"

"क्या ज़रूरत है, कोल्या," प्रिंस ने उठकर अपना हैट लेते हुए बुदबुदाकर कहा। "तुम यह सब कुछ क्यों बता रहे हो ? मैं..."

"चल कहाँ दिए ?" मिसेज़ येपांचिना ने उसे रोका।

"आप चिन्ता न करें, प्रिंस," कोल्या उत्तेजना से काँपते हुए कहता रहा। "जाकर इस वक़्त उसे न छेड़िए। सफ़र के बाद वह सो रहा है। वह बहुत खुश है, और बात यह है, प्रिंस, मैं समझता हूँ कि अच्छा यही होगा कि आप आज उससे न मिलें, बल्कि इसे कल तक के लिए टाल दें, क्योंकि मुमकिन है वह फिर अटपटा महसूस करे। उसने आज सबेरे ही मुझे बताया कि पिछले छह महीनों

में उसने अपने आपको इतना चंगा और इतना ताक़तवर कभी महसूस नहीं किया था—अब वह पहले के मुकाबले आधा भी नहीं खाँस रहा है।"

प्रिंस ने देखा कि अग्लाया अचानक अपनी जगह से उठकर मेज़ के पास आ गई थी। प्रिंस की हिम्मत उसकी ओर देखने की नहीं हुई, लेकिन वह अपने रोम-रोम से अनुभव कर रहा था कि उस क्षण वह उसे देख रही थी और शायद कठोर दृष्टि से देख रही थी, और यह कि उसकी काली आँखों में निश्चित रूप से क्रोध था और उसका चेहरा तमतमाया हुआ था।

"लेकिन मैं तो यही समझता हूँ," रादोम्स्की ने कोल्या से सख़्ती से कहा, "कि तुम्हें उसको यहाँ नहीं लाना चाहिए था, अगर वह वही तपेदिक का बीमार लड़का है जो फूटकर रो पड़ा था और जिसने हम लोगों को अपने जनाज़े में बुलाया था। यह सामनेवाले घर की दीवार की इतनी चर्चा कर रहा था कि मुझे यक़ीन है कि वह उस दीवार के लिए हुड़केगा।"

"यह बिलकुल सच है—यह किसी बात पर तुमसे झगड़ बैठेगा और तुमसे लड़कर वापस चला जाएगा—मेरी बात मानो !"

और यह कहकर मिसेज़ येपांचिना ने बड़ी गरिमा के साथ सीने-पिरोने की टोकरी अपनी ओर खींच ली, यह बिलकुल भूलकर कि वे सब लोग पार्क में टहलने जानेवाले थे।

"जी हाँ, मुझे याद है वह उस दीवार के बारे में बहुत डींग मार रहा था," रादोम्स्की ने एक बार फिर कहना शुरू किया। "उस दीवार के बिना वह प्रभावशाली ढंग से नहीं मर सकेगा और वह प्रभावशाली ढंग से मरने के लिए तड़प रहा है।"

"तो क्या हुआ ?" प्रिंस ने बुदबुदाकर पूछा। "अगर आप उसे माफ़ नहीं करेंगे तो वह आपके माफ़ किए बिना ही मर जाएगा।...वह यहाँ पेड़ों की वजह से आया है।"

"अरे, जहाँ तक मेरी बात है, मैं उसे हर चीज़ के लिए माफ़ किए देता हूँ। आप उसको यह बता सकते हैं।"

"बात यह नहीं है," प्रिंस ने शान्त भाव से और मानो अनिच्छा से जवाब दिया; उसने अपनी नज़रें भी ऊपर नहीं उठाईं जो अभी तक फ़र्श पर एक जगह जमी हुई थीं। "बात यह है कि आपको भी उसकी क्षमा स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

"मेरा उससे क्या मतलब ? मैंने उसका क्या बिगाड़ा है ?"

"अगर आप इस बात को नहीं समझते, तो ज़ाहिर है...लेकिन, मेरा ख़्याल है कि आप समझते हैं। उस रात वह हम सबको...अपना आशीर्वाद देना भी चाहता था और आपका आशीर्वाद लेना भी चाहता था। बस, इतनी ही बात थी।..."

"प्रिंस," बरामदे में बैठे हुए कुछ लोगों से नज़रें मिलाने के बाद प्रिंस श. ने सहसा कुछ आशंका से कहा, "इस पृथ्वी पर स्वर्ग उतार लाना आसान नहीं है, और ऐसा लगता है कि आपको इसका कुछ भरोसा है; स्वर्ग बड़ा कठिन मामला है, प्रिंस, उससे कहीं ज़्यादा कठिन जितना आपके बहुत ही नेक दिल को लगता है। मैं समझता हूँ कि अब इस विषय को छोड़ ही दिया जाए, वरना मुझे डर है कि हमें फिर अटपटा महसूस होगा और फिर..."

"आइए, चलकर संगीत सुनें," मिसेज़ येपांचिना ने अपनी जगह से गुस्से से उठते हुए तीखे स्वर में कहा।

बाक़ी लोगों ने भी उनका अनुकरण किया।

2

प्रिंस अचानक उठकर रादोम्स्की के पास गया।

"मेरा यक़ीन कीजिए," उसने उसका हाथ पकड़कर विचित्र हार्दिकता से कहा, "कि फिर भी मैं आपको दुनिया का सबसे अच्छा और सबसे इज़्ज़तदार आदमी समझता हूँ—यक़ीन कीजिए।..."

रादोम्स्की आश्चर्य के मारे एक क़दम पीछे हट गया। एक क्षण के लिए उसने अपने आपको ठहाका मारकर हँस पड़ने से रोका, लेकिन अधिक ध्यान से देखने पर उसे पता चला कि प्रिंस अपनी सामान्य हालत में नहीं लग रहा था, कम से कम वह एक अजीब हालत में था।

"आप जो कहें मैं शर्त बदने को तैयार हूँ," वह चिल्लाकर बोला, "आपका यह कहने का इरादा नहीं था, और शायद यह बात मुझसे कहने का तो आपका कोई इरादा था ही नहीं।...बात क्या है ? क्या आपकी तबियत खराब है ?"

"शायद आपका कहना ठीक है, जी हाँ, शायद आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं, और आपने यह बात बड़ी चतुराई से कही कि मेरा आपके पास आने का कोई इरादा ही नहीं था।"

यह कहकर वह कुछ विचित्र, बल्कि बेतुके ढंग से मुस्कराया, लेकिन फिर सहसा, मानो अपने आपको भावावेग की अवस्था में पहुँचाकर, वह बोला—"मुझे इसकी याद मत दिलाइए कि तीन दिन पहले मैंने क्या किया था ! मैं पिछले तीन दिन से उस पर शर्मिन्दा हूँ।...मैं जानता हूँ कि यह मेरा कसूर था।..."

"लेकिन...आपने ऐसी बेजा बात की ही क्या ?"

"मैं अच्छी तरह समझता हूँ, रादोम्स्की साहब, कि आपको मेरी वजह से जितनी शर्मिन्दगी रहती है उतनी किसी और को नहीं। आपका चेहरा लाल हुआ जा रहा है—यह नेकदिल होने की निशानी है। मैं अब जा रहा हूँ, आप परेशान न हों।"

"इसे हुआ क्या है ?" मिसेज़ येपांचिना ने कोल्या को सम्बोधित करते हुए आशंकित स्वर में कहा। "क्या इसे दौरा पड़ने की शुरुआत इसी तरह होती है ?"

"मेरी वजह से परेशान न हों, मुझे दौरा पड़नेवाला नहीं है। मैं अभी जा रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि...कि मैं बीमार हूँ। मैं चौबीस साल बीमार रहा हूँ, अपने जन्म से चौबीस साल की उम्र तक। मुझे इस वक़्त जो कुछ कहना है उसे आप एक अपाहिज आदमी की बात समझकर सुनें। मैं अभी जा रहा हूँ, अभी, परेशान न होइए। मैं शरमा नहीं रहा हूँ, क्योंकि उसकी वजह से शरमाना अजीब बात होगी, है न ? लेकिन मेरी जगह समाज में नहीं है...यह बात मैं घमण्ड के मारे नहीं कह रहा हूँ...मैं पिछले तीन दिन से इसके बारे में सोचता रहा हूँ, और मैंने पहला मौक़ा मिलते ही आपको उसके बारे में सच्चाई और ईमानदारी के साथ बता देने का फ़ैसला किया था। कुछ विचार हैं, कुछ महान विचार, जिनकी चर्चा मैं नहीं छेड़ना चाहता क्योंकि मुझे पूरा यक़ीन है कि आप सब लोग उन पर हँसेंगे। प्रिंस श. ने अभी मुझे इस बात की याद दिलाई है।...मैं जानता हूँ कि मेरे हाव-भाव में बहुत सुचारुता नहीं है—मुझे सन्तुलन का आभास नहीं है, मेरे शब्द मेरे विचारों को व्यक्त नहीं कर पाते, और यह बात मेरे विचारों के लिए अपमानजनक है। और इसीलिए मुझे इस बात का कोई अधिकार नहीं है...इसके अलावा मेरी संवेदनशीलता बढ़ते-बढ़ते बीमारी का रूप धारण कर चुकी है...मेरा मतलब है कि मैं...मुझे पूरा यक़ीन है कि इस घर में कोई भी मेरी भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं चाहेगा और यहाँ मुझे जितना प्यार दिया जाता है उसके लायक़ मैं अपने आपको

नहीं समझता, लेकिन मैं जानता हूँ (अरे, यह तो मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ) कि बीस साल की बीमारी के बाद उसका कुछ नाम-निशान तो बाक़ी रह ही गया होगा, इसलिए लोग न चाहते हुए भी मुझ पर हँस पड़ते हैं...कभी-कभी...है न ऐसी बात ?"

उसने चारों ओर ऐसे देखा मानो किसी निश्चित उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हो। वे सभी इस अप्रत्याशित, रुग्ण और, बहरहाल, बिलकुल ही अकारण विस्फोट पर अत्यन्त दुःखद रूप से स्तम्भित दिखाई दे रहे थे। लेकिन इस विस्फोट की वजह से एक विचित्र घटना हुई।

"आप यह बात यहाँ क्यों कह रहे हैं ?" अग्लाया अचानक चिल्लाई। "आप यह सब **इनसे** क्यों कह रहे हैं ? इनसे ! इन लोगों से !"

ऐसा लग रहा था कि यह क्रोध से बिफर उठी है—उसकी आँखों में अंगारे दहक रहे थे। प्रिंस उसके सामने अवाक् और निःशब्द खड़ा रहा, और अचानक उसका रंग पीला पड़ गया।

"यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जिसके ऊपर इस तरह के शब्दों को बेकार नष्ट किया जाए !" अग्लाया बरस पड़ी। "यहाँ कोई भी, कोई भी आपकी कानी उँगली के बराबर नहीं है, न आपके दिमाग़ के और न आपके दिल के ! आप इनमें से किसी से भी ज़्यादा ईमानदार, अच्छे, नेक और होशियार हैं ! यहाँ ऐसे लोग हैं जो इस लायक़ भी नहीं हैं कि आपका रूमाल गिर जाए तो उसे उठाकर दे दें...फिर आप अपने आपको गिरा क्यों रहे हैं और यह क्यों जता रहे हैं कि आप इन लोगों से घटिया हैं ? आप अन्दर से इतने टूटे हुए क्यों हैं ? आपमें कोई स्वाभिमान क्यों नहीं है ?"

"भगवान बचाए, कैसी बातें कर रही है ?" मिसेज़ येपांचिना विस्मय के भाव से अपने हाथों को एक-दूसरे से कसकर दबाते हुए चिल्लाई।

"ग़रीब सूरमा ! हुर्रा !" कोल्या हर्षातिरेक से चिल्लाया।

"चुप भी रहो !" अग्लाया अचानक मिसेज़ येपांचिना पर अपना गुस्सा उतारने लगी; वह उन्माद की उस सीमा पर पहुँच चुकी थी जब किसी भी बात से कोई अन्तर नहीं पड़ता और रास्ते की हर बाधा दूर हो चुकी होती है। "तुम्हारे घर में मेरा अपमान करने की इन लोगों की हिम्मत कैसे पड़ती है ? सब, सारे के सारे, मुझे यातना क्यों देते हैं ? ये लोग आपकी वजह से, प्रिंस, तीन दिन से मेरे पीछे क्यों पड़े हुए हैं ? दुनिया इधर से उधर हो जाए लेकिन मैं आपसे शादी हरगिज़ नहीं करूँगी ! इतना मैं आपको बता देना चाहती हूँ ! मैं आपसे कभी शादी नहीं करूँगी, चाहे जो कुछ हो जाए ! भला आप जैसे मसखरे आदमी से भी कोई शादी कर सकता है ? आईने में अपनी सूरत तो देखिए, देखिए तो, आप कैसे लग रहे हैं ! क्यों, आख़िर क्यों ये सब लोग मुझे छेड़ते हैं और कहते हैं कि मैं आपसे शादी करनेवाली हूँ ? आपको मालूम होना चाहिए ! आप भी उनके साथ साज़िश में शामिल हैं !"

"कोई तुम्हें नहीं छेड़ता है, कोई भी नहीं !" अदेलईदा घबराकर बुदबुदाई।

"किसी ने ऐसी बात सोची भी नहीं है," अलेक्सान्द्रा चिल्लाई। "किसी ने इसके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा है !"

"कौन छेड़ता है इसे ?" मिसेज़ येपांचिना ने क्रोध से काँपते हुए कमरे में मौजूद सभी लोगों को बारी-बारी देखा। "क़ब छेड़ा गया इसे ? इस तरह की बात किसने कही इससे ? क्या यह पागलपन की बातें कर रही है ?"

"सब लोग इसी की चर्चा कर रहे हैं ! सब लोग ! पिछले तीन दिन से ! मैं इनसे कभी शादी नहीं करूँगी, कभी नहीं !"

इतना कहकर अग्लाया फूट-फूटकर रोने लगी; उसने अपना चेहरा रूमाल में छिपा लिया और

निढ़ाल होकर कुर्सी पर गिर पड़ी।

"लेकिन उसने तो कहा भी नहीं..."

"मैंने आपसे कभी कहा भी नहीं, मिस अग्लाया," प्रिंस ने अनायास ही कहा।

"क्या-आ ?" मिसेज़ येपांचिना आश्चर्य, क्रोध और भय से चिल्ला उठीं। "क्या कहा ?" उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

"मेरा कहने का मतलब है..." प्रिंस ने लड़खड़ाती जबान से कहा, "मैं तो मिस अग्लाया को बस यह समझाना चाहता था...मेरा मतलब है उन्हें समझाने का गौरव प्राप्त करना चाहता था कि मेरा कभी कोई इरादा ही नहीं था कि...मेरा मतलब है...कि उनके सामने शादी का प्रस्ताव रखने का सम्मान प्राप्त करूँ...कभी नहीं था...मेरा इसमें कोई हाथ नहीं था, कसम खाकर कहता हूँ, मेरा कोई हाथ नहीं था, मिस अग्लाया ! मैं कभी चाहता ही नहीं था, यह बात कभी मेरे दिमाग में भी नहीं आई, और कभी आएगी भी नहीं—आप खुद देख लीजिएगा...मेहरबानी करके, इतना यकीन रखिए ! किसी दुष्ट आदमी ने मेरे ख़िलाफ़ आपके कान भरे होंगे ! आप इसकी वजह से बिल्कुल परेशान न हों !"

यह कहकर वह अग्लाया के पास गया। उसने वह रूमाल हटा लिया जिससे उसने अपना चेहरा ढक रखा था, एक सरसरी-सी नज़र उस पर और उसकी सहमी हुई आकृति पर डाली, और उसके शब्दों का आशय समझकर अचानक उसके मुँह पर खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसकी हँसी इतनी मस्त और सम्मोहक थी, उसमें इतना हास-उपहास भरा हुआ था कि अदेलईदा भी अपने आपको न रोक सकी, ख़ासतौर पर जब उसने भी एक नज़र प्रिंस को देखा, और अपनी बहन के पास जाकर पहुँचकर उसने उसे गले लगा लिया और वैसे ही अदम्य रूप से स्कूली लड़कियों की तरह खिलखिलाकर हँस पड़ी। उन्हें देखकर प्रिंस भी अचानक मुस्कराने लगा और उल्लासमय तथा हर्षपूर्ण भाव में बार-बार दोहराता रहा—"भगवान की कृपा है, भगवान की कृपा है !"

अब तो अलेक्सान्द्रा भी अपने आपको न रोक सकी, और दिल खोलकर हँसने लगी। ऐसा लग रहा था कि तीनों लड़कियों की हँसी कभी बन्द ही नहीं होगी।

"अरे, पागल कहीं की !" मिसेज़ येपांचिना बड़बड़ाईं। "पहले तो ऐसा डरा देती हैं कि जान ही निकल जाए, और फिर..."

लेकिन अब तक तो प्रिंस श. भी हँसने लगे थे, रादोम्स्की भी हँस रहा था, कोल्या के ठहाके भी गूँज रहे थे और उन सबको देखकर प्रिंस भी हँस पड़ा।

"चलिए, टहलने चलें ! आइए, चलें !" अदेलईदा चिल्लाकर बोली। "हम सब लोग, और प्रिंस को भी हमारे साथ ज़रूर चलना पड़ेगा। आपको घर जाने की कोई ज़रूरत नहीं है, जनाब। है न प्यारा आदमी, अग्लाया ? है न, माँ ? और, इसके अलावा, मैं इन्हें चूमे बिना और सीने से लगाए बिना नहीं रह सकती...उस सफ़ाई के लिए जो इन्होंने अभी अग्लाया को दी। मैं इन्हें चूम लूँ, माँ ? अग्लाया मुझे अपने प्रिंस को चूम लेने दो !" वह शरारती लड़की चिल्लाकर बोली, और वह सचमुच भागकर प्रिंस के पास गई और उसे माथे पर चूम लिया। प्रिंस ने उसके हाथ पकड़कर उन्हें इतने ज़ोर से दबाया कि वह लगभग चीख़ पड़ी। वह असीम उल्लास से उसे एकटक देखता रहा और अचानक उसने उसका हाथ अपने होंठों तक ले जाकर तीन बार चूम लिया।

"चलिए न," अग्लाया ने पुकारकर कहा। "प्रिंस, आप मेरे साथ चलिएगा। चलें न, माँ? वह आदमी जिसने मुझे अपनाने से इन्कार कर दिया है ? प्रिंस, आपने मुझसे हमेशा के लिए इन्कार कर दिया है न ? अरे, किसी लड़की को अपनी बाँह का सहारा इस तरह नहीं दिया जाता है !

आपको किसी लड़की को अपनी बाँह का सहारा देना भी नहीं आता ? इस तरह, अब चलिए। हम लोग आगे-आगे चलेंगे। आप हम लोगों का आगे चलना पसन्द करेंगे, tete-a'-te'te'[1] ?"

वह बिना रुके बोले चली जा रही थी और बीच-बीच में खिलखिला कर हँस पड़ती थी।

"भगवान की कृपा है ! भगवान की कृपा है !" मिसेज़ येपांचिना यही दोहराती रहीं, हालाँकि उन्हें ख़ुद ठीक से नहीं मालूम था कि वह किस बात पर इतनी ख़ुश थीं।

"बेहद अजीब लोग हैं !" प्रिंस श. ने सोचा, उन लोगों से मुलाक़ात के बाद शायद सौवीं बार, लेकिन...ये अजीब लोग उन्हें बेहद पसन्द भी थे। जहाँ तक प्रिंस का सवाल था, उसे पक्का यक़ीन नहीं था कि वह सचमुच उसे बहुत पसन्द करते थे; जब सब लोग टहलने के लिए चले तो प्रिंस श. कुछ परेशान और उखड़े-उखड़े लग रहे थे।

रादोम्स्की भरपूर उमंग में था; मनोरंजन उद्यान की ओर जाते हुए वह रास्ते-भर अलेक्सान्द्रा और अदेलईदा को हँसाता रहा, और वे भी उसके चुटकुलों पर कुछ ज़्यादा ही तत्परता से हँसती रहीं, जिसकी वजह से कभी-कभी उसे यह शक होने लगा कि वे उसकी बातें सुन ही नहीं रही थीं। यह विचार मन में उठते ही वह ज़ोर से ठहाका मारकर हँस पड़ा, जिसमें ज़रा भी बनावट नहीं लग रही थी, हालाँकि उसने यह नहीं बताया कि वह किस बात पर हँस रहा था (उस आदमी का चरित्र ही ऐसा था !)। दोनों बहनें, जो बहुत ही प्रफुल्लित मनोदशा में थीं, अग्लाया और प्रिंस को देखती रहीं जो उनके आगे चल रहे थे; साफ़ मालूम हो रहा था कि उनकी सबसे छोटी बहन ने उन्हें सोचने के लिए कुछ दे दिया था। अग्लाया के विस्फोट की ओर से मिसेज़ येपांचिना का ध्यान हटाने के लिए प्रिंस श. अभी तक उनसे किसी दूसरी ही चीज़ की बातें करने की कोशिश कर रहे थे, और इस कोशिश में वह उनसे ऐसी उकता देनेवाली बातें कर रहे थे कि उनका सीना छलनी हुआ जा रहा था। वह कुछ खोई-खोई-सी लग रही थीं, अनमनेपन से जवाब दे रही थीं और कभी तो बिलकुल ही जवाब नहीं देती थीं। लेकिन उस शाम के लिए अग्लाया के रहस्यों का भण्डार अभी ख़त्म नहीं हुआ था। अन्तिम रहस्य केवल प्रिंस के हिस्से में आया। घर से कोई सौ गज़ चलने के बाद अग्लाया ने बड़ी तेजी से बोलते हुए कानाफूसी जैसे स्वर में अपने साथ चलनेवाले से कहा, जिसने मानो चुप रहने की क़सम खा रखी थी—"ज़रा दाहिनी ओर देखिए।"

प्रिंस ने उधर देखा।

"अच्छी तरह देखिए। आपको पार्क में वह बेंच दिखाई दे रही है जहाँ तीन बड़े-बड़े पेड़ हैं...हरी बेंच ?"

प्रिंस ने जवाब दिया कि उसे दिखाई दे रही थी।

"आपका क्या ख़्याल है, खूबसूरत जगह है न ? कभी-कभी बहुत सबेरे मैं आकर वहाँ अकेली बैठती हूँ, लगभग सात बजे, जब घर में सब लोग सो रहे होते हैं।"

प्रिंस ने बुदबुदाकर कहा कि सचमुच वह बहुत ही खूबसूरत जगह थी।

"और अब, मेहरबानी करके, मुझे छोड़ दीजिए। मैं अब और ज़्यादा देर आपके साथ बाँह में बाँह डालकर चलना नहीं चाहती। या बेहतर होगा कि मेरे साथ बाँह डालकर चलते रहिए, लेकिन मुझसे बोलिए बिलकुल नहीं। मैं कुछ सोचना चाहती हूँ।..."

इस चेतावनी की यों भी कोई ज़रूरत नहीं थी—अगर प्रिंस को बोलने से मना न भी किया जाता, तब भी वह एक शब्द कहनेवाला नहीं था। जब उसने उसे बेंच के बारे में बताया था तो

1. सबसे अलग। (फ्रांसीसी)

उसका दिल धड़कने लगा था। एक मिनट बाद उसने अपना इरादा बदल दिया और अपने बेहूदा विचार पर लज्जित होकर उसने उसे अपने दिमाग़ से निकाल दिया।

जैसा कि सभी लोग जानते हैं सप्ताह के बाक़ी दिनों में जो लोग पाव्लोव्स्क के मनोरंजक उद्यान में बैंड सुनने आते हैं वे उन लोगों के मुकाबले ज़्यादा 'चुने हुए' होते हैं जो इतवार के दिन या सार्वजनिक छुट्टियों के दिन आते हैं, जब 'भाँति-भाँति के लोग' भीड़ की भीड़ सारे शहर से आ जाते हैं। महिलाओं की पोशाकों में उत्सवोंवाली तड़क-भड़क तो नहीं होती, लेकिन वे शिष्टतापूर्ण ज़रूर होती है। बैंड-स्टैंड पर मिलना उचित बात समझी जाती है। यहाँ का आर्केस्ट्रा जो शहरी पार्कों में बजाए जानेवाले बैण्डों में शायद सबसे अच्छा है, नई से नई धुनें बजाता है। बेतकल्लुफ़ी और घनिष्ठता तक के कुछ आभास के बावजूद चारों ओर पूरी तरह मर्यादा और शिष्टता का वातावरण व्याप्त रहता है। जान-पहचान के लोग, जो सभी गर्मियों-भर पाव्लोव्स्क में रहने के लिए आते हैं, एक-दूसरे को देखते रहने के लिए वहाँ मिलते हैं। उनमें से कई तो बिलकुल खुश होकर ऐसा करते हैं और वहाँ इसी काम के लिए जाते हैं; लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो सिर्फ़ संगीत सुनने जाते हैं। दंगे-फसाद की घटनाएँ शायद ही कभी होती हैं, हालाँकि कभी-कभी हफ़्ते के आम दिनों में भी इस तरह की घटनाएँ हो जाती हैं। लेकिन इस तरह की चीज़ों से बिलकुल तो नहीं बचा जा सकता।

उस ख़ास दिन शाम बड़ी सुहानी थी और मनोरंजन उद्यान में बहुत बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। बैण्ड-स्टैण्ड के चारों ओर की सारी सीटें घिर गई थीं। हमारी मण्डली बैण्ड-स्टैण्ड के बाईं ओर बाहर निकलने के रास्ते के पास ही कुर्सियों पर बैठ गई। भीड़ और संगीत की वजह से [illegible] येपांचिना के चेहरे पर कुछ खुशी दिखाई दी और लड़कियों का कुछ मन-बहलाव हुआ; जान पहचान के कुछ लोगों से उनकी नज़रें चार हुईं और उन्होंने एक-दूसरे को देखकर शिष्टता से सिर हिलाया; उन्होंने उनकी पोशाकों का निरीक्षण किया, उनकी कुछ विचित्रताओं को ध्यान से देखा, उनके बारे में आपस में कुछ बातें कीं, और व्यंगपूर्वक मुस्करा दीं। रादोम्स्की ने भी अपने दोस्तों को देखकर कई बार सिर झुकाया। अग्लाया और प्रिंस ने, जो अभी तक एक-दूसरे के साथ थे, बरबस कई लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। शीघ्र ही कई नौजवान उन लड़कियों और उनकी माँ का अभिवादन करने गए; उनमें से दो-तीन तो उनसे बातचीत करने के लिए रुक भी गए; वे सब रादोम्स्की के दोस्त थे। उनमें एक नौजवान और बहुत ही खूबसूरत फौज़ी अफ़सर भी था, बहुत मस्त और बेहद बातूनी; वह जल्दी से अग्लाया से बातचीत करने के लिए आगे बढ़ा और उसका ध्यान आकृष्ट करने की उसने भरपूर कोशिश की। अग्लाया ने उससे बड़ी शिष्टता का व्यवहार किया और बहुत खुश होकर उससे बातें करती रही और हँसती रही। रादोम्स्की ने प्रिंस से अपने दोस्त का परिचय कराने की इजाज़त माँगी। प्रिंस की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि आख़िर वह क्या करे, लेकिन उनका परिचय हुआ और दोनों ने झुककर एक-दूसरे का अभिवादन किया और हाथ मिलाए। रादोम्स्की के दोस्त ने प्रिंस से एक सवाल पूछा, लेकिन प्रिंस ने या तो जवाब नहीं दिया या मुँह ही मुँह में बुदबुदाकर कोई ऐसी विचित्र बात कही कि अफ़सर ने उसे घूरकर देखा, फिर एक नज़र रादोम्स्की की ओर देखा; वह फ़ौरन समझ गया कि रादोम्स्की ने परिचय किसलिए कराया था; वह धीरे से मुस्कराया और फिर अग्लाया की ओर मुड़ा। सिर्फ़ रादोम्स्की ने ही देखा कि इस पर अचानक अग्लाया के चेहरे पर लाली दौड़ गई।

प्रिंस ने तो यह तक नहीं देखा कि दूसरे लोग अग्लाया से बातें कर रहे थे और उसकी सराहना कर रहे थे, और कभी-कभी तो ऐसा लगता था कि उसे यह भी याद नहीं है कि वह उसके पास

बैठा हुआ है। कभी-कभी वह महसूस करता था कि अच्छा हो अगर वह कहीं चला जाए, बिलकुल ग़ायब हो जाए और उसे किसी नीरस और निर्जन स्थान में भी जाने में कोई आपत्ति न होती जहाँ वह अपने विचारों के साथ अकेला रह सकता, लेकिन शर्त बस यह थी कि किसी को पता न हो कि वह कहाँ है। या, कम से कम वह अपने घर ही वापस चला जाता, बरामदे में, बशर्ते कि वहाँ कोई न होता, न लेबेदेव, न उसके बच्चे; वहाँ वह सोफ़े पर गिर पड़ता, अपना मुँह तकिए में छिपाकर पूरे एक दिन और एक रात और फिर दूसरे दिन पड़ा रहता। कुछ क्षण ऐसे आते जब वह पहाड़ों के सपने देखता, ख़ासतौर पर पहाड़ों में एक जानी-पहचानी जगह के, एक ऐसी जगह के जिसे वह हमेशा याद रखना चाहता था, और जिस ज़माने में वह वहाँ रहता था तब उसे वहाँ जाना बहुत अच्छा लगता था और जहाँ से वह नीचे फैले हुए गाँव को, झरने की नीचे हल्की-हल्की चमकती हुई पट्टी को, सफ़ेद बादलों को, और पुराने क़िले के खंडहरों को देख सकता था। ओह, उसका कितना जी चाह रहा था कि इस वक़्त वह वहाँ होता और सिर्फ़ एक बात के बारे में सोचता—ओह, अपनी सारी ज़िन्दगी एक ही चीज़ के बारे में—इसमें वह हज़ारों साल व्यस्त रह सकता था ! बेशक यहाँ के लोग उसे बिलकुल भूल जाएँ। हाँ, यह सचमुच ज़रूरी था, और इससे भी अच्छा तो यह होता कि उन्होंने कभी उसे जाना ही न होता और यह सब कुछ बस एक सपना होता। लेकिन इससे फ़र्क़ ही क्या पड़ता था कि यह सब महज़ असलियत थी या सपना ? कभी-कभी वह बड़े ध्यान से अग्लाया को देखने लगता और पाँच-पाँच मिनट तक उसकी तरफ़ से नज़रें न हटाता, लेकिन उन नज़रों में एक विचित्र भाव होता था—वह उसे इस तरह देखता था जैसे वह कहीं मील-भर दूर हो या वह ख़ुद न हो बल्कि उसकी तस्वीर हो जिसे वह देख रहा था।

"आप मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं, प्रिन्स ?" उसने अपने आस-पास के लोगों के साथ उल्लास-भरी बातचीत और हँसी बीच में रोककर अचानक कहा। "मुझे आपसे डर लगता है। मैं यह अजीब बात महसूस करती हूँ कि जैसे आप अभी अपना हाथ बढ़ाकर मेरा चेहरा छुएँगे। यह ऐसे ही लग रहे हैं न, रादोम्स्की साहब ?"

प्रिंस उसकी बात इस तरह सुन रहा था मानो उसे इस बात पर ताज्जुब हो कि वह उससे बात कर रही थी, हालाँकि उसकी समझ में पूरी तरह नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रही थी, और उसने कोई जवाब भी नहीं दिया। लेकिन अग्लाया और बाक़ी सब लोगों को हँसता देखकर उसने अपना मुँह खोला और खुद हँसने लगा। हँसी की आवाज़ तेज होती गई और फौज़ी अफ़सर तो, जो स्पष्टतः बहुत विनोदशील आदमी था, हँसते-हँसते दोहरा हुआ जा रहा था।

"बौड़म कहीं का !" अग्लाया ने सहसा गुस्से से दबे स्वर में अपने आपसे कहा।

"हे भगवान ! उसे ऐसे आदमी से..." मिसेज़ येपांचिना बहुत ताव खाकर दबे स्वर में बुदबुदाईं। "कहीं बिलकुल ही पागल तो नहीं हो गई है !"

"यह तो सिर्फ़ मज़ाक़ है," अलेक्सान्द्रा ने उनके कान में कहा। "यह वैसा ही मज़ाक़ है जैसा 'ग़रीब सूरमावाला' था—बस और कुछ नहीं ! वह अपने हमेशा के ढंग से फिर उसे बेवक़ूफ़ बना रही हैं। लेकिन मज़ाक़ हद से आगे बढ़ गया है। इसको रोकना चाहिए, माँ ! अभी कुछ देर पहले वह भावुक नाटक की अभिनेत्री की तरह एक्टिंग कर रही थी और उसने अपनी सरासर शरारत से हम सबको डरा दिया था।..."

"अच्छा ही है कि उसने शरारत उसके जैसे बौड़म के साथ की," मिसेज़ येपांचिना ने उसी तरह कानाफूसी के स्वर में जवाब दिया। बेटी की बात से उनकी परेशानी काफ़ी दूर हो गई थी।

प्रिंस ने उन लोगों को उसे बौड़म कहते हुए सुन लिया था और वह चौंक पड़ा था, लेकिन

इसलिए नहीं कि उसे बौड़म कहा गया था। वह 'बौड़म' वाली बात को फ़ौरन भूल गया। जिस जगह वह बैठा था वहाँ से कुछ ही दूर भीड़ में उसकी नज़र एक चेहरे पर पड़ी—पीला चेहरा, काले घुँघराले बाल; देखने का ढंग और मुस्कराहट जानी-पहचानी, बहुत ज़्यादा जानी-पहचानी। प्रिंस की नज़र पड़ते ही वह ग़ायब हो गया। हो सकता है कि यह सिर्फ़ उसकी कल्पना रही हो—उसे बस उसकी फीकी मुस्कराहट, उसकी आँखें और धानी रंग की वह फबती हुई टाई याद रह गई थी जो उस आदमी ने लगा रखी थी। प्रिंस यह भी फ़ैसला नहीं कर पा रहा था कि वह आदमी भीड़ में ग़ायब हो गया था या बाग़ में खिसक गया था।

एक ही मिनट बाद वह तेजी से नज़रें दौड़ाकर और बेचैनी से अचानक चारों ओर देखने लगा; कौन जाने पहले भूत के बाद दूसरा भूत भी दिखाई दे। ऐसा होना लगभग निश्चित था। जब वे मनोरंजन उद्यान में गए थे तब इस मुलाक़ात की सम्भावना को नज़रअंदाज़ करना उसके लिए असम्भव था। यह सच है कि जब वह वहाँ जा रहा था तो उसे यह आभास नहीं हुआ था कि वह वहाँ जा रहा था—ऐसी थी उसकी दिमाग़ की हालत। अगर वह अधिक ध्यान से देख रहा होता तो पन्द्रह मिनट पहले ही उसका ध्यान इस बात की ओर गया होता कि अग्लाया भी रह-रहकर बेचैनी से इधर-उधर देख रही थी, मानो वह अपने पास किसी को खोज रही थी। अब चूँकि प्रिंस की बेचैनी बहुत स्पष्ट हो गई थी, इसलिए अग्लाया की बेचैनी और उद्विग्नता भी काफ़ी बढ़ गई थी, और जैसे ही प्रिंस ने चारों ओर नज़र दौड़ाई वैसे ही उसने भी चारों ओर देखा। उसकी उद्विग्नता का कारण जल्दी ही समझ में आ गया।

बग़लवाले फाटक से, जिसके पास प्रिंस और पूरी येपांचिन-मण्डली बैठी हुई थी, अचानक एक पूरी भीड़ सामने आ गई, कम से कम दर्जन-भर लोग होंगे। इस भीड़ के आगे आगे तीन औरतें चल रही थीं, जिनमें से दो बला की खुबसूरत थीं, इसलिए उनके पीछे इतने प्रशंसकों का चलना कोई अजीब बात नहीं थी। लेकिन उन औरतों और उनके सराहनेवालों में कुछ विचित्र बात थी, कोई ऐसी बात जिसकी वजह से वे बैण्ड-स्टैण्ड पर मौजूद बाक़ी पब्लिक से अलग मालूम हो रहे थे। लगभग सभी का ध्यान फ़ौरन उनकी ओर गया, लेकिन सभी ने जताया यही, जैसे उन्होंने उनको न देखा हो, और उन्हें देखकर सिर्फ़ कुछ नौजवान मुस्कराए और उन्होंने एक दूसरे से धीरे से कुछ कहा। उन लोगों पर नज़र न पड़ना नामुमकिन था—वे अपने आपको छिपाने की कोई कोशिश भी नहीं कर रहे थे, ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे और हँस रहे थे। हालाँकि उनमें से कुछ बहुत ही ठाठदार और सजीले कपड़े पहने हुए थे, फिर भी यह शक हो सकता था कि उनमें से कई लोग पिए हुए थे; लेकिन उनमें ऐसे लोग भी थे जो देखने में बहुत विचित्र लग रहे थे, जिन्होंने विचित्र कपड़े पहन रखे थे और जिनके चेहरे विचित्र ढंग से तमतमाए हुए थे; उनमें से कुछ फ़ौजी अफ़सर थे और कुछ तो अब जवान भी नहीं रह गए थे; उनमें ऐसे लोग भी थे जिन्होंने ढीले-ढाले अच्छे सिले हुए आरामदेह सूट पहन रखे थे, जिनकी उँगलियों पर अँगूठियाँ और कफ़ों में बटन थे, और उन्होंने कोयले जैसी काली नकली बालों की शानदार विगें लगा रखी थीं और जिनके गलमुच्छे भी बिलकुल काले थे; उनके चेहरों पर रोब का भाव था, हालाँकि उनमें कुछ नकचढ़ापन भी झलकता था—ऐसे लोग जिनसे समाज में हमेशा ताऊन की तरह कतराया जाता है। हमारी छुट्टियाँ मनाने की जगहों में तो ऐसे लोग बहुत मिलते हैं जो अपनी असाधारण सम्माननीयता की दृष्टि से सराहनीय होते हैं और जिनकी ख्याति विशेष रूप से अच्छी होती है, लेकिन सावधान से सावधान आदमी भी हमेशा बग़ल के मकान से गिरनेवाली ईंट से बच नहीं पाता। इसी तरह की ईंट अभी उस अत्यन्त सम्मानित पब्लिक पर गिरने वाली थी जो बैण्ड का संगीत सुनने वहाँ जमा हुई थी।

मनोरंजन उद्यान से बैण्ड-स्टैण्ड तक पहुँचने के लिए तीन सीढ़ियाँ उतरनी पड़ती थीं। वह भीड़ इन सीढ़ियों के ऊपर आकर रुक गई; उन लोगों की हिम्मत नीचे उतरने की नहीं पड़ रही थी, लेकिन एक औरत ने क़दम आगे बढ़ाया; उसके साथ चलनेवालों में से केवल दो की उसका साथ देने की हिम्मत पड़ी। उनमें से एक तो मामूली-सी शक्ल-सूरत का अधेड़ उम्र का आदमी था, जो अत्यन्त सम्मानित मालूम होता था, लेकिन उसे देखने से लगता था कि वह एक़दम अकेला है—यानी उन लोगों में से है जिन्हें कोई नहीं जानता और जो ख़ुद भी किसी को नहीं जानते। दूसरा बेहद बदनाम क़िस्म के आवारा लोगों जैसा था। उनके अलावा कोई भी उस सनकी औरत के पीछे नहीं आया; लेकिन सीढ़ियाँ उतरते हुए उसने पीछे मुड़कर देखा तक नहीं, मानो उसे इसकी रत्ती-भर परवाह न हो कि कोई उसके पीछे आ रहा है कि नहीं। वह पहले की तरह ही हँस रही थी और ज़ोर-ज़ोर से बोल रही थी; उसके कपड़े बहुत महँगे और सुरुचिपूर्ण थे, हालाँकि वे शायद ज़रूरत से कुछ ज़्यादा ही सजीले थे। वह चलकर बैण्ड-स्टैण्ड के दूसरी ओर गई, जहाँ सड़क के पास एक़ खुली बग्घी किसी का इन्तज़ार कर रही थी।

प्रिंस ने उसे तीन महीने से नहीं देखा था। जबसे वह पीटर्सबर्ग आया था तब से वह जाकर उससे मिलने का इरादा कर रहा था; लेकिन शायद कोई गुप्त पूर्वबोध उसे ऐसा करने से रोक रहा था। बहरहाल, इसकी तो वह कल्पना ही नहीं कर पाया था कि जब वह उससे मिलेगा तो कैसा महसूस करेगा, हालाँकि कभी-कभी वह डरते-डरते इसकी कल्पना करने की कोशिश करता था। उसे एक बात के बारे में कोई शक नहीं था कि उनकी मुलाक़ात कष्टप्रद होगी। पिछले छह महीनों में कई बार उसने यह याद किया था कि जब उसने उस औरत के चेहरे को सिर्फ़ तस्वीर में देखा था तो उसके मन पर पहली छाप क्या पड़ी थी; लेकिन उसे याद आया कि उसकी तस्वीर की भी जो छाप उस पर पड़ी थी वह कष्टदायक ही थी। प्रान्तीय क्षेत्र में बिताए गए उस एक महीने का, जब वह उससे लगभग रोज ही मिलता था, उस पर ऐसा भयानक असर हुआ था कि कभी-कभी तो वह अपने दिमाग़ से उसकी याद तक मिटा देने की कोशिश करता था। उस औरत के चेहरे में कोई ऐसी बात थी जिसकी वजह से वह व्यथित हो उठता था—रोगोझिन के साथ अपनी बातचीत के दौरान उसने इस भावना को अपने मन में उसके प्रति असीम दया की भावना के रूप में समझाने की कोशिश की थी, और यह बिलकुल सच भी था—तस्वीर में उसका चेहरा देखते ही उसके हृदय में कष्टप्रद दया की भावना उमड़ आई थी; इस औरत के प्रति तरस की और यहाँ तक कि यातना की भावना उसके हृदय से कभी नहीं मिटी थी और वह इस समय भी मौजूद थी। नहीं, वह पहले से भी ज़्यादा मजबूत हो गई थी। लेकिन उसने रोगोझिन से जो कुछ कहा था उससे वह असन्तुष्ट था; और अब जाकर, उसके अचानक सामने आ जाने के क्षण उसने महसूस किया था, शायद सहजबुद्धि के बल पर, कि वह क्या चीज़ थी जो उसने रोगोझिन को नहीं बताई थी। वह अपनी घृणा की भावना उसे बताने में असफल रहा था—जी हाँ, घृणा की ! अब, इस क्षण, उसे उसका पूरी तरह आभास था; उसे अपने ही कारणों से विश्वास था, पूरा यक़ीन था कि वह औरत पागल है। यदि कोई आदमी किसी औरत से किसी भी दूसरी चीज़ से बढ़कर प्रेम करता हो, या इस तरह के प्रेम की सम्भावना की पहले से आशा कर रहा हो, और अचानक वह देखे कि वह औरत लोहे की सलाखों के पीछे एक दीवार के साथ ज़ंजीर से बँधी हुई है और एक वार्डर डण्डा लिए उसकी निगरानी कर रहा है तो उस समय की भावना कुछ-कुछ वैसी ही होगी जैसी कि प्रिंस इस समय महसूस कर रहा था।

"बात क्या है ?" अग्लाया ने कनखियों से देखकर और उसकी बाँह निष्कपट भाव से खींचकर

जल्दी-जल्दी कानाफूसी के स्वर में कहा।

उसने उसकी ओर अपना सिर घुमाया, उसकी ओर देखा, उसकी काली आँखों में आँखें डालकर घूरता रहा, जो उस समय न जाने क्यों बिजली की तरह चमक रही थीं और उसे देखकर मुस्कराने की कोशिश की, लेकिन अचानक, मानो वह उसे उसी क्षण भूल गया हो, उसने अपनी नज़रें फिर दाहिनी ओर घुमाईं और एक बार फिर उस असाधारण भूत को देखने लगा। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना उसी समय लड़कियों की कुर्सियों के पास से होकर गुजर रही थी। रादोम्स्की किसी बहुत ही दिलचस्प और हँसानेवाली चीज़ के बारे में अलेक्सान्द्रा से बातें करता रहा। वह बहुत तेजी से और उद्विग्न होकर बोल रहा था। प्रिंस को याद था कि अग्लाया ने अचानक धीरे से कहा, "कैसा..."

उसने अपनी बात अधूरी छोड़ दी; उसने फ़ौरन अपने आपको रोक लिया और आगे कुछ भी न कहा, लेकिन इतना ही काफ़ी था। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना, जो उनके सामने से होकर गुजर रही थी जैसे किसी को देख ही न रही हो, अचानक उनकी ओर मुड़ी और ऐसा लगा कि उसे अब जाकर वहाँ रादोम्स्की के मौजूद होने का आभास हुआ था।

"और लो, यह तो यहाँ है !" वह अचानक रुककर चिल्लाई। "मैं इसे सारे में ढूंढ़ रही हूँ और यह यहाँ बैठा है जहाँ मुझे ज़रा भी उम्मीद नहीं थी...देखो," उसने रादोम्स्की को सम्बोधित करके कहा, "मैं तो समझती थी कि तुम वहाँ...अपने चाचा के यहाँ होगे !"

रादोम्स्की का चेहरा लाल हो गया, उसने नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को भीषण गुस्से से देखा, लेकिन जल्दी ही फिर उसकी ओर से नज़रें फेर लीं।

"अच्छा, तुम्हें मालूम नहीं ? ! भला कोई यक़ीन कर सकता है ? इसे अभी तक पता नहीं ! उन्होंने गोली मार ली ! तुम्हारे चाचा ने आज सबेरे अपने को गोली मार ली ! मैंने आज दो बजे सुना यह। अरे, अब तक तो आधे शहर को यह बात मालूम हो चुकी है। कुछ लोगों का कहना है कि साढ़े तीन लाख रूबल की सरकारी रक़म ग़ायब है, कुछ का कहना है, पाँच लाख। और मैं यही भरोसा किए बैठी रही कि वह तुम्हारे नाम बहुत बड़ी दौलत छोड़ जाएँगे। सब फूँक दिया उन्होंने, बूढ़े ऐयाश ने ! अच्छा, गुड-बाई, bonne chance ![1] लेकिन क्या तुम वहाँ जा नहीं रहे हो ? तो तुमने जो फौज़ की नौकरी से वक़्त रहते इस्तीफा दे दिया था, वो बड़ा सयानापन था ! लेकिन मैं क्या बातें कर रही हूँ ? तुम्हें तो सब कुछ पहले से मालूम था। तुम्हें यह सब कुछ कल ही मालूम हो गया होगा।..."

जिस ढिठाई से वह उसके पीछे पड़ी हुई थी और जिस तरह वह उससे पुरानी जान-पहचान और घनिष्ठता का ढिंढ़ोरा पीट रही थी, जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं था, उसके पीछे निश्चित रूप से कोई उद्देश्य होने के बावजूद—सचमुच, इसके बारे में अब कोई सन्देह ही नहीं हो सकता था—रादोम्स्की ने पहले तो सोचा कि उस औरत की ओर कोई ध्यान ही न दे और इस तरह उससे छुटकारा पा ले। लेकिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के शब्दों में उस पर वज्रपात सा हुआ; अपने चाचा की मौत के बारे में सुनकर उसका रंग चूने की तरह सफ़ेद हो गया और वह उस सूचना के स्रोत की ओर मुड़ा। उसी क्षण मिसेज़ येपांचिना अपनी जगह से उठीं, सबको अपनी-अपनी जगह से उठाया, और लगभग दौड़ती हुई बाहर निकल गईं। केवल प्रिंस एक सेकंड के लिए रुका रहा, मानो फ़ैसला न कर पा रहा हो कि क्या करे, और रादोम्स्की वहीं खड़ा था, उसे जो आघात पहुँचा था उससे वह अभी तक सम्भल नहीं पाया था। लेकिन येपांचिन-परिवार के लोग अभी बीस क़दम भी न गए होंगे कि एक अत्यन्त शर्मनाक काण्ड हुआ।

1. सफल रहो ! (फ्रांसीसी)

फौज़ी अफ़सर को, जो रादोम्स्की का गहरा दोस्त था और अग्लाया से बातें कर रहा था, बेहद गुस्सा आया।

"यह बेहया औरत," उसने काफ़ी ऊँचे स्वर में कहा, "इसे तो कोड़े लगवाए जाने चाहिए। इस तरह की औरतों का यही इलाज है !" (ऐसा लगता था कि वह पहले से रादोम्स्की का विश्वासपात्र था।)

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने फ़ौरन उसकी ओर मुड़कर देखा। उसकी आँखें चमक रही थीं; उसने लपककर कुछ ही क़दम की दूरी पर खड़े हुए एक बिलकुल ही अजनबी नौजवान के हाथ से बँटा हुआ पतला-सा घुड़सवारी का चाबुक छीनकर फौज़ी अफ़सर के चेहरे पर भरपूर जड़ दिया। यह सब कुछ एक क्षण में हो गया...अफ़सर आपे से बाहर होकर उस पर टूट पड़ा। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ के लोग अब उसके पास नहीं थे। अधेड़ उम्र के सम्मानित सज्जन तो ग़ायब ही हो गए थे और जो सज्जन कुछ नशे में थे वह एक ओर को खड़े ठहाका मारकर हँस रहे थे। एक ही मिनट बाद यक़ीनन पुलिस मौक़े पर आ गई होती और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना बड़ी मुसीबत में फँस गई होती, लेकिन ऐन वक़्त पर मदद पहुँच गई—प्रिंस ने, जो कुछ ही क़दम पर रुक गया था, पीछे से अफ़सर का हाथ पकड़ लिया। हाथ छुड़ाने की कोशिश में अफ़सर ने उसे सीने पर इतने ज़ोर से धक्का दिया कि वह कई क़दम पीछे लड़खड़ाता हुआ एक कुर्सी पर जा गिरा। लेकिन दो आदमी नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की मदद को आ पहुँचे। वह बॉक्सर, जिससे उस लेख के लेखक के रूप में पाठक पहले ही परिचित हो चुके हैं, और रोगोझिन के पुराने गिरोह का एक नियमित सदस्य अफ़सर के सामने आ खड़े हुए।

"रिटायर्ड लेफ़्टिनेंट केल्लेर, जनाब, आपकी सेवा के लिए हाजिर है !" उसने अकड़कर अपना परिचय देते हुए कहा। "कप्तान साहब, अगर आप लड़ना चाहते हैं तो मैं इन महिला की जगह लेने को खुशी से तैयार हूँ। मैं अंग्रेजी बॉक्सिंग में उस्ताद हूँ। कप्तान साहब, धक्का न दीजिए। आपका जो घातक अपमान हुआ है उसके लिए मुझे आपसे हमदर्दी है, लेकिन मैं आपको सरे-आम एक औरत पर हाथ उठाने नहीं दे सकता। लेकिन अगर आप निहायत शरीफ़ इज़्ज़तदार आदमी की तरह दूसरी तरह की लड़ाई चाहते हैं तो...मेरा ख़्याल है कि आप मेरा मतलब समझ गए होंगे, कप्तान साहब !"

लेकिन कप्तान अब तक अपने आपको सम्भाल चुका था और वह उसकी बात सुन ही नहीं रहा था। उसी क्षण रोगोझिन भीड़ में से निकला और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की बाँह पकड़कर उसे अपने साथ लेकर चला गया। रोगोझिन बुरी तरह घबराया हुआ लग रहा था। उसका रंग पीला पड़ गया था और वह काँप रहा था। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को वहाँ से ले जाते हुए वह उस अफ़सर के मुँह पर द्वेषपूर्वक हँसा और आर्केड बाजार के दुकानदार जैसे विजयोल्लास के भाव से कहा—"क्या खूब ! लगी न कसके ? तुम्हारा थोबड़ा तो लहू-लुहान हो गया है ! मज़ा आ गया !"

अपने आपको सम्भालकर और उस बात को पूरी तरह महसूस करते हुए कि उसका पाला किससे पड़ा है, फौज़ी अफ़सर शिष्टता के साथ (उसने अपना चेहरा अब भी रूमाल से ढक रखा था) प्रिंस की ओर मुड़ा जो अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ था।

"आप प्रिंस मीश्किन हैं न, अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा ? वही साहब जिनसे परिचित कराये जाने का सौभाग्य मुझे मिल चुका है ?"

"वह पागल है ! पागल ! मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ !" प्रिंस ने काँपती हुई आवाज़ से कहा और न जाने क्यों अपने काँपते हुए हाथ उसकी ओर बढ़ा दिए।

"शायद आपकी जानकारी मेरी जानकारी से बेहतर है, लेकिन अपना नाम तो बताइए, साहब !"

वह सिर हिलाकर चला गया। उस काण्ड में जिन लोगों का हाथ था उनके चले जाने के ठीक पाँच सेकंड बाद पुलिस आई। लेकिन इस घटना का सिलसिला दो मिनट से ज़्यादा नहीं चला। दर्शकों में से कुछ लोग उठकर चले गए; कुछ बस अपनी जगह छोड़कर दूसरी जगह जा बैठे, कुछ को यह शर्मनाक काण्ड देखकर खुशी हुई और कुछ को उससे बहुत दिलचस्पी पैदा हुई और वे बड़ी उत्सुकता से उसके बारे में चर्चा करने लगे। मतलब यह कि सारा मामला उसी तरह ख़त्म हो गया जैसे कि आमतौर पर होता है। बैण्ड फिर बजने लगा। प्रिंस येपांचिन मण्डली के पीछे चल दिया। कुर्सी पर लड़खड़ाकर गिरने के बाद अगर प्रिंस को इसका ध्यान आया होता और उसे बाईं ओर देखने का समय मिला होता तो उसने अग्लाया को ज़रूर देखा होता, जो अभी कोई बीस क़दम की दूरी पर रुक गई थी और अपनी माँ और बहनों के पुकारने के बावजूद, जो कुछ आगे निकल गई थीं, इस शर्मनाक काण्ड को देख रही थी। प्रिंस श. भागकर उसके पास पहुँचे और आख़िरकार उसे जल्दी से वहाँ से चल देने पर राज़ी करने में सफल हो गए। मिसेज़ येपांचिना को याद था कि अग्लाया उनके पास ऐसी उद्विग्नता की हालत में लौटकर आई थी कि शायद उसने उन लोगों के पुकारने की आवाज़ सुनी ही नहीं थी। लेकिन दो ही मिनट बाद पार्क में क़दम रखते ही अग्लाया ने अपनी हमेशा जैसी उदासीन और चंचल आवाज़ में कहा—"मैं तो बस यह देखना चाहती थी कि इस स्वाँग का अन्त कैसे होता है !"

3

मनोरंजन उद्यान की घटना से माँ और बेटियों को भी गहरा आघात पहुँचा था। चिन्तित और उद्विग्न मिसेज़ येपांचिना और उनकी बेटियाँ लगभग भागती हुई घर पहुँची थीं। माँ की धारणा थी, और उनके विचारों के अनुसार, उस घटना में इतना बहुत कुछ हुआ था और सामने आया था कि अपनी घबराहट और परेशानी के बावजूद उनके दिमाग़ में निश्चित निष्कर्ष बन गए थे। लेकिन यह तो सभी महसूस करते थे कि जो कुछ हुआ था वह कुछ ख़ास ही तौर पर विचित्र था और, शायद सौभाग्य से, किसी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहस्य पर से परदा उठनेवाला था। प्रिंस श. के पहले दिए गए आश्वासनों और सफाइयों के बावजूद रादोम्स्की की 'कलई खुल गई थी', उसका भण्डाभोड़ हो चुका था, उसकी असलियत का पता चल गया था और "उस घृणित औरत के साथ उसके सम्बन्ध सरेआम बेनक़ाब हो चुके थे"। मिसेज़ येपांचिना का और उनकी दो बड़ी बेटियों का यही ख़्याल था। लेकिन इस निष्कर्ष का कुल नतीजा यह हुआ कि रहस्य और भी गहरा हो गया। हालाँकि लड़कियाँ आपस में अपनी माँ से उनके ज़रूरत से ज़्यादा डर जाने पर और इस तरह खुलेआम वहाँ से भाग आने पर कुछ नाराज़ थीं, फिर भी उत्तेजना के बने रहते वे उनसे कोई सवाल पूछने का साहस न कर सकती थीं। इसके अलावा, न जाने क्यों उनका यह ख़्याल था कि उनकी बहन अग्लाया को शायद इस मामले के बारे में उन दोनों से और उनकी माँ से ज़्यादा जानकारी थी। प्रिंस श. की सूरत पर तो मातम छाया हुआ था और वह बहुत विचारमग्न और चिन्ता में डूबे हुए लग रहे थे। मिसेज़ येपांचिना ने रास्ते-भर उनसे एक शब्द भी नहीं कहा और स्पष्टतः उनका ध्यान भी इस ओर नहीं गया। अदेलईदा ने उनसे पूछने की कोशिश की कि अभी वे लोग किस चाचा की बातें कर रहे थे और पीटर्सबर्ग में क्या हुआ था, लेकिन उन्होंने जवाब में बहुत बुरा मुँह

बनाकर बुदबुदाते हुए किसी छानबीन के बारे में बहुत ही गोल-मोल तरीक़े से बताया और कहा कि सारी बात, ज़ाहिर है, सरासर बकवास थी। "इसके बारे में तो कोई शक ही नहीं है," अदेलईदा ने जवाब दिया और इसके बाद फिर कोई सवाल नहीं पूछे। दूसरी ओर अग्लाया असाधारण रूप से शान्त थी, और, रास्ते में उसने जो अकेली बात कही वह यह थी कि वे लोग बहुत तेज चल रहे थे। एक बार वह पीछे मुड़ी तो प्रिंस पर उसकी नज़र पड़ी, जो उन तक पहुँचने की कोशिश कर रहा था। उन्हें पकड़ लेने की उसकी कोशिशों को देखकर वह कटुता के भाव से मुस्कराई और उसने फिर उसकी ओर घूमकर नहीं देखा।

आख़िरकार, घर के बिलकुल पास पहुँचकर उनकी भेंट जनरल येपांचिन से हुई जो उसी समय पीटर्सबर्ग से लौटे थे। उन्होंने फ़ौरन रादोम्स्की के बारे में पूछा। लेकिन उनकी पत्नी कठोर मुद्रा बनाए, कोई जवाब दिए बिना और उनकी ओर एक नज़र तक डाले बिना उनके पास से होकर आगे निकल गईं। प्रिंस श. और अपनी बेटियों की सूरत देखते ही वह ताड़ गए कि घर पर कोई गम्भीर संकट पैदा हो गया है। लेकिन इससे बिलकुल अलग, वह खुद भी बहुत परेशान दिखाई दे रहे थे। उन्होंने प्रिंस श. की बाँह पकड़ी और उन्हें घर के सामनेवाले दरवाज़े पर रोककर लगभग फुसफुसाकर उनसे दो-चार बातें कीं। बाद में बरामदे तक आते हुए और मिसेज़ येपांचिना के कमरे में जाते समय उन दोनों के चेहरों पर छाई हुई परेशानी को देखकर ऐसा लगता था कि उन्होंने कोई असाधारण ख़बर सुनी थी। थोड़ी ही देर बाद वे सब ऊपर मिसेज़ येपांचिना के कमरे में जमा हो गए और अकेला प्रिंस बरामदे में रह गया। वह एक कोने में इस तरह बैठा था जैसे किसी चीज़ की राह देख रहा हो, हालाँकि उसे स्वयं भी ठीक से पता नहीं था कि वह चीज़ क्या थी; यह बात उसके दिमाग़ में आई ही नहीं कि घर में जो उथल-पुथल मची हुई थी उसकी वजह से वह वहाँ से चला जाए; ऐसा लग रहा था कि वह सारी दुनिया को भूल चुका है और उसे जहाँ भी बिठा दिया जाए वहाँ लगातार दो साल तक बैठा रहने को तैयार है। बीच-बीच में उसके कानों में ऊपर से चिन्ता-भरी बातचीत की आवाज़ें आ रही थीं। वह खुद नहीं बता सकता था कि वह उसी तरह वहाँ कितना देर बैठा रहा। काफ़ी समय हो गया था और अँधेरा हो चला था। अचानक अग्लाया बरामदे में आई; वह शान्त दिखाई दे रही थी हालाँकि उसका चेहरा कुछ उतरा हुआ था। प्रिंस को एक कोने में कुर्सी पर बैठा देखकर, जिसे वहाँ पाने की उसे 'कोई आशा नहीं थी,' अग्लाया मानो उलझन में पड़कर मुस्कराई।

"आप यहाँ क्या कर रहे हैं ?" उसने प्रिंस के पास आते हुए पूछा।

प्रिंस घबराकर कुछ बुदबुदाया और अपनी कुर्सी से उछलकर खड़ा हो गया, लेकिन अग्लाया फ़ौरन उसके पासवाली कुर्सी पर बैठ गई, और प्रिंस भी फिर बैठ गया। उसने उसे जल्दी से लेकिन बड़े ग़ौर से एक नज़र देखा, फिर खिड़की के बाहर देखने लगी, जैसे किसी ख़ास बात के बारे में न सोच रही हो, और फिर उसकी ओर देखने लगी। "शायद वह हँसना चाहती है," प्रिंस ने सोचा, "लेकिन नहीं, अगर ऐसा होता तो वह हँस देती।"

"चाय पिएँगे ?" उसने कुछ देर चुप रहकर कहा। "अभी मँगवाती हूँ।"

"जी नहीं, शुक्रिया...मैं...मैं नहीं जानता।..."

"आप नहीं जानते ? मतलब क्या आपका ? अरे हाँ, अगर कोई आपको आमने-सामने की लड़ाई के लिए चुनौती दे तो आप क्या करेंगे ? मैं यह बात पहले ही आपसे पूछना चाहती थी।"

"लेकिन...कौन...कौन चाहेगा...मेरा मतलब है कि मुझे आमने-सामने की लड़ाई के लिए कोई चुनौती नहीं देगा।"

"लेकिन अगर कोई दे ? क्या आपको बहुत डर लगेगा ?"

"जी हाँ...मैं...मैं समझता हूँ कि मुझे बहुत...यानी...डर लगेगा।"

"क्या आप सच कह रहे हैं ? क्या आप कायर हैं ?"

"न-नहीं, मैं नहीं समझता कि मैं सचमुच कायर हूँ। कायर वह आदमी होता है जो डरता है और भाग जाता है, लेकिन जो आदमी डरता तो है लेकिन भागता नहीं, वह कायर नहीं होता," प्रिंस ने एक क्षण सोचने के बाद मुस्कराकर कहा।

"और आप भागेंगे नहीं ?"

"शायद नहीं," आख़िरकार वह अग्लाया के सवालों पर हँस दिया।

"मैं औरत हूँ, लेकिन मैं भी किसी हालत में भागूँगी नहीं," अग्लाया ने कुछ आहत-से स्वर में अपना मत प्रकट किया। "लेकिन मैं देख रही हूँ कि आप मुझ पर हँस रहे हैं और हमेशा की तरह अपने आपको ज़्यादा दिलचस्प बनाने के लिए बहुत अकड़ रहे हैं। अच्छा, यह बताइए, क्या आमतौर पर गोली बारह क़दम की दूरी से चलाई जाती है ? और कुछ लोग दस क़दम से चलाते हैं ? इसका मतलब है कि उनमें से एक तो ज़रूर मारा जाता होगा या घायल हो जाता होगा, है न ?"

"मैं समझता हूँ कि इस तरह की आमने-सामने की लड़ाई में अक्सर ऐसा नहीं होता कि कोई किसी को जान से मार देता हो।"

"अकसर ऐसा नहीं होता ? लेकिन पुश्किन को तो मार डाला था।"

"हो सकता है कि इत्तफ़ाक़ से ही ऐसा हो गया हो।"

"वह इत्तफ़ाक़ की बात नहीं थी। शर्त ही जान लेने की थी, और वह मारे गए।"

"उनके गोली इतने नीचे लगी थी कि दंतेस ने शायद निशाना और ऊपर ही लगाया होगा, सीधे उनके सीने या सिर पर। कोई इतने नीचे निशाना नहीं लगाता, इसलिए पुश्किन के वह गोली चूक से ही लग गई होगी, बिलकुल इत्तफ़ाक़ से। मुझे यह बात ऐसे लोगों ने बताई है जो इस तरह की बातों के माहिर हैं।"

"लेकिन एक बार एक सिपाही से मैंने बातें की थीं, उसने तो मुझे बताया था कि फौज़ी कायदा यह है कि हमले के लिए दूर-दूर तक फैलते वक़्त उनको आधी ऊँचाई पर गोली चलाने का हुक्म होता है, वे कहते यही हैं, आधी ऊँचाई पर। इसलिए, देखिए, उन्हें सीने पर या सिर पर नहीं बल्कि आधी ऊँचाई पर गोली चलाने का हुक्म दिया जाता है। बाद में मैंने एक अफ़सर से इसके बारे में पूछा था, और उसने मुझे बताया कि यह बात बिलकुल सच है।"

"मैं समझता हूँ कि ऐसा इसलिए है कि गोली बहुत दूर से चलाई जाती है।"

"आपको गोली चलाना आता है ?"

"मैंने अपनी ज़िन्दगी में एक गोली भी नहीं चलाई।"

"आपको पिस्तौल भरना भी नहीं आता ?"

"नहीं आता। मेरा मतलब है कि यह तो मैं जानता हूँ कि वह भरा कैसे जाता है, लेकिन मैंने कभी अपने हाथ से भरा नहीं है।"

"तो, इसका मतलब है कि आपको नहीं आता, क्योंकि अभ्यास के बिना यह काम नहीं आता। सुनिए, और याद रखने की कोशिश कीजिए—पहले तो अच्छी बारूद खरीदिए, जो सीली हुई न हो (मुझे किसी ने बताया है कि बारूद सीली हुई नहीं होनी चाहिए, बल्कि बहुत सुखी होनी चाहिए) और बहुत बारीक हो। आपको इसी तरह की बारूद माँगनी चाहिए, वैसी नहीं जैसी कि तोपें दागने

के लि इस्तेमाल की जाती है। मुझे यह भी बताया गया है कि गोली किसी तरह खुद ही बनानी पड़ती है। आपके पास पिस्तौल हैं ?"

"जी नहीं, मेरे पास न हैं और न मुझे चाहिए," प्रिंस अचानक हँस दिया।

"अरे, यह क्या बकवास है ! आपको खरीदना ही चाहिए—बढ़िया, फ़्रांसीसी या इंगलिस्तानी। मुझे बताया गया है कि वे सबसे अच्छे होते हैं। फिर एक अंगुश्ताने भर—या शायद दो अंगुश्ताने भर—बारूद लेकर पिस्तौल भरिए। जितनी ज़्यादा बारूद हो उतना ही अच्छा। फिर उसमें नम्दे का एक टुकड़ा ठूँस दीजिए (मुझे बताया गया है कि नम्दा होना ही चाहिए, किसी वजह से)। आप उसे गद्दे में से निकाल सकते हैं, या कभी-कभी दरवाज़े पर जो नम्दा मढ़ा रहता है, उससे। फिर ठोंक-ठोंककर नम्दा ठूँस देने के बाद उसमें गोली रखिए, पहले बारूद फिर गोली, वरना वह दगेगी नहीं। आप हँस किस बात पर रहे हैं ? मैं चाहती हूँ कि आप दिन में कई बार गोली चलाने का अभ्यास किया करें ताकि आप ठीक निशाने पर गोली मारना सीख लें। बोलिए, करेंगे न ऐसा ?"

प्रिंस हँस पड़ा। अग्लाया ने झुँझलाकर पाँव पटका। इस तरह की बातचीत के दौरान उसकी गम्भीर मुद्रा पर प्रिंस को कुछ आश्चर्य हुआ। वह अपने मन में इस भावना को दबा नहीं पा रहा था कि उसे कुछ मालूम करना था, किसी चीज़ के बारे में पूछना था, बहरहाल किसी ऐसी चीज़ के बारे में जो पिस्तौल भरने से कहीं ज़्यादा महत्त्व रखती थी। लेकिन उसकी याद से हर चीज़ धुँधली होकर ग़ायब हो गई थी, अलावा इसके कि वह उसके पास बैठी हुई थी और वह उसे देख रहा था, और उस समय उसके लिए इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था कि वह किस चीज़ के बारे में बातें कर रही थी।

आख़िरकार, जनरल येपांचिन खुद ऊपर से उतरकर बरामदे में आए; वह माथे पर बल डाले और चेहरे पर चिन्ता और दृढ़ संकल्प का भाव लिए कहीं बाहर जा रहे थे।

"अरे, प्रिंस, तुम हो।...तुम कहाँ जा रहे हो इस वक़्त ?" उन्होंने पूछा, हालाँकि प्रिंस अपनी जगह से हिला तक नहीं था। "आओ, चलो, तुम्हें मैं एक बात बताना चाहता हूँ।"

"गुड-बाई," अग्लाया ने प्रिंस की ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा।

बरामदे में अब काफ़ी अँधेरा हो चुका था और प्रिंस को उस वक़्त उसका चेहरा बिलकुल साफ़ नहीं दिखाई दे रहा था। एक ही मिनट बाद जब वह और जनरल साहब घर के बाहर निकल रहे थे, उसका चेहरा अचानक लाल हो गया और उसने अपने दाहिने हाथ की मुट्ठी कसकर भींच ली।

जनरल साहब भी उधर ही जा रहे थे जिधर उसको जाना था। इतनी देर हो चुकने के बावजूद वह किसी चीज़ के बारे में किसी से बातें करने को बहुत बेचैन थे। लेकिन इसी बीच प्रिंस से हाँपते हुए, जल्दी-जल्दी और कुछ उखड़ी-उखड़ी बातें करने लगे, जिसके दौरान वह बार-बार मिसेज़ येपांचिना का नाम ले रहे थे। अगर प्रिंस ने उस वक़्त थोड़ा-सा और ध्यान दिया होता तो शायद उसकी समझ में आ जाता कि, और बातों के अलावा, जनरल साहब उससे कुछ मालूम करने के लिए भी बेचैन थे, बल्कि उससे कोई सीधा सवाल पूछना चाहते थे, लेकिन उस विषय को छेड़ नहीं पा रहे थे। प्रिंस अपने ही विचारों में इतना खोया हुआ था कि पहले तो उसने कुछ सुना ही नहीं, और जब जनरल साहब ने उत्तेजित होकर कोई सवाल पूछा और उसके सामने खड़े हो गए तो उसे आख़िरकार साफ़-साफ़ कहना पड़ा कि उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह किस चीज़ के बारे में बातें कर रहे थे।

जनरल साहब कन्धे बिचकाकर रह गए।

"तुम लोग भी अजीब हो, सारे के सारे, हर मामले में," जनरल साहब कहते रहे। "मैं तुमसे

सच कहता हूँ कि मुझे तो मिसेज़ येपांचिना के विचारों और उनकी आशंकाओं का कुछ सिर-पैर ही समझ नहीं आता। वह तूफ़ान मचा रही हैं, रो रही हैं और कह रही हैं कि हम लोगों को शर्मिन्दा किया गया है, हमारा अपमान किया गया है। किसने ? कैसे ? किसके सिलसिले में ? क़ब और क्यों ? शायद कसूर मेरा ही है (मैं मानता हूँ), बिलकुल मेरा ही कसूर है, लेकिन वह...फ़सादी औरत अपना उल्लू सीधा करने की जो कोशिशें कर रही है (और ऊपर से इतनी बेहूदा हरकतें कर रही है), उन्हें रोकने के लिए, शायद पुलिस की मदद तक लेनी पड़े और बात तो यह है कि ज़रूरी कार्रवाई के लिए मैं आज ही किसी से मिलनेवाला हूँ। सब कुछ चुपचाप, शान्ति से, दोस्ताना तरीक़े से और कोई बखेड़ा खड़ा किए बिना तै किया जा सकता है। मैं यह भी मानने को तैयार हूँ कि आगे चलकर बहुत-सी बातें हो सकती हैं और इस सिलसिले की बहुत-सी बातें अब भी ऐसी रह गई हैं जिनकी कोई वजह समझ में नहीं आती। इसमें कोई न कोई साज़िश है ज़रूर, लेकिन अगर यहाँ हम लोगों को ही इसके बारे में पक्के तौर पर कुछ नहीं मालूम है तो यहाँ भी कोई इसकी वजह नहीं बता सकता। अगर मैंने नहीं सुना है, तुमने नहीं सुना है, उसने नहीं सुना है, और किसी दूसरे ने भी नहीं सुना है, तो फिर, मैं पूछता हूँ सुना किसने है ? तुम्हारी समझ में इसकी वजह इसके अलावा और क्या हो सकती है कि उसमें से आधा तो भ्रम है और उसका कोई अस्तित्व ही नहीं है, यानी कोई ऐसी चीज़ जैसे...यों समझ लो...कोई छलावा या...किसी दूसरी किस्म का भूत-प्रेत।"

"वह पागल है," प्रिंस ने हाल ही में जो कुछ हुआ था उसे व्यथित होकर सहसा याद करते हुए बुदबुदाकर कहा।

"अगर तुम्हारा मतलब उससे है, तो तुमने बिलकुल पते की बात कही है। यही बात कई बार मेरे दिमाग़ में भी आई है, और इसीलिए मैं चैन की नींद सोता रहा हूँ। लेकिन अब मेरी समझ में आता है कि ज़्यादा मुमकिन यही है कि दूसरों की राय ठीक हो, और इसीलिए मैं उसके पागल होने की बात पर यक़ीन नहीं करता। वह बहुत ही बेहूदा औरत है, इतना मैं मानने को तैयार हूँ, लेकिन, मेरी बात का यक़ीन करो, वह बहुत चालाक है और पागल तो बिलकुल नहीं है। कपितोन अलेक्सेयेविच के सिलसिले में उसका आज का विस्फोट इस बात को पूरी तरह साबित कर देता है। जहाँ तक उसका सवाल है, तो इस मामले में कुछ गड़बड़ है—मेरा मतलब है, कम से कम कुछ ढका-छुपा तो है ही,—और यह सब कुछ उसके किसी ख़ास उद्देश्य से किया गया है।"

"कपितोन अलेक्सेयेविच कौन ?"

"कमाल कर दिया, भाई, तुम बिलकुल सुन ही नहीं रहे हो। मैंने बात शुरू ही कपितोन अलेक्सेयेविच के बारे में बताने से की थी। मुझे इतना गहरा धक्का लगा है कि मैं अभी तक काँप रहा हूँ। इसी वजह से तो मैं शहर में इतनी देर तक रहा। रादोम्स्की के चाचा कपितोन अलेक्सेयेविच ने.."

"अच्छा ?" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा।

"आज सबेरे अपने गोली मार ली, सात बजे। बहुत मान-मर्यादावाले बुज़ुर्ग थे, सत्तर साल के, खाने-पीने और मौज उड़ाने के शौक़ीन और...और जैसा कि उसने कहा था, बहुत बड़ी रक़म् ग़ायब है, काफ़ी बड़ी रक़म !"

"लेकिन उसे कैसे..."

"पता चला ? हा-हा ! देखो, जबसे वह यहाँ आई है तबसे उसे उसके अपने हाली-मवाली घेरे रहते हैं। तुम तो जानते ही हो कि अब उससे किस तरह के लोग मिलने आते हैं और "उससे

जान-पहचान की इज़्ज़त' हासिल करने की तमन्ना रखते हैं, जानते हो न ? इसलिए कुदरती बात है कि उसे अपने किसी मिलनेवाले से आज सबेरे कुछ मालूम हुआ होगा, क्योंकि अब तक यह बात सारे पीटर्सबर्ग को और अगर पूरे नहीं तो आधे पाव्लोव्स्क तक को तो मालूम हो ही चुकी है। जो कुछ मुझे बताया गया है अगर वह सही है तो उसकी फौज़ी वर्दी के बारे में उसने कैसी कमाल की चालाकी की बात कही—मेरा मतलब है, रादोम्स्की के ठीक वक़्त पर फौज़ से इस्तीफा दे देने के बारे में। कैसा दुष्टता-भरा संकेत था ! नहीं, यह पागलपन की निशानी नहीं है। मैं तो इस बात को नहीं मानता कि रादोम्स्की को इस आनेवाली मुसीबत के बारे में कुछ भी मालूम था—मेरा मतलब है कि वह फलाँ तारीख़ को, सात बजे आनेवाली है, वगैरह-वगैरह। लेकिन यह हो सकता है कि उसे ऐसा होने का अन्देशा हो। मैं और दरअसल हम सब लोग, प्रिंस श. भी, यही सोचते थे कि वह उसके लिए बहुत बड़ी दौलत छोड़ जाएँगे ! भयानक ! बहुत ही भयानक ! लेकिन इतना मैं तुम्हें समझा देना चाहता हूँ कि मैं रादोम्स्की को किसी बात का दोष नहीं दे रहा हूँ—इसके बारे में किसी ग़लतफ़हमी में न रहना—फिर भी शक की गुंजाइश तो है ही। प्रिंस श. को इससे बहुत गहरा धक्का पहुँचा है। यह सब कुछ हुआ ही इतने विचित्र ढंग से है।"

"लेकिन रादोम्स्की के व्यवहार में ऐसी शक करने लायक़ क्या बात है ?"

"कुछ नहीं ! कुछ भी नहीं ! वह बहुत ही इज़्ज़तदार तरीक़े से पेश आया। मैं किसी की तरफ़ इशारा नहीं कर रहा था। मैं समझता हूँ कि उसकी अपनी जायदाद तो सही-सलामत है। लेकिन मिसेज़ येपांचिना तो कुछ सुनने को ही नहीं तैयार हैं। लेकिन परिवार में मची हुई इस सारी उथल-पुथल ने, बल्कि कहना चाहिए झगड़ों और चिन्ताओं ने, या उन्हें जो जी चाहे कह लो, नाक में दम कर रखा है। तुम, भले आदमी, सही मानों में परिवार के दोस्त हो, और यह बात तुम्हें बताने में मुझे कोई संकोच नहीं है कि अब पता चला है—हालाँकि इसका कोई पक्का यक़ीन नहीं है—कि कोई महीना-भर पहले रादोम्स्की ने अग्लाया के सामने शादी का प्रस्ताव रखा था और यह कि उसने उससे साफ़ इन्कार कर दिया था।"

"नामुमकिन !" प्रिंस जोश में आकर चिल्लाया।

जनरल साहब चौंक पड़े और आश्चर्यचकित होकर इस तरह ठिठक गए जैसे उसी जगह गड़कर रह गए हों। "क्यों, तुम्हें इसके बारे में कुछ मालूम है क्या ? देखो, भले आदमी, शायद मुझे यह बात तुमको नहीं बतानी चाहिए थी—शायद मेरे मुँह से निकल गई और...मतलब यह...मुझे सचमुच ऐसा नहीं करना चाहिए था, लेकिन बात यह है, मैंने ऐसा इसलिए किया कि तुम... तुम...यानी...हो ही ऐसे आदमी। तुम्हें इसके बारे में कोई ख़ास बात तो नहीं मालूम है न ?"

"मुझे कुछ भी नहीं मालूम...रादोम्स्की के बारे में," प्रिंस ने बुदबुदाकर कहा।

"मुझे भी नहीं मालूम ! देखो, भले आदमी, ये सब लोग तो बस ज़मीन में एक गड्ढा खोदकर उसमें मुझे दफ़न कर देना चाहते हैं...जी हाँ...और यह बात कभी उनके दिमाग़ में आती ही नहीं कि ऐसी बातों से आदमी को कितनी तकलीफ़ होती है और यह कि मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। अभी अभी ऐसा भयानक तूफ़ान मचा कि बस ! मैं तुम्हें यह बात अपने बेटे की तरह बता रहा हूँ। लेकिन सबसे बुरी बात यह है कि अग्लाया अपनी माँ पर मानो हँस रही है। जहाँ तक उसके महीना भर पहले रादोम्स्की के प्रस्ताव को ठुकरा देने का सवाल है और यह कि उसके और रादोम्स्की के बीच इसके बारे में काफ़ी बाक़ायदगी से बातचीत हुई थी, तो यह बात हमें उसकी बहनों के अनुमान से मालूम हुई...हालाँकि काफ़ी पक्का अनुमान है। लेकिन वह है ही ऐसी तरंगी और बेहद सनकी भी है ! बेहद उदारता, दिल और दिमाग़ की बहुत-सी खूबियाँ—यह सब कुछ उसमें भले ही

हो लेकिन इसके साथ ही वह बहुत मनमौजी और व्यंग करनेवाली है, मतलब यह है कि उसका स्वभाव शैतानी से भरा हुआ है और ऊपर से सनकी भी है। वह अभी अपनी मां के मुँह पर उनका मज़ाक़ उड़ा रही थी, और अपनी बहनों और प्रिंस श. का भी। और जहाँ तक मेरा सवाल है, तो मुझ पर हँसने के अलावा वह कभी कुछ करती ही नहीं, लेकिन मैं हूँ ही किस गिनती में। मुझे उससे बहुत प्यार है, यह तो तुम जानते ही हो; जब वह मुझ पर हँसती है तब भी मुझे उस पर बहुत प्यार आता है और..शायद वह चुड़ैल मुझसे इसीलिए ख़ासतौर पर प्यार करती है। मेरा मतलब है कि शायद वह मुझे दूसरों से ज़्यादा प्यार करती है। मुझे पूरा यक़ीन है कि उसने तुम्हारे अन्दर भी कोई ऐसी बात ढूँढ़ निकाली होगी जिस पर वह हँस सके। ऊपर जो तूफ़ान मचा था उसके बाद मैंने तुम दोनों को आपस में बातें करते देखा; वह तुम्हारे पास ऐसे बैठी थी मानो, जैसे कुछ हुआ ही न हो।"

प्रिंस का चेहरा लाल हो गया और उसने अपने दाहिने हाथ की मुट्ठी भींच ली, लेकिन कहा कुछ नहीं।

"मेरे प्यारे दोस्त," जनरल साहब ने अचानक बड़े तपाक से और भावुक होकर कहा, "मैं...और मेरी पत्नी (जो, मैं बता दूँ, तुम्हें फिर गालियाँ देने लगी हैं, और तुम्हारी वजह से मुझे भी, हालाँकि मुझे बिलकुल नहीं मालूम कि आख़िर किसलिए), हम दोनों तमाम बातों के बावजूद तुम्हें प्यार करते हैं; हम लोग सच्चे दिल से तुम्हें प्यार करते हैं, और तुम्हारी इज़्ज़त करते हैं, सब कुछ होने के बावजूद—मेरा मतलब है कि बाहर से जैसा भी लगता हो उसके बावजूद। लेकिन तुम्हें मानना पड़ेगा, मेरे दोस्त, तुम्हें मानना पड़ेगा कि उस निर्दयी चुड़ैल के मुँह से यह सुनकर हम चक्कर में भी पड़ गए और हमें धक्का भी लगा (क्योंकि वह हमारे सारे सवालों की तरफ़, और ख़ासतौर पर मेरे सवालों की तरफ़ घोर तिरस्कार का भाव लिए अपनी माँ के सामने खड़ी थी; क्योंकि, लानत है मुझ पर, मैंने खुद बेवक़ूफ़ी की कि उसके साथ सख़्ती बरतने की कोशिश की, क्योंकि, बहरहाल, मैं परिवार का प्रधान हूँ, और मैंने अपनी हँसी उड़वाई),—तो, हुआ यह कि वह निर्दयी चुड़ैल अचानक हँसकर बोली कि वह 'पागल औरत' (यही कहा था उसने और, सच पूछो तो मुझे बड़ा अजीब लगता है कि उसकी और तुम्हारी राय एक है—'आपको पहले इसका अन्दाजा नहीं हुआ ?' वह बोली) कि उस पागल औरत ने, वह बोली, 'मेरी शादी किसी भी क़ीमत पर प्रिंस से करा देने की बात अपने मन में ठान ली है और इसीलिए वह कोशिश कर रही है कि रादोम्स्की साहब को हमारे घर से निकाल दिया जाए'...बस इतना ही कहा उसने। कोई और वजह बताने से उसने इन्कार कर दिया। वह बस हँसती रही और हम लोग बस मुँह खोले उसे तकते रहे। फिर धड़ से दरवाज़ा बन्द करके वह निकल गई। इसके बाद मुझे तुम दोनों के बीच जो काण्ड हुआ था उसके बारे में बताया गया और...और...देखो, प्रिंस तुम तो समझदार आदमी हो, और तुम बहुत जल्दी बुरा नहीं मानते, मैंने तुम्हारे बारे में यह बात देखी है, लेकिन...मतलब यह कि नाराज़ न होना...बात यह है कि वह तुम्हारे ऊपर हँस रही है। बच्चों की तरह, इतना याद रखना, और इसीलिए तुम्हें उससे नाराज़ नहीं होना चाहिए। लेकिन मेरा यक़ीन करो, है भी बिलकुल यही। यह न सोचना कि इसमें कोई ख़ास बात है—वह तुम्हारा और हम सब लोगों का सिर्फ़ मज़ाक़ उड़ा रही है, क्योंकि उसके पास इससे बेहतर कुछ करने को है नहीं। अच्छा, मैं चला, मेरे दोस्त। तुम जानते हो न कि तुम्हारे बारे में हम क्या महसूस करते हैं ? हमारे दिल में तुम्हारे लिए क्या भावनाएँ हैं ? वे हमेशा वैसी ही रहेंगी...वे कभी नहीं बदल सकतीं, किसी भी हालत में नहीं, लेकिन...हाँ...मुझे उधर जाना है...गुड-बाई ! ऐसी साँप-छछूंदर जैसी गति मेरी कभी नहीं हुई (यही कहावत है न ?) जैसी अब

है...अच्छी गर्मी की छुट्टियाँ हैं ये भी, क्यों ?"

जब प्रिंस चौराहे पर अकेला रह गया तो उसने चारों ओर नज़र डाली, जल्दी से सड़क पार की, एक घर की खिड़की के बिलकुल पास गया जिसमें से रोशनी आ रही थी, काग़ज़ का एक तह किया हुआ पर्चा खोला जिसे वह जनरल साहब से बातें करने के दौरान अपने दाहिने हाथ की मुट्ठी में कसकर पकड़े हुए था, और उसे हल्की-सी रोशनी की पट्टी में पढ़ा–

"कल सबेरे सात बजे मैं पार्क में हरी बेंच पर आपका इन्तज़ार करूँगी। मैंने आपसे एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण मामले के बारे में बातें करने का फ़ैसला किया है जिसका सीधा सम्बन्ध आपसे है।

पुनश्चः उम्मीद करती हूँ कि आप यह पर्चा किसी को दिखाएँगे नहीं। हालाँकि मुझे अफ़सोस है कि मुझे आपको ऐसी हिदायत देनी पड़ रही है, लेकिन मैं समझती हूँ कि आपको यह बताने की ज़रूरत है और यह लिखते हुए आपके हास्यास्पद चरित्र की वजह से मैं शर्म से लाल हो गई हूँ।

पुनश्चः यह वही हरी बेंच है जो मैंने आपको दिखाई थी। शर्म आनी चाहिए आपको ! मैंने महसूस किया कि यह बात भी लिख देना ज़रूरी है।"

यह पर्चा जल्दी में लिखा गया था और किसी तरह आड़ा-तिरछा तह कर दिया गया था, शायद अग्लाया के बरामदे में आने से ठीक पहले। प्रिंस ने अकथनीय उद्विग्नता के साथ, जो भय से तनिक भी भिन्न नहीं थी, काग़ज़ के उस टुकड़े को फिर अपनी मुट्ठी में भींच लिया और डरे हुए चोर की तरह छलाँग लगाकर खिड़की से हट आया; लेकिन ऐसा करते हुए वह एक आदमी से टकराया जो ठीक उसके पीछे खड़ा था।

"प्रिंस, मैं आपका पीछा करता रहा हूँ," उस आदमी ने कहा।

"कौन है, केल्लेर ?" प्रिंस आश्चर्य से चिल्लाया।

"प्रिंस, मैं आपको खोज रहा था। मैं येपांचिन-परिवार के घर के पास आपकी राह देख रहा था। ज़ाहिर है, मैं अन्दर तो जा नहीं सकता था। जब आप जनरल साहब के साथ चल रहे थे तब भी मैं आपके पीछे आ रहा था। मैं आपकी हर सेवा के लिए तैयार हूँ, प्रिंस। केल्लेर से जो काम चाहिए लीजिए। मैं आपके लिए कुछ भी करने को तैयार हूँ, अगर ज़रूरत हो तो जान तक देने को तैयार हूँ।"

"लेकिन...क्यों ?"

"देखिए, बात यह है कि आपको यक़ीनन चुनौती दी जाएगी। वह कप्तान मोलोव्त्सोव थे। [illegible] उन्हें जानता हूँ–ज़ाहिर है, निजी तौर पर नहीं...और वह किसी तरह का अपमान बर्दाश्त नहीं [illegible]। हम जैसे लोगों को तो–मेरा मतलब है रोगोझिन को और मुझे–वह मिट्टी समझते हैं, और [illegible] ठीक ही समझते हैं, इसलिए जो कुछ हुआ है उसका जवाब देने के लिए अब आप ही बचे [illegible]। [illegible] मुसीबत आपको झेलनी पड़ेगी, प्रिंस। मैंने सुना है कि वह आपके बारे में पूछ-ताछ कर [illegible], [illegible] उनका एक दोस्त कल ही आपसे मिलने आएगा। कौन जाने वह इस वक़्त भी आपका [illegible] हो। अगर आप मुझे अपना जोड़ीदार बनाने का सौभाग्य दें, तो आपकी खातिर [illegible] दर्जे तक उतर आने को भी तैयार हूँ। मैं आपको इसीलिए खोज रहा था।"

"[illegible] आमने-सामने की लड़ाई की बातें कर रहे हैं !" प्रिंस अचानक ठहाका मारकर [illegible] केल्लेर को बहुत आश्चर्य हुआ। वह ठट्ठे मारकर हँसता रहा। केल्लेर ने जब

प्रिंस के सामने उसका जोड़ीदार बनने का प्रस्ताव रखकर अपने दिमाग़ की खलबली को शान्त किया उससे पहले तक वह काँटों पर लोट रहा था; पर प्रिंस को इस तरह दिल खोलकर हँसता देखकर उसे कुछ बुरा भी लगा।

"लेकिन, प्रिंस, आपने उनकी बाँह पकड़ी थी। कोई भी इज़्ज़तदार आदमी इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकता, ख़ासतौर पर इस तरह सरे-आम।"

"और उन्होंने भी तो मुझे सीने पर धक्का मारा था !" प्रिंस ने हँसते हुए और भी कहा। "ऐसी कोई बात है ही नहीं जिस पर हम दोनों में लड़ाई हो ! मैं उनसे माफ़ी माँग लूँगा, और बस सारा क़िस्सा ख़त्म हो जाएगा। लेकिन अगर हमें लड़ना ही पड़ा तो हम लड़ेंगे। वह चलाएँ मुझ पर गोली—मुझे परवाह नहीं। हा-हा ! अब मुझे पिस्तौल भरना आता है। आपको पिस्तौल भरना आता है, केल्लेर ? पहले बारूद खरीदिए लेकिन वह सीली हुई न हो और न ऐसी मोटी हो जैसी तोपों में भरी जाती है। फिर पहले बारूद भरिए, उसके बाद दरवाज़े पर से नम्दे का टुकड़ा उखाड़कर ठूँस दीजिए और फिर गोली अन्दर डालिए। लेकिन गोली बारूद से पहले न डालिए, वरना वह दगेगी नहीं। सुना, केल्लेर ? वरना वह दगेगी नहीं। हा-हा ! है न यह बहुत बढ़िया मज़ाक, मेरे दोस्त केल्लेर ? अरे, केल्लेर, मेरा जी चाहता है कि इसी वक़्त आपको गले लगाकर चूम लूँ। हा हा हा ! आप अचानक उनके सामने कैसे आ टपके ? जितनी जल्दी हो सके मेरे घर आना, तब हम लोग शैम्पेन पिएँगे। हम नशे में धुत्त हो जाएँगे ! मालूम है आपको, लेबेदेव के यहाँ तहख़ाने में बारह शैम्पेन की बारह बोतलें रखी हैं ? लेबेदेव ने अभी उस दिन मेरे हाथ बेची थीं, जिस दिन मैं उनके घर में रहने आया था उसके अगले दिन। उन्होंने बताया था कि कहीं सस्ती मिल गई थी। मैंने सारी ले लीं। मैं सारी मण्डली को जुटाऊँगा ! आज रात आपको नींद नहीं आएगी न ?"

"बाक़ी सब रातों जैसी ही आएगी, प्रिंस।"

"अच्छी बात है, तो मीठे-मीठे सपने देखिए, हा-हा !"

प्रिंस सड़क पार करके पार्क में ग़ायब हो गया, और केल्लेर चकराया हुआ सोचता रहा कि आख़िर उसे हो क्या गया था। उसने प्रिंस की कभी ऐसी विचित्र मनोदशा नहीं देखी थी और, सचमुच, उस क्षण तक वह उसकी कल्पना भी इस रूप में नहीं कर सकता था।

"किसी तरह का बुखार है शायद, क्योंकि वह बहुत जल्दी घबरा जाते हैं, और इन सब बातों का उन पर असर पड़ा है, लेकिन वह मैदान छोड़कर भागनेवाले नहीं हैं। इन्हीं जैसे लोग तो कभी डरते नहीं—जी नहीं !" केल्लेर ने मन ही मन सोचा। "अहा—शैम्पेन ! यह है दिलचस्प खबर। एक दर्जन बोतलें। यह तो बुरा नहीं है—बिलकुल बुरा नहीं है—भरपूर मज़ाक है। मैं शर्त बदकर कह सकता हूँ कि लेबेदेव ने शैम्पेन किसी से जमानत में ली होगी। और यह प्रिंस भी बहुत अच्छा आदमी है—मुझे इस तरह के लोग पसन्द हैं। लेकिन समय नहीं गँवाना चाहिए, अगर शैम्पेन मौजूद है तो उसके लिए सबसे अच्छा वक़्त यही है !"

यह बात बिलकुल सच थी कि प्रिंस की हरकतें ऐसी थीं जैसे उसे बुखार चढ़ा हो।

वह बड़ी देर तक अँधेरे पार्क में घूमता रहा; आख़िरकार, उसने अपने आपको पेड़ों के बीच से होकर जानेवाले रास्ते पर चलता हुआ पाया। उसे कुछ-कुछ याद आया कि वह उस रास्ते पर पहले भी आ चुका था, बेंच से एक ऊँचे, पुराने, आसानी से पहचाने जा सकनेवाले पेड़ तक, जो वहाँ से कोई सौ गज़ दूर रहा होगा, तीस-चालीस चक्कर लगा चुका था। कोशिश करने पर भी उसे याद न आता कि उसने पार्क में कम से कम एक घंटे का जो वक़्त बिताया होगा उसके दौरान वह क्या सोच रहा था। लेकिन उसने अपने आपको एक ऐसी चीज़ के बारे में सोचते हुए पकड़

लिया जिसकी वजह से वह अचानक ज़ोर से हँसने लगा—उसकी हँसी किसी तरह रोके नहीं रुकती थी, हालाँकि हँसने की ऐसी कोई बात दरअसल थी नहीं। उसके दिमाग़ में यह बात आई कि आमने-सामने की लड़ाई का विचार अकेले केल्लेर के ही दिमाग़ में न उठा हो और, इसलिए, पिस्तौल भरनेवाली सारी बात सिर्फ़ संयोग की बात नहीं थी। "हे भगवान," उसने सोचा, और दिमाग़ में दूसरा विचार आते ही वह ठिठककर खड़ा हो गया, "वह उतरकर बरामदे में उस वक़्त आई जब मैं कोने में बैठा हुआ था, और ऐसा लग रहा था कि मुझे वहाँ देखकर उसे बेहद ताज्जुब हुआ था और...वह खिलखिलाकर हँस पड़ी थी और...चाय की बात की थी; और तमाम वक़्त काग़ज़ का यह टुकड़ा उसके हाथ में ही था, जिसका मतलब है कि उसे मालूम होगा कि मैं बरामदे में बैठा था—फिर उसे इतना ताज्जुब क्यों हुआ था ? हा-हा-हा !"

उसने झटपट पर्चा अपनी जेब से निकालकर चूम लिया, लेकिन फ़ौरन ही रुक गया और विचारमग्न हो गया।

"कैसी अजीब बात है ! कैसी अजीब !" उसने एक मिनट बाद कहा, और उसकी आवाज़ में उदासी छलक आई। बहुत खुशी के क्षणों में वह हमेशा उदास हो जाता था, वह खुद भी नहीं जानता था कि क्यों। उसने बड़े ग़ौर से चारों ओर देखा और अपने आपको वहाँ पाकर उसे ताज्जुब हुआ। वह बहुत थका हुआ था, इसलिए वह बेंच के पास जाकर उस पर बैठ गया। चारों ओर हर चीज़ शान्त थी। मनोरंजन उद्यान में संगीत बन्द हो गया था। पार्क में शायद कोई भी नहीं था; ज़ाहिर है, कम से कम साढ़े ग्यारह बज चुके थे। रात्रि शान्त थी, कुछ-कुछ गर्मी थी, और आसमान खुला हुआ था—पीटर्सबर्ग की शुरू जून की रात, लेकिन उस घने छायादार पार्क में, पेड़ों के बीच जिस जगह वह बैठा हुआ था, वहाँ लगभग बिलकुल अँधेरा था।

अगर किसी ने उस वक़्त उससे कहा होता कि उसे प्रेम हो गया था, कि वह किसी के प्रेम में दीवाना था, तो उसने आश्चर्यचकित होकर, और शायद गुस्से के साथ भी, इस विचार को ठुकरा दिया होता। और अगर किसी ने इसके साथ ही यह भी जोड़ दिया होता कि अग्लाया का पत्र प्रेम-पत्र था, जिसमें प्रेम-मिलन के लिए समय नियत किया गया था, तो उस आदमी की वजह से लज्जित होकर उसका चेहरा लाल हो गया होता, और शायद उसने उसे आमने-सामने की लड़ाई की चुनौती भी दे दी होती। यह सब कुछ बिलकुल निष्कपट था, और उसे इसमें कभी शंका नहीं हुई थी और न ही उसने कभी रत्ती-भर भी इस 'दोहरे' विचार के अस्तित्व को स्वीकार किया था कि इस लड़की को उससे प्रेम हो सकता है या यह कि शायद उसे ही उस लड़की से प्रेम हो। वह इस बात को बहुत बड़ी दुर्भाग्य की बात समझता कि किसी को उससे प्रेम हो जाए—"उसके जैसे आदमी" से। वह अनायास ही यह अनुभव कर रहा था कि अगर उसमें कुछ था भी तो बस इतना कि यह उसकी ओर से एक मासूमियत-भरा मज़ाक़ था; लेकिन वह न जाने क्यों इस पूरे विचार के प्रति उदासीन था और इसे नितान्त स्वाभाविक ही समझता था। वह कोई और ही चीज़ थी जो उसके विचारों पर छाई हुई थी और उसे परेशान कर रही थी। वह उस बात को बिलकुल ठीक समझता था जो जनरल साहब ने अपनी उत्तेजना में कह दी थी कि वह सब पर हँसती थी, ख़ासतौर पर उस पर, प्रिंस पर। उसने इस बात का ज़रा भी बुरा नहीं माना था; उसकी राय में होना भी ऐसा ही चाहिए था। उसे दिलचस्पी बस इस बात से थी कि वह कल सबेरे फिर उससे मिलेगा, कि वह उसके पास हरी बेंच पर बैठेगा और पिस्तौल भरने की तरकीब बताते सुनेगा और उसे निहारेगा। वह इससे ज़्यादा कुछ चाहता भी नहीं था। वह उसे क्या बताना चाहती है और यह महत्त्वपूर्ण मामला क्या है जिसका उससे सीधा सम्बन्ध है—यह सवाल भी दो-एक बार उसके दिमाग़

में आया। लेकिन इस समय वह इसके बारे में नहीं सोच रहा था। सच तो यह है कि इसके बारे में सोचने की उसकी इच्छा तक नहीं हो रही थी।

छायादार रास्ते की रेतीली ज़मीन पर शान्त भाव से चलने की चर्र-मर्र की आवाज़ सुनकर प्रिंस ने अपना सिर उठाया। एक आदमी जिसकी सूरत अँधेरे में पहचानना मुश्किल था बेंच तक आकर उसके पास बैठ गया। प्रिंस जल्दी से उसके पास खिसक आया, यहाँ तक कि उसने उसे लगभग छू लिया, और रोगोझिन का पीला चेहरा पहचाना।

"मैं जानता था कि तुम यहीं कहीं टहल रहे होगे," रोगोझिन ने दाँत भींचे-भींचे ही बुदबुदाकर कहा। "ज़्यादा देर नहीं लगी तुम्हें खोजने में।"

होटल के गलियारेवाली मुठभेड़ के बाद वे इस वक़्त पहली बार मिले थे। रोगोझिन के इस तरह अचानक आ जाने पर चकराकर प्रिंस थोड़ी देर तक तो अपने विचारों को नहीं समेट पाया और उसके दिल में फिर एक टीस-सी उठी। स्पष्टतः रोगोझिन समझ गया था कि उसके आने का क्या प्रभाव पड़ा था; लेकिन शुरू में तो वह कुछ घबराया हुआ ज़रूर रहा और मानो जान-बूझकर पैदा की हुई अकड़ के साथ बोलता रहा, लेकिन प्रिंस ने जल्दी ही समझ लिया कि उसमें कोई बनावट नहीं थी और यह कि वह कुछ ख़ास अटपटा भी नहीं महसूस कर रहा था। उसकी बोलचाल और हाव-भाव में जो थोड़ा-बहुत अटपटापन था भी वह ऊपर ही ऊपर सतह पर था; अन्दर गहराई में यह आदमी हमेशा जैसा ही था।

"तुमने...मुझे यहाँ कैसे खोज निकाला ?" प्रिंस ने कुछ कहने के लिए कहा।

"केल्लेर से मालूम हुआ (मैं अभी तुम्हारे ही यहाँ से आ रहा हूँ) कि तुम पार्क में गए हो। बस, मैंने मन में सोचा, और वही बात निकली।"

"क्या बात निकली ?" प्रिंस ने वही शब्द दोहराए जो रोगोझिन के मुँह से निकल गए थे।

रोगोझिन मुस्करा दिया, लेकिन उसने कोई सफ़ाई नहीं पेश की।

"तुम्हारी चिट्ठी मिली थी; कोई फ़ायदा नहीं है, तुम जानते ही हो, और...तुम्हें ज़रूरत भी क्या पड़ी है ! और इस वक़्त मैं तुम्हारे पास सीधा उसी के यहाँ से आ रहा हूँ—वह तुमसे मिलने के लिए बेचैन है। वह तुम्हें कुछ बताना चाहती है। आज ही रात मिलना चाहती है।"

"कल आऊँगा। इस वक़्त तो मैं घर जा रहा हूँ। चलते हो...मेरे साथ ?"

"किसलिए ? सब कुछ तो बता दिया तुम्हें। मैं चला।"

"सचमुच नहीं चलोगे मेरे साथ ?" प्रिंस ने नरमी से पूछा।

"तुम भी सचमुच बड़े मसखरे हो। ताज्जुब होता है तुम पर, सचमुच।"

रोगोझिन जहर में बुझे अन्दाज से मुस्करा दिया।

"मुझमें ऐसी मसख़रेपन की क्या बात है ? और तुम अब मुझसे इतनी नफ़रत क्यों करते हो ?" प्रिंस ने उदास होकर और बड़े जोश से चिल्लाकर कहा। "अब तो तुम्हें अच्छी तरह मालूम हो गया न कि तुम जो कुछ सोचते थे वह सच नहीं था। लेकिन मुझे लगता है कि तुम अभी तक मुझसे नफ़रत करते हो, और जानते हो क्यों ? क्योंकि तुमने मुझे जान से मारने की कोशिश की, इसलिए तुम अभी तक मुझसे नफ़रत करते हो। मैं तुम्हें साफ़-साफ़ बताता हूँ कि वह एकमात्र पर्फ़्योन रोगोझिन जिसकी मुझे याद है वह आदमी है जिससे उस दिन मैंने सलीबों की अदला-बदली की थी। मैंने तुम्हें कल लिखा था कि उस भयानक सपने को बिलकुल भुला देना और फिर कभी मुझसे उसकी चर्चा न करना। तुम मुझसे दूर क्यों भागते हो ? तुम मुझसे अपना हाथ क्यों छिपाते हो ? मैं सच कहता हूँ कि जो कुछ उस वक़्त हुआ था उसे मैं बस एक डरावना सपना समझता

हूँ–मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उस दिन तुम पर क्या बीत चुकी थी, उतनी ही अच्छी तरह जैसे वह सब कुछ मुझ पर बीता हो। जो बातें तुम सोचते थे वे न कभी थीं और न हो सकती थीं। फिर हम दोनों के बीच यह नफ़रत क्यों हो ?"

"तुम जानते ही नहीं हो कि नफ़रत होती क्या है ?" प्रिंस के अचानक यह जोशीला भाषण देने के जवाब में रोगोझिन एक बार फिर हँस पड़ा। वह सचमुच उससे दूर खड़ा था; वह दो क़दम दूर हट गया था और उसने अपने हाथ छिपा लिए थे।

"अब मेरे लिए तुमसे आकर मिलना ठीक नहीं है," उसने अपनी बात ख़त्म करते हुए धीरे-धीरे और अर्थपूर्ण ढंग से कहा।

"क्या तुम्हें इतनी नफ़रत है मुझसे ?"

"तुम मुझे अच्छे नहीं लगते, फिर मैं क्यों आकर तुमसे मिलूँ ? प्रिंस, तुम बिलकुल बच्चों जैसे हो–जब तुम कोई खिलौना चाहते हो तो वह तुम्हें फ़ौरन मिलना चाहिए, लेकिन तुम चीज़ों को समझते नहीं। तुम बस वही दोहरा रहे हो जो तुमने अपने खत में लिखा था। क्या तुम समझते हो कि मैं तुम्हारा यक़ीन नहीं करता ? तुम जो भी कहते हो उसके एक-एक शब्द पर मैं यक़ीन करता हूँ, और मैं जानता हूँ कि तुमने मुझे कभी धोखा नहीं दिया है और कभी धोखा दोगे भी नहीं। फिर भी तुम मुझे अच्छे नहीं लगते। तुमने लिखा था कि तुमने सब कुछ भुला दिया है, और तुम्हें बस अपना भाई रोगोझिन याद है, जिससे तुमने सलीबों की अदला-बदली की थी, वह रोगोझिन नहीं जिसने तुम्हारे ऊपर छुरा उठाया था। लेकिन तुम्हें मेरी भावनाओं का क्या पता ?" रोगोझिन फिर कटुता से हँसा। "कौन जाने, मैंने जो कुछ किया उस पर मुझे एक बार भी पछतावा न हुआ हो, और तुमने मुझे अपनी बिरादराना माफ़ी भी भेज दी। शायद मैं तब तक किसी और ही बात के बारे में सोचने लगा था, और..."

"उसके बारे में सोचना भी भूल गए थे !" प्रिंस ने बीच में टोका। "क्यों नहीं ! और मैं शर्त बदकर कह सकता हूँ कि तुम सीधे स्टेशन गए, वहाँ से यहाँ पाव्लोव्स्क आए और बैण्ड-स्टैण्ड पर भीड़ में उसे खोजा, उसी तरह जैसे तुमने आज किया। इस पर मुझे कोई ताज्जुब नहीं है ! अगर उस वक़्त तुम ऐसी हालत में न होते कि बस एक ही बात के बारे में सोच सको, तो शायद तुमने मेरे ऊपर छुरा भी न उठाया होता। उस दिन सवेरे तुम्हें देखकर मुझे ऐसा लगा था कि तुम ऐसा ही करोगे। जानते हो तुम उस वक़्त कैसे लग रहे थे ? इस बात का विचार मेरे मन में तभी उठा था जब हमने सलीबों की अदला-बदली की थी। भला तुम मुझे अपनी माँ के पास क्यों ले गए थे ? क्या तुम समझते थे कि ऐसा करने से तुम्हारा हाथ रुक जाएगा ? मैं नहीं समझता कि तुमने ऐसा सोचा होगा। तुम भी वैसा ही महसूस कर रहे थे जैसा मैं कर रहा था...हम दोनों एक ही तरह महसूस कर रहे थे। अगर तुमने उस वक़्त मुझ पर हाथ न उठाया होता (जिसका वार भगवान ने रोक दिया), तो इस वक़्त मैं तुम्हें कैसा लगता ? क्योंकि इन तमाम बातों के बावजूद मैंने तुम पर शक तो किया ही। सच तो यह है कि कसूर हम दोनों का है ! (माथे पर बल न लाओ ! तुम हँस किस बात पर रहे हो ?) 'मुझे पछतावा नहीं हुआ ?' अरे, अगर तुम चाहते भी तो तुम्हें पछतावा न होता, क्योंकि, और सब बातों को तो जाने दो, मैं तुम्हें अच्छा नहीं लगता। और अगर मैं तुम्हारी नज़र में फ़रिश्ते जैसा मासूम भी होता तब भी तुम उस वक़्त तक कभी मुझे बर्दाश्त न कर सकते जब तक तुम्हें यह ख़्याल रहता कि वह मुझसे प्यार करती है, तुमसे नहीं। मैं समझता हूँ कि इसी को जलन कहते हैं। लेकिन, पर्फ़्योन, जानते हो इस हफ़्ते मैंने क्या बात सोची है ? मैं तुम्हें बताता हूँ। क्या तुम जानते हो कि इस वक़्त वह जितना प्यार तुमसे करती है उतना किसी और से नहीं

करती—सच तो यह है कि इतना ज़्यादा कि जितनी ही ज़्यादा वह तुम्हें तकलीफ़ पहुँचाती है उतना ही ज़्यादा वह तुमसे प्यार करती है। यह बात वह तुमसे कहेगी नहीं, लेकिन इस बात का अन्दाजा तो हो ही जाना चाहिए। वरना आख़िर क्या वजह है कि वह तुमसे शादी करनेवाली है ? यह बात वह तुम्हें एक दिन खुद बताएगी। कुछ औरतें होती हैं जो चाहती हैं कि मर्द उनसे इसी तरह प्यार करें, और वह वैसी ही औरत है। तुम्हारे प्यार का और तुम्हारे चरित्र का उस पर बहुत गहरा असर पड़ा होगा ! क्या तुम्हें मालूम है कि औरत अन्तःकरण पर ज़रा भी बोझ महसूस किए बिना मर्द पर ऐसे जुल्म तोड़ सकती है और उसका ऐसा मज़ाक़ उड़ा सकती है कि बयान नहीं किया जा सकता, क्योंकि हर वक़्त वह तुम्हें देखकर अपने मन में यही सोचती रहती है कि 'मैं इस वक़्त तो उसे दीवानगी की हद तक पहुँचाए दे रही हूँ, लेकिन बाद में मैं अपने प्यार से इसकी भरपाई कर दूँगी।...''

प्रिंस की बातें सुनकर रोगोझिन ठहाका मारकर हँस पड़ा।

''लेकिन, प्रिंस, क्या तुम खुद भी ऐसी औरत के चंगुल में नहीं फँस गए हो ? मैंने तुम्हारे बारे में कुछ सुना है—क्या यह सच है ?''

''क्या...क्या सुना है भला तुमने ?'' प्रिंस अचानक चौंक पड़ा और बेहद घबराया हुआ लगा।

रोगोझिन हँसता रहा। वह प्रिंस की बातें काफ़ी दिलचस्पी से सुनता रहा था, और शायद उसकी बातें सुनकर उसे कुछ खुशी भी हुई थी; प्रिंस के उल्लास-भरे और प्रफुल्लित व्यवहार से वह बहुत प्रभावित हुआ और उसे बढ़ावा मिला।

''अरे, मैंने इसके बारे में खाली सुना ही नहीं है,'' वह फिर बोला। ''अब मैं खुद देख रहा हूँ कि यह सच है। अच्छा, यह बताओ कि तुमने इस तरह बातें कब की थीं ? आह, तुम्हारा बात करने का तरीक़ा है ही नहीं। मैंने अगर तुम्हारे बारे में सब कुछ सुन न लिया होता, तो मैं कभी यहाँ न आता, और वह भी यहाँ, पार्क में, आधी रात को।''

''तुम न जाने किस चीज़ के बारे में बातें कर रहे हो, पर्फ्योन।''

''उसने मुझे तुम्हारे बारे में बहुत पहले ही सब कुछ बता दिया था, और आज मैंने अपनी आँखों से तुम्हें उस लड़की के पास बैठकर बैण्ड सुनते देखा। उसने कल और आज मुझे [illegible] बताया कि तुम अग्लाया येपांचिना पर बिलकुल लट्टू हो गए हो। मेरे लिए सब एक ही बात है, प्रिंस, और मुझे इससे कोई सरोकार भी नहीं है—तुम्हें भले ही उससे प्यार न रह गया हो, लेकिन वह अब भी तुमसे प्यार करती है। यह तो तुम जानते हो कि वह चाहती है कि तुम उस लड़की से शादी कर लो, उसने यह बात अपने मन में ठान ली है, हाँ-हाँ ! वह ख़ुद कहती है : 'यह हुए बिना मैं तुमसे शादी नहीं करूँगी,' वह कहती है; 'जब वे गिरजाघर चले जाएँगे, तब हम गिरजाघर जाएँगे।' इसके पीछे क्या भेद है यह मेरी समझ में नहीं आता, और पहले भी कभी समझ में नहीं आया—या तो वह तुमसे इतना प्यार करती है जितना उसने अपनी ज़िन्दगी में कभी किसी से नहीं किया था...लेकिन अगर वह तुमसे प्यार करती है तो वह यह क्यों चाहती है कि तुम दूसरी लड़की से शादी कर लो ? वह कहती है कि वह तुम्हें 'सुखी देखना' चाहती है, इसका मतलब है कि वह तुमसे ज़रूर प्यार करती होगी।''

''मैं तुम्हें बता चुका हूँ और मैंने तुम्हें लिख भी दिया था कि उसका...दिमाग़ ठिकाने नहीं है,'' बहुत दुःखी होकर रोगोझिन की बात सुनने के बाद प्रिंस ने कहा।

''भगवान जाने ! इस मामले में शायद तुम्हारा ख़्याल ग़लत भी हो...हालाँकि आज जब मैं उसे उद्यान से लेकर घर गया तो उसने हमारी शादी की तारीख़ भी तै कर दी—'हम शादी तो ज़रूर

करेंगे', वह कहती है, 'तीन हफ़्ते में या उसमें भी बहुत पहले'। उसने इस बात की क़सम खाई, सचमुच। देव-प्रतिमा उतारकर उसे चूमा। तो, अब सारा दारोमदार तुम्हारे ऊपर है, प्रिंस, ऐसा ही लगता है।"

"ये सब पागलपन की बातें हैं। तुमने अभी जो कुछ मेरे बारे में कहा है वह कभी नहीं होने का...कभी नहीं। मैं कल आकर तुम दोनों से मिलूँगा।..."

"वह पागल कैसे हो सकती है ?" रोगोझिन ने अपना मत प्रकट किया। "यह कैसे हो सकता है कि सबके साथ तो वह समझदार है और सिर्फ़ तुम्हारे साथ पागल है ? उसने आख़िर उसे खत कैसे लिखे ? अगर वह पागल है तो उस लड़की को उसके खतों में यह दिखाई दिया होता।"

"कौन-से खत ?" प्रिंस ने घबराकर पूछा।

"वह उसे लिखती है, उस लड़की को, और वह उन्हें पढ़ती है। तुम्हें नहीं मालूम ? ख़ैर, पता चल जाएगा। वह खुद तुम्हें ज़रूर दिखाएगी।"

"मैं यक़ीन नहीं करता !" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा।

"उफ़, उफ़ ! मैं समझ गया, तुम अभी इस रास्ते पर बहुत कम चले हो। तुम अभी शुरू ही कर रहे हो। ज़रा ठहर जाओ—कुछ दिन में तुम पैसा देकर जासूस लगाने लगोगे, तुम दिन-रात निगरानी रखोगे, और तुम्हें उसके एक-एक क़दम का पता रहेगा, शर्त बस यह है..."

"बस, रहने दो और अब कभी इस बात की चर्चा न करना !" प्रिंस चिल्लाया। "सुनो, पर्फ़्योन, तुम्हारे आने से पहले मैं यहाँ टहल रहा था और अचानक हँस पड़ा, मेरी समझ में नहीं आता कि हँसने की ऐसी क्या बात थी, लेकिन, यों समझ लो, वजह यह थी कि मुझे याद आया कि कल मेरी सालगिरह है। ऐसा लगता है वह ठीक वक़्त पर ही आई। अब लगभग बारह बजे हैं। चलो, इस मौक़े पर जश्न मनाएँ ! मेरे पास थोड़ी-सी शराब है, चलो, चलकर पिएँ। मेरे लिए उस चीज़ की कामना करना जिसके बारे में अब मैं खुद नहीं जानता कि अपने लिए मैं किस चीज़ की कामना करूँ, और मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे लिए ख़ासतौर पर उसी चीज़ की कामना करो, और मैं तुम्हारे लिए भरपूर सुख की कामना करूँगा। अगर नहीं, तो मेरी सलीब मुझे लौटा दो ! तुमने अगले दिन मेरी सलीब वापस नहीं भेजी थी न ? तुमने अब तक पहन रखी है ? पहन रखी है न ?"

"हाँ," रोगोझिन बोला।

"अच्छा, तो फिर चलो। मैं तुम्हारे बिना अपनी नई ज़िन्दगी से नहीं मिलना चाहता। क्योंकि आज मेरी नई ज़िन्दगी शुरू हुई है ! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि आज मेरी नई ज़िन्दगी शुरू हुई है ?"

"हाँ, अब खुद मेरी समझ में आ रहा है कि वह शुरू हुई है। मैं उसे यह बात बताऊँगा। तुम पूरी तरह से होश में नहीं हो।"

4

प्रिंस जब रोगोझिन के साथ अपने घर के पास पहुँचा तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि बरामदा रोशनी से जगमगा रहा था और वहाँ बहुत-से लोग जमा थे और काफ़ी शोर-गुल हो रहा था। वे लोग मस्त होकर हँस रहे थे, चिल्ला रहे थे और गला फाड़कर बहस भी कर रहे थे; पहली नज़र में देखने पर ऐसा लगता था कि वे जी भरकर रंगरेलियाँ मना रहे थे। और जब वह बरामदे में

जानेवाली सीढ़ियाँ चढ़ा तो उसने सचमुच देखा कि वे सब लोग पी रहे थे, और शैम्पेन पी रहे थे, और ऐसा लगता था कि वे काफ़ी देर से ऐसा कर रहे थे, क्योंकि बहुत-से रंगरेलियाँ मनानेवाले काफ़ी मजे में आ चुके थे। प्रिंस सभी मेहमानों को जानता था, लेकिन अजीब बात यह थी कि वे सब एक साथ आए थे, जैसे किसी ने उन्हें न्योता दिया हो, हालाँकि प्रिंस ने उनमें से किसी को भी न्योता नहीं दिया था और खुद उसे भी अकस्मात ही याद आ गया था कि आज उसकी सालगिरह थी।

"तुमने किसी से कहा होगा कि तुम उसे एक गिलास शैम्पेन पिलाओगे, इसीलिए ये सब पहुँच गए," प्रिंस के पीछे-पीछे बरामदे में आते हुए रोगोझिन ने बुदबुदाकर कहा। "मैं इनके बारे में सब कुछ जानता हूँ! बस सीटी बजाने भर की देर रहती है..." उसने अभी कुछ ही दिन पहले तक की अपनी ज़िन्दगी को याद करके कुछ गुस्से से कहा।

उन सब लोगों ने शोर-गुल और बधाइयों से प्रिंस का स्वागत किया और उसे घेर लिया। उनमें से कुछ लोग ज़्यादा शोर मचा रहे थे, दूसरे ज़्यादा शान्त थे, लेकिन उन सबने जल्दी-जल्दी आगे बढ़कर उसे बधाई दी, क्योंकि उन्होंने उसकी सालगिरह के बारे में सुन रखा था, और हर एक अपनी बारी की राह देख रहा था। वहाँ कुछ लोगों की मौजूदगी से प्रिंस को दिलचस्पी पैदा हुई, और बुर्दोव्स्की की; लेकिन सबसे ताज्जुब की बात तो यह थी कि इस पूरी मण्डली के बीच प्रिंस की नज़र अचानक रादोम्स्की पर पड़ी; उसे अपनी आँखों पर यक़ीन नहीं आया और वह तक़रीबन डर-सा गया।

इतने में लेबेदेव, जिसका चेहरा लाल हो रहा था और जो ख़ुशी से पागल-सा हुआ जा रहा था, सफ़ाई देने के लिए आगे लपका; वह भाव-विभोर हो गया था। उसकी बक-बक से ऐसा मालूम होता था कि वे सब अपने आप और, दरअसल, इत्तफ़ाक़ से ही जमा हो गए थे। सबसे पहले, शाम को इप्पोलीत आया था और चूँकि उसकी तबियत पहले से बहुत अच्छी थी इसलिए उसने बरामदे में प्रिंस की प्रतीक्षा करने की इच्छा प्रकट की। वह आराम से सोफ़े पर बैठ गया, उसके बाद उसका अकेलापन दूर करने के लिए लेबेदेव वहाँ आ पहुँचा था, और उसके पीछे-पीछे उसके घर के सारे लोग आ गए थे—यानी उसकी बेटियाँ और जनरल ईवोल्गिन। बुर्दोव्स्की इप्पोलीत के साथ ही आया था। गान्या और प्तीत्सिन कुछ देर बाद उधर से गुजरते हुए यों ही आ गए थे, ठीक उस वक़्त जब वह मनोरंजन उद्यानवाला काण्ड हो रहा था। फिर केल्लेर आया था, उसने लोगों को प्रिंस की सालगिरह के बारे में बताया और शैम्पेन की माँग की। रादोम्स्की अभी आधा घंटा पहले आया था। कोल्या ने सबको शैम्पेन पिलाने और बाक़ायदा सालगिरह की पार्टी करने का बड़ी दृढ़ता से आग्रह किया था। लेबेदेव फ़ौरन शैम्पेन निकालकर ले आया था।

"लेकिन मेरी अपनी, मेरी अपनी," उसने बुदबुदाकर प्रिंस से कहा। "आपके लिए यह दिन बार-बार आने की कामना करने के लिए, मेरे खर्च पर। कुछ खाने का सामान भी होगा, मेरी बेटी उसका इन्तजाम कर रही है। लेकिन, प्रिंस, जानते हैं ये लोग क्या बहस कर रहे थे। हैमलेट की होने या न होनेवाली दुविधा याद है न? यह आधुनिक विषय है, साहब, बिलकुल आधुनिक! सवाल और जवाब।...और साहब तेरेंत्येव का...कोई इरादा सोने का नहीं है, जनाब! उन्होंने बहुत ही थोड़ी-सी शैम्पेन पी है। बस एक चुस्की, साहब। इससे उनको कोई नुक़सान नहीं होगा।...और पास आ जाइए, प्रिंस, और इस मामले को निबटा दीजिए! सब लोग आप ही की राह देख रहे थे। वे बस आपकी हाज़िरजवाबी का इन्तज़ार कर रहे थे।..."

प्रिंस का ध्यान वेरा लेबेदेवा की प्यारी-प्यारी और खुशी-भरी नज़र की ओर गया; वह भी भीड़

के बीच से रास्ता बनाकर उसके पास तक पहुँचने की कोशिश कर रही थी। इन सब लोगों की ओर कोई ध्यान न देकर उसने सबसे पहले अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया। खुशी के मारे उसका चेहरा लाल हो गया और उसने उसके लिए "अब से यह दिन बार-बार आने" की कामना की। इसके बाद वह भागकर फिर किचेन में चली गई; वहाँ वह खाने के लिए कुछ तैयार कर रही थी; लेकिन प्रिंस के आने से पहले भी अपने काम से एक मिनट की भी फुर्सत पाते ही वह बड़ी उत्सुकता से एक ऐसे गूढ़ और विचित्र विषय पर गरमागरम बहस सुनने पहुँच जाती थी, जैसे विषय पर उसने इससे पहले कभी बहस नहीं सुनी थी, जो कुछ गाढ़ नशे में डूबे हुए मेहमानों के बीच लगातार चल रही थी। उसकी छोटी बहन, जो मुँह खोले बराबर सुनती रही थी, अब बग़लवाले कमरे में जाकर एक सन्दूक पर सो गई थी, लेकिन लड़का, लेबेदेव का बेटा, कोल्या और इप्पोलीत के पास खड़ा था और उसके चेहरे के उद्विग्न भाव से ही पता चलता था कि वह अभी दस घंटे तक वहाँ खड़े रहकर सुनने और आनन्द लेने को तैयार था।

"मैं ख़ासतौर पर आपकी राह देख रहा था, और मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि आप इतने खुश दिखाई दे रहे हैं," वेरा के फ़ौरन बाद जब प्रिंस इप्पोलीत के पास उससे हाथ मिलाने गया तो वह बोला।

"और तुम्हें कैसे मालूम कि मैं 'इतना खुश' हूँ ?"

"आपकी सूरत से दिखाई दे रहा है। सबसे मिलने के बाद यहाँ आकर हमारे पास बैठिए। मैं ख़ासतौर पर आपकी राह देख रहा था," उसने इस बात पर ज़ोर देते हुए कि वह राह देख रहा था, इतना और कहा। प्रिंस के इस सवाल के जवाब में कि क्या उसके लिए इतनी देर तक जागते रहना बुरा नहीं था उसने कहा कि उसे खुद ताज्जुब हो रहा था कि अभी तीन ही दिन पहले वह बिलकुल मरनेवाला था, क्योंकि आज शाम वह जितना स्वस्थ अनुभव कर रहा था इतना उसने जीवन में कभी अनुभव नहीं किया था।

बुर्दोव्स्की उछलकर खड़ा हो गया और बुदबुदाकर बोला कि वह केवल संयोगवश वहाँ आ गया था, कि वह इप्पोलीत को शहर से लेकर आया था और उसे भी बहुत खुशी थी; कि उसने अपने खत में बहुत-सी बकवास लिखी थी और अब वह "बस इस बात की वजह से बहुत खुश था कि..." वाक्य पूरा किए बिना उसने बड़े तपाक से प्रिंस से हाथ मिलाया और फिर बैठ गया।

प्रिंस सबसे आख़िर में रादोम्स्की के पास गया, जिसने फ़ौरन उसकी बाँह पकड़ ली।

"मुझे आपसे सिर्फ़ दो-चार शब्द कहने हैं," उसने बुदबुदाकर दबी जबान से कहा, "एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण मामले के बारे में। आइए, कुछ देर के लिए इन लोगों को यहीं छोड़ दें।"

"सिर्फ़ दो-चार शब्द," एक दूसरी आवाज़ ने उसके दूसरे कान में कहा, और एक दूसरे हाथ ने उसकी दूसरी बाँह पकड़ ली। प्रिंस को लाल, आँख मारते हुए और हँसते हुए चेहरेवाले एक बेहद बेढंगे आदमी को देखकर बहुत आश्चर्य हुआ, जिसे उसने फ़ौरन पहचान लिया कि वह फ़ेर्दीश्चेंको था, जो न जाने कहाँ से वहाँ आ टपका था।

"फ़ेर्दीश्चेंको की याद है ?" उसने पूछा।

"आप कहाँ से आ गए ?" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा।

"यह आपसे माफ़ी माँगना चाहता है !" केल्लेर ने लपककर आते हुए कहा। "यह छिपा हुआ था। आपके पास आना नहीं चाहता था। कोने में छिपा हुआ था। यह आपसे बहुत-बहुत माफ़ी माँगना चाहता है, प्रिंस। यह अपने को अपराधी महसूस करता है।"

"किस बात के लिए ? कुछ बताओ तो किस बात के लिए ?"

"मैं इससे मिल गया था, प्रिंस। मैं अभी इससे मिला था और इसे यहाँ ले आया। मेरी इससे

बहुत मुलाक़ात नहीं होती, लेकिन यह शर्मिन्दा है।"

"मुझे बहुत खुशी है, साहबान। मेहरबानी करके आप लोग दूसरों के साथ जाकर बैठिए; मैं अभी आपके पास आता हूँ।" प्रिंस ने, जो रादोम्स्की की बात सुनने के लिए बेचैन था, आख़िरकार उन लोगों से पीछा छुड़ा लिया।

"यह बड़ी दिलचस्प जगह है," रादोम्स्की ने कहा, "आपके लिए मैंने जो आधे घंटे इन्तज़ार किया उसके दौरान मुझे बड़ा मज़ा आया। लेकिन, देखिए, मैंने कुर्मीशेव से सारा मामला तै कर दिया है और मैं आपको इतमीनान दिलाने आया हूँ। आप बिलकुल परेशान न हों। उसने इस पूरे मामले की तरफ़ बड़ी समझदारी का रवैया अपनाया है, ख़ासतौर पर इसलिए कि, मेरी राय में, सारा कसूर उसी का था।"

"कुर्मीशेव कौन ?"

"अरे, वही जिसका आपने हाथ पकड़ लिया था।...उसका पारा तो इतना चढ़ा हुआ था कि वह कल ही आपके पास अपने जोड़ीदार को भेजनेवाला था।"

"तोबा, तोबा ! क्या बकवास है ?"

"बकवास तो है ही, और सारा मामला चुपचाप निबट गया होता, लेकिन ये लोग..."

"आप किसी और काम से तो नहीं आए हैं ?"

"हाँ, आया तो हूँ," रादोम्स्की हँस पड़ा। "देखिए, प्रिंस, मैं कल बहुत सवेरे उस बदनसीब मामले के सिलसिले में (ज़ाहिर है, मेरा इशारा अपने चाचा की तरफ़ है) पीटर्सबर्ग जा रहा हूँ। ज़रा सोचिए, सारी बातें सच हैं, और मेरे अलावा सभी को इसका पता था। मुझे ऐसा गहरा धक्का पहुँचा कि मुझे उन लोगों के यहाँ (येपांचिन-परिवार के यहाँ) जाने का भी मौक़ा नहीं मिला। मैं कल भी वहाँ नहीं जा पाऊँगा; क्योंकि मैं पीटर्सबर्ग में रहूँगा। शायद मैं तीन दिन तक यहाँ न आऊँ—मतलब यह कि मेरे मामलात बहुत गड़बड़ हैं। हालाँकि यह सारा मामला इतना ज़्यादा महत्त्व नहीं रखता है, फिर भी मैंने एक चीज़ के बारे में आपसे बिलकुल साफ़-साफ़ बात करने का फ़ैसला किया है, और वह भी ज़्यादा देर किए बिना—मेरा मतलब है पीटर्सबर्ग जाने से पहले। अगर आप इजाज़त दें तो मैं यहाँ तब तक रुकने को तैयार हूँ जब तक सब लोग यहाँ से चले न जाएँ। बहरहाल, मेरे पास कोई और जगह जाने के लिए है भी नहीं। मैं इतना परेशान हूँ कि मुझे नींद नहीं आएगी। और आख़िरी बात, जो काफ़ी महत्त्व रखती है, यह कि इस तरह किसी का पीछा करना बड़ी शर्म की और बेहूदा बात है, लेकिन मैं आपसे बिलकुल साफ़-साफ़ बात करना चाहता हूँ, प्रिंस, और आपको बताना चाहता हूँ कि मैं आपसे आपकी दोस्ती माँगने आया हूँ। आप लाजवाब आदमी हैं—मेरा मतलब है कि आप क़दम-क़दम पर झूठ नहीं बोलते, और शायद कभी नहीं बोलते, और मुझे एक ख़ास मामले के सिलसिले में एक दोस्त और सलाहकार की सख़्त ज़रूरत है, क्योंकि इस वक़्त मैं सचमुच और सही मानों में बदनसीब लोगों में से हूँ।..."

वह फिर हँस दिया।

"देखिए," प्रिंस ने एक क्षण सोचने के बाद कहा, "मुश्किल यह है कि अगर आप इन लोगों के जाने तक इन्तज़ार करनेवाले हैं तो भगवान ही जाने आपको कब तक यहाँ रुकना पड़े। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि हम लोग पार्क में टहलने चले जाएँ ? मुझे यक़ीन है कि ये लोग इन्तज़ार करेंगे। मैं कोई बहाना कर दूँगा।"

"नहीं, नहीं, ऐसा न कीजिए। ऐसा मैं अपनी कुछ वजहों से कह रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि इन लोगों को शक हो कि हम लोगों को किसी ख़ास सवाल पर बातें करनी हैं। यहाँ कुछ लोग

ऐसे हैं जिन्हें हमारे बारे में बहुत दिलचस्पी है। आपको यह बात नहीं मालूम, प्रिंस ? इसलिए कहीं ज़्यादा अच्छा होगा कि वे लोग यही देखें कि हमारे बीच किसी ख़ास वजह के बिना ही बहुत अच्छी दोस्ती है। समझे आप ? ये लोग अभी दो घंटे में चले जाएँगे, और मैं आपका सिर्फ़ बीस मिनट या आधे घंटे का वक़्त लूँगा।..."

"अरे, ज़रूर; आपके कोई सफ़ाई दिए बिना भी मुझे बहुत खुशी होगी; और आपने हमारे दोस्ती के सम्बन्ध के बारे में जो अच्छे-अच्छे शब्द कहे हैं उनके लिए शुक्रिया। माफ़ कीजिएगा, मैं आज कुछ खोया-खोया हुआ हूँ। बात यह है, मैं इस वक़्त पूरा ध्यान नहीं दे सकता।"

"मैं समझा, मैं समझा," रादोम्स्की ने हल्की-सी हँसी के साथ कहा। उस शाम वह किसी भी चीज़ पर हँसने को तैयार था।

"क्या समझे ?" प्रिंस ने चौंककर पूछा।

"क्यों, प्रिंस," रादोम्स्की ने प्रिंस के सीधे सवाल का जवाब न देते हुए फिर हँसकर कहा, "आपको यह शक नहीं होता कि मैं सिर्फ़ आपको धोखा देने और लगे हाथ आपसे कुछ कुरेदकर मालूम करने आया हूँ ?"

"इसमें तो मुझे ज़रा भी शक नहीं है कि आप कुछ मालूम करने आए हैं," आख़िरकार प्रिंस भी हँस दिया, "और बिलकुल मुमकिन है कि आपने मुझे थोड़ा-सा धोखा देने का भी फ़ैसला कर लिया हो। लेकिन मैं आपसे डरता बिलकुल नहीं; क्या आप सचमुच समझते हैं कि इससे मुझे कोई फ़र्क़ पड़ेगा ? और...और...और जैसा कि मुझे पक्का यक़ीन है चूँकि आप बहरहाल बहुत अच्छे आदमी हैं इसलिए आख़िर में शायद हम लोग सचमुच दोस्त बन जाएँ। आप मुझे बहुत अच्छे लगते हैं, आप...आप मेरी राय में बहुत खरे आदमी हैं !"

"ख़ैर," रादोम्स्की ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, "बहरहाल, आपके साथ किसी भी तरह का व्यवहार रखना बहुत अच्छा है। आइए, मैं आपकी सेहत के लिए एक जाम पिऊँगा। मुझे बेहद खुशी है कि मैंने आपका पल्ला पकड़ा। हाँ !" वह कहते-कहते अचानक रुक गया, "इप्पोलीत आपके साथ रहने तो नहीं आया है न ?"

"जी हाँ, आया तो है।"

"वह बहुत जल्दी मरनेवाला तो नहीं है न ?"

"क्यों ?"

"कुछ नहीं, यों ही। मैंने अभी यहाँ उसके साथ आधा घंटा बिताया है।..."

इप्पोलीत इस बीच सारी देर प्रिंस का इन्तज़ार करता रहा था और उसे और रादोम्स्की को देखता रहा था जब वे बाक़ी लोगों से अलग जाकर आपस में बातें कर रहे थे। जब वे मेज़ के पास आए तो उसमें बेतहाशा फुर्ती आ गई। वह बेचैन और उत्तेजित था; उसके माथे पर पसीने की बूँदें छलक आई थीं। एक तरह की निरन्तर भटकती हुई अशान्ति के अलावा उसकी चमकती हुई आँखों से कुछ अस्पष्ट-सी अधीरता भी व्यक्त हो रही थी; उसकी नज़रें एक चीज़ से दूसरी चीज़ पर और एक चेहरे से दूसरे चेहरे पर निरुद्देश्य दौड़ रही थीं। हालाँकि उस वक़्त तक वह शोर-गुलवाली आम बातचीत में हिस्सा लेता रहा था, लेकिन उसके फुर्तीलेपन से स्पष्टतः उन्माद जैसी हालत का संकेत मिलता था; वह बातचीत की ओर वास्तव में कोई ध्यान नहीं दे रहा था; उसकी दलीलें उखड़ी-उखड़ी, हँसी उड़ानेवाली और लापरवाही की वजह से विरोधाभासपूर्ण थीं; जो बात वह मिनट-भर पहले ही जुनूनी जोश के साथ शुरू करता था उसे वह पूरा नहीं करता था और वाक्य के बीच में ही रुक जाता था। प्रिंस को यह जानकर आश्चर्य भी हुआ और खेद भी कि

इप्पोलीत को दो गिलास शैम्पेन पी लेने दी गई थी, और उस वक़्त उसके सामने जो आधा खाली गिलास रखा था वह तीसरा था। लेकिन इस बात का पता उसे बाद को लगा; इस वक़्त तो वह चीज़ों को बहुत ध्यान से नहीं देख रहा था।

"जानते हैं," इप्पोलीत चिल्लाकर बोला, "मुझे ख़ासतौर पर ख़ुशी है कि आज आपकी सालगिरह है!"

"क्यों?"

"अभी मालूम हो जाएगा। बैठ तो जाइए। सबसे पहले तो इसलिए कि ये सब...आपके दोस्तों की यह पूरी भीड़ आज रात यहाँ जमा हुई है। मुझे पहले से अन्दाज़ा था कि बहुत से लोग होंगे। मेरी ज़िन्दगी में पहली बार मेरी उम्मीद पूरी हुई है! अफ़सोस है, मुझे यह नहीं मालूम था कि आज आपकी सालगिरह है, वरना मैं आपके लिए कोई तोहफ़ा लेकर आता।...हा हा! लेकिन शायद मैं लाया भी हूँ! अभी दिन निकलने में कितनी देर है?"

"सूरज निकलने में अब दो घंटे से भी कम रह गए हैं," प्तीत्सिन ने घड़ी देखते हुए कहा।

"तुम्हें सूरज निकलने से क्या मतलब, जब तुम बाहर बैठकर उसके निकलने की राह देख सकते हो?" किसी ने कहा।

"मुझे उसकी ज़रूरत है क्योंकि मैं सूरज का घेरा देखना चाहता हूँ...बस उसको देखना। क्या सूरज की सेहत के नाम का जाम पिया जा सकता है, प्रिंस? क्या ख़याल है आपका?"

इप्पोलीत सभी को बड़ी बेतकल्लुफ़ी से सम्बोधित करते हुए अपने सवाल बड़े तहक्कुमाना अन्दाज़ में कर रहा था, जैसे हुक्म दे रहा हो, लेकिन उसे शायद खुद इसका आभास नहीं था।

"आओ पिएँ; लेकिन इतने जोश में आने की ज़रूरत नहीं है, इप्पोलीत, है न?"

"अरे, आप हमेशा सोने की ही बातें करते रहते हैं—आप मेरी नर्स हैं, प्रिंस! सूरज भी दिखाई देगा और 'आकाश में गूँजेगा' (किसने कहा था यह एक कविता में—"आकाश में गूँजा गूँजा"? मतलब तो कुछ नहीं निकलता, लेकिन है बहुत लाजवाब बात!), वैसे तो मैं भी पीने वाला था भला। लेबेदेव, सूरज जीवन का स्रोत है न? एपोकैलिप्स में 'जीवन के स्रोत' का क्या मतलब है? प्रिंस, आपने सुना है 'वर्मवुड सितारे' के बारे में?"

"मैंने सुना है कि 'वर्मवुड सितारे' के बारे में लेबेदेव का कहना है कि यह सारे योरप में फैला हुआ रेलों का जाल है।"

"जी नहीं, जी नहीं, मेहरबान! ऐसा नहीं हो सकता!" लेबेदेव उछलकर अपने हाथ हवा में चारों ओर हिलाते हुए चिल्लाया, मानो सबके ठहाका मारकर हँस पड़ने को रोकना चाह रहा हो। "सुनिए, ज़रा सुनिए तो! इन सज्जनों के साथ...ये सारे सज्जन," वह अचानक प्रिंस की ओर मुड़ा—"देखिए, कुछ मामलों में ऐसा है," और इतना कहकर उसने मेज़ पर बेतहाशा दो बार मुक्का मारा, जिसकी वजह से हँसी और तेज हो गई।

हालाँकि लेबेदेव अपनी हमेशा जैसी 'शामवाली हालत' में था, लेकिन इस बार प्रिंस के आने से पहले जो लम्बी 'विद्वतापूर्ण' बहस चलती रही थी उससे वह अत्यधिक उत्तेजित हो गया था और तंग आ चुका था, और जब भी ऐसा होता था अपने विरोधियों की तरफ़ उसका रवैया बेहद और खुले हुए तिरस्कार का हो जाता था।

"ऐसा बिलकुल नहीं है! प्रिंस, अभी आधा घंटा पहले हमने तै किया था कि जब कोई बोल रहा होगा तो बीच में न तो कोई बोलेगा और न हँसेगा। हम लोगों ने तै किया था कि वह जो कुछ कहना चाहता है वह कहने की उसे पूरी आज़ादी दी जानी चाहिए, और अगर उसके बाद

नास्तिक भी चाहें तो उसका जवाब दे सकते हैं ! हमने जनरल साहब को अपना अध्यक्ष चुना था—ऐसा ही किया था हमने, साहब ! वरना क्या होता ? किसी को भी कोई बहुत ऊँची बात कहते वक़्त, कोई बहुत ही गूढ़ विचार व्यक्त करते समय शोर मचाकर चुप किया जा सकता है।..."

"बोलिए, बोलिए !" कई आवाज़ों ने चिल्लाकर कहा। "आपको रोक कौन रहा है ?"

"बोलिए, लेकिन मतलब की बात से भटकिए मत।"

"यह 'वर्मवुड सितारा' क्या बला है ?" किसी ने पूछा।

"मुझे पता नहीं !" जनरल ईवोल्गिन ने फिर बड़े रोब से अध्यक्ष का पद सम्भालते हुए जवाब दिया।

"मुझे ये बहसें और झगड़े बेहद पसन्द हैं, प्रिंस, मेरा मतलब, ज़ाहिर है, उनसे है जिनमें कोई गहरी इल्म की बात होती है," केल्लेर ने अधीरता से अपनी कुर्सी पर कसमसाते हुए और हर्षातिरेक की हालत में बुदबुदाकर कहा। "गहरे इल्म की और राजनीतिक," उसने अचानक और अप्रत्याशित ढंग से रादोम्स्की की ओर मुड़ते हुए, जो लगभग उसके बग़ल में ही बैठा था, इतना और जोड़ दिया। "बात यह है, मुझे अखबारों में इंगलैण्ड की पार्लियामेण्ट के बारे में पढ़ने का बेहद शौक है। मेरा मतलब है कि यह पढ़ने का नहीं कि ये लोग वहाँ बहस किस सवाल पर करते हैं (मैं राजनीतिक आदमी तो हूँ नहीं), बल्कि जिस तरह से ये लोग एक-दूसरे से बात करते हैं, राजनीतिज्ञों की हैसियत से वे जिस तरह का बर्ताव करते हैं—'मेरे सामने जो बेहद शरीफ़ वाइकाउंट साहब बैठे हैं', 'निहायत शरीफ़ अर्ल साहब जो मुझसे सहमत हैं', 'मेरे माननीय प्रतिपक्षी जिन्होंने अपने सुझाव से सारे योरप को चकित कर दिया है'—मतलब यह कि ये सब सजावटी फ़िक़रे, एक आज़ाद कौम का पार्लियामेन्ट चलाने का यह तरीक़ा—मेरे जैसे आदमी पर यही चीज़ें तो जादू कर देती हैं ! प्रिंस, यह सब मुझे मुग्ध कर लेता है। दिल से मैं हमेशा कलाकार रहा हूँ। क़सम खाकर कहता हूँ, रादोम्स्की साहब।"

"आपके कहने का मतलब यह तो नहीं है," गान्या ने कमरे के दूसरे कोने से बड़े जोश के साथ चिल्लाकर कहा, "आपके कहने का मतलब कहीं यह तो नहीं है कि रेलें एक लानत हैं, कि वे इंसान को तबाह कर देंगी, कि वे एक ताऊन की तरह हैं जो इस धरती पर 'जीवन के स्रोतों' में जहर घोलने के लिए आती हैं ?"

उस शाम गान्या ख़ासतौर पर बहुत जोश में था, बहुत मस्त, जैसे उसकी कोई बहुत बड़ी जीत हो गई हो, प्रिंस को ऐसा ही लग रहा था। ज़ाहिर है, वह लेबेदेव की खिंचाई कर रहा था, उसे उकसावा दे रहा था, लेकिन जल्दी ही वह ख़ुद उत्तेजित हो उठा।

"रेलें नहीं, जी नहीं, जनाब !" लेबेदेव ने ताव खाकर और साथ ही बहुत मज़ा लेते हुए जवाब दिया। "रेलें अकेले अपने बल पर जीवन के स्रोतों में जहर नहीं घोलेंगी; लेकिन, जनाब, यह तो आँवे का आँवा ही टेढ़ा है, कुल मिलाकर पिछली कुछ शताब्दियों की भावना ही, जनाब, जिस तरह उसे विज्ञान और व्यवहार के क्षेत्र में लागू किया गया है, शायद एक लानत है, जनाब !"

"सचमुच लानत है या सिर्फ़ शायद ?" रादोम्स्की ने पूछा। "देखिए, इस तरह के मामलों में यह जानना ज़रा ज़रूरी होता है।"

"लानत, लानत, सचमुच लानत !" लेबेदेव ने बहुत ज़ोर देकर आग्रह किया।

"इतनी जल्दी न कीजिए, लेबेदेव," प्तीत्सिन ने मुस्कराकर कहा। "आपका मिज़ाज सबेरे तो कहीं ज़्यादा अच्छा रहता है।"

"लेकिन शाम को जबान कहीं ज़्यादा खुल जाती है ! कहीं ज़्यादा सच्चाई से और ज़्यादा साफ़ बात कहने लगती है, जनाब !" लेबेदेव ने ताव खाकर उसकी ओर मुड़ते हुए चिल्लाकर कहा।

"दिमाग़ ज़्यादा सुलझा हुआ होता है और ज़्यादा नपे-तुले ढंग से सोचता है, मैं ज़्यादा ईमानदार और ज़्यादा इज़्ज़तदार हो जाता हूँ, और हालाँकि आप मेरी इस बात की वजह से मुझ पर हमला कर सकते हैं, लेकिन मुझे रत्ती-भर परवाह नहीं है इसकी ! मैं इस वक़्त आप सब लोगों को चुनौती देता हूँ, आप सब नास्तिकों को—आप इस दुनिया को कैसे बचानेवाले हैं और आपने इसके लिए कौन-सा सही रास्ता मालूम किया है, आप लोगों ने जो विज्ञान, उद्योग, संघों और वेतन आदि के माननेवाले लोग हैं ? कौन-सा रास्ता ? कर्ज का ? कर्ज क्या होता है ? कर्ज आपको कहाँ ले जाएगा ?"

"आप हर चीज़ के बारे में कुरेदकर जानना चाहते हैं, है न ?" रादोम्स्की ने अपना मत व्यक्त किया।

"जनाब, मेरी राय तो यह है कि जिस आदमी को इस तरह के सवालों में दिलचस्पी नहीं होती वह सिर्फ़ ऊँचे समाज का लफ़ंगा आदमी होता है !"

"कम से कम इससे भाईचारा और हितों का सन्तुलन तो कायम होता है," प्तीत्सीन ने फिर अपनी राय दी।

"इतना ही ! बस, इतना ही ! निजी अहंकार और भौतिक आवश्यकता की तृप्ति के अलावा किसी भी नैतिक कारण को स्वीकार किए बिना ! सार्वत्रिक शान्ति, सार्वत्रिक सुख ज़रूरत की वजह से ! अगर मुझे पूछने की इजाज़त हो, क्या यही आपका मतलब है, जनाब ?"

"लेकिन जिन्दा रहने, खाने और पीने की हर आदमी की ज़रूरत और इस बात को पूरी तरह, ज़ाहिर है, वैज्ञानिक ढंग से मानना कि इन ज़रूरतों को आपसी मेल-जोल और हितों की एकता के बिना कभी पूरा नहीं किया जा सकता, मेरी राय में, इतना काफ़ी सशक्त विचार है कि वह मानवजाति की आनेवाली पीढ़ियों के लिए 'जीवन के स्रोत' और बुनियाद का काम दे सके," गान्या ने सचमुच उत्तेजित होकर अपना मत प्रकट किया।

"खाने और पीने की ज़रूरत या, दूसरे शब्दों में, आत्म-संरक्षण की सहजवृत्ति।..."

"लेकिन क्या आत्म-संरक्षण की सहजवृत्ति ही काफ़ी नहीं है ? आह, आत्म-संरक्षण की सहजवृत्ति तो मानवजाति का सामान्य नियम है।..."

"यह किसने कहा आपसे ?" रादोम्स्की अचानक चिल्लाया। "यह सच है कि यह एक नियम है, लेकिन किसी भी तरह विध्वंस के, और शायद आत्म-विध्वंस के भी नियम से ज़्यादा सामान्य नहीं। निश्चय ही, आत्म-संरक्षण मानवजाति का सम्पूर्ण सामान्य नियम नहीं है।"

"अहा !" इप्पोलीत जल्दी से रादोम्स्की की ओर मुड़ते हुए और उसे सिर से पाँव तक अबाध कौतूहल से देखते हुए चिल्लाया। लेकिन यह देखकर कि रादोम्स्की हँस रहा था वह खुद भी हँसने लगा, उसने कोल्या को कुहनी मारी जो उसके पास ही खड़ा हुआ था, और उससे एक बार फिर वक़्त पूछा, यहाँ तक कि कोल्या की चाँदी की घड़ी लेकर खुद बड़ी उत्सुकता से उसे देखने लगा। इसके बाद मानो सब कुछ भूलकर वह सोफ़े पर लेट गया और अपने हाथ सिर के पीछे रखकर छत को घूरने लगा; आधे ही मिनट बाद वह फिर मेज़ के पास बैठा हुआ था और अपने शरीर को सीधा तानकर लेबेदेव की बक-बक सुन रहा था, जो अत्यधिक उत्तेजना की अवस्था में था।

"बहुत ही चालाकी का और व्यंग्य-भरा विचार है, बहुत ही खतरनाक विचार !" रादोम्स्की के विरोधाभासपूर्ण वाक्य को बड़ी उत्सुकता से सुनकर लेबेदेव चिढ़कर बोला। "ऐसा विचार जिसका उद्देश्य विरोधियों को लड़ने के लिए उकसाना है, लेकिन एक सच्चा विचार ! क्योंकि आप तुनकमिजाज खानदानी रईस और भड़भड़िया हैं (हालाँकि आप कुछ अकल भी रखते हैं), इसलिए

आप ख़ुद नहीं महसूस करते कि आपका विचार कितना गहरा है, कितना सच है ! जी हाँ, जनाब, मानवजाति में आत्म-विध्वंस का नियम और आत्म-संरक्षण का नियम दोनों बराबर सशक्त हैं ! सुदूर भविष्य में आनेवाले किसी दिन तक जिसका हमें पता नहीं है मानवजाति पर शैतान का भी उतना ही प्रभुत्व है। आप हँस रहे हैं ? आप शैतान में यक़ीन नहीं रखते ? शैतान में यक़ीन न रखना फ़्रांसीसी विचार है। यह बहुत छिछला विचार है। जानते हैं शैतान कौन है ? जानते हैं उसका नाम क्या है ? उसका नाम तक जाने बिना आप वाल्टेयर की नक़ल करके उसकी बाहरी शक्ल पर हँसते हैं, उसके खुरों पर, उसकी दुम पर, उसके सींगों पर, जिन्हें आपने ख़ुद ईजाद किया है; शैतान बहुत महान और निर्मम है, लेकिन उसके ये खुर और सींग नहीं हैं जो आपने ईजाद करके उसके लगा दिए हैं। लेकिन इस वक़्त सवाल उसका नहीं है !"

"आपको कैसे मालूम कि सवाल उसका नहीं है ?" इप्पोलीत अचानक चिल्लाया और इस तरह ठहाका मारकर हँस पड़ा जैसे उसे दौरा पड़ गया हो।

"बहुत ही चालाकी-भरा और भड़कानेवाला विचार है !" लेबेदेव ने अनुमोदन करते हुए कहा, "लेकिन, मैं एक बार फिर कहूँगा, इस वक़्त बहस इस सवाल पर नहीं हो रही है। हमारा सवाल यह है कि 'जीवन के स्रोत' क्षीण हुए हैं या नहीं जैसे-जैसे बढ़ाव हुआ है..."

"रेलों का ?" कोल्या झट से बोला।

"रेल-संचार का नहीं, मेरे कम-उम्र लेकिन तेज-मिजाज नौजवान, बल्कि उस पूरी प्रवृत्ति का, जिसकी कि रेलें, एक तरह से, प्रतीक हैं, कलात्मक अभिव्यक्ति हैं। वे हड़बड़ी मचाती हैं, वे गरजती हैं, वे हवा को अपने शोर से चीरती हैं, वे जल्दी करती हैं, कहा जाता है, मानवजाति के सुख के लिए ! 'लोग बेहद शोर मचानेवाले और व्यापारी प्रवृत्ति के होते जा रहे हैं', कोई संन्यासी विचारक शिकायत करता है, 'आत्मा की शान्ति तो रह ही नहीं गई है'। 'ऐसा ही सही', एक दूसरा विचारक, जो हमेशा इधर-उधर घूमता रहता है, विजय-गर्व से उसे जवाब देता है, 'लेकिन भूख से मरती हुई मानवजाति के लिए खाने का सामान लेकर जाती हुई गाड़ियों की खड़खड़ाहट शायद आत्मा की शान्ति से कहीं ज़्यादा अच्छी है,' और यह कहकर वह बड़े तिरस्कार से आगे बढ़ जाता है। लेकिन, मैं ठहरा दुष्ट आदमी, मैं मानवजाति के लिए रोटी लानेवाली गाड़ियों में विश्वास नहीं रखता ! क्योंकि अपने इस काम के लिए किसी नैतिक आधार के बिना सारी मानवजाति के लिए रोटी लानेवाली गाड़ियाँ बिलकुल जान-बूझकर मानवजाति के काफ़ी बड़े हिस्से को अपने लाए हुए सामान का सुख भोगने से वंचित भी रख सकती हैं, जैसा कि हो भी चुका है।..."

"गाड़ियाँ बिलकुल जान-बूझकर वंचित रख सकती हैं ?" कोई बीच में बोला।

"जैसा कि हो भी चुका है," लेबेदेव ने उस सवाल का जवाब देने का कष्ट उठाए बिना दोहराया। "हमारे बीच माल्थस जैसा मानवजाति का मित्र हो चुका है। लेकिन मानवजाति का वह मित्र जिसके नैतिक सिद्धान्त डाँवाडोल हों, उसके अहंकार की तो बात छोड़िए, वह मानवजाति का विध्वंसक होता है—क्योंकि अगर आप मानवजाति के इन असंख्य मित्रों में से किसी एक के भी अहंकार को ठेस पहुँचाएँ तो वह तुच्छ प्रतिशोध की भावना से दुनिया को आग लगा देने के लिए तैयार हो जाता है, हममें से किसी की भी तरह और, ईमान की बात तो यह है कि ख़ुद मेरी तरह, जो सबसे दुष्ट है, क्योंकि मैं शायद ईंधन तो सबसे पहले पहुँचा दूँगा लेकिन ख़ुद भाग जाऊँगा। लेकिन असल बात यह भी नहीं है !"

"फिर क्या है वह ?"

"तुमसे तो तंग आ जाता हूँ मैं !"

“असल बात बहुत पहले की इस घटना में छिपी है, क्योंकि मैं आपको इस घटना के बारे में बताए बिना नहीं रह सकता जो कई शताब्दी पहले हुई थी। हमारे जमाने में और हमारे देश में—जिससे, मैं उम्मीद करता हूँ, साहबान, कि आप लोगों को भी उतना ही गहरा प्यार होगा जैसा मुझे है, क्योंकि जहाँ तक मेरा सवाल है मैं अपने ख़ून की आख़िरी बूँद तक बहाने को तैयार हूँ...”

“आगे बढ़ो, आगे बढ़ो !”

“हमारे देश में और बाक़ी योरप में भी मानवजाति को नियमित रूप से भयानक अकालों का सामना करना पड़ता है, और जहाँ तक मुझे याद है और जहाँ तक हिसाब लगाया जा सकता है, ऐसा चौथाई शताब्दी में कम से कम एक बार ज़रूर होता है, या, दूसरे शब्दों में, हर पच्चीस साल में एक बार। मैं इन आँकड़ों के बारे में पूरे भरोसे के साथ तो नहीं कह सकता, लेकिन तुलना में यह काफ़ी कम है।”

“किसकी तुलना में ?”

“बारहवीं शताब्दी की तुलना में और उससे फ़ौरन पहले और फ़ौरन बाद। क्योंकि उस ज़माने में, जैसा कि लेखकों का दावा है, व्यापक अकाल हर दो साल में एक बार, या कम से कम हर तीन साल में एक बार पड़ते थे, जिसका नतीजा यह था कि ऐसी आफ़त आने पर आदमी आदमी को खाने लगता था, हालाँकि वे इस बात पर परदा डाले रखते थे। इसी तरह के एक [illegible] आदमी ने, जब वह बूढ़ा होने लगा, अपनी मर्ज़ी से और किसी के मजबूर किए बिना ही बताया कि अपनी लम्बी और भुखमरी की ज़िन्दगी में उसने अकेले और सबसे बिलकुल [illegible] साठ पादरियों को और कई गृहस्थ लोगों के बच्चों को, छह से ज़्यादा नहीं, [illegible] था,—यानी उसने कुल जितने पादरी खाए थे उसकी तुलना में बच्चों की संख्या बिलकुल कम थी। बड़ी उम्र के गृहस्थ लोगों की तरफ़ वह इस उद्देश्य से हाथ बढ़ाने की कोशिश भी नहीं करता था।”

“ऐसा हो ही नहीं सकता !” स्वयं अध्यक्ष, जनरल साहब, लगभग आहत स्वर में चिल्लाए। “सुनिए, मैं अकसर इससे बहस करता हूँ, साहबान, और हमेशा ऐसी ही बातों के बारे में। लेकिन ज़्यादातर यह ऐसी बकवास करता है कि सुननेवाला तंग आ जाता है, जो ज़रा भी सच्चाई नहीं होती !”

“कार्स की घेरेबन्दी याद है, जनरल साहब, और बेहतर होगा कि आप लोग साहबान यह अच्छी तरह समझ लें कि मेरा क़िस्सा खरी सच्चाई है। अपनी ओर से मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूँ कि लगभग हर सच्चाई, हालाँकि उसके अपने अटल नियम होते हैं, लगभग हमेशा अविश्वसनीय और असम्भव मालूम होती है। दरअसल, वह जितनी ही ज़्यादा सच होती है, कभी कभी वह उतनी ही ज़्यादा असम्भव मालूम होती है।”

“लेकिन वह साठ पादरियों को खा कैसे गया ?” उसके चारों ओर के लोगों ने हँसते हुए आपत्ति की।

“यह तो साफ़ ज़ाहिर है कि उसने उन सबको एक साथ नहीं खाया, लेकिन यह बात बिलकुल समझ में आती है और स्वाभाविक मालूम होती है कि उसने उन्हें पन्द्रह-बीस साल के दौरान खाया था।...”

“और स्वाभाविक ?”

“और स्वाभाविक !” लेबेदेव ने हठधर्मी के साथ जवाबी काट करते हुए कहा। “इसके अलावा कैथोलिक पादरी स्वभाव से ही बहुत आसानी से धोखे में आ जानेवाला और जिज्ञासु होता है, और उसे बहला-फुसलाकर किसी जंगल में या किसी बीहड़ जगह में ले जाना और वहाँ ऊपर बताए ढंग

से उसे ठिकाने लगा देना बहुत आसान होता है। फिर भी मैं इस बात से इन्कार नहीं करता कि उसने जितने आदमियों को खाया उनकी संख्या असम्भव हद तक बहुत ज़्यादा मालूम होती है।"

"शायद यह सच है, साहबान," प्रिंस अचानक बोल पड़ा।

तब तक वह बहस करनेवालों की बातें चुपचाप सुनता रहा था; उसने बातचीत में हिस्सा लेने की कोई कोशिश नहीं की थी; सब लोगों के साथ कई बार जी खोलकर हँसा था। साफ़ मालूम हो रहा था कि वह इस बात पर बहुत ख़ुश था कि उसकी पार्टी में इतनी मस्ती और इतना शोर-गुल था; यहाँ तक कि इस बात पर भी कि लोग इतनी शराब पी रहे थे। शायद वह सारी शाम एक शब्द भी न बोलता, लेकिन न जाने क्यों उसके जी में कुछ बोलने की समाई। वह इतनी गम्भीर आवाज़ में बोला कि हर आदमी फ़ौरन बड़ी दिलचस्पी से उसकी ओर मुड़ गया।

"मैं जो बात समझाना चाहता हूँ, साहबान, वह यह है कि उस जमाने में इस तरह के अकाल आए दिन पड़ते रहते थे। मैंने भी इसके बारे में सुना है, हालाँकि मुझे इतिहास की अच्छी तरह जानकारी नहीं है। लेकिन मालूम होता है कि ऐसा ही रहा होगा। स्विट्ज़रलैण्ड के पहाड़ों के बीच पहुँचकर मैं उन पुराने सामन्ती किलों के खंडहरों को देखकर बहुत हैरत किया करता था, जो पहाड़ों की ढलानों पर, कम से कम आधी मील ऊँची खड़ी चट्टानों पर बनाए गए थे (जिसका मतलब होता है कि पहाड़ी पगडंडियों से चलने पर कई मील)। सभी जानते हैं कि किला कैसा होता है—पत्थरों का पहाड़ का पहाड़ होता है—भयानक, असम्भव काम ! और, ज़ाहिर है, उसे बनाते बेचारे ग़रीब लोग ही थे, नौकर-चाकर, ग़ुलाम। इसके अलावा उन्हें तरह-तरह के टैक्स देने पड़ते थे और पादरियों की ज़रूरतें पूरी करनी पड़ती थीं। फिर वे अपना पेट कैसे पाल सकते थे और ज़मीन पर खेती कैसे कर सकते थे ? उस जमाने में ये लोग इतने ज़्यादा थे भी नहीं और शायद उनमें से सैकड़ों भूख से मर जाते थे, और शायद उनके पास सचमुच खाने को एक दाना भी न रहता हो। कभी-कभी मैं सोचा करता था कि इन लोगों का अस्तित्व बिलकुल ही मिट क्यों नहीं गया और अगर उन पर कोई आफत आ पड़ती थी तो वे उस पर काबू कैसे पाते थे और जिन्दा कैसे बच जाते थे ? लेबेदेव का यह कहना बेशक ठीक है कि उनमें ऐसे लोग थे जो आदमी को खा जाते थे। जो बात मेरी समझ में नहीं आई वह यह कि वह बीच में पादरियों को क्यों घसीट लाए और उससे उनका क्या मतलब था।"

"बेशक इसलिए कि बारहवीं शताब्दी में सिर्फ़ पादरियों को ही खाया जा सकता था क्योंकि सिर्फ़ वही लोग मोटे होते थे," गान्या ने अपनी राय दी।

"बहुत ही शानदार और सच्चा ख़्याल है !" लेबेदेव चिल्लाकर बोला, "क्योंकि, सचमुच, वह कभी गृहस्थ लोगों पर हाथ नहीं डालता था। साठ पादरी और एक भी गृहस्थ आदमी नहीं—भयानक विचार, ऐतिहासिक विचार, सांख्यिकीय विचार, बेशक, और विशेषज्ञ ऐसे ही तथ्यों को जोड़कर इतिहास की रचना करते हैं; क्योंकि इससे गणित की तरह बिलकुल सही नतीजा यही निकलता है कि उस जमाने में पादरी लोग बाक़ी इंसानों से कम से कम साठ गुना ज़्यादा सुख-सन्तोष के साथ रहते थे। और शायद वे बाक़ी इंसानों से साठ गुने ज़्यादा मोटे भी होते होंगे।..."

"यह बहुत ज़्यादा हो गया, ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ा-चढ़ा दिया, लेबेदेव !" उसके चारों ओर सब लोगों की हँसी गूँज उठी।

"मैं मानता हूँ कि यह एक ऐतिहासिक विचार है, लेकिन आप कहना क्या चाहते हैं ?" प्रिंस पूछता रहा। (वह इतनी गम्भीरता से बोल रहा था और उसमें लेबेदेव पर हँसने या उसका मज़ाक़ उड़ाने की इच्छा का ऐसा सर्वथा अभाव था, जिस पर सभी हँस रहे थे, कि वहाँ पर मौजूद बाक़ी

लोगों के लहजे के बीच उसके लहजे का हास्यास्पद लगना अनिवार्य था; कुछ ही मिनट बाद ये लोग उस पर भी हँसने लगते, लेकिन इस बात की ओर उसका ध्यान नहीं गया।)

"प्रिंस, आपको दिखाई नहीं देता कि वह पागल है ?" रादोम्स्की ने उस पर झुककर कहा। "अभी थोड़ी देर पहले मुझे यही बताया गया था कि इसे वकील होने और अदालती भाषण झाड़ने का ख़ब्त सवार रहता है और इस बात का कि यह कोई इम्तहान देना चाहता है। मैं समझता हूँ कि अभी कोई शानदार मजाकिया नक़ल पेश की जाएगी।"

"मैं एक बहुत बड़े निष्कर्ष की तरफ़ बढ़ रहा हूँ," इसी बीच लेबेदेव गरजा। "लेकिन सबसे पहले, आइए, हम अपराधी की मनोवैज्ञानिक और क़ानूनी स्थिति को जाँच लें। हम देखते हैं कि यह अपराधी या, यों समझ लीजिए, मेरा मुवक्किल किसी दूसरे क़िस्म का खाना मिलना नामुमकिन होने के बावजूद अपनी दिलचस्प ज़िन्दगी के दौरान कई बार प्रायश्चित करने की इच्छा प्रकट कर चुका है और पादरियों को दूर रखता है। हमें यह बात तथ्यों में साफ़ दिखाई देती है क्योंकि यह दर्ज है कि उसने पाँच या छह दूधमुँहे बच्चे खाए—यों तो यह संख्या कोई ख़ास बड़ी नहीं है, लेकिन एक दूसरी दृष्टि से इसका बहुत महत्त्व है। यह बात साफ़ है कि भयंकर पश्चात्ताप से पीड़ित होकर (क्योंकि मेरा मुवक्किल धर्मात्मा आदमी है और अपने अन्तःकरण के आदेश के अनुसार काम करता है, जैसा कि मैं आगे चलकर साबित करूँगा) और अपने पाप को जहाँ तक हो सके घटाकर कम से कम कर देने की इच्छा से उसने आजमाने के लिए छह बार पादरियों के बजाय लौकिक भोजन खाया। इस बात में भी कोई शक नहीं है कि उसने ऐसा आजमाने के लिए ही किया; क्योंकि अगर सिर्फ़ स्वाद बदलने की बात होती तो छह की गिनती बहुत ही थोड़ी है—छह ही क्यों, तीस क्यों नहीं ? (मैं आधा-आधा ले रहा हूँ।) लेकिन अगर यह सिर्फ़ आजमाइश थी, जो धर्मद्रोह के अपराधी ठहराए जाने और चर्च को नाराज़ कर देने के डर से की गई थी तो छह की यह गिनती बिलकुल समझ में आती है; अपने अन्तःकरण को सन्तुष्ट करने के लिए छह प्रयोग काफ़ी हैं, क्योंकि हो सकता है कि प्रयोग सफल न हुए हों। मेरी राय में, सबसे पहली बात तो यह कि दुधमुँहे बच्चे बहुत छोटे होते हैं—कहने का मतलब यह कि उनका आकार बड़ा नहीं होता, इसलिए उतने ही वक़्त के दौरान में पादरियों के मुकाबले में तीन या पाँच गुने गृहस्थ लोगों के बच्चे दरकार होंगे, इस तरह पाप जहाँ एक तरफ़ कम हो जाएगा, वहीं दूसरी तरफ़ वह बढ़ जाएगा, गुण की दृष्टि से न सही लेकिन मात्रा की दृष्टि से तो बढ़ ही जाएगा। इस तरह की दलीलें देकर, साहबान, मैं सिर्फ़ यह पता लगाने की कोशिश कर रहा हूँ कि बारहवीं शताब्दी के अपराधी के दिल के अन्दर क्या हो रहा है। जहाँ तक मेरा सवाल है, उन्नीसवीं शताब्दी के इंसान की हैसियत से मेरा दलील करने का तरीक़ा बिलकुल ही दूसरा हो सकता था, जिस बात को मैं चाहता हूँ, साहबान, कि आप ध्यान में रखें ताकि आपको मेरे ऊपर खीसें निकालने की ज़रूरत न पड़े; जहाँ तक आपका सवाल है, जनरल साहब, आपका मेरे ऊपर इस तरह बत्तीसी खोलना बहुत ही बेजा बात है। दूसरे, मेरी निजी राय में, दुधमुँहे बच्चे में काफ़ी पोषक तत्त्व नहीं होते, और शायद उससे आदमी बहुत जल्दी छक जाता है और वह बहुत मीठा होता है, जिसका नतीजा यह होता है कि वह आपकी भूख तो मिटाता नहीं, और ऊपर से आपका अन्तःकरण आपको धिक्कारता रहता है। अब मैं ख़त्म करता हूँ, अन्त पर आता हूँ, साहबान, उस नतीजे पर जिसमें उस जमाने की और हमारे इस जमाने की भी एक सबसे बड़ी समस्या का हल मौजूद है ! अन्त में अपराधी पुरोहितों के पास जाता है और अपने ख़िलाफ़ यह सारी जानकारी उनके सामने रख देता है और अपने आपको अधिकारियों के हवाले कर देता है। अब आपके दिल में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि उस जमाने में उसे क्या-क्या

यातनाएँ दी जा सकती थीं—पहिए से बाँधकर घुमाना, खम्भे से बाँधकर जिन्दा जला देना और आग में झोंक देना ! आख़िर किसने उसे जाकर ख़ुद अपने ख़िलाफ़ जानकारी देने के लिए उकसाया ? उसने यह क्यों नहीं किया कि बस साठ की गिनती पर रुक जाता और मरते दम तक यह भेद अपने सीने में छिपाए रहता ? उसे किसने रोका था कि पादरियों को उनके हाल पर छोड़ देता और संन्यास लेकर प्रायश्चित करता रहता ? या आख़िर में खुद मठवासी बन जाता ? तो, यही है हल ! इसलिए कोई चीज़ अग्निदण्ड से और बीस साल पुरानी आदतों से भी अधिक सशक्त रही होगी ! कोई विचार तो ज़रूर होगा जो किसी भी दैवी प्रकोप, अकाल, यातना, ताऊन, कोढ़ और उस सारे नरक से अधिक प्रबल रहा होगा जिसे मनुष्य उस विचार के बिना सहन नहीं कर सकता था, जो मनुष्यों के हृदयों को आपस में जोड़े रखता था और जीवन के स्रोत को फलप्रद बनाता था ! झूठों और रेलों के हमारे इस युग में उस शक्ति से मिलती-जुलती कोई चीज़ दिखाइए...बल्कि कहना चाहिए जहाजों और रेलों के हमारे इस युग में, लेकिन मैं झूठों और रेलों का युग कह गया, क्योंकि मैं नशे में हूँ लेकिन न्याय-प्रिय हूँ ! अच्छा, मुझे कोई ऐसा विचार दिखाइए जो आज मानवजाति को उन शताब्दियों के मुकाबले में आधी मजबूती से भी आपस में जोड़े रख सकता हो। और क्या आप यहाँ तक कहने को तैयार हैं कि इस 'सितारे' के नीचे, उस जाल के नीचे जिसमें इंसान फँसा हुआ है जीवन के स्रोत क्षीण और दूषित नहीं हो गए हैं ? और मुझे अपनी समृद्धि से, अपनी धन-दौलत से, अकालों के उतनी जल्दी-जल्दी न पड़ने से, और संचार के साधनों की तेजी से डराने की कोशिश मत कीजिए ! दौलत बढ़ी है, मगर ताक़त घटी है; एक सूत्र में बाँधनेवाला विचार नहीं रह गया है; हर चीज़ नरम हो गई है, हर चीज़ स्थूल है, और हर आदमी स्थूल है ! हम सब, सारे के सारे, स्थूल हो गए हैं ! लेकिन इतना ही काफ़ी है; इस वक़्त बहस इस बात पर नहीं हो रही है। बात यह है, मेरे सम्मानित प्रिंस, कि हम लोगों को आपके मेहमानों के खाने के लिए कुछ हल्की-फुल्की चीज़ें मँगानी चाहिए, है न ?"

लेबेदेव ने, जिसने अपने कुछ सुननेवालों में निश्चित रूप से क्रोध जागृत कर दिया था (ध्यान रहे कि इस पूरे दौरान में बोतलें लगातार खुल रही थीं), अपना भाषण अप्रत्याशित ढंग से समाप्त करके सारे विरोधियों को शान्त कर दिया। उसने इस तरह की समाप्ति को 'एक कुशल वकीलोंवाला पैंतरा' कहा। एक बार फिर चारों ओर मस्ती-भरी हँसी गूँज उठी और सारे मेहमानों के चेहरों पर चमक आ गई; वे सब मेज़ पर से उठकर बरामदे में अपनी टाँगें सीधी करने लगे। अकेला केल्लेर ऐसा था जो अभी तक लेबेदेव के भाषण से असन्तुष्ट था, और बहुत उद्विग्न था।

"शिक्षा पर हमला करता है, बारहवीं शताब्दी के अन्धेपन का प्रचार करता है, मुँह बनाता है, और ऐसा भी नहीं कि अपने दिल के भोलेपन की वजह से। मैं पूछता हूँ कि इसे अपने लिए यह घर खरीदने को पैसा कहाँ से मिला ?" उसने सबको रोककर ज़ोर से कहा।

"मैं एक ऐसे आदमी को जानता था जो सचमुच ऐपोकैलिप्स की व्याख्या करते थे," जनरल साहब एक कोने में दूसरे सुननेवालों से कह रहे थे, जिनमें प्तीत्सिन भी था, जिसे बलि का बकरा बनाकर वह अपना धाराप्रवाह प्रवचन कर रहे थे, "स्वर्गीय ग्रिगोरी सेम्योनोविच बुर्मीस्त्रोव, जो, यों समझ लीजिए, आपके रोंगटे खड़े कर देते थे। सबसे पहले तो वह अपना चश्मा चढ़ाते थे, और फिर काले चमड़े की जिल्द चढ़ी हुई एक बड़ी-सी बहुत पुरानी पोथी निकालते थे और हाँ, उनके बिलकुल सफ़ेद दाढ़ी थी और परोपकार के कामों के लिए उन्हें दो मेडल भी मिल चुके थे। वह कठोर स्वर में और सख़्ती से बोलना शुरू करते थे; बड़े-बड़े जनरल उनके सामने सिर झुकाते थे और महिलाएँ मूर्च्छित हो जाती थीं। और हद यह है कि खाने की हल्की-फुल्की चीज़ों से अपनी

बात ख़त्म करता है ! शर्म की बात है।"

प्तीत्सिन जनरल साहब की बातें सुन रहा था और मुस्करा रहा था। ऐसा लगता था कि वह अभी अपना हैट उठाकर चल देगा, लेकिन स्पष्टतः वह अपना मन पक्का नहीं कर पा रहा था, या अपना इरादा भूल-भूल जाता था। गान्या ने अचानक पीना बन्द करके उन लोगों के मेज़ पर से उठने के पहले ही अपना गिलास परे सरका दिया था—ऐसा लग रहा था कि उसके चेहरे पर से होकर उदासी की काली परछाईं-सी गुजर गई थी। जब सब लोग मेज़ पर से उठ गए तो वह जाकर रोगोझिन के पास बैठ गया। देखनेवाला यही समझता कि उनके बीच बहुत गहरी दोस्ती है। रोगोझिन भी, जो पहले भी कई बार चुपचाप खिसक जाने का इरादा कर चुका था, इस वक़्त सिर झुकाए निश्चल बैठा था—स्पष्टतः वह भी भूल चुका था कि उसने यहाँ से चले जाने का इरादा किया था। उसने शाम-भर एक बूँद भी शराब नहीं पी थी और बहुत विचारमग्न था, बस बीच में कभी-कभी वह नज़रें उठाकर सबको बड़े ध्यान से देखता था। अब ऐसा लग रहा था कि वह यहीं अपने साथ कोई बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना होने की प्रतीक्षा कर रहा था और उसने तब तक यहाँ से न जाने का फ़ैसला कर लिया था।

प्रिंस ने दो-तीन गिलास पिए थे और वह थोड़ा-सा खुश महसूस कर रहा था। मेज़ पर से उठते हुए उसकी नज़र रादोम्स्की पर पड़ी, उसे याद आया कि वे दोनों कुछ बातें करनेवाले थे, और वह बड़ी सहृदयता से उसकी ओर देखकर मुस्कराया। रादोम्स्की ने उसकी ओर देखकर सिर हिलाया और अचानक इप्पोलीत की तरफ़ इशारा किया, जिसे वह उस वक़्त बड़े ग़ौर से देख रहा था। इप्पोलीत सोफ़े पर टाँगें फैलाए सो रहा था।

"अच्छा, यह बताइए," उसने अचानक ऐसी खुली झुँझलाहट से, बल्कि कहना चाहिए गुस्से से कहा कि प्रिंस आश्चर्यचकित रह गया, "यह कमबख्त लड़का आपके गले क्यों पड़ गया है ? मैं सच कहता हूँ इसके लक्षण मुझे अच्छे नहीं दिखाई देते !"

"मैंने देखा है," प्रिंस बोला, "कम से कम मुझे लगता ऐसा ही है कि आज आप उसमें बहुत दिलचस्पी ले रहे हैं। मैं ठीक कह रहा हूँ न ?"

"आप इसमें इतना और जोड़ सकते हैं कि अपनी मौजूदा हालत में मुझे कितनी और बातों की चिन्ता करनी है, इसलिए मुझे इस बात पर आश्चर्य होना स्वाभाविक ही है कि मैं सारी शाम उसके मनहूस चेहरे पर से अपनी नज़रें नहीं हटा सकता हूँ !"

"उसका चेहरा खूबसूरत है।..."

"देखिए, देखिए !" रादोम्स्की ने प्रिंस की बाँह खींचते हुए चिल्लाकर कहा। "देखिए !"

प्रिंस ने एक बार फिर रादोम्स्की को आश्चर्य से देखा।

5

इप्पोलीत जो लेबेदेव के प्रवचन के अन्त में अचानक सोफ़े पर सो गया था, अब उसी तरह अचानक जाग पड़ा, मानो किसी ने उसे पसली में कोंचा हो, चौंककर उठ बैठा, चारों ओर देखा, और उसका रंग पीला पड़ गया; वह भयभीत-सा होकर चारों ओर घूर रहा था; लेकिन उसे जब सब कुछ याद आ गया और वह सब समझ गया तो उसके चेहरे पर हताशा का भाव आ गया।

"क्यों ? ये लोग जा रहे हैं ? ख़त्म हो गया क्या ? क्या सब कुछ ख़त्म हो गया ? क्या सूरज निकल आया ?" वह उद्विग्न होकर बार-बार पूछता और प्रिंस का हाथ पकड़ लेता। "क्या वक़्त

है ? भगवान के लिए बता दो क्या वक़्त है ? मैं सोता ही रह गया। क्या मैं बहुत देर से सो रहा हूँ ?" उसने घोर निराशा जैसे भाव से फिर पूछा, मानो कोई ऐसी चीज़ उसके हाथ से निकल गई हो जिस पर कम से कम उसकी सारी ज़िन्दगी का दारोमदार था।

"आप सात-आठ मिनट सोए हो," रादोम्स्की ने जवाब दिया।

इप्पोलीत ने उस पर उत्सुकता-भरी दृष्टि डाली और कुछ सेकंड तक सोचता रहा।

"अरे...बस इतना ही ! मतलब है कि मैं..."

और उसने राहत की लम्बी, गहरी साँस ली, जैसे कोई भारी बोझ उतार फेंका हो। आख़िरकार उसने महसूस किया कि कुछ भी नहीं "ख़त्म हुआ था", कि सूरज अभी नहीं निकला था, कि मेहमान सिर्फ़ कुछ हल्की-फुल्की चीज़ें खाने के लिए मेज़ पर से उठे थे, और यह कि सिर्फ़ लेबेदेव की बक-बक ख़त्म हो गई थी। वह मुस्कराया और दो चमकीले धब्बों की शक्ल में उसके चेहरे पर तमतमाहट की गहरी लाली दौड़ गई।

ऐसा लगता है, रादोम्स्की साहब, कि जितनी देर मैं सोता रहा उतनी देर आप मिनट गिनते रहे," वह व्यंग से चिल्लाकर बोला। "आपने शाम-भर मुझ पर से अपनी नज़र नहीं हटाई—यह मैं देख रहा था...ओह, रोगोज़िन ! मैं अभी उसी के बारे में सपना देख रहा था," उसने माथे पर बल डालकर और रोगोज़िन की ओर सिर हिलाकर इशारा करके, जो मेज़ के पास बैठा हुआ था, प्रिंस से चुपके से कहा। "अरे, हाँ," अचानक वह फिर उखड़ी-उखड़ी बातें करने लगा, "हमारे वक्ता कहाँ गए ? लेबेदेव कहाँ हैं ? तो लेबेदेव अपना भाषण ख़त्म कर चुके, क्यों ? वह किस चीज़ के बारे में बातें कर रहे थे ? क्या यह सच है, प्रिंस, कि आपने एक बार कहा था कि 'सुन्दरता' दुनिया को बचाएगी ? सुनिए, सुनिए," उसने ज़ोर से चिल्लाकर वहाँ मौजूद सभी लोगों से कहा, "प्रिंस का कहना है कि 'सुन्दरता' दुनिया को बचाएगी ! और मेरा कहना है कि उनके दिमाग़ में ऐसे चंचल विचार इसलिए आते हैं कि उन्हें प्रेम हो गया है। सुना आप लोगों ने, प्रिंस को प्रेम हो गया है। उनके अन्दर आते ही यह बात मुझे साफ़ दिखाई दे गई थी। शरमाइए नहीं, प्रिंस, नहीं तो मुझे आपकी वजह से अफ़सोस होगा। किस तरह की सुन्दरता दुनिया को बचाएगी ! कोल्या ने यह मुझे बताया था...आप बहुत कट्टर ईसाई हैं न ? कोल्या बता रहा था कि आप अपने आपको ईसाई कहते हैं।"

प्रिंस ने उसे ध्यान से देखा और कोई जवाब नहीं दिया।

"आपने जवाब नहीं दिया ? कहीं आप यह तो नहीं समझते हैं कि मैं आपको पसन्द करता हूँ ?" इप्पोलीत ने अचानक इतना और जोड़ दिया, मानो न चाहते हुए भी ये शब्द उसके मुँह से निकल गए हों।

"नहीं, मैं ऐसा नहीं समझता। मैं जानता हूँ कि आप मुझे पसन्द नहीं करते।"

"क्यों ! कल के बाद भी ? क्या मैंने आपके साथ ईमानदारी नहीं बरती ?"

"कल भी मुझे मालूम था कि आप मुझे पसन्द नहीं करते।"

"आपका मतलब है, इसलिए कि मैं आपसे जलता हूँ—आपसे जलता हूँ ? आप हमेशा ऐसा समझते थे, और आप इस वक़्त भी ऐसा ही समझते हैं, लेकिन...लेकिन मैं यह आपको क्यों बता रहा हूँ ? मैं थोड़ी-सी शैम्पेन और पीना चाहता हूँ; केल्लेर, मेहरबानी करके मेरा गिलास भर दो।"

"आपको अब और नहीं पीना चाहिए, इप्पोलीत। मैं आपको नहीं पीने दूँगा।..."

यह कहकर प्रिंस ने गिलास हटा दिया।

"यही सही..." इप्पोलीत फ़ौरन सहमत हो गया, मानो इस पर सोच-विचार कर रहा हो।

"लोग कह सकते हैं...लेकिन मुझे इसकी रत्ती-भर भी परवाह क्यों हो कि लोग क्या कहते हैं ? यही बात ठीक है न ? बाद में जो उनका जी चाहे वे कहते रहें—है न, प्रिंस ? और हममें से किसी को भी क्या परवाह है कि बाद में क्या होता है। लेकिन शायद मैं पूरी तरह जाग नहीं रहा हूँ। कैसा भयानक सपना देखा था मैंने, मुझे अभी याद आया...मैं नहीं चाहता कि आपको कभी ऐसे सपने दिखाई दें, प्रिंस, हालाँकि शायद मैं सचमुच आपको पसन्द नहीं करता। फिर भी, कोई वजह नहीं है कि तुम किसी आदमी का बुरा सिर्फ़ इसलिए चाहो कि वह तुम्हें अच्छा नहीं लगता, है न ? मैं सवाल क्यों पूछता रहता हूँ, बराबर पूछता रहता हूँ ! मुझे अपना हाथ दीजिए—मैं उसे तपाक से दबाना चाहता हूँ—इस तरह।...आपने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया है न ? इसलिए आपको यह भी मालूम होगा कि मैं उसे सच्चे दिल से दबाऊँगा, मालूम है न ? हाँ, मैं अब और नहीं पिऊँगा। वक़्त क्या है ! मगर रहने दीजिए, मुझे मालूम है कि क्या वक़्त है। वक़्त आ गया है ! यही वह वक़्त है। वे लोग वहाँ कोने में क्या कर रहे हैं ? खाने-पीने के लिए मेज़ लगा रहे हैं ? तो यह मेज़ खाली है न ? बहुत अच्छी बात है ! सज्जनो, मैं...लेकिन कोई सुन नहीं रहा है...मैं एक लेख पढ़ना चाहता हूँ, प्रिंस, ज़ाहिर है, खाना-पीना कहीं ज़्यादा दिलचस्प है, लेकिन..."

और सहसा, बिलकुल अप्रत्याशित ढंग से, उसने अपने कोट की बग़लवाली जेब में से एक बड़ा-सा पैकेट निकाला, जिस पर बड़ी-सी लाल मुहर लगी हुई थी। उसने उसे अपने सामने मेज़ पर रखा।

इस अप्रत्याशित घटना का वहाँ उपस्थित लोगों पर बहुत गहरा असर पड़ा, जो इसके लिए तैयार नहीं थे, बल्कि कहना चाहिए कि वे तैयार तो थे, लेकिन इसके लिए नहीं। बुर्दोव्स्की तो अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे उछल ही पड़ा; गान्या जल्दी से खिसककर मेज़ के पास आ गया; रोगोज़िन ने भी ऐसा ही किया, लेकिन कुछ चिड़चिड़ाहट के साथ, मानो वह समझ गया हो कि यह सब किस चीज़ के बारे में था। लेबेदेव, जो वहीं मौजूद था, बिलकुल पास आ गया और अपनी जिज्ञासा-भरी आँखों से पैकेट को इस तरह देखने लगा जैसे वह भाँपने की कोशिश कर रहा हो कि किस चीज़ के बारे में है।

"क्या है उसमें ?" प्रिंस ने बेचैन होकर पूछा।

"प्रिंस, जैसे ही सूरज का घेरा क्षितिज के ऊपर दिखाई देगा वैसे ही मैं सो जाऊँगा, मैं कह चुका हूँ। मेरा दिल चीरकर देखिए—आपको यही दिखाई देगा !" इप्पोलीत ने ऊँचे स्वर में कहा। "लेकिन...लेकिन...क्या आप सचमुच समझते हैं कि मैं मुहर तोड़ नहीं पाऊँगा ?" उसने चुनौती के भाव से बारी-बारी सबको देखकर इतना और कहा, मानो उसे इसकी तनिक भी परवाह न हो कि वह किसे सम्बोधित कर रहा है। प्रिंस ने देखा कि वह सिर से पाँव तक काँप रहा था।

"हममें से किसी ने भी कभी ऐसा नहीं समझा," प्रिंस ने सबकी ओर से जवाब दिया। "लेकिन आप यह क्यों सोचते हैं कि कोई ऐसा समझता होगा ? और...हमें कुछ पढ़कर सुनाने का विचार भी कैसा अजीब है ! उसमें है क्या, इप्पोलीत ?"

"उसके पास आख़िर है क्या ? उसे फिर हो क्या गया है ?" चारों ओर से लोग पूछ रहे थे।

वे सब मेज़ के पास आ गए, कुछ तो अभी तक खा ही रहे थे; लाल मुहरवाला पैकेट चुम्बक की तरह उन सबको अपनी ओर खींच रहा था।

"प्रिंस, आपके यहाँ आकर आपके साथ रहने का वादा करने के बाद कल मैंने ख़ुद इसे लिखा है। मैंने इसे लिखने में कल का पूरा दिन और सारी रात लगाई, और आज सबेरे इसे ख़त्म किया। आज बहुत सबेरे मैंने एक सपना देखा था..."

"इसे कल तक के लिए उठा रखना बेहतर न होगा, क्या ख़्याल है ?" प्रिंस ने उसकी बात काटकर दबी जबान से कहा।

"कल 'फिर न रह जाएगा वक़्त कोई भी !' " इप्पोलीत दीवानों की तरह हँसा। "लेकिन परेशान न होइए। इसे पढ़ने में मुझे चालीस मिनट से ज़्यादा नहीं लगेंगे—हद से हद एक घंटा।...और देखिए तो इन लोगों को कितनी दिलचस्पी है। सब उठकर आ गए हैं, सब मेरी सील को घूर रहे हैं, और अगर मैंने अपनी पांडुलिपि को सीलबन्द न कर दिया होता तो कोई सनसनी न होती। हा-हा ! रहस्य तो रहस्य ही है ! अच्छा, साहबान, सील तोड़ूँ ?" उसने अपनी विचित्र हँसी हँसते हुए और चमकती हुई आँखों से उन्हें एकटक देखते हुए चिल्लाकर कहा। "रहस्य ! रहस्य ! क्या आपको याद है, किसने कही थी यह बात कि 'फिर न रह जाएगा वक़्त कोई भी' ? यह बात ऐपोकैलिप्स में महान और बलवान फ़रिश्ते ने कही थी।"

"इसे न पढ़ना ही बेहतर होगा !" रादोम्स्की ने अचानक चिल्लाकर कहा, लेकिन उसमें अपनी आदत के ख़िलाफ़ इतनी बेचैनी थी कि बहुत-से लोगों को यह बात विचित्र लगी।

"न पढ़िए !" प्रिंस ने पैकेट पर हाथ रखते हुए चिल्लाकर कहा।

"पढ़ रहे हो ? अब हम खा रहे हैं !" किसी ने कहा।

"लेख है ? किसी पत्रिका के लिए ?" किसी और ने पूछा।

"उकता तो नहीं देगा, क्यों ?" तीसरा बोला।

"आख़िर है काहे के बारे में ?" बाक़ी लोगों ने पूछा। लेकिन ऐसा लग रहा था कि प्रिंस की भयभीत मुद्रा देखकर इप्पोलीत खुद डर गया था।

"तो...न पढ़ूँ ?" उसने कुछ आशंका से अपने नीले होंठों पर ऐंठी हुई हँसी के साथ उसके कान में कहा। "न पढ़ूँ ?" उसने बारी-बारी सबको, सारी आँखों और सारे चेहरों को घूरते हुए बुदबुदाकर कहा, और मानो उसी याचना-भरे उल्लास के साथ वह एक बार फिर उन सबसे लिपट गया हो। "आप...आप डर तो नहीं रहे हैं, क्यों !" वह फिर प्रिंस की ओर मुड़ा।

"किस बात से ?" प्रिंस ने अपनी मुद्रा अधिकाधिक बदलते हुए कहा।

"किसी के पास बीस कोपेक का सिक्का है ?" इप्पोलीत ने अचानक अपनी कुर्सी पर से उछलकर कहा, जैसे किसी ने उसे उस पर से खींच लिया हो। "या कोई दूसरा सिक्का ?"

"यह रहा !" लेबेदेव ने फ़ौरन सिक्का उसकी तरफ़ बढ़ाते हुए कहा। सहसा उसके दिमाग़ में यह विचार बिजली की तरह कौंध गया कि इप्पोलीत पागल हो गया है।

"वेरा," इप्पोलीत ने जल्दी से उसे अपने पास बुलाया, "इसे लेकर मेज़ पर फेंको—सन् या पुतली ? पुतली गिरी—तो मैं पढ़ूँगा !"

वेरा ने सहमी-सहमी नज़रों से सिक्के को देखा, इप्पोलीत को देखा, फिर अपने बाप की तरफ़ देखा, और कुछ अटपटे ढंग से अपने सिर को पीछे की ओर झटका देकर, मानो उसका विश्वास यह हो कि उसे सिक्के को देखना नहीं चाहिए, उसने सिक्का मेज़ पर उछाल दिया। पुतली गिरी।

"मैं पढ़ूँगा !" इप्पोलीत ने दबी जबान से कहा, मानो भाग्य के इस निर्णय ने उसे कुचलकर रख दिया हो; उसका चेहरा इतना पीला पड़ गया जितना मौत की सज़ा सुनने पर भी न पड़ता। "फिर भी," आधे मिनट रुकने के बाद उसने सहसा चौंककर कहा, "क्या बात थी ? क्या मैंने अभी सचमुच सिक्का उछाला था ?" उसने चारों ओर सभी पर उसी याचना-भरी स्पष्टवादिता के साथ नज़र डालकर पूछा। "यह तो बहुत ही आश्चर्यजनक मनौवैज्ञानिक बात है !" वह सच्चे आश्चर्य से प्रिंस को सम्बोधित करते हुए सहसा चिल्लाकर बोला। "यह...यह इतनी अजीब बात

है कि समझ में नहीं आती, प्रिंस !" उसने और भी स्फूर्तिमय होकर कहा, मानो उसका होश-हवास लौट आया हो, "इस बात को ध्यान में रखिएगा, प्रिंस, इसे याद रखिएगा। आप तो मृत्युदण्ड के बारे में सामग्री जमा कर रहे हैं।...मुझे किसी ने बताया है, हा-हा ! तोबा, तोबा, कैसी बेसिर-पैर की बेतुकी बात है !" उसने सोफ़े पर बैठते हुए कहा और मेज़ पर कुहनियाँ टिकाकर उसने दोनों हाथों से अपना सिर थाम लिया। "अरे, यह तो बड़ी शर्मनाक बात है ! लेकिन मुझे इसके शर्मनाक होने की क्या परवाह ?" वह अपना सिर फ़ौरन उठाकर कहता रहा। "साहबान ! साहबान, मैं सील तोड़ने जा रहा हूँ," उसने एक तरह के आकस्मिक दृढ़ संकल्प के साथ कहा। "लेकिन मैं...मैं आपको सुनने के लिए मजबूर नहीं करता !"

उसने उद्विग्नता से काँपते हुए हाथों से सील तोड़ी, पैकेट में से छोटे-छोटे अक्षरोंवाली लिखाई से भरे हुए काग़ज़ के कुछ पन्ने निकाले और उन्हें अपने सामने रखकर सीधा करने लगा।

"यह हो क्या रहा है ? आख़िर यह सब है क्या ? क्या पढ़ने जा रहा है वह ?" कुछ लोग नाराज़ होकर बुदबुदाए; कुछ चुप रहे। लेकिन वे सभी बैठकर उसे कौतूहल से देखने लगे। शायद वे लोग सचमुच किसी असाधारण चीज़ की आशा लगाए हुए थे। वेरा ने अपने बाप की [illegible] पकड़ ली और डर के मारे उसके आँसू निकलने को हो आए; कोल्या भी लगभग उसके ही जितना डरा हुआ था। लेबेदेव, जो बैठ चुका था, अचानक उठ खड़ा हुआ, उसने एक मोमबत्ती उठाई और इप्पोलीत के ज़्यादा करीब रख दी ताकि उसे बेहतर दिखाई दे।

"साहबान, आप...आप अभी देखेंगे कि यह किस बारे में है," इप्पोलीत ने किसी वजह से इतना और कहा और अचानक पढ़ने लगा –" 'मेरी आवश्यक स्वीकारोक्ति' । सूक्ति 'Apre's moi le deluge'[1]...लानत है !" उसने इस तरह चौंककर कहा जैसे वह जल गया हो। "क्या मैंने संजीदगी से ऐसी बेवक़ूफ़ी की सूक्ति इस्तेमाल की है ? देखिए, साहबान, मैं आपको पहले से बताए देता हूँ कि यह पूरी चीज़ शायद सरासर बकवास है ! मैंने बस कुछ बिखरे हुए विचारों को लिख डाला है...अगर आप समझते हैं कि...यानी...इसमें कोई रहस्यमयी चीज़ है या...कोई ऐसी चीज़ है जो नहीं लिखी जानी चाहिए...मेरा मतलब है..."

"भूमिका बाँधने की कोई ज़रूरत नहीं है; उसके बिना ही पढ़ डालिए," गान्या बीच में बोला।

"बच निकलने की कोशिश कर रहा है," किसी ने इतना और जोड़ दिया।

"बातें बहुत हो रही हैं," रोगोझिन, जो उस वक़्त तक चुप था, झट से बोला।

इप्पोलीत ने अचानक उसकी ओर देखा और जब उनकी आँखें चार हुईं तो रोगोझिन उसकी ओर देखकर बड़ी कटुता और द्वेष से मुस्कराया और धीरे-धीरे अपने मुँह से उसने ये विचित्र शब्द निकाले—"यह काम ऐसे नहीं किया जाता है, बच्चू, यह तरीक़ा नहीं है।..." रोगोझिन का मतलब क्या था, यह तो किसी को मालूम नहीं था, लेकिन उसके शब्दों का सभी पर विचित्र-सा प्रभाव पड़ा—एक विचार उनके दिमागों में हल्की-हल्की चमक हुआ कि उस दिन के दिन बिजली की तरह कौंध गया। इप्पोलीत पर इन शब्दों का बहुत भयानक प्रभाव पड़ा—वह इतनी बुरी तरह काँपने लगा कि प्रिंस ने उसे सहारा देने के लिए अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया, और उसकी आवाज़ ने अचानक उसका साथ देने से इन्कार न कर दिया होता तो वह निश्चित रूप से चिल्ला पड़ा होता। पूरे एक मिनट तक उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला, और वह लम्बी-लम्बी साँसें लेता हुआ रोगोझिन को घूरता रहा। आख़िरकार, हाँपते हुए पूरा ज़ोर लगाकर वह किसी तरह कह गया—"तो...आप थे...आप थे...आप ?"

1. मेरी बला से, मेरे बाद क्या होगा ! (फ़्रांसीसी)

"मैं क्या था ? क्या किया मैंने ?" रोगोझिन ने चकित दिखाई देते हुए जवाब दिया, लेकिन इप्पोलीत कठोर स्वर में उत्तेजित होकर चिल्लाया; उसका चेहरा तमतमा उठा था और उस पर अचानक उन्माद-सा छा गया था।

"आप ही आए थे मुझसे मिलने पिछले हफ़्ते, रात को, दो बजे, जिस दिन सबेरे मैं आपसे मिलने गया था, आप ! ! साफ़-साफ़ मान लीजिए कि आप ही थे न।"

"पिछले हफ़्ते, रात को ? कहीं तू सचमुच पागल तो नहीं हो गया है, छोकरे ?"

माथे पर तर्जनी रखे वह 'छोकरा' एक मिनट तक फिर चुप रहा, मानो सोच में पड़ा हो; अचानक क्षण-भर को उसकी फीकी मुस्कराहट में, जो अभी तक डर के मारे ऐंठी हुई थी, कुटिलता और द्वेषपूर्ण उल्लास की सी झिलमिलाहट पैदा हुई।

"आप ही थे !" आख़िरकार उसने कानाफूसी के स्वर में, लेकिन पूर्ण विश्वास के साथ दोहराया। "आप ही मेरे पास आए थे और मेरे कमरे में चुपचाप खिड़की के पास एक कुर्सी पर पूरे घंटे-भर बैठे रहे थे। घंटे-भर से भी ज़्यादा। रात गए एक और दो बजे के बीच। फिर आप दो बजे के बाद अचानक उठकर चले गए थे।...आप ही थे, बिलकुल आप ही ! आपने मुझे डराने की कोशिश क्यों की थी और आप मुझे सताने क्यों आए थे,—यह तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन थे आप ही !"

और अचानक उसकी आँखें तीव्र घृणा से चमक उठीं, हालाँकि वह अब भी डर के मारे काँप रहा था।

"आप लोगों को अभी इसके बारे में सब कुछ मालूम हो जाएगा, साहबान, मैं... मैं...सुनिए।..."

उसने काग़ज़ के पन्ने फिर बेहद जल्दी-जल्दी सम्भाले; वे बिखर गए थे और गड्ड-मड्ड हो गए थे, और वह उन्हें फिर क्रम से लगाने की कोशिश कर रहा था; वे उसके काँपते हाथों में थरथरा रहे थे; वह बड़ी देर तक उन्हें सम्भाल न पाया।

आख़िरकार पढ़ना शुरू हुआ। पहले पाँच मिनट तक तो उस अप्रत्याशित लेख के लेखक की साँस ही नहीं समा रही थी और वह झटकों के साथ और उखड़े-उखड़े ढंग से पढ़ रहा था; लेकिन धीरे-धीरे उसकी आवाज़ सधती गई और वह जो कुछ पढ़ रहा था उसके आशय को पूरी तरह व्यक्त करने लगी। बीच-बीच में खाँसी का जबर्दस्त दौरा पड़ जाने की वजह से पढ़ने में बाधा पड़ जाती थी; लेख के उत्तरार्द्ध तक पहुँचते-पहुँचते उसकी आवाज़ बिलकुल भर्रा गई थी, लेकिन उसकी असाधारण स्फूर्ति, जो पढ़ने के साथ-साथ अधिकाधिक प्रबल होती गई थी, अन्त के निकट पहुँचते-पहुँचते उग्रता के स्तर पर पहुँच गई थी, और यही हाल श्रोताओं पर पड़नेवाले कष्टमय प्रभाव का था। यह पूरा 'लेख' इस प्रकार था—

'मेरी आवश्यक स्वीकारोक्ति'

"Apre's moi le de'luge !"

"कल सबेरे प्रिंस मेरे पास आए; प्रसंगवश यह बता दिया जाए कि उन्होंने समझा-बुझाकर मुझे यहाँ आकर देहात में उनके साथ रहने के लिए राज़ी कर लिया था। मैं पहले से जानता था कि वह निश्चित रूप से इसका आग्रह करेंगे, और मुझे विश्वास था कि वह साफ़-साफ़ मुझसे यह कहने

में भी संकोच नहीं करेंगे कि देहात में मेरे लिए 'लोगों और पेड़ों के बीच मरना ज़्यादा आसान' होगा, जैसा कि उनका कहना है। लेकिन आज उन्होंने 'मरना' नहीं कहा, बल्कि कहा, 'जीना ज़्यादा आसान होगा', जो मेरी जैसी हालतवाले आदमी के लिए सचमुच एक ही बात है। मैंने उनसे पूछा कि वह अपने 'पेड़ों' का जो राग अलापते रहते थे उससे उनका क्या मतलब था, और उनका इतना आग्रह क्यों था कि मैं उनके 'पेड़' देख ही लूँ, और मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि ख़ुद मैंने कहा था कि मैं ज़िन्दगी में आख़िरी बार पेड़ों को देखने पाव्लोव्स्क आया था। जब मैंने उन्हें बताया कि इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि मैं पेड़ों के नीचे मरूँ या खिड़की के बाहर अपनी पत्थर की दीवार को ताकता हुआ मरूँ, और यह कि एक पखवाड़े के लिए इतना झंझट करने की कोई ज़रूरत नहीं है, तो वह फ़ौरन मुझसे सहमत हो गए; लेकिन उनकी राय थी कि हरी-हरी घास और ताज़ी हवा से निश्चित रूप से मेरी शारीरिक दशा में कुछ परिवर्तन आएगा, और मेरी उत्तेजना और मेरे सपनों में कुछ सुधार होगा, और शायद मैं उनसे छुटकारा भी पा जाऊँ। मैंने हँसते हुए फिर उनसे कहा कि वह भौतिकवादियों की तरह बातें कर रहे थे। उन्होंने हँसकर जवाब दिया कि वह हमेशा भौतिकवादी रहे हैं। चूँकि वह कभी झूठ नहीं बोलते इसलिए उनके शब्दों का कुछ अर्थ अवश्य रहा होगा। उनकी मुस्कराहट बहुत अच्छी है; मैंने उन्हें अभी अधिक ध्यान से देखा है। मुझे पता नहीं कि अब वह मुझे अच्छे लगते हैं या नहीं। अब मेरे पास इसके बारे में परेशान होने का वक़्त नहीं रह गया है। हालाँकि, बिलकुल इन्साफ़ की बात तो यह है कि पिछले पाँच महीनों से मेरे दिल में उनकी तरफ़ जो नफ़रत थी वह पिछले एक महीने में दूर होने लगी है। कौन जाने, मैं पाव्लोव्स्क मुख्यतः उनसे मिलने आया हूँ। लेकिन...आख़िर मैंने अपना कमरा क्यों छोड़ दिया? जिस आदमी को मौत की सज़ा सुना दी गई हो उसे अपना कोना नहीं छोड़ना चाहिए; और अगर मैंने इस तरह अपना मन निश्चित रूप से पक्का न कर लिया होता, बल्कि इसके विपरीत, अन्तिम क्षण तक, बाहर देखने का फ़ैसला किया होता, तो मैंने पाव्लोव्स्क में 'मरने' के लिए उनके यहाँ आकर रहने का उनका निमन्त्रण कभी न स्वीकार किया होता।

"मुझे जल्दी करनी चाहिए, इस सारी 'स्वीकारोक्ति' को कल से पहले पूरा कर देना चाहिए। इसलिए मेरे पास इसे पूरा पढ़कर ठीक करने का वक़्त नहीं होगा; मैं इसे कल पूरा पढ़ डालूँगा, जब मैं इसे प्रिंस को पढ़कर सुनाऊँगा और उन दो-एक दूसरे गवाहों को जो मुझे शायद वहाँ मिल जाएँ। चूँकि इसमें एक शब्द भी झूठ नहीं होगा, बल्कि सिर्फ़ सच्चाई होगी, अन्तिम और निष्ठापूर्ण सच्चाई, इसलिए मैं अभी से यह जानने के लिए उत्सुक हूँ कि उस समय जब मैं इसे पूरा पढ़ूँगा; उस घड़ी और उस मिनट मेरे ऊपर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। लगे हाथ मैं बता दूँ कि मुझे 'अन्तिम और निष्ठापूर्ण सच्चाई' नहीं लिखना चाहिए था; बहरहाल, एक पखवाड़े के लिए झूठ बोलने का कोई फ़ायदा नहीं है, क्योंकि एक पखवाड़े के लिए जीने से भी कोई फ़ायदा नहीं है; यह इस बात का सबसे अच्छा प्रमाण है कि मैं सत्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं लिखूँगा। (टिप्पणी। मुझे इस विचार को नहीं भूलना चाहिए—क्या इस क्षण मैं पागल हूँ, बल्कि कहना चाहिए कुछ ख़ास क्षणों में पागल हो जाता हूँ? मुझे निश्चित रूप से बताया गया था कि अपने जीवन के अन्तिम दिनों में तपेदिक़ के रोगी कभी-कभी कुछ समय के लिए पागल हो जाते हैं। कल इसे पढ़ते समय मुझे श्रोताओं पर पड़नेवाले प्रभाव से पता लगाना होगा कि यह बात सच है कि नहीं। मुझे बहुत ध्यान से इस समस्या को निबटाना होगा; वरना मैं कभी कुछ नहीं कर पाऊँगा।)

"लगता है कि अभी मैंने बहुत ही बेवक़ूफ़ी की बात लिखी है; लेकिन, जैसा कि मैं कह चुका हूँ, मेरे पास किसी चीज़ को ठीक करने का वक़्त नहीं है; इसके अलावा मैं जान-बूझकर यह वादा

करता हूँ कि मैं इस पांडुलिपि की एक लाइन भी ठीक नहीं करूँगा, चाहे मुझे यही क्यों न दिखाई दे कि मैं हर पाँच पंक्तियों के बाद अपनी ही बात का खंडन कर रहा हूँ। कल इसे पढ़ते समय मैं इस बात का पता लगाना चाहता हूँ कि मेरे विचारों का तार्किक क्रम ठीक है या नहीं, क्या अपनी गलतियों की ओर मेरा ध्यान जाएगा या नहीं और, फलस्वरूप, मैंने इस कमरे में पिछले छह महीनों के दौरान जो कुछ सोचा है वह सत्य है या सरासर बकवास है।

"अगर मुझे दो महीने पहले अपना कमरा छोड़ना पड़ता, जिस तरह इस समय मैं उसे छोड़ रहा हूँ, और मेयेर की दीवार से विदा लेनी पड़ती तो, मुझे यक़ीन है, मैं उदास महसूस करता। लेकिन अब मैं कुछ भी महसूस नहीं कर रहा हूँ, फिर भी मैं अपना यह कमरा और यह दीवार कल हमेशा के लिए छोड़ दूँगा ! इसलिए मेरी इस आस्था ने कि एक पखवाड़े के लिए किसी बात पर खिन्न होने या अपने आपको किसी संवदेना का शिकार बनाने से कोई फ़ायदा नहीं है, मेरी प्रकृति पर अपना प्रभुत्व जमा लिया है और वह मेरी भावनाओं को अपने इशारों पर चला रही है। क्या यह ठीक है ? क्या सचमुच मेरी प्रकृति पूरी तरह पराजित हो चुकी है ? यदि इस समय मुझे यातना दी जाती तो मैं निश्चित रूप से चिल्ला पड़ता, और यह न कहता कि चीख़ने और पीड़ा अनुभव करने से कोई फ़ायदा नहीं है क्योंकि मुझे बस दो सप्ताह और जीना है।

"लेकिन क्या यह सच है कि मेरे पास जीवित रहने के लिए केवल एक पखवाड़ा बचा है, उससे अधिक नहीं ? उस दिन पाव्लोव्स्क में मैं झूठ बोला था—डॉ. बोत्किन ने मुझसे कुछ नहीं कहा था और उन्होंने मुझे कभी देखा भी नहीं था, लेकिन एक सप्ताह पहले वे लोग मुझे दिखाने के लिए किस्लोरोदोव नामक एक छात्र को लाए थे; अपनी आस्थाओं की दृष्टि से वह भौतिकवादी, ईश्वर में विश्वास न रखनेवाला और नास्तिकवादी है—इसलिए मैंने उसे बुला लिया, किसी और को नहीं—मुझे एक ऐसे आदमी की ज़रूरत थी जो आख़िरकार मुझे किसी संकोच या लाग-लपेट के बिना खरा सत्य बता सके। और उसने ऐसा ही किया, और न केवल बड़ी तत्परता से और बिना किसी संकोच के, बल्कि स्पष्टतः खुश होकर किया (जो, मेरे विचार से, अति थी)। उसने मुझे साफ़-साफ़ बताया कि मुझे अब बस एक महीना और जीना है, मेरी परिस्थितियाँ अनुकूल हो जाने पर शायद इससे कुछ ज़्यादा, लेकिन इसकी भी सम्भावना है कि मैं इससे बहुत पहले ही मर जाऊँ। उसका कहना था कि मैं अचानक भी मर सकता हूँ, मिसाल के लिए कल ही—ऐसा पहले हो चुका है, और अभी परसों ही कोलोम्ना में एक नौजवान औरत, जिसे तपेदिक़ थी और जिसकी हालत बहुत कुछ मेरी जैसी ही थी, कुछ सामान खरीदने बाजार जानेवाली थी कि अचानक उसकी तबियत खराब हो गई, वह सोफ़े पर लेट गई, उसने लम्बी आह भरी और मर गई। यह सब कुछ किस्लोरोदोव ने मुझे कुछ चटखारा लेकर बताया, मानो उसे अपनी भावशून्यता पर और अपनी लापरवाही पर विशेष रूप से गर्व हो, और जैसे वह मुझे कोई सम्मान दे रहा हो मुझे यह दिखाकर कि वह भी मुझे अपनी तरह का ही सब कुछ त्याग देनेवाला आदमी समझता है, जो मरने तक को कुछ नहीं समझता। बहरहाल, इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता—बस एक महीना, इससे ज़्यादा नहीं ! मुझे पूरा विश्वास है कि उसका अनुमान ग़लत नहीं है।

"मेरी समझ में बिलकुल नहीं आ रहा था कि प्रिंस ने उस दिन यह अनुमान कैसे लगा लिया था कि मुझे 'बुरे-बुरे सपने' दिखाई देते हैं। उन्होंने बिलकुल यही शब्द कहे थे कि पाव्लोव्स्क में 'मेरी उद्विग्नता और मेरे सपने' बदल जाएँगे। और सपने क्यों ? वह या तो डॉक्टर हैं या असाधारण प्रखर बुद्धिवाले आदमी हैं और बहुत-सी बातों के रहस्य का पता लगा सकते हैं। (लेकिन इस बात में कोई सन्देह नहीं हो सकता कि अन्तिम विश्लेषण में वह 'बौड़म' ही हैं।)

सचमुच मैंने उनके आने से फ़ौरन पहले बहुत ही 'सुखद' सपना देखा था (हालाँकि अब मैं उन्हें सैकड़ों की संख्या में देखता हूँ)। मैं सो गया था—मैं समझता हूँ उनके आने से कोई घंटा-भर पहले—और मैंने सपना देखा कि मैं एक कमरे में हूँ (लेकिन यह मेरा कमरा नहीं है)। वह मेरे इस कमरे से बड़ा और ज़्यादा ऊँचा था, उसका फर्नीचर बेहतर था, उसमें ज़्यादा रोशनी थी, उसमें एक अलमारी थी, एक सोफ़ा था, और मेरा पलंग था—बड़ा था और खूब चौड़ा और उस पर हरे रंग का रेशमी पलंगपोश बिछा हुआ था। लेकिन मुझे एक भयानक जन्तु दिखाई दिया, अत्यन्त विकराल आकृति। देखने में वह बिच्छू जैसा था, लेकिन वह बिच्छू नहीं था, और वह और भी बीभत्स और कहीं ज़्यादा डरावना सिर्फ़ इसलिए लग रहा था कि प्रकृति में इस तरह के जन्तु नहीं होते और इसलिए कि वह ख़ासकर मेरे पास आया था और यह कि इस बात में कोई रहस्य छिपा हुआ था। मैंने उसे अच्छी तरह देखा—वह भूरे रंग का था और उस पर एक कड़ी खपरी चढ़ी हुई थी, एक रेंगनेवाला कीड़ा, लगभग सात इंच लम्बा, सिर के पास दो अंगुल चौड़ा और दुम की तरफ़ यह चौड़ाई कम होती गई थी, यहाँ तक कि दुम का सिरा दो सूत से ज़्यादा मोटा नहीं था। सिर से लगभग दो इंच दूर, पैंतालीस डिग्री का कोण बनाती हुई दो टाँगें उसके शरीर में से निकली हुई थीं, एक-एक दोनों तरफ़, लगभग साढ़े तीन इंच लम्बी, जिसकी वजह से ऊपर से देखने पर वह जन्तु त्रिशूल की शक्ल का दिखाई देता था। सिर तो मैं पहचान नहीं पाया लेकिन मैंने उसमें से मजबूत सुइयों की आकृति की दो सूँड़ बाहर को निकली हुई देखीं, जो बहुत लम्बी तो नहीं थीं लेकिन वे भी थीं भूरी ही। उसकी दुम और दोनों टाँगों के सिरों पर भी हूबहू ऐसी ही दो-दो सूँड़ें थीं, कुल मिलाकर आठ। यह कीड़ा [illegible] अपनी टाँगों और दुम के सहारे बेहद तेजी से दौड़ रहा था, और जब वह दौड़ता था तो उसका शरीर और उसकी टाँगें उसकी कड़ी खपरी के बावजूद असाधारण वेग के साथ इधर-उधर साँप की तरह बल खा रहीं थीं, और उसे देखकर ही घृणा होती थी। मुझे केवल डर लगा रहा था कि कहीं वह मुझे डंक न मार दे, मुझे बताया गया था कि वह जहरीला था; पर मुझे सबसे ज़्यादा परेशानी इस बात की वजह से थी कि उसे मेरे कमरे में किसने भेजा होगा, वे लोग उससे क्या कराना चाहते थे, और इस सबका मतलब क्या था ? वह जाकर बार-बार अलमारी के नीचे छिप जाता था और रेंगकर कोनों में पहुँच जाता था। मैं टाँगें अपने नीचे मोड़कर एक कुर्सी पर बैठ गया। उसने जल्दी से भागकर कमरा पार किया और मेरी कुर्सी के पास कहीं गायब हो गया। मैं सहमा हुआ चारों ओर नज़रें दौड़ा रहा था, लेकिन टाँगें मोड़कर कुर्सी पर बैठे-बैठे मैं यही मना रहा था कि वह कहीं कुर्सी पर न चढ़ आए। अचानक मुझे अपने पीछे, लगभग मेरे सिर की ऊँचाई पर, एक हल्की-सी खड़खड़ाहट सुनाई दी। मैं जल्दी से मुड़ा तो देखता क्या हूँ कि वह कीड़ा रेंगकर दीवार पर चढ़ रहा था और मेरे सिर की ऊँचाई तक पहुँच चुका था, बल्कि वह अपनी दुम से मेरे बालों को छूने भी लगा था, जो अविश्वसनीय तेजी से उठ रही थी और बल खा रही थी। मैं उछल पड़ा और वह कीड़ा ग़ायब हो गया। मुझे बिस्तर पर लेटने में डर लगता था कि वह रेंगकर कहीं मेरे तकिए के नीचे न पहुँच जाए। मेरी माँ अपने किसी परिचित के साथ मेरे कमरे में आईं। वे उस कीड़े को पकड़ने की कोशिश करने लगे, लेकिन वे मेरी तुलना में अधिक शान्त थे और उन्हें उससे डर भी नहीं लग रहा था। लेकिन उन्हें इसका अनुमान नहीं था कि वह कितना खतरनाक था। अचानक वह कीड़ा रेंगकर फिर बाहर निकला; इस बार वह बड़ी सावधानी से रेंग रहा था और ऐसा लगा कि वह किसी विशेष उद्देश्य से धीरे-धीरे बल खाता हुआ कमरा पार करके दरवाज़े की ओर बढ़ा, जो पहले से भी अधिक घृणास्पद था।

फिर मेरी माँ ने दरवाज़ा खोला और हमारे कुत्ते नोर्मा को बुलाया—जो काले रंग की बड़ी-सी, झबरी न्यूफ़ाउंडलैण्ड की कुतिया थी; पाँच साल हुए वह मर गई। वह झपटती हुई कमरे में आई और उस रेंगनेवाले कीड़े के ऊपर एक़दम ठिठककर खड़ी हो गई। वह कीड़ा भी रुक गया हालाँकि वह अब भी बल खा रहा था और अपनी दुम और टाँगों के सिरों से फ़र्श पर पट-पट की आवाज़ कर रहा था। अगर मैं ग़लती नहीं करता तो जानवरों में अलौकिक भय अनुभव करने की क्षमता नहीं होती है; लेकिन उस समय मुझे ऐसा लगा कि नोर्मा के भय में कोई बहुत ही असाधारण और अलौकिक बात थी और इसलिए वह भी मेरी ही तरह अनुभव कर रही थी कि उस जन्तु में कोई सांघातिक बात थी, किसी प्रकार का रहस्य। नोर्मा उस कीड़े के सामने धीरे-धीरे पीछे खिसकती जा रही थी, और कीड़ा धीरे-धीरे और बड़ी सावधानी से रेंगकर उसकी ओर बढ़ रहा था; ऐसा लगता था कि वह अचानक तीर की तरह झपटकर उसे डंक मार देना चाहता था। लेकिन अपने डर के बावजूद नोर्मा बहुत ख़ूँख़्वार लग रही थी, हालाँकि उसका अंग-अंग काँप रहा था। अचानक उसने धीरे-धीरे अपने भयानक दाँत निकाले, अपना बड़ा-सा लाल जबड़ा खोला, बड़े ध्यान से निशाना साधा और सहसा उस कीड़े को अपने दाँतों में दबोच लिया। वह कीड़ा भाग जाने के लिए शायद उसके मुँह में से बाहर छटक आया होगा, क्योंकि नोर्मा ने उसे एक बार फिर पकड़ लिया, इस बार हवा में ही, और दो बार उसे हवा में ही पकड़कर पूरे का पूरा मुँह में रख लिया, मानो उसे निगल जाना चाहती हो। खपरी उसके दाँतों के बीच टूट गई; उस कीड़े की दुम और टाँगें, जो कुतिया के मुँह के बाहर लटक रही थीं बेहद तेजी से छटपटा रही थीं। अचानक नोर्मा बड़ी दर्दनाक आवाज़ में धीरे से भूँकी—कीड़ा उसकी जीभ पर डंक मारने में सफल हो ही गया था। उसने दर्द के मारे कराहते और भूँकते हुए अपना मुँह पूरा खोला और मैंने देखा कि वह भयानक जन्तु कटकर दो टुकड़े हो जाने के बाद भी उसके मुँह में अभी तक छटपटा रहा था और उसके आधे कुचले हुए शरीर से बहुत-सा सफ़ेद द्रव रिस-रिसकर, बिलकुल वैसा ही जैसा तिलचटे को कुचलने पर निकलता है, नोर्मा की जीभ पर आ रहा था।...उसी वक़्त मेरी आँख खुल गई और प्रिंस ने प्रवेश किया।''

''साहबान,'' इप्पोलीत ने अचानक अपनी पांडुलिपि पर से नज़रें उठाकर और लगभग शर्माते हुए कहा, ''मैंने इसे पूरा पढ़ा नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि मैंने सचमुच बहुत-सी बकवास लिखी है। यह सपना...''

''बकवास है,'' गान्या ने जल्दी से पूर्ति की।

''मैं मानता हूँ कि इसमें बहुत कुछ निजी है—मेरा मतलब है, मेरे बारे में।...''

यह कहते समय इप्पोलीत थका हुआ और भीरु लग रहा था, और वह अपने रूमाल से माथे का पसीना पोंछता जा रहा था।

''जी हाँ, जनाब, आपको अपने आपसे बड़ी दिलचस्पी है,'' लेबेदेव ने फुफकारकर कहा।

''लेकिन, मैं एक बार फिर बता दूँ, साहबान, कि मैं किसी को मजबूर नहीं कर रहा हूँ कि वह मेरी बात सुने। जिसे दिलचस्पी न हो वह जा सकता है।''

''लोगों को निकाल रहा है...पराए घर से,'' रोगोझिन ने इस तरह बुदबुदाकर कहा कि किसी को सुनाई ही नहीं दिया।

''मान लो हम सब लोग उठकर चले जाएँ तो ?'' फ़ेर्दीश्चेंको ने, जिसकी उस समय तक बोलने की हिम्मत नहीं पड़ी थी; अचानक कहा।

इप्पोलीत ने नज़रें झुकाकर अपनी पांडुलिपि कसकर पकड़ ली; लेकिन उसी क्षण उसने फिर

अपना सिर ऊपर उठाया; उसकी आँखों में बिजली की सी चमक थी और गालों पर फिर दो लाल धब्बे उभर आए थे; उसने फ़ेर्दीश्चेंको को घूरकर कहा—"आपको मैं बिलकुल अच्छा नहीं लगता, क्यों ?"

कुछ लोग हँस पड़े, हालाँकि ज़्यादातर लोग नहीं हँसे। इप्पोलीत का चेहरा बुरी तरह लाल हो गया।

"इप्पोलीत," प्रिंस बोला, "अपनी पांडुलिपि बन्द करके मुझे दे दीजिए और इधर मेरे कमरे में जाकर सो जाइए। हम लोग सोने से पहले और कल भी बातें कर सकते हैं, लेकिन इस शर्त पर कि आप इन पन्नों को फिर कभी नहीं खोलेंगे। बोलिए, ऐसा करेंगे न ?"

"कैसे कर सकता हूँ ?" इप्पोलीत ने आश्चर्य से उसे देखते हुए कहा। "शाबाश," वह फिर अत्यन्त उत्तेजित होकर चिल्लाया। "मुझे अफ़सोस है कि मैंने इतना बुरा आचरण किया। यह मेरी बहुत बड़ी मूर्खता थी। अब मैं पढ़ते-पढ़ते बीच में रुकूँगा नहीं। जिसका जी चाहे वह सुने।..."

उसने जल्दी से गिलास में से एक घूँट पानी पिया, अपने चेहरे को सबकी नजरों से बचाने के लिए जल्दी से कुहनियाँ मेज़ पर टिकाईं और हठधर्मी से पढ़ता रहा। लेकिन उसका शर्मीलापन जल्दी ही दूर हो गया।...

"यह विचार (वह पढ़ता रहा) कि कुछ हफ़्तों के लिए जिन्दा रहने का कोई फ़ायदा नहीं है, मैं समझता हूँ, महीने-भर पहले मेरे दिल में घर करने लगा था, जब मुझे केवल चार सप्ताह जिन्दा रहना था, लेकिन वह मुझे पूरी तरह अपने वश में अभी तीन ही दिन पहले कर पाया, जब मैं उस दिन पाव्लोव्स्क से वापस आया। वह पहला क्षण जब इस विचार ने पूरी तरह और पक्के तौर पर मुझे अपने वश में कर लिया, प्रिंस के बरामदे में आया था, ठीक उसी पल जब मैंने आख़िरी बार जिन्दा रहने की कोशिश करने की ठानी थी, जब मैं लोगों को और पेड़ों को देखना चाहता था। (मैं यह मानने को तैयार हूँ कि यह खुद मैंने कहा था), जब मैं उत्तेजित हो उठा था, जब मैंने 'अपना करीबी' बुर्दोव्स्की के अधिकार पर आग्रह किया था, और यह स्वप्न देखा था कि सब लोग अचानक बाँहें फैलाकर मुझे सीने से लगा लेंगे, और वे मुझसे किसी बात की माफ़ी माँगेंगे, और मैं उनसे; मतलब यह कि अन्त में मैं अच्छा ख़ासा मूर्ख लगने लगा। उसी समय मेरी 'अन्तिम आस्था' मेरे अन्दर प्रज्वलित हो उठी। अब मैं इस बात पर केवल आश्चर्य ही प्रकट कर सकता हूँ कि मैं छह महीने इस 'आस्था' के बिना जिन्दा कैसे रहा ! मुझे निश्चित रूप से मालूम था कि मुझे तपेदिक़ है और यह कि उसका कोई इलाज नहीं है; मैंने अपने आपको धोखा नहीं दिया और मैंने अपनी स्थिति स्पष्ट रूप से समझी। लेकिन जितनी ही वह समझ में आती जाती थी उतनी ही बेताबी से मैं जिन्दा रहना चाहता था; मैं ज़िन्दगी से चिपटा रहा और मैं जीना चाहता था, चाहे कुछ हो जाए। मैं मानता हूँ कि उस समय मुझे बहरी और अन्धी नियति पर झुंझलाहट हुई हो, जो चाहती थी कि मैं मक्खी की तरह कुचल दिया जाऊँ और सो भी बिना यह जाने कि किसलिए; लेकिन मैं झुँझलाकर ही रुक क्यों नहीं गया ? मैंने सचमुच जीना शुरू क्यों कर दिया, जबकि मुझे मालूम था कि मैं शुरू नहीं कर सकता; मैंने उसकी कोशिश क्यों की, यह जानते हुए कि अब मेरे पास कोशिश करने के लिए कुछ रह ही नहीं गया था ? फिर मैं कोई किताब पूरी नहीं पढ़ पाता था, इसलिए मैंने पढ़ना छोड़ दिया—क्यों पढ़ा जाए, छह महीने के लिए कोई चीज़ क्यों जानी जाए ? यह सोचकर मैंने कितनी ही बार किताब परे फेंक दी।

"हाँ, मेयेर की वह दीवार बहुत कुछ बता सकती थी ! मैंने उस पर बहुत कुछ लिखा है। उस गन्दी दीवार पर एक धब्बा भी ऐसा नहीं है जो मुझे रत्ती-रत्ती याद न हो, उस कमबख़्त दीवार पर !

फिर भी वह मुझे पाव्लोव्स्क के सारे पेड़ों से अधिक प्रिय है, अगर ऐसा न होता कि अब मेरे लिए इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता तो वह और भी प्रिय हो गई होती !

"आज मुझे याद आ रहा है कि उस वक़्त मैंने किस गहरी दिलचस्पी से उन लोगों की ज़िन्दगी को देखना शुरू किया था; मैंने इससे पहले कभी इतनी दिलचस्पी नहीं ली थी। कभी-कभी मैं कोसता रहता और बड़ी अधीरता से कोल्या की राह देखता रहता था, जब मैं इतना बीमार था कि अपने कमरे से बाहर भी नहीं निकल सकता था। मैं तरह-तरह की छोटी-मोटी बातों में इतनी बुरी तरह डूब गया और हर तरह की अफ़वाहों से इतनी दिलचस्पी रखने लगा कि मैं समझता हूँ कि मैं बाक़ायदा झूठी-सच्ची बातें फैलानेवाला बन गया। उदाहरण के लिए, मैं यह नहीं समझ पाता था कि जिन लोगों के सामने जीने के लिए कितने ही बरस पड़े रहते हैं उन्हें धनवान बनना क्यों नहीं आता (वैसे तो मेरी समझ में अब भी नहीं आता)। मैं एक ग़रीब आदमी को जानता था, जिसके बारे में मुझे बाद में बताया गया कि वह भूख से मर गया था, और मुझे याद है कि इस बात पर मुझे बेहद गुस्सा आया था—अगर उस बेचारे आदमी को फिर से जिन्दा करना मुमकिन होता तो शायद मैंने उसकी हत्या कर दी होती। कभी-कभी हफ़्तों मेरी तबियत बिलकुल ठीक रहती थी और मैं बाहर निकल सकता था, लेकिन आख़िर में चलकर मुझे सड़क को देखकर इतना ताव आने लगा था कि मैं जान-बूझकर कई-कई दिन तक अपने कमरे में बन्द रहता था, हालाँकि मैं बाक़ी सब लोगों की तरह ही बाहर जा सकता था, मैं उन व्यस्त लोगों को बर्दाश्त नहीं कर पाता था जो हर बात में अपनी टाँग अड़ाते थे, और हमेशा परेशान, उदास और चिन्तित रहते थे और सड़क की पटरी पर मेरे चारों ओर इधर-उधर भागते रहते थे। उनकी सूरत पर हमेशा मातम क्यों छाया रहता है, उन्हें हरदम किस बात की चिन्ता लगी रहती है और वे इतनी भाग-दौड़ क्यों करते रहते हैं, उनके हमेशा बने रहनेवाले चिड़चिड़ाहट-भरे द्वेष का कारण क्या है (क्योंकि वे द्वेषी हैं, द्वेषी, बिलकुल द्वेषी) ? इसमें किसका कसूर है अगर वे दुःखी रहते हैं और उन्हें जीना नहीं आता, हालाँकि उनके सामने अभी ज़िन्दगी के साठ साल पड़े होते हैं ? ज़र्नीत्सिन ने अपने आपको भूखा क्यों मर जाने दिया जब उसके सामने जीने के लिए अभी साठ साल पड़े थे ? और हर आदमी आपको अपने चीथड़े, अपने घट्ठेदार हाथ दिखाता है और गुस्से से चीख़ता है—'हम बैल की तरह काम करते हैं, हम दिन-रात ख़ून-पसीना एक करते हैं, फिर भी हम ग़रीब हैं और कुत्तों की तरह भूखे हैं ! दूसरे लोग कभी रत्ती-भर काम नहीं करते और वे अमीर हैं !' (वही पुराना, हमेशा का दुखड़ा !) और उन्हीं के साथ सबेरे से रात तक इधर-उधर भागने-फिरनेवाला कोई अभागा पिद्दी-सा आदमी होता है, 'जिसका जन्म शरीफ़ घराने में हुआ था', इवान फ़ोमीच सूरिकोव—वह हमारे ही घर में हमसे ऊपरवाली मंज़िल पर रहता है—जिसका कोट हमेशा कुहनियों पर फटा रहता है और उसमें बटन नहीं होते; वह सुबह से रात तक भाग-भागकर तरह-तरह के लोगों के छोटे-मोटे काम करता रहता है। उससे बात कीजिए तो वह आपको बताएगा—'मैं ग़रीब, कंगाल और बदनसीब हूँ, मेरी बीवी मर गई, मेरे पास उसके लिए दवा खरीदने को पैसा नहीं था, और मेरा नन्हा-सा गोद का बच्चा सर्दी में ठिठुरकर मर गया, मेरी सबसे बड़ी बेटी पेशा करती है...' वह हर वक़्त झींकता और शिकायत करता रहता है ! मुझे इन बेवक़ूफ़ों पर कभी तरस नहीं आया, और अब भी नहीं आता—मैं यह बड़े गर्व से कहता हूँ ! वह राथशाइल्ड क्यों नहीं है ? यह किसका कसूर है कि उसके पास राथशाइल्ड की तरह करोड़ों की दौलत नहीं है, कि उसके पास बोरे के बोरे भरकर सोने की अशर्फ़ियाँ नहीं हैं, कि उसके पास उनके पहाड़ के पहाड़ क्यों नहीं हैं मेले के हिण्डोले जितने ऊँचे ! वह जिन्दा है, इसलिए सब कुछ उसके बस में है ! अगर वह इस बात को नहीं समझता तो इसमें

किसका कसूर है ?

"उफ़, अब मुझे कोई परवाह नहीं रह गई है, मेरे पास गुस्सा होने के लिए वक़्त नहीं रह गया है; लेकिन उस वक़्त, मैं एक बार फिर दोहराता हूँ, उस वक़्त मैं रात को सचमुच अपना तकिया चबाने लगता था और गुस्से के मारे अपना कंबल फाड़ डालता था। ओह, तब मैं कैसे सपने देखा करता था, मेरा कितना जी चाहता था, जान-बूझकर जी चाहता था कि मुझे बहुत थोड़ा पहना-उढ़ाकर सड़क पर निकाल दिया जाए, कुल अट्ठारह साल का तो था ही मैं, और सिर के ऊपर किसी छत के बिना मुझे अकेला छोड़ दिया जाए; मेरे पास न कोई मकान हो, न रोटी का एक टुकड़ा, न कोई रिश्तेदार हों, न इतने बड़े शहर में कोई दोस्त, भूखा, पिटा हुआ (यह और भी अच्छा हो !), लेकिन मेरा स्वास्थ्य अच्छा हो, और तब मैं इन लोगों को दिखा देता।...

"क्या दिखा देता ?

"उफ़, क्या आप सचमुच समझते हैं कि मैं यह नहीं जानता कि अपनी इस 'स्वीकारोक्ति' की वजह से मैं अपने आपको कितना अपमानित कर चुका हूँ ! अरे, आपमें से कौन ऐसा है जो मुझे पिद्दी जैसा कमज़ोर बेवक़ूफ़ न समझ रहा हो जिसे ज़िन्दगी के बारे में रत्ती भी मालूम नहीं; आप यह भूल जाते हैं कि अब मैं अट्ठारह साल का नहीं रहा, आप यह भूल जाते हैं कि पिछले छह महीनों में मैंने जिस तरह ज़िन्दगी काटी है वह बुढ़ापे तक जिन्दा रहने के बराबर है ! लेकिन उन्हें हँसने दीजिए और कहने दीजिए कि ये सब परियों की कहानियाँ हैं। सच तो यह है कि मैं अपने आपको परियों की कहानियाँ सुनाता रहा हूँ। मैंने ऐसा करते हुए न जाने कितनी रातें काट दी हैं। अब मुझे वे सब याद हैं।

"लेकिन क्या मुझे अब वे फिर से सुनानी पड़ रही हैं,—अब, जबकि परियों की कहानियों का वक़्त मेरे लिए भी निकल गया है ? और किसे ? मैं उनसे अपना जी बहलाया करता था जबकि मैं अच्छी तरह जानता था कि मुझे यूनानी व्याकरण पढ़ने से भी मना कर दिया गया था, जिसकी मुझे एक जमाने में धुन सवार हो गई थी—'वाक्य-विन्यास तक पहुँचते-पहुँचते मैं मर जाऊँगा'—मैंने पहले ही पृष्ठ पर सोचा और किताब मेज़ के नीचे फेंक दी। वह अभी तक वहीं पड़ी है; मैंने उसे उठाने को भी मना कर दिया है।

"मेरी यह 'स्वीकारोक्ति' जिन लोगों के हाथ लगे और जिनमें उसे अन्त तक पढ़ने का धैर्य हो वे आख़िर में बेशक मुझे पागल, या स्कूली लड़का तक समझें, या इससे भी बढ़कर वे मुझे ऐसा आदमी समझें जिसे मौत की सज़ा सुनाई जा चुकी हो, जो स्वाभाविक रूप से यह विश्वास करता है कि उसे छोड़कर ज़िन्दगी की तरफ़ बाक़ी सब लोगों का रवैया बहुत गैर-संजीदगी का है, हर आदमी उसे बहुत सस्ता समझकर बर्बाद करता रहता है और उसे बड़े आलस के साथ और ऊँच-नीच सोचे बिना इस्तेमाल करता है और इसलिए उनमें से कोई भी उसके योग्य नहीं है ! तो, मेरा कहना यह है कि ऐसा करना मेरे पाठकों की भूल होगी, और यह कि मेरी आस्था का इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं है कि मुझे मौत की सज़ा सुनाई जा चुकी है। उनसे पूछिए, बस उनसे इतना पूछिए कि वे सब—उनमें से एक-एक—सुख का क्या मतलब समझते हैं ? यक़ीन जानिए कि कोलम्बस सुखी उस समय नहीं था जब उसने अमरीका को खोज लिया था, बल्कि वह सुखी तब था जब वह उसे खोज रहा था; आप यक़ीन जानिए कि उसके सुख का चरमोत्कर्ष का क्षण शायद नई दुनिया को खोज लेने से ठीक तीन दिन पहले आया था जब अपने जहाज का मुँह मोड़कर उसके हताश विद्रोही मल्लाहों के योरप की ओर वापस चल देने में बस ज़रा-सी ही कसर रह गई थी ! महत्त्व नई दुनिया का नहीं था—यह भी तो हो सकता था कि उसका अस्तित्व ही न होता।

कोलम्बस सही अर्थ में उसे देखे बिना ही मर गया और सच पूछिए तो यह जाने बिना ही कि उसने क्या खोज लिया था। महत्त्व जीवन का है, जीवन का, केवल जीवन का—उसे खोजते रहने की निरन्तर और चिरन्तन प्रक्रिया का—स्वयं खोज का नहीं ! लेकिन बातें करने से क्या फ़ायदा ! मैं समझता हूँ कि इस वक़्त मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह उपदेशों की लड़ी जैसी है, कि मुझे यक़ीनन प्राथमिक कक्षा का स्कूली लड़का समझा जाएगा जो 'सूर्योदय' पर निबन्ध लिखकर दे रहा हो, या लोग कहेंगे कि शायद मेरे पास कहने को कुछ था लेकिन लाख कोशिश करने पर भी मैं अपनी बात...'साफ़ तरीक़े से कह नहीं पाया।' पर मैं इतना और जोड़ दूँ कि प्रत्येक मेधावी विचार में या मनुष्य के हर नए विचार में, या और भी सादगी से कहा जाए तो किसी के भी दिमाग़ में पैदा होनेवाले किसी भी गम्भीर मानवीय विचार में कोई बात ऐसी ज़रूर होती है जो दूसरों तक पहुँचाई नहीं जा सकती, भले ही आप उसके बारे में पोथियाँ की पोथियाँ रँग डालें और अपने विचार को समझाने में पैंतीस वर्ष ही क्यों न लगा दें; कुछ न कुछ हमेशा ज़रूर बच जाएगा जो आपके दिमाग़ से किसी तरह निकाले नहीं निकलेगा और जो आपके साथ हमेशा रहेगा; और आप शायद अपने विचार की सबसे बुनियादी बात किसी तक पहुँचाए बिना ही मर जाएँगे। पिछले छह महीने से जो कुछ मुझे सताता रहा है उसे आप तक पहुँचाने में इस समय अगर मैं भी असमर्थ हूँ तो, बहरहाल, आप इतना तो समझ ही जाएँगे कि अपनी वर्तमान 'अन्तिम आस्था' प्राप्त कर लेने के बाद मैंने शायद उसके लिए बहुत बड़ी क़ीमत चुकाई है; अपने कुछ निजी कारणों से मैंने अपनी 'स्वीकारोक्ति' में इसी बात पर ज़ोर देना ज़रूरी समझा।

"लेकिन, आइए, आगे बढ़ें।

6

"मैं झूठ बोलना नहीं चाहता। पिछले छह महीने से वास्तविकता भी मुझे एक जाल में फाँसने की कोशिश करती रही है, और कभी-कभी मैं प्रवाह में ऐसा बह जाता था कि मैं अपने भविष्य के बारे में सोचने की परवाह तक नहीं करता था। लगे हाथ, मैं उस वक़्त की अपनी स्थिति के बारे में बता दूँ। आठ महीने पहले जब मैं बहुत बीमार हो गया था तो मैंने अपने सारे सम्पर्क तोड़ दिए थे और सब दोस्तों से मिलना-जुलना छोड़ दिया था। चूँकि मैं हमेशा से कुछ उदास तबियत का आदमी था इसलिए मेरे दोस्त आसानी से मुझे भूल गए; वे लोग, बहरहाल, इसके बिना भी मुझे भूल गए होते। घर पर भी—यानी मेरे अपने परिवार में—मेरी हालत संन्यासी जैसी थी। कोई पाँच महीने पहले मैंने अपने आपको हमेशा के लिए कमरे में बन्द कर लिया और अपने परिवार के कमरों से पूरी तरह अपने आपको अलग कर लिया। मैं जो कुछ कहता था वह हमेशा पूरा किया जाता था और एक बँधे वक़्त तक कमरा साफ़ करने और खाना लाने के अलावा मेरे कमरे में आने की कोई हिम्मत नहीं करता था। मेरी माँ मेरे सामने थर-थर काँपती थीं और वह मेरा हर हुक्म मान लेती थीं और जब कभी मैं उन्हें अन्दर आने देता था तो वह चूँ तक करने की हिम्मत नहीं करती थीं। वह बच्चों को लगातार पीटती रहती थीं कि वे शोर न मचाएँ और विघ्न न डालें। मैं मानता हूँ कि मैं उनके चिल्लाने के बारे में अकसर शिकायत किया करता था—फिर अब वे मुझसे प्यार कैसे कर सकते हैं ! मैं समझता हूँ कि मैंने 'वफ़ादार कोल्या' को भी, जैसा कि मैं उसे कहता था, काफ़ी दुःख दिया है। इधर वह भी मुझे दुःख देने लगा—यह बिलकुल स्वाभाविक भी है, क्योंकि इंसान पैदा ही एक-दूसरे को दुःख देने के लिए किए गए हैं। लेकिन मैंने देखा कि वह मेरे

चिड़चिड़ेपन को इस तरह बर्दाश्त करता था जैसे उसने रोगी को ख़ुश रखने की ठान ली हो। स्वाभाविक बात है कि इससे मैं तंग आ जाता था; लेकिन ऐसा लगता था कि उसने 'ईसाई विनम्रता' में प्रिंस की नक़ल करने की ठान ली थी, जो बहुत ही हास्यास्पद बात थी। यह बहुत कम-उम्र और जोशीला है और, ज़ाहिर है, हर चीज़ की नक़ल करता है; लेकिन कभी-कभी अनायास ही मुझे ऐसा लगता था कि वक़्त आ गया है कि उसके अपनी भी कुछ समझ होनी चाहिए। मुझे उससे बहुत लगाव है। मैंने सूरिकोव को भी सताया है, जो हमारे ऊपरवाली मंज़िल पर रहता था और सबेरे से रात तक भाग-भागकर लोगों के छोटे-मोटे काम करता रहता था। मैं उससे लगातार कहता रहता था कि अगर वह ग़रीब है तो इसमें उसके अलावा और किसी का दोष नहीं है, यहाँ तक कि आख़िर में वह डर गया और उसने मुझसे मिलने आना छोड़ दिया। यह बहुत ही विनम्र जीव है, विनम्रतम जीव है (टिप्पणी—लोग कहते हैं विनम्रता बहुत बड़ी शक्ति है; मैं प्रिंस से इसके बारे में पूछूँगा—यह बात उन्होंने ही कही थी); लेकिन पिछले मार्च में जब मैं ऊपरवाली मंज़िल पर उसके यहाँ यह देखने गया कि उसका दूध-पीता बच्चा किस तरह, स्वयं उसके कहने के अनुसार, 'सर्दी से ठिठुरकर मर गया था', और बच्चे की लाश देखकर अंकस्मात मुस्करा दिया था, क्योंकि मैं एक बार फिर सूरिकोव को समझाने लगा था कि इसमें 'उसके अलावा और किसी का दोष नहीं था', तो इस निठल्ले से आदमी के होंठ अचानक काँपने लगे थे और उसने एक हाथ से मेरा कन्धा पकड़कर दूसरे हाथ से मुझसे दरवाज़े की तरफ़ इशारा करते हुए शान्त भाव से—यानी लगभग कानाफूसी के स्वर में—कहा था—'यहाँ से निकल जाइए, साहब !' मैं निकल गया, और यह मुझे बहुत अच्छा लगा; यह मुझे उसी वक़्त अच्छा लगा था जब वह मुझे निकाल रहा था; लेकिन बाद में जब भी मुझे ये शब्द याद आते थे तो मैं तिलमिला उठता था; मैं उसके प्रति एक विचित्र और तिरस्कार भरी दया अनुभव करता था, जो मैं बिलकुल अनुभव नहीं करना चाहता था। ऐसे अपमान के क्षण में भी (क्योंकि, देखिए, मैं यह महसूस किए बिना नहीं रह सकता कि मैंने उसका अपमान किया था, हालाँकि ऐसा करने का मेरा कोई इरादा नहीं था), ऐसे क्षण में भी इस आदमी को गुस्सा नहीं आया ! उसके होंठ गुस्से से काँपने लगे, मैं क़सम खाकर कहने को तैयार हूँ, उसने मेरा हाथ पकड़कर तनिक भी क्रोध के बिना अपना वह शानदार वाक्य कहा—'यहाँ से निकल जाइए, साहब'। सचमुच, इसमें बहुत गरिमा थी, जो उसके साथ बिलकुल मेल नहीं खाती थी (इसलिए, सच पूछा जाए तो यह सारा मामला कुछ हद तक मसख़रापन लिए हुए था), लेकिन गुस्सा नहीं था। शायद, अचानक वह मुझसे बस नफ़रत करने लगा था। तब से एक-दो बार जब भी सीढ़ियों पर उससे मेरी मुलाक़ात हुई है, उसने हैट उतारकर मेरा अभिवादन किया जैसा वह पहले कभी नहीं करता था, लेकिन वह पहले की तरह रुका कभी नहीं, बल्कि बौखलाया हुआ और पास से तीर की तरह गुजर गया। अगर वह मुझसे नफ़रत भी करता था तो अपने ही निराले ढंग से करता था—वह बड़ी विनम्रता से मुझसे नफ़रत करता था। लेकिन शायद उसे कर्ज देनेवाली का बेटा होने के नाते मुझे देखकर वह अपना हैट सिर्फ़ डर के मारे उतार लेता था क्योंकि उस पर हमेशा मेरी माँ का कुछ कर्ज चढ़ा रहता था और वह अपने इन कर्जों से कभी छुटकारा न पा सका। हाँ, मैं समझता हूँ कि शायद यही बात थी। मैं उससे इस मामले को साफ़ कर लेना चाहता था और मैं पक्के तौर पर जानता हूँ कि दस मिनट के अन्दर उसने मुझसे माफ़ी माँग ली होती, लेकिन मैंने फ़ैसला किया कि उसे उसके हाल पर छोड़ देना ही बेहतर है।

"ठीक उसी समय, यानी लगभग उसी समय जब सूरिकोव ने अपने बच्चे को 'ठिठुरा दिया था', लगभग मार्च के मध्य में, किसी वजह से मैं महसूस करने लगा कि मेरी तबियत बहुत ठीक

हो गई, और ऐसी हालत लगभग पन्द्रह दिन तक रही। मैं बाहर निकलने लगा, ज़्यादातर झुटपुटे के वक़्त। मार्च की शामें मुझे बहुत अच्छी लगती थीं, जब हवा में पाले की सर्दी होती थी और गैस की बत्तियाँ जलती थीं; कभी-कभी मैं टहलता हुआ बहुत दूर निकल जाता था। एक शाम किसी फटेहाल सज्जन ने अँधेरे में मुझे आ लिया; मैंने उन्हें बहुत ग़ौर से नहीं देखा। वह काग़ज़ में लिपटी हुई कोई चीज़ लिए थे और उन्होंने एक पुराना तार-तार ओवरकोट पहन रखा था ज़ो उनके शरीर के लिए बहुत छोटा था और उस मौसम के लिए कुछ हल्का था। जब वह मुझसे कोई दस क़दम आगे सड़क की एक बत्ती के पास पहुँचे तो मैंने देखा कि उनकी जेब से कुछ गिरा। मैं उसे उठाने के लिए तेजी से लपका—और मैं चूकते-चूकते बस बच ही गया, क्योंकि उसी वक़्त लम्बा कोट पहने हुए कोई और भी उसकी ओर झपटा था, लेकिन उस चीज़ को मेरे हाथ में देखकर वह झगड़ा करने के लिए रुका नहीं, और एक नज़र यह देखने के बाद कि वह क्या चीज़ थी, वह तेजी से मेरे पास से गुजर गया। वह बड़ा-सा पुराने ढंग का मोरक्को चमड़े का ठसाठस भरा हुआ बटुआ था; लेकिन न जाने कैसे पहली ही नज़र में मैंने अन्दाजा लगा लिया कि उसमें और कुछ भले ही हो लेकिन पैसा नहीं था। जिस आदमी ने उसे गिराया था वह मुझसे कोई चालीस गज़ आगे निकल गया था और जल्दी ही वह भीड़ में खो गया। मैं 'ए, ए !' चिल्लाता हुआ उसके पीछे भागा। लेकिन मैं चूँकि बस 'ए, ए !' ही चिल्ला पाया, इसलिए उसने मुड़कर देखा तक नहीं। अचानक वह बाईं ओर मुड़कर किसी फाटक में ग़ायब हो गया; जब मैं फाटक के पास पहुँचा, जहाँ बहुत अँधेरा था, तो वहाँ कोई भी नहीं था। वह मकान बहुत बड़ा था, उन बड़ी-बड़ी इमारतों में से एक, जिन्हें सटोरिए छोटे-छोटे फ़्लैट किराए पर उठाने के लिए बनाते हैं, इनमें से कुछ इमारतों में तो सौ-सौ फ़्लैट तक होते हैं। भागकर फाटक पार करने पर मुझे ऐसा लगा कि अहाते के दाहिने हाथवाले कोने के छोर पर मैंने किसी आदमी को जाते हुए देखा, हालाँकि अँधेरे में मैं उसे ठीक से देख नहीं पाया। जब मैं भागकर उस कोने तक पहुँचा तो मुझे सीढ़ियों का दरवाज़ा दिखाई दिया। सीढ़ियाँ बहुत सँकरी, बहुत गन्दी थीं और उनमें कोई रोशनी नहीं थी। लेकिन मुझे अपने सिर के ऊपर किसी के भागकर सीढ़ियाँ चढ़ने की आवाज़ सुनाई दे रही थी; मैं यह सोचकर उसके पीछे लपका कि उसके लिए दरवाज़ा खोले जाने से पहले मैं उसे जा लूँगा। हुआ भी ऐसा ही ! सीढ़ियाँ बहुत छोटी थीं लेकिन थीं बेशुमार। इसलिए मेरा दम बुरी तरह फूलने लगा। पाँचवीं मंज़िल पर एक दरवाज़ा खुला और बन्द हुआ—मैंने यह अनुमान उस वक़्त लगाया जब मैं दो मंज़िल नीचे ही था। जब तक मैं भागकर ऊपर पहुँचा, चौरस जगह पर पहुँचकर मेरी साँस समाई और मैंने घंटी ढूँढ़ी तब तक कई मिनट बीत चुके थे। आख़िरकार एक औरत ने दरवाज़ा खोला, जो एक छोटे-से किचेन में समोवार में फूँक-फूँककर कोयले सुलगा रही थी; उसने बिना एक शब्द समझे हुए कि मैं क्या कह रहा था चुपचाप मेरे सवाल सुने और खामोशी से बग़लवाले कमरे का दरवाज़ा खोल दिया जो उतना ही छोटा और बेहद नीचा था; उसमें बस बुनियादी ज़रूरत का बहुत ही सस्ता सामान था और परदे के पीछे एक बहुत बड़ा, चौड़ा-सा पलंग था, जिस पर 'तेरेंत्यिच' (औरत ने उसे इसी नाम से पुकारा) लेटा हुआ था, जो, मेरे ख़्याल में, पिए हुए था। मेज़ पर लोहे के शमादान में मोमबत्ती का छोटा-सा बचा हुआ टुकड़ा जल रहा था और उसके पास एक लगभग खाली बोतल रखी थी। तेरेंत्यिच ने पलंग से उठे बिना ही बुदबुदाकर मुझसे कुछ कहा और हाथ हिलाकर दूसरे दरवाज़े की तरफ़ इशारा किया। औरत जा चुकी थी इसलिए मेरे पास दरवाज़ा खोलने के अलावा कोई चारा ही नहीं रह गया था। मैंने ऐसा ही किया और बग़लवाले कमरे में चला गया।

"यह कमरा पहलेवाले कमरे से भी छोटा था, यहाँ तक कि मेरे लिए उसमें घूमना भी मुश्किल

था; कोने में पड़े हुए इकहरे पलंग ने लगभग सारी जगह घेर रखी थी; बाक़ी फर्नीचर के नाम पर बस तीन सादी कुर्सियाँ थीं जिन पर भाँति-भाँति के फटे-पुराने कपड़े लदे हुए थे, और एक पुराने मोमजामा-चढ़े सोफ़े के सामने छोटी-सी लकड़ी की किचेन की मेज़ थी, इसलिए मेज़ और पलंग के बीच से होकर गुजरना लगभग असम्भव था। मेज़ पर वैसे ही लोहे के शमादान में, जैसा उस कमरे में था, मोमबत्ती जल रही थी, और पलंग पर एक नन्हा-सा बच्चा लेटा हुआ था, जिसके रोने की आवाज़ से लगता था कि वह तीन हफ़्ते से ज़्यादा का नहीं रहा होगा, एक पीले चेहरेवाली बीमार-सी औरत, जो काफ़ी नौजवान थी और लगभग कुछ भी नहीं पहने हुए थी, उसके पोतड़े बदलवा रही थी; उसे देखने से ऐसा लगता था कि बच्चा जनने के बाद वह अभी बिस्तर से उठी थी। बच्चा किसी तरह चुप ही नहीं हो रहा था और अपनी माँ के सूखे हुए स्तनों से दूध पीने के लिए बिलख रहा था। एक और बच्चा, तीन बरस की एक लड़की सोफ़े पर कोई ऐसी चीज़ ओढ़े सो रही थी जो देखने में मर्दाना ड्रेस-कोट लगती थी। एक आदमी बहुत ही पुराना-सा कोट पहने (उसने अपना ओवरकोट उतार दिया था जो पलंग पर पड़ा हुआ था) मेज़ के पास खड़ा था और नीले काग़ज़ में लिपटा हुआ पार्सल खोल रहा था; जिसमें लगभग दो पौंड गेहूँ की डबल रोटी और दो छोटे-छोटे सॉसेज थे। इसके अलावा मेज़ पर एक चायदानी में चाय और काली डबल रोटी के कुछ सख़्त टुकड़े रखे हुए थे। पलंग के नीचे से एक खुला हुआ सन्दूक और चीथड़ों की दो पोटलियाँ बाहर झाँक रही थीं।

"मतलब यह कि पूरी जगह बहुत ही गड़बड़ हालत में थी। मैंने पहली ही नज़र में देख लिया कि वह मर्द और औरत दोनों भले लोग थे, जिन्हें ग़रीबी ने पतन की उस अवस्था में पहुँचा दिया था जिसमें अव्यवस्था आख़िरकार उसे दूर करने की सारी कोशिशों पर हावी हो जाती है, और वह लोगों को ऐसी हालत में पहुँचा देती है कि वह दिन-ब-दिन बढ़ती हुई अव्यवस्था में एक तरह का कटु और मानो बदला लेने का सन्तोष प्राप्त करने को आवश्यक समझने लगते हैं।

"जब मैं अन्दर गया तो वह आदमी, जो मुझसे ज़रा ही देर पहले अन्दर आया था और अभी अपनी खाने की पोटली खोल ही रहा था, बहुत जल्दी-जल्दी और उत्तेजित होकर अपनी बीवी से बातें कर रहा था। हालाँकि उसकी बीवी ने अभी बच्चे के कपड़े बदलवाने का काम ख़त्म नहीं किया था, लेकिन उसने अभी से पिनपिनाना शुरू कर दिया था, क्योंकि वह जो ख़बर लाया था वह हमेशा की तरह बुरी थी। वह आदमी लगभग अट्ठाईस साल का था और उसका साँवला सूखा चेहरा, जिस पर काले गलमुच्छे थे और ठोड़ी सफाचट थी, मुझे देखने में अच्छा ही नहीं बल्कि काफ़ी सुखद भी लगा; चेहरा उदास था और आँखों में भी उदासी थी, लेकिन उनमें बीमारी की हद तक एक तरह का स्वाभिमान भी था, जिसे बड़ी आसानी से ठेस पहुँच सकती थी। मेरे अन्दर पहुँचते ही एक विचित्र दृश्य सामने आया।

"कुछ लोग होते हैं जिन्हें अपनी चिड़चिड़ेपन की प्रवृत्ति से बड़ा आनन्द मिलता है, ख़ासतौर पर अगर उन्हें धैर्य की सीमा के बाहर तक पहुँचा दिया जाए (जैसा कि हमेशा बहुत ही जल्दी हो जाता है); उस क्षण ऐसा लगता है कि वे बुरा न मानने की अपेक्षा बुरा मानने के लिए अधिक तत्पर रहते हैं। इन चिड़चिड़े लोगों को बाद में हमेशा बहुत अफ़सोस होता है, ज़ाहिर है, अगर वे समझदार हों और उनमें यह महसूस करने की क्षमता हो कि जितना उत्तेजित होने की ज़रूरत थी उससे वे दस गुना ज़्यादा उत्तेजित हो गए थे। वह आदमी कुछ देर तक आश्चर्य से और उसकी बीवी घबराहट से मुझे घूरते रहे, मानो इसमें कोई बहुत ही उल्लेखनीय बात हो कि कोई उनके कमरे में आ जाए। पर सहसा वह उन्मत्त-सा होकर मेरे ऊपर झपटा। मुझे अभी दो-चार शब्द भी

बुदबुदाकर कहने का मौक़ा नहीं मिला था कि उसने मुझे ढंग के कपड़े पहने देखकर शायद यह सोचा कि मेरे इस तरह बेतकल्लुफ़ी से उसके कमरे में झाँकने का साहस करने और उस वातावरण को देख लेने से, जिस पर वह बहुत लज्जित था, उसकी भावनाओं को सांघातिक आघात पहुँचा था ! अलबत्ता उसे अपनी सारी विफलताओं का गुस्सा किसी पर उतार देने का अवसर पाने की खुशी भी थी। एक क्षण तो मुझे यहाँ तक लगा कि वह मुझे मारनेवाला है; उसका रँग उस औरत की तरह सफ़ेद हो गया जिसे हिस्टीरिया का दौरा पड़ा हो और यह देखकर उसकी बीवी बेहद डर गई।

" 'आपकी हिम्मत कैसे पड़ी इस तरह यहाँ चले आने की ? निकल जाइए यहाँ से !' वह चिल्लाया; वह बुरी तरह काँप रहा था और उसके मुँह से शब्द भी ठीक से नहीं निकल रहे थे।

"लेकिन उसने अचानक मेरे हाथ में अपना बटुआ देखा।

" 'मेरा ख़्याल है कि यह आपका गिर गया था,' मैंने यथासम्भव शान्त भाव से और रुखाई से कहा (उससे बात करने का, सच पूछिए तो, यही ठीक तरीक़ा था)।

"वह मेरे सामने बिलकुल सहमा हुआ खड़ा रहा, और ऐसा लग रहा था कि कुछ देर तक तो उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया; फिर उसने जल्दी से बग़लवाली जेब में अपना हाथ डाला, भय से उसका मुँह खुला रह गया, और उसने अपना माथा पीट लिया।

" 'हे भगवान ! यह आपको कहाँ मिला ? यह हुआ कैसे ?'

"मैंने थोड़े-से शब्दों में और पहले से भी ज़्यादा रूखेपन से सारी बात उसे समझाई कि किस तरह मैंने उसका बटुआ पड़ा पाया था, किस तरह मैं उसके पीछे भागा था और उसे पुकारा था और, अन्त में, किस तरह अँधेरे में रास्ता टटोलता हुआ मैं उसके पीछे-पीछे सीढ़ियों के ऊपर आया था।

" 'हे भगवान !' उसने अपनी बीवी की तरफ़ मुड़ते हुए चिल्लाकर कहा, 'हमारे सारे काग़ज़ात इसमें हैं और मेरे बचे-खुचे उपकरण भी—सब कुछ इसी में है...ओह, जनाब, जानते हैं आपने मेरे लिए क्या किया है ? मैं तो मिट गया होता !'

"इसी बीच मैंने जवाब दिए बिना वहाँ से चले जाने के इरादे से दरवाज़े का हैंडिल पकड़ लिया था, लेकिन मेरा दम खुद फूल रहा था, और अचानक अपनी उत्तेजना की वजह से मुझे खाँसी का इतना जबर्दस्त दौरा पड़ा कि मेरे लिए अपनी टाँगों पर खड़े रहना भी मुश्किल हो गया। मैंने उस आदमी को मेरे लिए एक खाली कुर्सी की खोज में चारों ओर भागते देखा, और आख़िरकार उसने झपटकर एक कुर्सी पर से फटे-पुराने कपड़े हटा दिए, जल्दी से उसे मेरी ओर बढ़ाया, और बड़ी सावधानी से मुझे उस पर बिठा दिया। लेकिन मेरी खाँसी अगले तीन मिनट तक लगातार जारी रही। जब मैं सम्भला तो वह मेरे पास एक दूसरी कुर्सी पर बैठा हुआ था, जिस पर से भी उसने सारे फटे-पुराने कपड़े उठाकर फ़र्श पर फेंक दिए थे, और मुझे ग़ौर से देख रहा था।

" 'क्या आपको...तकलीफ़ है ?' उसने उस लहजे में पूछा जो डॉक्टर लोग आमतौर पर मरीजों से बात करने में इस्तेमाल करते हैं। 'मैं...मेरा मतलब है...मैं दवा-दारू के मैदान का आदमी हूँ,' (उसने डॉक्टर नहीं कहा) और यह कहते हुए उसने कमरे की ओर इशारा किया, मानो अपनी वर्तमान स्थिति के ख़िलाफ़ आवाज़ उठा रहा हो। 'मैं देखता हूँ कि आप...'

" 'मुझे टी. वी. है,' मैंने जितनी रुखाई से हो सका कहा और उठ खड़ा हुआ।

"वह भी फ़ौरन उछलकर खड़ा हो गया।

" 'शायद आप बात को बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे हैं और...मेरा मतलब है...अगर आप...उचित

उपाय करें तो...'

"वह बिलकुल बौखलाया हुआ था और लगता था कि किसी तरह अपने होश सम्भाल नहीं पा रहा था; वह बटुआ अभी तक अपने बाएँ हाथ में लिए हुए था।

" 'अरे, परेशान न होइए,' मैंने दरवाज़े का हैंडिल पकड़कर फिर उसकी बात काटते हुए कहा, 'डॉक्टर बोत्किन ने पिछले हफ़्ते मुझे देखा था' (मैं फिर बोत्किन को बीच में घसीट लाया), 'अब मेरे मामले में कुछ किया नहीं जा सकता। माफ़ कीजिएगा...'

"मैंने फिर दरवाज़ा खोलने और अपने अटपटा महसूस करते हुए और कृतज्ञ डॉक्टर से विदा लेने की कोशिश की, जो लज्जा के बोझ से बिलकुल कुचला जा रहा था, लेकिन मेरी कमबख़्त खाँसी ने मुझे फिर आ दबोचा। इस पर डॉक्टर ने आग्रह किया कि मैं फिर बैठकर थोड़ी देर आराम कर लूँ। वह अपनी बीवी की ओर मुड़ा जिसने अपनी जगह से हटे बिना मुझसे कुछ कृतज्ञता-भरे अच्छे-अच्छे शब्द कहे। बोलते समय वह बहुत अटपटा महसूस कर रही थी, जिसकी वजह से उसके पतले, पीले गालों पर गहरी लाली दौड़ गई। मैं वहाँ रुका रहा, लेकिन इस तरह जिससे साफ़ पता चलता था कि मुझे उनकी निजी बातों में दखल देने में बहुत संकोच था (जो पूरे मौक़े के लिए एकमात्र सही रवैया था)। डॉक्टर पर पश्चात्ताप की व्यथा पूरी तरह छाई हुई थी, यह मुझे दिखाई दे रहा था।

" 'अगर मैं...' उसने कहना शुरू किया, लेकिन हर क्षण उसकी बात का सिलसिला टूट जाता था और वह कोई बिलकुल ही दूसरी बात करने लगता था, 'मैं...मैं आपका बहुत एहसान मानता हूँ और मैंने...मैं आपके साथ बहुत ही बुरी तरह पेश आया हूँ...देखिए...मेरा मतलब है...था...' उसने एक बार फिर कमरे की तरफ़ इशारा किया, 'इस वक़्त मैं बड़ी छीछालेदर में फँसा हुआ हूँ...'

" 'अरे,' मैंने कहा, 'इसमें देखने की क्या बात है—ऐसा तो होता ही है। मैं समझता हूँ कि शायद आपकी नौकरी छूट गई है और आप यहाँ यह समझाने कि आपके साथ क्या हुआ था और दूसरी नौकरी ढूँढ़ने आए हैं।"

" 'आपने कैसे...अन्दाजा लगाया ?' उसने आश्चर्य से पूछा।

" 'अरे,' मैंने अनायास ही व्यंग से उत्तर दिया, 'मैं फ़ौरन समझ गया था। यहाँ प्रान्तों से बहुत-से लोग उम्मीदें लेकर आते हैं और दौड़-धूप करते हैं और इसी तरह चलता है।'

"वह अचानक जोश में आकर और काँपते हुए होंठों से बातें करने लगा। अपना सारा क़िस्सा सुनाते हुए वह शिकायत करने लगा, और, मैं मानता हूँ, मुझे बहुत दिलचस्पी पैदा हुई। मैं वहाँ कोई घंटा-भर रुका। उसने मुझे बताया कि उस पर क्या बीती थी और, मुझे कहना पड़ता है कि उसका दुखड़ा बहुत आम दुखड़ा था। वह किसी प्रान्त में डॉक्टर था, सरकारी नौकरी थी; और फिर उसके ख़िलाफ़ तरह-तरह की तिकड़में की जाने लगीं जिनमें उसकी बीवी को भी लपेटा गया। वह इतना स्वाभिमानी था कि उसने झुकने से इन्कार कर दिया, उसका गुस्सा भड़क उठा; उसके दुश्मनों का साथ देनेवाली प्रान्तीय सरकार बन गई, जिसने उसकी साख की जड़ खोखली की और उसके ख़िलाफ़ शिकायतें कीं; उसकी नौकरी जाती रही, उसने अपनी बचत की रही-सही रक़म बटोरी, और यह समझाने पीटर्सबर्ग आ गया कि उसके साथ क्या हुआ था। ज़ाहिर है, बहुत दिन तक तो उसकी कोई सुनवाई नहीं हुई, फिर जवाब में इन्कार कर दिया गया, उसके बाद उससे तरह-तरह के वादे किए गए, फिर उसे बुरी तरह डाँटा-फटकारा गया, उससे एक फार्म भरने को कहा गया, फिर उन लोगों ने वह फार्म लेने से इन्कार कर दिया और उससे फरियाद लिखने को कहा—मतलब यह कि पाँच महीने से वह एक सरकारी दफ़्तर से दूसरे दफ़्तर के चक्कर काट रहा था, और उसकी

बचत की सारी रक़म खर्च हो गई थी। उसने अपनी बीवी के आख़िरी फटे-पुराने कपड़े तक गिरवी रख दिए थे, और इसी बीच एक और बच्चा भी पैदा हो गया था और...'आज...आज मेरी फरियाद के जवाब में मुझसे साफ़ इन्कार कर दिया गया है, और मेरे पास रोटी का टुकड़ा तक नहीं है...मेरे पास कुछ भी नहीं है...यहाँ बच्चा हुआ है। मैं...मैं...'

"वह कुर्सी से उछलकर खड़ा हो गया और उसने मुँह फेर लिया। उसकी बीवी कोने में खड़ी रो रही थी, और बच्चा फिर सिसकने लगा था। मैं अपनी नोट-बुक निकालकर उसमें लिखने लगा। लिखना पूरा करके जब मैं उठा तो वह मेरे सामने खड़ा था और डरी-डरी उत्सुकता से मुझे देख रहा था।

" 'मैंने आपका नाम लिख लिया है,' मैंने उससे कहा, 'और, हाँ, बाक़ी सारी बातें भी—आप कहाँ नौकरी करते थे, उस प्रान्त के गवर्नर का नाम, तारीख़ें वगैरह-वगैरह। मेरा एक दोस्त है, मेरे साथ स्कूल में पढ़ता था, बाख़्मुतोव नाम है उसका, और उसके चाचा हैं प्योत्र मत्वेयेविच बाख़्मुतोव, जो बाक़ायदा स्टेट काउंसिलर और रईसज़ादा हैं...'

" 'प्योत्र मत्वेयेविच बाख़्मुतोव !' यह डॉक्टर लगभग काँपते हुए चिल्लाया। 'अरे, उन्हीं पर तो लगभग सारा दारोमदार है !'

"सच पूछिए तो मेरे इस मामले की कहानी और उसके सुखद अन्त में, जिसे सम्भव बनाने में बिलकुल संयोगवश मेरा हाथ था, हर चीज़ उसी तरह हुई और सन्तोषपूर्वक निबटा दी गई जैसे पहले से जान-बूझकर इसकी तैयारी की योजना की गई हो, ठीक वैसे ही जैसे किसी उपन्यास में। मैंने उन अभागे लोगों से कहा कि वे ज़्यादा बहुत उम्मीदें रखने की कोशिश न करें, क्योंकि मैं खुद एक ग़रीब स्कूली लड़का था (मैंने जान-बूझकर अपने आपको जितना मैं हूँ उससे भी अधिक महत्त्वहीन जताने की कोशिश की; मैं अपनी पढ़ाई बहुत पहले पूरी कर चुका हूँ और मैं स्कूली लड़का नहीं हूँ), और यह कि उनको मेरा नाम जानने की कोई ज़रूरत नहीं थी, लेकिन यह कि मैं अपने दोस्त बाख़्मुतोव से मिलने फ़ौरन वसील्येव्स्की द्वीप जाऊँगा और चूँकि मुझे पक्के तौर पर मालूम था कि उसके चाचा, जो बाक़ायदा स्टेट काउंसिलर थे, अविवाहित थे और उनके कोई बच्चे नहीं थे और वह अपने भतीजे को पूजते थे और अपने परिवार के अन्तिम जीवित वंशज के रूप में उसे बेहद चाहते थे, इसलिए शायद मेरा दोस्त उनके और मेरे लिए कुछ कर सके, ज़ाहिर है अपने चाचा की मदद से।

" 'मैं बस इतना चाहता हूँ कि उसके चाचा मुझसे एक बार मिल भर लें !' डॉक्टर ने मानो बुखार से काँपते हुए और चमकती हुई आँखों के साथ चिल्लाकर कहा। 'बस मुझे उनके सामने खुद अपना मामला पेश करने की बड़ी विनम्रता से इजाज़त दे दी जाए !' उसने यही कहा था—'विनम्रता से इजाज़त दे दी जाए !'

"एक बार फिर यह दोहराने के बाद कि सारा मामला टायं-टायं-फिस हो जाएगा और उसका कोई नतीजा नहीं निकलेगा, मैंने इतना और जोड़ दिया कि अगर कल सबेरे मैं उनसे मिलने न आऊँ तो वे समझ लें कि सब कुछ ख़त्म हो चुका है और वे किसी तरह की कोई उम्मीद न रखें। उन्होंने बहुत झुक-झुककर मुझे विदा किया; वे मारे खुशी के फूले नहीं समा रहे थे। मैं उनके चेहरों का वह भाव कभी नहीं भूलूँगा। मैं किराए की घोड़ागाड़ी करके सीधे वसील्येव्स्की द्वीप गया।

"स्कूल में बाख़्मुतोव के साथ मेरी हरदम ठनी रहती थी। हम लोग उसे रईसज़ादा समझते थे,—कम से कम मैं तो उसे यही कहता था। वह बहुत सजीले कपड़े पहनता था, दो घोड़ोंवाली अपनी निजी गाड़ी में स्कूल आता था, उसमें तनिक भी घमण्ड नहीं था, हमेशा अच्छे दोस्त जैसा

बर्ताव करता था, हमेशा उसका चेहरा खिला हुआ और मगन रहता था, और कभी-कभी वह हाजिरजवाबी का भी सबूत देता था, हालाँकि वह अकल का बहुत तेज नहीं था, इसके बावजूद कि वह कक्षा में हमेशा प्रथम आता था; इसके विपरीत, मैं कभी किसी भी चीज़ में प्रथम नहीं रहा। मुझे छोड़कर स्कूल के उसके बाक़ी साथियों को वह बहुत अच्छा लगता था। उन वर्षों के दौरान उसने कई बार मुझसे दोस्ती करने की कोशिश की थी, लेकिन हर बार मैंने बड़ी रुखाई और चिड़चिड़ेपन से उसे धता बता दी थी। इधर एक साल से मैं उससे नहीं मिला था; वह यूनिवर्सिटी में पढ़ता था। लगभग नौ बजे जब मैं उसके कमरे में पहुँचा (बड़े औपचारिक ढंग से मेरे आने की सूचना दी गई), तो पहले तो मुझसे मिलकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने कोई ख़ास हार्दिकता भी नहीं दिखाई, लेकिन फिर वह फ़ौरन खिल उठा और मेरी ओर देखकर अचानक ठहाका मारकर हँस पड़ा।

“ ‘तुम कहाँ से आ टपके, तेरेंत्येव ?’ उसने अपनी हमेशा जैसी बेतकल्लुफ़ी से कहा, जो कभी रुचिकर होती थी, कभी उसमें दम्भ की झलक मिलती थी, लेकिन यह कभी हद नहीं पहुँचाती थी, जिस बात को मैं उसमें बहुत पसन्द करता था और जिसकी वजह से मैं उससे बहुत नफ़रत भी करता था। ‘लेकिन बात क्या है ?’ उसने घबराकर पूछा, ‘तुम कितने बीमार लग रहे हो !’

“खाँसी का एक और दौरा पड़ने से मेरी सारी शक्ति निचुड़ गई। मैं फिर कुर्सी पर गिरकर बैठ गया और बड़ी मुश्किल से मेरी साँस फिर समा पाई।

“ ‘परेशान न हो,’ मैंने कहा, ‘मुझे महज टी. बी. है। मैं तुम्हारे पास एक काम से आया हूँ।’

“वह बैठ गया; वह आश्चर्यचकित लग रहा था; मैंने उसे डॉक्टर का सारा किस्सा सुनाया और समझाया कि अपने चाचा पर उसका बहुत ज़्यादा असर होने की वजह से वह शायद मदद कर सके।

“ ‘मैं जो भी बन पड़ेगा करूँगा, ज़रूर करूँगा। मैं कल ही अपने चाचा को जा पकड़ूँगा, और मुझे बहुत खुशी है कि तुमने सारी बात मुझसे इतनी अच्छी तरह बयान कर दी।...लेकिन, तेरेंत्येव, तुम्हें मेरे पास आने की बात सूझी कैसे ?’

“ ‘देखो, बात यह है, इस मामले में बहुत कुछ दारोमदार तुम्हारे चाचा पर है और इसके अलावा, बाख़्मुतोव, हमारी हमेशा दुश्मनी रही है और, चूँकि तुम इज़्ज़तदार आदमी हो,’ मैंने व्यंग से कहा, ‘इसलिए मैंने सोचा कि तुम एक दुश्मन को कभी मना नहीं करोगे।’

“ ‘वैसे ही जैसे नेपोलियन ने इंगलैण्ड से आस लगाई थी !’ उसने ठहाका लगाकर ज़ोर से कहा। ‘कर दूँगा ! मैं ज़रूर कर दूँगा ! हो सका तो मैं अभी चला जाऊँ !’ उसने मुझे बड़ी गम्भीर कठोर मुद्रा के साथ अपनी कुर्सी पर से उठता देखकर जल्दी से कहा।

“और, सचमुच, हम लोगों ने यह मामला बिलकुल अप्रत्याशित और सन्तोषजनक ढंग से निबटा दिया। छह हफ़्ते बाद हमारे उस डॉक्टर को किसी दूसरे प्रान्त में दूसरी नौकरी पर नियुक्त कर दिया गया, उसे सफ़र का खर्च दिया गया और इसके अलावा उसे सहायता के रूप में थोड़ी-बहुत रक़म भी दी गई। मुझे शक है कि बाख़्मुतोव ने, जो लगभग रोज ही डॉक्टर से मिलने जाता था (जबकि मैंने इसी वजह से जान-बूझकर उसके यहाँ जाना छोड़ दिया था और जब वह मेरे यहाँ आया तो मैं उससे बड़े रूखेपन से मिला था)—बाख़्मुतोव ने, जैसा कि मुझे शक है, डॉक्टर को उससे कुछ कर्ज ले लेने के लिए भी राज़ी कर लिया था। उन छह हफ़्तों के दौरान मैं बाख़्मुतोव से दो बार मिला, और उससे तीसरी बार मेरी मुलाक़ात तब हुई जब हम डॉक्टर को विदा करने गए थे। बाख़्मुतोव ने डॉक्टर को अपने घर पर शैम्पेन के साथ विदाई का डिनर दिया, जिसमें डॉक्टर की बीवी भी आई थी; वह बच्चे की देखभाल करने के लिए जल्दी ही चली गई थी। मई के शुरू के

दिन थे। बहुत सुहानी शाम थी। सूरज का बड़ा-सा थाल खाड़ी में डूब रहा था। बाख़्मुतोव मुझे घर पहुँचाने आया। हम निकोलायेव्स्की पुल के पार जा रहे थे; हम दोनों कुछ-कुछ नशे में थे। बाख़्मुतोव इस मामले के सुचारू रूप से निबट जाने पर अपनी खुशी की चर्चा कर रहा था, उसने किसी बात के लिए मुझे धन्यवाद दिया, मुझे समझाया कि एक नेक काम करने के बाद वह अब कितनी खुशी महसूस कर रहा था, और मुझे विश्वास दिलाया कि इसका पूरा श्रेय मुझे था और यह कि बहुत-से लोगों का यह कहना और उपदेश देना बिलकुल ग़लत था कि वैयक्तिक परोपकार से कुछ नहीं होता। मैं भी इस पर बहस करने को बहुत उत्सुक था।

" 'जो भी 'वैयक्तिक परोपकार' पर प्रहार करता है,' मैंने कहना शुरू किया, 'वह मानव स्वभाव पर प्रहार करता है और मनुष्य की गरिमा से घृणा करता है। लेकिन 'सार्वजनिक परोपकार' को संगठित करना और निजी स्वतन्त्रता का प्रश्न दो अलग-अलग सवाल हैं और उनका आपस में कोई बैर नहीं है। वैयक्तिक परोपकार के कामों का अस्तित्व सदा रहेगा क्योंकि वे मनुष्य की निजी आवश्यकताओं के अंग हैं, एक व्यक्तित्व पर दूसरे व्यक्तित्व के प्रत्यक्ष प्रभाव की एक बुनियादी आवश्यकता हैं। मास्को में एक वृद्ध सज्जन थे, एक 'जनरल',—मतलब यह कि बाक़ायदा स्टेट काउंसिलर थे, जर्मन नाम था उनका। उन्होंने अपना सारा जीवन जेलों में जा-जाकर कैदियों से मिलने में बिताया; साइबेरिया जानेवाले कैदियों की हर टोली को पहले से मालूम रहता था कि बूढ़े 'जनरल साहब' उन्हें विदा करने के लिए मिलेंगे। वह यह सारा काम बेहद गम्भीरता और लगन के साथ करते थे; वह आते थे, कैदियों की कतारों के एक छोर से दूसरे छोर तक जाते थे, जो उन्हें घेर लेते थे, हर एक के सामने रुकते थे, हर एक से उसकी ज़रूरतों के बारे में पूछते थे, शायद ही कभी किसी को उपदेश देते थे और सभी को अपना 'लाड़ला' कहते थे। वह उन्हें पैसा देते थे, उन्हें उनकी ज़रूरत की चीज़ें भेजते थे—टाँगों और पाँवों पर लपेटने के लिए कपड़े और कभी-कभी वह उनके लिए धार्मिक पुस्तकें लाते थे, जिन्हें वह उन लोगों को, जो पढ़ना जानते थे, इस पूर्ण विश्वास के साथ बाँट देते थे कि वे रास्ते में उन्हें पढ़ेंगे और यह कि जो लोग पढ़ना जानते थे वे उन लोगों को पढ़कर सुनाएँगे जो पढ़ना नहीं जानते थे। वह उनसे उनके अपराधों के बारे में शायद ही कभी पूछते थे, लेकिन अगर कोई कैदी अपने अपराधों की चर्चा करने लगता था तो वह बड़े ध्यान से सुनते थे। वह किसी भेदभाव के बिना सभी कैदियों के साथ एक जैसा बर्ताव करते थे। वह उनसे भाइयों की तरह बात करते थे, लेकिन अन्त में वे लोग उन्हें अपने पिता के समान समझने लगे थे। अगर वह किसी कैदी औरत को गोद में बच्चा लिए हुए देखते थे तो वह उसके पास जाते थे, बच्चे का लाड़-प्यार करते थे और उसे हँसाने के लिए चुटकी बजाते थे। वह कई बरस अपने मरने के वक़्त तक ऐसा ही करते रहे; नौबत यहाँ तक पहुँच गई कि सारे रूस में और सारे साइबेरिया में लोग उनको जान गए—मतलब यह कि सारे कैदी। एक आदमी ने जो साइबेरिया में रह आया था मुझे बताया कि उसने खुद अपनी आँखों से देखा था कि किस तरह पक्के से पक्के मुजरिम भी जनरल साहब को याद करते थे, हालाँकि जनरल साहब हर बार कैदियों से मिलने जाने पर उनमें से हर एक को शायद ही कभी बीस कोपेक से ज़्यादा दे पाते हों। यह सच है वे लोग जिस तरह उन्हें याद करते थे उसमें कोई विशेष हार्दिकता नहीं होती थी और न ही कोई संजीदगी। उन 'दुखिया अभागों' में से कभी कोई, जिसने सिर्फ़ अपनी खुशी के लिए दर्जन-भर आदमियों को मार डाला था या छह बच्चों को क़त्ल कर दिया था (मुझे बताया गया है कि इस तरह के लोग हुए हैं), किसी भी कारण के बिना और सो भी शायद बीस साल में एक बार अचानक आह भरकर कहता होगा, 'बूढ़े जनरल साहब का अब क्या हाल होगा ? क्या वह

अभी तक जिन्दा होंगे ?' और शायद ऐसा कहते हुए वह मुस्कराता भी होगा—और बस। कोई क्या जाने कि 'बूढ़े जनरल साहब' ने उसकी आत्मा में कौन-सा बीज डाल दिया होगा कि वह बीस बरस बाद भी उन्हें नहीं भूला था ? तुम कैसे बता सकते हो, बाख़्मुतोव कि एक व्यक्तित्व के साथ दूसरे व्यक्तित्व के इस सम्पर्क का उनमें से एक के भविष्य के लिए क्या महत्त्व होगा ? हम यहाँ जिस चीज़ पर चर्चा कर रहे हैं वह है मनुष्य का पूरा जीवन और ये असंख्य सूत्र जो हमसे छिपे रहते हैं। शतरंज का अच्छे से अच्छा, होशियार से होशियार खिलाड़ी आगे की चार पाँच ही चालों तक सोच सकता है; शतरंज के एक फ्रांसीसी खिलाड़ी को, जो आगे की दस चालों तक का हिसाब लगा लेता था, एक चमत्कार कहा जाता था। तो, इस मामले में कितनी चालें हैं और उनमें से कितनी हैं जिनका हमें कोई पता नहीं है ? अपने बीज बोते समय, अपने 'परोपकार' करते समय, अपने सत्कर्म करते समय, वे किसी भी शक्ल या रूप में क्यों न हों, हम अपने व्यक्तित्व का कुछ हिस्सा देते हैं और दूसरे के व्यक्तित्व के कुछ हिस्से को ग्रहण करते हैं; हम एक दूसरे से परस्पर सम्बद्ध हो जाते हैं और बस थोड़ा ही और प्रयास करने पर हमको ज्ञान का, सर्वाधिक अप्रत्याशित खोजों का पुरस्कार मिल सकता है। अन्त में हम निश्चित रूप से अपने काम को एक विज्ञान के रूप में देखने लगेंगे; वह हमारे सारे जीवन को अपने अन्दर समो लेगा, और शायद वह हमारे सारे जीवन को भर दे। दूसरी ओर हमारे सारे विचार, हमारे बिखेरे हुए सारे बीज, जिन्हें हम शायद भूल भी चुके हों, जड़ पकड़ लेंगे और पनपने लगेंगे; जिस आदमी को वे हमसे मिलेंगे वह उन्हें किसी और को देगा। और हम कैसे बता सकते हैं कि मनुष्यों की नियति के निरूपण में हमारा योगदान क्या होगा ? अगर यह ज्ञान और जीवन-भर इस तरह काम करना हमें ऊँचा उठाकर अन्तत: एक शिखर पर पहुँचा दे जहाँ से हम संसार को महान विचार दे जाने के लिए कोई महान बीज बो सकें, तो...' और इसी तरह मैं रास्ते-भर चलते-चलते न जाने क्या-क्या बातें करता रहा।

" 'और कैसा भयानक विचार है कि तुम जैसे आदमी को जीवन से वंचित कर दिया गया है !' बाख़्मुतोव ने बड़े जोश से किसी की निन्दा करते हुए चिल्लाकर कहा।

"उस समय हम लोग पुल पर खड़े थे और जंगले पर अपनी कुहनियों के सहारे झुके हुए नेवा को देख रहे थे।

" 'जानते हो अभी-अभी मुझे क्या बात सूझी ?' मैंने जंगले पर और नीचे झुकते हुए कहा।

" 'नदी में कूद पड़ने की तो नहीं ?' बाख़्मुतोव ने लगभग बदहवास होकर पूछा। शायद मेरे चेहरे से उसने मेरे मन की बात का अन्दाजा लगा लिया था।

" 'नहीं,' मैंने कहा, 'फिलहाल तो यही विचार आया है—मुझे बस दो-तीन, या हद से हद चार महीने जिन्दा रहना है; लेकिन जब, मिसाल के लिए, दो ही महीने बाक़ी रह जाएँगे, और तब अगर कोई ऐसा सत्कर्म करने को मेरा बहुत जी चाहा जिसके लिए बहुत काम, भाग-दौड़ और चिन्ता करने की ज़रूरत हो, हमारे डॉक्टरवाले मामले जैसा काम, तो मुझे समय की कमी की वजह से उसे छोड़कर कोई दूसरा 'सत्कर्म' खोजने की कोशिश करनी पड़ेगी, उससे छोटे पैमाने का कोई काम, जो मेरे साधनों की सीमा के अन्दर हो (अगर मैं सचमुच सत्कर्म करने पर इतना ही तुला हुआ होऊँ)। तुम्हें मानना पड़ेगा कि यह बड़ा दिलचस्प विचार है।'

"बेचारा बाख़्मुतोव मेरे बारे में बहुत चिन्तित था; वह मुझे मेरे घर तक ले गया, और वह इतना व्यवहारकुशल था कि उसने एक बार भी मुझे तसल्ली देने की कोशिश नहीं की, बल्कि रास्ते-भर वह चुप ही रहा। विदा लेते समय उसने मेरा हाथ बड़ी हार्दिकता से दबाया और मुझसे मेरे यहाँ आकर मिलने की इजाज़त माँगी। मैंने जवाब दिया कि अगर वह मेरे पास 'तसल्ली देनेवाले' की

तरह आएगा (क्योंकि अगर वह कभी एक शब्द भी न कहता तब भी वह मुझे तसल्ली ही देने आता, यह बात मैंने उससे साफ़-साफ़ कह दी), तो हर बार आने पर वह मुझे मौत की याद पहले से भी ज़्यादा दिलाएगा। उसने कन्धे बिचकाए, लेकिन मुझसे सहमति प्रकट की; हम काफ़ी शिष्टता के साथ एक-दूसरे से विदा हुए, जो मेरी आशा से बहुत बढ़कर था।

"लेकिन मेरी 'अन्तिम आस्था' का बीज उसी शाम और उसी रात को बोया गया। मैंने बहुत उत्कंठित होकर उस नए विचार को पकड़ लिया, बड़ी उत्सुकता से उसके हर आशय की दृष्टि से, हर पहलू से उसे जाँचा (मैं सारी रात नहीं सोया) और मैं उसके बारे में जितनी ही गहराई से सोचता गया, जितना ही मैं उसको आत्मसात करता गया, उतना ही अधिक मैं भयभीत होता गया। आख़िरकार मुझ पर एक भयानक बदहवासी छा गई, जिसने आनेवाले दिनों के दौरान कभी मेरा पीछा नहीं छोड़ा। कभी-कभी जब मैं अपनी इस लगातार बदहवासी के बारे में सोचता था, तो एक नए खौफ से मैं जल्दी ही जम-सा जाता था—क्योंकि इस बदहवासी से मैं इसी नतीजे पर पहुँच सकता था कि मेरी 'अन्तिम आस्था' ने मुझे बेहद मजबूती से जकड़ लिया था और उसका किसी अन्तिम निर्णय पर पहुँचना निश्चित था। लेकिन निर्णय पर पहुँचने में दृढ़ निश्चय की कमी थी। तीन हफ़्ते बाद यह सारा सिलसिला ख़त्म हो गया और मेरे अन्दर दृढ़ निश्चय जागा, लेकिन एक अत्यन्त विचित्र परिस्थिति के फलस्वरूप।

"यहाँ अपनी इस स्वीकारोक्ति में मैंने ये सारी तारीख़ें और आँकड़े दर्ज कर दिए हैं। ज़ाहिर है, मुझे इससे कोई फ़र्क़ पड़नेवाला नहीं है, लेकिन अब (और शायद केवल इस क्षण) मैं यह चाहूँगा, कि जो लोग मेरे किए पर अपना फ़ैसला दें वे निष्कर्षों के उस तर्कसंगत क्रम को साफ़-साफ़ समझ सकें जिन्होंने मुझे इस 'अन्तिम आस्था' तक पहुँचाया। मैं अभी ऊपर लिख चुका हूँ कि अपनी "अन्तिम आस्था" को साकार करने के लिए मुझमें जिस अन्तिम दृढ़ संकल्प की कमी थी वह प्रकटतः मुझमें किसी तर्कसंगत निष्कर्ष के फलस्वरूप नहीं, बल्कि एक अनोखे आघात के फलस्वरूप जागृत हुआ, एक विचित्र परिस्थिति के फलस्वरूप जिसका ऐसी किसी चीज़ से कोई सम्बन्ध नहीं था जो अब तक हो चुकी हो। दस दिन हुए रोगोझिन मुझसे एक ऐसे मामले के बारे में मिलने आए जिसकी चर्चा मैं इस समय नहीं करना चाहता। मैंने रोगोझिन को पहले कभी देखा नहीं था, लेकिन उनके बारे में सुन बहुत कुछ रखा था। मैंने उनकी ज़रूरत की सारी जानकारी उन्हें दी और वह जल्दी ही चले गए, और चूँकि वह इसी जानकारी के लिए आए थे इसलिए यही हमारी जान-पहचान का अन्त भी हो सकता था। लेकिन उनसे मुझे बहुत दिलचस्पी पैदा हुई, और उस पूरे दिन मैं अजीब विचारों में उलझा रहा, इसलिए मैंने उनके आने के जवाब में अगले दिन उनसे जाकर मिलने का फ़ैसला किया। मैंने देखा कि रोगोझिन को मेरा आना अच्छा नहीं लगा और, सच तो यह है, उन्होंने बहुत ही 'नाजुक-सा' इशारा किया कि हम दोनों के लिए एक-दूसरे को जानते रहने का कोई कारण नहीं है; फिर भी मैंने वहाँ एक बहुत रोचक घंटा बिताया, जैसा कि यक़ीनन उन्होंने भी किया होगा। हम दोनों के बीच इतना अन्तर था कि हम दोनों में से किसी का भी, ख़ासतौर पर मेरा, ध्यान इस बात की ओर न जाना असम्भव था; मैं एक ऐसा आदमी था जिसकी ज़िन्दगी के गिनती के दिन बाक़ी थे, और वह ऐसा था जो ज़िन्दगी और ज़िन्दादिली से भरपूर था, जो 'अन्तिम' निष्कर्षों, आँकड़ों और किसी भी ऐसी चीज़ की चिन्ता किए बिना वर्तमान में रह रहा था, जिसका सीधा सम्बन्ध किसी ऐसी चीज़ से...किसी ऐसी चीज़ से...हाँ, किसी ऐसी चीज़ से हो जिसके पीछे वह दीवाना था। मैं उम्मीद करता हूँ कि रोगोझिन साहब मुझे इन शब्दों के लिए क्षमा करेंगे, कुछ नहीं तो सिर्फ़ इसलिए कि मैं एक बुरा लेखक हूँ जो अपने विचार को व्यक्त करना

नहीं जानता। उनके गैर-दोस्ताना रवैए के बावजूद, मैंने यह सोचा कि वह तेज बुद्धिवाले आदमी हैं और बहुत कुछ समझने की क्षमता रखते हैं, हालाँकि जिस चीज़ से उनका निजी सम्बन्ध नहीं होता था उसमें वह कोई दिलचस्पी नहीं लेते थे। मैंने उन्हें अपनी 'अन्तिम आस्था' का कोई संकेत नहीं दिया, लेकिन न जाने क्यों मैंने यह महसूस किया कि मेरी बातें सुनते हुए उन्हें उसका अनुमान हो गया था। उन्होंने कुछ कहा नहीं—वह बेहद कम बोलते हैं। चलने से पहले मैंने उनसे कहा कि हमारे बीच जो विषमता और जो अन्तर था उस सबके बावजूद les extrémités se touchent[1] (मैंने उन्हें इसका मतलब रूसी में समझाया), इस तरह वह मेरी 'अन्तिम आस्था' से उतनी दूर नहीं रह गए जितना कि वह समझते थे। इसका जवाब उन्होंने बहुत चिड़चिड़ेपन और अरुचिपूर्ण भाव से मुँह बनाकर दिया, वह उठकर खड़े हो गए, मेरा हैट खुद लाकर मुझे दिया, यह जताते हुए जैसे मैं अपनी मर्जी से जा रहा था, और बड़ी सादगी से मुझे इस बहाने अपने उदास घर से बाहर निकाला लाए कि शिष्टतावश वह मुझे बाहर तक छोड़ने आ रहे थे; वह घर क्या कब्रिस्तान है, लेकिन, लगता है कि वह उन्हें पसन्द है, जो दरअसल समझ में भी आता है; जिस तरह की भरपूर और शानदार ज़िन्दगी वह बिताते हैं वह अपने आप में इतनी भरी-पूरी है कि उसे किसी पुनर्योग की ज़रूरत ही नहीं है।

"रोगोझिन के यहाँ जाकर मैं थककर चूर हो गया। इसके अलावा, सुबह से ही मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं लग रही थी; शाम को मुझे बहुत कमज़ोरी महसूस हुई और मैं अपने पलंग पर लेट गया; कभी-कभी मुझे बहुत तेज बुखार-सा महसूस होता था और बीच-बीच में सन्निपात की हालत हो जाती थी। कोल्या मेरे साथ ग्यारह बजे तक रहा। उसने मुझसे जो कुछ कहा और हम लोग किस चीज़ के बारे में बातें कर रहे थे वह सब मुझे याद है। जब मेरी आँखें कुछ क्षणों के लिए बन्द हो जाती थीं, तो मुझे ऐसा लगता था कि मैं सूरिकोव को देख रहा हूँ जिसे लाखों ही लाखों की दौलत मिल गई थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उसका क्या करे, वह अपनी सोने की थैलियों के बारे में दिमाग़ खपाता रहता था, इस डर से काँप-काँप उठता था कि वे कहीं चोरी न हो जाएँ, और ऐसा लगा कि आख़िरकार उसने उन्हें ज़मीन में गाड़ देने का फ़ैसला कर लिया था। अन्त में मैंने उससे कहा कि इतना ढेरों सोना ज़मीन में गाड़ देने के बजाय वह उसे गलवाकर अपने 'ठिठुरे हुए' बच्चे को दफ़न करने के लिए सोने का ताबूत बनवा ले और इसके लिए अपने बच्चे को क़ब्र में से खोद निकाले। ऐसा लगा कि उसने मेरे इस सुझाव को कृतज्ञता के आँसुओं के साथ स्वीकार किया, और फ़ौरन इस योजना को पूरा करने में जुट गया। मैं बस कोसता हुआ उसके पास से चला आया। जब मेरे होश-हवास फिर लौट आए तो कोल्या ने मुझे यक़ीन दिलाया कि मैं बिलकुल नहीं सोया था और यह कि मैं सारी देर उससे सूरिकोव की बातें करता रहा था। कभी-कभी ऐसे क्षण आते थे जब मैं भयानक व्यथा और बौखलाहट की हालत में पहुँच जाता था, जिसका नतीजा यह हुआ कि जब कोल्या मेरे पास से गया तो वह बहुत परेशान था। जब मैं उसके चले जाने पर दरवाज़ा बन्द करने उठा तो अचानक मुझे एक तस्वीर की याद आई जो मैंने रोगोझिन के यहाँ उनके घर के एक सबसे उदास कमरे के दरवाज़े के ऊपर टँगी हुई देखी थी। उन्होंने वहाँ से गुजरते हुए वह तस्वीर खुद मुझे दिखाई थी। मैं उसके सामने कोई पाँच मिनट तक खड़ा रहा था। कला की दृष्टि से वह बहुत अच्छी कृति नहीं थी; लेकिन उसने मुझमें बेचैनी की एक विचित्र भावना जागृत की।

"इस चित्र में ईसा मसीह को सलीब पर से उतारे जाने के फ़ौरन बाद दिखाया गया था। मैं

1. वैपरीत्यों का संगम होता है। (फ्रांसीसी)

समझता हूँ कि चित्रकारों की आमतौर पर आदत होती है कि जब वे ईसा का चित्र बनाते हैं, चाहे सलीब के ऊपर या सलीब से उतारे जाने के बाद, तो वे उन्हें इस तरह प्रस्तुत करते हैं जैसे उनके चेहरे पर असाधारण सुन्दरता का लेश अभी तक बाक़ी हो; उस सौन्दर्य को वे उनकी असीम व्यथा के क्षणों में भी बनाए रखने की चेष्टा करते हैं। रोगोझिन के चित्र में इस सुन्दरता का नाम-निशान तक नहीं था। वह एक ऐसे आदमी की लाश का यथार्थ चित्रण है जो सलीब पर चढ़ाए जाने से पहले असह्य पीड़ाएँ झेल चुका है, जो घायल हो गया है, जिसे यातनाएँ दी गई हैं, जिसे अपने कन्धे पर सलीब ले जाते हुए उसके बोझ की वजह से गिर पड़ने पर सन्तरियों ने पीटा है, लोगों ने पीटा है, और, अन्त में, जिसने सलीब पर लटके रहने की पीड़ा छह घंटे तक (मेरे हिसाब से कम से कम इतनी तो अवश्य ही) झेली है। यह सच है कि यह एक ऐसे आदमी का चेहरा है जिसे अभी-अभी सलीब पर से उतारा गया है—यानी जिसमें अभी काफ़ी गर्मी और ज़िन्दगी बाक़ी है; लाश अभी तक सख़्त पड़ना नहीं शुरू हुई है, जिसकी वजह से मृतात्मा के चेहरे पर अभी तक पीड़ा का भाव है, मानो वह अभी तक उसे अनुभव कर रहा हो (इस भाव को चित्रकार ने बहुत अच्छी तरह पकड़ा है); दूसरी ओर चेहरे के साथ तनिक भी दया नहीं दिखाई गई है; वह स्वयं प्रकृति का चित्रण है, और सच तो यह है कि इतनी पीड़ा सहने के बाद किसी भी आदमी की लाश ऐसी ही दिखाई देगी। मैं जानता हूँ कि अपने अस्तित्व की पहली कुछ शताब्दियों के दौरान ईसाई चर्च ने यह फतवा दे रखा था कि ईसा ने सचमुच पीड़ा सहन की थी और यह दुःख-भोग प्रतीकात्मक नहीं था। इसलिए सलीब पर लटका हुआ उनका शरीर पूरी तरह प्रकृति के नियमों के अधीन था। चित्र में उनका चेहरा बुरी तरह चोट खाया हुआ, फूला हुआ, भयानक, सूजे हुए और ख़ून में लिथड़े घावों से भरा हुआ है, आँखें खुली हुई और उनकी पुतलियाँ कुछ तिरछी हैं; आँखों के बड़े-बड़े खुले हुए दीदों की सफ़ेदी में एक तरह की मुर्दा और काँच जैसी चमक है। लेकिन अजीब बात है कि इस आदमी की लाश को देखते हुए, जिसे असह्य यातनाएँ दी गई हैं, बरबस यह विचित्र और रोचक प्रश्न देखनेवाले के मन में उठता है -अगर उनके सारे शिष्यों ने, उनके भावी मुख्य धर्म-प्रचारकों ने, उन औरतों ने जो उनकी अनुयायी थीं और सलीब के पास खड़ी थीं, उन सब लोगों ने जो उन पर विश्वास रखते थे और उन्हें पूजते थे, ऐसी लाश को (और वह निश्चित रूप से वैसी ही रही होगी) देखा होगा, तो उन्हें उस लाश को देखते समय यह विश्वास कैसे हुआ होगा कि शहीद फिर जीवित हो उठेगा ? इस प्रसंग में यह विचार उठना स्वाभाविक है कि मृत्यु अगर इतनी ही भयानक है और प्रकृति के नियम सचमुच इतने ही शक्तिशाली हैं तो उन पर काबू पाना कैसे सम्भव है ? उन पर काबू कैसे पाया जा सकता है जब स्वयं वह उस पर विजय नहीं पा सके, वह जिन्होंने अपने जीवनकाल में ही प्रकृति को वश में कर लिया था और जिनकी आज्ञा का प्रकृति पालन करती थी, जिन्होंने कहा था--Talitha cumi ! और किशोरी उठ खड़ी हुई थी, जिन्होंने चिल्लाकर कहा था, 'लैजरस उठ खड़े हो' और मुर्दा उठ खड़ा हुआ था ? उस चित्र को देखते हुए प्रकृति के बारे में आपकी धारणा यह बनती है कि वह कोई विशाल, नृशंस और मूक पशु है, या यह कहना ज़्यादा ठीक होगा, बल्कि कहीं ज़्यादा ठीक होगा, भले ही वह कुछ विचित्र लगे, कि वह आधुनिकतम डिजाइन के किसी बहुत बड़े इंजन के समान है, जिसने एक महान और अमूल्य प्राणी को बिना सोचे-समझे पकड़ लिया है, उसे काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया है, और निगल लिया है—बिलकुल निरीह भाव से और कुछ भी महसूस किए बिना,—एक ऐसे प्राणी को जो समस्त प्रकृति और उसके सारे नियमों से ज़्यादा मूल्यवान है, जो समस्त पृथ्वी से ज़्यादा मूल्यवान है, जिस पृथ्वी को शायद केवल उस प्राणी के आगमन के लिए ही बनाया गया था ! ऐसा लगता है कि यह एक अन्धकारमयी,

जघन्य, और विवेकहीन शाश्वत शक्ति का चित्र है, हर चीज़ जिसके अधीन कर दी गई है, और यह विचार अचेतन रूप से आपके मन में उठता है। मृतात्मा को घेरे हुए सारे लोगों पर, जिनमें से किसी को भी चित्र में दिखाया नहीं गया है, उस संध्या को जिसने उनकी सारी आशाओं को और उनके प्रायः सभी विश्वासों को एक ही आघात से चकनाचूर कर दिया था, असह्य व्यथा और व्याकुलता की भावना छा गई होगी। वे अत्यन्त आतंक की दशा में यहाँ से गए होंगे, हालाँकि उनमें से हर एक अपने मन में एक ऐसा सशक्त विचार भी ले गया होगा जिसे उनसे कभी छीना नहीं जा सकता था। और यदि सलीब पर चढ़ाए जाने की पूर्ववेला में प्रभु यह देख पाते कि सलीब से उतारे जाने के बाद वह कैसे दिखाई देंगे, तो क्या वह सलीब पर इस तरह चढ़ते और उस तरह मरते जैसे वह मरे ? उस चित्र को देखते समय आप यह प्रश्न भी अपने आपसे पूछे बिना नहीं रह सकते।

"कोल्या के चले जाने के लगभग डेढ़ घंटे तक यह सब कुछ अस्पष्ट रूप से बीच-बीच टुकड़ों में और शायद, जब मैं सचमुच सरसाम की हालत में था, कभी-कभी सुस्पष्ट आकृतियों के रूप में भी मेरे दिमाग़ में गुजरने लगा। क्या कोई ऐसी चीज़ जिसकी कोई आकृति ही न हो सुस्पष्ट आकृति के रूप में प्रकट हो सकती है ? लेकिन कभी-कभी यह कल्पना मेरे मन में अवश्य जागृत होती थी कि मैं कुछ विचित्र और असम्भव रूप में उस अनन्त शक्ति को, उस अन्धकारमय, मूक प्राणी को देखता हूँ। मुझे याद है कि ऐसा प्रतीत होता था कि जलती हुई मोमबत्ती से रास्ता दिखाता हुआ कोई हाथ पकड़कर मुझे लिए जा रहा है, और मुझे एक बड़ा-सा और भयानक मकड़ा दिखाकर मुझे यक़ीन दिला रहा है कि यही वह अन्धकारमय, मूक और सर्वशक्तिमान प्राणी है, और मेरे क्रोध पर हँस रहा है। मेरे कमरे की देव-प्रतिमा के सामने रात-भर एक छोटा-सा चिराग जलता रहता है, मद्धिम-सी क्षीण ज्योतिवाला, फिर भी उसकी रोशनी में हर चीज़ दिखाई देती है, और पास से भी जा सकता है। मैं समझता हूँ कि शायद आधी रात के बाद का समय रहा होगा; मैं सो बिलकुल नहीं रहा था और आँखें पूरी तरह खोले लेटा हुआ था; अचानक मेरे कमरे का दरवाज़ा खुला और रोगोझिन अन्दर आए।

"अन्दर आकर उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर लिया, चुपचाप मुझे देखा और तब पास देव-प्रतिमा के चिराग के लगभग ठीक नीचे कोने में रखी हुई कुर्सी की ओर गए। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ और मैंने प्रत्याशा-भरी दृष्टि से उन्हें देखा। रोगोझिन मेज़ के सहारे चुपचाप मुझे घूरने लगे। दो-तीन मिनट इसी तरह बीत गए और मुझे अच्छी तरह याद है कि उनकी इस चुप्पी से मुझे बहुत ठेस पहुँची थी और मैं झुँझला उठा था। आख़िर वह बोलते क्यों नहीं ? यह बात तो मुझे विचित्र लगी ही थी कि वह इतनी रात गए आए थे, लेकिन मुझे याद है कि इस बात पर मुझे उतना आश्चर्य नहीं हुआ था। इसके विपरीत, हालाँकि सबेरे मैंने अपने विचार को शायद स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं किया था, मैं जानता हूँ कि वह उसे समझ गए थे; और मेरा विचार था ही ऐसा कि उसके बारे में वह एक बार फिर बात करने आ सकते थे, चाहे कितनी ही देर क्यों न हो गई हो। स्वाभाविक रूप से मैंने सोचा कि वह उसी के लिए आए होंगे। सबेरे हम दोनों एक-दूसरे से बहुत अधिक मित्रतापूर्ण वातावरण में नहीं अलग हुए थे, और मुझे याद है कि उन्होंने एक-दो बार बहुत व्यंग से मेरी ओर देखा था। इस समय मुझे उनकी आँखों में वही व्यंगपूर्ण भाव दिखाई दे रहा था, और वही मुझे बहुत बुरा लग रहा था। शुरू में मुझे इसके बारे में कोई सन्देह नहीं था कि वह कोई भूत-प्रेत या विभ्रम नहीं, बल्कि रोगोझिन ही थे। सच तो यह है कि इसके बारे में शंका करने की बात मुझे कभी सूझी ही नहीं।

"इस बीच वह वहीं बैठे रहे और उसी व्यंग-भरी मुस्कराहट से मुझे घूरते रहे। मैंने गुस्से से बिस्तर पर करवट बदली, कुहनी टिकाकर तकिए का सहारा लिया, और जान-बूझकर एक शब्द भी न कहने का पक्का इरादा कर लिया, भले ही हम लोग सारा समय इसी तरह बैठे हुए क्यों न काट देते। किसी वजह से मैंने मन में ठान लिया था कि चुप्पी पहले उन्हीं को तोड़नी होगी। लगता है कि इसी तरह बीस मिनट बीत गए होंगे। अचानक यह विचार मेरे मन में उठा—अगर यह रोगोझिन न हों और कोई भूत-प्रेत हो तो ?

"मैंने न तो अपनी बीमारी के दौरान कोई भूत देखा है और न उससे पहले कभी; लेकिन मैं हमेशा महसूस करता था, जब मैं लड़का था तब भी और अब भी—यानी, अभी हाल तक—कि अगर मुझे कभी भूत दिखाई दिया तो मैं वहीं पर मर जाऊँगा, हालाँकि मैं भूत-प्रेत में विश्वास नहीं रखता। फिर भी जब यह विचार मेरे मन में उठा कि वह रोगोझिन नहीं बल्कि कोई भूत था, तब मुझे याद है कि मुझे ज़रा भी डर नहीं लगा था। इतना ही नहीं, मुझे निश्चित रूप से क्रोध आया था। एक और विचित्र बात यह थी कि इस प्रश्न के उत्तर में कि वह रोगोझिन स्वयं थे या कोई भूत, मुझे शायद उतनी दिलचस्पी नहीं थी जितनी कि होनी चाहिए थी; मैं समझता हूँ कि उस समय मैं किसी और ही बात के बारे में सोचता रहा था। उदाहरण के लिए, मुझे इस बात में कहीं ज़्यादा दिलचस्पी थी कि रोगोझिन, जिन्हें सबेरे मैंने ड्रेसिंग-गाऊन और स्लीपरें पहने देखा था, इस समय ड्रेस-कोट और सफ़ेद वास्कट क्यों पहने थे और सफ़ेद टाई क्यों लगाए थे। मेरे दिमाग़ में यह विचार भी बिजली की तरह कौंध गया कि अगर वह भूत हैं और मुझे उनसे डर नहीं लगता तो क्यों न उठकर मैं उनके पास जाऊँ और पक्के तौर पर मालूम कर लूँ ? लेकिन शायद मेरी हिम्मत नहीं पड़ रही थी और मैं डर रहा था। लेकिन डर लगने की बात मन में आते ही अचानक मुझे लगा जैसे किसी ने मेरे शरीर पर बर्फ का डला फेर दिया हो; मेरी पीठ पर सिहरन की लहर-सी दौड़ गई और मेरे घुटने काँपने लगे। ठीक उसी क्षण, मानो यह भाँपकर कि मुझे डर लग रहा है, रोगोझिन ने अपना वह हाथ हटा लिया जिसके सहारे वह झुके हुए थे, सीधा तनकर बैठ गए और इस तरह मुँह खोलने लगे मानो हँसनेवाले हों; उन्होंने मेरी आँखों में आँखें डालकर देखा। मुझे इतना ताव आया कि मेरा जी चाहा कि उन पर झपट पड़ूँ, लेकिन चूँकि मैंने पहले न बोलने की क़सम खा रखी थी इसलिए मैं पलंग पर लेटा रहा, इसलिए और भी कि अभी तक मैं फ़ैसला नहीं कर पाया था कि वह रोगोझिन थे या नहीं।

"मुझे ठीक से याद नहीं कि यह सिलसिला कितनी देर चलता रहा; न ही मुझे यह याद आ रहा है कि बीच-बीच में मैं बेहोश हो जाता था कि नहीं। आख़िरकार, रोगोझिन उठे और उन्होंने धीरे-धीरे और बड़े ग़ौर से मुझे देखा जैसे उन्होंने आते समय देखा था, लेकिन अब वह खीसें निकालकर हँस नहीं रहे थे। वह चुपचाप, लगभग दबे पाँव दरवाज़े तक गए, उसे खोला, बाहर निकले, और अपने पीछे उसे बन्द कर दिया। मैं बिस्तर से नहीं उठा; याद नहीं कितनी देर मैं आँखें खोले लेटा सोचता रहा; भगवान ही जाने मैं क्या सोच रहा था; मुझे यह भी याद नहीं कि क़ब मेरी आँख लग गई। अगले दिन सबेरे मैं दरवाज़े पर दस्तक सुनकर लगभग दस बजे जागा। मैंने नियम बना दिया है कि अगर दस बजे तक मैं खुद दरवाज़ा खोलकर चाय ले आने को न कहूँ तो नौकरानी मेरा दरवाज़ा खटखटाए। दरवाज़ा खोलते ही यह बात मेरे दिमाग़ में आई कि अगर दरवाज़ा बन्द था तो वह अन्दर आए कैसे ? मैंने पूछ-ताछ की और इस नतीजे पर पहुँचा कि असली रोगोझिन अन्दर आ ही नहीं सकते थे क्योंकि रात को सारे दरवाज़े बन्द थे।

"इसी विचित्र घटना की वजह से, जिसका वर्णन मैंने इतने विस्तार से किया है, मैंने अपना

मन निश्चित रूप से पक्का कर लिया। इसलिए अन्तिम निर्णय पर पहुँचने में जिस चीज़ ने मेरी सहायता की वह तर्क या कोई तर्कसंगत आस्था नहीं, बल्कि तीव्र घृणा की भावना थी। जब जीवन ऐसे वीभत्स और अपमानजनक रूप धारण कर लेता है तो जीते रहना असम्भव है। उस प्रेतात्मा ने मुझे अपमानित किया था। मैं किसी ऐसी अन्धकारमयी शक्ति के अधीन नहीं रह सकता जो भयानक मकड़े का रूप धारण कर लेती हो। और झुटपुटे के समय जाकर जब मैंने आख़िरकार जान लिया कि मैं पूर्णतः दृढ़ संकल्प के अन्तिम चरण में पहुँच गया हूँ, तब मैंने महसूस किया कि मेरी तबियत बेहतर है। लेकिन यह तो पहला ही चरण था, दूसरे चरण के लिए मैं पाव्लोव्स्क गया, जिसके बारे में मैं पहले ही काफ़ी विस्तार से समझा चुका हूँ।"

7

"मेरे पास एक छोटा-सा जेबी पिस्तौल था; मैंने उसे बहुत पहले खरीदा था जब मैं बिलकुल लड़का ही था, उस हास्यास्पद उम्र में जब अचानक आमने-सामने की लड़ाइयों और लुटेरों की बटमारी के क़िस्सों में अचानक रुचि पैदा हो जाती है; मैं भी कल्पना किया करता था कि किस तरह मुझे भी आमने-सामने की लड़ाई के लिए ललकारा जाएगा और कैसे आन-बानवाले आदमी की तरह मैं अपने प्रतिद्वन्द्वी के पिस्तौल के सामने खड़ा रहूँगा। जिस डिब्बे में वह पड़ा था उसमें मुझे दो गोलियाँ मिलीं, और बारूद रखने के सींग में तीन गोलियों के लिए काफ़ी बारूद। यह पिस्तौल बिलकुल बेकार है, उससे सीधा निशाना लगाना नामुमकिन है और पन्द्रह फुट से आगे की चीज़ को तो आप निशाना बना ही नहीं सकते; अलबत्ता, अगर आप उसे अपनी कनपटी के पास रखकर गोली चलाएँ तो आपका भेजा ज़रूर उड़ जाएगा।

"मैंने पाव्लोव्स्क में सूरज निकलते समय पार्क में मरने का फ़ैसला किया था ताकि घर पर किसी को विघ्न न पड़े। मेरी 'स्वीकारोक्ति' से पुलिस को सारी बात काफ़ी अच्छी तरह समझ में आ जाएगी। जो लोग मनोविज्ञान से लगाव रखते हैं और उनके अलावा वे भी जो ऐसा करना चाहें, उससे कोई भी नतीजा निकाल सकते हैं। लेकिन मैं नहीं चाहता कि मेरी यह पांडुलिपि किसी पराए हाथ में जाए। मेरी प्रार्थना है कि इसकी एक प्रति प्रिंस अपने पास रख लें और एक प्रति अग्लाया इवानोव्ना येपांचिना को दे दी जाए। यही मेरी इच्छा है। मैं अपना कंकाल विज्ञान के उपयोग के लिए चिकित्सा अकादमी को अर्पित करता हूँ।

"मैं अपने ऊपर किसी के भी अधिकार को स्वीकार नहीं करता और मैं जानता हूँ कि अब मैं अदालत की भी पकड़ के बाहर हूँ। अभी बहुत समय नहीं हुआ जब वह विचार मुझे बहुत रोचक लगा था कि अगर मुझे जिसे भी जी चाहे मार डालने की धुन सवार हो जाए, या एक साथ दर्जन-भर लोगों को भी, या कोई भयानक काम करने की— कोई ऐसा काम जिसे दुनिया में सबसे जघन्य अपराध समझा जाता हो—तो अदालत यह देखकर कि मुझे अब सिर्फ़ दो या तीन हफ़्ते ही और जीना है बड़े धर्मसंकट में पड़ जाएगी, क्योंकि अब किसी भी तरह की यातना देने की तो बात ही नहीं उठती। मैं उनके अस्पताल में गरम-गरम बिस्तर पर, अच्छी देखभाल करनेवाले डॉक्टर की निगरानी में बेहद आराम से मरता, घर की अपेक्षा कहीं अधिक आराम से और कहीं अधिक सुखद गर्मी अनुभव करते हुए। मेरी समझ में नहीं आता कि जो लोग मेरी जैसी स्थिति में होते हैं उन्हें यह बात क्यों नहीं सूझती, मज़ाक़ में ही सही। लेकिन शायद सूझती भी हो—हमारे बीच भी बहुत-से ऐसे ज़िन्दादिल लोग हैं।

“भले ही मैं अपने ऊपर किसी के अधिकार को स्वीकार न करता हूँ, लेकिन इतना मैं ज़रूर समझता हूँ कि मेरा फ़ैसला उस वक़्त किया जाएगा जब मैं अपने बचाव में न कुछ कह सकूँगा न कुछ सुन सकूँगा। मैं अपने पीछे अपनी सफ़ाई में एक शब्द भी छोड़े बिना जाना नहीं चाहता। एक स्वतन्त्र सफ़ाई, वह नहीं जो जबर्दस्ती मुझसे निकलवाई गई हो, वैसी नहीं जिसमें मैं अपने आपको उचित ठहराने की कोशिश करूँ—बिलकुल नहीं ! मुझे किसी बात के लिए किसी से माफ़ी माँगनी नहीं है—मैं ऐसा सिर्फ़ इसलिए कर रहा हूँ कि मेरा जी चाहता है।

“पहली बात तो ध्यान में रखने लायक़ यह विचित्र बात है—कोई भी किस अधिकार से और किस उद्देश्य से मेरे इस अधिकार को छीनने की ठानेगा कि अब जबकि मेरे पास जीने के लिए सिर्फ़ दो-तीन हफ़्ते रह गए हैं तो मैं जो चाहूँ करूँ ? इसमें किसी अदालत को क्या दखल है ? कौन चाहता है कि मुझे न सिर्फ़ मौत की सज़ा सुना दी जाए बल्कि एक भले आदमी की तरह मैं इस बात का इन्तज़ार भी करूँ कि वह सज़ा ठीक वक़्त पर दी भी जाए ? क्या कोई सचमुच ऐसा चाहता है ? नैतिकता की खातिर ? यह बात तो बिलकुल समझ में आती है कि अगर मैं बिलकुल हट्टे-कट्टे और पूर्णतः स्वस्थ होने की हालत में अपनी जान ले लूँ जो शायद ‘मेरे साथ के दूसरे इंसानों के किसी काम आ सकती हो’, इत्यादि-इत्यादि, तो नैतिकता परम्परागत ढंग से मुझे धिक्कार सकती है कि मैंने इजाज़त लिए बिना अपनी जान ठिकाने लगा दी, या स्वयं अपने ही निर्धारित किए हुए किसी और कारण से। लेकिन अब—अब जबकि मुझे मौत की सज़ा दिए जाने की तारीख़ तै कर दी गई है ? यह कैसी नैतिकता है जो न सिर्फ़ आपकी जान माँगती है बल्कि मरते वक़्त की उस आख़िरी खरखराहट का भी तक़ाजा करती है जिसके साथ आप प्रिंस के तसल्ली-भरे शब्दों को सुनते हुए अपने प्राणों का अन्तिम क्षण त्यागते हैं जिनकी ईसाई दलीलें अनिवार्य रूप से इसी सुखद निष्कर्ष पर पहुँचती हैं कि दरअसल तुम्हारे लिए मर जाना कहीं बेहतर है। (उनके जैसे ईसाई हमेशा इस नतीजे पर पहुँचते हैं—यह उनकी सबसे प्रिय सनक है।) और वे अपने हास्यास्पद ‘पाव्लोव्स्क के पेड़ों’ की हर वक़्त चर्चा करने के लिए इतने उत्सुक क्यों रहते हैं ? मेरे जीवन के अन्तिम क्षणों में मिठास घोलने के लिए ? क्या वे इस बात को नहीं समझ पाते कि जितना ही मैं खोया-खोया-सा रहूँगा और जितना ही अधिक मैं अपने आपको जीवन और प्रेम के उस अन्तिम भ्रम के अधीन करता जाऊँगा जिसकी मदद से वे मेयेर की दीवार को और उस पर इतने स्पष्ट और खुले ढंग से लिखी हुई हर बात को मेरी आँखों से दूर कर देना चाहते हैं, वे मुझे उतना ही अधिक दुःखी बना देंगे ? मुझे आपकी प्रकृति से, आपके पाव्लोव्स्क के पार्क से, आपके सूर्योदयों और सूर्यास्तों से, आपके नीले आसमान से, और आपके निश्चिन्त चेहरों से क्या मतलब, जबकि वह सारा जश्न, जिसका कोई अन्त नहीं है, मुझे और केवल मुझे प्रवेश के अधिकार से वंचित करके आरम्भ हो चुका है ? मुझे इस सारे सौन्दर्य की क्या परवाह जब हर मिनट, हर सेकंड मुझे यह स्वीकार करना पड़ रहा है—सच तो यह है कि मैं ऐसा करने पर मजबूर किया जा रहा हूँ—कि मेरे पास धूप में इस समय गुँजन करता हुआ वह छोटा-सा भुनगा इस जश्न और उस समूह-गान में हिस्सा ले रहा है, वह उसमें अपना स्थान जानता है, वह उस स्थान से प्यार करता है और सुखी है, और यह कि अकेला मैं ही तिरस्कृत हूँ और केवल कायरता के कारण मैंने अभी तक इस बात को स्वीकार नहीं किया है ! अरे, मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि प्रिंस और वे सब लोग कितना चाहते होंगे कि ‘कपट और दुष्टता से भरे हुए’ ये भाषण देने के बजाय मैं शिष्टता और नैतिकता की विजय की खातिर मिलवुआ का यह प्रसिद्ध क्लासिकी छन्द गाता—

O, puissent voir votre beaut'e sacr'ee
Tant d'amis sourds'a mes adieux !
Qu'ils meurent pleins de jours, que leur mort soit pleur'ee,
Qu'un ami leur ferme les yeux ![1]

"लेकिन मेरा विश्वास कीजिए, मेरा विश्वास कीजिए, ऐ, भोले-भाले लोगो, कि फ्रांसीसी कविता की इन अत्यन्त शिक्षाप्रद पंक्तियों में, संसार को दिए गए इस विद्वत्तापूर्ण आशीर्वाद में इतनी कटुता छिपी हुई है, इतना गहन और आत्म-तोषक द्वेष है कि कवि स्वयं एक जाल में फँस गया और उस द्वेष को कोमल भावनाओं के आँसू समझ बैठा और इसी विश्वास को लिए हुए उसने अपने प्राण त्याग दिए—भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे ! मैं चाहता हूँ कि आप लोग इस बात को समझें कि स्वयं अपनी मूल्यहीनता और शक्तिहीनता की चेतना पर अपमानित महसूस करने की भी एक सीमा होती है जिससे आगे आदमी नहीं जा सकता, और जिसके बाद वह स्वयं अपने अपमान में अत्यधिक सन्तोष अनुभव करने लगता है।...इस दृष्टि से विनम्रता निश्चय ही एक महान शक्ति है, यह मैं मानता हूँ—हालाँकि उस अर्थ में नहीं जिस अर्थ में धर्म विनम्रता को एक शक्ति मानता है।

"धर्म ! मैं शाश्वत जीवन के अस्तित्व को स्वीकार करता हूँ, और शायद हमेशा स्वीकार करता रहा हूँ। माना कि चेतना ने एक उच्चतर शक्ति के इच्छा-बल से उद्दीप्त होकर सारी दुनिया को सम्बोधित करके कहा है—'मैं हूँ !', और माना कि उसे इस उच्चतर शक्ति ने सहसा आदेश दिया है कि वह नष्ट हो जाए क्योंकि किसी कारण यह आवश्यक है—इसके लिए कोई कारण बताया नहीं गया है—यह सब माना, मैं यह सब स्वीकार करता हूँ, लेकिन वह पुराना, हमेशा का सवाल फिर बाक़ी रहता है—मेरी विनम्रता का इस सबसे क्या सम्बन्ध ? क्या यह सम्भव नहीं है कि मुझे बस खा लिया जाए, मुझसे यह आशा किए बिना कि मैं उसकी प्रशंसा भी करूँ जिसने मुझे खा लिया है ? क्या वहाँ ऊपर कोई बहुत बुरा मानेगा अगर मैं एक और पखवाड़े तक प्रतीक्षा करने से इन्कार कर दूँ ? मैं इस पर विश्वास नहीं करता; यह मानना कहीं अधिक सम्भाव्य है कि मेरे तुच्छ जीवन की, एक अणु के जीवन की आवश्यकता केवल किसी सर्वव्यापी सामंजस्य को पूरा करने के लिए, किसी प्रकार के जोड़-घटाव के लिए, किसी विषमता की खातिर, या ऐसी ही किसी और वजह से पड़ी होगी, ठीक उसी प्रकार जैसे बलि के रूप में प्रतिदिन करोड़ों जीवों के प्राणों की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि उनकी मृत्यु के बिना संसार का अस्तित्व नहीं रह सकता (हालाँकि मुझे कहना पड़ता है कि यह अपने आपमें कोई बहुत उदार विचार नहीं है)। लेकिन यह सब तो माना ! मैं स्वीकार करता हूँ कि इसके बिना—मतलब यह कि लगातार एक-दूसरे को खाए बिना—संसार को व्यवस्थित करना ही बिलकुल असम्भव था; वास्तव में, मैं तो यहाँ तक स्वीकार करने को तैयार हूँ कि मुझे उस व्यवस्था के बारे में कुछ भी नहीं मालूम। पर एक बात मैं निश्चित रूप से जानता हूँ—अगर मुझे एक बार भी इस बात की चेतना दे दी जाए कि 'मैं हूँ', तो मेरे लिए इस बात से क्या अन्तर पड़ता है कि इस संसार को दोषपूर्ण बनाया गया है और यह कि अन्यथा उसका अस्तित्व ही नहीं रह सकता ? उसके बाद कौन मुझ पर मुक़द्दमा चलाएगा और किस

1 देख लें तुम्हारा पावन सौन्दर्य
मित्र वे, मेरे अन्त से उदासीन !
जिएँ वे अपने दिन पूरे,
आँसू बहें उनके निधन पर
और मित्र मूँदें नेत्र उनके ! (फ्रांसीसी)

अभियोग में ? आपका जो जी चाहे कहिए, लेकिन यह सब कुछ असम्भव और अन्यायपूर्ण है।

"फिर भी, मैं लाख कोशिश करने पर भी कभी यह कल्पना नहीं कर सका कि कोई भावी जीवन नहीं है और कोई विधाता नहीं है। सर्वथा सम्भव है कि उनका अस्तित्व हो, लेकिन हम भावी जीवन और उसके नियमों के बारे में कुछ नहीं समझते। लेकिन अगर उसे समझना इतना कठिन और असम्भव है, तो क्या मैं इस बात के लिए उत्तरदायी हो सकता हूँ कि जिसे समझना असम्भव था उसे मैं नहीं समझ पाया ? हाँ लोग कहते हैं—और, ज़ाहिर है, इस मामले में प्रिंस उनके साथ हैं—कि यहीं पर तो आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है, कि तर्क किए बिना हमें आज्ञापालन करना चाहिए, केवल इसलिए कि नैतिक दृष्टि से यही उचित है, और यह कि अपनी इस विनम्रता का मुझे उस दुनिया में पुरस्कार मिलेगा। विधाता को समझ सकने में अपनी असमर्थता पर झुँझलाहट के कारण उस पर अपने विचार थोपकर हम उसका बहुत अपमान करते हैं। लेकिन फिर, अगर उसे समझ सकना असम्भव है तो, मैं एक बार फिर कहता हूँ, जिस चीज़ को समझने की मनुष्य को क्षमता ही नहीं दी गई है उसके लिए मनुष्य को उत्तरदायी ठहराना कठिन है। और अगर ऐसा है तो मुझ पर इसलिए मुक़द्दमा कैसे चलाया जा सकता है कि मैं विधाता की वास्तविक इच्छा और उसके नियमों को नहीं समझ सका ? नहीं, बेहतर यही होगा कि हम धर्म की चर्चा रहने ही दें।

"इसके अलावा, मैं काफ़ी कह चुका हूँ। मुझे विश्वास है कि इन पंक्तियों को पढ़ते समय सूरज निकल चुका होगा और 'आकाश में उसकी गूँज फैल चुकी होगी', और उसकी असीम और अपरिमित शक्ति संसार पर छलक पड़ेगी। तथास्तु ! मैं शक्ति और जीवन के स्रोत की ओर सीधे देखता हुआ मरूँगा और मुझे इस जीवन की इच्छा नहीं रह जाएगी ! अगर जन्म न लेना मेरे बस में होता, तो ऐसी हास्यास्पद शर्तों पर मैं अस्तित्व को कभी स्वीकार ही नहीं करता। लेकिन मरना अब भी मेरे बस में है, हालाँकि मैं जो वापस देता हूँगा, वह पहले ही सीमित है। यह कोई बहुत बड़ी शक्ति नहीं है, कोई बहुत बड़ा विद्रोह भी नहीं है।

"एक अन्तिम सफ़ाई—मैं इसलिए बिलकुल नहीं मर रहा हूँ कि मुझमें इन तीन सप्ताहों को सहन करने की शक्ति नहीं है। उफ़, मुझमें इतनी शक्ति होनी चाहिए थी, और अगर मैं चाहता तो जो बुराई मेरे साथ की गई है उसकी चेतना मात्र से मुझे काफ़ी तसल्ली मिलनी चाहिए थी; लेकिन मैं फ्रांसीसी कवि तो हूँ नहीं और मुझे ऐसी तसल्लियों की कोई ज़रूरत भी नहीं है। अन्त में, यह प्रलोभन भी है—प्रकृति ने तीन सप्ताह की सज़ा सुनाकर मेरी गतिविधियों को इतना सीमित कर दिया है कि आत्महत्या शायद एकमात्र ऐसी चीज़ रह गई है जिसे इच्छानुसार आरम्भ करने और समाप्त करने के लिए अब भी मेरे पास समय है। तो शायद मैं कुछ काम करने की इस अन्तिम सम्भावना का सदुपयोग करना चाहता हूँ ? कभी-कभी प्रतिरोध करना भी कोई छोटा काम नहीं होता।..."

'स्वीकारोक्ति' पूरी हुई, इप्पोलीत आख़िरकार रुक गया।...

चरम सीमा तक पहुँच जानेवाले उदाहरणों में कटु स्पष्टवादिता की वह अन्तिम अवस्था होती है जिसमें पहुँचकर हर चीज़ से तंग आए हुए और आपे से बाहर अधीर आदमी को किसी चीज़ से डर नहीं लगता और वह किसी भी अशोभनीय काण्ड के लिए तैयार रहता है और सच तो यह है कि उसे उससे खुशी होती है : वह एक ही मिनट बाद किसी गिरजे के घंटाघर से कूद पड़ता और ऐसा करके किसी भी सम्भव ग़लतफ़हमी को दूर कर देने के अस्पष्ट, परन्तु दृढ़ संकल्प के साथ लोगों पर टूट पड़ता है। आमतौर पर इस तरह की मनःस्थिति का एक लक्षण होता है

तात्कालिक और पूर्ण शारीरिक क्लान्ति। जिस असाधारण और लगभग अप्राकृतिक तनाव की मदद से इप्पोलीत उस क्षण तक क्रियाशील रहा था वह सहसा उस अन्तिम चरण में पहुँच गया था। यह अट्ठारहवर्षीय लड़का, जो बीमारी से बिलकुल क्षीण हो चुका था, पेड़ से टूटे हुए काँपते पत्ते जैसा कमज़ोर लग रहा था। लेकिन जैसे ही उसने चारों ओर अपने श्रोताओं पर नज़र डाली—पिछले एक घंटे के दौरान पहली बार—वैसे ही उसकी आँखों और उसकी मुस्कराहट में अत्यन्त उपेक्षापूर्ण, अत्यन्त तिरस्कारपूर्ण और अत्यन्त तीव्र घृणा का भाव आ गया। उसे चुनौती देने की जल्दी थी। लेकिन उसके श्रोता भी बहुत क्रुद्ध थे। वे सब मेज़ के पास से शोर मचाते हुए और अपनी झुँझलाहट को छिपाए बिना उठ रहे थे। थकन, शराब और मानसिक तनाव ने आम अव्यवस्था को, और अगर कहा जा सके तो एक प्रकार से उन पर पड़नेवाले प्रभावों के घिनौनेपन को, और भी बढ़ा दिया था।

अचानक इप्पोलीत अपनी कुर्सी पर से उछल पड़ा मानो उसे जबर्दस्ती उस पर से खींच लिया गया हो।

"सूरज निकल आया है !" पेड़ों की चमकती हुई फुनगियों को देखकर और प्रिंस को उन्हें इशारे से इस तरह दिखाते हुए मानो वे कोई चमत्कार हों, वह चिल्लाया। "वह निकल आया !"

"कहीं आप यह तो नहीं समझ रहे थे कि वह नहीं निकलेगा ?" फ़ेर्दीश्चेंको ने पूछा।

"मनहूस गर्मी का एक और दिन," गान्या ने अपने हाथों में हैट लिए अंगड़ाई लेते हुए क्षणिक झुँझलाहट के साथ बुदबुदाकर कहा। "कहीं यह सूखा पूरे महीने न चलता रहे ! चलता है कि नहीं, प्तीत्सिन ?"

इप्पोलीत उसकी टिप्पणियों को लगभग हक्का-बक्का होकर आश्चर्य के साथ सुनता रहा; अचानक वह बेहद पीला पड़ गया और सिर से पाँव तक काँपने लगा।

"आपने यह उपेक्षा का भाव बिलकुल भद्दे तौर पर मेरा अपमान करने के इरादे से अपनाया है," उसने गान्या की ओर मुड़ते हुए उसकी आँखों में आँखें डालकर कहा। "आप बहुत पाजी हैं !"

"यह तो कमाल ही हो गया," फ़ेर्दीश्चेंको ने चिल्लाकर कहा। "कैसा बे-लगाम छोड़ दिया है अपने आपको ! कमाल की कमज़ोरी है !"

"वह निरा बेवक़ूफ़ है," गान्या ने कहा।

इप्पोलीत कुछ सम्भलकर बैठ गया।

"मैं इस बात को बिलकुल समझता हूँ, साहबान," उसने अभी तक काँपते हुए ऐसी आवाज़ में कहना शुरू किया जो हर शब्द पर लड़खड़ा जाती थी, "कि आपका मुझ पर झल्लाना बिलकुल ठीक ही है और...मुझे अफ़सोस है कि मैंने अपनी बकवास से आपको उबा दिया," (उसने पांडुलिपि की ओर इशारा किया), "बल्कि कहना चाहिए कि आपको पूरी तरह थकाकर चूर नहीं कर दिया।..." (वह अटपटे ढंग से मुस्कराया) "क्या मैंने आपको बिलकुल थका दिया है, येव्गेनी पाव्लोविच ?" उसने अचानक रादोम्स्की की ओर मुड़कर सवाल किया। "थका दिया या नहीं ? बताइए !"

"कुछ ज़रूरत से ज़्यादा लम्बा ज़रूर था, लेकिन..."

"मुझे सारी बात बता दीजिए ! ज़िन्दगी में एक बार तो झूठ न बोलिए !" इप्पोलीत ने काँपते हुए माँग की।

"उफ़, मेरे लिए सब एक ही बात है ! मेहरबानी करके मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिए, मैं हाथ जोड़कर कहता हूँ !" रादोम्स्की ने झल्लाकर मुँह फेर लिया।

"गुड-नाइट, प्रिंस," प्तीत्सिन ने प्रिंस के पास जाकर कहा।

"लेकिन वह अभी किसी भी क्षण अपने गोली मार लेगा ! ज़रा उसे देखिए तो !" वेरा ने चिल्लाकर कहा और बहुत भयभीत होकर वह इप्पोलीत के पास झपटकर गई और उसकी बाँह तक पकड़ ली। "अरे, इसने कहा था कि सूरज निकलते ही यह अपने गोली मार लेगा !"

"गोली-वोली कुछ नहीं मारेगा !" कई लोगों ने, जिनमें गान्या भी शामिल था, द्वेष से बुदबुदाकर कहा।

"ध्यान रखना," कोल्या भी इप्पोलीत की बाँह पकड़कर चिल्लाया। "ज़रा इसे देखिए तो ! प्रिंस ! प्रिंस ! मेहरबानी करके !"

वेरा, कोल्या, केल्लेर और बुर्दोव्स्की सभी ने इप्पोलीत को घेर लिया; उन चारों ने उसकी बाँहें पकड़ लीं।

"इसे अधिकार है...इसे अधिकार है !" बुर्दोव्स्की ने बुदबुदाकर कहा, हालाँकि उसकी भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे।

"माफ़ कीजिएगा, प्रिंस, लेकिन आपका क्या हुक्म है ?" लेबेदेव ने, जो नशे में चूर था और गुस्से के मारे ढिठाई पर उतर आया था, प्रिंस के पास जाकर पूछा।

"कैसा हुक्म ?"

"नहीं साहब, माफ़ कीजिएगा, लेकिन मैं इस घर का मालिक हूँ, जनाब, हालाँकि मैं आपके साथ कोई बदतमीजी नहीं करना चाहता...मेरा मतलब है, आप भी यहाँ के मालिक हैं, लेकिन मैं नहीं चाहता, जनाब, कि मेरे घर में...हाँ।"

"वह अपने गोली नहीं मारेगा...लड़का है, बस मज़ाक़ कर रहा है !" जनरल ईवोल्गिन अप्रत्याशित रूप से बेहद नाराज़ होकर और पूरे विश्वास के साथ चिल्लाए।

"शाबाश, जनरल साहब !" फ़ेर्दीश्चेंको ने ताली बजाकर कहा।

"मैं जानता हूँ कि वह अपने गोली नहीं मारेगा, जनरल साहब, मेरे परम माननीय जनरल साहब; लेकिन, फिर भी...क्योंकि, देखिए, मैं इस घर का मालिक हूँ।"

"देखिए, साहब तेरेंत्येव," प्तीत्सिन ने प्रिंस से विदा लेकर इप्पोलीत की तरफ़ अपना हाथ बढ़ाते हुए अचानक कहा। "मेरा ख़्याल है कि आपने अपने लेख में अपने कंकाल की चर्चा की है और कहा है कि आप उसे अकादमी को दिए जा रहे हैं, है न ? क्या वह आपका अपना कंकाल है—मेरा मतलब है, आपकी अपनी हड्डियाँ—जो आप दिए जा रहे हैं ?"

"जी हाँ, मेरी अपनी हड्डियाँ।..."

"समझ गया। मेरा मतलब है, बड़ी आसानी से ग़लती हो सकती है; मैंने सुना है कि ऐसा एक मामला पहले हो चुका है।"

"आप उसे तंग क्यों कर रहे हैं ?" प्रिंस ने अचानक चिल्लाकर कहा।

"आपने उसे रुला दिया," फ़ेर्दीश्चेंको ने अपनी ओर से जोड़ा।

लेकिन इप्पोलीत रो बिलकुल नहीं रहा था। वह अपनी जगह से उठने ही जा रहा था कि उन चार आदमियों ने, जिन्होंने उसे घेर रखा था फ़ौरन उसकी बाँहें पकड़ लीं। कई लोग हँस पड़े।

"यही तो वह चाहता था कि लोग उसकी बाँहें पकड़ लें—इसीलिए तो उसने अपना यह क़िस्सा पढ़ा था," रोगोझिन ने अपना मत प्रकट किया। "गुड-बाई, प्रिंस। बड़ी देर से बैठा हूँ यहाँ। हड्डियाँ दुखने लगीं मेरी।"

"अगर, तेरेंत्येव, सचमुच आपका इरादा अपने गोली मारने का था," रादोम्स्की हँसकर बोला,

"तो अगर मैं आपकी जगह होता तो इस तरह की टीका-टिप्पणी सुनने के बाद मैं अपने गोली बिलकुल न मारता, सिर्फ़ इन लोगों को मज़ा चखाने के लिए।"

"ये लोग तो मुझे अपने गोली मारते हुए देखने के लिए मरे जा रहे हैं !" इप्पोलीत उस पर झपट पड़ा। उसने अपनी बात इस तरह कही जैसे किसी पर हमला कर रहा हो।

"वे झुँझला रहे हैं कि उन्हें यह देखने को नहीं मिलेगा।"

"तो आपका भी ख़्याल है कि उन्हें यह देखने को नहीं मिलेगा।"

"मैं आपको उकसा नहीं रहा हूँ," रादोम्स्की ने बड़े सरपरस्ती के ढंग से अपने शब्दों को खींच-खींचकर कहा। "बल्कि इसकी उल्टी ही बात है, मैं तो समझता हूँ कि आप अपने गोली मार लेंगे। लेकिन मुख्य बात यह है कि अपना गुस्सा न भड़कने देना।..."

"अब जाकर मेरी समझ में आ रहा है कि इन लोगों के सामने अपना लेख पढ़कर मैंने कितनी बड़ी बेवक़ूफ़ी की !" इप्पोलीत ने रादोम्स्की को सहसा ऐसी याचना-भरी नज़रों से घूरते हुए कहा जैसे किसी घनिष्ठ मित्र से दोस्ताना सलाह माँग रहा हो।

"बहुत ही हास्यास्पद स्थिति है, लेकिन...हाँ...सचमुच मेरी समझ में नहीं आता कि आपको क्या सलाह दूँ," रादोम्स्की ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

इप्पोलीत ने उसके चेहरे पर से नज़रें हटाए बिना उसे कठोरता से देखा और एक शब्द भी नहीं कहा। ऐसा लग रहा था कि वह बिलकुल विक्षिप्त हो चुका था।

"जी नहीं, साहब, माफ़ कीजिएगा, यह भी कोई बात करने का तरीक़ा हुआ," लेबेदेव बोला। " 'मैं पार्क में जाकर अपने गोली मार लूँगा', जी हाँ, क्या खूब, 'ताकि किसी को कोई परेशानी न हो' ! इसका ख़्याल है कि कुछ क़दम चलकर पार्क में इसके चले जाने से किसी को परेशानी नहीं होगी।"

"सुनिए..." प्रिंस ने कहना शुरू किया।

"जी नहीं, माफ़ कीजिएगा, मेरे प्यारे प्रिंस," लेबेदेव बेहद गुस्से से कहता रहा, "चूँकि आप खुद ही समझ सकते हैं कि यह कोई मज़ाक़ की बात नहीं है, और चूँकि आपके कम से कम आधे मेहमानों की यही राय है, और उन्हें पूरा यक़ीन है कि जो कुछ इसने कहा है उसके बाद इसे अपने गोली मारनी ही पड़ेगी क्योंकि यह इसकी इज़्ज़त का सवाल है, इसलिए, जनाब, इस मकान के मालिक की हैसियत से मैं गवाहों के सामने एलान करता हूँ कि मैं आपसे उम्मीद करता हूँ कि आप मेरी मदद करें !"

"लेकिन हमें करना क्या है, लेबेदेव ? मैं आपकी मदद करने को तैयार हूँ।"

"मैं आपको बताता हूँ—सबसे पहले तो यह फ़ौरन वह पिस्तौल, जिसकी वह हम सब लोगों के सामने डींग मार चुका है, और उसके साथ की सारी चीज़ें हवाले कर दे। अगर वह उसको दे देता है तो उसकी सेहत को देखते हुए मैं इस बात के लिए राज़ी हूँ कि यह यह रात इस घर में बिताए—लेकिन, मेरी निगरानी में। लेकिन कल जहाँ इसका जी चाहे चला जाए। मुझे बहुत अफ़सोस है, प्रिंस ! अगर यह पिस्तौल देने से इन्कार करता है तो अभी इसकी एक बाँह मैं और दूसरी बाँह जनरल साहब पकड़कर फ़ौरन पुलिस को बुलवा भेजेंगे। उसके बाद तो, साहब, पुलिस इस मामले से निबट लेगी। मेरे दोस्त फ़ेर्दीश्चेंको जाकर पुलिस को बुला लाएँगे।"

चारों ओर से शोर उठा। लेबेदेव की उत्तेजना बढ़ती जा रही थी; फ़ेर्दीश्चेंको पुलिस थाने जाने को तैयार हो रहा था; गान्या बड़े जोश से बार-बार यही कहे जा रहा था कि कोई अपने गोली मारने नहीं जा रहा था। रादोम्स्की चुप था।

"प्रिंस, आपने कभी गिरजे के घंटाघर से नीचे कूदने की कोशिश की है ?" इप्पोलीत ने अचानक उसके कान में कहा।

"न-नहीं।..." प्रिंस ने भोलेपन से जवाब दिया।

"क्या आप समझते हैं कि मुझे इस सारी नफ़रत का पहले से अन्दाजा नहीं था ?" प्रिंस को दहकती हुई नज़रों से घूरते हुए इप्पोलीत फिर कानाफूसी के स्वर में इस तरह बोला जैसे उसे सचमुच उससे किसी जवाब की उम्मीद हो।

"बस, बहुत हो चुका !" वह अचानक यहाँ मौजूद सभी लोगों को सम्बोधित करके यकायक चिल्लाया। "किसी और से बढ़कर यह मेरा कसूर है ! लेबेदेव, यह रही चाभी (उसने अपना बटुआ निकाला और उसमें से लोहे का छल्ला निकालकर उसके सामने कर दिया, जिसमें तीन-चार छोटी-छोटी चाभियाँ पड़ी हुई थीं) यह आख़िरीवाली से पहले...कोल्या बता देगा।...कोल्या ! कहाँ गया कोल्या ?" नज़र दौड़ाने पर कोल्या को कहीं न पाकर वह ज़ोर से चिल्लाया। "हाँ...यह आपको बता देगा। कल इसी ने बैग में चीज़ें रखने में मेरी मदद की थी। ले जाओ, कोल्या, इन्हें। प्रिंस के पढ़ने के कमरे में, मेज़ के नीचे...मेरा बैग है...इस चाभी से खोलना...तली में एक छोटे-से डिब्बे में...मेरा पिस्तौल और बारूद रखने का सींग है...यह आपको बता देगा। लेकिन इस शर्त पर कि कल सुबह जब मैं पीटर्सबर्ग जाने लगूँ तो आप मेरा पिस्तौल मुझे वापस दे देंगे। सुन लिया ? मैं यह आपकी वजह से नहीं बल्कि प्रिंस की खातिर कर रहा हूँ।"

"यह ठीक बात है !" लेबेदेव ने झपटकर चाभी लेते हुए कहा और खीसें निकालकर जहर-भरी हँसी हँसते हुए भागकर दूसरे कमरे में चला गया।

कोल्या मानो कुछ कहने के लिए रुका, लेकिन लेबेदेव उसे अपने साथ घसीट ले गया।

इप्पोलीत ने हँसते हुए मेहमानों को देखा। प्रिंस ने देखा कि उसके दाँत ऐसे बज रहे थे मानो उसे जूड़ी चढ़ी हो।

"कैसे पाजी हैं ये सबके सब !" इप्पोलीत ने फिर उन्माद-भरे स्वर में प्रिंस के कान में कहा। हर बार जब वह प्रिंस से कुछ कहता था तो वह उसकी ओर झुककर कानाफूसी के स्वर में ही बोलता था।

"रहने दो इन लोगों को। आपको बहुत कमज़ोरी हो रही है।..."

"अभी, अभी...मैं अभी जाता हूँ।"

सहसा उसने प्रिंस को गले लगा लिया।

"आप सोचते होंगे कि मैं पागल हूँ," वह उसकी ओर देखकर और विचित्र ढंग से हँसते हुए बोला।

"नहीं तो, लेकिन आप..."

"एक मिनट...चुप रहिए...कुछ कहिए नहीं...शान्त खड़े रहिए, मैं आपकी आँखों में झाँककर देखना चाहता हूँ...बस, ऐसे खड़े रहिए; मुझे देखने दीजिए। मुझे एक इंसान से विदा हो लेने दीजिए।"

वह लगभग दस सेकंड तक चुपचाप और हिले-डुले बिना प्रिंस को देखता हुआ निश्चल खड़ा रहा; उसका रंग बेहद पीला पड़ गया था, उसके बाल पसीने से भीग गए थे, उसने अपने हाथ से प्रिंस को बड़े अटपटे ढंग से पकड़ रखा था मानो उसे छोड़ने से डर रहा हो।

"इप्पोलीत, इप्पोलीत, बात क्या है ?" प्रिंस ने चिल्लाकर पूछा।

"एक पल...बस...अब मैं जाकर लेट जाऊँगा। मैं बस सूरज की सेहत के नाम का एक जाम

पिऊँगा।...पी लेने दो, मैं पीना चाहता हूँ !"

उसने जल्दी से झपटकर मेज़ पर से एक गिलास उठा लिया, और पलक झपकते बरामदे की सीढ़ियों पर जा पहुँचा। प्रिंस उसके पीछे भागनेवाला ही था पर हुआ यह कि उसी क्षण रादोम्स्की ने उससे विदा लेने के लिए अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। एक ही सेकंड बाद बरामदे में चारों ओर शोर मच गया। उसके बाद एक मिनट तक बड़ी गड़बड़ी रही।

हुआ यह था—बरामदे से उतरने की सीढ़ियों तक पहुँचकर इप्पोलीत ठिठककर खड़ा हो गया था; वह अपने बाएँ हाथ में गिलास लिए हुए था और दाहिना हाथ उसने अपने कोट की दाहिनी जेब में डाल रखा था। केल्लेर ने बाद में पूरे भरोसे के साथ कहा कि उसने अपना दाहिना हाथ जेब में पहले से डाल रखा था जब वह प्रिंस के गले में अपना बायाँ हाथ डाले उससे बातें कर रहा था, और केल्लेर ने दावे के साथ यह भी कहा कि जेब में पड़े हुए उसके दाहिने हाथ पर उसे शुरू में भी कुछ शक हुआ था। बहरहाल, जो भी हो, बेचैनी की भावना के कारण वह भी इप्पोलीत के पीछे भागा। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उसने बस इतना देखा कि कोई चीज़ इप्पोलीत के दाहिने हाथ में चमकी, और उसी क्षण एक छोटा-सा जेबी पिस्तौल उसकी कनपटी के पास पहुँच चुका था। केल्लेर उसका हाथ पकड़ने के लिए झपटा, लेकिन उसी समय इप्पोलीत ने लिबलिबी दबा दी। तेज खनक जैसी आवाज़ हुई, लेकिन धमाका कोई नहीं हुआ। जब केल्लेर ने इप्पोलीत को थामा तो वह उसकी बाँहों में गिर पड़ा, जैसे बेहोश हो गया हो, और शायद वह सचमुच सोच रहा था कि वह मर गया है। पिस्तौल केल्लेर के हाथ में पहुँच चुका था। इप्पोलीत को पकड़कर एक कुर्सी पर बिठा दिया गया और सब लोग चिल्लाते हुए और सवालों की बौछार करते हुए उसके चारों ओर जमा हो गए। लिबलिबी का खटका दबने की आवाज़ तो सबने सुनी थी और वे अपने सामने एक जिन्दा आदमी को देख रहे थे जिसे खरोंच तक नहीं आई थी। इप्पोलीत खुद उन्हें इस तरह घूर रहा था जिसका कोई अर्थ नहीं था; उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है। उसी समय लेबेदेव और कोल्या भागे हुए आए।

"चूक गया ?" लोग पूछ रहे थे।

"शायद भरा हुआ ही नहीं था ?" कुछ ने अटकल लगाई।

"भरा हुआ है !" केल्लेर ने पिस्तौल को जाँचते हुए एलान किया। "लेकिन..."

"निशाना चूक गया ?"

"उसमें टोपी ही नहीं थी," केल्लेर ने बताया।

इसके बाद जो दयनीय दृश्य सामने आया उसे वर्णन करना कठिन होगा। चारों ओर जो दहशत फैल गई थी वह हँसी में बदल गई; यहाँ तक कि कुछ लोग तो ठहाका मारकर हँस पड़े, क्योंकि उन्हें इस घटना से द्वेष-भरा आनन्द मिल रहा था। इप्पोलीत ऐसे सिसक-सिसककर रो रहा था जैसे उसे हिस्टीरिया का दौरा पड़ा हो, वह अपने हाथ मल रहा था, भाग-भागकर सबके पास जा रहा था, यहाँ तक कि वह फ़ेर्दीश्चेंको के पास भी गया और उसे दोनों हाथों से पकड़कर क़समें खा-खाकर कहने लगा कि पूरे दर्जन-भर फ़ायरिंग कैप उसकी वास्कट की जेब में रखी थीं (उसने घूम-घूमकर वे सबको दिखाईं), कि उसने कैप पिस्तौल में पहले इसलिए नहीं भरी थी कि उसे डर था कि पिस्तौल उसकी जेब में कहीं अचानक अपने आप न छूट जाए, कि उसे पूरा यक़ीन था कि उसे ऐन वक़्त पर पिस्तौल में कैप भरने के लिए काफ़ी समय मिलेगा, लेकिन अचानक वह उसके बारे में भूल गया। वह भागकर प्रिंस और रादोम्स्की के पास गया, केल्लेर के सामने गिड़गिड़ाया कि वह उसका पिस्तौल वापस कर दे, उसे यक़ीन दिलाया कि वह उन सबको दिखा

देगा कि उसकी "इज़्ज़त...इज़्ज़त..." कि अब उसकी "इज़्ज़त हमेशा के लिए ख़ाक में मिल गई थी !..."

आख़िरकार वह बेहोश हो गया। उसे प्रिंस के पढ़ने के कमरे में ले जाया गया, और लेबेदेव ने, जिसका नशा अब बिलकुल दूर हो चुका था, फ़ौरन डॉक्टर को बुलवा भेजा, और ख़ुद अपने बेटे और बेटी, बुर्दोव्स्की और जनरल साहब के साथ बीमार के पलंग के पास रहा। जब बेहोश इप्पोलीत को बाहर ले जाया जा रहा था तो केल्लेर ने कमरे के बीच में खड़े होकर ऊँची आवाज़ में, ताकि सब लोग सुन लें, हर शब्द को धीरे-धीरे और साफ़-साफ़ बोलते हुए पूरी तरह उत्प्रेरित होकर कहा—"सुनिए, साहबान, अगर आपमें से किसी ने भी मेरे सामने कभी यह शक ज़ाहिर किया कि पिस्तौल में टोपी रखना जान-बूझकर भुला दिया गया था और वह नौजवान अपने गोली मारने का सिर्फ़ ढोंग कर रहा था, तो उसे मुझसे निबटना होगा।"

लेकिन किसी ने उसका कोई जवाब नहीं दिया। आख़िरकार सारे मेहमान जल्दी से झुँड बनाकर वहाँ से चले गए। प्तीत्सिन, गान्या और रोगोज़िन एक साथ गए।

प्रिंस को इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि रादोम्स्की ने अपना इरादा बदल दिया था और वह उससे बोले बिना ही चला जा रहा था।

"औरों के चले जाने के बाद आप मुझसे कुछ बातें करना चाहते थे न ?" उसने उससे पूछा।

"करना तो चाहता था," रादोम्स्की ने यकायक एक कुर्सी पर बैठकर और प्रिंस को अपने पास बिठाते हुए कहा, "लेकिन फ़िलहाल मैंने अपना इरादा बदल दिया है। मैं बहुत परेशान हूँ, और शायद आप भी। मेरे सारे विचार उलझ गए हैं और, इसके अलावा, जिस सवाल पर मैं आपसे बातें करना चाहता था, वह मेरे लिए बहुत महत्त्व रखता है—और, यों तो, आपके लिए भी। देखिए, प्रिंस, मैं ज़िन्दगी में एक बार ही सही बिलकुल ईमानदारी का कुछ काम करना चाहता हूँ—मेरा मतलब है, कोई ऐसा काम जिसमें मेरा कोई छिपा हुआ स्वार्थ न हो पर, ख़ैर, मुझे ऐसा लगता है कि इस वक़्त मैं पूरी ईमानदारी का कोई काम करने लायक़ ही नहीं रह गया हूँ, और शायद आप भी। इसलिए...ख़ैर...मेरा मतलब है कि हम इसके बारे में बाद में बातें करेंगे। अगर हम लोग दो-तीन दिन इन्तज़ार कर लें, जिन्हें मैं अब पीटर्सबर्ग में बिताने का इरादा रखता हूँ, तो यह मामला मेरे और आपके लिए ज़्यादा साफ़ हो जाएगा।"

इतना कहकर वह फिर उठा, इसलिए यह कुछ विचित्र लगा कि वह बैठा ही क्यों था। प्रिंस को भी ऐसा लगा मानो रादोम्स्की असन्तुष्ट और चिड़चिड़ाया हुआ था और उसे दुश्मनी से देख रहा था, और यह कि उसकी आँखों में कोई ऐसी बात थी जो उनमें पहले नहीं थी।

"अरे हाँ, क्या आप इस वक़्त बीमार के पास जा रहे हैं ?"

"जी हाँ...मैं उसकी वजह से परेशान हूँ," प्रिंस ने कहा।

"चिन्ता न कीजिए। वह अभी छह हफ़्ते और जिएगा, मुझे यक़ीन है, और शायद वह यहाँ पहले से अच्छा भी हो जाए। लेकिन मैं समझता हूँ कि सबसे अच्छा यही होगा कि कल उससे छुटकारा पा लीजिए।"

"शायद मैंने...यानी...कुछ न कहकर उसे सचमुच उकसा दिया। शायद उसने सोचा कि मैं भी यही सोचता था कि वह अपने गोली नहीं मारेगा। आपका क्या ख़्याल है ?"

"बिलकुल नहीं। क्योंकि आप इतने नेक हैं इसलिए आप इसके बारे में परेशान होते हैं। मैंने इसके बारे में सुना तो है लेकिन मैंने कभी सचमुच ऐसा होते देखा नहीं कि आदमी जान-बूझकर इसलिए अपने गोली मार ले कि उसकी तारीफ़ की जाए या इस बात पर खीझकर दूसरों को जलाने

के लिए कि उसकी तारीफ़ नहीं की गई। सबसे बड़ी बात यह है कि मुझे इस तरह खुलकर अपनी कमज़ोरी मान लेने पर कभी यक़ीन न आता ! वैसे आप इसे कल यहाँ से चलता कर दीजिए।"

"क्या आप समझते हैं कि वह फिर अपने गोली मार लेगा ?"

"नहीं, अब वह अपने गोली नहीं मारेगा। लेकिन अपने इन अधकचरे लैसिनयरों[1] से होशियार रहना ! मैं एक बार फिर कहता हूँ कि इस तरह के मामूली समझ-बूझवाले, बेसब्र और लालची नगण्य लोग अकसर अपराध की शरण लेते हैं।"

"लेकिन क्या वह लैसिनेयर है ?"

"बुनियादी तौर पर—हाँ, हालाँकि उनके कार्य-क्षेत्र अलग-अलग हैं। आप देख लीजिएगा, यह भला आदमी बस "शान जमाने के लिए" दर्जन-भर लोगों की बोटियाँ तक काटकर फेंक सकता है। दरअसल, ठीक उसी तरह जैसे कि उसने अपनी 'स्वीकारोक्ति' में हमें बताया है। मुझे डर है कि उसके इन शब्दों में अब मेरी रातों की नींद उड़ जाएगी।"

"मैं समझता हूँ कि आप ज़रूरत से कुछ ज़्यादा ही चिन्ता कर रहे हैं।"

"आप भी लाजवाब आदमी हैं, प्रिंस। आपको यक़ीन नहीं आता कि इस वक़्त वह दर्जन-भर लोगों को जान से मार सकता है, क्यों ?"

"आपकी बात का जवाब देते मुझे डर लगता है। यह सब कुछ बहुत अजीब है, लेकिन..."

"ख़ैर, जैसी आपकी मर्जी, जैसा आपका जी चाहे !" रादोम्स्की ने चिड़चिड़ाकर बात ख़त्म करते हुए कहा। "इसके अलावा आप बहुत बहादुर आदमी हैं। बस इतना ख़्याल रखिएगा कि उन दर्जन-भर लोगों में कहीं आप भी न आ जाएँ।"

"शायद वह किसी को भी जान से नहीं मारेगा," प्रिंस ने विचारमग्न होकर रादोम्स्की को घूरते हुए कहा।

रादोम्स्की द्वेष से हँसा।

"गुड-बाई ! अब मुझे चलना चाहिए। लेकिन क्या आपने देखा कि उसने अपनी 'स्वीकारोक्ति' की एक प्रति मिस अग्लाया के नाम वसीअत की है ?"

"जी हाँ, मैंने देखा, और...मैं इसके बारे में सोच में पड़ गया हूँ।"

"हाँ, ख़ासकर दर्जन-भर लोगों के मामले में," रादोम्स्की फिर हँसा और बाहर चला गया।

घंटे-भर बाद लगभग चार बजे प्रिंस पार्क में निकल गया। उसने सोने की कोशिश की थी, लेकिन उसे नींद नहीं आई; उसके दिल के तेज धड़कन ने उसकी आँख नहीं लगने दी। घर में सारा हंगामा ख़त्म हो चुका था, और हर चीज़, जहाँ तक मुमकिन था, शान्त थी। बीमार सो रहा था, और डॉक्टर कह गया था कि कोई ख़ास ख़तरे की बात नहीं थी। लेबेदेव, कोल्या और बुर्दोव्स्की बारी-बारी से बीमार की तीमारदारी करने के लिए उसी के कमरे में लेटे थे। इसलिए डरने की कोई बात नहीं थी।

लेकिन प्रिंस की बेचैनी हर मिनट बढ़ती जा रही थी। वह खोया-खोया अपने चारों ओर देखता हुआ पार्क में टहलता रहा और जब वह मनोरंजन उद्यान में बैण्ड-स्टैण्ड के पास पहुँचा और उसने खाली सीटों की एक कतार और आर्केस्ट्रा के संगीत-लिपि रखने के स्टैण्ड देखे तो वह आश्चर्य से ठिठककर खड़ा हो गया। उस जगह को देखकर उसे आघात-सा लगा और न जाने क्यों वह जगह उसे बीभत्स लगी। वह पीछे पलट पड़ा और उस रास्ते पर चलते हुए जिस पर वह कल

1. लैसिनेयर, पियेर फ्रांसोआ (1800-1836)—पेरिस का कुख्यात हत्यारा जिसे 1836 में मृत्युदण्ड दिया गया था और उसके मरने के बाद उसकी डायरी प्रकाशित हुई थी।

येपांचिन-परिवार के साथ गया था वह उस हरी बेंच के पास पहुँच गया जहाँ अग्लाया ने उससे मिलने का वादा किया था; वह बेंच पर बैठ गया और अचानक ज़ोर से हँसा, जिसकी वजह से उसे अपने आप पर बेहद गुस्सा आया। उसकी घोर निराशा की भावना निरन्तर बनी रही; उसका जी बहुत चाह रहा था कि कहीं चला जाए।...वह नहीं जानता था कहाँ। उसके सिर के ऊपर पेड़ पर बैठी हुई कोई चिड़िया गा रही थी और वह पत्तियों के बीच उसे खोजने लगा; अचानक चिड़िया पंख फड़फड़ाकर उड़ गई, और उसी क्षण न जाने क्यों उसे 'तेज धूप' में भिनभिनाते हुए उस 'भुनगे' की याद आ गई जिसके बारे में इप्पोलीत ने लिखा था कि वह अपना स्थान जानता था और पूरे समूह-गान में हिस्सा लेता था, लेकिन केवल वह 'तिरस्कृत' था। उस समय वह इस वाक्य से बहुत प्रभावित हुआ था; अब उसे उसकी याद आई। उसके दिमाग़ में एक भूली-बिसरी याद करवटें लेने लगी, और अचानक सारी बात स्पष्ट रूप से उसे याद आ गई।

वह बात स्विट्ज़रलैण्ड में उसके इलाज के पहले वर्ष के दौरान, बल्कि सच तो यह है कि पहले ही कुछ महीनों के अन्दर हुई थी। उस समय तक वह अभी बौड़म जैसा ही था; वह ठीक से बोल भी नहीं पाता था और कभी-कभी तो वह यह भी नहीं समझ पाता था कि उससे क्या करने की उम्मीद की जाती थी। एक दिन जब धूप निकली हुई थी और मौसम खुला हुआ था, वह पहाड़ों में घूमने निकल गया और बड़ी देर तक टहलता रहा; एक विचार उसे रह-रहकर सता रहा था और लाख कोशिश करने पर भी उसकी पकड़ में नहीं आ रहा था। उसके सामने स्वच्छ आकाश था, नीचे झील थी, और चारों ओर अनन्त दूरी तक उज्ज्वल क्षितिज फैला हुआ था। वह उद्विग्न होकर देर तक देखता रहा। अब उसे याद आ रहा था कि किस तरह उसने नीलिमा के उस उज्ज्वल और अनन्त विस्तार की ओर अपनी बाँहें फैलाई थीं और रो रहा था। जो बात उसे यातना दे रही थी वह यह थी कि वह इन सब चीज़ों के लिए बिलकुल पराया था। यह कैसा जश्न था, यह कौन-सा भव्य चिरन्तन उत्सव था जिसकी ओर वह बहुत समय से, हमेशा से आकृष्ट होता रहा था—जबसे वह बच्चा था—और जिसमें वह कभी सम्मिलित नहीं हो सका था ? रोज सबेरे वही चमकदार सूरज निकलता है; रोज सबेरे झरने पर इन्द्रधनुष दिखाई देता है; रोज शाम को दूर, बहुत दूर, आकाश के छोर पर बर्फ से ढका हुआ सबसे ऊँचा पहाड़ एक लाल ज्वाला जैसा दिखाई देता है; "उसके चारों ओर तेज धूप में भिनभिनाता हुआ हर छोटा-सा भुनगा इस समूह-गान में भाग लेता है—वह अपनी जगह जानता है, उसे उससे प्रेम है और वह खुश है"; घास की हर पत्ती उगती है और खुश है ! हर चीज़ का अपना रास्ता है, और हर चीज़ अपना रास्ता जानती है; वह गाती हुई जाती है और गाती हुई लौट आती है; अकेला वही ऐसा है जो कुछ नहीं जानता, कुछ नहीं समझता, न मनुष्यों को, न ध्वनियों को, जो हर चीज़ के लिए पराया है और तिरस्कृत है। उफ़, उस समय वह इस बात को इन शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाया था, वह यह प्रश्न नहीं पूछ सका था; वह मूक भाव से, बिना समझे ही सब कुछ सहन करता रहा था; लेकिन अब उसे ऐसा लग रहा था कि उसने उस समय भी यह सब कुछ कहा था, कि उसने ठीक यही शब्द इस्तेमाल किए थे, और यह कि इप्पोलीत ने वह 'भुनगा' उसी से लिया था, उन दिनों के उसके शब्दों और आँसुओं से। उसे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं था, और न जाने क्यों इस विचार मात्र से उसका दिल धड़कने लगा।...

उसे झपकी आ गई, लेकिन नींद में भी उसकी चिन्ता ने उसका पीछा न छोड़ा। नींद आने से थोड़ा पहले उसे याद आया था कि इप्पोलीत दर्जन-भर लोगों की हत्या कर देगा, और वह इस विचार के बेतुकेपन पर मुस्कराया। उसके चारों ओर एक अद्भुत, उज्ज्वल निस्तब्धता छाई हुई थी, सिर्फ जंगल पत्तियों की सरसराहट भंग कर रही थी, जिसकी वजह से उसके चारों ओर की हर चीज़

और भी अधिक मौन और एकाकी लगने लगी थी। उसने बहुत-से सपने देखे; सभी चिन्ताओं से भरे हुए थे, और उनकी वजह से वह हर क्षण चौंक उठता था। आख़िरकार एक औरत उसके पास आई; वह उसे जानता था, वह उसे व्यथाजनक हद तक अच्छी तरह जानता था; वह हमेशा उसका नाम बता सकता था और बहुत-से लोगों के बीच उसे पहचानकर बता सकता था; लेकिन विचित्र बात थी कि उसका चेहरा वैसा नहीं लग रहा था जैसा कि वह हमेशा से जानता आया था, और उसने यह तड़पा देनेवाली इच्छा अनुभव की कि उसे उसी औरत के रूप में स्वीकार ही न करे। उसके चेहरे पर इतना पश्चात्ताप और भय था कि ऐसा लगता था कि वह कोई बहुत बड़ी अपराधिनी है और उसने अभी-अभी कोई भयानक अपराध किया है। उसके पीले गाल पर एक आँसू थरथरा रहा था; उस औरत ने इशारे से उसे बुलाया और अपने होंठों पर उँगली रख ली, मानो उसे सचेत कर रही हो कि वह उसके पीछे-पीछे चुपचाप चला आए। उसका दिल धक से रह गया; कोई भी चीज़, दुनिया की कोई भी चीज़ उसे यह स्वीकार करने पर मजबूर नहीं कर सकती थी कि वह अपराधिनी थी; लेकिन वह महसूस कर रहा था कि किसी भी क्षण कोई भयानक बात होनेवाली है, कोई ऐसी बात जो उसे ज़िन्दगी-भर याद रहेगी। ऐसा लग रहा था कि वह उसे कुछ दिखाना चाहती थी—बहुत दूर नहीं, वहीं, पार्क में। वह उसके पीछे-पीछे चल देने को खड़ा हुआ, और सहसा एक उल्लास-भरी, ताजगी से भरपूर हँसी उसके बग़ल में गूँज उठी; उसने अपने हाथ पर किसी के हाथ का स्पर्श अनुभव किया; उसने उस हाथ को कसकर पकड़ लिया। और जाग पड़ा। उसके सामने अग्लाया खड़ी थी। वह खिलखिलाकर हँस रही थी।

8

अग्लाया हँस रही थी, लेकिन वह नाराज़ भी थी।

"सो रहे थे ! आप सो रहे थे !" उसने तिरस्कार-भरे आश्चर्य से कहा।

"आप हैं !" प्रिंस ने, जो अभी तक पूरी तरह जागा नहीं था, आश्चर्य से उसे पहचानते हुए बुदबुदाकर कहा। "अरे, हाँ। मुझे आपसे यहाँ मिलना था...मुझे झपकी आ गई।"

"सो तो मैंने देखा।"

"आपके अलावा किसी और ने तो नहीं जगाया मुझे ? यहाँ आपके अलावा कोई और तो नहीं था ? मैं सोच रहा था...मैं सोच रहा था कि यहाँ कोई और औरत थी।..."

"कोई और औरत थी यहाँ..."

आख़िरकार वह पूरी तरह जाग गया।

"बस सपना ही था," उसने विचारमग्न होकर कहा। "अजीब बात है कि इस वक़्त मुझे ऐसा सपना दिखाई दिया।...तशरीफ़ रखिए, न ?"

उसने उसका हाथ पकड़कर उसे बेंच पर बिठा लिया; फिर वह खुद उसके पास बैठ गया और विचारों में डूब गया। अग्लाया ने बातचीत का सिलसिला शुरू नहीं किया, बल्कि उसे बस बड़े ध्यान से देखती रही। प्रिंस भी उसे देखता रहा, लेकिन कभी-कभी इस तरह जैसे वह उसे अपने पास बैठा हुआ न देख रहा हो। वह लजाने लगी।

"अरे, हाँ," प्रिंस ने चौंककर कहा, "इप्पोलीत ने अपने गोली मार ली !"

"क़ब ? आपके घर पर ?" उसने पूछा, लेकिन ऐसे, जैसे उसे बहुत आश्चर्य न हुआ हो। "अभी कल शाम तक तो वह जिन्दा था न ? इतना सब कुछ होने के बाद आपको यहाँ नींद कैसे

आ गई ?" अचानक बहुत जोश में आकर वह चिल्लाई।

"लेकिन वह मरा नहीं है। पिस्तौल ठीक से चला नहीं।"

अग्लाया ने आग्रहपूर्ण अनुरोध पर प्रिंस को पिछली रात की सारी घटना पूरे विस्तार से सुनानी पड़ी। वह उससे जल्दी करने को कहती जाती थी, हालाँकि बीच-बीच में लगातार सवाल करके टोकती भी जाती थी, जिनमें से अधिकांश बेतुके होते थे। प्रसंगवश, रादोम्स्की ने जो कुछ कहा था वह उसने बड़े ध्यान से सुना, और उससे उसे कई बार दोहराने के लिए भी कहा।

"अच्छा, बस इतना काफ़ी है," उसने सब कुछ सुन लेने के बाद अन्त में कहा। "हमें जल्दी करनी चाहिए। हमारे पास आठ बजे तक बस एक घंटे का वक़्त है। मुझे हर हालत में आठ बजे घर पहुँच जाना चाहिए, क्योंकि उन लोगों को यह नहीं मालूम होना चाहिए कि मैं यहाँ आई हूँ, और मैं यहाँ काम से आई हूँ। मुझे आपको बहुत-सी बातें बतानी हैं। लेकिन आपने मुझे इस वक़्त बिलकुल परेशान कर दिया है। जहाँ तक इप्पोलीत का सवाल है तो मेरा ख़्याल है कि उसका पिस्तौल तो चलनेवाला था ही नहीं—उसकी हरकतें हैं ही ऐसी। लेकिन क्या आपको यक़ीन है कि वह सचमुच अपने गोली मारना चाहता था और आप लोगों को धोखा देने की कोशिश नहीं कर रहा था ?"

"वह हमें धोखा देने की कोशिश नहीं कर रहा था।"

"हाँ, यही ज़्यादा मुमकिन है। क्या उसने सचमुच लिखा था कि आप उसकी 'स्वीकारोक्ति' मुझे दे दें ? तब तो आप वह लाए क्यों नहीं ?"

"लेकिन वह मरा तो नहीं है। मैं उससे माँग लूँगा।"

"ला ज़रूर दीजिएगा, और उससे माँगने की कोई ज़रूरत नहीं। वह यक़ीनन बहुत खुश होगा, क्योंकि मैं समझती हूँ कि उसने अपनी जान लेने की कोशिश की ही इसलिए थी कि वह चाहता यही था कि मैं बाद में उसकी स्वीकारोक्ति पढ़ूँ। मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि मेहरबानी करके मुझ पर हँसिए नहीं, क्योंकि हो सकता है कि यह बात सच ही हो।"

"मैं हँस नहीं रहा हूँ, क्योंकि मुझे खुद बिलकुल यक़ीन है कि यह बात कुछ हद तक सही हो सकती है।"

"आपको यक़ीन है ?" अग्लाया अचानक बहुत आश्चर्य से चिल्लाई। "क्या आप भी सचमुच ऐसा समझते हैं ?"

वह अपने सवाल जल्दी-जल्दी पूछ रही थी और बहुत तेज बोल रही थी, लेकिन ऐसा लग रहा था कि कभी-कभी वह उलझ जाती थी और अकसर अपना वाक्य पूरा नहीं करती थी; हर क्षण ऐसा लगता था कि वह उसे किसी बात की चेतावनी देने की जल्दी में है; वह असाधारण चिन्ता की अवस्था में मालूम होती थी, और हालाँकि वह जता ऐसा रही थी कि वह बहुत बहादुर और निडर है, लेकिन शायद वह कुछ-कुछ डर भी रही थी। उसने बहुत सादे कपड़े पहन रखे थे जो उसे बहुत फबते थे। वह अकसर चौंक पड़ती थी और लजा जाती थी; वह बेंच की कगर पर बैठी हुई थी। उसे प्रिंस के इस बात की पुष्टि करने पर बहुत आश्चर्य हुआ कि इप्पोलीत ने इस उम्मीद से अपने गोली मारने की कोशिश की थी कि वह उसकी 'स्वीकारोक्ति' पढ़ेगी।

"बिलकुल," प्रिंस ने समझाते हुए कहा, "उसे इस बात की फ़िक्र थी कि न सिर्फ़ आप बल्कि हम सब लोग उसकी तारीफ़ करें।..."

"तारीफ़ करें ? क्या मतलब आपका ?"

"मेरा मतलब है...अब मैं कैसे बताऊँ ? इस बात को शब्दों में बताना बहुत कठिन है। मैं

तो बस यह समझता हूँ कि उसे निश्चित रूप से इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि हम सब लोग उसके चारों ओर जमा होकर उसे बताएँ कि हम सब लोग उससे कितना प्यार करते हैं और उसकी कितनी इज़्ज़त करते हैं, और हम सब लोग उसकी मिन्नत करें कि वह जिन्दा रहे। सच पूछिए तो बहुत मुमकिन है कि उसके दिमाग़ में सबसे ज़्यादा आपका ख़्याल हो, क्योंकि उसने आपकी चर्चा ऐसे क्षण पर छेड़ी थी...हालाँकि मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि वह खुद नहीं जानता था कि उसके दिमाग़ में आपका ख़्याल था।"

"यह बात मेरी समझ में बिलकुल नहीं आती—उसके दिमाग़ में मेरा ख़्याल था, और वह जानता नहीं था कि उसके दिमाग़ में मेरा ख़्याल था। फिर भी शायद मैं इस बात को समझती हूँ। क्या आप जानते हैं कि मैंने कोई तीस बार सोचा है कि जहर खाकर मर जाऊँ, तब से जब मैं सिर्फ़ तेरह साल की थी, और इसके बारे में सारी बातें एक पत्र में अपने माँ-बाप को लिख दूँ, और मैं यह भी कल्पना किया करती थी कि किस तरह मैं ताबूत में लेटी रहूँगी और किस तरह सब लोग मेरे लिए रोएँगे और अपने आपको दोषी ठहराएँगे कि उन्होंने मेरे साथ इतनी बेरहमी क्यों की।...आप फिर क्यों मुस्करा रहे हैं ?" उसने माथे पर बल डालकर जल्दी से इतना और जोड़ दिया। "दिवास्वप्न देखते समय आप क्या सोचते हैं ? शायद आप कल्पना करते हैं कि आप फ़ील्ड-मार्शल हैं और यह कि आपने नेपोलियन को हरा दिया है ?"

"जी हाँ," प्रिंस ने हँसकर कहा, "सच पूछिए तो मैं ऐसा सोचता तो हूँ, ख़ासतौर पर जब मुझे नींद आने लगती है। लेकिन हर बार मैं नेपोलियन को नहीं बल्कि आस्ट्रियावालों को हराता हूँ।"

"देखिए, इस वक़्त आपसे मज़ाक़ करने को मेरा बिलकुल जी नहीं चाह रहा है। मैं खुद जाकर इप्पोलीत से मिलूँगी। उससे कह दीजिएगा। और मैं समझती हूँ कि यह आपकी बहुत ग़लत बात है, क्योंकि इस तरह सोचना और किसी मनुष्य की आत्मा के बारे में इस तरह फ़ैसला देना जिस तरह आप इप्पोलीत के बारे में देते हैं बहुत बड़ी ज़्यादती है। आपके दिल में ज़रा-सी भी नरमी नहीं है—बस सच्चाई है और इसीलिए आप अन्यायी हैं।"

प्रिंस सोच में पड़ गया।

"मैं समझता हूँ कि आप मेरे साथ इन्साफ़ नहीं कर रही हैं," वह बोला, "क्योंकि जिस तरह वह सोचता है उस तरह सोचने में मुझे कोई बुराई दिखाई नहीं देती, क्योंकि हम सभी लोगों की उसी तरह सोचने की आदत है। इसके अलावा, यह भी हो सकता है कि उसने ऐसा सोचा हो ही नहीं, बल्कि सिर्फ़ चाहता हो...वह लोगों से आख़िरी बार मिलने और उनसे इज़्ज़त और प्यार पाने के लिए बेचैन था। देखिए, वे बहुत ही अच्छी भावनाएँ हैं; बस, हुआ कुछ ऐसा कि जो वह चाहता था वह हो नहीं सका—इसकी वजह उसकी बीमारी और कुछ और चीज़ भी है ! इसके अलावा, कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनका हर दाँव सीधा पड़ता है, और कुछ लोगों के हिस्से में बुराई के अलावा कुछ नहीं आता।..."

"मैं समझती हूँ कि आपने यह बात अपने बारे में जोड़ दी हैं न ?" अग्लाया ने मत प्रकट किया।

"जी हाँ, अपने बारे में," प्रिंस ने उसके प्रश्न में जो व्यंग का पुट था उसकी ओर ध्यान दिए बिना जवाब दिया।

"फिर भी, अगर आपकी जगह मैं होती तो मुझे कभी नींद न आती। ऐसा लगता है कि आपको किसी भी जगह बस बैठते ही नींद आ जाती है। यह कोई बहुत अच्छी बात नहीं है आपके

लिए।"

"लेकिन मैं सारी रात सोया नहीं हूँ, और उसके बाद मैं बड़ी देर तक टहलता रहा, बस टहलता रहा। मैं वहाँ गया था जहाँ संगीत हो रहा था..."

"कैसा संगीत ?"

"जहाँ कल संगीत बज रहा था, और फिर मैं यहाँ आकर बैठ गया, सोचता रहा और सोचते-सोचते सो गया।"

"अच्छा, तो यह बात थी ! इससे तो आपके पक्ष में बड़ा अन्तर पड़ जाता है।...और आप बैण्ड-स्टैण्ड क्यों गए थे ?"

"मालूम नहीं। बस, यों ही।..."

"अच्छी बात है, अच्छी बात है—बाद में देखा जाएगा। आप बीच-बीच में विघ्न डालते रहते हैं। अगर आप बैण्ड-स्टैण्ड गए भी थे तो मुझे क्या परवाह ? और आप सपना किस औरत का देख रहे थे ?"

"वह...उसका...आपने देखा है उसे।..."

"अच्छा, मैं समझ गई, बिलकुल समझ गई। आपको उससे बहुत...आपने उसके बारे में क्या सपना देखा ? वह कैसी लग रही थी ? नहीं, मैं उसके बारे में कुछ भी जानना नहीं चाहती," उसने चिढ़कर झिड़कते हुए कहा। "मुझे बीच में टोकिए नहीं।..."

वह थोड़ी देर रुकी, मानो साहस बटोर रही हो या अपनी चिड़चिड़ाहट पर काबू पाने की कोशिश कर रही हो।

"देखिए, मैंने आपको यहाँ इसलिए बुलाया है कि मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि आप मेरे दोस्त बने रहिए। आप मुझे अचानक इस तरह घूरने क्यों लगे ?" उसने लगभग क्रोध से इतना और जोड़ दिया।

प्रिंस उसे उस समय सचमुच बड़े ग़ौर से देख रहा था और उसका ध्यान इस बात की ओर गया था कि वह एक बार फिर लजाने लगी थी। जब भी ऐसा होता था तो वह जितना ही ज़्यादा लजाती थी उतना ही ज़्यादा उसे अपने आप पर गुस्सा आता था, जो उसकी चमकती हुई आँखों में साफ़ दिखाई देता था; आमतौर पर, एक ही क्षण बाद, वह अपना गुस्सा उस आदमी पर उतार देती थी जिससे वह उस समय बात कर रही होती थी, चाहे उसका कोई दोष हो या न हो, और उससे झगड़ने लगती थी। उसे बेहद संकोची और लजीले होने का गहरा आभास था, इसलिए वह आमतौर पर बातचीत करने से कतराती थी और अपनी बहनों से ज़्यादा चुप रहती थी, और कभी-कभी तो ज़रूरत से ज़्यादा चुप रहती थी। लेकिन जब उसे कुछ कहना ही होता था, ख़ासतौर पर एक ऐसी नाजुक परिस्थितियों में, तो वह बेहद अकड़ के साथ और इस तरह बातचीत शुरू करती थी जैसे चुनौती दे रही हो। उसे हमेशा पहले से मालूम रहता था कि क़ब वह लजाने लगी है या लजानेवाली है।

"शायद आप मेरा सुझाव स्वीकार नहीं करना चाहते ?" उसने ढिठाई से प्रिंस की ओर देखते हुए कहा।

"जी हाँ, मैं बिलकुल चाहता हूँ, लेकिन इसकी कोई ज़रूरत तो है नहीं...मेरा मतलब है, मैंने कभी इसकी ज़रूरत नहीं समझी कि आपके लिए इस तरह का सुझाव रखना ज़रूरी है," प्रिंस ने घबराकर कहा।

"फिर आपने क्या समझा था ? आपका क्या ख़्याल था कि मैंने आपको यहाँ किसलिए बुलाया

है ? आपके मन में क्या बात है ? लेकिन शायद आप मुझे बिलकुल नादान बेवक़ूफ़ समझ रहे होंगे, जैसे घर पर सब लोग समझते हैं ?"

"मैं नहीं जानता था कि वे लोग आपको बेवक़ूफ़ समझते हैं। मैं...मैं नहीं समझता।"

"आप नहीं समझते ? आप बहुत होशियार हैं। मानना पड़ता है कि आपने यह बात बड़ी होशियारी से कही है।"

"मेरा ख़्याल है कि आप कभी-कभी बहुत समझदारी की बात कहती हैं। इप्पोलीत के बारे में मेरी राय के सिलसिले में आपने कहा था—'आपमें सच्चाई के अलावा कुछ भी नहीं है और इसीलिए आप अन्यायी हैं।' मैं इस बात को याद रखूँगा और इसके बारे में सोचूँगा।"

अग्लाया का चेहरा अचानक खुशी के मारे लाल हो गया। उसकी मनोदशा में ये सारे परिवर्तन अत्यन्त निष्कपट भाव से और असाधारण तेजी के साथ हो रहे थे। प्रिंस भी बहुत प्रसन्न हुआ, और उसकी ओर देखकर वह हँस तक दिया।

"अब सुनिए," उसने फिर कहना शुरू किया, "मैं बहुत दिन से आपसे यह सब कुछ कह देने का इन्तज़ार करती रही हूँ—मैं तबसे इन्तज़ार कर रही हूँ जब आपने मुझे वह ख़त लिखा था, बल्कि उससे भी पहले से।...आधी बातें मैंने कल आपको बता दी थीं—मैं समझती हूँ कि जितने लोगों को मैं जानती हूँ उनमें आप सबसे ईमानदार और सच्चे हैं—किसी से भी ज़्यादा ईमानदार और सच्चे, और अगर लोग आपके बारे में कहते हैं कि आपका दिमाग़...मेरा मतलब है कि आप कभी-कभी दिमाग़ी बीमारी का शिकार हो जाते हैं, तो यह सरासर बेइन्साफ़ी है। मुझे इसका पूरा यक़ीन है और मैं इसके बारे में बहस करती रही हूँ, क्योंकि आप दिमाग़ी तौर पर हालाँकि सचमुच बीमार हैं (ज़ाहिर है, मेरे ऐसा कहने पर आप नाराज़ तो नहीं होंगे, क्योंकि मैं यह बात आपकी बुराई करने के लिए नहीं कह रही हूँ), फिर भी आपके दिमाग़ का बुनियादी हिस्सा उनमें से किसी के भी मुकाबले में कहीं अच्छा है। सच तो यह है कि यह उन्हें कभी सपने में भी नसीब नहीं हुआ होगा। क्योंकि दिमाग़ दो तरह के होते हैं—एक वह जो बुनियादी होता है और एक वह जो बुनियादी नहीं होता। है न ऐसी बात ?"

"शायद ऐसा ही है," प्रिंस ने सहमति प्रकट की; उसके मुँह से शब्द ठीक से नहीं निकल रहे थे, क्योंकि उसका दिल काँप रहा था और ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था।

"मैं जानती थी कि आप समझ जाएँगे," वह संजीदगी से कहती रही। "प्रिंस श. और रादोम्स्की इन दो तरह के दिमागों के बारे में कुछ भी नहीं समझते। न अलेक्सान्द्रा समझती है। लेकिन ज़रा सोचिए—माँ समझ गईं।"

"आप बहुत कुछ अपनी माँ जैसी हैं।"

"सच ? मैं वैसी हूँ ?" उसने आश्चर्य से पूछा।

"सचमुच आप हैं।"

"शुक्रिया," एक क्षण सोचने के बाद वह बोली। "मुझे बड़ी ख़ुशी है कि मैं माँ जैसी हूँ। तब तो आपके दिल में उनकी बहुत इज़्ज़त होगी ?" उसने इतना और जोड़ दिया, हालाँकि उसे अपने इस प्रश्न की निष्कपटता का आभास तक नहीं था।

"सचमुच बहुत ज़्यादा, और मुझे बड़ी खुशी है कि आप इस यात को फ़ौरन समझ गईं।"

"मैं भी खुश हूँ, क्योंकि मैंने देखा है कि किस तरह लोग कभी-कभी...उन पर हँसते हैं। लेकिन सुनिए असली बात यह है—मैं बहुत समय से सोचती रही हूँ, और आख़िरकार मैंने आपको चुना है। मैं नहीं चाहती कि घर पर लोग मुझ पर हँसे। मैं नहीं चाहती कि लोग मुझे नादान बेवक़ूफ़

समझें। मैं नहीं चाहता कि लोग मुझे छेड़ें।...मैंने इस बात को फ़ौरन समझ लिया था, और इसीलिए मैंने रादोम्स्की से साफ़ इन्कार कर दिया था, क्योंकि मैं नहीं चाहती कि हर वक़्त किसी न किसी से मेरी शादी ही कराई जाती रहे ! मैं चाहती हूँ...मैं चाहती हूँ...बात यह है, मैं घर से भाग जाना चाहती हूँ, और मैंने आपको मेरी मदद करने के लिए चुना है।"

"घर से भाग जाना चाहती हैं ?" प्रिंस चिल्ला पड़ा।

"हाँ, हाँ, हाँ, घर से भाग जाना चाहती हूँ !" वह अचानक चिल्लाई, और असाधारण क्रोध से उसका चेहरा दहक उठा। "मैं इसके लिए नहीं तैयार हूँ...मैं इसके लिए नहीं तैयार हूँ कि मुझे लगातार वहाँ लजाते रहना पड़े। मैं उन लोगों के सामने, या प्रिंस श. के सामने, या रादोम्स्की के सामने, या किसी के भी सामने लजाना नहीं चाहती, और इसीलिए मैंने आपको चुना है। मैं आपसे हर चीज़ के बारे में बातें करना चाहती हूँ...हर चीज़ के बारे में...सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ों के बारे में भी, जब भी मेरा जी चाहे; और आप भी मुझसे कभी कोई बात छिपाएँगे नहीं। मैं चाहती हूँ कि कम से कम एक आदमी तो ऐसा हो जिससे मैं हर चीज़ के बारे में बातें कर सकूँ, उसी तरह जैसे मैं अपने आपसे करती हूँ। वे लोग अचानक कहने लगे कि मैं आपकी राह देख रही हूँ और यह कि मैं आपसे प्यार करती हूँ। यह आपके वापस आने से भी पहले की बात है, और मैंने उन लोगों को कभी आपका खत भी नहीं दिखाया। अब सभी लोग इसकी चर्चा करने लगे हैं। मैं हिम्मत से काम लेना चाहती हूँ और किसी बात से डरना नहीं चाहती। मैं उनके बॉल-नृत्यों में नहीं जाना चाहती। मैं कोई उपयोगी काम करना चाहती हूँ। मैं बहुत दिन से चले जाने का इरादा कर रही हूँ। मैं बीस साल से घर में कैद हूँ, और ये लोग हर वक़्त मेरी शादी करा देने की कोशिश करते रहते हैं। जब मैं चौदह साल की थी तभी मैं भाग जाना चाहती थी, हालाँकि तब मैं बेवक़ूफ़ थी। अब मैंने सारा हिसाब लगा लिया है, और मैं ज़रा आपसे विदेश जाने के बारे में सब कुछ मालूम कर लेना चाहती हूँ। मैंने कभी कोई गॉथिक गिरजा नहीं देखा है। मैं रोम जाना चाहती हूँ। मैं विद्या की सभी संस्थाएँ देखना चाहती हूँ। मैं पेरिस में पढ़ना चाहती हूँ। मैं पूरे पिछले साल पढ़ती रही हूँ और अपने आपको इसके लिए तैयार करती रही हूँ, और मैंने बहुत-सी किताबें पढ़ी हैं। मैंने वे सारी कितायें पढ़ डाली हैं जिन्हें पढ़ना मना है। अलेक्सान्द्रा और अदेलईदा जो भी किताबें चाहती हैं पढ़ती हैं—उन्हें ऐसा करने की छूट है; लेकिन मुझे सारी किताबें नहीं पढ़ने दी जातीं। मुझ पर हर वक़्त नज़र रखी जाती है। मैं अपनी बहनों से झगड़ा करना नहीं चाहती, लेकिन मैंने अपने माँ-बाप को बहुत पहले बता दिया था कि मैं अपनी सामाजिक हैसियत बदलना चाहती हूँ। मैंने पढ़ाने का काम करने का फ़ैसला किया है, और मैंने आप पर भरोसा इसलिए किया है कि आपने कहा था कि आपको बच्चे अच्छे लगते हैं। क्या हम लोग साथ-साथ पढ़ाने का काम कर सकते हैं, अगर अभी नहीं, तो बाद में ? हम लोग आगे चलकर लोगों के किसी काम आ सकेंगे, हम दोनों। मैं जनरल साहब की बेटी नहीं बनी रहना चाहती।...एक बात बताइए, क्या आप बड़े विद्वान आदमी हैं ?"

"अरे, नहीं, बिलकुल नहीं।"

"कितने अफ़सोस की बात है, और मैं समझती थी...लेकिन मैं ऐसा समझती ही क्यों थी ? फिर भी, आप मुझे रास्ता तो दिखाएँगे ही, क्योंकि मैंने आपको चुना है।"

"यह तो बिलकुल बेतुकी बात है, अग्लाया इवानोव्ना।"

"मैं चाहती हूँ, मैं घर से भाग जाना चाहती हूँ !" वह चिल्लाई और उसकी आँखें फिर चमक उठीं। "अगर आप नहीं तैयार होंगे तो मैं गान्या से शादी कर लूँगी। मैं नहीं चाहती कि घर पर

मुझे मनहूस औरत समझा जाए और मुझे न जाने किन-किन बातों के लिए दोषी ठहराया जाए।"

"आपका दिमाग़ तो ठिकाने है ?" प्रिंस ने अपनी जगह से लगभग उछलकर खड़े होते हुए चिल्लाकर कहा। "आपको किस बात के लिए दोषी ठहराया जाता ? कौन ठहराता है आपको दोषी ?"

"घर पर सभी लोग—माँ, मेरी बहनें, पापा, प्रिंस श., यहाँ तक कि [illegible] भी ! भले ही वे खुलकर न कहें लेकिन सोचते तो हैं ही। मैंने यह बात उनके मुँह पर कह दी, माँ के और पापा के। माँ की दिन-भर तबियत खराब रही; अगले दिन अलेक्सान्द्रा और पापा ने मुझसे कहा कि मैं कुछ नहीं समझती कि मैं क्या बकवास करती रहती हूँ और जो मुँह में आता है बिना जाने-बूझे कह देती हूँ। मैंने उनसे साफ़-साफ़ कह दिया कि मैं सब कुछ समझती हूँ, सब, सब, शब्द समझती हूँ, कि मैं अब छोटी बच्ची नहीं हूँ, कि दो साल पहले मैंने जान-बूझकर सब कुछ मालूम करने के लिए पॉल दे कोक के दो उपन्यास पढ़े थे। माँ तो मेरे मुँह से यह बात सुनकर लगभग बेहोश हो गईं।"

अचानक प्रिंस के दिमाग़ में एक विचित्र विचार बिजली की तरह कौंध गया। उसने अग्लाया को बेधती हुई नज़रों से देखा और मुस्करा दिया।

उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसके पास वही ढीठ लड़की बैठी थी जिसने इतने गर्व और तिरस्कार से गान्या का पत्र उसे पढ़कर सुनाया था। उसकी समझ में यह बात किसी तरह नहीं आ रही थी कि इतना तिरस्कार करनेवाली, निष्ठुर और सुन्दर लड़की ऐसी बच्ची हो सकती है, ऐसी बच्ची जो अब भी शायद सचमुच सारे शब्द नहीं समझती थी।

"क्या आप हमेशा घर पर ही रही हैं ?" प्रिंस ने पूछा। "मेरा मतलब है, क्या आप कभी स्कूल नहीं गईं या आपने बोर्डिंग स्कूल में रहकर नहीं पढ़ा ?"

"जी नहीं, मैं कभी कहीं नहीं गई। मैं बोतल में बन्द हमेशा घर पर बैठी रही हूँ, और सीधे बोतल में से निकालकर मेरी शादी कर दी जाएगी। आप फिर मुस्करा किस बात पर रहे हैं ? मैं देखती हूँ कि शायद आप भी मुझ पर हँसते हैं और उन्हीं लोगों का पक्ष लेते हैं," उसने धमकी-भरे अन्दाज से त्योरियाँ चढ़ाकर कहा। "मुझे ताव न दिलाइए; यों ही मेरी समझ में नहीं आता कि मुझे हो क्या गया है।...मुझे यक़ीन है कि आप यहाँ यह सोचकर आए थे कि मैं आपसे प्रेम करती हूँ और यह कि मैंने आपसे चोरी-छिपे मुलाक़ात करने के लिए यह जगह तै की थी," उसने तीखे स्वर में चिड़चिड़ाकर कहा।

"कल मुझे सचमुच इस बात का डर था," प्रिंस ने सच्चे मन से साफ़ बात कह दी (वह कुछ बौखलाया हुआ था), "लेकिन आज मुझे यक़ीन हो गया कि आप..."

"क्या ?" अग्लाया चिल्लाकर बोली और उसका नीचे का होंठ अचानक काँपने लगा। "आपको डर था कि मैं...आपकी यह सोचने की हिम्मत कैसे पड़ी कि मैं...हे भगवान, मुझे तो इस पर भी ताज्जुब न होगा अगर आपने यह सोचा हो कि मैंने आपको फन्दे में फाँसने के लिए यहाँ बुलाया था ताकि वे लोग हमें यहाँ पकड़ लें और आपको मुझसे शादी करने पर मजबूर कर दें।..."

"अग्लाया इवानोव्ना ? आपको शर्म नहीं आती ? आपके शुद्ध और निष्कपट मन में ऐसा गन्दा विचार आया कैसे ? मैं शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि आप ख़ुद अपने एक शब्द पर भी विश्वास नहीं करतीं और...आप खुद नहीं जानतीं कि आप कह क्या रही हैं !"

अग्लाया नज़रें ज़मीन पर गड़ाए बैठी रही, मानो जो कुछ उसने कहा था उससे डर गई हो।

"मुझे बिलकुल शर्म नहीं आती," उसने बुदबुदाकर कहा; "और आपको कैसे मालूम कि मेरा मन निष्कपट है ? तब फिर मुझे प्रेम-पत्र भेजने की आपकी हिम्मत कैसे पड़ी थी ?"

"प्रेम-पत्र ? मेरा पत्र—प्रेम-पत्र ! वह बेहद सम्मान-भरा पत्र था; वह मेरे जीवन के एक सबसे कष्टमय क्षण में सीधे मेरे दिल से निकली हुई बात थी ! मैंने उस वक़्त आपकी कल्पना एक तरह की ज्योति के रूप में की थी...मैं।..."

"ठीक है, ठीक है," अग्लाया ने अचानक उसकी बात काट दी, लेकिन अब पहलेवाले स्वर में नहीं, बल्कि मानो उसे पछतावा हो रहा हो और वह डर-सी गई हो। वह उसकी ओर झुक तक आई और अब भी सीधे उसके चेहरे की ओर न देखने की कोशिश करते हुए उसने उसका कन्धा भी छू लिया, मानो अधिक अनुरोध से उससे नाराज़ न होने की प्रार्थना कर रही हो। "ठीक है," उसने फिर कहा, उसकी सूरत से लग रहा था कि वह अपने आप पर बहुत लज्जित थी। "मैं जानती हूँ कि मैंने बहुत बेवक़ूफ़ी की बात कही थी। मैंने वह बात बस...बस आपको परखने के लिए कही थी। समझ लीजिए वह बात कभी कही ही नहीं गई थी। अगर मेरी बात से आपको तकलीफ़ पहुँची हो तो मुझे अफ़सोस है। मुझे इस तरह न घूरिए। मेहरबानी करके मुँह फेर लीजिए। आपने कहा कि वह बहुत गन्दा विचार था। मैंने जान-बूझकर वह बात कही थी, आपको तकलीफ़ पहुँचाने के लिए। कभी-कभी मैं जो कुछ कहनेवाली होती हूँ उससे खुद डर जाती हूँ, लेकिन मेरा अपने ऊपर बस नहीं चलता। आपने अभी कहा था कि आपने वह खत अपने जीवन के सबसे कष्टमय क्षण में लिखा था।...मैं जानती हूँ कि वह क्षण क्या था," उसने फिर ज़मीन की ओर देखते हुए धीमे से कहा।

"काश आपको सारी बात मालूम होती !"

"मुझे मालूम है सारी बात !" उसने नए सिरे से उद्विग्न होकर कहा। "आप उस वक़्त पूरे एक महीने से उस घिनौनी औरत के साथ एक ही फ़्लैट में रह रहे थे जिसके साथ आप भाग गए थे।..."

ये शब्द कहते समय वह लजायी तनिक भी नहीं, बल्कि उसका रंग पीला पड़ गया; वह अचानक इस तरह उठ खड़ी हुई जैसे उसकी समझ में न आ रहा हो कि वह क्या कर रही है, लेकिन अपने आपको सम्भालकर वह फ़ौरन ही फिर बैठ गई; उसके होंठ बड़ी देर तक काँपते रहे। यह चुप्पी पूरे एक मिनट तक रही। प्रिंस को उसके विस्फोट की आकस्मिकता से बेहद गहरा भयानक आघात पहुँचा था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इसका कारण क्या था।

"मुझे आपसे रत्ती-भर भी प्रेम नहीं है," वह सहसा मानो अटल विश्वास के साथ बोली।

प्रिंस ने कोई जवाब नहीं दिया; दोनों फिर एक मिनट तक चुप रहे।

"मैं गान्या से मुहब्बत करती हूँ," उसने तेजी से लेकिन लगभग न सुनाई देनेवाले स्वर में और अपना सिर पहले से भी ज़्यादा झुकाकर कहा।

"यह सच नहीं है," प्रिंस ने भी कानाफूसी जैसे स्वर में कहा।

"तो मैं झूठ बोल रही हूँ, क्यों ? यह सच बात है। मैंने परसों इसी जगह बैठकर उससे शादी करने का वादा किया है।"

प्रिंस चौंक पड़ा और एक क्षण तक सोचता रहा।

"यह सच नहीं है," उसने निर्णायक स्वर में दोहराया, "आपने यह सब कुछ अपने मन से गढ़ा है।"

"आपमें भी कैसी कमाल की शिष्टता है ! मैं आपको इतना बता दूँ कि उसने अपनी ज़िन्दगी

का ढर्रा बिलकुल बदल दिया है। वह मुझे जान से ज़्यादा प्यार करता है। यह साबित करने के लिए कि वह मुझे जान से ज़्यादा चाहता है उसने मेरे सामने अपना हाथ जला दिया।"

"अपना हाथ जला दिया ?"

"जी हाँ, अपना हाथ। आप यक़ीन करें या न करें—मुझे इसकी परवाह नहीं।"

प्रिंस फिर चुप हो गया। अग्लाया मज़ाक़ करती हुई नहीं लग रही थी, वह गम्भीर थी।

"अगर उसने ऐसा यहाँ किया तो क्या वह मोमबत्ती अपने साथ लाया था ? मेरी समझ में नहीं आता उसने ऐसा कैसे किया होगा।..."

"जी हाँ...वह मोमबत्ती लाया था। इसमें ऐसी हैरत की क्या बात है ?"

"पूरी मोमबत्ती या शमादान में लगी हुई ?"

"जी, हाँ...मेरा मतलब है, नहीं...आधी मोमबत्ती...जली हुई मोमबत्ती का बचा हुआ टुकड़ा...पूरी मोमबत्ती,—उससे फ़र्क़ क्या पड़ता है ? रहने दीजिए ! और अगर आप जानना ही चाहते हैं तो वह माचिस भी लाया था। उसने मोमबत्ती जलाई और आधे घंटे तक अपनी उँगली उसकी लौ पर रखे रहा। आप इसे मुमकिन नहीं समझते ?"

"मैं कल ही रात उससे मिला था। उसकी उँगलियों को तो कुछ नहीं हुआ था।"

अग्लाया अचानक बच्चों की तरह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"जानते हैं मैंने अभी यह झूठ आपसे क्यों बोला ?" वह अचानक प्रिंस की ओर बाल सुलभ विश्वास के साथ मुड़ी; उसके होंठ अभी तक हँसी से काँप रहे थे। "इसलिए कि झूठ बोलते वक़्त उसके बीच में बड़ी होशियारी से अगर कोई ऐसी बात डाल दी जाए जो आमतौर पर न होती हो—कोई सनकीपन की बात, मेरा मतलब है कोई ऐसी बात जिसके बारे में आप जानते हों कि ऐसा कभी-कभार ही होता है, बल्कि कभी नहीं होता—तो झूठ ज़्यादा सच मालूम होने लगता है। मैंने यह देखा है। बस मैं इसे ठीक से कर नहीं पाई क्योंकि मुझे ऐसा करना आता नहीं है।..."

अचानक उसके माथे पर फिर बल पड़ गए मानो वह अपने आपको सम्भाल रही हो।

"अगर," उसने प्रिंस की ओर मुड़कर उसे गम्भीरता से बल्कि उदास भाव से देखते हुए कहा, "अगर उस दिन जब मैंने आपको 'ग़रीब सूरमा' के बारे में कविता सुनाई थी, मैं चाहती थी कि...कि उसके साथ ही आपके लिए कुछ तारीफ़ के शब्द भी कह दूँ, तो मैं यह भी चाहती थी कि आपके व्यवहार पर अपनी नफ़रत भी ज़ाहिर कर दूँ, और आपको बता दूँ कि मैं सब कुछ जानती हूँ।..."

"आप मेरे साथ बड़ी बेइन्साफ़ी कर रही हैं...और उस अभागी औरत के साथ भी जिसकी चर्चा आपने अभी इतने भयानक शब्दों में की थी।"

"चूँकि मैं सब कुछ जानती हूँ, सब कुछ, इसलिए मैंने इस तरह बात कही ! मैं जानती हूँ कि छह महीने पहले आपने सबके सामने उससे शादी करने का प्रस्ताव किया था। बीच में मत बोलिए, मैं बोलते वक़्त कोई टिप्पणी नहीं चाहती। उसके बाद वह रोगोझिन के साथ भाग गई; फिर आप उसके साथ किसी गाँव या क़स्बे में रहे, और वह आपको छोड़कर किसी और के पास चली गई।" (अग्लाया का रोम-रोम लजा गया।) "उसके बाद वह फिर रोगोझिन के पास लौट आई, जो उसके प्यार में...पागल है। फिर आप—आप भी बहुत होशियार आदमी हैं—यह ख़बर सुनते ही कि वह पीटर्सबर्ग लौट आई है भागे-भागे उसके पीछे यहाँ आ पहुँचे। कल शाम आप उसे बचाने के लिए लपके थे, और अभी-अभी आप उसी का सपना देख रहे थे।...देखिए, मैं सब कुछ जानती हूँ। आप यहाँ उसी की खातिर आए थे न ?"

"जी हाँ, उसी की ख़ातिर," प्रिंस ने उदासी और चिन्ता के भाव से अपना सिर नीचा करके और इस बात की तनिक भी शंका किए बिना कि अग्लाया उसे कैसी आग्नेय दृष्टि से घूर रही थी, शान्त भाव से उत्तर दिया। "मैं उसकी खातिर यह पता लगाने आया था...मुझे बिलकुल विश्वास नहीं है कि वह रोगोझिन के साथ सुखी रहेगी, हालाँकि मतलब यह कि मैं ख़ुद नहीं जानता कि मैं उसके लिए क्या कर सकता हूँ और मैं उसकी मदद कैसे कर सकता हूँ, लेकिन मैं आया।"

वह चौंक पड़ा और उसने एक नज़र अग्लाया पर डाली जो घृणा के भाव से उसकी बात सुन रही थी।

"अगर आप यह जाने बिना ही आ गए थे कि आप किसलिए आए हैं," वह आख़िरकार बोली, "तो आप उससे बहुत ज़्यादा प्यार करते होंगे।"

"नहीं," प्रिंस ने जवाब दिया, "नहीं, मैं उससे प्यार नहीं करता। काश आपको मालूम होता कि जो समय मैंने उसके साथ बिताया उसे याद करके मुझे कितनी दहशत होती है !"

ये शब्द कहते समय उसके सारे शरीर में सिहरन दौड़ गई।

"मुझे सब कुछ बताइए," अग्लाया ने कहा।

"इसमें कोई बात ऐसी नहीं है जो आपके जानने की न हो। मालूम नहीं, मैं यह सब कुछ आपको, और सिर्फ़ आपको क्यों बताना चाहता हूँ। शायद इसलिए कि दरअसल मैं आप ही से बहुत ज़्यादा प्यार करता था। उस अभागी औरत को पक्का विश्वास है कि वह इस सारी दुनिया में सबसे ज़्यादा पतित और सबसे दुष्ट प्राणी है। उसे तिरस्कार से न देखिए, उस पर पत्थर न फेंकिए। उसके किसी दोष के बिना उसे जिस तरह बदनाम किया गया है उसकी चेतना से ही वह काफ़ी तकलीफ़ उठा चुकी है ! भगवान ही जाने, उसने ऐसा किया ही क्या है जिसके लिए उसे दोष दिया जाए ? अपने उन्माद में वह हर क्षण यही चिल्लाती रहती है कि वह यह मानने से इन्कार करती है कि वह कोई ग़लत काम करने की दोषी है, कि वह दूसरे लोगों के किए का शिकार है, कि वह एक ऐयाश और दुष्ट आदमी का शिकार रही है। लेकिन वह आपसे चाहे जो कहे, मैं आपको इतना बता देना चाहता हूँ कि सबसे पहले वह खुद ही उस पर विश्वास नहीं करती और वह पूरे दिल से यही विश्वास करती है कि सारा दोष...खुद उसका है। जब मैंने उसके दिमाग़ से यह मनहूस सनक निकालने की कोशिश की तो वह ऐसी पीड़ा से छटपटाई कि उस भयानक समय को याद करके मेरा दिल हमेशा रो उठेगा। मुझे ऐसा महसूस होता है कि मेरा दिल आर-पार बेध दिया गया है। वह मेरे पास से भाग गई—जानते हैं किसलिए ? बस मुझसे ही यह साबित करने के लिए कि वह नीच औरत है। लेकिन सबसे भयानक बात तो यह है कि शायद वह ख़ुद नहीं महसूस करती थी कि वह सिर्फ़ मुझसे यह साबित करना चाहती थी, बल्कि वह इसलिए भाग गई थी कि अन्दर ही अन्दर वह महसूस करती थी कि उसे कोई ऐसा शर्मनाक काम करना चाहिए कि वह फ़ौरन अपने आपसे कह सके—'देखो, तुमने फिर शर्मनाक हरकत की न, इसलिए तुम ज़रूर नीच होगी !' शायद यह बात आपकी समझ में नहीं आएगी, अग्लाया ! क्या आप जानती हैं कि ऐसा लगता है कि कलंक की इस निरन्तर चेतना से उसे कोई भयानक, अप्राकृतिक सन्तोष मिलता है, किसी से एक तरह का बदला लेने का सुख। कभी-कभी उसे अपने चारों ओर की रोशनी फिर दिखा सकने में मैं सफल हो जाता था, लेकिन अचानक वह इतनी चिढ़ उठती थी कि बड़ी कटुता से मुझे दोष देती थी कि मैं अपने आपको उससे बहुत ऊँचा समझता हूँ (हालाँकि इस तरह का विचार कभी मेरे दिमाग़ में आया भी नहीं था), और जब मैंने उसके साथ शादी करने की बात कही तो वह मुझसे बोली कि वह किसी की एहसान-भरी हमदर्दी या मदद नहीं चाहती, न ही वह चाहती

है कि कोई उसे 'उठाकर अपने स्तर तक ले आए'। आपने कल उसे देखा था। क्या आप सचमुच समझती हैं कि वह उन कचरा लोगों के साथ खुश है, क्या वह सोहबत उसके लायक़ है ? आप नहीं जानतीं कि वह कितनी पढ़ी-लिखी है और वह कैसी-कैसी चीज़ें समझ सकती है ! कभी-कभी वह मुझे आश्चर्य में डाल देती थी !"

"क्या आप ऐसे...उपदेश उसे भी दिया करते थे ?"

"अरे नहीं," प्रिंस सवाल के लहजे की ओर ध्यान दिए बिना विचारों में डूबा हुआ कहता गया। "मैं शायद ही कभी बोलता था। बोलना मैं अकसर चाहता था, लेकिन कभी-कभी मेरी समझ में ही नहीं आता था कि कहूँ क्या। बात यह है कि कुछ मौक़े ऐसे होते हैं जब कुछ न कहना ही सबसे अच्छा होता है। मैं उससे प्यार करता था, मैं उससे बहुत प्यार करता था...लेकिन बाद में...बाद में...बाद में उसने हर बात का अन्दाजा लगा लिया।"

"क्या अन्दाजा लगा लिया उसने ?"

"कि मैं उस पर बस तरस खाता था, लेकिन मैं...मैं उससे अब प्यार नहीं करता था।"

"आपको कैसे मालूम कि उसे उस...उस ज़मींदार से...सचमुच प्यार नहीं हो गया था जिसके साथ वह चली गई थी ?"

"नहीं, मुझे उसके बारे में सब कुछ मालूम है। उसने उसे सिर्फ़ बेवक़ूफ़ बनाया था।"

"और उसने आपको कभी बेवक़ूफ़ नहीं बनाया ?"

"न-नहीं। वह बस जलाने के लिए मुझ पर हँसती थी। फिर वह गुस्से में आकर मुझे बुरी तरह लताड़ती थी, और खुद भी बेहद दुःखी हो जाती थी ! लेकिन...बाद में...उफ़, मुझे उसकी याद न दिलाइए...मुझे उसकी याद न दिलाइए !"

उसने अपना मुँह दोनों हाथों से ढाँप लिया।

"और क्या आपको मालूम है कि वह लगभग रोज ही मुझे पत्र लिखती है ?"

"तो यह सच है !" प्रिंस चिन्तित होकर चिल्लाया। "मैंने सुना ज़रूर था, लेकिन अभी तक मैं इस पर विश्वास करना नहीं चाहता था।"

"आपने किससे सुना था ?" अग्लाया ने आशंकित होकर चौंकते हुए पूछा।

"कल रोगोझिन ने मुझे बताया था, लेकिन साफ़-साफ़ नहीं।"

"कल ? कल सबेरे ? कल—क़ब ? बैण्ड से पहले या बाद में ?"

"बाद में। रात को, लगभग बारह बजे।"

"ख़ैर, अगर रोगोझिन ने बताया तो ठीक है।...और क्या आप जानते हैं कि वह इन पत्रों में मुझे क्या लिखती है ?"

"मुझे किसी भी बात पर ताज्जुब न होगा—वह पागल जो है।"

"ये रहे वे पत्र !" (अग्लाया ने अपनी जेब में से लिफाफों में रखे हुए तीन पत्र निकालकर प्रिंस के सामने फेंक दिए)। "पूरे एक हफ़्ते से वह मेरी मिन्नत कर रही है, मुझे समझा रही है, और मेरी खुशामद कर रही है कि मैं आपसे शादी कर लूँ। वह...ख़ैर, वह पागल भले ही हो लेकिन है बहुत होशियार, और आपका यह कहना बिलकुल ठीक है कि मुझसे कहीं ज़्यादा होशियार है...वह लिखती है कि उसे मुझसे प्यार हो गया है और यह कि रोज वह मुझे देख सकने के मौक़े की खोज में रहती है दूर से ही सही। वह लिखती है कि आप मुझे प्यार करते हैं, कि वह इस बात को जानती है, कि उसका ध्यान बहुत पहले इस बात की ओर गया था, कि आप उससे मेरे बारे में बातें किया करते थे वहाँ। वह आपको सुखी देखना चाहती है। उसे पूरा विश्वास है कि

मैं ही आपको सुखी बना सकती हूँ।...वह ऐसे ऊटपटाँग...ऐसे विचित्र ढंग से लिखती है। मैंने उसके पत्र किसी को दिखाए नहीं हैं। मैं आपकी राह देखती रही हूँ। क्या आपको कुछ मालूम है कि इसका क्या मतलब हो सकता है ? आप कुछ अन्दाजा नहीं लगा सकते ?"

"पागलपन है, यह उसके पागलपन का सबूत है," प्रिंस ने कहा और उसके होंठ काँप उठे।

"आप रो तो नहीं रहे हैं ?"

"नहीं, अग्लाया, मैं रो नहीं रहा हूँ," प्रिंस ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"मैं इसके बारे में क्या करूँ ? आप मुझे क्या सलाह देते हैं ? मैं नहीं चाहती कि ये पत्र मेरे पास आते रहें !"

"उसे रहने दीजिए, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ !" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा। "आप इस घोर अँधेरे में कर ही क्या सकती हैं ? मैं पूरी कोशिश करूँगा कि वह अब आपको पत्र न लिखे।"

"अगर ऐसा है तो आपके सीने में दिल नहीं है !" अग्लाया ने चिल्लाकर कहा। "आपकी समझ में यह नहीं आता कि उसे मुझसे कोई प्यार नहीं है, बल्कि वह आपको प्यार करती है, सिर्फ़ आपको ! आप उसमें हर चीज़ देख पाए, लेकिन इस बात को आप नहीं देख सके ! जानते हैं आप यह क्या है ? इन पत्रों का क्या मतलब है ? यह जलन है, यह जलन से भी ज़्यादा है ! वह...क्या आप सचमुच समझते हैं कि वह रोगोज़िन से शादी कर लेगी, जैसा कि वह अपने पत्रों में लिखती है ? हमारी शादी के अगले ही दिन वह अपने आपको मार डालेगी !"

प्रिंस चौंक पड़ा; उसका दिल बैठ गया। लेकिन उसने आश्चर्य से अग्लाया को देखा—यह महसूस करना उसे कुछ विचित्र सा लगा कि यह बच्ची कभी की बढ़कर पूरी औरत बन चुकी थी।

"भगवान जानता है, अग्लाया, कि उसके मन की शान्ति उसे लौटा देने के लिए और उसे सुखी रखने के लिए मैं खुशी से अपनी जान तक दे दूँगा, लेकिन...अब मैं उससे प्यार नहीं कर सकता और इस बात को वह जानती है !"

"तो अपनी बलि दे दीजिए ! इस तरह की बात तो आपको बहुत शोभा देती है ! आप इतने बड़े परोपकारी हैं। और मुझे 'अग्लाया' मत कहिए।...अभी आपने मुझे सिर्फ़ 'अग्लाया' कहा था।...आपको ऐसा ही करना चाहिए, उसकी ज़िन्दगी उसे वापस दिला देना आपका कर्तव्य है। आपको उसे शान्त करने के लिए और उसके दिल को तसल्ली देने के लिए फिर उसके साथ चला जाना चाहिए। आपको उससे प्यार जो है !"

"मैं अपनी बलि नहीं दे सकता, हालाँकि एक बार मैं ऐसा करना चाहता था और...शायद अब भी चाहता हूँ। लेकिन यह मैं पक्के तौर पर जानता हूँ कि मेरे साथ वह तबाह हो जाएगी, और इसीलिए मैं उसे छोड़ रहा हूँ। आज सात बजे मुझे उससे मिलना था। मैं नहीं समझता कि अब मैं जाऊँगा। अपने घमण्ड में वह मुझे मेरे प्रेम के लिए कभी माफ़ नहीं करेगी—और हम दोनों मिट जाएँगे ! यह अस्वाभाविक बात है, लेकिन यहाँ तो हर बात अस्वाभाविक है। आप कहती हैं कि वह मुझसे प्यार करती है, लेकिन क्या यह प्यार है ? जो कुछ मैं झेल चुका हूँ उसके बाद क्या ऐसा प्यार हो सकता है ? नहीं, यह कुछ और है, प्यार नहीं !"

"आप कितने पीले पड़ गए हैं !" अग्लाया अचानक भयभीत होकर चिल्लाई।

"कोई बात नहीं। मैं ठीक से सोया नहीं; मैं कमज़ोर हो गया हूँ, मैं...हम लोग सचमुच तब आपके बारे में बातें करते थे, अग्लाया।..."

"तो यह सच है ? आप सचमुच उससे मेरे बारे में बातें कर सके और...और आपको मुझसे प्यार कैसे हो गया जबकि आपने मुझे बस एक ही बार देखा था ?"

"न जाने कैसे। उस घोर अँधेरे में मैं सपना देखा करता था। [illegible] लगता था कि मुझे एक नए प्रभात की झलक मिल गई है। मालूम नहीं आपके बारे में मैंने पहली बार कैसे सोचा था। उस वक़्त मैंने आपको सच बात लिखी थी कि मुझे मालूम नहीं था। मगर सब बस कल्पना थी, उस वक़्त की दहशत से...बाद में मैं काम करने लगा। मैं तीन साल तक यहाँ लौटकर न आता..."

"तो आप उसकी खातिर वापस आए हैं ?"

और अग्लाया की आवाज़ में हल्की-सी अटक पैदा हो गई।

"हाँ, उसकी खातिर।"

दो मिनट तक दोनों उदास खामोशी में डूबे रहे। अग्लाया अपनी जगह से उठ खड़ी हुई।

"अगर आप कहते हैं," उसने लड़खड़ाते स्वर में कहना शुरू किया, "अगर आपका खुद विश्वास है कि वह...आपकी वह औरत...पागल है तो मुझे उसके पागलपन के भ्रमों से कुछ लेना-देना नहीं है।...मेहरबानी करके ये तीन पत्र ले लीजिए और मेरी ओर से उसके पास वापस फेंक दीजिएगा ! और अगर वह," अग्लाया अचानक चीख़कर बोली, "अगर उसने फिर कभी एक लाइन भी लिखने की हिम्मत की, तो आप उससे कह दीजिएगा कि मैं पापा से शिकायत कर दूँगी और वह पागलखाने में बन्द करवा दी जाएगी !"

प्रिंस उछलकर खड़ा हुआ और अग्लाया के इस आकस्मिक क्रोध को आश्चर्य से देखने लगा, और सहसा ऐसा लगा कि उसकी आँखों के सामने कुहरा उतर आया है।...

"आप ऐसा नहीं महसूस कर सकतीं...यह सच नहीं है !" वह बुदबुदाया।

"यह सच है ! बिलकुल सच !" अग्लाया लगभग आपे से बाहर होकर चिल्लाई।

"क्या बात है ? क्या सच है ?" उनके पास किसी ने डरी हुई आवाज़ में पूछा।

मिसेज़ येपांचिना उनके सामने खड़ी थीं।

"यह सच है कि मैं गव्रीला अर्दालिओनोविच से शादी करने जा रही हूँ ! कि मैं गव्रीला अर्दालिओनोविच से प्रेम करती हूँ और मैं कल ही उनके साथ भाग जाऊँगी !" अग्लाया अपनी माँ पर बरस पड़ी। "सुन लिया ? आप जो जानना चाहती थीं वह मालूम हो गया ? अब तो आप खुश हैं ?"

और वह घर भाग गई।

"नहीं, तुम अभी न जाओ," मिसेज़ येपांचिना ने प्रिंस को रोकते हुए कहा। "मेहरबानी करके मेरे साथ चलकर सारी बात साफ़ कर दो...उफ़, मुझे क्या-क्या भुगतना पड़ रहा है, और मैंने रात-भर पलक तक नहीं झपकाई।..."

प्रिंस उनके पीछे-पीछे चल दिया।

9

घर पहुँचकर मिसेज़ येपांचिना पहले ही कमरे में रुक गईं; वह और आगे न जा सकीं और निढ़ाल होकर एक कोच पर धँसकर बैठ गईं, यहाँ तक कि वह प्रिंस से भी बैठने को कहना भूल गईं। यह ड्राइंग-रूम काफ़ी बड़ा था, जिसके बीच में एक गोल मेज़ पड़ी थी, उसमें एक आतिशदान था, खिड़कियों के पास पटरे पर ढेरों फूल सजे हुए थे, सामने की दीवार में एक और काँचदार दरवाज़ा था जो बाग़ में खुलता था। अदेलईदा और अलेक्सान्द्रा फ़ौरन अन्दर आईं और उन्होंने सवालिया

नज़रों से प्रिंस को और अपनी माँ को देखा।

लड़कियाँ आमतौर पर लगभग नौ बजे सोकर उठती थीं। सिर्फ़ अग्लाया पिछले दो-तीन दिन से सबेरे जल्दी उठकर बाग़ में टहलने जाने लगी थी, हालाँकि सात बजे कभी नहीं, बल्कि आठ बजे या उसके भी कुछ बाद। मिसेज़ येपांचिना, जो अपनी विभिन्न चिन्ताओं की वजह से सचमुच रात-भर नहीं सोई थीं, लगभग आठ बजे उठीं और यह सोचकर कि अग्लाया उठ चुकी होगी बाग़ में उससे मिलने गईं। लेकिन उन्हें वह न बाग़ में मिली और न अपने सोने के कमरे में। घबराकर उन्होंने अपनी दोनों बेटियों को जगाया। नौकरानी से उन्हें पता चला कि अग्लाया सात बजे से पहले ही बाग़ में गई थी। लड़कियाँ अपनी सनकी बहन की इस नई सनक पर मुस्करा दीं और उन्होंने माँ से अपना यह मत व्यक्त किया कि अगर वह अग्लाया को खोजने पार्क में गईं तो वह उनसे नाराज़ हो जाएगी, और शायद वह अब कोई किताब लिए उस हरी बेंच पर बैठी होगी जिसकी चर्चा वह तीन दिन पहले कर रही थी और जिसको लेकर प्रिंस श. से उसकी लगभग लड़ाई हो गई थी, क्योंकि उन्हें इस बेंच की स्थिति में कोई ख़ास बात दिखाई नहीं दी थी। अपनी बेटी को प्रिंस के साथ अकेला पाकर और उसके विचित्र शब्द सुनकर मिसेज़ येपांचिना के दिल में कई कारणों से बेहद डर समा गया था; लेकिन अब प्रिंस को अपने साथ वापस ले आने के बाद उन्हें अफ़सोस हो रहा था कि उन्होंने यह बात कहना शुरू ही क्यों किया—"अग्लाया के प्रिंस से पार्क में मिलने में और उससे बातें करने में हर्ज़ ही क्या था, भले ही उन्होंने पहले से वहाँ मिलने की बात तै कर ली थी ?"

"मेरे प्यारे प्रिंस, तुम यह न समझ बैठना," उन्होंने आख़िरकार साहस बटोरकर उसे सम्बोधित किया, "कि मैं तुम्हें यहाँ सवाल जवाब करने के लिए खींचकर लाई हूँ।...कल शाम जो कुछ हुआ उसके बाद मुमकिन था कि बहुत दिन तक तुमसे मिलने को मेरा इतना जी न चाहता।..."

वह अचानक बोलते बोलते रुक गई।

"फिर भी आप यह जानने के लिए तो बेचैन होंगी ही कि आज सबेरे अग्लाया इवानोव्ना से मेरी मुलाक़ात कैसे हुई, है न ?" प्रिंस ने उनकी तरफ़ से उनका भाषण बड़े शान्त भाव से पूरा कर दिया।

"अच्छा, है भी तो ?" मिसेज़ येपांचिना फ़ौरन भड़क उठीं। "मैं साफ़ बात कहने से डरती नहीं। क्योंकि मैं किसी का दिल नहीं दुखा रही हूँ, और मैं किसी का दिल दुखाना चाहती भी नहीं थी।..."

"तोबा, तोबा, अगर आप जानना चाहती भी हैं तो उसमें बुरा मानने की कोई बात तो है नहीं—आप उनकी माँ हैं। मैं आज सबेरे सात बजे अग्लाया इवानोव्ना से हरी बेंच पर इसलिए मिला था कि कल खुद उन्होंने मुझसे वहाँ आने को कहा था। उन्होंने कल एक पर्चा लिखकर मुझे बताया था कि उन्हें किसी बहुत महत्त्वपूर्ण सवाल पर बातें करने के लिए मुझसे मिलना है। हम लोग मिले और पूरे एक घंटे तक ऐसे सवालों के बारे में बातें करते रहे जिनका सम्बन्ध सिर्फ़ अग्लाया इवानोव्ना से है। बस इतनी बात है।"

"ज़ाहिर है, इतनी ही बात है, और मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं है," मिसेज़ येपांचिना गरिमा से बोलीं।

"शाबाश, प्रिंस," अग्लाया ने अचानक कमरे में आते हुए कहा। "यह सोचने के लिए कि मैं झूठ बोलकर अपने आपको नीचा नहीं गिरा सकती आपका तहे-दिल से शुक्रिया। अब तो तसल्ली हो गई, माँ, या हम लोगों से कुछ और पूछने का इरादा है ?"

"तुम जानती हो कि अब तक मुझे तुम्हारे सामने शर्मिन्दा होने की कभी नौबत नहीं आई, हालाँकि मैं दावे से कह सकती हूँ कि तुम्हें खुशी होती अगर ऐसी नौबत आती," मिसेज़ येपांचिना ने तीखेपन से जवाब दिया। "गुड-बाई, प्रिंस; माफ़ करना कि मैंने तुम्हें इतनी तकलीफ़ दी। तुम हमेशा भरोसा रख सकते हो कि मेरे दिल में तुम्हारे लिए इज़्ज़त ही बनी रहेगी।"

प्रिंस ने फ़ौरन झुककर मिसेज़ येपांचिना और तीनों लड़कियों के प्रति सम्मान प्रकट किया और एक शब्द भी कहे बिना बाहर चला गया। अलेक्सान्द्रा और अदेलाइदा मुस्करा दीं और उन्होंने एक-दूसरे के कान में कुछ कहा। मिसेज़ येपांचिना ने कठोर दृष्टि से उन्हें देखा।

"हम तो बस इसलिए मुस्कराई थीं, माँ, कि प्रिंस इतने बढ़िया ढंग से झुके थे," अलेक्सान्द्रा हँसकर बोली। "कभी-कभी वह इतने भोंडे तरीक़े से झुकते हैं, लेकिन इस वक़्त वह बिलकुल वैसे ही झुके थे जैसे...रादोम्स्की।"

"आदमी को शालीनता और गरिमा दिल सिखाता है, नाच सिखानेवाला मास्टर नहीं," मिसेज़ येपांचिना ने उपदेश देने के ढंग से अपनी बात ख़त्म की, और अग्लाया की ओर एक नज़र देखने तक की कृपा किए बिना सीधे अपने कमरे में चली गईं।

जब प्रिंस लगभग नौ बजे अपने घर पहुँचा तो उसे वेरा और नौकरानी बरामदे में ही मिल गईं। वे कल रात के हंगामे के बाद वहाँ झाड़ू लगा रही थीं और सफ़ाई कर रही थीं।

"चलिए, अच्छा हुआ कि आपके आने से पहले ही हम लोगों ने सारा काम निबटा दिया," वेरा खुश होकर बोली।

"गुड-मॉर्निंग। मुझे कुछ चक्कर-सा आ रहा है। मुझे ठीक से नींद नहीं आई। अब मैं कुछ देर सोना चाहता हूँ।"

"यहीं बरामदे में, कल की तरह ? अच्छी बात है। मैं सबसे कह दूँगी कि कोई आपको जगाए नहीं। पापा कहीं बाहर गए हुए हैं।"

नौकरानी बाहर चली गई। वेरा भी उसके पीछे-पीछे ही जानेवाली थी, लेकिन वह लौट आई और प्रिंस के पास गई; वह चिन्तित दिखाई दे रही थी।

"प्रिंस, तरस खाइए उस...बेचारे पर। आज उसे यहाँ से न भेजिए।"

"मैं उसे किसी हालत में नहीं भेजूँगा। जब तक उसका जी चाहे रहे।"

"अब वह कुछ नहीं करेगा और...उसके साथ सख़्ती न बरतिएगा।"

"बिलकुल नहीं। मैं भला क्यों करूँगा ऐसा ?"

"और...मेहरबानी करके उस पर हँसिएगा नहीं। सबसे ज़रूरी बात यही है।"

"अरे, बिलकुल नहीं !"

"आप जैसे आदमी से यह कहना मेरी नादानी है," वेरा ने शर्माते हुए कहा; उसके चेहरे पर लाली दौड़ गई। "आप थक गए होंगे," उसने हँसकर और जाने के लिए मुड़ते हुए कहा, "लेकिन आपकी आँखें तो इस वक़्त इतनी अच्छी लग रही हैं...इतनी ख़ुश !"

"खुश लग रही हैं ?" प्रिंस ने पुलकित स्वर में पूछा और खिलखिलाकर हँस पड़ा।

लेकिन वेरा, जो लड़कों की तरह सीधी-सादी और बेतकल्लुफ़ थी, अचानक अटपटा महसूस करने लगी, उसके चेहरे की लाली और गहरी हो गई, और वह हँसती हुई ही कमरे के बाहर चली गई।

"कैसी...भली लड़की है..." प्रिंस ने सोचा और उसके जाते ही उसके बारे में भूल गया। वह बरामदे के उस कोने में गया जहाँ एक कोच पड़ी थी और उसके सामने छोटी-सी मेज़ रखी थी;

वह कोच पर बैठ गया, दोनों हाथों से मुँह ढाँप लिया, और इसी तरह लगभग दस मिनट तक बैठा रहा; अचानक उसने बग़लवाली जेब में हाथ डाला, जल्दी-जल्दी और बेचैनी से, और उसमें से तीन खत निकाले।

लेकिन इतने में फिर दरवाज़ा खुला और कोल्या अन्दर आया। प्रिंस इस बात पर खुश लग रहा था कि उसने खत जेब में वापस रख लिए थे और उन्हें पढ़ने की घड़ी कुछ देर के लिए टाल दी थी।

"वाह-वाह, क्या हंगामा हुआ !" कोल्या ने कोच पर बैठकर प्रिंस को सम्बोधित करते हुए सीधे मतलब की बात कही, जैसा कि उसके जैसे लड़के हमेशा करते हैं। "अब इप्पोलीत के बारे में आपका क्या ख़्याल है ? अब आपके दिल में उसकी कोई इज्जत नहीं रही है न ?"

"क्यों नहीं...लेकिन, कोल्या, मैं ज़रा नहीं बहुत थका हुआ हूँ...इसके अलावा, फिर से बहस करने के लिए यह कोई बहुत अच्छा दिमाग भी नहीं है...हाँ, वह है कैसा ?"

"वह सो रहा है, और अभी दो घंटे और सोएगा। आप घर पर नहीं सोए थे; पार्क में चले गए थे और...और दिल की हलचल भी ज़्यादा रही...मैं तो यही समझता हूँ !"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं पार्क में गया था और घर पर नहीं सोया था ?"

"अभी वेरा ने मुझे बताया। उसने मुझे यहाँ आने से रोकने के लिए बहुत समझाया भी, लेकिन मुझे आपसे मिलना ज़रूर था...बस एक मिनट के लिए। मैं पिछले दो घंटे से उसके पलंग के पास बैठा हूँ। अब कोस्त्या लेबेदेव की बारी है। बुर्दोव्स्की चला गया है। लेट जाइए, प्रिंस। गुड...गुड-डे ! बस, इतनी बात है, मुझे ताज्जुब हुआ !"

"ज़ाहिर है...यह सब..."

"जी नहीं, प्रिंस, जी नहीं। मुझे ताज्जुब उसकी 'स्वीकारोक्ति' पर है। ख़ासतौर पर उस हिस्से पर जहाँ वह विधाता और भावी जीवन की बातें करता है। उसमें बहुत ही मार्के का विचार छिपा है।"

प्रिंस ने कोल्या को बड़े स्नेह से देखा, जो, ज़ाहिर है, जल्दी से जल्दी उस मार्के के विचार के बारे में ही बातें करने आया था।

"लेकिन विचार उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितनी कि उसकी पूरी पृष्ठभूमि ! अगर रुस्सो, वाल्तेयर, या प्रूधों ने यही बात लिखी होती तो मैं उसे पढ़ता और याद रखता, लेकिन मुझ पर उसका उतना गहरा असर न होता। लेकिन जिस आदमी को पक्के तौर पर मालूम हो कि उसे अब बस दस मिनट और जिन्दा रहना है वह इस तरह की बातें करे—इससे उसके स्वाभिमान का ही पता चलता है ! यह वैयक्तिक अभिमान और गरिमा की उच्चतम स्वतन्त्रता की अभिव्यक्ति है, यह तो खुली चुनौती है...जी हाँ, यह अपार दृढ़ संकल्प का प्रमाण है ! और उसके बाद यह कहना कि उसने कैप जान-बूझकर पिस्तौल में नहीं भरी थी...यह तो सरासर कमीनापन है और समझ में न आनेवाली बात है ! लेकिन, मानना पड़ेगा, कल रात वह हम लोगों को चकमा दे गया, हमें बिलकुल ग़ाफ़िल कर दिया—मैंने सामान बाँधने में उसकी कोई मदद नहीं की थी और पिस्तौल देखा तक नहीं था। उसने सारा सामान खुद बाँधा था, इसलिए पल-भर को तो मेरी समझ में ही नहीं आया कि माजरा क्या है। वेरा कह रही है कि आप उसे यहीं रहने देंगे। मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि अब कोई खतरा नहीं है, ख़ासतौर पर इसलिए कि हम लोग उसे कभी अकेला नहीं छोड़ते।"

"रात को कौन था उसके पास ?"

"कोस्त्या लेबेदेव, बुर्दोव्स्की और मैं। केल्लेर भी थोड़ी देर रहा, लेकिन फिर वह लेबेदेव के

कमरे में सोने चला गया, क्योंकि हम लोगों के कमरे में उसके लिए कोई खाली पलंग नहीं था। फ़ेर्दीश्चेंको भी लेबेदेव के यहाँ ही सोए थे। वह सात बजे चले गए। जनरल साहब तो हमेशा लेबेदेव के यहाँ सोते ही हैं। वह भी उस वक़्त कहीं गए हुए हैं।...लेबेदेव अभी थोड़ी देर में आपसे मिलने आते होंगे। वह आपको ढूँढ़ रहे थे; न जाने किसलिए। दो बार आपको पूछ चुके हैं। अगर आप सोने जा रहे हों तो उन्हें अन्दर आने दिया जाए या नहीं ? मैं भी सोने जा रहा हूँ। अरे हाँ, याद आया, मैं आपसे एक बात कहना चाहता था। अभी जनरल साहब पर मुझे बड़ा ताज़्जुब हुआ—बुर्दोव्स्की ने छह बजे के कुछ ही बाद मुझे जगाया—सच तो यह है कि लगभग छ बजे, क्योंकि इप्पोलीत के पास बैठने की मेरी बारी थी। मैं एक मिनट के लिए बाहर निकला और अचानक जनरल साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई जो उस वक़्त तक इतने नशे में थे कि उन्होंने मुझे पहचाना तक नहीं। मेरे सामने खम्भे की तरह खड़े रहे। फिर उन्हें कुछ होश आया और वह मेरी जान के पीछे पड़ गए। वह जानना चाहते थे कि बीमार का हाल कैसा है, वह खुद अभी मालूम करने आनेवाले थे। मैंने उन्हें बता दिया; फिर हम इधर-उधर की बातें करते रहे। 'यह सब तो बहुत अच्छा है,' वह बोले, 'मगर जिस काम के लिए मैं आया था...किसलिए उठा था...हाँ, मैं तुम्हें चेतावनी देना चाहता था। किसी वजह से मैं समझता हूँ कि हमें फ़ेर्दीश्चेंको के सामने इतना खुलकर बातें नहीं करना चाहिए और...अपना मुँह बन्द रखना चाहिए।' समझ रहे हैं न, प्रिंस ?"

"सचमुच ? लेकिन...क्या फ़र्क़ पड़ता है।"

"जी हाँ, बिलकुल क्या फ़र्क़ पड़ता है। हम लोग कोई फ्री मेसन तो हैं नहीं। इसीलिए मुझे बहुत ताज्जुब हुआ कि जनरल साहब ने चेतावनी देने के लिए रात को खासतौर पर आकर मुझे जगाया।"

"फ़ेर्दीश्चेंको चले गए, क्या ?"

"सात बजे। जाते हुए वह मुझसे मिलने आए थे—मैं इप्पोलीत के पलंग के पास बैठा था ! बोले कि वह चैन से सोने के लिए वील्किन के यहाँ जा रहे हैं—वील्किन पक्का शराबी है। अच्छा, मैं चला ! यह लीजिए, लेबेदेव साहब आ गए...प्रिंस सोना चाहते हैं, जनाब, उल्टे पाँव वापस !"

"बस एक पल, मेरे प्यारे प्रिंस," लेबेदेव ने दबी जबान से, कुछ चतुराई से और अर्थपूर्ण स्वर में बड़ी गरिमा से झुककर कहा। "मैं एक काम से आया हूँ जो मेरे ख्याल में बहुत ज़रूरी है।"

वह अभी घर लौटा था और अभी तक अपना हैट हाथ में लिए हुए था। वह परेशान और बिलकुल असाधारण रूप से प्रतिष्ठित लग रहा था। प्रिंस ने उससे बैठने को कहा।

"आप दो बार मुझे पूछ चुके हैं न ? आप अभी तक कहीं कलवाले मामले के बारे में तो परेशान नहीं हैं ?"

"आपका मतलब है, प्रिंस, उस कलवाले लड़के के बारे में ? अरे, नहीं, साहब। शायद कल मैं कुछ उलझा हुआ था, लेकिन...आज आपके किसी भी सुझाव को किसी भी तरह कांत्रकारे[1] करने का मेरा कोई इरादा नहीं है।"

"कांत्र...क्या कहा आपने ?"

"मैंने कहा, जनाब, कांत्रकारे। फ्रांसीसी का शब्द है, साहब, वैसा ही जैसे और बहुत-से शब्द हमारी भाषा में आ गए हैं, वैसे तो मैं उसके पक्ष में नहीं हूँ।"

"आज आपको यह हुआ क्या है, लेबेदेव ? आप इतने रोबदार और बने-सँवरे लग रहे हैं और बोल तो ऐसे रहे हैं जैसे शब्द छाँटकर लाए हों," प्रिंस ने मुस्कराते हुए कहा।

1. खण्डन करना। (फ्रांसीसी)

"मेरे प्यारे कोल्या," लेबेदेव काफ़ी गहरी भावना के साथ बोलते हुए कोल्या की ओर मुड़ा, "मुझे प्रिंस को एक ऐसे मामले के बारे में बताना है जिसका सम्बन्ध...यानी..."

"हाँ-हाँ, बिलकुल, मुझसे क्या मतलब ! गुड-बाई, प्रिंस," कोल्या ने फ़ौरन वहाँ से जाते हुए कहा।

"लड़का है बहुत समझदार," लेबेदेव ने अपनी नज़रों से कमरे से बाहर निकलते हुए उसका पीछा करते हुए कहा। "बड़ा चालाक लड़का है, वैसे कभी-कभी जान को आ जाता है। मेरे प्यारे प्रिंस, कल रात या आज बहुत सबेरे मैं एक मुसीबत में फँस गया हूँ...ठीक वक़्त का मुझे पक्का यक़ीन नहीं।"

"क्या बात है ?"

"मेरे कोट की जेब से चार सौ रूबल ग़ायब हो गए हैं, मेरे प्यारे प्रिंस। मैं तो लुट गया, साहब !" लेबेदेव ने कटु मुस्कराहट के साथ फिर कहा।

"चार सौ रूबल ग़ायब हो गए ? बड़ा अफ़सोस हुआ मुझे यह सुनकर।"

"ख़ासकर मुझ जैसे ग़रीब आदमी के लिए, जो अपना ख़ून-पसीना एक करके किसी तरह इज़्ज़त-आबरू के साथ अपनी रोज़ी कमाता हो।"

"बेशक, बेशक। यह हुआ कैसे ?"

"शायद मेरे बहुत ज़्यादा पी जाने का नतीजा है। मेरे प्यारे प्रिंस, मैं आपके पास यह सोचकर आया हूँ कि आप ही मुझे इस मुसीबत से उबार सकते हैं। चार सौ रूबल की यह रक़म कल शाम को पाँच बजे मैंने अपने एक कर्ज़दार से वसूल पाई थी और यहाँ ट्रेन से वापस आया था। बटुआ मेरी जेब में था। जब मैंने अपनी सरकारी नौकरीवाली पोशाक उतारकर कोट पहना तो रक़म अपने पास ही रखने के ख़्याल से मैंने बटुआ निकालकर कोट की जेब में रख लिया, क्योंकि उसी दिन रात को मेरा इरादा उसे अपने एक ग्राहक को कर्ज़ दे देने का था...यानी...मैं उम्मीद कर रहा था कि मेरा एजेंट रक़म लेने आएगा।"

"अच्छा, यह बताइए, लेबेदेव, क्या यह सच है कि आपने अखबारों में इश्तहार छपवाया था कि आप सोने-चाँदी की चीज़ें गिरवी रखकर उधार देते हैं ?"

"एक एजेंट की मार्फ़त, जनाब। मेरा नाम नहीं था उसमें, न पता था। मेरी बहुत ही थोड़ी-सी पूँजी थी और यह देखते हुए कि मेरा परिवार बड़ा होता जा रहा था, आपको यह तो मानना ही पड़ेगा, साहब, कि सूद की वाजिबी दर पर..."

"बिलकुल, बिलकुल। मैंने तो बस यों ही जानने के लिए पूछा। माफ़ कीजिएगा, मैंने आपकी बात बीच में काटी।"

"मेरा एजेंट आया नहीं। इसी बीच वह बेचारा लड़का आ गया। मैं खाना खाने के बाद ज़रा...मतलब है...तरंग में था। उसके बाद, साहब, ये मेहमान आ गए, हमने...चाय पी, और शायद मैं कुछ मस्ती में आ गया...और वही मेरी तबाही थी, साहब। जब वह शख़्स केल्लेर काफ़ी देर में आया और उसने आपके खुशी के दिन का एलान किया और शैम्पेन के बारे में आपकी हिदायतें बताईं तो, मेरे प्यारे और परम माननीय प्रिंस, चूँकि मैं दिल रखता हूँ (जो बात, मैं दावे से कह सकता हूँ, जनाब, आपने भी ज़रूर देखी होगी, क्योंकि मैं इसके लायक़ हूँ), चूँकि मैं दिल रखता हूँ, मैं यह तो नहीं कहूँगा कि वह बहुत संवेदनशील है लेकिन कृतज्ञ ज़रूर है, और मुझे इस बात पर गर्व है, जनाब, तो मैंने अवसर के महत्त्व को देखते हुए और आपको खुद बधाई देने की उम्मीद से, अपना पुराना फटीचर कोट बदलकर सरकारी नौकरीवाली पोशाक पहन लेने की ठान ली, जो

मैंने वापस आते ही उतार दी थी, और जैसा कि मैंने किया भी, साहब, आपने यक़ीनन देखा होगा, कि सारी रात मैं वही पोशाक पहने रहा। कोटों की इस अदला-बदली में मेरा बटुआ कोट की जेब में ही रह गया...सच कहा है, साहब, विनाशकाले विपरीत बुद्धि। और, साहब, अभी सबेरे, कोई साढ़े सात बजे, जब मेरी आँख खुली तो मैं दीवानों की तरह पलंग से उछल खड़ा हुआ और सबसे पहला काम मैंने यह किया कि झपटकर अपना कोट सम्भाला—लेकिन जेब खाली थी ! बटुए का कहीं नाम नहीं था !"

"अरे, यह तो बड़े अफ़सोस की बात है !"

"जी हाँ, साहब, अफ़सोस की बात तो है ही। आपने खरी समझदारी से बिलकुल ठीक शब्द ढूँढ़ निकाला," लेबेदेव ने कुछ जहर में बुझे स्वर में कहा।

"लेकिन, देखिए," प्रिंस ने चिन्तित होकर और कुछ सोचते हुए कहा, "यह तो बड़ी गम्भीर बात है, है न ?"

"जी हाँ, साहब, बहुत गम्भीर है...यह एक और बहुत बढ़िया शब्द खोज निकाला, साहब, उस चीज़ को बयान करने के लिए..."

"रहने दीजिए, लेबेदेव, इसमें खोज निकालने की क्या बात है ? असली महत्त्व शब्दों का नहीं है।...कहीं ऐसा तो नहीं है कि नशे में आपने बटुआ कहीं जेब से गिरा दिया हो, क्यों ?"

"हो सकता है। आदमी नशे में हो तो कुछ भी हो सकता है, जैसा कि आपने बहुत ही सीधे-सादे ढंग से कह दिया है, मेरे परम माननीय प्रिंस। लेकिन ज़रा सोचिए, साहब—अगर कोट बदलते वक़्त मैंने बटुआ जेब से गिरा दिया होता, तो गिरी हुई चीज़ यहीं ज़मीन पर पड़ी होती न ? तो, साहब, वह गया कहाँ ?"

"कहीं आपने उसे मेज़ की किसी दराज़ में तो नहीं रख दिया, क्यों ?"

"मैंने हर जगह देख लिया है, साहब, हर चीज़ को उलट-पुलटकर, हालाँकि मैंने कभी उसे कहीं छिपाया ही नहीं था और दराज़ खोली तक नहीं थी, मुझे अच्छी तरह याद है।"

"अपनी तिजोरी में देख लिया ?"

"सबसे पहले मैंने यही किया था, जनाब। आज कई बार देखा था, साहब, बिलकुल देखा था...लेकिन मैं उसे तिजोरी में रख ही कैसे सकता था, मेरे परम माननीय प्रिंस ?"

"सच कहता हूँ, लेबेदेव, मुझे तो बड़ी फ़िक्र हो गई है। तब तो किसी ने फ़र्श पर पड़ा देखकर उठा लिया होगा ?"

"या मेरी जेब से निकाल लिया होगा ! दो ही बातें हो सकती हैं, साहब।"

"मुझे बेहद फ़िक्र हो गई है इसकी, क्योंकि किसका काम हो सकता है यह...सवाल तो यह है।"

"बेशक, जनाब, यही तो सवाल है। सच कहता हूँ, मेरे अत्यन्त प्रतिभाशाली प्रिंस, कमाल है जिस तरह आप बिलकुल सही शब्द और विचार खोज लाते हैं और आपका तीर जाकर ठीक निशाने पर ही बैठता है।"

"लेबेदेव, मेहरबानी करके ताने से बात न कीजिए। यह..."

"ताने दे रहा हूँ !" लेबेदेव अस्वीकृति में दोनों हाथ ऊपर उठाकर लाचारी से बोला।

"अच्छी बात है, अच्छी बात है, मैं बुरा मानकर नहीं कह रहा। बात कुछ और ही है।...मुझे फ़िक्र है लोगों के बारे में। आपका शक किस-किस पर है ?"

"यह तो बहुत ही मुश्किल और...यानी...टेढ़ा सवाल है, साहब ! मैं नौकरानी पर तो शक कर

नहीं सकता—वह सारे वक़्त किचेन में थी। अपने बच्चों पर भी नहीं कर सकता।...''

''नहीं, उन पर तो नहीं किया जा सकता !''

''इसलिए मेहमानों में से ही कोई होगा, साहब।''

''लेकिन क्या ऐसा मुमकिन है ?''

''बिलकुल और क़तई नामुमकिन है, साहब, लेकिन ऐसी ही बात होगी। फिर भी, मैं यह मानने को बिलकुल तैयार हूँ, बल्कि मुझे तो पूरा यक़ीन है, साहब, कि अगर यह चोरी का मामला है तो यह शाम को नहीं हुआ जब हम सब लोग साथ थे, बल्कि रात को या बहुत सबेरे किसी ऐसे आदमी ने किया होगा जिसने रात यहाँ बसर की है।''

''तोबा, तोबा !''

''बुर्दोव्स्की और कोल्या को तो मैंने पहले ही अलग कर दिया है। वे तो मेरे कमरे में गए तक नहीं, साहब।''

''ख़्याल तो मेरा भी यही है ! अगर वे आपके कमरे में गए भी हों तो क्या ! कल रात आपके यहाँ और कौन-कौन था ?''

''मुझे लेकर चार आदमी थे। हम लोग दो मिले हुए कमरों में सोए थे। जनरल साहब, केल्लेर, फ़ेर्दीश्चेंको और मैं। तो हमीं चार में से कोई होगा !''

''आपका मतलब है तीन में से कोई एक। लेकिन कौन ?''

''मैंने बिलकुल सही हिसाब की बात करने के लिए अपने को भी शामिल कर लिया था, लेकिन, आपको मानना पड़ेगा, प्रिंस, कि ख़ुद अपनी चीज़ मैंने तो चुराई नहीं होगी, हालाँकि ऐसी भी मिसालें मिलती हैं।...''

''उफ़, लेबेदेव, आप तो उबा देते हैं !'' प्रिंस अधीर होकर चिल्लाया। ''मतलब की बात कहिए—इतना लम्बा क्यों खींचते हैं ?''

''तो, साहब, बाक़ी बचे तीन। केल्लेर, जो मनमौजी, शराबी आदमी हैं और कुछ मामलों में बहुत उदार हैं—मेरा मतलब है जेब के मामले में, साहब; दूसरे मामलों में उनका झुकाव उदारता की तरफ़ नहीं, बल्कि प्राचीनकाल की सूरमाई की तरफ़ है। पहले तो वह बीमार के कमरे में सोए थे, और हमारे कमरे में बहुत रात को इस बहाने आए थे कि वहाँ खाली फ़र्श पर उन्हें नींद नहीं आ रही थी।''

''आपका शक उन पर है ?''

''मेरा शक था उन पर, साहब। कोई आठ बजे जब मैं पागलों की तरह बिस्तर से उछलकर खड़ा हो गया और अपना सिर पीट लिया, तो मैंने फ़ौरन जनरल साहब को जगाया, जो मासूमियत की नींद सो रहे थे। फेर्दीश्चेंको को इतने अजीब तरीक़े से ग़ायब हो जाने को ध्यान में रखते हुए, जिस बात की वजह से ही हमें शक पैदा हुआ, हमने फ़ौरन केल्लेर की तलाशी कर लेने का फ़ैसला किया, जो वहाँ बिलकुल...यानी...मुर्दों की तरह पड़े हुए थे, साहब। हमने उनकी अच्छी तरह तलाशी ली—उनकी किसी भी जेब में फूटी कौड़ी तक नहीं थी और कोई जेब ऐसी नहीं थी जिसमें सूराख न हो। नीले रंग के चारखानेदार सूती रूमाल की हालत बेहद शर्मनाक थी। फिर एक जेब में मुझे एक प्रेम-पत्र मिला, साहब, किसी नौकरानी का खत था जिसने धमकी देकर पैसे माँगे थे, और उस लेख के कुछ टुकड़े थे, जिसके बारे में आपको सब कुछ मालूम ही हो चुका है, साहब। जनरल साहब ने फ़ैसला किया कि वह बेक़सूर हैं। बिलकुल पक्का यक़ीन कर लेने के लिए हमने उन्हें जगाया, और, साहब, क्या बताऊँ आपको कि उसमें हमें कितनी मुश्किल का सामना करना पड़ा।

किसी तरह उनकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि आख़िर हम लोग बातें किस चीज़ के बारे में कर रहे हैं। मुँह खुला का खुला रह गया उनका, शराबियों की तरह, चेहरे पर बेतुका और भोलेपन का, बल्कि कहना चाहिए बेवक़ूफ़ी का भाव लिए—मतलब यह, साहब, कि वह बिलकुल नहीं हैं !"

"ख़ैर, जो भी हो, मुझे बेहद खुशी है !" प्रिंस ने सन्तोष की साँस ली। "मुझे उन्हीं के बारे में डर लग रहा था !"

"डर लग रहा था ? तब तो आपके पास उसकी कोई वजह भी होनी चाहिए, साहब, है न ?" लेबेदेव ने आँखें सिकोड़कर पूछा।

"अरे, नहीं, बिलकुल नहीं," प्रिंस ने लड़खड़ाते स्वर में कहा। "मैंने बहुत ही बेवक़ूफ़ी की बात कही कि मुझे डर था। मेहरबानी करके, लेबेदेव, किसी को यह बताइएगा नहीं।..."

"अरे, प्रिंस, प्रिंस ! आपके शब्द तो मेरे दिल में...दिल की गहराई में तालों में बन्द हैं ! जैसे क़ब्र में दफ़न कर दिए गए हों, साहब !" लेबेदेव ने बड़े जोश के साथ अपना हैट सीने से चिपका लिया।

"अच्छा, अच्छा ! तो यह फेर्दीश्चेंको की हरकत है ? कहने का मतलब यह कि आपको फेर्दीश्चेंको पर शक है ?"

"और कौन हो सकता है ?" लेबेदेव ने प्रिंस को ग़ौर से देखते हुए शान्त भाव से कहा।

"जी हाँ, ज़ाहिर है...और कौन हो सकता है...लेकिन, बात यह है, आपके पास सबूत क्या है ?"

"मेरे पास सबूत है, साहब। पहले तो उसका सात बजे या सात से भी पहले ग़ायब हो जाना।"

"मुझे मालूम है। कोल्या ने मुझे बताया था कि वह उठकर उसके पास गए थे और उन्होंने कहा था कि वह अपनी नींद पूरी करने किसी के यहाँ जा रहे हैं...मैं भूल गया किसका नाम...कोई दोस्त है उनका।"

"वील्किन नाम है उसका, साहब। तो कोल्या आपसे पहले ही बात कर चुका है, साहब, क्यों ?"

"उसने चोरी के बारे में कुछ नहीं कहा।"

"उसे उसके बारे में कुछ मालूम ही नहीं है, क्योंकि फ़िलहाल मैंने उस बात को सबसे छिपाकर रखा है। तो, वह वील्किन के यहाँ गया है। ख़ैर, साहब, इसमें यों तो कोई अजीब बात है नहीं कि एक शराबी अपने ही जैसे दूसरे शराबी के यहाँ जाए, इतने सबेरे और वह भी बिना किसी वजह के। लेकिन पहला सुराग़ यह है—जाने से पहले वह एक पता छोड़ गए हैं...अब मेरी बात ज़रा ग़ौर से सुनिए, प्रिंस। सवाल यह है, वह पता क्यों छोड़ गए ? यह ख़ासतौर पर अदबदाकर कोल्या से मिलने और उसे यह बताने क्यों गए कि वह अपनी रात की नींद पूरी करने वील्किन के यहाँ जा रहे हैं ? किसे यह जानने में दिलचस्पी है कि वह जा रहे हैं और वह भी वील्किन के यहाँ जा रहे हैं ? इसका एलान करने की क्या ज़रूरत थी ? नहीं साहब, यही तो काँइयापन है, चोर का काँइयापन ! क्योंकि वह जताना यह चाहता था, 'देखो, मैं यह तक छिपाने की कोशिश नहीं करता कि मैं कहाँ-कहाँ जा रहा हूँ, फिर मैं चोर कैसा ? क्या चोर आपको बता देता कि वह कहाँ जा रहा है ?' शक को अपनी तरफ़ से हटाने और, मानो, अपने क़दमों के निशान रेत में छिपा देने की ज़रूरत से ज़्यादा फ़िक्र।...समझ में आई मेरी बात, मेरे प्यारे प्रिंस ?"

"मैं आपका मतलब समझ गया, बिलकुल अच्छी तरह समझ गया; लेकिन इतना ही तो काफ़ी नहीं है न ?"

"अब, साहब, हम आते हैं दूसरे सुराग़ पर—जो इशारा दिया गया था वह झूठा साबित होता है और पता ग़लत निकलता है। घंटे-भर बाद—यानी, कोई आठ बजे—मैं जाकर वील्किन का दरवाज़ा खटखटाता हूँ। वह यहीं पाँचवीं सड़क पर रहता है और सच तो यह है कि मैं उसे जानता भी हूँ। फ़ेर्दीश्चेंको वहाँ नहीं था। हालाँकि मुझे नौकरानी से मालूम हुआ, जो बिलकुल बज्जर बहरी है, कि घंटे-भर पहले कोई आया तो था और वह दरवाज़ा भी खटखटाता रहा था और घंटी भी बजाता रहा था, और सो भी इतने ज़ोर से कि घंटी ही टूट गई। लेकिन नौकरानी ने दरवाज़ा नहीं खोला क्योंकि वह वील्किन क़ो जगाना नहीं चाहती थी, और शायद खुद भी नहीं उठना चाहती थी। ऐसा होता है, साहब।"

"तो ये हैं आपके कुल सबूत ? इतना तो काफ़ी नहीं है।"

"लेकिन, प्रिंस, फिर और किस पर मैं शक करूँ ? सोचिए !" लेबेदेव ने बड़े मिठास-भरे स्वर में अपनी बात समाप्त की, और उसके खीसें निकालकर हँसने में एक ख़ास क़िस्म की चालाकी छिपी हुई थी।

"आप अपने कमरों में और सारी दराज़ों में एक बार फिर ढूँढ़िए !" प्रिंस ने एक क्षण सोचने के बाद कहा; वह चिन्तित लग रहा था।

"मैंने हर जगह ढूँढ़ लिया है, साहब !" लेबेदेव ने और भी मिठास के साथ आह भरकर कहा।

"हुँह ! लेकिन आपको अपना कोट बदलने की ऐसी क्या ज़रूरत थी ?" प्रिंस ने झुँझलाकर मेज़ पर मुक्का मारते हुए पूछा।

"यह तो किसी पुराने प्रहसन का सवाल लगता है, साहब। लेकिन, बेहद नेक प्रिंस, आप मेरी बदनसीबी पर कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ही दुःखी हो गए ! मैं इस लायक़ नहीं हूँ। मेरा मतलब है, अकेला मैं ही इस लायक़ नहीं हूँ, क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि आप अपराधी के लिए भी...उस दो कौड़ी के फ़ेर्दीश्चेंको के लिए भी दुःखी हैं !"

"हाँ, यह बात तो है, आपने मुझे बड़ी फ़िक्र में डाल दिया है," प्रिंस ने खोए-खोए अन्दाज में कुछ नाराज़ होकर उसे बीच में ही टोक दिया। "तो अब आप करेंगे क्या—मेरा मतलब है, अगर आपको पक्का यक़ीन है कि यह फेर्दीश्चेंको की ही हरकत है ?"

"लेकिन, प्रिंस, मेरे प्यारे प्रिंस, उसके अलावा और हो ही कौन सकता है ?" लेबेदेव अपनी बातों में शहद-सा घोलता हुआ बोला। "क्योंकि देखिए, साहब, चूँकि हम लोग किसी और के बारे में सोच नहीं सकते हैं, और फेर्दीश्चेंको के अलावा किसी और पर शक करना नामुमकिन है, इसलिए, एक तरह से यह फेर्दीश्चेंको के ख़िलाफ़ एक और सबूत है—तीसरा सबूत ! क्योंकि, एक बार फिर सवाल यही पैदा होता है कि उसके अलावा और है कौन ? बुर्दोव्स्की पर तो मैं शक कर नहीं सकता न ? हा-हा-हा !"

"कैसी बेतुकी बात है !"

"जनरल साहब तो नहीं, हा-हा-हा !"

"क्या बकवास है !" प्रिंस का गुस्सा लगभग भड़क उठा और उसने बड़ी अधीरता से कोच पर पहलू बदला।

"ज़ाहिर है, बकवास तो है ही ! हा-हा-हा ! और कितनी हँसी आई है मुझे उनकी बात पर,—मेरा मतलब जनरल साहब से है ! हम लोग सुराग़ की डोर पकड़े भागमभाग वील्किन के घर की तरफ़ चले जा रहे थे...और, इतना मैं आपको बता दूँ, साहब, कि अपने बटुए के ग़ायब होने का पता लगने पर सबसे पहले जब मैंने जनरल साहब को जगाया तो उन्हें मुझसे भी ज़्यादा ताज्जुब

हुआ, यहाँ तक कि उनके चेहरे का अन्दाज बदल गया, पहले तो उनका चेहरा लाल हो गया, फिर वह पीले पड़ गए, और आख़िर में तो उन्हें इतना जबर्दस्त गुस्सा आया कि मैं तो कभी सोच भी नहीं सकता था, साहब, कि उन्हें इतना गुस्सा भी आ सकता है। बहुत ही इज़्ज़तदार आदमी हैं ! कभी झूठ बोलते नहीं थकते, लेकिन वह तो बस उनकी कमज़ोरी है, पर वह बहुत ही ऊँचे विचारों वाली भावनाओं के आदमी हैं, ऐसे आदमी जो, साहब, बहुत ज़्यादा अक्लवाले न होने के बावजूद, अपनी मासूमियत से आपके दिल में बेहद विश्वास पैदा करते हैं। मेरा ख़्याल है, मेरे प्यारे प्रिंस, कि मैं आपको पहले भी बता चुका हूँ कि मेरे दिल में उनके लिए न सिर्फ़ एक झुकाव बल्कि लगाव जैसा है। अचानक वह सड़क के बीच में रुककर खड़े हो गए, और अपना कोट खोलकर सीना दिखाते हुए बोले–'मेरी तलाशी ले लो। तुमने केल्लेर की तलाशी ली तो मेरी तलाशी क्यों नहीं लेते ? इन्साफ़ का,' वह बोले, 'यही तक़ाजा है !' उनके हाथ-पाँव काँप रहे थे–उनका रंग चूने जैसा सफ़ेद पड़ गया था, और उनके चेहरे पर बड़ी सख़्ती थी। मैं हँस पड़ा। 'सुनिए, जनरल साहब,' मैं बोला, 'अगर किसी और ने आपके बारे में यह बात कही होती, तो मैं अपने हाथों से अपना सिर धड़ से अलग कर देता, और उसे तश्तरी पर रखकर खुद हर उस आदमी के पास ले जाता जो आप पर शक करता। 'देख रहे हो यह सिर ?' मैं कहता, 'तो, उनकी खातिर मैं अपना सिर तक कटाने को तैयार हूँ, और इतना ही नहीं, उनकी खातिर मैं आग में भी कूद पड़ने को तैयार हूँ। इस तरह,' मैंने उनसे कहा, 'मैं आपकी तरफ़ से दूसरों को यक़ीन दिलाने को तैयार हूँ !' तो, साहब, उन्होंने मेरी गर्दन में बाँहें डाल दीं, वहीं सड़क के बीच में, उनके आँसू बह निकले, और उन्होंने इतना कसकर मुझे अपने सीने से चिपटा लिया कि खाँसी के मारे मेरा तो दम ही घुट गया होता। 'तुम,' वह बोले, 'मुसीबत के वक़्त में मेरे अकेले दोस्त बचे हो !' सचमुच, वह भी भावुक आदमी हैं, साहब ! और, ज़ाहिर है, रास्ते में ही उन्होंने मुझे एक क़िस्सा सुनाया, जो उस मौक़े के लिए बेहद मुनासिब था, कि किस तरह अपनी जवानी के दिनों में उन पर पाँच लाख रूबल चुराने का शक किया गया था, लेकिन अगले ही दिन वह एक जलते हुए घर में कूद पड़े थे और वहाँ से उस काउंट को जिसने उन पर शक किया था और खुद आगे चलकर होनेवाली अपनी बीवी को, जिनकी उस वक़्त तक शादी नहीं हुई थी, लपटों के बीच से बाहर निकाल लाए थे। काउंट ने उन्हें गले लगा लिया था, और नीना अलेक्सान्द्रोव्ना से उनकी शादी इसी तरह हुई थी, और अगले ही दिन मकान के सुलगते हुए खण्डहरों में वह तिजोरी निकली जिसमें वह खोई हुई रक़म रखी थी। इंगलैण्ड की बनी हुई चोर-तालेवाली तिजोरी थी, जो न जाने कैसे फ़र्श के नीचे गिर गई थी और किसी का उसकी ओर ध्यान ही नहीं गया था और आग लगने के बाद जाकर उसका पता चला। सरासर झूठ है, साहब। लेकिन, जब उन्होंने नीना अलेक्सान्द्रोव्ना की बात कही थी तो उनकी सिसकियाँ बँध गई थीं। बहुत ही नेक महिला हैं नीना अलेक्सान्द्रोव्ना, हालाँकि वह मुझसे नाराज़ रहती हैं।"

"आप उन्हें जानते नहीं ?"

"कहने को, साहब, बहुत ही थोड़ा जानता हूँ, लेकिन मेरा दिल बहुत चाहता है, किसी और वजह से नहीं तो बस उनके सामने अपनी सफ़ाई देने के लिए। उन्हें मुझसे शिक़ायत है, क्योंकि वह समझती हैं कि मैं उनके शौहर को शराब पीने के लिए बढ़ावा देता हूँ। लेकिन बढ़ावा देना तो दूर रहा, मैं तो उनकी यह आदत छुड़ाने की अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश क़रता हूँ। मैं उन्हें बेहद बुरे लोगों की सोहबत से दूर रखता हूँ। इसके अलावा, साहब, वह मेरे दोस्त हैं और, मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ, साहब, कि अब मैं उन्हें अपनी आँखों से ओझल नहीं होने दूँगा; इससे भी बढ़कर

मिठास के साथ मुस्कराते हुए और खुशामद के ढंग से हाथ जोड़कर कहा।

प्रिंस माथे पर बल डाले उठ खड़ा हुआ।

"देखिए, लेबेदेव, इस मामले में ज़रा-सी भी चूक हो जाने से नतीजा बहुत बुरा हो सकता है। वह फेर्दीश्चेंको...मैं उनके बारे में कोई बुरी बात नहीं कहना चाहता...लेकिन वह फ़ेर्दीश्चेंको, मेरा मतलब है, कौन जाने, शायद वही हों ! मैं कहना यह चाहता हूँ कि शायद सचमुच ऐसा करना उनके लिए ज़्यादा मुमकिन है...किसी और के मुकाबले।"

लेबेदेव ने अपने कान खड़े किए और आँखें खोलीं।

"देखिए," प्रिंस ने कमरे में टहलते हुए और लेबेदेव की तरफ़ न देखने की कोशिश करते हुए अपनी बात जारी रखी; उसकी त्योरियाँ लगातार ज़्यादा चढ़ती जा रही थीं और उसके विचार अधिकाधिक उलझते जा रहे थे, "मुझे यह बताया गया था...मुझे...मुझे फेर्दीश्चेंको के बारे में बताया गया था कि लगता है कि वह...इसके अलावा, इस तरह का आदमी है जिसके सामने कोई बात कहते हुए हमें बहुत सावधान रहना चाहिए...मतलब है...बहुत ज़्यादा न कह जाएँ...आप समझ रहे हैं न ? मैं यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि शायद किसी और के मुकाबले उनके लिए ऐसा करना ज़्यादा मुमकिन...मेरा मतलब है, कोई ग़लती न हो जाए...असली बात यही है, आप समझ गए न ?"

"आपको यह बात फ़ेर्दीश्चेंको के बारे में बताई किसने ?" लेबेदेव ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

"बस, किसी ने मेरे कान में कह दिया था। पर मैं खुद इस बात पर यक़ीन नहीं करता हूँ...मुझे बेहद अफ़सोस है कि मुझे आपको यह बताना पड़ा। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि मैं ख़ुद इस बात पर विश्वास नहीं करता...यह सरासर बकवास है।...उफ़, इसकी चर्चा करना मेरी बेवक़ूफ़ी थी !"

"देखिए, प्रिंस," लेबेदेव ने सिर से पाँव तक काँपते हुए कहा, "यह महत्त्व की बात है, अब इस बात का सचमुच बहुत महत्त्व हो गया है। मेरा मतलब उस बात से नहीं है जो आपने फ़ेर्दीश्चेंको के बारे में मुझे बताई है, बल्कि इस बात से है कि यह जानकारी आपके पास तक पहुँची कैसे।" (यह कहकर लेबेदेव कमरे में प्रिंस के पीछे-पीछे उसी की रफ्तार से चलने की कोशिश में इधर-उधर भागता रहा।) "देखिए, साहब, मैं भी आपको कुछ बता दूँ। जनरल साहब भी, जब हम लोग वील्किन के यहां जा रहे थे, आग लगने की बात सुनाकर गुस्से से खौलते हुए अचानक फेर्दीश्चेंको के बारे में इसी बात की तरफ़ इशारा करने लगे, लेकिन इतने बिखरे हुए और गोल-मोल ढंग से कि मैं उनसे कुछ सवाल पूछने पर मजबूर हो गया, और उसकी वजह से मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि यह बस उनकी अपनी प्रेरणा की उपज थी।...ज़ाहिर है, उन्होंने किसी बुरे उद्देश्य से ऐसा नहीं किया था। क्योंकि, देखिए, है यह कि वह झूठ भी सिर्फ़ इसलिए बोलते हैं कि वह अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख सकते। अब बताइए, साहब, अगर उन्होंने झूठ कहा था, और मुझे यक़ीन है कि उन्होंने झूठ ही कहा था, तो आपने इसके बारे में सुना कैसे ? क्योंकि, प्रिंस, मेहरबानी करके यह समझने की कोशिश कीजिए कि उनके लिए तो यह बात बस क्षण भर की उत्प्रेरणा थी—फिर आपको उसके बारे में कौन बता सकता था ? महत्त्व की बात यह है, साहब, और...यों समझ लीजिए।..."

"यह कोल्या ने अभी मुझे बताया, और उसे अपने बाप से मालूम हुआ था, जिससे वह सबेरे छह बजे ड्योढ़ी में मिला था, या उसके कुछ बाद, जब वह किसी काम से बाहर आए थे।"

और प्रिंस ने उसे सारी बात विस्तार से बता दी।

"अच्छा, तो यह एक सुराग़ मिला, साहब," लेबेदेव ने अपने हाथ आपस में रगड़ते हुए और

चुपके से हँसते हुए कहा। "यही मैं भी सोचता था ! इसका मतलब है कि जनरल साहब अपनी मासूमियत की नींद सबेरे छह बजे तोड़कर अपने प्यारे बेटे को जगाकर उससे यह कहने के लिए उठे थे कि फेर्दीश्चेंको के साथ मेल-जोल रखना कितना खतरनाक है ! अगर ऐसा है तो फेर्दीश्चेंको सचमुच कितने खतरनाक आदमी हैं, और बाप की हैसियत से अपने बेटे के लिए जनरल साहब की चिन्ता कितनी गहरी रही होगी, हा-हा-हा !"

"देखिए, लेबेदेव," प्रिंस ने बिलकुल घबराकर कहा, "देखिए, खामोशी से काम कीजिए ! बखेड़ा न खड़ा कीजिएगा ! मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ, लेबेदेव, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ।...ऐसी हालत में मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि मैं आपकी मदद करूँगा, लेकिन इस शर्त पर कि किसी को उसका पता न चलने पाए, किसी को नहीं !"

"इसका आप पूरा भरोसा रख सकते हैं, मेरे बेहद नेक, बेहद ईमानदार और बेहद अच्छे प्रिंस," लेबेदेव भरपूर जोश से चिल्लाया, "इसका आप पूरा भरोसा रख सकते हैं कि यह बात मेरे बेहद वफ़ादार दिल में ही दफ़न रहेगी ! बड़ी खामोशी से, साथ मिलकर, साहब ! बड़ी खामोशी से, साथ मिलकर ! जहाँ तक मेरा सवाल है, साहब, अपने ख़ून की आख़िरी बूँद तक।...मेरे परम सम्मानित प्रिंस, मैं अपनी आत्मा और भावना से दुष्ट हूँ, लेकिन किसी भी नीच से नीच आदमी से, किसी बदमाश से भी पूछकर देखिए, मेरे खुले दिलवाले प्रिंस, कि वह किसके साथ व्यवहार रखना ज़्यादा पसन्द करेगा, उसके जैसे बदमाश के साथ या आप जैसे उदारतम आदमी के साथ ? वह यही जवाब देगा कि वह एक सबसे उदार आदमी के साथ व्यवहार रखना कहीं ज़्यादा पसन्द करेगा, और इसी में अच्छाई की जीत का रहस्य छिपा है ! अच्छा, मैं अब चलता हूँ, मेरे प्यारे प्रिंस ! खामोशी से...खामोशी से और...साथ मिलकर।

10

आख़िरकार प्रिंस समझ गया कि जब भी वह उन खतों को छूता था तो उसके हाथ-पाँव ठण्डे क्यों पड़ने लगते थे और वह उन्हें पढ़ना शाम तक टालता क्यों रहा था। जिस वक़्त वह कोच पर गहरी नींद सो गया था तब तक वह यह हिम्मत नहीं कर पाया था कि उन तीन लिफाफों में से किसी को खोले; उसने फिर एक बुरा सपना देखा था, और एक बार फिर वही 'अपराधिनी' उसके पास आई थी। उस औरत ने अपनी लम्बी-लम्बी पलकों पर झलकते हुए आँसुओं के साथ उसे फिर घूरकर देखा था, एक बार फिर उसे अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया था, और पहले की तरह ही एक बार फिर जब वह सोकर उठा था तो उसे उसकी सूरत याद करके बहुत पीड़ा हुई थी। वह फ़ौरन उसके पास जाना चाहता था लेकिन न जा सका; आख़िरकार घोर निराशा में डूबकर, उसने उन खतों को खोला और उन्हें पढ़ने लगा।

वे खत भी सपने जैसे ही थे। कभी-कभी अजीब सपने दिखाई देते हैं, असम्भव और बीभत्स सपने; जागने पर वे आपको बिलकुल साफ़ याद आते हैं और एक विचित्र बात पर आप चकित रह जाते हैं। सबसे पहले तो आपको याद आता है कि वह सपना देखने की पूरी अवधि के दौरान आपकी तर्क-बुद्धि ने आपका साथ नहीं छोड़ा था; आपको यह तक याद रहता है कि उस पूरे लम्बे, बहुत लम्बे अरसे के दौरान आपने बड़ी चालाकी और तर्क से काम लिया था जब आप चारों ओर हत्यारों से घिरे हुए थे, जो आपको धोखा देने की कोशिश कर रहे थे, अपने असली इरादे छिपाकर आपसे बड़ी भलमनसाहत से बातें कर रहे थे, जबकि उनके हथियार किसी भी वक़्त इस्तेमाल किए

जाने के लिए तैयार थे और वे बस किसी इशारे की राह देख रहे थे; आपको याद रहता है कि अन्त में आप किस तरह उन्हें चकमा देकर छिप गए थे; तब आप महसूस करते हैं कि उन्हें आपके इस चकमे का बिलकुल अच्छी तरह पता था और वे सिर्फ़ जता रहे थे कि उन्हें आपकी छिपने की जगह का पता नहीं था; लेकिन आपने फिर उन्हें चकमा दिया और उनकी आँखों में धूल झोंककर निकल गए,—आपको यह सब कुछ बिलकुल साफ़तौर पर याद है। लेकिन इसके साथ ही आपकी तर्क-बुद्धि ऐसी खुली बेतुकी और असम्भव बातों को क्यों स्वीकार कर लेती है जिनकी आपके सपने में भरमार थी ? आपका एक हत्यारा आपके देखते-देखते मर्द से औरत और फिर औरत से एक कपटी और बीभत्स छोटा-सा बौना बन गया था और आपने इस बात को लगभग किसी भी संकोच के बिना एक साकार सत्य के रूप में स्वीकार कर लिया था; उसी क्षण जब, दूसरी ओर, आपकी तर्क-बुद्धि बेहद तनाव का शिकार थी और वह असाधारण शक्ति, कुटिलता, चतुराई और विवेक का परिचय दे रही थी ? और फिर ऐसा क्यों होता है कि जब आप जाग जाते हैं और आपकी वास्तविकता की चेतना फिर से पूरी तरह लौट आती है, तो आप लगभग हर बार और कभी-कभी असाधारण स्पष्टता के साथ महसूस करते हैं कि आप अपने स्वप्न के साथ कोई अनबूझ रहस्य छोड़ आए हैं ? आप अपने स्वप्न के बेतुकेपन पर मुस्करा देते हैं, और साथ ही आप महसूस करते हैं कि उन बेतुकी बातों के एक-दूसरे में घुल-मिल जाने में कोई विचार छिपा हुआ है, लेकिन कोई ऐसा विचार जो वास्तविक है, जो आपके वास्तविक जीवन का हिस्सा है, कोई ऐसी चीज़ जिसका आपके हृदय में अस्तित्व है और हमेशा रहा है; ऐसा लगता है मानो कोई नई और भविष्यवाणी जैसी बात, कोई ऐसी बात जिसकी आपको प्रतीक्षा थी, आपके स्वप्न में आपको बता दी गई है; आपकी अनुभूति बहुत सुस्पष्ट है—वह हर्षप्रद हो या कष्टदायक, लेकिन वह क्या है और आपसे क्या कहा गया था—यह सब कुछ न आप समझ पाए और न आपको याद है।

उन पत्रों को पढ़कर लगभग ऐसा ही प्रभाव पड़ा। लेकिन उन्हें खोलने से पहले भी प्रिंस ने महसूस किया कि उनका अस्तित्व और उनकी सम्भावना ही एक दुःस्वप्न की तरह थी। वह उसे पत्र लिखने की हिम्मत कैसे कर पाई, उस शाम अकेले घूमते-फिरते (कभी-कभी तो उसे स्वयं भी नहीं मालूम होता था कि वह कहाँ जा रहा है) वह अपने आपसे यही प्रश्न करता रहा। वह उस बात के बारे में लिख कैसे सकी और ऐसा पागलपन का, ऊटपटाँग विचार उसके दिमाग़ में आया कैसे ? लेकिन यही विचार एक वास्तविकता बन गया था और उसके लिए सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि उन पत्रों को पढ़ते समय वह स्वयं उस विचार की सम्भावना पर, और यहाँ तक कि उसके औचित्य पर भी, लगभग विश्वास करने लगा था। यह तो सच है कि वह एक स्वप्न था, एक दुःस्वप्न, निरा पागलपन; लेकिन उसमें कुछ ऐसा भी था जो पीड़ाजनक और वास्तविक था, जो यातनापूर्ण और न्यायोचित था, कुछ ऐसा जो उस स्वप्न को, उस दुःस्वप्न को, उस पागलपन को उचित ठहराता था। जो कुछ उसने पढ़ा था वह घंटों उसके दिमाग़ में मँडराता रहा, हर क्षण उसके अलग-अलग टुकड़े उसे याद आते, वह उनके बारे में सोचता रहता और उन पर विचार करता। कभी-कभी बरबस वह अपने आपसे कह उठता कि उसने बहुत पहले ही समझ लिया था कि ऐसा होगा और इसे वह हमेशा से जानता था; उसे यहाँ तक लगता था कि यह सब कुछ वह पहले, बहुत पहले पढ़ चुका था, और यह कि तब से उसके मन में जो भी लालसा रही थी, हर वह चीज़ जो उसे यातना देती रही थी और जिससे वह डरता था—वह सब कुछ उन पत्रों में था जिन्हें वह बहुत पहले पढ़ चुका था।

"ज़ब आप इस पत्र को खोलेंगी" (पहला पत्र इसी तरह शुरू हुआ था) "तो आपकी नज़र

सबसे पहले हस्ताक्षर पर जाएगी। ये हस्ताक्षर आपको सब कुछ बता देंगे और सब कुछ समझा देंगे, इसलिए मुझे आपके सामने अपने आचरण को उचित ठहराने की कोई ज़रूरत नहीं है और मुझे आपको कोई सफ़ाई भी नहीं देनी है। अगर मैं किसी भी तरह आपके बराबर होती तो आपको मेरी इस धृष्टता से ठेस पहुँचती। लेकिन कहाँ मैं, और कहाँ आप ? हम दोनों एक-दूसरे से ऐसे विपरीत सिरों पर हैं, और मैं आपसे इतनी दूर हूँ कि अगर मैं चाहती भी तो आपको ठेस नहीं पहुँचा सकती थी।"

आगे चलकर एक और जगह उसने लिखा था—"मेरे शब्दों को एक बीमार दिमाग़ के बीमार उद्‌गार न समझ लीजिएगा, लेकिन आप मेरे लिए—साकार निष्कलंकता हैं ! मैंने आपको देखा है और मैं आपको रोज देखती हूँ। मैं आपके बारे में कोई निर्णय नहीं देती; और इस निष्कर्ष पर भी मैं अपनी तर्क-बुद्धि से नहीं पहुँची हूँ कि आप साकार निष्कलंकता हैं; मैं बस इस बात पर विश्वास करती हूँ। लेकिन मैं समझती हूँ कि मुझे आपके सामने अपना पाप भी स्वीकार कर लेनी चाहिए—मैं आपसे प्यार करती हूँ। और निष्कलंकता से प्यार नहीं करना चाहिए; निष्कलंकता को केवल निष्कलंकता के रूप में देखना चाहिए, है न ऐसा ? फिर भी मुझे आपसे प्यार है। हालाँकि प्रेम लोगों को एक-दूसरे के बराबर कर देता है, लेकिन चिन्तित न हों, मैंने कभी स्वप्न में भी अपने आपको आपके बराबर नहीं समझा है। मैंने लिखा है—'चिन्तित न हों'; लेकिन क्या आप सचमुच चिन्तित हो सकती हैं ?...अगर मैं ऐसा कर सकती तो आपके चरण-चिन्हों को चूम लेती। उफ़, मैं अपने आपको आपके बराबर स्तर पर नहीं रखती।...हस्ताक्षर देखिए, जल्दी हस्ताक्षर देखिए !"

"लेकिन मैं देखती हूँ," (उसने एक और पत्र में लिखा था), "कि मैं उनका सम्बन्ध आपके साथ जोड़ रही हूँ, और मैंने आपसे कभी पूछा भी नहीं कि आपको उनसे प्रेम है कि नहीं ? वह आपको एक ही बार देखकर आपसे प्रेम करने लगे थे। वह आपकी चर्चा एक 'ज्योति' के रूप में करते थे; वे उन्हीं के शब्द थे, मैंने उन्हें इन शब्दों को इस्तेमाल करते सुना था। लेकिन शब्दों के बिना भी मैं समझ गई थी कि आप उनके लिए ज्योति हैं। मैं उनके निकट पूरे एक महीने रही थी और यह बात मेरी समझ में आ गई कि आप भी उनसे प्रेम करती हैं; आप और वह मेरे लिए एक ही हैं।"

"इसका क्या मतलब है," (उनसे फिर लिखा था), "कल मैं आपके पास से होकर गुजरी थी और ऐसा लगा था कि आप लजा गई थीं। यह सच नहीं हो सकता, मुझे भ्रम हुआ होगा। अगर कोई आपको गन्दे से गन्दे अड्डे पर भी ले जाकर वहाँ आपको दुराचार का नग्नतम रूप दिखाए, तब भी आपको लजाना नहीं चाहिए, क्योंकि आप अपमान पर झुँझला ही नहीं सकतीं। आप हर उस आदमी से नफ़रत कर सकती हैं जो दुष्ट और नीच हो, लेकिन अपनी ख़ातिर नहीं, बल्कि दूसरों की खातिर, उन लोगों की खातिर जिनके साथ ये लोग बुराई करते हैं। लेकिन आपके साथ कोई बुराई कर ही नहीं सकता। आप जानती हैं, मैं न जाने क्यों यह महसूस करती हूँ कि आप मुझे भी प्यार करती हैं। मेरे लिए आप वैसी ही हैं जैसी उनके लिए हैं—एक जगमगाती आत्मा; फ़रिश्ता नफ़रत नहीं कर सकता, वह प्यार किए बिना नहीं रह सकता। क्या कोई सबसे, हर आदमी से, अपने सारे करीबियों से प्यार कर सकता है ?—मैंने अपने आपसे अकसर यह सवाल पूछा है। बिलकुल नहीं, और सच तो यह है कि ऐसा करना अस्वाभाविक होगा। सारी मानवजाति के प्रति अमूर्त प्रेम में लगभग हमेशा ऐसा होता है कि प्यार करनेवाला सिर्फ़ अपने आपसे प्यार करता है। हमारे लिए यह असम्भव है, लेकिन आपकी बात दूसरी है—यह कैसे सम्भव है कि जब आप किसी के साथ अपनी तुलना नहीं कर सकतीं, जब आप हर अपमान से, हर निजी झुँझलाहट

से परे हैं, तब आप किसी से प्यार न करें ? सिर्फ़ आप ही अहंकार के बिना प्यार कर सकती हैं, सिर्फ़ आप ही ऐसा कर सकती हैं कि अपनी खातिर नहीं बल्कि उसकी खातिर प्यार करें जिससे आप प्यार करती हैं। उफ़, यह जानकर मेरे मन में कितनी कटुता पैदा होगी कि मेरी वजह से आप लज्जा या क्रोध अनुभव करती हैं ! वह आपके लिए घातक होगा—आप फ़ौरन मेरे बराबर हो जाएँगी।...

"कल, आपसे मिलने के बाद, मैंने घर जाकर एक तस्वीर का विषय सोचा। कलाकर ईसा मसीह का चित्र हमेशा बाइबिल के अनुसार बनाते हैं; मैं उनकी तस्वीर बिलकुल ही अलग ढंग से बनाती—मैं उन्हें बिलकुल अकेला दिखाती—उनके शिष्य उन्हें कभी अकेला भी छोड़ते ही होंगे। मैं उनके साथ बस एक बच्चा दिखाती। बच्चा उनके पास खेल रहा हो; शायद वह उन्हें अपनी बच्चों की बोली में कुछ बता रहा है। ईसा उसकी बातें सुनते रहे हैं, लेकिन अब वह विचारों में डूबे हुए हैं, उनका हाथ अनजाने ही अभी तक बच्चे के सुनहरे बालोंवाले सिर पर रखा हुआ है। वह दूर क्षितिज की ओर देख रहे हैं; उनकी आँखों में एक महान विचार, पूरी सृष्टि जितना विशाल विचार उनकी आँखों में बसा हुआ है; उनका चेहरा उदास है। बच्चा चुप है और उनके घुटने के सहारे झुका हुआ है और उसने अपना गाल अपने छोटे-से हाथ पर टिका रखा है, और वह अपना सिर उठाए विचारमग्न होकर उन्हें ध्यान से देख रहा है, जिस तरह बच्चे कभी-कभी देखते हैं। सूरज डूब रहा है।...यह है मेरी तस्वीर ! आप मासूम हैं और आपकी सारी निष्कलंकता आपकी इसी मासूमियत में है। बस, इतना ही याद रखिए ! आपके प्रति मेरे मन में जो भावावेग है उसकी आपको क्या चिन्ता ? आप मेरी बन चुकी हैं, मैं जीवन भर आपके पास रहूँगी।...मैं जल्दी ही मर जाऊँगी।"

अन्ततः, उसने अपने आख़िरी ख़त में लिखा था—"भगवान के लिए, मेरे बारे में कुछ न सोचिएगा; यह भी न समझिएगा कि आपको इस तरह पत्र लिखकर मैं स्वयं अपना अपमान करती हूँ, या मैं उन लोगों में से हूँ जिन्हें अपने आपको अपमानित करने में मज़ा आता है, और कुछ नहीं तो अहंकार के कारण ही। नहीं, मुझे अपने आपको तसल्ली देने के अपने दूसरे ही साधन हैं; लेकिन यह बात आपको समझाना मेरे लिए मुश्किल है। अपने आपसे भी इस बात को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना मेरे लिए कठिन होगा, हालाँकि इससे मुझे बड़ी पीड़ा होती है। लेकिन मैं समझती हूँ कि अहंकार के आवेग में भी मैं अपने आपको अपमानित नहीं कर सकती, और शुद्ध हृदय से अपना अपमान करने की तो मुझमें क्षमता ही नहीं है। इसलिए अपना अपमान तो मैं करती ही नहीं।

"मैं आप दोनों को मिलाना क्यों चाहती हूँ—आपकी खातिर या अपनी खातिर ? ज़ाहिर है, अपनी खातिर, क्योंकि उससे मेरी सारी समस्याएँ हल हो जाएँगी, यह बात मैंने अपने आपसे बहुत पहले ही कही थी।...मैंने सुना है कि मेरी तस्वीर देखकर आपकी बहन अदेलईदा ने उसके बारे में कहा था कि जिसके पास ऐसा रूप हो वह सारी दुनिया को उलट सकता है। लेकिन मैं दुनिया को त्याग चुकी हूँ। शायद आपको यह हास्यास्पद लगता होगा कि यह बात मैं कहूँ, क्योंकि आपने मुझे लैस की पोशाक पहने, हीरे-जवाहरात से लदा हुआ और शराबियों और बदमाशों की सोहबत में देखा है ? उस पर ध्यान न दीजिए, क्योंकि मेरा अस्तित्व लगभग समाप्त हो चुका है, और मैं इस बात को जानती हूँ। भगवान ही जानता है कि मेरे अन्दर मेरी जगह क्या चीज़ रहती है। मैं उसे रोज उन दो भयानक आँखों में देखती हूँ जो लगातार मुझे घूरती रहती हैं, तब भी जब वे मेरे सामने नहीं रहतीं। वे आँखें अब चुप हैं (वे हमेशा चुप रहती हैं), लेकिन मैं उनका भेद जानती हूँ। उसका घर उदास और अन्धकारमय है, और उसमें एक रहस्य छिपा है। मुझे पूरा विश्वास है कि मास्कोवाले उस हत्यारे की तरह उसने भी किसी दराज़ में रेशम के धागे में लिपटा हुआ एक

उस्तुरा छिपा रखा है; वह आदमी भी उसी घर में रहता था जिसमें उसकी माँ रहती थी, और उसने भी एक गला काटने के लिए अपने उस्तुरे पर रेशम का धागा लपेट रखा था। जितने समय मैं उसके घर में रही मुझे रह-रहकर यह ख़्याल आता रहा कि फ़र्श के तख़्तों के नीचे शायद उसके बाप ने कहीं एक मुर्दा छिपा रखा है, और उसे मोमजामे के टुकड़े से ढक रखा गया है, जैसे मास्कोवाले घर में मुर्दे को ढक रखा गया था, और उसके चारों ओर भी उसी तरह ख़ास घोल से भरी हुई बोतलें रखी हैं। मैं आपको वह जगह भी दिखा सकती हूँ। वह हमेशा चुप रहता है; लेकिन मैं जानती हूँ कि वह मुझसे इतना प्यार करता है कि वह मुझसे नफ़रत किए बिना नहीं रह सकता। आपकी और मेरी शादी एक ही वक़्त होगी—मैंने उससे यही तै किया है। मैं उससे कोई बात छिपाती नहीं। डर के मारे मैं उसे क़त्ल कर देती, लेकिन वह मुझे पहले ही क़त्ल कर देगा...अभी वह हँसा और बोला कि मैं दीवानी हूँ। वह जानता है कि मैं आपको पत्र लिख रही हूँ।"

और उन पत्रों में इसी तरह की ढेरों और जुनूनी बकवास थी। उनमें से एक, दूसरावाला, बहुत छोटे अक्षरों में पत्र लिखने के काग़ज़ के दो बड़े-बड़े तावों पर लिखा हुआ था।

प्रिंस आख़िरकार उस अँधेरे पार्क से चला आया जहाँ वह कल की तरह ही बड़ी देर से टहल रहा था। उजली, पारदर्शी रात उसे हमेशा से ज़्यादा उजली लग रही थी; "क्या अभी तक इतना ही वक़्त हुआ होगा ?" उसने सोचा। (वह अपनी घड़ी ले जाना भूल गया था।) उसे कहीं बहुत दूर संगीत सुनाई दिया। "शायद मनोरंजन उद्यान में होगा," उसने सोचा। "वे लोग आज तो वहाँ नहीं गए होंगे।" वह जब यह सोच रहा था उसी समय उसने देखा कि वह उनके घर के पास खड़ा है; वह जानता था कि आख़िरकार वह वहीं पहुँच जाएगा और डूबते दिल से सीढ़ियाँ चढ़कर बरामदे में जा पहुँचा। वहाँ उसे कोई नहीं मिला। बरामदा सूना पड़ा था। थोड़ी देर बाद उसने ड्राइंग-रूम का दरवाज़ा खोला। "वे लोग यह दरवाज़ा कभी बन्द नहीं करते," यह विचार बिजली की तरह उसके दिमाग़ में कौंध गया। लेकिन ड्राइंग-रूम में भी कोई नहीं था। वहाँ बिल्कुल अँधेरा था। वह हैरान होकर कमरे के बीच में रुक गया। इतने में एक दरवाज़ा खुला और अलेक्सान्द्रा हाथ में मोमबत्ती लिए हुए आई। प्रिंस को देखकर उसे कुछ आश्चर्य हुआ और वह उसके सामने आकर इस तरह खड़ी हो गई मानो जानना चाहती हो कि वह यहाँ क्या करने आया था। स्पष्ट था कि वह सिर्फ़ एक कमरे से दूसरे कमरे में जा रही थी; उसने सोचा तक नहीं था कि उसे वहाँ कोई मिलेगा।

"आप यहाँ आए कैसे ?" आख़िरकार उसने पूछा।

"मैं...मैं बस अन्दर आ गया।..."

"माँ की तबियत ठीक नहीं है, और अग्लाया की भी। अलेक्सान्द्रा सोने जा रही है। मैं भी जा रही हूँ। हम लोगों ने सारी शाम घर पर अकेले बिताई है। पापा और प्रिंस श. शहर गए हैं।"

"मैं...इस वक़्त...मैं आपके पास आया हूँ।...

"जानते हैं इस वक़्त कितने बजे हैं ?"

"न-नहीं।"

"साढ़े बारह। हम लोग हमेशा लगभग एक बजे सो जाते हैं।"

"मैं समझा था कि अभी...साढ़े नौ बजे होंगे।"

"कोई बात नहीं !" वह हँस पड़ी। "और आप पहले क्यों नहीं आए ? शायद आपकी राह देखी जा रही थी।"

"मैंने...मैंने सोचा..." बाहर जाते-जाते उसने बुदबुदाकर कहा।

"गुड-बाई ! कल मैं जब बताऊँगी तो सब लोग ख़ूब हँसेंगे।"

वह पार्क के किनारे-किनारे जानेवाली सड़क पर अपने घर की ओर चल दिया। उसका दिल धड़क रहा था; उसके विचार उलझे हुए थे और चारों ओर की हर चीज़ उसे स्वप्न जैसी लग रही थी। और अचानक, ठीक पहले की तरह ही जब वह सपने में इसी प्रेतात्मा को देखकर दो बार जाग पड़ा था, वही प्रेतात्मा फिर उसके सामने आ गई। वही औरत पार्क से निकलकर उसके सामने आ खड़ी हुई, मानो वह उसके वहाँ होने की आशा कर रही हो। वह चौंक पड़ा और ठिठककर खड़ा हो गया; उस औरत ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे कसकर दबाया। "नहीं, यह प्रेतात्मा नहीं है !"

और आख़िरकार बिछुड़ने के बाद पहली बार वह उसके सामने खड़ी थी; वह उससे कुछ कह रही थी, लेकिन वह उसे चुपचाप घूरे जा रहा था; उसका हृदय पीड़ा से भरकर उमड़ा पड़ रहा था। उफ़, उसके साथ उस मुलाक़ात को वह कभी नहीं भूल सकता था और वह उसे उसी कष्टप्रद पीड़ा के साथ हमेशा याद रही। वह वहीं सड़क पर उसके सामने घुटने टेककर इस तरह बैठ गई जैसे बेहोश हो गई हो; वह पीछे हट गया, और वह उसका हाथ पकड़कर चूमने की कोशिश करने लगी और, ठीक उसी तरह जैसे उसने हाल ही में सपने में देखा था, उसकी लम्बी-लम्बी पलकों पर आँसू झिलमिलाने लगे।

"उठो, उठो !" उसने भयभीत स्वर में धीमे से कहा। "उठो फ़ौरन !"

"तुम खुश हो ? खुश हो ?" उसने पूछा। "बस, मुझसे एक शब्द कह दो—क्या तुम अब खुश हो ? आज, इस वक़्त ? उसके यहाँ ? उसने क्या कहा ?"

वह नहीं उठी और उसने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया; वह जल्दी-जल्दी उससे सवाल करती रही और जल्दी-जल्दी बोलती रही, मानो कोई उसका पीछा कर रहा हो।

"जैसा तुमने मुझसे कहा था, मैं कल जा रही हूँ। मैं नहीं...मैं तुमसे आख़िरी बार मिल रही हूँ...आख़िरी बार ! अब यह बिलकुल आख़िरी बार है !"

"शान्त हो जाओ," वह घोर निराशा से बोला। "उठ जाओ !"

वह उसके हाथों को पकड़े-पकड़े उसके चेहरे को बड़ी उत्सुकता से निहारती रही।

"विदा !" उसने आख़िरकार कहा और उठकर लगभग भागती हुई जल्दी ही उससे दूर चली गई। प्रिंस ने देखा कि अचानक रोगोझिन उसके बग़ल में आ पहुँचा था और बाँह को सहारा देकर उसे लिए जा रहा था।

"प्रिंस, मेरा इन्तज़ार करना," रोगोझिन ने चिल्लाकर कहा। "मैं अभी पाँच मिनट में वापस आता हूँ।"

पाँच मिनट बाद वह सचमुच वापस आ गया; प्रिंस उसी जगह उसकी राह देख रहा था।

"मैंने उसे घोड़ागाड़ी में बिठा दिया है," वह बोला। "उधर कोने पर दस बजे से एक गाड़ी इन्तज़ार में खड़ी थी। वह जानती थी कि तुम सारी शाम दूसरीवाली के साथ बिताओगे। मैंने उसे वह सब ज्यों का त्यों बता दिया जो तुमने आज मुझे अपने खत में लिखा था। अब वह उस दूसरीवाली को फिर कभी नहीं लिखेगी। उसने वादा किया है, और वह कल चली जाएगी, जैसा कि तुम चाहते हो। वह आख़िरी बार तुमसे मिलना चाहती थी, हालाँकि तुमने उससे मिलने से इन्कार कर दिया था। हम लोग यहाँ उस बेंच पर बैठे तुम्हारी राह देख रहे थे कि तुम्हें घर जाते हुए पकड़ लेंगे।"

"तुम्हें क्या वह खुद अपनी मर्जी से साथ लाई थी ?"

"क्यों नहीं ?" रोगोझिन ने खीसें निकाल दीं। "जो मैं पहले से जानता था वह मैंने देख लिया।

वे खत तो मैंने पढ़ ही लिए।"

"क्या तुमने सचमुच उन्हें पढ़ा है ?" प्रिंस ने इस विचार पर चकित होकर पूछा।

"हाँ, उसने हर खत मुझे खुद दिखाया था। उस्तुरे की याद है ? हा-हा !"

"वह पागल है !" प्रिंस ने अपने हाथ मलते हुए चिल्लाकर कहा।

"कौन जाने ? शायद न भी हो," रोगोझिन ने धीरे से कहा, मानो अपने आपसे कह रहा हो।

प्रिंस ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"अच्छा, विदा," रोगोझिन ने कहा। "मैं भी कल जा रहा हूँ। मेरे बारे में बुरा न सोचना ! अरे हाँ," उसने जल्दी से मुड़ते हुए कहा, "तुमने उसके सवाल का जवाब क्यों नहीं दिया ? तुम खुश हो कि नहीं ?"

"नहीं, नहीं, नहीं !" प्रिंस अकथनीय वेदना के साथ चिल्लाया।

"हाँ कहोगे भी कैसे !" रोगोझिन द्वेष से मुस्कराया और मुड़कर देखे बिना चला गया।

भाग : 4

•

1

हरी बेंच पर हमारी कहानी के दो पात्रों की मुलाक़ात को लगभग एक हफ्ता हो चुका था। एक दिन सबेरे, लगभग साढ़े दस बजे, वर्वारा अर्दालिओनोव्ना प्तीत्सिना जो अपने किसी परिचित से मिलने गई हुई थी, घोर और उदासी भरी निराशा की हालत में घर लौटी।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके बारे में कोई ऐसी बात कहना कठिन होता है जो फ़ौरन उनके सबसे ठेठ और लाक्षणिक रूप में पूरी तरह उनका वर्णन कर दे; ये लोग वे होते हैं जिन्हें आमतौर पर 'साधारण' या 'औसत' कहा जाता है, और जो वास्तव में किसी भी प्रकार के समाज में औसत का प्रतिनिधित्व करते हैं। अपने उपन्यासों और कहानियों में लेखकों की ज़्यादातर कोशिश यही रहती है कि वे समाज के ख़ास प्रतिनिधियों को चुन लें और उन्हें कल्पनात्मक तथा कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करें—ऐसे नमूनों को जो वास्तविक जीवन में सम्पूर्ण रूप में कम ही मिलते हैं लेकिन जो इसके बावजूद वास्तविक जीवन से अधिक वास्तविक होते हैं। गोगोल का सामान्यीकृत पात्र पोद्कोलेसिन[1] एक अतिरंजना भले ही हो पर वह किसी भी प्रकार कोरी कल्पना मात्र नहीं है। उन हज़ारों समझदार लोगों की कल्पना कीजिए जिन्हें गोगोल की किताब में पोद्कोलेसिन के बारे में पढ़कर फ़ौरन ऐसा लगता है कि उनके बीसियों मित्र और परिचित पोद्कोलेसिन से बेहद मिलते-जुलते हैं। गोगोल पढ़ने से पहले भी उन्हें मालूम था कि उनके दोस्त पोद्कोलेसिन जैसे हैं; उन्हें सिर्फ़ यह नहीं मालूम था, कि उनका नाम यह था। वास्तविक जीवन में ऐसा शायद ही कभी होता हो कि दूल्हा विवाह के पहले खिड़की से कूदकर भाग जाए क्योंकि, और तमाम बातों के अलावा, यह काफ़ी असुविधाजनक होता है; फिर भी ऐसे दूल्हे काफ़ी बड़ी संख्या में मिल जाएँगे, सम्मानित और समझदार लोग भी, जो अपने विवाह से फ़ौरन पहले सच्चे दिल से यह मानने को तैयार होंगे कि वे सब पोद्कोलेसिन हैं। न ही सारे पति क़दम-क़दम पर चिल्लाते हैं, "Tu l'as voulu, George Dandin !"[2] लेकिन कितनी अरब-खरब बार दिल से निकली हुई यह पुकार सारी दुनिया के पतियों ने अपने हनीमून के बाद या—कौन जाने ?—शायद अपने विवाह के अगले ही दिन दोहराई होगी।

इसलिए इस प्रश्न की गहराई में और अधिक जाए बिना हम बस इतना कहेंगे कि वास्तविक जीवन में ऐसा लगता है कि लोगों के विशिष्ट लक्षण कुछ फीके पड़ जाते हैं, और यह कि जियोर्ज दांदीन और पोद्कोलेसिन जैसे सारे लोग वास्तव में होते हैं और वे रोज हमारे सामने भागते फिरते

1. रूसी लेखक निकोलाई गोगोल (1809-1852) के हास्य-नाटक 'शादी' का एक पात्र।

2. प्रख्यात फ्रांसीसी नाटककार मोलियेर (1622-1673) के प्रहसन 'जियोर्ज दांदीन' का एक संवाद "ऐसा तुमने खुद चाहा था, जियोर्ज दांदीन !" जो बाद में लोगों की जबान पर चढ़ गया।

हैं, लेकिन एक तरह से कुछ फीके रूप में। अन्त में, सच्चाई को पूरी तरह निभाने के लिए इस बात का उल्लेख करके कि मोलियेर ने जिस रूप में जियोर्ज दांदीन का चित्रण किया है ठीक उस रूप में वह वास्तविक जीवन में भी मिल तो सकता है, हालाँकि कभी-कभार ही, हम अपनी इस बहस को समाप्त करेंगे जो किसी पत्रिका में प्रकाशित आलोचनात्मक समीक्षा जैसी लगने लगी है। लेकिन हमने इस सवाल का जवाब अभी तक नहीं दिया है कि उपन्यासकार बिलकुल 'साधारण', हर जगह मिल जानेवाले लोगों का क्या करे और वह उन्हें अपने पाठकों के सामने किस तरह प्रस्तुत करे कि वे तनिक भी दिलचस्प बन सकें। उन्हें कहानी में कोई स्थान ही न देना असम्भव है, क्योंकि वे साधारण लोग लगभग हमेशा मानवीय कार्यकलाप की शृंखला में कड़ियों के समान होते हैं, उन्हें छोड़ देने से हमारी कहानी की यथार्थता नष्ट हो जाएगी। उपन्यासों को केवल सामान्यीकृत पात्रों से, या रोचकता पैदा करने के लिए केवल ऊटपटाँग और कल्पनातीत लोगों से भर देना अवास्तविक तथा असम्भाव्य और शायद अरोचक भी होगा। हमारी राय में लेखक को सामान्यतम लोगों में भी चरित्र के रोचक तथा शिक्षाप्रद सूक्ष्म भेद खोजने का प्रयत्न करना चाहिए। और जब साधारणतया के अतिरिक्त कुछ और नहीं होता या, यह कहना बेहतर होगा कि जब साधारणता और बँधी लीक से बाहर निकलने की अपनी यथाशक्ति कोशिशों के बावजूद वे अन्त में फिर भी अपरिवर्तनीय रूप से और निरन्तर साधारण और सामान्य बने रहते हैं, तो इस प्रकार के लोग एक तरह से सामान्यीकृत हो जाते हैं—उसी साधारणता के साकार रूप में जिसे धारण किए रहने से वे इन्कार करते हैं, जो उनका वास्तविक रूप होता है और वे मौलिक तथा स्वतन्त्र बनने का भरपूर प्रयत्न करते हैं जबकि उनमें स्वतन्त्रता का कोई भी गुण नहीं होता।

"साधारण" और "सामान्य" लोगों की इस कोटि में हमारी कहानी के कुछ पात्र भी आते हैं जिनके बारे में, मुझे मानना पड़ता है, पाठकों को काफ़ी नहीं बताया गया है। वार्या प्तीत्सिना, उसके पति प्तीत्सिन साहब, और उसके भाई गव्रीला अर्दालिओनोविच ईवोल्गिन ऐसे ही लोग हैं।

सचमुच, इससे अधिक दुःखद और कोई बात नहीं होती कि, उदाहरण के लिए, आदमी धनी हो, अच्छे परिवार का हो, सूरत-शक्ल का अच्छा हो, काफ़ी पढ़ा-लिखा हो, नासमझ भी न हो, दिल का भी नेक हो, और इसके साथ ही उसमें कोई प्रतिभा न हो, कोई ख़ास बात न हो, यहाँ तक कि कोई सनक भी न हो, स्वयं अपना कोई विचार न हो—दरअसल, वह हूबहू "बाक़ी सब लोगों जैसा" हो। धनी तो हो, मगर राथशाइल्ड जितना नहीं; अच्छे परिवार का तो हो, लेकिन ऐसे परिवार का जिसने कभी किसी भी प्रकार अपनी ख्याति न बढ़ाई हो; सूरत-शक्ल अच्छी तो हो, लेकिन ऐसी कि उससे कोई ख़ास बात व्यक्त न होती हो; काफ़ी पढ़ा-लिखा तो हो लेकिन यह न जानता हो कि उसका करे क्या; समझदार तो हो, लेकिन उसके **अपने कोई विचार** न हों, दिल का नेक तो हो, लेकिन उसमें उदारता न हो, इत्यादि-इत्यादि। दुनिया में इस तरह के बहुत-से लोग हैं—उससे कहीं ज़्यादा जितना दिखाई देता है; सभी लोगों की तरह उन्हें भी दो कोटियों में बाँटा जा सकता है—वे जो 'संकीर्ण विचारोंवाले' होते हैं और वे जो 'अधिक चतुर' होते हैं। पहली कोटि के लोग अधिक सुखी रहते हैं। उदाहरण के लिए, संकीर्ण विचारोंवाले 'साधारण' आदमी के लिए इससे ज़्यादा आसान और कोई बात नहीं होती कि वह आपको असाधारण और मौलिक मनुष्य समझे और किसी भ्रम के बिना इस विश्वास में मगन रहे। देखिए, हमारी कुछ नौजवान औरतों का तो बस यह हाल है कि अपने बाल छोटे कटवा लिए, नीला चश्मा लगा लिया और अपने आपको नास्तिकवादी कहने लगीं, और इस तरह अपने आपको तुरन्त विश्वास दिला दिया कि यह चश्मा लगा लेने से ही तुरन्त उनकी स्वयं अपनी कुछ 'आस्थाएँ' हो गई हैं। हमारे कुछ

मर्दों ने अपने दिलों में मानवीय और नेक भावनाओं की हल्की-सी झलक देखते ही अपने आपको विश्वास दिला लिया कि जैसा वे अनुभव करते हैं वैसा कोई नहीं करता और यह कि वे सभ्यता का हिरावल हैं। किसी दूसरे के लिए बस इतना ही काफ़ी था कि वह किसी ऐसे विचार को, जिसके बारे में उसने कहीं सुना था, बिना कोई प्रश्न किए तुरन्त स्वीकार कर ले, या किसी किताब में कहीं से कोई पन्ना पढ़ ले और तुरन्त यह समझने लगे कि वह 'उसका अपना विचार' है और यह कि इसका अंकुर स्वयं उसके मस्तिष्क में फूटा था। इस प्रकार के लोगों को मासूम ढिठाई, यदि इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग किया जा सकता हो, आश्चर्यजनक हद तक पहुँच जाती है; यह सब कुछ अविश्वसनीय मालूम होता है, फिर भी इस तरह की चीज़ से हर क्षण पाला पड़ता है। भोले लोगों की इस ढिठाई का, एक मूर्ख आदमी में अपनी योग्यताओं के बारे में शंका के सर्वथा अभाव का बहुत अच्छा चित्रण गोगोल ने अपने लाजवाब पात्र लेफ़्टिनेंट पिरोगोव[1] के रूप में किया है। पिरोगोव को कभी इसमें कोई शंका नहीं होती कि वह जीनियस है, बल्कि सच पूछा जाए तो जीनियस से भी बढ़कर है। उसे इसका इतना पक्का विश्वास है कि इसके बारे में सवाल करने की बात उसके मन में उठती ही नहीं; और सवाल तो वह यों भी किसी चीज़ के बारे में नहीं करता। महान लेखक अन्त में मजबूर हो गया कि अपने पाठक की अपमानित नैतिक भावनाओं को सन्तुष्ट करने के लिए वह इस पात्र की पिटाई करवा दे, लेकिन जब लेखक ने देखा कि यह महापुरुष धूल झाड़कर फिर उठ खड़ा हुआ और बुरी तरह पिटाई होने के बाद उसने अपने आपको मजबूत करने के लिए एक केक खाया तो वह चकित रह गया और उसने पाठक को वहीं छोड़ दिया। मुझे हमेशा इस बात का दुःख रहा कि गोगोल ने महान पिरोगोव को इतना तुच्छ पद दिया था, क्योंकि पिरोगोव अपने आपसे इतना सन्तुष्ट था कि उसके लिए इससे आसान तो और कुछ था ही नहीं कि जैसे-जैसे उम्र बढ़ने और पद में उन्नति होने के साथ-साथ उसके कन्धे पर लगे हुए झब्बे मोटे होते गए और उनकी ऐंठन बढ़ती गई, वैसे-वैसे वह अपनी कल्पना एक महान सेनापति के रूप में करने लगा; या कल्पना न करे, बल्कि उसे इसमें किसी भी प्रकार का सन्देह न रह जाए—उसे जब जनरल बना दिया गया था, तो वह महान सेनापति क्यों नहीं बन सकता ! इस तरह के कितने ही सूरमा लड़ाई के मैदान में नाकाम रहे हैं। और हमारे लेखकों, हमारे विद्वानों, हमारे प्रचारकों के बीच कितने पिरोगोव हुए हैं ? मैंने कहा "हुए हैं", लेकिन सच तो यह है कि वे अब भी हमारे बीच मौजूद हैं।...

गव्रीला अर्दालिओनोविच ईवोल्गिन दूसरी ही कोटि का था; वह उस कोटि के लोगों में था जो 'अधिक चतुर' होते हैं, हालाँकि उसका रोम-रोम मौलिकता की इच्छा से ओत-प्रोत था। लेकिन, जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, इस कोटि के लोग पहली कोटि के लोगों से कहीं कम सुखी रहते हैं। क्योंकि मुसीबत यह है कि चतुर 'साधारण' आदमी के मन में, भले ही वह कभी-कभी (और शायद जीवन-भर) अपने आपको जीनियस और अपार मौलिकतावाला आदमी समझता रहे, फिर भी शंका का कीड़ा रेंगता ही रहता है, जो इस चतुर आदमी को घोर निराशा के गर्त्त में ढकेल देता है। अगर वह हार मानता भी है तो केवल उस हालत में अगर अन्तर्मुखी अहंकार का विष उसके अन्दर पूरी तरह फैल गया हो। लेकिन हमने चरम उदाहरण लिया है—इस चतुर कोटि के लोगों में से अधिकांश का हाल इतना दुःखद नहीं होता; जीवन के अन्त में उन्हें हद से हद जिगर की ज़्यादा या कम संगीन शिकायत हो जाती है, और बस। फिर भी, हार मानने और अपने आपको भाग्य के हवाले कर देने से पहले ये लोग बहुत समय तक बेवक़ूफ़ी की हरकतें करते रहते हैं, चढ़ती जवानी

1. नि. गोगोल के लघु-उपन्यास 'नेव्स्की एवेन्यू' का नायक। दोस्तोयेव्स्की इसे गोगोल की महानतम कृति मानते थे।

से लेकर ढलते बुढ़ापे तक, और यह सब कुछ केवल मौलिक बनने की अपनी इच्छा के कारण। तरह-तरह के विचित्र उदाहरण भी मिलते हैं—मौलिक बनने की इच्छा से ईमानदार आदमी भी नीचता पर उतर आने को तैयार हो जाता है; ऐसा भी होता है कि इन दुःखी लोगों में से कोई ईमानदार ही नहीं बल्कि...नेक भी होता है और अपने परिवार का संरक्षक होता है, जो अपनी मेहनत से न केवल अपने सगों का बल्कि अजनबियों का भी भरण-पोषण करता है, और नतीजा क्या होता है—जीवन-भर वह मन की शान्ति नहीं पाता ! इस विचार से कि उसने अपने कर्तव्यों को इतनी अच्छी तरह पूरा किया है उसे कोई सुख या सांत्वना नहीं मिलती; इसके विपरीत इसी विचार पर तो वह झुँझला पड़ता है—"तो यह है," वह अपने मन में सोचता है, "जिसके लिए मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी बर्बाद कर दी, जिसने मेरे हाथ-पाँव जकड़ दिए, जिसने मुझे बारूद की खोज से वंचित रखा ! अगर यह न होता तो मैं निश्चित रूप से बारूद या अमरीका की खोज करता, मैं ठीक से नहीं बता सकता किसकी, लेकिन मैं खोज करता ज़रूर !" इन सज्जनों की सबसे लाक्षणिक बात यह होती है कि वे कभी तै नहीं कर पाते कि उन्हें किस चीज़ की खोज करनी है या वे अपने जीवन-भर किस चीज़ की खोज के बिलकुल निकट रहे हैं—बारूद की या अमरीका की ? लेकिन किसी चीज़ की खोज करने की उनकी व्यथित लालसा किसी कोलम्बस या गैलीलियों के लिए भी काफ़ी होती।

गान्या ने उस मार्ग पर चलना आरम्भ कर दिया था, लेकिन अभी आरम्भ ही किया था। उसे अभी वर्षों तक बेवक़ूफ़ी की हरकतें करनी थीं। अपने अति प्रतिभाहीन होने की निरन्तर और बहुत गहरी अनुभूति, और साथ ही अपने आपको अत्यन्त उन्मुक्त व्यक्ति होने का विश्वास दिलाने की इच्छा लड़कपन के दिनों से ही उसके हृदय को सालती रही थी। वह ईर्ष्या और आवेग से भरी हुई इच्छाओंवाला नौजवान था, और ऐसा लगता था कि जन्म से ही वह अत्यधिक स्नायविक तनाव का शिकार था। वह अपनी इच्छाओं के आवेगपूर्ण होने को अपनी शक्ति समझ बैठा था। सबसे अलग पहचाने जाने की अपनी प्रबल इच्छा के कारण वह कभी-कभी बेहद खतरनाक जोखिम मोल लेने को तैयार हो जाता था; लेकिन हमारा हीरो इतना समझदार था कि जब वह जोखिम उठाने का क्षण सचमुच आता था तो वह उससे कतराकर निकल जाता था। इससे उसे घोर निराशा होती थी। मौक़ा मिलने पर अपनी मनचाही चीज़ पाने के लिए वह कोई सचमुच कमीनेपन की हरकत करने पर अपने मन को शायद पक्का तो कर लेता था, लेकिन जैसे ही कुछ करने का क्षण आता था वैसे ही वह अपनी ईमानदारी की वजह से कोई बेहद कमीनेपन की हरकत नहीं कर पाता था। (लेकिन छोटा-मोटा कमीनापन करने के लिए वह हमेशा राज़ी हो जाता था।) अपने परिवार की दरिद्रता और पतन को देखकर उसे अरुचि और घृणा होती थी। वह अपनी माँ तक के साथ दम्भपूर्ण तिरस्कार का व्यवहार करता था, हालाँकि वह अच्छी तरह जानता था कि अब तक उसकी माँ का चरित्र और उसकी नेकनामी ही स्वयं उसके जीवन का भी मुख्य आधार रही थी। जब उसे जनरल येपांचिन के सेक्रेटरी की नौकरी मिली थी तो उसने फ़ौरन अपने मन में कहा था—"ऐब करो तो जी भरकर—सफल होने के लिए।" मगर...वह कभी ऐसा पूरी तरह कर नहीं पाया। लेकिन उसके मन में यह बात आई कहाँ से कि उसे ऐब करना होगा ? उस समय वह अग्लाया से डरता था, लेकिन उसने उससे सिलसिला बिलकुल तोड़ नहीं दिया था, बल्कि वक़्त पड़े काम आने के लिए उसे जारी रखा हालाँकि उसने कभी गम्भीरता से इस बात पर भी विश्वास नहीं किया था कि वह उसके स्तर तक नीचे उतरेगी। फिर जब नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ उसका मामला चल रहा था, तब अचानक वह सोचने लगा कि हर चीज़ की कुंजी है पैसा। "ऐब करो तो जी भरकर,"

वह रोज बड़े सन्तोष के साथ, लेकिन कुछ सहमकर भी मन ही मन दोहराता रहता। "ऐब करो तो जी भरकर," यह कहकर वह अपनी पीठ ठोंकता रहता। "साधारण आदमी को डर लगेगा, लेकिन मुझे नहीं लगेगा !" अग्लाया को खोकर और परिस्थितियों के बोझ के नीचे कुचलकर, वह बिलकुल हिम्मत हार बैठा और उसने सचमुच वह रक़म प्रिंस को वापस कर दी जो एक पागल औरत ने उसके मुँह पर फेंककर मारी थी और जो उस औरत के लिए एक पागल आदमी से लाया था। बाद में हज़ारों बार वह उस रक़म को वापस कर देने पर पछताया, हालाँकि वह लगातार इसकी डींग मारता रहता था। वह सचमुच तीन दिन तक रोया, जब प्रिंस पीटर्सबर्ग में था, लेकिन उन्हीं दिनों के दौरान उसे प्रिंस से नफ़रत भी हो गई क्योंकि प्रिंस उसे बड़े तरस से देखता रहा था, हालाँकि "हर आदमी का इतना जिगरा न होता" कि यह इतनी बड़ी रक़म वापस कर दे। लेकिन अपने आपसे ईमानदारी के साथ इस बात को स्वीकार करते उसे अपार ग्लानि होती थी कि उसकी घोर निराशा की इस मनोदशा का एकमात्र कारण वे घाव थे जो उसके अहंकार पर निरन्तर लगाए गए थे। बहुत बाद में जाकर वह यह समझ पाया और उसको पक्का विश्वास हो गया कि अग्लाया जैसी विचित्र और मासूम लड़की के साथ उसका मामला कैसा सुखद रूप धारण कर सकता था। पश्चात्ताप उसे खाए जा रहा था; उसने अपनी नौकरी छोड़ दी और घोर निराशा के अन्धकार में डूब गया। वह अपने माँ बाप के साथ अपने बहनोई प्तीत्सिन के घर उसी के खर्च पर रहता था, और प्तीत्सिन के प्रति अपने तिरस्कार को छिपाने की कोई कोशिश नहीं करता था, हालाँकि इसके साथ ही वह उसकी सलाह भी ध्यान देकर सुनता था और इतना समझदार तो वह था ही कि लगभग हमेशा उससे सलाह माँगता था। मिसाल के लिए, प्तीत्सिन से गान्या इसलिए नाराज़ रहता था कि उसके बहनोई का कोई इरादा राथशाइल्ड जैसा धनी बनने का नहीं था। "अगर तुम सूदखोर हो तो किसी बात की परवाह किए बिना डटकर सूदखोरी करो, लोगों को चूस लो, उनसे पैसा बनाओ, मर्दों की तरह काम करो, मुक़द्दर के सिकन्दर बन जाओ !" प्तीत्सिन शान्त और विनम्र था; वह बस मुस्करा देता था, लेकिन एक बार उसने गान्या के साथ गम्भीरता से बातचीत करना ज़रूरी समझा, और उसने काफ़ी गरिमा के साथ बात की थी। उसने गान्या के सामने साबित कर दिया कि वह कोई बेईमानी का काम नहीं कर रहा था और यह कि गान्या उसे यहूदी कहकर अन्याय करता था; कि अगर पैसा इतना महँगा था तो इसमें उसका क्या दोष था; कि वह ईमानदारी से और इज़्ज़तदार तरीक़े से काम करता था, और यह कि इन मामलों में तो उसकी हैसियत बस एक बिचौलिए की थी, और अन्तिम बात यह कि कारोबार में अपना आचरण बिलकुल ठीक रखने की वजह से उच्च कोटि के लोगों में उसकी साख बन गई थी और उसका कारोबार बढ़ रहा था। "मैं राथशाइल्ड कभी नहीं बनूँगा, और मैं बनना चाहता भी नहीं," उसने हँसते हुए इतना और जोड़ दिया, "लेकिन इतना ज़रूर है कि लितेइनी एवेन्यू पर मेरा एक मकान होगा, शायद दो भी हों, बस मैं यहीं तक पहुँच पाऊँगा।" "और कौन जाने," वह मन ही मन कहता, "शायद तीन भी हो जाएँ !"—लेकिन उसने यह बात कभी ज़ोर से नहीं कही और अपने स्वप्न को छिपाए रखा। प्रकृति ऐसे लोगों से प्यार करती है और उन्हें बहुत पसन्द करती है—वह प्तीत्सिन को तीन नहीं बल्कि चार मकान देगी, और सिर्फ़ इसलिए कि उसे बचपन से यह मालूम रहा है कि वह कभी राथशाइल्ड नहीं बनेगा। लेकिन चार मकानों से आगे प्रकृति भी नहीं जाएगी, और यही प्तीत्सिन की हद है।

गान्या की बहन बिलकुल ही भिन्न थी। उसकी इच्छाएँ भी प्रबल थीं, लेकिन उनमें इतना आवेग नहीं था, बल्कि वे निरन्तर बनी रहती थीं। संकट के समय उसमें बहुत सहज-बुद्धि आ जाती

थी लेकिन उससे पहले भी वह उसका साथ बिलकुल छोड़ती नहीं थी। यह सच है कि वह भी उन्हीं 'साधारण' लोगों में से थी जो मौलिक बनने के स्वप्न देखते हैं, लेकिन उसने बहुत जल्दी ही समझ लिया था कि उसमें रत्ती-भर मौलिकता नहीं थी, और इसकी उसे कोई बहुत चिन्ता भी नहीं थी—कौन जाने ? शायद एक विशेष प्रकार के अहंकार की वजह से। प्तीत्सिन से शादी करके उसने अपना पहला व्यावहारिक क़दम बड़े दृढ़ संकल्प के साथ उठाया था; लेकिन उससे ब्याह करते समय उसने अपने आपसे यह कहने की बात सोची तक नहीं थी, "ऐब करो तो जी भरकर—सफल होने के लिए," जैसा कि गान्या ने ऐसे अवसर पर अवश्य कहा होता (और सच तो यह है कि वह उसके मुँह पर बस ऐसा कहते-कहते रह गया, जब बड़े भाई के नाते उसने उसके निर्णय का अनुमोदन किया)। इसके बिलकुल विपरीत, वार्या ने इस बात का पूरी तरह आश्वासन कर लेने के बाद ही शादी की थी कि उसका भावी पति विनम्र, अच्छे स्वभाव का और काफ़ी पढ़ा-लिखा आदमी था, जो कभी कोई ऐब नहीं करेगा। वार्या ने कमीनेपन की छोटी-मोटी हरकतों के बारे में अपना सिर नहीं खपाया, और उन्हें मामूली बातें कहकर टाल दिया। और सच तो यह है कि ऐसी छोटी-मोटी मामूली बातें कहाँ नहीं होतीं ? वह आदर्श आदमी की खोज भी तो नहीं कर रही थी न ? इसके अलावा वह जानती थी कि शादी करके वह अपनी माँ, अपने बाप और अपने भाइयों के रहने के लिए एक घर का प्रबन्ध कर लेगी। अपने भाई को मुसीबत में फँसा हुआ देखकर वह पहलेवाली अपनी ग़लतफ़हमियों के बावजूद उसकी मदद करना चाहती थी। प्तीत्सिन कभी-कभी गान्या को—ज़ाहिर है, दोस्ताना तरीक़े से—नौकरी कर लेने की ओर ढकेलता रहता था। "मैं जानता हूँ," वह उससे मज़ाक़ करते हुए कहता था, "कि तुम्हें जनरलों और ऊँचे पदों से नफ़रत है, लेकिन मैं तुम्हें इतना बता दूँ कि आख़िर में 'वे' सब जनरल बन जाएँगे। अगर तुम ज़्यादा दिन जिओगे तो ख़ुद देख लेना।" "ये लोग ऐसा क्यों समझते हैं कि मुझे जनरलों और ऊँचे पदों से नफ़रत है ?" गान्या ने व्यंगपूर्वक मन ही मन सोचा। भाई की मदद करने के लिए वार्या ने अपने कार्यक्षेत्र को व्यापक बनाने का फ़ैसला किया—उसने येपांचिन-परिवार के लोगों से मेल-जोल बढ़ाया, जिसमें उसे बचपन की स्मृतियों से बहुत मदद मिली क्योंकि वह और उसका भाई दोनों ही बचपन में येपांचिन-परिवार की लड़कियों के साथ खेला करते थे। हम यहाँ यह बता दें कि येपांचिन-परिवार के यहाँ जाने के पीछे यदि वार्या का उद्देश्य किसी असाधारण स्वप्न को साकार करना होता तो शायद वह उस कोटि के लोगों को फ़ौरन अलग कर देती जिनमें उसने ख़ुद अपने आपको सम्मिलित किया था; लेकिन वह किसी स्वप्न को साकार करने के पीछे नहीं थी—उसके ऐसा करने के पीछे एक गहरा हिसाब-किताब था, क्योंकि उसने येपांचिन-परिवार के विचित्र स्वभाव को अपनी सारी योजनाओं का आधार बनाया था। जहाँ तक अग्लाया के स्वभाव का सवाल था तो उसका तो अध्ययन करते वह कभी थकती ही नहीं थी। उसने अपने भाई और अग्लाया को फिर से मिला देने का लक्ष्य सामने रखा था। शायद उसे वास्तव में इसमें कुछ सफलता भी मिली थी; शायद उसने गलतियाँ की थीं जब, उदाहरण के लिए, अपने भाई पर उसने ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा करके अपनी योजनाएँ बनाई थीं और उससे ऐसी चीज़ की उम्मीद की थी जो वह कभी दे ही नहीं सकता था। बहरहाल, वह येपांचिन-परिवार में बड़ी होशियारी से काम लेती थी—हफ़्तों अपने भाई का नाम तक नहीं लेती थी, हमेशा बड़ी सच्चाई और ईमानदारी का बर्ताव रखती थी, और उसका आचरण हमेशा बहुत सीधा-सादा लेकिन गरिमामय रहता था। जहाँ तक उसके अन्तःकरण का सवाल है, उसे उसमें झाँक लेने में कोई डर नहीं लगता था और वह कभी अपने आपको किसी भी चीज़ के लिए धिक्कारती नहीं थी। इसी से उसको बल मिलता था। हालाँकि अपने बारे में उसने एक बात

अलबत्ता देखी थी, और वह यह थी कि शायद उसे गुस्सा बहुत जल्दी आता था कि उसमें स्वाभिमान बहुत था और यहाँ तक कि आहत अहंकार भी; उसे कुछ अवसरों पर इसका विशेष रूप से आभास होता था, लगभग हर बार जब वह येपांचिन-परिवार से मिलने के बाद घर जाती थी।

और अब, जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, वह घोर निराशा की हालत में उनके यहाँ से घर वापस जा रही थी। उसकी व्यथा में कटु उपहास का पुट था। पाव्लोव्स्क में प्तीत्सिन का एक बड़ा-सा लेकिन कुछ अनाकर्षक लकड़ी का घर था। वह एक धूल-भरी सड़क पर था और शीघ्र ही उसकी सम्पत्ति बन जानेवाला था, इसलिए उसने उसकी बिक्री के सौदे की बातचीत किसी से शुरू भी कर दी थी। सामने की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए वर्वारा अर्दालिओनोव्ना को ऊपर बहुत शोर सुनाई दिया और उसने अपने बाप और अपने भाई की ऊँची आवाज़ें पहचानीं। ड्राइंग-रूम में प्रवेश करने पर उसने देखा कि गान्या गुस्से से आगबबूला होकर और लगभग अपने बाल नोचता हुआ कमरे में इधर-उधर टहल रहा था। वार्या की त्योरियाँ चढ़ गईं और हैट उतारे बिना वह थकी हुई-सी सोफ़े पर धँसकर बैठ गई। इस बात को बहुत अच्छी तरह समझते हुए कि अगर वह एक मिनट भी और चुप रही और उसने अपने भाई से न पूछा कि वह कमरे में इस तरह क्यों टहल रहा है तो वह यक़ीनन उससे नाराज़ हो जाएगा, वार्या ने आख़िरकार एक प्रश्न के रूप में जल्दी से कहा—"वही पुराना क़िस्सा ?"

"वही पुराना क़िस्सा नया !" गान्या ने चिल्लाकर कहा। "वही ! नहीं, वही नहीं, लेकिन भगवान ही जानता है कि अब हो क्या रहा है ! बुढ़ऊ तो बिलकुल पागल हो गए हैं...माँ रो रही हैं। क़सम खाकर कहता हूँ, वार्या, मैं उन्हें ठोकर मारकर घर से निकाल दूँगा, या...मैं खुद यहाँ से चला जाऊँगा," उसने इतना और जोड़ दिया, शायद यह याद करके कि वह दूसरे के घर से किसी को ठोकर मारकर नहीं निकाल सकता।

"तुम्हें थोड़ी-सी छूट देनी चाहिए," वार्या ने बुदबुदाकर कहा।

"छूट ? किसलिए ? किसके लिए ?" गान्या भड़क उठा। "छूट उनकी बेहूदगियों के लिए ? नहीं, तुम चाहे जो कहो, ऐसा नामुमकिन है ! नामुमकिन, नामुमकिन ! और भला यह भी बर्ताव करने का कोई तरीक़ा हुआ ! सारा क़सूर उन्हीं का है, फिर भी वह ऐंठते फिरते हैं। फाटक लाट साहब के लिए छोटा है...इसलिए चारदीवारी गिरा दी जाए ? बात क्या है ? तुम्हारी तबियत तो ठीक है ?"

"मैं बिलकुल ठीक हूँ," वार्या ने चिढ़कर जवाब दिया।

गान्या उसे और ग़ौर से देखने लगा।

"वहाँ गई थीं ?" उसने अचानक पूछा।

"हाँ।"

"ज़रा ठहरो, वे फिर चिल्ला रहे हैं ! कितनी शर्म की बात है ! और सो भी इस वक़्त !"

"कैसा वक़्त ? यह कोई ख़ास वक़्त तो है नहीं।"

गान्या ने अपनी बहन को पहले से भी ज़्यादा ग़ौर से देखा।

"कुछ पता चला ?" उसने पूछा।

"कोई ऐसी बात तो नहीं जिसकी उम्मीद न रही हो। मैंने पता लगाया कि बात बिलकुल सच है। मेरे शौहर हममें से किसी के भी मुकाबले सच्चाई के ज़्यादा करीब थे। बिलकुल वही हुआ जो उन्होंने पहले ही कह दिया था। वह हैं कहाँ ?"

"बाहर गए हैं। वहाँ क्या हुआ ?"

"प्रिंस की बाक़ायदा उससे मँगनी हो गई है—यह तै है। बड़ी बहनों ने मुझे बताया। अग्लाया राज़ी है। वे लोग अब इस बात को छिपाते भी नहीं। (अब तक उन लोगों ने इसे एक रहस्य बना रखा था।) अदेलईदा की शादी फिर टाल दी जाएगी, ताकि दोनों शादियाँ एक ही दिन हो सकें—कितनी रोमांटिक बात है ! बिलकुल कविता की तरह। कमरे में इस तरह टहलते रहने से अच्छा होगा कि तुम खुशी के उस मौक़े के लिए एक कविता ही लिख दो। काउंटेस बेलोकोंस्काया आज शाम आनेवाली हैं—वह बिलकुल ठीक वक़्त पर पहुँच गई हैं; मेहमान भी आएँगे। काउंटेस से उसका परिचय कराया जाएगा हालाँकि वह पहले भी उससे मिल चुका है। मैं समझती हूँ कि उनकी मँगनी का भी एलान किया जाएगा। बस उन लोगों को डर यह है कि जब वह कमरे में आए तो कोई चीज़ गिरा या तोड़ न दे या खुद ही न गिर पड़े। उससे यही डर लगा रहता है।"

गान्या ने बड़े ध्यान से सुना लेकिन उसकी बहन को यह देखकर बहुत ताज्जुब हुआ कि इस आश्चर्यजनक ख़बर का उस पर कोई बहुत गहरा असर नहीं हुआ।

"अच्छा, यह तो पहले से ही साफ़ था," उसने एक मिनट सोचने के बाद कहा। "तो मामला ख़त्म हो गया !" उसने अपनी बहन के चेहरे को चालाकी से देखते हुए और कमरे में पहले की तरह ही टहलते हुए, हालाँकि ज़्यादा धीरे-धीरे, एक अजीब-सी मुस्कराहट के साथ इतना और जोड़ दिया।

"बहुत अच्छी बात है कि इसकी तरफ़ तुम्हारा रवैया इतना दार्शनिकों जैसा है," वार्या ने कहा। "मुझे सचमुच बड़ी खुशी है।"

"हाँ, अब हम लोग ज़्यादा चैन से साँस ले सकते हैं...कम से कम तुम तो ले ही सकती हो।"

"मैंने तुम्हारी जी-तोड़ सेवा ही की है न तुमसे बहस किए बिना और तुम्हें परेशान किए बिना; मैंने तुमसे यह तक नहीं पूछा कि तुम अग्लाया के साथ किस तरह के सुख की आशा करते थे।"

"लेकिन अग्लाया के साथ क्या मैं...सुख की आशा कर रहा था ?"

"अच्छा, अब बहुत फ़लसफ़ा न बघारो ! तुम उम्मीद तो कर ही रहे थे। बस, बहुत हो गया—हमारी दाल नहीं गली। मैं मानती हूँ कि मैं कभी इसके बारे में संजीदा थी ही नहीं। मैंने तो उसके बेतुके स्वभाव पर भरोसा करके, और ख़ासतौर पर तुम्हें खुश करने के लिए बस एक जुआ खेला था; एक के ख़िलाफ़ दस की सम्भावना यही थी कि बात बनेगी नहीं। अब भी मेरी समझ में नहीं आता कि तुम इससे क्या पाने की कोशिश कर रहे थे।"

"अब तुम और तुम्हारे शौहर मुझे नौकरी के लिए दौड़ाते रहेंगे। मुझे लगन और इच्छा-शक्ति के बारे में, छोटी-छोटी चीज़ों की उपेक्षा न करने के बारे में व्याख्यान पढ़कर सुनाएँगे, वगैरह-वगैरह। वह सब मुझे जबानी याद है।" गान्या ठहाका मारकर हँस पड़ा।

"इसके दिमाग़ में कोई नई बात आई है," वार्या ने सोचा।

"अच्छा, वहाँ वे लोग खुश हैं...मेरा मतलब माँ-बाप से है ?" गान्या ने अचानक पूछा।

"न-नहीं, मेरा तो ख़्याल—नहीं हैं। लेकिन इसका फ़ैसला तुम खुद कर सकते हो। जनरल येपांचिन खुश हैं। माँ परेशान हैं। अपनी बेटी के लिए प्रिंस को भावी पति के रूप में देखने से उन्हें हमेशा से नफ़रत रही है। यह बात सबको मालूम है।"

"मेरा मतलब यह नहीं है। यह तो बिलकुल साफ़ बात है कि उसे कोई दूल्हा बनाने को तैयार न होगा और उसके दूल्हा होने की बात तो सोची भी नहीं जा सकती। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि वहाँ इस वक़्त हो क्या रहा है। क्या उसने बाक़ायदा रस्मी तौर पर अपनी रजामन्दी दे दी है !"

"उसने 'नहीं' अभी तक नहीं कहा है। लेकिन उससे इसके अलावा और कुछ उम्मीद ही नहीं की जा सकती थी। तुम तो जानते ही हो कि कितने बेतुकेपन की हद तक शर्मीली और झेंपू है : जब वह बच्ची थी तो वह अलमारी में घुसकर बैठ जाती थी और दो-दो तीन-तीन घंटे वहाँ छिपी रहती थी कि मेहमानों के सामने न आना पड़े; बड़ी होकर वह बड़े डील-डौल की लड़की निकली और अब भी वैसी ही है। मैं भी यह सोचने को मजबूर हूँ कि बात में सचमुच गम्भीरता है, उसकी ओर से भी। मैंने सुना है कि वह दिन-रात प्रिंस पर हँसती रहती है, लेकिन ऐसा वह सिर्फ़ परदा डालने के लिए करती है, लेकिन रोज चोरी-छिपे वह किसी न किसी तरह उसे कोई न कोई सन्देश पहुँचा ही देती है, क्योंकि उसे देखने से लगता है कि उसके पाँव ही ज़मीन पर नहीं पड़ रहे। मारे खुशी के उसकी बाँछें खिली रहती हैं।...ये लोग कहते हैं कि वह बेहद मसख़रा लगता है। मुझे यह बात उन्हीं से मालूम हुई। मुझे तो यह तक लगा कि वे मेरे मुँह पर ही मुझ पर हँस रही थीं—मेरा मतलब है, बड़ी बहनें।"

आख़िरकार गान्या त्योरियाँ चढ़ाने लगा; हो सकता है कि वार्या इस विषय के बारे में यह जानने के लिए इतने विस्तार से बातें कर रही हो कि वास्तव में वह क्या सोच रहा था। लेकिन इतने में फिर ऊपर से शोर सुनाई देने लगा।

"मैं उन्हें ठोकर मारकर निकाल दूँगा !" गान्या ज़ोर से गरजा, जैसे उसे कोई चीज़ तो ऐसी मिल गई थी जिस पर वह अपनी निराशा निकाल सके।

"और तब वह फिर हर जगह जाकर हमारी बदनामी करेंगे, जैसा उन्होंने कल किया था।"

"कल से तुम्हारा क्या मतलब ?" गान्या अचानक बेहद भयभीत होकर चिल्लाया। "क्या बात है—कल की तरह ? कहीं यह तो नहीं है कि वह..."

"अरे, तुम्हें नहीं मालूम ?" वार्या का ध्यान अपनी चूक की ओर गया।

"क्या ? क्या यह सच है कि वह कल वहाँ गए थे ?" गान्या ने शर्म और गुस्से से लाल होकर कहा। "अरे, तुम अभी तो वहाँ से आई हो ! क्या तुम्हें कुछ पता लगा ? बड़े मियाँ वहाँ गए थे ? गए थे कि नहीं ?"

यह कहकर गान्या सीधे दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा; वार्या उसके पीछे भागी और उसने दोनों हाथों से उसे पकड़ लिया।

"क्या कर रहे हो ? कहाँ जा रहे हो ?" वह बोली। "इस वक़्त उन्हें बाहर जाने दिया तो वह इससे भी सौ-गुनी बुरी कोई हरकत करेंगे, वह हर एक के पास जाएँगे !..."

"क्या किया था उन्होंने वहाँ ? क्या कहा था उन्होंने ?"

"वे लोग खुद मुझे कुछ नहीं बता सके। उनकी समझ में उसका सिर-पैर कुछ भी नहीं आया। बस उन सब लोगों को डरा दिया उन्होंने। वह जनरल येपांचिन से मिलने गए थे—वह बाहर गए हुए थे। उन्होंने लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना से मिलने की माँग की। पहले तो उन्होंने उनसे नौकरी के लिए कहा, फिर हम लोगों के बारे में शिकायत करने लगे, मेरे बारे में, मेरे शौहर के बारे में और ख़ासतौर पर तुम्हारे बारे में—उन्होंने बहुत-सी बातें कहीं...हर तरह की बातें।"

"तुम कुछ पता नहीं लगा पाईं न ?" गान्या ने इस तरह काँपते हुए पूछा जैसे उस पर हिस्टीरिया का दौरा पड़ गया हो।

"पता लगाती भी क्या ? उन्हें खुद ठीक से नहीं मालूम था कि वह कह क्या रहे हैं, और शायद उन्होंने मुझे सब कुछ बताया भी नहीं।"

गान्या सिर पकड़कर खिड़की की ओर लपका; वार्या दूसरी खिड़की के पास बैठ गई।

"अग्लाया भी अजीब है," वह अचानक बोली। "उसने मुझे रोककर कहा—'मेहरबानी करके अपने माँ-बाप से मेरी ओर से ख़ासतौर पर सम्मान प्रकट कर दीजिएगा; और आपके पापा से मिलने का मौक़ा तो मुझे यक़ीनन जल्दी ही मिलेगा।' और वह बोल भी बड़ी गम्भीरता से रही थी। बेहद अजीब लग रहा था।..."

"वह ताना तो नहीं कस रही थी न ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं, यही तो अजीब बात है।"

"क्या उसे बड़े मियाँ के बारे में कुछ मालूम है ? क्या ख़्याल है तुम्हारा ?"

"मुझे ज़रा भी शक नहीं है कि उन लोगों के घर में किसी को इसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम है। लेकिन तुम्हारे कहने पर अब मेरे मन में एक विचार उठा—अग्लाया को शायद मालूम है। अकेले उसी को मालूम है, क्योंकि जब उसने पापा से इतनी गम्भीरता से अपना सलाम कहलाया तो उसकी बहनों को भी आश्चर्य हुआ। और ख़ासतौर पर उन्हें क्यों ? अगर उसे मालूम है तो प्रिंस ने ही उसे बताया होगा !"

"यह अटकल लगाना मुश्किल नहीं है कि उसे किसने बताया होगा ! चोर ! यह तो हद हो गई ! हमारे परिवार में चोर है, "परिवार का प्रधान" !"

"उफ़, यह बकवास है !" वार्या गुस्से से बिलकुल बेकाबू होकर चिल्लाई। "बस, नशे की झोंक, और कुछ नहीं है। और यह सब कुछ गढ़ा किसने ? लेबेदेव, प्रिंस—कितने अच्छे निकले वे भी, कमाल के तेज लोग हैं ! मुझे इसकी रत्ती-भर भी परवाह नहीं।"

"बुड्ढा चोर और शराबी है," गान्या कटुता से कहता रहा। "मैं भिखारी हूँ, मेरा बहनोई सूदखोर है...इसी के लिए अग्लाया तड़पेगी ! क्या खूब, मानना पड़ता है !"

"सूदखोर बहनोई तुम्हारा..."

"तुम्हारा मतलब है, मेरा पेट पालता है ? कहो, कहो, डरो नहीं।"

"तुम्हारा पारा इतना क्यों चढ़ा हुआ है ?" वार्या ने अपने आपको सम्भालते हुए कहा। "तुम कुछ नहीं समझते। तुम्हारी हालत बिलकुल स्कूली लड़कों जैसी है। कहीं तुम यह तो नहीं समझ रहे हो कि इस सबसे अग्लाया की नज़रों में तुम्हारी साख गिर जाएगी, क्यों ? तुम नहीं जानते कि वह किस तरह की लड़की है। वह योग्य से योग्य नौजवान को ठुकरा देगी, लेकिन किसी छात्र के साथ किसी दुछत्ती में खुशी से भूखी रहकर ज़िन्दगी काट देगी—यह उसका सपना है ! तुम कभी समझ ही नहीं सकते कि अगर तुम हमारे परिवेश को गर्व और सहनशीलता के साथ स्वीकार कर सकते तो तुम उसकी नज़रों में कितने दिलचस्प हो जाते। प्रिंस ने उसे पकड़ लिया क्योंकि पहले वह उसे बिलकुल नहीं पकड़ता था और, दूसरे इसलिए कि हर आदमी उसे बौड़म समझता है। यही बात कि उसने प्रिंस की वजह से सारे परिवार की नाक में दम कर दिया है अब उसे इतनी अच्छी लगती है। उफ़, तुम लोग कुछ भी नहीं समझते !"

"ख़ैर, यह तो देखा जाएगा कि समझते हैं या नहीं," गान्या ने रहस्यमय ढंग से बुदबुदाकर कहा, "फिर भी मैं बस इतना चाहता हूँ कि उसे बड़े मियाँ के बारे में न मालूम होने पाए। मैं समझता था कि प्रिंस अपना मुँह बन्द रखेगा और उसके बारे में बताएगा नहीं। उसने लेबेदेव का मुँह बन्द कर दिया और जब मैंने उससे जिद करके बताने को कहा तो भी उसने मुझे सारी बात नहीं बताई।"

"तो तुम खुद ही देख सकते हो कि उसके बताए बिना भी सारी बात मालूम तो हो ही गई है। लेकिन तुम्हें अब इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है ? तुम क्या उम्मीद लगाए हुए हो ? और अगर तुम्हारे लिए कुछ उम्मीद बाक़ी भी रह गई है तो उसकी वजह से वह तुम्हें बस एक शहीद समझेगी।"

"अरे, अपने रोमांटिक स्वभाव के बावजूद वह भी तो बदनामी होने से डरेगी। हर चीज़ एक हद तक, और हर आदमी एक हद तक। तुम सब एक जैसी ही हो।"

"अग्लाया डरेगी ?" वार्या तिरस्कार से अपने भाई को देखते हुए भड़क उठी। "तुम्हारी रूह भी कितनी कमीनी है। तुममें से कोई भी दो कौड़ी का नहीं है। हो सकता है कि वह मसखरी और सनकी लड़की हो, लेकिन वह हम सबसे हज़ार गुनी ज़्यादा उदार है।"

"अच्छा, बस, जाने दो, जाने दो, नाराज़ न हो !" गान्या ने आत्म-सन्तोष के भाव से फिर बुदबुदाकर कहा।

"मुझे तो बस माँ के लिए अफ़सोस है," वार्या कहती रही। "मुझे तो डर लगता है कि यह पापावाली बात कहीं उनके कानों तक न पहुँच जाए। मैं तो डरती हूँ कि ज़रूर पहुँच जाएगी।"

"यक़ीनन पहुँच चुकी होगी," गान्या ने कहा।

वार्या ऊपर माँ के पास जाने के लिए उठ खड़ी हुई, लेकिन ठिठककर खड़ी हो गई और उसने बड़े ग़ौर से अपने भाई को देखा।

"उन्हें किसने बताया होगा ?"

"इप्पोलीत ने, मैं समझता हूँ। यहाँ रहने के लिए आते ही उसने माँ को इसका पूरा ब्योरा दे दिया था। उसे इसमें बहुत मज़ा आया होगा।"

"लेकिन उसे कैसे मालूम हुआ, यह तो बताओ मुझे। प्रिंस और लेबेदेव ने किसी को न बताने का फ़ैसला किया था। कोल्या तक को कुछ नहीं मालूम है।"

"तुम्हारा मतलब है इप्पोलीत को ? उसने ख़ुद पता लगा लिया होगा। तुम सोच भी नहीं सकतीं कि वह कमबख़्त कितना चालाक है। कैसा इधर की उधर लगानेवाला है ! कैसी तेज नाक है उसकी ! जो भी चीज़ बुरी है, जो भी चीज़ शर्मनाक है उसका वह सूँघकर पता लगा लेता है। तुम मेरी बात भले ही न मानो, लेकिन मुझे यक़ीन है कि वह अग्लाया को अपनी उँगलियों पर नचाता है ! और अगर अभी तक नहीं नचाया है तो आगे चलकर नचाएगा ! रोगोझिन ने भी उससे सम्पर्क बना लिया है ! मेरी समझ में किसी तरह नहीं आता कि यह सब कुछ प्रिंस को क्यों नहीं दिखाई देता ! और इस वक़्त मुझे टंगड़ी मारकर उसे सचमुच कितना मज़ा आ रहा होगा ! वह मुझे अपना निजी दुश्मन समझता है। मुझे इसका पता बहुत पहले चल चुका है। और किसलिए ? उसे इससे क्या मतलब है ? वह मर तो यों ही रहा है। मेरी समझ में बिलकुल नहीं आता ! लेकिन, मेरी बात याद रखना, मैं उसे चारों खाने चित्त कर दूँगा, टंगड़ी तो मैं उसे मारूँगा, वह मुझे क्या मारेगा ?"

"अगर तुम्हें उससे इतनी ही नफ़रत है तो फिर तुम उसे घेरकर यहाँ लाए ही क्यों ? और क्या वह इस लायक़ है भी कि उसे टंगड़ी मारी जाए ?"

"तुम्हीं ने मुझको सलाह दी थी उसे यहाँ घेर लाने की।"

"मैं समझी थी कि उससे फ़ायदा होगा। और जानते हो, अब वह ख़ुद अग्लाया से प्रेम करने लगा है और उसने उसे ख़त भी लिखे हैं ? उन लोगों ने मुझसे इसके बारे में पूछा।...कहते हैं उसने लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना तक को...भी लिखा है।"

"जहाँ तक इस बात का सवाल है तो वह ख़तरनाक नहीं है," गान्या ने द्वेष से हँसते हुए कहा। "लेकिन सचमुच, दाल में कुछ काला है ज़रूर। बहुत मुमकिन है कि उसे उससे प्यार हो गया हो, क्योंकि वह अभी है तो लड़की ही ! लेकिन...मैं नहीं समझता कि वह बुढ़िया को गुमनाम चिट्ठियाँ लिखेगा। वह इतना द्वेषी, दो कौड़ी का, घमंडी छोकरा है !...मुझे यक़ीन है, बल्कि मुझे

पूरा विश्वास है कि उसने उसकी नज़रों में मुझे तिकड़मी साबित करने की कोशिश की—यहीं से उसने शुरुआत की होगी। मैं मानता हूँ कि बेवक़ूफ़ी मेरी ही थी कि मैंने उसने खुलकर साफ़-साफ़ बातें कीं। मैंने समझा था कि प्रिंस से बदला लेने के लिए उसे मेरे हितों को बढ़ावा देकर खुशी होगी। वह बहुत ही काइयाँ हैवान है ! उफ़, अब मैं उसकी नस-नस पहचान गया ! और उसे इस चोरी का पता अपनी माँ से चला होगा, कप्तान की विधवा से। बड़े मियाँ ने उसी की खातिर यह सब करने की ठानी होगी। अचानक, बिना किसी वजह के, उसने मुझे बताया कि 'जनरल साहब' ने उसकी माँ को चार सौ रूबल देने का वादा किया है, और, यह ख़्याल रखना, बिना किसी वजह के, ज़रा भी किसी संकोच के बिना। ज़ाहिर है, सारी बात फ़ौरन मेरी समझ में आ गई। और एक तरह के खुशी-भरे सन्तोष के साथ मेरी आँखों में आँखें डालकर वह मुझे घूरकर देख रहा था। उसने माँ से भी ज़रूर कहा होगा, सिर्फ़ उनका दिल दुखाकर खुश होने के लिए। आख़िर वह मर क्यों नहीं जाता, यह तो बताओ ! उसने तीन हफ़्ते में मर जाने का वादा किया था, और उल्टे यहाँ मोटा हो गया है ! अब तो उसे खाँसी आना भी बन्द हो गई है। कल रात उसने खुद मुझे बताया था कि दो दिन से खाँसी के साथ उसे ख़ून नहीं आया है।"

"उसे दफ़ा करो !"

"मैं उससे नफ़रत नहीं करता," गान्या ने गर्व से कहा, "मैं उसे तुच्छ समझता हूँ। अच्छा, चलो, मुझे उससे नफ़रत ही सही !" अचानक वह असाधारण क्रोध से चिल्लाया। "और यह बात मैं उसके मुँह पर कह दूँगा, जब वह बिस्तर पर पड़ा मर रहा होगा उस वक़्त भी। तुमने उसकी 'स्वीकारोक्ति' पढ़ी होती—हे भगवान, कैसी नादानी-भरी ढिठाई थी ! वह हूबहू दूसरा लेफ़्टिनेंट पिरोगोव है, पर सबसे बढ़कर ढीठ छोकरा है ! मुझे उसकी पिटाई करके कितनी ख़ुशी होती तभी, सिर्फ़ यह देखने के लिए कि उसे इस पर कितनी हैरत होती। वह अब हर आदमी से इसलिए बदला ले रहा है कि उस वक़्त सफल नहीं हुआ...लेकिन यह है क्या ? फिर चीख़-पुकार ! आख़िर वहाँ हो क्या रहा है ? मैं...मैं इसे क़तई बर्दाश्त नहीं करूँगा ! प्तीत्सिन," उसने अपने बहनोई को पुकारा जो उसी वक़्त कमरे में आया था, "क्या हो रहा है ? आख़िर हमारा अन्जाम क्या होगा ? यह तो...यह तो।..."

लेकिन शोर बड़ी तेजी से पास आता जा रहा था; अचानक दरवाज़ा धड़ से खुला और बूढ़े ईवोल्गिन भी गुस्से से लाल, आपे से बाहर होकर प्तीत्सिन पर टूट पड़े। बड़े मियाँ के पीछे-पीछे उनकी पत्नी नीना अलेक्सान्द्रोव्ना और कोल्या भी कमरे में आए और उन सबके पीछे इप्पोलीत।

2

इप्पोलीत पाँच दिन पहले प्तीत्सिन के यहाँ रहने आ गया था। यह सब कुछ किसी तरह बड़े स्वाभाविक ढंग से हो गया था, कोई विशेष शब्द कहे बिना और उसके और प्रिंस के बीच किसी मतभेद के बिना; झगड़ना तो दूर रहा, बाहर से देखने में तो वे बिलकुल दोस्तों की तरह रहे। गान्या, जो प्रिंस के जन्मदिन की पार्टी में उससे इतना नाराज़ था, खुद उससे मिलने आया था, हालाँकि तीन दिन बाद, शायद अचानक मन में कोई विचार उठने की वजह से। किसी अज्ञात कारण से रोगोझिन भी बीमार को देखने आने लगा था। शुरू में तो प्रिंस का विचार था कि अगर वह 'बेचारा लड़का' कहीं और जाकर रहने लगे तो बेहतर होगा। लेकिन चलते समय भी इप्पोलीत ने कहा कि वह रहने के लिए प्तीत्सिन के यहाँ जा रहा है, जो "इतना नेक है कि उसे रहने की जगह दे रहा

है" और मानो जान-बूझकर, उसने कभी यह नहीं कहा कि वह गान्या के साथ रहने जा रहा है, हालाँकि यह आग्रह गान्या का ही था कि उसे घर में रखा जाए। गान्या का ध्यान इस बात की ओर गया था, और बात उसके दिल में चुभ गई।

उसने बहन को ठीक ही बताया था कि इप्पोलीत की हालत सुधरती गई थी। इप्पोलीत की तबियत दरअसल पहले से कुछ बेहतर थी, जैसा कि पहली नज़र में ही दिखाई पड़ जाता था। वह बाक़ी सब लोगों के पीछे बड़े इतमीनान से कमरे में आया; उसके चेहरे पर दुष्टता-भरी और व्यंगपूर्ण मुस्कराहट थी। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना बहुत डरी हुई-सी अन्दर आईं। (पिछले छह महीनों में वह बहुत बदल गई थीं और पहले से बहुत दुबली लग रही थीं; बेटी की शादी करके उसके घर आकर रहने लगने के बाद बाहर से देखने में ऐसा मालूम होता था कि उन्होंने अपने बच्चों के मामलात में दखल देना अब बिलकुल छोड़ दिया था) कोल्या चिन्तित और कुछ परेशान-सा था; "जनरल साहब के पागलपन में", जैसा कि वह उसे कहता था, बहुत कुछ ऐसा था जो उसकी समझ में नहीं आता था, क्योंकि घर में जो यह नया बखेड़ा खड़ा हो गया था उसके असली कारणों का उसे कुछ पता ही नहीं था। लेकिन इतना तो वह देखता ही था कि उसके बाप हर जगह और हर वक़्त किसी से भी झगड़ पड़ते थे और अचानक इतना बदल गए थे कि वह पहलेवाले आदमी ही नहीं लगते थे। वह इस बात की वजह से भी परेशान था कि पिछले तीन दिन से बड़े मियाँ ने शराब पीना बिलकुल छोड़ रखा था। वह जानता था कि लेबेदेव से और प्रिंस से उसके बाप की खटपट हो गई थी बल्कि झगड़ा तक हो गया था। कोल्या अभी वोद्का की एक बोतल लेकर आया था जो उसने अपने पैसों से खरीदी थी।

"सचमुच, माँ," उसने ऊपर नीना अलेक्सान्द्रोव्ना को यक़ीन दिलाया था, "सचमुच, बेहतर यही होगा कि उन्हें पीने दिया जाए। तीन दिन से उन्होंने एक बूँद भी नहीं चखी है। बहुत ही दुःखी होंगे वह। मैं जेल में भी उनके लिए शराब ले जाता था।"

जनरल साहब ने दरवाज़ा पूरा खोल दिया और गुस्से से काँपते हुए चौखट पर ही ठिठककर खड़े हो गए।

"जनाब," उन्होंने गरजकर प्तीत्सिन से कहा, "अगर आपने यही ठान लिया है कि एक इज़्ज़तदार बूढ़े को, खुद अपने बाप को, जनाब, या कम से कम अपनी बीवी के बाप को एक दुधमुँहे छोकरे और अधर्मी की खातिर कुर्बान कर देंगे—एक ऐसे आदमी को, जनाब, जिसने सम्राट की जी-जान से सेवा की है—तो मैं इसी क्षण से फिर कभी आपके घर में क़दम नहीं रखूँगा। दो में से एक को चुन लीजिए, जनाब ! इसी वक़्त चुन लीजिए—या मैं या यह—यह पेंच, साहब। जी हाँ, साहब, यह पेंच ! शब्द 'पेंच' तो मेरे मुँह से यों ही अनजाने में निकल गया, लेकिन यह है बिलकुल पेंच ही, साहब ! क्योंकि यह मेरी आत्मा को एक पेंच की तरह कुरेदता है और किसी अदब-लिहाज़ के बिना...पेंच की तरह !"

"डाट खोलने का पेंच तो नहीं ?" इप्पोलीत बीच में बोल पड़ा।

"जी नहीं, डाट खोलने का पेंच नहीं, क्योंकि तेरे सामने एक जनरल खड़ा है, बोतल नहीं। मेरे पास तमगे हैं, मेडल...और तेरे पास ख़ाक है ! या यह या मैं, साहब ! फ़ैसला कर लीजिए, साहब, इसी दम !" वह बेहद गुस्से से फिर प्तीत्सिन पर दहाड़े।

उसी वक़्त कोल्या उनके लिए एक कुर्सी ले आया, और वह निढ़ाल-से होकर उस पर धम से बैठ गए।

"मैं समझता हूँ," प्तीत्सिन स्तम्भित होकर बुदबुदाया, "आप, बेहतर होगा...मेरा मतलब

है...थोड़ी देर सो लीजिए।"

"इनकी यह मजाल कि हम लोगों को धमकाते हैं !" गान्या ने दबी जबान से अपनी बहन से कहा।

"सो लूँ, सुना !" जनरल साहब चिल्ला पड़े। "मैं नशे में तो हूँ नहीं, साहब, यह तो सरासर अपमान है," वह फिर उठकर कहते रहे,—"मैं देखता हूँ, यहाँ सब कुछ मेरे ख़िलाफ़ है—हर शख़्स और हर चीज। बस बहुत हो गया ! मैं जाता हूँ।...लेकिन इतना मैं आपको बता दूँ, साहब, इतना मैं आपको बता दूँ..."

उन्हें अपनी बात पूरी नहीं करने दी गई; उन्हें फिर बिठा दिया गया और वे लोग उनसे शान्त रहने की प्रार्थना करने लगे। गान्या गुस्से से बिफरा हुआ एक कोने में चला गया। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना काँप रही थीं और रो रही थीं।

"अरे, मैंने इनके साथ क्या किया ? यह शिकायत किस बात की कर रहे हैं ?" इप्पोलीत खीसें निकालकर चिल्लाया।

"तुम सोचते हो कि कुछ नहीं किया है ?" नीना अलेक्सान्द्रोव्ना अचानक बोलीं। "कम से कम तुम्हें तो एक बूढ़े आदमी को सताने पर ख़ासतौर पर शर्मिन्दा होना चाहिए। कितनी बेरहमी की बात है,...और ऊपर से तुम्हारी जैसी हालत में।"

"पहली बात तो यह, मैडम, कि मेरी हालत से आपका क्या मतलब है ? मैं आपकी बड़ी इज़्ज़त करता हूँ, मैडम, ख़ासतौर पर आपकी, निजी तौर पर आपकी, लेकिन..."

"यह बिलकुल पेंच है !" जनरल साहब चिल्लाए। "यह मेरे दिल को और मेरी आत्मा को बेधता रहता है ! यह चाहता है कि मैं ईश्वर पर विश्वास रखना छोड़ दूँ ! इतना मैं बता दूँ, दूधमुँहे, कि तुम पैदा भी नहीं हुए थे जब मुझ पर इन सारे सम्मानों की बौछार हो चुकी थी। और तुम, तुम दूसरों से जलनेवाले छोटे-से कीड़े हो, वह भी जिसे दो टुकड़ों में काट दिया गया हो, खाँसनेवाला कीड़ा, जो...जलन और नास्तिकता की वजह से मर रहा है।...गव्रीला तुम्हें यहाँ किसलिए लाया ? हर शख़्स मेरे ख़िलाफ़ है...अजनबियों से लेकर खुद मेरे बेटे तक !"

"मेहरबानी करके बन्द कीजिए यह दुःखान्त नाटक !" गान्या ने चिल्लाकर कहा। "कहीं अच्छा हो अगर आप सारे शहर में हमारी बेइज्जती करवाते न फिरें !"

"तुम्हारी बेइज़्ज़ती मैंने करवाई, दूध-पीते छोकरे ! तुम्हारी ? अरे, तुम्हारी तो इससे इज़्ज़त बढ़ती है कि मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुम्हारी बेइज़्ज़ती करवाई, क्या खूब !"

वह उछलकर खड़े हो गए, और वे लोग उन्हें और ज़्यादा देर काबू में न रख सके; लेकिन गान्या भी बिलकुल आपे से बाहर हो गया।

"देखो इन्हें, यह भी इज़्ज़त की बात कर रहे हैं !" उसने द्वेष से चिल्लाकर कहा।

"क्या कहा ?" जनरल साहब का रंग पीला पड़ गया और वह उसकी ओर एक क़दम बढ़कर गरजे।

"मैं यही कह रहा हूँ," गान्या अचानक बरस पड़ा, "कि मेरे मुँह खोलते ही बस..."

वह अपनी बात पूरी नहीं कर पाया। दोनों स्तब्ध-से आमने-सामने खड़े थे, ख़ासतौर पर गान्या।

"गान्या, तुम कह क्या रहे हो ?" नीना अलेक्सान्द्रोव्ना अपने बेटे को रोकने के लिए आगे झपटते हुए चिल्लाईं।

"क्या बकवास मचा रखी है !" वार्या गुस्से से कड़ककर बोली। "शान्त हो जाओ, माँ," उसने

माँ को पकड़ते हुए कहा।

"बस माँ का ख़्याल करके मैं इन्हें छोड़े दे रहा हूँ," गान्या दुःखी होकर बोला।

"बोलो, बोलो !" जनरल साहब गुस्से से पागल होकर दहाड़े। "बोलो, नहीं तो मैं तुम्हें बददुआ दे दूँगा...जो कहना हो कहो !"

"आप कहीं यह तो नहीं समझ रहे हैं कि मैं आपकी बददुआ से डरता हूँ ? अगर आप आठ दिन से पागलों की तरह घूम रहे हैं तो इसमें कसूर किसका है ? जी हाँ, आठ दिन से। देखिए, मैंने गिन रखा है।...ख़बरदार, मुझे ज़्यादा ताव न दिलाइए–मैं सब कुछ बता दूँगा।...कल आप येपांचिन-परिवार के यहाँ मरने क्यों गए थे ? आप बूढ़े हुए, सफ़ेद बालोंवाले, बाल-बच्चोंवाले ! अच्छे बाप हैं आप भी !"

"चुप रहो, गान्या !" कोल्या चिल्लाया। "चुप रहो, बेवक़ूफ़।"

"अरे, मैंने ऐसी बात ही कौन-सी कह दी उनसे जो बुरी लग गई, यह मैं जानना चाहता हूँ," इप्पोलीत अपना पुराना राग अलापता रहा, लेकिन अब भी उसी व्यंग-भरे स्वर में। "यह मुझे पेंच क्यों कहते हैं ? आपने सुना न ? मेरी जान के पीछे तो यह खुद पड़े हुए हैं। मेरे पास आकर किसी कप्तान येरोपेगोव के बारे में बातें करने लगे। मुझे आपका साथ बिलकुल नहीं चाहिए, जनरल साहब। मैं हमेशा उससे बचने की कोशिश करता रहा हूँ, जैसा कि आप खुद अच्छी तरह जानते हैं। मुझे क्या मतलब कप्तान येरोपेगोव से, आप ही बताइए ? मैं यहाँ कप्तान येरोपेगोव की खातिर तो आया नहीं हूँ। मैंने बस इतना कह दिया था कि शायद कभी कोई कप्तान येरोपेगोव था ही नहीं। बस, यह उसको लेकर तूफ़ान मचाने लगे।"

"बेशक, इस तरह का कोई आदमी कभी था ही नहीं" गान्या ने झटके के साथ कहा।

लेकिन जनरल साहब यहीं स्तम्भित-से खड़े रहे, और भौचक्के होकर चारों ओर देखते रहे। अपने बेटे की बिलकुल दो-टूक बात से वह अवाक् रह गए थे और पहले एक क्षण तक तो उनकी समझ ही में नहीं आया कि कहा क्या। और सिर्फ़ गान्या की बात पर जब इप्पोलीत ठहाका मारकर हँस पड़ा और चिल्लाकर बोला, "लीजिए, सुन लिया ? खुद आपका बेटा भी कहता है कि कप्तान येरोपेगोव जैसा कोई आदमी कभी था ही नहीं," तब बड़े मियाँ बिलकुल बदहवास होकर बुड़बुड़ाए–

"कपितोन येरोपेगोव, कप्तान नहीं...कपितोन...रिटायर्ड लेफ़्टिनेंट-कर्नल हैं...येरोपेगोव...कपितोन..."

"कपितोन भी कोई नहीं था !" गान्या बिलकुल खौलकर चिल्लाया।

"क्यों...क्यों नहीं ?" जनरल साहब ने बुड़बुड़ाकर कहा और उसका चेहरा लाल हो गया।

"बस, बन्द कीजिए, बहुत हो गया," प्तीत्सिन और वार्या ने उन्हें शान्त करने की कोशिश की।

"चुप रहो, गान्या !" कोल्या फिर चिल्लाया।

लेकिन ऐसा लगा कि जनरल साहब की तरफ़ से उन लोगों के हस्तक्षेप करने से उनकी स्मरण-शक्ति लौट आई।

"क्या मतलब तुम्हारा ? थे कैसे नहीं वह ?" वह धमकी-भरे स्वर में अपने बेटे पर चिल्लाए।

"क्योंकि वह नहीं थे। वह नहीं थे...बस। वह हो ही नहीं सकते थे ! बस, यही समझ लीजिए ! रहने दीजिए, मैं आपसे कहे देता हूँ।"

"और यह है मेरा बेटा...मेरा अपना ख़ून, जिसे मैंने...हे भगवान ! येरोपेगोव...येरोश्का येरोपेगोव कोई थे ही नहीं !"

"पकड़े गए ! अभी येरोश्का है और अभी हो जाएगा...कपितोश्का !" इप्पोलीत ने टोका।

"कपितोश्का, साहब, बिलकुल कपितोश्का, येरोश्का नहीं ! कपितोन...[illegible] अलेक्सेयेविच...रिटायर हो चुके हैं...मरीया से शादी की थी...मरीया पेत्रोव्ना सु...सु...मेरे बहुत [illegible] दोस्त थे...साथी थे...सुतूगोवा...मरीया सुतूगोवा...तब से जानता हूँ जब वह मामूली सिपाही थे। उनके लिए अपना ख़ून बहा चुका हूँ...झपटकर उनके सामने आ गया था...मारे गए। क्या ख़ूब, कपितोश्का येरोपेगोव नहीं थे ! कभी थे ही नहीं !"

जनरल साहब जोश में आकर चिल्ला रहे थे, लेकिन जिस तरह वह चिल्ला रहे थे उससे लगता था कि वह बात तो एक चीज़ की करते थे और उनके दिमाग़ में होती थी कोई दूसरी ही चीज। यह सच है कि कोई दूसरा वक़्त होता तो वह कपितोन येरोपेगोव के न होने की बात से भी बड़ा अपमान सह लेने को तैयार हो जाते। वह चिल्लाते, शोर मचाते, गुस्से से बेकाबू हो जाते, लेकिन आख़िर में ऊपर जाकर सो जाते। लेकिन इस वक़्त—मनुष्य का स्वभाव भी कैसी अनबूझ पहेली है—हुआ यह कि येरोपेगोव के अस्तित्व के बारे में शंका जैसे अपमान से उनके धैर्य का बाँध टूट गया। बड़े मियाँ का चेहरा लाल हो गया और वह दोनों हाथ उठाकर चिल्लाए—"बस, बहुत हो चुका ! लानत हो सब पर...मैं अब नहीं टिकने का इस घर में ! कोल्या, मेरा बैग ले आओ...मैं जा रहा हूँ...चला जाऊँगा !"

गुस्से से आगबबूला वह जल्दी से बाहर निकल गए। उनकी पत्नी, कोल्या और प्तीत्सिन उनके पीछे भागे।

"देखा, क्या कर डाला तुमने !" वार्या ने भाई से कहा। "अब वह फिर शायद वहीं जा धमकेंगे ! उफ़, कैसी शर्म की बात है, कैसी शर्म की बात !"

"चोरी तो नहीं करनी चाहिए !" गान्या गुस्से के मारे लगभग रुँधे हुए गले से चिल्लाया और उसकी चमकती हुई आँखें जाकर इप्पोलीत की नज़रों से मिलीं। वह गुस्से के मारे काँप-सा रहा था। "और आपको, जनाब," वह चिल्लाकर बोला, "याद रखना चाहिए कि आप अपने घर में नहीं हैं और...हाँ...और आप यहाँ मेहमान होने का फ़ायदा उठा रहे हैं, आपको एक बूढ़े आदमी को, जिसका दिमाग़ ठिकाने नहीं रह गया है, इतना तंग नहीं करना चाहिए।"

इप्पोलीत भी ऐसा लगा कि ज़ोर से चौंक पड़ा, लेकिन जल्दी ही उसने अपने आपको सम्भाल लिया।

"मैं आपकी यह बात मानने को तैयार नहीं हूँ कि आपके बाप का दिमाग़ ठिकाने नहीं रह गया है," उसने शान्त भाव से उत्तर दिया। "बल्कि उल्टे मुझे तो ऐसा लगता है कि इधर कुछ दिनों से उनका दिमाग़ जितना ठिकाने है उतना पहले कभी था ही नहीं, क़सम से मेरी बात पर यक़ीन नहीं आता ? वह इतने सावधान हो गए हैं, छोटी से छोटी बात का इतना ध्यान रखने लगे हैं, हर शब्द तौलते हैं, हर बात की तह में जाने की कोशिश करते हैं।...उन्होंने मुझसे उस कपितोन की चर्चा एक ख़ास उद्देश्य से शुरू की थी। ज़रा सोचिए, वह मुझे उस बात की ओर ले जाना चाहते थे।..."

"मेरी बला से वह आपको किस बात की ओर ले जाना चाहते थे !" गान्या चीख़कर बोला। "आप मुझसे ज़्यादा बनने की कोशिश न कीजिए। अगर आपको भी इसकी असली वजह मालूम है कि बड़े मियाँ की ऐसी हालत क्यों है (और आप पिछले पाँच दिन से ऐसी मेहनत करके टोह ले रहे हैं कि मुझे यक़ीन है कि आपको मालूम ज़रूर होगा), तो आपको उन...उन वेचारे को इतना चिढ़ाना नहीं चाहिए था और मामले को इतना बढ़ा-चढ़ाकर पेश करके मेरी माँ को सताना नहीं चाहिए था, क्योंकि यह सारा मामला सरासर बकवास है, नशे की झोंक के अलावा और कुछ नहीं।

बहरहाल, कुछ साबित तो हुआ नहीं है, और मुझे इसकी ठेंगा परवाह नहीं...लेकिन आप तो ताना कसे और सुराग़ लगाए बिना रह ही नहीं सकते क्योंकि आप...आप...हैं"

"पेंच," इप्पोलीत ने खींसे निकालकर कहा।

"क्योंकि आप दो कौड़ी के भी आदमी नहीं हैं। लोगों को आधे घंटे तक सताते रहे, यह सोचकर कि बिना भरे हुए पिस्तौल से अपने गोली मार लेने की धमकी देकर आप लोगों को डरा देंगे और—शर्म की बात है !—बेवक़ूफ़ खुद आप बने...बड़े आए आत्म-हत्या करनेवाले, बिस की गाँठ।...मैंने आपको अपने यहाँ रखा, दो दिन में मांस चढ़ आया, खाँसी बन्द हो गई और उसका बदला इस तरह चुका रहे हैं आप।"

"मैं आपसे बस दो शब्द कह दूँ...मैं आपके घर में नहीं बल्कि वर्वारा अर्दालिओनोव्ना के घर में हूँ। आपने मुझे मेहमान बिलकुल नहीं रखा है, बल्कि आप खुद प्तीत्सिन साहब की मेहमानदारी का मज़ा ले रहे हैं। चार दिन पहले मैंने अपनी माँ से कहा था कि मेरे लिए पाव्लोव्स्क में फ़्लैट ढूँढ़ दें और खुद आकर यहाँ रहने लगें, क्योंकि यहाँ सचमुच मेरी तबियत ज़्यादा ठीक रहती है, हालाँकि मैं मोटा बिलकुल नहीं हुआ हूँ और खाँसी मुझे अब भी आती है। मेरी माँ ने कल शाम मुझे बताया कि कमरे तैयार हैं, और, अपनी तरफ़ से मैं आपको इतना बता दूँ कि आपकी माँ और बहन की मेहरबानी के लिए उनका शुक्रिया अदा करने के बाद मैं आज ही वहाँ चला जाऊँगा, जैसा कि मैंने कल रात ही फ़ैसला कर लिया था। मुझे अफ़सोस है कि मैंने आपकी बात बीच में काट दी। मेरा ख़्याल है कि आप और भी बहुत कुछ कहना चाहते थे।"

"अच्छा, अगर ऐसी बात है..." गान्या काँपते हुए बोला।

"अगर ऐसी बात है तो मुझे बैठ जाने की इजाज़त दीजिए," शान्त भाव से उस कुर्सी पर बैठते हुए जिस पर पहले जनरल साहब बैठे हुए थे इप्पोलीत ने इतना और जोड़ दिया। "कम से कम मैं बीमार तो हूँ ही। अच्छा, अब मैं आपकी बात सुनने के लिए तैयार हूँ, ख़ासतौर पर इसलिए कि यह हमारी आख़िरी बातचीत होगी, और, कौन जाने, शायद मुलाक़ात भी आख़िरी ही हो।"

गान्या को अचानक अपने आप पर शर्म आई।

"आप भरोसा रखिए मैं अपने आपको इतना नहीं गिराऊँगा कि आपसे हिसाब चुकाने की कोशिश करूँ," वह बोला। "और अगर आप..."

"आपको मुझसे इतने ऊँचे से बात करने की कोई ज़रूरत नहीं है," इप्पोलीत ने उसकी बात काट दी। "जहाँ तक मेरा सवाल है, मैंने यहाँ आने के पहले ही दिन फ़ैसला कर लिया था कि एक-दूसरे से विदा होने से पहले मैं आपको बिलकुल साफ़-साफ़ यह बता देने का मौक़ा नहीं चूकूँगा कि आपके बारे में मेरी क्या राय है। अब मैं वही करनेवाला हूँ...ज़ाहिर है, आप अपनी बात पूरी कर लें उसके बाद।"

"और मैं आपसे कहता हूँ कि आप यहाँ से निकल जाइए।"

"मैं समझता हूँ कि बेहतर यह होगा कि आप बोलें, वरना आपको अफ़सोस रहेगा कि आप जो कुछ कहना चाहते थे वह सब नहीं कह पाए।"

"रहने दो, इप्पोलीत," वार्या ने कहा। "यह सब कुछ बेहद शर्मनाक है। मेरे ऊपर इतना एहसान करो कि अब और कुछ न कहो।"

"ख़ैर, बस औरत की बात रखने के लिए," इप्पोलीत ने उठते हुए हँसकर कहा। "जैसा आपका हुक्म, आपकी खातिर, वर्वारा अर्दालिओनोव्ना, मैं अपनी बात को छोटा कर देने को तैयार हूँ, लेकिन बस छोटा करने को, क्योंकि आपके भाई और मेरे बीच किसी तरह की सुलह-सफ़ाई

हो जाना ज़रूरी हो गया है, और सारी ग़लत-फहमियाँ दूर करने से पहले यहाँ से चले जाने की बात मैं सोच भी नहीं सकता।"

"आप बस इधर से उधर लगानेवाले हैं," गान्या चिल्लाकर बोला। "इसीलिए आप सारे किस्से सुनाए बिना यहाँ से टलेंगे नहीं।"

"देखिए न," इप्पोलीत ने शान्त भाव से कहा, "आप अपने आप पर काबू रख ही नहीं सकते। इस वक़्त खुलकर न बोलने का सचमुच अफ़सोस होगा। एक बार फिर, आप जो चाहे कहें। मैं इन्तज़ार कर सकता हूँ।"

गान्या कुछ नहीं बोला और बड़े तिरस्कार से उसे देखता रहा।

"नहीं बोलेंगे...मुझे यह दिखाना चाहते हैं कि आप अपने इरादे के कितने पक्के हैं...ख़ैर, जैसी आपकी मर्जी। रही मेरी बात, तो मुझे तो कुछ कहना है वह मैं थोड़े से थोड़े शब्दों में कहूँगा। आज दो-तीन बार मुझे आपकी मेहमानदारी का बेजा फ़ायदा उठाने के लिए धिक्कारा गया है। यह सरासर बेइन्साफ़ी है। मुझे अपने यहाँ रहने के लिए बुलाकर आप मुझे जाल में फँसाना चाहते थे। आप समझते थे कि शायद मैं प्रिंस से बदला लेना चाहूँ। इसके अलावा आपने यह भी सुन रखा था कि अग्लाया इवानोव्ना ने मुझसे हमदर्दी दिखाई थी और मेरी 'स्वीकारोक्ति' पढ़ी थी। किसी वजह से यह सोचकर कि आपकी मुराद पूरी करने के लिए मैं लपक पड़ूँगा, आपने यक़ीनन यह उम्मीद बाँधी थी कि मैं शायद आपकी मदद करूँगा। मैं और ज़्यादा ब्योरे की बातों में नहीं जाना चाहता ! और न ही मैंने यह उम्मीद लगा रखी है कि आप किसी बात को मानें या किसी बात की पुष्टि करें। आपको आपके अन्तःकरण के हवाले करके मैं सन्तुष्ट हूँ और इस बात पर कि हम अब एक-दूसरे को बिल्कुल अच्छी तरह समझते हैं।"

"लेकिन आप तिल का ताड़ बना रहे हैं !" वार्या ने चिल्लाकर कहा।

"मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि यह इधर की उधर लगानेवाला और छिछोरा है," गान्या ने कहा।

"मेहरबानी करके, वर्वारा अर्दालिओनोव्ना, आप मुझे अपनी बात पूरी कर लेने दीजिए। प्रिंस से न तो मैं प्यार कर सकता हूँ और न ही उनकी इज़्ज़त ही कर सकता हूँ। लेकिन वह सचमुच बहुत ही नेक आदमी हैं, हालाँकि, कुछ हद तक...हास्यास्पद भी हैं। लेकिन कोई भी वजह नहीं है कि मैं उनसे नफ़रत करूँ। जब आपके भाई ने मुझे प्रिंस के ख़िलाफ़ भड़काने की कोशिश की तब मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया कि मेरे मन में क्या है। मुझे उम्मीद थी कि अन्त से पहले मैं उन पर जी खोलकर हँसूँगा। मैं जानता था कि आपके भाई मेरे सामने सारी बातें उगल देंगे, लेकिन होगा यही कि मारा घुटना फूटी आँख और हुआ भी यही।...अब मैं उन पर तरस खाने को बिलकुल तैयार हूँ, लेकिन सिर्फ़ इसलिए, वर्वारा अर्दालिओनोव्ना, कि मेरे दिल में आपके लिए इज्जत है। लेकिन यह समझा चुकने के बाद कि मैं इतनी आसानी से किसी के कहे में नहीं आ जाता, मैं आपको यह भी समझाना चाहता हूँ कि मैं आपके भाई को बेवक़ूफ़ बनाने के लिए इतना वेताब क्यों था। मैंने ऐसा नफ़रत की वजह से किया था, यह समझ लीजिए। मैं खुले-आम इस वात को मानता हूँ। मरते हुए (क्योंकि आपके यह यक़ीन दिलाने के बावजूद कि मेरा वजन वढ़ गया है, मैं मर तो जाऊँगा ही)—मरते हुए मैं यह महसूस करता हूँ कि उन असंख्य प्रकार के लोगों के जिन्होंने ज़िन्दगी-भर मेरा पीछा किया है, जिनसे मैं अपनी ज़िन्दगी-भर नफ़रत करता रहा हूँ, और जिनकी आपके माननीय भाई ऐसी जीती-जागती मिसाल है, उनके कम से कम एक प्रतिनिधि को बेवक़ूफ़ बनाने में अगर मैं सफल हो जाऊँ तो मैं अपने मन में कहीं अधिक शान्ति लेकर स्वर्ग जा सकूँगा।

मैं आपसे नफ़रत सिर्फ़ इसलिए करता हूँ, गव्रीला अर्दालिओनोविच—आपको यह बात शायद कुछ अजीब लगे—सिर्फ़ इसलिए कि आप सबसे ढीठ, सबसे आत्म-सन्तुष्ट, सबसे घटिया और गन्दे क़िस्म के मामूलीपन के नमूने, उसकी जीती-जागती प्रतिमा, उसका साकार रूप हैं ! आप उस मामूली आदमी जैसे हैं जो हमेशा अपने आपको महत्त्वपूर्ण समझता है, जो देवताओं की मूर्तियों की तरह शान्त रहता है ! आप मामूली लोगों में भी सबसे मामूली हैं। आपके दिमाग़ में या आपके दिल में कभी आपका अपना छोटे से छोटा विचार भी नहीं उपज सकता। लेकिन आपमें बला की ईर्ष्या है; आपको पक्का विश्वास है कि आप इस धरती पर सबसे बड़े जीनियस हैं, लेकिन, तमाम बातों के बावजूद, आपके घोर निराशा के क्षणों में कभी-कभी आपके मन में भी शंका पैदा होती है और आप द्वेष और ईर्ष्या से भर उठते हैं। अरे, आपके क्षितिज पर कुछ काले बादल अभी तक मँडरा रहे हैं; जब आप बिलकुल मूढ़ हो जाएँगे तब वे छँट जाएँगे, और वह दिन बहुत दूर नहीं है। फिर भी, मुझे यह कहते हुए बड़ी ख़ुशी होती है कि आपके सामने बहुत लम्बा और कठिनाइयों से भरा मार्ग है, जो बहुत सुखकर नहीं है। सबसे पहले तो मैं आपको अभी से यह बता दूँ कि एक ख़ास शख़्स कभी आपके हाथ नहीं लगेगा।..."

"सचमुच, यह तो हद ही हो गई !" वार्या चिल्लाकर बोली। "तुम्हारा यह भाषण कभी ख़त्म भी होगा, द्वेषी कहीं का ?"

गान्या का रंग पीला पड़ गया, वह काँप रहा था; वह बोला कुछ नहीं। इप्पोलीत बोलते-बोलते रुक गया, उसने गान्या को घूरकर और मज़ा लेते हुए देखा, फिर अपनी घूरती हुई नज़रें वार्या की ओर मोड़ीं, दाँत खोलकर हँसा, और एक शब्द भी और कहे बिना बाहर चला गया।

गान्या अगर अपने दुर्भाग्य की और सफलता ने मिलने की शिकायत करता तो सर्वथा उचित ही होता। इधर कुछ समय से वार्या उससे बोल ही नहीं पा रही थी, और जब वह उसके पास से होकर गुजर रहा था तो उसने उसकी ओर नज़र उठाकर देखा भी नहीं था; आख़िरकार वह उसकी ओर पीठ करके खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। वार्या 'दो शिकार' वाली कहावत के बारे में सोच रही थी। ऊपर फिर शोर मचने लगा।

"क्या तुम जा रही हो ?" गान्या ने उसके अपनी जगह से उठने की आवाज़ सुनकर उसकी ओर मुड़कर देखा। "एक मिनट रुको। यह देखती जाओ।"

उसने उसके पास जाकर मेज़ पर काग़ज़ का एक तह किया हुआ टुकड़ा फेंक दिया।

"भगवान भला करे !" वार्या ने अपने हाथ एक-दूसरे से कसकर पकड़ते हुए कहा।

उस पर्चे में कुल सात लाइनें लिखी थीं—"गव्रीला अर्दालिओनोविच ! मेरे प्रति आपकी मित्रतापूर्ण भावनाओं का पूरा विश्वास होने के कारण मैंने आपसे एक ऐसे मामले के बारे में सलाह लेने का फ़ैसला किया है जो मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। मैं कल सबेरे ठीक सात बजे आपसे हरी बेंच पर मिलना चाहती हूँ। वह हमारे घर से बहुत दूर नहीं है। अपनी बहन को भी ज़रूर अपने साथ लेते आइएगा, उन्हें वह जगह अच्छी तरह मालूम है। अ. ये."

"अब कोई उसके बारे में क्या सोच सकता है ?" वार्या ने हैरत से अपने हाथ फैलाकर कहा।

उस क्षण गान्या को इतराने की इच्छा कितनी ही कम क्यों न रही हो, लेकिन वह अपने विजयोल्लास को व्यक्त किए बिना न रह सका, ख़ासतौर पर इप्पोलीत की अपमानजनक भविष्यवाणियों के बाद। उसका चेहरा आत्म-सन्तोष की मुस्कराहट से खिल उठा, और वार्या के चेहरे पर भी उल्लास की चमक आ गई।

"और सो भी ठीक उस दिन जिस दिन उसकी मँगनी का एलान किया जानेवाला है ! अब

इसके बाद कोई उसके बारे में क्या सोच सकता है ?"

"कुछ तुम्हें अन्दाजा है कि कल वह किस चीज़ के बारे में बातें करना चाहती है ?" गान्या ने पूछा।

"अरे, उसका कोई इतना महत्त्व नहीं है। असली बात यह है कि वह छह महीने बाद पहली बार तुमसे मिलना चाहती है। अब मेरी बात सुनो, गान्या : पहले चाहे जो कुछ हो चुका हो, और आगे चलकर चाहे जो नतीजा निकले, लेकिन इतना याद रखना कि यह महत्त्वपूर्ण है ! यह बेहद महत्त्वपूर्ण है ! मेहरबानी करके अब फिर बहुत अकड़ न दिखाना, मौक़ा फिर न चूक जाना, और यह ध्यान रखना कि डरना भी नहीं। यह तो उसकी समझ में ज़रूर आ ही गया होगा कि पिछले छह महीने से उनके यहाँ जाने में मैं अपना समय क्यों नष्ट करती रही हूँ, ठीक है न ? और क्या तुम यक़ीन करोगे, आज मुझसे इसके बारे में उसने एक शब्द भी नहीं कहा। इशारा तक नहीं किया ! जानते हो, मुझे उनके घर में लगभग चोरी से जाना पड़ा। बुढ़िया को पता नहीं चला कि मैं वहाँ हूँ वरना बाहर निकलवा देती। तुम्हारी ख़ातिर मैंने यह जोखिम मोल लिया, हर हालत में असलियत का पता लगाने के लिए।..."

ऊपर से फिर शोर-गुल और चीख़-पुकार सुनाई दी; कई आदमी सीढ़ियाँ उतरकर नीचे आ रहे थे।

"अब हमें किसी भी हालत में इसे रोकना चाहिए !" वार्या ने डरकर और बौखलाकर कहा। "रत्ती-भर भी कोई ऐसी बात नहीं होनी चाहिए जिसकी चर्चा हो ! जाओ, जाकर पापा को रोक लो !"

लेकिन परिवार के प्रधान तो सड़क पर पहुँच चुके थे। कोल्या उनके पीछे-पीछे उनका थैला घसीटे लिए जा रहा था। नीना अलेक्सान्द्रोव्ना बरसाती में खड़ी रो रही थीं। वह भागकर उनके पीछे जाना चाहती थीं लेकिन प्तीत्सिन ने उन्हें रोक लिया।

"ऐसा करके आप उन्हें और बढ़ावा दे रही हैं," उसने उनसे कहा। "आख़िर उनके पास जाने को ठिकाना ही कौन-सा है ? अभी आधे घंटे में उन्हें वापस ले आएँगे। मैंने इसके बारे में कोल्या से बात कर ली है। थोड़ी देर बेवक़ूफ़ी का नाटक कर लेने दीजिए।"

"आप रोब किस पर डालने की कोशिश कर रहे हैं ?" गान्या खिड़की में से चिल्लाया। "आख़िर आप जा कहाँ रहे हैं ? कहीं कोई ठिकाना भी है ?"

"लौट आइए, पापा !" वार्या ने चिल्लाकर कहा। "पास-पड़ोस के लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे !"

जनरल साहब रुके, पीछे मुड़े और अपना हाथ फैलाकर ऊँचे स्वर में बोले—"इस घर को मेरी बददुआ लगे !"

"वह ऐसे ही नाटक करते रहेंगे !" गान्या ने धड़ से खिड़की बन्द करते हुए बुदबुदाकर कहा।

पड़ोसी सचमुच सुन रहे थे। वार्या झपटकर कमरे से बाहर निकल गई।

वार्या के चले जाने के बाद गान्या ने मेज़ पर से पर्चा उठाकर उसे चूमा, जीभ से चटखारा भरा और मस्ती में होकर उसके पाँव थिरक उठे।

3

कोई और वक़्त होता तो जनरल साहब के साथ जो हंगामा हुआ था वह आई-गई बात हो गया होता। पहले भी वह अचानक इसी तरह के हंगामे कर चुके थे जिन पर हँसी आती थी, हालाँकि

ऐसा अकसर नहीं होता था, क्योंकि यों तो वह काफ़ी अच्छे स्वभाव के शान्त आदमी थे। इधर पिछले कुछ वर्षों में वह दुराचार की जिन आदतों का शिकार हो गए थे उनसे छुटकारा पाने की वह शायद सौ बार डटकर कोशिश कर चुके थे। उन्हें अचानक याद आता था कि वह "एक परिवार के पिता हैं", और वह अपनी बीवी से सुलह-समझौता करके सचमुच आँसू बहाते थे। वह लगभग पूजने की हद तक अपनी बीवी की इज़्ज़त करते थे क्योंकि वह उन्हें चुपचाप कितना कुछ माफ़ कर चुकी थीं और उनकी इस मसख़रेपन की और शर्मनाक हालत में भी उन्हें प्यार तक करती थीं। लेकिन अपनी ज़िन्दगी के दुराचारी ढर्रे के ख़िलाफ़ उनका उदार संघर्ष बहुत दिन नहीं चलता था : अपने ढंग से जनरल साहब भी अत्यन्त आवेगी स्वभाव के थे; वह अपने परिवार के बीच पश्चात्तापपूर्ण और निष्क्रिय जीवन को बर्दाश्त नहीं कर सके और अन्त में उन्होंने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया; उनका गुस्सा भड़क उठा और जिस समय ऐसा हो रहा था उस समय भी वह इस पर लज्जित थे, फिर भी वह अपने आपको रोक न सके : वह झगड़ पड़ते थे, बहुत बढ़-बढ़कर और धाराप्रवाह बातें करते थे, माँग करते थे कि उनकी ज़्यादा से ज़्यादा और नामुमकिन हद तक इज़्ज़त की जाए और आख़िरकार घर से ग़ायब हो जाते थे और कभी-कभी बहुत लम्बे अर्से तक नहीं लौटते थे। पिछले दो वर्षों के दौरान अपने परिवार के मामलात के बारे में उनको बहुत ही कम जानकारी रही थी, और वह भी ज़्यादातर सुनी-सुनाई; उन्होंने इसकी गहराई में जाना छोड़ दिया था, इसके प्रति वह ज़रा भी रुचि नहीं अनुभव करते थे।

लेकिन इस बार "जनरल साहब के साथ होनेवाले हंगामे" में कुछ असाधारण बात थी; ऐसा लगता था कि सभी को कुछ न कुछ मालूम था और वे उसकी चर्चा करते डरते थे। जनरल साहब अभी तीन ही दिन पहले अपने परिवार के बीच प्रकट हुए थे, यानी वह अपनी बीवी के पास वापस आ गए थे, लेकिन इस बार उन्होंने न विनम्रता का परिचय दिया था, न पश्चात्ताप का जैसा कि इससे पहले 'प्रकट होने' पर वह हमेशा करते थे। इसके विपरीत ऐसा लगता था कि वह बेहद चिड़चिड़े हो गए थे। वह बहुत बोलते थे और बेचैन रहते थे, जो भी मिल जाता था उससे जोश में आकर बातें करते थे, उस पर अचानक धावा-सा बोल देते थे, और सो भी ऐसे विविध और अप्रत्याशित विषयों के बारे में कि यह समझ पाना बिलकुल असम्भव था कि उन्हें वास्तव में किस चीज़ की चिन्ता सता रही थी। कभी-कभी वह बहुत प्रसन्नचित्त दिखाई देते थे, लेकिन ज़्यादातर वह विचारमग्न रहते थे, हालाँकि उन्हें स्वयं भी नहीं मालूम रहता था कि वह किस चीज़ के बारे में सोच रहे थे। वह अचानक किसी भी चीज़ के बारे में बयान करना शुरू कर देते थे—येपांचिन-परिवार के बारे में, प्रिंस के बारे में या लेबेदेव के बारे में—और अचानक ही रुक जाते थे और बोलना बिलकुल बन्द कर देते थे; इसके बाद जब उनसे जो भी सवाल किया जाता था तो जवाब में उनके होंठों पर फीकी-सी मुस्कराहट आ जाती थी, उन्हें इस बात तक का आभास नहीं रहता था कि उनसे कोई सवाल पूछा गया था या यह कि वह मुस्करा रहे थे। पिछली सारी रात वह कराहते रहे थे और उन्होंने अपनी बीवी को भी हल्कान कर दिया था, जो रात-भर जागकर गरम पानी से उनकी सिंकाई करती रही थीं; सुबह होते-होते उन्हें अचानक नींद आ गई थी, वह चार घंटे सोए थे और जब जागे थे तो उन पर बेचैनी का बहुत सख़्त और जबर्दस्त दौरा पड़ा हुआ था, जिसका नतीजा यह हुआ था कि वह इप्पोलीत से लड़े थे और उन्होंने श्राप दिया था कि "इस घर को मेरी बददुआ लगे"। यह भी देखा गया था कि उन तीन दिनों के दौरान उन पर शान बघारने के जबर्दस्त दौरे भी लगातार पड़ते रहे थे और इसलिए वह बेहद जल्दी बुरा भी मान जाते थे। अपने ओर से कोल्या माँ को यह विश्वास दिलाता रहा था कि यह सब कुछ शराब के लिए और शायद

लेबेदेव के लिए उनकी ललक का नतीजा था, जिसके साथ इधर कुछ समय से उनकी बहुत गाढ़ी छनने लगी थी। लेकिन तीन दिन पहले वह अचानक लेबेदेव से लड़ लिए थे और बेहद गुस्सा होकर उसके यहाँ से चले आए थे; प्रिंस के साथ भी उनका कोई झगड़ा हुआ था। कोल्या ने प्रिंस से इसकी वजह पूछी थी और आख़िरकार उसे शक होने लगा था कि वह भी उसे कुछ बताना नहीं चाहता था। जैसा कि गान्या ने काफ़ी ठोस कारणों से सोचा था, अगर इप्पोलीत और नीना अलेक्सान्द्रोव्ना के बीच कोई ख़ास बातचीत हुई थी तो यह ताज्जुब की ही बात होती अगर वह द्वेषी नौजवान, जिसे गान्या ने उसके मुँह पर इधर की उधर लगानेवाला कहा था, कोल्या को भी वह रहस्य बताकर वैसा ही सन्तोष प्राप्त करने से वंचित रह गया होता। बहुत मुमकिन था कि वह वैसा द्वेषी छोकरा नहीं था जैसा कि अपनी बहन से बात करते हुए गान्या ने उसका चित्र खींचा था, लेकिन वह दूसरी ही तरह से द्वेषी था; न ही इस बात की सम्भावना थी कि उसने नीना अलेक्सान्द्रोव्ना को अपनी देखी हुई किसी बात की सूचना केवल उनका 'दिल दुखाने' के लिए दी हो। हम इस बात को न भूलें कि कोई भी आदमी जो कुछ करता है उसके पीछे उससे कहीं अधिक जटिल और विविध उद्देश्य होते हैं जितना कि हम बाद में उन्हें समझ पाते हैं, और शायद ही कभी ऐसा होता है कि उनकी व्याख्या निश्चित रूप से की जा सके। कभी-कभी लेखक के लिए कहीं ज़्यादा अच्छा यह होता है कि वह घटनाओं का सीधा-साधा वर्णन करके सन्तोष कर ले। जनरल साहब के साथ इस समय जो भीषण संकट पैदा हो गया था उसके बाक़ी विवरण में हम ऐसा ही करेंगे; क्योंकि लाख कोशिश करने पर भी हमारे पास इसके अलावा कोई और चारा ही नहीं है कि अपनी कहानी के इस गौण पात्र की ओर उससे कुछ अधिक ध्यान दें और उसके लिए उससे कुछ अधिक जगह दें जितना कि शुरू में हमारा इरादा था।

ये घटनाएँ एक-दूसरे के बाद निम्नलिखित क्रम से हुईं—

फेर्दीश्चेंको की तलाश में पीटर्सबर्ग की यात्रा के बाद जब लेबेदेव उसी दिन जनरल साहब के साथ लौट आया तो उसने प्रिंस को कोई ख़ास बात नहीं बताई। अगर प्रिंस उस वक़्त दूसरी महत्त्वपूर्ण बातों में इतना व्यस्त और उलझा हुआ न होता तो उसका ध्यान जल्दी ही इस बात की ओर ज़रूर गया होता कि अगले दो दिनों के दौरान उसे कुछ समझाना तो दरकिनार, लेबेदेव न जाने क्यों उससे कतराता हुआ लगा। आख़िरकार, जब प्रिंस ने इस बात की ओर ध्यान दिया तो उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उन दो दिनों के दौरान जब भी उनकी मुलाक़ात होती थी तो वह अत्यन्त प्रसन्नचित्त दिखाई देता था, और लगभग हर बार ही जनरल साहब उसके साथ होते थे। दोनों दोस्त एक क्षण के लिए भी एक-दूसरे से अलग नहीं होते थे। प्रिंस को कभी-कभी ऊपरवाली मंज़िल से ज़ोर-ज़ोर से और उत्तेजित होकर बातचीत करने और हँसने और दोस्ताना बहस की आवाज़ सुनाई देती थी; एक बार, बहुत रात गए बिलकुल अप्रत्याशित ढंग से उसे शराबी फौजियों के गाने की धुन सुनाई दी, और उसने फ़ौरन जनरल साहब की खरखरी भारी आवाज़ पहचान ली। लेकिन गाना अचानक बीच में ही रुक गया। फिर इसके बाद एक घंटे तक बहुत जोशीली और सभी संकेतों के अनुसार शराबियों जैसी बातचीत चलती रही। जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता था दोनों मित्र, जो इतने मस्त थे, एक-दूसरे को गले लगा रहे थे। और आख़िरकार उनमें से एक फूट-फूटकर रोने लगा। इसके बाद बहुत जबर्दस्त झगड़ा हुआ, और वह भी थोड़ी ही देर बाद जल्दी से बन्द हो गया। इस बीच सारे समय कोल्या विशेप रूप से चिन्तित रहा। प्रिंस ज़्यादातर दिन-भर बाहर रहता था और कभी-कभी बहुत देर में लौटकर आता था, और हर बार उसे बताया जाता था कि कोल्या उसे खोज रहा था और उसके बारे में पूछ रहा था। लेकिन

जब उन दोनों की मुलाक़ात होती थी तो कोल्या को उसे कोई ख़ास बात नहीं बतानी होती थी अलावा इसके कि वह जनरल साहब और उनके वर्तमान आचरण से बहुत 'असन्तुष्ट' था—"वे दोनों साथ-साथ मटरगश्ती करते हैं, यहाँ से थोड़ी ही दूर पर एक शराबखाने में पीकर धुत्त हो जाते हैं, सड़क पर एक-दूसरे को गले लगाते हैं और एक-दूसरे से लड़ते हैं, एक-दूसरे को ताव दिलाते हैं और उन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।" जब प्रिंस ने बताया कि पहले भी लगभग रोज ही ऐसा होता था, तो ऐसा लगा कि कोल्या की समझ में नहीं आया कि क्या कहे या अपनी मौजूदा बेचैनी की वजह किस तरह समझाए।

शराबियोंवाले उस गाने और झगड़े के बाद अगले दिन सबेरे जब वह लगभग ग्यारह बजे घर से बाहर निकल रहा था, जनरल साहब, जो बहुत उत्तेजित और विक्षिप्त-से लग रहे थे, अचानक प्रिंस के सामने आ धमके।

"मैं आपसे मिलने का मौक़ा क़ब से खोजता रहा हूँ, मेरे प्यारे प्रिंस, न जाने क़ब से," उन्होंने प्रिंस का हाथ इतने ज़ोर से दबाते हुए कहा कि उसमें दर्द होने लगा। "बहुत-बहुत लम्बे अर्से से।"

प्रिंस ने उनसे बैठने को कहा।

"जी नहीं, शुक्रिया, मैं बैठूँगा नहीं; और, प्रिंस, शायद आपको कहीं जाने की जल्दी भी है...फिर कभी सही। लेकिन इस मौक़े का फ़ायदा उठाकर आपको बधाई तो दे ही दूँ कि...कि...आपके मन की मुराद...मतलब है...पूरी हुई।"

"मन की मुराद कौन-सी ?"

प्रिंस झेंप गया। उसे ऐसा लगा, जैसा कि उसकी स्थिति में होने पर बहुतों को लगता है, कि कोई कुछ भी देख या समझ नहीं रहा है और न ही अनुमान लगा पा रहा है।

"अरे, कुछ नहीं, साहब, आप फ़िक्र न कीजिए ! मैं आपकी सबसे कोमल भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता। मैं ख़ुद ऐसी हालत से गुजर चुका हूँ, और मैं जानता हूँ कि ज़ब कोई अजनबी...मेरा मतलब है...उन मामलात में टाँग अड़ाता है जिससे उसका कोई सरोकार नहीं होता तो कैसा लगता है। मैं रोज सवेरे ऐसा ही महसूस करता हूँ। मैं दूसरे ही मामले के सिलसिले में आया था : बहुत ही ज़रूरी मामले के सिलसिले में; बहुत ही ज़रूरी मामला है, प्रिंस।"

प्रिंस ने फिर उनसे बैठने को कहा और ख़ुद भी बैठ गया।

"अच्छी बात है, बस एक सेकंड के लिए, शायद।...मैं आपसे सलाह लेने आया हूँ। बेशक, जीवन में मेरा कोई व्यावहारिक उद्देश्य नहीं है, लेकिन चूँकि मैं ख़ुद अपनी इ़ज़्ज़त करता हूँ और...अपनी कारोबार करने की योग्यता की भी, जिसकी रूसी आदमी आमतौर पर इतनी उपेक्षा करता है, इसलिए मैं...यानी...मैं ख़ुद अपने लिए और अपने बीवी-बच्चों के लिए ऐसे हालात पैदा करना चाहता हूँ...मतलब यह, प्रिंस, कि मुझे सलाह चाहिए।..."

प्रिंस ने उनके इरादे के प्रति अपना हार्दिक समर्थन व्यक्त किया।

"ख़ैर, यह सब तो बकवास है," जनरल साहब जल्दी से बीच में ही बोल पड़े। "दरअसल मैं यह नहीं बल्कि कुछ और ही कहना चाहता था, कोई ज़रूरी बात। मैंने आपको ही साफ़-साफ़ बताने का फ़ैसला इसलिए किया है, लेव निकोलायेविच, कि आप एक ऐसे आदमी हैं जिसके बारे में मुझे पूरा यक़ीन है कि आप सच्चे दिल से दूसरे की बात सुनते हैं और आपकी भावनाएँ उदार हैं...ऐसे आदमी...ऐसे...प्रिंस, आपको मेरी बातों पर ताज्जुब तो नहीं हो रहा है ?"

प्रिंस अपने मुलाक़ाती को विशेष आश्चर्य से न भी सही लेकिन बेहद ध्यान और दिलचस्पी से तो देख ही रहा था। बड़े मियाँ का रंग कुछ पीला पड़ गया था, उनके होंठ कभी-कभी काँप

उठते थे, और ऐसा लगता था कि उन्हें अपने हाथ टिकाने के लिए कोई जगह नहीं मिल रही है। उन्हें बैठे अभी कुछ मिनट ही हुए थे लेकिन इतनी ही देर में वह न जाने क्यों अपनी जगह से दो बार अचानक उठ चुके थे, और फिर अचानक ही बैठ भी गए थे; स्पष्टतः इस ओर उनका ध्यान ही नहीं गया था कि वह कर क्या रहे हैं। मेज़ पर कुछ किताबें रखी थीं; उन्होंने बात करना जारी रखते हुए एक किताब उठा ली, खुले हुए पृष्ठ पर एक सरसरी-सी नज़र डाली और फ़ौरन ही उसे बन्द करके फिर वापस रख दिया; फिर उन्होंने झपटकर दूसरी किताब उठा ली, जिसे उन्होंने खोला नहीं, और सारी देर उसे अपने दाहिने हाथ में लिए हवा में इधर-उधर हिलाते रहे।

"बस !" अचानक वह ऊँचे स्वर में बोले। "मैं समझ रहा हूँ कि मैं आपके काम में रुकावट डाल रहा हूँ।"

"अरे नहीं, बिलकुल नहीं, बल्कि मैं आपकी बात बड़े ध्यान से सुन रहा हूँ, और आपकी बात समझने की बड़ी उत्सुकता है मुझे।..."

"प्रिंस ! मैं अपने लिए ऐसे हालात पैदा करना चाहता हूँ कि लोग मेरी इज्जत करें।...मैं ख़ुद अपनी इज़्ज़त करना चाहता हूँ और...और अपने अधिकारों की भी।..."

"जिस आदमी के दिल में ऐसा नेक काम करने की तमन्ना हो, उसकी इज़्ज़त तो सिर्फ़ इसी बात की वजह से की जानी चाहिए।"

प्रिंस ने यह बँधा-टँका फिकरा पूरे विश्वास के साथ यह सोचकर बोल दिया कि इसका अच्छा असर पड़ेगा। उसे सहज ही यह आभास हुआ कि उचित समय पर ऐसी खोखली लेकिन सुन्दर बात कह देने से इस तरह के आदमी के मन को शान्ति और तसल्ली मिलेगी, और ख़ासतौर पर उस आदमी के मन को जो जनरल साहब जैसी स्थिति में हो। बहरहाल, यह ज़रूरी था कि इस तरह के मुलाक़ाती के मन का बोझ हल्का करके उसे वापस भेजा जाए, और उसे इसी बात की कोशिश करनी चाहिए।

यह सुनकर जनरल साहब गर्व से फूले नहीं समाए, बात ने उनके दिल को छू लिया और वह बेहद खुश हुए—सहसा वह भाव-विह्वल हो उठे, उन्होंने तुरन्त अपना स्वर बदल दिया और भाव-विभोर होकर वह लम्बी-चौड़ी सफाइयाँ देने लगे। लेकिन लाख कोशिश करने और लाख ध्यान से सुनने पर भी प्रिंस एक शब्द भी नहीं समझ पाया। जनरल साहब बड़े जोश से और जल्दी-जल्दी दस मिनट तक बातें करते रहे, मानो उनके दिमाग़ में जो विचार ठसाठस भरे हुए थे उन्हें व्यक्त करने के लिए उनके पास बहुत थोड़ा समय हो; अन्त में उनकी आँखों में आँसू चमकने लगे। फिर भी ऐसे वाक्य जिनका न कोई आदि था न अन्त, अप्रत्याशित शब्द और विचार, बड़ी तेजी से और अचानक फूटे पड़ रहे थे और एक-दूसरे पर लड़खड़ाते हुए बाहर आ रहे थे।

"बस !" उन्होंने अचानक उठते हुए अपनी बात समाप्त की। "आपने मेरी बात समझ ली, बस मैं सन्तुष्ट हूँ। जिसके पास आप जैसा दिल हो वह मुसीबत झेलनेवाले आदमी की बात समझे बिना रह ही नहीं सकता। प्रिंस, आप उदारता की बेजोड़ मिसाल हैं ! आपके सामने दूसरे लोग क्या हैं ? लेकिन आप अभी नौजवान हैं, मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ। मैं यहाँ आया था आपसे बस यह कहने कि आप एक ज़रूरी बातचीत के लिए घंटे-भर का कोई समय तै कर लें, और यही मेरी सबसे बड़ी उम्मीद है। मैं सिर्फ़ दोस्ती और हमदर्दी चाहता हूँ, प्रिंस। मैं अपने दिल की तमन्नाओं पर कभी काबू नहीं पा सका हूँ।"

"लेकिन अभी क्यों न बातें कर लें ? मैं आपकी बातें सुनने को तैयार हूँ।..."

"नहीं, प्रिंस, नहीं !" जनरल साहब बड़े जोश से बीच में ही बोल पड़े। "इस वक़्त नहीं !

इस वक़्त तो कोरा सपना है ! बात बेहद ज़रूरी है, बेहद ज़रूरी ! बातचीत की वह घड़ी आख़िरी फ़ैसले की घड़ी होगी। वह एक घंटे का वक़्त मेरा होगा, और मैं नहीं चाहूँगा कि कोई धूर्त आदमी आकर उस पवित्र क्षण में हमारी बातों में विघ्न डाले, और बहुत मुमकिन है कि वह ऐसा धूर्त हो," वह अचानक प्रिंस की ओर झुककर विचित्र, रहस्यमय और भयभीत-से क्षीण स्वर में बोले, "ऐसा बदतमीज जो आपकी जूतियाँ उठाने के क़ाबिल न हो, मेरे प्यारे, बहुत प्यारे प्रिंस ! मैं अपने जूतों की बात नहीं कर रहा हूँ। इस बात को ख़ासतौर पर ध्यान में रखिएगा। मैं अपने जूतों की बात नहीं कर रहा हूँ क्योंकि मेरे दिल में ख़ुद अपने लिए इतनी ज़्यादा इज़्ज़त है कि साफ़-साफ़ बात न करना मेरे लिए नामुमकिन है, लेकिन इस बात को अकेले आप ही समझ सकते हैं कि ऐसी हालत में अपने जूतों की बात न करके मैं शायद अपनी गरिमा पर ज़्यादा से ज़्यादा गर्व का सबूत दे रहा हूँ। आपके अलावा कोई और इस बात को नहीं समझ सकता, वह तो बिलकुल ही नहीं समझ सकता। वह कुछ भी नहीं समझता, प्रिंस; वह समझ सकता ही नहीं, बिलकुल नहीं समझ सकता। समझने के लिए आदमी के पास दिल होना चाहिए !"

अन्त में प्रिंस डर-सा गया और उसने अगले दिन उसी वक़्त जनरल साहब से मिलने का वादा कर लिया। जनरल साहब बेहद ख़ुश-ख़ुश, बहुत तसल्ली पाकर और लगभग पूर्णतः शान्त होकर चले गए। शाम को कोई सात बजे प्रिंस ने लेबेदेव को बुलवा भेजा कि एक मिनट के लिए आकर उनसे मिल जाए।

लेबेदेव बेहद मुस्तैदी से हाज़िर हो गया—उसने "इसे अपने लिए इज़्ज़त की बात समझा", जैसा कि उसने अन्दर आते ही एलान भी कर दिया; इस बात का ज़रा-सा कहीं इशारा तक नहीं था कि वह तीन दिन तक मानो छिपा हुआ था और प्रिंस से मिलने से कतरा रहा था। वह मुस्कराता हुआ और तरह-तरह के मुँह बनाता हुआ एक कुर्सी की कगर पर बैठ गया; उसकी छोटी-छोटी आँखें हँस रही थीं और सतर्क थीं, वह अपने हाथ आपस में रगड़ रहा था और उसके चेहरे पर ऐसा भाव था मानो वह बड़े भोलेपन से कोई बात सुनने की, कोई बेहद ज़रूरी ख़बर मिलने की उम्मीद कर रहा हो, ऐसी ख़बर जिसकी उसे बहुत समय से उम्मीद थी और जिसका अनुमान उसने बहुत पहले ही लगा लिया था। प्रिंस फिर झिझकने लगा; उसकी समझ में बिलकुल साफ़तौर पर आने लगा कि हर आदमी उससे अचानक किसी बात की उम्मीद करने लगा था, कि हर आदमी उसे छिपे-छिपे संकेतों, मुस्कराहटों के साथ और आँख मारकर ऐसे देखता था मानो उसे किसी बात की बधाई देना चाहता हो। केल्लेर कई बार पल-भर के लिए उससे मिलने आ चुका था, और वह भी स्पष्टतः उसे बधाई देना चाहता था : हर बार वह बेहद उल्लसित होकर और गोल-मोल तरीक़े से कुछ कहना शुरू करता था, लेकिन कभी ख़त्म नहीं कर पाता था और जल्दी से खिसिया जाता था। (इधर कुछ समय से वह कहीं बहुत ज़्यादा पीता रहा था और किसी बिलियर्ड-रूम के चक्कर काटता रहा था।) अपनी उदासी के बावजूद कोल्या तक ने एक-दो बार प्रिंस से किसी चीज़ के बारे में गोल-मोल तरीक़े से बातें करना शुरू किया था।

प्रिंस ने साफ़-साफ़ और कुछ चिढ़कर लेबेदेव से पूछा कि जनरल साहब की मौजूदा हालत के बारे में उसका क्या ख़्याल था और जनरल साहब इतने परेशान क्यों थे। उसने जनरल साहब के साथ सबेरेवाली अपनी मुलाक़ात के बारे में उसे थोड़े-से शब्दों में बताया।

"सबकी अपनी-अपनी परेशानियाँ होती हैं, प्रिंस, और...मतलब है...ख़ासतौर पर हमारे इस विचित्र और तूफ़ानी जमाने में...जी हाँ," लेबेदेव कुछ रूखेपन से जवाब देकर चुप हो गया, मानो कोई बात उसे बुरी लगी हो, उस आदमी की तरह जिसकी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया हो।

"क्या दर्शन की बात कही है," प्रिंस ने हँसकर कहा।

"दर्शन ज़रूरी है, साहब। हमारे इस जमाने में तो उसे ख़ासतौर पर ज़रूरी होना चाहिए, साहब—मेरा मतलब है किस तरह उसे ज़िन्दगी में लागू किया जाए—लेकिन उसकी उपेक्षा की जाती है; यही तो मुसीबत है। जहाँ तक मेरा ख़्याल है, मेरे प्यारे प्रिंस, हालाँकि एक मामले में जिसका आपको पता है, मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था कि आपने मुझ पर विश्वास किया, लेकिन बस एक हद तक और सिर्फ़ उस बात से सम्बन्ध रखनेवाली परिस्थितियों तक, उससे आगे नहीं।... मैं यह बात अच्छी तरह समझता हूँ और मैं शिकायत नहीं कर रहा हूँ।"

"लेबेदेव, आप मुझसे नाराज़ तो नहीं हैं न ?"

"बिलकुल नहीं, मेरे प्यारे और बेहद शानदार प्रिंस, ज़रा भी नहीं !" लेबेदेव ने दिल पर हाथ रखकर हर्षातिरेक से चिल्लाकर कहा। "बल्कि बात इसकी उल्टी ही है; मैंने फ़ौरन ही समझ लिया था कि न तो दुनिया में अपनी हैसियत की बुनियाद पर, न अपने दिल और दिमाग़ की खूबियों की वजह से, न अपनी जमा की हुई दौलत के बल पर, और न ही अपने पिछले बर्ताव को देखते हुए, मेरी जानकारी की बात तो जाने ही दीजिए, किसी भी बुनियाद पर मैं इस लायक़ हूँ ही नहीं कि आप, मेरे परम माननीय प्रिंस, मुझ पर भरोसा करें, सो भी मेरी उम्मीदों से ज़्यादा, और यह कि अगर मैं आपकी कोई सेवा कर भी सकता हूँ तो गुलाम और नौकर की तरह, किसी और शक्ल में नहीं।...मैं नाराज़ नहीं हूँ, साहब, मैं बस उदास हूँ।"

"बस-बस, रहने भी दीजिए, लुक्यान तिमोफ़ेयेविच !"

"किसी और शक्ल में नहीं, साहब। इस मामले में भी वही बात है। आपसे मिलकर और सच्चे दिल से और अपने सारे विचारों में आप ही का ध्यान रखते हुए मैंने अपने मन में कहा : 'मैं इस लायक़ ही नहीं हूँ कि वह दोस्त की हैसियत से मुझसे कुछ कहें, लेकिन हो सकता है कि आगे चलकर जो परिवर्तन होने की उम्मीद की जाती है उनके बारे में शायद उनके मकान-मालिक की हैसियत से भविष्य में कभी उचित समय आने पर मुझे भी आदेश दिया जाए...या कम से कम सूचना ही दी जाए।..."

यह कहते हुए लेबेदेव अपनी छोटी-छोटी तेज नज़रें प्रिंस पर गड़ाए रहा, जो उसे आश्चर्य से देख रहा था; लेबेदेव को अब भी उम्मीद थी कि शायद उसकी जिज्ञासा की तुष्टि हो जाए।

"मेरी बिलकुल समझ में नहीं आता कि आप किस चीज़ के बारे में बातें कर रहे हैं," प्रिंस ने कुछ नाराजगी से चिल्लाकर कहा। "और...आप बहुत ही बेहूदा क़िस्म के साज़िशी हैं !" वह अचानक बेहद खुशमिजाजी से ठहाका मारकर हँस पड़ा।

तुरन्त ही लेबेदेव भी ठहाका मारकर हँस पड़ा, और उसकी चमकती हुई आँखों से फ़ौरन यह भाव व्यक्त होने लगा कि उसकी आशाओं की पुष्टि हो गई थी, बल्कि वे पहले से दुगनी प्रबल हो गई थीं।

"और, लेबेदेव, आप जानते हैं मैं आपसे एक बात कहूँ वरा, मुझसे नाराज़ न होइएगा, मुझे तो आपके भोलेपन पर ताज्जुब होता है और सिर्फ़ आपके ही नहीं ! आप इस क्षण भी मुझसे कुछ सुनने की इतने भोलेपन से उम्मीद लगाए हुए हैं कि सचमुच मुझे शर्मिन्दगी हो रही है और अफ़सोस हो रहा है कि मेरे पास आपको बताने के लिए कोई ऐसी बात है ही नहीं जो आपको सन्तुष्ट कर सके। मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि आपके लिए बात का विश्वास करना कितना ही कठिन क्यों न हो लेकिन सचमुच मेरे पास आपको बताने के लिए कुछ भी नहीं है !"

प्रिंस फिर हँस पड़ा।

लेबेदेव ने गरिमा की मुद्रा धारण कर ली। यह सच है कि कभी-कभी वह अपनी जिज्ञासा के मामले में जिस बड़े भोलेपन का सबूत देता था, उससे दूसरा आदमी उकता जाता था; लेकिन इसके साथ ही वह बहुत काइयाँ और आसानी से पकड़ में न आनेवाला बन्दा था, और कुछ मामलों में तो ज़रूरत से ज़्यादा चालाकी के साथ खामोश रहता था; प्रिंस ने बार-बार झिड़ककर उसे लगभग अपना दुश्मन बना लिया था। लेकिन प्रिंस उसे झिड़कता इसलिए नहीं था कि उसे उससे नफ़रत थी, बल्कि इसलिए कि उसकी जिज्ञासा का विषय बहुत नाजुक था। अभी कुछ ही दिन पहले प्रिंस ने अपने कुछ स्वप्नों को अपराध जैसा समझा था। पर लेबेदेव प्रिंस की झिड़कियों को वैयक्तिक अरुचि और अविश्वास का प्रमाण मानता था; उसका दिल बहुत दुखता था और उसे न केवल कोल्या और केल्लेर से बल्कि स्वयं अपनी बेटी वेरा से भी ईर्ष्या होती थी। उस समय भी वह प्रिंस को एक ऐसी ख़बर सचमुच बताना चाहता था, जो उसके लिए बेहद दिलचस्पी की थी, लेकिन उसने उदास होकर चुप्पी साध ली और उसे कुछ भी नहीं बताया।

"आपकी मैं क्या खिदमत कर सकता हूँ, मेरे प्यारे प्रिंस, क्योंकि अभी...यानी...अभी आपने मुझे बुलवाया था ?" उसने थोड़ी देर रुककर आखिरकार कहा।

"दरअसल बात जनरल साहब के बारे में थी," प्रिंस ने अचानक चौंककर कहा और उसके उन विचारों की शृंखला भी टूट गई जिसमें वह डूबा हुआ था, "और...हाँ...वह चोरी जिसके बारे में आपने मुझे बताया था।..."

"आपका मतलब, जनाब ?"

"क्या खूब, जैसे अब मेरी बात आपकी समझ में ही नहीं आ रही ! हे भगवान ! लेबेदेव, आप हमेशा नाटक क्यों करते रहते हैं ? वह पैसा, वह रक़म, उस दिन जो चार सौ रूबल आपने अपने बटुए में खो दिए थे और जिसके बारे में आप पीटर्सबर्ग जाने से पहले सबेरे-सबेरे मुझे बताने आए थे...अब आया समझ में ?"

"अच्छा ! आपका मतलब उन चार सौ रूबल से है," लेबेदेव शब्दों को खींच-खींचकर बोला, मानो प्रिंस जिस बात की ओर इशारा कर रहा था उसका मतलब वह उसी क्षण समझा हो। "प्रिंस, मेरा इतना ख्याल रखने के लिए शुक्रिया। इसे मैं अपने लिए बड़ी इज़्ज़त की बात समझता हूँ, साहब, लेकिन...मेरा मतलब है...वह तो मुझे मिल गए थे...बहुत पहले ही !"

"मिल गए ! चलिए, भगवान की कृपा है !"

"बड़ी उदारता-भरी बात आपने कही है, प्रिंस, क्योंकि मेरे जैसे ग़रीब आदमी के लिए, जो मेहनत करके अपनी रोजी कमाता है और जिसे बिना माँ के बच्चों के लिए बहुत बड़े परिवार का पेट भरना पड़ता है, चार सौ रूबल की रक़म कोई छोटी बात नहीं होती।"

"लेकिन मेरा मतलब यह नहीं था ! ज़ाहिर है, इस बात की तो मुझे खुशी है कि आपकी रक़म मिल गई," प्रिंस ने जल्दी से अपनी बात ठीक करते हुए कहा, "मगर कैसे...आपको मिले कैसे ?"

"बिलकुल सीधी बात है, साहब। उसी कुर्सी के नीचे मिले, जिस पर मैंने अपना कोट फेंक दिया था। मेरा बटुआ जेब में से फ़र्श पर सरक गया होगा।"

"कुर्सी के नीचे ? नामुमकिन ! आपने खुद मुझे बताया था कि आपने सारे में अच्छी तरह देख लिया था। फिर वह जगह आपकी नज़र से कैसे चूक गई जहाँ उसके पाए जाने की सबसे ज़्यादा उम्मीद थी।"

"ख़ैर, साहब, बात यही है कि कहीं चूक हो गई ! मैंने देखा ज़रूर था ! मुझे खूब याद है

कि मैंने बहुत अच्छी तरह देखा था ! अपनी आँखों पर यक़ीन न करते हुए कुर्सी पीछे खिसकाकर कुहनियों और घुटनों के बल झुककर सारी जगह अपने हाथों से टटोली थी; लेकिन मुझे साफ़ दिखाई दिया था कि वहाँ कुछ भी नहीं था...बिलकुल सफाचट खाली जगह पड़ी थी, मेरी हथेली जैसी सपाट, साहब...फिर भी मैं उसे टटोलता रहा। इस तरह की कमज़ोरी हर वह आदमी हमेशा दिखाता है जिसकी कोई सचमुच क़ीमती और ज़रूरी चीज़ खो गई हो और वह उसे पाने के लिए उतावला हो—वह देखता है कि वहाँ कुछ भी नहीं है, जगह बिलकुल खाली पड़ी है, फिर भी वह एक दर्जन बार वहाँ ढूँढ़ता है।"

"हाँ, यह तो बिलकुल ठीक है, लेकिन फिर वह आपको मिला कैसे ? माफ़ कीजिएगा, बात कुछ मेरी समझ में आई नहीं," प्रिंस ने कुछ भी न समझ पाने की वजह से बुदबुदाकर कहा। "आपका कहना है कि पहले वह वहाँ नहीं था, कि आप उसे वहाँ खोज चुके थे, और फिर अचानक वह वहाँ आ गया !"

"जी हाँ, फिर अचानक वह वहाँ आ गया।"

प्रिंस ने लेबेदेव को विचित्र ढंग से देखा।

"और जनरल साहब ?" उसने अचानक पूछा।

"क्या मतलब आपका, जनरल साहब से क्या मतलब ?" लेबेदेव फिर भी समझ नहीं पाया।

"हे भगवान ! मैं पूछ रहा हूँ कि जब आपको कुर्सी के नीचे अपना बटुआ मिल गया तो जनरल साहब ने क्या कहा ? पहले आप दोनों ने साथ मिलकर उसे खोजा था न ?"

"जी हाँ, पहले हमने साथ-साथ मिलकर ढूँढ़ा था। लेकिन इस बार मैंने उनसे कुछ नहीं कहा; मैंने सोचा कि उन्हें यह न बताना ही अच्छा रहेगा कि बटुआ मैंने खोज लिया है—अकेले।"

"लेकिन...क्यों ? और रक़म ? सारी रक़म थी उसमें ?"

"मैंने बटुआ खोलकर देखा। सारी रक़म उसमें मौजूद थी—एक-एक रूबल।"

"आकर मुझे बता तो दिया होता," प्रिंस ने विचारमग्न होकर कहा।

"प्रिंस, आपके निजी और, शायद, यों समझ लीजिए, बेहद असाधारण अनुभवों के बीच जिनमें आप उलझे हुए थे मैं आपको परेशान नहीं करना चाहता था। इसके अलावा, मैं खुद जता ऐसा रहा था जैसे मुझे कुछ मिला ही न हो। मैंने बटुआ खोला, उसे अच्छी तरह देखा और बन्द करके कुर्सी के नीचे वापस रख दिया।"

"किसलिए !"

"बस, यों ही—मैं समझता हूँ, साहब, यह देखने के लिए कि क्या होता है," लेबेदेव बहुत खुश होकर अपने हाथ आपस में रगड़ते हुए खिलखिलाकर हँसा।

"तो परसों से अभी तक वह वहीं पड़ा है ?"

"जी नहीं। वह तो वहाँ बस एक दिन पड़ा रहा। बात यह है, साहब, एक तरह से मैं चाहता था कि वह जनरल साहब को ही मिले। क्योंकि आख़िरकार जब वह मुझे मिल गया था तो क्या वजह थी कि वही चीज़ जनरल साहब को, यों समझ लीजिए, उनकी आँख के सामने कुर्सी के नीचे से निकली हुई दिखाई न दे ? मैंने कुर्सी को कई बार उठाया और इस तरह वापस रख दिया कि बटुआ बिलकुल सामने दिखाई दे, लेकिन जनरल साहब का ध्यान ही इस ओर नहीं जा रहा था, और पूरे दिन यही हाल रहा। वह आजकल बहुत ख़ब्तुलहवास रहते हैं, यह बात है। उनका हाल कुछ समझ में ही नहीं आता, साहब : बातें करते हैं, किस्से सुनाते हैं, हँसते हैं, सच तो यह है कि हँसते क्या हैं गरजते हैं, और फिर अचानक मुझसे बेहद नाराज़ हो जाते हैं। मालूम नहीं क्यों।

आख़िरकार हम लोग कमरे से बाहर निकलने लगे और मैंने जान-बूझकर दरवाज़ा खुला छोड़ दिया; वह एक पल के लिए तो झिझके, कुछ कहना चाहा, शायद इतनी बड़ी रक़म के साथ बटुए के लिए डरते होंगे, लेकिन अचानक उनका गुस्सा भड़क उठा और उन्होंने कुछ कहा नहीं। हम लोग सड़क पर निकले ही थे कि वह यकायक मेरा साथ छोड़कर दूसरी दिशा में चल पड़े। उसके बाद हमारी मुलाक़ात फिर शाम ही को शराबखाने में हुई।"

"लेकिन आख़िर में आपने बटुआ कुर्सी के नीचे से उठा तो लिया था न ?"

"जी नहीं, वह उसी रात कुर्सी के नीचे से ग़ायब हो गया।"

"तो अब कहाँ है वह ?"

"अरे, साहब, यह रहा।" लेबेदेव कुर्सी पर से उठते हुए और प्रिंस को बड़ी खुशमिजाजी से एकटक देखते हुए अचानक हँसा। "यकायक यह यहाँ बरामद हुआ, मेरे कोट के दामन के अन्दर। यह रहा, साहब, देखिए। टटोलकर देखिए।"

और, सचमुच, उनके कोट के बाएँ दामन में एक उभार-सा था जो ऊपर से साफ़ दिखाई देता था, और उसे बस छूते ही पता चल जाता था कि यह चमड़े का बटुआ था जो फटी हुई जेब में से अन्दर गिर गया था।

"ख़ैर, साहब, मैंने उसे निकालकर देखा सब कुछ मौजूद था। तो मैंने उसे वापस वहीं डाल दिया और कल सबेरे से मैं उसे अपने कोट के दामन के अन्दर लिए फिर रहा हूँ। वह मेरी टाँगों से टकराता है, सच कहता हूँ, साहब !"

"और आप उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देते ?"

"जी नहीं, मैं उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता, हः-हः ! और ज़रा सोचिए, मेरे प्यारे प्रिंस, हालाँकि इतनी छोटी-सी बात आपके ध्यान देने के योग्य नहीं—मेरी जेबों में कभी कोई सूराख नहीं रहता, और अचानक एक रात में इतना बड़ा सूराख हो गया ! मैंने बहुत ग़ौर से उसकी जाँच की, मुझे तो ऐसा लगता है कि जैसे किसी ने उसे क़लमतराश चाक़ू से काटा हो। यक़ीन नहीं आता, है न ?"

"और...जनरल साहब ?"

"वह सारे दिन मुझसे बिफरे रहे—कल और आज। किसी बात पर बेहद नाराज़ मालूम होते थे।...एक क्षण बेहद मस्त और नशे में चूर शराबियों की तरह हो जाते, चिकनी-चुपड़ी बातें भी करने लगते, और दूसरे ही क्षण भावुक होकर आँसू बहाने लगते, और फिर अचानक उनका गुस्सा इतने ज़ोर से भड़क उठता कि मुझे तो बहुत डर लगता है...क़सम खाकर कहता हूँ; बहरहाल, प्रिंस, मैं कोई फौज़ी आदमी तो हूँ नहीं। कल हम लोग एक शराबखाने में बैठे थे, और मानो अचानक मेरे कोट का दामन ठीक उनकी आँख के सामने आ गया—इतना बड़ा और साफ़ जैसे पहाड़। वह कनखियों से उसे देखते रहे, इतना गुस्सा आया उन्हें कि बस ! इधर काफ़ी अर्से से वह मुझसे आँख नहीं मिलाते हैं, अलावा उस वक़्त के जब वह बहुत ज़्यादा पिए होते हैं, या भावुक होते हैं, लेकिन कल उन्होंने मुझे दो बार ऐसी भयानक नज़रों से घूरकर देखा कि मेरी पीठ पर ऊपर से नीचे तक सिहरन की लहर दौड़ गई। हालाँकि कल मेरा इरादा अपना बटुआ खोज निकालने का है, लेकिन उससे पहले मैं उनके साथ एक और शाम हँसी-खुशी बिताना चाहता हूँ।"

"आप उन्हें इस तरह सता क्यों रहे हैं ?" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा।

"मैं उन्हें सता नहीं रहा हूँ, प्रिंस, मैं उन्हें सता बिलकुल नहीं रहा हूँ," लेबेदेव बड़े जोश से बोला। "मैं सचमुच उन्हें बहुत प्यार करता हूँ और...उनकी बड़ी इज़्ज़त करता हूँ, साहब। और आप

यक़ीन करें या न करें, अब तो वह मुझे पहले से भी ज़्यादा प्यारे लगने लगे हैं। जी हाँ, अब मैं उनकी पहले से ज़्यादा क़द्र करने लगा हूँ।"

लेबेदेव ने यह सब कुछ इतनी गम्भीरता और इतने सच्चे हृदय से कहा कि प्रिंस को बेहद गुस्सा आया।

"आप उनको प्यार करते हैं और उन्हें इस तरह सताते हैं ! अरे, खोई हुई रक़म कुर्सी के नीचे और आपके कोट के अन्दर रखकर, जहाँ वह आपको आसानी से मिल जाए, सिर्फ़ इसी बात से वह साफ़-साफ़ बता रहे थे कि वह आपसे चालाकी का बर्ताव नहीं करना चाहते और खुले दिल से आपसे माफ़ी माँग रहे हैं। इसका मतलब है कि वह आपकी व्यवहारकुशलता पर भरोसा कर रहे थे। इसलिए उनके साथ आपकी दोस्ती पर भी उन्हें विश्वास होगा। और आपको ऐसे...बेहद ईमानदार आदमी का अपमान करने में ज़रा भी संकोच नहीं होता !"

"बेहद ईमानदार, प्रिंस, बेहद ईमानदार !" लेबेदेव ने बिजली की तरह चमकती हुई आँखों से उसके शब्दों को दोहराया। "और आप जैसा आदमी ही, मेरे बेहद उदार प्रिंस, ऐसी सच्ची बात कह सकता है ! इसीलिए तो मैं आपका भक्त हूँ—इसीलिए तो मैं, जो हर तरह की बुराइयों की वजह से बिलकुल सड़ चुका हूँ, आपको पूजता हूँ ! बस, अब तै हो गया ! मुझे अपना बटुआ कल नहीं बल्कि अभी, इसी क्षण मिल जाएगा। यह लीजिए, साहब, मैं आपकी आँखों के सामने इसे बाहर निकाले लेता हूँ। यह रहा बटुआ और यह रही रक़म, सारी की सारी ज्यों की त्यों। इसे ले लीजिए, मेरे बेहद उदार प्रिंस, इसे ले लीजिए और कल तक अपने पास रखिए। मैं कल या परसों आकर ले लूँगा। और, प्रिंस, पहली रात जब वह रक़म खोई थी तब यह मेरे बाग़ में किसी पत्थर के नीचे पड़ी रही होगी। क्या ख़्याल है आपका ?"

"अच्छा, देखिए, सीधे-सीधे उनके मुँह पर न कह दीजिएगा कि बटुआ आपको मिल गया है। बस, उन्हें खुद देख लेने दीजिए कि आपके कोट के दामन में कुछ भी नहीं है। वह समझ जाएँगे।"

"आप ऐसा समझते हैं ? क्या यह बेहतर न होगा कि मैं उन्हें बता दूँ कि वह मुझे मिल गया है और यह जताऊँ कि मुझे कोई भी अन्दाजा नहीं था कि अब तक वह कहाँ था ?"

"न-नहीं," प्रिंस ने एक क्षण सोचने के बाद कहा। "नहीं, अब इसके लिए बहुत देर हो चुकी है। यह ज़्यादा खतरनाक होगा। इसके बारे में कुछ न कहना ही बेहतर होगा, मेरी बात मानिए ! और उनके साथ नरमी से पेश आइएगा, लेकिन...लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा भी नरमी न दिखाइएगा और...और...देखिए..."

"मैं जानता हूँ, प्रिंस, मैं जानता हूँ। मेरा मतलब है, मैं जानता हूँ कि शायद मैं ऐसा कर नहीं पाऊँगा, क्योंकि ऐसा करने के लिए आप जैसा दिल होना चाहिए। और, इसके अलावा, वह चिड़चिड़े हो गए हैं और बहुत आसानी से भावनाओं में बह जाते हैं। इधर कुछ दिनों से वह मेरे साथ कभी-कभी बहुत नफ़रत से पेश आने लगे हैं। एक क्षण वह मेरे सामने गिड़गिड़ाने लगते हैं और मुझे गले लगाने लगते हैं, और फिर अचानक वह मेरा अपमान करने लगते हैं और तिरस्कार से मुझ पर ताने देने लगते हैं। अच्छा, तो मैं जान-बूझकर उन्हें बस अपने कोट का दामन दिखा दूँगा, समझ गए न, हः-हः ! अच्छा मैं चला, प्रिंस, क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि मैंने आपको बेकार रोक रखा है और, एक तरह से, मैं आपकी सबसे दिलचस्प भावनाओं के रास्ते में बाधा डाल रहा हूँ।..."

"लेकिन भगवान के लिए पहले की तरह ही इसे गुप्त ही रखना !"

"बहुत नरमी से, साहब, बहुत नरमी से।..." "चुपके से, चुपके से।..."

हालाँकि सारा मामला तै हो गया था लेकिन प्रिंस पहले से ज़्यादा चिन्तित-सा था। वह अगले दिन सबेरे जनरल साहब के साथ होनेवाली अपनी मुलाक़ात का इन्तज़ार कर रहा था।

4

मुलाक़ात के लिए बारह बजे का वक़्त तै किया गया था, लेकिन प्रिंस को देर हो गई, जिसकी उससे बिलकुल उम्मीद नहीं की जाती थी। घर लौटने पर उसने देखा कि जनरल साहब उसकी राह देख रहे थे। उसने फ़ौरन देख लिया कि जनरल साहब नाराज़ थे, और शायद बस इसलिए कि उन्हें इन्तज़ार करना पड़ा था। प्रिंस माफ़ी माँगकर जल्दी से बैठ गया; लेकिन न जाने क्यों वह कुछ अजीब डरा-डरा-सा महसूस कर रहा था जैसे उसका मेहमान चीनी मिट्टी का बने हो और उसे हर क्षण डर लगा रहा हो कि कहीं वह उन्हें तोड़ न दे। इससे पहले वह जनरल साहब के सामने कभी इतना दब्बू नहीं महसूस करता था, और ऐसा महसूस करने की बात कभी उसके दिमाग़ में आई भी नहीं थी। जल्दी ही प्रिंस ने देखा कि वह अब वैसे बिलकुल नहीं रह गए थे जैसे कि वह परसों थे : उलझन और ख़ुशगुफ़्तारी का शिकार होने के बजाय वह बिलकुल असाधारण रूप से संयमित थे; उन्हें देखकर ऐसा लग सकता था कि वह ऐसे आदमी थे जिसने अपना इरादा पक्का कर लिया हो। पर उनका संयम उतना वास्तविक नहीं था जितना देखने में लगता था। बहरहाल, प्रिंस के मुलाक़ाती बिलकुल बेतकल्लुफ़ महसूस कर रहे थे, हालाँकि संयमित गरिमा के साथ। सच तो यह है कि शुरू में वह प्रिंस के साथ कुछ चढ़कर पेश आए; स्वाभिमानी लोग जिनका अनुचित अपमान किया गया हो, कभी कभी बड़ी बेतकल्लुफ़ी का बर्ताव करते हैं। वह बड़ी नरमी से बोल रहे थे, लेकिन उनकी आवाज़ में कुछ कुछ उदासी भी थी।

"वह किताब जो मैं उस दिन आपसे माँगकर ले गया था," उन्होंने अर्थपूर्ण ढंग से अपनी लाई हुई किताब की तरफ़ इशारा करके कहा जो मेज़ पर पड़ी हुई थी। "आपका शुक्रिया।"

"अरे, हाँ। लेख पढ़ डाला, जनरल साहब ? कैसा लगा ? दिलचस्प है न ?" प्रिंस ने इस पर खुश होकर कहा कि उसे अपनी बातचीत का सिलसिला एक ऐसे विषय से शुरू करने का अवसर मिला था जिसका उनके असली काम से कोई सम्बन्ध नहीं था।

"मेरे ख़्याल से दिलचस्प तो है, लेकिन साथ ही कुछ भोंडा भी है और, ख़ैर, बेतुका तो है ही। मुझे ताज्जुब न होगा अगर यह सारे का सारा झूठ हो।"

जनरल साहब बड़े रोब से, यहाँ तक कि अपने शब्दों को खींच-खींचकर भी बोल रहे थे।

"देखिए, यह बिलकुल बे-लाग कहानी है; एक बूढ़े सिपाही की कहानी जिसने मास्को पर फ्रांसीसियों का कब्जा अपनी आँखों से देखा था। कुछ बातें पढ़कर बहुत मज़ा आता है। और फिर हर आँखों-देखा वृत्तान्त बहुमूल्य होता है, वह चाहे जिस आदमी का हो। क्या ख़्याल है आपका ?"

"अगर मैं सम्पादक होता तो मैं इसे कभी न छापता। जहाँ तक आमतौर पर आँखों-देखे वृत्तान्तों का सवाल है, लोग एक ऐसे सम्मानित आदमी के मुकाबले जो बहुत बड़ी-बड़ी सेवाएँ कर चुका हो, भोंडे लेकिन दिलचस्प झूठे पर ज़्यादा आसानी से यक़ीन कर लेंगे। मुझे सन् 1812 के कुछ अनुभव मालूम हैं जो...मैंने फ़ैसला कर लिया है, प्रिंस, मैं यह घर छोड़कर चला जाऊँगा—लेबेदेव साहब का घर !"

जनरल साहब ने अर्थपूर्ण दृष्टि से प्रिंस को देखा।

"पाव्लोव्स्क में आपकी अपनी रहने की जगह है...यानी...यानी अपनी बेटी के यहाँ।..." प्रिंस

ने कुछ और समझ में न आने पर कहा। उसे याद आया कि जनरल साहब किसी ऐसे ज़रूरी मामले के बारे में सलाह लेने आए थे जिस पर उनकी क़िस्मत के फैसले का दारोमदार था।

"अपनी बीवी के यहाँ, साहब। यानी, अपने घर में और अपनी बेटी के मकान में।"

"माफ़ कीजिएगा, मैं।..."

"मैं लेबेदेव का घर छोड़कर जा रहा हूँ, प्रिंस, क्योंकि मेरी उस आदमी से अनबन हो गई है। कल रात मैंने उससे नाता तोड़ लिया, और मुझे अफ़सोस तो इस बात का है कि मैंने ऐसा पहले ही क्यों नहीं कर लिया। मैं चाहता हूँ कि मेरे साथ इज़्ज़त का बर्ताव किया जाए, और मैं उन लोगों तक से इज़्ज़त पाने की उम्मीद रखता हूँ जिन्हें मैं, यों समझ लीजिए, मैं अपना दिल भी दे देता हूँ। प्रिंस, मैं अकसर लोगों पर अपना दिल लुटा बैठता हूँ, और लगभग हमेशा ही मुझे धोखा दिया जाता है। वह आदमी इस तोहफ़े के लायक़ नहीं था।"

"उनमें कुछ गड़बड़ी तो है," प्रिंस ने पहलू बचाकर अपना मत व्यक्त किया, "कुछ और लक्षण भी हैं।...उन सबमें नेक दिल की और चालाकी-भरे लेकिन साथ ही कभी-कभी कुछ दिलचस्प दिमाग़ की झलक भी मिलती है।"

चुने हुए शब्दों के इस प्रयोग और सम्मानपूर्ण स्वर से जनरल साहब स्पष्टतः बहुत खुश हुए, हालाँकि अब भी वह कभी-कभी प्रिंस को अचानक अविश्वास की दृष्टि से देख लेते थे। लेकिन प्रिंस का स्वर इतना स्वाभाविक और निष्कपट था कि उसके बारे में किसी तरह की शंका असम्भव थी।

"यह बात कि उसमें कुछ खूबियाँ हैं," जनरल साहब ने जल्दी से कहा, "सबसे पहले मैंने ही कही थी, जब मैंने उस शख़्स को अपनी दोस्ती लगभग बख़्शी थी। लेकिन मेरा अपना परिवार है, मुझे उसके घर और उसकी मेहमानदारी की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं अपनी कमजोरियों को ठीक नहीं कहता। मैं संयमी नहीं हूँ; मैंने उसके साथ शराब पी है और अब शायद मुझे इस बात का अफ़सोस है। लेकिन मैंने सिर्फ़ शराब की खातिर तो उससे दोस्ती नहीं की थी न ? (प्रिंस, मेहरबानी करके एक ऐसे आदमी को जो गुस्से से भरा बैठा है साफ़ बात कहने का भोंडापन माफ़ कर दीजिए।) मुझे जो चीज़ अच्छी लगी थी वह, जैसा कि आप कहते हैं, उसकी खूबियाँ ही थीं। लेकिन हर चीज़ की एक हद होती है। अगर वह मेरे मुँह पर मुझसे यह कहने की ढिठाई करे कि जब वह बच्चा था तो 1812 में उसकी बाईं टाँग कट गई थी और उसने उसे मास्को के एक कब्रिस्तान में दफ़न कर दिया था, तो यह तो हद से आगे बढ़ जाना है, इसका मतलब तो है कि वह मेरी इज़्ज़त नहीं करता और गुस्ताख़ है।..."

"शायद वह हँसी-मज़ाक़ की बात थी।"

"मैं समझा, साहब। हँसी-मज़ाक़ के लिए बोला गया भोलेपन का झूठ भोंडा तो हो सकता है, लेकिन वह आदमी का दिल नहीं दुखाता। कुछ लोग सिर्फ़ दोस्ती की वजह से झूठ बोलते हैं—मेरा मतलब है, उन दोस्तों को खुश करने के लिए जिनसे वे बात कर रहे होते हैं; लेकिन, जनाब, अगर उसमें बेअदबी की ज़रा-सी भी झलक हो, अगर इस तरह की बेअदबी की वजह से आपका दोस्त आपको शायद यह बता देना चाहे कि वह आपकी दोस्ती से तंग आ चुका है, तो शरीफ़ आदमी के लिए इसके अलावा कोई चारा नहीं रह जाता कि वह अपना मुँह फेर ले और नाता तोड़ ले और इस तरह यह अपमान करनेवाले को उसकी असली जगह बता दे।"

बोलते-बोलते जनरल साहब का चेहरा लाल होता गया।

"लेकिन 1812 में तो लेबेदेव मास्को में हो ही नहीं सकते थे। अभी तो उनकी उम्र ही इतनी

नहीं है। यह तो सरासर बेतुकी बात है !"

"यह तो और पागली बात है। लेकिन अगर मान भी लिया जाए कि वह उस वक़्त पैदा हो चुका था, तब भी वह मेरे मुँह पर मुझे यह यक़ीन कैसे दिला रहा था कि एक फ़ांसीसी गोलंदाज ने उसे मज़ा लेने के लिए उस पर तोप का निशाना साधा और उसकी टाँग उड़ा दी; और इतना ही नहीं, बल्कि यह भी कि वह अपनी टाँग उठाकर अपने साथ घर ले गया और बाद में उसे एक कब्रिस्तान में दफ़न कर दिया। अरे, वह तो यहाँ तक दावा करता है कि उसने उसके ऊपर एक स्मारक बनवा दिया है, जिसके एक ओर अंकित है—'यहाँ चिरनिद्रा में लीन है कॉलिजिएट सेक्रेटरी लेबेदेव की टाँग', और दूसरी ओर, 'प्रिय अस्थि-पुष्पो, शान्ति से विश्राम करो, उल्लसित प्रभात होने तक', और आख़िरी बात यह कि वह बाक़ायदा उसके शोक में गिरजाघर में प्रार्थना करवाता है (जो धर्म को अपवित्र करने के अलावा और कुछ नहीं है) और यह कि इस मौक़े पर हर साल मास्को जाता है। और इस बात को साबित करने के लिए वह मुझे अपने साथ मास्को ले चलने को कहता है, जहाँ वह अपनी टाँग का मकबरा और क्रेमलिन में वही तोप दिखाने का वादा करता है जो फ़ांसीसियों से छीन ली गई थी। वह मुझे यक़ीन दिलाता है कि फाटक से ग्यारहवीं पुराने डिजाइन की तोप वही है !"

"फिर भी उनकी दोनों टाँगें मौजूद हैं जैसा कि सभी देखते हैं !" प्रिंस ने हँसते हुए कहा। "मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि यह एक सीधा-सादा मज़ाक़ है। आप नाराज़ बेकार होते हैं।"

"लेकिन, साहब, इसके बारे में मैं अपनी राय बरकरार रखना चाहता हूँ; उसकी दोनों टाँगें सही-सलामत होने के बारे में, जिन्हें सब लोग देखते हैं, साहब, यह बात ऐसी नामुमकिन नहीं है। वह मुझसे कहता है कि उसने अपनी टाँग चेर्नोस्वीतोव के यहाँ बनवाई थी।..."

"अच्छा, यह बात है। मैंने तो सुना है कि चेर्नोस्वीतोव की बनाई हुई टाँग लगाकर आदमी नाच तक सकता है।"

"यह तो मुझे अच्छी तरह मालूम है, साहब। जब चेर्नोस्वीतोव ने अपनी यह टाँग ईजाद की थी तो सबसे पहला काम उसने यही किया था कि उसे दिखाने के लिए भागकर मेरे पास आया था। लेकिन चेर्नोस्वीतोव की टाँग बहुत बाद में आकर ईजाद हुई।...इसके अलावा, वह मुझसे कहता है कि उसके पूरे विवाहित जीवन में उसकी स्वर्गीया पत्नी को यह पता नहीं चला कि उसकी, यानी उसके पति की, एक टाँग लकड़ी की है। 'अगर तुम,' वह मुझसे कहता है, 'अगर तुम 1812 में नेपोलियन के पेज-ब्वाय होते तो तुम भी मुझे मास्को के कब्रिस्तान में अपनी टाँग दफ़न करने की इजाज़त दे देते।' "

"लेकिन क्या आप..." प्रिंस ने कहना शुरू ही किया था लेकिन अटपटा महसूस करते हुए रुक गया।

जनरल साहब प्रिंस को खुले श्रेष्ठता के भाव से और लगभग उपहास की दृष्टि से देख रहे थे।

"कहिए, कहिए, प्रिंस," उन्होंने बड़े सुचारु रूप से शब्दों को खींच-खींचकर कहा, "आप जो कहना चाहते थे उसे पूरा कर दीजिए। मैं ज़रा भी बुरा नहीं मानूँगा। मुझे सब कुछ बता दीजिए—साफ़-साफ़ मान लीजिए कि यह बात आपको बहुत ही बेतुकी मालूम होती है। मेरा मतलब है यह विचार कि आप अपने सामने एक आदमी को उसके पतित और...नाकारा हाल में देख रहे हैं, और साथ ही, साहब, आप यह भी सुनते हैं कि यह आदमी अपनी आँखों से ऐतिहासिक घटनाओं को देख चुका है।...वह आपको मेरे बारे में शर्मनाक किस्से तो नहीं सुनाता रहा है ?"

"जी नहीं, मुझे लेबेदेव से कुछ भी मालूम नहीं हुआ है, अगर आप लेबेदेव की चर्चा कर रहे हैं।..."

"कुछ और ही समझा था। सच तो यह है कि कल हमारी यह सारी बातचीत इस...विचित्र लेख के सिलसिले में शुरू हुई थी। मैंने उसके बेतुकेपन पर टिप्पणी की थी, और चूँकि मैं ख़ुद अपनी आँख से देख चुका हूँ...आप मुस्करा रहे हैं, प्रिंस, आप मेरी सूरत देख रहे हैं ?"

"न-नहीं, मैं तो..."

"मैं देखने में कुछ कम उम्र का लगता हूँ," जनरल साहब ने शब्दों को खींच-खींचकर कहा, "लेकिन मेरी उम्र जितनी लगती है उससे कहीं ज़्यादा है। 1812 में मैं दस-ग्यारह साल का था। मुझे खुद अपनी उम्र का कुछ ठीक से पता नहीं हैं। दस्तावेजों में मेरी उम्र कुछ कम लिखी है; जीवन-भर मेरी यह कमज़ोरी रही है कि मेरी उम्र जितनी है उससे कम बताऊँ।"

"मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ, जनरल साहब, कि मुझे यह बात बिलकुल अजीब नहीं लगती कि 1812 में आप मास्को में रहे हों और...ज़ाहिर है, आप हम लोगों को बता सकते हैं...उतनी ही अच्छी तरह जितना कि उस वक़्त वहाँ मौजूद कोई भी दूसरा आदमी बता सकता है। हमारे एक लेखक ने अपनी आत्मकथा इस तरह शुरू की है कि 1812 में मास्को में जब वह गोद का बच्चा था तब फ्रांसीसी सिपाही उसे रोटी खिलाते थे।"

"बस, आप ही देखिए," जनरल साहब ने अनुग्रहपूर्वक अपना अनुमोदन व्यक्त किया। "मेरा मामला साधारण से कुछ हटकर है, लेकिन उसमें कोई अद्‌भुत बात नहीं है। सच्चाई अकसर अनहोनी मालूम होती है। पेज-ब्वाय ! मैं मानता हूँ कि बात कुछ अजीब ज़रूर मालूम होती है। लेकिन दस साल के लड़के ने जो कारनामा कर दिखाया उसकी वजह शायद उसकी उम्र थी। मैं उस वक़्त अगर पन्द्रह साल का होता तो मेरे साथ इस तरह की कोई बात न होती, बेशक क्योंकि अगर मैं पन्द्रह साल का होता तो मैं अपने लकड़ी के घर से उसी दिन भाग नहीं गया होता जिस दिन नेपोलियन ने मास्को में क़दम रखा था। और मैं अपनी माँ के पास से भाग गया होता, जिन्हें मास्को से भाग निकलने में बहुत देर हो गई थी और जो डर के मारे थरथर काँप रही थीं। अगर मैं पन्द्रह साल का होता तो मुझे भी डर लगता, लेकिन चूँकि मैं सिर्फ़ दस साल का था इसलिए मुझे किसी बात से डर नहीं लगता था और मैं भीड़ को चीरता हुआ ठीक उस समय महल के फाटक पर जा पहुँचा जब नेपोलियन अपने घोड़े से उतर रहा था।"

"आपका यह कहना बिलकुल ठीक है कि दस ही बरस के लड़के को डर नहीं लगता," प्रिंस ने हिचकते हुए और इस बात से चिन्तित होकर सहमति प्रकट की कि उसका चेहरा किसी भी क्षण लाल हो जाएगा।

"बेशक, साहब, और सब कुछ इतने सीधे-सादे और स्वाभाविक ढंग से हुआ जैसे ज़िन्दगी में होता है। अगर किसी उपन्यास लिखनेवाले ने इसे बयान करने की कोशिश की होती तो उसने दुनिया-भर की बेतुकी और अनहोनी घटनाएँ गढ़ी होतीं।"

"हाँ, यह तो सच है !" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा। "अभी हाल ही में यही बात मेरे दिमाग़ में भी आई थी। मुझे एक असली घटना मालूम है जिसमें एक घड़ी के पीछे ख़ून कर दिया गया था–अब तो वह अखबारों में भी छप चुकी है। अगर किसी उपन्यास लिखनेवाले ने इस घटना को अपने मन में गढ़ा होता तो आलोचक और हमारे साधारण लोगों के जीवन के विशेषज्ञ फ़ौरन चिल्ला पड़ते कि यह अनहोनी बात है। लेकिन जब आप अखबारों में पढ़ते हैं कि इस तरह की घटनाएँ सचमुच होती हैं तब आप यह महसूस करने पर मजबूर हो जाते हैं कि इस तरह की घटनाओं से

रूसी जीवन को अन्दर गहराई तक समझने में मदद मिलती है। आपकी नज़र बहुत पैनी है, जनरल साहब !" प्रिंस ने बड़े जोश से अपनी बात समाप्त करते हुए कहा; वह इस बात पर बेहद खुश था कि उसे अपने आपको शर्माने से बचाने का मौक़ा मिल गया।

"ठीक है ! ठीक है !" जनरल साहब चिल्लाए और उनकी आँखें खुशी से चमक उठीं। "एक छोटा-सा लड़का, बिलकुल बच्चा, जो ख़तरा समझता नहीं, शाही जुलूस की तड़क-भड़क, वर्दियों, सम्राट् के साथ चलनेवाले मुसाहिबों और अन्त में उस महापुरुष को खुद देखने के लिए जिसके बारे में उसने लोगों को इतनी बातें करते हुए सुना था, भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ता जाता है। क्योंकि उस जमाने में लोग बरसों से इसी की चर्चा करते रहे थे। उसका नाम सारी दुनिया में गूँज रहा था; यों समझ लीजिए कि मैंने यह नाम माँ के दूध के साथ पिया था। मुझसे कुछ ही फुट की दूरी पर गुजरते हुए नेपोलियन मेरी नज़र की पकड़ में आ गया। मैं शरीफ़ज़ादे जैसे कपड़े पहने था—मुझे कपड़े हमेशा अच्छे पहनाए जाते थे। उस भीड़ में मैं अकेला ऐसा था, यह तो आप मान ही लीजिए।..."

"यक़ीनन इस बात का उस पर बहुत गहरा असर पड़ा होगा और उसकी नज़रों में यह साबित हो गया होगा कि हर आदमी मास्को छोड़कर भाग नहीं गया था, और यह कि वहाँ अब भी कुछ अमीर-उमरा अपने बच्चों के साथ मौजूद थे।"

"बिलकुल, बिलकुल ! वह बोयारों[1] को अपने पक्ष में करना चाहता था। जब उसने अपनी उकाबी नज़र मुझ पर डाली, तो उसके जवाब में मेरी आँखों में भी बिजली जैसी चमक आ गई होगी। 'Voil'a un garcon bien e'veill'e ! Qui est+ ton pe're?[2] मैंने उत्कंठा से लगभग हाँपते हुए तुरन्त जवाब दिया—'जनरल थे जो अपने देश के लिए लड़ते हुए मारे गए।'—'Le fils d'un boyard et d'un brave par-dessus le march'e ! J'aime les boyards. M'aimes-tu, petit?'[3] जल्दी-जल्दी पूछे गए इस सवाल का जवाब भी मैंने उतनी ही जल्दी-जल्दी दिया—'रूसी दिल उसके देश के दुश्मन में भी महापुरुष को पहचान लेता है !' मेरा मतलब है कि सच पूछिए तो मुझे यह तो याद नहीं कि मैंने ठीक यही शब्द इस्तेमाल किए थे या नहीं...तब मैं बच्चा था...लेकिन उनका मतलब यही था ! नेपोलियन दंग रह गया, उसने एक क्षण सोचा और फिर अपने मुसाहिबों से कहा : 'मुझे इस लड़के का स्वाभिमान अच्छा लगा ! लेकिन अगर सभी रूसी इसी बच्चे की तरह सोचते हों तो...' वह अपना वाक्य पूरा किए बिना ही महल में चला गया। मैं फ़ौरन उसके साथ चलनेवाले मुसाहिबों में मिल गया और उसके पीछे भागा। उसके मुसाहिबों ने फ़ौरन मेरे लिए रास्ता छोड़ दिया और मुझे कृपापात्र समझने लगे। लेकिन मेरा ध्यान इस पर नहीं गया।...मुझे बस इतना याद है कि जब नेपोलियन पहले कमरे में घुसा तो वह रूसी महारानी येकातेरीना की तस्वीर के सामने रुक गया, उसे विचारमग्न होकर बड़ी देर तक देखता रहा, और आख़िरकार बोला—'बहुत महान औरत थी !' और इतना कहकर आगे बढ़ गया। दो ही दिन में महल में सब लोग मुझे जान गए और मुझे ' 'le petit boyard'[4] कहने लगे। मैं बस सोने के लिए घर जाता था। घर पर सब लोग लगभग दीवाने हो गए। दो ही दिन बाद नेपोलियन का पेज-ब्वाय बैरन द बज़ंकूर इस क़ूच की कठिनाइयाँ न झेल सकने की वजह से मर गया। नेपोलियन को मेरी याद आई। मुझे कुछ बताए बिना महल

1. प्राचीन काल और मध्ययुग में रूस के बड़े ज़मींदार, जिनका सम्बन्ध शासक वर्ग के उच्च स्तर से था।
2. कैसा चुस्त लड़का है ! तुम्हारा बाप कौन है ? (फ़्रांसीसी)
3. बोयार का बेटा और ऊपर से बहादुर बाप का। मुझे बोयार अच्छे लगते हैं। मैं तुम्हें अच्छा लगता हूँ, बच्चे ? (फ़्रांसीसी)
4. नन्हा बोयार। (फ़्रांसीसी)

में ले जाया गया; मुझे मरे हुए पेज-ब्वाय की वर्दी पहनाकर देखी गई, जो कोई बारह साल का लड़का था, और जब वे लोग मुझे वर्दी पहनाकर सम्राट् के सामने ले गए और उसने मेरी ओर देखकर सिर हिलाया तो मुझे बताया गया कि मुझे कृपादृष्टि के लायक़ समझा गया था और सम्राट् का पेज-ब्वाय बना दिया गया था। मैं बहुत खुश हुआ क्योंकि अर्से से मुझे वह बहुत अच्छा लगता था, और...फिर...इसके अलावा, इतना तो आप भी मानेंगे, वह तड़क-भड़कवाली वर्दी भी थी, जो एक बच्चे के लिए बहुत बड़ी चीज़ थी।...मुझे गहरे हरे रंग का फ्रॉक-कोट पहनाया गया जिसके पीछे दो लम्बे-लम्बे पल्ले थे; सुनहरे बटन, आस्तीनों पर लाल गोट के साथ सुनहरी कशीदाकारी, जरी की कढ़ाईवाला ऊँचा, सख़्त, खुला हुआ कॉलर और कोट के पल्लों पर कशीदाकारी; सफ़ेद मखमली चमड़े की कसी हुई बिरजिस, सफ़ेद रेशमी वास्कट, रेशमी मोजे, बकसुएदार जूते...और जब कभी नेपोलियन घुड़सवारी के लिए निकलता था और मैं उसके साथ चलनेवालों में होता था तो मैं लम्बे बूट पहनता था। हालाँकि फ़्रांसीसी सेना की हालत किसी भी तरह अच्छी नहीं कही जा सकती थी और अभी से बड़ी-बड़ी तबाहियों का खतरा दिखाई देने लगा था, लेकिन जहाँ तक हो सकता था शिष्टाचार पूरी तरह बरता जाता था, और सच तो यह है कि तबाही का अन्देशा जितना बढ़ता जाता था, उतनी ही सख़्ती से शिष्टाचार बरता जाता था।''

''जी हाँ, यक़ीनन,'' प्रिंस ने बेहद अटपटा महसूस करते हुए बुदबुदाकर कहा, ''आपकी आपबीती...बेहद दिलचस्प होगी।''

ज़ाहिर है, जनरल साहब वही सब कुछ दोहरा रहे थे जो वह परसों लेबेदेव को बता चुके थे, और इसलिए वह उसे धाराप्रवाह दोहरा रहे थे, लेकिन यहाँ पर पहुँचकर उन्होंने शंका के भाव से प्रिंस को कनखियों से देखा।

''मेरी आपबीती,'' उन्होंने दुगने गर्व से कहा, ''मैं अपनी आपबीती लिखूँ ? जी नहीं। मुझे इसका कोई लोभ नहीं है। अगर आप जानना ही चाहते हैं तो मेरी आपबीती लिखी जा चुकी है, लेकिन...लेकिन...वह मेरे मेज़ की दराज़ में पड़ी है। जब मैं क़ब्र में चला जाऊँगा तब वह छापी जाएगी और मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं है कि विदेशी भाषाओं में उसका अनुवाद होगा, इसलिए नहीं कि उसमें कोई साहित्यिक गुण है...जी नहीं...बल्कि उन महान ऐतिहासिक घटनाओं के महत्त्व की वजह से जिन्हें मैंने अपनी आँखों से देखा था, बचपन में ही सही; और सच पूछिए तो इसलिए और भी कि बच्चा होने के नाते उस 'महापुरुष' के शयन-कक्ष के, यों समझ लीजिए, अन्तरंग वातावरण तक मेरी पहुँच थी ! रात को मैं उस ''विपदा में महान'' आदमी की कराहें सुनता था, क्योंकि एक बच्चे के सामने कराहने और रोने में उसे तनिक भी लाज नहीं आती थी, हालाँकि मैं इस बात को समझने लगा था कि उसकी सारी विपत्तियों की वजह थी सम्राट् अलेक्सान्द्र की चुप्पी।''

''जी हाँ, उसने पत्र लिखे थे जिनमें...जिनमें शान्ति के सुझाव भेजे थे।...'' प्रिंस ने डरते-डरते सहमति प्रकट की।

''ख़ैर, सच तो यह है कि हमें मालूम नहीं कि उसने किस तरह के सुझाव भेजे थे, लेकिन वह लिखता रोज था, हर घड़ी लिखता था, एक के बाद एक पत्र लिखता रहता था ! वह बहुत उद्विग्न हो गया था। एक रात जब दोनों अकेले थे, मैं रोते-रोते लपककर उसके पास गया (उफ़, कितना प्यार था मुझे उससे !) : 'मेहरबानी करके, मेहरबानी करके, सम्राट् अलेक्सान्द्र से माफ़ी माँग लीजिए !' मैंने रो-रोकर कहा। देखिए, मुझे कहना चाहिए था—'सम्राट् अलेक्सान्द्र से सुलह कर लीजिए,' लेकिन बच्चा तो था ही मैं, जो बात मेरे मन में थी वह मैंने भोलेपन से कह दी।

'ओह, मेरे बच्चे,' उसने जवाब दिया—वह कमरे में इधर-उधर चहलक़दमी कर रहा था—'ओह, मेरे बच्चे,' ऐसा लगता था कि उस वक़्त इस बात की ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता था कि मैं बस दस साल का था और उसे मुझसे बातें करना बहुत अच्छा लगता था, 'अरे, मेरे बच्चे, सम्राट् अलेक्सान्द्र के तो मैं पाँव चूमने को तैयार हूँ, लेकिन जहाँ तक प्रशा के बादशाह का, आस्ट्रिया के सम्राट् का सवाल है, उफ़, उनके लिए तो मेरे दिल में कभी न मिटनेवाली नफ़रत के अलावा कुछ है ही नहीं और...और...लेकिन राजनीति के बारे में तो तुम कुछ जानते ही नहीं !' ऐसा लगा कि अचानक उसे याद आ गया कि वह किससे बातें कर रहा था और वह चुप हो गया, लेकिन उसकी आँखों में उसके बाद भी बहुत देर तक बिजली कौंधती रही। तो, साहब, अगर मैं इन सब बातों को बयान करूँ—और मैंने इससे बड़ी घटनाओं को भी अपनी आँखों से देखा है—अगर अब मैं उन्हें छपवा दूँ, तो वे सारे आलोचक, वे सारे घमण्डी साहित्यकार, वे सारी ईर्ष्याएँ, राजनीतिक पार्टियाँ, और...जी नहीं, मैं नहीं पड़ता इस चक्कर में !"

"पार्टियों के बारे में तो आपका कहना बिलकुल ठीक है, और मैं आपकी बात पूरी तरह मानता हूँ," प्रिंस ने थोड़ी देर रुककर शान्त भाव से कहा। "अभी कुछ दिन पहले मैंने वाटरलू की लड़ाई के बारे में शर्रास की लिखी हुई किताब पढ़ी। ज़ाहिर है कि बड़ी विद्वता-भरी कृति है और विशेषज्ञों का कहना है कि वह गहरी जानकारी के साथ लिखी गई है। लेकिन हर पन्ने पर आप महसूस कर सकते हैं कि नेपोलियन के पराभव पर लेखक किस तरह खुशी के मारे फूला नहीं समा रहा है, और अगर बाक़ी सभी अभियानों में भी नेपोलियन को सैन्य-प्रतिभा से वंचित करना सम्भव होता तो मुझे पूरा विश्वास है कि शर्रास बड़ी खुशी से ऐसा करता; और एक संजीदा किताब में यह कोई अच्छी बात नहीं है, क्योंकि यह पार्टीबाजी है। और आप सम्राट् की...मेरा मतलब है...सेवा में क्या बहुत व्यस्त रहते थे उस वक़्त ?"

जनरल साहब का दिल बाग़-बाग़ हो उठा। प्रिंस की इस बात ने, जो स्पष्टतः बिलकुल निष्कपट भाव से और सादगी से कही गई थी उनका रहा-सहा अविश्वास भी दूर कर दिया।

"शर्रास ! उफ़, कितना गुस्सा आया था मुझे भी ! उस वक़्त मैंने खुद उसे खत लिखा था, लेकिन...मेरा मतलब है...अब मुझे याद नहीं...आपने पूछा कि सेवा में क्या मैं बहुत व्यस्त रहता था ? अरे, नहीं ! मुझे बस पेज-ब्वाय कहा जाता था लेकिन उस वक़्त भी मैंने कभी संजीदगी से अपने आपको ऐसा समझा नहीं। उसके अलावा, नेपोलियन को बहुत जल्दी ही कोई उम्मीद बाक़ी नहीं रह गई कि वह रूसियों से घनिष्ठता स्थापित कर सकता है, और इसमें कोई शक नहीं है कि वह मुझे बिलकुल भूल ही गया होता, जिसे अपनी सेवा में रखने के पीछे उसके अपने ही राजनीतिक कारण थे, अगर...अगर उसे निजी तौर पर मुझसे बड़ा प्यार नहीं हो गया था, मैं इस बात को सीना ठोंककर कह सकता हूँ। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं बरबस उसकी ओर खिंचता था। मेरे जिम्मे कोई ख़ास काम नहीं थे। मुझे कभी-कभी महल में हाजिर होना पड़ता था और...नेपोलियन के साथ घुड़सवारी के लिए जाना पड़ता था...बस, इतना ही। मैं घुड़सवारी काफ़ी अच्छी कर लेता था ! वह दोपहर के खाने से पहले घुड़सवारी के लिए निकलता था, और उसके साथ चलनेवालों में आमतौर पर होते थे दावू, मैं और मम्लूक रूस्ताँ..."

"कांस्तां," प्रिंस की ज़बान से अनायास ही निकला।

"न-नहीं। कांस्तां तब वहाँ नहीं था। उन्हें एक खत लेकर भेज दिया गया था...महारानी जोज़ेफ़ीन के पास। लेकिन उसकी जगह दो अर्दलियों और कुछ पोलिस्तानी घुड़सवारों ने ले ली थी...तो, बस इतना ही अमल था, अलबत्ता, इसके अलावा वे जनरल और मार्शल तो थे ही जिन्हें

नेपोलियन इलाक़े का और फौज़ों की जमावट का मुआइना करने के लिए और उनसे सलाह-मशविरा करने के लिए अपने साथ ले जाता था।...दावू लगभग हमेशा ही उसके साथ रहता था। मुझे उसकी बहुत अच्छी तरह याद है : बड़े-से डील-डौल का, तगड़ा, ठण्डे दिमाग़ का आदमी, आँखों पर चश्मा और निगाह में एक विचित्र भाव। नेपोलियन किसी भी और के मुकाबले उसी से ज़्यादा सलाह मशविरा करता था। मुझे याद है कि वे कई दिन तक सलाह-मशविरा करते रहे थे। दावू सबेरे और शाम को आता था। अकसर उनकी आपस में बहस हो जाती थी। आख़िर में ऐसा लगता था कि नेपोलियन उसकी बात मानने लगा था। एक बार वे दोनों पढ़ने के कमरे में अकेले थे। तीसरा मैं था, लेकिन मेरी ओर उनका ध्यान ही नहीं थी। अचानक मुझ पर नेपोलियन की नज़र पड़ी और उसकी आँखें एक विचित्र विचार से चमक उठीं। 'बच्चे', उसने अचानक मुझसे कहा, 'तुम्हारा क्या ख़्याल है ? अगर मैं तुम लोगों के धर्म को मानने लगूँ और तुम लोगों के भू-दासों को आज़ाद कर दूँ, तो रूसी मेरी तरफ़ आ जाएँगे या नहीं ?' 'हरगिज़ नहीं !' मैंने गुस्से से चिल्लाकर कहा। नेपोलियन दंग रह गया। 'देशभक्ति से चमकती हुई इस बच्चे की आँखों में,' वह बोला, 'मैं पूरी रूसी जनता का फ़ैसला पढ़ सकता हूँ। बस, दावू ! यह सब कोरी कल्पनाएँ हैं ! अपनी दूसरी योजना सुनाओ।' "

"लेकिन उस योजना में भी बहुत जबर्दस्त विचार था !" प्रिंस ने कहा, उसे प्रत्यक्षतः दिलचस्पी पैदा हो गई थी। "तो आपका ख़्याल है कि यह योजना दावू की थी ?"

"कम से कम उन दोनों ने उस पर सलाह-मशविरा किया ही था। ज़ाहिर है, विचार तो नेपोलियन ही का था, उक़ाबी नज़र रखनेवाले का विचार, लेकिन दूसरी योजना में भी बहुत जबर्दस्त विचार था।...वह मशहूर 'conseil du lion'[1] थी, जैसा कि स्वयं नेपोलियन ने दावू की उस योजना को कहा था। उसका बुनियादी विचार यह था कि सारी फौज़ के साथ नेपोलियन क्रेमलिन में अपने आपको बन्द कर ले, वहाँ बैरकें बनाई जाएँ, क़िलेबन्दियाँ तैयार की जाएँ, तोपें लगा दी जाएँ और जितने घोड़े मुमकिन हों मारकर उनके गोश्त में नमक लगाकर रख दिया जाए; लूटकर और दूसरे तरीक़ों से जितना अनाज हो सके इकट्ठा कर लिया जाए, और वसन्त आने तक सारा जाड़ा वहाँ काट दिया जाए; और वसन्त में रूसी फौज़ों की मोर्चेबन्दी तोड़कर आगे बढ़ा जाए। नेपोलियन को यह विचार बहुत अच्छा लगा। हम लोग रोज घोड़ों पर सवार होकर क्रेमलिन की दीवारों के किनारे-किनारे चक्कर लगाते थे; वह बताता जाता था कि कहाँ से दीवार गिरा दी जाए, कहाँ मेहराबी रोशनदान और बाहरी दमदमे या चौकियाँ बनाई जाएँ—बस देखा, जल्दी से फ़ैसला किया और काम हो गया। आख़िरकार सब कुछ तै हो गया। दावू आख़िरी फैसले के लिए जिद करता रहा। एक बार फिर वे दोनों अकेले थे और तीसरा मैं था। एक बार फिर नेपोलियन कमरे में सीने पर हाथ बाँधे टहल रहा था। मैं उसके चेहरे पर से अपनी नज़रें किसी तरह हटा ही नहीं पा रहा था; मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था। 'मैं चला !' दावू ने कहा। 'नेपोलियन ने पूछा। 'घोड़ों के गोश्त में नमक लगवाने,' दावू ने कहा। 'कहाँ ?' नेपोलियन चौंक पड़ा—क़िस्मत का फ़ैसला हो रहा था। 'मेरे बच्चे,' वह अचानक मुझसे बोला, 'हमारी योजना के बारे में क्या ख़्याल है तुम्हारा ?' ज़ाहिर है, उसने मुझसे यह सवाल उसी तरह पूछा था जैसे कभी-कभी बेहद समझदार आदमी भी अन्तिम क्षण में हर बात का फ़ैसला इस पर छोड़ देता है कि सिक्का उछालकर देख लिया जाए कि वह किधर गिरता है। नेपोलियन का जवाब देने के बजाय मैं दावू की ओर मुड़कर मानो उत्प्रेरित होकर बोला, 'निकल जाओ यहाँ से, जनरल, अपने यहाँ जाओ !' योजना धरी रह गई। दावू ने

1. शेर की सलाह। (फ़्रांसीसी)

अपने कन्धे बिचकाए और बाहर जाते-जाते दबे स्वर में कहा, 'Bah ! Je devient superstititeux !'[1] और अगले दिन फ़ौजों को पीछे हटने का हुक्म दे दिया गया।"

"यह सारा क़िस्सा तो बहुत दिलचस्प है," प्रिंस ने बहुत धीमी आवाज़ में कहा, "अगर सचमुच ऐसा हुआ था...यानी मेरा मतलब है..." उसने जल्दी से अपनी बात ठीक की।

"अरे, प्रिंस !" जनरल साहब चिल्ला पड़े, जो अपने किस्से से इतने अभिभूत हो गए थे कि वह अपने आपको घोरतम अविवेक से रोक पाने में शायद असमर्थ रहे होंगे, "आप कहते हैं 'अगर सचमुच ऐसा हुआ था !' लेकिन हुआ तो इससे भी कहीं ज़्यादा था, मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ, इससे भी कहीं ज़्यादा ! ये सब तो बहुत ही छोटी-छोटी राजनीतिक बातें हैं। मैं एक बार फिर कहता हूँ कि रातों को मैंने उस महापुरुष के आँसू देखे हैं और कराहें सुनी हैं। मेरे अलावा यह किसी ने नहीं देखा है ! यह सच है कि बिलकुल आख़िर में उसने रोना बन्द कर दिया था, उसके आँसू ही नहीं रह गए थे, बस वह कभी-कभी कराह उठता था; लेकिन उसके चेहरे पर मानो दिन-ब-दिन ज़्यादा कालिमा छाती गई; ऐसा लगता था कि नियति अपने काले पंख फैलाए उसके ऊपर मँडराने लगी थी। कभी-कभी रात को हम लोग रातें चुपचाप अकेले बिता रहे थे—मम्लूक रूस्तां बग़लवाले कमरे में खर्राटे लेता रहता था—वह आदमी भी बला की गहरी नींद सोनेवाला था। 'लेकिन,' नेपोलियन उसके बारे में कहा करता था, 'वह मेरे और मेरे खानदान के तईं वफ़ादार है।' एक बार मैं बहुत दुःखी था, और सहसा नेपोलियन ने मेरी आँखों में आँसू देखे। उसने बहुत भाव-विचलित होकर मुझे देखा : 'तुम मेरे लिए दुःखी हो !' वह चिल्लाकर बोला। 'तुम, जो अभी बच्चे ही हो, और शायद एक और बच्चा मेरे लिए दुःखी होगा, मेरा बेटा, le roi de Rome[2]—बाक़ी सब लोग मुझसे नफ़रत करते हैं, सबके सब, और मुसीबत की घड़ी में सबसे पहले मेरे भाई ही मेरे साथ विश्वासघात करेंगे।' मैं फूट-फूटकर रोने लगा और उसकी तरफ़ लपका। उसका भी धैर्य टूट गया। हम एक-दूसरे के गले से लिपट गए और हमारे आँसुओं की धाराएँ एक-दूसरे में मिल गईं। 'लिखिए, महारानी जोज़ेफ़ीन को एक खत लिख दीजिए !' मैंने सिसक-सिसककर उससे कहा। नेपोलियन चौंक पड़ा, क्षण-भर कुछ सोचा और फिर मुझसे बोला, 'तुमने मुझे एक और ऐसे दिल की याद दिला दी है जो मुझसे प्यार करता है। शुक्रिया, मेरे दोस्त। यह कहकर उसने बैठकर जोज़ेफ़ीन को वह खत लिखा जो अगले दिन कासिदों के हाथ भेज दिया गया।"

"आपने बहुत अच्छा किया," प्रिंस ने कहा, "उनके दूषित विचारों के बीच आपने उनके अन्दर अच्छी भावना जागृत की।"

"जी हाँ, यह ठीक बात है, प्रिंस, और आपने इसे कितनी अच्छी तरह समझाया है जैसी कि आप जैसे नेक दिलवाले आदमी से उम्मीद की जाती है !" जनरल साहब भाव-विभोर होकर चिल्ला पड़े और विचित्र बात तो यह हुई कि उनकी आँखों में सचमुच के आँसू झलक उठे। "जी हाँ, प्रिंस, सच है, बहुत ही महान दृश्य था यह ! और जानते हैं आप, मैं तो उसके साथ पेरिस वापस जाते-जाते बस रह ही गया और, ज़ाहिर है, मुझे भी उसके साथ 'बेदीपन के उस तपते हुए द्वीप' में रख दिया जाता, लेकिन, अफ़सोस, क़िस्मत ने हम दोनों को एक-दूसरे से अलग कर दिया ! हम अपने अलग-अलग रास्तों पर चल पड़े : वह उस तपते हुए द्वीप की ओर, जहाँ गहरी उदासी के किसी क्षण में शायद उसने एक बेचारे छोटे-से लड़के के आँसुओं को याद किया होगा जो मास्को में उसके गले में लिपट गया था और जिसने उसे माफ़ कर दिया था; मुझे फ़ौजी स्कूल में भेज दिया गया

1. यह तो अन्धविश्वासी होता जाता है ! (फ़्रांसीसी)
2. रोम का राजा।.(फ़्रांसीसी)

जहाँ मुझे कुछ भी नहीं मिला अलावा फौज़ी क़वायद के, हूश साथियों के, और...अफ़सोस ! सब कुछ राख हो गया, सब धूल में मिल गया। 'मैं तुम्हें तुम्हारी माँ से अलग नहीं करना चाहता, मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले जाऊँगा !' जिस दिन उसकी फौजें पीछे हटने लगीं उस दिन उसने मुझसे कहा, 'लेकिन मैं तुम्हारे लिए कुछ करना चाहता हूँ।' वह अपने घोड़े पर सवार होने जा रहा था। 'मेरी बहन की एल्बम में निशानी के लिए कुछ लिख दीजिए।' मैंने शर्माते हुए कहा, क्योंकि वह बहुत चिन्तित और उदास लग रहा था। वह वापस लौट आया, क़लम मँगाया, और एल्बम मेरे हाथ से ले ली। 'कितनी बड़ी है तुम्हारी बहन ?' उसने क़लम साधकर पूछा। 'तीन साल की,' मैंने जवाब दिया। 'Petite fille alors,'[1] और इतना कहकर उसने जल्दी से एल्बम में लिख दिया—

Ne mentez jamais !

Napol'eon, votre ami sinc'ere.'[2]

ऐसे क्षण में ऐसी सलाह, ज़रा सोचिए, प्रिंस।"

"जी हाँ, कमाल की बात है !"

"एल्बम का वह पन्ना काँच के नीचे सुनहरे फ्रेम में जड़ा हुआ मेरी बहन के ड्राइंग-रूम में ऐसी जगह जिस पर सबकी नज़र पड़े उनके मरने के दिन तक टँगा रहा—उनकी मौत बच्चा जनने में हुई थी। अब वह कहाँ है यह तो मुझे मालूम नहीं...लेकिन...हे भगवान, दो बज चुके हैं ! मैंने आपका इतना वक़्त खराब किया, प्रिंस ! शर्म की बात है मेरे लिए ! माफ़ नहीं किया जा सकता।"

जनरल साहब कुर्सी से उठ खड़े हुए।

"अरे नहीं, बल्कि कुछ उल्टी ही बात है," प्रिंस ने बुदबुदाकर कहा, "आपकी बातों में मुझे बहुत मज़ा आया, और सचमुच, बहुत दिलचस्पी बातें थीं। मैं आपका बहुत एहसान मानता हूँ !"

"प्रिंस," जनरल साहब ने एक बार फिर उसका हाथ इतने ज़ोर से दबाते हुए कि दर्द होने लगा और चमकती हुई आँखों से उसे ग़ौर से देखते हुए इस तरह कहा मानो अचानक अपने आपको सम्भाल रहे हों और किसी आकस्मिक विचार से चौंक पड़े हों, "प्रिंस, आप इतने नेक हैं, इतने सीधे-सादे हैं कि कभी-कभी तो मुझे आप पर तरस आने लगता है। आपको देखकर मेरे दिल में प्यार उमड़ पड़ता है। भगवान आपको बनाए रखे ! भगवान करे आपके लिए एक नया जीवन शुरू हो और वह...प्रेम में फूले-फले। मेरा तो आख़िरी वक़्त आ गया है। मुझे माफ़ कर दीजिए, माफ़ कर दीजिए मुझे !"

दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँपकर वह जल्दी से बाहर चले गए। प्रिंस को उनकी उद्विग्नता की सच्चाई में कोई सन्देह नहीं था। उसने यह भी महसूस किया कि बड़े मियाँ अपनी सफलता पर बेहद खुश होकर गए थे; पर वह यह महसूस किए बिना भी न रह सका कि वह उस कोटि के झूठ बोलनेवालों में से थे, जो झूठ तो बहुत जोश के साथ बोलते हैं यहाँ तक कि उसके बहाव में अपने आपको भूल जाते हैं, लेकिन चरम हर्षातिरेक के क्षणों में उनके मन में यह शंका भी बनी रहती है कि उनकी बात पर विश्वास नहीं किया जा रहा है और यह भी कि उनकी बात पर विश्वास किया भी नहीं जा सकता। अपनी वर्तमान स्थिति में यह बिलकुल सम्भव था कि बुढ़ऊ के होश-हवास ठिकाने आ जाएँ, वह लज्जा में डूब जाएँ और प्रिंस पर सन्देह करने लगें कि वह उन पर बेहद तरस खा रहा था और अपमानित महसूस करें। "उन्हें इस हद तक प्रवाह में बह जाने का मौक़ा देकर क्या मैंने उससे भी बड़ी ग़लती नहीं की है ?" प्रिंस ने बेचैनी से अपने आपसे पूछा, और अचानक

१. अभी बच्ची ही है। (फ़्रांसीसी)

२. कभी झूठ न बोलना ! तुम्हारा सच्चा दोस्त नेपोलियन। (फ़्रांसीसी)

पक्का विश्वास हो गया था कि जब कोई आम बहस छिड़ जाती थी तो लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना जितना ही ज़्यादा जमकर और हठधर्मी से किसी विवादास्पद बात पर विरोध और आपत्तियाँ व्यक्त करती थीं उतने ही विश्वस्त रूप से यह उन सब लोगों के लिए इस बात का संकेत होता था कि शायद उस बात पर वह राज़ी होने लगी हैं। लेकिन अलेक्सान्द्रा पूरी तरह खामोश न रह सकी। बहुत पहले ही उसे अपना सलाहकार चुन लेने की वजह से माँ अब हर समय उसको बुलाती रहती थीं और उसकी राय पूछती रहती थीं, ख़ासतौर पर इस मामले में कि उसे क्या याद था—मतलब यह कि वह उससे चाहती थीं कि वह याद करने की कोशिश करे कि "यह सब कुछ कैसे हुआ था, और किसी को यह दिखाई क्यों नहीं दिया था, उस बेहूदा 'ग़रीब सूरमा' का क्या मतलब था, और आख़िर यह अकेले उन्हीं के, यानी वे लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना के हिस्से में क्यों आया था कि उन सबके बारे में वही परेशान होती रहें, कि हर चीज़ की ओर वही ध्यान दें, हर चीज़ को वही पहले से भाँपें, और बाक़ी सब लोग बस मुँह बाए खड़े रहें और कुछ न करें?" और इसी तरह की न जाने कितनी और बातें। शुरू शुरू में तो अलेक्सान्द्रा बहुत सावधान रही और उसने बस इतना कहा कि पापा का यह सोचना बहुत ग़लत नहीं था कि येपांचिन-परिवार की एक बेटी के लिए प्रिंस मीश्किन को वर के रूप में चुनना समाज की नज़रों में बहुत सन्तोषजनक ही होगा। धीरे-धीरे जब उसका जोश बढ़ने लगा तो उसने इतना और भी कहा कि प्रिंस 'बौड़म' क़तई नहीं है और कभी था भी नहीं, और रहा उसकी सामाजिक हैसियत का सवाल, तो कौन कह सकता है कि अब से कुछ साल बाद रूस में भले आदमी की सामाजिक हैसियत का दारोमदार सरकारी नौकरी में उसकी सफलता पर रह जाएगा, जिसे इस वक़्त इतना ज़रूरी समझा जाता है, या किसी और चीज़ पर होगा। इन सब बातों का जवाब माँ ने फ़ौरन पूरे यक़ीन के साथ दिया था कि अलेक्सान्द्रा "स्वच्छन्द विचारोंवाली है और यह सब कुछ उस कमबख़्त नारी समस्या का नतीजा था।" आधे घंटे बाद वह शहर चली गई और वहाँ से प्रिंसेस बेलोकोंस्काया से मिलने कामेन्नी द्वीप चली गई, जो सौभाग्य से अभी तक पीटर्सबर्ग में थीं, हालाँकि जल्दी ही जानेवाली थीं। प्रिंसेस अग्लाया की धर्ममाता थीं।

लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना की उन्माद भरी और निराशा में डूबी हुई बातें 'वृद्धा' ने बड़े ध्यान से सुनीं, लेकिन घबराई हुई माँ के आँसुओं से वह तनिक भी विचलित नहीं हुईं, बल्कि उल्टे उन्होंने उनको कुछ व्यंग से देखा। प्रिंसेस में हद दर्जे की निरंकुशता थी; वह अपनी किसी सहेली के साथ, पुरानी से पुरानी सहेली के साथ भी बराबरी का सलूक नहीं कर सकती थीं, और मिसेज़ येपांचिना को तो वह अब से पैंतीस साल पहले की तरह ही अपनी आश्रित समझती थीं, और वह उनके स्वभाव की आवेगशीलता और स्वतन्त्रता को कभी स्वीकार नहीं कर पाई थीं। लगे हाथ उन्होंने इतना कहा कि उन्हें "ऐसा लगता था कि हमेशा की तरह वे सब लोग घटनाओं से बहुत आगे निकल गए थे और यह कि उन्होंने तिल का ताड़ बना दिया था; कि मिसेज़ येपांचिना की बात पूरी कोशिश करके सुनने पर भी उन्हें विश्वास नहीं था कि सचमुच कोई गम्भीर बात हुई थी; कि जब तक सचमुच कुछ हो न जाए तब तक इन्तज़ार करना ही बेहतर होगा; कि उनकी राय में प्रिंस बीमार और कुछ सनकी और बहुत महत्त्वहीन होने के बावजूद भला नौजवान था। उसके बारे में सबसे बुरी बात यह थी कि उसने एक रखैल खुलेआम रख छोड़ी थी।" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना अच्छी तरह समझती थीं कि रादोम्स्की की असफलता पर प्रिंसेस कुछ खिन्न थीं, जिसका परिचय उन लोगों से उन्होंने ही कराया था। जब वह पाव्लोव्स्क लौटीं तो उससे ज़्यादा झुँझलाई हुई थीं जितना कि वह रवाना होने के वक़्त थीं, और उन्होंने पहुँचते ही सबको झाड़ना शुरू कर दिया,

ख़ासतौर पर इसलिए कि उन सबका "दिमाग़ ठिकाने नहीं था", कि अकेले उन्हीं के घर में ही ढंग से काम होता था। "आख़िर उन सबको ऐसी जल्दी क्या थी ? आख़िर ऐसा हुआ क्या था ? पूरी कोशिश करके ध्यान से देखने के बाद भी मैं इस नतीजे पर बिलकुल नहीं पहुँची कि ज़रूर कुछ हुआ था ! इन्तज़ार करो जब तक कुछ हो ! अगर जनरल येपांचिन को कोई बात लगी तो क्या हुआ ? तिल का ताड़ बनाने से फ़ायदा क्या ?" वगैरह-वगैरह।

मतलब यह था कि उन्हें बस करना यह था कि शान्त रहें, ठण्डे दिमाग़ में देखते रहें, और इन्तज़ार करते रहें। लेकिन, अफ़सोस, यह शान्ति दस मिनट से ज़्यादा नहीं रही। ठण्डे दिमाग़ पर पहली चोट तो उस घटना की ख़बर से लगी जो कामेन्नी द्वीप पर जाने के दौरान उनकी अनुपस्थिति में हुई थी। (मिसेज़ येपांचिना शहर उस रात के बादवाली सुबह को गई थीं जब प्रिंस नौ बजे के बजाय आधी रात के कुछ बाद आया था।) बहनों ने अपनी माँ के अधीर प्रश्नों का उत्तर बड़े विस्तार से दिया, सबसे पहले तो यह कि "लगता है कि उनके पीछे कोई ख़ास बात नहीं हुई थी," प्रिंस आया था, अग्लाया ने उसे कोई आधे घंटे तक इन्तज़ार कराया था, और फिर वह आई थी और उसने फ़ौरन प्रिंस से शतरंज की एक बाजी खेलने को कहा था; प्रिंस को कुछ भी पता नहीं था कि शतरंज खेली कैसे जाती है और अग्लाया ने उसे चुटकी बजाते हरा दिया था; कि वह बहुत जोश में थी और उसने प्रिंस से कहा था कि उसे शर्म आनी चाहिए कि उसे शतरंज खेलना नहीं आता और वह उस पर इतना हँसी थी कि प्रिंस को देखकर उस पर दया आती थी। फिर उसने ताश खेलने का सुझाव रखा और खेल का नाम था 'बेवक़ूफ़'। लेकिन वह खेल बिलकुल उल्टा पड़ा। मालूम यह हुआ कि प्रिंस 'बेवक़ूफ़' का खेल खेलने में चैंपियन था—कहना चाहिए कि वह इस खेल का उस्ताद था। वह बिलकुल माहिरों की तरह खेला। अग्लाया ने धोखा देने और पत्ते बदलने की लाख कोशिश की, यहाँ तक कि उसने उसकी आँख के सामने गड्डी में से पत्ते भी चुराए, लेकिन हर बार प्रिंस ने उसे 'बेवक़ूफ़' बना दिया—लगातार पाँच बार। अग्लाया को बेहद गुस्सा आया और वह आपे से बाहर हो गई; उसने उससे ऐसी बुरी-बुरी और बदतमीजी की बातें कहीं कि उसने हँसना बन्द कर दिया, और जब अग्लाया ने उसे बताया कि "जब तक वह वहाँ बैठा था तब तक वह उस कमरे में क़दम नहीं रखेगी और यह कि उसे शर्म आनी चाहिए कि वह **इतना सब कुछ हो जाने के बाद** उन लोगों से मिलने आया था और सो भी आधी रात के बाद," तो उसका रंग चूने की तरह सफ़ेद हो गया। इसके बाद वह कमरे से उठकर चली गई और अपने पीछे दरवाज़ा धड़ से बन्द कर दिया। दोनों बहनों की तसल्ली देने की कोशिशों के बावजूद प्रिंस वहाँ से चला गया था जैसे किसी जनाज़े से जा रहा हो। अचानक, पन्द्रह मिनट बाद, अग्लाया इतनी जल्दी में भागी-भागी ऊपर से बरामदे में आई थी कि उसे अपनी आँखें पोंछने का भी समय नहीं मिला था, जो अभी तक आँसुओं से तर थीं। वह नीचे भागकर इसलिए आई थी कि कोल्या आ गया था और वह अपने साथ एक साही लाया था। वे सब साही को देखने लगी थीं; उनके सवालों के जवाब में कोल्या ने बताया कि साही उसकी नहीं थी; उसने बताया कि वह अपने एक दोस्त कोस्त्या लेबेदेव के साथ, जो उसके साथ स्कूल में पढ़ता था, उनके घर के सामने से गुजर रहा था; उसे वह सड़क पर छोड़ आया था; वह अन्दर आते शर्माता था क्योंकि उसके हाथ में एक कुल्हाड़ी थी; उसने यह भी बताया कि साही और कुल्हाड़ी दोनों ही उन लोगों ने अभी एक किसान से खरीदी थीं जो उन्हें रास्ते में मिल गया था। किसान साही पचास कोपेक में बेच रहा था और उन लोगों ने उसके पचास कोपेक उसे दिए थे, लेकिन कुल्हाड़ी के लिए उन्हें उसे समझा-बुझाकर राज़ी करना पड़ा था कि वह उसे उनके हाथ बेच दें, कुल्हाड़ी थी भी बहुत अच्छी। इसके बाद अग्लाया अचानक कोल्या

वह अपने आप पर काबू न रख सका और कोई दस मिनट तक ज़ोर से हँसता रहा। अपनी इस हँसी के लिए वह अपने आपको धिक्कारने लगा, लेकिन उसने फ़ौरन महसूस किया कि उसे अपने आपको धिक्कारने की कोई वजह नहीं है, क्योंकि उसे जनरल साहब पर बेहद तरस आ रहा था।

उसकी आशंकाएँ ठीक निकलीं। शाम को उसे एक अजीब रुक्का मिला, छोटा-सा लेकिन दृढ़। जनरल साहब ने उसे सूचना दी कि वह उससे भी हमेशा के लिए अलग हो रहे थे, कि वह उसकी इज़्ज़त करते थे और उसके बहुत आभारी थे, लेकिन वह उससे भी 'सहानुभूति की वे अभिव्यक्तियाँ' स्वीकार नहीं कर सकते थे 'जो उस आदमी की प्रतिष्ठा के लिए अपमानजनक होती हैं जो यों भी दुःखी हो।' जब प्रिंस ने सुना कि बड़े मियाँ अपनी बीवी के साथ रहने वापस चले गए हैं तो उसे कुछ शान्ति मिली। लेकिन हम पहले ही देख चुके हैं कि जनरल साहब ने मिसेज़ येपांचिना के यहाँ भी कोई बखेड़ा खड़ा कर दिया था। यहाँ पर हम उसके पूरे ब्योरे में तो नहीं जा सकते लेकिन संक्षेप में इतना ज़रूर बता दें कि उस मुलाक़ात का नतीजा यह हुआ था कि जनरल साहब ने लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना को बहुत डरा दिया था और गान्या के ख़िलाफ़ अपने कटुतापूर्ण संकेतों से उनका गुस्सा भड़का दिया था। उन्हें घर से निकाल दिया गया था। यही कारण था कि उन्होंने वैसी रात और वैसी सुबह बिताई थी, वह बिलकुल हत्थे से उखड़ गए थे और भागकर सड़क पर इस तरह निकल गए थे जैसे पागल हो जानेवाले हों।

कोल्या अभी तक पूरी तरह समझ नहीं पाया था कि उनके साथ गड़बड़ी क्या थी और उसे यहाँ तक उम्मीद थी कि वह तसल्ली देकर उन्हें क़ाबू में कर लेगा।

"आपके ख़्याल में अब हम लोगों के जाने के लिए इस दुनिया में जगह कौन-सी है, जनरल साहब ?" उसने कहा। "प्रिंस के यहाँ आप जाना नहीं चाहते, लेबेदेव से आप लड़ लिए हैं, पैसा आपके पास है नहीं, और मेरे पास तो कभी होता ही नहीं है। सो हम लोग यहाँ बीच सड़क में बेसहारा और लाचार खड़े हैं।"

"मैं लाचार रह लूँगा, लेकिन किसी की चार बातें नहीं सुनूँगा," जनरल साहब ने बुदबुदाकर कहा। "यह...शब्द था मेरा...अफ़सरों के मेस में...बयालीस में...सन् एक हज़ार...आठ सौ बयालीस में, जी हाँ !...मुझे याद नहीं...उफ़, मुझे याद न दिलाओ...याद न दिलाओ मुझे। 'कहाँ गई मेरी जवानी, वह दिल की ताज़गी कहाँ गई ?' जैसा कि...किसने चिल्लाकर कही थी यह बात, कोल्या ?"

"गोगोल ने, पापा, यह गोगोल की 'मुर्दा रूहें' में है," कोल्या ने अपने बाप को कनखियों से देखकर जवाब दिया।

मुर्दा रूहें। अरे हाँ, मुर्दा ! जब मुझे दफ़न करना तो क़ब्र के पत्थर पर लिखवा देना—'यहाँ एक मुर्दा रूह दफ़न है !'

'कलंक ने मेरा पीछा न छोड़ा !'

किसने कहा था यह, कोल्या ?"

"मालूम नहीं, पापा।"

"येरोपेगोव कभी था ही नहीं ! येरोश्का येरोपेगोव नहीं था !..." वह उन्माद की दशा में चिल्लाए और क्षण-भर को सड़क के बीच में रुक गए। "और यह है मेरा बेटा, मेरा अपना ख़ून, मेरा हाड़-मांस ! येरोपेगोव, जो ग्यारह महीने तक मेरे लिए भाई की तरह था, जिसके लिए मैं आमने-सामने की लड़ाई लड़ा था...हमारे कप्तान प्रिंस विगोरेत्स्की ने शराब पीते समय उससे कहा था : 'अच्छा, यह बताओ मुझे, ग्रीशा, तुम्हें यह सेंट अन्ना का तमग़ा कहाँ मिला ?'—'मुझे अपने देश की रणभूमि में मिला था, और कहाँ मिलता !' मैंने चिल्लाकर कहा, 'शाबाश, ग्रीशा !' ख़ैर, नतीजा यह हुआ

कि आमने-सामने की लड़ाई हुई, और बाद में उसने शादी कर ली...मरीया पेत्रोव्ना सु...[illegible]ना से और लड़ाई में मारा गया।...गोली मेरे सीने पर लटकी हुई सलीब से टकराकर वापस लौटी और सीधे उसके माथे पर जाकर लगी। 'मैं कभी भूलूँगा नहीं !' वह चिल्लाया और वहीं गिरकर मर गया। मैंने...मैंने बड़ी लगन से अपने देश की सेवा की, कोल्या, लेकिन कलंक...'कलंक ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा !' तुम और तुम्हारी माँ मेरी क़ब्र पर आओगे।...'बेचारी नीना !' पहले मैं उसे यही कहा करता था, कोल्या, बहुत पहले, पुराने जमाने में, और वह मुझसे कितना प्यार करती थी।...नीना, नीना ! मैंने तुम्हारी ज़िन्दगी भी कैसी तबाह कर दी ! तुम मुझे किस बात के लिए प्यार कर सकती हो, सहनशील आत्मा ? तुम्हारी माँ की आत्मा फ़रिश्ते की है, कोल्या, सुन रहे हो, फ़रिश्ते की !"

"मैं जानता हूँ, पापा, प्यारे पापा, चलिए, घर चलें, माँ के पास ! वह हमारे पीछे भागकर आ रही थीं ! आप यहाँ रुक क्यों गए ? जैसे आप कुछ समझ न पाए हों।...लेकिन आप आख़िर रो क्यों रहे हैं ?"

कोल्या ख़ुद रो रहा था और अपने बाप के हाथ चूम रहा था।

"तुम मेरे हाथ चूम रहे हो...मेरे हाथ !"

"जी हाँ, आपके हाथ, आपके। इसमें ऐसी अजीब क्या बात है ? मगर आप इस तरह बीच सड़क में फूट-फूटकर रो क्यों रहे हैं ? और आपको जनरल कहते हैं, सिपाही कहते हैं, आइए चलें !"

"भगवान तुम्हें सुखी रखे, मेरे प्यारे बेटे, कि तुम एक बेइज़्ज़त खूसट आदमी के साथ...हाँ, एक बेइज़्ज़त खूसट के साथ, अपने बाप के साथ इज़्ज़त का बर्ताव करते हो...और भगवान करे तुम्हारे वैसा एक बेटा हो le roi de Rome...उफ़, मेरी बद्दुआ लगे इस घर को !"

"आख़िर यह हो क्या रहा है ?" कोल्या अचानक गुस्से से चिल्लाया। "हुआ क्या है ? आप अब घर क्यों नहीं चलना चाहते ? आपका दिमाग़ क्यों खराब हो गया है ?"

"मैं समझा दूँगा...मैं तुम्हें समझा दूँगा...मैं तुम्हें सब कुछ बता दूँगा। चिल्लाओ मत...लोग सुन लेंगे le roi de Rome...उफ़, मैं मुसीबत का मारा हूँ, मैं दुःखी हूँ...

'नर्स, तुम्हारी क़ब्र कहाँ है ?'

यह किसने कहा था, कोल्या ?"

"मुझे नहीं मालूम, नहीं, मालूम नहीं किसने कहा था। चलिए, अब घर चलें ! अभी अगर ज़रूरत हुई तो मैं गान्या की पिटाई भी कर दूँगा...आप फिर किधर चल दिए ?"

लेकिन जनरल साहब उसे एक घर की बरसाती की ओर खींचे लिए जा रहे थे।

"कहाँ जा रहे हैं आप ? वह हमारा घर नहीं है !"

जनरल साहब सबसे ऊपरवाली सीढ़ी पर बैठ गए और कोल्या का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचते रहे।

"झुको, इधर झुको !" उन्होंने बुदबुदाकर कहा। "मैं तुम्हें सब कुछ बता दूँगा...कलंक...इधर झुको...अपना कान लाओ...इधर लाओ कान...मैं तुम्हारे कान में बता दूँगा।..."

"क्या बात है !" कोल्या ने चिल्लाकर कहा; वह बेहद डरा हुआ लग रहा था, लेकिन वह बूढ़े की ओर झुक गया।

"le roi de Rome," जनरल साहब ने कान में कहा; वह स्पष्टतः सिर से पाँव तक काँप रहे थे।

"क्या ? आप le roi de Rome से क्या चाहते हैं ? क्या चाहते हैं ?"

"मैं...मैं..." जनरल साहब ने फिर 'अपने लड़के' के कन्धे को लगातार ज़्यादा मजबूती से पकड़ते हुए उसके कान में फिर कहना शुरू किया, "मैं चाहता...मैं तुम्हें...सब कुछ...मरीया... मरीया...सुतूगिना..."

कोल्या ने झटका देकर अपने आपको छुड़ा लिया, उसने खुद जनरल साहब के कन्धे पकड़ लिए, और पागलों की तरह उन्हें देखने लगा। बूढ़े का चेहरा लाल हो गया, होंठ नीले पड़ गए और उनके चेहरे की बोटियाँ बड़ी तेजी से रह-रहकर फड़कने लगीं। अचानक वह झोंका खाकर और धीरे-धीरे कोल्या की बाँह पर गिरने लगे।

"फ़ालिज !" कोल्या चीख़ पड़ा; आख़िरकार उसे अन्दाजा हो गया था कि बात क्या थी।

5

सच तो यह है कि वार्या ने अपने भाई के साथ बातचीत के दौरान अग्लाया येपांचिना के सामने प्रिंस की ओर से शादी का प्रस्ताव रखे जाने की अफ़वाहों को कुछ बढ़ा-चढ़ाकर ही पेश किया था। शायद कुशाग्र बुद्धि की औरत होने की वजह से उसने पहले ही से भाँप लिया था कि निकट भविष्य में क्या बात होनेवाली है; शायद अपने स्वप्न के बारे में निराश होकर (जिसमें दरअसल उसे खुद भी विश्वास नहीं था) जिसका कोई नतीजा नहीं निकला था, वह अपने भाई से सच्चा और हमदर्दी-भरी प्यार करने के बावजूद, उसके दिल में थोड़ा-सा ज़्यादा जहर उँडेलकर, तबाही को थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर इंसान होने के नाते अपना जी खुश करने के लोभ को संवरण न कर सकी। अपनी सहेलियों येपांचिन-बहनों से इतनी सही-सही जानकारी मिल भी नहीं सकती थी; बस कुछ संकेत थे, कुछ आधे कहे हुए शब्द, भेद और पहेलियाँ। लेकिन शायद अग्लाया की बहनों ने खुद वार्या से कुछ मालूम करने के लिए जान-बूझकर अपनी जबान से कुछ ज़्यादा ही निकाला था; यह भी हो सकता है कि वे अपनी सहेली को थोड़ा-सा छेड़कर आनन्द लेने का लोभ संवरण न कर पाई हों, हालाँकि वे उसे बचपन से जानती थीं : इतने लम्बे अर्से से उन्हें कम से कम थोड़ा-सा तो अन्दाजा हो ही गया होगा कि वार्या का क्या इरादा था।

दूसरी ओर, हालाँकि प्रिंस ने लेबेदेव को बिलकुल ठीक ही यक़ीन दिलाया था कि वह उसे कुछ नहीं बता सकता था और यह कि उसे कुछ ख़ास नहीं हुआ था, वह भी शायद ग़लत था। सच तो यह है कि उन सभी को कुछ अजीब-सा हो गया था : कुछ भी नहीं हुआ था, फिर भी इसके साथ ही बहुत कुछ हो गया था। वार्या ने इसी आख़िरवाली बात का अनुमान अपनी नारी-सुलभ सहजबुद्धि से लगा लिया था।

लेकिन व्यवस्थित ढंग से यह बता सकना बहुत कठिन है कि ऐसा कैसे हुआ कि येपांचिन-परिवार के सभी लोगों के मन में अचानक एक ही धारणा बन गई कि अग्लाया को कुछ ऐसा हो गया था जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था और यह कि उसके भाग्य का फ़ैसला होनेवाला था। लेकिन जैसे ही यह विचार उन सबके दिमाग़ में एक साथ बिजली की तरह कौंधा, उन सबने फ़ौरन यह दावा करना शुरू कर दिया कि वे बहुत पहले से जानते थे कि ऐसा होनेवाला है और सच तो यह है कि उन्हें ऐसा होने में कभी कोई शक ही नहीं था; कि यह सब कुछ 'ग़रीब सूरमा' वाली घटना के समय से ही बिलकुल स्पष्ट था, बल्कि उससे भी पहले से, बात बस इतनी थी कि ऐसी बेतुकी बात पर विश्वास करने को उनका जी नहीं चाहता था। बहनों का यही कहना

ज़ाहिर है, मिसेज़ येपांचिना भी यह बात सबसे पहले न जाने क़ब की समझ चुकी थीं और

उनका दिल बहुत समय से "दुःख रहा था", लेकिन—यह बात बहुत पहले उनकी समझ में आ चुकी हो या नहीं—अब वह प्रिंस के विचार को सहन नहीं कर सकती थीं, सिर्फ़ इसलिए कि उनका उनका सारा दिमाग़ गड़बड़ा जाता था। यहाँ एक समस्या थी जिसे तुरन्त हल करना ज़रूरी था; पर उसे हल करना न केवल असम्भव था, बल्कि लाख कोशिश करने पर भी बेचारी लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना उस समस्या को साफ़-साफ़ समझ भी नहीं पाई थीं। मामला बहुत टेढ़ा था : "प्रिंस अच्छा वर रहेगा या नहीं ? यह सब कुछ अच्छा है या नहीं ? अगर नहीं (जो बिलकुल निश्चित था), तो क्यों नहीं अच्छा था ? और शायद अगर यह अच्छा था (जिसकी भी सम्भावना थी), तो भी वह क्यों अच्छा था।" खुद परिवार के प्रधान जनरल येपांचिन को, ज़ाहिर है, शुरू में तो आश्चर्य हुआ, लेकिन बाद में अचानक उन्होंने स्वीकार किया, "भगवान की क़सम, इसी बीच कुछ-कुछ ऐसी ही बात मेरे दिमाग़ में भी आई थी...कभी-कभी मुझे भी ऐसा लगता था !" अपनी पत्नी की कठोर दृष्टि को देखकर वह फ़ौरन चुप हो गए थे, लेकिन वह सबेरे की बात थी; शाम के वक़्त जब वह अपनी बीवी के पास अकेले थे और उन्हें मजबूर होकर फिर कुछ कहना ही पड़ा था, तो उन्होंने अचानक और असाधारण साहस के साथ अनेक आश्चर्यजनक मत व्यक्त किए थे—"आख़िर क्या बात है ?" (खामोशी।) "अगर यह सब कुछ सच है तब तो वह बहुत ही अजीब बात है, और मैं बहस नहीं करता लेकिन..." (फिर खामोशी।) "दूसरी तरफ़, अगर सीधी बात की जाए तो प्रिंस सचमुच बहुत ही बढ़िया आदमी है, और...और...और, आख़िर, नाम, हमारे परिवार का नाम है, इन सब बातों का मतलब है कि एक तरह से हम अपने ही परिवार का नाम ऊँचा रखेंगे, जो...यानी...क़ब से चला आ रहा है, मतलब है, अगर ऊँचे समाज के एतबार से देखा जाए, क्योंकि, मेरा कहने का मतलब है, ऊँचा समाज; ऊँचा समाज ऊँचा ही समाज होता है; इसके अलावा, ऐसा भी नहीं है कि प्रिंस के पास साधन न हों, हालाँकि उसके साधन शायद बहुत ज़्यादा नहीं हैं। उसके पास...यानी...और...और...और..." (बड़ी देर तक खामोशी और फिर सारा ढाँचा ढह गया।) अपने पति की बातें सुनने के बाद लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना अपने ऊपर बिलकुल ही काबू न रख सकीं।

उनकी राय में जो कुछ भी हुआ था वह ऐसा था "जिसे कभी माफ़ नहीं किया जा सकता था और जो मुजरिमाना बेवक़ूफ़ी थी, एक तरह का बेतुका डरावना सपना, बिलकुल ऊटपटाँग और बेसिर-पैर का !" सबसे पहली बात तो यह थी कि "वह कमबख्त प्रिंस बीमार बौड़म है, दूसरे, वह बेवक़ूफ़ है, जिसे ऊँचे समाज के तौर-तरीक़ों का कुछ पता नहीं है और जिसकी उसमें कोई जगह नहीं है : उसे किसके सामने ले जाया जा सकता है ? उसके लिए कोई ढंग की नौकरी कहाँ खोजे मिलेगी ? एक आपत्तिजनक जनवादी, जिसके पास कोई सरकारी नौकरी का पद भी तो नहीं था, और...और...और प्रिंसेस बेलोकोंस्काया क्या कहेंगी ? और इसके अलावा अग्लाया के लिए हमने क्या ऐसे ही पति की कल्पना की थी और योजना बनाई थी ?" यह आख़िरी दलील, ज़ाहिर है, सबसे बड़ी दलील थी। यह सोचकर ही माँ का दिल काँप उठता था, ख़ून के आँसू रो पड़ता था, हालाँकि उसके साथ ही कहीं उनके दिल की गहराई में कोई चीज़ हिलती-डुलती थी और अचानक उनसे कहती थी : "आख़िर प्रिंस तुम लोगों के लिए ठीक आदमी क्यों नहीं है ?" ख़ैर, लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना के मन की यही आपत्तियाँ थीं जो उनको सबसे ज़्यादा परेशान करती थीं।

अग्लाया की बहनों को न जाने क्यों प्रिंसवाली बात बहुत अच्छी लगती थी। इसमें उन्हें कुछ ख़ासतौर पर अजीब भी नहीं लगता था; मतलब यह कि शायद वे अचानक पूरी तरह उसके पक्ष में हो गई थीं। लेकिन उन दोनों ने कुछ न कहने का ही फ़ैसला किया। क्योंकि परिवार में यह

के पीछे पड़ गई कि वह साही फ़ौरन उसके हाथ बेच दे; वह बिलकुल दीवानी हो गई और उसने कोल्या को 'प्यारे' तक कहा। कोल्या बहुत देर तक तो राज़ी नहीं हुआ, लेकिन आख़िरकार वह और ज़्यादा अड़ा न रह सका और उसने कोस्त्या को अन्दर बुलाया, जो सचमुच कुल्हाड़ी लिए हुए अन्दर आया था और स्वभावतः बहुत अपमान महसूस कर रहा था। फिर अचानक पता यह चला कि वह साही उनकी थी ही नहीं बल्कि एक तीसरे लड़के की थी, जिसका नाम पेत्रोव था, जिसने उन्हें एक चौथे लड़के से श्लोसेर का 'इतिहास' खरीदने के लिए पैसे दिए थे, जो उसे बहुत सस्ते में बेच रहा था क्योंकि उसे पैसों की ज़रूरत थी; वे श्लोसेर का 'इतिहास' खरीदने निकले भी थे, लेकिन उनका जी बहुत ललचा उठा था और उन्होंने साही खरीद ली थी; इस तरह वह साही और कुल्हाड़ी दोनों ही असल में उस तीसरे लड़के की थीं, जिसके पास वे श्लोसेर के 'इतिहास' के बदले उन चीज़ों को ले जा रहे थे। लेकिन अग्लाया उनके पीछे इतनी बुरी तरह पड़ गई थी कि आख़िरकार वे साही उसके हाथ बेचने को तैयार हो गए थे। साही मिलते ही अग्लाया ने कोल्या की मदद से उसे टोकरी में रखा, उसे एक झाड़न से ढक दिया और गिड़गिड़ाकर कोल्या से कहने लगी कि वह फ़ौरन उसकी ओर से उसे लेकर सीधे प्रिंस के पास जाए और "उसके बेहद गहरे सम्मान के प्रतीक के रूप में" उसे स्वीकार करने का उससे अनुरोध करे। कोल्या ने उसकी प्रार्थना तुरन्त और खुशी से मान ली और साही को प्रिंस के पास ले जाने का वादा कर लिया, लेकिन फ़ौरन ही वह अग्लाया के पीछे पड़ गया : "साही का मतलब क्या है ?" उसने पूछा, "और इस तरह के उपहार का ?" अग्लाया ने जवाब दिया कि इससे उसे कोई मतलब नहीं था। कोल्या ने पलटकर जवाब दिया कि उसे पक्का यक़ीन था कि उसमें कोई छिपा हुआ सन्देश था। अग्लाया नाराज़ हो गई और झिड़ककर बोली कि वह पिद्दी है, बस। कोल्या ने फ़ौरन जवाब दिया कि अगर वह उसकी इज़्ज़त एक औरत की हैसियत से न करता होता या उसे स्वयं अपने विश्वासों का सम्मान न होता तो वह उसी वक़्त उसे दिखा देता कि इस तरह के अपमान का जवाब किस तरह दिया जाना चाहिए। लेकिन, आख़िरकार, कोल्या बहुत खुश खुश साही लेकर चला गया और कोस्त्या लेबेदेव भी उसके पीछे भाग गया। यह देखकर कि कोल्या टोकरी को बहुत ज़ोर से झुला रहा था, अग्लाया अपने आपको रोक न सकी और घबराहट से ही चिल्लाकर उससे बोली : "कोल्या, डार्लिंग, उसे गिरा न देना !"—मानो अभी कुछ ही मिनट पहले उसके साथ वह झगड़ ही नहीं रही थी। कोल्या रुक गया था उसने भी, मानो वह भी झगड़ नहीं रहा था, बड़ी मुस्तैदी से चिल्लाकर कहा : "नहीं, मैं गिराऊँगा नहीं, अग्लाया इवानोव्ना। आप चिन्ता न करें !" और इतना कहकर वह पूरी तेजी से भाग गया था। इसके बाद अग्लाया ठहाका मारकर हँस पड़ी थी और बेहद खुश अपने कमरे में चली गई थी; वह बाक़ी दिन बहुत मगन रही।

लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना यह ख़बर सुनकर बिलकुल स्तब्ध रह गई। इसलिए नहीं कि उसका कोई बहुत महत्त्व था, बल्कि सिर्फ़ इसलिए कि उस वक़्त उनकी मनोदशा ही वैसी थी। उनकी घबराहट बेहद तेज हो गई थी, और मुख्य बात थी—साही; आख़िर साही का मतलब क्या था ? उसके बारे में उनके बीच आपस में क्या मतलब तै कर रखा गया था ? उसमें क्या रहस्य छिपा हुआ था ? किस तरह का संकेत ? किस तरह का सन्देश। इसके अलावा, बेचारे जनरल येपांचिन ने, जो इस सवाल-जवाब के वक़्त मौजूद थे, अपने जवाब से सारा मामला बिगाड़ दिया। उनकी राय में इसमें किसी तरह का कोई सन्देश होने का सवाल ही नहीं था, और "साही बस साही थी, उससे ज़्यादा कुछ भी नहीं, सिवाय इसके कि वह इसके अलावा मित्रता का चिन्ह थी, सारे लड़ाई-झगड़े भुलाकर सुलह-समझौता कर लेने की इच्छा का चिन्ह—सारांश यह कि वह बस एक

मासूम-सा मज़ाक़ था जिसे, बहरहाल, बिलकुल माफ़ किया जा सकता था।"

लगे हाथ हम यह भी बता दें कि उनका अनुमान ठीक था। जब अग्लाया ने प्रिंस का मज़ाक़ उड़ाया और उसे निकाल दिया तो वह घर वापस आकर आधे घंटे तक घोर निराशा में डूबा बैठा रहा; इतने में कोल्या अचानक साही लिए हुए आ पहुँचा। निराशा के बादल फ़ौरन छँट गए; प्रिंस ऐसा लगने लगा जैसे मुर्दा जी उठा हो; वह कोल्या से कुरेद-कुरेदकर हर बात के बारे में पूछ रहा था, उसके कहे हुए हर शब्द को बड़े ध्यान से सुन रहा था, उससे बार-बार वही सवाल पूछ रहा था, बच्चों की तरह हँस पड़ता था और उन दोनों हँसते हुए लड़कों के हाथ बार-बार दबा देता था, जो उसे अपनी चमकदार आँखों से घूर रहे थे। साफ़ ज़ाहिर था कि अग्लाया ने उसे माफ़ कर दिया था और वह आज ही शाम को उससे मिलने फिर जा सकता था, और यह उसके लिए महत्त्वपूर्ण ही नहीं बल्कि सब कुछ था।

"हम भी अभी तक कैसे बच्चे हैं, कोल्या !" वह आख़िरकार अत्यन्त पुलकित होकर चिल्लाया। "और...और यह कितनी प्यारी बात है कि हम अभी तक बच्चे हैं !"

"इसका सीधा-साधा मतलब यह है, प्रिंस, कि वह आपसे प्यार करती है, और इसके अलावा कुछ है ही नहीं !" कोल्या ने बड़े रोब से और अधिकारपूर्वक जवाब दिया।

प्रिंस का चेहरा लाल हो गया, लेकिन इस बार उसने कुछ कहा नहीं, और कोल्या बस हँसता रहा और तालियाँ बजाता रहा; मिनट-भर बाद प्रिंस भी हँस पड़ा, और तीसरे पहर का बाक़ी सारा वक़्त उसने हर पाँच मिनट बाद यह जानने के लिए घड़ी देखने में बिताया कि कितनी देर हो चुकी है और शाम होने में अभी कितना वक़्त और है।

लेकिन लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना की मनोदशा ने उन्हें पूरी तरह अपने वश में कर लिया : वह अपने ऊपर काबू न रख सकी और उन पर उन्माद-सा छा गया। पति और बेटियों के निरन्तर विरोध के बावजूद उन्होंने अग्लाया को बुलवा भेजा कि उससे सीधा आख़िरी सवाल पूछें और उससे पक्का और सीधा जवाब देने को कहें। "इसे हमेशा के लिए ख़त्म कर देना होगा, अपने दिमाग़ पर से यह बोझ उतार देना होगा ताकि इसके बारे में फिर कभी न सोचना पड़े ! वरना," उन्होंने घोषणा की, "मैं शाम होने से पहले ही मर जाऊँगी !" और तब जाकर वे लोग समझ गए कि वे कैसे ग़ोरखधन्धे में फँस गए हैं। उन्हें अग्लाया से बनावटी आश्चर्य, क्रोध, हँसी के ठहाकों और प्रिंस का तथा सवाल पूछनेवालों का मज़ाक़ उड़ाने के अलावा और कुछ न मिला। लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना निढ़ाल होकर पलंग पर लेट गईं और उस वक़्त चाय पीने के लिए नीचे उतरकर आईं जब प्रिंस आनेवाला था। वह डरी और थरथर काँपती हुई प्रिंस के आने की राह देखती रहीं और जब वह आया तब उन्हें दौरा-सा पड़ गया।

प्रिंस भी सहमा-सहमा, लगभग रास्ता टटोलता हुआ, विचित्र ढंग से मुस्कराता हुआ और हर एक की आँखों में आँखें डालकर देखता हुआ इस तरह अन्दर आया मानो उनसे कुछ सवाल पूछ रहा हो क्योंकि अग्लाया इस बार भी कमरे में नहीं थी, जिस पर वह फ़ौरन भयभीत हो उठा। उस शाम कोई और मिलनेवाले नहीं आए थे, परिवार के सदस्यों के अलावा और कोई नहीं था। प्रिंस श. अभी तक रादोम्स्की के चाचा के मामलात के सिलसिले में पीटर्सबर्ग में ही थे। "ओह, काश वह यहाँ होते और कुछ कहते।" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना को उनके न होने का बहुत अफ़सोस था। जनरल येपांचिन बेहद चिन्तित भाव लिए बैठे थे; बहनें गम्भीर मुद्रा बनाए थीं और मानो जान-बूझकर चुप थीं। लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना की समझ में नहीं आ रहा था कि बातचीत शुरू कैसे करें। आख़िरकार वह रेलों की घोर निन्दा करते हुए फट पड़ीं और उन्होंने प्रिंस को चुनौती के भाव

से देखा।

अफ़सोस ! अग्लाया अभी तक नीचे नहीं आई थी और प्रिंस बिलकुल हतप्रभ हो रहा था कि क्या करे। उसके मुँह से शब्द भी मुश्किल से निकल पा रहे थे और वह पूरी तरह बुझा-सा लग रहा था; कुछ समझ में न आने पर उसने मत व्यक्त किया कि अगर रेलों की अच्छी तरह मरम्मत कर दी जाए तो बहुत अच्छा हो, लेकिन अदेलाइदा अचानक हँस पड़ी और प्रिंस का मनोबल फिर चकनाचूर हो गया। उसी क्षण अग्लाया शान्त भाव से और इतराते हुए कमरे में आई, बड़ी शिष्टता से झुककर उसने प्रिंस का अभिवादन किया, और बड़ी गम्भीरता से गोल मेज़ के पास सबसे प्रमुख स्थान पर बैठ गई। उसने प्रिंस की ओर सवालिया नज़रों से देखा। उन सबने महसूस किया कि वह क्षण आ गया था जब सारी उलझनें दूर हो जाएँगी।

"आपको मेरी साही मिली ?" उसने दृढ़ स्वर में और लगभग नाराजगी से पूछा।

"मिली थी," प्रिंस ने शर्माते हुए धड़कते दिल से जवाब दिया।

"फ़ौरन बताइए कि उसके बारे में आपका क्या ख़्याल है ? माँ की और पूरे परिवार की मन की शान्ति के लिए यह बहुत ज़रूरी है।"

"देखो, अग्लाया..." जनरल साहब ने अचानक कुछ बेचैनी-सी महसूस करते हुए कहना शुरू किया।

"यह...यह तो हद हो गई!" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना अचानक सहमकर चिल्लाई।

"हद-वद कुछ नहीं है, माँ," बेटी ने तुरन्त कठोरता से जवाब दिया। "मैंने आज प्रिंस को एक साही भेजी थी, और मैं उनकी राय जानना चाहती हूँ। तो, प्रिंस ?"

"कैसी राय, अग्लाया इवानोव्ना ?"

"साही के बारे में।"

"यानी...मैं समझता हूँ कि आप जानना चाहती हैं कि...यानी साही पाकर मुझे कैसा लगा था...या...कहना चाहिए कि मैं उसके बारे में क्या सोचता हूँ...मतलब यह कि...इसके बारे में आपने जो मुझे...यानी...साही भेजी...मेरा मतलब है...यों समझ लीजिए...अगर ऐसी बात है तो मैं समझता हूँ कि...यानी...संक्षेप में।..."

उसकी साँस रुक गई और वह चुप हो गया।

"अरे, आपने कुछ ज़्यादा बताया तो नहीं," अग्लाया ने पाँच सेकंड इन्तज़ार करने के बाद कहा। "अच्छी बात है, साही छोड़ दें, मैं राज़ी हूँ; लेकिन मुझे इस बात की खुशी है कि मैं आख़िरकार ये सारी ग़लतफ़हमियाँ दूर कर सकती हूँ। मैं बिलकुल पक्के तौर पर आपसे मालूम करना चाहती हूँ कि आप मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रखनेवाले हैं या नहीं ?"

"हे भगवान !" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना के मुँह से सहसा निकला।

प्रिंस चौंक पड़ा और पीछे खिसक गया; जनरल येपांचिन हक्का-बक्का रह गए; बहनों की त्योरियों पर बल पड़ गए।

"झूठ न बोलिएगा, प्रिंस। सच-सच बताइएगा। आप ही के वजह से अजीब-अजीब सवाल करके मुझे सताया जाता है। इन सवालों के लिए क्या कोई बुनियाद है ? क्या कहना है आपका ?"

"मैंने आपके सामने शादी का प्रस्ताव नहीं रखा है, अग्लाया इवानोव्ना," प्रिंस ने अचानक जोश में आकर कहा, "लेकिन...यह तो आप जानती ही हैं कि मुझे आपसे कितनी मुहब्बत है और मैं आप पर कितना भरोसा करता हूँ...अब भी।..."

"मैंने आपसे पूछा था कि आप मुझसे शादी करने का प्रस्ताव करते हैं कि नहीं ?"

"करता हूँ," प्रिंस ने डूबते दिल से जवाब दिया।

कमरे में मौजूद सभी लोगों में उद्विग्नता-भरी हलचल पैदा हो गई।

"यह पूरा सिलसिला ही ग़लत है, मेरे दोस्त," जनरल येपांचिन ने बहुत उत्तेजित होकर कहा। "अगर ऐसी बात है, अग्लाया, तो यह...यह बिलकुल नामुमकिन है।...माफ़ करना, प्रिंस, माफ़ करना, मेरे दोस्त ! माई डियर," वह मदद के लिए अपनी बीवी की तरफ़ मुड़े, "समझने की कोशिश करना चाहिए।..."

"मैं इन्कार करती हूँ, मैं इन्कार करती हूँ !" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने अपने हाथ हिलाते हुए चिल्लाकर कहा।

"माँ, मुझे बोलने दो, इस मामले में मेरा भी तो कुछ महत्त्व है : मेरे जीवन का निर्णायक क्षण आ गया है" (अग्लाया ने यही शब्द कहे थे), "और मैं खुद मालूम करना चाहती हूँ, और मुझे इस बात की भी खुशी है कि यह सब कुछ सबके सामने हो रहा है।...प्रिंस, आप बुरा तो नहीं मानेंगे अगर मैं पूछूँ कि अगर आपके 'ऐसे मन्सूबे हैं', तो आप मुझे किस तरह खुश रखने की सोच रहे हैं ?"

"मेरी समझ में नहीं आता कि आपको क्या जवाब दूँ, अग्लाया इवानोव्ना। इसका...इसका क्या जवाब दिया जा सकता है ? और...और क्या यह ज़रूरी है ?"

"ऐसा लगता है कि आप अटपटा महसूस कर रहे हैं और आपकी साँस फूल रही है। कुछ आराम कर लीजिए, अपने आपको सम्भाल लीजिए। एक गिलास पानी पी लीजिए, वैसे अभी आपको चाय भी पिलाई जाएगी।"

"मैं आपसे प्यार करता हूँ, अग्लाया इवानोव्ना; मुझे आपसे बेहद प्यार है; मैं बस आप ही को प्यार करता हूँ, और...और, मेहरबानी करके, इस बात का मज़ाक़ न उड़ाइए, मैं आपको बेहद प्यार करता हूँ।"

"फिर भी, यह बहुत महत्त्व का सवाल है। हम बच्चे नहीं हैं, और हमें इस मामले को व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखना चाहिए।...आप क्या मेहरबानी करके इतना बताएँगे कि आपकी दौलत कितनी है ?"

"तोबा, तोबा, अग्लाया, तुम यह कह क्या रही हो !" जनरल येपांचिन ने चकित होकर क्षीण स्वर में कहा। "यह नहीं...नहीं !"

"शर्म की बात है !" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने काफ़ी ऊँचे कानाफूसी के स्वर में कहा।

"पागल हो गई है !" अलेक्सान्द्रा ने भी वैसे ही ऊँचे कानाफूसी के स्वर में कहा।

"मेरी दौलत...आपका मतलब है रक़म ?" प्रिंस ने आश्चर्य से पूछा।

"बिलकुल यही।"

"मेरे पास...मेरे पास इस वक़्त एक लाख पैंतीस हज़ार रूबल हैं," प्रिंस ने बुदबुदाकर कहा; उसका चेहरा लाल हो गया।

"बस, कुल इतना ?" अग्लाया बिना लजाए, ज़ोर से और प्रकट आश्चर्य के साथ चिल्लाई। "ख़ैर, मैं समझती हूँ इतने से भी काम चल जाएगा, ख़ासतौर पर अगर क़िफ़ायतशारी से रहें। क्या आपका सरकारी नौकरी करने का कोई इरादा है ?"

"मैं सोच रहा था कि इम्तहान देकर प्राइवेट ट्यूशन पढ़ाने का सर्टीफ़िकेट ले लूँ।"

"यह तो बहुत अच्छा रहेगा। ज़ाहिर है, इससे हमारी आमदनी कुछ बढ़ जाएगी। आपका शाही महल में कोई जगह पाने का तो इरादा नहीं है ?"

"शाही महल में ? मैंने तो कभी इसके बारे में सोचा भी नहीं, लेकिन..."

मगर अब दोनों बहनें अपने आप पर काबू नहीं रख सकीं और दबे स्वर में हँस पड़ीं। अदेलईदा बड़ी देर से अग्लाया के फड़कते हुए चेहरे में आसन्न और अदम्य हँसी के चिन्ह देख रही थी, जिसे रोकने की वह फिलहाल भरपूर कोशिश कर रही थी। अग्लाया ने अपनी हँसती हुई बहनों को गुस्से से घूरकर देखा, लेकिन एक ही सेकंड बाद वह अपने आप पर काबू न रख सकी और ठहाका मारकर पागलों जैसी हँसी हँस पड़ी, मानो उसे दौरा पड़ गया हो; आख़िरकार वह उछलकर खड़ी हो गई और भागकर कमरे के बाहर चली गई।

"मैं जानती थी कि यह मज़ाक़ के अलावा कुछ भी नहीं है !" अदेलईदा ने चहककर कहा। "शुरू ही से...उस साहीवाली बात से ही।"

"नहीं, मैं इस बात की इजाज़त नहीं दूँगी, हरगिज़ नहीं दूँगी !" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना गुस्से से बरस पड़ीं और अग्लाया के पीछे झपटीं। उनके पीछे ही बहनें भी फ़ौरन भागीं। प्रिंस और परिवार के पिता कमरे में अकेले रह गए।

"यह तो...यह तो...क्या तुम ऐसा कुछ होने के बारे में सोच भी सकते थे, प्रिंस ?" जनरल साहब तीखे स्वर में चिल्लाए; स्पष्टतः उन्हें स्वयं भी नहीं मालूम था कि वह क्या कहना चाहते थे। "नहीं, सचमुच, मैं संजीदगी से कह रहा हूँ, संजीदगी से।"

"मैं देखता हूँ कि अग्लाया इवानोव्ना मुझ पर हँस रही थीं," प्रिंस ने उदास भाव से जवाब दिया।

"एक मिनट रुको, मेरे दोस्त। मैं जाकर देखता हूँ, तुम यहीं रुको...क्योंकि...तुम ही मुझे मेहरबानी करके बताओ कि यह सब कुछ हुआ कैसे और, यों समझ लो, इस सबका मतलब क्या है, अगर इसे कुल मिलाकर देखा जाए। देखो, मेरे दोस्त, मैं उसका बाप हूँ...मेरा मतलब है, मैं उसका बाप हूँ न ? और फिर भी मुझे कुछ भी समझ में नहीं आता; इसलिए तुम ही मुझे समझाओ !"

"मुझे अग्लाया इवानोव्ना से प्यार है। वह इस बात को जानती हैं...और मेरा ख़्याल है कि उन्हें बहुत अरसे से इसका पता है।"

जनरल साहब ने कन्धे बिचका दिए।

"अजीब, अजीब बात है...और तुम्हें उससे बहुत प्यार है ?"

"जी हाँ, बहुत ज़्यादा।"

"खैर, यह सब कुछ मुझे तो बहुत अजीब लगता है, बहुत अजीब। कहने का मतलब यह कि यह ऐसी अचरज की बात है और इससे इतना गहरा धक्का पहुँचा है कि...देखो, भई, सवाल तुम्हारे पैसे का नहीं है (हालाँकि इतना मैं ज़रूर कहूँगा कि मेरा ख़्याल था कि तुम्हारे पास इससे कहीं ज़्यादा पैसा होगा), लेकिन...मुझे मेरी बेटी का सुख...आख़िरकार क्या तुम उसे...यानी...यों समझ लो...सुखी रख सकोगे ? और...और...आख़िर बात क्या है...वह मज़ाक़ कर रही है या वह सचमुच ऐसा चाहती है ? मेरा मतलब है, वही, तुम नहीं ?"

अलेक्सान्द्रा की आवाज़ दरवाज़े के पीछे से आई; वह अपने बाप को बुला रही थी।

"तुम ज़रा यहाँ इन्तज़ार करो ! ज़रा इन्तज़ार करो और ठण्डे दिमाग़ से सोच लो; मैं अभी आता हूँ," उन्होंने जल्दी-जल्दी कहा और अलेक्सान्द्रा के बुलाने पर भागते हुए चले गए; वह डरे हुए लग रहे थे।

उन्होंने देखा कि उसकी बेटी और बीवी एक-दूसरे से लिपटी हुई आँसू बहा रही हैं। वे खुशी के, कोमल भावना के, और समझौते के आँसू थे। अग्लाया अपनी माँ के हाथों, गालों और होंठों

को चूम रही थी; दोनों कसकर एक-दूसरे से चिपटी हुई थीं।

"अब देखो इसको," लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना अपने पति से बोलीं। "यह है इसका असली रूप !"

अग्लाया ने आँसुओं से भीगा अपना प्रफुल्लित चेहरा माँ के सीने पर से उठाकर अपने बाप को देखा, ज़ोर से हँसी, कूदकर उनके पास गई और कसकर उनसे लिपट गई और कई बार उन्हें चूमा। फिर वह तेजी से झपटकर वापस अपनी माँ के पास गई, अपना चेहरा पूरी तरह उनके वक्ष में ऐसे छिपा लिया कि कोई उसे देख न सके, और तुरन्त ही फिर रोने लगी। लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने अपनी शॉल के एक सिरे से उसे ढक लिया।

"देख तो, क्या हाल कर रही है तू हम लोगों का, निर्दयी लड़की, क्योंकि और चाहे जो कुछ हो, निर्दयी तो है तू !" वह बोलीं लेकिन इस बार खुश होकर, मानो अचानक एक बार फिर आसानी से साँस ले सकती हों।

"निर्दयी ! हाँ, निर्दयी !" अग्लाया की भावावेग की धारा सहसा फूट पड़ी। "निकम्मी ! बिगड़ी हुई ! पापा से यह कह देना। अरे, लेकिन वह तो यहीं हैं ! पापा, आप यहीं हैं ? आप सुन रहे हैं न ?" वह अपने आँसुओं के बीच हँसकर बोली।

"मेरी लाड़ली, मेरी प्यारी बच्ची !" जनरल साहब ने उसका हाथ चूमकर और खुशी से खिलकर कहा (अग्लाया ने अपना हाथ हटाया नहीं।) "तो तुम्हें इस...नौजवान से प्यार है, क्यों ?"

"नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं ! मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती...आपके इस नौजवान को। मैं उसे बर्दाश्त नहीं कर सकती !" अग्लाया अचानक खौल उठी और उसने अपना सिर उठाया। "और, पापा, अगर आपने फिर कभी यह बात कही...तो मैं बताए देती हूँ...सुन लिया आपने ?...मैं बताए देती हूँ, हाँ !"

वह सचमुच गम्भीरता से बोल रही थी : उसका चेहरा बिलकुल लाल हो गया था और उसकी आँखें चमक रही थीं। उसके पापा चुप हो गए और सहम गए, लेकिन लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने उन्हें अग्लाया की पीठ के पीछे से इशारा किया और उन्होंने उसका मतलब समझा : "सवाल मत पूछिए।"

"अगर ऐसी बात है, डार्लिंग, तो, ज़ाहिर है, जैसी तुम्हारी मर्जी। लेकिन वह अकेला वहाँ बैठा इन्तज़ार कर रहा है, शायद बड़ी तरकीब से उससे चले जाने का इशारा करना चाहिए, है न ?"

अब की बार जनरल साहब ने अपनी बीवी को आँख मारी।

"नहीं, नहीं, कोई ज़रूरत नहीं है; ख़ासतौर पर अगर इसे "तरकीब से" करना है : मेहरबानी करके आप खुद बाहर उसके पास चले जाइए, मैं बाद में आती हूँ—अभी। मैं इस नौजवान से माफ़ी माँगना चाहती हूँ क्योंकि मैंने उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई है।"

"बड़ी ठेस पहुँचाई है," जनरल साहब ने संजीदगी से हाँ में हाँ मिलाई।

"अच्छा...आप यहीं ठहरिए, पहले मैं अकेली जाती हूँ। आप लोग मेरे फ़ौरन बाद आ जाइएगा...एक सेकंड बाद। वह अच्छा रहेगा।"

वह दरवाज़े तक पहुँच गई थी, मगर अचानक पीछे पलट पड़ी।

"नहीं, मुझे हँसी आ जाएगी ! मैं हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाऊँगी !" उसने उदास भाव से कहा।

लेकिन लगभग उसी क्षण वह मुड़कर भागी हुई प्रिंस के पास चली गई।

"आख़िर यह सब माजरा क्या है ? इसका मतलब क्या लगाया जाए ?" जनरल येपांचिन ने

जल्दी से कहा।

"कहते डर लगता है," लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने उतनी ही जल्दी से जवाब दिया, "लेकिन मैं समझती हूँ कि बात बिलकुल साफ़ है।"

"मैं भी यही समझता हूँ। बिलकुल आईने की तरह साफ़। वह उससे प्यार करती है।"

"उससे प्यार ही नहीं करती...उसके प्यार में पागल है !" अलेक्सान्द्रा बीच में बोल पड़ी। "और सो भी ऐसे आदमी के !"

"भगवान उस पर अपनी कृपा रखे, अगर ऐसी ही उसकी मर्जी है तो यही सही," लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने श्रद्धा-भाव से अपने सामने सलीब का निशान बनाते हुए कहा।

"ख़ैर, यह तो होना ही है, यह तो होना ही है," जनरल साहब ने हामी भरी। "अपनी तक़दीर से बचकर कोई कहाँ जा सकता है।"

और वे सब ड्राइंग-रूम में चले गए, जहाँ उन्होंने एक और अचरज की बात देखी।

हँसना तो दूर रहा, जैसा कि अग्लाया को डर था, वह प्रिंस के पास गई और उससे लगभग भीरुता से बोली—"मेहरबानी करके एक बेवक़ूफ़, दुष्ट, बिगड़ी हुई लड़की को माफ़ कर दीजिए," (उसने प्रिंस का हाथ पकड़ लिया), "विश्वास कीजिए कि हम सब लोग आपकी बड़ी इज़्ज़त करते हैं। और अगर मैंने आपकी ख़ूबसूरत और नेकदिल सादगी का मज़ाक़ उड़ाने की हिम्मत की तो मुझे माफ़ कर दीजिए, वैसे ही जैसे आप किसी बच्चे को शरारत करने के लिए माफ़ कर देते। माफ़ कीजिए कि मैं बेतुकी बात पर अड़ी रही, जिसका ज़ाहिर है, कोई नतीजा निकल ही नहीं सकता है।..."

अग्लाया ने अपने ये बादवाले शब्द ख़ास ज़ोर देकर कहे थे।

बाप, माँ और बहनें यह सब नज़ारा देखने और सुनने के लिए ठीक वक़्त पर ड्राइंग-रूम में पहुँच गए थे, और इन शब्दों का उन सब पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा : "बेतुकी बात जिसका कोई नतीजा निकल ही नहीं सकता है," और उससे भी गहरा असर उस गम्भीरता का पड़ा जिससे अग्लाया ने उस बेतुकेपन की चर्चा की थी। उन सबने एक-दूसरे को सवालिया नज़रों से देखा; लेकिन प्रिंस ने स्पष्टतः इन शब्दों का अर्थ नहीं समझा और उसका चेहरा खुशी के मारे खिला रहा।

"आप ऐसी बात क्यों कह रही हैं ?" वह बुदबुदाकर बोला। "आप...माफ़ी क्यों माँग रही हैं ?...

वह यह भी कहना चाहता था कि वह इस लायक़ ही नहीं था कि कोई उससे माफ़ी माँगे। कौन जाने, शायद वह इन "बेतुकी बात जिसका कोई नतीजा निकल ही नहीं सकता है" शब्दों का अर्थ समझ ही गया हो, लेकिन विचित्र प्रकार का व्यक्ति होने की वजह से शायद वह उन शब्दों पर खुश भी था। इस बात में कोई सन्देह नहीं था कि उसे नैसर्गिक सुख प्रदान करने के लिए इतना ही काफ़ी था कि वह जितनी बार भी जी चाहे आकर अग्लाया से मिल सकता था और इस बात की पूरी इजाज़त थी कि वह उसके साथ बातें कर सकता था, उसके साथ बैठ सकता था और उसके साथ घूम-फिर सकता था, और कौन जाने, शायद वह इतने ही से जीवन-भर सन्तुष्ट रह सकता था ! (शायद इसी सन्तोष से लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना मन ही मन डरती थीं; वह उसे भाँप गई थीं; बहुत-सी ऐसी बातें थीं जिनसे वह मन ही मन डरती थीं लेकिन जिन्हें वह स्वयं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती थीं।)

उस शाम प्रिंस की चुस्ती और उमंग को वर्णन करना कठिन है। वह इतना मगन था कि उसे देखनेवाला भी बरबस मगन हो जाता था, जैसा कि अग्लाया की बहनों ने बाद में उसकी इस

मनोदशा को बयान किया। वह लगातार बातें कर रहा था; छह महीने पहले की उस सुबह के बाद से, जब वह येपांचिन-परिवार से पहली बार मिला था, उसके साथ ऐसा कभी नहीं हुआ था; पीटर्सबर्ग लौटने पर वह प्रकट रूप से और जान-बूझकर बहुत कम बोलने लगा था और अभी हाल ही में प्रिंस श. से साफ़-साफ़ माना था, जिसे उन सब लोगों ने सुना था, कि उसे अपने आप पर काबू रखना पड़ता था और अपने आपको बोलने से रोकना पड़ता था क्योंकि विचार को शब्दों में व्यक्त करके उसका मूल्य घटाने का उसे कोई अधिकार नहीं था। उस शाम शायद अकेले वही बोलता रहा था; उसने बहुत-से किस्से सुनाए और उनके सभी सवालों का जवाब साफ़-साफ़, बहुत खुश होकर और विस्तार के साथ दिया। लेकिन उसके शब्दों में दूर-दूर तक कोई बात ऐसी नहीं थी जो मन बहलानेवाली जैसी हो। वह जिन विचारों को व्यक्त करता था वे बहुत गम्भीर ही नहीं बल्कि कभी-कभी दुरूह भी होते थे। प्रिंस ने यहाँ तक किया कि उन्हें स्वयं अपने कुछ विचार, कुछ अपने निजी अवलोकन बताए और अगर वे "इतनी अच्छी तरह व्यक्त किए गए" न होते, जैसा कि उसकी बातें सुननेवाले सभी लोगों ने बाद में स्वीकार किया, तो यह सारा सिलसिला हास्यास्पद-सा हो जाता। हालाँकि जनरल साहब को गम्भीर विषयों पर बातचीत बहुत पसन्द थी लेकिन वह और उनकी पत्नी यह सोचने पर मजबूर थे कि यह बातचीत कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ही विद्वतापूर्ण थी, जिसका नतीजा यह हुआ कि उस शाम की बैठक समाप्त होते-होते वे कुछ उदास भी हो गए। लेकिन आख़िर में तो नौबत यहाँ तक पहुँची कि प्रिंस ने कुछ बहुत व्यंगपूर्ण लतीफ़े सुनाए जिन पर सबसे पहले वह खुद हँसा, जिसका नतीजा यह हुआ कि दूसरे लोग लतीफों से ज़्यादा उसकी मस्ती-भरी हँसी पर हँसे। जहाँ तक अग्लाया का सवाल था, वह सारी शाम मुश्किल से ही कुछ बोली, लेकिन प्रिंस के एक-एक शब्द पर ध्यान लगाए रही, और उसने उसकी बातों को उतना सुना नहीं जितना कि वह उसे एकटक देखती रही।

"वह नज़रें जमाए एकटक उसे देखती रही...उसके एक-एक शब्द पर ध्यान लगाए रही... एक-एक शब्द को पकड़ती रही, पकड़ती रही !" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने बाद में अपने पति से कहा। "लेकिन अगर कहो कि वह उससे प्यार करती है, तो बस ख़ैरियत नहीं है !"

"हाँ, क़िस्मत की बात है !" जनरल साहब ने कन्धे बिचका दिए, और अपना यह प्रिय फिकरा बार-बार दोहराते रहे।

हम यह भी बता दें कि वर्तमान स्थिति में बहुत कुछ ऐसा था जो एक कारोबारी आदमी के नाते उन्हें भी पसन्द नहीं था, और ख़ासतौर पर उसकी अस्पष्टता। लेकिन उन्होंने मन में पक्की ठान ली थी कि फिलहाल कुछ कहेंगे नहीं, बस एकटक देखते रहेंगे...पत्नी की आँखों में।

परिवार की यह प्रसन्नता बहुत समय तक नहीं रही। अगले ही दिन अग्लाया प्रिंस से फिर झगड़ बैठी, और उसके बाद यह सिलसिला दिनों लगातार चलता रहा। वह घंटों प्रिंस का मज़ाक़ उड़ाती, यहाँ तक कि उसको बिलकुल मसख़रा बना देती। यह सच है कि कभी-कभी वे दोनों घंटे-दो घंटे बाग़ के कुंज में बैठते थे, लेकिन यह बात देखी गई थी कि उस वक़्त प्रिंस लगभग हमेशा ही अग्लाया को अखबार या कोई किताब पढ़कर सुनाता था।

"आप जानते हैं," अग्लाया ने एक बार अखबार पढ़ते समय उसे बीच में टोककर कहा था, "मैंने यह बात देखी है कि आप बेहद अनपढ़ हैं। आपको कुछ भी ठीक से मालूम ही नहीं रहता, जैसे अगर आपसे यही पूछा जाए कि अमुक कौन था, अमुक घटना किस साल हुई थी, या अमुक कौन-सी सन्धि थी। आप बहुत दयनीय हैं।"

"मैंने आपसे पहले ही कहा था कि मुझे बहुत ज्ञान नहीं है," प्रिंस ने जवाब दिया।

"अगर वह नहीं है तो फिर है क्या आपके पास ? इसके बाद आप कैसे उम्मीद करते हैं कि मैं आपकी इज़्ज़त करूँ ? चलिए, पढ़ते रहिए...नहीं, रहने दीजिए...बस, पढ़ना बन्द कर दीजिए !"

और उस शाम उसने फिर एक ऐसी बात कही जो सबको पहेली जैसी लगी। प्रिंस श. पीटर्सबर्ग से लौट आए और अग्लाया उनके साथ बहुत अच्छी तरह पेश आई। उसने रादोम्स्की के बारे में बहुत-से सवाल पूछे। (प्रिंस तब तक नहीं आया था।) अचानक प्रिंस श. ने "परिवार में शीघ्र ही होनेवाले एक और परिवर्तन" के बारे में संकेत किया, जिसका इशारा उन्हें लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना के मुँह से अनायास ही निकल गए इस आशय के थोड़े-से शब्दों से मिला था कि अदेलईदा की शादी शायद फिर टालनी पड़ेगी ताकि दोनों शादियाँ साथ हो सकें। "बेवक़ूफ़ी की इन तमाम अटकलबाज़ियों" पर अग्लाया का गुस्सा इतनी बुरी तरह भड़क उठा था कि कल्पना भी नहीं की जा सकती; और, उसने प्रसंगवश यह बात भी कह दी थी कि "किसी की रखैल की जगह लेने का उसका कोई इरादा नहीं था"।

ये शब्द सुनकर आश्चर्य तो सभी को हुआ, लेकिन उसके माँ-बाप को ख़ासतौर पर हुआ। लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने अपने पति के साथ गुप्त वार्ता के दौरान आग्रह किया कि वह प्रिंस से नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के बारे में साफ़-साफ़ बताने को कहें।

जनरल येपांचिन ने क़सम खाकर यक़ीन दिलाया कि वह केवल एक 'विस्फोट' था जो अग्लाया के 'शर्मीलेपन' की वजह से हुआ था; अगर प्रिंस श. ने शादी की चर्चा न की होती तो कोई 'विस्फोट' न होता, क्योंकि अग्लाया ख़ुद जानती थी, और पक्के तौर पर जानती थी कि ये सब बदनाम करनेवाली बातें थीं जो कुछ दुष्ट लोगों ने फैलाई थीं, और यह कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना रोगोझिन से शादी करने जा रही थी और प्रिंस का उससे कोई सरोकार नहीं है, और अगर पूरी बात सच-सच बताई जाए तो उससे उसका सरोकार कभी नहीं था।

इस बीच ऐसा लगता था कि प्रिंस को जैसे कोई चिन्ता ही नहीं है और वह नैसर्गिक सुख अनुभव करता रहा। ज़ाहिर है, कभी-कभार उसे भी अग्लाया की आँखों में उदासी और अधीरता का भाव दिखाई दे जाता था, लेकिन वह किसी और चीज़ पर अधिक विश्वास रखता था और उदासी अपने आप दूर हो जाती थी। एक बार किसी चीज़ के प्रति उसकी आस्था हो जाने पर कोई उसे उससे डिगा नहीं सकता था। शायद वह ज़रूरत से ज़्यादा शान्त था; कम से कम इप्पोलीत को तो ऐसा ही लगा था जब पार्क में अचानक उसकी मुलाक़ात प्रिंस से हो गई थी।

"तो," उसने प्रिंस की ओर बढ़कर उसे रोकते हुए कहना शुरू किया, "उस रात मैंने जो आपसे कहा था वह ठीक निकला न कि आपको प्रेम हो गया है ?"

प्रिंस ने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया और उसे बधाई दी कि वह इतना स्वस्थ लग रहा था। इप्पोलीत खुद बहुत खुश दिखाई दे रहा था, जैसा कि तपेदिक़ के मरीजों के साथ अकसर होता है।

वह प्रिंस की ओर बढ़कर इस इरादे से गया था कि उसके इतना खुश दिखाई देने पर कोई व्यंग की बात कहेगा, लेकिन जल्दी ही इस विषय को छोड़कर वह अपने बारे में बातें करने लगा। वह शिकायत करने लगा, बड़ी देर तक शिकायत करता रहा, कुछ उखड़े-उखड़े ढंग से।

"आप कल्पना भी नहीं कर सकते," उसने अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा, "वहाँ वे सब कितने चिड़चिड़े, टुच्चे, स्वार्थी, घमण्डी, और मामूली लोग हैं। क्या आप यक़ीन करेंगे, उन्होंने मुझे सिर्फ़ इस शर्त पर अपने यहाँ रखा था कि मैं जल्दी से जल्दी मर जाऊँ, इसमें कोई सन्देह नहीं, और अब वे सब लोग आपे से बाहर हो रहे हैं कि मैं मर नहीं रहा हूँ, बल्कि उल्टे मेरी तबियत

बेहतर होती जा रही है। सचमुच, अजीब प्रहसन है ! मैं शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि आपको मेरी बात का यक़ीन नहीं आ रहा होगा !"

प्रिंस का जवाब देने को जी नहीं चाहा।

"कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि मैं फिर आपके साथ आकर रहने लगूँ," इप्पोलीत ने लगे हाथ इतना और जोड़ दिया ! "तो मुझे ऐसा लगता है कि आप नहीं समझते कि वे लोग ऐसा कर सकते हैं कि किसी को इस शर्त पर अपने यहाँ रहने के लिए बुलाएँ कि वह मर जाएगा और जल्दी से जल्दी मर जाएगा।"

"मेरा ख़्याल है कि उन लोगों ने आपको दूसरी वजहों से बुलाया था।"

"ओहो ! तो आप उतने भोले नहीं हैं जितना कि लोग कहते हैं ! मौक़ा होता तो मैं आपको प्यारे गान्या और उसकी उम्मीदों के बारे में कुछ बताता। आपके ख़िलाफ़ साज़िश की जा रही है, प्रिंस, और वह भी बड़ी बेरहमी से, और...आपको इसके बारे में इतना शान्त देखकर सचमुच तरस आता है। लेकिन, अफ़सोस, आप अपनी आदत से मजबूर है।

"आप भी खूब हैं," प्रिंस हँसकर बोला ! "क्या आप सचमुच समझते हैं कि अगर मैं कम शान्त रहूँ तो मैं ज़्यादा खुश रहूँगा ?"

"दुःखी रहना पर जानना इससे कहीं अच्छा है कि आदमी सुखी रहे और...उसे बेवक़ूफ़ बनाया जाए। लगता है कि आप बिलकुल विश्वास नहीं करते कि आपकी कोई प्रतिद्वन्द्वी है और...वह भी उस तरफ।"

"आपकी प्रतिद्वन्द्वीवाली बात में कुछ कटुता है, इप्पोलीत। मुझे अफ़सोस है, कि मुझे आपको जवाब देने का कोई अधिकार नहीं है। जहाँ तक गव्रीला अर्दालिओनोविच का सवाल है, आपको मानना पड़ेगा कि वह जो कुछ खो चुका है उसके बाद उससे शान्त रहने की उम्मीद नहीं की जा सकती—मतलब यह कि अगर आपको उसके मामलात के बारे में कुछ भी जानकारी है। इस बात को इस दृष्टिकोण से देखना मेरी समझ में बेहतर है। उसके पास बदलने के लिए काफ़ी वक़्त है; उसके सामने अभी लम्बी ज़िन्दगी पड़ी है, और ज़िन्दगी बहुत भरपूर है...फिर भी...फिर भी..." प्रिंस अचानक अटपटा महसूस करने लगा, "जहाँ तक साज़िशों का सवाल है...मेरी समझ में ही नहीं आता कि आप चर्चा किस बात की कर रहे हैं। मैं समझता हूँ, इप्पोलीत, कि इसके बारे में चर्चा न करना ही बेहतर होगा।"

"हाँ, फिलहाल इसे रहने ही दिया जाए। इसके अलावा, अपनी आत्मा की महानता न दिखाना आपके लिए नामुमकिन है। हाँ, प्रिंस, आप तो अपनी आँखों देखी पर भी विश्वास नहीं करेंगे, हः-हः ! और अब आपको मुझसे बहुत ज़्यादा नफ़रत हो गई है न...क्या ख़्याल है आपका ?"

"किसलिए ? क्योंकि आपने हम लोगों से ज़्यादा मुसीबतें झेली हैं और अब भी झेल रहे हैं।"

"जी नहीं, इसलिए कि जितनी मुसीबत मैंने झेली है उसके लायक़ नहीं हूँ मैं।"

"जो जितनी ज़्यादा मुसीबत झेल सकता है वह उससे भी ज़्यादा झेलने के लायक़ होता। आपकी 'स्वीकारोक्ति' पढ़कर अग्लाया इवानोव्ना आपसे मिलना चाहती थीं, लेकिन..."

"टाल रही हैं...वह ऐसा कर नहीं सकतीं...मैं समझता हूँ, मैं समझता हूँ।..." इप्पोलीत ने प्रिंस की बात बीच में ही काट दी, मानो वह बातचीत का विषय बदल देने के लिए उत्सुक हो। "अरे हाँ, मुझे पता चला है कि आपने वह सारी बकवास खुद पढ़कर उन्हें सुनाई थी...सच तो यह है कि वह सब कुछ सरसाम की हालत में लिखा और...किया गया था। और मेरी समझ में नहीं आता कि कोई भी इतना...मैं क्रूर तो नहीं कहूँगा (वह मेरे लिए बहुत अपमानजनक होगा)...लेकिन कोई

इतने बचकाना ढंग से अभिमानी और बदला लेने पर उतारू कैसे हो सकता है कि वह उस 'स्वीकारोक्ति' के लिए मुझे धिक्कारे और उसे मेरे ख़िलाफ़ एक हथियार की तरह इस्तेमाल करे। आप परेशान न हों, मेरा इशारा आपकी तरफ़ नहीं है।..."

"लेकिन मुझे अफ़सोस है कि आप अपनी उस 'स्वीकारोक्ति' से इन्कार कर रहे हैं, इप्पोलीत। वह दिल खोलकर लिखी गई है, जानते हैं, उसके जो सबसे बेतुके हिस्से हैं—और उसमें इस तरह के बहुत से हिस्से हैं" (इप्पोलीत ने बहुत बुरा-सा मुँह बनाया)—"उनका प्रायश्चित भी उस पीड़ा से हो जाता है जो आपने झेली है, क्योंकि यह स्वीकार करना भी तो एक पीड़ा ही है कि उन बातों को आपने लिखा है, और शायद काफ़ी हिम्मत की भी ज़रूरत पड़ी होगी। जिस विचार ने आपको प्रेरणा दी थी उसमें तो उसका आधार बहुत उदात्त था, लोग उसके बारे में चाहे जो सोचें। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, यह बात मुझे ज़्यादा स्पष्ट दिखाई देती है, क़सम खाकर कहता हूँ। मैं आपके बारे में राय नहीं दे रहा हूँ। मैं तो यह आपको सिर्फ़ यह बताने के लिए कह रहा हूँ कि मैं क्या सोचता हूँ, और मुझे अफ़सोस है कि यह बात मैंने उस वक़्त नहीं कही।..."

इप्पोलीत का चेहरा लाल हो गया। एक क्षण को तो उसने सोचा कि प्रिंस बन रहा है और उसे पकड़ने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उसके चेहरे को और ज़्यादा ध्यान से देखने पर उसे इसकी सच्चाई पर बरबस विश्वास हो गया। उसका चेहरा खिल उठा।

"फिर भी मर तो मैं जाऊँगा ही !" वह इसमें बस "मेरा जैसा आदमी भी" जोड़ते-जोड़ते रह गया। "और आप सोच भी नहीं सकते कि आपका वह गान्या किस तरह मेरी जान के पीछे पड़ा रहता है। एक आपत्ति तो उसने यह की कि जिन लोगों ने मेरी 'स्वीकारोक्ति' सुनी थी, उनमें से तीन-चार तो यक़ीनन मुझसे पहले मर जाएँगे। कैसी लगी आपको यह बात ? वह समझता है कि इससे मुझे तसल्ली होगी, हा-हा ! पहली बात तो यह कि वे अभी तक मरे नहीं हैं, लेकिन अगर वे मर भी जाएँ, तो आपके ख़याल से इसमें मुझे क्या तसल्ली मिल सकती है ? वह अपने पैमाने से सबको नापता है। लेकिन वह इससे भी आगे निकल गया है। वह तो अब मुझे सीधे-सीधे गालियाँ देने लगा है। वह कहता है कि अगर किसी भले आदमी की हालत मुझ जैसी होती तो वह चुपचाप मर जाता, और यह कि वह सब कुछ बस मेरा अहंकार था ! कैसी लगी आपको यह बात? नहीं, देखिए वह अहंकारी है! कैसी भलमनसाहत है या, यह कहना बेहतर होगा कि इसके साथ एक ऐसे आदमी के अहंकार का ढोर-डाँगरों की तरह का कैसा भोंडापन है, जिसे वह खुद अपने अन्दर देखने की क्षमता नहीं रखता !...प्रिंस, भला आपने कभी अट्ठारहवीं शताब्दी में स्तेपान ग्लेबोव[1] नाम के किसी आदमी की मौत के बारे में पढ़ा है ? मुझे कल पढ़ने का इत्तफ़ाक़ हुआ।..."

"कौन स्तेपान ग्लेबोव ?"

"पीटर महान के शासनकाल में उसे सूली पर चढ़ा दिया गया था।"

"अरे, भगवान मेरे, हाँ, मैं जानता हूँ। वह फ़र का कोट पहने घोर सर्दी में पन्द्रह घंटे तक सूली पर लटका रहा था, और वह मरा भी बड़े धीरज और क्षमा कर देने के भाव से था। हाँ, हाँ, मैंने पढ़ा है उसके बारे में। तो ?..."

"ऐसा क्यों होता है कि भगवान कुछ लोगों को ऐसी मौत देता है, लेकिन हमें नहीं देता ? पर शायद आप नहीं समझते होंगे कि मैं स्तेपान ग्लेबोव की तरह मर सकता हूँ ?"

"अरे, मैं बिलकुल समझता हूँ," प्रिंस ने अटपटा महसूस करते हुए कहा। "मैं तो बस यह

1. ग्लेबोव, स्तेपान (1672-1718)—पीटर महान की पहली पत्नी येव्दोकीया का प्रेमी, जिसे यातनाएँ देने के बाद मौत की सज़ा देकर मास्को के रेड स्क्वायर में सूली पर चढ़ा दिया गया था।

कहना चाहता था कि आप...मेरा मतलब है कि ऐसा नहीं है कि आप ग्लेबोव की तरह नहीं होंगे, लेकिन उस जमाने में आप...यानी...आपमें ज़्यादा समानता होती..."

"समझा मैं, ग्लेबोव से नहीं बल्कि ओस्टरमन[1] से...आप यही कहनेवाले थे न ?"

"ओस्टरमन कौन ?" प्रिंस ने आश्चर्य से पूछा।

"ओस्टरमन, कूटनीतिज्ञ ओस्टरमन, वही पीटरवाले ओस्टरमन," इप्पोलीत ने अचानक बौखलाकर बुदबुदाते हुए कहा।

थोड़ी देर तक दोनों एक-दूसरे को चकित होकर देखते रहे।

"अरे न-हींईंईं !" प्रिंस ने थोड़ी देर रुकने के बाद शब्द को खींचकर कहा। "मेरा मतलब यह नहीं था। मैं नहीं समझता कि आप कभी...ओस्टमन बन सकते थे।..."

इप्पोलीत की त्योरियों पर बल पड़ गए।

"बात यह है," प्रिंस ने स्पष्टतः मामले को सम्भालने की इच्छा से कहा, "मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि उस जमाने में लोग (मैं यक़ीन दिलाता हूँ कि यह बात हमेशा मेरा ध्यान अपनी ओर खींचती रही है) उस तरह के बिलकुल नहीं थे जैसे कि आजकल हम लोग हैं। ऐसा लगता है कि वह किसी दूसरी ही नस्ल के लोग थे, हाँ। उस जमाने में लोगों को बस एक विचार की धुन समाई रहती थी, लेकिन अब लोग ज़्यादा घबराए हुए रहते हैं, वे अधिक समझदार हो गए हैं, अधिक संवेदनशील हो गए हैं, एक साथ उन्हें दो-तीन विचारों की धुन समाई रहती है...आजकल का आदमी ज़्यादा व्यापक दृष्टि है और मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि यही वजह है कि वह उतनी पूरी तरह इंसान नहीं बन पाता जितना कि उस जमाने में लोग हुआ करते थे। मैंने...मैंने इसी को ध्यान में रखकर वह कहा था, इसलिए नहीं कि..."

"मैं समझ गया। अब आप मुझे तसल्ली देने के लिए इतने बेचैन इसीलिए हैं कि आपने इतने भोलेपन से मुझसे मतभेद प्रकट किया था, हः-हः ! आप भी बिलकुल बच्चे हैं, प्रिंस। लेकिन, मैं देख रहा हूँ कि आप मेरे साथ ऐसा बर्ताव करते हैं जैसे मैं...कोई चीनी का बर्तन हूँ। कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, मैं नाराज़ नहीं हूँ। बहरहाल, हमारी बातचीत बहुत मज़ेदार रही। कभी-कभी, प्रिंस, आप भी बिलकुल बच्चों जैसे हो जाते हैं। लेकिन इतना मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि शायद मैं ओस्टरमन से बेहतर कुछ बनना चाहता हूँ। ओस्टरमन बनने के लिए मरकर फिर जिन्दा होने में कोई फ़ायदा नहीं है।...लेकिन अब मैं समझ रहा हूँ कि मैं जितनी ही जल्दी मर जाऊँ उतना ही अच्छा है, वरना मैं ख़ुद...मुझे छोड़ दीजिए...गुड-बाई ! अच्छा, आप ख़ुद मुझे यह बता दीजिए कि मेरे लिए मरने का सबसे अच्छा तरीक़ा क्या होगा ?...मेरा मतलब है, ऐसा तरीक़ा जिससे मैं सबसे ज़्यादा...सद्‌गुणी लगूँ ! बताइए मुझे !"

"हम लोगों के पास से गुजर जाइए और हमें हमारे सुख के लिए माफ़ कर दीजिए," प्रिंस ने धीमी आवाज़ से कहा।

"हः-हः-हः ! मैंने यही सोचा था ! मैं बिलकुल इसी तरह की किसी चीज़ की उम्मीद कर रहा था ! लेकिन, आप...आप...अच्छा ! बातें करना बहुत आता है आप लोगों को ! गुड-बाई, गुड-बाई !"

---

1. ओस्टमन, अन्द्रेई इवानोविच (1686-1747)—रूसी राजनेता और कूटनीतिज्ञ, जिनका जन्म वेस्टफ़ेलिया (जर्मनी) में हुआ था। पीटर महान के शासनकाल में 1704 में रूसी सेवा आरम्भ की। 1734 में प्रधानमन्त्री थे। उन्हें महारानी येलिज़ावेता के सिंहासन पर बैठने के बाद गिरफ़्तार करके साइबेरिया भेज दिया गया था, जहाँ उनका देहान्त हो गया।

6

वार्या ने येपांचिन-परिवार के घर पर शाम को होनेवाली उस पार्टी के बारे में, जिसमें प्रिंसेस बेलोकोंस्काया आनेवाली थीं अपने भाई को जो कुछ बताया था वह ठीक ही था; मेहमान उसी शाम आनेवाले थे; लेकिन इस बार भी उसने आवश्यकता से कुछ ज़्यादा ही ज़ोर देकर बात कही थी। यह सच है कि पार्टी का आयोजन कुछ जल्दी में और काफ़ी अनावश्यक हलचल के साथ किया गया था, और इसकी वजह यही थी कि इस परिवार में "हर काम दूसरों से अलग ढंग से किया जाता था।" इस सबकी जड़ थी लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना की अधीरता, क्योंकि "वह और ज़्यादा देर अनिश्चय की हालत में रहने को" तैयार नहीं थी, और फिर माँ-बाप दोनों ही अपनी लाड़ली बेटी के सुख के लिए तड़प रहे थे। इसके अलावा, प्रिंसेस बेलोकोंस्काया सचमुच जल्दी ही चली जानेवाली थीं, और चूँकि ऊँचे समाज में उनकी सरपरस्ती का बहुत महत्त्व था, और चूँकि माँ-बाप को उम्मीद थी कि प्रिंस की ओर प्रिंसेस बेलोकोंस्काया का रवैया अच्छा ही होगा, इसलिए उन्होंने सोचा यह था कि 'ऊँचा समाज' अग्लाया के होनेवाले पति को सीधे उन सर्वशक्तिमान 'वृद्धा' के हाथों से स्वीकार करे, ताकि उनकी जोड़ी में जो थोड़ी बहुत विचित्रता थी भी वह इस तरह की सरपरस्ती में देखने में कुछ कम हो जाए। सारी मुसीबत यह थी कि माँ-बाप खुद यह फ़ैसला नहीं कर पाते थे कि "इस सारे मामले में कुछ विचित्र था भी या नहीं और अगर था तो कितना, या यह कि उसमें कोई भी विचित्र बात नहीं थी।" ऐसे समय पर, जबकि अग्लाया को बदौलत कुछ भी तै नहीं हो पाया था, प्रभावशाली और दुनियादार लोगों की मित्रों जैसी और स्पष्ट राय की ज़रूरत थी। बहरहाल, कभी न कभी तो प्रिंस का परिचय समाज में कराना ही होगा, जिसके बारे में उसे तनिक भी नहीं मालूम था। सारांश यह कि उसे "नुमाइश के लिए लगाया जानेवाला था। "लेकिन, आयोजन यह किया गया था कि पार्टी सादी होगी; बस "परिवार के कुछ मित्र" आनेवाले थे थोड़ी से थोड़ी संख्या में। प्रिंसेस बेलोकोंस्काया के अलावा बस एक और महिला को निमन्त्रण दिया गया था, जो एक बहुत रोबदार और ऊँचे सरकारी ओहदेदार की पत्नी थीं। नौजवानों में अकेले रादोम्स्की के आने की उम्मीद थी; वह प्रिंसेस बेलोकोंस्काया को साथ लेकर आनेवाला था।

यह बात कि प्रिंसेस बेलोकोंस्काया आएँगी प्रिंस ने पार्टी से लगभग तीन दिन पहले ही सुन ली थी, लेकिन यह बात कि वह इतना औपचारिक आयोजन होगा उसने पार्टी से एक दिन पहले तक नहीं सुनी थी। अलबत्ता, उसने परिवार के सदस्यों के चेहरों पर परेशानी के चिन्ह देखे थे, और उससे बतियाते समय उन्होंने कुछ चिन्ता के साथ संकेत के रूप में जो बातें कही थीं उनसे वह समझ गया था कि उनके दिल में यह डर समाया हुआ था कि लोगों पर उसका प्रभाव कैसा पड़ेगा। लेकिन किसी वजह से येपांचिन-परिवार के हर सदस्य की यह राय बन गई थी कि अपने भोलेपन की वजह से उसमें यह समझने की क्षमता ही नहीं थी कि वे सब उसके लिए इतने चिन्तित थे। इसीलिए जब वे लोग उसकी ओर देखते थे तो घोर निराशा में डूब जाते थे। और सचमुच प्रिंस ने आसन्न अवसर को कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया था। वह किसी दूसरी ही चीज़ में खोया हुआ था : अग्लाया प्रति क्षण अधिक मनमौजी और उदास होती जा रही थी—यह बात प्रिंस के लिए घातक सिद्ध हो रही थी। जब उसे मालूम हुआ कि रादोम्स्की भी पार्टी में आनेवाला था तो वह बहुत खुश हुआ और बोला कि वह बहुत समय से उससे मिलना चाहता था। किसी वजह से उसके ये शब्द किसी को अच्छे नहीं लगे; अग्लाया झल्लाकर कमरे से चली गई और सिर्फ़ बहुत रात गए लगभग बारह बजे, जब प्रिंस बिलकुल जानेवाला था, उसने मौक़ा पाकर उसे विदा करते समय

अकेले में उससे कुछ शब्द कहे।

"मैं चाहती हूँ कि आप कल दिन-भर हम लोगों से मिलने न आएँ। शाम को आइएगा। उन...मेहमानों के आने के बाद। यह तो आपको मालूम है न कि हमारे यहाँ कुछ मेहमान आनेवाले हैं ?"

वह अधीरता से और अस्वाभाविक कठोरता से बोल रही थी : उसने पहली बार 'पार्टी' की चर्चा की थी। उसके लिए भी मेहमानों का विचार लगभग असह्य था; इस बात की ओर सब लोगों का ध्यान गया था। उसका बहुत जी चाहता था कि अपने माँ-बाप से इस सवाल पर लड़ ले, लेकिन स्वाभिमान और शर्मीलेपन की वजह से वह इसकी चर्चा भी नहीं कर पाती थी। प्रिंस फ़ौरन समझ गया कि वह उसके बारे में आशंकित थी (और वह इस बात को मानना नहीं चाहती थी कि वह आशंकित थी), और अचानक उसे खुद डर लगने लगा।

"हाँ, मुझे बुलाया तो गया है," उसने कहा।

अग्लाया के लिए आगे कुछ कहते रहना कठिन हो रहा था।

"आपसे किसी चीज़ के बारे में भला संजीदगी से बात की जा सकती है—ज़िन्दगी में कम से कम एक बार ?" अग्लाया ने पूछा, अचानक उसे बेहद गुस्सा आ गया था, किस लिए यह तो वह खुद भी नहीं जानती थी, लेकिन वह अपने आप पर काबू न रख सकी।

"कीजिए, मैं सुन रहा हूँ...मुझे बहुत खुशी है," प्रिंस ने बुदबुदाकर कहा।

अग्लाया एक मिनट तक और चुप रही फिर उसने प्रकट अरुचि के साथ कहना शुरू किया।

"मैं उन लोगों से उसके बारे में बहस नहीं करना चाहती थी। कभी-कभी ऐसा होता है कि आप उन लोगों के दिमाग़ में समझदारी की बात नहीं बिठा सकते। मुझे माँ के कुछ उसूलों से सख़्त नफ़रत है। पापा के बारे में मैं कुछ कहती नहीं; उनसे तो किसी बात की उम्मीद करना ही बेकार है। माँ ज़रूर उदार हैं। आप उनके सामने कोई नीचता का सुझाव रखने की कोशिश कीजिए फिर देखिए। लेकिन वह भी उस...उस बेहूदा के सामने गिड़गिड़ाती हैं ! मैं सिर्फ़ बेलोकोंस्काया की बात नहीं कर रही हूँ : वह बुढ़िया बेहूदा है, और उसका स्वभाव भी बेहूदा है, लेकिन वह है बड़ी होशियार और उन सबको अपने अँगूठे के नीचे रखना जानती है—कम से कम उसमें यह खूबी तो है। उफ़, कैसा टुच्चापन है ! और कितना हास्यास्पद है : हम लोग हमेशा से मध्यम वर्ग के लोग रहे हैं, ठेठ मध्यम वर्ग के...फिर ऊँचे समाज में चढ़ने की कोशिश क्यों करना ? बहनें भी इसी चक्कर में हैं। इन सब लोगों का दिमाग़ खराब किया है उन प्रिंस श. ने। आप इस बात पर खुश क्यों हैं कि रादोम्स्की आ रहे हैं ?"

"सुनिए, अग्लाया," प्रिंस ने कहा। "मुझे ऐसा लगता है कि आप डरती हैं कि कहीं मैं कल इस समाज में...कोई गड़बड़-घोटाला न कर बैठूँ।"

"मैं डरती हूँ ? और आपकी वजह से ?" अग्लाया अचानक बरस पड़ी। "मैं क्यों डरने लगी आपकी वजह से आप चाहे...आप चाहे जितनी हँसी उड़वाएँ अपनी ? मुझे क्या पड़ी है ? और आप ऐसे शब्द क्यों इस्तेमाल करते हैं ? 'गड़बड़-घोटाला' का क्या मतलब होता है ? यह बहुत ही बेहूदा और भोंडा शब्द है।"

"स्कूली लड़के...बोलते हैं।"

"जी हाँ, स्कूली लड़के बोलते हैं ! बहुत ही बेहूदा शब्द है। कल शाम भी शायद आप ऐसे ही शब्द इस्तेमाल करेंगे। घर जाकर अपने शब्दकोश में से ऐसे ही कुछ शब्द और ढूँढ़ निकालिएगा—वाह, कितना अच्छा असर पड़ेगा आपका ! बड़े अफ़सोस की बात है कि आप गा[illegible]

से कम ठीक से कमरे के अन्दर आना तो जानते हैं : कहाँ सीखा था आपने यह ? क्या आपको पूरा भरोसा है कि आप चाय का प्याला हाथ में लेकर उसे ठीक से पी सकेंगे, जबकि सब लोग आपको विशेष ध्यान से देख रहे होंगे ?"

"मैं समझता हूँ कि मैं पी सकूँगा।"

"कैसे अफ़सोस की बात है ! वरना मुझे हँसने का अच्छा मौक़ा मिलता। ड्राइंग-रूम में जो चीनी गुलदान रखा है कम से कम उसे ही तोड़ दीजिएगा ! बहुत क़ीमती है। उसे मेहरबानी करके तोड़ दीजिएगा, वह किसी ने उपहार में दिया था, और माँ पागल हो उठेंगी और सबके सामने फूट-फूटकर रोने लगेंगी—इतना जान से प्यारा है वह उन्हें। अपने हाथ इधर-उधर चलाइएगा, जैसा कि आप हमेशा करते हैं, और उसे गिराकर चकनाचूर कर दीजिएगा। जान-बूझकर उसके पास ही बैठिएगा।"

"बल्कि मैं तो जहाँ तक हो सकेगा उससे दूर ही बैठने की कोशिश करूँगा। मुझे चेतावनी देने का शुक्रिया।"

"तो आपको अभी से डर है कि आप अपने हाथ चलाएँगे, है न ? मैं शर्त लगाकर कह सकती हूँ कि आप किसी गम्भीर विषय पर बात करना शुरू कर देंगे, कोई बहुत ही विद्वता की और ऊँची बात, क्यों, है न ? कितना...भद्र रहेगा।"

"मैं समझता हूँ कि ऐसा करना सरासर बेवक़ूफ़ी होगी...अगर बात बेमौक़ा हो।"

"अच्छी तरह सुन लीजिए, हमेशा के लिए," अग्लाया ने धीरज खोकर चिल्लाते हुए कहा। "अगर आपने मौत की सज़ा जैसे किसी विषय पर बातचीत शुरू की, या रूस की आर्थिक हालत के बारे में, या इसके बारे में कि 'सुन्दरता ही दुनिया को बचा सकती है', तो...ज़ाहिर है, मुझे बेहद खुशी होगी और मैं जी खोलकर हँसूँगी, लेकिन...इतना मैं आपको पहले से बता दूँ—उसके बाद फिर कभी मुझे अपनी सूरत न दिखाइएगा ! सुन लिया ? मैं सच कह रही हूँ। इस बार मैं संजीदगी से कह रही हूँ !"

उसने अपनी यह धमकी सचमुच बड़ी **गम्भीरता से** दी थी, यहाँ तक कि उसकी आवाज़ में एक असाधारण स्वर और उसकी आँखों में विचित्र चमक थी—ऐसा प्रिंस ने इससे पहले कभी नहीं देखा था और, ज़ाहिर है, यह मज़ाक़ नहीं मालूम हो रहा था।

"अच्छा, तो आपने इस बात का पक्का यक़ीन कर लिया है कि मैं किसी 'गम्भीर' विषय पर बातें करूँगा, और...शायद...गुलदान भी तोड़ दूँगा। अभी एक क्षण पहले मुझे किसी बात का डर नहीं लग रहा था, और अब मुझे हर बात का डर लग रहा है। मुझे यक़ीन हो गया है कि मैं ज़रूर कोई गड़बड़-घोटाला कर बैठूँगा।"

"तो फिर बोलिएगा ही नहीं। चुप बैठिएगा और बातें ही न कीजिएगा।"

"यह तो मैं न कर सकूँगा। मुझे यक़ीन है कि मैं डर के मारे बातें करने लगूँगा और डर के मारे ही गुलदान भी तोड़ दूँगा। शायद मैं चिकने फ़र्श पर फिसलकर गिर पड़ूँगा, या ऐसी ही कोई बात हो जाएगी, क्योंकि मेरे साथ ऐसा पहले हो चुका है। मैं सारी रात इसके बारे में सपने देखता रहूँगा। आपको मुझसे इसके बारे में बात करने की ऐसी ज़रूरत क्या थी ?"

अग्लाया ने उदास भाव से उसकी ओर देखा।

"मैं आपको बताता हूँ : अच्छा यही होगा कि मैं कल आऊँगा ही नहीं। बीमारी का बहाना ठोंक दूँगा, सारा मामला ही ख़त्म हो जाएगा !" उसने आख़िरकार फ़ैसला किया।

अग्लाया ने ज़ोर से पाँव पटका और मारे गुस्से के उसका चेहरा पीला पड़ गया।

"क्या ख़ूब, ऐसा भी किसी ने देखा है कहीं ? नहीं आएँगे, जबकि ख़ासतौर पर इन्हीं के लिए...हे भगवान ! ऐसे आप जैसे...नासमझ आदमी से तो किसी का पाला न पड़े, यही अच्छा है !"

"अच्छी बात है, आऊँगा, मैं आऊँगा !" प्रिंस ने जल्दी से कहा। "और मैं सच्चे दिल से आपसे वादा करता हूँ कि सारी शाम मैं चुपचाप बैठा रहूँगा, मुँह नहीं खोलूँगा। मैं यही करूँगा।"

"आपके लिए यही अच्छा रहेगा। अभी आपने कहा, 'बीमारी का बहाना ठोंक दूँगा'। आख़िर ऐसे शब्द आपको सूझते कैसे हैं ? आप मुझसे इस तरह बात क्यों करते हैं ? आप कहीं मेरा गुस्सा भड़काने की कोशिश तो नहीं कर रहे हैं ?"

"माफ़ कीजिएगा, यह भी स्कूली लड़कों का बात करने का तरीक़ा है। मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा। मैं बिलकुल समझता हूँ कि आप...कि आपको मेरी वजह से डर लगता है...(अरे, नाराज़ न होइए !) और मुझे इस बात की बहुत खुशी है। आप सोच नहीं सकतीं कि इस वक़्त मैं कितना डरा हुआ हूँ और...आपने मुझे जो कुछ बताया है उससे मुझे कितनी खुशी है। लेकिन मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि इस डर का तनिक भी महत्त्व नहीं है। यह सब बकवास है। क़सम से, अग्लाया ! और यह खुशी हमेशा बनी रहेगी। मुझे बेहद खुशी है कि आप बिलकुल बच्ची हैं और सो भी इतनी अच्छी और नेक बच्ची ! ओह, अग्लाया, आप कितनी अच्छी हो सकती हैं !"

अग्लाया का गुस्सा सचमुच भड़क उठा होता और सच तो यह है कि उसका गुस्सा भड़क उठनेवाला था, लेकिन अचानक पल-भर में ही एक अप्रत्याशित प्रबल भावना ने उसे पूरी तरह अपने वश में कर लिया।

"और आप...कभी...बाद में...मुझे इस बात के लिए बुरा-भला तो नहीं कहेंगे कि अभी मैंने आपसे इतनी बदतमीज़ी से बातें कीं ?" अग्लाया ने अचानक पूछा।

"अरे, कभी नहीं ! और आपका गुस्सा फिर क्यों भड़क उठा है ? अब आप फिर उदास नज़रों से देख रही हैं। अग्लाया, कभी-कभी आप बहुत उदासी-भरी नज़रों से देखने लगती हैं। आप पहले कभी तो ऐसे नहीं देखती थीं। मैं जानता हूँ इसकी क्या वजह है।..."

"बस, रहने दीजिए। चुप रहिए !"

"जी नहीं, मैं कह ही दूँ तो अच्छा है। मैं बहुत दिन से यह बात कहना चाह रही हूँ; मैं यह बात कह चुका हूँ, लेकिन...वह काफ़ी नहीं है, क्योंकि आपने मेरी बात का विश्वास नहीं किया था। हम दोनों के बीच अभी तक...कोई दीवार बनकर खड़ा है।..."

"चुप रहिए, चुप रहिए, चुप रहिए, चुप रहिए !" अग्लाया ने सहसा उसका हाथ पकड़कर और सहमी-सी नज़रों से उसे घूरते हुए बीच में ही टोक दिया। उसी समय उसे बुलवा भेजा गया। वह उसके पास से ऐसे भागी जैसे उसे बहुत राहत पहुँची हो।

प्रिंस को रात-भर बुखार रहा। अजीब बात थी कि कई रात से उसे बुखार-सा रहता था। इस बार आधी सरसामी हालत में उसके मन में यह विचार उठा : कल अगर सबके सामने उसे दौरा पड़ गया तो क्या होगा ? पहले भी तो ऐसा हो चुका था न कि जब वह लोगों के बीच में था तो उसे दौरा पड़ गया था ? यह विचार मन में उठते ही उसे ठण्डा पसीना आ गया; सारी रात वह कल्पना करता रहा कि वह किसी विचित्र और असाधारण संगत में है, कुछ विचित्र लोगों के बीच। और सबसे असाधारण बात तो यह थी कि वह "बातें करने लगा"; वह जानता था कि उसे बातें नहीं करना चाहिए, लेकिन वह तमाम वक़्त बातें करता रहा, वह उन्हें किसी बात का विश्वास दिलाने की कोशिश में बातें कर रहा था। मेहमानों में रादोम्स्की और इप्पोलीत भी थे; और ऐसा लग रहा था कि उनके सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं।

सबेरे लगभग दो बजे जब उसकी आँख खुली तो उसके सिर में दर्द था, उसके विचार उलझे हुए थे और दिमाग़ में विचित्र आभास भरे हुए थे। न जाने क्यों उसका जी रोगोझिन से मिलने के लिए बेचैन हो उठा; उससे मिलने और उससे बहुत-सी बातें करने के लिए—यह तो खुद उसे भी नहीं मालूम था कि किस चीज़ के बारे में; फिर उसने न जाने किसलिए इप्पोलीत के यहाँ जाने का इरादा किया। उसके मन में कोई अस्पष्ट-सी बात थी, यहाँ तक कि उस दिन सबेरे की घटनाओं की उसके मन पर हालाँकि बहुत गहरी छाप पड़ी थी, फिर भी उसमें किसी चीज़ की कमी मालूम होती थी। इनमें से एक घटना का सम्बन्ध लेबेदेव के साथ उसकी मुलाक़ात से था।

लेबेदेव बहुत सबेरे ही, नौ बजे के कुछ ही देर बाद आ धमका था, और वह नशे में बिलकुल चुर था। हालाँकि इधर कुछ समय से प्रिंस चीज़ों को बहुत ध्यान से नहीं देखता था, फिर भी इतना तो उसने देख ही लिया कि पिछले तीन दिन से—यानी, जब से जनरल ईवोल्गिन उनका घर छोड़कर चले गए थे—लेबेदेव का बर्ताव बहुत बुरा हो गया था। वह अचानक बेहद चीकट और गन्दा हो गया था, उसकी टाई कुछ टेढ़ी रहती थी, और उसके कोट का कॉलर कुछ फटा हुआ था। मकान के अपनेवाले हिस्से में वह चीख़ता और बमकता भी रहता था, और उसकी आवाज़ छोटे आँगन के पार तक सुनाई देती थी; वेरा एक बार आँखों में आँसू भरे हुए आई थी और उसने प्रिंस को इसके बारे में कुछ बताया था। इस वक़्त अन्दर आने पर लेबेदेव कुछ विचित्र ढंग से बातें करने लगा, अपना सीना पीट-पीटकर और अपने आपको किसी बात के लिए दोषी ठहराते हुए।

"मिल गया...मुझे पूरा बदला मिल गया...अपने विश्वासघात और कमीनेपन का...मेरे मुँह पर कसकर तमाचा पड़ा !" उसने आख़िरकार अपनी बात समाप्त करते हुए बहुत दुःखी होकर कहा।

"मुँह पर तमाचा पड़ा ? किसने मारा ?...और सो भी इतने सबेरे-सबेरे ?"

"सबेरे-सबेरे ?" लेबेदेव ने व्यंग से मुस्कराते हुए कहा। "इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि दिन का कौन-सा वक़्त था...शारीरिक दण्ड के लिए भी ? लेकिन मुझे तो नैतिक...नैतिक तमाचा मारा गया, शारीरिक नहीं !"

यकायक वह बेतकल्लुफी से बैठ गया और अपना क़िस्सा सुनाने लगा। उसकी बातों का सिलसिला कुछ उखड़ा-उखड़ा था। प्रिंस ने अरुचि के भाव से मुँह बनाया और वह बाहर जाने ही वाला था कि अचानक लेबेदेव ने कुछ ऐसी बात कह दी जिसे सुनकर वह ठिठक गया। वह आश्चर्य से स्तब्ध रह गया।...लेबेदेव ने उसे अजीब-अजीब बातें बताईं।

शुरू में तो वह स्पष्टतः किसी पत्र के बारे में बातें कर रहा था। अग्लाया का नाम लिया गया। फिर लेबेदेव बड़ी कटुता से स्वयं प्रिंस को दोष देने लगा। इससे यह मतलब निकलता था कि प्रिंस ने खुद उसे नाराज़ कर दिया था। उसने कहा कि प्रिंस ने शुरू में तो उस पर पूरा विश्वास करके एक 'ख़ास शख़्स' के साथ (नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ) अपने मामलात के बारे में बताया था; लेकिन बाद में उन्होंने उसे धता बता दी थी और उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंका था, और वह भी इतने अपमानजनक ढंग से कि पिछली बार उन्होंने बड़ी रुखाई से "घर में होनेवाले परिवर्तनों के बारे में उसके मासूम सवाल" का भी जवाब देने से इन्कार कर दिया था। लेबेदेव शराबियों की तरह आँसू बहाकर स्वीकार कर रहा था कि "उसके बाद यह मेरी बर्दाश्त के बाहर हो गया, ख़ासतौर पर इसलिए कि मैं बहुत कुछ जानता था...बहुत कुछ...रोगोझिन से भी, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से भी, नस्तास्या फिलीप्पोव्ना की सहेली से भी, खुद वर्वारा अर्दालिओनोव्ना से भी, और...यहाँ तक कि...अग्लाया इवानोव्ना तक से, आप सोच भी सकते हैं, साहब ? वेरा के जरिए, अपनी प्यारी बेटी वेरा के जरिए, अपनी अकेली बेटी के जरिए, साहब...हालाँकि, साहब, सच पूछिए

तो वह मेरी अकेली बेटी नहीं है, क्योंकि मेरे तीन औलादें हैं। और वह कौन था जो खता । लिख-लिखकर मिसेज़ येपांचिना को ख़बरें भेजता रहा और, सच पूछिए तो बहुत गुप-चुप, हः-हः । कौन था जिसने उन्हें लिखा कि कहाँ-कहाँ क्या-क्या हो रहा है और...और एक शख़्स—नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की सारी गतिविधियों के बारे में हः-हः-हः ! कौन है वह, मैं आपसे पूछता हूँ ? यह गुमनाम खत लिखनेवाला है कौन ?"

"कहीं आपने तो नहीं लिखे थे ?" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा।

"मैं ही था, जनाब, मैं ही था," शराबी ने बड़ी गरिमा से जवाब दिया, "और आज भी, सबेरे साढ़े आठ बजे, अभी आधा घंटा पहले...जी नहीं, पौने घंटा पहले...मैंने उनकी नेक माँ को ख़बर भेजी थी कि मुझे...मेरा मतलब है...किसी ख़ास मामले के बारे में...उन्हें एक बहुत ज़रूरी बात बतानी है। मैंने यह ख़बर पीछेवाले दरवाज़े से एक नौकरानी के हाथ उनके पास भिजवाई थी। वह मुझसे मिलीं।"

"आप अभी लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना से मिलकर आ रहे हैं ?" प्रिंस ने पूछा; उसे किसी तरह अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

"मैं अभी उनसे मिला था और मेरे मुँह पर तमाचा मारा गया...नैतिक तमाचा। खत मुझे उन्होंने वापस कर दिया, सच तो यह है कि बिना खोले मेरे मुँह पर फेंककर मारा...और मुझे गर्दनियाँ देकर निकलवा दिया...ज़ाहिर है, शारीरिक रूप से नहीं बल्कि नैतिक रूप से...हालाँकि इतना मैं मानता हूँ कि वह लगभग शारीरिक था, मेरा मतलब है कि बस एक ही क़दम की कसर रह गई थी !"

"वह खत कौन-सा था जो उन्होंने बिना खोले आपके मुँह पर फेंककर मारा था ?"

"अरे...हः-हः-हः ! मैंने आपको बताया नहीं ? मेरा ख़्याल था कि मैं पहले ही बता चुका हूँ आपको।...बात यह है, मुझे एक खत इस हिदायत के साथ मिला था कि मैं उसे पहुँचा दूँ।..."

"किसका खत ? किसके नाम ?"

लेकिन लेबेदेव ने जो कुछ 'समझाया' उनमें कुछ बातें ऐसी थीं कि उनका सिर-पैर कुछ भी समझना मुश्किल था। लेकिन इतना प्रिंस की समझ में ज़रूर आया कि वह खत एक नौकरानी ने बहुत सबेरे लाकर वेरा लेबेदेवा को दिया था कि उसे उस शख़्स के पास भिजवा दिया जाए जिसका पता उस पर लिखा था..."बिलकुल पहले की तरह...बिलकुल पहले की तरह उसी हस्ती का खत एक शख़्स के नाम (उनमें से एक को मैं 'हस्ती' कहता हूँ और दूसरे को सिर्फ़ 'शख़्स' कहता हूँ, बस यह दिखाने के लिए कि मैं उसे तुच्छ समझता हूँ, और, साहब, एक को दूसरे से अलग करने के लिए भी; क्योंकि एक जनरल की मासूम और उदार बेटी और...यों समझ लीजिए...एक समाज की तितली के बीच बड़ा फ़र्क़ होता है)। तो, साहब, वह खत एक 'हस्ती' ने भेजा था जिसका नाम 'अ' अक्षर से शुरू होता है।"

"यह कैसे हो सकता है ? नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के नाम ? बकवास !" प्रिंस चिल्लाकर कहा।

"था, साहब, था। उसके नाम न सही, साहब, तो रोगोझिन के नाम और...और...एक बार एक खत मिस्टर तेरेंत्येव के नाम भी था, उसी हस्ती की तरफ़ से भिजवाया गया जिसका नाम 'अ' से शुरू होता है।" लेबेदेव ने आँख मारी और मुस्करा दिया।

चूँकि वह एक बात से उचककर दूसरी बात पर पहुँच जाता था, और भूल जाता था कि उसने बात शुरू कहाँ से की थी, इसलिए प्रिंस चुप रहा कि वह अपना क़िस्सा पूरा कर ले। लेकिन यह बात अभी तक साफ़ नहीं हुई थी कि वे खत लेबेदेव के हाथ भिजवाए गए थे या वेरा के हाथ। अगर उसने खुद कहा था, कि "खत रोगोझिन के नाम हों या नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के नाम, एक

ही बात है", तो अधिक सम्भावना इसी बात की थी कि खत उसके हाथों से नहीं गुजरे थे—मतलब यह कि अगर कोई खत थे भी। अब यह खत उसके पास कैसे पहुँच गया था, यह बात एक पहेली ही बनी रही; सबसे अधिक सम्भावना इसी बात की थी कि वह किसी न किसी तरह वेरा के पास से उसके हाथ लग गया था...उसने वेरा के पास से उसे चुरा लिया होगा और अपना कोई उल्लू सीधा करने के लिए लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना के पास ले गया होगा। आख़िरकार प्रिंस की समझ में यही आया और उसने उसका यही मतलब लगाया।

"आप बिलकुल पागल हैं !" वह बहुत उद्विग्न होकर चिल्लाया।

"पूरी तरह नहीं, मेरे प्यारे प्रिंस, पूरी तरह नहीं," लेबेदेव ने किंचित द्वेष के भाव से उत्तर दिया। "यह सच है कि मैं वह खत आपको देनेवाला था, ख़ुद आपके हाथों में, यों ही आपके साथ एहसान करने के लिए, साहब...लेकिन फिर मैंने सोचा कि इस तरह के एहसान की वहाँ ज़्यादा कद्र होगी, और इसलिए मैंने नेक माँ को सब कुछ बता देने का फ़ैसला किया...क्योंकि मैं उन्हें पहले भी गुमनाम चिट्ठी के जरिए कुछ बता चुका था। और आज सबेरे जब मैंने 9 बजकर 20 मिनट पर मिलने के लिए उन्हें एक पर्चा लिखा तो उसके नीचे भी मैंने वही दस्तख़त किए थे : 'आपका गुप्त संवाददाता', और मुझे फ़ौरन अन्दर बुला लिया गया, फ़ौरन, साहब, यहाँ तक कि बेहद जल्दी से, पीछेवाले दरवाज़े से ही, नेक माँ के सामने !"

"फिर ?..."

"फिर, साहब, जैसा कि मैं आपको बता चुका हूँ, उन्होंने मुझे लगभग मारते-मारते छोड़ा; मेरा मतलब है, साहब, लगभग, यानी कहा जा सकता है कि एक तरह से उन्होंने मेरी पिटाई कर ही दी। और खत उन्होंने मेरे मुँह पर वापस फेंककर मारा। पहले तो वह उसे रखना चाहती थीं। मैंने यह देखा था, साहब, इस बात की ओर मेरा ध्यान गया था, लेकिन उन्होंने अपना इरादा बदल दिया और खत मेरे मुँह पर फेंक मारा। 'अगर', वह बोलीं, 'इसे पहुँचाने की जिम्मेदारी तुम जैसे को सौंपी गई है तो पहुँचा दो।...' जी हाँ, सचमुच उन्होंने बहुत बुरा माना था। अगर उन्हें यह बात मेरे सामने कहते शर्म नहीं आई तो इसका मतलब है कि वह बहुत चिढ़ी हुई थीं। स्वभाव ही ऐसा है कि बड़ी जल्दी गुस्सा आ जाता है !"

"और वह खत अब कहाँ है ?"

"अरे, अभी तक मेरे पास है। यह रहा, शायद !"

और यह कहकर उसने गान्या के नाम अग्लाया का खत प्रिंस के हवाले कर दिया, जो गान्या ने दो घंटे बाद अपनी बहन को बड़े विजय-गर्व के साथ दिखाया था।

"यह खत आपके पास नहीं रहने दिया जा सकता।"

"यह आपके लिए है ! आपके लिए ! मैं इसे आप ही के पास लाया हूँ, साहब !" लेबेदेव ने बड़ी जोश से कहा। "अब मैं फिर आपका हूँ, पूरी तरह आपका, साहब, दिमाग़ से भी और दिल से भी; आपका नौकर, साहब, मेरी तरफ़ से छोटे-से विश्वासघात के बाद मेरे दिल को चीर डालिए, लेकिन मेरी दाढ़ी को बख़्श दीजिए, जैसा टामस मोर ने कहा था...इंगलैण्ड में और ब्रिटेन में, साहब। Mea culpa, mea culpa[1], जैसा कि रोमिया पोप कहता है, मेरा मतलब है कि वह पोप तो है रोम का, लेकिन मैं उसे रोमिया पोप कहता हूँ।"

"यह खत फ़ौरन पहुँचा दिया जाना चाहिए," प्रिंस ने कहा; वह परेशान दिखाई दे रहा था। "मैं इसे दे आऊँगा।"

1. मेरा दोष, मेरा दोष। (लैटिन)

"लेकिन क्या ज़्यादा अच्छा यह न होगा, मेरे शिष्ट प्रिंस, क्या यह ज़्यादा अच्छा न होगा कि...यानी...ऐसा किया जाए, साहब !"

लेबेदेव ने विचित्र-सा मुँह बनाया जिस पर चापलूसी का भाव था; वह ज़ोर से अपनी कुर्सी पर कसमसाया जैसे किसी ने उसके सुई चुभो दी हो; बड़ी मक्कारी से आँख मारते हुए वह अपने हाथों से मुद्राएँ बनाकर कुछ दिखा रहा था।

"क्या मतलब आपका ?" प्रिंस ने कठोरता से पूछा।

"पहले इसे खोला क्यों न जाए, साहब ?" उसने खुशामद के लहजे में, मानो कोई दोस्ताना बात बताते हुए कहा।

प्रिंस इतने गुस्से से उछल खड़ा हुआ कि लेबेदेव उठकर भागा; लेकिन दरवाज़े पर पहुँचकर वह रुक गया और प्रिंस का गुस्सा ठण्डा होने की राह देखने लगा।

"उफ़, लेबेदेव, आप इतने नीचे कैसे गिर गए ?" प्रिंस ने उदास होकर कहा।

लेबेदेव का चेहरा खिल उठा।

"मैं नीच हूँ, नीच !" उसने फ़ौरन प्रिंस के पास आकर अपना सीना पीटते हुए कहा।

"उफ़, कैसी घिनौनी बात है !"

"जी हाँ, घिनौनी बात है ! यही ठीक शब्द है इसके लिए !"

"और कैसी बुरी आदत है आपकी...कि आप इस तरह की अजीब हरकतें करते हैं ! अरे, आप तो सरासर जासूस हैं ! आपने वे गुमनाम खत लिखकर बेकार क्यों परेशान किया...ऐसी नेक और शरीफ़ औरत को ? आख़िर अग्लाया, इवानोव्ना जिसे भी उनका जी चाहे खत क्यों नहीं लिख सकतीं ? क्या आप आज वहाँ उनकी शिकायत करने गए थे ? वहाँ आपको क्या हाथ लगने की उम्मीद थी ? आप आख़िर मुख़बिर क्यों बन गए ?"

"मैंने, साहब, बस अपने मन की कुरेद मिटाने के लिए और...यों समझ लीजिए...नेक आत्मा की परोपकार की भावना से ही ऐसा किया...जी हाँ !" लेबेदेव बुदबुदाकर बोला। "अब मैं पूरी तरह आपके हवाले हूँ, एक बार फिर पूरी तरह आपका। आपके लिए जान हाजिर है !"

"क्या आप लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना से मिलने इसी हालत में गए थे, जैसे इस वक़्त हैं ?" प्रिंस ने घिन खाते हुए जिज्ञासा से पूछा।

"जी नहीं, साहब,...उस वक़्त कहीं ज़्यादा ताजगी थी मुझमें...और कहीं ज़्यादा शरीफ़ लग रहा था। वह तो, साहब, जब मेरा बुरी तरह अपमान किया गया तब मेरी यह...यानी...यह बुरी हालत हो गई।"

"अच्छी बात है, अब आप यहाँ से जाइए।"

लेकिन यह प्रार्थना कई बार दोहराए जाने के बाद ही लेबेदेव ने आख़िरकार वहाँ से उठकर जाने का इरादा किया। मगर दरवाज़ा खोलने के बाद वह फिर वापस आ गया, पंजों के बल कमरे के बीच तक आया, और एक बार फिर अपने हाथों से पत्र खोलने के संकेत करने लगा; लेकिन अपने सुझाव को शब्दों में व्यक्त करने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी; फिर वह अपने होंठों पर शान्त और मिठास-भरी मुस्कराहट लिए कमरे से बाहर चला गया।

यह सब सुनना अत्यन्त कष्टप्रद था। इन सब बातों से एक ही मुख्य और महत्वपूर्ण तथ्य सामने आता था—अर्थात् यह कि अग्लाया बहुत बचैनी और अनिश्चय की और किसी कारण अत्यधिक मानसिक कष्ट की स्थिति में थी ("ईर्ष्या के मारे," प्रिंस ने अपने आपसे कानाफूसी के स्वर में कहा)। यह भी स्पष्ट था कि कुछ दुष्ट लोग उसे परेशान कर रहे थे, और सचमुच यह

बहुत ही अजीब बात थी कि वह उन लोगों पर इतना भरोसा करती थी। इसमें सन्देह नहीं था कि उस अनुभवहीन लेकिन तीखे स्वभाव के और अभिमानी मस्तिष्क में कोई विशेष योजनाएँ पक रही थीं, शायद विध्वंसकारी और...अनगृह।...प्रिंस बहुत भयभीत हो उठा और अपनी परेशानी में उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि करे क्या। उसे तबाही को रोकने के लिए कुछ तो करना ही था—यह वह महसूस कर रहा था। उसने बन्द लिफ़ाफ़े पर लिखे हुए पते को एक बार फिर देखा। उसके बारे में उसे न कोई सन्देह था और न वह उसकी वजह से परेशान था, क्योंकि उसे पूरा भरोसा था; उस खत के बारे में कुछ और ही बात थी जो उसे परेशान कर रही थी : वह गान्या पर भरोसा नहीं कर सकता था। फिर भी उसने खत खुद ही पहुँचाने का फ़ैसला किया, और इसके लिए वह घर से निकल भी पड़ा, लेकिन रास्ते में उसने अपना विचार बदल दिया। वह प्तीत्सिन के घर लगभग पहुँच ही गया था कि इतने में सौभाग्य से उसे कोल्या मिल गया और प्रिंस ने उससे वह खत अपने भाई के ही हाथों में ले जाकर देने को कहा, इस तरह कि जैसे वह सीधे अग्लाया के पास से आया हो। कोल्या ने कोई सवाल पूछे बिना खत ले जाकर दे दिया; गान्या के दिमाग़ में यह बात कभी आई भी नहीं कि यह खत इतने बहुत-से लोगों के हाथों से होता हुआ आया था। घर लौटकर प्रिंस ने वेरा को बुलवाया और उसे उतनी बात बताकर जितनी ज़रूरी थी उसकी परेशानी दूर कर दी, क्योंकि वह इस बीच सारी देर खत ढूँढ़ती रही थी और उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे। यह जानकर कि उसके बाप वह खत उड़ा ले गए थे वह दंग रह गई। (बाद में प्रिंस ने उससे मालूम किया कि वह पहले भी कई बार रोगोझिन और अग्लाया के इस भेद का साथ दे चुकी थी; यह बात उसे कभी सूझी भी नहीं थी कि इस तरह वह प्रिंस के साथ कोई अपकार कर रही है।)

अन्ततः प्रिंस इतना परेशान हो गया कि जब दो घंटे बाद कोल्या के पास से कोई उसके बाप की बीमारी का सन्देश लेकर आया तो शुरू में तो वह समझ ही नहीं पाया कि क्या क़िस्सा है। लेकिन इस घटना ने उसकी हालत काफ़ी सम्भाल दी क्योंकि इसकी वजह से उसका ध्यान बहुत बड़ी हद तक दूसरी तरफ़ चला गया। लगभग शाम तक वह जनरल ईवोल्गिन की पत्नी के यहाँ ही रहा (जहाँ, ज़ाहिर है, बीमार को पहुँचा दिया गया था)। वह वहाँ लगभग किसी भी काम का नहीं था, लेकिन कुछ लोग होते हैं जिन्हें किसी वजह से लोग चाहते हैं कि मुसीबत के वक़्त वे उनके पास रहें। कोल्या बहुत व्याकुल था और वह दहाड़ें मार-मारकर रो रहा था, लेकिन उसे सारे वक़्त दौड़-धूप भी करनी पड़ रही थी : उसे डॉक्टर को बुलाने भेजा गया और वह तीन डॉक्टर बुला लाया, फिर वह भागा-भागा दवा की दुकान गया, और फिर हज्जाम को बुलाने। जनरल साहब में जान तो दुबारा आ गई, लेकिन उन्हें होश नहीं आया; डॉक्टरों ने कह दिया कि बीमार की हालत बहरहाल 'खतरनाक' तो है ही। वार्या और नीना अलेक्सान्द्रोव्ना बीमार के पास से पल-भर को भी नहीं हटीं; गान्या घबराया हुआ था और उसे बहुत गहरा आघात पहुँचा था, लेकिन वह ऊपर नहीं गया, यहाँ तक कि उसे बीमार को देखने जाने से डर तक लग रहा था; वह अपने हाथ मल रहा था और प्रिंस के साथ उसकी जो टूटी-टूटी बातें हुईं उनके दौरान उसने अपनी बात इस तरह व्यक्त कर दी कि "ऐसी मुसीबत भी इसी घड़ी आनी थी !" प्रिंस को लगा कि वह इस बात को समझता था कि गान्या का मतलब किस तरह की घड़ी से था। प्रिंस ने प्तीत्सिन के यहाँ इप्पोलीत को कहीं नहीं देखा, वह तब तक वहाँ से जा चुका था। लेबेदेव जो सुबह 'सफ़ाई देने' के बाद लगातार दिन-भर सोता रहा था, शाम को वहाँ दौड़ा-दौड़ा आया। उसका नशा अब लगभग बिलकुल उतर चुका था, और वह बीमार पर सचमुच आँसू बहा रहा था जैसे जनरल साहब उसके

सगे भाई हों। वह ज़ोर-ज़ोर से अपने आपको दोष दिए जा रहा था, लेकिन यह बताए बिना कि किस बात के लिए, और नीना अलेक्सान्द्रोव्ना की नाक में उसने दम कर रखा था हर मिनट उसे यह यक़ीन दिलाकर कि "असली वजह वही था, वह खुद, उसके अलावा कोई नहीं, यह कि उसने...बस मन की कुरेद मिटाने के लिए...और यह कि 'दिवंगत' (वह जनरल साहब को, जो अभी तक जिन्दा थे, बार-बार यही कह रहा था) सचमुच अपार प्रतिभा के आदमी थे।" वह बार-बार जनरल साहब की प्रतिभा पर ज़ोर देता था, मानो इस बात से उस समय कोई असाधारण सहायता मिल सकती हो। उसके सच्चे आँसुओं को देखकर नीना अलेक्सान्द्रोव्ना ने आख़िरकार ज़रा-सी भी झिड़की के बिना और सच तो यह है कि कुछ स्नेह के साथ ही कहा, "बस, बस, रोइए नहीं, भगवान आपको क्षमा कर देगा !" लेबेदेव ये शब्द सुनकर ऐसा चकित रह गया, और ख़ासतौर पर उनके लहजे से, कि सारी शाम उसने उनके पास से हिलने का नाम तक नहीं लिया (और उसके बाद जितने दिन जनरल साहब जिन्दा रहे, वह सुबह से रात तक उन्हीं के यहाँ रहता था)। दिन में मिसेज़ येपांचिना के यहाँ से दो बार जनरल साहब की तबियत पूछने के लिए आदमी नीना अलेक्सान्द्रोव्ना के यहाँ आया। रात को नौ बजे जब प्रिंस ने येपांचिन-परिवार के मेहमानों से भरे ड्राइंग-रूम में क़दम रखा, लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने फ़ौरन उससे बड़ी सहानुभूति से और विस्तार के साथ बीमार के बारे में पूछना शुरू किया, और उन्होंने प्रिंसेस बेलोकोंस्काया के इन प्रश्नों का उत्तर बड़ी गम्भीरता से दिया कि बीमार कौन था और नीना अलेक्सान्द्रोव्ना कौन थीं। प्रिंस को यह बहुत अच्छा लगा। मिसेज़ येपांचिना को जनरल साहब की हालत के बारे में बताते समय प्रिंस खुद 'बड़ी खूबसूरती से' बोल रहा था, जैसा कि अग्लाया की बहनों ने इसके बारे में बाद में बताया, "विनम्रता से, शान्त भाव से, किसी भी अनावश्यक शब्द के बिना, किसी हाव-भाव के बिना और गरिमा के साथ; वह अन्दर बहुत ही सलीक़े से आया और उसने कपड़े भी बेहद उम्दा पहन रखे थे", और न सिर्फ़ यह कि वह चिकने फ़र्श पर फिसलकर गिरा नहीं, जैसा कि पिछली रात उसे डर था, बल्कि ऐसा लग रहा था कि सभी पर उसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा था।

जहाँ तक प्रिंस का सवाल था, जब उसने बैठकर चारों ओर नज़र डाली तो उसने देखा कि पार्टी में आए हुए मेहमान उन भूत-प्रेतों जैसे बिलकुल नहीं थे जिनसे अग्लाया ने पिछली रात उसे डराया था, और न वे उन दानवी आकृतियों जैसे थे जिन्हें उसने रात को सपने में देखा था। अपनी ज़िन्दगी में पहली बार उसने उस चीज़ का एक छोटा-सा कोना देखा था, जो 'उच्च समाज' के भयानक नाम से जानी जाती थी। स्वयं अपनी कुछ प्रवृत्तियों, प्रयोजनों और योजनाओं के अनुसार वह बहुत समय से इस जादुई मण्डल में प्रवेश पाने के लिए बहुत उत्सुक था, और इसलिए उसे इस बात से बड़ी दिलचस्पी थी कि उस पर उसकी पहली छाप क्या पड़ती है। उस पर जो पहली छाप पड़ी वह काफ़ी रोचक थी। उसे तुरन्त यह आभास हुआ कि वे सब लोग पैदा ही एक-दूसरे के साथ रहने के लिए हुए थे; कि उस शाम येपांचिन-परिवार के यहाँ कोई दावत नहीं हो रही थी और उन लोगों ने कोई ख़ास मेहमान नहीं बुलाए थे; कि वे बिलकुल 'घनिष्ठ लोग' थे, और यह कि वह खुद बहुत दिनों से उन लोगों का वफ़ादार दोस्त रहा था और उनके विचारों में साझेदार था और कुछ समय के अलगाव के बाद फिर उनके पास लौट आया था। उन लोगों के परिष्कृत आचरण, सादगी और प्रत्यक्ष निष्कपटता में लगभग जादू जैसा आकर्षण था। यह बात कभी उसके दिमाग़ में भी नहीं आ सकती थी कि यह सारी निष्कपटता और उदात्त आचरण, वाक्-पटुता और उच्च वैयक्तिक गरिमा शायद केवल एक भव्य कलात्मक आवरण मात्र था। अपने प्रभावशाली बाह्य रूप के बावजूद, अधिकांश मेहमान दरअसल कुछ छिछले आदमी थे, जो आत्मसन्तुष्ट महसूस करने

की वजह से यह तक नहीं समझते थे कि उनके बढ़ियापन का बहुत बड़ा हिस्सा बस बाहरी दिखावा था जिसके लिए वे जिम्मेदार नहीं थे, क्योंकि वह सब तो उन्हें अनजाने ही उत्तराधिकार में मिल गया था। प्रिंस पहली छाप के जादू से ऐसा मुग्ध था कि उसे यह शंका तक नहीं हुई। मिसाल के लिए, उसने देखा कि एक वयोवृद्ध सज्जन ने, जो एक महत्त्वपूर्ण राजनेता थे और उसके दादा की उम्र के रहे होंगे, उसके जैसे अनुभवहीन नौजवान की बात सुनने के लिए अपनी बातचीत का क्रम तक भंग कर दिया और उन्होंने न सिर्फ़ उसकी बात सुनी, बल्कि प्रत्यक्षतः उसकी राय को मूल्यवान भी समझा, उसके प्रति उनका व्यवहार बहुत शालीन और सहृदय रहा, फिर भी वे अजनबी थे, पहली ही बार मिले थे। शायद शिष्टता के इस परिष्कार का ही प्रिंस की जिज्ञासु आवेगपूर्ण संवेदनशीलता पर सबसे गहरा प्रभाव पड़ा था। शायद उसने पहले से ही अपने मन में ऐसी अच्छी छाप पड़ने की धारणा बना ली थी।

फिर भी ये सारे लोग 'परिवार के मित्र' और एक-दूसरे के भी दोस्त होने के बावजूद किसी भी प्रकार न तो परिवार के ही ऐसे गहरे मित्र थे और न एक-दूसरे के ही, जैसा कि प्रिंस ने उनसे परिचय कराए जाते समय सोचा था। उनमें से कुछ ऐसे थे जो कभी, दुनिया की किसी भी चीज़ के बदले यह मानने को तैयार न होते कि येपांचिन-परिवार के लोग उनके बराबर के थे। वहाँ ऐसे लोग भी थे जो एक-दूसरे से बिलकुल नफ़रत करते थे; बूढ़ी प्रिंसेस बेलोकोंस्काया को अपनी सारी ज़िन्दगी 'वयोवृद्ध राजनेता' की पत्नी से "चिढ़ रही थी", और उनकी पत्नी को भी मिसेज़ येपांचिना से कोई ऐसा ख़ास लगाव नहीं था। यह 'राजनेता', जो किसी वजह से जनरल येपांचिन और उनकी पत्नी की सरपरस्ती उनकी युवावस्था से करते रहे थे और जो वहाँ पर मौजूद सबसे महत्त्वपूर्ण आदमी थे, जनरल साहब की नज़रों में ऐसी शानदार हस्ती थे कि उनके सामने होने पर उनके मन में आदर और श्रद्धापूर्ण भय के अतिरिक्त कोई दूसरा भाव जागृत ही नहीं हो सकता था, और अगर वह एक क्षण के लिए भी अपने देवता-तुल्य नहीं बल्कि अपने आपको उनके बराबर समझते तो उन्हें सचमुच अपने आपसे बिलकुल नफ़रत हो जाती। वहाँ ऐसे लोग थे जो बरसों से एक-दूसरे से नहीं मिले थे और जो एक-दूसरे के प्रति निश्चित अरुचि की न भी सही पर केवल उदासीनता की ही भावना रखते थे, लेकिन जो इस समय ऐसे तपाक से एक-दूसरे से मिल रहे थे, जैसे वे अभी कल-परसों ही किसी अत्यन्त मित्रतापूर्ण और रुचिकर महफिल में मिल चुके हों। लेकिन पार्टी बहुत बड़ी नहीं थी। प्रिंसेस बेलोकोंस्काया और "वयोवृद्ध राजनेता", जो सचमुच बहुत महत्त्वपूर्ण आदमी थे, और उनकी पत्नी के अलावा सबसे पहले तो वहाँ एक बहुत ही ठसकदार फौज़ी जनरल थे, जो बैरन या काउंट थे, जिनका नाम जर्मनों जैसा था; वह कमाल की हद तक कम बोलते थे, और उनके बारे में मशहूर यह था कि उन्हें राज-काज के मामलात की बहुत अच्छी जानकारी थी, और वह बहुत विद्वान होने की भी ख्याति रखते थे; यह उन धुरन्धर प्रशासकों में से थे जो दुनिया की हर बात जानते थे—"शायद खुद रूस को छोड़कर", एक ऐसे आदमी जो हर पाँच साल में एक ऐसी पते की बात कह देते थे जिसे "अपनी गूढ़ता की वजह से सराहनीय" माना जाता था, और जिसके बारे में पूरा विश्वास था कि वह बात एक कहावत बन जाएगी और सबसे ऊँचे क्षेत्रों तक पहुँच जाएगी; वह उन ऊँचे अफ़सरों में से थे जो अत्यधिक लम्बी, बल्कि कहना चाहिए कि असाधारण रूप से लम्बी सेवा के बाद, आमतौर पर बहुत ऊँचे पद पर पहुँचकर, बहुत अच्छी हैसियत बनाकर और अपार धन-दौलत बटोरकर मर जाते हैं, हालाँकि अपने जीवन-भर वे कोई कारनामा नहीं करते और, सच पूछिए तो, वे हमेशा किसी भी कारनामे के प्रति बैर का ही भाव रखते हैं। यह जनरल साहब जनरल येपांचिन से फ़ौरन ऊपरवाले अफ़सर थे। जनरल येपांचिन अपने

कृतज्ञ हृदय के उत्साह के कारण और एक विचित्र प्रकार के स्वाभिमान के कारण भी उन्हें अपना हितैषी मानते थे। लेकिन वह जनरल साहब अपने आपको जनरल येपांचिन का हितैषी बिलकुल नहीं मानते थे; वह उनकी ओर कोई विशेष ध्यान ही नहीं देते थे, पर वह बड़ी खुशी से उनसे तरह-तरह के कितने ही काम करवा लेते थे, और अगर अपने किसी प्रयोजन की वजह से, भले ही वह सबसे उच्चतम न होता, ज़रूरी हो जाता तो वह उनकी जगह किसी दूसरे अफ़सर को तैनात कर देने में तनिक भी संकोच न करते। वहाँ काफ़ी बड़ी उम्र के एक सज्जन भी थे, जो देखने में काफ़ी महत्त्वपूर्ण मालूम होते थे, जिनके बारे में कहा जाता था कि वह मिसेज़ येपांचिना के कोई रिश्तेदार थे, लेकिन यह बात बिलकुल सच नहीं थी; वह बहुत ऊँचे ओहदे और ऊँची हैसियत के आदमी थे, पैसेवाले थे और ख़ानदानी रईस थे, हट्टे-कट्टे और तनदुरुस्त थे, बोलते बहुत थे और उनके बारे में यहाँ तक मशहूर था कि वह असन्तुष्ट व्यक्ति थे (हालाँकि, इस शब्द के सबसे मासूम अर्थ में), बहुत गुस्सैल थे (लेकिन उनमें यह बात भी अच्छी लगती थी), उनके तौर-तरीक़े अंग्रेज़ रईसों जैसे थे और रुचियाँ भी अंग्रेजों जैसी ही थीं (मिसाल के लिए, कम भुने हुए गोश्त, घोड़े की जीन, खिदमतगारों वगैरह के मामले में)। वह उन 'राजनेता' के बहुत अच्छे दोस्त थे, और उनका दिल बहलाने की कोशिश करते रहते थे। इसके अलावा, मिसेज़ येपांचिना को न जाने क्यों यह ख़ब्त सवार हो गया था कि बड़ी उम्र के उन सज्जन (जो ख़ासे छिछोरे आदमी थे और महिलाओं के बड़े प्रशंसक समझे जाते थे) के मन में शायद अचानक अलेक्सान्द्रा के सामने शादी का प्रस्ताव पेश कर देने का विचार आ जाए।

वहाँ एकत्रित अतिथियों की इस सबसे ऊँची और ठोस परत के बाद कुछ कम उम्र के लोगों की एक परत थी, हालाँकि ये भी अत्यन्त सराहनीय गुणों से सम्पन्न थे। इस समूह में प्रिंस श. और रादोम्स्की के अलावा सुविख्यात और अत्यन्त आकर्षक प्रिंस न. भी थे, जो एक जमाने में सारे योरप की औरतों के दिल लूट चुके थे; वह अब पैंतालीस साल के हो चुके थे लेकिन देखने में अब भी खूबसूरत थे, किस्से बयान करने में उन्हें कमाल हासिल था, बहुत दौलतवाले थे, हालाँकि उनके मामलात कुछ गड़बड़ हालत में थे, और वह आदत से मजबूर अपना ज़्यादातर वक़्त विदेशों में बिताते थे। सबसे आख़िर में, वहाँ एक तीसरी ख़ास परत के ऐसे लोग थे जो अपने आपमें इस 'अनन्य समूह' का हिस्सा नहीं मालूम होते थे लेकिन जिनसे न जाने क्यों इस "अनन्य समाज" में भेंट हो जाती थी। जब येपांचिन-दम्पती कभी-कभार किसी गूढ़ उद्देश्य से कोई महत्त्वपूर्ण पार्टी देते थे, जो उसका नियम बन गया था, वे उच्चतम समाज के लोगों के साथ निचली परत के लोगों को मिलाना पसन्द करते थे, और मध्यम वर्गों के कुछ चुने हुए प्रतिनिधि बुला लेते थे। इस बात के लिए येपांचिन-दम्पती की प्रशंसा भी की जाती थी और उनकी गणना व्यवहारकुशल लोगों में की जाती थी, जो अपनी जगह पहचानते थे; और अपने बारे में इस राय पर येपांचिन पति-पत्नी को गर्व था। उस शाम मध्यम वर्गों का एक प्रतिनिधि इंजीनियरिंग कोर का एक कर्नल था, जो संजीदा आदमी था और प्रिंस श. का गहरा दोस्त था जिन्होंने उसे येपांचिन-दम्पती से परिचित कराया था। लोगों के बीच वह कुछ चुप-चुप-सा रहता था, और अपनी दाहिनी तर्जनी पर बड़ी-सी अँगूठी पहने रहता था, जो प्रत्यक्षतः उसे पुरस्कार में मिली थी। और सबसे अन्त में, वहाँ एक जर्मन मूल के साहित्यिक सज्जन भी मौजूद थे, लेकिन वह रूसी कवि थे, जो इसके अलावा बिलकुल भद्र आदमी थे, जिसकी वजह से बेखटके उनका परिचय अच्छे समाज में कराया जा सकता था। उनकी सूरत-शक्ल देखने में अच्छी तो थी लेकिन न जाने क्यों कुछ अनाकर्षक लगती थी; उनकी उम्र अड़तीस साल की थी और कपड़े इतने बढ़िया पहन रखे थे उन्होंने कि कोई उँगली नहीं उठा सकता

था। उनका सम्बन्ध एक बेहद बूर्ज़ुआ, लेकिन साथ ही बेहद इज़्ज़तदार जर्मन परिवार से था; वह हर अवसर का पूरा फ़ायदा उठाना जानते थे, अपने लिए उन महत्त्वपूर्ण लोगों तक पहुँचने का रास्ता निकाल लेना जानते थे जिनसे उनको कुछ फ़ायदा हो सकता था, और वह उनके कृपापात्र बने रहना जानते थे। किसी ज़माने में उन्होंने किसी महत्त्वपूर्ण जर्मन कवि का अनुवाद किया था; वह उसका समर्पण छन्द में लिखने में भी सफल हो गए थे और बड़े जोरों के साथ एक प्रसिद्ध लेकिन स्वर्गवासी रूसी कवि के साथ अपनी दोस्ती की डींग मारा करते थे (ऐसे लेखकों का एक पूरा समूह है जिन्हें छपे हुए लेखों में महान लेकिन स्वर्गवासी लेखकों के साथ अपनी दोस्ती का दावा करने का बहुत शौक है), और येपांचिन-दम्पती से उनका परिचय अभी हाल ही में 'वयोवृद्ध राजनेता' की पत्नी ने कराया था। इन महिला की ख्याति थी कि वह लेखकों और विद्वानों की सरपरस्ती करती थीं और ऊँचे ओहदेवाले कुछ लोगों का सहारा लेकर जिन पर उनका असर था, उन्होंने एक-दो लेखकों को पेंशन भी दिलवा दी थी। और एक ख़ास तरह का असर उनका सचमुच था भी। वह पैंतालीस साल की औरत थीं (मतलब है कि उनके पति जैसे बूढ़े आदमी के लिए बहुत ही कम-उम्र बीवी), जो किसी जमाने में बेहद खूबसूरत हुआ करती थीं और अब भी, पैंतालीस साल की बहुत-सी औरतों के तरह, उन्हें बनने-ठनने का शौक था; समझदार वह कुछ ख़ास नहीं थीं और उनकी साहित्य की जानकारी के बारे में भी शक था। लेकिन साहित्यिक लोगों की सरपरस्ती करने का उन्हें उतना ही ख़ब्त था जितना बनने-ठनने का। कितनी ही मौलिक रचनाएँ और अनुवाद उनके नाम समर्पित किए गए थे; दो-तीन लेखकों ने उनकी इजाज़त से वे पत्र भी प्रकाशित कराए थे जो उन लोगों ने उन्हें अधिकतम महत्त्व के विषयों पर लिखे थे।...और इसी सारे समाज को प्रिंस असली चीज़ समझ बैठा, बिलकुल खरा सोना जिसमें कोई मिलावट नहीं थी। लेकिन उस शाम ये सभी लोग मानो किसी ख़ास उद्देश्य से बहुत प्रफुल्लित थे और अपने आपसे बेहद खुश थे। उनमें से हर एक जानता था कि वहाँ आकर उसने येपांचिन-परिवार पर बहुत बड़ा एहसान किया था। लेकिन, अफ़सोस ! प्रिंस को इन बारीकियों का दूर-दूर तक गुमान भी नहीं था ! मिसाल के लिए, वह अनुमान भी नहीं कर सकता था कि येपांचिन-दम्पती अपनी बेटी के भविष्य का फ़ैसला करने जैसे महत्त्वपूर्ण क़दम पर विचार करते समय कभी साहस ही नहीं कर सकते थे कि वे उसे, प्रिंस लेव निकोलायेविच मीश्किन को उन वयोवृद्ध राजनेता के सामने पेश न करें जो उनके परिवार के माने हुए सरपरस्त थे। वयोवृद्ध राजनेता हालाँकि येपांचिन-परिवार पर सबसे भयानक तबाही का पहाड़ टूट पड़ने की ख़बर भी बेहद शान्त भाव से सुन लेते, लेकिन उनसे सलाह किए बिना, और, एक तरह से, उनकी इजाज़त लिए बिना अगर वे लोग अपनी बेटी की मँगनी की स्वीकृति दे देते तो निश्चित रूप से वह बहुत बुरा मानते। प्रिंस न. को—उन अत्यन्त आकर्षक, हाज़िरजवाब और निष्कपट सज्जन को पक्का यक़ीन था कि वह एक सूरज की तरह थे जो उस रात येपांचिन-परिवार के ड्राइंग-रूम पर चमक रहा था। वह उन लोगों को अपने से बहुत नीचा समझते थे, और इसी स्वाभाविक और उदारतापूर्ण विचार की वजह से उनमें येपांचिन-परिवार के प्रति वह लाजवाब बेतकल्लुफ़ी और दोस्ती की भावना पैदा हुई थी। वह बहुत अच्छी तरह जानते थे कि महफ़िल का दिल खुश करने के लिए उन्हें उस शाम कोई क़िस्सा सुनाना पड़ेगा, और वह सच्ची प्रेरणा के साथ उसके लिए तैयार हो रहे थे। बाद में वह क़िस्सा सुनने पर प्रिंस ने महसूस किया कि उसने पहले ऐसी कोई चीज़ नहीं सुनी थी जिसमें ऐसी शानदार वाक्-विदग्धता हो और जिसमें इतनी कमाल की मस्ती और सादगी हो, जो प्रिंस न. जैसे रसिक आदमी के मुँह से बहुत ही मर्मस्पर्शी लगती थी। फिर भी अगर उसे इतना मालूम होता कि वह क़िस्सा कितना पुराना और बासी था, कि किस तरह वह उन सज्जन

को मुँह-जबानी याद था, और शहर का हर ड्राइंग-रूम उससे किस तरह थककर ऊब चुका था, और बस भोले-भाले येपांचिन-परिवार के यहाँ उसे एक शानदार और उत्कृष्ट व्यक्ति के सहज, सच्चे और शानदार संस्मरण के रूप में नया समझकर स्वीकार किया जाता था ! यहाँ तक कि वह जर्मन कवि महाशय भी, हालाँकि उनका व्यवहार अत्यन्त विनम्रता और शिष्टता का था, महसूस करते थे कि वहाँ आकर वह उस परिवार के साथ कोई उपकार कर रहे थे। लेकिन प्रिंस का ध्यान तस्वीर के दूसरे रुख की ओर गया ही नहीं, उसने देखा ही नहीं कि इस सबके नीचे क्या है। यही वह तबाही साबित हुई जिसकी अग्लाया पहले से कल्पना नहीं कर सकी थी। उस शाम वह स्वयं बेहद सुन्दर लग रही थी। तीनों लड़कियों ने बहुत सलीक़े से कपड़े पहन रखे थे, भले ही उनमें बहुत तड़क-भड़क न रही हो, और उनकी केश-भूषा विशेषकर सुरुचिपूर्ण थी। अग्लाया रादोम्स्की के पास बैठी थी और उसके साथ अत्यन्त मित्रता के भाव से बातें और हँसी-मज़ाक़ कर रही थी। रादोम्स्की का व्यवहार हमेशा की तुलना में अधिक गरिमामय था, शायद राजनेताओं के प्रति सम्मान की भावना के कारण। लेकिन समाज में लोग उसे बहुत समय से जानते थे; हालाँकि वह अभी नौजवान ही था, लेकिन यहाँ के लिए पराया नहीं था। उस दिन शाम को वह येपांचिन-परिवार के यहाँ अपने हैट पर क्रेप का काला फ़ीता लगाए हुए पहुँचा जिसके लिए प्रिंसेस बेलोकोंस्काया ने उसे सराहा भी : ऐसे चाचा के लिए हर नौजवान शायद शोक न मनाता। मिसेज़ येपांचिना भी इस बात से खुश हुईं, लेकिन कुल मिलाकर वह बहुत विचारमग्न लग रही थीं। प्रिंस का ध्यान इस बात की ओर गया कि अग्लाया ने दो बार उसे बड़े ग़ौर से देखा था और उसे लगा कि वह उससे सन्तुष्ट हुई। धीरे-धीरे वह बहुत खुशी महसूस करता जा रहा था। अभी हाल के (लेबेदेव से उसकी बातचीत के बाद के) 'कल्पनातीत' विचार और आशंकाएँ उसे अब, उन्हें बार-बार याद करने पर, एक असम्भव और बेतुका स्वप्न लग रही थीं। (बहरहाल, उसकी सबसे पहली, हालाँकि अचेतन, इच्छा और आकांक्षा यही रही थी कि वह उस स्वप्न पर विश्वास न करने का भरसक प्रयत्न करे !) वह बहुत कम बोल रहा था, उससे जब कुछ पूछा जाता था तो बस वह उसका जवाब दे देता था, और अन्त में वह बिलकुल ही चुप हो गया; वह बैठा सुनता रहा, लेकिन स्पष्टतः उसे इस सबमें बेहद मज़ा आ रहा था। धीरे-धीरे उसके अन्दर प्रेरणा जैसी कोई चीज़ एकत्रित होती गई, जो उचित क्षण पर भड़क उठने को तैयार थी।...वह अकस्मात् बोलने लगा, सो भी एक सवाल के जवाब में और प्रकटतः बिना किसी विशेष प्रयोजन के।

7

उस समय जब वह अग्लाया को प्रिंस न. और रादोम्स्की के साथ हँस-हँसकर बातें करते देखकर उसका रूप सराहने में खोया हुआ था, कमरे के दूसरे कोने में अधेड़ उम्र के उन अंग्रेज़परस्त सज्जन ने जो 'वयोवृद्ध राजनेता' का मन बहला रहे थे और बड़े जोश के साथ उन्हें कुछ सुना रहे थे सहसा निकोलाई अन्द्रेयेविच पव्लीश्चेव का नाम लिया। प्रिंस जल्दी से उनकी ओर मुड़कर सुनने लगा।

हाल के कृषि-सुधारों के बाद ज़मीन-जायदाद के प्रबन्ध के नए तरीक़ों की और इस बात की चर्चा हो रही थी कि एक सूबे में बड़ी-बड़ी भू-सम्पत्तियों के मालिक कैसी छीछालेदर में फँस गए थे। अंग्रेजपरस्त सज्जन के किस्से ज़रूर दिलचस्प रहे होंगे क्योंकि आख़िरकार वयोवृद्ध राजनेता वक्ता की आवेशपूर्ण उग्रता पर हँस पड़े। वह अपने शब्दों को कुछ चिकनेपन से और खिसियाहट के साथ खींच-खींचकर बोलते हुए और दीर्घ मात्राओं पर बड़े स्नेह से ज़ोर देते हुए समझा रहे थे

कि वह नए कृषि-सुधारों के सीधे परिणाम के रूप में उसे सूबे में अपनी एक बहुत बढ़िया भू-सम्पत्ति उसकी आधी क़ीमत पर बेचने को क्यों मजबूर हो गए थे, हालाँकि उन्हें पैसों की भी कोई ख़ास ज़रूरत नहीं थी, और इसके साथ ही उन्हें एक ऐसी भू-सम्पत्ति अपने पास क्यों रखनी पड़ी थी, जो बिलकुल तबाह हो चुकी थी, जिस पर घाटा हो रहा था और जो मुकद्दमेबाजी में फँसी हुई थी, और यहाँ तक कि उस पर अपने पास से पैसे खर्च करने पड़ते थे। "पव्लीश्चेव की ज़मीन-जायदाद के बारे में भी मुक़द्दमे से जान छुड़ाने के लिए मैंने उनसे अपना हाथ ही खींच लिया। इसी तरह की एक-दो जायदादें अगर मुझे उत्तराधिकार में और मिल जाएँ तो मैं बिलकुल मिट ही जाऊँ। हालाँकि वहाँ मुझे लगभग नौ हज़ार एकड़ बहुत बढ़िया ज़मीन मिल सकती थी।"

"अरे...इवान पेत्रोविच स्वर्गवासी पव्लीश्चेव के रिश्तेदार हैं।...तुम पव्लीश्चेव के रिश्तेदारों की तलाश में थे न," जनरल येपांचिन ने, जो अचानक न जाने कहाँ से प्रिंस के पास आ पहुँचे थे, उन लोगों की बातचीत से उसकी असाधारण दिलचस्पी को देखकर दबी आवाज़ में कहा।

तब तक वह उन जनरल साहब के आगे-पीछे घूम रहे थे, जो उनके अफ़सर थे, लेकिन उन्होंने देखा था कि प्रिंस बिलकुल अलग-थलग पड़ गया था और वह कुछ बेचैनी महसूस करने लगे थे। वह बहुत उत्सुक थे कि वह भी बातचीत में कुछ हिस्सा ले और इस तरह वह उसे दुबारा सबके सामने पेश करना और 'महान विभूतियों' का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट करना चाहते थे।

"प्रिंस लेव निकोलायेविच अपने माँ-बाप के मर जाने के बाद पव्लीश्चेव की सरपरस्ती में थे," उन्होंने इवान पेत्रोविच से आँखें चार होते ही जल्दी से कहा।

"बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर," इवान पेत्रोविच ने कहा। "जी हाँ, मुझे आपकी बहुत अच्छी तरह याद है। अभी थोड़ी देर पहले जब जनरल येपांचिन ने आपका परिचय कराया था तो मैंने आपको फ़ौरन पहचान लिया था—सूरत से भी। आपकी सूरत बहुत कम बदली है, हालाँकि मैंने जब आपको देखा था तो आप बिलकुल बच्चे थे—उस वक़्त दस-ग्यारह साल के रहे होंगे। आपके चेहरे-मोहरे में कोई ऐसी बात है, याद रह जानेवाली।..."

"आपने मुझे बचपन में देखा था ?" प्रिंस ने कुछ असाधारण आश्चर्य से पूछा।

"जी हाँ, बहुत पहले," इवान पेत्रोविच कहते रहे, "ज़्लातोवेर्ख़ोवो में, जहाँ आप मेरी रिश्ते की बहनों के साथ रहते थे। उन दिनों मैं अकसर ज़्लातोवेर्ख़ोवो जाया करता था। आपको मेरी याद नहीं है ? शा-यद आपको याद न हो।...उस वक़्त आपको...किसी क़िस्म की बीमारी थी, और इसलिए एक बार आपको देखकर मैं चकित-सा रह गया था।..."

"मुझे कुछ भी याद नहीं !" प्रिंस ने जोश से कहा।

व्याख्या के कुछ और शब्दों के बाद, जो इवान पेत्रोविच ने बहुत शान्त भाव से कहे थे और प्रिंस ने असाधारण उद्विग्नता के साथ, पता यह चला कि वे दोनों महिलाएँ, जो दोनों ही कुँआरी बुढ़ियाएँ थीं और पव्लीश्चेव की रिश्तेदार थीं, जो उनकी ज़्लातोवेर्ख़ोवोवाली जायदाद पर रहती थीं और जिनको प्रिंस को पालने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, इवान पेत्रोविच की भी रिश्ते की बहनें थीं। बाक़ी सब लोगों की तरह इवान पेत्रोविच भी इसकी कोई वजहें नहीं बता पाते थे कि पव्लीश्चेव अपने लेपालक नन्हे प्रिंस में इतनी दिलचस्पी क्यों लेते थे। "उस जमाने में मुझे इसमें कोई ख़ास दिलचस्पी भी नहीं थी !" फिर भी ऐसा लगता था कि उनकी याददाश्त बहुत तेज थी क्योंकि उन्हें अब तक याद था कि उनकी रिश्ते की बड़ी बहन मार्फ़ा निकीतिश्ना उस छोटे-से लड़के के साथ कैसी सख़्ती बरतती थीं, "यहाँ तक कि एक बार आपकी वजह से उनके पढ़ाने-लिखाने के तरीक़े के बारे में उसने मेरा झगड़ा भी हो गया था। अरे, यह भी कोई बात है कि क़मचियों से मारना

बीमार बच्चे को, हर वक़्त क़मचियों से मारना...आपको भी मानना पड़ेगा कि यह कुछ..." उन्हें यह भी याद था कि, दूसरी ओर, छोटीवाली बहन नताल्या निकीतिश्ना बेचारे बच्चे के साथ कैसी नरमी बरतती थीं।..."वे दोनों," वह समझाकर कहते रहे, "अब दूसरे सूबे में रहती हैं, जहाँ पव्लीश्चेव उनके लिए बहुत अच्छी छोटी-सी जायदाद छोड़ गए थे, लेकिन मुझे यह नहीं मालूम कि वे अभी तक जिन्दा हैं कि नहीं। मुझे लगता है कि मार्फ़ा निकीतिश्ना किसी मठ में चली जाना चाहती थीं; हालाँकि इसका भी मुझे पक्का पता नहीं है, मुमकिन है कोई दूसरा रहा हो।...मैंने अभी उस दिन एक डॉक्टर की बीवी के बारे में यही सुना था।..."

ये बातें सुनते समय प्रिंस की आँखें भावुकता और उल्लास से चमक रही थीं। उसने असाधारण उद्विग्नता से कहा कि, जहाँ तक उसका सवाल था, वह अपने आपको इस बात के लिए कभी माफ़ नहीं करेगा कि मध्यवर्ती सूबों में अपनी छह महीने की यात्राओं के दौरान उसने अपनी पुरानी शिक्षिकाओं का पता लगाने और उनसे मिलने की कोई कोशिश नहीं की थी। "मैं रोज जाने का इरादा करता था लेकिन परिस्थितियाँ हमेशा रोक देती थीं।...लेकिन अब वह वादा करता हूँ...हाँ, निश्चित रूप से...सूबे में...तो आप सचमुच नताल्या निकीतिश्ना को जानते हैं ? कैसी अच्छी, कैसी सन्त आत्मा हैं ! लेकिन मार्फ़ा निकीतिश्ना भी...माफ़ कीजिएगा, लेकिन मैं समझता हूँ कि मार्फ़ा निकीतिश्ना के बारे में आपकी राय ठीक नहीं है ! वह सख़्त ज़रूरी थीं लेकिन...मुझ जैसे बौड़म पर...जैसा कि मैं उस जमाने में था (हीः-हीः !) उनके लिए धीरज न खोना नामुमकिन था। मैं बिलकुल ही बौड़म था उस वक़्त, सच कहता हूँ। (हः-हः !) लेकिन...लेकिन आपने मुझे उस वक़्त देखा था और...अच्छा, यह तो बताइए कि मुझे आपकी याद क्यों नहीं है ? तो आप...अरे, कमाल हो गया, तो आप सचमुच पव्लीश्चेव साहब के रिश्तेदार हैं ?"

"मैं आपको यक़-क़ीन दिलाता हूँ," इवान पेत्रोविच ने प्रिंस को ग़ौर से देखते हुए मुस्कराकर कहा।

"अरे, नहीं, नहीं, मैंने यह इसलिए नहीं कहा था कि मुझे...यानी...मुझे इसमें कोई शक था...और बहरहाल इसमें शक की गुंजाइश ही क्या है ? (हः-हः !)...मेरा मतलब है कि रत्ती-भर भी शक नहीं है, ठीक है न ? (हः-हः !) मैंने तो यह बात सिर्फ़ इसलिए कही थी कि स्वर्गवासी पव्लीश्चेव साहब इतने बढ़िया आदमी थे ! बेहद उदार आदमी, मैं आपको सच बताता हूँ !"

प्रिंस उतना हाँफ नहीं रहा था जितना कि उसका "लाजवाब दिल उमड़ा पड़ रहा था", जैसा कि अगले दिन सबेरे अदेलईदा ने अपने मंगेतर प्रिंस श. से कहा।

"अरे, मुझ पर रहम खाइए !" इवान पेत्रोविच ने हँसकर कहा, "क्या मैं इस लायक़ भी नहीं हूँ कि एक उ-दार आदमी का रिश्तेदार हो सकूँ ?"

"तोबा, तोबा !" प्रिंस ने खिसियाकर ज़ोर से कहा; वह बड़ी तेजी से बोल रहा था और उसकी उद्विग्नता लगातार बढ़ती जा रही थी। "मैंने...मैंने फिर कोई बेवक़ूफ़ी की बात कह दी है, लेकिन...ऐसा तो होना ही था क्योंकि मैं...मैं...मैं...लेकिन उसका भी इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं है ! ऐसे हितों...ऐसे...मेरा मतलब है...विशाल हितों के सामने...भला मुझमें, आप ही बताइए, मुझमें किसी को क्या दिलचस्पी हो सकती है ! और ऐसे बेहद उदार आदमी के सामने, क्योंकि वह, क़सम से, बहुत ही उदार आदमी थे ! आपका भी यही ख़्याल है न ?"

प्रिंस सिर से पाँव तक काँप रहा था। यह बताना मुश्किल था कि यह अचानक इतना उद्विग्न क्यों हो उठा था, ऐसी भावोन्माद की हालत में क्यों पहुँच गया था, और वह भी बैठे-बिठाए, जबकि चर्चा का विषय कुछ ऐसा नहीं था, बस, उसकी मनोदशा ही ऐसी थी, और उस क्षण वह किसी

बात के लिए किसी के प्रति, शायद इवान पेत्रोविच के प्रति ही और, सच तो यह है कि कमरे में मौजूद लगभग सभी लोगों के प्रति अत्यन्त हार्दिक और उत्साहपूर्ण कृतज्ञता अनुभव कर रहा था। वह "खुशी के नशे में चूर" था। आख़िरकार इवान पेत्रोविच उसे ज़्यादा ग़ौर से घूरने लगे; 'राजनेता' भी उसे नज़र गड़ाए एकटक देखे चले जा रहे थे। प्रिंसेस बेलोकोंस्काया ने गुस्से से दहकती हुई नज़रों से उसे घूरा और अपने होंठ भींच लिए। प्रिंस न., रादोम्स्की, प्रिंस श., लड़कियाँ, सभी अपनी-अपनी बातचीत का क्रम भंग करके सुनने लगे। अग्लाया, ऐसा लग रहा था कि, डर गई थी। जहाँ तक मिसेज़ येपांचिना का सवाल था, वह तो बिलकुल बदहवास हो गई। वे भी विचित्र जीव थी, बेटियाँ और उनकी माँ : उन्हीं का सुझाव और फ़ैसला था कि प्रिंस के लिए बेहतर यही होगा कि वह सारी शाम चुप रहे; फिर भी जब उन्होंने उसे बिलकुल अकेले और बहुत खुश-खुश एक कोने में बैठे देखा, तो वे फ़ौरन बेहद परेशान हो उठी थीं। अलेक्सान्द्रा उसके पास जाकर उसे बड़ी तरकीब से कमरे के पार ले ही जानेवाली थी कि वह उन लोगों के साथ आकर बैठे—यानी प्रिंसेस बेलोकोंस्काया के पास प्रिंस न. की टोली में। और अब जबकि प्रिंस अपने आप बातें करने लगा था, तो वे और भी परेशान हो उठी थीं।

"मैं आपकी यह बात मानता हूँ कि वह बहुत ही बढ़िया आदमी थे," इवान पेत्रोविच ने रोब से और इस बार मुस्कराए बिना कहा। "जी हाँ, जी हाँ...बेशक, वह बहुत ही अच्छे आदमी थे ! अच्छे और क़ाबिल," उन्होंने कुछ देर रुककर जोड़ दिया। "मैं तो कहूँगा, हर तरह से इज़्ज़त के क़ाबिल," उन्होंने तीसरी बार रुककर और भी रोब से कहा, "और...और यह देखकर बहुत खुशी हुई कि आप..."

"यह वही पव्लीश्चेव थे न जो...किसी पादरी के साथ...किसी पादरी के साथ...भूल गया कि किस पादरी के साथ...एक अजीब किस्से में फँस गए थे...बस उस जमाने में सब लोग इसकी चर्चा किया करते थे," मानो कुछ याद करते हुए 'राजनेता' ने कहा।

"पादरी गुरो के साथ, वह जेसुइट थे," इवान पेत्रोविच ने उन्हें याद दिलाया। "जी हाँ, हमारे सबसे अच्छे और सबसे योग्य लोग ऐसे ही हैं ! क्योंकि, बहरहाल, वह अच्छे घर के और धन-दौलतवाले आदमी तो थे ही, राज-दरबार में पहुँच भी थी और अगर...वह सेवा करते रहते...लेकिन उन्हें न जाने क्या सूझी कि नौकरी-वौकरी सब कुछ छोड़-छाड़कर रोम कैथोलिकों की तरफ़ चले गए और जेसुइट बन गए, और सो भी खुले-आम, बड़े जोश के साथ। उनकी मौत ठीक वक़्त पर ही हुई...जी हाँ। उस वक़्त हर आदमी यही कहता था।..."

प्रिंस आपे से बाहर हो गया।

"पव्लीश्चेव...पव्लीश्चेव ने कैथोलिक धर्म अपना लिया था ? नामुमकिन !" वह भयभीत-सा होकर चिल्लाया।

"ख़ैर, 'नामुमकिन !' यह तो कुछ ज़रूरत से ज़्यादा सख़्त है," इवान पेत्रोविच ने गम्भीर भाव से बुदबुदाकर कहा। "और, यह तो आप भी मानेंगे, माई डियर प्रिंस...आप तो स्वर्गवासी पव्लीश्चेव साहब के इतने बड़े प्रशंसक हैं...सचमुच बहुत ही नेकदिल आदमी थे, और मैं तो समझता हूँ कि यही सबसे बड़ी वजह थी कि वह घाघ गुरो इतनी आसानी से कामयाब हो गया। लेकिन आप मुझसे पूछिए...मुझसे, कि इस मामले के सिलसिले में मुझे बाद में कितनी मुसीबत और परेशानी उठानी पड़ी...और ख़ासतौर पर उस शख़्स गुरो के सिलसिले में ! ज़रा सोचिए," वह अचानक वयोवृद्ध सज्जन को सम्बोधित करके बोले, "उन लोगों ने वसीअत के हिसाब से भी कुछ दावा करने की कोशिश की थी और मुझे उन लोगों के...होश-हवास दुरुस्त करने के लिए...सख़्त से सख़्त कार्रवाई

करनी पड़ी थी, क्योंकि...बात यह है...इस तरह की चीज़ों में वे बहुत उस्ताद होते हैं ! [illegible] की हद तक ! लेकिन भगवान की कृपा से यह सब कुछ मास्को में हुआ, मैं सीधा काउंट [illegible] के पास गया और हमने...उनके होश ठिकाने कर दिए।..."

"आपको अन्दाजा नहीं है कि आपकी बात से मुझे कितना गहरा धक्का पहुँचा है और मैं कितना परेशान हो गया हूँ !" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा।

"मुझे अफ़सोस है, बात दरअसल, सच पूछा जाए, तो बकवास है और आख़िर में इसका कुछ भी नतीजा न निकलता, जैसा कि इस तरह के मामलों में हमेशा होता है। मुझे इसका पक्का यक़ीन है। पिछले साल गर्मियों में," वह फिर उन छोटे-से बूढ़े सज्जन की ओर मुड़े, "काउंटेस क. भी, मैंने सुना है, विदेश के किसी कैथोलिक कॉनवेंट में जाकर रहने लगीं। न जाने क्यों, जब हमारे लोग उन...घाघ बदमाशों के चंगुल में पड़ जाते हैं...ख़ासतौर पर विदेशों में...तो वे डटकर मुक़ाबला नहीं कर पाते।"

"मैं समझता हूँ कि इसकी वजह है...मेरा मतलब है...हमारी उकताहट," वयोवृद्ध राजनेता ने बड़े प्रामाणिक ढंग से बुदबुदाकर कहा। "और, ख़ैर, उनका धर्म-प्रचार करने का तरीक़ा भी...यानी...बहुत शानदार और...अपने ढंग का निराला है...और वे लोगों के दिलों में डर बिठाना भी बहुत अच्छी तरह जानते हैं। 1832 में विआना में उन्होंने, मैं आपसे सच कहता हूँ, मुझे भी डराया था, लेकिन मैं उनके हाथ नहीं लगा और वहाँ से भाग खड़ा हुआ, हः-हः !"

"मैंने तो सुना है, जनाब," प्रिंसेस बेलोकोंस्काया अचानक बीच में बोल पड़ीं, "कि आप विआना में अपनी नौकरी छोड़कर खूबसूरत काउंटेस लेवित्स्काया के साथ पेरिस भाग गए थे, किसी जेसुइट पादरी की वजह से नहीं।"

"लेकिन भागा मैं जेसुइट पादरी ही से था, जेसुइट पादरी से ही !" उस सुखद स्मृति पर हँसते हुए वयोवृद्ध राजनेता ऊँचे स्वर में बोले। "आप बहुत पक्के धार्मिक आदमी मालूम होते हैं, जो बात आजकल हमारे नौजवानों में बहुत कम पाई जाती है," उन्होंने बड़े स्नेह से प्रिंस को सम्बोधित करके कहा। प्रिंस मुँह खोले सुन रहा था, उस पर आघात का प्रभाव अभी तक बहुत गहरा था। स्पष्टतः वयोवृद्ध राजनेता प्रिंस से और अच्छी तरह परिचित होने के लिए उत्सुक थे। उन्हें किसी वजह से उससे बहुत गहरी दिलचस्पी हो गई थी।

"पव्लीश्चेव बहुत प्रखर बुद्धि के आदमी और सच्चे ईसाई थे," प्रिंस ने अचानक कहा। "वह किसी ऐसे धर्म के अधीन कैसे हो सकते थे जो...गैर-ईसाई हो ? कैथोलिक मत वैसा ही है जैसा कोई गैर-ईसाई धर्म !" बिजली की तरह चमकती हुई अपनी आँखों से चारों ओर देखकर, मानो उन आँखों से सबसे निवेदन कर रहा हो, उसने इतना और कहा।

"ख़ैर, यह कहना तो ज्यादती है," वयोवृद्ध राजनेता ने बुदबुदाकर कहा और आश्चर्य से जनरल येपांचिन की ओर देखा।

"क्या मतलब आपका कि कैथोलिक मत एक गैर-ईसाई धर्म है ?" इवान पेत्रोविच ने अपनी कुर्सी पर उसकी ओर मुड़कर बैठते हुए कहा। "फिर वह किस तरह का धर्म है ?"

"पहली बात तो यह कि वह गैर-ईसाई धर्म है !" प्रिंस ने बहुत उद्विग्न होकर और बेहद तीखेपन से फिर कहना शुरू किया। "यह तो है पहली बात, और, दूसरे, रोमन कैथोलिक मत नास्तिकता से भी बदतर है—यह मेरी राय है ! जी हाँ, यह मेरी राय है ! नास्तिकता तो बस शून्य का प्रचार करती है, लेकिन कैथोलिक मत उससे भी आगे बढ़ जाता है : वह ईसा के एक विकृत रूप का प्रचार करता है, एक ऐसे ईसा का जिसे उसने कलंकित और बदनाम किया है, ईसा से

बिलकुल उल्टी चीज़ का ! वह ईसा-विरोधी प्रचार करता है—मैं क़सम खाकर कहता हूँ, मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि ऐसी ही बात है ! यह मेरी निजी राय है, बहुत जमाने से मेरी यह राय रही है, और खुद मुझे घोर यातना देती रही है।...रोमन कैथोलिक मत का विश्वास है कि सार्वत्रिक ऐहिक सत्ता के बिना इस धरती पर धर्म का अस्तित्व बाक़ी नहीं रह सकता, और वे चिल्लाते हैं : Non possumus ![1] मेरी राय में तो रोमन कैथोलिक मत कोई धर्म है ही नहीं, बल्कि बिलकुल पवित्र रोमन साम्राज्य का ही एक सिलसिला है, और आस्था से लेकर उसकी हर चीज़ उसी विचार के अधीन रखी जाती है। पोप ने पृथ्वी को, इस लौकिक सिंहासन को हथिया लिया और तलवार उठा ली; और तब से सब कुछ इसी तरह होता रहा है, अलावा इसके कि उन्होंने उसमें झूठ, जालसाजी, धोखेबाज़ी, कट्टरता, अन्धविश्वास, दुष्टता को और जोड़ दिया है। उन्होंने लोगों की सबसे पवित्र, सबसे सच्ची, निष्कपट और तीव्र भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया है, सब कुछ धन-दौलत के बदले, अधर्म ऐहिक सत्ता के लिए बेच दिया है। और क्या यही ईसा-विरोधी मत का प्रचार करना नहीं है ? नास्तिकता की उत्पत्ति उन्हीं से होनी थी। और उसकी उत्पत्ति उन्हीं से हुई, स्वयं रोमन कैथोलिक मत से ! नास्तिकता सबसे पहले वहीं से पैदा हुई, स्वयं रोमन कैथोलिक मत से ! नास्तिकता सबसे पहले वहीं से पैदा हुई : वे अपने आप पर आस्था कैसे रख सकते थे ? वह बढ़ी उनके प्रति घृणा की भावना के कारण; वह उनके झूठ की, उनकी आत्मा की शक्तिहीनता की सन्तान है ! नास्तिकता ! हमारे देश में केवल ऊपरी वर्गों के लोग ईश्वर को नहीं मानते, जैसा कि मिस्टर रादोम्स्की ने अभी उस दिन बहुत शानदार ढंग से कहा था, जो अपनी जड़ें खो चुके हैं। लेकिन योरप में बहुत बड़ी संख्या में साधारण लोग आस्था खोते जा रहे हैं—शुरू में तो अन्धकार और झूठ की वजह से, और अब कट्टरपन की वजह से, चर्च और ईसाईपन से नफ़रत की वजह से !"

प्रिंस दम लेने के लिए रुका। वह बेहद तेजी से बोल रहा था। उसका रंग पीला पड़ गया था और उसकी साँस फूल रही थी। सब लोग एक-दूसरे को देख रहे थे; लेकिन अन्ततः वह वयोवृद्ध राजनेता खिलखिलाकर हँस पड़े। प्रिंस न. ने अपनी दस्ती ऐनक निकाली और कुछ देर तक प्रिंस को एकटक देखते रहे। जर्मन महाशय अपने कोने से आगे सरक आए और अपने चेहरे पर दुष्टतापूर्ण मुस्कराहट लिए हुए धीरे-धीरे खिसकते हुए मेज़ के पास पहुँच गए।

देखिए, आप बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहते हैं," इवान पेत्रोविच ने शब्दों को खींच-खींचकर कुछ उकताए हुए स्वर में कहा, यहाँ तक कि वह किसी बात पर लज्जित लग रहे थे। "कैथोलिक गिरजे के कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हर तरह से इज़्ज़त किए जाने लायक़ और बेहद सदाचारी हैं।..."

"मैंने चर्च के अलग-अलग लोगों की बात कभी नहीं की है। मैं तो रोमन कैथोलिक मत के सार-तत्त्व की बात कर रहा हूँ। मैं रोम की बात कर रहा हूँ। क्या चर्च बिलकुल मिट सकता है ? मैंने तो यह कभी नहीं कहा।"

"माना, लेकिन इसमें तो कुछ भी नया नहीं है, बल्कि...प्रसंग से हटकर भी है और...मतलब यह कि...यह धर्मविज्ञान के क्षेत्र की बात है।..."

"जी नहीं, जनाब, यह सिर्फ़ धर्मविज्ञान का सवाल नहीं है ! मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि ऐसा नहीं है ! इसका हम लोगों से उससे कहीं गहरा सम्बन्ध है जितना कि आप समझते हैं। यही तो हमारी सारी ग़लती है कि हम अभी तक इस बात को देख नहीं पाते कि यह शुद्धतः धर्मविज्ञान

1. हम असमर्थ हैं ! (लैटिन)

का सवाल नहीं हैं। क्योंकि समाजवाद भी कैथोलिक मत की और बुनियादी कैथोलिक प्रवृत्ति की सन्तान है। अपने भाई नास्तिकवाद की तरह इसका जन्म भी घोर निराशा से हुआ, ताकि वह भौतिक दृष्टिकोण से कैथोलिक मत का विरोध कर सके। धर्म की विनष्ट नैतिक शक्ति की जगह लेने के लिए, तृषित मानवता की प्यास बुझाने के लिए और ईसा की मदद से नहीं बल्कि हिंसा का सहारा लेकर उसे बचाने के लिए ! यह भी हिंसा का सहारा लेकर स्वतन्त्रता प्राप्त करने जैसी बात है ! यह भी तलवार और ख़ून के जरिए एकता बनाने जैसी बात है! 'ईश्वर में विश्वास न रखो ! सम्पत्ति न रखो ! अपना अलग व्यक्तित्व न रखो ! Fraternit'e ou la mort ![1] बीस लाख सिर !' उनके कामों से तुम उन्हें पहचानोगे—जैसा कि लिखा है। और यह न समझिएगा कि यह कोई ऐसी मासूमियत की बात है जिसमें हमारे लिए कोई ख़तरा नहीं है। अरे, हमें इसका सामना करना होगा, और अभी ऐसा करना होगा—अभी ! यह ज़रूरी है कि पश्चिम के विचारों की टक्कर पर हमारे ईसा का तेज चमक उठे, हमारे उन ईसा का जिन्हें हमने सम्भालकर रखा है और जिनको उन्होंने कभी जाना ही नहीं ! आँख बन्द करके उस जाल में फँसकर नहीं जो जेसुइट लोग हमारे लिए फैलाते हैं, बल्कि अपनी रूसी सभ्यता को उनके पास तक ले जाकर अब हमें उनके सामने डट जाना चाहिए। और हम लोगों के बीच अब यह बात न कही जाए कि उनका धर्म-प्रचार करने का तरीक़ा बहुत शानदार है, जैसा कि अभी कोई कह रहा था।..."

"लेकिन, सुनिए, सुनिए," बेहद चिन्तित होकर कमरे में चारों ओर देखते हुए, बल्कि कुछ हद तक भयभीत होकर भी इवान पेत्रोविच ने चिल्लाकर कहा, "आपके सारे विचार तारीफ़ के क़ाबिल तो ज़रूर हैं और उनमें देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है, लेकिन इस सबमें बातों को बहुत बड़ा-चढ़ाकर कहा गया है और...मैं समझता हूँ कि इस विषय पर बात करना बन्द कर देना ही अच्छा होगा।..."

"जी नहीं, इसमें बढ़ा-चढ़ाकर कुछ नहीं कहा गया है, बल्कि कुछ घटाकर ही कहा गया है। जी हाँ, जनाब, घटाकर कहा गया है, क्योंकि मैं अपनी बात को ठीक से कह नहीं पाता हूँ, लेकिन..."

"मेहरबानी करके, बस कीजिए !"

प्रिंस चुप हो गया। वह इवान पेत्रोविच को दहकती नज़रों से देखता हुआ अपनी कुर्सी पर चुपचाप सीधा तनकर बैठा रहा।

"मुझे ऐसा लगता है," वयोवृद्ध राजनेता ने बड़ी नरमी से और अपना संयम खोए बिना कहा, "कि आपके हितैषी के साथ जो कुछ हुआ उससे आपको बहुत गहरा धक्का पहुँचा है। शायद, आप अपनी...अकेलेपन की ज़िन्दगी की वजह से बहुत उद्विग्न हो उठते हैं। आप अगर लोगों के बीच ज़्यादा रहा करें तो मुझे उम्मीद है कि समाज एक बहुत अच्छे नौजवान की तरह आपका स्वागत करेगा और, ज़ाहिर है, आपको इतनी जल्दी ताव भी नहीं आया करेगा और आप महसूस करेंगे कि ये सारी बातें कहीं ज़्यादा सीधी-सादी हैं और...मेरी राय में...ऐसी...कभी-कभार होनेवाली घटनाओं की वजह कुछ हद तक तो यह है कि हम पेट-भरे लोग हैं और कुछ हद तक...यह कि हम उकताए हुए रहते हैं।..."

"बिलकुल ठीक कहते हैं आप, बिलकुल ठीक," प्रिंस ने चिल्लाकर कहा। "बहुत शानदार विचार है ! जी हाँ, उकताहट की वजह से, अपनी उकताहट की वजह से, इस वजह से नहीं कि हमारे पेट भरे हुए हैं—बल्कि बात उल्टी ही है, प्यास की वजह से, पेट भरे होने की वजह से

1. बिरादरी या मौत ! (फ़्रांसीसी)

नहीं—आपका, बस, यही कहना ग़लत है ! और सिर्फ़ प्यास की वजह से नहीं—बल्कि बुखार की वजह से, तपती हुई प्यास की वजह से ! और...और यह न समझिए कि यह कोई ऐसी छोटी-मोटी बात है जिसे हम हँसकर टाल दें। माफ़ कीजिएगा, लेकिन हमें नतीजों को पहले से देख सकना चाहिए ! हम रूसी जैसे ही किनारे पर पहुँचते हैं, जैसे ही हमें यक़ीन हो जाता है कि वह किनारा ही है, हम इतने खुश हो जाते हैं कि हाथ-पाँव फूल जाते हैं। ऐसा क्यों है ? मैं देख रहा हूँ कि आपको पव्लीश्चेव पर आश्चर्य है। आप हर चीज़ की वजह उनके पागलपन या उनकी नेकी को समझते हैं, लेकिन आपका ऐसा करना ग़लत है ! ऐसे मामलों में हम रूसियों के भावावेश की उग्रता पर हमें ही नहीं बल्कि सारे योरप को आश्चर्य होता है। अगर कोई रूसी कैथोलिक धर्म को अपना ले तो वह यक़ीनन जेसुइट बन जाएगा और वह भी घोर कट्टर क़िस्म का; अगर वह नास्तिक हो जाए तो वह यक़ीनन यह माँग करेगा कि ईश्वर पर आस्था रखने को जबर्दस्ती, यानी तलवार के ज़ोर से ख़त्म कर दिया जाए ! यह सब किसलिए ? अचानक ऐसा उन्माद किसलिए ? आपको सचमुच मालूम नहीं ? इसलिए कि आख़िरकार उसे अपनी मातृभूमि मिल गई है, वह मातृभूमि जिसे वह यहाँ देख नहीं पाया था। और वह खुश है; उसे किनारा मिल गया है, ज़मीन दिखाई दे गई है, और वह उसे चूमने के लिए झपटा है ! रूसी लोग अगर नास्तिक या जेसुइट बन जाते हैं तो केवल महत्त्वाकांक्षा की वजह से नहीं, बुरी, महत्त्वाकांक्षावादी भावनाओं के कारण नहीं, बल्कि आत्मा की पीड़ा की वजह से, आत्मा की प्यास की वजह से, उच्चतर ध्येय की ललक के कारण, ठोस मजबूत किनारे के लिए, उस मातृभूमि की ख़ातिर जिसमें विश्वास रखना उन्होंने इसलिए बन्द कर दिया है कि उसे उन्होंने कभी जाना ही नहीं ! और रूसी के लिए नास्तिक बन जाना इतना आसान होता है, जितना कि दुनिया में किसी के लिए भी नहीं होता। और रूसी नास्तिक बन ही नहीं जाते बल्कि नास्तिकता पर सचमुच **विश्वास करने** लगते हैं, जैसे वह कोई नया धर्म हो, इस बात की ओर ध्यान दिए बिना कि वे जिस चीज़ पर विश्वास कर रहे हैं वह नकारात्मक है। ऐसी है हमारी प्यास ! 'जिसके पाँव के नीचे कोई ठोस ज़मीन नहीं होती उसका कोई ईश्वर भी नहीं होता।' यह मेरा कहना नहीं है। यह हमारे एक व्यापारी का कथन है, जो पुराने धर्म को माननेवाला था जिससे मैं अपनी यात्राओं के दौरान मिला था। अलबत्ता, उसने इस बात को इस तरह नहीं कहा था। उसने कहा था : 'जिसने अपनी जन्मभूमि को त्याग दिया उसने अपने ईश्वर को भी त्याग दिया।' ज़रा सोचिए कि हमारे कुछ सबसे ज़्यादा सुशिक्षित लोग फ़्लैजेलान्त[1] तक बन गए हैं। लेकिन फ़्लैजेलान्त लोग शून्यवादियों, जेसुइटों या नास्तिकों से किस तरह बुरे हैं ? हो सकता है कि उनके विचार और भी गूढ़ हों। लेकिन हम रूसियों की व्यथा ने हमें यहाँ तक पहुँचा दिया है ! पानी की बूँद-बूँद को तरसे हुए कोलम्बस के प्यासे साथियों को 'नई दुनिया' का किनारा दिखा दीजिए, रूसी आदमी को रूसी 'दुनिया' दिखा दीजिए, उसे इस सोने का पता लग जाने दीजिए, इस अमूल्य निधि का जो पृथ्वी के गर्भ में उसकी नज़रों से छिपी हुई है ! आप उसे भविष्य में शायद केवल रूसी विचारों के माध्यम से, रूसी ईश्वर और ईसा के हाथों पूरी मानवजाति का नव-जागरण और पुनरुत्थान दिखा दीजिए और फिर देखिए कि आश्चर्यचकित दुनिया की आँखों के सामने, आश्चर्यचकित और भयभीत दुनिया के सामने बढ़कर कैसा शक्तिशाली, सच्चा, बुद्धिमान और नेक परामानव बन जाता है, क्योंकि वे हमसे जिस चीज़ की उम्मीद करते हैं वह बस तलवार है, तलवार और हिंसा, क्योंकि हमें खुद अपने पैमाने से नापते हुए वे बर्बरता से मुक्त रूप में हमारी कल्पना भी नहीं कर सकते। और अब तक हमेशा यही होता आया है, और जितना ही ज़्यादा यह सिलसिला चलता रहेगा उतना

1. एक प्राचीन धर्म-सम्प्रदाय जिसके अनुयायी अपने आपको कोड़े मारते थे और तरह-तरह की यातनाएँ देते थे।

ही ज़्यादा ऐसा होता रहेगा ! और..."

लेकिन इतने में एक ऐसी घटना हुई जिससे वक्ता का भाषण अत्यन्त अप्रत्याशित रूप से रुक गया।

उद्‌गारों की यह सारी उन्मादपूर्ण बौछार, आवेशपूर्ण और उत्तेजना-भरे शब्दों और भावातिरेक के भरे हुए बिखरे-बिखरे विचारों का यह प्रबल प्रवाह, जो जैसे हड़बड़ाते हुए एक-दूसरे को धक्का देते हुए और बौखलाकर एक-दूसरे पर गिरते पड़ते आगे बढ़ रहे थे, ये सारी बातें किसी खतरनाक चीज़ का संकेत थीं, उस युवक की मनस्थिति में किसी विचित्र बात की जिसने अपने आपको अचानक और किसी प्रत्यक्ष कारण के बिना इतने भावावेश की अवस्था में पहुँचा दिया था। ड्राइंग-रूम में बैठे लोगों में से वे सभी जो प्रिंस को जानते थे उसके उद्‌गारों के इस आकस्मिक विस्फोट पर आशंकित होकर (और कुछ लज्जित होकर भी) आश्चर्य कर रहे थे, जो उसके स्वभावगत और सच तो यह है कि भीरुतापूर्ण आत्मसंयम के साथ, उसकी बहुत ही कम लोगों में पाई जानेवाली और अनोखी व्यावहारिकता और सच्ची शिष्टता की सहज भावना के साथ किसी भी प्रकार मेल नहीं खाता था। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह हुआ कैसे : पव्लीश्चेव से सम्बन्धित सूचना तो इसका कारण नहीं हो सकती थी। महिलाएँ उसे ऐसे देख रही थीं जैसे वह अपने होश-हवास खो बैठा हो, और प्रिंसेस बेलोकोंस्काया ने बाद में स्वीकार किया कि "अगर ऐसी हालत एक मिनट भी और रहती तो वह वहाँ से जान लेकर भाग जाती"। वृद्ध सज्जनगण शुरू में तो स्तब्ध रह गए। जनरल साहब ने, जो जनरल येपांचिन के अफ़सर थे, अपनी जगह से नाराज़ होकर कठोर दृष्टि से देखा। इंजीनियरिंग कोर का कर्नल बिलकुल बुत बना बैठा रहा। जर्मन महाशय का तो रंग ही पीला पड़ गया लेकिन वह अपने बनावटी ढंग से मुस्कराता रहा और दूसरों को देखता रहा कि उनका रवैया क्या होगा। लेकिन यह सब कुछ और सारा 'शर्मनाक काण्ड' शायद एक ही मिनट बाद अत्यन्त साधारण और स्वाभाविक ढंग से ख़त्म किया जा सकता था; जनरल येपांचिन, जिन्होंने बाक़ी तमाम लोगों से पहले अपने आपको फिर से सम्भाल लिया था, कई बार प्रिंस को रोकने की कोशिश कर चुके थे और इसमें असफल रहने का वह कोई पक्की और दृढ़ कार्रवाई करने के इरादे से अब उसकी ओर बढ़ रहे थे। अगर एक ही मिनट का वक़्त और मिल पाता और अगर ज़रूरी होता तो वह प्रिंस को शायद उसकी बीमारी के बहाने (यह बात शायद बिलकुल सच ही थी और इस पर जनरल येपांचिन को स्वयं पक्का विश्वास था) बहुत दोस्ताना तरीक़े से साथ लेकर कमरे के बाहर चले गए होते।...लेकिन घटनाओं का क्रम दूसरी ही दिशा में मुड़ गया।

शुरू में ही प्रिंस ड्राइंग-रूम में आते ही उस चीनी गुलदान से, जिससे अग्लाया ने उसे इतना डरा दिया था, जहाँ तक हो सका था दूर बैठा था। इस बात पर आसानी से यक़ीन तो नहीं होता, लेकिन पिछली रात अग्लाया ने उसे जो कुछ बताया था, उससे उसके दिल में यह पक्का विश्वास बैठ गया था, एक तरह का विचित्र और बेतुका पूर्वाभास कि वह गुलदान यक़ीनन, तोड़ देगा, और अगले दिन यही होगा, वह उससे चाहे जितनी दूर रहे और उस भयंकर दुर्घटना से बचने की चाहे जितनी कोशिश करे। लेकिन थी ही ऐसी बात। शाम के दौरान उस पर दूसरे प्रबल लेकिन उज्ज्वल प्रभाव हावी होते गए; हम उनकी चर्चा पहले कर चुके हैं। वह अपनी पूर्वाशंका को भूल गया। जब उसने पव्लीश्चेव का नाम लिए जाते सुना था और जनरल येपांचिन ने उसे इवान पेत्रोविच के पास ले जाकर दूसरी बार उनसे उसका परिचय कराया था, तब उसने जगह बदल ली थी और बड़े-से खूबसूरत चीनी गुलदान के पासवाली हत्थेदार कुर्सी पर पहुँच गया था; गुलदान उससे थोड़ा पीछे

लगभग उसकी कुहनी के पास एक स्टूल पर रखा था।

अपनी बात के अन्तिम शब्द कहने के साथ ही वह अचानक कुर्सी पर से उठा, लापरवाही से अपना हाथ घुमाया और न जाने कैसे अपने कन्धे को झटका दिया और...सबके मुँह से भयभीत आह-सी निकल गई। गुलदान डगमगाया, शुरू में तो ऐसे मानो फ़ैसला न कर पा रहा हो कि उन वृद्ध सज्जनों में से एक के सिर पर गिरे या नहीं, लेकिन अचानक उसने दूसरी तरफ़ जर्मन महाशय की ओर झोंका खाया, जो डर के मारे उछलकर दूर हट गया, और गुलदान फ़र्श पर गिरकर चकनाचूर हो गया। छनक, भयभीत आह, कालीन पर बिखरे हुए गुलदान के बहुमूल्य टुकड़े, विस्मय, आश्चर्य—उफ़, यह बयान करना कि उस समय प्रिंस ने क्या अनुभव किया कठिन है और सच पूछिए तो उसकी कोई ज़रूरत भी नहीं है ! लेकिन हम एक विचित्र संवेदना का उल्लेख ज़रूर कर देना चाहते हैं जो उसी क्षण दूसरी धुँधली और विचित्र संवेदनाओं की भीड़ में से अलग निकलकर उस पर छा गई—उस पर जिस चीज़ का सबसे गहरा असर हुआ वह इस सारी घटना से सम्बन्धित लज्जा, ग्लानि और भय की भावना और उसकी आकस्मिकता नहीं थी बल्कि यह बात थी कि भविष्यवाणी सच निकली थी ! वह अपने आपको नहीं समझा पा रहा था कि इस विचार में ऐसी विस्मयकारी क्या बात थी; वह सिर्फ़ यह महसूस कर रहा था कि वह दिल की गहराई तक विस्मित रह गया था और वह एक प्रकार के रहस्यमय आतंक में डूबा हुआ चुपचाप खड़ा रहा। एक क्षण और बीता और ऐसा लगा कि सारा परिवेश उसके सामने फैलकर बड़ा होता जा रहा है, डर के बजाय—रोशनी और खुशी और हर्षातिरेक; उसकी साँस रुकने लगी थी और...लेकिन वह क्षण बीत गया था। भगवान की कृपा से, यह नहीं था यह ! उसने गहरी साँस ली और चारों ओर देखा।

बड़ी देर तक उसके चारों ओर जो हलचल मची हुई थी वह उसकी समझ में नहीं आ रही थी, या यह कहना चाहिए कि वह उसे समझ तो बिलकुल अच्छी तरह रहा था और सब कुछ देख रहा था, लेकिन वह वहाँ इस तरह खड़ा था जैसे वह कोई आदमी हो जो किसी चीज़ में कोई हिस्सा न ले रहा हो, और जो, परियों की कहानी के अदृश्य आदमी की तरह, किसी तरह कमरे में घुस आया था लेकिन जो उसे दिलचस्प लग रहे थे। उसने देखा कि टूटे हुए गुलदान के टुकड़े चुने जा रहे थे, उसने उन लोगों को जल्दी-जल्दी एक-दूसरे से बातें करते सुना, उसने अग्लाया को देखा, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह उसे विचित्र ढंग से देख रही थी, बहुत ही विचित्र ढंग से—उसकी आँखों में न नफ़रत थी, न तनिक भी गुस्सा; वह उसे इतनी डरी-डरी नज़रों से, लेकिन साथ ही ऐसे स्नेह के भाव से और दूसरों को ऐसी दहकती नज़रों से देख रही थी कि प्रिंस के हृदय में अचानक मीठा-मीठा दर्द होने लगा ! आख़िरकार उसने कुछ विचित्र-से आश्चर्य के साथ देखा कि वह सब लोग फिर बैठ गए थे और सचमुच ऐसे हँस रहे थे जैसे कुछ हुआ ही न हो ! अगले ही मिनट उनकी हँसी और तेज हो गई; अब वे उस पर हँस रहे थे, उसके हक्का-बक्का रह जाने पर, लेकिन उनकी हँसी में मित्रता का भाव और मस्ती थी; उनमें से कई लोगों ने उससे बातें भी कीं, और वे बड़ी नेकदिली से बोले, सबसे बढ़कर मिसेज़ येपांचिना : वह हँस-हँसकर उससे बातें कर रही थीं और कुछ बहुत ही तसल्ली देनेवाली बात कह रही थीं। यकायक प्रिंस को आभास हुआ कि जनरल येपांचिन बहुत मित्रता के भाव से उसकी पीठ थपक रहे हैं; इवान पेत्रोविच भी हँस रहे थे; लेकिन सबसे अधिक रुचिकर और प्रिय रवैया उन वयोवृद्ध राजनेता का था; उन्होंने प्रिंस का हाथ अपने हाथ में लेकर धीरे से दबाया और उसे दूसरे हाथ से हल्के से थपथपाते हुए, उससे अपने आपको सम्भाल लेने को कहा, जैसे वह कोई छोटा-सा भयभीत लड़का हो, जिससे प्रिंस को बहुत खुशी हुई, और आख़िरकार उन्होंने प्रिंस को अपने पास बिठा लिया। प्रिंस खुश होकर

उनके चेहरे को एकटक देखता रहा, फिर भी न जाने क्यों उसे बोलने में कठिनाई हो रही थी—उसकी साँस अटक रही थी; उसे बूढ़े का चेहरा कितना अच्छा लग रहा था !

"क्या यह ठीक है ?" वह आख़िरकार बुदबुदाकर बोला, "आपने सचमुच मुझे माफ़ कर दिया है ? और आपने भी, लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ?"

हँसी और तेज होती गई। प्रिंस की आँखों में आँसू छलक आए। उसे इस पर विश्वास नहीं हो रहा था, वह मन्त्रमुग्ध-सा हो गया।

"अलबत्ता, गुलदान था बहुत खूबसूरत," इवान पेत्रोविच बोले, "मुझे याद है कि पिछले पन्द्रह साल से वह यहीं रखा था...जी हाँ, पन्द्रह साल से।..."

"तो क्या हुआ ?" लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने ऊँचे स्वर में कहा। "ख़त्म तो आदमी भी हो जाता है, फिर मिट्टी के बर्तन के लिए इतनी हाय-तौबा क्या ! तुम कहीं उसकी वजह से बहुत सहम तो नहीं गए हो ?" उन्होंने प्रिंस को सम्बोधित करते हुए कुछ आशंकित स्वर में कहा। "उसकी कोई बात नहीं है, शान्त हो जाओ; सचमुच, तुमने तो मुझे डरा दिया।"

"और क्या आपने मुझे **हर चीज़** के लिए माफ़ कर दिया है—गुलदान के अलावा भी **हर चीज़** के लिए ?" प्रिंस अपनी जगह से उठा ही था।

वयोवृद्ध राजनेता ने उसका हाथ पकड़कर उसे फिर पीछे खींच लिया। वह उसे जाने नहीं देना चाहते थे।

"C'est tr'es curieux et c'est tre'x serieux !"[1] उन्होंने मेज़ के पार इवान पेत्रोविच के कान में कहा, लेकिन कुछ इतने ज़ोर से कि प्रिंस ने शायद सुन लिया हो।

"तो आप लोगों में से मैंने किसी का अपमान तो नहीं किया न ? आप सोच भी नहीं सकते कि मुझे इस बात से कितनी खुशी है ! लेकिन होना भी ऐसा ही चाहिए। मैं यहाँ किसी का अपमान कैसे कर सकता था ? मेरा ऐसा सोचना भी आपका अपमान ही करना है।"

"शान्ति से काम लो, मेरे दोस्त; तुम बात को बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे हो। तुम्हें हमारा शुक्रिया अदा करने की बिलकुल कोई वजह नहीं है। यह भावना अच्छी ज़रूर है, लेकिन मेरे ख़्याल में तुम बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे हो।"

"मैं आपका शुक्रिया नहीं अदा कर रहा हूँ...मैं तो बस...आपको सराह रहा हूँ। मुझे आपको देखते रहने से खुशी होती है; मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह शायद बेवक़ूफ़ी की बात है, लेकिन मैं कहने पर मजबूर हूँ, मेरे लिए समझाना ज़रूरी है...अगर किसी और वजह से नहीं तो खुद अपनी इज़्ज़त की खातिर।"

वह जो कुछ भी कर रहा था झटके के साथ, उलझे हुए ढंग से और बुखार की उन्माद जैसी हालत में; यह भी हो सकता है कि जो शब्द वह बोल रहा था वे अकसर वे नहीं होते थे जो वह कहना चाहता था। उसकी आँखें बोलने की इजाज़त माँगती हुई लग रही थीं। वे प्रिंसेस बेलोकोंस्काया पर पड़ीं।

"कोई चिन्ता न करो; बोलो, बोलो; बस इसका ध्यान रखो कि दम न फूलने लगे," उन्होंने कहा। "अभी तुमने दम फूलने से शुरुआत की थी और देखो उसका अन्जाम क्या हुआ। लेकिन बोलने से डरो नहीं। ये सज्जन तुमसे भी ज़्यादा विचित्र चीज़ें देख चुके हैं। तुमसे इन्हें कोई अचरज होनेवाला नहीं। और फिर तुम कुछ ऐसे अजूबे भी नहीं हो, गुलदान तो तुमने तोड़ ही दिया और हम सबको डरा दिया।"

1. यह बहुत विचित्र और गम्भीर है। (फ्रांसीसी)

प्रिंस मुस्कराते हुए उनकी बातें सुनता रहा।

"आप ही तो थे, साहब," उसने अचानक वयोवृद्ध राजनेता को सम्बोधित करते हुए कहा, "आप ही थे न जिन्होंने अभी तीन महीने पहले छात्र पोद्कूमोव और सरकारी नौकर श्वाब्रिन को साइबेरिया निर्वासित कर दिए जाने से बचाया था ?"

वयोवृद्ध राजनेता थोड़ा-सा शरमा गए और बुदबुदाकर बोले कि उसे कोशिश करके अपने आपको शान्त रखना चाहिए।

"आप ही तो थे न, जनाब," वह फ़ौरन इवान पेत्रोविच की तरफ़ मुड़ा, "जिन्होंने, मैंने सुना है, एक सूबे में अपने किसानों को मुफ्त में लकड़ी बाँटी थी जब उनका गाँव जल गया था, हालाँकि वे आज़ाद हो चुके थे और आपको बहुत परेशान कर चुके थे ?"

"ख़ैर, यह तो बात को लोगों ने बढ़ा-चढ़ाकर बयान किया है," इवान पेत्रोविच बुड़बुड़ाए, फिर भी वह बहुत खुश हुए। लेकिन इस बार उनका यह कहना बिलकुल ठीक था कि बात में बहुत अतिशयोक्ति थी; प्रिंस के कानों तक जो अफ़वाह पहुँची थी वह बिलकुल झूठ थी।

"और आप, प्रिंसेस, छह महीने पहले," उसने अचानक बहुत खिली हुई मुस्कराहट के साथ प्रिंसेस बेलोकोंस्काया को सम्बोधित करते हुए कहा, "आप ही तो सिर्फ़ मिसेज़ येपांचिना के सिफ़ारिशी खत की वजह से मास्को में मुझसे अपने बेटे की तरह मिली थीं, और, मुझे बिलकुल अपने बेटे की तरह मानकर एक सलाह दी थी जिसे मैं कभी नहीं भूलूँगा ? आपको याद है ?"

"तुम ऐसी हवा बाँधते हो कि बस !" प्रिंसेस बेलोकोंस्काया चिढ़कर ज़ोर से बोली। "तुम आदमी नेकदिल हो, लेकिन बहुत बेतुके हो : कोई तुमको दो टके दे दे तो तुम उसका इतना शुक्रिया अदा करोगे जैसे उसने तुम्हारी जान बचा ली हो। तुम समझते होंगे कि यह अच्छी बात है, लेकिन मैं तुमको बता दूँ इससे आदमी खीझ उठता है।"

वह बिलकुल उससे नाराज़ हो जानेवाली थीं, लेकिन अचानक वह खिलखिलाकर हँस पड़ीं, और इस बार उनकी हँसी में नेकी थी। मिसेज़ येपांचिना का चेहरा भी खिल उठा; जनरल येपांचिन के चेहरे पर भी चमक आ गई।

"मैंने कहा था कि प्रिंस ऐसा आदमी है...यानी...ऐसा आदमी...मतलब यह कि...अगर उसका दम इतना न फूलने लगा करे, जैसा कि प्रिंसेस ने अभी कहा है..." जनरल साहब ने हर्ष-विभोर होकर और प्रिंसेस बेलोकोंस्काया के उन शब्दों को दोहराते हुए जिनका उन पर बहुत गहरा असर हुआ था, बुदबुदाकर कहा।

बस अकेली अग्लाया ही उदास लग रही थी; लेकिन उसका चेहरा अभी तक तमतमाया हुआ था, शायद गुस्से से।

"सचमुच बहुत ही प्यारा आदमी वह है," वयोवृद्ध राजनेता ने फिर इवान पेत्रोविच से बुदबुदाकर कहा।

"मैं यहाँ अपने दिल में बड़ी व्यथा लेकर आया था," प्रिंस कहता रहा; उसकी उद्विग्नता बढ़ती जा रही थी; वह निरन्तर बढ़ती हुई तेजी, विचित्रता और उत्तेजना के साथ बोल रहा था। "मुझे...मुझे आप लोगों से डर लग रहा था, मुझे अपने आपसे भी डर लग रहा था। सबसे ज़्यादा अपने आपसे। पीटर्सबर्ग लौटते हुए मैंने फ़ैसला किया था कि मैं अपने श्रेष्ठतम लोगों से मिलूँगा, हमारे सबसे पुराने परिवारों के लोगों से, जिन्हीं में से मैं भी हूँ, उन लोगों से जिनमें अपने जन्म की वजह से मैं सबसे बढ़कर हूँ। क्योंकि इस वक़्त मैं अपने ही जैसे प्रिंसों के बीच बैठा हूँ न ? मैं आप लोगों से जान-पहचान पैदा करना चाहता था और यह ज़रूरी भी था, बहुत ही बहुत ज़रूरी !

...मैंने हमेशा आप लोगों की अच्छाई के मुकाबले बुराई बहुत ज़्यादा सुनी है—आपके [illegible] तुच्छता और निरे स्वार्थ के बारे में, आपके पिछड़ेपन, आपकी बहुत थोड़ी शिक्षा, आपकी बेतुकी आदतों के बारे में—उफ़, आप लोगों के बारे में कितना लिखा जाता है और कितनी बातें की जाती हैं ! आज मैं यहाँ मन में उत्सुकता और उलझन लिए हुए आया था। मुझे अपनी आँखों से देखकर अपनी राय कायम करनी थी कि क्या रूसी समाज की यह पूरी ऊपरी परत सचमुच बेकार है, क्या उसका वक़्त पूरा हो चुका है, क्या उसने अपनी जीवन-शक्ति खो दी है और अब वह सिर्फ़ इस लायक़ रह गई है कि मर जाए, लेकिन उन लोगों के साथ टुच्चेपन के और ईर्ष्या-भरे संघर्ष के बिना नहीं...जो भविष्य के लोग हैं, और यह देखे बिना कि वह अपने आप मर रही है उनके रास्ते में रुकावटें डाल रही है। मुझे पहले भी इस बात पर पूरा विश्वास नहीं होता था, क्योंकि हमारे रूस में ऊपरी वर्ग कभी सचमुच था ही नहीं, शायद दरबारियों को छोड़कर, जो अपनी वर्दी-पोशाक की वजह से या...संयोग से उसमें शामिल हो गए थे, और अब वह बिलकुल मिट चुका है...यही बात है न ? है न ?"

"जी नहीं, ऐसा बिलकुल नहीं है," इवान पेत्रोविच व्यंग से हँसे।

"यह तो फिर भड़क उठा !" प्रिंसेस बेलोकोंस्काया कहे बिना न रह सकीं।

"Laissez le dire !"[1] वयोवृद्ध राजनेता ने एक बार फिर धीमी आवाज़ में उन्हें चेतावनी दी। "उसका सारा बदन काँप रहा है।"

प्रिंस बिलकुल काबू से बाहर हो चुका था।

"और मैं क्या देखता हूँ ? मैं देखता हूँ ऐसे लोग जो सुसंस्कृत हैं, निष्कपट हैं और समझदार हैं; मैं एक आदरणीय वयोवृद्ध सज्जन को देखता हूँ, जो मुझ जैसे लड़के की बात सुनते हैं और उसके साथ मेहरबानी का बर्ताव करते हैं; मैं ऐसे लोग देखता हूँ जो समझ सकते हैं और माफ़ कर सकते हैं, रूसी लोग, नेकदिल, लगभग वैसे ही नेकदिल और उतने ही दोस्ताना जितने कि वे लोग जिनसे मैं परदेश में मिला था, लगभग उनके जैसे ही अच्छे। आप समझ सकते हैं कि इससे मुझे कितना सुखद आश्चर्य हुआ है ! आपको यह बताने को मेरा कितना जी चाहता है ! मैंने बहुत कुछ सुना है, और मैं खुद यक़ीन करने लगा था कि समाज में बाहरी तौर-तरीक़े ही सब कुछ होते हैं, खूसट रंग-रूप के अलावा कुछ भी नहीं है, और सार-तत्त्व सूख चुका है, लेकिन अब मैं खुद देख रहा हूँ कि हम लोगों के बीच ऐसा नहीं हो सकता। कहीं और भले ही ऐसा होता हो लेकिन यहाँ नहीं। क्या यह हो सकता है कि आप सारे के सारे लोग सिर्फ़ जेसुइट और धोखेबाज़ हैं ? मैं अभी प्रिंस न. की बातें सुन रहा था—क्या वह निष्कपट प्रेरणा-भरा हँसी-मज़ाक़ नहीं था ? क्या वह सच्ची नेकदिली नहीं थी ? क्या ऐसे शब्द उस आदमी के मुँह से निकल सकते हैं जो...मुर्दा हो, जिसका दिल और जिसके गुण सूख चुके हों ? क्या मुर्दा लोग मुझसे इस तरह का बर्ताव कर सकते थे जैसा आप लोगों ने किया है ? क्या यह...भविष्य का निर्माण करने की, आशाओं को साकार करने की सामग्री नहीं है ? क्या यह मुमकिन है कि इस तरह के लोग समझ न सकें और समय से पीछे रह जाएँ ?"

"मेरी आपसे फिर प्रार्थना है कि शान्त रहिए," राजनेता ने मुस्कराकर कहा। "इसके बारे में फिर कभी बातें करेंगे, और मुझे बातें करके खुशी होगी।..."

इवान पेत्रोविच गुर्राए और अपनी कुर्सी पर पहलू बदलकर बैठ गए; जनरल येपांचिन बेचैनी से कसमसाए; उनके अफ़सर प्रिंस की ओर तनिक भी ध्यान दिए बिना वयोवृद्ध राजनेता की बीवी

1. उसे बोलने दीजिए। (फ्रांसीसी)

से बातें कर रहे थे; लेकिन राजनेता की बीवी बार-बार उसकी बातें कान लगाकर सुन रही थीं और कनखियों से उसकी ओर देख रही थीं।

"जी नहीं, जनाब, मैं समझता हूँ कि मैं बोलूँगा," प्रिंस वयोवृद्ध राजनेता को सम्बोधित करके विशेष प्रकार के विश्वासपूर्ण बल्कि रहस्य की बात बताने जैसे भाव से नई उन्माद-भरी प्रेरणा के साथ बोलता रहा। "कल अग्लाया इवानोव्ना ने मुझसे न बोलने को कहा था, और उन्होंने यहाँ तक बताया था कि मैं किन विषयों पर बातें न करूँ। वह जानती हैं कि उन पर बहस करते हुए मैं कितना हास्यास्पद लगता हूँ। मैं छब्बीस साल का हो चुका हूँ, लेकिन मैं जानता हूँ कि मैं बिलकुल बच्चा हूँ। मुझे राय देने का कोई अधिकार नहीं है। मैंने यह बात हमेशा कही है। मैंने खुलकर बातें सिर्फ़ रोगोझिन से मास्को में की हैं।...हमने पुश्किन को साथ पढ़ा—उनकी सारी रचनाएँ। वह कुछ भी नहीं जानता था। उसे तो पुश्किन का नाम तक नहीं मालूम था। मैं हमेशा डरता रहता हूँ कि मैं अपने बेतुके तौर-तरीक़ों की वजह से विचार और मुख्य बात को कहीं तुच्छ न बना दूँ। मेरे हाव-भाव सारे ग़लत होते हैं। मैं जो कुछ कहता होता हूँ उसके वे विपरीत होते हैं, और इस वजह से लोगों को हँसी आती है और विचार तुच्छ हो जाता है। मुझे हद का भी अन्दाजा नहीं रहता, और यही मुख्य बात है—जी हाँ, यही सबसे महत्त्वपूर्ण बात है।...मैं जानता हूँ कि मेरे लिए कहीं अच्छा यह है कि मैं चुपचाप बैठा रहूँ और कुछ न कहूँ। जब मैं जी कड़ा करके चुप रहता हूँ तो मैं काफ़ी समझदार आदमी लगता हूँ, और, इसके अलावा, इससे मुझे सोचने का मौक़ा मिलता है। लेकिन अब बेहतर है कि मैं बोलूँ। मैंने बोलना इसलिए शुरू किया कि आप मेरी ओर इतने अच्छे भाव से देख रहे हैं। आपकी सूरत कितनी अच्छी है ! मैंने कल अग्लाया इवानोव्ना से वादा किया था कि मैं शाम-भर चुप रहूँगा।"

"Vraiment?"[1] वयोवृद्ध राजनेता मुस्कराकर बोले।

"लेकिन कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते हैं जब मैं यह सोचने लगता हूँ कि मेरा ऐसा समझना ग़लत है : निष्कपटता का महत्त्व हास्यास्पद हाव-भाव से कहीं ज़्यादा होता है, ठीक बात है न ?"

"कभी-कभी।"

"मैं सब कुछ साफ़-साफ़ समझा देना चाहता हूँ, सब कुछ, सब कुछ ! जी हाँ ! आप समझते हैं कि मैं हवाई किले बनाता हूँ ? मैं सिद्धान्त बघारता हूँ ? मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि मेरे सारे विचार बहुत ही सीधे-सादे हैं।...आपको मेरी बात का यक़ीन नहीं आता ? आप मुस्करा रहे हैं ? कभी-कभी मैं नफ़रत के क़ाबिल हो जाता हूँ, क्योंकि मैं अपनी आस्था खो देता हूँ। अभी यहाँ आते वक़्त मैं सोच रहा था : 'आख़िर, मैं उन लोगों से बातें कैसे करूँगा ? मैं शुरू किस तरह करूँगा कि उनकी समझ में कम से कम कुछ तो आ जाए ?' उफ़, मुझे कितना डर लग रहा था, लेकिन मुझे ज़्यादा डर आप लोगों के लिए लग रहा था। बेहद, बेहद ! फिर भी मुझे डर लग ही कैसे सकता था ? क्या डरना शर्म की बात नहीं थी ? अगर पिछड़े हुए और दुष्ट लोग हज़ारों की संख्या में हों और प्रगतिशील आदमी एक ही हो तो भी इसमें क्या होता है ? देखिए, मैं इस वक़्त इतना खुश हूँ इसलिए कि वे हज़ारों की संख्या में क़तई नहीं हैं, यह बड़ी आशाजनक सामग्री है ! हमें इसलिए भी बेहद परेशान नहीं होना चाहिए कि हम बेतुके हैं, है न ? यह बिलकुल सच है कि हम बेतुके और छिछोर हैं, हमारी आदतें खराब हैं, हम उकताए हुए लोग हैं, हमें यह तक नहीं मालूम कि किसी भी चीज़ को कैसे देखा जाए या समझा जाए। हम सब ऐसे ही हैं, सारे के सारे, आप और मैं और वे लोग ! आप बुरा तो नहीं मान रहे हैं कि मैं आपके मुँह पर आपको बेतुका कह

1. सचमुच ? (फ़्रांसीसी)

रहा है। और अगर ऐसा है तो क्या आप आगे चलकर काम आनेवाली सामग्री नहीं हैं ? जानते हैं, मेरी राय में, कभी-कभी हास्यास्पद होना बड़ी अच्छी बात होती है। सच तो यह है कि यह कहीं बेहतर होता है; इसकी वजह से एक-दूसरे को माफ़ कर देना और अपनी हार मान लेना कहीं ज़्यादा आसान हो जाता है। हम कैसे सीधे हर चीज़ समझ सकते हैं ? हम कैसे सीधे सम्पूर्णता से शुरुआत कर सकते हैं ! सम्पूर्णता तक पहुँचने के लिए पहले बहुत कुछ न समझना चाहिए। क्योंकि अगर हम चीज़ों को ज़रूरत से ज़्यादा जल्दी समझ जाएँगे तो शायद हम उन्हें काफ़ी अच्छी तरह न समझ पाएँ। मैं आपको ही यह बता दूँ, आपको, जो पहले ही इतना बहुत कुछ समझ चुके हैं और...बहुत कुछ नहीं समझ पाए हैं। अब मुझे आपके लिए डर नहीं लगता—आप मुझ जैसे लड़के से इसलिए नाराज़ तो नहीं हैं कि मैं आपसे ऐसी बातें कह रहा हूँ ? आप हँस रहे हैं, इवान पेत्रोविच ? आप समझते हैं कि मैं दूसरों के लिए डर रहा था, कि मैं उनका वकील हूँ, कि मैं जनवादी हूँ, बराबरी का पैरोकार हूँ ?" वह उन्मादियों की तरह हँसा (वह अपने भाषण के बीच-बीच में बहुत खुश होकर और जोश में आकर हर मिनट छोटा-सा ठहाका मारकर हँस देता था)। "मुझे आपके लिए डर लगता है, आप सब लोगों के लिए और हम सब लोगों के लिए। क्योंकि मैं खुद पुराना खानदानी प्रिंस हूँ, और मैं प्रिंसों के बीच बैठा हूँ। मैं हम सब लोगों को बचाने के लिए ऐसा कह रहा हूँ, इसलिए कि हमारा वर्ग यों ही घोर अँधेरे में ग़ायब न हो जाए, बिना कुछ समझे, हर चीज़ से नाराज़ होकर और हर चीज़ खोकर। क्या वजह है कि हम मिट जाएँ और अपनी जगह दूसरों को दे दें, जबकि हम सबसे अगली पाँतों में रह सकते हैं और लोगों के अगुवा बन सकते हैं ? हम अगली पाँतों में रहेंगे तब अगुआ भी बनेंगे। हमें सेवा करनी होगी ताकि हम नेता बन सकें।"

वह अपनी कुर्सी से उठने की कोशिश करने लगा, लेकिन वयोवृद्ध राजनेता उसे नहीं उठने दे रहे थे और उसे बढ़ती हुई बेचैनी से देख रहे थे।

"सुनिए !" प्रिंस कहता रहा। "मैं जानता हूँ कि बातें करने से कोई फ़ायदा नहीं है, कि आदर्श दूसरों के सामने रखना इससे कहीं अच्छा है, सिर्फ़ शुरुआत ही कर देना कहीं अच्छा है...मैंने शुरुआत कर दी है और...और क्या कोई सचमुच दुःखी हो सकता है ? अरे, मेरे दुःख और मेरी मुसीबतों से क्या फ़र्क़ पड़ता है अगर मुझमें सुखी रहने की शक्ति हो ? देखिए, मेरी समझ में नहीं आता कि यह कैसे हो सकता है कि आप किसी पेड़ के पास से होकर गुजरें और उसे देखकर खुश न हों ! किसी आदमी से बात करें और उसे प्यार करके खुश न हों ? बस, इतनी बात है कि मैं इसे शब्दों में नहीं कह पा रहा हूँ, लेकिन...लेकिन ज़रा सोचिए कि हर क़दम पर कितनी खूबसूरत चीज़ें हैं, ऐसी चीज़ें जिनका अभागे से अभागे आदमी को भी खूबसूरत न लगना नामुमकिन है ! किसी बच्चे को देखिए, सूर्योदय में ईश्वर की लीला को देखिए, घास को देखिए, वह कैसे बढ़ती है, उन आँखों को देखिए जो आपको निहारती हैं और आपसे प्यार करती हैं..."

वह कुछ देर से खड़ा बातें कर रहा था। वयोवृद्ध राजनेता सहमी-सहमी नज़रों से उसे देख रहे थे। बाक़ी सब लोगों से पहले भाँपकर मिसेज़ येपांचिना चिल्ला पड़ीं, "हे भगवान !" और भयभीत होकर उन्होंने अपने हाथ ऊपर हवा में उठा दिए। अग्लाया भागकर प्रिंस के पास जा पहुँची और ऐन वक़्त पर उसे अपनी बाँहों में थाम लिया, और उसने भयभीत होकर और व्यथा से विकृत चेहरे के साथ उस अभागे आदमी को "स्तब्ध कर देनेवाले और नीचे गिरा देनेवाले प्रेत" की भयानक चीख़ सुनी। बीमार क़ालीन पर पड़ा था। किसी ने जल्दी से उसके सिर के नीचे तकिया रख दिया।

किसी को भी ऐसा होने की उम्मीद नहीं थी। कोई पन्द्रह मिनट बाद प्रिंस न., रादोम्स्की और उन वयोवृद्ध राजनेता ने महफिल में फिर जान डालने की कोशिश की, लेकिन आधे घंटे बाद वे

सब लोग वहाँ से जा चुके थे।

खेद और सहानुभूति के बहुत से शब्द कहे गए और कई रायें भी दी गईं। इवान पेत्रोविच ने और बहुत-सी बातों के अलावा यह भी कहा कि "वह नौजवान स्ला-व-परस्त या इसी तरह का कोई आदमी है, लेकिन यह खतरनाक बात नहीं है।" वयोवृद्ध राजनेता ने कोई राय नहीं दी। यह सच है कि बाद में, दो-तीन दिन बाद ये सभी कुछ नाराज़ से थे। इवान पेत्रोविच को तो ठेस तक पहुँची थी लेकिन इतनी ज़्यादा नहीं। जनरल येपांचिन के अफ़सर कुछ समय तक उनसे खिंचे-खिंचे रहे। उनके परिवार के 'संरक्षक' वयोवृद्ध राजनेता ने भी परिवार के पिता से उपदेश के रूप में बुदबुदाकर कुछ कहा और लगे हाथ खुश करनेवाले शब्दों में यह भी कहा कि उन्हें अग्लाया के भविष्य में सचमुच बहुत दिलचस्पी थी। वह, वास्तव में, काफ़ी नेकदिल आदमी थे, लेकिन पार्टी में प्रिंस से उनकी दिलचस्पी की एक वजह थी नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ प्रिंस का पुराना मामला; उन्होंने उसके बारे में कुछ सुन रखा था और उन्हें उसमें बहुत दिलचस्पी तक हुई थी, उनका इरादा उससे उसके बारे में कुछ सवाल पूछने का भी था।

पार्टी से जाने से पहले प्रिंसेस बेलोकोंस्काया ने मिसेज़ येपांचिना से कहा—"ख़ैर, वह अच्छा भी है और बुरा भी, लेकिन अगर मेरी राय जानना चाहती हो तो वह अच्छे से बुरा ज़्यादा है। तुम खुद देख सकती हो कैसा आदमी है वह—बीमार आदमी !"

मिसेज़ येपांचिना का आख़िरी फ़ैसला यह था कि प्रिंस मंगेतर के रूप में असम्भव है, और उसी रात उन्होंने क़सम खाई कि उनके जीते जी वह उनकी अग्लाया का पति नहीं बन सकता। अगले दिन सबेरे वह यह दृढ़ निश्चय लेकर उठीं कि वह अपने फैसले पर अटल रहेंगी। लेकिन उसी दिन एक बजे दोपहर के खाने के समय उन्होंने बहुत ही आश्चर्यजनक ढंग से अपनी ही बात का खण्डन कर दिया।

अग्लाया ने अपनी बहनों के बड़ी सतर्कता से पूछे गए एक सवाल के जवाब में बड़ी रुखाई से लेकिन दम्भ के साथ कहा, मानो वह ऐसे सवाल पूछे जाने का सिलसिला ख़त्म कर देना चाहती हो—"मैंने उनसे कभी कोई वादा नहीं किया है, और मैंने अपनी ज़िन्दगी में उन्हें कभी अपना मंगेतर नहीं माना है। वह मेरे लिए उतने ही अजनबी हैं जितना कि कोई और।"

लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना अचानक भड़क उठीं।

"मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी," उन्होंने खीझकर कहा। "मैं जानती हूँ, वह असम्भव मंगेतर है, और भगवान की कृपा से जो कुछ हुआ वह अच्छा ही हुआ; लेकिन मुझे तुम्हारे मुँह से ऐसी बात सुनने की उम्मीद नहीं थी ! मुझे तुमसे कुछ दूसरी ही बात सुनने की उम्मीद थी। मैं कल रातवाले सब लोगों को निकाल देती और उसे रोक लेती—ऐसा आदमी है वह !"

इतना कहकर वह अचानक रुक गईं; अभी जो बात उन्होंने कही थी उससे वह खुद डर गई थीं। काश उन्हें मालूम होता कि उस क्षण उन्होंने अपनी बेटी के साथ कैसा अन्याय किया था ! अग्लाया के दिमाग़ में हर चीज़ तै हो चुकी थी; वह भी उस घड़ी की प्रतीक्षा में थी जब सब कुछ तै हो जाएगा; और हर इशारा, हर असावधानी में किया गया स्पर्श उसके दिल में छुरी की तरह उतर जाता था।

8

प्रिंस के लिए भी वह सुबह कष्टप्रद पूर्वाभासों से आरम्भ हुई; इनका कारण यह भी हो सकता था

कि उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, लेकिन उसकी उदासी बहुत ही अस्पष्ट और उसके लिए अत्यन्त पीड़ाजनक थी। यह सच है कि उसके सामने सुस्पष्ट, कष्टप्रद और लज्जित करनेवाले तथ्य थे, लेकिन उसकी उदासी उन सब चीज़ों से परे थी जिन्हें वह याद कर सकता था या जिनके बारे में वह सोच सकता था; उसने महसूस किया कि अकेले अपने बूते वह अपने मन को स्थिर नहीं कर पाएगा। धीरे-धीरे वह इस दृढ़ निष्कर्ष पर पहुँच गया कि उसी दिन उसके साथ कोई विशेष और निर्णायक बात होगी। पिछली रात का उसका दौरा बहुत ही हल्का था। नैराश्य की भावना, सिर में कुछ भारीपन और हाथ-पाँवों में दर्द के अलावा वह उसके कोई ख़ास दुष्परिणाम अनुभव नहीं कर रहा था। उसका दिमाग़ बिलकुल साफ़ काम कर रहा था, हालाँकि उसकी आत्मा बीमार थी। वह कुछ देर से सोकर उठा था और उसे फ़ौरन ही पिछली शाम की सारी घटनाएँ बिलकुल साफ़ याद आ गई थीं; उसे यह भी याद था, हालाँकि इतने साफ़ ढंग से नहीं, कि दौरा पड़ने के आधे घंटे बाद उसे घर पहुँचा दिया गया था। उसे मालूम हुआ कि येपांचिन-परिवार के यहाँ से कोई उसका हाल पूछने आ चुका था। साढ़े ग्यारह बजे उन लोगों ने फिर किसी को भेजा; इससे उसे बहुत खुशी हुई। सबसे पहले उसे देखने और उसकी तीमारदारी करने वेरा लेबेदेवा आई। उसे देखते ही वह रोने लगी, लेकिन जब प्रिंस ने फ़ौरन उसे धीरज बँधाया तो वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। उस लड़की के मन में उसके प्रति दया की जो प्रबल भावना थी उसका प्रिंस पर तुरन्त बहुत गहरा प्रभाव पड़ा; उसने उसका हाथ पकड़कर चूम लिया। वेरा शरमा गई।

"अरे, यह न कीजिए, ऐसा न कीजिए !" वह जल्दी से अपना हाथ खींचते हुए सहमकर चिल्लाई।

थोड़ी देर बाद वह कुछ विचित्र ढंग से खिसियाई हुई वहाँ से चली गई। लगे हाथ वह प्रिंस को इतना बता चुकी थी कि उसके बाप भोर पहर 'स्वर्गवासी' के यहाँ, जैसा कि वह जनरल साहब को कहते थे, यह मालूम करने चले गए थे कि वह रात को मरे कि नहीं, और यह कि उसने लोगों को कहते सुना था कि उनके जल्दी ही मर जाने की उम्मीद की जाती थी। लगभग बारह बजे लेबेदेव खुद घर लौटा और सीधे प्रिंस से मिलने गया, "बस एक-दो मिनट को आपके बहुमूल्य स्वास्थ्य के बारे में पूछने के लिए," इत्यादि, और इसके अलावा "एक-दो बूँद गले के नीचे उतार लेने के लिए" भी। उसने काँखने-कराहने के अलावा और कुछ नहीं किया, और प्रिंस ने उसे जल्दी ही चला जाने दिया, लेकिन उसने प्रिंस से उसके कलवाले दौरे के बारे में जानने की कोशिश ज़रूर की, हालाँकि यह बात बिलकुल स्पष्ट थी कि उसे पूरा ब्योरा पहले ही मालूम हो चुका था। उसके बाद कोल्या भागा-भागा आया, वह भी एक-दो मिनट के लिए ही। कोल्या सचमुच बहुत जल्दी में था और बहुत परेशान और दुःखी था। सबसे पहले उसने प्रिंस से, बिलकुल स्पष्ट रूप से और आग्रहपूर्वक वह सब कुछ पूछा जो उससे छिपाया जा रहा था, साथ ही उसने यह भी बताया कि उसने लगभग सब कुछ परसों ही मालूम कर लिया था। वह गहरे और सख़्त सदमे की हालत में था।

अपनी ओर से यथासम्भव भरपूर सहानुभूति के साथ प्रिंस ने एक बात भी छिपाए बिना उसे सारी घटना ज्यों की त्यों बयान कर दी, जिसे सुनकर लड़के पर जैसे बिजली-सी गिर पड़ी। उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला और वह चुपचाप रोने लगा। प्रिंस ने महसूस किया कि यह उस प्रकार के अनुभवों में से था जिनकी छाप मन पर हमेशा बनी रहती है और जो किशोरावस्था में किसी लड़के के जीवन का मोड़ बन जाते हैं। उसने उस काण्ड के बारे में अपनी राय बताने में जल्दी की और साथ ही यह भी जोड़ दिया कि उसकी राय में वयोवृद्ध जनरल साहब की शीघ्र ही

होनेवाली मृत्यु का कारण शायद वह विक्षोभ था जो उन्होंने अपनी हरकत पर महसूस किया था, और यह कि हर आदमी में ऐसा महसूस करने की क्षमता नहीं होती। प्रिंस की बातें सुनकर कोल्या की आँखें बिजली की तरह चमक उठीं।

"गान्या, वार्या और प्तीत्सिन बिलकुल निकम्मे हैं ! मैं उनसे झगड़ा तो नहीं करूँगा, लेकिन उनसे कोई सरोकार भी नहीं रखूँगा। उफ़, प्रिंस, कल से मेरे ऊपर बहुत कुछ बीत चुकी है, और यह मेरे लिए एक सबक रहेगा ! अब मैं अपने आपको माँ के लिए जिम्मेदार समझता हूँ, हालाँकि वार्या के यहाँ उनके लिए हर तरह का प्रबन्ध है, फिर भी वह वही बात नहीं है।..."

यह याद आते ही कि उसकी राह देखी जा रही होगी, वह उछलकर खड़ा हो गया, जल्दी से उसने प्रिंस के स्वास्थ्य के बारे में पूछा, और जवाब मिल जाने पर झट से इतना और जोड़ दिया—"क्या और कोई बात नहीं है ? मैंने सुना कि कल...ज़ाहिर है मुझे पूछने का कोई हक़ नहीं है, लेकिन अगर कभी आपको किसी भी काम के लिए एक वफ़ादार सेवक की ज़रूरत हो तो वह आपके सामने इस वक़्त मौजूद है। मुझे ऐसा लगता है कि हम दोनों बहुत खुश नहीं हैं—ठीक बात है न ? लेकिन...मैं आपसे कुछ बताने को नहीं कह रहा हूँ।..."

वह चला गया और प्रिंस और भी गहरे विचार में डूब गया; हर कोई सर्वनाश की भविष्यवाणी कर रहा था, हर कोई उसे ऐसे देखता था जैसे उन्हें कोई ऐसी बात मालूम हो जो उसे नहीं मालूम थी; लेबेदेव कुरेदकर उससे कुछ जानकारी प्राप्त करना चाहता था, कोल्या किसी बात की ओर खुला संकेत कर रहा था, और वेरा रो रही थी। आख़िरकार उसने चिढ़कर इन सब बातों को अपने दिमाग़ से निकाल दिया—"यह सब मेरी बीमारी की वजह से पैदा होनेवाले शक्कीपन का नतीजा है," उसने सोचा। एक बजे के कुछ ही देर बाद येपांचिन-परिवार को देखकर उसका चेहरा खिल उठा, जो "बस एक मिनट के लिए" उससे मिलने आया था। वे लोग सचमुच एक ही मिनट को आए थे। दोपहर का खाना खाकर उठते हुए लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने एलान किया था कि वे सब लोग एक साथ टहलने जाएँगे। यह एलान हुक्म की शक्ल में किया गया था, बड़े रूखे ढंग से और कोई कारण बताए बिना। वे सब लोग टहलने निकले—यानी, माँ, बेटियाँ और प्रिंस श.। लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना रोज जिस ओर टहलने जाती थीं उससे उल्टी दिशा में चल पड़ीं। सब लोग समझ गए कि उनका इरादा क्या था, और सभी इस डर से चुप रहे कि माँ कहीं चिढ़ न जाएँ, और मानो उनकी झिड़कियों और आपत्तियों से बचने के लिए वह भी पीछे मुड़कर देखे बिना सबके आगे-आगे चल रही थीं। आख़िरकार अदेलाईदा ने मत प्रकट किया कि अगर वे लोग टहलने निकले हैं तो इस तरह भागने की कोई ज़रूरत नहीं है, और यह कि माँ के साथ चलना तो यों भी नामुमकिन था।

"सुनो," लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना अचानक उनकी ओर मुड़कर बोलीं, "हम लोग उसके घर के सामने से गुजर रहे हैं। अग्लाया कुछ भी सोचती हो, और बाद में चाहे जो हो, लेकिन वह हमारे लिए कोई अजनबी तो है नहीं, और ऊपर से इस वक़्त वह बीमार और दुःखी भी है। मैं तो कम से कम जाकर उसका हाल ज़रूर पूछूँगी कि वह कैसा है। अगर तुम लोग मेरे साथ आना चाहो तो आओ, न चाहो तो जाओ। कोई तुम्हें रोक नहीं रहा है।"

ज़ाहिर है, सब लोग अन्दर गए। जैसी कि उम्मीद थी, प्रिंस ने एक बार फिर गुलदान तोड़ने के लिए और...शर्मनाक हंगामा खड़ा करने के लिए माफ़ी माँगी।

"अरे, वह कोई बात नहीं है," लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना ने कहा। "मुझे गुलदान का कोई दुःख नहीं है, मुझे दुःख तो तुम्हारा है। तो तुम खुद यह महसूस करते हो कि बहुत शर्मनाक हंगामा हुआ। लेकिन इसकी भी कोई बात नहीं है, क्योंकि अब तो हर आदमी यह देखता है कि तुम्हें दोष देना

बेकार है, अच्छा, मैं चली। अगर तुम बदन में काफ़ी ताक़त महसूस करते हो तो थोड़ी देर टहल आना और उसके बाद आकर सो जाना—मेरी यही सलाह है। और अगर तुम्हारा जी चाहे तो हमेशा की तरह हम लोगों से मिलने आ जाना। मैं तुम्हें एक बात हमेशा के लिए बता देना चाहती हूँ कि कुछ भी हो जाए, चाहे कुछ नतीजा निकले, तुम हमेशा हमारे परिवार के दोस्त रहोगे—बहरहाल, मेरे दोस्त तो रहोगे ही। मैं अपनी बात तो कह ही सकती हूँ।..."

उन सबने इस चुनौती को स्वीकार कर लिया और अपनी माँ की भावनाओं की पुष्टि की। वे चले गए, लेकिन कोई नेक और दिलासा देनेवाली बात कहने की इस निष्कपट उत्सुकता में बहुत क्रूरता छिपी थी, जिसे लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना उस वक़्त नहीं समझ पाई थीं। उनके इस निमन्त्रण में कि "हमेशा की तरह हम लोगों से मिलने आ जाना" और उनके इन शब्दों में कि "बहरहाल, मेरे दोस्त तो रहोगे ही" फिर वही अशुभसूचक संकेत था। प्रिंस ने याद करने की कोशिश की कि अग्लाया कैसी लग रही थी। यह सच है कि आने पर भी और जाते हुए भी वह उसकी ओर देखकर बहुत सुन्दर ढंग से मुस्कराई थी, लेकिन उसने तब भी एक शब्द नहीं कहा था जब दूसरे सब लोग उसे अपनी मित्रता का आश्वासन दिला रहे थे, हालाँकि उसने दो बार प्रिंस को बड़े ग़ौर से देखा था। उसका चेहरा हमेशा से ज़्यादा पीला था, जैसे रात-भर वह ठीक से सोई न हो। प्रिंस ने फ़ैसला किया कि वह यक़ीनन शाम को 'हमेशा की तरह' उन लोगों से मिलने जाएगा, और उसने बड़ी बेचैनी से घड़ी देखी। येपांचिन-परिवार के जाने के ठीक तीन मिनट बाद वेरा आई।

"अग्लाया इवानोव्ना ने, प्रिंस, आपके लिए अभी चुपके से एक सन्देश दिया है।"

प्रिंस सिर से पाँव तक काँप उठा।

"कोई पर्चा है ?"

"जी नहीं, सन्देश है। और उसके लिए भी मुश्किल से ही उन्हें समय मिल पाया। उन्होंने आपसे बहुत अनुरोध से कहा है कि आज शाम को सात बजे तक या नौ बजे तक—मैंने ठीक से नहीं सुना—आप एक क्षण को भी कहीं बाहर न जाएँ।"

"लेकिन किस...किसलिए ? मतलब क्या है इसका ?"

"मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं। उन्होंने बस इतना ही कहा था कि मैं आपसे कहना न भूलूँ।"

"क्या उन्होंने तुमसे कहा था कि भूलना नहीं ?"

"जी नहीं, इन शब्दों में तो नहीं कहा था। उन्हें मुड़कर मुझे यह सन्देश देने का वक़्त भी मुश्किल से ही मिला था, सौभाग्य से मैं खुद ही भागकर उनके पास पहुँच गई थी। मैं उनकी सूरत देखकर समझ गई कि उनका यही मतलब था। उन्होंने मुझे इस तरह देखा कि मेरे दिल की धड़कन ही रुक गई।..."

कुछ और सवाल पूछने के बाद प्रिंस, हालाँकि उसे कुछ ज़्यादा मालूम नहीं हो पाया, पहले से भी ज़्यादा उद्विग्न हो उठा। जब वह अकेला रह गया तो सोफ़े पर लेटकर फिर सोचने लगा। "शायद उन लोगों के यहाँ नौ बजे तक मेहमान रहेंगे और उसे डर है कि मैं मेहमानों के सामने फिर कोई गड़बड़-घोटाला न कर बैठूँ," उसने आख़िरकार सोचा और फिर बड़ी बेचैनी से शाम का इन्तज़ार करने लगा और बार-बार घड़ी देखने लगा। लेकिन गुत्थी शाम से बहुत पहले ही सुलझ गई, और वह भी एक और आदमी के आने की शक्ल में, हल एक नए और पीड़ाजनक रहस्य की शक्ल में—येपांचिन-परिवार के जाने के ठीक आधे घंटे बाद इप्पोलीत उसके कमरे में आया; वह इतना थका हुआ और निढ़ाल लग रहा था कि एक शब्द भी कहे बिना वह मानो बेहोश होकर आराम-कुर्सी पर ढह गया और फ़ौरन उसे खाँसी का भयानक दौरा पड़ गया। खाँसते-खाँसते उसके

मुँह से ख़ून आने लगा। उसकी आँखें चमक उठीं और उसके गालों पर लाल धब्बे तमतमा उठे। प्रिंस ने बुदबुदाकर उससे कुछ कहा, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया, और बड़ी देर तक इस आशय से हाथ हिलाता रहा कि उससे कुछ भी न पूछा जाए। आख़िरकार वह ठीक हो गया।

"मैं जा रहा हूँ," उसने बड़ी मुश्किल से भर्राई हुई आवाज़ में कहा।

"कहो तो घर तक पहुँचा आऊँ," प्रिंस ने उठते हुए कहा, लेकिन यह याद आते ही वह ठिठक गया कि उसे कहीं बाहर जाने को मना किया गया था।

इप्पोलीत हँस दिया।

"मैं आपके पास से नहीं जा रहा हूँ," वह हाँपते हुए और बीच-बीच में खाँसते हुए बोला। "बल्कि मैंने तो आकर आपसे मिलना ज़रूरी समझा, और वह भी काम से...वरना मैं आपको कभी परेशान न करता। मैं वहाँ जा रहा हूँ, और इस बार, मैं समझता हूँ, सचमुच जा रहा हूँ। मेरी खेल ख़त्म हो चुका है ! यक़ीन कीजिए, मैं हमदर्दी के लिए नहीं...मैं आज सबेरे दस बजे यह सोचकर लेटा था कि उस वक़्त तक नहीं उठूँगा, लेकिन मैंने अपना इरादा बदल दिया और आपके पास आने के लिए फिर उठ खड़ा हुआ...तो, बात यह है कि मुझे आना पड़ा।"

"आपको देखकर मुझे बहुत दुःख होता है। इतनी तकलीफ़ उठाकर यहाँ आने के बजाय मुझे बुलवा भेजा होता।"

"अच्छा, बस रहने दीजिए। आपने कहा कि आपको दुःख है, और इससे शिष्टाचार का तक़ाजा पूरा हो गया। अरे, हाँ, मैं तो भूल ही गया, आपकी अपनी तबियत कैसी है ?"

"मैं बिलकुल ठीक हूँ। बस, कल रात में...ज़रा..."

"सुना, सुना। चीनी गुलदान पर निशाना बिलकुल ठीक बैठा ! अफ़सोस है कि मैं वहाँ नहीं था ! मैं यहाँ काम से आया हूँ। पहली बात तो यह कि आज सबेरे मुझे गव्रीला अर्दालिओनोविच और अग्लाया इवानोव्ना से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ—वे हरी बेंच पर मिले थे। ताज्जुब है कि आदमी इतना बेवक़ूफ़ भी लग सकता है। गव्रीला अर्दालिओनोविच के जाने के बाद मैंने यह बात अग्लाया इवानोव्ना से कह भी दी।...लेकिन ऐसा लगता है कि आपको किसी बात पर ताज्जुब ही नहीं हो रहा है, प्रिंस," उसने प्रिंस के शान्त चेहरे को अविश्वास के भाव से घूरते हुए इतना और कहा। "लोग कहते हैं कि अगर किसी आदमी को किसी भी बात पर ताज्जुब न हो तो यह बहुत समझदारी की निशानी होती है। मेरी राय में यह बेहद बेवक़ूफ़ी की भी निशानी हो सकती है।...माफ़ कीजिएगा, मेरा मतलब आपसे नहीं है।...आज मेरे मुँह से बहुत अच्छी बातें नहीं निकल रही हैं।..."

"मुझे कल ही मालूम हो गया था कि गव्रीला अर्दालिओनोविच..." प्रिंस कहते-कहते रुक गया, शायद संकोच की वजह से, हालाँकि इप्पोलीत उसे कोई आश्चर्य न होने पर चिढ़ा हुआ था।

"आपको मालूम था ! यह तो सचमुच नई बात है ! लेकिन बताना न, यही बेहतर होगा।...और आपने आज उनकी मुलाक़ात ख़ुद तो नहीं देखी थी न ?"

"अगर आप ख़ुद वहाँ थे तो आपने देखा होगा कि मैं वहाँ नहीं था।"

"हो सकता है कि आप किसी झाड़ी के पीछे छिपे बैठे हों। फिर भी मुझे आपकी वजह से बड़ी ख़ुशी है, क्योंकि मैं तो यह सोचने लगा था कि गव्रीला अर्दालिओनोविच का पलड़ा भारी है।"

"मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, इप्पोलीत, कि इसके बारे में और इन शब्दों में मुझसे बातें न करें।"

"ख़ासतौर पर इसलिए कि आपको सब कुछ मालूम हो चुका है।"

"यह आपका ग़लत ख़्याल है। मुझे शायद ही कुछ मालूम है, और अग्लाया इवानोव्ना पक्के तौर पर जानती हैं कि मुझे कुछ भी नहीं मालूम है। मुझे इस मुलाक़ात के बारे में भी कुछ नहीं मालूम था।...आपका कहना है कि मुलाक़ात हुई थी ? अच्छी बात है, बस बात को यहीं ख़त्म कर दें।..."

"क्या मतलब आपका ? आपको मालूम था और आपको नहीं भी मालूम था। आप कहते हैं 'अच्छी बात है' और 'बस बात को यहीं ख़त्म कर दें'। जी नहीं, इतना भरोसा न रखिए। ख़ासतौर पर अगर आपको कुछ भी नहीं मालूम है। आपको इतना भरोसा इसलिए है कि आपको कुछ भी मालूम नहीं है। और क्या आप जानते हैं कि वे दोनों—भाई और बहन—क्या हिसाब लगाए बैठे हैं ? आप इस बात को भाँप तो गए हैं न ? अच्छी बात है, अच्छी बात है, मैं छोड़े देता हूँ," प्रिंस की अधीरता देखकर उसने इतना और जोड़ दिया। "लेकिन मैं तो अपने ही निजी काम से आया हूँ, और इसी के बारे में मैं...मैं आपको सफ़ाई देना चाहता हूँ। लानत है, आदमी तरह-तरह की सफाइयाँ दिए बिना मर भी नहीं सकता। मुझे ढेरों सफाइयाँ देनी पड़ती हैं। आप सुनना चाहेंगे ?"

"कहिए, मैं सुन रहा हूँ।"

"मैंने अपना इरादा फिर बदल दिया है। फिर भी मैं गव्रीला अर्दालिओनोविच से बात शुरू करूँगा। मैं जानता हूँ कि आप मेरा विश्वास तो करेंगे नहीं लेकिन आज सबेरे हरी बेंच पर मिलने का वक़्त मुझे भी दिया गया था। लेकिन मैं झूठ नहीं बोलना चाहता—मैंने खुद इस मुलाक़ात के लिए जिद की थी, अपने आपको उस पर थोप दिया था, एक रहस्य बताने का वादा किया था। मालूम नहीं मैं वक़्त से पहले आ गया था या नहीं (मैं समझता हूँ कि यही हुआ था), लेकिन मैं अग्लाया इवानोव्ना के पास जाकर बैठा ही था कि इतने में मैंने वर्वारा अर्दालिओनोव्ना और गव्रीला अर्दालिओनोविच को बाँह में बाँह डाले हमारी ओर आते देखा, जैसे वे टहलने निकले हों। ऐसा लगा कि मुझे देखकर दोनों को बड़ा ताज्जुब हुआ; उन्हें इसकी उम्मीद नहीं थी, यहाँ तक कि वे बहुत अटपटा महसूस कर रहे थे। अग्लाया इवानोव्ना शर्म से लाल हो गई और, आप मानें या न मानें, वह कुछ खिसिया गई, मालूम नहीं इसलिए कि मैं वहाँ मौजूद था या बस इसलिए कि उसकी नज़र गव्रीला अर्दालिओनोविच पर पड़ गई—क्योंकि वह किस बला के खूबसूरत हैं—लेकिन वह बुरी तरह शरमा गई और उसने सारा मामला एक मिनट से भी कम में निबटा दिया, और सारा मामला था भी बहुत मज़ेदार—वह उठी, गव्रीला अर्दालिओनोविच के झुककर अभिवादन करने और वार्या की खुशामद-भरी मुस्कराहट का जवाब दिया, और अचानक बरस पड़ी—"मैंने आप लोगों से यहाँ आने को इसलिए कहा था कि मैं आप लोगों को खुद बता दूँ कि मैं आप लोगों की हार्दिक और मित्रता की भावनाओं की कितनी कद्र करती हूँ और यह कि अगर मुझे कभी उनकी ज़रूरत पड़ी तो यक़ीन कीजिए..." उसने विदा ली और वे दोनों चले गए—मालूम नहीं बेवक़ूफ़ महसूस करते हुए या विजय-गर्व के साथ। ज़ाहिर है, गान्या तो ज़रूर बेवक़ूफ़ महसूस कर रहा होगा। उसकी समझ में यह सब कुछ नहीं आया और उसका चेहरा चुक़न्दर की तरह लाल हो गया (कभी-कभी उसके चेहरे का भाव भी कमाल का हो जाता है !), लेकिन मेरा ख़्याल है कि वर्वारा अर्दालिओनोव्ना की समझ में आ गया होगा कि उन लोगों को वहाँ से खिसक जाना चाहिए, क्योंकि अग्लाया इवानोव्ना का इतना ही कहना बहुत काफ़ी था, और वह अपने भाई को वहाँ से खींच ले गई। वह अपने भाई से ज़्यादा होशियार है और मुझे यक़ीन है कि अब वह विजय-गर्व अनुभव कर रही होगी। मैं अग्लाया इवानोव्ना से नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ मुलाक़ात का वक़्त तै करने गया था।"

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ ?" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा।

"ओहो ! मैं देखता हूँ कि आप अपना आत्म-संयम खोते जा रहे हैं और कुछ आश्चर्य दिखाने लगे हैं। मुझे बहुत खुशी है कि आख़िरकार आप इंसान जैसे दिखाई देना चाहते हैं। इस बात पर मैं आपका मन-बहलाव करूँगा। बहुत ऊँचे विचार रखनेवाली लड़कियों के साथ भलाई करने का यही नतीजा होता है—आज उसकी ओर से मेरे मुँह पर एक तमाचा जड़ा।"

"यानी...नैतिक ?" प्रिंस पूछे बिना न रह सका।

"जी हाँ...सचमुच का नहीं। मैं नहीं समझता कि कोई मुझ जैसे आदमी पर हाथ उठाएगा। अब तो कोई औरत भी मुझे नहीं मारेगी—गान्या तक नहीं ! हालाँकि कल एक क्षण तक मुझे ऐसा लगा था कि वह मुझ पर टूट पड़ेगा।...मैं शर्त बदकर कह सकता हूँ कि मुझे मालूम है कि आप इस वक़्त क्या सोच रहे हैं। आप सोच रहे हैं : 'मैं मानता हूँ कि इसकी पिटाई नहीं की जानी चाहिए, लेकिन सोते में इसका दम तकिए से या गीले चीथड़े से ज़रूर घोंट दिया जा सकता है—सचमुच, ऐसा ही किया जाना चाहिए !...' आपके चेहरे पर यह बात जैसे लिखी हुई है कि आप इस क्षण ऐसा ही सोच रहे हैं।"

"मैंने ऐसा कभी नहीं सोचा है !" प्रिंस ने नफ़रत से कहा।

"मालूम नहीं। कल रात मैंने सपना देखा था कि...मेरा मतलब है...किसी आदमी ने...गीले चीथड़े से मेरा दम घोंट दिया...और, मैं आपको यह भी बता दूँ कि वह कौन था—रोगोझिन ! क्या ख़्याल है आपका, गीले चीथड़े से किसी आदमी का दम घोंटना मुमकिन है ?"

"मालूम नहीं।"

"मैंने सुना है कि ऐसा किया जा सकता है। अच्छी बात है, छोड़िए इसे। मगर, यह बताइए मुझे कि मैं इधर की उधर लगानेवाला क्यों हूँ ? उसने आज मुझे इधर की उधर लगानेवाला क्यों कहा ? और, यह ध्यान रहे, उसने जो कुछ मुझे कहना था वह सब सुन लेने के बाद कहा, और उसने मुझसे कुछ बातें दोहराने को भी कहा।...लेकिन औरतें तो होती ही ऐसी हैं ! उसी की खातिर मैंने रोगोझिन से सम्पर्क बनाया। बहुत ही दिलचस्प आदमी है। और खुद उसी के हित में मैंने नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ उसकी निजी मुलाक़ात तै की है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि मेरे इस बात की ओर संकेत करने से यह बुरा मान गई हो कि वह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की 'जूठन' पाकर खुश है। लेकिन मैं उससे यह बात बार-बार ख़ुद उसके हित में कहता रहा हूँ। मैं इससे इन्कार नहीं करता कि मैंने उसे इस आशय के दो खत लिखे थे और आज तीसरी बार—हमारी यह मुलाक़ात।...आज सबेरे मैंने...मैंने सबसे पहले उसे बताया कि यह बात उसके लिए अपमानजनक है...और, इसके अलावा, शब्द 'जूठन' मेरा बिलकुल नहीं था, बल्कि किसी और का था। कम से कम गान्या के यहाँ तो हर आदमी यही कह रहा था; और उसने खुद इस बात की पुष्टि की। तो फिर आख़िर वह मुझे इधर की उधर लगानेवाला होने का दोष क्यों देती है ? मैं जानता हूँ, इस वक़्त मुझे देखकर आपको बहुत हँसी आ रहा है, और मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि आप वे बेवक़ूफ़ी की पंक्तियाँ मेरे ऊपर लागू कर रहे हैं—

शायद विदाई की मुस्कान से उसके प्यार में
जादू भर दे मेरे
जीवन का नीरस सूर्यास्त।

हः-हः-हः !" वह अचानक उन्मादियों की तरह ठहाका मारकर हँस पड़ा, जिसके अन्त में उसे खाँसी का दौरा पड़ गया। "ज़रा देखिए तो," उसने खाँसी के बीच हाँफते हुए कहा, "अपना यह प्यारा

गान्या भी खूब आदमी है : 'जूठन' की बात करता है, लेकिन अब वह खुद क्या करना चाहेगा ?"

प्रिंस बड़ी देर तक कुछ नहीं बोला; वह दहल गया था।

"अभी आपने नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ मुलाक़ात की चर्चा की थी ?" आख़िरकार उसने बुदबुदाकर कहा।

"कमाल है, क्या आपको सचमुच नहीं मालूम कि आज अग्लाया इवानोव्ना और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की मुलाक़ात होनेवाली है, जिसके लिए नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को अग्लाया इवानोव्ना के निमन्त्रण पर और मेरी कोशिशों से रोगोझिन के जरिए पीटर्सबर्ग से ख़ासतौर पर बुलवाया गया है, और इस वक़्त वह आपके यहाँ से थोड़ी ही दूर रोगोझिन के साथ दार्या अलेक्सेयेव्ना के यहाँ ठहरी हुई है, जो...उसकी सहेली है और जिसके चाल-चलन के बारे में लोग तरह-तरह की बातें करते हैं, और आज अग्लाया इवानोव्ना उसी के बदनाम घर में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से बातचीत करने और कई समस्याएँ हल करने जाएगी। वे गणित पढ़ना चाहती हैं। आपको नहीं मालूम ? सचमुच ?"

"यक़ीन नहीं आता !"

"अच्छा, ठीक है, तो न आए यक़ीन। फिर भी इसके बारे में मालूम कैसे हो आपको ? वैसे यहाँ मक्खी भी उड़ती हुई निकल जाए तो सबको उसकी ख़बर हो जाती है—ऐसी शानदार है यह जगह ! मैंने आपको चेतावनी दे दी है, आपको मेरा एहसान मानना चाहिए। अच्छी बात है, में चला...अब तो, मैं समझता हूँ, दूसरी दुनिया में ही मुलाक़ात होगी। एक बात और...हालाँकि मैं आपके साथ बहुत घिनौने तरीक़े से पेश आया हूँ, क्योंकि...मेहरबानी करके, बताइए मुझे, जिस चीज़ पर मेरा हक़ है उसे मैं क्यों छोड़ दूँ ? आपकी खातिर ? मैंने अपनी 'स्वीकारोक्ति' उसके नाम समर्पित की है। (यह आपको नहीं मालूम था, क्यों ?) और काश आपको मालूम होता कि उसे पाकर उसकी प्रतिक्रिया क्या हुई थी ! हः-हः ! लेकिन उसके साथ मैं कभी घिनौने तरीक़े से पेश नहीं आया—मैंने उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है। बल्कि उसने मेरा अपमान किया है और मुझे धोखा दिया है।...लेकिन, मैं समझता हूँ, कि मैंने आपको भी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है। अगर मैंने वहाँ 'जूठन' की बात की भी थी और ऐसी ही दूसरी बातें कही थीं, तो अब मैं आपको उनकी मुलाक़ात का दिन, वक़्त और जगह बताए दे रहा हूँ, और मैं आपके सामने इस पूरे खेल पर से परदा हटाए दे रहा हूँ—ज़ाहिर है, उदारता की वजह से नहीं बल्कि चिढ़कर। अच्छा, मैं चलता हूँ, मैं उतना ही बातूनी हूँ जितना कि कोई हकला आदमी या तपेदिक़ का मरीज होता है। ध्यान रखिएगा, सारे ज़रूरी उपाय कर लीजिएगा, और सो भी जल्दी से जल्दी—मतलब यह कि अगर आप इंसान कहलाने लायक़ होना चाहते हैं। मुलाक़ात आज शाम को होगी—यह पक्की बात है !"

इप्पोलीत चलकर दरवाज़े तक गया, लेकिन प्रिंस ने उसे आवाज़ दी और वह दरवाज़े पर ठिठक गया।

"तो आपका कहना है कि अग्लाया इवानोव्ना खुद आज नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से मिलने जाएगी ?" उसने पूछा; उसके चेहरे और माथे पर लाल-लाल धब्बे उभर आए।

"मुझे पूरा विश्वास तो नहीं, लेकिन उम्मीद यही है," इप्पोलीत ने प्रिंस की ओर आधा मुड़कर जवाब दिया। "इसके अलावा और कुछ हो ही नहीं सकता। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना उसके यहाँ तो जाएगी नहीं, है न ? और प्यारे गान्या के यहाँ भी नहीं, जहाँ एक आदमी मौत के दरवाज़े पर पड़ा है। जनरल साहब भी क्या खूब आदमी हैं।"

"इसी एक वजह से तो यह नामुमकिन है !" प्रिंस ने चिल्लाकर कहा। "अगर वह चाहे भी

तो वह घर छोड़कर जा कैसे सकती है ? आपको उस घर के...कायदे-क़ानून नहीं मालूम हैं : वह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से मिलने जाने के लिए अपने घर से अकेली निकल नहीं सकती। यह बकवास है !"

"देखिए, प्रिंस, कोई खिड़की से नहीं फाँदता, लेकिन अगर घर में आग लगी हो तो अच्छे से अच्छा शरीफ़ आदमी और अच्छी से अच्छी महिला खिड़की से बाहर कूद पड़ेगी। अगर ज़रूरत पड़ ही जाए तो कोई चारा नहीं रह जाता, और हमारी यह शरीफ़ज़ादी नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से मिलने जाएगी। और क्या वे लोग उन्हें कहीं जाने नहीं देते, उन लड़कियों को ?"

"नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था।..."

"ख़ैर, अगर आपका मतलब यह नहीं था तब तो वह बस बरामदे से उतरकर चली जाएगी और फिर चलती ही जाएगी ! घर भी नहीं लौटेगी। कभी ऐसा भी होता है कि आदमी अपने सारे बन्धन तोड़ लेता है और घर वापस नहीं जाता : ज़िन्दगी सिर्फ़ लंच, डिनर और प्रिंस श. तक तो सीमित नहीं होती। मेरा ख़्याल है कि आप अग्लाया इवानोव्ना को ऐश-आराम की ज़िन्दगी बसर करनेवाली या कोई स्कूली लड़की समझते हैं। यह बात मैं उसे बता चुका हूँ और मेरा ख़्याल है कि मेरी इस बात से वह सहमत थी। सात-आठ बजे इन्तज़ार कीजिए।...अगर मैं आपकी जगह होता तो किसी को नज़र रखने के लिए वहाँ भेज देता ताकि जब वह बरामदे से उतरे तो उसी क्षण पकड़ ले। न हो तो कोल्या को भेज दीजिए; वह जासूसी करके बहुत खुश होगा, पक्के तौर पर—मेरा मतलब है आपकी तरफ़ से जासूसी करके, क्योंकि, देखिए, हर चीज़ सापेक्ष होती है... हः-हः !"

इप्पोलीत बाहर चला गया। प्रिंस को किसी से अपनी तरफ़ से जासूसी करने के लिए कहने की ज़रूरत नहीं थी, अगर उसमें ऐसा कर सकने की क्षमता होती तब भी नहीं। अग्लाया ने उसे घर पर ही रहने का जो आदेश दिया था उसकी वजह अब लगभग पूरी तरह समझ में आ गई थी : हो सकता है कि वह आकर उसे ले जाना चाहती हो। बल्कि कौन जाने, शायद वह न चाहती हो कि वह वहाँ पहुँच जाए, इसलिए उसने उससे घर पर रहने को कहा था।...ऐसा भी हो सकता था। उसका सिर चकरा रहा था; सारा कमरा घूम रहा था। उसने सोफ़े पर लेटकर आँखें बन्द कर लीं।

जो भी हो, आख़िरकार मामले का फ़ैसला हो जानेवाला था—अन्तिम रूप से। नहीं, प्रिंस अग्लाया को ऐश-आराम की ज़िन्दगी बसर करनेवाली या स्कूली लड़की नहीं समझता था : अब वह महसूस कर रहा था कि उसे बहुत समय से डर था, और इसी तरह की कोई बात होने का डर था। लेकिन वह उससे मिलना क्यों चाहती थी ? प्रिंस के सारे शरीर में सिहरन की लहर दौड़ रही थी; उसे फिर बुखार चढ़ आया था।

नहीं, वह उसे बच्ची नहीं समझता था। इधर कुछ समय से उसने उसे कई बार जिस ढंग से देखा था, उसकी वजह से और उसके कुछ शब्दों से वह सहम गया था। कभी-कभी उसे बरबस यह आभास होता था कि वह अपने ऊपर बहुत कड़ा संयम लागू कर रही है, अपने आपको काबू में रख रही है, और उसे याद आया कि इस काम से वह कितना भयभीत हो उठा था। यह सच है कि पिछले कुछ दिनों से वह इसके बारे में न सोचने की कोशिश करता रहा था, उसने अपने कष्टप्रद विचारों को दूर भगा दिया था, लेकिन आख़िर उधर उसकी आत्मा में क्या छिपा हुआ था ? यह सवाल उसे बहुत समय से परेशान करता रहा था, हालाँकि उसे उस आत्मा पर पूरा भरोसा था। और अब आज उस सबका निबटारा होनेवाला था और सब कुछ प्रकाश में लाया जानेवाला

था। कैसा भयानक विचार था ! और फिर—"वह औरत" ! उसे हमेशा ऐसा क्यों लगता था कि अन्तिम क्षण पर वह औरत आ पहुँचेगी और उसकी ज़िन्दगी को सड़े हुए धागे की तरह दो टुकड़ों में तोड़ देगी ? वह इस बात की क़सम खाने को तैयार था कि उसने हमेशा ऐसा महसूस किया था, हालाँकि उसकी हालत आधी सरसामी थी। इधर कुछ समय से उसने अगर उसे भुला देने की कोशिश की तो इसका एकमात्र कारण यह था कि वह उससे डरता था। तो ? उसे उस औरत से प्रेम था या वह उससे नफ़रत करता था ? उसने आज यह सवाल अपने आपसे एक बार भी नहीं पूछा था; जहाँ तक इस बात का सम्बन्ध था उसका अन्तःकरण बिलकुल साफ़ था : वह जानता था कि उसे किससे प्रेम था।...उन दोनों की मुलाक़ात से, या उस मुलाक़ात की विचित्रता या उसके कारण से, जिसका उसे पता नहीं था, या उसके परिणाम से, चाहे वह कुछ भी होता, उसे उतना डर नहीं लगता था—उसे डर लगता था खुद नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से। आगे चलकर, कुछ दिन बाद, उसे याद आया कि उन्माद-भरे कुछ घंटों के लगभग पूरे दौरान में उसे उसकी आँखें, उसकी नज़रें दिखाई देती रही थीं, और उसके शब्द सुनाई देते रहे थे—विचित्र शब्द, हालाँकि उन उन्माद-भरे और व्यथा-भरे कुछ घंटों के बीत जाने के बाद उसे बहुत कुछ याद भी नहीं रह गया था। मिसाल के लिए, उसे मुश्किल से ही याद था कि वेरा उसके लिए खाना लाई थी और उसने खाया था। उसे यह नहीं याद था कि खाने के बाद वह सोया था कि नहीं। उसे बस इतना मालूम था कि उस शाम वह हर चीज़ बिलकुल स्पष्ट रूप से उस क्षण से समझने लगा था जब अग्लाया ने अचानक बरामदे में क़दम रखा था और वह सोफ़े पर से उछलकर खड़ा हो गया था और उससे मिलने के लिए कमरे के बीच तक गया था : उस वक़्त सवा सात बजे थे। अग्लाया बिलकुल अकेली थी। उसने बहुत सादे कपड़े पहन रखे थे और ऐसा लगता था कि उसने कपड़े बहुत जल्दी में पहने थे; ऊपर से उसने एक हल्का-सा कोट पहन रखा था। उसका चेहरा पीला था, जैसा कि वह सबेरे था, और उसकी आँखों में तेज, सूखी चमक थी। प्रिंस ने इससे पहले उसकी आँखों में यह भाव कभी नहीं देखा था। वह बड़े ध्यान से उसे देखने लगी।

"आप बिलकुल तैयार हैं," उसने धीमी आवाज़ में और मानो शान्त भाव से कहा। "कपड़े पहने और हैट हाथ में लिए। इसका मतलब है कि आपको पहले से ख़बर कर दी गई है, और मैं जानती हूँ किसने—इप्पोलीत ने ?"

"हाँ, उसने मुझे बताया था," प्रिंस ने बुदबुदाकर कहा; उसके शरीर से मानो सारी जान निचुड़ गई थी।

"तो फिर, चलिए : आप जानते हैं कि आपको मुझे वहाँ तक पहुँचाना होगा। मैं समझती हूँ कि आप बाहर जाने लायक़ ताक़त तो महसूस करते होंगे, है न ?"

"हाँ, है तो, लेकिन...क्या यह मुमकिन है ?"

वह फ़ौरन रुक गया और उसके आगे एक शब्द भी न कह सका। उस पागल लड़की को रोकने की यह उसकी अकेली कोशिश थी, और उसके बाद तो वह बिलकुल उसके गुलाम की तरह उसके पीछे चल पड़ा। उसके विचार कितने ही उलझे हुए क्यों न रहे हों लेकिन इतना वह जानता था कि वह उसके बिना भी वहाँ जाएगी, इसलिए उसे हर हालत में उसके पीछे-पीछे जाना होगा। उसने उसके संकल्प की दृढ़ता का अनुमान लगाया; इस उद्दाम आवेग को रोक सकना उसके बस की बात नहीं थी। वे चुपचाप चलते रहे, रास्ते-भर एक-दूसरे से लगभग एक शब्द भी नहीं बोले। उसका ध्यान बस इस बात की ओर गया कि वह भी रास्ता अच्छी तरह जानती थी, और जब उसने थोड़ा-सा घूमकर जाना चाहा क्योंकि वहाँ रास्ता सुनसान था, और उसके सामने यह सुझाव रखा

तो उसने ध्यान लगाकर उसकी बात सुनी और झटके से बोली—"एक ही बात है !" जिस वक़्त वे दार्या अलेक्सेयेव्ना के घर के बिलकुल पास पहुँचे (जो एक बड़ा-सा पुराना लकड़ी का मकान था), उस समय एक बहुत बनी-ठनी महिला और एक नौजवान लड़की बरामदे से नीचे उतर रही थीं; दोनों हँसती और ज़ोर-ज़ोर से बातें करती हुई एक शानदार घोड़ागाड़ी में बैठ गईं, जो सीढ़ियों के नीचे ही उनकी राह देख रही थी, उन्होंने एक बार भी उन पर नज़र नहीं डाली और इस तरह चली गईं जैसे उन्हें देखा ही न हो। घोड़ागाड़ी के जाते ही घर का दरवाज़ा दुबारा खुला और रोगोझिन ने, जो उन लोगों का इन्तज़ार कर रहा था, अग्लाया और प्रिंस को अन्दर ले जाकर दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"घर में हम चार के अलावा कोई नहीं है," उसने ऊँचे स्वर में सूचना दी और प्रिंस की ओर विचित्र ढंग से देखा।

वे जिस पहले कमरे में गए वहीं नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह बहुत सादे और सिर से पाँव तक काले कपड़े पहने हुए थी। वह उन लोगों का स्वागत करने के लिए उठी, लेकिन न मुस्कराई और न ही उसने प्रिंस की ओर हाथ ही बढ़ाया।

उसकी तेज और बेचैन नज़रें अधीरता से अग्लाया पर जमी हुई थीं। दोनों एक-दूसरे से दूर बैठ गईं, अग्लाया कमरे के कोने में सोफ़े पर और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना खिड़की के पास। प्रिंस और रोगोझिन नहीं बैठे, और उनसे किसी ने बैठने को कहा भी नहीं। प्रिंस ने बौखलाकर और मानो पीड़ा से रोगोझिन को देखा, लेकिन रोगोझिन बस पहले की तरह मुस्कराता रहा। ख़ामोशी कुछ क्षण और रही।

आख़िरकार नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के चेहरे पर एक खतरनाक भाव आकर गुजर गया; दृढ़ता से अग्लाया पर जमी हुई उसकी आँखों में हठ, कठोरता और लगभग घृणा का भाव आने लगा। लगता था कि अग्लाया अटपटा महसूस कर रही थी, लेकिन वह भय का कोई संकेत नहीं दे रही थी। कमरे में पहुँचकर उसने एक नज़र अपनी प्रतिद्वन्द्वी पर डाली और फिर कुछ समय तक वह मानो गहरे विचारों में डूबी हुई आँखें झुकाकर बैठी रही। एक-दो बार मानो संयोगवश उसने कमरे पर चारों ओर नज़र डाली; उसके चेहरे पर अरुचि का स्पष्ट भाव था मानो वह डर रही हो कि कहीं उसे इस जगह की छूत न लग जाए। उसने यन्त्रवत् अपने कपड़े ठीक किए, और एक बार बेचैनी से वह अपनी जगह बदलकर सोफ़े के कोने में चली गई। शायद उसे स्वयं भी अपने गतिक्रमों का बोध नहीं था; लेकिन अनजानेपन की वजह से वे और भी अपमानजनक लग रहे थे। आख़िरकार उसने दृढ़ता से सीधे नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की आँखों में आँखें डालकर देखा और फ़ौरन ही वह सब कुछ भाँप लिया जो उसकी प्रतिद्वन्द्वी की कटुता-भरी नज़रों में सुलग रहा था। औरत ने औरत को समझा; अग्लाया काँप उठी।

"ज़ाहिर है, यह तो आप जानती ही होंगी कि मैंने आपको क्यों बुलाया था," आख़िरकार अग्लाया ने कहा, लेकिन बहुत ही क्षीण स्वर में, और इस छोटे-से वाक्य के बीच में वह एक-दो बार रुकी भी।

"जी नहीं, मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने बड़ी रुखाई से दो-टूक जवाब दिया।

अग्लाया लाल हो गई। शायद उसे यह बात अचानक बहुत विचित्र और अनहोनी लगी कि वह वहाँ उस औरत के पास, "उस औरत" के घर में बैठी थी, और बड़ी उत्सुकता से उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रही थी। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की आवाज़ के पहले स्वर सुनते ही उसके शरीर

में झफ़रझुरी-सी दौड़ गई। ज़ाहिर है, "उस औरत" ने यह सब कुछ बहुत अच्छी तरह देखा।

"आप सब कुछ समझती हैं," अग्लाया ने उदास भाव से फ़र्श पर नज़रें गड़ाए लगभग कानाफूसी के स्वर में कहा, "लेकिन...लेकिन आप जान-बूझकर बन रही हैं कि जैसे आपको कुछ भी मालूम नहीं।"

"मैं भला ऐसा क्यों करने लगी ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने खीसें निपोड़कर कहा।

"आप मेरी हालत का फ़ायदा उठाना चाहती हैं...मेरा मतलब है कि मैं आपके घर में हूँ," अग्लाया बेतुकेपन से और अटपटे भाव से बोली।

"अपनी इस हालत के लिए आप खुद जिम्मेदार हैं, मैं तो नहीं !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना भड़क उठी। "मैंने आपको यहाँ बुलाया तो था नहीं। आप ही ने खुद मुझे बुलाया और मुझे तो अब तक नहीं मालूम है कि किसलिए।"

अग्लाया ने बड़े गर्व से अपना सिर उठाया।

"जबान सम्भालकर बात कीजिए; मैं आपसे आपके इस हथियार से लड़ने नहीं आई हूँ।..."

"अच्छा ! तो आप मुझसे 'लड़ने' आई हैं ? देखिए, मैं समझती थी कि आप इससे ज़्यादा...समझदार होंगी।"

दोनों अब अपने द्वेष को छिपाए बिना एक-दूसरे को देख रही थीं। उनमें से एक वह औरत थी जो अभी हाल ही में दूसरी को इतने पत्र लिखती रही थी। और पहली ही मुलाक़ात से और शब्दों के पहले ही आदान-प्रदान से यह सब कुछ ग़ायब हो गया था। तो ? इस समय कमरे में एक भी आदमी इसे विचित्र समझता हुआ नहीं लग रहा था। प्रिंस जो अभी कल तक इस पर विश्वास नहीं कर सकता था कि वह सपने में भी ऐसा देख सकता है, अब इस तरह खड़ा सुन और देख रहा था जैसे उसने बहुत पहले ही ऐसा होने की कल्पना कर रखी हो। सबसे कल्पनातीत स्वप्न अचानक अत्यन्त सुस्पष्ट और सुनिश्चित रूपरेखावाली वास्तविकता में बदल गया था। उस क्षण इनमें से एक औरत दूसरी से इतनी नफ़रत कर रही थी और उसे यह बात बता देने के लिए भी इतनी बेचैन थी (शायद वह आई ही इसलिए थी, जैसा कि रोगोझिन ने अगले दिन कहा), कि दूसरी अपने अस्वस्थ मन और रुग्ण आत्मा की वजह से कितनी ही कल्पनातीत क्यों न रही हो, फिर भी वह अपनी प्रतिद्वन्द्वी के शुद्धतः औरतोंवाले द्वेषपूर्ण तिरस्कार को बर्दाश्त नहीं कर सकती थी, उसके पूर्व-निर्धारित मत कुछ ही रहे हों। प्रिंस को यक़ीन था कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना अपने पत्रों की चर्चा स्वयं नहीं करेगी; उसकी आग बरसाती आँखों में उसे साफ़ दिखाई दे रहा था कि अब उसे उन पत्रों की कितनी क़ीमत चुकानी पड़ रही थी; और वह इस वक़्त अपनी आधी ज़िन्दगी भी इसके लिए देने को तैयार हो जाता कि अग्लाया भी इस वक़्त उनकी चर्चा न करे।

लेकिन सहसा ऐसा लगा कि अग्लाया ने अपने आपको सम्भाल लिया और अपना सन्तुलन ठीक कर लिया।

"आपने मुझे ग़लत समझा," वह बोली। "मैं...मैं आपसे...झगड़ा करने नहीं आई हूँ, हालाँकि मैं आपको पसन्द नहीं करती। मैं...मैं आपसे उस तरह बातें करने आई हूँ जैसे...जैसे एक इंसान दूसरे इंसान से करता है। जब मैंने आपको बुलाया था उसी वक़्त मैंने फ़ैसला कर लिया था कि मैं आपसे क्या कहूँगी, और अब भी मैं अपने फैसले से हटनेवाली नहीं हूँ, चाहे आप मेरी बात बिलकुल ही न समझें। यह आपके लिए और भी बुरा होगा, मेरे लिए नहीं। आपने जो कुछ मुझे लिखा है उसका मैं जवाब देना चाहती थी, और आपसे मिलकर जवाब देना चाहती थी, क्योंकि

यह तरीक़ा मुझे ज़्यादा सुभीते का लगता था। मेहरबानी करके अपने तमाम खतों का मेरा जवाब सुन लीजिए—प्रिंस लेव निकोलायेविच से परिचय होने के पहले ही दिन और बाद में यह सुनकर कि आपके यहाँ पार्टी में क्या हुआ था, मुझे इन पर बहुत तरस आया। मुझे इन पर तरस इसलिए आया कि यह इतने खुले दिल के आदमी हैं और अपने भोलपेन में इन्होंने सोचा था कि यह... ऐसे...चाल-चलन की औरत के साथ...खुश रह सकेंगे। इनके बारे में मुझे जो डर था वही हुआ—यह तो मुमकिन नहीं था कि आपको इनसे मुहब्बत हो, आपने इन्हें सख़्त तकलीफ़ें पहुँचाईं और बाद में दामन झिटककर अलग हो गईं। आपको इनसे मुहब्बत इसलिए हो ही नहीं सकती थी कि आप बहुत गर्वीली हैं...जी नहीं, गर्वीली नहीं, मैंने ग़लती की, बल्कि इसलिए कि आप घमण्डी हैं...नहीं, यह भी नहीं—इसलिए कि आप अहंकारी हैं पागलपन की हद तक, और मेरे नाम आपके खतों से यह बात साबित हो जाती है। इन जैसे सीधे सादे आदमी से आपको मुहब्बत हो ही नहीं सकती थी, और सम्भव है कि दिल में आप इनसे नफ़रत भी करती थीं और इन पर हँसती भी थीं। आप सिर्फ़ जिस चीज़ से मुहब्बत कर सकती हैं वह है आपकी बेइज़्ज़ती और लगातार बना रहनेवाला यह ख़्याल कि आपकी बेइज़्ज़ती की गई है और आपको ज़लील किया गया है। अगर आपकी बेइज़्ज़ती इससे कम हुई होती, या बिलकुल होती ही नहीं, तो आप इससे भी ज़्यादा दुःखी रहतीं।..." (अग्लाया ने मानो लिखकर रखे ये शब्द कहे, जो उसके होंठों से बड़ी जल्दी-जल्दी निकल रहे थे और जिन्हें उसने बहुत पहले से सोचकर तैयार कर रखा था—उन्हें उसने उस वक़्त सोचा था जब उसे इस मौजूदा मुलाक़ात का सपने में भी गुमान नहीं था; वह जहर-बुझी आँखों से नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के चेहरे पर उनका प्रभाव देखती रही, जो उत्तेजना के कारण विकृत हो गया था।) "आपको याद होगा," यह कहती रही, "इन्होंने उस वक़्त मुझे एक खत लिखा था। इन्होंने मुझे बताया कि आपको उस खत के बारे में मालूम था और आपने उसे पढ़ा भी था, है न ? उस खत से मैं सब कुछ समझ गई, और सही सही समझ गई। हाल में इन्होंने मुझसे खुद हर बात की पुष्टि की है—मेरा मतलब है, उन तमाम बातों की जो मैं आपसे इस वक़्त कह रही हूँ, एक-एक शब्द की। उस खत के बाद मैं राह देखती रही। मैं भाँप गई थी कि आप यहाँ ज़रूर आएँगी, क्योंकि यह असम्भव है कि आप पीटर्सबर्ग के बिना रह सकें—आप अभी तक इतनी जवान और इतनी खूबसूरत हैं कि सूबाई शहरों के लायक़ नहीं हैं।...लेकिन ये शब्द भी मेरे नहीं हैं," उसने बेहद झेंपते हुए कहा, और उस क्षण से उसका भाषण समाप्त होने तक उसके गालों से लाली कभी दूर नहीं हुई। "जब प्रिंस से दुबारा मेरी मुलाक़ात हुई तो इनके लिए मुझे बहुत तकलीफ़ हुई और मेरा दिल बहुत दुखा। हँसिए नहीं। अगर आप हँसेंगी तो आप इस बात को समझने लायक़ ही नहीं हैं।..."

"आप देख रही हैं कि मैं हँस नहीं रही हूँ," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने उदास होकर और कठोर भाव से कहा।

"लेकिन मुझे इसकी कोई परवाह नहीं; आप जी भरकर हँसिए। जब मैंने खुद इनसे पूछना शुरू किया तो इन्होंने बताया कि इन्होंने न जाने क़ब से आपसे प्यार करना छोड़ दिया है, कि आपकी याद से भी इन्हें तकलीफ़ होती है, लेकिन यह भी कहा कि इन्हें आप पर तरस आता है और यह कि जब भी यह आपके बारे में सोचते हैं तो इन्हें ऐसा लगता है कि इनका दिल 'हमेशा के लिए बेध दिया गया है'। मैं आपको यह भी बता दूँ कि अपनी सारी ज़िन्दगी में मैंने कोई ऐसा आदमी नहीं देखा है जो अपनी उदात्त सादगी में और दूसरों पर बेहद भरोसा कर लेने के मामले में इनका मुक़ाबला कर सके। इन्होंने जो कुछ मुझे बताया उसके बाद मैं समझ गई कि इन्हें तो

जो भी चाहे धोखा दे सकता है, और यह कि जो भी इन्हें धोखा देगा उसे बाद में यह माफ़ कर देंगे, और इसीलिए मुझे इनसे प्यार हो गया।..."

अग्लाया एक क्षण के लिए रुकी, जैसे स्तम्भित हो गई हो, जैसे उसे स्वयं विश्वास न हो रहा हो कि वह ऐसे शब्द कह सकती थी; लेकिन लगभग उसी क्षण उसकी आँखें अपार गर्व से चमक उठीं; लग रहा था कि उसे अब कोई परवाह नहीं रह गई थी कि अभी जो स्वीकारोक्ति उसके मुँह से निकल गई थी उस पर "वह औरत" ठहाका मारकर हँस भी पड़ती।

"मैंने आपको सब कुछ बता दिया है और, मैं समझती हूँ, अब आपकी समझ में आ गया होगा कि मैं आपसे क्या चाहती हूँ।"

"शायद आ तो गया है, लेकिन आप खुद बता दीजिए," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने धीमे से जवाब दिया।

अग्लाया का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

"मैं आपसे यह मालूम करना चाहती थी," उसने दृढ़ स्वर में और धीरे-धीरे कहा, "मेरे लिए इनकी भावनाओं के बीच में आपको दखल देने का क्या अधिकार है ? आपने किस अधिकार से मुझे वे खत लिखे थे ? किस अधिकार से आप लगातार इनको और मुझे बताती रहती हैं कि आपको इनसे प्यार है, जबकि आप खुद इन्हें छोड़ चुकी हैं और इनके पास से इतने ठेस लगानेवाले और...और शर्मनाक तरीक़े से भाग गई थीं ?"

"मैंने इनसे या आपसे कभी नहीं कहा कि मुझे इनसे प्यार है," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने बड़ी कोशिश करके कहा, "और...और आपका यह कहना बिलकुल ठीक है...मैं इनके पास से भाग आई थी," उसने लगभग सुनाई न देनेवाले स्वर में इतना और जोड़ दिया।

"क्या मतलब आपका कि आपने इनसे या मुझसे कभी नहीं कहा ?" अग्लाया ने चिल्लाकर कहा। "और आपके वे खत क्या थे ? आपसे किसने कहा था कि आप हम दोनों का रिश्ता तै कराएँ और मुझे इनसे शादी करने के लिए राज़ी करें ? क्या यह हम लोगों को बताना नहीं था ? आप अपने आपको हम लोगों पर थोप क्यों रही हैं ? शुरू में तो मैंने सोचा था कि बात इसकी उल्टी ही है, आप हम लोगों के मामले में टाँग अड़ाकर मेरे दिल में इनके लिए नफ़रत और अरुचि पैदा करना चाहती थीं ताकि मैं इन्हें छोड़ दूँ, और बाद में जाकर मेरी समझ में आया कि आपकी चाल क्या है—आपने बस यह सोचा था कि आप वह सब नखरे और ढोंग करके बहुत बड़ी क़ुर्बानी कर रही हैं।...आप इनसे मुहब्बत कर ही कैसे सकती थीं जबकि आपको अपने अहंकार से इतना प्यार है ? मुझे वे हास्यास्पद पत्र लिखने के बजाय आप चुपचाप यहाँ से चली क्यों नहीं गईं ? आप अब उस उदार आदमी से शादी क्यों नहीं कर लेतीं जो आपको इतना चाहता है और जिसने आपको इतनी इज़्ज़त बख़्शी है कि आपसे शादी करने का पैगाम दिया है ? यह बिलकुल साफ़ है—अगर आप रोगोझिन से शादी कर लें तो आपको कोई दुःख ही नहीं रह जाएगा, है न ? बल्कि यह तो आपके लिए बहुत बड़ी इज़्ज़त की बात होगी ! रादोम्स्की आपके बारे में कह रहे थे कि आपने कविताएँ ज़रूरत से ज़्यादा पढ़ी हैं और यह कि 'आप ज़रूरत से ज़्यादा पढ़ी-लिखी हैं, आपकी...हैसियत को देखते हुए', कि आप किताबों की शौक़ीन औरत हैं, और यह कि आपने अपनी ज़िन्दगी में कभी रत्ती-भर भी कोई काम नहीं किया है। इसके साथ आपका अहंकार और जोड़ दिया जाए तो आपकी सारी मंशाएँ साफ़ हों।"

"और आपने अपनी ज़िन्दगी में कभी कोई काम किया है ?"

वे इस अप्रत्याशित मंज़िल पर बड़ी तेजी से, बेहद भोंडेपन से पहुँच गई थीं, अप्रत्याशित

इसलिए कि पाव्लोव्स्क आते हुए नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के मन में कुछ सपने थे, हालाँकि, ज़ाहिर है, उसे भले से ज़्यादा उम्मीद बुरे की थी। पर अग्लाया फ़ौरन बिलकुल अपनी भावनाओं के प्रवाह में बह गई थी, मानो वह खड़ी चट्टान की कगर से गिर रही हो और बदला लेने की भयानक खुशी की वजह से वह अपने आपको रोक न पा रही हो। अग्लाया को ऐसी हालत में देखकर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को अजीब लग रहा था; वह उसे देख रही थी और उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था, और पहले क्षण तो वह बिलकुल सकपका गई। चाहे वह ऐसी औरत रही हो जिसने बहुत ज़्यादा कविता पढ़ी थी, जैसा कि रादोम्स्की का ख़्याल था, या वह सिर्फ़ पागल थी, जैसा कि प्रिंस को पक्का विश्वास था, यह औरत—कभी-कभी उसके तौर-तरीक़े निर्लज्ज, भोंडे और रूखे होने के बावजूद—बहरहाल, उससे कहीं ज़्यादा लजीली, कोमल और विश्वास करनेवाली थी जितना कि उसे समझा जा सकता था। यह सच है कि उसमें बहुत कुछ किताबी, रोमांटिक, अन्तर्निहित और कल्पनातीत था, लेकिन इसके साथ ही उसमें बहुत कुछ ऐसा भी था जो सशक्त और गूढ़ था।...प्रिंस इस बात को समझता था; उसके चेहरे पर अत्यधिक व्यथा छा गई। अग्लाया ने इस बात को देखा और घृणा में काँप उठी।

"आपंको मुझसे इस तरह बात करने की जुरआत कैसे हुई," उसने नस्तास्या फिलीप्पोव्ना की बात के जवाब में अकथनीय दम्भ के साथ कहा।

"शायद आपने मेरी बात को ठीक से सुना नहीं," नस्तास्या फिलीप्पोव्ना ने आश्चर्य से कहा। "मैंने आपसे किस तरह बात की ?"

"अगर आप ईमानदार औरत बनना चाहती थीं तो आपने अपने यार तोत्स्की को चुपचाप छोड़ क्यों नहीं दिया...किसी नाटक के बिना ?" अग्लाया अचानक बिना किसी प्रसंग बोली।

"आपको मेरी हालत का क्या पता कि आप मेरा फ़ैसला करना अपना हक़ समझती हैं ?" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने चौंककर पूछा और उसका रंग बेहद पीला पड़ गया।

"मैं इतना जानती हूँ कि आप कोई काम करने नहीं गईं, बल्कि धन-कुबेर रोगोझिन के साथ इसलिए चली गईं कि यह जता सकें कि आप थीं तो फ़रिश्ता लेकिन आपका पतन हो गया था। मुझे इस पर कोई ताज्जुब नहीं है कि तोत्स्की ने पतित फ़रिश्ते की वजह से गोली मार लेने की कोशिश की थी।"

"बस, छोड़िए इस बात को !" नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने चिढ़कर और इस तरह कहा मानो उसे बहुत गहरी ठेस पहुँची हो। "आप मुझे लगभग उतना ही समझ पाई हैं जितना...जितना कि दार्या अलेक्सेयेव्ना की नौकरानी जिसने अभी हाल ही में अपने मंगेतर पर मुक़द्दमा दायर किया। वह आपको ज़्यादा अच्छी तरह समझ सकती थी।..."

"मैं उम्मीद करती हूँ कि वह एक ईमानदार लड़की होगी जो अपनी रोजी कमाने के लिए काम करती है। नौकरानी की तरफ़ आपका रवैया इतने तिरस्कार का क्यों है ?"

"मेरा तिरस्कार का रवैया काम के बारे में नहीं, बल्कि आपके बारे में है जब आप काम के बारे में चर्चा करती हैं।"

"अगर आप ईमानदार बनना चाहतीं तो कपड़े धोने का काम करने लगतीं।"

दोनों उठ खड़ी हुईं और पीले चेहरों से एक-दूसरे को देखती रहीं।

"अग्लाया, बस कीजिए !" प्रिंस अटपटा महसूस करके चिल्लाया। "यह मुनासिब नहीं है।" रोगोझिन अब मुस्करा नहीं रहा था, बल्कि होंठ भींचे और सीने पर हाथ बाँधे सुन रहा था।

"देखो तो इन्हें," नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने गुस्से से काँपते हुए कहा, "देखो तो इन रईसज़ादी

को ! और मैंने इन्हें फ़रिश्ता समझा था ! क्या आप मेरे पास अपनी गवर्नेस के बिना आई हैं, अग्लाया इवानोव्ना ? और क्या आप चाहती हैं...क्या आप चाहती हैं कि मैं आपको साफ़-साफ़ बता दूँ...किसी लाग-लपेट के बिना, कि आप मेरे यहाँ क्यों तशरीफ़ लाई ? आप डरती थीं...इसलिए आप आईं !"

"आपसे डरती थी ?" भोले और दम्भपूर्ण विस्मय से बेक़ाबू होकर कि इस औरत की इतनी हिम्मत कि उससे इस तरह बात करे, अग्लाया ने पूछा।

"ज़ाहिर है, मुझसे ! आप मुझसे डरती हैं, वरना आपने कभी आकर मुझसे मिलने का फ़ैसला न किया होता। जिस किसी से डरते हैं उससे नफ़रत नहीं करते। और ज़रा सोचिए कि मैं आपकी इज़्ज़त करती थी अभी इस क्षण से पहले भी ! क्या मैं आपको यह भी बता दूँ कि आप मुझसे क्यों डरती हैं और अब आपका मुख्य उद्देश्य क्या है ? आप इस बात का खुद पक्का यक़ीन कर लेना चाहती थीं कि यह मुझे आपसे ज़्यादा प्यार करते हैं कि नहीं, क्योंकि आपके दिल में बेहद ईर्ष्या है..."

"यह मुझे बता चुके हैं कि इन्हें आपसे नफ़रत है।..." अग्लाया बड़ी मुश्किल से बस बुदबुदाकर इतना कह पाई।

"शायद, शायद, मैं इनके लायक़ ही नहीं हूँ, लेकिन बस इतनी बात है कि...कि मैं समझती हूँ कि आप झूठ बोल रही हैं ! यह मुझसे नफ़रत नहीं कर सकते, और इन्होंने ऐसी बात कभी नहीं कही होगी ! हालाँकि...आपकी हालत को देखते हुए...मैं आपको माफ़ कर देने को बिलकुल तैयार हूँ; लेकिन मैं आपको इससे बेहतर समझती थी। मैं सोचती थी कि आप ज़्यादा समझदार होंगी और ज़्यादा खूबसूरत भी—सचमुच, मैं ऐसा सोचती थी !...ख़ैर, अपने खजाने को ले जाइए...वह रहे यह...आपको नज़रें जमाए देख रहे हैं...बिलकुल हक्का-बक्का-से रह गए हैं, ले जाइए इन्हें, लेकिन एक शर्त पर—यहाँ से फ़ौरन दफा हो जाइए ! इसी दम !"

वह आराम-कुर्सी पर धँसकर बैठ गई और फूट-फूटकर रोने लगी। लेकिन अचानक उसकी आँखों में किसी नई चीज़ की चमक दिखाई दी; उसने नज़रें जमाकर बहुत ग़ौर से अग्लाया को देखा और अपनी जगह से उठ खड़ी हुई।

"लेकिन चाहो तो मैं इसी वक़्त...हु-क्म दूँ—सुन रही हो तुम ?—बस हुक़्म दूँ इन्हें और यह आपको छोड़ देंगे...आपको फ़ौरन छोड़ देंगे और हमेशा के लिए मेरे साथ रहेंगे और मुझसे शादी कर लेंगे, और तुम्हें अकेले उल्टे पाँव घर वापस जाना पड़ेगा। क्या तुम चाहती हो, चाहती हो ?" वह पागल की तरह चिल्लाई, शायद उसे खुद यक़ीन नहीं आ रहा था कि वह ऐसे शब्द बोल भी सकती है।

अग्लाया डरकर दरवाज़े की ओर भागी लेकिन चौखट पर पहुँचते ही ठिठककर खड़ी हो गई, जैसे वहीं गड़कर रह गई हो, और सुनने लगी।

"चाहो तो मैं रोगोझिन को निकाल दूँ ! तुम समझती थी कि मैंने तुम्हें खुश करने के लिए रोगोझिन से शादी की थी, है न ? ख़ैर, मैं अभी, तुम्हारे सामने, पुकारकर कहूँगी, 'रोगोझिन जाओ यहाँ से !' और प्रिंस से कहूँगी, 'याद है अपना वादा ?' हे भगवान, मैंने इन लोगों के सामने अपने आपको इतना ज़लील क्यों किया है। प्रिंस, क्या तुमने खुद मुझसे नहीं कहा था कि तुम मुझे कभी नहीं छोड़ोगे, कि मुझे चाहे जो कुछ हो जाए तुम हमेशा मेरे साथ रहोगे, कि तुम्हें मुझसे प्यार है, कि तुमने मुझे सब कुछ माफ़ कर दिया है और यह कि तुम मेरी इज़्...इज़्...हाँ, तुमने यह भी कहा था ! और तुम्हें आज़ाद कर देने के लिए ही मैं तुम्हारे पास से भाग आई थी, लेकिन अब मैं ऐसा

नहीं चाहती ! इसने मेरे साथ ऐसा सलूक क्यों किया कि मैं जैसे कोई बदचलन औरत हूँ ? क्या मैं बदचलन औरत हूँ ? रोगोझिन से पूछो—यह तुम्हें बताएगा ! क्या तुम इस वक़्त जबकि इसने मेरे ऊपर इतना कीचड़ उछाला है, और सो भी तुम्हारे सामने...क्या तुम भी मुझसे मुँह फेर लोगे, और इसकी बाँहों में बाँहें डालकर चले जाओगे ? लानत है तुम पर, अगर ऐसा है तो लानत है तुम पर, क्योंकि तुम ही एक ऐसे थे जिस पर मुझे पूरा भरोसा था। निकल जाओ, रोगोझिन, यहाँ तुम्हारी ज़रूरत नहीं !" वह बिलकुल ख़ब्तुलहवासी की हालत में शब्द उगल-उगलकर चिल्ला रही थी; उसका चेहरा विकृत हो गया था और होंठ सूख गए थे; स्पष्टतः उसे अपनी इस लफ़्फ़ाजी के एक शब्द पर भी विश्वास नहीं था, लेकिन इसके साथ ही वह इस सेकंड को लम्बा भी खींचना चाहती थी और इस प्रकार अपने आपको धोखे में रखना चाहती थी। उसका विस्फोट इतना उग्र था कि वह उसके प्राण तक ले सकता था—कम से कम प्रिंस को ऐसा ही लगा। "यह रहा—देखो !" उसने आख़िरकार प्रिंस की ओर इशारा करके अग्लाया से चिल्लाकर कहा। "अगर यह इस वक़्त मेरे पास न आए, तुम्हें छोड़कर मुझे अपना न ले, तब तुम इसे ले जा सकती हो। मैं तुम्हें ले जाने दूँगी इसे। मुझे इसकी ज़रूरत नहीं !"

वह और अग्लाया दोनों निश्चल खड़ी रहीं, मानो प्रिंस के फैसले की राह देख रही हों, और दोनों उसकी ओर पागलों की तरह देख रही थीं। लेकिन प्रिंस ने शायद इस चुनौती के पूरे ज़ोर को समझा ही नहीं; सचमुच, उसने बिलकुल नहीं समझा। उसने अपने सामने केवल वह विक्षिप्त, उन्माद-भरा चेहरा देखा, जिसने उसके "दिल को हमेशा के लिए बेध दिया," जैसा कि उसने एक बार अग्लाया से कहा था। अब वह और ज़्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकता था; वह विनय और निन्दा के भाव से नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की ओर संकेत करके अग्लाया से बोला—"आपने यह किया कैसे ? कितनी...दुःखी है यह !"

लेकिन उसे बस इतना ही कहने का समय मिल पाया, क्योंकि अग्लाया की भयानक नज़रें देखकर वह अवाक् रह गया। उन नज़रों में इतनी पीड़ा थी और साथ ही इतनी नफ़रत भी थी कि घोर निराशा से अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर वह चीख़ा और उसकी ओर लपका। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी ! अग्लाया उसकी झिझक को एक क्षण भी सहन न कर सकी; उसने दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँप लिया और "हे भगवान !" चिल्लाकर झपटती हुई कमरे के बाहर चली गई; उसके पीछे-पीछे रोगोझिन उसके लिए सामनेवाले दरवाज़े की कुंडी खोलने भागा।

प्रिंस भी लपका, लेकिन चौखट पर ही दो हाथों ने उसे कसकर पकड़ लिया। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना का विक्षिप्त, विकृत चेहरा उसे घूर रहा था और उसके होंठ, जो नीले पड़ गए थे, हिल रहे थे और पूछ रहे थे—"उसके पीछे ? उसके पीछे ?"

वह बेहोश होकर प्रिंस की बाँहों में गिर पड़ी। प्रिंस उसे उठाकर कमरे में ले गया और उसे आराम-कुर्सी पर लिटाकर उसके सिरहाने खड़ा हो गया; उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। मेज़ पर पानी का गिलास रखा था। रोगोझिन ने कमरे में वापस आकर गिलास झपटकर उठा लिया और उसके मुँह पर थोड़ा-सा पानी छिड़का। उसने अपनी आँखें खोल दीं और एक मिनट तक उसकी समझ में न आया कि हुआ क्या था। लेकिन अचानक उसने नज़र घुमाकर देखा, चौंक पड़ी और झपटकर प्रिंस के पास चली गई।

"मेरे ! मेरे !" वह चिल्लाकर बोली। "तो वह घमण्डी रईसज़ादी चली गई, है न ? हः-हः-हः !" वह उन्मादियों की तरह हँसी। "हः-हः-हः ! मैं इन्हें उस छोकरी को दे रही थी ! क्यों ? किसलिए ? पागल थी मैं ! बिलकुल पागल ! निकल जाओ, रोगोझिन ! हः-हः-हः !"

रोगोझिन ने ग़ौर से उन दोनों को देखा और एक शब्द भी कहे बिना अपना हैट उठाकर चला गया। दस मिनट बाद प्रिंस नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के पास बैठा हुआ नज़रें जमाए उसे तक रहा था और दोनों हाथों से उसके सिर और चेहरे को इस तरह सहला रहा था जैसे वह छोटी-सी बच्ची हो। जब वह हँसती थी तो वह भी हँस पड़ता था और जब वह रोती थी तो उसे भी रुलाई आ जाती थी। वह एक शब्द भी नहीं बोला, बस, बड़े ध्यान से उसकी झटकेदार, आवेशपूर्ण और उखड़ी-उखड़ी बातें सुनता रहा; उसकी समझ में मुश्किल से ही कुछ आ रहा था, लेकिन वह धीरे-धीरे मुस्करा रहा था; और जब उसे ख़्याल होता कि वह उदास होने या रोने लगी है, झिड़कने और शिकायत करने लगी है, वह फ़ौरन उसके सिर को फिर थपकने लगता और बड़ी नरमी से उसके गालों पर हाथ फेरकर उसे छोटे बच्चे की तरह बहलाने और तसल्ली देने लगता।

9

पिछले अध्याय में बयान की गई घटनाओं के बाद से एक पखवाड़ा बीत गया है, और हमारे पात्रों की स्थिति इतनी बदल गई है कि कुछ बातों की व्याख्या किए बिना हमारे लिए आगे बढ़ना बेहद मुश्किल है। लेकिन हम महसूस करते हैं कि हमें किन्हीं विशेष व्याख्याओं के बिना अपने आपको केवल तथ्यों के वर्णन तक सीमित रखना है, और इसकी वजह बहुत सीधी-सादी है—इसलिए कि कुछ मामलों में जो कुछ हुआ वह समझाना हमारे लिए ख़ुद मुश्किल है। हमारी ओर से इस तरह का बयान पाठक को बहुत विचित्र और अस्पष्ट लगेगा : जिस बात की हमें कोई स्पष्ट कल्पना न हो और जिसके बारे में हमारी कोई निजी राय न हो, उसका वर्णन हम कैसे कर सकते हैं ? अपने आपको और भी ग़लत स्थिति में न फँसा लेने के लिए बेहतर यह होगा कि हम ठोस उदाहरण लेकर यह समझाने की कोशिश करें कि हमारे दिमाग़ में क्या है, और शायद सहृदय पाठक हमारी कठिनाई समझ जाएँगे कि वह किस क़िस्म की है, ख़ासतौर पर इसलिए कि यह उदाहरण मूल कथानक से कोई भटकाव नहीं होगा, बल्कि, इसके विपरीत, हमारी कहानी के सीधे क्रम की ही कड़ी होगा।

दो सप्ताह बाद—मतलब यह कि जुलाई के शुरू में, और उन दो हफ़्तों के दौरान हमारे हीरो की कहानी और, ख़ासतौर पर, उस कहानी की पिछली घटना एक विचित्र, बेहद मज़ेदार, लगभग अविश्वसनीय और साथ ही अत्यन्त ज्वलन्त व्यंग-चित्र बन गई, जिसकी चर्चा धीरे-धीरे लेबेदेव के, प्तीत्सिन के, दार्या अलेक्सेयेव्ना के और येपांचिन-परिवार के बँगलों के आस-पास की सड़कों पर, या अधिक संक्षेप में कहा जाए तो सारे नगर में, बल्कि उसके पास-पड़ोस में भी फैल गई। लगभग सभी नगर-निवासी—वहाँ रहनेवाले, छुट्टी बिताने के लिए आए हुए लोग, संगीत आयोजनों के लिए दिन-भर की सैर पर आए हुए लोग—एक-दूसरे को हज़ार तरीक़ों से वही क़िस्सा सुनाने लगे—किस तरह एक प्रिंस एक जाने-माने और अत्यन्त सम्मानित परिवार में शर्मनाक काण्ड खड़ा करने के बाद और उस परिवार की एक लड़की को, जिसके साथ बाक़ायदा उसकी मँगनी हो चुकी थी, ठुकराकर एक बदनाम और बदचलन औरत की मुहब्बत में फँस गया, उसने अपने पुराने सम्बन्ध तोड़ लिए और किसी बात की परवाह न करते हुए, धमकियों की तरफ़ और सारे समाज के गुस्से की ओर कोई ध्यान न देकर वह अगले ही कुछ दिनों के अन्दर पाव्लोव्स्क में ही इस बदनाम औरत के साथ खुले-आम, सबकी नज़रों के सामने, सीना तानकर और सबकी आँखों में आँखें डालकर शादी करनेवाला था। इस किस्से में बहुत-सी शर्मनाक बातों का मिर्च-मसाला लगाकर इस तरह

सँवारा गया; उसमें इतने बहुत-से जाने-माने और नामी लोगों को लपेटा गया, और उसे इतने बहुत-से कल्पनातीत और रहस्यमय पेंच दिए गए, और, दूसरी ओर, उसे ऐसे अकाट्य और विश्वासप्रद तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया गया कि उसमें आम दिलचस्पी और उसके बारे में अफ़वाहें फैलाना बिलकुल क्षम्य था। इस घटना की सबसे सूक्ष्म और चातुर्यपूर्ण और, साथ ही, सबसे यथार्थ व्याख्या का काम उन इने-गिने गम्भीर किस्से फैलानेवालों के जिम्मे छोड़ दिया गया, जो उस कोटि के समझदार लोगों में से थे जिन्हें समाज के किसी भी वर्ग में हमेशा इस बात की जल्दी पड़ी रहती है कि हर घटना की व्याख्या दूसरों से कर दें, और जो इसे अपना पेशा और बहुधा अपने जीवन में एकमात्र सांत्वना समझते हैं। उनकी व्याख्या के अनुसार, किसी अच्छे घराने का एक नौजवान, एक प्रिंस, काफ़ी दौलतमन्द, पैदाइशी बेवक़ूफ़, जनवादी, जो आधुनिक शून्यवाद के पीछे पागल हो गया था (जिसका उद्घाटन लेखक तुर्गेनेव ने किया है), जो रूसी का शायद एक शब्द भी बोलना नहीं जानता था, जनरल येपांचिन की एक बेटी से प्रेम करने लगा और इस हद तक पहुँच गया कि उस घर में उसका स्वागत लड़की के मंगेतर के रूप में किया जाने लगा। लेकिन धर्मशास्त्र के उस फ़्रांसीसी छात्र की तरह जिसने, हाल ही में प्रकाशित एक ख़बर के अनुसार, जान-बूझकर पादरी बनाए जाने का संस्कार सम्पन्न करवाया था, घुटने टेकने, शपथ लेने इत्यादि की सारी रस्में पूरी कर दी थीं, और अगले ही दिन अपने बड़े पादरी को चिट्ठी लिखकर खुले-आम यह एलान कर दिया था कि चूँकि वह ईश्वर के प्रति विश्वास नहीं रखता था, इसलिए वह इसे बहुत शर्मनाक बात समझता था कि वह जनता को धोखा दे और उसके पैसों पर पले, और इसलिए उसने इस्तीफा दे दिया था और अपना खत उदारपन्थी अखबारों में छपवाने के लिए भिजवा दिया था—उसी नास्तिक की तरह प्रिंस ने भी ज़रूर अपने ढंग की कोई चाल चली थी। कहा जाता है कि उसने जान-बूझकर अपने मंगेतर के माँ-बाप के घर पर एक बड़ी पार्टी विशेष के अवसर की राह देखी थी, जिसमें उसे बहुत-से प्रमुख लोगों से मिलाया गया था, कि वहाँ वह सबके सामने ज़ोर-ज़ोर से अपने विचारों की घोषणा करे, प्रतिष्ठित राजनेताओं पर गालियों की बौछार करे, सबके सामने और निहायत बेहूदा तरीक़े से अपनी मँगनी तोड़ दे, और, उन नौकरों से हाथापाई करने के दौरान जो उसे घर के बाहर निकाल रहे थे, एक बहुत ही उम्दा चीनी गुलदान चकनाचूर कर दे। आधुनिक शिष्टाचार की एक विशिष्टता के रूप में इतना और जोड़ दिया गया था कि उस बेहूदा नौजवान को अपनी मंगेतर, जनरल साहब की बेटी से सचमुच प्यार था, लेकिन केवल शून्यवादी कारणों से और बाद में होनेवाले हंगामे की खातिर उसने उस लड़की से नाता तोड़ लिया था, ताकि वह सारी दुनिया के सामने एक पतिता से विवाह करने का सन्तोष प्राप्त कर सके और इस तरह साबित कर सके कि उसके सिद्धान्तों के अनुसार न पतिता स्त्रियाँ होती हैं न चरित्रवान स्त्रियाँ, बल्कि केवल आज़ाद स्त्रियाँ होती हैं; कि वह पुराने परम्परागत और ऊँचे समाज में व्याप्त विभाजन में विश्वास नहीं बल्कि केवल 'नारी समस्या' में विश्वास रखता था। और अन्तिम बात यह कि उसकी नज़रों में 'पतिता' स्त्री उस स्त्री से श्रेष्ठतर भी होती है जो पतिता नहीं होती। यह व्याख्या बहुत तर्कसंगत मालूम होती थी और ज़्यादातर लोगों ने उसे स्वीकार कर लिया, ख़ासतौर पर इसलिए कि आए दिन की घटनाओं से उसकी पुष्टि होती थी। यह सच है कि बहुत-सी बातें अब भी साफ़ नहीं हुई थीं—कहा जाता था कि उस बेचारी लड़की को अपने मंगतेर से, या, जैसा कि कुछ लोग कहना पसन्द करते थे, अपने 'फाँसनेवाले' से इतनी मुहब्बत थी कि जिस दिन उसने रिश्ता तोड़ा उसने अगले ही दिन वह उससे मिलने भागी-भागी उसकी रखैल के यहाँ तक गई जहाँ वह उस समय बैठा हुआ था; इसके विपरीत, कुछ दूसरे लोगों का कहना था कि वह जान-बूझकर उसे अपनी रखैल के घर धोखे से ले गया था,

शुद्धतः अपने शून्यवादी विचारों की वजह से—अर्थात्, उसे नीचा दिखाने और उसका अपमान करने के लिए। जो भी हो, इस घटना में दिलचस्पी प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी, ख़ासतौर पर इसलिए कि इसमें कोई भी शक नहीं मालूम होता था कि वह शर्मनाक शादी सचमुच होनेवाली थी।

अब, अगर हमसे इसकी व्याख्या करने को कहा जाता—इस मामले के शून्यवादी पहलू की नहीं, बल्कि सिर्फ़ इस बात की कि यह होनेवाली शादी प्रिंस की वास्तविक इच्छाओं को किस हद तक पूरा करती थी, इस क्षण विशेष में वे इच्छाएँ क्या थीं, इस समय हमारे हीरो की मनोदशा की व्याख्या किस रूप में की जा सकती थी, इत्यादि, तो हम मानते हैं कि हमसे जवाब देते न बन पड़ता। हमें बस इतना मालूम है कि शादी सचमुच तै हो गई थी और स्वयं प्रिंस ने लेबेदेव, केल्लेर और लेबेदेव के एक मित्र को, जिसका परिचय प्रिंस से इसी काम के लिए कराया गया था, सारी आवश्यक व्यवस्था की, धार्मिक भी और घरेलू भी, जिम्मेदारी सौंप दी थी; कि उसने कह दिया था कि पैसे की कोई कंजूसी न करें, कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना का आग्रह था कि शादी जल्दी से जल्दी हो जाए, कि केल्लेर स्वयं अपनी हार्दिक प्रार्थना पर प्रिंस का वर-सखा शिरोमणि बनाया जानेवाला था, बुर्दोव्स्की कन्यादान देनेवाला था, जिसने यह दायित्व बड़े उत्साह से स्वीकार कर लिया था, और यह कि शादी की तारीख़ जुलाई के शुरू की तै की गई थी। लेकिन इन बहुत ही सही-सही परिस्थितियों के अलावा हमें कुछ दूसरे तथ्य भी मालूम हैं, जिनकी वजह से हमारी अक़्ल बिलकुल गुम हो जाती है क्योंकि वे पहले बताई गई बातों का सीधे खण्डन करते हैं। हमें बहुत गहरा शक है कि लेबेदेव और दूसरे लोगों को सारा प्रबन्ध सम्भाल लेने का अधिकार सौंपकर प्रिंस उसी दिन भूल गया था कि उसने समारोह का व्यवस्थापक और वर-सखा शिरोमणि नियुक्त कर दिए थे, और उसे एक शादी से निबटना था, और उसका सारा इन्तजाम इतनी जल्दी दूसरों को सौंप देने का एकमात्र कारण यह था कि वह स्वयं इसके बारे में नहीं सोचना चाहता था और शायद उसके बारे में सब कुछ भुला देना भी। तो फिर वह खुद क्या सोच रहा था ? वह याद क्या रखना चाहता था ? आख़िर उसका उद्देश्य क्या था ? इस बात में भी कोई शक नहीं था कि प्रिंस के ऊपर किसी तरह की ज़ोर-जबर्दस्ती नहीं थी (मिसाल के लिए, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की तरफ़ से), कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना सचमुच चाहती थी कि शादी जल्दी से जल्दी हो जाए, और यह कि शादी की बात प्रिंस ने नहीं बल्कि उसने ही सोची थी; लेकिन प्रिंस ने बड़ी आसानी से, बल्कि सच तो यह है कि ख़ब्तुलहवासी में अपनी स्वीकृति दे दी थी, जैसे उससे किसी बहुत ही मामूली बात का अनुरोध किया गया हो। हमारे पास इस तरह के बहुत-से विचित्र तथ्य हैं, लेकिन, वे चाहे जितने भी प्रस्तुत किए जाएँ, उनसे गुत्थी ज़रा भी नहीं सुलझती, बल्कि हमारी राय में उनकी वजह से इस मामले की कोई भी व्याख्या और कठिन हो जाती है। लेकिन, आइए, हम एक और उदाहरण लें।

हमें यह बात पक्के तौर पर मालूम है कि उस पूरे पखवाड़े के दौरान प्रिंस पूरे-पूरे दिन और पूरी-पूरी शामें नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ बिताता था; कि वह उसे साथ लेकर टहलने और बैण्ड का संगीत सुनने जाती थी; कि वह रोज उसकी बग्घी में बैठकर सैर को जाता था; कि अगर वह घंटे-भर भी उसे न देखता तो वह उसके लिए परेशान होने लगता (जिसका मतलब प्रकट रूप में तो यही था कि वह सचमुच उससे प्यार करता था); कि वह जो कुछ भी कहती उसे वह अपने होंठों और शान्त और मृदु मुस्कान लिए घंटों सुनता रहता, और स्वयं शायद ही कभी कुछ बोलता। लेकिन हमें यह भी मालूम है कि उन्हीं दिनों वह अचानक कई बार, सच तो यह है कि बहुत ज़्यादा बार, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से इस बात को छिपाए बिना येपांचिन-परिवार के यहाँ भी जाता रहता था, जिसकी वजह से वह निराशा के मारे पागल हो उठती थी। हमें मालूम है कि जब तक

येपांचिन-परिवार पाव्लोव्स्क में रहा उन लोगों ने प्रिंस का कभी स्वागत नहीं किया और उसे अग्लाया से मिलने की इजाजत तक नहीं दी जाती थी, कि वह एक शब्द भी कहे बिना चला जाता था और अगले दिन फिर उनसे मिलने जाता था, मानो उनके कलवाले इन्कार को बिलकुल भूल ही गया हो, और, ज़ाहिर है, उससे फिर इन्कार कर दिया जाता। हमें यह भी मालूम है कि अग्लाया जब नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के घर से भाग आई थी उसके घंटे ही भर बाद, शायद घंटे-भर से भी कम हुआ हो, प्रिंस येपांचिन-परिवार के यहाँ पहुँच गया था, ज़ाहिर है उसे पूरा भरोसा था कि अग्लाया वहाँ होगी, और यह कि उसके येपांचिन-परिवार के यहाँ जा पहुँचने से घर के लोगों के बीच बड़ी गड़बड़ी और डर फैल गया था, क्योंकि अग्लाया तब तक वापस नहीं आई थी और उन लोगों को पहली बार उसी से मालूम हुआ था कि वह उसके साथ नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ गई थी। कहा जाता था कि लिज़ावेता प्रोकोफ्येव्ना, उसकी बेटियाँ और प्रिंस श. का बर्ताव उसके साथ बड़ी सख़्ती और दुश्मनी का रहा था और उसी मौक़े पर उन लोगों ने उसे कड़े से कड़े शब्दों में बता दिया था कि वे अब उसके साथ दोस्ती और जान-पहचान नहीं रखना चाहते, ख़ासतौर पर उस वक़्त जब वार्या अचानक वहाँ आ गई थी और उसने लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना को बताया था कि अग्लाया घंटे-भर से ज़्यादा से उसके घर पर भयानक मनोदशा में थी और ऐसा लगता था कि वह घर आना नहीं चाहती थी। लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना को सबसे गहरा धक्का इसी आख़िरी ख़बर से पहुँचा था और यह बात थी भी बिलकुल सच। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ से चले आने के बाद अग्लाया ऐसा महसूस कर रही थी कि वह घर जाएगी लेकिन अपने घरवालों के सामने नहीं जाएगी, और इसीलिए वह सीधे मिसेज़ ईवोल्गिना के यहाँ गई थी। जहाँ तक वार्या का सवाल था उसने मिसेज़ ईवोल्गिना को फ़ौरन इन सब बातों की सूचना देना अपना कर्तव्य समझा। माँ और उनकी बेटियाँ फ़ौरन भागी-भागी मिसेज़ ईवोल्गिना के यहाँ गईं और उनके पीछे-पीछे स्वयं परिवार के पिता, जो उसी समय घर पहुँचे थे, उधर ही चल पड़े। उनके यहाँ से निकाल दिए जाने और कठोर बातों की परवाह न करते हुए प्रिंस भी उन लोगों के पीछे हो लिया, लेकिन वार्या के स्पष्ट आदेश से उसे वहाँ भी अग्लाया से मिलने की इजाज़त नहीं दी गई। अन्त में हुआ यह कि जब अग्लाया ने देखा कि उसकी माँ और बहनें उसकी वजह से रो रही हैं और उसे ज़रा भी नहीं झिड़क रही हैं, वह झपटकर उनकी बाँहों में जा गिरी और फ़ौरन उनके साथ घर वापस चली गई। कहा जाता था, हालाँकि ये अफ़वाहें बिलकुल सही नहीं थीं, कि इस बार भी गान्या की क़िस्मत ने उसका साथ नहीं दिया। कि अपने को अग्लाया के साथ अकेला पाकर, जब वार्या तो झटपट मिसेज़ येपांचिना के यहाँ चली गई थी, उसने सोचा कि अपने प्रेम की घोषणा करने का यही उचित क्षण है और यह कि उसकी बात सुनते हुए अग्लाया, अपनी व्यथा और आँसुओं के बावजूद, अचानक ठहाका मारकर हँस पड़ी और सहसा उसने गान्या से एक विचित्र सवाल पूछा। उसने पूछा, यह साबित करने के लिए कि वह उससे कितना प्यार करता है क्या वह जलती हुई मोमबत्ती पर अपनी उँगली जलाने को तैयार होगा ? कहा जाता है कि उसके इस सुझाव पर गान्या हक्का-बक्का रह गया, उसकी समझ में न आया कि क्या कहे, और वह ऐसा भौचक्का दिखाई दे रहा था कि अग्लाया ठहाका मारकर उस पर हँस पड़ी थी, जैसे उसे दौरा पड़ गया हो, और उसके पास से भागकर ऊपर उसकी माँ के पास चली गई थी, जहाँ उसके माँ-बाप ने उसे पाया। यह कहानी इप्पोलीत के जरिए अगले दिन प्रिंस तक पहुँच गई। इप्पोलीत ने, जो अब बिस्तर पर पड़ा रहता था, प्रिंस को यह क़िस्सा सुनाने के लिए ख़ासतौर पर बुलवाया था। मालूम नहीं यह अफ़वाह इप्पोलीत के पास तक कैसे पहुँची थी; लेकिन जब प्रिंस ने मोमबत्ती और उँगलीवाली बात सुनी तो वह इतना हँसा कि

इप्पोलीत को भी ताज्जुब हुआ; इसके बाद वह अचानक काँपने लगा और उसके आँसू भर निकले।...आमतौर पर उन दिनों के दौरान वह बेहद बेचैनी और अस्पष्ट और पीड़ाजनक असाधारण बौखलाहट की हालत में रहता था। इप्पोलीत ने तो साफ़ एलान कर दिया कि उसकी राय में उसका दिमाग़ खराब हो गया था; लेकिन इस बात का पक्का यक़ीन कर सकना बिलकुल नामुमकिन था।

इन सब तथ्यों को प्रस्तुत करके और उनकी कोई व्याख्या करने से इन्कार करके हम किसी भी प्रकार अपने हीरो को पाठकों की दृष्टि में उचित ठहराना नहीं चाहते। इतना ही नहीं, उसने अपने मित्रों तक में जो क्रोध उत्पन्न किया था उसमें हिस्सा बँटाने को भी हम बिलकुल तैयार हैं। कुछ समय तक वेरा लेबेदेवा भी उससे नाराज़ थी; कोल्या भी उससे नाराज़ था; केल्लेर भी तब तक नाराज़ रहा तक उसे वर-सखा शिरोमणि नहीं बना दिया गया, लेबेदेव की तो बात ही क्या, जिसने प्रिंस के ख़िलाफ़ साज़िश करना भी शुरू कर दिया था, और वह भी गुस्से की वजह से जो बिलकुल असली था। लेकिन इसकी चर्चा बाद में करेंगे। आमतौर पर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँवाली घटना के छठे या सातवें दिन रादोम्स्की ने बिलकुल साफ़-साफ़ और मुँहफट तरीके से प्रिंस से जो कुछ बहुत ही सख़्त और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत ही गहरी बातें कहीं थीं उनसे हम पूरी तरह सहमत हैं। लगे हाथ हम यह भी बता दें कि न सिर्फ़ येपांचिन-परिवार के लोगों ने बल्कि उन तमाम लोगों ने भी जिनका येपांचिन-परिवार के साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी भी प्रकार का सम्बन्ध था, प्रिंस से हर प्रकार के सम्बन्ध तोड़ लेना अपने लिए आवश्यक समझा। मिसाल के लिए, प्रिंस श. ने तो प्रिंस से मुलाक़ात होने पर मुँह तक फेर लिया और उसके अभिवादन का जवाब तक नहीं दिया। लेकिन रादोम्स्की को इस बात का कोई डर नहीं था कि प्रिंस से मिलने जाकर वह अपने आपको किसी आपत्तिजनक स्थिति में फँसा लेगा, इस बात के बावजूद कि वह फिर येपांचिन-परिवार के यहाँ रोज जाने लगा था और वहाँ उसका स्वागत पहले से भी ज़्यादा हार्दिकता से किया जाने लगा था। येपांचिन-परिवार के सब लोगों के पाव्लोव्स्क से चले जाने के अगले दिन वह प्रिंस से मिलने आया। जिस वक़्त उसने वहाँ क़दम रखा उस वक़्त तक वह उड़ती हुई सारी अफ़वाहें सुन चुका था और सच तो यह है कि उनको फैलाने में शायद उसने खुद भी मदद दी हो। प्रिंस उससे मिलकर बहुत खुश हुआ, और फ़ौरन येपांचिन-परिवार के बारे में बातें करने लगा; इस तरह की निष्कपट और साफ़-साफ़ शुरुआत की बदौलत रादोम्स्की के बन्धन भी खुल गए, इसलिए ज़्यादा लाग-लपेट के बिना वह सीधे मतलब की बात पर आ गया।

प्रिंस नहीं जानता था कि येपांचिन-परिवार चला गया; यह सुनकर वह चौंक पड़ा और उसका चेहरा उतर गया; लेकिन एक ही मिनट बाद बहुत परेशानी महसूस करते हुए और चिन्तामग्न लगते हुए उसने अपना सिर हिलाया और स्वीकार किया कि "ऐसा तो होना ही था"; फिर उसने जल्दी से पूछा कि वे लोग कहाँ गए थे।

इसी बीच रादोम्स्की उसे बहुत ग़ौर से देख रहा था, और इन सब बातों पर—यानी, उसके ताबड़तोड़ सवालों पर, उनकी सादगी पर, खुद उसकी खिसियाहट पर, और, इसके साथ ही, उसकी विचित्र प्रकार की स्पष्टवादिता पर, उसकी बेचैनी और उसकी उद्विग्नता पर—इन सब बातों पर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर भी, प्रिंस जो भी जानकारी चाहता था वह उसने उसे बड़ी शिष्टता से और पूरे ब्योरे के साथ दी, क्योंकि बहुत कुछ ऐसा था जो प्रिंस को नहीं मालूम था, और रादोम्स्की पहला आदमी था जो उसके पास येपांचिन-परिवार के बारे में ख़बरें लेकर आया था। उसने इस बात की पुष्टि की कि अग्लाया सचमुच बीमार थी, कि उसे बहुत तेज बुखार था और वह तीन रात से सोई नहीं थी; कि उसकी हालत अब पहले से बहुत अच्छी थी और किसी तरह का ख़तरा

नहीं रह गया था, लेकिन अब तक वह घबराहट और हिस्टीरिया की हालत में थी।..."बड़ा अच्छा है कि घर में शान्ति है," वह बोला। "वे लोग न सिर्फ़ अग्लाया के सामने बल्कि आपस में भी पिछली बातों की ओर कोई इशारा न करने की कोशिश कर रहे हैं। माँ-बाप अदेलईदा की शादी के फ़ौरन बाद शरद ऋतु में विदेश जाने पर राज़ी हो गए हैं और अग्लाया ने इससे सम्बन्धित प्राथमिक बातें चुपचाप सुनीं।" वह, यानी रादोम्स्की, भी शायद विदेश जाएगा। शायद प्रिंस श. भी अदेलईदा को साथ लेकर दो महीने बाद, अगर उनके कारोबार के मामलात ने इजाज़त दी, पीछे-पीछे आने को तैयार हो जाएँ। सिर्फ़ जनरल येपांचिन यहीं रहेंगे। अभी वे लोग पीटर्सबर्ग से पन्द्रह मील दूर कोल्मिनो में अपनी जागीर पर गए हुए थे जहाँ उनका एक बहुत बड़ा-सा बँगला था। प्रिंसेस बेलोकोंस्काया अभी तक मास्को नहीं गई थीं और लगता तो सचमुच ऐसा था कि वह जान-बूझकर किसी उद्देश्य से अपनी जगह टिकी हुई थीं। मिसेज़ येपांचिना ने बहुत आग्रहपूर्वक कहा था कि जो कुछ हो चुका था उसके बाद उन लोगों का पाव्लोव्स्क में और ज़्यादा दिन रहना मुमकिन नहीं था; वह, रादोम्स्की, उन्हें रोज शहर में फैली हुई अफ़वाहों के बारे में सूचना देता था। वे लोग येलागिन द्वीप पर अपने बँगले में रहना भी मुमकिन नहीं पा रहे थे।

"और सचमुच, आपको यह तो मानना ही पड़ेगा कि उन लोगों के लिए और ज़्यादा बर्दाश्त करना नामुमकिन था," रादोम्स्की ने बात बढ़ाई। "ख़ासतौर पर इसलिए, प्रिंस, कि उन्हें सब मालूम था कि यहाँ आपके घर में क्या हो रहा है, और आपके रोज वहाँ जाने को देखते हुए, आपसे आने के लिए मना कर दिए जाने के बावजूद।..."

"जी हाँ, जी हाँ, जी हाँ," प्रिंस ने फिर सिर हिलाया, "आप बिलकुल ठीक कहते हैं। मैं अग्लाया इवानोव्ना से मिलना चाहता था।..."

"लेकिन, भगवान की दुहाई, प्रिंस," रादोम्स्की अचानक बहुत जोश में आकर और उदास भाव से चिल्लाकर बोला, "आपने यह सब कुछ...होने कैसे दिया ? ज़ाहिर है, ज़ाहिर है, आपके लिए यह सब बिलकुल अप्रत्याशित रहा होगा और...मैं बिलकुल समझ सकता हूँ कि आप अपने होश-हवास खो बैठे होंगे...और...और, फिर, आप उस पागल लड़की को रोक भी तो नहीं सकते थे...वह आपके बस के बाहर था ! लेकिन, मेरे दोस्त, आपको यह समझना चाहिए था कि आपकी ओर उस लड़की के रवैये में कितनी संजीदगी और कितनी मजबूती थी। वह दूसरी औरत के साथ आपका साझा नहीं करना चाहती थी, और आपने...आपने ऐसा अनमोल रत्न फेंककर चकनाचूर कैसे कर दिया !"

"जी हाँ, जी हाँ," प्रिंस ने बेहद दुःखी होकर फिर कहा, "बिलकुल ठीक है। जी हाँ, कसूर मेरा ही है। और, आप जानते हैं, वही अकेली–सिर्फ़ अग्लाया ही–नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को उस नज़र से देखती थी।...किसी और ने उसे इस तरह कभी नहीं देखा था।"

"लेकिन, देखिए न, इसी वजह से तो इस बात से इतना गहरा धक्का पहुँचता है कि उसमें कोई गम्भीर बात थी ही नहीं !" रादोम्स्की भावनाओं के प्रवाह में बहता हुआ बोला। "माफ़ कीजिएगा, प्रिंस, लेकिन मैं...मैं इसके बारे में सोचता रहा हूँ। मैंने इस पूरे मामले पर बहुत अच्छी तरह विचार किया है, प्रिंस। मुझे सब मालूम है कि पहले क्या-क्या हो चुका था, मुझे वह सब भी मालूम है जो छह महीने पहले हुआ था, और वह सब कुछ गम्भीर नहीं था ! वह सब बस एक विचार था जो आपके दिमाग़ में था, बस आपकी कल्पना, एक स्वप्न, एक भ्रम, और सिर्फ़ एक बिलकुल ही अनुभवहीन लड़की की ईर्ष्या ही इसे कोई गम्भीर बात समझ सकती थी।"

यहाँ पर रादोम्स्की ने प्रिंस की भावनाओं की कोई परवाह न करते हुए अपना सारा गुस्सा

उतार दिया। साफ़-साफ़ और समझदारी के साथ और, हम एक बार फिर बता दें, मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि के साथ भी उसने प्रिंस को नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ उसके सम्बन्ध की सारी तस्वीर दिखाई। रादोम्स्की हमेशा बड़े प्रवाह से बोलता था, लेकिन इस समय तो वह वक्तृता के शिखर पर पहुँच गया। "शुरू से ही," उसने एलान किया, "आपने शुरुआत ही एक झूठ से की, और जिस चीज़ की शुरुआत झूठ से होती है उसका ख़ात्मा भी झूठ पर ही होता है—यह प्रकृति का नियम है। जब भी कोई आपको बौड़म कहता है तो मैं उसकी बात नहीं मानता, सच तो यह है कि मुझे बहुत गुस्सा आता है। आप इतने ज़्यादा समझदार हैं कि आपको यह नहीं कहा जा सकता। लेकिन आपको मानना पड़ेगा कि आप इतने विचित्र भी हैं कि आप दूसरे लोगों जैसे नहीं हैं। मैं तो इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि जो कुछ हुआ है उसकी बुनियाद पहले, आपकी पैदाइशी नातजुर्बेकारी है (इस शब्द पर ध्यान दीजिएगा, प्रिंस : 'पैदाइशी'), फिर आपकी हद दर्जे की सादगी; इसके अलावा, आपको कमाल की हद तक अनुपात का आभास नहीं रहता (जिस बात को कई वार आप खुद मान चुके हैं), और, आख़िर में, उसकी वजह बौद्धिक आस्थाओं का वह बेहद बड़ा अम्बार है, जिसे आप अपनी गैर-मामूली ईमानदारी की वजह से अभी तक सच्ची, स्वाभाविक, स्वतःस्फूर्त और खरी आस्थाएँ मानते रहे हैं ! आपको मानना पड़ेगा, प्रिंस, कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ आपके सम्बन्धों में शुरू से ही कोई चीज़ ऐसी थी जो (साररूप में कहा जाए तो) **परम्परागत-जनवाद** थी, एक तरह से, (अगर और भी सार-रूप में कहा जाए) 'नारी-समस्या का मोह'। देखिए, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ के उस विचित्र और शर्मनाक काण्ड की रत्ती-रत्ती हर बात का मुझे पता है जब रोगोझिन अपनी रक़म लेकर आया था। अगर आप चाहें तो मैं अच्छी तरह आपका विश्लेषण कर सकता हूँ; मैं आपके सामने आपकी वह सूरत पेश कर सकता हूँ जैसी कि आप आईने में देखते हैं। मुझे बिलकुल सही-सही मालूम है यह सब कुछ कैसे हुआ और यह सब कुछ क्यों हुआ ! आप, जो एक नौजवान थे, स्विट्ज़रलैण्ड में अपने देश के लिए ललकते थे; आप रूस वापस जाने के लिए उसी तरह बेकरार थे, जैसे किसी अनजाने मगर कल्पनातीत सम्भावनाओं के देश जाना चाहते हों। आपने रूस के बारे में बहुत-सी किताबें पढ़ी थीं—शायद बहुत बढ़िया किताबें होंगी लेकिन आपके लिए हानिकर थीं। आप यहाँ कुछ करने की नई-नई उमंग लेकर आए, और, एक तरह से, काम पर झपट पड़े ! और फिर, आपके पहुँचने के पहले ही दिन आपको एक बुरी तरह सताई हुई औरत की बदनसीबी की दर्दनाक कहानी सुनाई गई—आपको जिनके तेवर सूरमाई के थे और औरतों के मामले में जो बिलकुल ही कोरे थे—औरत की कहानी ! उसी दिन आपने इस औरत को देखा, आप उसकी सुन्दरता पर, उसकी कल्पनातीत, पैशाचिक सुन्दरता पर (देखिए, मैं उसकी सुन्दरता को मानता हूँ) मन्त्रमुग्ध हो गए। फिर, आपकी मानसिक स्थिति, आपकी मिरगी की बीमारी, हमारा पीटर्सबर्ग का उतरता जाड़ा, जो आदमी की रग-रग को तोड़कर रख देता है; और फिर, एक अनजाने और आपके लिए लगभग कल्पनातीत शहर में वह पूरा दिन, मुलाक़ातों और हर तरह के काण्डों का दिन, अप्रत्याशित परिचयों का दिन, अत्यन्त अप्रत्याशित वास्तविकता का दिन, येपांचिन-परिवार की तीन खूबसूरत लड़कियोंवाला दिन, और उनमें अग्लाया; ऊपर से आपकी थकन, सिर चकराना, इसके साथ जोड़ दीजिए नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना का ड्राइंग-रूम, उस ड्राइंग-रूम का वातावरण...और ऐसी हालत में उस क्षण आप अपने आपसे क्या उम्मीद कर सकते थे—क्या ख़्याल है आपका ?"

"जी हाँ, जी हाँ, जी हाँ, जी हाँ," प्रिंस ने अपना सिर हिलाया और उसका चेहरा लाल होने लगा। "जी हाँ, कुछ ऐसी ही बात थी। और, जानते हैं, उससे पिछली रात ट्रेन में भी दरअसल

मैंने पलक तक नहीं झपकाई थी, और उससे पहलेवाली रात को भी, और मेरी तबियत बिलकुल अच्छी नहीं थी।..."

"जी हाँ, मैं यही कहना चाहता हूँ !" रादोम्स्की जोश में आकर बोलता रहा। "यह बात बिलकुल साफ़ है कि अपने उत्साह के बहाव में आपने अपने इस उदार विचार का सबके सामने एलान करने के मौक़े को, एक तरह से, झपट लिया कि आप पुराने खानदानी प्रिंस और साफ़-सुथरी ज़िन्दगी बितानेवाले इंसान, उस औरत को शर्मनाक नहीं समझते जो अपने किसी दोष की वजह से नहीं बल्कि एक घिनौने रईस ऐयाश की बदकारियों की वजह से पतित हो गई हो। अरे, यह बात तो बिलकुल समझ में आती थी ! लेकिन, मेरे प्रिंस, सवाल इसका नहीं है। सवाल यह है कि आपकी भावना सच्ची थी या नहीं, आपकी भावना खरी थी या नहीं, स्वाभाविक भावना, या वह बौद्धिक उत्साह के अलावा कुछ भी नहीं थी ? ज़रा सोचिए—उस स्त्री को मन्दिर में क्षमा किया गया था, लेकिन उसे यह नहीं बताया गया कि उसमें कोई बुराई नहीं थी और यह कि वह इस लायक़ थी कि उसकी इज़्ज़त की जाए और उसका सम्मान किया जाए, बताया गया था उसे ? क्या आपकी सहजबुद्धि ने तीन महीने बाद आपको यह नहीं बताया कि असली स्थिति क्या थी ? माना कि वह निर्दोष है—मैं इस बात पर आग्रह नहीं करूँगा, क्योंकि मैं ऐसा करना चाहता नहीं—लेकिन उसके सारे चरित्र की बुनियाद पर क्या ऐसे असह्य, पैशाचिक अभिमान को, ऐसे ढीठ और ऐसे लुटेरे अहंकार को उचित ठहराया जा सकता है ? माफ़ कीजिएगा, प्रिंस, शायद मैं अपने जोश में बह गया, लेकिन..."

"जी हाँ," प्रिंस ने फिर बुदबुदाकर कहा, "ऐसा हो सकता है। शायद आप ठीक कहते हैं। वह सचमुच बहुत चिड़चिड़ी है, और, ज़ाहिर है, आपका कहना ठीक ही है, लेकिन..."

"वह इस लायक़ है कि उस पर तरस खाया जाए ? क्या आप यही कहने जा रहे थे, मेरे प्यारे, नेकदिल दोस्त ? लेकिन तरस की खातिर और उसके सन्तोष के लिए आपने उसकी तिरस्कार और नफ़रत-भरी नज़रों में एक दूसरी बहुत अच्छी और शुद्ध मन की लड़की को लज्जित कैसे किया, उसे अपमानित कैसे किया ? आपका यह तरस अब आपको कहाँ ले जाएगा ? उफ़, इस तरह की अतिरंजना...बिलकुल समझ में नहीं आती ! और आप एक ऐसी लड़की को जिससे आपको प्रेम है, उसकी प्रतिद्वन्द्वी के सामने अपमानित कैसे कर सके, एक दूसरी औरत की खातिर, उस दूसरी औरत की नज़रों के सामने ही उससे दामन छुड़ा कैसे लिया जबकि...आप उसके सामने इज़्ज़तदार तरीक़े से शादी का प्रस्ताव रख चुके थे...और आपने उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखा तो था ही...आपने उसके माँ-बाप और उसकी बहनों के सामने ऐसा किया था ! इसके बाद आप ईमानदार आदमी हैं, मैं आपसे पूछता हूँ ? और...और उस फ़रिश्ते जैसी लड़की से यह कहकर कि आप उससे मुहब्बत करते हैं क्या आपने उसे धोखा नहीं दिया।"

"जी हाँ, जी हाँ, आप ठीक कहते हैं," प्रिंस ने बहुत व्यथित होकर कहा। "उफ़, मैं समझता हूँ कि कसूर मेरा है !"

"लेकिन क्या इतना ही काफ़ी है ?" रादोम्स्की गुस्से से चिल्लाया। "क्या इतना कह देना ही काफ़ी है कि 'कसूर मेरा है !' कसूर आपका है, फिर भी आप उसी बात पर अड़े हुए हैं ! और उस वक़्त कहाँ चला गया था आपका दिल, आपका 'ईसाई' दिल ? आपने उस क्षण उसकी सूरत तो देखी थी न ? क्या उसे कम तकलीफ़ थी आपकी उस दूसरी औरत के मुकाबले, जो आप दोनों के बीच में आ गई है ? कैसे आप यह सब देखते रहे और आपने इसे होने दिया ? आख़िर कैसे ?"

"लेकिन...लेकिन मैंने...मैंने कुछ होने नहीं दिया।..." प्रिंस दुःखी होकर बुदबुदाया।

"कैसे कुछ नहीं होने दिया ?"

"जी हाँ, मैंने कुछ भी होने नहीं दिया। अब भी मेरी समझ में नहीं आता कि यह सब कुछ हुआ कैसे।...मैं अग्लाया के पीछे भागा, और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना बेहोश हो गई। और तब से वे लोग मुझे अग्लाया से मिलने ही नहीं देते।"

"यह कोई बहाना नहीं है ! अगर वह दूसरी बेहोश भी हो गई थी तब भी आपको अग्लाया के पीछे भागकर जाना चाहिए था।"

"जी हाँ...जी हाँ, मुझे जाना चाहिए था...लेकिन वह मर गई होती ! उसने अपने आपको मार डाला होता...आप उसे जानते नहीं...और...और, बहरहाल, मैं अग्लाया इवानोव्ना को बाद में सब कुछ बता ही देता और...देखिए, मेरे दोस्त, मैं समझ रहा हूँ कि सारी बातें आपको मालूम नहीं हैं। बताइए, वे लोग मुझे अग्लाया इवानोव्ना से मिलने क्यों नहीं देते ? मैं उसे सब कुछ समझा देता। देखिए, उस वक़्त वे दोनों कुछ और ही बातें कर रही थी, ठीक बातें नहीं, बिलकुल नहीं और यही वजह है कि उनके बीच यह सब कुछ हुआ। आपको मैं यह बात नहीं समझा सकता, लेकिन अग्लाया को शायद मैं समझा सकता था।...हे भगवान ! आप उस क्षण उसकी सूरत की बात कहते हैं जब वह भागकर बाहर गई थी—उफ़, मुझे बिलकुल याद है ! आइए चलें—चलिए !" वह अचानक अपनी जगह से उछलकर और रादोम्स्की को बाँह पकड़कर घसीटते हुए चिल्लाया।

"कहाँ ?"

"चलिए, अग्लाया इवानोव्ना के पास चलें—फ़ौरन चलिए !"

"लेकिन मैं आपको बता चुका हूँ कि वह पाव्लोव्स्क में नहीं है, और फिर, उसके पास जाएँ किसलिए ?"

"वह समझ जाएगी, वह समझ जाएगी !" प्रिंस ने बड़े विनीत भाव से अपने हाथ जोड़ते हुए बुदबुदाकर कहा। "वह समझ जाएगी कि यह **वह बात** बिलकुल नहीं है—कि वह बिलकुल ही दूसरी बात है, बिलकुल ही दूसरी !"

"बिलकुल ही दूसरी बात ? लेकिन आप तो उस औरत से शादी करनेवाले हैं न ? मतलब, आप अपनी बात पर कायम हैं न ? आपकी शादी होनेवाली है कि नहीं ?"

"जी हाँ...होनेवाली है; बिलकुल होनेवाली है !"

"फिर यह क्यों नहीं है 'वह बात' ?"

"अरे नहीं, नहीं है, नहीं है ! इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि मेरी शादी होनेवाली है कि नहीं। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता !"

"नहीं पड़ता ? यह कोई ऐसी छोटी-मोटी बात तो है नहीं, या है ? आप उस औरत को, जिससे आपको प्यार है, सुखी बनाने के लिए उससे शादी कर रहे हैं, और अग्लाया इवानोव्ना इस बात को जानती है और समझती है ! फिर आप यह कैसे कह सकते हैं कि इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता ?"

"सुखी ? जी नहीं ! मेरी उससे सिर्फ़ शादी हो रही है, बस। वह चाहती है कि मैं शादी कर लूँ। और अगर मेरी शादी हो भी जाए तो उससे क्या फ़र्क़ पड़ता है ?...मैं...लेकिन कोई बात नहीं ! बस बात यह है, वह यक़ीनन मर गई होती। अब मेरी समझ में आता है कि रोगोझिन के साथ उसकी जो शादी होनेवाली थी वह सरासर पागलपन था ! अब मेरी समझ में वे सारी बातें आ गई हैं जो पहले नहीं आई थीं, और...ख़ैर, बात यह है, जब वे दोनों वहाँ एक-दूसरे के सामने खड़ी थीं तो नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की सूरत देखकर मुझसे बर्दाश्त नहीं हो सका।...आप जानते नहीं,

मेरे दोस्त," वह अपनी आवाज़ रहस्यमय ढंग से धीमी करके कहता रहा, "मैंने इसके बारे में कभी किसी को नहीं बताया है—कभी नहीं—अग्लाया तक को नहीं, लेकिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के यहाँ की पार्टी के बारे में जो कुछ कहा था वह सच है, लेकिन वहाँ एक बात थी जो आपसे चूक गई क्योंकि वह आपको मालूम नहीं है—मैंने उसकी सूरत देखी थी। उस दिन सबेरे भी, जब मैंने उसकी तस्वीर देखी थी, मुझसे बर्दाश्त नहीं हो सका था।...मिसाल के लिए, वेरा लेबेदेवा की आँखें बिलकुल ही दूसरी तरह की हैं। मैं..." उसने अत्यन्त भयभीत होकर कहा, "मुझे उसकी सूरत से डर लगता है!"

"डर लगता है?"

"जी हाँ, वह पागल है!" उसने कानाफूसी के स्वर में कहा; उसका चेहरा पीला पड़ गया।

"आपको पक्का यक़ीन है?" रादोम्स्की ने बड़ी दिलचस्पी से पूछा।

"जी हाँ, अब मुझे इसका पूरा यक़ीन है; अब, पिछले दिनों मैंने पक्के तौर पर इसका पता लगा लिया है!"

"फिर, प्रिंस, आप अपने साथ कर क्या रहे हैं?" रादोम्स्की सहमकर चिल्लाया। "तो आप एक तरह के डर की वजह से उससे शादी कर रहे हैं? मेरी तो समझ में नहीं आती यह बात!...शायद आपको उससे मुहब्बत भी नहीं है?"

"नहीं, मैं उसे दिलो-जान से प्यार करता हूँ! अरे, वह बिलकुल...बच्ची है, अभी वह बिलकुल बच्ची! अरे, आपको कुछ नहीं मालूम!"

"और इसके साथ ही आपने अग्लाया इवानोव्ना से भी क़सम खाई थी कि आपको उससे प्यार है?"

"जी हाँ, जी हाँ!"

"लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? आपका मतलब है कि आप उन दोनों से प्यार करना चाहते हैं?"

"जी हाँ, जी हाँ!"

"भगवान के लिए, प्रिंस, क्या कह रहे हैं आप? अपने होश में आइए!"

"अग्लाया के बिना मैं...मुझे उससे मिलना ही है! मैं...जल्दी ही सोते में मर जाऊँगा। कल रात मुझे ऐसा लगा था कि मैं सोते में मर जाऊँगा। उफ़, काश अग्लाया को मालूम होता...काश उसे सब कुछ मालूम होता।...मेरा मतलब है रत्ती-रत्ती सब कुछ! क्योंकि, बात यह है, इस मामले में सब कुछ मालूम होना ही चाहिए—यही सबसे ज़रूरी बात है! क्या वजह है कि हम दूसरे के बारे में सब कुछ नहीं जान सकते, जबकि जानना चाहिए, जबकि वह दूसरा क़सूरवार हो।...लेकिन मुझे मालूम नहीं मैं क्या कह रहा हूँ—मेरा दिमाग़ बिलकुल उलझा हुआ है। आपने मुझे बिलकुल बदहवास कर दिया है।...और, क्या अब भी उसकी सूरत वैसी ही दिखाई देती होगी जैसी कि उस वक़्त वह कमरे के बाहर भागी थी? जी हाँ, कसूर मेरा ही है! मुमकिन है सारा कसूर मेरा ही हो। यह तो मैं नहीं जानता कि कौन-सा...लेकिन सारा कसूर है मेरा ही।...इस सिलसिले में कुछ बात ऐसी है जो मैं आपको समझा नहीं सकता...उसके लिए मैं सही शब्द नहीं ढूँढ़ सकता, लेकिन...लेकिन अग्लाया समझ जाएगी! अरे, मुझे हमेशा यक़ीन था कि वह समझ जाएगी!"

"नहीं, प्रिंस, वह नहीं समझेगी! अग्लाया एक औरत की तरह प्यार करती थी, एक इंसान की तरह, उस तरह नहीं जैसे...बिना देह की रूहें करती हैं। मेरे अभागे प्रिंस, जानते हैं आप कि मैं क्या सोचता हूँ? शायद आपने उन दोनों में से किसी को कभी प्यार नहीं किया है!"

"मालूम नहीं...शायद, शायद ! बहुत-सी बातों के बारे में आपका कहना बिलकुल ठीक है। आप बहुत होशियार हैं, मेरे दोस्त। उफ़, मेरे सिर में फिर दर्द होने लगा। चलिए, उसके पास चलें...भगवान के लिए...भगवान के लिए !"

"लेकिन मैं आपसे कह रहा हूँ कि वह पाव्लोव्स्क में नहीं है, वह कोल्मिनो में है।"

"चलिए, कोल्मिनो चलें। फ़ौरन चलें !"

"यह ना-मुम-किन है !" रादोम्स्की ने उठते हुए शब्द को खींच-खींचकर कहा।

"सुनिए, मैं उसे एक खत लिखे देता हूँ। ले जाकर उसे दे दीजिएगा !"

"नहीं, प्रिंस, नहीं ! मुझे इस तरह के काम न सौंपिए—मैं कर नहीं सकता !"

वे दोनों एक-दूसरे से विदा हो गए। रादोम्स्की अपने मन में विचित्र विश्वास लिए हुए चला गया; उसकी राय में भी प्रिंस का दिमाग़ पूरी तरह सही नहीं था। और उस सूरत का क्या मतलब था जिससे वह इतना डरता भी था और वह इतना प्यार भी करता था ? और फिर ऐसा भी हो सकता था कि अग्लाया के बिना वह सचमुच मर जाए, और अग्लाया को कभी पता ही न चल सके कि वह उससे कितना प्यार करता था ! हः-हः ! और कोई भी दो औरतों से एक साथ प्यार कैसे कर सकता है ? दो अलग-अलग तरह के प्यार ? यह बहुत दिलचस्प बात है...बेचारा बौड़म ! और अब उसका क्या होगा ?

10

लेकिन प्रिंस अपनी शादी से पहले मरा नहीं, न जागते में और न 'सोते में', जैसी कि उसने रादोम्स्की से भविष्यवाणी की थी। शायद उसे सचमुच ठीक से नींद नहीं आई और उसे बुरे-बुरे सपने आते रहे; लेकिन दिन के वक़्त लोगों के बीच वह नेक और सन्तुष्ट तक मालूम होता था, अलावा इसके कि कभी-कभी वह बहुत विचारमग्न हो जाता था, लेकिन ऐसा तभी होता था जब वह अकेला होता था। शादी की जल्दी की जा रही थी; उसकी तारीख़ रादोम्स्की के साथ प्रिंस की मुलाक़ात के हफ़्ते-भर बाद की तै की गई थी। इस जल्दबाजी को देखते हुए प्रिंस के सबसे अच्छे दोस्त भी, अगर उसके कोई दोस्त थे, इस बेचारे पागल को 'बचाने' की अपनी कोशिशों से बिलकुल निराश हो चुके होंगे। अफ़वाह थी कि रादोम्स्की के प्रिंस के पास जाने में कुछ हद तक जनरल येपांचिन और उनकी पत्नी का भी हाथ था। लेकिन अगर वे दोनों अपनी बेहद नेकदिली की वजह से उस अभागे पागल को अथाह गर्त्त में गिरने से बचाना भी चाहते थे तो भी उन्हें अपने आपको इसी क्षीण प्रयास तक सीमित रखना पड़ा; उनकी ओर से इतने गम्भीर प्रयास की इजाज़त न उनकी प्रतिष्ठा देती थी और न ही शायद प्रिंस के प्रति उनकी हार्दिक सहानुभूति (जो स्वाभाविक ही थी)। हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं कि जो लोग प्रिंस के सबसे नजदीक थे वे भी उसके ख़िलाफ़ हो गए थे। लेकिन वेरा लेबेदेवा अकेले में बस चुपके-चुपके रोती थी और मकान के अपनेवाले हिस्से में ही रहती थी और प्रिंस से मिलने पहले से बहुत कम जाती थी। कोल्या इस समय अपने बाप के कफ़न-दफ़न में फँसा हुआ था; पहले हमले के आठ दिन बाद दुबारा फ़ालिज गिरने पर बड़े मियाँ चल बसे थे। प्रिंस ने परिवार के इस शोक में बहुत चिन्ता और सहानुभूति प्रकट की और पहले कुछ दिन तक उसने रोज कई-कई घंटे नीना अलेक्सान्द्रोव्ना के यहाँ गुजारे; वह जनाज़े में भी मौजूद था और गिरजाघर में प्रार्थना के समय भी। इस बात की ओर कई लोगों का ध्यान गया कि उसके गिरजाघर आने और जाने के समय लोग आपस में कानाफूसी करने लगते थे; सड़क पर और पार्क

में भी यही होता था—जब भी वह गुज़रता या घोड़ागाड़ी पर बैठकर निकलता, लोग उसके बारे में बातें करने लगते, उसका नाम लेते, उसकी ओर इशारा करते, और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना का नाम भी सुनाई देता। लोगों ने जनाज़े के वक़्त उसे वहाँ देखने की कोशिश की लेकिन वह वहाँ नहीं थी। कप्तान की विधवा भी जनाज़े में नहीं थी, लेबेदेव ने ऐन वक़्त पर उसे जाने से रोक दिया था। गिरजाघर में सम्पन्न किए गए संस्कार का प्रिंस पर गहरा और पीड़ाजनक प्रभाव पड़ा; उसने गिरजाघर में किसी सवाल के जवाब में लेबेदेव के कान में कहा कि उसके लिए रूसी कट्टरपन्थी रस्मों के अनुसार जनाज़े की प्रार्थना में भाग लेने का यह पहला अवसर था, और उसे बस हल्का-हल्का याद था कि लड़कपन में वह गाँव के गिरजाघर में किसी जनाज़े की प्रार्थना में गया था।

"ख़ैर, ऐसा लगता ही नहीं कि ताबूत में वही आदमी लेटा है जिसे अभी हाल ही में हमने अपना सभापति चुना था—याद है आपको !" लेबेदेव ने, प्रिंस के कान में कहा। "किसे खोज रहे हैं आप ?"

"अरे, कुछ नहीं, मुझे लगा..."

"रोगोझिन को तो नहीं ?"

"क्या वह यहाँ है ?"

"जी हाँ, गिरजाघर में।"

"अच्छा, इसीलिए मुझे लगा कि मैंने उसकी आँखें देखीं," प्रिंस घबराकर बुदबुदाया। "लेकिन क्या वह...वह यहाँ किसलिए आया है ? क्या उसे बुलाया गया था ?"

"जी नहीं। उसे बुलाने की बात तो किसी ने सोची भी नहीं थी। वे लोग तो उसे जानते भी नहीं। लेकिन जो चाहे आ सकता है। आपको इतना ताज्जुब क्यों हुआ ? अब यहाँ उससे मेरी मुलाक़ात अक्सर होती है। इसी हफ़्ते में कम से कम चार बार मैं उससे यहाँ पाव्लोव्स्क में मिला हूँ।"

"मैंने तो उसे एक बार भी नहीं देखा...उस वक़्त के बाद से," प्रिंस ने बुदबुदाकर कहा।

चूँकि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने भी रोगोझिन से "उस दिन" से मुलाक़ात होने की कोई चर्चा नहीं की थी इसलिए प्रिंस ने इस वक़्त नतीजा यह निकाला कि रोगोझिन किसी वजह से जान-बूझकर उसकी नज़रों से दूर रहने की कोशिश कर रहा है। उस पूरे दिन वह विचारों में डूबा रहा; दूसरी ओर, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना सारे दिन और शाम को असाधारण रूप से प्रसन्न रही।

कोल्या ने, जिसने अपने बाप के मरने से पहले प्रिंस के साथ सुलह-समझौता कर लिया था, यह सुझाव दिया था कि वह केल्लेर और बुर्दोव्स्की को अपने वर-सखा शिरोमणि बना ले, क्योंकि यह समस्या बहुत तात्कालिक थी और इसका फ़ैसला और ज़्यादा टाला नहीं जा सकता था। उसने केल्लेर की तरफ़ से अच्छे आचरण की जिम्मेदारी ली, और साथ ही यह भी कहा कि वह शायद "किसी काम" आ सकता था; जहाँ तक बुर्दोव्स्की का सवाल था, उसके बारे में किसी तरह की कोई आशंका करने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह बहुत शान्त और विनम्र स्वभाव का आदमी था। मिसेज़ ईवोल्गिना और लेबेदेव बार-बार प्रिंस को यही समझाते रहे कि अगर उसने शादी करने का फ़ैसला ही कर लिया था, तो उसे पाव्लोव्स्क में चहल-पहल के इस भरपूर मौसम में और इस तरह सरे-आम करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। क्या पीटर्सबर्ग में, या घर पर भी चुपचाप शादी कर लेना कहीं बेहतर न होगा ? प्रिंस बिलकुल अच्छी तरह जानता था कि वे लोग किस बात से डरते थे; लेकिन उसने संक्षेप में सीधा-सादा जवाब दिया कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की यही इच्छा थी।

अगले दिन केल्लेर, जिसे वर-सखा शिरोमणि बनाए जाने की सूचना मिल चुकी थी, प्रिंस से मिलने आया। अन्दर आने से पहले वह चौखट पर रुका और प्रिंस पर नज़र पड़ते ही उसने अपना दाहिना हाथ उठाया मानो शपथ ले रहा हो और ज़ोर से बोला—"एक बूँद नहीं पिऊँगा !"

फिर वह प्रिंस के पास गया, बड़े तपाक से उससे दोनों हाथ मिलाए, और बताया कि जब उसने पहली बार शादी के बारे में सुना था तो वह उसके ख़िलाफ़ था, जिस बात का एलान भी उसने बिलियर्ड खेलते समय कर दिया था, और इसकी वजह इसके अलावा कुछ भी नहीं थी कि उसने उम्मीद की थी और एक सच्चे दोस्त की तरह बड़ी बेचैनी से वह हर दिन इन्तज़ार करता रहा था कि उसकी शादी प्रिंसेस द रोहान जैसी किसी हस्ती से होगी ही; लेकिन अब उसकी समझ में आ रहा था कि प्रिंस का सोचने का ढंग 'उन सबके' सोचने के ढंग को मिलाकर भी उससे दस-गुना अधिक उदात्त था ! क्योंकि जो कुछ वह चाहता था वह न शान-शौकत थी न धन-दौलत, मान-सम्मान भी नहीं, बल्कि सिर्फ़—सच्चाई ! ऊँचे लोगों की हमदर्दी किधर थी, यह तो सभी को मालूम था, लेकिन प्रिंस अपनी शिक्षा की बदौलत इतना ऊँचा था कि आमतौर पर वह ऊँचा आदमी नहीं बन पाया था। "लेकिन जो लोग समाज का कचरा हैं उनकी और तरह-तरह के ख़ुराफ़ात लोगों की राय अलग ही है—शहर में, घरों में, महफिलों में, बैण्ड-स्टैण्ड पर, शराबख़ानों में और बिलियर्ड खेलने के कमरों में लोग सिर्फ़ इस आगामी घटना के अलावा और किसी चीज़ की चर्चा ही नहीं कर रहे थे। मैंने सुना है कि लोग आपकी खिड़की के नीचे हंगामा खड़ा करनेवाले हैं, और शादी की रात को भी ! अगर आपको ईमानदार आदमी के पिस्तौल की ज़रूरत है, प्रिंस, तो मैं शादीवाली रात के बाद सबेरे आपके सोकर उठने से पहले आधे दर्जन गोलियाँ बेझिझक बरसाने को तैयार हूँ।" उसने प्रिंस को यह भी सलाह दी कि वह उन लोगों की भीड़ से बचाव के लिए, जो गिरजाघर से आने के बाद शायद उसके घर पर धावा बोल दे, अहाते में एक आग बुझानेवाला इंजन बुलवाकर खड़ा कर ले। लेकिन लेबेदेव उसकी एक भी बात सुनने को तैयार नहीं था। "अगर हमने आग बुझानेवाला इंजन बुलवाया," वह बोला, "तो ये लोग घर को चकनाचूर कर देंगे।"

"वह शख़्स लेबेदेव," केल्लेर ने कहा, "आपके ख़िलाफ़ साज़िश कर रहा है, प्रिंस। क़सम से ! वे लोग आपको और आपकी हर चीज़ को, आपकी दौलत और आपकी आज़ादी को, उन दो चीज़ों को जो हममें से हर एक को चौपायों से अलग करती हैं, अदालत की निगरानी में रखवा देना चाहते ! जी हाँ, मैंने यह बात पक्के तौर पर सुनी है ! मैं आपसे जो कुछ कह रहा हूँ वह सच है।"

प्रिंस को भी याद आया कि उसने भी इस तरह की कुछ बात सुनी थी, लेकिन, ज़ाहिर है, उसने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया था। इस वक़्त भी उसने बस हँसकर फ़ौरन उसे भुला दिया ! इधर कुछ समय से लेबेदेव सचमुच बहुत सक्रिय था; इस शख़्स की सारी योजनाएँ बड़ी प्रेरणा के साथ बनाई जाती थीं, धीरे-धीरे वे अधिक जटिल होती जाती थीं, उनमें शाखें फूटती जाती थीं और जैसे-जैसे उनके बारे में उसका जोश बढ़ता जाता था वे अपनी प्रारम्भिक दशा से अधिक दूर होती जाती थीं, इसीलिए उसे अपने जीवन में इतनी कम सफलता मिली थी। जब बाद में लगभग शादी के दिन वह प्रिंस के पास अपना अपराध स्वीकार करने आया (क्योंकि उसकी बाक़ायदा यह आदत थी कि जिन लोगों के ख़िलाफ़ वह साज़िश कर रहा होता था उनके पास वह अपना अपराध स्वीकार करने जाता था, ख़ासतौर पर इस हालत में जब उसकी साज़िश कामयाब नहीं होती थी),

तो उसने एलान किया कि वह पैदा तो तालेराँ[1] बनने के लिए हुआ था, लेकिन न जाने किस वजह से रह गया सिर्फ़ लेबेदेव। फिर उसने अपनी सारी चाल समझाई जिससे प्रिंस को बेहद दिलचस्पी हुई। उसके अनुसार, सबसे पहले उसने उन ऊँचे लोगों की मदद हासिल करने की कोशिश की, जिनका वह ज़रूरत पड़ने पर सहारा ले सकता था, और वह जनरल येपांचिन के पास गया था। जनरल साहब दंग रह गए थे, उन्होंने 'नौजवान' की भलाई की कामना की थी, लेकिन साथ ही यह भी कहा था कि "वह उसे लाख बचाना चाहते हों लेकिन इस मामले में कुछ करना उनके लिए मुनासिब नहीं होगा"। उनकी पत्नी लिज़ावेता प्रोकोफ़्येव्ना उससे मिलने या बात करने को भी तैयार नहीं थीं; रादोम्स्की और प्रिंस श. ने तो उसे दुतकार ही दिया। लेकिन वह, यानी लेबेदेव, हिम्मत नहीं हारा, और उसने एक बहुत होशियार वकील की सलाह ली, जो बहुत योग्य वयोवृद्ध सज्जन थे और उसके बहुत अच्छे दोस्त थे, सच तो यह है कि वह उसके हितैषी थे; उनकी राय में यह मामला बड़ी असानी से तै किया जा सकता था अगर उसके पास यह गवाही देनेवाले मुनासिब गवाह हों कि प्रिंस के होश-हवास पूरी ठीक नहीं थे और दरअसल उसके पागल होने में कोई शक नहीं था, और सबसे बड़ी बात यह थी कि वह इस मामले में असरदार लोगों की हिमायत जुटा सके। लेबेदेव तब भी हिम्मत नहीं हारा, और एक दिन वह प्रिंस के यहाँ एक डॉक्टर को ले आया, जो पाव्लोव्स्क में गर्मियाँ बिताने आए थे—वह भी बहुत योग्य वयोवृद्ध सज्जन थे जिन्हें सेन्ट ऐन के ऑर्डर से विभूषित किया जा चुका था—कि वह, एक तरह से, इस वक़्त सिर्फ़ परिस्थिति का सर्वेक्षण करें, पिन्स को देखें और औपचारिक रूप से नहीं, बल्कि दोस्ताना तरीक़े से लेबेदेव को अपने निष्कर्ष से अवगत करा दें। प्रिंस को डॉक्टर का आना याद था; प्रिंस को याद था कि लेबेदेव एक दिन पहले उससे बार-बार कहता रहा था कि वह बीमार लग रहा था, और जब प्रिंस डॉक्टर को बुलाने की बात तक सुनने को तैयार नहीं हुआ था तो वह यह बहाना बनाकर डॉक्टर के साथ वहाँ आ पहुँचा था कि वे दोनों अभी इप्पोलीत के यहाँ से आ रहे थे, जो बहुत बीमार था, और डॉक्टर को प्रिंस से उस बीमार के बारे में कुछ बातें करनी थीं। प्रिंस ने लेबेदेव का शुक्रिया अदा किया था और बड़ी मिलनसारी से डॉक्टर का स्वागत किया था। वे तुरन्त इप्पोलीत के बारे में बातें करने लगे थे। डॉक्टर ने प्रिंस से इप्पोलीत की आत्महत्या करने की कोशिश के बारे में बताने को कहा था, और प्रिंस ने उस घटना के वर्णन और उसके बारे में अपनी व्याख्या से डॉक्टर को बिलकुल मन्त्रमुग्ध कर दिया था। इसके बाद वे पीटर्सबर्ग के मौसम, प्रिंस की बीमारी, स्विट्ज़रलैण्ड, और श्नाइडर की बातें करने लगे थे। प्रिंस ने श्नाइडर की इलाज की प्रणाली के बारे में विस्तार से बताकर और दूसरे किस्से सुनाकर डॉक्टर में इतनी दिलचस्पी पैदा कर दी कि वह दो घंटे तक उसके साथ रहे; इसके दौरान वह प्रिंस के बढ़िया सिगार पीते रहे, अपनी ओर से लेबेदेव उन्हें वेरा की लाई हुई अत्यन्त स्वादिष्ट शराब पिलाकर उनका जी खुश करता रहा; डॉक्टर साहब, जो विवाहित आदमी थे, उस लड़की की ऐसी भूरि-भूरि सराहना करने लगे कि उसे बेहद गुस्सा आया। वे पक्के दोस्त बन गए। प्रिंस के पास से आने के बाद डॉक्टर ने लेबेदेव से कहा कि अगर ऐसे लोगों को निगरानी में रखा जाने लगा तो उन पर निगरानी रखने के लिए ही कोई नहीं बचेगा। शीघ्र ही होनेवाली

1. तालेराँ (पेरीगोर्द), चार्ल्स मारिस द (बाद में प्रिंस आफ बेनीवेंतो) (1754-1838)—फ्रांसीसी राजनेता, जो क्रान्ति से पहले आउतुन का बिशप था और 1790 में क्रान्तिकारी परिषद् का अध्यक्ष बना, 1791 में बिशप के पद से हटाकर धर्मच्युत कर दिया गया, 1797 में विदेश मन्त्री बना, नेपोलियन के उत्थान के लिए साज़िश की, उसका विदेश मन्त्री रहा, उसे गद्दी से हटाने की साज़िश की, 1814 में लुई अठारहवें का विदेशमन्त्री बना, 1815 में कुछ समय तक प्रधानमन्त्री रहा, 1830 की क्रान्ति के समय लुई-फिलिप का सलाहकार और 1830-34 में ब्रिटेन में फ्रांस का राजदूत रहा।

शादी का लेबेदेव ने जो करुण विवरण दिया था उसके जवाब में डॉक्टर ने बड़ी कुटिलता से भी मानो समझते हुए सिर हिलाया और, अन्ततः, उन्होंने यह टिप्पणी की कि इस बात से बिलकुल अलग कि "कौन किससे क़ब शादी कर ले," इस मामले में जो "दिल लूट लेनेवाली मोहिनी थी, कम से कम उसने सुना ऐसा ही था, उसके पास अपने अनुपम सौन्दर्य के अलावा, जो खुद ही किसी दौलतवाले आदमी को वश में कर लेने के लिए काफ़ी था, तोत्स्की और रोगोझिन से हथियाया हुआ इतना पैसा था, हीरे-मोती, शाल-दुशाले, ताम-झाम सभी कुछ तो था कि प्यारे प्रिंस की पसन्द किसी, समझ लीजिए, ख़ास उजागर बेवक़ूफ़ी की निशानी होने के बजाय, एक दुनियादार आदमी के काइयाँपन और सारा हिसाब-किताब कर सकनेवाली समझ-बूझ का सबूत थी और, इसलिए, उससे बिलकुल ही उल्टा नतीजा निकलता था जो सचमुच पूरी तरह प्रिंस के पक्ष में था।..." लेबेदेव भी इस दृष्टिकोण से बहुत प्रभावित हुआ—और वह इसी पर अड़ गया। "और अब," उसने प्रिंस से कहा, "अब आपको मुझसे वफ़ादारी और हरदम आपके लिए अपना ख़ून बहाने को तैयार रहने के अलावा कुछ नहीं मिलेगा—आपको यही बताने मैं आया हूँ।"

इप्पोलीत ने भी उन पिछले कुछ दिनों में प्रिंस का 'मन बहलाने' में मदद की; वह उसे अकसर बुलवा लेता था। उसका परिवार वहाँ से थोड़ी ही दूर एक छोटे-से घर में रहता था। छोटे बच्चे, इप्पोलीत का भाई और उसकी बहन, बहरहाल शहर से दूर आकर खुश थे ही, क्योंकि वे अपने बीमार भाई के पास से भागकर बाग़ में जा सकते थे; लेकिन उसकी माँ बेचारी हमेशा उसके वश में रहती थी और उसके इशारों पर नाचती थी; प्रिंस को रोज ही बीच में पड़कर उनके झगड़े चुकाने पड़ते थे। इप्पोलीत प्रिंस को अपनी 'नर्स' कहता था और साथ ही यह उसकी सुलह करानेवाले की भूमिका के लिए उससे नफ़रत करने के सुख से भी अपने आपको वंचित नहीं कर सकता था। वह कोल्या से बहुत नाराज़ था कि इधर वह शायद ही कभी उससे मिलने आता था, क्योंकि पहले तो वह अपना वक़्त अपने मरते हुए बाप की सेवा करने में लगाता था और बाद में अपनी विधवा माँ के पास रहता था। आख़िरकार उसने नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ होनेवाली प्रिंस की शादी को अपनी फब्तियों का ख़ास निशाना बना लिया और आख़िर में प्रिंस का इतना अपमान कर दिया कि उससे सहा नहीं जाता था : प्रिंस ने उससे मिलने आना छोड़ दिया। दो दिन बाद कप्तान की विधवा सबेरे-सबेरे प्रिंस के पास आई और आँखों में आँसू भरकर उससे प्रार्थना करने लगी कि वह उनके यहाँ आए वरना वह मुझे कच्चा खा जाएगा। उसने यह भी बताया कि इप्पोलीत उसे कोई बहुत रहस्य की बात बताना चाहता था। प्रिंस गया। इप्पोलीत सुलह-समझौता कर लेना चाहता था, वह फूट-फूटकर रोया और बाद में, जैसा कि होना ही था, पहले से भी ज़्यादा द्वेषी हो गया, लेकिन उसे अपना द्वेष व्यक्त करते डर लगता था। वह बहुत बीमार था और अब इसमें कोई शक ही नहीं रह गया था कि वह जल्दी ही मर जाएगा। कोई रहस्य तो था नहीं बताने को अलावा उसकी इन अनुनयभरी प्रार्थनाओं के, जिन्हें उसने मानो भावावेग के कारण (जो शायद बनावटी था) हाँफती हुई आवाज़ से व्यक्त किया था, कि वह "रोगोझिन से सावधान रहे"। "वह मौक़ा चुकनेवाला आदमी नहीं है। प्रिंस, उसका न आपसे कोई मुक़ाबला है न मुझसे। अगर वह कोई चीज़ चाहेगा तो झिझकेगा नहीं।..." और इसी तरह की बहुत-सी दूसरी बातें। उससे कुछ तथ्य जानने की कोशिश में प्रिंस उससे विस्तार से सवाल पूछने लगा; लेकिन इप्पोलीत के निजी अनुभवों और भावनाओं के अलावा कोई तथ्य थे ही नहीं। इप्पोलीत को इस बात से बेहद सन्तोष हुआ कि अन्त में उसने प्रिंस को बिलकुल ही दहला दिया। शुरू में तो प्रिंस ने उसके कुछ ख़ास सवालों का जवाब देने से इन्कार कर दिया और उसकी इस सलाह पर वह बस मुस्करा दिया कि "वह विदेश तक

भाग जाए। रूसी पादरी हर जगह होते हैं, वहाँ भी शादी की जा सकती है।" लेकिन अन्त में इप्पोलीत ने यह विचार व्यक्त किया : "मुझे तो चिन्ता बस अग्लाया इवानोव्ना की है : रोगोझिन को मालूम है कि आप उसको कितना प्यार करते हैं; प्यार का बदला प्यार; आपने नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना को उससे छीना है, इसलिए वह अग्लाया इवानोव्ना को मार डालेगा, क्योंकि अब हालाँकि वह आपकी नहीं रही, यह आपके लिए बहुत गहरी चोट होगी, है न ?" उसका जो उद्देश्य था वह उसने पूरा कर लिया था : प्रिंस बहुत घबराया हुआ उसके पास से उठकर चल आया।

रोगोझिन के बारे में ये चेतावनियाँ शादी से एक दिन पहले मिलीं। उसी शाम प्रिंस शादी से पहले आख़िरी बार नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से मिला; लेकिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना उसके मन को स्थिर न कर सकी; इसके विपरीत, आख़िरी एक-दो दिनों के दौरान उसकी घबराहट को वह ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ाती ही गई। पहले—यानी कुछ दिन पहले—वह उनकी मुलाक़ातों के दौरान उसका चित्त प्रसन्न करने की पूरी कोशिश करती थी। उसकी उदास सूरत देखकर उसे बेहद डर लगता था, और वह उसका जी बहलाने को गाने तक की कोशिश करती थी; सबसे ज़्यादा वह उसे कोई दिलचस्प बातें सुनाया करती थी, जो भी वह याद कर सकती थी। प्रिंस लगभग हमेशा जताता यही था कि उसे बेहद मज़ा आया, और कभी-कभी वह जिस दिमाग़ी चुस्ती के साथ और जानदार तरीक़े से अपनी कहानियाँ सुनाती थी उस पर वह सचमुच हँस भी देता था। यह देखकर कि प्रिंस को कितना आनन्द आता था, यह देखकर कि प्रिंस पर उसका कितना अच्छा प्रभाव पड़ता था, वह बहुत खुश होती थी और उसे अपने आप पर गर्व भी होने लगा था। लेकिन अब हर घड़ी वह अधिक उदास और चिन्तामग्न होती जा रही थी। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के बारे में उसकी राय दृढ़ रूप से स्थिर हो चुकी थी, वरना प्रिंस को अब उससे सम्बन्ध रखनेवाली हर चीज़ एक पहेली जैसी और समझ में न आनेवाली लगती। लेकिन वह सचमुच यक़ीन करता था कि वह अब भी उबर सकती है। उसने रादोम्स्की से सच ही कहा था कि वह उससे दिल से और सच्ची मुहब्बत करता था और उसके प्रति उसके प्रेम में सचमुच किसी ऐसे बीमार और दयनीय बच्चे के प्रति आकर्षण जैसी बात थी, जिसे उसके हाल पर छोड़ देना कठिन ही नहीं असम्भव भी हो। वह उसके प्रति अपनी भावनाओं की व्याख्या किसी के सामने नहीं करता था और सच तो यह है कि जब तक उस विषय से बचना बिलकुल असम्भव ही न हो जाए तब तक वह उसके बारे में बात करना भी पसन्द नहीं करता था; जब वह नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के साथ अकेला होता था तब वे कभी अपनी भावनाओं की बातें नहीं करते थे, मानो उन्होंने आपस में तै कर रखा हो कि वे ऐसा नहीं करेंगे। उनकी खुशी-भरी और जानदार बातचीत में हर आदमी हिस्सा ले सकता था। दार्या अलेक्सेयेव्ना बाद में कहा करती थी कि उस पूरे दौरान में उन्हें देखकर वह अनायास ही खिल उठती थी और बेहद खुश हो जाती थी।

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की मनःस्थिति के बारे में उसकी इसी राय ने प्रिंस को कुछ हद तक तरह-तरह की दूसरी उलझनों से भी बचाए रखा। अब वह उस औरत से बिलकुल ही अलग थी जिसे वह तीन महीने पहले जानता था। मिसाल के लिए, अब उसे इस बात पर कोई ताज्जुब नहीं होता था कि उस वक़्त वह रो-रोकर, कोस-कोसकर और उसको बुरा-भला कहकर शादी करने से इन्कार करके भाग क्यों गई थी और अब खुद उसके साथ जल्दी से जल्दी शादी कर लेने की जिद क्यों कर रही थी। "मतलब है," प्रिंस ने सोचा, "अब उसे यह डर नहीं लगता, जैसा कि उस वक़्त लगता था, कि मेरे साथ उसकी शादी मेरी तबाही का कारण बन जाएगी।" प्रिंस की राय में, उसमें फिर से इतनी जल्दी आत्म-विश्वास पैदा हो जाना उसके लिए स्वाभाविक बात नहीं थी। पर अग्लाया

से उसकी नफ़रत भी इस आत्म-विश्वास का एकमात्र कारण नहीं हो सकता था : नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना में इससे अधिक गहरी भावनाओं की क्षमता थी। कहीं इसका कारण यह भय तो नहीं था कि अगर उसने रोगोझिन से शादी कर ली तो उसका क्या अंजाम होगा ? सारांश यह कि दूसरे कारणों के साथ मिलकर इन सभी कारणों ने इसमें योग दिया होगा; लेकिन जो बात प्रिंस के लिए सबसे अधिक स्पष्ट थी वह वही थी, जिसकी उसे बहुत समय से आशंका थी, कि उसकी कमज़ोरी, बीमार आत्मा बर्दाश्त न कर सकी होगी। हालाँकि इन सब बातों ने उसे एक तरह से ग़लतफ़हमियों से बचा लिया, लेकिन उस पूरे दौरान में उसे इससे न चैन मिला और न मन की शान्ति। कभी-कभी वह किसी भी चीज़ के बारे में न सोचने की कोशिश करता था; यह तो निश्चित रूप से प्रतीत होता था कि वह अपनी शादी को महत्त्वहीन औपचारिकता समझता था; स्वयं अपने भविष्य का मूल्य वह बहुत कम आँकता था। जहाँ तक आपत्तियों और बहसों का सवाल था, जैसे रादोम्स्की के साथ उसकी बहस, वह उनका कोई जवाब नहीं दे पाता था, और वह उनका जवाब देने में अपने आपको बिलकुल अक्षम पाता था, और यही कारण था कि वह इस तरह की बहसों से बचने की भरपूर कोशिश करता था।

फिर भी प्रिंस ने देखा था कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना अच्छी तरह समझती और जानती थी कि अग्लाया उसके लिए कितना महत्त्व रखती थी। वह बस कहती कुछ नहीं थी, लेकिन बिलकुल शुरू-शुरू में जब वह उसे येपांचिन-परिवार के यहाँ जाते हुए देख लेती थी उस समय प्रिंस ने उसकी 'सूरत' देखी थी। जब येपांचिन-परिवार चला गया तो वह उल्लास से खिल उठी। हालाँकि वह बहुत-सी चीज़ों की ओर ध्यान नहीं देता था और कोई सन्देह मन में पालने की उसमें कोई क्षमता न थी, यह विचार उसे भी सताने लगा कि अग्लाया को पाव्लोव्स्क से भगा देने के लिए नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना कहीं सरे-आम कोई बखेड़ा न खड़ा कर दे। ज़ाहिर है, कुछ हद तक नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ही शादी के बारे में अपनी प्रतिद्वन्द्वी को चिढ़ाने के लिए पाव्लोव्स्क के रहनेवालों के बीच हंगामा और हलचल पैदा किए रहती थी। येपांचिन-परिवार के लोगों से मिलना चूँकि कठिन था, इसलिए नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना एक बार उसे अपने साथ बग्घी पर ले गई और उसने कोचवान को उन लोगों के घर की खिड़कियों के पास से होकर गाड़ी ले चलने का हुक्म दिया। प्रिंस के लिए यह बिलकुल अप्रत्याशित बात थी; हमेशा की तरह इस बार भी यह बात कि क्या हो रहा है उसकी समझ में तब आई जब स्थिति को सम्भालना नामुमकिन था और गाड़ी खिड़कियों के पास से होकर गुजर रही थी। वह बोला तो कुछ नहीं लेकिन उसके बाद दो दिन तक उसकी तबियत खराब रही। नस्तास्या फिलोप्पोव्ना ने यह प्रयोग फिर नहीं दोहराया। शादी से पहले अन्तिम कुछ दिनों के दौरान वह विचारों में बहुत ज़्यादा डूबी रहने लगी थी; आमतौर पर अन्त में वह अपनी उदासी पर काबू पा लेती थी और फिर प्रसन्नचित्त हो जाती थी, लेकिन अधिक शान्त भाव से, उतने शोर-गुल के साथ नहीं, वैसे उल्लसित भाव से प्रसन्न नहीं जैसे कि वह अभी कुछ समय पहले रहती थी। प्रिंस अपना ध्यान बहुत ज़्यादा केन्द्रित करने लगा। उसे यह बात कुछ विचित्र लगी कि वह उससे रोगोझिन की चर्चा कभी नहीं करती थी। बस एक बार, शादी से पाँच दिन पहले, अचानक उसके पास दार्या अलेक्सेयेव्ना का सन्देश आया कि वह फ़ौरन उनके यहाँ चला आए क्योंकि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की हालत कुछ बुरी हो रही थी। प्रिंस ने उसे बिलकुल पागलपन की सी हालत में पाया : वह रह-रहकर चीखें मार रही थी, काँप रही थी और चिल्ला रही थी कि रोगोझिन उनके घर के ही बाग़ में छिपा हुआ है, कि उसने उसे अभी देखा था, कि रात को वह उसे मार डालेगा...उसका गला काट देगा ! सारे दिन वह बेचैन रही, लेकिन उसी शाम प्रिंस जब इप्पोलीत

को देखने गया तो कप्तान की विधवा ने, जो तभी शहर से लौटी थी, जहाँ वह अपने किसी निजी काम से गई थी, उसे बताया कि उस दिन रोगोझिन उसके फ़्लैट पर उससे मिलने आया था और उससे पाव्लोव्स्क के बारे में सवाल पूछे थे। प्रिंस के सवाल के जवाब में कि रोगोझिन किस वक़्त उसके यहाँ आया था उसने बताया था कि उस वक़्त, जिस वक़्त नस्तास्या फिलीप्पोव्ना के अनुसार, उसने उसे अपने बाग़ में देखा था। सारी घटना केवल एक भ्रम थी—बाद में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना खुद कप्तान की विधवा के पास गई, और बहुत विस्तार से उससे पूछ-ताछ करने के बाद उसे पूरी तरह सन्तोष हो गया और राहत मिली।

शादी से पहलेवाले दिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना बहुत उद्विग्नता की हालत में रही; अगले दिन के समारोह के लिए उसका लिबास पीटर्सबर्ग के ड्रेस-मेकर के यहाँ से आ गया था—शादी का जोड़ा, दुल्हन का नक़ाब, इत्यादि-इत्यादि। प्रिंस ने कभी सोचा भी नहीं था कि अपनी पोशाक के बारे में वह इतनी उत्कंठित हो उठेगी; वह हर चीज़ की तारीफ़ कर रहा था, और उसकी तारीफें सुनकर वह और ज़्यादा खुश हो रही थी। लेकिन उससे एक चूक हो गई : उसने प्रिंस को बताया कि उसने सुना था कि नगरवासी बहुत क्रुद्ध थे और कुछ नौजवान लफ़ंगे तो ढोल-ताशे और इस अवसर के लिए ख़ासतौर पर जोड़ी गई उपहासजनक तुकबन्दियों के साथ कोई बखेड़ा खड़ा करनेवाले थे और यह कि इन योजनाओं को पाव्लोव्स्क के बाक़ी समाज का अनुमोदन-सा प्राप्त था। और इसलिए अब वह अपना सिर ऊँचा करके चलने और उन सब लोगों को अपनी शादी की पोशाक की चमक-दमक से चकाचौंध कर देने के लिए पहले से भी ज़्यादा उत्सुक थी। "चिल्लाएँ, कसें ताने, अगर हिम्मत है तो !" इस विचार से ही उसकी आँखें चमक उठीं। उसके मन में एक और सपना भी पल रहा था, लेकिन वह उसकी चर्चा नहीं करती थी : वह उम्मीद कर रही थी कि अग्लाया खुद, या कम से कम उसका भेजा हुआ कोई आदमी गिरजाघर में भीड़ में मौजूद होगा, और वह यह सब कुछ देखेगा, और वह अपने आपको चुपके-चुपके इसके लिए तैयार कर रही थी। रात को कोई ग्यारह बजे इन्हीं विचारों में खोई हुई वह प्रिंस से विदा हुई; लेकिन आधी रात का घंटा बजने से पहले ही एक दूत भागा-भागा प्रिंस के पास दार्या अलेक्सेयेव्ना का सन्देश लेकर आया जिसमें उसने प्रार्थना की थी कि "वह फ़ौरन चला आए, कि उसकी हालत बहुत बुरी है"। प्रिंस वहाँ पहुँचा तो देखा कि उसकी होनेवाली दुल्हन अपने सोने के कमरे में बन्द घोर निराशा में डूबी हुई आँसू बहा रही है और उसे हिस्टीरिया का दौरा-सा पड़ रहा है; बड़ी देर तक तो बन्द दरवाज़े के पास उससे जो कुछ कहा जा रहा था वह उसे सुनाई ही नहीं दिया। आख़िरकार उसने दरवाज़ा खोला, सिर्फ़ प्रिंस को अन्दर आने दिया और उसके पीछे दरवाज़ा बन्द कर दिया, और उसके सामने घुटने टेककर बैठ गई। (बहरहाल, दार्या अलेक्सेयेव्ना ने, जिसने किसी तरह इस काण्ड का कुछ हिस्सा देखा था, बाद में बताया यही।)

"मैं क्या कर रही हूँ ! मैं क्या कर रही हूँ ! मैं तुम्हारे साथ क्या कर रही हूँ !" वह जुनून की हालत में प्रिंस की टाँगें मजबूती से दबोचकर चिल्लाई।

प्रिंस ने उसके साथ पूरा एक घंटा बिताया; हमें पता नहीं कि उन लोगों ने क्या बातें कीं। दार्या अलेक्सेयेव्ना ने बताया कि घंटे-भर बाद जब वे एक-दूसरे से अलग हुए तो सन्तुष्ट और खुश थे। प्रिंस ने रात को फिर उसका हाल पुछवाया; लेकिन नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना सो चुकी थी। सबेरे उसके सोकर उठने से पहले प्रिंस के यहाँ से दो बार कोई हाल पूछने दार्या अलेक्सेयेव्ना के यहाँ आ चुका था, और जब तीसरी बार आदमी आया तो उससे प्रिंस को यह सन्देश भिजवा दिया गया कि "नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना पीटर्सबर्ग से आई हुई पोशाक बनानेवालियों और बाल सँवारनेवालियों

की एक पूरी भीड़ से घिरी थी, कि रातवाली हालत ज़रा भी बाक़ी नहीं रह गई थी, कि अपनी शादी की सुबह को वह अपने बनाव-सिंगार में उसी तरह व्यस्त थी जिस तरह कि उस जैसी सुन्दर औरत ही व्यस्त हो सकती है, और यह कि उस समय ही इस बात पर बहुत महत्त्वपूर्ण सलाह-मशविरा हो रहा था कि वह कौन-से हीरे पहने और उन्हें किस तरह पहने"। प्रिंस पूरी तरह आश्वस्त हो गया।

इस शादी के बारे में निम्नलिखित पूरा प्रपंच उन लोगों का दिया हुआ है जो शादी के मौके पर मौजूद थे, और वह सही मालूम होता है।

शादी शाम को आठ बजे होनेवाली थी; नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना सात बजे तैयार हो गई। छह बजे से ही तमाशबीनों की भीड़ लेबेदेव के घर के चारों ओर और ख़ासतौर पर दार्या अलेक्सेयेव्ना के घर के चारों ओर जमा होने लगी थी; सात बजे से गिरजाघर भी भरने लगा था। वेरा लेबेदेवा और कोल्या प्रिंस की वजह से बहुत चिन्तित थे। लेकिन उन्हें घर में बहुत काम करना था : उन्हें प्रिंस के कमरों में शादी में आनेवाले मेहमानों के स्वागत-सत्कार की व्यवस्था करनी थी। शादी के बाद कोई बहुत बड़ी दावत नहीं होनेवाली थी। जिन लोगों का विवाहोत्सव में भाग लेना आवश्यक था उनके अलावा लेबेदेव ने प्तीत्सिन-दम्पती, गान्या, सेंट ऐन के ऑर्डर से विभूषित डॉक्टर और दार्या अलेक्सेयेव्ना को निमन्त्रित किया था। जब प्रिंस ने लेबेदेव से पूछा कि उसने डॉक्टर को क्यों बुलाया था, "जिसे वह जानता भी नहीं था", तो लेबेदेव ने आत्म-सन्तोष के भाव से जवाब दिया था : "उन्हें सम्मान से विभूषित किया गया है, बहुत ही प्रतिष्ठित वयोवृद्ध सज्जन हैं, साहब...उनके होने से काफ़ी रोब पड़ेगा !"—और प्रिंस को उसकी बात पर बहुत मज़ा आया था। केल्लेर और बुर्दोव्स्की बढ़िया लिबास और दस्ताने पहने बहुत जँच रहे थे; हालाँकि केल्लेर की तरफ़ से प्रिंस को और उन लोगों को, जिन्होंने उस पर भरोसा किया था लड़ने के लिए उसकी कुलबुलाहट की वजह से कुछ डर लग रहा था, और केल्लेर घर के चारों ओर जमा होनेवालों को बड़ी दुश्मनी के अन्दाज से घूर रहा था। आख़िरकार, साढ़े सात बजे प्रिंस गाड़ी पर चर्च के लिए रवाना हो गया। लगे हाथ हम यह भी बता दें कि प्रिंस स्वयं इस अवसर की स्वीकृत रीति-रस्मों और परम्पराओं में से एक भी छोड़ना नहीं चाहता था; हर चीज़ सबके सामने, खुले तौर पर, और नियमों के अनुसार की जा रही थी। चर्च में लगातार कानाफूसी करती हुई और फिकरेबाजी करती हुई भीड़ के बीच से किसी तरह केल्लेर के साथ रास्ता बनाता हुआ, जो दाएँ-बाएँ धमकी-भरी नज़रें डालता जा रहा था, प्रिंस वेदी के दरवाज़े के पीछे ग़ायब हो गया। केल्लेर दुल्हन को लाने चला गया, और दार्या अलेक्सेयेव्ना के घर के सामने उसे एक भीड़ दिखाई दी, जो प्रिंस के घर के पासवाली भीड़ से न सिर्फ़ दुगनी-तिगुनी बड़ी थी बल्कि उससे शायद तिगुनी ही बेतकल्लुफ़ भी थी। बरामदे पर चढ़ते समय उसने ऐसे फ़िक़रे सुने कि वह अपने आप पर काबू न रख सका और वह भीड़ को उचित शब्दों में सम्बोधित करनेवाला ही था कि सौभाग्यवश बुर्दोव्स्की और दार्या अलेक्सेयेव्ना ने, जो उससे मिलने के लिए भागकर बाहर निकल आए थे, उसे रोक लिया। उन्होंने उसे पकड़ लिया और जबर्दस्ती घसीटकर घर के अन्दर ले गए। केल्लेर झुँझलाया हुआ और जल्दी में था। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना उठी, एक नज़र आईने पर और डाली, 'विकृत मुस्कराहट' के साथ, जैसा कि केल्लेर ने बाद में बताया, यह मत व्यक्त किया कि वह "मुर्दे जैसी बेरंग" लग रही थी, बड़ी श्रद्धा से देव-प्रतिमा के आगे शीश नवाया और घर के बाहर निकली। उसे देखते ही भीड़ में एक शोर सा मच गया। यह सच है कि पहले तो लोग हँसे, उन्होंने तालियाँ पीटीं, और सिसकारियाँ सी भी भरीं, लेकिन एक ही क्षण बाद कुछ दूसरी आवाज़ें सुनाई दीं—"क्या सुन्दरी है !" भीड़ में से कुछ लोगों

ने सराहना की।

"न यह अपने ढंग की पहली है, और न आख़िरी होगी।"

"शादी सब कुछ ठीक कर देती है, बेवक़ूफ़ो !"

"ऐसी सुन्दरी कहीं देखने को नहीं मिलेगी," सबसे नजदीक खड़े हुए लोग चिल्लाए। "हुर्रा !"

"बिलकुल शहज़ादी है !" कोई क्लर्क चिल्लाया। "ऐसी शहज़ादी पर तो मैं अपनी जान तक लुटा दूँ ! 'मेरे साथ जो रात बिताए, जान से उसका मोल चुकाए' ![1]"

नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना जब बाहर निकली तो उसका रंग सचमुच बिलकुल चुने की तरह सफ़ेद हो रहा था, लेकिन उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें भीड़ को अंगारों की तरह दहकती हुई देख रही थीं। उसकी नज़र को देखकर भीड़ के तेवर बदल गए; गुस्से ने सराहना की चीख़ों का रूप धारण कर लिया। गाड़ी का दरवाज़ा खोल दिया गया था, केल्लेर सहारा देने के लिए अपनी बाँह दुल्हन की तरफ़ बढ़ा चुका था, कि इतने में उसने अचानक एक चीख़ मारी और बरामदे से झपटती हुई सीधी भीड़ में चली गई। उसके साथ के सभी लोग स्तम्भित रह गए। भीड़ उसके सामने फट गई, और बरामदे से पाँच-छह क़दम की दूरी पर अचानक रोगोझिन दिखाई दिया। नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने भीड़ में उसी की आँखें देख ली थीं। वह पागलों की तरह झपटती हुई उसके पास गई और उसके दोनों हाथ पकड़ लिए।

"मुझे बचा लो ! मुझे ले चलो ! जहाँ भी तुम्हारा जी चाहे, इसी वक़्त !"

रोगोझिन ने उसे अपनी बाँहों में थाम लिया और लगभग उसे गोद में उठाकर गाड़ी तक ले गया। फिर पलक झपकते उसने अपने बटुए में से सौ रूबल का नोट निकाला और उसे कोचवान की तरफ़ बढ़ा दिया।

"स्टेशन चलो, और अगर गाड़ी पकड़वा दी तो सौ और मिलेंगे !"

और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के पीछे ही वह भी कूदकर गाड़ी पर बैठ गया। कोचवान ने क्षण-भर के लिए भी संकोच नहीं किया, और घोड़ों पर चाबुक फटकारने लगा। बाद में केल्लेर ने दोष इस बात को दिया कि यह सब कुछ इतने अचानक हो गया। "एक सेकंड का भी वक़्त मिलता तो मैं कोई तरकीब सोच लेता मैं ऐसा कभी होने ही न देता !" उसने घटना का वर्णन करते हुए कहा। उसने और बुर्दोव्स्की ने उसी समय पास से गुजरती हुई एक गाड़ी को रोका था, और उनके पीछे लपके थे लेकिन स्टेशन के रास्ते में उन्होंने अपना विचार बदल दिया था, क्योंकि "बहुत देर हो चुकी है। उसे जबर्दस्ती तो वापस लाया नहीं जा सकता !"

"और यह बात प्रिंस को भी अच्छी नहीं लगेगी," बेहद घबराए हुए बुर्दोव्स्की ने फ़ैसला किया।

रोगोझिन और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना वक़्त से स्टेशन पहुँच गए। घोड़ागाड़ी से उतरकर रोगोझिन ट्रेन में चढ़ने जा ही रहा था कि उसने एक लड़की को रोका जो पुरानी लेकिन काफ़ी भला-सा गहरे रंग का कोट अपने कन्धे पर डाले हुए थी और सिर पर उसने रेशमी रूमाल बाँध रखा था।

"कोट के पचास रूबल लोगी ?" अचानक उसने रक़म लड़की की ओर बढ़ाते हुए पूछा। इससे पहले कि उसे आश्चर्य प्रकट करने का समय मिलता या समझ पाती कि हो क्या रहा है, रोगोझिन ने पचास रूबल का नोट उसके हाथ में थमा दिया था और उससे उसका कोट और रूमाल लेकर नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के सिर और कन्धों पर डाल दिया था। उसकी शानदार पोशाक कुछ ज़्यादा

1. पुश्किन की कविता 'मिस्र की रातें' की एक पंक्ति, जिसमें क्लियोपात्रा के जीवन की एक घटना का वर्णन किया गया है।

ही भड़कीली थी और ट्रेन के यात्रियों का ध्यान उसकी ओर जाता; लड़की बाद में समझ गई कि उसके पुराने और बेकार चीथड़ों को इतनी ज़्यादा रक़म देकर क्यों खरीदा गया था।

जो कुछ हुआ था उसकी ख़बर असाधारण तेजी से चर्च पहुँची। जब केल्लेर भीड़ में से रास्ता बनाता हुआ प्रिंस के पास जा रहा था तो बहुत-से लोग, जिन्हें वह जानता भी नहीं था, उससे पूछ-ताछ करने के लिए लपक पड़े। लोग एक-दूसरे से ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे, अपने सिर हिला रहे थे, यहाँ तक कि हँस भी रहे थे, गिरजाघर से कोई भी नहीं गया; सब लोग यह देखने का इन्तज़ार कर रहे थे कि दूल्हे पर इस ख़बर का क्या असर पड़ता है। उसका चेहरा उतर गया, लेकिन उसने ख़बर शान्त भाव से सुनी, और मुश्किल से ही सुनाई देनेवाली आवाज में बुदबुदाकर कहा : "मुझे इसी का डर था, फिर भी मैं नहीं समझता था कि ऐसा होगा...", और थोड़ी देर रुककर उसने इतना और कहा, "लेकिन...उसकी हालत में...यह कोई ऐसी अनहोनी बात नहीं थी।" इस तरह की टिप्पणी को केल्लेर ने बाद में "बेजोड़ दार्शनिकता की मिसाल" कहा। प्रिंस देखने में बिलकुल शान्त और प्रसन्नचित्त चर्च से चला गया, कम से कम बहुत-से लोगों को लगा ऐसा ही और बाद में उन्होंने कहा भी यही। वह जल्दी से जल्दी घर पहुँचने और वहाँ अकेला छोड़ दिए जाने के लिए उत्सुक था; लेकिन लोग उसे ऐसा करने नहीं दे रहे थे। कुछ निमन्त्रित अतिथि उसके पीछे-पीछे कमरे में आ गए, जिनमें प्तीत्सिन, गान्या और डॉक्टर भी शामिल था, जो किसी तरह घर जाने को तैयार नहीं थे। और फिर सारे घर को निठल्ले लोगों की भीड़ ने घेर रखा था। अभी प्रिंस बरामदे में ही था कि उसने केल्लेर और लेबेदेव को कुछ बहुत ही शरीफ़ लगनेवाले लोगों से जबर्दस्त झगड़ा शुरू करते सुना, जो बिलकुल अजनबी थे और बरामदे में आने की जिद कर रहे थे। प्रिंस झगड़नेवालों के पास गया और उसने बड़ी नरमी से सफ़ेद बालोंवाले गठीले बदन के एक सज्जन को सम्बोधित किया, जो अन्दर आने के इच्छुक कुछ दूसरे लोगों के आगे सीढ़ियों पर खड़े थे और उसने बड़ी विनम्रता से उन्हें अन्दर आकर उसे सम्मानित करने का निमन्त्रण दिया। वह सज्जन घबरा उठे, फिर भी अन्दर आ गए, और उनके पीछे-पीछे दो आदमी और भी आ गए। भीड़ में से कुल मिलाकर सात-आठ आदमी आगे बढ़कर अन्दर आ गए; वे जहाँ तक मुमकिन था बेतकल्लुफ़ लगने की कोशिश कर रहे थे; लेकिन उनके सिवा किसी और ने इतनी हिम्मत न दिखाई और भीड़ में लोग उन बिना-बुलाए घुस जानेवालों को बुरा-भला कहने लगे। जो लोग अन्दर पहुँच गए थे उनसे बैठने को कहा गया, बातचीत का सिलसिला छिड़ गया और चाय मँगवाई गई। यह सब कुछ बड़ी विनम्रता से और सलीक़े के साथ किया गया, जिस पर बिन-बुलाए मेहमानों को काफ़ी आश्चर्य हुआ। ज़ाहिर है, बातचीत में जान डालने और उसकी दिशा 'सबसे ज्वलन्त' विषय की ओर मोड़ देने की कोशिशें की गई; कुछ ढिठाई के सवाल पूछे गए और कुछ 'तीखे' फ़िक़रे भी कसे गए। प्रिंस ने हर एक का जवाब इतनी सादगी और हार्दिकता से और साथ ही गरिमा और अपने अतिथियों की सज्जनता में इतने विश्वास के साथ दिया कि ढिठाई के सवाल अपने आप ही खोकर रह गए। धीरे-धीरे बातचीत लगभग गम्भीर हो गई। एक सज्जन ने किसी की बात के सिलसिले में बड़े क्रोध से क़सम खाकर कहा कि चाहे जो हो जाए वह अपनी ज़मीन-जायदाद नहीं बेचेंगे बल्कि इन्तज़ार करते रहेंगे और बाद में उनका दाँव सीधा पड़ेगा और यह कि "उद्यमशीलता पैसे से बढ़कर होती है"; और "अगर आप जानना ही चाहते हैं, साहब, तो यही मेरा सिद्धान्त है"। चूँकि वह प्रिंस को सम्बोधित करके यह बात कह रहे थे इसलिए प्रिंस ने उनकी बहुत तारीफ़ की, हालाँकि लेबेदेव ने उसके कान में बताया कि उन सज्जन के पास न घर था न बार और ज़मीन-जायदाद तो किसी भी तरह की उनके पास कभी थी ही नहीं। लगभग एक घंटा बीत गया,

चाय ख़त्म हो गई और चाय के बाद मेहमानों को और ज़्यादा देर रुकते बहुत शर्म आई। डॉक्टर और सफ़ेद बालोंवाले सज्जन ने प्रिंस से बड़े तपाक से हाथ मिलाया और वे सभी लोग काफ़ी जोश के साथ हल्ला-गुल्ला मचाते हुए वहाँ से विदा हुए। शुभकामनाएँ व्यक्त की गईं और इस आशय की बहुत-सी बातें कही गईं कि "वह निराशा का शिकार न हों, कि शायद यह अच्छा ही हुआ", वगैरह-वगैरह। यह सच है कि शैम्पेन की माँग करने की कोशिशें की गईं, लेकिन बुजुर्ग मेहमानों ने नौजवानों को रोक दिया। जब सब लोग चले गए तो केल्लेर ने झुककर लेबेदेव से कहा, "हम-तुम होते तो झंझट खड़ा कर देते, लड़ना शुरू कर देते, अपने नाम को बट्टा लगवाते और पुलिस बुलवानी पड़ती, लेकिन इन्होंने कुछ नए दोस्त बना लिए और...दोस्त भी कैसे ! मैं इन लोगों को जानता हूँ !" लेबेदेव ने, जो काफ़ी तरंग में था, आह भरी और बोला, "तूने बुद्धि और विवेक रखनेवाले लोगों से तो छिपाया और दूध-पीते बच्चों को बता दिया', मैंने यह बात पहले इनके बारे में कही थी, लेकिन अब मैं इसमें इतना और जोड़ दूँगा कि प्रभु ने स्वयं दूध-पीते बच्चे को सुरक्षित रखा है और उसे अथाह गर्त्त में गिरने से बचा लिया है, उसने और उसके सारे सन्तों ने।"

आख़िरकार कोई साढ़े दस बजे प्रिंस को एकान्त नसीब हुआ। उसके सिर में दर्द हो रहा था। सबसे बाद में कोल्या गया था, जिसने उसे शादी के कपड़े बदलकर रोजमर्रा के कपड़े पहनने में मदद की थी। वे बड़ी हार्दिकता से एक-दूसरे से विदा हुए। जो कुछ हुआ था उसकी कोल्या ने कोई चर्चा नहीं की, लेकिन अगले दिन बहुत सबेरे आने का वादा किया। बाद में उसी से पता चला कि विदा होते समय प्रिंस ने उसे कुछ भी नहीं बताया था कि वह क्या करनेवाला था, और इस तरह उसने अपना इरादा कोल्या तक से छिपाया था। थोड़ी ही देर बाद सारे घर में लगभग कोई भी नहीं रह गया : बुर्दोव्स्की इप्पोलीत के यहाँ चला गया था, केल्लेर और लेबेदेव भी कहीं चले गए थे। बस वेरा लेबेदेवा कुछ देर प्रिंसवाले कमरों में रही और हर चीज़ को पूर्ववत् कर देने में व्यस्त रही। जाने से पहले उसने प्रिंस के कमरे में देखा। वह मेज़ पर कुहनियाँ टिकाए और दोनों हाथों से अपना सिर थामे बैठा था। उसने चुपके से उसके पास जाकर उसका कन्धा छुआ; प्रिंस ने घबराकर उसे देखा और एक मिनट को ऐसा लगा कि वह कुछ याद करने की कोशिश कर रहा है; फिर, यह याद आने पर और होश-हवास ठीक होने पर, वह अचानक अत्यन्त उद्विग्न हो उठा। लेकिन उसने बस इतना किया कि वेरा से बहुत गिड़गिड़ाकर अनुरोध किया कि वह सबेरे सात बजे उसका दरवाज़ा खटखटा दे ताकि वह शहर जानेवाली पहली गाड़ी पकड़ सके। वेरा ने वादा कर लिया; प्रिंस उसकी मिन्नत करने लगा कि वह इसके बारे में किसी से कुछ कहे न। उसने फिर वादा कर लिया और आख़िरकार जब वेरा ने बाहर जाने के लिए दरवाज़ा खोला तो प्रिंस ने उसे तीसरी बार रोका और उसके हाथ पकड़कर उन्हें चूमा और फिर उसके माथे पर प्यार किया, और 'असाधारण' भाव से उससे बोला, "कल सबेरे मिलेंगे !" बहरहाल, वेरा ने बाद में बताया यही। वह प्रिंस के बारे में अपने मन में गहरी चिन्ता लिए वहाँ से चली गई। सबेरे वह कुछ ज़्यादा प्रसन्नचित्त दिखाई दे रही थी, जब सात बजे के कुछ ही देर बाद उसने, जैसा कि तै हुआ था, उसका दरवाज़ा खटखटाया और उसे बताया कि पीटर्सबर्ग की गाड़ी पन्द्रह मिनट में छूट जाएगी; वेरा को ऐसा लगा कि जब प्रिंस ने उसके खटखटाने पर दरवाज़ा खोला तो वह बहुत प्रसन्न था, और मुस्करा तक रहा था। पिछली रात उसने कपड़े तो ठीक से नहीं उतारे थे, लेकिन वह सोया था। उसने वेरा से कहा कि शायद वह शाम तक लौटकर आ जाएगा। सो हुआ यह कि उस समय उसने केवल वेरा को ही यह बताना सम्भव और आवश्यक समझा था कि वह शहर जा रहा है।

11

घंटे-भर बाद वह पीटर्सबर्ग पहुँच चुका था और नौ बजने के कुछ समय बाद वह रोगोझिन के दरवाज़े की घंटी बजा रहा था। वह सदर दरवाज़े से अन्दर आया; बड़ी देर तक किसी ने जवाब नहीं दिया। आख़िरकार, रोगोझिन की माँ के फ़्लैट का दरवाज़ा खुला और एक बुज़ुर्ग-सी नौकरानी निकली।

"पर्फ़्योन सेम्योनोविच घर पर नहीं हैं," उसने दरवाज़े पर से ही कहा। "आपको किससे मिलना है ?"

"पर्फ़्योन सेम्योनोविच से।"

"वह घर पर नहीं हैं, साहब।"

नौकरानी प्रिंस को बड़े कुतूहल से देख रही थी।

"कम से कम इतना तो बता दो मुझे कि कल रात वह घर पर ही थे या नहीं ? और...क्या कल वह अकेले आए थे ?"

नौकरानी एकटक उसे देखती रही, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"कल...रात को...यहाँ उनके साथ...नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना तो नहीं थीं ?"

"साहब, क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आप हैं कौन ?"

"प्रिंस लेव निकोलायेविच मीश्किन–हम बहुत अच्छे दोस्त हैं।"

"वह घर पर हैं नहीं, साहब।"

यह कहकर नौकरानी ने अपनी नज़रें झुका लीं।

"और नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ?"

"इसका, साहब, मुझे कुछ पता नहीं।"

"ज़रा रुको तो ! वह वापस क़ब आएँगे ?"

"यह भी मुझे मालूम नहीं, साहब।"

दरवाज़ा बन्द हो गया।

प्रिंस ने घंटे-भर बाद आने का फ़ैसला किया। अहाते में झाँकने पर उसे दरबान दिखाई दिया।

"पर्फ़्योन सेम्योनोविच साहब घर पर हैं ?"

"जी हाँ, साहब।"

"फिर मुझे अभी यह क्यों बताया गया कि वह घर पर नहीं हैं ?"

"उनके नौकर ने आपको बताया, साहब ?"

"नहीं, उनकी माँ की नौकरानी ने। मैंने पर्फ़्योन सेम्योनोविच के दरवाज़े की घंटी बजाई थी लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।"

"तो, साहब, कहीं बाहर चले गए होंगे," दरबान ने नतीजा निकाला। "बात यह है, साहब, वह कहकर तो जाते नहीं। कभी-कभी वह चाभी अपने साथ लेकर चले जाते हैं और उनका फ़्लैट तीन-तीन दिन तक बन्द रहता है।"

"तुम्हें पक्का मालूम है कि कल वह घर ही पर थे ?"

"जी हाँ, साहब, बिलकुल थे। कभी-कभी वह सदर दरवाज़े से चले जाते हैं, तब मैं उन्हें देख नहीं पाता।"

"कल नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना थीं उनके साथ ?"

"यह तो मैं कह नहीं सकता, साहब। वह यहाँ बहुत आती नहीं हैं। अगर आई होतीं तो मुझे

पता ज़रूर होता।"

प्रिंस बाहर चला गया और कुछ देर विचारों में डूबा हुआ सड़क की पटरी पर टहलता रहा। जिन कमरों में रोगोझिन रहता था उनकी सारी खिड़कियाँ बन्द थी; उसकी माँ के फ़्लैट की लगभग सभी खिड़कियाँ खुली थीं। तेज धूप निकली हुई थी, मौसम गर्म था; प्रिंस सड़क पार करके दूसरी ओरवाली पटरी चला गया और एक बार फिर रुककर खिड़कियों की ओर देखने लगा; वे न सिर्फ़ बन्द थीं बल्कि लगभग सभी पर सफ़ेद परदे पड़े हुए थे।

वह एक क्षण वहाँ खड़ा रहा और—बड़े अचरज की बात है—अचानक उसे ऐसा लगा कि एक परदे का कोना उठा और क्षण-भर को उसे रोगोझिन का चेहरा दिखाई दिया, लेकिन पल भर में वह ग़ायब हो गया। वह थोड़ी देर और इन्तज़ार करता रहा और उसके बाद उसने जाकर फिर घंटी बजाने का फ़ैसला किया, लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया और इसे घंटे-भर के लिए टाल दिया। "कौन जाने ? शायद भ्रम ही हो।..."

उस क्षण वह सबसे ज़्यादा उत्सुक जल्दी से जल्दी इज़्माइलोव्स्की बैरकों के पास स्थित उस फ़्लैट में पहुँचने के लिए था, जिसमें अभी हाल में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना रहती थी। वह जानता था कि तीन सप्ताह पहले उसके अनुरोध पर वह पाव्लोव्स्क से चली आई थी और अपनी एक पुरानी परिचित के यहाँ रहने गई थी, एक अध्यापक की विधवा के यहाँ, जो बाल-बच्चोंवाली अत्यन्त सम्मानित महिला थीं और जो सजे-सजाए कमरे किराए पर उठाकर अपना पेट पालती थीं। बहुत मुमकिन है कि पाव्लोव्स्क वापस चले जाने के बाद भी नस्तास्या फिलीप्पोव्ना ने अपने कमरे छोड़े न हों; कम से कम यह तो मुमकिन था ही कि उसने रात अपने पुराने फ़्लैट में बसर की हो, जहाँ, ज़ाहिर है, रोगोझिन उसे लाया होगा। प्रिंस ने किराए की घोड़ागाड़ी ली। रास्ते में उसके दिमाग़ में यह बात आई कि उसे पहले वहीं जाना चाहिए था, क्योंकि वह बहुत ही नामुमकिन बात थी कि रात के वक़्त वह सीधे रोगोझिन के यहाँ गई हो। उसे दरबान के वे शब्द भी याद आए कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना वहाँ बहुत ज़्यादा नहीं जाती थी; क्योंकि अगर आमतौर पर वह वहाँ बहुत ज़्यादा नहीं जाती थी तो इसकी कोई वजह नहीं थी कि अब वह रोगोझिन के यहाँ रही हो। इस तरह के तसल्ली देनेवाले विचारों से अपना मन बहलाकर आख़िरकार प्रिंस जब इज़्माइलोव्स्की बैरक पहुँचा तो उसके जिस्म में जैसे जान ही नहीं रह गई थी।

उसे यह जानकर बेहद ताज्जुब हुआ कि विधवा के यहाँ किसी ने नस्तास्या फिलीप्पोव्ना के बारे में न उस दिन सुना था न उससे पिछले दिन, लेकिन वे सब लोग उसे देखने के लिए इस तरह भागे हुए आए जैसे उनके सामने कोई अजूबा आ गया हो। विधवा का समूचा भरा-पूरा परिवार, यानी सात में पन्द्रह साल तक की लड़कियाँ ही लड़कियाँ—और सब एक-दूसरे से एक-एक साल छोटी-बड़ी—अपनी माँ के पीछे-पीछे भागी हुई आईं और उसे घेरकर मुँह बाए एकटक देखती रहीं। उनके पीछे-पीछे सिर पर काला रूमाल बाँधे उनकी मरियल दुबली-पतली मौसी आईं और सबसे आख़िर में चश्मा लगाए एक वृद्ध महिला जो उनकी नानी थीं। विधवा ने प्रिंस से अन्दर आकर बैठने का अनुरोध किया। वह जाकर बैठ गया। वह फ़ौरन समझ गया कि उन लोगों को अच्छी तरह मालूम था कि वह कौन था, और यह कि उन्हें इस बात का भी अच्छी तरह पता था कि कल उसकी शादी हो जानी चाहिए थी और वे शादी के बारे में और इस कमाल की बात के बारे में पूछने के लिए बेताब हो रही थीं कि वह उस औरत का पता पूछ रहा था जिसे इस समय उसके साथ पाव्लोव्स्क में होना चाहिए था, लेकिन वे शिष्टता के कारण उससे पूछ नहीं रही थीं। उसने थोड़े-से शब्दों में शादी के बारे में उनकी जिज्ञासा दूर कर दी, उनकी आश्चर्य की चीख़ें और आह

भरने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं, सो उसे लगभग बाक़ी सारी बातें भी उन्हें बतानी पड़ीं—ज़ाहिर है, संक्षिप्त रूपरेखा की शक्ल में। आख़िरकार, समझदार और उद्विग्न महिलाओं की परिषद् ने फ़ैसला किया कि उसे सबसे पहले रोगोझिन के यहाँ जाकर किसी भी तरह दरवाज़ा खुलवाना चाहिए और उससे सारी सच्चाई का पता लगाना चाहिए। अगर वह घर पर न हो (जिसका उसे पक्का पता लगाना चाहिए), या वह कुछ बताने से इन्कार करे तो उसे सेम्योनोव्स्की बैरकों के इलाक़े में जाकर एक जर्मन महिला से मिलना चाहिए, जो नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना की परिचित थी और अपनी माँ के साथ रहती थी—शायद अपनी उद्विग्नता के कारण और अपने को छिपाए रखने की फ़िक्र में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ने रात उन लोगों के साथ बिताई हो। प्रिंस निराशा से बिलकुल चूर हो उठा; बाद में उन लोगों ने बताया कि उसका रंग बहुत पीला दिखाई दे रहा था; सच तो यह है कि उसकी टाँगें लगभग बिलकुल जवाब दिए दे रही थीं। आख़िरकार, उनकी चाँव-चाँव के बीच वह किसी तरह इतना समझ पाया कि वे सब साथ मिलकर काम करने की चर्चा कर रही थीं और उससे शहर में उसका पता पूछ रही थीं। उसका कोई पता था ही नहीं, उन्होंने उसे किसी होटल में ठहर जाने की सलाह दी। क्षण-भर सोचने के बाद प्रिंस ने उन्हें उस होटल का पता दे दिया जहाँ वह पहले ठहरा था और जहाँ पाँच हफ़्ते पहले उसे मिरगी का दौरा पड़ा था। इसके बाद वह फिर रोगोझिन के यहाँ जाने के लिए चल पड़ा। इस बार उसे न सिर्फ़ यह कि रोगोझिन के यहाँ से कोई जवाब नहीं मिला बल्कि उसकी माँ के फ़्लैट से भी कोई जवाब नहीं मिला। प्रिंस दरबान को ढूँढ़ने नीचे गया और काफ़ी कठिनाई के बाद वह उसे अहाते में मिल गया; दरबान व्यस्त था और उसने उसकी बात का लगभग कोई जवाब नहीं दिया—सच तो यह है कि उसने उसकी ओर ठीक से देखा भी नहीं। लेकिन उसने यह बात बिलकुल स्पष्ट रूप में बताई कि रोगोझिन "बहुत सबेरे निकल गए थे, वह पाव्लोव्स्क गए हुए थे और उस दिन घर नहीं आएँगे"।

"मैं राह देखूँगा। शायद शाम तक तो लौट ही आएँगे ?"

"कौन जाने, साहब, हफ़्ते-भर न लौटें। उनका कुछ ठीक नहीं, साहब।"

"अरे, रात तो उन्होंने यहाँ बिताई थी, ठीक है ?"

"जी हाँ, सो तो बिताई थी।..."

ये सारी बातें संदिग्ध और कुछ गोलमोल थीं। हो सकता है कि इसी बीच दरबान को नए आदेश मिल गए हों—पहले तो वह बहुत बातें कर रहा था, लेकिन अब उसने बिलकुल ही मुँह फेर लिया था। लेकिन प्रिंस ने कोई दो घंटे बाद फिर आने का और अगर ज़रूरी हुआ तो घर पर निगरानी तक रखने का फ़ैसला किया; अभी तक एक और उम्मीद बाक़ी थी—जर्मन महिला, और वह घोड़ागाड़ी करके सेम्योनोव्स्की बैरकों की ओर चल पड़ा।

लेकिन जर्मन महिला के यहाँ तो कोई यह समझा तक नहीं कि उसे चाहिए क्या। कुछ शब्द जो उसके मुँह से निकल गए उनसे प्रिंस को इतना पता ज़रूर चल गया कि लगभग पन्द्रह दिन पहले उस जर्मन सुन्दरी का नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना से जबर्दस्त झगड़ा हो गया था, और इस बीच उसे उसकी कोई ख़बर नहीं मिली थी और वह उसे यह समझाने की भरपूर कोशिश कर रही थी कि "अगर उसने सारी दुनिया के तमाम प्रिंसों से भी शादी कर ली हो तब भी" उसे उसके बारे में कुछ जानने में दिलचस्पी नहीं थी। प्रिंस जल्दी से वहाँ से निकल आया। लगे हाथ उसके मन में यह विचार उठा कि शायद वह पहले की तरह मास्को चली गई हो और रोगोझिन ज़रूर उसके साथ या उसके पीछे-पीछे गया होगा। "कम से कम उसका कुछ सुराग़ तो मिले !" लेकिन उसे याद आया कि उसे होटल में ठहरना था और वह जल्दी-जल्दी लितेइनाया स्ट्रीट की ओर चल पड़ा।

वहाँ उसे फ़ौरन एक कमरा दे दिया गया। वेटर ने उससे खाने को पूछा; उसने ख़ब्तुलहवासी में कह दिया कि वह खाना खाएगा और जब वह सम्भला तो उसे अपने आप पर बहुत गुस्सा आया क्योंकि खाने की वजह से उसे आधे घंटे की देर हो गई थी, और सिर्फ़ बाद में जाकर उसकी अक्ल में आया कि अगर खाना ला भी दिया गया था तो उसके लिए उसे खाना तो ज़रूरी नहीं था। उस अँधेरे और घुटन-भरे गलियारे में उस पर एक विचित्र संवेदना छा गई, एक ऐसी संवेदना जो बड़े कष्टप्रद ढंग से विचार का रूप धारण करने की चेष्टा कर रही थी; लेकिन वह चंचल विचार उसकी पकड़ में नहीं आ रहा था। आख़िरकार, बिलकुल परेशानी की हालत में वह होटल से निकल गया; उसका सिर चक्कर खा रहा था, लेकिन वह अब जाए कहाँ ? वह रोगोझिन के घर की ओर लपका।

रोगोझिन वापस नहीं आया था; किसी ने दरवाज़ा नहीं खोला; उसने उसकी माँ के फ़्लैट की घंटी बजाई; दरवाज़ा खुला और उसे फिर बताया गया कि रोगोझिन घर पर नहीं था और शायद तीन दिन तक वापस न आए। जो बात प्रिंस को परेशान कर रही थी वह यह थी कि पहले की तरह ही इस बार भी नौकरानी ने उसे बड़े कुतूहल से देखा था। इस बार दरबान उसे मिला ही नहीं। पहले की तरह ही इस बार भी वह सड़क पार करके सामनेवाली पटरी पर चला गया, नज़र उठाकर खिड़कियों की ओर देखता रहा और घूटन-भरी गर्मी में आधे घंटे तक या शायद इससे भी ज़्यादा, इधर से उधर टहलता रहा; इस बार कुछ भी नहीं हिला; खिड़कियाँ खुली हुई नहीं थीं, सफ़ेद परदे भी बिलकुल नहीं हिल रहे थे। उसे पक्का विश्वास हो गया कि पहले भी उसने वह सब अपनी कल्पना में सोचा होगा; सच तो यह था कि खिड़कियों के काँच इतने मैले थे और स्पष्टतः इतने दिन से साफ़ नहीं किए गए थे कि अगर कोई उनमें से देख भी रहा होता, तो बाहर से कुछ भी पहचान पाना बहुत कठिन था। इस विचार से कुछ राहत पाकर वह फिर घोड़ागाड़ी करके इज़्माइलोव्स्की बैरकों के इलाक़े में अध्यापक की विधवा के यहाँ चला गया।

वहाँ वे उसकी राह देख रही थीं। विधवा तीन-चार जगह, यहाँ तक कि रोगोझिन के यहाँ भी हो आई थी—नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना का कहीं पता नहीं था ! प्रिंस ने चुपचाप सुना, कमरे में गया, सोफ़े पर बैठ गया, और उन्हें इस तरह घूरने लगा जैसे उसकी समझ में न आ रहा हो कि वे बातें किस चीज़ के बारे में कर रही थीं। अजीब बात थी—कुछ देर को हर चीज़ बड़ी जल्दी उसकी समझ में आ जाती थी और फिर वह बिलकुल ख़ब्तुलहवास हो जाता था। पूरे परिवार ने बाद में बताया कि उस दिन वह "आश्चर्यजनक हद तक" विचित्र आदमी लग रहा था, इसलिए "बिलकुल मुमकिन है कि सारे चिन्ह उस वक़्त ही मौजूद थे"। आख़िरकार वह उठा और उसने नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के कमरे देखने की इच्छा प्रकट की। वे दो बड़े-बड़े रोशन, ऊँची छतवाले कमरे थे, जो बहुत सलीक़े से सजे हुए थे और, निस्सन्देह बहुत ज़्यादा किराए पर उठाए गए होंगे। महिलाओं ने बाद में बताया कि प्रिंस ने कमरे की हर चीज़ को बड़े ध्यान से जाँचा, छोटी-सी मेज़ पर लाइब्रेरी की एक किताब—फ्रांसीसी उपन्यास **'माडाम बवारी'**—खुली हुई देखी थी, उसने खुले हुए पन्ने का कोना मोड़ दिया था, किताब अपने साथ ले जाने की इजाजत माँगी थी, और उनकी इन आपत्तियों को सुने बिना कि वह लाइब्रेरी की किताब थी उसे जेब में रख लिया था। फिर वह खुली खिड़की के पास बैठ गया था और ताश खेलने की मेज़ पर नज़र पड़ने पर, जिस पर खरिया के निशान बने हुए थे, उसने पूछा था कि ताश कौन खेलता था। उन लोगों ने उसे बताया था कि रोज शाम को नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना रोगोझिन के साथ 'गुलामचोर', 'माँग-पत्ता', 'चानस', 'हिव्स्ट' या 'अपना-अपना तुरुप' खेला करती थी—तरह-तरह के खेल, कि उन्होंने ताश खेलना हाल ही में नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के पाव्लोव्स्क से पीटर्सबर्ग वापस आने के बाद शुरू किया था क्योंकि वह

शिकायत करती रहती थी कि वह ऊब महसूस करती थी और यह कि सारी शाम रोगोझिन एक शब्द भी नहीं बोलता था और कि उसे बातें करना नहीं आता था, और वह अकसर रोती रहती थी; और अगली शाम रोगोझिन ने अपनी जेब से ताश की गड्डी निकाली थी; नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना हँस दी थी और उन्होंने खेलना शुरू कर दिया था। प्रिंस ने पूछा कि जिन ताशों से वे खेलते थे वे कहाँ थे, लेकिन उन लोगों को वह कहीं मिले नहीं; रोगोझिन हमेशा ताश खुद अपनी जेब में लाता था, हर बार नई गड्डी, और उसे फिर अपने साथ वापस ले जाता था।

महिलाओं ने उसे सलाह दी कि वह रोगोझिन के यहाँ फिर जाकर उससे मिलने की पूरी कोशिश करे और इस बार अड़ जाए, लेकिन अभी नहीं, शाम को ही वहाँ जाए—"शायद वह घर पर ही होगा"। विधवा ने खुद अपनी मर्जी से कहा कि वह शाम से पहले पाव्लोव्स्क जाकर दार्या अलेक्सेयेव्ना से मिलेगी—शायद उसे कुछ मालूम हो। उन्होंने प्रिंस से दस बजे फिर आने को कहा, कुछ नहीं तो अगले दिन की योजनाएँ बनाने के लिए ही। उनके तसल्ली के शब्दों और उन्होंने जो उम्मीदें उसे बँधाई थीं उनके बावजूद, प्रिंस घोर निराशा में डूब गया। वह अकथनीय व्यथा की स्थिति में अपने होटल पहुँचा। धूल-भरे और दम घोंटनेवाले गर्मीवाले शहर ने उसे मानो शिकंजे में कसकर चकनाचूर कर दिया था; वह मनहूस सूरतवाले या शराबी लोगों के धक्के खाता चला जा रहा था, राहगीरों के चेहरों को निरुद्देश्य घूर रहा था, और शायद चलते-चलते ज़रूरत से ज़्यादा दूर निकल गया था; जब वह होटल में अपने कमरे में पहुँचा तो लगभग शाम हो चुकी थी। उसने थोड़ी देर आराम करके रोगोझिन के यहाँ फिर जाने का फ़ैसला किया, जैसी कि उसे सलाह दी गई थीं; सोफ़े पर बैठकर उसने दोनों कुहनियाँ मेज़ पर टिका लीं और विचारमग्न हो गया।

भगवान ही जानता है कि वह वहाँ कितनी देर ऐसे ही बैठा रहा और क्या सोचता रहा। उसे बहुत-सी चीज़ों से डर लग रहा था और बड़ी पीड़ा और वेदना के साथ उसने अनुभव किया कि वह बेहद डर रहा था। सहसा उसे वेरा लेबेदेवा का ध्यान आया; फिर उसके मन में यह बात आई कि शायद लेबेदेवा को उसके बारे में कुछ मालूम हो, और अगर उसे न भी मालूम हो तो वह उसके मुकाबले में कहीं ज़्यादा जल्दी और आसानी से पता लगा सकता था। फिर उसे इप्पोलीत का ख़्याल आया और इस बात का कि रोगोझिन इप्पोलीत से मिलने जाया करता था। फिर उसे खुद रोगोझिन का ख़्याल आया—हाल ही में जनाज़े के वक़्त, फिर पार्क में, फिर—अचानक यहाँ गलियारे में जब वह हाथ में चाक़ू लिए उसकी घात में कोने में छिपा खड़ा था। अब उसे उसकी आँखें याद आ रही थीं, जो उस वक़्त अँधेरे में उसे देख रही थीं। वह चौंक पड़ा—वह विचार जो अभी कुछ ही घंटे पहले उसे छलावा देकर बच निकला था अचानक उसके दिमाग़ में आ गया।

आंशिक रूप से वह विचार यह था कि अगर रोगोझिन पीटर्सबर्ग में था, और वह कुछ समय के लिए उससे छिप भी रहा था, तो भी अन्त में वह उससे, अच्छे या बुरे इरादे से मिलने ज़रूर आएगा, बिलकुल मुमकिन है वैसे ही जैसे वह 'उस' बार आया था। कम से कम अगर रोगोझिन किसी भी वजह से उससे मिलना चाहेगा तो वह इस गलियारे के अलावा और कहीं जा ही नहीं सकता। रोगोझिन को उसका पता नहीं मालूम था, इसलिए शायद वह यही मान लेगा कि प्रिंस पहलेवाले होटल में ही ठहरा होगा; कम से कम वह उसे वहाँ खोजता हुआ तो आएगा ही...अगर उसे उसकी बहुत ज़्यादा ज़रूरत हुई। और कौन जाने, शायद उसे उसकी बेहद ज़रूरत हो ही।

उसने इस तरह सोचा, और न जाने क्यों यह विचार उसे बिलकुल तर्कसंगत लगा। अगर वह अपने इस विचार का क्रम और आगे तक ले जाता तो निश्चय ही वह, मिसाल के लिए, इसका कोई कारण न बता सकता कि रोगोझिन के लिए उससे मिलना इतना अनिवार्य क्यों हो जाएगा

और यह बिलकुल असम्भव क्यों था कि आख़िर में उनकी मुलाक़ात न हो। लेकिन यह विचार उसके दिल पर एक बोझ बना हुआ था—"अगर वह सुखी है," प्रिंस सोचता रहा, "तो वह नहीं आएगा। अगर वह सुखी नहीं होगा तो उसके आने की सम्भावना ज़्यादा है और बिलकुल निश्चित है कि वह सुखी नहीं है।"

ज़ाहिर है, इस बात का दृढ़ विश्वास होते ही उसे अपने यहाँ, होटल के अपने कमरे में रोगोझिन का इन्तज़ार करना चाहिए था; लेकिन ऐसा लगता था कि वह अपने नए विचार को सहन न कर सका; वह उछल खड़ा हुआ, उसने झपटकर अपना हैट उठा लिया, और दौड़ता हुआ बाहर निकल गया। गलियारे में लगभग अँधेरा हो चुका था। "अगर अभी उस कोने से अचानक निकलकर उसने मुझे सीढ़ियों पर रोक लिया तो ?" उस परिचित स्थान पर पहुँचने पर यह विचार उसके दिमाग़ में बिजली की तरह कौंध गया। लेकिन कोई नहीं निकला। वह नीचे उतरकर फाटक पर पहुँच गया, बाहर सड़क की पटरी पर निकला, उन लोगों की घनी भीड़ों पर उसे आश्चर्य हुआ जो सूरज डूबने के समय सड़क पर निकल आए थे (जैसा कि गर्मियों की लम्बी छुट्टियों में पीटर्सबर्ग में हमेशा होता है) और वह गोरोख़ोवाया स्ट्रीट की दिशा में चल पड़ा। होटल से कोई पचास ही गज़ दूर, पहले ही चौराहे पर किसी ने भीड़ में से अचानक उसकी कुहनी छुई और दबे स्वर में उसके कान में कहा—"लेव निकोलायेविच, मेरे साथ चलो, यार; ज़रूरी है।"

यह रोगोझिन था।

अजीब बात है कि प्रिंस ख़ुशी के मारे अपने शब्दों को लगभग निगलते हुए अचानक उसे बड़ी तेजी से बताने लगा कि किस तरह वह उम्मीद कर रहा था कि अभी होटल के गलियारे में उससे उसकी मुलाक़ात होगी।

"मैं था वहाँ," रोगोझिन ने अप्रत्याशित उत्तर दिया। "आओ, चलो।"

प्रिंस उसके जवाब पर दंग रह गया, लेकिन यह कम से कम दो मिनट के बाद की बात थी, जब बात उसकी समझ में अच्छी तरह बैठ गई थी। बात समझ में आ जाने के बाद वह डर गया और रोगोझिन को ध्यान से देखने लगा। वह उससे कोई हाथ-भर आगे ठीक सामने देखता हुआ चल रहा था, राहगीरों पर नज़र डाले बिना और उनको यन्त्रवत जगह देता हुआ।

"फिर तुमने मुझे पूछा क्यों नहीं अगर...अगर तुम होटल में थे ?" प्रिंस ने सहसा पूछा।

रोगोझिन रुक गया, उसे ग़ौर से देखा, कुछ देर सोचा और इस तरह बोला मानो सवाल उसकी समझ में न आया हो—"देखो, यार, तुम सीधे वहाँ चले जाओ...घर में...मालूम है न ? और मैं सड़क के दूसरी तरफ़ चलूँगा। और ध्यान रखना कि साथ-साथ चलें।..."

यह कहकर वह सड़क पार करके दूसरी पटरी पर चला गया, घूमकर देखा कि प्रिंस आगे बढ़ रहा है या नहीं और यह देखकर कि वह वहीं खड़ा फटी-फटी आँखों से उसे ताक रहा है, उसने अपना हाथ गोरोख़ोवाया स्ट्रीट की दिशा में हिलाया और बढ़ गया; वह हर क्षण मुड़कर प्रिंस को देखता जाता था और उसे पीछे-पीछे आने का इशारा करता जाता था। स्पष्टतः, उसे यह देखकर सन्तोष हुआ कि प्रिंस ने उसका इशारा समझ लिया था और वह सड़क पार करके उसके पास नहीं आ रहा था। प्रिंस के मन में यह बात आई कि रोगोझिन किसी को खोज रहा था; वह नहीं चाहता था कि रास्ते में वह उससे चूक जाए और इसीलिए वह सड़क पार करके दूसरी ओर चला गया था। "लेकिन उसने क्यों नहीं बता दिया कि हमें किसे खोजना है ?" इसी तरह वे कोई पाँच सौ गज़ तक चलते रहे, और तब प्रिंस किसी वजह से काँपने लगा; रोगोझिन मुड़-मुड़कर उसे देखता रहा, हालाँकि अब उतनी जल्दी-जल्दी नहीं। प्रिंस से और ज़्यादा देर न सहा गया, और उसने उसे

सड़क के इस पार आ जाने का इशारा किया। रोगोझिन फ़ौरन सड़क पार करके पास चला गया।

"नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना क्या तुम्हारे घर पर है ?"

"हाँ।"

"और आज सबेरे परदे के पीछे से तुम्हीं ने झाँककर मुझे देखा था ?"

"हाँ।..."

"लेकिन तुम्हें कैसे..."

मगर प्रिंस की समझ में न आया कि और क्या पूछे, न ही यह कि अपना सवाल पूरा कैसे करे। इसके अलावा उसका दिल इतने जोरों से धड़क रहा था कि उसके लिए बोलना भी मुश्किल हो रहा था। रोगोझिन भी चुप था और उसे पहले की तरह ही देखे जा रहा था—अर्थात्, मानो विचारों में डूबा हुआ हो।

"अच्छा, मैं चलता हूँ," वह फिर सड़क पार करने को तैयार होते हुए बोला, "और तुम मेरे पीछे-पीछे आओ।...सड़क पर हम अलग-अलग हों...यही बेहतर रहेगा...सड़क के दोनों तरफ़... तुम्हारी समझ में आ जाएगा।"

आख़िरकार, सड़क की अलग-अलग पटरियों पर चलते हुए जब वे गोरोख़ोवाया स्ट्रीट में मुड़े और रोगोझिन के घर के पास पहुँचने लगे, तो प्रिंस की टाँगें फिर जवाब देने लगीं, यहाँ तक कि उसके लिए चलना भी मुश्किल हो गया। शाम के कोई दस बज चुके थे। रोगोझिन की माँ के फ़्लैट की खिड़कियाँ पहले की तरह ही खुली हुई थीं, और रोगोझिन के कमरों की खिड़कियाँ बन्द थीं, और धुँधलके में सफ़ेद परदे पहले से भी ज़्यादा उजागर हो उठे थे। प्रिंस पारवाली पटरी से घर की ओर बढ़ा; रोगोझिन अपनी तरफ़वाली पटरी से सामनेवाली सीढ़ियाँ चढ़ने लगा था और हाथ से उसे इशारा करता जा रहा था। प्रिंस सड़क पार करके उसकी ओर बढ़ा और सामनेवाले दरवाज़े पर उसके पास जा पहुँचा।

"अब तो दरबान को भी पता नहीं है कि मैं वापस आ गया हूँ, मैंने उससे कहा था कि मैं पाव्लोव्स्क जा रहा हूँ, और माँ के यहाँ भी सबसे मैंने यही कह दिया था," उसने कुटिलता और लगभग आत्मसन्तोष से मुस्कराते हुए कानाफूसी के स्वर में कहा। "हम लोग अन्दर चलते हैं, किसी को कानोंकान ख़बर नहीं होगी।"

चाभी उसके हाथ में थी। सीढ़ियाँ चढ़ते हुए वह पीछे मुड़ा और प्रिंस को दबे पाँव चलने की चेतावनी दी, फिर उसने धीरे-से अपने फ़्लैट का ताला खोला, प्रिंस को अन्दर दाखिल किया, उसके बाद खुद बड़ी सावधानी से अन्दर गया, अपने पीछे दरवाज़े का ताला बन्द किया, और चाभी अपने जेब में रख ली।

"चले आओ," उसने कानाफूसी के स्वर में कहा।

लितेइनाया स्ट्रीट की पटरी पर भी रोगोझिन कानाफूसी के स्वर में ही बोल रहा था। बाहरी संयम के बावजूद वह अन्दर ही अन्दर बहुत उद्विग्नता की हालत में था। जब वे बड़े ड्राइंग-रूम में गए और लगभग उसके पढ़ने के कमरे के दरवाज़े पर पहुँचे, तो उसने खिड़की के पास जाकर प्रिंस को बड़े रहस्यमय ढंग से इशारे से बुलाया।

"देखो, सबेरे जब तुमने घंटी बजाई तो मैं फ़ौरन भाँप गया कि तुम ही होगे; मैं बहुत चुपके से—बिलकुल दबे-पाँव—दरवाज़े तक गया और मैंने तुम्हें माँ की नौकरानी से बातें करते सुना। और आज तड़के ही मैंने उसे बड़ी सख़्ती से हुक्म दे दिया था कि अगर तुम या तुम्हारा भेजा हुआ कोई आदमी या कोई भी मेरा दरवाज़ा खटखटाए तो वह किसी भी हालत में यह न बताए कि मैं घर

पर हूँ, ख़ासतौर पर अगर तुम ख़ुद आकर मेरे बारे में पूछो। मैंने उसे तुम्हारा नाम बता दिया था। बाद में, तुम्हारे बाहर चले जाने के बाद मैंने अपने मन में सोचा, 'अगर वह यहाँ बाहर खड़ा देख रहा हो या निगरानी रख रहा हो तो ?' मैं यहाँ इस खिड़की के पास आया, परदा उलटा, और तुम सीधे मेरी ओर देख रहे थे।...तो यह हुआ था।"

"लेकिन...कहाँ है...नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना ?" प्रिंस ने हाँपते हुए बड़ी मुश्किल से ये शब्द निकाले।

"वह है...यहीं," रोगोझिन ने धीरे-धीरे कहा, मानो जवाब देने में वह पल-भर के लिए रुका है।

"कहाँ ?"

रोगोझिन ने प्रिंस की ओर नज़रें उठाईं और उसे ग़ौर से देखा।

"इधर आओ।..."

वह अब भी कानाफूसी के स्वर में, बिना कोई जल्दी किए और पहले की तरह उसी विचित्र भाव से बोल रहा था जैसे विचारों में डूबा हुआ हो। जब उसने प्रिंस को परदे के बारे में बताया था तब भी ऐसा लग रहा था कि वह उसे कुछ और ही बताना चाहता था, इसके बावजूद कि वह बिलकुल भावावेश की स्थिति में बोल रहा था।

वे पढ़ने के कमरे में गए। जब प्रिंस पिछली बार यहाँ आया था तब से कमरे में थोड़ा-सा परिवर्तन हो गया था—कमरे की पूरी लम्बाई में हरे रंग के दमिश्क का परदा आर-पार तना हुआ था, जिसे दोनों ही सिरों से खींचकर खोला जा सकता था; इस परदे से पढ़ने का कमरा उस मेहराबदार छोटे हिस्से से अलग हो जाता था जिसमें रोगोझिन का पलंग पड़ा था। भारी परदा दोनों ओर से खिंचा हुआ था। लेकिन कमरे में अँधेरा था; पीटर्सबर्ग की गर्मियों की सफ़ेद रातें धीरे-धीरे ज़्यादा अँधेरी होने लगी थीं, और अगर पूरे चाँद की रात न होती तो रोगोझिन के कमरों में जिनके परदे खिंचे हुए थे, कुछ भी ठीक से देख सकना मुश्किल था। यह सच है कि उन दोनों को एक-दूसरे के चेहरे दिखाई दे रहे थे, हालाँकि बहुत ज़्यादा साफ़ नहीं। रोगोझिन का चेहरा हमेशा की तरह पीला था; वह प्रिंस को नज़रें लगाकर ग़ौर से एकटक देख रहा था, उसकी आँखों में तेज चमक थी, लेकिन ये अपलक भी थीं।

"मोमबत्ती जलाओ न !" प्रिंस ने कहा।

"नहीं, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है," रोगोझिन ने जवाब दिया और प्रिंस का हाथ पकड़कर उसे कुर्सी पर बिठा दिया; वह ख़ुद उसके सामने अपनी कुर्सी खींचकर इस तरह बैठ गया कि दोनों के घुटने एक-दूसरे को लगभग छूने लगे ! उन दोनों के बीच एक ओर को ज़रा हटी हुई छोटी-सी मेज़ थी। "बैठ जाओ, थोड़ी देर यहाँ बैठते हैं," उसने कहा, मानो प्रिंस को मनाने की कोशिश कर रहा हो कि वह ज़रा बैठा रहे। वे कोई एक मिनट तक चुप रहे। "मैं जानता था कि तुम उसी होटल में ठहरोगे," उसने कहा। इस तरह लोग कभी-कभी किसी असली बातचीत को शुरू करने के पहले कोई अप्रासंगिक चर्चा आरम्भ करते हैं। "गलियारे में पहुँचते ही मैंने सोचा कि जिस तरह इस वक़्त मैं उसकी राह देख रहा हूँ उसी तरह वह भी शायद इस वक़्त बैठा मेरी राह देख रहा होगा। तुम अध्यापक की विधवा से मिलने गए थे ?"

"गया था।" प्रिंस का दिल इतने ज़ोर से धड़क रहा था कि वह ये शब्द भी बड़ी मुश्किल से बोल पाया।

"मैंने इसके बारे में भी सोचा था। मैंने सोचा कि लोगों में चर्चा होगी...और फिर मैंने सोचा

कि अच्छा यही रहेगा कि रात के लिए मैं उसे यहाँ ले आऊँगा ताकि हम लोग रात को साथ-साथ रहें।...''

''रोगोझिन ! नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना कहाँ है ?'' प्रिंस ने सहसा क्षीण स्वर में पूछा और सिर से पाँव तक काँपते हुए उठ खड़ा हुआ। रोगोझिन भी उठ खड़ा हुआ।

''वहाँ,'' उसने परदे की तरफ़ इशारा करके कानाफूसी के स्वर में कहा।

''सो रही है ?'' प्रिंस ने दबी आवाज़ से पूछा।

एक बार फिर रोगोझिन ने उसे पहले की तरह ग़ौर से देखा।

''चलो, अन्दर चलें, वहीं चलकर देखें न ? बस, इतना ख़्याल रखना...ख़ैर, आ जाओ !''

उसने परदा उठाया, रुका और फिर प्रिंस की ओर मुड़ा।

''चले आओ अन्दर,'' उसने सिर हिलाकर परदे के पीछे की तरफ़ इशारा करते हुए और प्रिंस को अन्दर जाने का निमन्त्रण देते हुए कहा। प्रिंस अन्दर चला गया।

''यहाँ तो अँधेरा है,'' प्रिंस बोला।

''कोई बात नहीं !'' रोगोझिन ने बुदबुदाकर कहा।

''मुझे तो बस...पलंग दिखाई दे रहा है।''

''और पास जाओ,'' रोगोझिन ने धीमे से सुझाव दिया।

प्रिंस एक क़दम और पास गया, फिर एक क़दम और, और ठिठककर खड़ा हो गया। वह एक-दो मिनट तक बिलकुल निश्चल खड़ा घूरता रहा; पलंग के पास खड़े-खड़े दोनों में से कोई एक शब्द भी नहीं बोला; प्रिंस का दिल इतने ज़ोर से धड़क रहा था कि लगता था कि कमरे में घोर सन्नाटे में उसकी धड़कन की आवाज़ सुनी जा सकती है। लेकिन उसकी आँखें अँधेरे की आदी हो चुकी थीं, और उसे पूरा पलंग साफ़ दिखाई देने लगा था; उस पर कोई बिलकुल निश्चल मुद्रा में सो रहा था; ज़रा भी हिलने-डुलने की या साँस लेने की आवाज़ नहीं सुनाई दे रही थी। निद्राग्रस्त सिर से पाँव तक सफ़ेद चादर से ढका हुआ था, लेकिन उसके अवयवों का क्षीण-सा आभास मिल रहा था; केवल उभरी हुई रूपरेखाओं से यह अनुमान लगा सकना सम्भव था कि वहाँ कोई इंसान पूरी तरह टाँगें फैलाए लेटा हुआ था। चारों ओर, पलंग के पाँयते, पलंग के पास रखी हुई कुर्सी पर, यहाँ तक कि फ़र्श पर भी इधर-उधर कपड़े बिखरे हुए थे—बहुत क़ीमती सफ़ेद रेशमी लिबास, फूल, रिबन। पलंग के सिरहाने छोटी-सी मेज़ पर हीरे, जो उतारकर वहाँ फेंक दिए गए थे, पड़े जगमगा रहे थे। पलंग के पाँयते किसी तरह की लैस उलझे हुए ढेर की शक्ल में पड़ी हुई थी, और सफ़ेद लैस के ऊपर चादर के नीचे से निकले हुए नंगे पाँव का सिरा दिखाई दे रहा था; ऐसा लग रहा था जैसे उसे संगमरमर से तराशा गया हो, और वह भयावह रूप से निश्चल था। प्रिंस देखता रहा और उसने महसूस किया कि वह जितना ही ज़्यादा देखता जा रहा था कमरे में उतना ही ज़्यादा सन्नाटा होता जा रहा था और मौत की नीरवता छाती जा रही थी। अचानक एक मक्खी नींद से जागकर भनभनाने लगी, और पलंग के ऊपर उड़ बैठी और उसके सिरहाने बैठ गई। प्रिंस चौंक पड़ा।

''चलो, वापस चलें,'' रोगोझिन ने उसकी बाँह छूकर कहा।

वापस जाकर वे फिर एक-दूसरे के सामने उन्हीं कुर्सियों पर बैठ गए। प्रिंस की कँपकँपी लगातार बढ़ती गई, और उसने अपनी सवालिया नज़रें रोगोझिन के चेहरे पर से नहीं हटाईं।

''मैं देखता हूँ कि तुम तो काँप रहे हो, लेव निकोलायेविच,'' रोगोझिन ने आख़िरकार कहा, ''कुछ-कुछ वैसे ही जब तुम्हें दौरा पड़ता है, याद है, एक बार मास्को में तुम्हें दौरा पड़ा था। या

बिलकुल वैसे ही जैसे तुम दौरा पड़ने से पहले काँपने लगे थे। समझ में नहीं आता कि अब मैं तुम्हारा करूँगा क्या।..."

प्रिंस सुनता रहा और अपनी पूरी चेतना-शक्ति से समझने की कोशिश करता रहा, और अब भी अपनी आँखों से उससे पूछता रहा।

"तुमने ?" उसने परदे की ओर इशारा करके आख़िरकार बड़ी कठिनाई से कहा।

"मैंने," रोगोझिन ने दबे स्वर में कहा और नज़रें झुका लीं।

वे लगभग पाँच मिनट तक चुप रहे।

"क्योंकि, बात यह है," रोगोझिन अचानक ऐसे बोलने लगा जैसे उसने बोलना कभी बन्द ही न किया हो, "अगर इस वक़्त तुम्हारी तबियत खराब हो गई, तुम्हें दौरा पड़ गया और तुम चीख़ने लगे तो नीचे सड़क पर या अहाते में कोई तुम्हारी आवाज़ सुन लेगा और वह भाँप लेगा कि फ़्लैट में रात को लोग हैं। वे दरवाज़ा खटखटाने लगेंगे, अन्दर आ जाएँगे...क्योंकि, बात यह है कि सब लोग यही समझते हैं कि मैं घर पर नहीं हूँ। मैंने मोमबत्ती भी इसीलिए नहीं जलाई कि सड़क पर से या अहाते में से कहीं वे भाँप न लें। क्योंकि जब मैं बाहर जाता हूँ तो चाभियाँ मेरे पास रहती हैं, और जब मैं यहाँ नहीं होता हूँ तो कोई तीन-चार दिन यहाँ सफ़ाई करने भी नहीं आता। मैंने ऐसा ही निर्णय कर रखा है। मेरा मतलब है, इस बात का पक्का बन्दोबस्त करने के लिए कि उन्हें पता न चले कि हम रात यहाँ बिता रहे हैं..."

"सुनो," प्रिंस ने कहा। "मैंने आज सवेरे दरबान से और तुम्हारी माँ की नौकरानी से भी पूछा था कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना रात को यहाँ रही थी या नहीं। मतलब यह कि उन्हें मालूम होगा।"

"मैं जानता हूँ कि तुमने उनसे पूछा था। मैंने नौकरानी को बता दिया था कि नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना-कल यहाँ आई थी और बस दस मिनट यहाँ रुककर शाम को ही पाव्लोव्स्क चली गई थी। उन्हें नहीं मालूम कि रात वह यहीं रही थी—किसी को भी नहीं मालूम। कल रात मैं उसके साथ बहुत चुपके-चुपके आया था, वैसे ही जैसे तुम्हारे साथ आया था। यहाँ आते वक़्त रास्ते में मैंने सोचा था कि वह यहाँ चुपके से हरगिज़ आना नहीं चाहेगी, लेकिन...ऐसा कुछ भी नहीं हुआ ! वह दबे स्वर में बोलती रही और चारों ओर से साये का घेर अपने हाथों में समेटकर ताकि उसकी सरसराहट न हो, पंजों के बल चलती हुई अन्दर आ गई, सीढ़ियों पर उसने उँगली से इशारा करके मुझे सतर्क किया—उसे डर तुमसे लग रहा था। ट्रेन पर वह डर के मारे पागल जैसी थी, और रात को यहाँ रहने का सुझाव उसी का था। पहले मैंने सोचा था कि उसे विधवा के यहाँ उसके ठिकाने पर ले जाऊँगा—लेकिन तोबा, तोबा, नहीं ! 'वह सवेरे मुझे वहाँ ढूँढ़ निकालेगा,' वह बोली, 'लेकिन तुम मुझे छिपा लोगे और कल हम लोग पहली गाड़ी से मास्को चले जाएँगे।' इसके बाद वह ओर्योल जाना चाहती थी। और जब वह सोने के लिए लेटी तो बराबर यही कह रही थी कि हम लोग ओर्योल जाएँगे।..."

"सुनो, पर्फ़्योन, अब तुम क्या करोगे ? तुम करना क्या चाहते हो ?"

"मुझे तुम्हारे बारे में डर है, देखो, तुम लगातार काँप रहे हो। हम लोग रात यहीं रहेंगे—साथ-साथ। उस पलंग के अलावा यहाँ कोई पलंग नहीं है—इसलिए दोनों सोफ़ों के गद्दे लेकर यहाँ परदे के पास तुम्हारे और अपने लिए एक बिस्तर बनाए लेते हैं—ठीक ?—ताकि हम लोग साथ रहें। क्योंकि अगर वे आएँ और इधर-उधर देखने या खोजने लगें, तो उसे फ़ौरन देख लेंगे और उसे लेकर चले जाएँगे। वे मुझसे पूछ-ताछ करेंगे, और मैं कहूँगा कि मैंने किया है, और वे मुझे फ़ौरन पकड़ ले जाएँगे। इसलिए अभी उसे हम लोगों के पास, तुम्हारे और मेरे साथ लेटा

रहने दो।..."

"हाँ, हाँ !" प्रिंस ने बड़े उत्साह से सहमति प्रकट की।

"तो कुछ भी नहीं मानना और उन लोगों को उसे नहीं ले जाने देना, ठीक है ?"

"नहीं, किसी भी हालत में नहीं," प्रिंस ने निर्णयपूर्वक कहा। "नहीं, नहीं, नहीं !"

"हाँ, तो मैंने भी ऐसा फ़ैसला किया था, यार, कि मैं किसी भी हालत में उसे किसी को ले जाने नहीं दूँगा ! हम लोग चुपचाप रात यहाँ बिताएँगे। आज मैं घर से बस घंटे-भर के लिए बाहर गया था, सबेरे; बाक़ी तमाम वक़्त मैं उसके पास ही रहा। और फिर शाम को मैं तुम्हें लेने गया। मुझे डर बस इस बात का है कि यह जगह इतनी बन्द है और दुर्गन्ध आने लगेगी। तुम्हें दुर्गन्ध आ रही है या नहीं ?"

"शायद आ रही है—मालूम नहीं। कल सबेरे तक दुर्गन्ध ज़रूर आने लगेगी।"

"मैंने उसे मोमजामे से ढक दिया है—मोटे मोमजामे से—और ऊपर से चादर डाल दी है, और मैंने दुर्गन्ध मारने की दवा की चार बोतलें खोलकर वहाँ रख दी हैं। इस वक़्त वहीं रखी हैं वे।"

"ठीक वैसे ही जैसे उन लोगों ने वहाँ किया था...मास्को में ?"

"क्योंकि, देखो, यार, असली सवाल दुर्गन्ध का है। और वह वहाँ कैसे...पड़ी है...सबेरे देखना, जब रोशनी हो जाए। बात क्या है ? तुमसे उठा भी नहीं जा रहा है ?" रोगोझिन ने यह देखकर कि प्रिंस काँप रहा था और उठ नहीं पा रहा था, आशंकित स्वर में आश्चर्य से पूछा।

"मेरी टाँगें जवाब दे रही हैं," प्रिंस ने बुदबुदाकर कहा। "डर के मारे, मैं जानता हूँ।...जब डर दूर हो जाएगा तो मैं उठ पड़ूँगा।"

"रुको, मैं अभी बिस्तर लगाए देता हूँ, तब तुम लेट जाना...और मैं तुम्हारे पास...और तब कान लगाकर सुनेंगे...क्योंकि, यार, मुझे अभी पता नहीं...मुझे अभी तक सारी बात मालूम नहीं है, यार, और मैं तुम्हें यह अभी से बताए देता हूँ, ताकि तुम्हें पहले से इसके बारे में मालूम रहे।..."

ये दुर्बोध शब्द बुदबुदाते हुए रोगोझिन बिस्तर बिछाने लगा। यह स्पष्ट था कि बिस्तर की बात शायद उसने सबेरे ही सोच ली थी। पिछली रात वह सोफ़े पर सोया था। लेकिन सोफ़े पर दो आदमियों के लिए काफ़ी जगह नहीं थी, और उसने फ़ैसला किया था कि वे दोनों पास-पास लेटेंगे, और यही वजह थी कि इस वक़्त वह बड़ी मेहनत से दोनों सोफ़ों पर से हर शक्ल और नाप के गद्दे कमरे के पार घसीटकर लाया और उन्हें परदे के पास रख दिया। किसी तरह उसने बिस्तर तैयार किया; फिर वह प्रिंस के पास गया, बड़ी नरमी से और बेहद भावविह्वल होकर उसे बाँह पकड़कर उठाया और बिस्तर के पास ले गया; लेकिन पता यह चला कि प्रिंस अपने आप बिना सहारे के भी चल सकता था, इसका मतलब था कि उसका "डर दूर होता जा रहा था"; फिर भी वह अभी तक काँप रहा था।

"क्योंकि, देखो, यार," रोगोझिन ने प्रिंस को बाईं ओरवाले और सबसे अच्छे गद्दे पर लिटा दिया और खुद कपड़े उतारे बिना दोनों हाथों की उँगलियाँ सिर के पीछे फँसाकर दाहिनी ओर लेटकर अचानक कहना शुरू किया, "इस वक़्त गर्मी है और, तुम जानो, दुर्गन्ध तो ज़रूर फैलेगी।.. खिड़कियाँ खोलते मुझे डर लगता है; माँ के यहाँ फूलों के गमले हैं जिनमें बहुत-से फूल खिले हैं, और उनसे बहुत प्यारी महक आती है। मैंने उन्हें अन्दर ले आने की सोची थी, लेकिन माँ की उस बुढ़िया नौकरानी को कुछ शक हो जाता- बहुत तेज है उसकी नाक।"

"सो तो है," प्रिंस ने सहमति प्रकट की।

"यह भी हो सकता है कि हम लोग गुलदस्ते ऐसा खरीद लें...मतलब यह कि उसके चारों ओर

फूल और गुलदस्ते रख दें, क्यों ? बस, बात यह है, यार, कि उसे फूलों के बीच देखकर हम लोगों को दुःख होगा !"

"सुनो," प्रिंस ने इस तरह कहा मानो उसका दिमाग़ बिलकुल उलझ गया हो, मानो वह यह याद करने की कोशिश कर रहा हो कि यह क्या पूछनेवाला था और फ़ौरन ही उसे भूल जाता हो, "सुनो, एक बात बताओ—तुमने मारा किस चीज़ से ? चाक़ू से ? उसी चाक़ू से ?"

"हाँ, उसी से।..."

"ज़रा एक मिनट ठहरो ! मैं तुमसे कुछ और भी पूछना चाहता हूँ, पर्फ्योन।...मुझे तुमसे बहुत-से सवाल पूछने हैं, हर चीज़ के बारे में...लेकिन पहले यह बताओ, सबसे पहले, ताकि मुझे मालूम हो जाए; क्या मेरी शादी से पहले ही, उसके चर्च में जाने से पहले ही तुम्हारा इरादा उसे मार डालने का था...चर्च के ओसारे पर, उसी चाक़ू से ? था कि नहीं ?"

"मालूम नहीं, था कि नहीं," रोगोज़िन ने रूखेपन से जवाब दिया, मानो इस प्रश्न पर उसे कुछ आश्चर्य हुआ हो और वह ठीक से उसकी समझ में न आया हो।

"तुम चाक़ू अपने साथ पाव्लोव्स्क तो कभी नहीं ले गए थे न ?"

"नहीं, नहीं ले गया था। चाक़ू के बारे में इतना मैं तुम्हें बता सकता हूँ, लेव निकोलायेविच," उसने कुछ देर रुककर कहा, "मैंने उसे एक बन्द दराज़ में से आज, सबेरे निकाला था, क्योंकि यह सब कुछ आज सबेरे हुआ, कोई चार बजे। पूरे वक़्त चाक़ू मैंने एक किताब के अन्दर रख छोड़ा था।...और...और...और एक और बात बहुत दिलचस्प थी : देखो, चाक़ू बस तीन-चार इंच ही अन्दर गया...बाईं छाती के ठीक नीचे...और उसकी कुरती पर आधे बड़े चम्मच से ज़्यादा ख़ून नहीं आया—एक बूँद भी ज़्यादा नहीं।..."

"यह, यह, यह," प्रिंस अत्यन्त उद्विग्न होकर सहसा उठ बैठा, "यह, यह मैं जानता हूँ...मैंने इसके बारे में पढ़ा है...इसे अन्दर ही अन्दर ख़ून बह जाना कहते हैं।...कभी-कभी तो एक बूँद भी ख़ून नहीं निकलता—अगर वार सीधा दिल पर जाकर लगे।..."

"ज़रा सुनना, सुन रहे हो ?" रोगोज़िन ने अचानक उसे बीच में टोक दिया और डर के मारे उठकर गद्दियों पर बैठ गया। "कुछ सुनाई दे रहा है ?"

"नहीं तो !" प्रिंस ने रोगोज़िन की ओर देखकर उतनी ही जल्दी और डरते हुए जवाब दिया।

"क़दमों की चाप ! सुन रहे हो ? ड्राइंग-रूम में।..."

दोनों कान लगाकर सुनने लगे।

"सुनाई दे रहा है," प्रिंस ने दृढ़ता से कानाफूसी के स्वर में कहा।

"क़दमों की चाप ?"

"हाँ।"

"दरवाज़ा बन्द कर दें कि नहीं ?"

"हाँ, बन्द कर दें।..."

उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर दिया और दोनों फिर लेट गए। बड़ी देर तक दोनों में से कोई नहीं बोला।

"अरे हाँ !" प्रिंस झट से उठकर बिस्तर पर भी बैठ गया और अचानक वैसी ही तेजी और उद्विग्नता के साथ कानाफूसी के स्वर में बोला मानो फिर कोई विचार उसकी पकड़ में आ गया हो और वह बेहद डर रहा हो कि वह फिर कहीं उसके हाथ से निकल न जाए। "मैं पूछना...ताशों के बारे में...ताश ! मैंने सुना है कि तुम उसके साथ ताश खेलते थे।..."

"हाँ, खेलता तो था," रोगोझिन ने कुछ देर रुककर कहा।

"कहाँ हैं...वे ताश ?"

"ये रहे," रोगोझिन ने इस बार और भी ज़्यादा देर रुककर जवाब दिया, "यह लो।..."

यह कहकर उसने काग़ज़ के टुकड़े में लिपटी हुई पुराने ताशों की गड्डी निकालकर प्रिंस की ओर बढ़ा दी। प्रिंस ने गड्डी ले तो ली, लेकिन इस तरह जैसे उसकी समझ में न आ रहा हो कि उसका करे क्या। उदासी और सूनेपन की एक नई भावना बोझ बनकर उसके दिल पर उतर आई; उसने अचानक महसूस किया कि उस क्षण, और कुछ देर पहले से, वह जो कुछ कहता रहा था वह नहीं था जो उसे कहना चाहिए था और वह जो कुछ करता रहा था वह नहीं था जो उसे करना चाहिए था; और अब वे ताश, जिन्हें वह हाथ में लिए हुए था और जिन्हें पाकर वह इतना खुश था, किसी काम नहीं आएँगे—अब वे बिलकुल किसी काम नहीं आएँगे। वह उठा और उसने निराशा से अपने हाथ झटके के साथ ऊपर उठाए। रोगोझिन निश्चल लेटा रहा; ऐसा लग रहा था कि प्रिंस जो कुछ कर रहा था वह उसे दिखाई या सुनाई नहीं दे रहा था; लेकिन अँधेरे में उसकी आँखें तेजी से चमक रहीं थीं, वे पूरी खुली हुई थीं और बिलकुल निश्चल थीं। प्रिंस कुर्सी पर बैठ गया और दहशत से उसे देखने लगा। आधा घंटा बीत गया; अचानक रोगोझिन के मुँह से झटके के साथ ज़ोर की चीख़ निकली और वह भरपूर ऊँची आवाज़ से हँसने लगा, मानो भूल ही गया हो कि उसे कानाफूसी के स्वर में बात करना चाहिए।

"अफ़सर...वह अफ़सर...याद है उस अफ़सर को कैसे उसने चाबुक से मारा था, याद है ? हः-हः-हः ! और उसके मातहत को...उस मातहत को भी जो भागकर उसकी मदद को पहुँचा था।..."

प्रिंस एक नई दहशत की वजह से अपनी कुर्सी से उछलकर खड़ा हो गया। जब रोगोझिन चुप हो गया (और वह अचानक ही चुप हो गया था), तो प्रिंस बड़ी नरमी से उसकी ओर झुका, उसके पास बैठ गया और ज़ोर से धड़कते हुए दिल से और लम्बी-लम्बी साँसें लेते हुए रोगोझिन को ग़ौर से देखने लगा। रोगोझिन ने उसकी ओर मुँह तक नहीं फेरा, और सच तो यह है कि ऐसा लग रहा था कि वह उसके बारे में बिलकुल भूल ही चुका है। प्रिंस देखता रहा और प्रतीक्षा करता रहा; समय बीतता जा रहा था, उजाला होने लगा था। बीच-बीच में रोगोझिन अचानक, ज़ोर-ज़ोर से, कठोर स्वर में, और उखड़े-उखड़े ढंग से बुदबुदाने लगता था; वह बीच-बीच में चीख़ें भी मारता था और हँस पड़ता था; तभी प्रिंस ने अपना काँपता हुआ हाथ आगे बढ़ाया और बड़ी नरमी से उसके सिर और उसके बालों को छुआ, उन्हें थपका और उसके गालों को थपका...इससे ज़्यादा वह कुछ कर भी नहीं सकता था ! वह खुद फिर काँपने लगा और उसकी टाँगें फिर मानो जवाब देने लगीं। एक बिलकुल ही नए प्रकार की संवेदना अपार वेदना के साथ उसके हृदय का उत्पीड़न कर रही थी। इसी बीच काफ़ी उजाला हो चुका था; आख़िरकार वह मानो बिलकुल निढ़ाल होकर और घोर निराशा में डूबकर गद्दे पर लेट गया और उसने अपना चेहरा रोगोझिन के बुझे हुए निश्चल चेहरे से कसकर सटा दिया; आँसू उसकी आँखों में लुढ़ककर रोगोझिन के गालों पर बहने लगे, लेकिन शायद अब उसका ध्यान अपने आँसुओं की ओर नहीं रह गया था और उसे उनके बारे में कुछ भी नहीं मालूम था।...

बहरहाल, जब कई घंटे बाद दरवाज़ा खोला गया और लोग अन्दर आए तो उन्होंने हत्यारे को बिलकुल बेहोश पाया, उसे तेज बुखार चढ़ा हुआ था। प्रिंस उसके पास गद्दों पर बैठा हुआ था और हर बार जब बीमार चीख़ पड़ता था या बहकी-बहकी बातें करने लगता था, तो वह जल्दी

से अपना काँपता हुआ हाथ बड़ी नरमी से उसके बालों और गालों पर फेरता था, मानो उसे सहला रहा हो और तसल्ली दे रहा हो। लेकिन उससे जो सवाल पूछे जा रहे थे वे उसकी समझ में नहीं आ रहे थे और न ही वह उन लोगों को पहचान रहा था जो कमरे में आकर उसे घेरे हुए थे। और अगर इस वक़्त श्नाइडर खुद स्विट्ज़रलैण्ड से आ गए होते और उन्होंने अपने भूतपूर्व शिष्य और रोगी को देखा होता, तो स्विट्ज़रलैण्ड में उसके इलाज के पहले साल के दौरान कभी-कभी प्रिंस की जो दशा हो जाती थी उसे याद करके वह निराशा से हाथ झटककर कहते, जैसा कि उन्होंने उस वक़्त कहा था—"बौड़म !"

12

उपसंहार

पाव्लोव्स्क पहुँचकर अध्यापक की विधवा सीधे दार्या अलेक्सेयेव्ना से मिलने गई, जो पिछले दिन की घटनाओं की वजह से परेशान थी और उसे जो कुछ मालूम था वह सब जब उसने उसे बताया तो उसके होश उड़ गए। दोनों महिलाओं ने फ़ौरन लेबेदेव से, जो खुद भी बहुत परेशान था, अपने किराएदार के दोस्त और उसके मकान-मालिक की हैसियत से सम्पर्क करने का फ़ैसला किया। वेरा लेबेदेवा को जो भी मालूम था वह उसने उन्हें बता दिया। लेबेदेव की सलाह के अनुसार उन्होंने फ़ैसला किया कि ये तीनों उस चीज़ को रोकने के लिए जल्दी से जल्दी पीटर्सबर्ग जाएँ, "जिसका होना बिलकुल मुमकिन था"। इस तरह अगले दिन सबेरे लगभग ग्यारह बजे रोगोझिन के फ़्लैट का दरवाज़ा पुलिस, लेबेदेव, उन दोनों महिलाओं और रोगोझिन के भाई सेम्योन रोगोझिन की मौजूदगी में खोला गया, जो उसी घर के एक हिस्से में रहता था। खोज बहुत बड़ी हद तक दरबान की गवाही की वजह से कामयाब रही, जिसने बताया कि उसने रोगोझिन को पिछली शाम अपने एक दोस्त के साथ चुपके से सदर दरवाज़े से जाते देखा था। इसके बाद पुलिस ने दरवाज़ा तोड़ डालने में कोई संकोच नहीं किया।

रोगोझिन दो महीने तक दिमाग़ की सूजन से ग्रस्त रहने के बाद जिन्दा बच गया और उसके स्वस्थ हो जाने पर उसकी अदालती छानबीन हुई और उस पर मुक़द्दमा चलाया गया। उसने हर बात के बारे में सीधी-सीधी, बिलकुल सही-सही और पूरी तरह सन्तोषजनक गवाही दी, जिसका नतीजा यह हुआ कि प्रिंस के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा शुरू में ही खारिज कर दिया गया। मुक़द्दमे के दौरान रोगोझिन चुप रहा। उसने अपने वाक्पटु और चतुर वकील की बातों का खण्डन नहीं किया, जिसने बिलकुल साफ़-साफ़ और तर्कसंगत ढंग से यह साबित कर दिया कि अपराध दिमाग़ की सूजन का परिणाम था, जिसने अभियुक्त की अपार व्यथा के कारण अपराध किए जाने से बहुत पहले ही उसे आ दबोचा था। रोगोझिन ने इस मत की पुष्टि करने के लिए अपने ओर से कुछ भी नहीं जोड़ा और पहले की तरह ही उसने अपराध के छोटे से छोटे ब्योरे की बातों को स्पष्ट रूप से और बिलकुल नपे-तुले ढंग से स्वीकार कर लिया और बयान कर दिया। अपराध की गम्भीरता को कम करनेवाली परिस्थितियों के कारण पन्द्रह वर्ष के कठोर श्रम की सज़ा देकर साइबेरिया भेज देने का फ़ैसला किया गया और उसने फ़ैसला कठोर मुद्रा से, चुपचाप और मानो 'विचारमग्न होकर' सुना। उसकी अपार धन-दौलत, उसके उस बहुत ही थोड़े-से हिस्से को छोड़कर जो उसने पहले कुछ महीनों की ऐयाशी के दौरान लुटा दी थी, उसके भाई सेम्योन को दे दी गई,

जिसे इस बात से बहुत सन्तोष मिला। रोगोझिन की बूढ़ी माँ अभी तक जिन्दा हैं, और ऐसा लगता है कि उन्हें कभी-कभी अपने लाड़ले बेटे पर्फ़्योन की याद आती हैं, लेकिन बहुत साफ़तौर पर नहीं—ईश्वर ने उसके हृदय और मस्तिष्क को उस भयानक विपदा के आभास से सुरक्षित रखा जो उनके अभागे घर पर टूट पड़ी थी।

लेबेदेव, केल्लेर, गान्या, प्तीत्सिन और हमारी कहानी के विभिन्न पात्र पूर्ववत् अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उनमें लगभग कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ है, और हमारे पास उनके बारे में बताने को कुछ है भी नहीं। इप्पोलीत भीषण उद्विग्नता की दशा में मर गया, अनुमान से कुछ पहले ही, नस्तास्या फ़िलीप्पोव्ना के मरने के कोई पन्द्रह दिन बाद। जो कुछ हुआ था उससे कोल्या को बहुत आघात पहुँचा; उसे अपनी माँ से पहले से भी ज़्यादा गहरा लगाव हो गया। उसकी माँ को यह चिन्ता सताती रहती है कि वह उसकी उम्र को ध्यान में रखते हुए ज़्यादा ही विचारशील है; बड़ा होकर शायद वह बढ़िया ही आदमी बनेगा। प्रसंगतः, प्रिंस के भविष्य की सन्तोषजनक व्यवस्था किसी हद तक उसके ही प्रयासों की बदौलत हुई थी—पिछले समय में उसका जितने लोगों से परिचय था, उन सभी में उसने रादोम्स्की को एक बहुत ही भरोसे के आदमी की तरह अलग कर लिया था। उसी ने सबसे पहले रादोम्स्की के पास जाकर उसे हाल की घटनाओं और प्रिंस की मौजूदा हालत की उन सभी तफ़सीलों से परिचित करवाया था, जिन्हें वह जानता था। और उसका खयाल ग़लत भी नहीं साबित हुआ—रादोम्स्की ने अभागे 'बौड़म' की नियति में बहुत ही हार्दिक दिलचस्पी ली और उसके प्रयासों के परिणामस्वरूप प्रिंस ने अपने को फिर से स्विट्ज़रलैण्ड में श्लाइडर के अस्पताल में पाया। रादोम्स्की, जो बहुत लम्बा समय योरप में बिताने के इरादे के साथ विदेश गया था और अपने को खुलकर "रूस मैं एक़दम फालतू आदमी" कहता है, श्नाइडर के अस्पताल में अपने मित्र को देखने के लिए अकसर ही—कुछ महीनों में कम से कम एक बार—जाता रहता है। मगर श्नाइडर भौंहें चढ़ाते और अपने सिर को हिलाते हैं; वह अपने रोगी की मानसिक क्षमताओं के पूर्ण रूप से भंग हो जाने की आशंका का संकेत करते हैं; वह निश्चित रूप से यह तो नहीं कहते कि मरीज की बीमारी लाइलाज है, मगर वह अत्यधिक अप्रिय सम्भावनाओं का आभास देने की हद तक ज़रूर चले जाते हैं। रादोम्स्की का हृदय इससे बहुत दुःखी हो जाता है—और दिल उसके पास है, यह वह कोल्या के पत्र पाकर और उनका कभी-कभी जवाब तक देकर अच्छी तरह से साबित कर चुका है। लेकिन, अलावा इसके, उसके चरित्र का एक और विचित्र गुण प्रकाश में आया है, और चूँकि यह अच्छा गुण है, इसलिए हम उसका अविलम्ब उल्लेख कर देते हैं—श्नाइडर के अस्पताल का हर चक्कर लगाने के बाद रोदोम्स्की कोल्या को पत्र लिखने के अलावा एक और पत्र पीटर्सबर्ग में किसी एक अन्य व्यक्ति को भेजता है, जिसमें वह प्रिंस की उस वक़्त की हालत के पूर्णतम और अत्यन्त सहानुभूतिपूर्ण विवरण देता है। निष्ठा की अति आदरमय अभिव्यक्ति के अलावा इन पत्रों में कभी-कभी (और अधिकाधिक प्रायिकता से) उसके विचारों, धारणाओं और भावनाओं के कितने ही खरे बयान होते हैं—संक्षेप में एक ऐसी चीज़ कि जो मैत्रीपूर्ण और अन्तरंग भावनाओं की अभिव्यक्ति जैसी लगने लगी है। यह व्यक्ति, जिसका उसके साथ पत्रव्यवहार है (चाहे उनके पत्रों का आदान-प्रदान कोई बहुत प्रायिक नहीं है) और जिसने उसका इतना ध्यान और आदर प्राप्त कर लिया है, वेरा लेबेदेवा है। हम इसका बिलकुल ठीक-ठीक कभी नहीं पता लगा पाए हैं कि उनके बीच ऐसा सम्बन्ध क्योंकर पैदा हो गया; बेशक, वह उस दुर्भाग्य के परिणामस्वरूप पैदा हुआ था, जो प्रिंस पर आ पड़ा था, और जिसकी वजह से वेरा लेबेदेवा इतनी शोकग्रस्त थी कि वह बीमार हो गई थी; लेकिन हम यह नहीं जानते कि वे वस्तुतः कैसे परिचित हुए और आगे चलकर।

मित्र बन गए। हमने इन पत्रों का मुख्यतः इसलिए उल्लेख किया है कि उनमें से कुछ में येपांचिन-परिवार की और ख़ासकर अग्लाया येपांचिना की ख़बरें होती थीं। रादोम्स्की ने पेरिस से एक ख़ासे अटपटे पत्र में, उसके बारे में लिखा था कि एक उत्प्रवासी पोलिश काउंट के साथ संक्षिप्त और असाधारण आसक्ति के बाद उसने उसके साथ अचानक अपने माता-पिता की इच्छा के ख़िलाफ़ शादी कर ली थी, जिन्होंने अपनी अनुमति बिलकुल आख़िर में ही जाकर इसलिए दी थी कि ऐसा न करने पर मामले का अन्त भयानक लोकनिन्दा में हो सकता था। फिर, कोई छह महीने की खामोशी के बाद, रादोम्स्की ने अपनी पत्राचारी को और फिर एक लम्बे और बहुत ब्योरेवार खत में ही सूचित किया कि श्नाइडर के अस्पताल के अपने पिछले चक्कर के दौरान उसकी पूरे येपांचिन-परिवार से (बेशक, जनरल येपांचिन को छोड़कर, जो अपने कारोबारी मामलों की वजह से पीटर्सबर्ग में ही थे) और प्रिंस श. से मुलाक़ात हुई थी। यह एक विचित्र पुनर्मिलन था—उन सभी ने रादोम्स्की का एक तरह से हर्षातिरेकपूर्ण प्रसन्नता के साथ अभिनन्दन किया था; अदेलईदा और अलेक्सान्द्रा ने तो "अभागे प्रिंस का फ़रिश्तों जैसा ध्यान" रखने के लिए उसके प्रति कृतज्ञता तक व्यक्त की थी। मिसेज़ येपांचिना प्रिंस को, उसकी बीमारी और अवमानित अवस्था को देखकर फूट-फूटकर रोईं। प्रत्यक्षतः उसकी सभी बातों को माफ़ कर दिया गया था। प्रिंस श. ने कुछ बड़ी सुखद और बुद्धिमत्तापूर्ण सूक्तियों की गयी थीं। रादोम्स्की यह अनुभव किए बिना न रह सका कि प्रिंस श. और अदेलईदा में अन्तरंग मैत्री नहीं हो पाई है, लेकिन यह ज़रूर नज़र आता था कि भविष्य में अदेलईदा का आवेगशील स्वभाव स्वेच्छा से और पूरे मन से प्रिंस श. की बुद्धि और अनुभव के आगे समर्पण कर देगा। फिर, परिवार के द्वारा सीखे सबक़ों और विशेषकर उत्प्रवासी काउंट के साथ अग्लाया के मामले ने उस पर गहरी छाप डाली थी। हर वह चीज़, जिसका अग्लाया की इस काउंट के साथ शादी करते समय परिवार को डर था, वह छह महीने के भीतर हो गई थी और ऐसे आश्चर्यजनक घटनाक्रम के साथ कि जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। पता चला कि काउंट तो काउंट था ही नहीं, और अगर वह सचमुच उत्प्रवासी था, तो यह अतीत के किसी काले और सन्देहास्पद काण्ड के कारण था। उसने अग्लाया को अपनी मातृभूमि के लिए अपनी व्यथाओं से विदीर्ण अपनी आत्मा की असाधारण महानता से मोहित किया था और उसे इस क़दर मोहित कर लिया था उससे शादी करने के पहले ही वह पोलैण्ड की पुनः स्थापना के लिए किसी विदेश स्थित समिति की सदस्या बन गई थी, और इसके अलावा उसने अपने को किसी प्रसिद्ध पादरी के पापमोचन संस्कार में पाया, जो ख़ासे दीवानेपन की हद तक उसके दिमाग़ पर हावी हो गया था। काउंट की वह बेशुमार दौलत, जिसका उसने मिसेज़ येपांचिना और प्रिंस श. को लगभग अकाट्य प्रमाण दिया था, अस्तित्वहीन सिद्ध हुई। इसके अलावा, शादी के छह महीने के भीतर काउंट और उसका मित्र, मशहूर पादरी, अग्लाया और उसके घरवालों के बीच जबरदस्त झगड़ा करवाने में कामयाब हो गए, जिसकी वजह से घरवाले कई महीने से अग्लाया से नहीं मिले थे।...संक्षेप में, सुनने-सुनाने को बहुत था, मगर मिसेज़ येपांचिना, उनकी बेटियाँ और प्रिंस श. तक इस 'दहशत' से इस क़दर सकते में आए हुए थे कि रादोम्स्की से अपनी बातचीत में कुछ बातों का उल्लेख करते भी डरते थे, यद्यपि वे इस बात को भली-भाँति जानते थे कि रादोम्स्की को अग्लाया की सबसे ताज़ा झोंकों की पूरी जानकारी है। बेचारी मिसेज़ येपांचिना रूस वापस पहुँचने को बेक़रार थीं, और रादोम्स्की के अनुसार वह विदेश में देखी हर चीज़ की कटु और बिलकुल अनुचित आलोचना करती थीं—"वे तो कहीं अच्छी रोटी सेंकना भी नहीं जानते और वे अपनी कोठरियों में ठण्ड से इस तरह ठिठुरते हैं, जैसे सर्दियों में तहख़ाने में चूहे," उन्होंने कहा। "कम से कम,"

उन्होंने उद्विग्नतापूर्वक प्रिंस की तरफ़, जिसने उन्हें पहचानने का तनिक भी संकेत नहीं दिया था, इशारा करते हुए आगे कहा, "कम से कम मैं इस अभागे के लिए ठेठ रूसी ढंग से रो तो सकती हूँ। बहुत हो चुकी यह सनक। बस, हम अपने जोश के बहाव में आकर भर पाए। अब तो हमें समझ आनी चाहिए। और यह सब, विदेश की यह सारी ज़िन्दगी, और आपका यह सारा योरप बस एक कल्पना मात्र है और विदेश में हम सब भ्रम ही हैं...मेरी बातों को गाँठ बाँध लीजिए—आप ख़ुद ही देख लेंगे !" रादोम्स्की से विदाई लेते हुए उन्होंने लगभग गुस्से के साथ अपनी बात पूरी की।

●●●

फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की

बौड़म

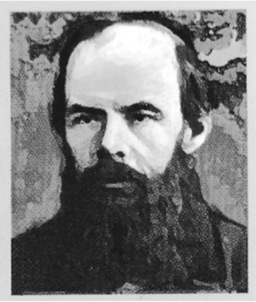

"दोस्तोयेव्स्की के कृतित्व ने तब यह कहा था और आज भी यह कहता है कि मानव की आत्मा विद्रोह करती है, वह मुक्ति-मार्गों की खोज में छटपटाती है कि क्रय-विक्रय का माल बनने को राज़ी होने के बजाय वह नष्ट हो जाना बेहतर समझेगी। दोस्तोयेव्स्की का कृतित्व एक उत्कट कलाकार की शाश्वत वेचैनी, अस्वीकार्य दुनिया के विरुद्ध उसकी आवाज़, उसकी चुनौती को ही नहीं, बल्कि उसकी घबराहट, मार्ग खोजने की भूल-भटकन की यातनाओं, उन असंगतियों को भी व्यक्त करता है जिनका किसी एक व्यक्ति के लिए हल ढूँढ़ना सम्भव नहीं।" – कोन्स्तान्तिन फ़ेदिन

"इस उपन्यास के विचार को मैं कब से अपने मन में सँजोये रहा हूँ, पर वह इतना कठिन था कि बहुत समय तक उसे हाथ लगाने का मुझे साहस नहीं हुआ। ...उपन्यास का मुख्य विचार सकारात्मक रूप से एक बहुत ही अच्छे इनसान का चित्रण करना है। दुनिया में इससे कठिन कोई दूसरा काम नहीं है, विशेष रूप से इस समय। जो कुछ सकारात्मक रूप से सुन्दर है उसका चित्रण करने का प्रयत्न करनेवाले सभी रूसी या यूरोपीय लेखक अनिवार्य रूप से विफल रहे हैं। इसीलिए यह काम इतना विशाल है। जो सुन्दर है वह एक आदर्श है, और उसका अभी तक पूरा विकास नहीं हुआ है, न हमारे देश में और न ही सभ्य यूरोप में।"

–फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की